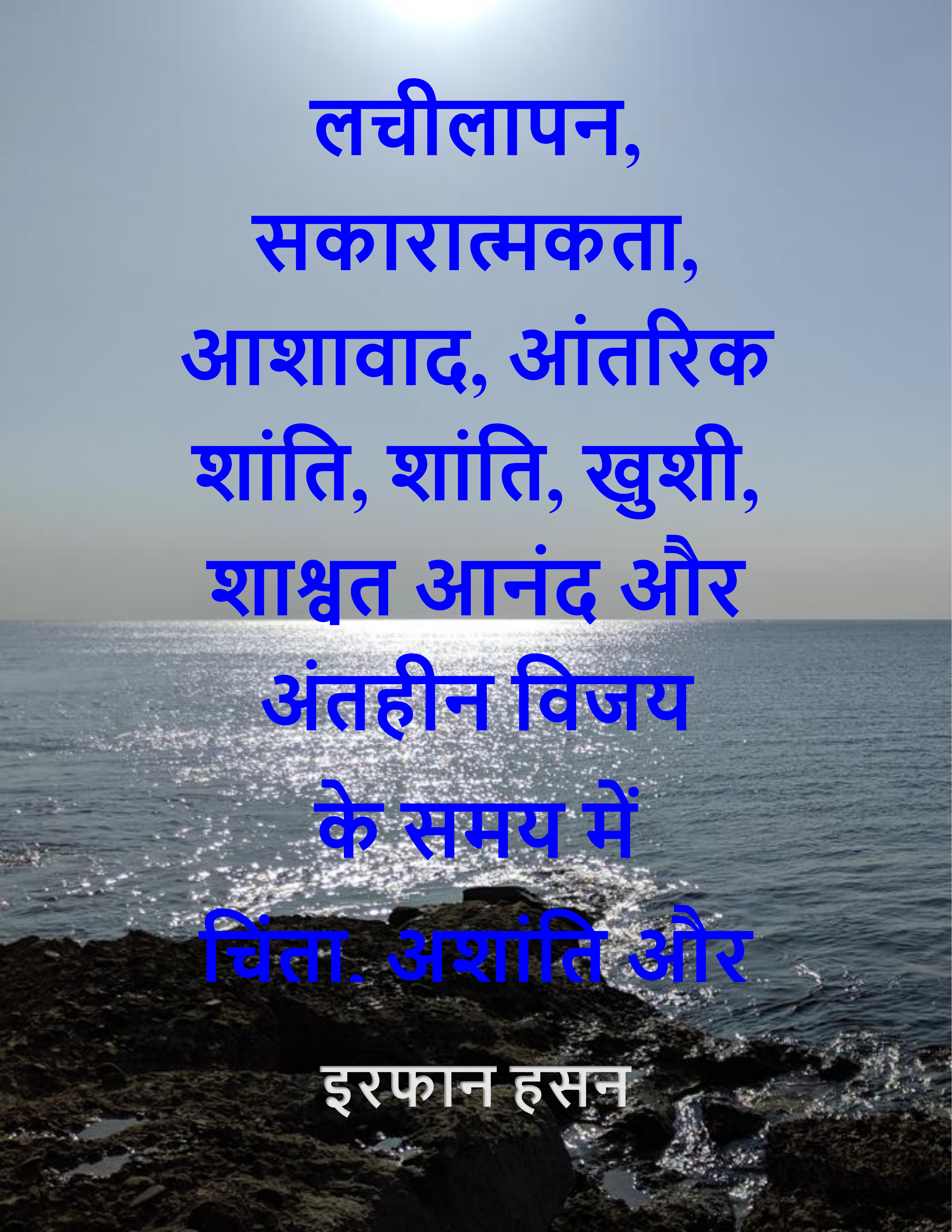


लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय के समय में चिंता, अशांति और

इरफान हसन

लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय के समय में चिंता, अशांति और विनाश

संपूर्ण मानव सभ्यता के सबसे महान विचारकों और पुनरुद्धारियों में से एक - इमाम अबू हमीद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (1058-1111 ई.) के कालातीत कार्यों से संकलित, अनुवादित और समझाया गया

यूनाइटेड स्टेट्स लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस पंजीकरण संख्या: TXu 2-273-620

आईएसबीएन: 9798543692042

यह कृति लेखक द्वारा इमाम अबू हमीद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (1058-1111 ई.) के कालातीत कार्यों से और कुछ हद तक मौलाना जलालुद्दीन रूमी (1207-1273 ई.) के कार्यों से एक संकलन, संक्षेपण, अनुवाद और स्पष्टीकरण है। ग्रंथ सूची में पूर्ण स्रोत संदर्भ प्रदान किए गए हैं। लेखक ने महत्वपूर्ण बिंदुओं और शब्दावली को स्पष्ट करने के लिए वर्ग कोष्ठक और कोष्ठक के भीतर प्रदान किए गए सभी स्पष्टीकरण जोड़े हैं। सभी अरबी शब्दों और शब्दावली को अंग्रेजी में लिप्यंतरित किया गया है, इटैलिक किया गया है और अनुवाद किया गया है।

قُل لَّوْ كَانَ ٱلْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَٰتِ رَبِّى لَنَفِدَ ٱلْبَحْرُ

قَبْلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَٰتُ رَبِّى وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِۦ مَدَدًا

"कहो, 'अगर मेरे प्रभु के शब्दों को लिखने के लिए समुद्र स्याही बन जाए, तो मेरे प्रभु के शब्द समाप्त होने से पहले ही समुद्र समाप्त हो जाएगा, भले ही हम इसे पूरक के रूप में लाएं।

(गूढ़ आध्यात्मिक ज्ञान और अनुभव के अथाह सागर की विशालता पर कुरान। अध्याय 18, श्लोक 109)

सामग्री

सारांश ... 9

प्रस्तावना ... 15

भाग 1: किसी की आंतरिक वास्तविकता को जानना आज मानवता के सामने आने वाले संकटों, संघर्षों और चुनौतियों को हल करने का मार्ग प्रशस्त करता है ... 16

स्वयं को जानना ... 24

परमेश्वर को जानना ... 44

आप में ब्रह्मांड ... 48

दुनिया को जानना ... 59

मृत्यु के बाद के जीवन को जानना ... 67

भाग 2: आंतरिक विनाशकारी विशेषताएं - नकारात्मक आंतरिक गुण व्यक्तियों, समाजों और पूरे राष्ट्रों को नुकसान पहुंचाते हैं और खतरे में डालते हैं ... 85

अध्याय 1 - आत्मा के रहस्यों को जानना आत्म-जागरूकता, रोशनी और आत्मज्ञान की आध्यात्मिक यात्रा के लिए एक अनिवार्य ... 87

स्वयं (नफ्स*), आत्मा (*रुह*), हृदय (*कल्ब*) और बुद्धि (*'अक़ल*)* शब्दों का अर्थ और उद्देश्य ... 87

दिल की सेना (*Qalb*) ... 92

दिल के आंतरिक सेवक (*Qalb*) और उनके आसानी से समझे जाने वाले उदाहरण ... 95

मानव हृदय के लक्षण (*Qalb*) ... 98

हृदय की व्यापक विशेषताएं (*Qalb*) और इसके उदाहरण ... 105

ज्ञान के संबंध में हृदय की उपमा - हृदय का पॉलिश किया हुआ दर्पण और उसमें परिलक्षित होने वाला सत्य का प्रकाश ... 112

परिचित उदाहरणों के साथ प्रकट और अर्जित ज्ञान के बीच अंतर की व्याख्या ... 125

Insinuations (Waswaas) के *माध्यम से दिलों पर शैतान का प्रभुत्व* - आक्षेपों का अर्थ और शैतान के प्रभुत्व के कारण ... 130

दिलों में शैतान का प्रवेश ... 144

दिल के संकेत, अंधविश्वास, खतरे और इरादे ... 164

उस संबंध में हृदय और हृदय के प्रकारों में तेजी से परिवर्तन ... 170

अध्याय 2 - आत्मा की शुद्धि के लिए आध्यात्मिक संघर्ष, प्रदीप्त आंतरिक गुणों की प्राप्ति और आत्मा के आंतरिक अंधकार और रोगों को ठीक करना ... 177

अच्छे महान चरित्र की उत्कृष्टता और बुरे घृणित चरित्र के नुकसान ... 179

अच्छे महान चरित्र और बुरे घृणित चरित्र की वास्तविकता ... 184

आध्यात्मिक प्रयास और संघर्ष के माध्यम से चरित्र और आंतरिक गुणों में परिवर्तन ... 189

सुंदर आंतरिक चरित्र, स्वभाव और गुणों का साधन और स्रोत (*हुस्न-उल-खुलक*) सभी चरम सीमाओं को दूर करना है ... 195
नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव की सभ्यता प्राप्त करने के तरीके की विस्तृत प्रदर्शनी ... 201
आत्मा के रोग और स्वास्थ्य के संकेत ... 206
अपने स्वयं के दोषों को खोजने की विधि ... 209
इच्छाओं और वासनाओं को अस्वीकार करने और ईश्वरीय कानून से इसके प्रेषित प्रमाणों और साक्ष्यों के माध्यम से हृदय के रोगों का इलाज ... 212
अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुणों के संकेत ... 220
बच्चों की शिक्षा और पालन-पोषण और उनकी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुणों को सभ्य और सुशोभित करना ... 226
आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने की शर्तों, आध्यात्मिक संघर्ष की शुरुआत और आध्यात्मिक मार्ग पर आध्यात्मिक साधक के क्रमिक विकास के बारे में विवरण ... 233
अध्याय 3 - निचले स्व से दो प्रबल आधार इच्छाओं की पकड़ को तोड़ना ... 246
भूख की उत्कृष्टता और लोलुपता की निंदा ... 248
भूख के लाभ और लोलुपता के नुकसान ... 252
भूख से संबंधित निर्णयों, उत्कृष्टता और मानव राज्यों में अंतर ... 262
कम खाने और वासनाओं को त्यागने के नुकसान ... 266
निजी अंगों की वासना ... 267
अध्याय 4 - अनर्गल भाषण के अपूरणीय नुकसान ... 270
जीभ का बड़ा खतरा और मौन की उत्कृष्टता ... 272
जीभ या वाणी के दुरुपयोग के नुकसान ... 276
अध्याय 5 - क्रोध, क्रोध, कटुता और ईर्ष्या के कारण होने वाली आपदाएँ ... 324
क्रोध और क्रोध की निंदा ... 325
क्या आध्यात्मिक प्रयास के माध्यम से क्रोध को मिटाया या कम किया जा सकता है? ... 328
क्रोध के कारण ... 330
उकसाने के बाद क्रोध का इलाज ... 332
सहनशीलता की उत्कृष्टता ... 335
विद्वेष की वास्तविकता और परिणाम और क्षमा और नम्रता की उत्कृष्टता ... 338
क्षमा की उत्कृष्टता और अच्छाई में ऊपर और परे जाना ... 340
नम्रता और दया की उत्कृष्टता ... 342
ईर्ष्या, इसकी वास्तविकता और इसके इलाज के साधनों की निंदा ... 344

ईर्ष्या के कारण ... 348
ईर्ष्या को ठीक करने की दवा ... 355
अध्याय 6 - सांसारिक जीवन, संपत्ति और शक्ति के प्रति लगाव और इसे अपने जीवन का उद्देश्य बनाना ... 360
इसमें लिप्त होने के बाद दुनिया के नुकसान से रक्षा करना ... 369
एक इंसान के लिए दुनिया की वास्तविकता और प्रकृति ... 374
दुनिया की वास्तविकता और भोग जो मनुष्य को अपने स्वयं को, ब्रह्मांड के निर्माता और अपने स्वयं के अंत को भूलने का कारण बनते हैं जब वे उनमें डूबे होते हैं ... 378
अध्याय 7 - कंजूसी और भौतिक संपत्ति के प्यार के नुकसान ... 386
धन के नुकसान और इसके लिए प्यार करने की अस्वीकृति ... 388
धन की प्रशंसा और आलोचना के बीच संघर्ष समाधान ... 390
धन के नुकसान और लाभ ... 392
लालच का इलाज और संतोष बढ़ाने की दवा ... 395
कंजूसी की निंदा ... 401
परोपकारिता की वास्तविकता और इसकी उत्कृष्टता ... 404
कंजूसी का इलाज ... 407
अध्याय 8 - प्रसिद्धि और प्रशंसा की तलाश के नुकसान ... 417
प्रसिद्धि और लोकप्रियता की तलाश की निंदा ... 419
वास्तविक पूर्णता ... 429
निचले स्व में प्रशंसा के लिए प्यार और आलोचना के लिए नफरत ... 432
प्रसिद्धि के प्यार का इलाज ... 434
प्रशंसा के प्यार का इलाज ... 438
आलोचना और निंदा से घृणा का इलाज ... 440
अध्याय 9 - दिखावा और दिखावा करने के नुकसान ... 444
आडंबर की निंदा ... 445
आडंबर की वास्तविकता और उसके घटित होने के मामले ... 451
इस बीमारी के साथ दिल को ठीक करने और दिखावा करने की दवा ... 455
कार्यों के माध्यम से आडंबर का इलाज ... 459
सच्चाई और ईमानदारी के संकेत ... 462
अध्याय 10 - अहंकार और आत्म-दंभ के नुकसान ... 466
अहंकार के नुकसान ... 467

विनम्रता की उत्कृष्टता 469
जिन चीजों के साथ अहंकार प्रदर्शित किया जाता है 473
अहंकार का इलाज और विनम्रता प्राप्त करने का तरीका 482
आत्म-दंभ और उसके नुकसान की निंदा 495
आत्म-धार्मिकता के कारण और उनका इलाज 498
गर्व और लापरवाही की निंदा 504
भाग 3: आंतरिक रचनात्मक और लचीले लक्षण - सकारात्मक आंतरिक गुण लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता को विकसित करते हैं जो शाश्वत व्यक्तिगत और सामूहिक मानव सफलता की शुरुआत करते हैं 510
अध्याय 11 - अपने स्वयं के दोषों, गलत कामों और ज्यादतियों को महसूस करना और पश्चाताप, क्षमा और किए गए अपराधों के लिए सुधार करना 512
पश्चाताप की वास्तविकता और परिभाषा 514
पश्चाताप की स्वीकृति उसकी शर्तों की पूर्ति पर निर्भर है 519
एक छोटा सा पाप बड़ा कैसे हो जाता है? 527
पश्चाताप की दवा और पापों पर जोर देने की विधि 534
अध्याय 12 - प्रतिकूलताओं, परीक्षणों और क्लेशों का सामना करने में धैर्य के माध्यम से लचीलापन, और आशीषों और सभी अच्छे लोगों के लिए कृतज्ञता 541
धैर्य की व्याख्या 542
धैर्य की वास्तविकता और अर्थ 545
सभी राज्यों में एक सेवक को धैर्य की आवश्यकता होती है 550
धैर्य की दवा और इसके साथ सहायता प्राप्त करने का तरीका 554
कृतज्ञता की व्याख्या 558
कृतज्ञता के योग्य आशीर्वाद 568
लोगों में कृतज्ञता क्यों नहीं होती 578
अध्याय 13 - सभी गलतियों के खिलाफ एक दृढ़ संयम के रूप में ईश्वर का भय मानना, कोई भी सकारात्मकता और आशावाद के साधन के रूप में ईश्वर में आशा रखने में सक्षम है और आशा रखता है 588
आशा की वास्तविकता, इसकी उत्कृष्टता, आशा के लिए दवा और इसे प्राप्त करने की विधि 589
डर की वास्तविकता 597
क्या भय या आशा का वर्चस्व या दोनों का मध्यम स्तर श्रेष्ठ है? 603
अशुभ अंत के बारे में ज्ञानवादियों का डर 607

अध्याय 14 - ईश्वर के सामने पूर्ण आवश्यकता की विनम्रता पैदा करना, गरीबी को सहन करना, और सांसारिकता और भौतिकवादी जुनून से परहेज करना 612

गरीबी या पूर्ण आवश्यकता की वास्तविकता, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, ईश्वर और आध्यात्मिक यात्री की आंतरिक अवस्थाओं के सामने 613

गरीबी की उत्कृष्टता या पूर्ण आवश्यकता, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, ईश्वर के सामने 617

सांसारिकता से परहेज की व्याख्या 622

संयम की उत्कृष्टता 625

अध्याय 15 - मनुष्य के सामने आने वाले हर मामले पर ईश्वर की एकता, सर्वशक्तिमत्ता और पूर्ण शक्ति का एहसास करना और ईश्वर में विश्वास विकसित करना 634

परमेश्वर में विश्वास की उत्कृष्टता 636

दिल के मालिक के साथ कलम की बातचीत 640

परमेश्वर पर भरोसा करने की अवस्थाएँ और कार्य 647

उमर (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) की घटना एक महामारी में ईश्वर पर भरोसा करने के बारे में 652

अध्याय 16 - ईश्वर के साथ प्रेम, लालसा और अंतरंगता, और ईश्वरीय इच्छा और आदेश को स्वीकार करना आंतरिक शांति, शांति और खुशी को बढ़ावा देने के लिए अनिवार्य है 656

प्रेम की वास्तविकता, इसके कारण और अपने सेवक के लिए परमेश्वर के प्रेम का अर्थ 660

परमेश्वर ही प्रेम के योग्य है 667

दिव्य ज्ञान और दिव्य दृष्टि का आनंद 680

परमात्मा के लिए लालसा 690

अध्याय 17 - किसी भी स्वार्थ के उद्देश्य से रहित शुद्ध इरादों, सभी मामलों में ईमानदारी और सत्य के प्रति समर्पण पैदा करना 698

इरादे की उत्कृष्टता और वास्तविकता 699

उत्कृष्टता, वास्तविकता और ईमानदारी की डिग्री 705

सत्यता की उत्कृष्टता और वास्तविकता 715

अध्याय 18 – सभी कमियों, नकारात्मकताओं और दोषों के लिए खुद को काम करने के लिए आत्म-परीक्षण और आत्म-मूल्यांकन 724

स्व-परीक्षा (*मुराकाबा*) और आत्म-मूल्यांकन (*मुहासाबा*) की व्याख्या 724

चिंतन की वास्तविकता और इसकी डिग्री 733

अध्याय 19 - आंतरिक शांति और आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए गहन आंतरिक चिंतन और विचार-विमर्श अनिवार्य हैं 743

गहरा आंतरिक प्रतिबिंब (*तफक्कुर*) और विचार-विमर्श (*तदब्बूर*) 743

प्रतिबिंब की पांच डिग्री 747

अध्याय 20 - अपनी स्वयं की नश्वरता और सांसारिक जीवन के अंत पर विचार करना और कभी न भूलना और अनन्त जीवन की तैयारी करना 758

दुनिया के माध्यम से यात्रा के समापन की तैयारी 760

पुस्तक के समापन पर खुशी की खबर के रूप में परमेश्वर की दया की व्यापकता का उल्लेख करना 772

अध्याय 21 – समय, स्थान और स्थिति की परवाह किए बिना आंतरिक शांति, शांति और खुशी पाने के लिए खुद को मुक्त करने के लिए बुद्धि 776

भाग 4: आंतरिक अस्तित्व की पूर्णता और जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक मार्ग रूमी की तीन राजकुमारों की कहानी के माध्यम से 783

समाप्ति 854

आगे के अध्ययन के लिए अनुशंसित पुस्तकें 856

ग्रंथ सूची 861

सारांश

मानवता आज खुद को पाती है, हमारे रोजमर्रा के जीवन में अपने विभिन्न सकारात्मक प्रभावों और अभिव्यक्तियों के साथ आंतरिक और बाहरी शांति की खोज कर रही है, जबकि चिंता और उथल-पुथल में डूबी हुई है, चारों ओर भारी चुनौतियों और अशांति का सामना कर रही है। वर्तमान संकटों और चुनौतियों के विश्वासघाती पानी से गुजरने के लिए धैर्य, मार्गदर्शन, सच्चाई और ज्ञान की आवश्यकता होती है। हालांकि, एक सामान्य व्यक्ति के सामने हर स्तर पर कई चुनौतियां इतनी थका देने वाली और उपभोग करने वाली होती हैं कि कोई भी बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक संसाधन बाहर निकलने का रास्ता खोजने के लिए नहीं बचते हैं। सुरंग के अंत में प्रकाश को देखने और चीजों को सकारात्मक रूप से बदलने के लिए मार्गदर्शन, या तो कई लोगों के लिए उपलब्ध नहीं है या बड़े पैमाने पर भ्रम, उन्माद, नकारात्मकता और दुष्प्रचार से भ्रमित है, यह "सूचना युग" विरोधाभासी रूप से लाया गया है। सूचना युग को आत्मज्ञान के युग की शुरुआत करनी चाहिए थी, न कि इसके विपरीत जो आज प्रचलित है।

जब हम मामलों की स्थिति और मामलों को देखते हैं कि वे अभी खड़े हैं, तो हम खुद को या तो चिंता के युग में रहते हैं, यहां तक कि आर्थिक और तकनीकी विकास द्वारा पोषित प्रचलित भौतिक समृद्धि के साथ, या चल रहे राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों, युद्धों के कारण सामाजिक अव्यवस्था से घिरे होने पर उथल-पुथल के युग में रह रहे हैं। भूख, बीमारी, अन्याय, गरीबी और आर्थिक कठिनाइयाँ, या अशांति की स्थिति में रहना - चिंता और उथल-पुथल की स्थिति के बीच एक ऐसी स्थिति जहां हमारे पास सामाजिक अव्यवस्था के निम्न स्तर के साथ सभी के लिए सीमित आर्थिक अवसर हैं, लेकिन फिर भी बड़े पैमाने पर उथल-पुथल और संघर्षों के बिना। चाहे हम किसी भी स्थिति में हों, सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक स्थिति और संदर्भ की हमारी वर्तमान स्थिति के आधार पर, हम खुद को संतुलन की स्थिति की तलाश में पाते हैं जहां हम सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, खुशी और सफलता के साथ रह सकते हैं। चिंता, अशांति, या उथल-पुथल को दूर करने के लिए इस सकारात्मक आंतरिक स्थिति को प्राप्त करने के लिए हम खुद

को पाते हैं, वास्तविक कारकों पर गहरी नज़र डालने की आवश्यकता होती है जो इन नकारात्मक और अवांछित राज्यों पर काबू पाने की ओर ले जाते हैं।

इस ग्रंथ का उद्देश्य विचारों, भावनाओं, शब्दों, कर्मों और होने में लचीलापन, आशावाद और सकारात्मकता के रूप में नकारात्मकता, निराशा, अवसाद और निराशा के विकल्पों की व्याख्या करना है। दृष्टिकोण में इस परिवर्तन का परिणाम - आंतरिक और बाहरी दोनों - आंतरिक शांति, शांति, खुशी, और जीवन और इसकी चुनौतियों पर एक कालातीत दृष्टिकोण का परिणाम होता है, जो शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय को प्रभावित करता है जो इस सांसारिक अस्तित्व में शुरू होता है लेकिन फिर समय और स्थान की बाधाओं को अनंत काल के जीवन में पार कर जाता है और एक इंसान को अमर बना देता है।

विचारों, भावनाओं, शब्दों और कर्मों में नकारात्मकता शत्रुता, संघर्ष, प्रचंड विनाश, युद्ध, चिंताओं, अवसाद और आंतरिक आध्यात्मिक और शारीरिक बीमारियों की ओर ले जाती है, जबकि सकारात्मक आंतरिक अवस्थाएं, विचार, भावनाएं, शब्द और कर्म आंतरिक शांति और शांति की ओर ले जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सभी के लिए जीवन, स्वतंत्रता, समृद्धि, स्वास्थ्य और खुशी को बढ़ावा मिलता है। ऐसा तब होता है जब हम अपनी आत्माओं के भीतर गहराई से अंतर्निहित सकारात्मक ऊर्जाओं के जलाशयों में टैप करते हैं और उन्हें पहले अपने स्वयं के लाभ के लिए सकारात्मक चैनलों में पुनर्निर्देशित करते हैं, फिर सभी और हर चीज के लाभ के लिए हम प्रभावित करने का निर्णय लेते हैं। यह आत्म-सशक्तिकरण व्यक्तिगत और सामूहिक आंतरिक शांति, समृद्धि और सभी के लिए खुशी को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है जो बदले में शाश्वत आनंद की ओर ले जाता है। यह वह कीमिया है जो किसी के आंतरिक अस्तित्व के कच्चे माल को अपार मूल्य, चमक और चमक के अमूल्य रत्न में बदल देती है। तो इस एकमात्र जीवन में सच्ची मानवीय क्षमता और मूल्य से कम किसी भी चीज़ पर समझौता क्यों करें जो इसे पूरा करने के लिए किसी के पास है? ऐसा करने में विफलता, किसी के लिए शाश्वत अफसोस और खोए हुए अवसर और अभौतिक क्षमता के लिए निराशा का परिणाम होता है।

यह ग्रंथ आत्म-जागरूकता और आध्यात्मिक रोशनी के मार्ग की व्याख्या के साथ शुरू होता है, इसके बाद आंतरिक विनाशकारी गुणों की व्याख्या होती है जो आत्म-जागरूकता और आध्यात्मिक रोशनी में बाधा डालते हैं। इसके बाद उन कारकों की व्याख्या की जाती है जो हमारी आत्माओं के भीतर गहराई से अंतर्निहित सकारात्मक ऊर्जा के भंडार को उजागर करते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को मानवीय उपलब्धि के शिखर पर ले जाते हैं। यह पुस्तक सभी को "बुरे" या नकारात्मक होने पर पुनर्विचार करने के लिए आमंत्रित करती है और इसके बजाय "अच्छा" या सकारात्मक होने की कोशिश करती है और ऐसा करने के लिए क्रमशः नुकसान और लाभ को देखते हैं। यह सभी को नकारात्मक, मतलबी, नीच और बुराई से दूर रहने के लिए आमंत्रित करता है जो आंतरिक खजाने के प्रचंड विनाश और किसी की अपनी भलाई के प्रति बेखबर है, जिसके प्रभाव उस व्यक्ति के चारों ओर महसूस किए जाते हैं और इसके बजाय, सकारात्मक, सुखद, आशावादी और अच्छे होने के नाते और दोनों के बीच अंतर देखते हैं, और मानव उपलब्धि के शिखर तक पहुंचना सीखते हैं। यह ग्रंथ पूर्णता, ज्ञान, शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता का मार्ग खोलने में मदद करता है, जो उस परिणाम में बाधा डालने वाली हर चीज को अवरुद्ध करता है। हर इंसान इस जीवन की पेशकश का सबसे अच्छा हकदार है और यह ग्रंथ पहले उस मार्ग की व्याख्या करके इसे संभव बनाने में मदद करता है जो इसे संभव बनाता है, फिर अपने स्वयं के जीवन की जिम्मेदारी लेकर और इसे बेहतर के लिए बदलकर कार्य और अवसर पर उठने के लिए चुनौती देता है।

चिंता, अशांति और उथल-पुथल के इस युग की बीमारियों का इलाज पेश करने के लिए, हम न केवल इस्लामी सभ्यता बल्कि संपूर्ण मानव सभ्यता के बाहरी नवीनीकरण के लिए बाहरी नवीनीकरण के साथ आध्यात्मिकता, आत्म-जागरूकता, आंतरिक सुधार और आंतरिक परिवर्तन के बेहतरीन प्रतिपादकों में से एक के ज्ञान और कालातीत खजाने से आकर्षित करेंगे - इमाम अबू हमीद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (1058-1111 ईस्वी), ग़ज़ाली के नाम से जाना जाता है - जिसे उन्होंने अंत तक मानवता के लाभ के लिए समझाया। ग़ज़ाली की उत्कृष्ट अंतर्दृष्टि और ज्ञान से प्रेरित यह प्रदर्शनी मनुष्य की आंतरिक वास्तविकता और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की व्याख्या करने से शुरू होती है, और कैसे वे शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता से बंधे हैं - एक ऐसा लक्ष्य जिसे हर इंसान अपने भीतर की गहराई से चाहता है और संजोता है। एक बार उस ज्ञान और अंतर्दृष्टि से लैस होने के बाद, यह आंतरिक विनाशकारी विशेषताओं की व्याख्या करता है जिसे किसी को मिटा देना चाहिए, इसके बाद आंतरिक गुणों और महान

गुणों को गहराई से विकसित करना चाहिए, ताकि चिंताओं, अशांति और उथल-पुथल के साथ चिह्नित आधुनिक युग की चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटा जा सके, जिसके परिणामस्वरूप शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय प्राप्त की जा सके और उस प्रक्रिया में किसी के सांसारिक जीवन को लचीलेपन के साथ चिह्नित किया जा सके। सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, सच्ची खुशी और निरंतर चिरस्थायी सफलता।

यह पुस्तक असहायों के लिए एक सहायता होगी, व्यथित लोगों के लिए एक सहायता होगी जिनकी दुर्दशा असहनीय है, निराशा, अवसाद, उदासी, कुंठाओं और आंतरिक शून्य के रूप में आंतरिक कष्टों में डूबे हुए लोगों के लिए एक राहत होगी, उन लोगों के लिए एक प्रकाश जो अंधेरे से घिरे हुए हैं, अपने जीवन की सच्चाई, उद्देश्य और अर्थ की खोज करने वालों के लिए एक मार्गदर्शक, और उन लोगों के लिए एक रास्ता जो बेहतर बनना चाहते हैं और अपने, अपने परिवारों, अपने समुदायों, अपने राष्ट्रों और दुनिया के लिए चीजों को बदलना चाहते हैं।

ग़ज़ाली के ज्ञान और संपूर्ण मानवता के लिए शाश्वत सत्य के शाश्वत खजाने पर आधारित यह ग्रंथ हमें हमारी आत्माओं को उनकी सभी नकारात्मक प्रवृत्तियों से मुक्त करके और उन्हें सकारात्मक ऊर्जा से भरकर आंतरिक शांति और आनंद का मार्ग दिखाता है, जिससे हमें शांति, शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता मिलती है। इस प्रक्रिया में, व्यक्ति अपने जीवन के सही अर्थ और उद्देश्य की खोज करता है। किसी के जीवन के वास्तविक उद्देश्य की खोज करना और उस उद्देश्य के प्रभाव पर काम करना, किसी के मन, हृदय और आत्मा को सांसारिक जीवन की कठिनाइयों और संकटों से एक आध्यात्मिक क्षेत्र में ले जाता है जो व्यक्ति को शाश्वत खुशी और सभी प्रतिकूलताओं पर अंतहीन विजय प्रदान करता है। कोई भी समाज मनुष्य के भीतर और उसके बिना कहर बरपाने के सबसे अंधेरे आवेगों से अछूता नहीं है और बहुत बार, धर्म का उपयोग दिव्य प्रकाश के बजाय उन अंधेरे आवेगों में टैप करने के लिए किया गया है। आज हम दुनिया में जिस शांति की तलाश कर रहे हैं, वह हमारे अपने दिलों में शुरू होती है। ग़ज़ाली का "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार", जिसका इस ग्रंथ में बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया है, एक जबरदस्त काम है, शायद संपूर्ण मानव सभ्यता का सबसे ऐतिहासिक कार्य है, क्योंकि यह मनुष्य के छिपे हुए अंधेरे आवेगों को प्रकट करता है और चुनौती देता है और उन अंधेरे आवेगों को

संतुष्ट करने और संतुष्ट करने के लिए धर्म के उपयोग को चुनौती देता है और इसके बजाय, ईश्वर प्रकाश को धर्म में और मनुष्य के हृदय में आंतरिक और सार्वभौमिक शांति की घोषणा करता है।

प्रत्येक इंसान के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वह अपनी आंतरिक वास्तविकता और जीवन के उद्देश्य को समझे, जिसके लिए वह यहां है। तभी हम अपनी सभी परिस्थितियों और घटनाओं को अपने आस-पास रखने में सक्षम होते हैं - चाहे अच्छा हो या बुरा, सुखद या अप्रिय, प्रबंधन करना आसान या कठिन - सही परिप्रेक्ष्य में, चीजों की वास्तविकता को समझना, फिर अपने जीवन को बेहतर के लिए बदलने के लिए उपचारात्मक कदम उठाना, चाहे हम खुद को किसी भी स्थिति में पाएं। यह लचीलापन, आंतरिक शांति, शांति और खुशी को बढ़ावा देता है जो हम सभी अपने दिल के सबसे गहरे गड्ढों में चाहते हैं। आत्म-जागरूकता और आंतरिक रोशनी के लिए इस प्रयास के लिए इनाम, इसके बाद आंतरिक बीमारियों को त्यागना जो व्यक्तिगत रूप से हानिकारक हैं, और आंतरिक गुणों को विकसित करना जो व्यक्तिगत रूप से फायदेमंद हैं, शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय से कम नहीं है, इस सांसारिक जीवन में शुरू होकर, शांति के शाश्वत जीवन में अमर हो जाता है। इस पुस्तक में इसके पहले तीन भागों में उपयोग किया गया दृष्टिकोण है जहां पहला भाग मनुष्य की वास्तविकता और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को जानने से संबंधित है, दूसरा भाग आंतरिक विनाशकारी गुणों और अंधेरे आंतरिक आवेगों और उन्हें मिटाने के तरीकों को समझने से संबंधित है, और तीसरा भाग सबसे प्राचीन सकारात्मक उदात्त आंतरिक गुणों से संबंधित है जो अच्छे के अलावा कुछ भी नहीं प्रदान करते हैं और उन्हें सभी को बाहर निकालने के तरीकों पर व्याख्या करते हैं भीतर अंधेरा। इन लेखों में व्याप्त ज्ञान का प्रकाश अंधेरे, नकारात्मकताओं, हानिकारक आवेगों, निराशा को दूर करेगा और इसके बजाय उन्हें हमारे जीवन को बेहतर बनाने या हमारे बिखरे हुए जीवन का पुनर्निर्माण करने की इच्छा के साथ बदल देगा, लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता पैदा करेगा। नतीजतन, आत्मा के भीतर की गहराई से निकलने वाला प्रकाश, उस छोर तक स्ट्रावर के चारों ओर सब कुछ ढक लेगा। जैसे-जैसे यह प्रकाश अपनी तीव्रता में बढ़ता है और फैलता है, उतना ही अधिक चारों ओर का अंधेरा दूर होता जाता है, हमारे आंतरिक प्राणियों, समुदायों, राष्ट्रों और दुनिया को रोशन करता है, रहस्यमय और उल्लेखनीय तरीकों से सभी के लिए चीजों को बदल देता है। यह आदर्शवादी

लग सकता है, लेकिन यह पुस्तक संभव की कला को दिखाती है। उस प्रक्रिया में, यह मानवता द्वारा निर्मित सबसे महान ऋषियों और शिक्षकों में से एक के ज्ञान के कालातीत खजाने के माध्यम से असंभव प्रतीत होने वाले मार्ग को रोशन करता है।

ज्ञान और मार्गदर्शन का दिव्य प्रकाश आपके जहाज का नाविक हो, जो इस अल्पकालिक और क्षणिक सांसारिक अस्तित्व के तूफानी पानी के समुद्र में एक किनारे की शांति और सुरक्षा की तलाश कर रहा हो, जो शाश्वत आनंद और अनन्त विजय के अमर अस्तित्व में हो।

प्रस्तावना

بسم الله الرحمن الرحيم

भगवान के नाम पर, सबसे दयालु, सबसे दयालु

हम इस ग्रंथ की शुरुआत मनुष्य के वास्तविक उद्देश्य और मूल्य को समझने के साथ करते हैं। यह जानते हुए, चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि के साथ एक को हथियार देता है, जो बदले में सभी नकारात्मकताओं को मिटाने और सकारात्मक दृष्टिकोण और आंतरिक स्वभाव के साथ आंतरिक शून्य को भरने के लिए आवश्यक है, ताकि किसी के जीवन को बेहतर के लिए बदल दिया जा सके। यह परिवर्तन मनुष्य के दिल और आत्मा में शुरू होता है और जैसे-जैसे यह आंतरिक प्रकाश मजबूत होता है, यह बाहर जाता है और पूरे समुदायों, राष्ट्रों और परिणामस्वरूप दुनिया को बदल देता है। इसलिए, किसी के अस्तित्व की वास्तविकता और किसी के जीवन के उद्देश्य को जानना अनिवार्य है और यह कैसे शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय में जुड़ता है। फिर हमें उन कारकों को जानने की जरूरत है जो हमें इस पोषित लक्ष्य से पीछे रखते हैं और कारक जो इसकी उपलब्धि को सुविधाजनक बनाते हैं। यह हमें उन बाधाओं के बारे में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जिनसे बचने की आवश्यकता है और महान आंतरिक गुणों को विकसित करने की आवश्यकता है, जिन्हें लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय की हमारी यात्रा को पूरा करने के लिए विकसित करने की आवश्यकता है, भले ही हमारी चिंता, अशांति या उथल-पुथल की वर्तमान स्थिति कुछ भी हो।

भाग 1: किसी की आंतरिक वास्तविकता को जानना आज मानवता के सामने आने वाले संकटों, संघर्षों और चुनौतियों को हल करने का मार्ग प्रशस्त करता है

ग़ज़ाली ने फ़ारसी में लिखी अपनी पुस्तक "*किमिया-ए-सादत*" या "अल्केमी या ट्रांसफॉर्मेटिव एजेंट ऑफ़ चेंज फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" में शाश्वत सुख और वास्तविकता और जीवन के उद्देश्य की व्याख्या इस प्रकार की है [1]:

अनगिनत और अनंत कृतज्ञता और प्रशंसा, आकाश के सितारों, वर्षा की बूंदों, पेड़ों की पत्तियां, रेगिस्तान के रेत के कण, और आकाश और पृथ्वी के परमाणुओं के समान, केवल ईश्वर के हैं, जिनका अंतर्निहित गुण उनकी एकता है, और महिमा, महानता, उच्चता और उत्कृष्टता उनकी विशिष्ट विशेषताएं और उदात्त गुण हैं। कोई भी मनुष्य महामहिम की पूर्णता से अवगत नहीं है। उसके अलावा किसी के पास उसकी ग्नोसिस की वास्तविकता में रास्ता नहीं है। इसके बजाय उसके ज्ञान की वास्तविकता को प्राप्त करने में असमर्थता को स्वीकार करना, उसके अंतरंग और दोस्तों की ज्ञानरेखा का चरमोत्कर्ष है, और उसकी प्रशंसा और भजन में असमर्थता को स्वीकार करना, स्वर्गदूतों और भविष्यवक्ताओं द्वारा ईश्वरीय महिमा का चरमोत्कर्ष है। महामहिम की पहली किरण पर चकित होना, बुद्धिमान लोगों की बुद्धि का चरमोत्कर्ष है। उसकी सुंदरता की निकटता की तलाश में आश्चर्यचकित होने के लिए, राहगीरों और रहस्यवादी मार्ग के आध्यात्मिक यात्रियों का चरमोत्कर्ष है। इसका आधार ग्नोसिस की आशा को छोड़ना और अपने स्वयं के आधार स्व की इच्छाओं को छोड़ना है। उसके ज्ञान के मामले में पूर्णता का दावा करना समानता और समानता के बारे में सोचना है। सभी की आँखों में उनके अस्तित्व की सुंदरता को देखने में चकाचौंध में हिस्सा है। उनके अद्भुत कार्यों और रचनाओं को देखकर, आवश्यक ज्ञानज्ञान सभी बुद्धिओं द्वारा उत्पन्न फल है। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह अपने अस्तित्व की महानता पर विचार करने में सक्षम हो। कोई भी हृदय ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह उसके अद्भुत कार्यों के प्रति असावधान रहे, यहां तक कि एक पल के लिए भी कि उनकी वास्तविकता क्या है और किसकी शक्ति, वे प्रकट हैं। ऐसा इसलिए है ताकि कोई यह पहचान सके कि सभी निश्चित रूप से उसकी शक्ति के संकेत हैं, और उसकी महानता की रोशनी हैं। सभी चमत्कार और चमत्कार जो वहां हैं, उनकी बुद्धि से उभरे हैं, और सुंदरता के सभी प्रतिबिंब केवल उनकी रचनाएँ हैं। जो कुछ भी है, वह उसी से है और उसके कारण है। बल्कि, जो कुछ भी है, वह वह है। जैसा कि वास्तव में होता है, उसके अलावा किसी भी चीज़ का अस्तित्व नहीं है। बल्कि, सभी का अस्तित्व उसके अस्तित्व के प्रकाश का प्रतिबिंब है।

हे प्रिय प्रिय! यह अच्छी तरह से जान लें कि परमेश्वर ने मनुष्य को खेलने, घमंड और व्यर्थ के कामों के लिए नहीं बनाया है। बल्कि, किसी की ज़िम्मेदारी और उसमें मौजूद खतरे दोनों ही बहुत बड़े हैं, जैसे कि कोई [मूल में] अनन्त नहीं है, बल्कि निश्चित रूप से उसे हमेशा के लिए जीना है। यही है, यदि कोई हमेशा से नहीं है (या अनंत काल से रहता है), तो वह हमेशा के लिए होगा। यद्यपि किसी का शरीर मिट्टी से बनी संरचना के कारण महत्वहीन है, लेकिन किसी की आत्मा की वास्तविकता दिव्य होने के कारण जबरदस्त और प्यारी है। यद्यपि इसकी उत्पत्ति पशुओं, जानवरों, राक्षसों और उनकी अशुद्धियों के गुणों के साथ मिश्रित है, लेकिन जब इसे कठिनाइयों में डाल दिया जाता है, तो यह अपनी अशुद्धियों से शुद्ध हो जाता है और दिव्य निकटता की क्षमता प्राप्त करता है। सबसे खराब से सबसे खराब होना और उच्चतम में से सर्वश्रेष्ठ होना इसका कार्य है। इसका सबसे निचला उतार यह है कि जानवरों, जानवरों और शैतानों के स्तर में गिरने से यह क्रोध और इच्छा के जाल में फंस जाता है। इसका शिखर यह है कि यह (आत्मा) स्वर्गदूतों के पद तक पहुँचती है [यानी, आध्यात्मिक क्षेत्र में] और इच्छा और क्रोध की उलझनों को दूर करती है [और सभी नकारात्मकताएँ जो उनकी अभिव्यक्तियाँ हैं] और इसके बजाय उन्हें अपना कैदी बना देती है, और यह उनका स्वामी और राजा बन जाता है। जब राजत्व का यह पद प्राप्त हो जाता है, तो व्यक्ति ईश्वरीय पूजा और दासता के योग्य हो जाता है। पूजा करने की यह क्षमता स्वर्गदूतों की विशेषता है और मनुष्य के पद की पूर्णता है। जब किसी को दिव्य सौंदर्य के प्रेम का स्वाद मिलता है, तो वह दिव्य दृष्टि से वंचित एक पल भी नहीं बिता सकता है। अंतहीन सुंदरता और अनुग्रह का दृश्य व्यक्ति का स्वर्ग बन जाता है। आंख, पेट और दैहिक सुखों का स्वर्ग व्यक्ति के लिए महत्वहीन और बेकार हो जाता है। चूंकि मनुष्य का आधार अपने जन्म की शुरुआत में अपूर्ण और महत्वहीन होता है, इसलिए कठिनाई और उपचार के बिना पूर्णता प्राप्त करना संभव नहीं है, जैसे कि पीतल और तांबे को शुद्ध करने वाली कीमिया और उसे सोने में बदल देती है, अत्यंत कठिन है। हर कोई इसकी पहचान नहीं कर सकता। इसी तरह, यह कीमिया जो मनुष्य के आधार को पाशविक और पशुवत आदतों की अशुद्धियों से शुद्ध करती है और उसमें देवदूत [आध्यात्मिक] शुद्धि लाती है जिसके कारण वह शाश्वत आनंद प्राप्त करती है। इस कीमिया को प्राप्त करना बहुत मुश्किल है [जो कि परिवर्तन का परिवर्तनकारी एजेंट है,] और हर व्यक्ति इसे नहीं जानता है। इस ग्रंथ को लिखने का उद्देश्य इस कीमिया के तत्वों को बताना है जो वास्तव में शाश्वत आनंद की कीमिया है। इसी वजह से हमने इस किताब का नाम "*किमिया-ए-सआदत*" या "कीमिया या ट्रांसफॉर्मेटिव एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" रखा है। "कीमिया" नाम इस पुस्तक के लिए बहुत उपयुक्त है। इसका कारण यह है कि तांबे और सोने में, पीलेपन और वजन के अलावा कोई अंतर नहीं है, और इस कीमिया से [जो तांबे को सोने में बदल देता है,] इस दुनिया में अमीर बनने के अलावा कोई अन्य वस्तु नहीं है। सांसारिक जीवन कुछ दिनों का होता है। सांसारिक धन अपने आप में कुछ भी नहीं है। मवेशियों की आदतों और स्वर्गदूतों के गुणों के बीच अंतर की एक बड़ी दुनिया है। इस कीमिया का फल शाश्वत आनंद [और अनन्त सफलता] है। इसकी अवधि का कोई अंत नहीं है [क्योंकि यह शाश्वत है और हमेशा और हमेशा के लिए रहेगा, एक इंसान को अमर बना देगा]। इसके आशीषों के प्रकारों का कोई अंत नहीं है। कोई भी अशुद्धता इसकी शुद्धता और स्पष्टता में प्रवेश नहीं कर सकती है और हस्तक्षेप नहीं कर सकती है। यह पुस्तक वास्तव में कीमिया है। इसके अलावा (यानी, इस पुस्तक "*किमिया-ए-सादत*" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस") में

प्रस्तुत शिक्षाएं और व्याख्याएं), किसी और चीज को कीमिया के रूप में नाम देना अन्य, रूपक के अलावा और कुछ नहीं है।

हे प्रिय प्रिय! आपको पता होना चाहिए कि जिस तरह सोने में तांबे और अन्य आधार तत्वों को बदलने की कीमिया हर बूढ़ी औरत की झोपड़ी में नहीं पाई जाती है, बल्कि यह अत्यधिक समृद्ध व्यक्तियों और राजाओं के खजाने में पाई जाती है। इसी तरह, शाश्वत आनंद [और अनन्त विजय] की कीमिया भी हर जगह नहीं पाई जाती है। बल्कि यह दिव्य खजाने में पाया जाता है। स्वर्ग में यह दिव्य खजाना, स्वर्गदूतों और पृथ्वी पर है, [सच्चे] भविष्यद्वक्ताओं [परमेश्वर] के शुद्ध हृदय हैं। जो कोई भी पैगंबर की अदालत को छोड़कर कहीं भी इस कीमिया की खोज करेगा, वह भटक जाएगा और अंततः धोखा खा जाएगा और धोखा खा जाएगा। किसी को व्यर्थ कल्पना के अलावा कुछ नहीं मिलेगा। न्याय के दिन किसी की दरिद्रता स्पष्ट हो जाएगी, और पूरी सृष्टि उसके नकली (झूठे) सिक्कों को जान लेगी, और हर किसी की गुमराह बुद्धि समझदार हो जाएगी [और उस वास्तविकता और सत्य को जान लेगी जिससे वह अपने पूरे जीवन में बेखबर था]। कोई [दिव्य] उद्घोषणा की पुकार सुनेगा:

لَّقَدۡ كُنتَ فِي غَفۡلَةٖ مِّنۡ هَٰذَا فَكَشَفۡنَا عَنكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ ٱلۡيَوۡمَ حَدِيدٞ

"आप निश्चित रूप से इस बारे में लापरवाही और अज्ञानता में थे। हमने तुमसे पर्दा हटा दिया है, इसलिए आज तुम्हारी दृष्टि तेज है [जैसा कि पहले तुमसे छिपा हुआ था वह अब तुम्हारे तेज फोकस में है]। (कुरान, अध्याय 50, श्लोक 22)

सभी दयालु लोगों (यानी, परमेश्वर) में सबसे दयालु लोगों की दया और आशीषों में से एक सबसे बड़ी दया यह है कि उसने दुनिया में एक लाख चौबीस हजार भविष्यद्वक्ताओं (उन सभी पर शांति हो) को इस कीमिया के नुस्खे (सामग्री और निर्माण) को परमेश्वर की रचना (दुनिया के लोगों) को सिखाने के लिए भेजा, और उन्हें कहने के लिए कि वे हृदय के नकद सिक्के को कठिनाई की निहाई में डालें, और उन्हें बुरी नैतिकताओं से हृदय के सुधार का मार्ग सिखाएं जो हृदय की कठोरता और मैला का कारण बनती हैं, और हृदय को अच्छी नैतिकता और उदात्त गुणों से सजाने का तरीका, और उन्हें [दुनिया के] सभी लोगों को सिखाएं। इसलिए, ईश्वर ने अपनी महिमा और संप्रभुता [अपने प्रभुत्व की] द्वारा स्वयं की प्रशंसा की, इसलिए उन्होंने पैगंबरों को भेजने के अपने गुण की घोषणा की [और विशेष रूप से, उनके रसूल पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो)] और इसे सृष्टि पर अपने पक्ष के रूप में संदर्भित किया और कहा:

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلْأَرْضِ ٱلْمَلِكِ ٱلْقُدُّوسِ ٱلْعَزِيزِ ٱلْحَكِيمِ ١
هُوَ ٱلَّذِي بَعَثَ فِي ٱلْأُمِّيِّـۧنَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ
وَٱلْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا۟ مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ٢

"स्वर्ग और पृथ्वी पर जो कुछ भी है उसकी महिमा करता है परमेश्वर, राजा, पवित्र, शक्तिशाली, बुद्धिमान। यह वह है जिसने अनपढ़ों के बीच एक रसूल [पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आशीष) को आपस में भेजा जो उन्हें अपने रहस्योद्घाटन का पाठ करता है और उन्हें शुद्ध करता है [आत्मा की आंतरिक शुद्धि के साथ] और उन्हें पुस्तक और ज्ञान सिखाता है। और इससे पहले, वे अज्ञानता में प्रकट थे। (कुरान, अध्याय 62, श्लोक 1-2)

[अरबी] शब्द "*युज़क्किहिम*" (जिसका अर्थ है "उन्हें उनके दिल और आत्माओं की आंतरिक शुद्धि के साथ, सभी अशुद्धियों और मैलापन से, उनके सभी रूपों और अभिव्यक्तियों में शुद्ध करता है") [उपरोक्त कविता में] उन्हीं निंदनीय [अंतर्निहित] लक्षणों और गुणों को संदर्भित करता है जो जानवरों के गुण हैं और जिनसे ईश्वर के दूत [पैगंबर मुहम्मद] (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) उन्हें मुक्त करते हैं [या प्रक्रिया के माध्यम से उन्हें शुद्ध करते हैं उनकी उदात्त शिक्षाओं और आध्यात्मिक पूर्णता के माध्यम से आंतरिक शुद्धिकरण और आध्यात्मिक परिवर्तन की]। [अरबी] शब्द "*यु'अल्लिमुहुमुल किताबा वाल-हिकमाटा*" [जिसका अर्थ है "और उन्हें पुस्तक और ज्ञान सिखाता है" उसी उपरोक्त कविता में] यह संदर्भित करता है कि वह उन्हें स्वर्गदूतों के गुणों की पोशाक से सजाता है। और यह इस कीमिया का उद्देश्य और उद्देश्य है (यानी, पूर्ण आंतरिक और आध्यात्मिक परिवर्तन का परिवर्तनकारी एजेंट) कि एक मनुष्य को सभी हानिकारक और अवांछित चीजों (यानी, आत्मा के सभी आंतरिक दोष और हानिकारक नकारात्मक प्रवृत्तियों) [जो मानव कल्याण के लिए हानिकारक हैं] से शुद्ध और शुद्ध होना चाहिए, और [आंतरिक आध्यात्मिक] पूर्णता के गुणों से अलंकृत होना चाहिए। सभी कीमियाओं में सबसे बड़ी और सबसे उत्कृष्ट कीमिया यह है कि किसी को दुनिया से अपना चेहरा मोड़ लेना चाहिए (सांसारिकता, भौतिकवाद, स्वार्थी इच्छाएं, और सभी निंदनीय, निम्न और नकारात्मक गुण) और सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति चौकस बनें जैसा कि ईश्वर के दूत को सिखाया गया है (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो):

وَٱذْكُرِ ٱسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا

"*वडकुरुस्मा रब्बिका वा तब्बताल इलायही तब्तेला*"

"और अपने रब के नाम को स्मरण करो और अपने आप को पूरी भक्ति के साथ [उसके लिए] समर्पित करो। (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 8)

[अरबी शब्द] "*तब्तीला*" [उपरोक्त श्लोक में] का अर्थ है सर्वशक्तिमान ईश्वर के अलावा सभी से अलगाव करना, और अपने आप को पूरी तरह से सर्वशक्तिमान ईश्वर के सामने समर्पित कर देना और अपने आप को सर्वशक्तिमान ईश्वर के विशेषाधिकार के हवाले कर देना [केवल उस पर भरोसा करके और अपने सभी मामलों के निपटान में उसे अकेले देखकर]। यह इस कीमिया [शाश्वत खुशी और कभी न खत्म होने वाली सफलता का] का संक्षिप्त वर्णन है। इसका विवरण बहुत लंबा और असीम है। लेकिन इसका शीर्षक चार चीजों को जानना है, [और] इसके आवश्यक तत्व चार व्यवहारों को जानना है, और प्रत्येक आवश्यक तत्व में दस बुनियादी सिद्धांत हैं।

चार उपाधियाँ [शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता की इस कीमिया] हैं:

(1) स्वयं को जानना,

(2) परमेश्वर को जानना,

(3) दुनिया की वास्तविकता को जानना, और

(4) परलोक की वास्तविकता को जानना।

उपरोक्त चार बातों को जानना वास्तव में इस्लाम को जानने का शीर्षक है (यानी, ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण)। लेकिन इस्लाम के आवश्यक तत्वों के मामले चार हैं।

दो आवश्यक तत्व बाहरी स्व ("*ज़हीर*") और दो आंतरिक स्व ("*बैटिन*") से संबंधित हैं।

बाहरी स्व से संबंधित दो आवश्यक तत्व हैं:

(1) परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना। इन्हें पूजा के [बाहरी] कार्य ("इबाद") कहा जाता है।

(2) किसी की आवाजाही और आजीविका के मामले में उन्हें ध्यान में रखना। इन्हें [सामाजिक] व्यवहार ("*मुआमलत*") *कहा जाता है*।

आंतरिक स्व ("बैटिन") से संबंधित दो आवश्यक तत्व हैं:

(1) हृदय [या आत्मा] को क्रोध, कंजूसपन, अहंकार, अभिमान, आत्म-धार्मिकता आदि जैसी सभी बुरी [आंतरिक] नैतिकताओं से शुद्ध रखना। इन [बुरे और निम्न आंतरिक चरित्र लक्षण या] नैतिकता को विश्वास के रास्ते में "*मुहलिकत*" (नकारात्मकता या आंतरिक दोष या आत्मा की विनाशकारी विशेषताएं) और "*अकाबात*" (अंधेरे और संकरे स्थान जहां लोग लुटेरों के शिकार हो जाते हैं) कहा जाता है।

(2) हृदय [या आत्मा] को धैर्य, कृतज्ञता, प्रेम, आशा, ईश्वर में विश्वास आदि जैसे अच्छे [आंतरिक] नैतिकता से सजाना। इन नैतिकताओं को "*मुनाज्जियत*" कहा जाता है (सकारात्मक विशेषताएं या आत्मा के सभी उच्च आंतरिक चरित्र लक्षण जो इसे मोक्ष, आनंद, सच्ची [शाश्वत] खुशी, और [चिरस्थायी] सफलता) लाते हैं।

पहला [चार] आवश्यक तत्व जिसमें [परमेश्वर की] पूजा का उल्लेख है, दस नींवों से मिलकर बना है। वे हैं:

(1) अहल अल-सुन्नत *की मान्यताओं के मामले में* (यानी, जो प्रामाणिक पारंपरिक पद्धति पर हैं जो सभी स्तरों पर संचरण और प्रमाणित विद्वता की एक अटूट श्रृंखला पर निर्भर करती है [बाहरी जीवन, आंतरिक विश्वास और आध्यात्मिकता का संचालन करने की] जो पैगंबर मुहम्मद [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो] और उनके माध्यम से सर्वशक्तिमान ईश्वर तक जाती है),

(2) ज्ञान प्राप्त करने के मामले में,

(3) स्वच्छता (या बाहरी शुद्धता) के मामले में,

(4) प्रार्थना के मामले में (भगवान से),

(5) जकात (या अनिवार्य गरीब-देय या दान) के मामले में,

(6) उपवास के मामले में,

(7) *हज के मामले में (या मक्का में* काबा *की तीर्थयात्रा* जो पृथ्वी पर ईश्वर और उसकी दया का प्रतीक है),

(8) पवित्र कुरान के पाठ के मामले में,

(9) परमेश्वर के स्मरण के मामले में, आह्वान, और प्रार्थनाएँ, और

(10) मुकदमेबाजी की व्यवस्था करने के मामले में [किसी की सभी जरूरतों के लिए भगवान का आह्वान करने के लिए - भौतिक और आध्यात्मिक दोनों]।

आपसी व्यवहार से संबंधित दूसरा आवश्यक तत्व [सभी लोगों के साथ] भी दस नींव [या सिद्धांत] हैं:

(1) भोजन लेने के शिष्टाचार,

(2) विवाह के शिष्टाचार,

(3) व्यापार और व्यवसाय के शिष्टाचार,

(4) वैध की तलाश करने के शिष्टाचार [और गैरकानूनी से परहेज],

(5) साहचर्य के शिष्टाचार,

(6) एकांत के शिष्टाचार,

(7) यात्रा और यात्रा के शिष्टाचार,

(8) पाठ के शिष्टाचार ("सामा'" या ईश्वर के लिए प्रेम और लालसा से संबंधित भक्ति पाठ) और [परिणामी आध्यात्मिक] परमानंद

(9) अच्छाई का आदेश देने और बुराई को निषेध करने का शिष्टाचार, और

(10) शासकों और शासितों के लिए शिष्टाचार।

"मुहलिकत" *(या आत्मा की विनाशकारी बुराइयों) से संबंधित तीसरे आवश्यक तत्व की भी दस नींव [या सिद्धांत] हैं:*

(1) [आंतरिक] आत्म-अनुशासन के शिष्टाचार [और निचले स्व की मूल इच्छाओं पर अंकुश लगाने के लिए आध्यात्मिक अभ्यास ("*नफ्स*")],

(2) भोजन और शारीरिक सुखों में अति-भोग के लिए इलाज के शिष्टाचार,

(3) अत्यधिक बात करने और जीभ की बुराइयों के इलाज के शिष्टाचार,

(4) क्रोध, अहंकार और झूठे सम्मान के इलाज के शिष्टाचार,

(5) दुनिया के प्यार के इलाज के शिष्टाचार,

(6) संपत्ति [और धन] के लिए प्यार के इलाज के शिष्टाचार,

(7) धूमधाम और सम्मान के इलाज के शिष्टाचार (आत्म-महिमा और आत्म-बड़ाई),

(8) दिखावा और पाखंड के इलाज के शिष्टाचार,

(9) अहंकार और आत्म-धार्मिकता के इलाज के शिष्टाचार, और

(10) अभिमान और लापरवाही के इलाज के शिष्टाचार।

"मुंजियात" *(या आत्मा के महान आंतरिक गुण जो इसे मोक्ष और आनंद लाते हैं) से संबंधित चौथे आवश्यक तत्व की भी दस नींव [या सिद्धांत] हैं:*

(1) पश्चाताप [परमेश्वर के लिए किसी ने किए गए अधर्म से और परमेश्वर से क्षमा मांगना],

(2) धैर्य [विपत्तियों पर] और कृतज्ञता [ईश्वरीय आशीर्वाद और अनुग्रह के लिए भगवान के प्रति],

(3) परमेश्वर का भय और आशा [परमेश्वर में],

(4) गरीबी [या ईश्वर के सामने पूर्ण आवश्यकता की स्थिति] और तपस्या,

(5) [अच्छा] इरादा, ईमानदारी और सच्चाई,

(6) भक्ति और आत्म-जवाबदेही,

(7) [आध्यात्मिक] चिंतन (या "*मुराकाबा*" या किसी के दिल पर भगवान की निगाहें पर विचार करना, आत्म-प्रतिबिंब और आलोचनात्मक आत्म-मूल्यांकन),

(8) परमेश्वर की एकता [या एकता] और परमेश्वर पर भरोसा,

(9) परमेश्वर का प्रेम, और

(10) मृत्यु और उसका स्मरण (या चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए अपनी स्वयं की अपरिहार्य मृत्यु दर और किसी के सांसारिक अस्तित्व के अंत पर विचार करना)।

यह आवश्यक तत्वों की सूची है और "*किमिया-ए-सादत*" या "शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के लिए परिवर्तन की कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट" पुस्तक की मूल बातें हैं। हम चार शीर्षकों और चालीस सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से समझाएंगे और अपनी कलम को कठिन वाक्यांशों और जटिलताओं में लिप्त होने से रोकेंगे ताकि यह पुस्तक आसानी से समझ में आ सके। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो कोई भी शोध करना चाहता है या जटिलताओं में गहराई से जाना चाहता है, उसे हमारी अरबी पुस्तकों जैसे "इह्या *अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार", "*जवाहिर अल-कुरान*" या "कुरान के गहने" या इस अनुशासन पर अन्य संकलनों से परामर्श और अध्ययन करना चाहिए। इस पुस्तक का उद्देश्य आम जनता को [शाश्वत खुशी और अनन्त विजय की इस कीमिया] की व्याख्या करना है।

ग़ज़ाली तब इस कीमिया के चार शीर्षकों (या आवश्यकताओं) और चालीस सिद्धांतों या शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय के परिवर्तनकारी एजेंट की एक अद्भुत व्याख्या प्रदान

करती है। शाश्वत आनंद की कीमिया के उन्हीं चालीस सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या ग़ज़ाली द्वारा ज्ञान के अपने चार-खंड संग्रह "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" में जबरदस्त विवरण में प्रदान की गई है। ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "*किमिया-ए-सादत*" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" के परिचय के बाद, कीमिया या शाश्वत आनंद के परिवर्तनकारी एजेंट की चार आवश्यकताओं का विवरण प्रदान किया है। शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता प्राप्त करने के लिए पहली उपाधि या आवश्यकता की अपनी व्याख्या में, अर्थात् "अपने स्वयं को जानना", ग़ज़ाली लिखते हैं [2]:

स्वयं को जानना

प्रिय प्रिय! सावधान रहें कि स्वयं को जानना ईश्वर की प्राप्ति की कुंजी है। इसलिए उसके द्वारा यह निर्धारित किया गया है कि:

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ

"जिसने अपने आप को पहचाना, उसने अपने भगवान को पहचाना।

سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ

"हम उन्हें ब्रह्मांड के सबसे दूर तक और उनके अपने स्वयं (आत्माओं) में अपने संकेत दिखाएंगे, जब तक कि यह स्पष्ट रूप से उनके सामने प्रकट न हो जाए कि यह सत्य है। (कुरान, अध्याय 41, श्लोक 53)।

प्रिय प्रिय! इस पूरी दुनिया में आपके अपने 'स्व' (नफ्स) से अधिक कुछ भी आपके निकट नहीं है। इसलिए, यदि आप अपने स्वयं के अस्तित्व के बारे में जागरूक होने की कोशिश नहीं करेंगे, अर्थात, अपने बारे में, तो आप और क्या व्यर्थ देखने की कोशिश करेंगे? यदि आप सोचते हैं कि 'हम अपने आप को मानते हैं और पहचानते हैं' तो आप निश्चित रूप से गलत हैं, क्योंकि इस तरह के ज्ञान का कोई उपयोग नहीं हो सकता है। यह, किसी भी परिस्थिति में, ज्ञानवाद ("मारिफा") की कुंजी नहीं हो सकती है, सर्वोच्च

भगवान और ब्रह्मांड के स्वामी (यानी, भगवान) के ज्ञान के लिए मानवीय प्रयास के लिए। क्योंकि, इस तरह, जानवर भी अपने बारे में जानते हैं। वे भी अपने शरीर के ऐसे दृश्य अंगों को बना सकते हैं जैसे उनका सिर, उनका मुख, उनके हाथ, उनके पैर और उनका मांस आदि, जबकि आप अपने दूसरे के बारे में जानते हैं कि भूख लगने पर भोजन करते हैं, जिससे आप क्रोधित होते हैं और जब दैहिक इच्छाओं की इच्छा आप पर हावी हो जाती है, आप विवाह में प्रवेश करते हैं। इसलिए, आप और इन जानवरों में क्या अंतर है? वास्तव में, आपको यह जानना चाहिए कि आप क्या हैं, आप कहां से आए हैं और कहां जाएंगे? आपके यहां (इस दुनिया में) आने का क्या कारण है? प्रभु ने तुम्हें किस उद्देश्य के लिए बनाया था? संक्षेप में, आपके लिए क्या अच्छा है और आपके लिए क्या बुरा है?

यहाँ तक कि पक्षी और जानवर भी शैतान की कुछ विशेषताओं के अलावा, तुम्हारे पास मौजूद गुणों से संपन्न हैं। फिर भी, आपके चरित्र के ऐसे लक्षण हैं जिनमें आप और देवदूत बराबर हैं। फिर आपकी क्षणिक और स्थायी विशेषताएं क्या हैं? आपकी उत्पत्ति, सार क्या है? इसलिए, जब तक आप अपने बारे में इन महत्वपूर्ण 'बुनियादी बातों को नहीं समझ लेते' तब तक आप धन्य का दर्जा प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

इन गुणों में से प्रत्येक का अपना विशिष्ट 'भोजन' होता है जो इसे पोषण देता है, बनाए रखता है और इसके विकास को बढ़ावा देता है, जिसके परिणामस्वरूप अच्छाई और प्रशंसनीय व्यवहार को बढ़ावा मिलता है। जानवरों की बेहतरी, जैसा कि कोई देखता है, खाने, पीने और स्वस्थ और मजबूत होने में निहित है। इसलिए, यदि आप भी एक जानवर हैं तो आपको दिन-रात उनके तरीकों का पालन करना चाहिए, अपने पेट को पूरी तरह से भरना चाहिए और अपनी शारीरिक इच्छाओं को पूरा करना चाहिए।

हमला और हत्या जंगल के जानवरों की प्रमुख विशेषताएं हैं। स्वाभाविक रूप से उन्हें ऐसा करना उचित है, जबकि बुराई, उसके प्रभाव, खलनायक कार्य और विश्वासघात शैतान के संकेत और प्रतीक हैं। इसलिए, यदि आपको लगता है कि आप भी इन शैतानों में से एक हैं, तो आपको उनके नक्शेकदम पर चलकर अपने दिल को खुश करना चाहिए। दूसरी ओर, जानवरों और जानवरों के विपरीत, ईश्वर की भव्यता की तलाश करना स्वर्गदूतों की आत्माओं के लिए भोजन है। और यदि आप स्वर्गदूतों से हैं, तो आपको उनकी तरह, परमेश्वर की महिमा को देखने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि आप अनैतिक कामुक सुखों और अपने साथी मनुष्यों पर अहंकारी क्रोध से मुक्त हो जाएं।

फिर अपने अंदर की आत्मा को अपने आप में खोजो, अपने आप में सत्य की खोज करने के लिए। ऐसा इस तरह के समर्पण के साथ करो कि तुम महसूस कर सको कि तुम, जानवरों, शिकार के पक्षियों और जानवरों के बीच परमेश्वर द्वारा बनाए गए एक समान गुण सामान्य भलाई के लिए हैं, न कि इस लिए कि

तुम भी जानवर और अत्याचारी बन जाओ। पशुओं, पक्षियों और जानवरों को आपकी सेवा करने के लिए बनाया गया है।

ईश्वर के समझदार और जानकारों ने इस स्थिति को 'ईश्वर के मार्ग में और ईश्वर के सामने होने की' '*जनीब-ए-इलाहिया' कहा है*। लोग (यानी आम लोग) इसे स्वर्ग कहते हैं। इस प्रकार, यह आपका कर्तव्य है कि आप ईश्वर द्वारा आप में डाले गए महान, सद्गुण आंतरिक मूल्य के लिए पूरी तरह से जीवित बनें ताकि आप उसकी सूक्ति ("मारिफा") प्राप्त कर सकें। वास्तव में, एक सबसे दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति है, जो '*दीन*' (भगवान के लिए मार्ग) के मूल्य को जानने के बावजूद इससे दूर रहता है।

प्रिय प्रिय! यदि आप ईमानदारी से अपने आंतरिक स्व के बारे में एक अंतर्दृष्टि प्राप्त करना चाहते हैं, तो जान लें कि भगवान ने आपको दो चीजों से उत्पन्न किया है, अर्थात्, बाहरी संरचना, शरीर जो आंखों को दिखाई देता है और आंतरिक आत्मा जिसे '*नफ्स* (स्वयं), '*कल्ब* (हृदय), या *'रूह'* (आत्मा) कहा जाता है। हालाँकि, उन्हें '*बैटिन* (आंतरिक प्राणी) की आंखों के माध्यम से देखा जा सकता है, अर्थात, दूसरे दृश्यमान, अस्पष्ट स्व द्वारा। यही सत्यता मुख्य बात है, अनुल्लंघनीय आधार, अस्तित्व का प्रमुख अर्थ है। अन्य सभी चीजें इसके अधीन हैं (यानी, दिल के लिए)। इसलिए जब हम अपने दिल की बात कहने की बात करते हैं, तो हमारा मतलब वास्तव में सच होता है। कभी-कभी इसे 'आत्मा' ("रूह") कहा जाता है। कभी-कभी इसे '*नफ्स* कहा जाता है। *'कल्ब*, दिल का मतलब मानव शरीर के बाईं ओर स्थित मांस की गांठ नहीं है जो जानवरों के पास भी है और यहां तक कि मृतकों के पास भी है। यह 'कल्ब', यानी हृदय मानव जाति के लिए वास्तविक निर्विवाद तथ्य है। यह अद्वितीय, वास्तविक और प्रमुख सत्य है, जो प्रकट होने के बावजूद, मानव आंखों द्वारा नहीं देखा जा सकता है। यह 'शहादा' नामक [देखे या दृश्यमान] क्षेत्र से संबंधित है। यह एक ऊंचा डोमेन है। अच्छाई अपने पूरे वैभव में इससे निकलती है!

मांस की यह गांठ, हृदय, शरीर का शूरवीर है। शरीर का बाकी हिस्सा उसके सैनिक हैं या उसकी आदेशों के अधीन हैं। हृदय इस बल का राजा और सेनापति है। इसका मुख्य कर्तव्य ईश्वर की "*मारिफा*" या ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति है, इस आशय के लिए मनुष्य के हृदय में उनके द्वारा प्रदान की गई अंतर्निहित विशेषताओं के कारण उनके उदात्त लाभ की धारणा और प्राप्ति है। यह उसके प्रेम में धड़कता है। हर समय यह मुखर होता है, उसकी स्तुति का पाठ करता है, कि वह ही पूजा के योग्य है। केवल वह, यह लगातार उच्चारण कर रहा है, अपने लोगों पर दया करने या दंड लगाने की शक्ति रखता है। प्रतिशोध और प्रतिफल केवल उसका विशेषाधिकार है, वह अकेले ही आशीर्वाद दे सकता है या रोक सकता है। इस प्रकार, पूरे दिल से ईश्वर के "*मारिफा*" या ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करना इस लक्ष्य की कुंजी है।

हे प्रिय प्रिय! आपको यह समझना चाहिए कि आपको इसका मूल्यांकन करना चाहिए, क्योंकि आपका स्वयं एक उत्कृष्ट रत्न है। इसमें देवदूत संबंधी रिश्तेदारी है। उच्चतम शिखर इसका स्वर्ग है। यह परमेश्वर के परम श्रेष्ठ लक्ष्य के मार्ग पर चलने वाला एक महान पथिक है। जीवन के माध्यम से इस छोटी सी यात्रा में, यह हर समय [अपने अंतिम और अंतिम गंतव्य की ओर] यात्रा करते हुए व्यापार और कृषि और अन्य व्यवसायों में रहता है।

प्रिय मित्र! समझें कि जब तक आप अपने भीतर एक नज़र नहीं डालते, तब तक आप हृदय के बारे में सच्चाई को नहीं समझ पाएंगे ("*क़ल्ब*")। एक बार जब आप दिल को समझ लेते हैं, तो आपको उसकी सेना यानी उसकी अजेय शक्ति की खोज करनी चाहिए। फिर "*मारिफा*" (या ईश्वर की ज्ञान) और "*सादा*" (शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता) के बीच संबंध को पहचानने का प्रयास करें। सतही शरीर की तुलना में दिल की भव्यता को नकारा नहीं जा सकता है, जो लकड़ी के फ्रेम की तरह है, एक मात्र निष्क्रिय बुनियादी ढांचा है। यह कुछ भी नहीं है। यह मरे हुओं की तरह है। "*कल्ब*" से, यानी, हृदय, हमारा तात्पर्य आत्मा की सत्यता ("रूह") से है। आत्मा के बिना, शरीर मृत और मृत है। यदि कोई थोड़ी देर के लिए आँखें बंद कर लेता है और अपने भौतिक अस्तित्व के सभी विचारों को दूर कर देता है, जो पहले पूरी तरह से दृष्टि से दिखाई देता है और अपने स्वयं, अपनी आत्मा की खोज में तल्लीन हो जाता है, तो वह अपनी खोज को ढूंढ लेगा। वास्तव में, असली खोज दिल की है। यह परलोक में से एक को भी अवगत कराएगा। जो कुछ भी विपरीत है, उसे छोड़कर, व्यक्ति को एक साथ हृदय की विशालता का एहसास होगा।

'दिल' क्या है? दिल की विशेष विशेषताएं क्या हैं? ईश्वरीय कानून अपनी अकादमिक बहस की अनुमति नहीं देता है। इसलिए पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके महान साथियों ने इस मुद्दे पर चर्चा नहीं की है कि किस प्रकार ईश्वर ने कुरान में निम्नलिखित आयतों की घोषणा की थी:

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى

"और वे तुमसे आत्मा के विषय में पूछते हैं। कहो, आत्मा मेरे प्रभु की आज्ञा है। (कुरान, अध्याय 17 [इज़राइल की संतान], आयत 85)

أَلَا لَهُ ٱلْخَلْقُ وَٱلْأَمْرُ ۗ

"देखो, उसकी सृष्टि ('*खल्क*') है और उसका आदेश ('अम्र') है। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 54)

"खल्क" *के दायरे में*, निर्माण और "अम्र*"* का निर्माण, समन्वय एक दूसरे से बिल्कुल अलग है। "*खल्क*" (निर्माण), आयामी माप के तत्व, मात्रा और द्रव्यमान आसन्न हैं। शब्दकोश में, "*खल्क*" (या रचना) का अर्थ अनुमान को संदर्भित करता है। लेकिन मानव हृदय को इस परीक्षा में नहीं लाया जा सकता है, क्योंकि यह विभाजन को स्वीकार नहीं करता है। यदि हृदय विभाज्य हो सकता है, तो आधार अच्छा हो सकता है, जिससे यह एक समय में किसी मुद्दे पर या तो एक ऋषि या पूर्ण नौसिखिया हो सकता है। इस प्रकार, एक व्यक्ति *का एक साथ "अलीम*" (विद्वान या ज्ञान का व्यक्ति) और "*जाहिल*" (अज्ञानी) होना अकल्पनीय है। एंटीथिसिस में, हालांकि आत्मा ("रूह") को भगवान द्वारा बनाया गया है, यह भी पूरी तरह से अविभाज्य है, न ही इसका द्रव्यमान के कोड, माप या परिमाणीकरण से कोई संबंध है। "अम्र" (आदेश) ईश्वर की इच्छा है, जो प्रकट और सर्वोपरि है।

साथ ही, जो लोग आत्मा को कुछ ऐसा मानते हैं जो दूर, दूर और प्राचीन है, अवधि है, वे सभी गलत हैं। अवधि, जो परिसीमित है, सीमा और अधिकार के अधीन कैसे नहीं हो सकती है? जब आत्मा वास्तव में वास्तविक और अधिभावी है, तो भौतिक शरीर, शरीर आत्मा पर कैसे हावी हो सकता है? इस प्रकार, आत्मा "*अर्द*" या स्पैन कैसे हो सकती है?

इसी तरह, जिन लोगों ने आत्मा को शरीर कहा है, वे आत्म-विरोधाभासी हैं और इस तरह से धोखे में हैं। निश्चित रूप से, शरीर को टुकड़ों में विघटित किया जा सकता है लेकिन आत्मा को नहीं, जो कि पूर्वोक्त के रूप में अविभाज्य है। इस मुद्दे पर एक महीन बिंदु उठाते हुए, जानवरों में आत्मा को उसके अंतिम रूप से दूर किया जाना चाहिए, लेकिन वास्तविक आत्मा जिसे हम हृदय कहते हैं, वह ईश्वर की ज्ञान-विज्ञान का भव्य स्थान है ("*मारिफ़ा*") लेकिन जानवर इस [दूसरी आत्मा] से रहित हैं। आत्मा न तो भौतिक शरीर है और न ही स्पैन है, बल्कि एक शुद्ध देवदूत रत्न है जिसका मूल्यांकन करना मुश्किल है, इसे व्यक्त करने या बढ़ाने की अनुमति नहीं है। निर्धारित मापदंडों के भीतर ही इसका उचित ज्ञान हो सकता है:

وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُوا۟ فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ

"जो लोग हमारे लिए (हमारे मार्गों में) प्रयास करते हैं, हम निश्चित रूप से उन्हें अपने मार्गों पर ले जाएंगे। (कुरान, अध्याय 29, श्लोक 69)

وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ

"तेरे रब की सेनाओं को उसके सिवा कोई नहीं जानता। (कुरान, अध्याय 74, श्लोक 31)

उपरोक्त कुरान की आयतें स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि हृदय विशेष रूप से परलोक के लिए निर्धारित किया गया है। ईश्वर के आशीर्वाद की लालसा ही इसका उद्देश्य है। ये आशीषें परमेश्वर की ज्ञान-विज्ञान पर निर्भर हैं। किसी के उत्पाद द्वारा किसी चीज़ के लेखक या निर्माता के बारे में एक विचार मिलता है। मनुष्य की समझदार इंद्रियां किसी को उसे, उनके मूल्य का आकलन करने में मदद करती हैं। दुनिया के आश्चर्यों के उदात्त निर्माता के कार्य, प्रत्येक सरल और अपने स्वयं के गुण में अद्वितीय, हालांकि, केवल मनुष्य में विवेक की बाहरी और आंतरिक क्षमता के कौशल के माध्यम से उनके उत्कृष्ट आकर्षण के लिए सराहना और प्रशंसा की जा सकती है। धारणा और प्रवेश के दिखावटी गुण मुख्य रूप से शारीरिक कार्य हैं, लेकिन हृदय का वास्तविक उद्देश्य ईश्वर का "*मारिफा*" या सूक्ति है जिसे सतही रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार शरीर की संवेदी क्षमताएं फंदा (यानी, "पशु आत्मा") हैं, जबकि शरीर दोनों का धारक और वाहक है, फंदा और सवार (यानी, वास्तविक आत्मा या "मानव आत्मा")। इसलिए एकजुट करने वाला फ्रेम (यानी, शरीर) हृदय के लिए एक शर्त है, जो पानी, मिट्टी और गर्मी से बना है। इसलिए, यह इतना मजबूत नहीं है। यह आंतरिक ("बाटिन") और बाहरी ("*ज़हीर*") में अपेक्षित भोजन की कमी के कारण मृत्यु के खतरे के गंभीर रूप से उजागर होता है, आंतरिक और बाहरी इच्छाओं के कारण, जानवर जैसे तत्वों के कारण, जैसे कि आग और पानी, मनुष्य में बुनियादी विकासवादी अवयवों के रूप में। इसलिए, यह स्वाभाविक रूप से खाने के लिए भोजन और पीने के लिए पानी के लिए तरसता है। कोई आश्चर्य नहीं, इसने हमेशा इन दो ताकतों को एक तरफ भौतिक दुश्मनों का मुकाबला करने की आवश्यकता महसूस की है [जो मानव जीवन और इसकी भलाई के लिए खतरा है] और दूसरी तरफ लालच और क्रोध [क्योंकि ये और अन्य आंतरिक दोष आत्मा के जीवन और भलाई को खतरे में डालते हैं]। ये आंतरिक शक्तियां हैं। इसलिए, पहले आत्मा का सार आता है, फिर उसकी सेनाएं और उसके बाद आंतरिक की इन दुष्ट शक्तियों के खिलाफ "संघर्ष" (यानी, ईश्वर के मार्ग में आध्यात्मिक प्रयास) आता है। इसलिए, सबसे पहले आत्मा का सार आता है [जिसे "मानव आत्मा" के रूप में भी जाना जाता है, "पशु आत्मा" के विपरीत जो केवल मानव शारीरिक अंगों और इंद्रियों के जीवन में योगदान देता है], फिर इसकी सेनाएं या बल और उसके बाद "संघर्ष" या इन दुष्ट आंतरिक शक्तियों (यानी, बुराइयों और नकारात्मक प्रवृत्तियों) के खिलाफ प्रयास करना।

चूंकि अनदेखी चीजों को देखना और शरीर और आंतरिक स्व दोनों के अदृश्य शत्रु का पीछा करना संभव नहीं है, इसलिए शरीर के इन संवेदी अंगों और आंतरिक संवेदनाओं की आवश्यकता आवश्यक हो गई। [मानवीय इंद्रियां] देखना, सूंघना, चखना, छूना और सुनना शरीर के मूल संवेदी अंग हैं। उनमें से प्रत्येक एक विलक्षण कर्तव्य निभाता है। यदि उनमें से कोई भी गड़बड़ हो जाता है, तो यह चीजों को बाधित करेगा और इस दुनिया (यानी, सांसारिक जीवन) और परलोक के मामले प्रभावित होंगे। आंतरिक और बाहरी [मानव संकायों] की ये शक्तियाँ हृदय के नियंत्रण में हैं। ईश्वर ने अपनी सर्वोच्च बुद्धि में उन्हें अपने उदात्त आनंद के अनुसार हृदय के अधीन बनाया है, ताकि वे मानव शरीर की देखभाल कर सकें। ऐसा इसलिए है ताकि हृदय को अपना इनाम मिल सके, अपना शिकार प्राप्त हो सके, [ज्ञान के दिव्य वरदान के साथ] धन्य हो सके और परिणामस्वरूप, परलोक के लिए अपना सौदा पूरा कर सके। अच्छे की ये ताकतें,

स्वर्गदूतों की तरह बहुत अधिक भक्ति के साथ सेवा करती हैं, और गहरी खुशी में परमेश्वर की आज्ञा मानने में गहरा गर्व महसूस करती हैं। वे कभी भी उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य नहीं करते। हृदय के बारे में विवरण काफी लंबा है।

प्रिय प्रिय! उदाहरण के लिए, शरीर एक शहर की तरह है, हाथ और पैर इस शहर में श्रमिकों की तरह हैं। इच्छा इसका प्रमुख प्रेरक (यानी, उकसाने वाला) है। गुस्सा शहर के पुलिस प्रमुख की तरह है। दिल उसका राजा है और इसका कारण उसका प्रधानमंत्री है। राजा को सरकार चलाने के लिए उन सभी की आवश्यकता होती है लेकिन वासना, जो एक मजबूत प्रेरक शक्ति है, बुरी और उत्तेजक है। दूसरी ओर, बुद्धिमान प्रधानमंत्री की तरह बुद्धि हमेशा इसका विरोध करती है ताकि सरकार के धन का दुरुपयोग न हो या हड़प न लिया जाए। गुस्सा, जो पुलिस प्रमुख की तरह होता है, हमेशा अनियमित, प्रतिक्रियावादी और अपनी सीमाओं को पार करता है। इन परिस्थितियों में राजा जो इन सब से ऊपर है, सभी चीजों का दृढ़ता से जायजा लेता है, अपने प्रधानमंत्री (यानी बुद्धि) से सलाह लेता है और मामलों को नियंत्रण से बाहर नहीं जाने देता है। यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि इच्छा और क्रोध अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं [सीमा के भीतर], और बुराई को जड़ से खत्म करना राजा का प्रमुख कर्तव्य बन जाता है। यह हृदय की स्थिति है।

शरीर की रक्षा के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा भोजन और पानी उपलब्ध कराया गया है। ऐसे में वे शरीर के सेवक हैं। शरीर, बदले में, इंद्रियों के बोझ को पकड़ने और सहन करने के लिए बनाया गया है, अर्थात, संवेदनाओं के ये समझदार एजेंट, इसलिए वे शरीर के सेवकों के रूप में कार्य करते हैं। ये इंद्रियां या संवेदी क्षमताएं परमेश्वर की अद्भुत, विस्मयकारी रचनाओं की समझ और सच्ची सराहना के लिए तथ्यों को सीखने और आत्मसात करने के कारण के पहरेदार हैं। बुद्धि, अपनी ओर से, उनके मशाल-वाहक, चमकते पथ खोजक के रूप में कार्य करने के लिए है - मनुष्य को दिव्य सौंदर्य के अद्वितीय वैभव का आनंद लेने में सक्षम बनाने के लिए मार्गदर्शक - ईश्वर की सुंदरता उत्कृष्टता, जो उसने इस ब्रह्मांड में शून्य से विकसित और डिजाइन किया है। इसलिए, यदि यह (यानी, दिव्य सौंदर्य का साक्षी) "हृदय का अदन" है, तो बुद्धि (या "*अक़्ल*") इसका सेवक है। जैसे ही मनुष्य का हृदय इस तरह से मोहित हो जाता है और उसकी महिमा से मुग्ध हो जाता है, वह ईश्वर का धन्य सेवक बन जाता है। यह निम्नलिखित पवित्र आयत [कुरान से] में दर्शाया गया है:

وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

"मैंने (यानी, भगवान) जिन्नों (अलौकिक अदृश्य जीव जो पृथ्वी पर मौजूद हैं) और मनुष्यों को केवल मेरी पूजा करने के लिए बनाया है। (कुरान, अध्याय 51, श्लोक 56)

परमेश्वर ने मनुष्य को शासन करने के लिए हृदय और उसका राज्य दिया। उन्होंने एक को सेना प्रदान की - ऐसा करने के लिए बल, सवारी करने के लिए साधन भी, ताकि भव्यता के उच्च क्षेत्रों में वृद्धि हो सके। इसलिए, यदि कोई इस उच्च पद के उच्च अनुग्रह पर जीना चाहता है और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति अपनी प्रतिज्ञा का सम्मान करना चाहता है, एक विनम्र सेवक की तरह उसकी आज्ञा का पालन करना चाहता है, तो उसे अपने दिल और आत्मा से उसकी आराधना करनी चाहिए, और उसे इस आशय के लिए निर्धारित मार्ग पर चलना चाहिए। इन परिस्थितियों में, व्यक्ति को स्वयं को राजा के सिंहासन पर स्थापित करना चाहिए और परमेश्वर की उपस्थिति में रहना अपना अंतिम लक्ष्य बनाना चाहिए। व्यक्ति को अपने दिल की बात सुननी चाहिए, अच्छे कर्म करने चाहिए और परलोक को अपने स्थायी निवास का वास्तविक देश मानना चाहिए। इस प्रकार, किसी को इस दुनिया को क्षणभंगुर के रूप में मानना चाहिए, जीवन के माध्यम से यात्रा के लिए एक अस्थायी मार्ग, भगवान के साथ अंतिम मुलाकात के लिए। शरीर को सवार पर्वत, हाथ और पैर को सेवक, बुद्धि को प्रधानमंत्री और सांसारिक मामलों का पर्यवेक्षक मानना चाहिए। व्यक्ति को क्रोध को सख्त न्यायाधीश के रूप में लेना चाहिए और अपनी बुद्धि एजेंटों के रूप में ईश्वर द्वारा दी गई पांच इंद्रियों का उपयोग करना चाहिए। इसी तरह व्यक्ति को इस प्रकार प्राप्त प्रमाणों को छानने के लिए अपने दिमाग का उपयोग करना चाहिए और अपने रास्ते में आने वाले सभी बुरे खतरों और खतरों से खुद को बचाना चाहिए। प्रधान मंत्री, जो कि बुद्धि है, को भी इसी तरह यह सुनिश्चित करने के लिए कहा जाना चाहिए कि सब कुछ उसके अधिकार क्षेत्र में है और इसकी सेना, इसकी सेना इसके खिलाफ विद्रोह नहीं करती है। व्यक्ति को ऐसी योजना बनानी चाहिए ताकि किसी का प्रभार शांति का स्वर्ग बना रहे। यह सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति ईश्वर से आनंदमय इनाम और समृद्ध पुरस्कार का हकदार होगा। इतना ही, कि कोई जल्द ही उसके द्वारा विश्वासियों से वादा किया गया सफलता का मुकुट धारण करेगा। अन्यथा, एक को उन लोगों में गिना जाएगा जिन्होंने सब कुछ खो दिया। ऐसे अभागे व्यक्ति पर कार्रवाई की जाएगी और प्रतिशोध ही बहुत कुछ होगा।

नतीजतन, किसी को यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति का आंतरिक प्राणी, आत्मा की शक्तियों से सीधा संबंध है। इस प्रयोजन के लिए, व्यक्ति विशेष गुणों और विशेषताओं से संपन्न है। बुरे गुण और विशेषताएं एक को बर्बाद कर देती हैं, जबकि अच्छे लोग भाग्यशाली के उच्च स्तर पर उठाते हैं। हालांकि विविध हैं, इन स्वभावों (या आंतरिक गुणों) में से चार को मनुष्य में प्रमुख श्रेणियों के रूप में माना जा सकता है:

1) [जंगली जंगली] जानवरों की विशेषताएं,

2) स्वर्गदूतीय गुण,

3) शैतानी दुर्गुण,

4) जानवरों के लक्षण।

उदाहरण के लिए, मानव लालच किसी को अपवित्र आवेगों के अधीन कर देता है, जबकि सामान्य आग्रह, जैसे खाने, पीने, और प्राकृतिक यौन प्रवृत्तियों की पूर्ति का सहारा लेना, जो जानवरों के पास भी होता है, दोनों के लिए सामान्य रहता है (यानी, मनुष्यों और जानवरों के बीच)। दूसरी ओर, मनुष्य के [बर्बर] जानवर जैसे गुण जो शारीरिक तबाही से अपने दुश्मन पर हमला करने और उसे चीरने के हैं, एक बेकाबू क्रोध से प्रेरित होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप गंभीर झगड़े, छोटे-मोटे झगड़े होते हैं और उन लोगों की निंदा और दुर्व्यवहार होता है जिन्हें कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता।

इसके विपरीत, मनुष्य में बुद्धि, ज्ञान व्यक्ति को प्रेरित करता है, भगवान को प्रसन्न करने के लिए अच्छा करने और बुरे को रोकने के अंतर्निहित उद्देश्य के साथ सेराफिक कर्म करने के लिए। ऐसा व्यक्ति लोगों की शिक्षा (जागरूकता और ज्ञान) को बढ़ावा देता है, कई तरह से उनकी मदद करता है और आम तौर पर अपने साथी मनुष्यों के लिए एक सेवकाई देवदूत होता है। व्यक्ति ईश्वरीय सत्य की सराहना करता है और अज्ञानता और बुरे व्यवहार को [किसी के प्रति, गलत और] अवांछनीय मानता है।

इस प्रकार, चरित्र के इन विशेष झुकावों को मोटे तौर पर शिकारी कुत्तों की तरह प्रवृत्तियों, सूअर जैसे तरीकों, शैतानी दोषों और स्वर्गदूतों की आदतों के साथ दर्शाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कुत्ता देखने में बदसूरत नहीं है, लेकिन आदत से अनियंत्रित होने के लिए उपयुक्त है। इतना कि कई बार यह अपनी तरह से भौंकने लगता है। उसी तरह, सुअर प्राणियों में सबसे बदसूरत नहीं है, लेकिन गंदी और अशुद्ध चीजों के लिए अपने अव्यक्त सनक के कारण इसे आम तौर पर घृणा की जाती है। सूअर शब्द ही एक गंभीर शब्द और अभिशाप है। शैतान और कुत्ता समान रूप से स्थित हैं। मनुष्य में भी ये गुण होते हैं। "शैतानी गुणों" का यही अर्थ है। इसका विपरीत "देवदूत गुण" है। इन शब्दों का अर्थ क्रमशः शैतानी होना या देवदूत की तरह होना है।

इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "एक शैतान लगभग प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद है। मैं भी उससे अछूता नहीं हूं, लेकिन भगवान, दयालु ने मुझे उस पर आरोपित और अभिभूत कर दिया है। वह (यानी, शैतान) असहाय है [मेरे खिलाफ]"।

इसी तरह, मनुष्य को वासना और व्यभिचार के सूअरों और नरसंहार और जंगली क्रोध के इलाज पर काबू पाने की कोशिश करने के आदेश और दायित्व के अधीन है। इसलिए, मनुष्य को उन सभी का प्रतिवाद करना चाहिए जो दुष्ट और शातिर हैं। निस्संदेह, जो ऐसा करता है, उसे परमेश्वर द्वारा ऐसे पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा, जो इस तरह के उत्कृष्ट व्यवहार के कारण प्राप्त होते हैं। इसी तरह, बुरे चरित्र

की बदसूरत आदतें व्यक्ति को दुर्भाग्य की ओर ले जाएंगी और [अच्छी तरह से योग्य] भगवान द्वारा सजा [सरासर ईश्वरीय न्याय से] ।

ऐसे व्यक्ति की स्थिति की कल्पना की जा सकती है। कोई भी खुद को कुत्ते, सूअर या शैतान के सामने हथकड़ी पहने हुए खड़ा पाएगा। इसका कारण यह है कि यदि किसी विश्वासी को किसी अविश्वासी को सौंप दिया जाता है, तो उसके साथ जो व्यवहार किया जाएगा वह स्पष्ट है। और यदि एक स्वर्गदूत को सूअर, शाप या शैतान के हाथ में सौंप दिया जाए, तो उसकी स्थिति विश्वासी से भी बदतर होगी। किसी की पूरी तरह से निराशा और निराशा के लिए, सांसारिक क्रोध के लक्षण से शापित मनुष्य खुद को एक भयानक शिकारी कुत्ता या भेड़िये के रूप में पाएगा और जो वासनाओं का शिकार हो गया है, वह खुद को सूअर के रूप में देखेगा, न्याय के दिन। यदि किसी भेड़िया को सपने में किसी के द्वारा इसी तरह देखा जाता है, तो इसका मतलब यह होगा कि वह व्यक्ति अत्याचारी है। सुअर के मामले में, कोई अनुमान लगा सकता है कि एक गंदा और अपमानित है। एक व्यक्ति उनसे और उनकी पसंद से जितना दूर जाता है, उतना ही अधिक व्यक्ति का सामान्य व्यवहार और आंतरिक स्व इस बात के अनुरूप होगा कि कोई खुद को कैसे संचालित करता है।

अब जब हम आंतरिक स्व के आदेश देने वालों के बारे में जानते हैं, तो अपनी आँखें अपने भीतर के भीतर डालें और अपने लिए आकलन करने का प्रयास करें कि उनमें से किसने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है और आप कहाँ स्थित हैं। सावधान रहें कि आपके कार्य और कर्म आप में एक संबंधित चरित्र विशेषता पैदा करेंगे जो आपको बना देगा या बिगाड़ देगा। वास्तव में, अच्छे से अच्छाई के अलावा कुछ भी नहीं निकलता है। इसी तरह, यदि आप इच्छा के सूअरों के प्रति आज्ञाकारी हैं, तो आपके पास अपवित्रता, बेशर्मी, लोभ, चापलूसी, गंदगी, और दूसरों की दुष्टता पर खुश रहने की समान आदतें होंगी। हालाँकि, यदि आप सूअरों को दबाने में सफल होते हैं [जैसे गुण आपके आंतरिक स्व में], इससे बेहतर हो रहे हैं, तो आपको संतुष्टि, अनुग्रह, ज्ञान, धर्मपरायणता और निस्वार्थता आदि के गुणों का ताज पहनाया जाएगा।

यदि आप डरावनी और भय के शिकार से आगे निकल जाते हैं, तो हानिकारक [आंतरिक] लक्षण जो आप में विकसित होंगे, वे उतावलेपन और परिणामों से बेखबर रहने, अशुद्धता, डींग मारना, अहंकार, अपने दोषों का दिखावा करना, दूसरों को ताना मारना और प्रताड़ित करना, दूसरों के साथ झगड़े और झगड़े करना होगा। फिर भी, यदि आप विनाश के इस कुत्ते पर विजय प्राप्त करते हैं, तो आप धैर्य, सौम्यता, क्षमा, स्थिरता, बहादुरी, शांति और संतता (आंतरिक शुद्धता) के अतिरिक्त गुणों को प्राप्त करेंगे।

इसी तरह, यदि आप शैतान की आज्ञा का पालन करते हैं, जिसका मुख्य कार्य कर्क और सूअर की सहायता करना और उसे बढ़ावा देना है, उसके नापाक इरादों से लोगों को गुमराह करना, परेशानी पैदा

करना, बेईमानी और मिलावट आदि का सहारा लेना है, तो आप स्वयं उससे इन शैतानी गुणों को विरासत में लेंगे। लेकिन अगर आप उसकी छलों में न पड़कर उसे हराने में सक्षम हैं और अपनी बुद्धि और अच्छे बलों को मजबूत करते रहते हैं, तो आप ज्ञान, ज्ञान ("*मारिफा*"), ज्ञान, गहन दूरदर्शिता, क्षमता और एक सुंदर आंतरिक चरित्र और बाहरी आचरण ("*हुस्न उल खुलक*" या "*हुस्न अल-इखलाक*") प्राप्त करेंगे"). ये महान गुण आपके निरंतर साथी और मार्गदर्शक होंगे। वे हमेशा के लिए आपकी अच्छी यादों के वास्तविक आधार के साथ आपके सौभाग्य के बीज बोएंगे।

इसके विपरीत, बुरे कर्मों को पाप या दुर्गुण कहा जाता है। उनके विपरीत भेद में, अच्छे कर्मों को "इबाद" या ईश्वर की पूजा कहा जाता है। दिल एक चमकदार दिखने वाले कांच या पॉलिश किए गए दर्पण की तरह है। बुरे रास्ते बादलों और अंधकार की तरह हैं। बुरा चरित्र दिल के दर्पण को धूमिल और काला कर देता है। ऐसा चरित्र रखने वाले व्यक्ति को कभी भी परमेश्वर की उपस्थिति या परमेश्वर की गवाही देने की सौम्य आशीषें नहीं मिल सकती हैं। किसी को भी उसके उपकार के उदात्त दृष्टिकोण के आशीर्वाद से धन्य नहीं किया जा सकता है। वास्तव में, चरित्र की एक उच्च अखंडता प्रकाश ("नूर") की तरह है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

اتبِعَ السَّيِّئَةَ الحَسَنَةَ تَمْحُهَا

"बुरे के बाद एक अच्छा कर्म करना चाहिए ताकि वह उसके बुरे प्रभाव को दूर कर सके"।

अर्थात्, किसी बुरे कर्म के तुरंत बाद अच्छा कर्म करना चाहिए [जो अज्ञानता, असावधानी या गलत प्रभाव के कारण हम क्या कर रहे हैं, इसका एहसास किए बिना किया गया था]। केवल वही धन्य होगा जो बुराई से शुद्ध होकर आएगा। न्याय के दिन, एक मानव हृदय या तो उज्ज्वल या अंधेरा होगा। चमकते चेहरे वाला (हृदय की आंतरिक सुंदरता का प्रतिनिधित्व करने वाला) ही धन्य होगा:

إِلَّا مَنْ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ

"सिवाय उस व्यक्ति के जो स्वस्थ हृदय से परमेश्वर के पास आता है। (कुरान, अध्याय 26, श्लोक 89)

सृष्टि की शुरुआत से ही मनुष्य का हृदय स्टील की तरह ठोस होता है जिससे पारभासी हृदय बना होता है। इसमें पूरे ब्रह्मांड को देखा जा सकता है, बशर्ते कि इसे सुरक्षित रूप से संरक्षित किया जाए और इसे धूमिल

न होने दिया जाए। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने ऐसा आदेश दिया है:

كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ

"नहीं, वास्तव में, वे जो कमा रहे हैं, उससे उनके दिलों पर जंग लग गई है। (कुरान, अध्याय 83, श्लोक 14)

प्रिय प्रिय! आप कह सकते हैं कि चूँकि मनुष्य में भी जानवरों, शैतानों और जानवरों के लक्षण और विशेषताएँ हैं, तो देवदूत जैसे गुण किसी की संपत्ति कैसे हैं जबकि अन्य चीजें क्षणभंगुर हैं? कोई कैसे पता लगा सकता है कि मनुष्य को स्वर्गदूतों के चरित्र के लिए बनाया गया है और वास्तव में, इसका अन्य चीजों से कोई लेना-देना नहीं है? इसका उत्तर इस अकाट्य तथ्य में निहित है कि मनुष्य को "*अशरफुल मखलुकत*" या ईश्वर की सभी रचनाओं में सबसे श्रेष्ठ के रूप में बनाया गया है। इस प्रकार, कोई जानवर और जानवरों से श्रेष्ठ है। इसमें कोई संदेह नहीं है, परमेश्वर द्वारा प्रत्येक चीज़ पर जो आध्यात्मिक कद दिया गया है, वह उसके प्रति उसकी दयालुता की परिणति है। उदाहरण के लिए, घोड़ा गधे से श्रेष्ठ है क्योंकि गधा केवल वजन उठाता है, जबकि एक घोड़ा शूरवीर-सवार की पूर्ण कमान के लिए लड़ाई में बहादुरी से सरपट दौड़ता है, हालांकि अपने स्वयं के सामर्थ्य में, घोड़ा गधे की तरह वजन भी उठा सकता है। इसलिए, उनके बीच एक स्पष्ट अंतर है। यदि घोड़े में ये गुण और अधिक सुंदर असर नहीं होता, तो उसका कद भी सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए गधे के बराबर हो जाता।

इसी तरह, कुछ लोग सोचते हैं कि उन्हें खाने-पीने और शारीरिक सुखों की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए बनाया गया है। इस तरह के लोग अपना सारा जीवन ऐसे असहाय कामों में बर्बाद कर देते हैं। ऐसे अन्य लोग हैं जो मानते हैं कि वे केवल अपने विरोधियों और अपने साथी मनुष्यों को नीचा दिखाने, नीचा दिखाने और उन पर हावी होने के लिए पैदा हुए हैं। विजेता या पराजित, उन पर वर्चस्व हासिल करने के लिए अप्रत्याशित घटना लागू की जाती है, चाहे वे अरब, तुर्क, या कुर्द [या उस मामले के लिए कोई अन्य जाति या जातीयता] हों। जाहिर है, ये दोनों विचारधाराएं गलत हैं, क्योंकि केवल खाने, पीने और यौन संयुग्मन का उपरोक्त जीवन इच्छा के तत्व पर निराश है। यहां तक कि जानवरों की भी ऐसी इच्छाएं होती हैं। ऊंट भारी मात्रा में भोजन और पानी का उपभोग करने की अपनी गुणवत्ता के लिए जाना जाता है, जबकि सुअर में अत्यधिक शारीरिक क्षमताएं होती हैं। फिर मनुष्य को उनके लिए उच्च दर्जा कैसे माना जाता है?

साथ ही, दूसरों पर काबू पाने और उन्हें वश में करने की इच्छा बढ़ते स्वभाव और क्रोध के कारण होती है। यह प्राकृतिक घटना भी मौजूद है, तर्क दिया जा सकता है, चरने वाले जानवरों और जंगलों के जंगली जीवों में। इसलिए फिर से, मनुष्य उनसे श्रेष्ठ कैसे हो गया? [मनुष्य और जानवरों के बीच] अंतर और अंतर

कहाँ है? इसका उत्तर आत्म-व्याख्यात्मक है कि इसके बावजूद (यानी, कम आधार गुण जो मनुष्य जानवरों के साथ साझा करता है), मनुष्य की तुलना में मानव के पास जो उद्धार गुण है, वह यह है कि मनुष्य, सभी रचनाओं के बीच, बुद्धि से धन्य है, जिसके साथ व्यक्ति अपने सर्वोच्च गुरु, ईश्वर को भी पहचानता है। यह किसी को स्वेच्छा से उसकी हस्तकला, उसकी रचनात्मक प्रतिभा की सराहना और प्रशंसा करने में भी सक्षम बनाता है। यह किसी के नश्वर शत्रुओं, क्रोध और लालच को हराने में भी मदद करता है। ये (यानी, क्रोध, लालच और निचले स्व के अन्य आधार गुणों की कमी) स्वर्गदूतों की विशेषताएं हैं। उनके गुण ही पक्षियों, जानवरों और जानवरों के [स्तर] से ऊपर उठते हैं। इसलिए, मनुष्य बनाई गई सभी चीजों से श्रेष्ठ है और उन पर एक विशिष्ट बढ़त है। वे सभी एक के इशारे पर हैं। एक सभी बनाई गई चीजों ("*अशरफ अल-मखलुकत*") *में सबसे श्रेष्ठ है*।

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ جَمِيعًا مِّنۡهُۚ

"और जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ उसी की ओर से उस ने तुम्हारे अधीन कर दिया है। (कुरान, अध्याय 45, श्लोक 13)

इस प्रकार, मनुष्य की महानता किसी की सत्यनिष्ठा की महानता में निहित है, जिस हद तक वह निर्धारित गुणों में उत्कृष्टता प्राप्त करता है, सभी उपलब्धियों में सबसे बड़ी ईश्वर की "*मारिफा*" या ज्ञान-विज्ञान है। बाकी लक्षण तुलना में फीके पड़ जाते हैं, हालांकि असंख्य महान प्रेरक शक्तियां (क्षमताएं) मनुष्य को अपनी महिमा के लिए प्रदान की गई हैं। इस प्रकार, यह विचार के लिए भोजन है कि जब मनुष्य मरता है, तो [निम्न आधार] इच्छा और क्रोध जैसे बुरे प्रमुख लक्षण भी मर जाते हैं। जो [मृत्यु के समय और बाद में मनुष्य का] रहता है वह उच्च गुणवत्ता का एक 'रत्न' है जो भगवान के "*मारिफा*" या सूक्ति के साथ सेराफिक तरीके से अलंकृत है। यह एक का निरंतर साथी है। यह रत्न स्वर्गदूतों का मित्र भी है, जो हमेशा विनम्रतापूर्वक प्रवण रहते हैं, हर समय उसके सामने पूजा करते हैं:

فِي مَقۡعَدِ صِدۡقٍ عِندَ مَلِيكٖ مُّقۡتَدِرِۭ

"सत्य के आसन पर, एक सर्वशक्तिमान राजा की उपस्थिति में। (कुरान, अध्याय 54, श्लोक 55)

या, जब कोई मनुष्य मर जाता है, तो उसके अवशेष एक अंधेरी, अंधी चीज होती हैं - अपने दोषों के कारण अंधेरा और कलंकित होता है, लेकिन क्रोध और अहंकार की अनुपस्थिति के कारण अंधा होता है जो एक अहंकार को शांत और संतुष्ट करता था [सांसारिक जीवन में]। इसके परिणामस्वरूप, व्यक्ति इस नीच क्षेत्र में रहता है जो उसके बाद पूर्व क्षेत्र से विरासत में मिला है:

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا۟ رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ

"आप अपराधियों को उनके भगवान के सामने सिर झुकाए हुए देखेंगे। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 12)

इसका मतलब है कि कोई ऐसी स्थिति में होगा जब किसी को शैतान के साथ "*सिज्जीन*" (मृत्यु के बाद के जीवन में अस्तित्व का सबसे निचला और सबसे दुखद क्षेत्र) में भेजा जाएगा। "*सिज्जीन" शब्द की व्याख्या सभी* को नहीं पता है। इसलिए, परमेश्वर ने आदेश दिया है:

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سِجِّينٌ

"और आप क्या जानते हैं कि '*सिज्जीन*' क्या है?" (कुरान, अध्याय 83, श्लोक 8)

दिल की दुनिया के अजूबे बेहद के हैं। उच्च स्थिति, पवित्रता का सत्य आसन जो हृदय के पास शरीर के सभी अंगों की तुलना में है, वह इस तथ्य के कारण है कि हृदय अपने आप में नया है, लेकिन अधिकांश लोग इससे बेखबर हैं। हृदय की भव्यता और उसकी धर्मपरायणता दो प्रमुख कारणों से है:

1) के कारण ""*इल्म*" या ज्ञान, और

2) के कारण "*कुदरा*" या शक्ति और क्षमता।

ज्ञान के कारण महानता दो कारणों से होती है: एक सभी के लिए जाना जाता है और स्वयं-स्पष्ट है जबकि दूसरा छिपा हुआ और सूक्ष्म है। कोई भी इसकी थाह नहीं ले सकता। ज्ञान को उसकी सभी पेचीदगियों के साथ आत्मसात करने की हृदय की क्षमता और शक्ति इसके दायरे में है। यद्यपि यह अविभाज्य है, यह अंकशास्त्र, अंकगणित, चिकित्सा, ज्योतिष, दिव्य नियम आदि को आसानी से पढ़ और समझ सकता है। इसमें शिक्षा के सभी रूपों को शामिल किया गया है, जो हृदय में ऐसे समाहित हैं जैसे रेगिस्तान में रेत है। कुछ ही समय में, यह अपनी निरंतर गति और दूरदर्शिता के कारण पृथ्वी से आकाश और पूर्व से पश्चिम की दूरी को कवर कर लेता है। यद्यपि यह जमीन पर है, यह विशाल क्षितिज की दूर तक पहुंच को मापता है और आकाशगंगा में सभी सितारों और नक्षत्रों और उनके बीच की दूरी से अवगत है। यह मछली को पानी से बाहर निकालता है, पक्षियों को आकाश से जमीन पर गिराता है, ऊंट, घोड़ा और हाथी जैसे जानवरों को किसी की आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर करता है। शरीर की पांच संवेदी धारणाएं इसका व्यवसाय हैं। यह स्पष्ट है कि वे सभी किसी के हृदय की ओर निर्देशित हैं। वे आध्यात्मिक क्षेत्र (आत्माओं

के क्षेत्र) में विवेक के द्वार हैं, दिल में एक दरवाजा खुला है [आत्माओं के दायरे की ओर]। दूसरी ओर, अधिकांश लोग केवल भौतिक दुनिया (भौतिक क्षेत्र) की परवाह करते हैं और इन भौतिक संवेदनाओं को ज्ञान की प्राप्ति के लिए एकमात्र मार्ग मानते हैं।

दरअसल, ये दोनों दरवाजे छोटे हैं, फिर भी दिल में कई दरवाजे हैं जो कई तरह के ज्ञान और शिक्षा प्राप्त करने के लिए खुले हैं। दो परिसरों में से, आइए हम पहले को लें, अर्थात, जब कोई सो जाता है और एक सपना देखता है, तो ये संवेदी अंग निष्क्रिय हो जाते हैं लेकिन हृदय का द्वार खुल जाता है, जिसके परिणामस्वरूप आत्माओं के दायरे में और "लोह *महफूद*" या "संरक्षित गोली" (यानी, भगवान की बुक ऑफ रिकॉर्ड्स जिसमें अतीत का ज्ञान शामिल है, वर्तमान और भविष्य), व्यक्ति नियत चीजों को देखना शुरू कर देता है (जिसके बारे में भगवान पहले से ही जानते हैं) या भविष्य में क्या होने वाला है, इसके बारे में पता चल जाता है। कभी-कभी आने वाली चीजों के संकेत मिलते हैं जिनकी व्याख्या की मांग की जानी चाहिए। यह इस तथ्य के बावजूद है कि, एक नियम के रूप में, यह माना जाता है कि जो जागता रहता है वह "*मारिफा*" या ग्नोसिस के लिए अधिक योग्य है। फिर भी उन्हें एहसास है कि, आम तौर पर बोलते हुए, इन संवेदी एजेंसियों के आधार पर "आलम *अल-ग़ैब*" (अदृश्य और अज्ञात का डोमेन) की इन बातों को जानने की संभावना कम है।

इन सपनों के विषय पर एक आकस्मिक नस में ध्यान देना संभव नहीं है, लेकिन यह कहना पर्याप्त है कि दिल एक साफ पॉलिश किए गए दर्पण की तरह है और संरक्षित टैबलेट ("लोह *महफूद*") एक दर्पण की तरह है जिसमें भौतिक अस्तित्व के दायरे में सभी चीजों की तस्वीरें ("'आलम *मौजूदत*"), हम जिस क्षेत्र में हैं, उसे देखा जा सकता है। जब [हृदय का] साफ पॉलिश किया हुआ दर्पण इन प्रतिकृतियों के सामने रखा जाता है, तो वे स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगते हैं। तो कोई आश्चर्य नहीं कि जैसे, जब हृदय एक साफ पॉलिश किए गए दर्पण की तरह होता है और कोई इन संवेदनाओं की उत्तेजनाओं को विक्षेपित करने से स्वयं को अलग कर देता है [अस्तित्व के भौतिक क्षेत्र से], व्यक्ति संरक्षित टैबलेट ("लोह *महफूध*") के करीब आ जाता है। जब तक हृदय ऐसी वास्तविक संवेदनाओं से भरा रहता है, तब तक वह आध्यात्मिक क्षेत्र में परमानंद में घूमता रहता है ("'आलम *रूहानी*")। हालांकि, सपने में, ये संवेदनाएं बंद हो जाती हैं लेकिन उनकी छवि या विचार बना रहता है। जबकि "आलम *मिठाल*" (कल्पना का क्षेत्र) में, भावना या विचार की कल्पना की जा सकती है, हालांकि कभी-कभी, बल्कि मंद रूप से। जब मनुष्य मर जाता है, तो अंततः पर्दा हटा दिया जाता है। कोई धारणा या संवेदनाएं [भौतिक क्षेत्र से] नहीं बची हैं। पदार्थ (यानी, सत्य, वास्तविकता और चीजों की वास्तविक प्रकृति) पारदर्शी हो जाती है। फिर मृतक को बताया जाता है:

فَكَشَفۡنَا عَنكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ ٱلۡيَوۡمَ حَدِيدٞ

"अब, हमने आपका घूंघट तुमसे हटा दिया है और आज तुम्हारी दृष्टि तेज है। (कुरान, अध्याय 50, श्लोक 22)

एक जवाब देता है:

رَبَّنَآ أَبۡصَرۡنَا وَسَمِعۡنَا فَٱرۡجِعۡنَا نَعۡمَلۡ صَٰلِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ

"हमारे प्रभु! हमने देखा और सुना है; हमें [दुनिया में] लौटा दो, और हम धर्म के काम करेंगे; अब हम निश्चित हैं [पदार्थ की वास्तविकता के बारे में निश्चितता के साथ]। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 12)

दिल के दरवाजे के "आलम अल-मलकुट*" या स्वर्गदूतों के दायरे की ओर होने का दूसरा प्रमाण* यह है कि ऐसा कोई भी नहीं है जो विवेकपूर्ण विचार और पवित्र गलतफहमियों या आगे की संभावित बाधाओं के डर से प्रतिरक्षित हो। ऐसे विचार इंद्रियों से नहीं निकलते हैं, बल्कि दिल से निकलते हैं। कोई भी इन प्रत्याशित खतरों की उत्पत्ति और स्रोत को नहीं जानता है। यह विश्लेषण इस बात की पुष्टि करता है कि सभी ज्ञान संवेदी अंगों से उत्पन्न नहीं होते हैं। इसके अलावा, हृदय वास्तव में "*'आलम रूहानी*" या आत्माओं के दायरे से संबंधित है, न कि इस [भौतिक] दुनिया से। जाहिर है, ये संवेदी अंग इस दुनिया के लिए बनाए गए हैं। जब तक मनुष्य इस संसार के सांसारिक विचारों से छुटकारा नहीं पा लेता, तब तक कोई भी अगले संसार के लिए एक सहज मार्ग नहीं बना सकता है, जहाँ इन संवेदी अंगों का कोई उपयोग नहीं होगा।

इसलिए, यह गलत मत समझो कि जब तक कोई मनुष्य गहरी नींद में नहीं जाता या मर नहीं जाता, तब तक उसके हृदय का आत्मा के क्षेत्र का द्वार नहीं खुलेगा। यदि कोई कड़ी मेहनत करता है, अहंकारी क्रोध पर विजय प्राप्त करता है, अपने आप को शुद्ध करता है, अर्थात्, अपनी आत्मा, बुराई से, अपनी आँखें बंद कर लेता है, एक एकांत स्थान पर बैठ जाता है, सभी सांसारिक विचारों को नष्ट कर देता है और अपने दिल और आत्मा को आत्माओं के दायरे में इस तरह से लीन कर देता है कि कोई अपनी जीभ से एक शब्द नहीं कहता है, लेकिन उसके हर रोम में "*अल्लाह, अल्लाह*" (यानी, ईश्वर का एकमात्र व्यक्तिगत नाम, जबकि, "ईश्वर" सर्वोच्च सत्ता को संदर्भित करने का एक सामान्य भाषा विशिष्ट तरीका है, जो हर चीज का स्वामी, निर्माता, पालनकर्ता और प्रदाता है जिसे उसने अस्तित्व में लाया है) हर दिल की धड़कन के साथ, जब तक कि कोई ईश्वर को छोड़कर अपने और पूरी दुनिया से पूरी तरह से अनजान नहीं हो जाता, तब तक किसी के दिल में आशीर्वाद का द्वार खुल जाएगा और खुला रहेगा। जागने की अवस्था में कोई देखेगा कि दूसरे नींद में क्या करेंगे। स्वर्गदूतों की सुंदर आत्माएं सुरम्य आकृतियों में एक पर उतरेंगी। कोई परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं को देखना शुरू कर देगा और उनसे लाभान्वित होगा। इस दुनिया के स्वर्गीय जीव और "मालाकूट" के बगल में - उत्कृष्ट देवदूतता, उसे दिखाई देगी। एक, जो इतना भाग्यशाली है, वह अजीब दर्शन और अलौकिक चीजों को देखेगा, जो किसी की अवधारणा से बहुत दूर है। पैगम्बर मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह कहावत उन पर हो) ऐसे ही व्यक्ति के बारे में है। यह स्पष्ट करता है कि ऐसी चीजें किसी के सोए या मृत होने के बिना संभव हैं:

زُوِيَتْ لِي الْأَرْضُ فَأُرِيتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا

"पूरी पृथ्वी मुझे दिखाई गई थी, इसलिए मैंने इसके पूर्व और उसके पश्चिम को देखा।

पवित्र कुरान की निम्नलिखित आयत भी इस मुद्दे पर आधारित है:

وَكَذَٰلِكَ نُرِيٓ إِبۡرَٰهِيمَ مَلَكُوتَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ

"और इस प्रकार, हमने [पैगंबर] अब्राहम को आकाश और पृथ्वी का राज्य (प्रभुत्व) दिखाया। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 75)

आश्वस्त विश्वास और भविष्यवक्ताओं का सही न्याय समान था। इसका इंद्रियों से कोई लेना-देना नहीं था, बल्कि, राजकीय उपलब्धि परमेश्वर के लिए उनके कठिन परिश्रम का फल थी। परमेश्वर ने घोषणा की है:

وَتَبَتَّلۡ إِلَيۡهِ تَبۡتِيلٗا

"और अपने आप को भक्तिपूर्वक (अत्यंत ईमानदारी से भक्ति के साथ) भगवान को समर्पित करें। (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 8)

वास्तव में, जब ऐसा होता है, तो वह सब कुछ ठीक कर देता है। वह अकेला ही सभी सक्षम है:

رَّبُّ ٱلۡمَشۡرِقِ وَٱلۡمَغۡرِبِ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَٱتَّخِذۡهُ وَكِيلٗا

"पूर्व और पश्चिम के स्वामी; उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, इसलिए उसे [अपने सभी मामलों का] देखभाल करने वाला मानें। (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 9)

इसलिए, जब आप उस पर और केवल उस पर निर्भर करते हैं, तो उसके अलावा अन्य सभी चीजों के साथ सभी [आपके] संबंधों को अलग कर दें और आपको चिंता करने की कोई बात नहीं होगी [क्योंकि वह आपके सभी मामलों का सबसे अच्छा निपटान करने वाला है]:

وَٱصۡبِرۡ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَٱهۡجُرۡهُمۡ هَجۡرًا جَمِيلًا

"और वे जो कहते हैं उसे धैर्यपूर्वक सहन करें [झूठ, आहत करने वाली चीजों, हमलों, आरोपों, गाली-गलौज और आलोचनाओं के संदर्भ में] और उन्हें शालीनता से त्याग दें। (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 10)

इस तरह के प्रमुख गुण को उनके अथक परिश्रम में दृढ़ होने और उसके प्रति निरंतर कर्तव्यनिष्ठ रहने की कठोरता में प्रदर्शित किया जाता है। यह मनुष्य के हृदय को शुद्ध करता है। व्यक्ति लोगों की शत्रुता के सभी भय और सांसारिक चिंताओं और लालसाओं के लुभावने फंदों से ऊपर उठता है। इस तरह के ज्ञान का गर्वित मालिक होना, इस तरह की कड़ी मेहनत के बाद प्राप्त करना, अकेले धन्य, "वली" या भगवान के मित्र और अंतरंग का ईर्ष्यापूर्ण सौभाग्य है। एक उच्च कुरसी पर स्थापित है। फिर भी स्पष्ट कारणों से परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं की स्थिति उनके लिए अधिक है।

हालाँकि, गुमराह न हों कि इस तरह की [एक ऊँची आत्मिक] स्थिति का अधिग्रहण केवल परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं पर लागू होता है। वास्तव में, हर व्यक्ति अपने आप में इसके लिए सक्षम है। उदाहरण के लिए, कोई लोहा नहीं है, जो अपने स्वयं के मूल आंतरिक चरित्र के कारण, एक पॉलिश दर्पण में ढाला नहीं जा सकता है जिसमें कोई भी दुनिया में किसी भी चीज़ का चेहरा देखने में सक्षम हो सकता है। बाद में इसे कलंकित और बदनाम किया जा सकता है, यह एक और मामला है। स्वाभाविक रूप से, सांसारिक लालच और प्रलोभन इसे बहुत नुकसान पहुंचाते हैं और [पॉलिश] दर्पण को [हृदय के] विकृत कर देते हैं। बुराई एक ऐसा खतरा है [कि यह हृदय के पॉलिश किए गए दर्पण को ढक देता है और विकृत कर देता है जो अब सत्य और ईश्वर के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने में सक्षम नहीं रहता है]।

मनुष्य को स्वयं को वास्तविकता और सत्य की सतही समझ तक सीमित नहीं रखना चाहिए। [इसके बजाय,] किसी को यह महसूस करना चाहिए कि किसी के व्यवसाय में, किसी के सीखने में ईश्वर का "*मारिफा*" या ज्ञान है। ज्ञान का यही अर्थ है। फिर भी, ज्ञान अपने आप में हृदय से संकीर्ण और छोटा है। हृदय शरीर का सवार है [और इसके विपरीत नहीं]। दिल का उद्देश्य सवार के लिए अपने माउंट की सवारी करना है। घोड़ा (यानी, शरीर) सवार (यानी, हृदय) के लिए है, न कि घोड़े (यानी, शरीर) के लिए सवार (यानी, हृदय)।

समझें कि आपके अपने स्वयं से अधिक कुछ भी आपके निकट नहीं है, लेकिन आप ऐसा करने में विफल रहते हैं। जो व्यक्ति स्वयं को नहीं जानता है और दूसरे को जानने का दावा करता है, वह उस कंगाल की तरह है जो अपना पेट नहीं भर सकता बल्कि शहर के गरीबों और निराश्रितों को अपनी डाइनिंग टेबल पर रखने का दावा करता है। ऐसा दावा बेतुका है।

इस प्रवचन का उद्देश्य यह है कि व्यक्ति को यह महसूस करना चाहिए कि उसका हृदय कितना महान और विशेषाधिकार प्राप्त है। भगवान ने आपको यह जबरदस्त आशीर्वाद दिया है लेकिन इसे आपसे छिपाकर रखा है। यदि तुम इसका अन्वेषण नहीं करते हो, [बल्कि,] इसे बर्बाद करते हो, इसके प्रति लापरवाही करते हो, तो यह तुम्हारे लिए बहुत नुकसान और विलाप की बात होगी। इसलिए, यह आप पर निर्भर है कि आप सत्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करें - इस महान दिव्य उपहार का गुण। इस दुनिया की सामान्य गतिविधियों में अपनी खोज खोने के बजाय, इसकी परिणति [और अंतिम उद्देश्य] की तलाश करें ताकि आपको इस दुनिया में और परलोक में माना और सम्मानित किया जा सके। अर्थात्, ईश्वर आपको ऐसी स्थिति और स्थिरता प्रदान कर सकता है कि उसके बाद कोई अस्थिरता न हो, कि आपको ऐसी शक्ति मिल सके कि उसके बाद कोई कमजोरी न हो, कि आप इस तरह के "*मारिफा*" या ज्ञान-विज्ञान से प्रतिष्ठित हो सकें कि दिव्य सौंदर्य की निकटता आपकी ईर्ष्यापूर्ण नियति हो सकती है। आपको ऐसा आनंद प्राप्त हो सकता है कि इसे धीमा करने के लिए कुछ भी नहीं होना चाहिए। आप इस तरह की वास्तविक स्थिति प्राप्त कर सकते हैं यह आपके प्रदर्शन और उस क्षमता पर निर्भर करता है जिसे आप इसके लायक बनाने में सक्षम हो सकते हैं।

यह बहुत जरूरी है। अन्यथा, यदि तुम मामलों का विश्लेषण करोगे, तो तुम पाओगे कि गर्मी, ठंड, भूख, प्यास, बीमारी और संकट की विनम्रता में रहने से बड़ा कोई दुख नहीं है। जिन चीजों को करने में कोई आनंद लेता है, वे कभी-कभी किसी के लिए हानिकारक हो सकते हैं। वे चीजें जो सोचती हैं कि किसी के लिए फायदेमंद हो सकती हैं, वे देखभाल, तनाव और तनाव से भरी हो सकती हैं। इसलिए, व्यक्ति को सावधानी से चलने की जरूरत है।

एक सम्मानित व्यक्ति, हम [आम तौर पर] जानते हैं, किसी के ज्ञान, शक्ति, उपलब्धियों, दृढ़ इच्छाशक्ति, धैर्य और अच्छी प्रोफ़ाइल के कारण सम्मानित व्यक्ति है। साथ ही, जहां तक किसी व्यक्ति के ज्ञान, सीखने या शिक्षा का संबंध है, यदि हम उस पर ध्यान की दृष्टि डालते हैं, तो हम पाएंगे कि वह सबसे अधिक अज्ञानी है, अर्थात, यदि किसी के मस्तिष्क की एक भी नस विकृत हो जाती है, तो उसके पागल होने या उसकी मृत्यु का भी खतरा होता है। कोई भी इसके कारण या उपचार का पता नहीं करता है। इसके अलावा, इसके इलाज के लिए दवा किसी की आंखों के ठीक सामने पड़ी हो सकती है, लेकिन किसी को

पता नहीं हो सकता है कि यह वही दवा किसी की बीमारी का इलाज है। अपनी शक्ति के संबंध में, व्यक्ति इतना असहाय होता है कि कभी-कभी कोई मक्खी को भी नहीं मार सकता है। उस मामले के लिए, यदि एक शेर को भगवान द्वारा ऐसा करने के लिए नियुक्त किया जाता है, तो वह उसके द्वारा मारा जाता है। यदि ततैया डंक मारती है, तो वह बेचैन हो जाता है। इसी तरह, कोई अपनी पकड़ खो देता है, बहुत चिंतित हो जाता है और उस पर बेचैन हो जाता है, भले ही थोड़ी मात्रा में चांदी खो जाए। तो, क्या कोई अपना संतुलन खो देता है, अगर किसी को कुछ समय के लिए भोजन के एक निवाले के बिना रहना पड़ता है। इस प्रकार, मनुष्य से कमजोर कौन हो सकता है? किसी की सुंदरता और किसी के सामान्य व्यवहार की सुंदरता के बारे में बोलते हुए, इसकी तुलना मिट्टी के ढेर पर चमड़े के तंबू के अति-विस्तार से की जा सकती है। यह भी एक ज्ञात तथ्य है कि यदि कोई व्यक्ति दो दिनों तक स्नान नहीं करता है, तो उसे बदबू आने लगेगी; लोगों से बचें और आम तौर पर सार्वजनिक रूप से अपमानित हों, इसके अलावा कई अन्य जटिलताएं भी हो सकती हैं। मनुष्य से अधिक गंदा कुछ भी नहीं है, क्योंकि गंदा पदार्थ हर समय एक में रहता है, जिसे वह अपने साथ रखता है और दिन में कई बार धोता है।

एक दृष्टांत उद्धृत किया गया है कि एक बार शेख अबू सईद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो), एक उच्च सम्मानित संत और ज्ञानवादी, कुछ *सूफियों* (वे लोग जो ईश्वरीय निकटता प्राप्त करने के लिए आंतरिक परिवर्तन के लिए आध्यात्मिक मार्ग में प्रयास करते हैं) के साथ कहीं जा रहे थे। वे एक जगह पहुंचे और देखा कि वहां के लोग मानव मल को साफ करने का काम कर रहे थे। रास्ता बदबूदार गंदगी से अटा पड़ा था। यह देखकर हर कोई अचंभित रह गया, अपनी नाक दबा ली और इधर-उधर भाग गया, लेकिन *शेख* (आध्यात्मिक मार्गदर्शक) वहीं खड़ा रहा और बोला, "सुनो, लोगो! क्या आप जानते हैं कि गंदगी का यह ढेर मुझसे क्या कह रहा है?" उन्होंने पूछा, "क्या?" उन्होंने जवाब दिया, "यह कहा जा रहा है कि कल तक, मैं फलों और मिठाइयों आदि के रूप में बाजार में था। लोग मुझ पर पैसे खर्च कर रहे थे। मैं रात भर उनके पेट में रहा और फिर मैं इस अप्रिय महक वाली सड़ांध में बदल गया। क्या मुझे तुमसे दूर भागना चाहिए, या तुम मुझसे दूर भागूं?

तथ्य यह है कि मनुष्य इस दुनिया में कमजोर, अपूर्ण और असहाय है। फिर भी न्याय के दिन कोई भी पूरे जोरों पर होगा। इन परिस्थितियों में, यदि कोई एक के साथ "*किमिया अस-सादा*" या "कीमिया या शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय का परिवर्तनकारी एजेंट" को बरकरार रखता है, तो वह जानवरों की स्थिति से ऊपर उठेगा और स्वर्गदूतों के कद तक पहुंच जाएगा। लेकिन अगर कोई दुनिया और सांसारिक इच्छाओं का शिकार हो जाता है, तो कुत्ते और सूअर एक से बेहतर होंगे, क्योंकि वे नष्ट हो जाएंगे [और हमेशा के लिए चले जाएंगे] लेकिन मनुष्य सांसारिक जीवन में किए गए अपने बुरे कर्मों के कारण ईश्वरीय प्रतिशोध और कष्टों में डूबा रहेगा। इसका मतलब यह है कि यदि मनुष्य ने किसी की स्थिति की विशालता और उच्चता को पहचाना है, तो उसे एक साथ उस नुकसान और हानि को याद रखना चाहिए जो किसी को होने की संभावना है, यदि कोई उस पर खरा उतरने में विफल रहता है। चीजों का ऐसा जायजा लेना ईश्वर के

"*मारिफा*" या ज्ञान की कुंजी है। यह सब किसी के लिए अपने स्वयं को पहचानने के लिए पर्याप्त होना चाहिए।

परमेश्वर को जानना

ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "किमिया-ए-सादत" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" में *शाश्वत खुशी और सच्ची स्थायी सफलता की कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट)* में से दूसरे की व्याख्या करते हुए, शाश्वत आनंद की इस कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट) के चार शीर्षकों (या आवश्यकताओं) में से दूसरे की व्याख्या करते हुए जो "ईश्वर को जानना" है। शाश्वत आनंद के परिवर्तनकारी एजेंट के लिए दूसरी आवश्यकता की व्याख्या करते हुए - "ईश्वर को जानना", वह लिखते हैं [3]:

प्रिय प्रिय! पिछले पैगंबरों पर निर्धारित [दिव्य] पुस्तकों में कहा गया है [पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो)] कि भगवान ने आदेश दिया है:

اَعْرِفْ نَفْسَكَ تَعْرِفْ رَبَّكَ

"अपने आप को पहचानो, तब तुम अपने प्रभु को जान लोगे।

साथ ही, यह कहावत हदीस (पैगंबर कथन) और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के समय और ग्रंथों के समय और ग्रंथों के बाद से बहुत प्रसिद्ध है:

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ

"जिसने अपने आप को पहचान लिया है, उसने अपने प्रभु को पहचान लिया है।

मनुष्य का हृदय एक [पॉलिश] दर्पण की तरह है [बशर्ते उस पर जमी धूल को हटा दिया गया हो और सतह को किसी भी चीज़ से साफ कर दिया जाए जो पॉलिश किए गए दर्पण के रूप में इसके कार्य में बाधा

डालती है]। जो व्यक्ति अपनी दृष्टि और ध्यान उस पर केंद्रित करता है, वह ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करेगा। मुद्दा यह है कि ऐसे लोग हैं जो इस आईने में देखे बिना खुद को व्यर्थ में निहारते रहते हैं, इसलिए वे अपने प्रभु को जानने के करीब भी नहीं पहुंच पाते हैं। फिर से, इसका उत्तर हृदय के इस दर्पण को देखने में निहित है जिसमें "*मारिफ़ा*" (ज्ञान) ईश्वर का अपने सही व्यंजन में। इसलिए, हृदय की वास्तविकता को सही परिप्रेक्ष्य में जानना इसके दो विशिष्ट पहलुओं में से आवश्यक है। किसी को समझना बहुत मुश्किल है क्योंकि यह [सामान्य] लोगों की समझ से परे है। इसलिए, बेहतर होगा कि इस पर चर्चा न करें। दूसरा पहलू यह है कि व्यक्ति को अपने स्वयं के द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर की समझ हासिल करने का प्रयास करना चाहिए, अर्थात्, इस आशय के लिए एक में निवास करने वाली विशेष विशेषताओं के माध्यम से। अर्थात्, व्यक्ति को उस परमात्मा के उदारता और सृष्टिओं की सुंदरता का अध्ययन करने का प्रयास करना चाहिए, जो पूरे ब्रह्मांड के विशाल विस्तार में फैली हुई है, साथ ही जो उन्होंने मनुष्य के हृदय को अपने शरीर के राज्य और उसके अंगों में दिया है। किसी को शुरू करने के लिए अपनी उत्पत्ति पर पूरी तरह से विचार करना चाहिए, कि वह पहले केवल एक अस्तित्व नहीं था और अब वह एक 'अस्तित्व' है। पवित्र पुस्तक (कुरान) में इसकी घोषणा की गई है:

هَلْ أَتَىٰ عَلَى ٱلْإِنسَٰنِ حِينٌ مِّنَ ٱلدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْـًٔا مَّذْكُورًا ١

إِنَّا خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَٰهُ سَمِيعًۢا بَصِيرًا ٢

"क्या मनुष्य पर कोई ऐसा समय आया है जब किसी का उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए? हमने एक मिश्रित शुक्राणु-ड्रॉप से मनुष्य का निर्माण किया; फिर एक कोशिश करते हुए, हमने एक सुनने और देखने का प्रयास किया। (कुरान, अध्याय 76, छंद: 1-2)

किसी को अपनी विनम्र उत्पत्ति से पता चलता है कि वह अशुद्ध जल की एक बूंद थी जिसमें वे गुण भी नहीं थे जो बाद में किसी पर दिए गए थे, जैसे कि बुद्धि, श्रवण, देखना, स्वाद, स्पर्श और वाणी। न ही इसमें कान, आंखें, जीभ, हाथ और पैर, सिर, नसें, ऊतक, हड्डियां या रीढ़ आदि शामिल थे। संक्षेप में, किसी के आनुवंशिक अस्तित्व में केवल पानी की यह सफेद बूंद शामिल थी, इसके नवजात रूप में।

इन पंक्तियों के साथ किसी के चिंतन से पता चलता है कि इतनी ऊंची ऊंचाइयों पर चढ़ने की मानवीय क्षमता के बावजूद, कोई व्यक्ति अपनी मर्जी से और अपने स्वयं के विकास से अस्तित्व में नहीं आया था। एक ने खुद को पैदा नहीं किया। एक को किसी और ने बनाया था। अपने स्वयं के भाग्य में, कोई एकल, अकेले बाल भी नहीं बना सकता है। एक पूरी तरह से असहाय है। आखिरकार, एक व्यक्ति अपने सार में था, अशुद्ध पानी की एक बूंद के अलावा और कुछ नहीं। तो खुद को बनाने का गुण किसी को कैसे माना जा सकता है? यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस तरह का आत्मनिरीक्षण व्यक्ति को अपने

अस्तित्व और अपने सृष्टिकर्ता की वास्तविकता में एक प्रबुद्धता प्रदान करेगा। ब्रह्मांड में उनकी रचनाओं के सुरुचिपूर्ण वैभव को छोड़ दें, जब कोई व्यक्ति अपने शरीर के शानदार जीव, उसके विभिन्न कार्यों को देखेगा, जिनमें से प्रत्येक का अपना विशिष्ट गुण और कार्य होगा, तो उसे मास्टर निर्माता, सर्वशक्तिमान ईश्वर की भव्यता और अद्वितीय निपुणता का एहसास होगा।

कई चीजों के लिए प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए। भगवान ने एक पूर्व-प्रतिष्ठित आत्मा और एक सुंदर शरीर भी दिया है। किसी व्यक्ति की सुंदर प्रोफ़ाइल को ही उसके सामने गहन कृतज्ञता के साथ झुकना चाहिए। इस प्रकार कोई भी भाग्यशाली है कि उसे "जमाल" या सुंदरता और "कमल" या उत्कृष्टता और इनाम दोनों दिए गए हैं, बल्कि केवल भगवान के द्वारा दिया गया है। आखिर एक और क्या है? मुट्ठी भर धूल के अलावा कुछ नहीं! परमेश्वर ने बिना उद्देश्य के कुछ भी नहीं बनाया है। मानव शरीर रचना विज्ञान का हर हिस्सा आवश्यक है, निर्धारित तरीके से प्रदर्शन करने के लिए एक विशेष कर्तव्य है। इन घटकों में से प्रत्येक को विशेषज्ञ रूप से उत्पादित, नियोजित और प्रोग्राम किया गया है [इसके लिए विशिष्ट कार्यों के लिए]। कुछ भी गायब नहीं है और कुछ भी नहीं है। संपूर्ण संविधान इतना परिपूर्ण है कि इसे किसी भी तरह से उत्कृष्ट नहीं बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जबड़े में दांतों को देखें। सामने वाले नुकीले और नुकीले होते हैं ताकि खाद्य पदार्थों को पर्याप्त रूप से काटने और छेदने में मदद मिल सके। उनके पास के अन्य काफी चौड़े, ग्रूवी और चपटे होते हैं ताकि उन्हें महीन सुपाच्य कणों में पीसने में सक्षम बनाया जा सके। जीभ के नीचे का निचला हिस्सा इस प्रकार बनने वाले भोजन के निवाले को गीला कर देता है, जिससे यह गले के माध्यम से आसान और सुरक्षित मार्ग के लिए अधिक निंदनीय हो जाता है। इसी तरह मानव हथेली की पांच उंगलियां होती हैं। चार उंगलियां समान होती हैं। लेकिन अंगूठा उनसे कुछ दूरी पर रखा जाता है। यह उनसे छोटा और थोड़ा मोटा होता है। इसमें उनमें से प्रत्येक के साथ समन्वय करने और काम करने और अच्छी समझ और हैंडलिंग के लिए सभी उंगलियों के साथ सामूहिक रूप से काम करने की क्षमता है। बदले में, प्रत्येक उंगली में तीन छिद्र होते हैं, लेकिन अंगूठे में दो होते हैं। मनुष्य अपनी इच्छानुसार इन छिद्रों को हिला और मोड़ सकता है। इन्हें अकेले मोड़कर हथेली को कप किया जा सकता है। दोनों हाथों के छिद्रों को जोड़कर और घुमाकर, कोई भी उन्हें खोखली प्लेट के रूप में उपयोग कर सकता है। इसी तरह, इन छिद्रों और हाथ की हथेली को बंद करके, कोई भी इसे अपने दुश्मन से लड़ने के लिए एक प्रकार के मुक्केबाजी दस्ताने में बदल सकता है। दूसरी ओर, कोई भी इसे सीधी हथेलियों के साथ एक थाली के रूप में उपयोग कर सकता है। इसलिए, इन उंगलियों की स्थिति, आकार या मात्रा के बारे में कोई भी बहस निरर्थक होगी। उन्हें बहुत शानदार तरीके से बनाया गया है! इन सभी चीजों और ब्रह्मांड का सर्वोच्च वास्तुकार सबसे अच्छा न्यायाधीश है। वह हर उस चीज़ के बारे में जानता है जो उसने विकसित किया है।

मनुष्य की जरूरतें और इच्छाएं असीमित हैं। सृष्टिकर्ता की रचनाएँ भी असीमित हैं। मनुष्य को पहनने के लिए कपड़े, रहने के लिए एक घर और कई अन्य चीजों की आवश्यकता होती है। वर्षा, हवा, गर्मी, ठंड

और भोजन उगाने के लिए भूमि जैसे प्राकृतिक तत्व भी एक के लिए उत्पादित किए गए हैं। टिन, लोहा, कांस्य आदि जैसी आवश्यक धातुओं को भी इसी तरह मानव के लिए विभिन्न उद्देश्यों और उद्योगों के लिए अपने उपकरण और उपकरण बनाने में सहायता करने का प्रावधान किया गया है। ये सभी चीजें और कई अन्य चीजें एक लेने के लिए, उनसे लाभ उठाने के लिए, एक आरामदायक जीवन जीने के लिए हैं। क्या मनुष्य को इतना जिज्ञासु नहीं होना चाहिए कि वह अंततः उसकी सर्वशक्तिमत्ता की उपस्थिति को महसूस कर सके, जिसने अपनी सर्वोच्च कृपा में यह सब एक के लिए किया है [यहां तक कि बिना किसी को एहसास किए और उन्हें मांगे भी]? क्या मनुष्य के हृदय को उसके प्रेम और उसकी आराधना से समृद्ध नहीं होना चाहिए? एक *हदीस कुद्सी* (एक भविष्यसूचक कथन जिसे इसके स्रोत के लिए ईश्वर को जिम्मेदार ठहराया गया है) के अनुसार, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा है [कि भगवान ने कहा]:

سَبَقَتْ رَحْمَتِىْ عَلٰى غَضَبِىْ

"मेरी दया मेरे क्रोध पर प्रबल हुई है।

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के अनुसार: "मानवता पर ईश्वर की दया और दया, अपने दूध पिलाने वाले बच्चे पर एक प्यारी माँ की तुलना में कहीं अधिक है।

तुलनात्मक रूप से कम पैमाने पर, एक सरल लेकिन एक अच्छा इंसान, ऐसी *चीजों में भगवान के "मारिफा" या ग्नोसिस को* देखता है:

एक. पानी की एक बूंद की विनम्र उत्पत्ति से अपनी रचना में।
दो. किसी के शरीर के अंगों के अलौकिक लक्षणों में।
तीन. परमेश्वर द्वारा किसी की सभी इच्छाओं और जरूरतों के प्रावधान में।
चार. किसी के भौतिक संविधान की सुंदरता में। भगवान द्वारा बनाई गई सौंदर्य संबंधी चीजें जो किसी को एक आकर्षक और आकर्षक रूप देती हैं।

परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को पसंद करता है और उसे अपने "*मारिफा*" या ग्नोसिस से आशीष देता है। स्वयं का ऐसा मूल्यांकन, ईश्वर की सूक्ति ("मारिफा") की कुंजी बन जाता *है*।

आप में ब्रह्मांड

मनुष्य उस बात को समझने का प्रयास करता है जिसे वह नहीं जानता है। व्यक्ति अपने पास मौजूद आंतरिक और बाहरी गुणों के आधार पर ईश्वर को समझने की पूरी कोशिश करता है। जबकि किसी का प्रयास प्रशंसनीय है, तथ्य यह है कि मनुष्य की समझ और क्षमता सीमित है, चाहे वह कितना भी ऊंचा क्यों न हो। इस संबंध में किसी का निरंतर शोध निस्संदेह जीवन में किसी की स्थिति को बढ़ाएगा; जितना अधिक परिष्कृत होता जाता है उसका हृदय और "*नफ्स*" (या स्वयं) इस प्रक्रिया में डूब जाते हैं, उसके लिए उसके महान प्रेम से, वह उसके सापेक्ष निकटता प्राप्त करेगा, लेकिन वह अंततः इस सत्य की थाह पाएगा कि "केवल परमेश्वर ही परमेश्वर को समग्रता में जानता है" और यह कि उसे शामिल नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, मनुष्य का हृदय, "*नफ्स*" या स्वयं, वास्तव में, निर्धारित नहीं किया जा सकता है। इसका कोई आयाम नहीं है। यह अविभाज्य है [और इसलिए समय और स्थान के आयामों की परिमाणीकरण, सीमा और सीमाओं की बाधाओं से ऊपर]। इसका कोई रंग नहीं है। संक्षेप में, यह ऐसे सभी विचारों से ऊपर है। ऐसे मामले में, कोई ऐसी चीज के आकार का निर्धारण कैसे कर सकता है? कोई ऐसी चीज की कल्पना कैसे कर सकता है जिसका रूप या बीयरिंग ज्ञात नहीं है? इसलिए, यह मनुष्य में किसी भी गुण के साथ मेल नहीं खाता है जो तदनुसार इसे समझ सकता है।

मनुष्य में ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें हम महसूस तो करते हैं लेकिन उन्हें समझ नहीं सकते। उदाहरण के लिए, प्यार और दर्द को महसूस किया जा सकता है, लेकिन उन्हें देखा या दिमाग में नहीं देखा जा सकता है और न ही उनका कोई आकार, रंग या आकार है। मामला काफी जटिल है। मनुष्य द्वारा महसूस किए जाने वाले अलग-अलग विवेक और स्थितियां, किसी की इंद्रियों के विभिन्न घटकों से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि आवाज कान के समान है। रंग आंखों द्वारा देखा और सराहा जाता है। जीभ स्वाद को पहचानती है और नाक गंध को सूंघती है। छुड़ाने वाला सामान्य कारक, बुद्धि का इससे कुछ लेना-देना हो सकता है। आगमनात्मक तर्क की एक पुस्तक शायद इस मुद्दे के लिए एक हद तक प्रासंगिक हो सकती है, लेकिन निश्चित रूप से दिल और उसके विशेष बंदोबस्ती के लिए नहीं जो पूरी तरह से एक अलग वर्ग में एक विषय है।

भगवान हर जगह है। लेकिन उसकी उपस्थिति को किसी विशेष स्थान पर सीमित नहीं किया जा सकता है, बाकी को छोड़कर। उनकी उपस्थिति और आदेश हर जगह महसूस किया जाता है। शरीर के किसी भी अंग के संबंध में आत्मा को अकेले महसूस नहीं किया जा सकता है। यह नहीं कहा जा सकता कि यह हाथों में, पैरों में, सिर में या शरीर के किसी अन्य भाग में है। ये शारीरिक अंग पूर्वोक्त के रूप में विभाज्य

हैं, लेकिन हृदय और आत्मा विभाज्य नहीं हैं। तार्किक रूप से, एक चीज जो अविभाज्य है, उसे किसी भी चीज में समाहित नहीं किया जा सकता है जो विभाज्य है।

हालांकि, यह कहने से कि दिल और आत्मा का शरीर के किसी भी अंग से कोई संबंध नहीं है, इसका मतलब यह नहीं है कि इसका उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वास्तव में, शरीर के सभी अंग इसके अधीन हैं और हृदय, आत्मा, या "*नफ्स*" या मनुष्य के स्वयं के प्रत्यक्ष नियंत्रण में हैं। इस संदर्भ में मनुष्य की आत्मा राजा है क्योंकि पूरा ब्रह्मांड ब्रह्मांड और सभी अस्तित्व के राजा सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रत्यक्ष नियंत्रण में है।

आत्मा का विषय बहुत नाजुक और सूक्ष्म है। इस पर सभी विचार-विमर्श और प्रवचनों के बावजूद, यह एक अनोखा और एक अच्छी तरह से संरक्षित रहस्य है। इसलिए, इसे एक निश्चित सीमा से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है। उदाहरणार्थ:

إِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ آدَمَ عَلٰى صُوْرَتِه

"वास्तव में परमेश्वर ने आदम को बनाया [और इसलिए पूरी मानवता जो उससे उभरी है] उसकी अपनी छवि पर बनाया"।

यह वह जगह है जहां किसी के पास यह कहने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है कि भगवान सबसे अच्छा जानता है।

हमने अब तक निर्धारित किया है कि:

- एक. ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उनके महान उत्कृष्टता के दिव्य गुणों की कृपा उनमें प्रकट होती है।
- दो. वह सर्वव्यापी है लेकिन उपस्थिति को किसी अन्य स्थान या स्थान के बहिष्कार के लिए किसी एक स्थान तक सीमित नहीं माना जा सकता है।
- तीन. स्वयं को जानना उसकी सूक्ति या "*मारिफा*" की कुंजी है।
- चार. मनुष्य का वास्तविक उद्देश्य और उद्देश्य उसकी सूक्ति या "*मारिफा*" को प्राप्त करना है।

अब कोई यह समझना चाहेगा कि कैसे। वह है मनुष्य के राज्य में सर्वोच्च शासक, सर्वोच्च राजा। सुलझाने के लिए कई पहेलियाँ हैं:

एक. स्वर्गदूतों को उसकी आज्ञा देना और उनकी विनम्र आज्ञाकारिता।
दो. ऊपर स्वर्ग से उनके आदेश और नीचे पृथ्वी के प्रति उनका अनुरोधपूर्ण अनुपालन।
तीन. सितारों और नक्षत्रों की निरंतर गति।
चार. उसके द्वारा (ऊपर स्वर्ग से) उनके निर्वाह के लिए उसके जीवित प्राणियों के भरण-पोषण का अनुदान।

ये उनके ज्ञान से संबंधित ठोस प्रश्न हैं। ये मामले और इसी तरह के मामले उस तरह के दायरे में आते हैं जिसे "उसके कल्याण के कार्य" कहा जाता है।

इस थीसिस में, हमने कई पाठ्यक्रम निर्धारित किए हैं जो उनकी सूक्ति ("मारिफा") की ओर ले जाते हैं। अब हम उनके दिव्य कार्यों ("*अफ़आल") की सूक्ति के बारे में जानना चाहेंगे*। दूसरे शब्दों में, जब तक आपको यह पता नहीं चलता कि मनुष्य शरीर के राज्य पर किस तरह शासन करता है, तब तक आप यह नहीं समझ पाएंगे कि कैसे वह, सभी गुरुओं का स्वामी, पूरे ब्रह्मांड पर सर्वोच्च शासन करता है। इसलिए फिर से, हम इस अपरिहार्य निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जब तक मनुष्य अपने 'स्व' को नहीं जान लेता और उसके प्रत्येक कार्य को इस परिप्रेक्ष्य में निर्देशित नहीं किया जाता है, तब तक कोई भी रहस्य को सुलझाने में सक्षम नहीं होगा।

उदाहरण के लिए, जब आप कागज के एक टुकड़े पर "*बिस्मिल्लाह*" ("भगवान के नाम पर, सबसे दयालु, सबसे दयालु" के लिए अरबी अभिव्यक्ति) लिखने का इरादा रखते हैं, तो आपका दिल पहले ऐसा करने की इच्छा रखता है, फिर हृदय (यानी, वास्तविक हृदय और शरीर के बाईं ओर का भौतिक अंग नहीं जिसे "हृदय" भी कहा जाता है) इस आशय के लिए हलचल करता है और मस्तिष्क को इसे लागू करने का आदेश देता है। मस्तिष्क का पहला संवेदनशील कक्ष जो मानव "खयाल" का स्थान है, यानी इसके बारे में विचार का निर्माण करता है, ऐसा करता है। विचार की अवधारणा की कल्पना की गई है। यह मस्तिष्क द्वारा मस्तिष्क की मांसपेशियों को प्रदान किया जाता है जो इसे शरीर में फैलाते हैं और विस्तारित करते हैं; लिखने वाली उंगलियां निर्देशित हो जाती हैं, नसों और उनके ऊतकों को इस आशय का संदेश प्राप्त होता है, बदले में वे कलम को पकड़ते हैं और प्राप्त उत्तेजनाओं के अनुसार शब्दों को अंकित करते हैं। अन्य संवेदी अंग भी सहायता करते हैं और उकसाते हैं और "*बिस्मिल्लाह*" लिखा जाता है। इसलिए, यह अनुमान लगाना संभव है कि पूरा लेनदेन ऐसा करने के लिए मूल 'इच्छा' के कारण हुआ था। उसी तरह, हर चीज की शुरुआत या शुरुआत में, यह 'इच्छा' या "*इरादा*" सार का है। जब इसका श्रेय भगवान को दिया जाता है, तो इस 'इच्छा' को ईश्वर की 'सर्वोपरि इच्छा' कहा जाता है।

मनुष्य की इच्छा पहले किसी के हृदय में निकलती है और उसके बाद वह शरीर के अन्य हिस्सों तक पहुंचती है, इसी तरह ईश्वर की सर्वोपरि इच्छा और उसका प्रभाव, पहले "अर्श" से शुरू होता है, यानी ईश्वरीय सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व, फिर यह अन्य पदों और लोगों तक पहुंचता है। इसके अलावा, जिस सरल तरीके से इच्छा की यह अवधारणा किसी के हृदय, किसी की आत्मा के नाजुक महीन तंतुओं के माध्यम से मानव मस्तिष्क तक पहुंचती है; इसी तरह, ईश्वर की इच्छा का यह अनुल्लंघनीय रत्न, उनकी "*इरादा*" या 'इच्छा' उनके द्वारा "अर्श" (या "दिव्य सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व") से "*कुर्सी*", "सर्वोच्च दिव्य उत्कृष्टता की स्वर्गीय सीट" तक पहुंचाई जाती है। यह रत्न उसके देवदूत या "*रूह अल-कुद्स*" (पवित्र आत्मा) में प्रकट होता है। जिस तरह मस्तिष्क का प्रभुत्व मनुष्य के हृदय के अधीन होता है, उसी तरह, ईश्वर के आदेशों का प्रभाव तत्काल आज्ञाकारिता और अनुपालन के लिए उनके आदेश के अधीन क्षेत्र के माध्यम से "कुर्सी" तक पहुंचाया जाता है। पिछले अध्याय में वर्णित पूरी प्रक्रिया, "*बिस्मिल्लाह*" ("भगवान के नाम पर, सबसे दयालु, सबसे दयालु") को दिल में लिखने के विचार के आगमन से, इसका अंतिम निष्पादन, इसी तरह "*जौहर तालिफ*" या "भगवान की अलौकिक इच्छा" द्वारा एक राजसी तरीके से शुरू किया गया है, जो आकाशगंगा में सितारों और अन्य नक्षत्रों को सक्रिय करता है, उन्हें उनकी वांछित भूमिकाएँ सौंपना। नतीजतन, उनके विकिरण (किरणों) द्वारा, उनकी आंतरिक क्षमता के आधार पर, गर्मी, ठंड और शरद ऋतु के मौसम आदि जैसी मौसम की स्थिति बनाने के लिए वातावरण को हिलाया जाता है।

इसके अलावा, जिस तरह कलम स्याही को "बिस्मिल्लाह" का संयुक्त रूप देने के लिए बिखरे हुए शब्दों को आत्मसात करने और पूर्व-इकट्ठा करने के लिए गति में सेट करती है, उसी तरह, गर्मी, ठंड, पानी और धूल ने अपने यौगिकों को गति में सेट किया है ताकि उनकी बातचीत से गठित वैध रूपों को इकट्ठा किया जा सके ताकि पदार्थ को उनके विभिन्न आकार, गर्मी और धूल को मिलाने के लिए और उन्हें मिलाने के लिए सूखापन मिल सके।

जब कलम लिखने के लिए आगे बढ़ती है, तो जो कुछ भी लिखने की कल्पना की जाती है, उसकी दृष्टि तैयार की जाती है, जो अंततः लिखे गए शब्दों में आकार लेती है। उसी तरह, जब उपर्युक्त यौगिकों के अंतर्निहित मूल्यों को गति में सेट किया जाता है, तो उसके बाद, स्वर्गदूतों की एजेंसी के माध्यम से, जानवरों और अन्य वनस्पतियों के रूपों को उपरोक्त के प्रतिलेख के अनुसार देखा जाता है, जिसे "*लोह महफूध*" के रूप में संदर्भित किया जाता है (संरक्षित टैबलेट जिसमें सभी रचनाओं और अस्तित्व और उनसे संबंधित सभी घटनाओं का पूरा रिकॉर्ड होता है)। "*अर्श*" (बस "सिंहासन" लेकिन वास्तव में, यह दिव्य सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व है), "*लोह महफूध*" (संरक्षित टैबलेट) और "*कुर्सी*" (सर्वोच्च दिव्य उत्कृष्टता की स्वर्गीय सीट) की ऊंचाई को देखते हुए, बहुत से लोग अनादि काल से सोचते हैं कि भगवान "अर्श" में स्वर्ग में रहते *हैं*। कुरान में [पैगंबर] योना (सूरह *यूनुस*) के अध्याय में, यह कहा गया है:

ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۖ

"तब [भगवान] सिंहासन पर स्थापित हुआ, और मामले का प्रबंधन किया। (कुरान, अध्याय 10, श्लोक 3)

"कश्फ" या आध्यात्मिक अनावरण *से संपन्न लोगों के बारे में बात करते हुए*, कोई कह सकता है कि उनके शब्द का अपना मूल्य है:

إِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ ادَمَ عَلٰى صُوْرَتِه

"वास्तव में, परमेश्वर ने आदम को अपने स्वरूप पर बनाया।

तब सावधान रहें कि जैसा कि कहा जाता है, "केवल एक राजा ही राजा का वास्तविक मूल्य जानता है"। यदि आप स्वयं अपने स्वयं के क्षेत्र में एक राजा नहीं थे और यदि परमेश्वर ने आपको अपनी दया की झलक के साथ आशीर्वाद नहीं दिया होता, तो आप कभी भी उसकी सूक्ति ("मारिफा") के करीब नहीं पहुंच पाते। इसलिए, उस सर्वशक्तिमान राजा का धन्यवाद करें जिसने आपको बनाया है और आपको अपने राज्य के राजत्व का ताज पहनाया है।

आपका "*अर्श*" (सिंहासन) पशु आत्मा है ('पशु आत्मा' 'मानव आत्मा' से अलग है जो मानव अस्तित्व का सबसे बेहतर हिस्सा है)। इसका स्रोत हृदय में है। आपका "*इसराफिल*" (वह स्वर्गदूत जो न्याय के दिन तुरही बजाएगा जो सभी को वापस जीवन में लाएगा; आत्मा को जब जीवन में वापस लाया जाता है, तो मानव अस्तित्व के हर पहलू को फिर से जीवंत करने, पुनर्जीवित करने और पुनर्जीवित करने की क्षमता होती है) इसे ईश्वर द्वारा बनाया गया है। आपकी "*कुर्सी*" (सीट) का निर्माण इसी तरह विचारों के साथ किया गया है। आंखें, कान और संवेदी तत्व स्वर्गदूतों की तरह हैं। मस्तिष्क एक चंदवा की तरह है। इसका गुंबद, जो आपके बोधगम्य घटकों से बना है, आपका आकाश है। अपने दिल से सभी आधार अवधारणाओं को दूर करने के बाद, यह आपके शरीर के सभी हिस्सों पर शासन करने वाले राजा के रूप में स्थापित किया गया है। आपके लिए इतना कुछ करने के बाद, आपको कहा गया कि कभी भी एक पल के लिए भी अपनी या अपने राज्य की उपेक्षा न करें। अन्यथा, यह उपेक्षा परमेश्वर के आदेशों की अनदेखी करने के समान है जिसके परिणामस्वरूप उसके सामने तुम्हारी स्थिति गंभीर खतरे में पड़ जाएगी:

فَإِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ آدَمَ عَلٰى صُوْرَتِه فَاعْرِفْ نَفْسَكَ يَا اِنْسَانُ تَعْرِفْ رَبَّكَ

"तो वास्तव में, परमेश्वर ने आदम (संपूर्ण मानवता के पिता और इस प्रकार विस्तार से, सभी मनुष्यों) को अपनी छवि में बनाया। तो अपने को जानो, हे मनुष्य। तब तुम अपने रब को जान लोगे।

मनुष्य के राज्य की अवधारणा पूरे ब्रह्मांड पर सर्वशक्तिमान के राजत्व और राज्य से लघुकरण में ली गई है। अपने आप में, इस धारणा में जोर है:

एक. शरीर के विभिन्न अंगों के महत्वपूर्ण गुणों और व्यवसायों के सीखने के बारे में मनुष्य के स्वयं के स्वयं का ज्ञान जो किसी के राज्य का गठन करता है।

दो. ईश्वर की ज्ञान, उनके स्वर्गदूतों के प्रति ईश्वर के उदार ध्यान के संबंध में उनका राज्य, बदले में देवदूत का संबंध, एक दूसरे के साथ और उच्च "अर्श" (दिव्य सिंहासन), स्वर्ग और "*कुर्सी*" (सर्वोच्च दिव्य उत्कृष्टता का स्वर्गीय आसन) जो महान योग्यता के अद्वितीय ज्ञान का एक पहलू भी है।

एक चतुर व्यक्ति कभी भी उनके प्रति बेपरवाह और लापरवाह नहीं रहेगा, जैसे कि एक लापरवाह मूर्ख के खिलाफ जो केवल किसी की प्रचंड अज्ञानता की फसल काटेगा। कुछ 'प्रकृतिवादी' और 'ज्योतिषी' दुर्भाग्य से इस विषय की अपनी सीमित शिक्षा पर अपनी निर्भरता के लिए इतने खराब हैं कि इस तरह वे अंतिम प्रभाव, हर चीज के परिणाम, सितारों के प्रभाव में श्रेय देते हैं। उनका विश्वास इतना हठधर्मी, इतना पैदल यात्री है कि इस भ्रम के संदर्भ में, उनकी स्थिति की तुलना कागज के एक टुकड़े पर रेंगने वाली चींटी से की जा सकती है, जिससे यह आभास हो सकता है कि कलम [कागज की] सतह पर एक काला निशान बना रही है, क्योंकि यह बिना किसी सूची के साथ चल रही है। कागज पर रेंगने वाली एक और चींटी, जिसकी दृष्टि ऊंची है, इस विश्वास को और भी बढ़ा सकती है कि हाथ [कलम पकड़कर] कागज पर निशान बना रहा है। यह प्रकृतिवादियों का उदाहरण है। उनके [गलत] विश्वास की स्पष्ट भ्रांति उनके पंथ में बहुत दूर तक जाती है, कि सभी मनुष्य अन्य सभी तथ्यों के बावजूद सितारों से अपरिवर्तनीय रूप से प्रभावित होते हैं। तथ्य का विलोम फैंसी या प्रहसन है। तब ज्योतिषी आसानी से भूल जाते हैं कि ये तारे भी स्वर्गदूतों की आज्ञाकारिता में हैं, जैसा कि स्वर्ग और सितारों के सर्वोच्च स्वामी, और ब्रह्मांड में और उससे परे की सभी चीजों के परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया है। उनकी पकड़ केवल भौतिक चीजों तक ही सीमित है। वे आध्यात्मिक क्षेत्र में पूर्ण नौसिखिए हैं जो सभी भौतिक सांसारिक विचारों से श्रेष्ठ हैं। भौतिक (या भौतिक) क्षेत्र के सितारों में आध्यात्मिक क्षेत्र के देदीप्यमान प्रकाश ("'*आलम रूहानी*') की तुलना में कम चमक होती है। वे यह नहीं जानते कि आत्मा शरीर पर राज्य करती है। इसका विपरीत सच नहीं है। उन्हें अपने ज्ञान और ज्ञान पर गर्व है, लेकिन उनकी बेतुकेपन में, वे आत्मा के आध्यात्मिक क्षेत्र के मार्ग के आशीर्वाद से रहित रहते हैं, जहां आंतरिक अस्तित्व के कई चमकदार सितारे ("*बातिन*"), *ईश्वर और* "मेराज" (आध्यात्मिक उदगम या भगवान के मार्ग पर आरोही ऊंचाइयों की महिमा) *के पाठ्यक्रम में एक मील का पत्थर चिह्नित* करते हैं। जैसा कि पैगंबर मुहम्मद को प्रदान किया गया है [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो])। तदनुसार पवित्र पुस्तक (कुरान) में ईश्वर ने घोषणा की है:

وَكَذَٰلِكَ نُرِيٓ إِبۡرَٰهِيمَ مَلَكُوتَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ

"और इस प्रकार, हमने [पैगंबर] इब्राहीम को आकाश और पृथ्वी का राज्य दिखाया। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 75)

पैगंबर इब्राहीम (ईश्वर की शांति उन पर हो) ने जवाब में कहा:

إِنِّي وَجَّهۡتُ وَجۡهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ

"मैं अपना चेहरा (यानी, मेरा पूरा अस्तित्व - आंतरिक और बाहरी दोनों) को उसकी ओर मोड़ता हूं जिसने आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति की। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 79)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी कहा है:

انَّ لِلّٰهِ سَبْعِيْنَ اَلفَ حِجَابٍ مِّنْ نُوْرٍ لَوْ كَشَفَهَا لَاَحْرَقَتْ
سَبْحَاتُ وَجْهِهٖ كُلَّ مَنْ اَدْرَكَ بَصَرُهُ

"वास्तव में, परमेश्वर के लिए शुद्ध प्रकाश के सत्तर हजार पर्दे हैं। यदि उसने इसका अनावरण किया होता, तो उसके चेहरे की किरणें हर उस व्यक्ति को जला देती जो उसकी ओर देखता था।

इसी तरह, चिकित्सा के ज्ञान के लोगों ने अपने अधिकांश अभ्यास को चीजों के गर्म या ठंडे प्रभाव पर समान रूप से आधारित किया है। इसने उन्हें अपने पेशे के अभ्यास में एक हद तक सहायता की है। सूर्य को उज्ज्वल और गर्म बनाने में निर्माता का मुक्तिदायक गुण, शनि को शुष्क और ठंडा और बुध को और भी अधिक गर्म बनाने में इसके उद्देश्य के बिना नहीं है। हालांकि, गरीब ज्योतिषी, किसी की खगोलीय दूरदर्शिता में, सूर्य को पृथ्वी के सबसे निकट रखने में अपने निर्माता की सरलता की थाह नहीं ले सकता है, या दिन और रात की विविधताएं या उस मामले के लिए, आकाश में सभी सितारों और नक्षत्रों के कर्तव्य में विनम्र आज्ञाकारिता उसकी सर्वोच्च इच्छा के लिए। ऐसे व्यक्ति ने अपने भौतिक अस्तित्व और ज्ञात गुणों के संबंध में अपने आध्यात्मिक गुण को विश्वसनीयता देना छोड़ दिया है। केवल अगर कोई जानता कि गोलार्ध में ये सभी तारे परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा के अधीन और अधीन हैं, तो कोई भी आँख मूंदकर अपने भौतिक पहलू पर इतना विश्वास नहीं करता:

ٱلشَّمۡسُ وَٱلۡقَمَرُ بِحُسۡبَانٖ

"[उसके आदेश पर] सूर्य और चंद्रमा अपने नियत पाठ्यक्रम चलाते हैं। (कुरान, अध्याय 55, श्लोक 5)

وَٱلشَّمۡسَ وَٱلۡقَمَرَ وَٱلنُّجُومَ مُسَخَّرَٰتِۭ بِأَمۡرِهِۦٓۗ

"और सूर्य, चंद्रमा और तारे उसकी आज्ञा के अधीन हैं। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 54)

एक चीज को पराधीन माना जाता है जिसका दोहन किया जाता है और नियंत्रण में रखा जाता है और काम करने के लिए बनाया जाता है। जैसे मानव अंग मनुष्य के लिए करते हैं। उनमें से प्रत्येक को प्रदर्शन करने के लिए एक कार्य सौंपा गया है। तारे भी परमेश्वर के सेवक हैं, उसकी आज्ञाओं को पूरा करते हैं। उसी तरह, जिस तरह मस्तिष्क मानव शरीर के अन्य अंगों को उसके द्वारा मनुष्य को प्रदान की गई समझदार संकायों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए निर्देशित करता है, उसी तरह सितारे भी इस आशय के लिए ईश्वर द्वारा सौंपे गए स्वर्गदूतों के माध्यम से अपने निर्धारित प्रदर्शन में व्यस्त रहते हैं, अपने निर्देशकों और प्रमुख मूवर्स की भूमिका निभाते हैं। वास्तव में, ये स्वर्गदूत अपने निर्धारित क्षेत्रों में कई चीजों के जीवित अग्रदूत हैं।

दिखावटी कारण और उसका प्रभाव, यानी, परिणाम, केवल इतना ही मायने रखता है। अयोग्य संयोग लोगों को चीजों पर इस हद तक विश्वास दिलाने के लिए हैं कि उनकी स्थिति की तुलना उन महान अंधे पुरुषों से की जा सकती है, जिन्होंने अंधेरे हिस्से में एक हाथी को आंशिक रूप से टटोला था, और पूरे के बारे में सोचने के बजाय, उनमें से प्रत्येक को गलत निर्णय के आधार पर एक अलग नाम दिया। यही बात इस ज्योतिषी, दिव्यदर्शी पर भी लागू होती है, जो इसी तरह एक दास को एक स्वामी, राजा मानता है। यही बात पवित्र कुरान में स्पष्ट रूप से दर्शाई गई है (पैगंबर इब्राहीम (ईश्वर की शांति उन पर हो) के शब्दों के माध्यम से]:

لَآ أُحِبُّ ٱلۡأٓفِلِينَ

"मैं उन लोगों से प्यार नहीं करता जो डूबते हैं [जैसा कि सूर्यास्त के समय सूरज करता है]। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 76)

चंद्रमा और सूर्य को अज्ञानी लोगों द्वारा भगवान माना जाता है। आदेश दिए गए लोगों को तब तक कमांडर कहा जाता है जब तक कि विवेक प्रबल न हो जाए। बारह "*बुरूज*" हैं, यानी, आकाशीय क्षेत्र में माउंट।

इसकी तुलना एक महान राजा से की जा सकती है जो अपने "वजीर" (मंत्री) के साथ अपने गौरवशाली अनुग्रह कक्ष में बैठा है। उसके चारों ओर, सुविधाजनक मैदान में "*वज़ीर*" (राजा के मंत्री) के कुलीन सहायक शांति के बारह प्रतिष्ठित स्वर्गों में बैठे हैं, जिनमें से प्रत्येक के पास एक दरवाजा है। सात आज्ञाकारी लेकिन फुर्तीले घुड़सवार "वज़ीर" के सहायकों के इशारे पर प्रत्येक दरवाजे के चारों ओर मंडरा रहे हैं और प्राप्त सम्मन को ध्यान से सुन रहे हैं। उनके तत्काल कार्यान्वयन के लिए, इन घुड़सवारों से कुछ दूरी पर पैदल खड़े चार लोग हैं, जो अपने धनुष के साथ तैयार हैं और इन घुड़सवारों को ध्यान से देख रहे हैं, इस प्रकार लोगों के एक निश्चित समूह को शामिल करके और उन्हें आलाकमान के सामने पेश करके प्राप्त निर्देशों को पूरा करते हैं। फिर उन्हें या तो दंडित किया जाता है या पुरस्कृत किया जाता है।

तदनुसार, "*अर्श*" ("दिव्य सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व") मामलों के प्रभारी प्रतिष्ठित मंत्री ("वज़ीर") के भेद का निवास स्थान है, अर्थात, उच्च स्वर्ग में पसंदीदा देवदूत। यह तारों के गोलार्ध में पर्वतों के विपरीत है जैसा कि एक ज्योतिषी द्वारा परिकल्पित किया गया है। ये दिव्यदर्शी आकाश के शतरंज की बिसात पर प्यादों और सामग्री की अलग-अलग स्थिति के लिए अलग-अलग अर्थ प्रदान करते हैं, उसी तरह जैसे एक चिकित्सक अलग-अलग लक्षणों से विभिन्न बीमारियों को समझता है:

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ ۚ

"यह उनके ज्ञान की पूर्ण प्राप्ति है। (कुरान, अध्याय 53, श्लोक 30)

हालाँकि, जब परमेश्वर की दया ऐसे बीमार व्यक्ति पर हावी हो जाती है, तो उपर्युक्त परिचारक एक की देखभाल करते हैं, जैसा कि कहा गया है और एक बच जाता है। एक पैगंबर का मार्ग उसी तरह से सितारों से जड़ा होता है और "*वली*" (संत, ज्ञानवादी या ईश्वर का अंतरंग) भी किसी के इलाज में चमत्कार करता है।

اِنَّ الْبَلَاءَ مَوَكَّلٌ بِالْاَنْبِيَاءِ ثُمَّ الْاَوْلِيَاءِ ثُمَّ الْاَمْثَلُ فَا الْاَمْثَلُ

مَرِضْتُ فَلَمْ تَعِدْنِىْ

"वास्तव में, पैगंबरों को परीक्षणों और क्लेशों से गुजरना पड़ता है, फिर ईश्वर के अंतरंग ('वली') फिर जो उनके पसंद के होते हैं [लेकिन रैंकों में निचले स्तर पर, सभी ईश्वर के सामने उनके आध्यात्मिक रैंक के अनुसार]। इसलिए, जब मैं अस्वस्थ हूं, तो मेरे स्वास्थ्य के बारे में मत पूछो। (पैगंबर मुहम्मद की हदीस या परंपरा [उन पर ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो])

हम कुछ ऐसे लोगों को भी देखते हैं जो बहुत बीमार दिखते हैं लेकिन बीमार नहीं हैं। वास्तव में, ये वे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रेम के कारण ऐसी अवस्था में आ गए हैं, जिन्हें वे इतना प्यार करते हैं कि वे बीमार दिखते हैं। वास्तव में, प्यार बहुत आत्म-उपभोग करने वाला है!

अब आपको "सुभान अल्लाह" *(ईश्वर की महिमा हो [जो सभी अपूर्णताओं और कमियों से ऊपर है]),* "अल्हम्दुलिल्लाह" *(सभी स्तुति ईश्वर के लिए हो),* "ला इलाहा इल्लल्लाह () لا إله إلا الله " *(ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है), और* "अल्लाहु अकबर" *(ईश्वर महान है [किसी भी रचना से ऊपर और उससे परे है])* *शब्दों के अर्थ को समझना चाहिए क्योंकि वे* "मारिफ़ा" के अविभाज्य संयोजन हैं" या भगवान की सूक्ति।

व्युत्पत्ति में, जब आप अपने 'स्व' ("*नफ्स*") को पहचानते हैं, अर्थात, आप में धार्मिकता और सदाचार में, तो आप ईश्वर की सर्वोच्च धार्मिकता और सदाचार को जानते हैं और इस तरह "*सुभान अल्लाह*" (ईश्वर की महिमा हो) को समझते हैं। जब आप अपने स्वयं के क्षेत्र के राजा होने के कारण ईश्वर के राजत्व के बारे में जागरूक हो जाते हैं और पूरे ब्रह्मांड पर ईश्वर की भव्य सर्वोच्चता की सच्चाई को आत्मसात करते हैं क्योंकि सब कुछ उसके अधीन है। तभी तुम मान सकते हो कि तुम "*अल्हम्दुलिल्लाह*" (सभी स्तुति परमेश्वर को हो) का अर्थ समझ गए हो। वास्तव में, सभी स्तुतियाँ और धन्यवाद केवल उसी और उसके कारण हैं।

अब आखिरी लेकिन महत्वपूर्ण बात, आपको यह समझना होगा कि "*अल्लाहु अकबर*" का अर्थ क्या है। इसका अर्थ केवल "ईश्वर महान है" नहीं है। इसका मतलब इससे कहीं अधिक है। इसका मतलब सिर्फ यह नहीं है कि वह दूसरों से बड़ा है। वह सबसे महान है। फिर भी, उसके और किसी और के बीच कोई तुलना नहीं की जा सकती है। वह सभी समझ से ऊपर और परे है। वह असीम रूप से सर्वोच्च है। वह सब कुछ पार करता है और उसे समाहित करता है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और सबसे परोपकारी है! हम उनके और उनके कई अद्वितीय और शानदार गुणों और शक्तियों को उनकी रचनात्मक प्रतिभा और उनके पवित्र नामों से जानते हैं। वह इतना महान और अद्वितीय है कि हम संभवतः कभी भी उसका वर्णन करने या उसकी आशीषों की गणना करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

ईश्वर की धर्मपरायणता मनुष्य की धर्मपरायणता की तरह नहीं है। यह बस नहीं हो सकता। यह हम ही हैं, जो कम से कम उसके महान गुणों का वर्णन करने के लिए शब्द नहीं ढूंढ सकते हैं, और ऐसा करने में उसे ऐसे शब्दों या अभिव्यक्तियों का श्रेय देते हैं जो पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि वह अपनी सभी रचनाओं का निर्माता है। तो वे उसके जैसे कैसे हो सकते हैं? उसी तरह, परमेश्वर हमें क्षमा करता है, जब हम एक मनुष्य के राज्य के बीच तुलना करते हैं जिस पर कोई शासन करता है और परमेश्वर का राज्य जिस पर उसका शासन प्रकट होता है, तो हमारा मतलब यह नहीं है कि वे समान हैं। यह दिखाता है कि हम कितने

अयोग्य हैं, मनुष्य कितना असहाय है और परमेश्वर कितना महिमामय है! उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा हमसे किसी राज्य पर शासन करने के आकर्षण के बारे में पूछता है और उसे समझाता है, तो हम जवाब देते हैं कि यह वैसा ही है जैसा आप अपने बल्ले और गेंद से खेलते हैं, आप देख सकते हैं कि हम सच्चाई के कितने करीब या दूर हैं। हमने पहले भी ऐसा कहा है और हम दोहराते हैं कि केवल परमेश्वर ही परमेश्वर को समग्रता में जानता है और कोई और नहीं जानता है। परिस्थितियों में मनुष्य के लिए अपनाने का सबसे अच्छा तरीका है:

एक. अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार *उसकी सूक्ति ("मारिफा") की तलाश में लीन हो जाएं।*
दो. उसके कल्याण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए और उसके दिव्य *गुणों और रचनाओं में* उसके प्रकाश ("नूर*"), उसकी सुंदरता ("*जमाल*"), उसकी शक्ति ("*कुद्रह") की तलाश करने के लिए।
तीन. उसकी दयालुता के लिए उसका आभारी होना।
चार. अपने दिल और आत्मा के रोम-रोम से उसकी पूजा करना।
पाँच. उसकी आज्ञाओं का पालन करना।

हम सब उसी की ओर से आए हैं और उसी के पास लौटेंगे।

اِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَ الْمَصِيْرُ

"उसके पास हमारी वापसी और अंतिम उपाय है।

जितना अधिक आप उससे प्रेम करते हैं, उसका आदर करते हैं, उसकी पूजा करते हैं, उतना ही अधिक आप [उसके द्वारा] धन्य होंगे। वह उन लोगों को पसंद करता है जो ईमानदार, समर्पित, विनम्र, प्रेमपूर्ण और आभारी हैं। इस तरह के नेक आचरण का पुरस्कार निश्चित रूप से [उसके द्वारा] दिया जाएगा।

اَنَا بُدَّكَ اللَّازِمُ فَالْزِمْ بُدَّكَ

"मैं (यानी, भगवान) आपकी आवश्यक अनिवार्यता हूं, इसलिए अपनी अनिवार्यता को मजबूती से पकड़ें।

हृदय के मूल से उसकी याद ("*धिक्कार*") को केवल किसी की आत्मा से सभी [आधारी] इच्छाओं को अलग करके, [सभी] नीच कर्मों को त्यागकर और उसकी पूजा में पूरी तरह से डूबने से ही मजबूत किया जा सकता है। एक सच्चा हृदय शांतिपूर्ण और स्वच्छ होता है। एक आस्तिक ("*मोमिन*") *की भव्यता* इसमें निहित है:

قَدْ أَفْلَحَ ٱلْمُؤْمِنُونَ

"विश्वासी [वास्तविक, अंतिम, स्थायी और शाश्वत सफलता के साथ] सफल हुए हैं। (कुरान, अध्याय 23, श्लोक 1)

भगवान ने यह भी निर्दिष्ट किया है कि:

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ ٱسْمَ رَبِّهِۦ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾

"निश्चित रूप से सफल वह है जो स्वयं को शुद्ध करता है [अर्थात आत्मा को शुद्ध करता है] और अपने प्रभु के नाम को याद करता है और [सच्चे भक्ति के साथ उससे प्रार्थना करता है] । (कुरान, अध्याय 87, आयत 14-15)

दुनिया को जानना

अल-ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "किमिया-ए-सादत" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" *में शाश्वत खुशी और सच्ची स्थायी सफलता की कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट) में शाश्वत खुशी और सच्ची स्थायी सफलता की कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट)* में से तीसरे की व्याख्या करते हुए, शाश्वत आनंद की इस कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट) के चार शीर्षकों (या आवश्यकताओं) में से तीसरे की व्याख्या करते हुए जो "सांसारिक जीवन की दुनिया और वास्तविकता को जानना" है। शाश्वत आनंद के परिवर्तनकारी एजेंट की तीसरी आवश्यकता की व्याख्या करते हुए - "सांसारिक जीवन की दुनिया और वास्तविकता को जानने के लिए", वह लिखते हैं [4]:

प्रिय प्रिय! यह दुनिया एक ऐसा मार्ग है जिस पर मनुष्य अपनी यात्रा पर अगली [दुनिया] की यात्रा करता है। यह "मारिफा" या ग्नोसिस [भगवान के] के एक विशाल रेगिस्तान के अंत और तलहटी में एक नखलिस्तान है। यह दुनिया ("*दुनिया*") और अगली दुनिया ("*अखिराह*") या परलोक दो शर्तें हैं। एक

अवस्था मनुष्य के जीवन और समय से संबंधित है [जो एक के बहुत करीब है] जब तक कि उसकी मृत्यु से पहले तक नहीं होती है। परलोक किसी की मृत्यु के तुरंत बाद शुरू होता है। यह संसार [और सांसारिक जीवन] मनुष्य के लिए परलोक ("अखिराह") के लिए तैयार करने के लिए है। इस जीवन का उद्देश्य यहां अपने प्रवास के लिए अपनी कमाई के रूप में अच्छे कर्मों का खजाना इकट्ठा करना है जो परलोक में अच्छी स्थिति में खड़ा होगा। यद्यपि मनुष्य को किसी की उत्पत्ति में कमजोर और अधूरा बनाया गया है, एक साथ ही साथ ऐसी प्रतिभा (अद्वितीय क्षमता) के साथ धन्य किया गया है कि ईश्वर के आदेशों का पालन करके, कोई "*कमल*" या पूर्णता और उत्कृष्टता प्राप्त करने, स्वर्गदूतों के गुणों को प्राप्त करने और ईश्वर की महिमा को देखने की स्थिति में हो सकता है। यह किसी के अस्तित्व का कुल योग है। यह वादा किया गया 'स्वर्ग' है।

उनकी सूक्ति ("*मारिफा*") की कुंजी मनुष्य के प्रति उनकी महान दयालुता के लिए कृतज्ञता और उनके असंख्य उपहारों की सराहना और उनकी रचनाओं की सुरम्य सुंदरता के संज्ञान में निहित है। मनुष्य की धारणा की इंद्रियां व्यक्ति को उसके द्वारा उत्पादित मनोरम चीजों का स्वाद चखती हैं और उनका स्वाद लेती हैं, प्रकृति में चारों ओर फैली अपार सुंदरता के अद्वितीय वैभव को देखती हैं। किसी के कान सुखदायक ध्वनियों और संगीत की सराहना करते हैं, किसी के हाथ किसी को प्रेमपूर्ण स्पर्श की गर्माहट का एहसास कराते हैं, आदि। जब तक मनुष्य जीवित है, तब तक कोई भी इन सबका आनंद ले सकता है और आभारी हो सकता है [बिना पूछे भी किसी को दिए गए अपार उपहारों के लिए ईश्वर का आभारी हो सकता है]। जब कोई मर जाता है, तो वह इन खुफिया [एकत्र] एजेंटों (यानी, इंद्रियों) की स्वतंत्र रूप से प्रदान की गई सेवाओं को खो देता है जो अब नहीं रहते हैं। इसलिए, मनुष्य को जीवन में दो चीजों की आवश्यकता होती है:

1. अपने दिल को उन चीजों से बचाने के लिए जो किसी के दिल को मारती हैं। व्यक्ति को अपने हृदय को भोजन [और पोषण] प्रदान करना चाहिए।

2. किसी के शरीर को उन चीजों के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए जो इसे [नुकसान पहुंचाते हैं और] मारते हैं। इसे भी भोजन प्रदान करना चाहिए।

पहले हमारे प्रवचन में, हमने स्थापित किया है कि हृदय का भोजन ईश्वर का प्रेम और ज्ञान है ("मारिफा") जो इस कहावत पर आधारित है कि प्रत्येक चीज का भोजन वही है जो उसे वास्तव में पसंद है और इस आशय की आंतरिक, प्राकृतिक विशेषताओं के आधार पर उसे प्राप्त करने की इच्छा है। यह पौष्टिक और टिकाऊ भी होना चाहिए। उस मामले के लिए, यहां तक कि शरीर की देखभाल भी दिल के लिए है। क्योंकि शरीर अंततः नष्ट हो जाएगा, परन्तु हृदय जीवित रहेगा [मृत्यु के बाद भी सदा के लिए]। इस संबंध में एक सरल उदाहरण दिया जा सकता है, जैसे कि शरीर हृदय के लिए है, जैसे ऊंट (पुराने समय में

परिवहन के साधन के रूप में) "*हाजी*" या तीर्थयात्री के लिए है [जो *ईश्वर के पवित्र घर के लिए हज* या तीर्थयात्रा करता है, यानी, पृथ्वी पर भगवान की दया का प्रतीक] भगवान के मार्ग में। एक इसकी सवारी करता है और "*काबा*" (मक्का में भगवान का पवित्र घर) तक पहुंचता है। इसका उल्टा सच नहीं है, अर्थात, तीर्थयात्री ऊंट के लिए नहीं है, बल्कि ऊंट तीर्थयात्री के लिए है। स्वाभाविक रूप से, तीर्थयात्री ऊंट को तब तक खिलाएगा जब तक कि वह "*काबा*" तक नहीं पहुंच जाता [जो तीर्थयात्री का लक्ष्य और इच्छित गंतव्य है]। इस कारण से किसी की ओर से कोई भी ढील या देरी, कोई भी उपेक्षा किसी के उद्देश्य [अपने इच्छित गंतव्य तक पहुँचने] के लिए हानिकारक होगी।

मामले का और विश्लेषण करते हुए, मानव शरीर को तीन चीजों की आवश्यकता होती है:

a) खाद्य पदार्थ

b) कोट आदि

c) मकान।

दूसरे शब्दों में, खाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, खुद को ढकने की आवश्यकता के लिए कपड़ों की आवश्यकता होती है, घर अभयारण्य का स्थान है जहां कोई गर्मी और ठंड के हमले से सुरक्षित रह सकता है ताकि शरीर नुकसान से सुरक्षित रहे। संक्षेप में, ये तीन चीजें शरीर की प्राथमिक पूर्व-आवश्यकताएं, यानी किसी के भौतिक अस्तित्व का आधार हैं। हालांकि, अगर इंसान ज्यादा खाता है, तो उसकी मौत हो सकती है। घर और कपड़ों की इच्छा भी मनुष्य में अपने निर्वाह के लिए रोपित की गई है। इस प्रकृति की अत्यधिक मांग हानिकारक हो सकती है। यहां तर्क, सामान्य ज्ञान किसी के बचाव में आता है और शरीर की इन मांगों में अति-लिप्तता से रोकता है। अच्छाई का सिद्धांत जिसमें सभी नैतिक मूल्य शामिल हैं या जिससे वे प्राप्त होते हैं, उच्चतम या सर्वोच्च अच्छा जो उनकी देखरेख करता है, वह हृदय है। इसका भोजन महान है। दिल को जितना अधिक भोजन मिलता है, आत्मा के लिए उतना ही अच्छा होता है। परिणाम यह होता है कि एक हृदय अच्छी तरह से पोषण करता है, ईश्वर के प्रेम और खोज के साथ, अपना स्थान पाता है और एक शूरवीर सवार की तरह शरीर की सवारी करता है जिसके हाथ में अपने माउंट की बागडोर होती है। इसलिए, मेरे दोस्त पर ध्यान दो और इसकी लगाम ढीली न होने देना। जब आप शरीर की वासनाओं पर पूरी तरह से नियंत्रण कर लेंगे, तो लालच, दुर्भावना, अपवित्र और भ्रामक इच्छाओं पर अंकुश लग जाएगा।

दुनिया में चीजों की तीन प्रमुख श्रेणियां शामिल हैं:

1) वे चीजें जो पृथ्वी पर पाई जाती हैं जैसे सभी प्रकार की वनस्पति, खदानें और जानवर आदि। भूमि की सतह अपने आप में मानव निवास, कृषि आदि का आधार बनती है।

2) लोहा, स्टील, कांस्य आदि जैसे खनिजों का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए मनुष्य द्वारा आवश्यक उपकरण, उपकरण और अन्य उपकरण बनाने के लिए किया जाता है।

3) मनुष्य जानवरों की सवारी करता है और उनका मांस खाता है और भोजन के अन्य पदार्थों को खाकर अपने अस्तित्व को बनाए रखता है।

और भी कई जटिलताएं हैं। यह अफ़सोस की बात है कि अपनी दिनचर्या में, व्यक्ति अपने हाथों और पैरों को रखता है और सबसे बढ़कर, अपने दिल को उनमें व्यस्त रखता है, क्योंकि इस तरह के किसी व्यक्ति के हृदय की पूर्ण व्यस्तता वास्तव में बहुत हानिकारक हो सकती है। यह अपने वास्तविक उद्देश्य को भूलने और सांसारिक लालच, चुगली, क्रोध और इसी तरह की बुरी गतिविधियों में शामिल होने के कारण हृदय की मृत्यु का कारण बन सकता है।

इसी तरह, तीन पेशे - सुनार (धातुओं के लिए), बुनाई और वास्तुकला के भी सर्वोपरि महत्व के हैं। ये व्यवसाय न केवल किसी न किसी रूप में एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, बल्कि सक्रिय रूप से उनके सहायक ट्रेडों से भी जुड़े हुए हैं। जैसे कपास बीनने वाले कपास के बागानों से कपास के फूल तोड़ते हैं। कैस्टर फुलाना झारते हैं; कपास के कतरने वाले उन्हें धागों में घुमाते हैं और अंततः कपास बुनकर उन्हें विभिन्न प्रकार के कपड़ों में बुनते हैं। फिर इन कपड़ों को सिल कर सिल दिया जाता है। लोहार ऐसे उपकरण बनाता है जिनसे सिलाई, सिलाई और सिलाई की जाती है। इस तरह अलग-अलग पेशे के लोग एक-दूसरे के साथ काम करते हैं।

प्रत्येक दूसरे पर निर्भर है। स्वाभाविक रूप से, जटिलताएँ और पेशेवर ईर्ष्या पैदा हो गई। दर्जी वस्तुतः बुनी हुई सामग्री के लिए बुनकर और स्पिनर पर निर्भर हो जाता है, जो इसे एक बढ़ई या लोहार द्वारा बदले में बनाए गए यांत्रिक उपकरणों के साथ घुमाता है, जबकि एक स्वयं को दर्जी के लिए अपने स्वयं के उपकरण और उपकरण की भी आवश्यकता होती है, जिसके लिए फिर से लोहार की सेवाओं की आवश्यकता होती है। देने और लेने की इस जटिल प्रणाली के परिणामस्वरूप जटिलताएं और प्रतिद्वंद्विता होती है, जिसके लिए तीन प्रमुख चीजों के साथ-साथ अन्य कारक जो इस मुद्दे पर आधारित हैं, महत्वपूर्ण हैं:

1) राजनीतिक, दूसरे शब्दों में, सामरिक कौशल और राजनेता।

2) निगरानी गियर और सरकार।

3) "*इल्म अल-फ़िक़्ह*" या धर्म में निर्धारित नियमों और विनियमों के अनुसार कानून और आचार संहिता का ज्ञान।

अंतिम विश्लेषण में, यह बुनियादी ढांचा उपरोक्त तीन मानव पूर्व-आवश्यकताओं, अर्थात् भोजन, कपड़े और घर या निवास स्थान की प्राप्ति और उपलब्धि के लिए है। बाकी उनका अनुसरण करते हैं। ये बुनियादी मानवीय आवश्यकताएं शरीर से संबंधित हैं। बदले में शरीर हृदय, आत्मा के लिए है। आत्मा को शरीर पर चढ़ना पड़ता है जैसे तीर्थयात्री ("*हाजी*") को काबा (तीर्थयात्री का अंतिम गंतव्य - मक्का में भगवान का प्रतीकात्मक घर जो पृथ्वी पर भगवान की दया का प्रतीक है) *तक पहुंचने के लिए ऊंट की सवारी करनी पड़ती है* । मनुष्य के मामले में, किसी का लक्ष्य इसका पर्याय है, अर्थात, ईश्वर के "*मारिफा*" या सूक्ति के लक्ष्य को प्राप्त करना। काबा तक पहुँचने के अपने लक्ष्य को ध्यान में रखने के बजाय , यदि उपरोक्त तीर्थयात्री यात्रा करते समय, ऊँट की देखभाल करने और उसकी देखभाल करने में अपना समय बर्बाद करता है, तो उसकी घोर लापरवाही के लिए केवल स्वयं को दोषी ठहराया जाता है [जो किसी को अपने अंतिम लक्ष्य और गंतव्य तक पहुँचने से रोकेगा]। प्रिय प्रिय! इससे सबक सीखें। जीवन के वास्तविक उद्देश्य और उद्देश्य की कीमत पर सांसारिक मामलों में शामिल न हों। जीवन के बेकार व्यवसायों [और बेकार की खोजों] में दुनिया में बर्बाद किया गया समय आपको महंगा पड़ेगा। याद रखें कि जीवन की यह यात्रा वास्तव में परलोक ("अखिराह") की ओर एक यात्रा है। इस दुनिया का करिश्मा बहुत ही आकर्षक है। अंदर मत लिया जाए। जीवन के प्रलोभनों से ऊपर उठें। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने ठीक ही कहा है कि, "दुनिया '*हारूत* और *मारुट*' (प्रसिद्ध महान जादूगर) से भी बड़ी जादूगर है। [दुनिया की] वास्तविकता को इस प्रकार अभिव्यक्त किया जा सकता है:

एक. इस दुनिया द्वारा आप पर जादू का पहला जादू यह है कि यह आपको महसूस कराता है कि यह दुनिया और इसके सभी आकर्षण हर समय रहने के लिए हैं, जबकि वास्तव में, मामला इसके विपरीत है। समय क्षणभंगुर है, लगातार आगे बढ़ रहा है, हालांकि सुस्ती से, क्योंकि आप इसके सुखद क्षणों में समय की गिनती खो देते हैं। बीतता समय, दुनिया में उसका चलना एक छाया की तरह है। यह हमेशा एक छाया की तरह निष्क्रिय दिखता है जो अभी भी दिखता है। आपको बाद में एहसास होता है कि छाया अब वहां नहीं है जहां वह थी, इसके बजाय यह स्थानांतरित हो गई है और धीरे-धीरे और अगोचर रूप से अपनी मूल स्थिति से दूर चली गई है। वास्तव में, दुनिया गति में है। समय और ज्वार किसी का इंतजार नहीं करते। इसलिए सावधान रहें और अपने पैरों के नीचे घास को उगने न दें। एक पल खोया नहीं जाता है, लेकिन खोया हुआ पल कभी हासिल नहीं होता है। जैसा कि यह है, जीवन छोटा है। तो क्यों न इसका अधिकतम लाभ उठाया जाए।

दो. इस दुनिया के जादू का दूसरा उदाहरण यह है कि यह आपको एक प्रिय मित्र के रूप में मानता है, जिस पर यह सांसारिक प्रेम और सौहार्द के अपने उपहारों को लुभाने का नाटक करता है, जैसे कि एक वफादार साथी की तरह यह हमेशा आपके साथ रहेगा। यह आपको अपने आदेश पर हर मोहक छल से आपको इस पर भरोसा करने की कोशिश करता है, कि आप इसके ध्यान की एकमात्र सबसे अधिक प्रिय वस्तु हैं। लेकिन बाद में जब यह आपको अधर में छोड़ देता है, तो आप झुके हुए और खो जाते हैं। आपको अपने जीवन का एक झटका लगता है। होता यह है कि स्वच्छंद प्रकृति के एक सुंदर प्रेमी की तरह, यह आपको अचानक छोड़ देता है, किसी और पर अपनी रेशमी बेड़ियों को बुनता है, अपने खतरनाक पार्लर में इतने आसान शिकार को ले जाता है और मृत्यु और वीरानी का स्वाद चखता है।

यह कहा जाता है कि एक बार यीशु (ईसा [ईश्वर की शांति और आशीष] या यीशु मसीह) ने ऐसी अक्सर विवाहित महिला (जो दुनिया की वास्तविकता का अवतार थी) को "*कश्फ*" (आध्यात्मिक अवस्था जिसमें आध्यात्मिक क्षेत्र की वास्तविकताओं को जागने की स्थिति में दिखाया जाता है) की स्थिति में देखा और उससे पूछा कि उसने कितने पतियों से शादी की है? उसने जवाब दिया कि उसने गिनती खो दी है। यीशु ने उससे फिर पूछा, "क्या वे मर गए, या तुमने उनसे तलाक लिया? उसने जवाब दिया कि उसने उन सभी को मार डाला है! यीशु इस दुखद उत्तर को सुनकर टिप्पणी करने के अलावा कुछ नहीं कर सके, "उन लोगों पर दया हो जो आपके जादू में पड़ गए। उन्होंने देखा कि उनके पूर्ववर्तियों के साथ क्या हुआ था, फिर भी वे आपकी सुंदरता के जादू में चले गए, मृत्यु तक और समय पर एक सबक नहीं सीखा।

तीन. इस संदर्भ में तीसरा उदाहरण एक बूढ़ी औरत का है जो अपने चेहरे को एक आकर्षक घूंघट से ढक लेती है, खुद को भव्य कपड़ों से सजाती है, अपनी प्रोफ़ाइल को तेजतर्रार फैशन में सजाती है और दुर्लभ अमूल्य गहने पहनती है ताकि जो कोई भी उस पर नजर डाले, वह सीधे उसके प्यार में पड़ जाए। दुनिया मनुष्यों के साथ ऐसा व्यवहार करती है। यह अपनी आकर्षक सुंदरता और उत्साह के साथ किसी पर ऐसा जादू करने की कोशिश करता है कि कोई भी अपनी बुद्धि से बाहर निकल सकता है और उसके कवच से स्तब्ध हो जाता है। यह अपनी कठिनता के सभी विचारों और विचारों को अलग कर देता है। मनुष्य भूल जाता है कि जीवन कठिन और ईमानदार है। कभी-कभी किसी को इसका एहसास बहुत देर से होता है जब यह एक अशिष्ट झटका बन जाता है जब बूढ़ी औरत एक महिला के रूप में मुखौटा पहनती है, अपना घूंघट हटा देती है और इसके बजाय एक घृणित चेहरा दिखाई देता है।

चार. चौथा उदाहरण यह है कि यदि कोई ब्रह्मांड के विकास के बाद से बीत चुकी समय की अवधि की गणना करने का प्रयास करता है, वह अवधि जब यह ब्रह्मांड अस्तित्वहीन था और अब से इसके अंत तक जो समय अवधि बची है, तो वह पाएगा कि ऐसा करना असंभव है और ऐसा करने के बारे में सोचना भी विवेक की सीमा को पार कर रहा है। बस, जो कुछ भी जानता है वह यह है कि किसी की दुनिया "पालने से कब्र तक" है, यानी, पालना इस दुनिया के माध्यम से जीवन के माध्यम से किसी की यात्रा की शुरुआत है और कब्र इसका अंत है। बीच में कुछ पड़ाव होते हैं, कोई कह सकता है, जिसमें वर्ष, महीने, दिन और अंत में जो सांसें होती हैं, वे शामिल हैं। कुछ लंबी दूरी तय करते हैं और कुछ छोटी। चाहे मनुष्य का जीवन लंबा हो या छोटा, किसी का जीवन काल [वास्तव में] छोटा होता है लेकिन व्यक्ति इस महत्वपूर्ण बिंदु को पूरी तरह से भूल जाता है। कोई यहां ऐसे रहता है जैसे कि वह हमेशा के लिए जीने वाला हो। कितनी विडंबना यह है कि

हालांकि कोई अपनी अगली सांस के बारे में भी निश्चित नहीं है, वह आने वाले दस वर्षों के लिए चीजों की योजना बनाता है ताकि कोई अपनी इच्छा महसूस न कर सके या उनसे कम न हो जाए। उस दिन को देखने के लिए कोई जीवित भी नहीं रह सकता है!

पाँच. जीवन के सुखों में अति-भोग मनुष्य के परलोक ("अखिराह") के लिए उतना ही हानिकारक है जितना कि अधिक खाना एक लालची पेटू के लिए है। एक पेटू समृद्ध, मीठा, या गर्म, मसालेदार, चिकना भोजन पर झपटता है और इसे व्यभिचार से खा जाता है, इस तरह के भारी और गैर-आवश्यक भोजन के साथ अपने पेट पर बोझ डालने के परिणामों की परवाह नहीं करता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को उल्टी होने लगती है और दस्त होने लगते हैं। क्षणिक स्वाद और आनंद के लिए, किसी की अत्यधिकता व्यक्ति को इस तरह के अपमान, पीड़ा और शर्म में डाल देती है। यहां तक कि भोजन के इतने भारी कोर्स के बाद मलमूत्र भी बीमार और अप्रिय होता है। इसलिए यह देखा गया है कि इस दुनिया में जितना अधिक वासना और व्यभिचार में लिप्त होता है, उतना ही अधिक परलोक में अपमानित होता है। किसी की सांस की ऐंठन के अंतिम समय में, मनुष्य जितना अधिक अपने घर में धन, सोना, चांदी, बगीचे, नौकरों और नौकरानियों को मापता है, उतना ही अधिक गंभीर होता है कि व्यक्ति उनसे अलग हो जाता है। इसके विपरीत, एक गरीब व्यक्ति को कोई पछतावा नहीं होगा। दर्द की इस तरह की पीड़ा केवल किसी की पहले से ही बिगड़ती स्थिति को बढ़ाती है, जिसकी परिणति "'आदब" या किसी के बुरे कर्मों का प्रतिशोध में होती है।

छः. जीवन का एक और असाधारण कारक यह है कि इस दुनिया के मामलों में उनके बारे में एक आसन्न है। वे सामान्य कामों की तरह दिखते हैं, दिनचर्या और मुश्किल नहीं। अन्य सभी अवधारणाओं और विचारों से बेखबर होकर, मनुष्य उनमें पूरी तरह से लीन हो जाता है। किसी को यह एहसास नहीं होता है कि पहियों और पहियों के भीतर पहिए हैं। एक चीज दूसरी चीज की ओर ले जाती है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति का जीवन बर्बाद हो जाता है। यीशु (ईसा या यीशु क्रिस [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो]), ने कहा है कि इस दुनिया का साधक उस आदमी की तरह है जिसके होंठ समुद्र के किनारे से जुड़े हुए हैं, जो उत्सुकता से अपनी प्यास बुझाने में लीन है। उसकी प्यास बढ़ती दिख रही है। जितना अधिक वह पीता है, उतना ही अधिक वह ऐसा करने की इच्छा रखता है। अंततः, वह इस बेकार खोज में मर जाता है, प्यासा और असंतुष्ट रहता है। [इस दुनिया और इसकी संपत्ति के लिए] वासना का अभिशाप ऐसा है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ऐसे व्यक्ति के बारे में कहा है, "यह संभव नहीं है कि कोई पानी में डूबा जाए और भीगा न जाए"। इस तरह का ऐसा व्यक्ति, जिसके पास इस दुनिया के लिए इतना स्पष्ट क्रेज है, निश्चित रूप से इससे कलंकित होगा।

सात. इस दुनिया के बारे में सातवां उदाहरण एक ऐसे अतिथि की तरह है जो एक मेजबान के पास जाता है जो बहुत अमीर है और अपने मेहमानों के साथ भव्य व्यवहार करने की आदत रखता है जो रिसेप्शन की [उत्कृष्ट] गुणवत्ता के कारण बड़ी संख्या में आए थे। एक उन्हें चांदी के चूल्हे में आबनूस और एम्बर आग के सुगंधित वातावरण में उत्तम डिजाइन और सजावट के सोने और चांदी की थाली में शानदार भोजन परोसता है। एक समझदार अतिथि जो किसी के स्वभाव को समझता है, कृतज्ञतापूर्वक उसका भाग लेता है, इसमें अपना थोड़ा सा इत्र जोड़ता है और मेजबान से उनकी पारस्परिक संतुष्टि के लिए शालीनता से विदा लेता है। दूसरी ओर, एक लालची अतिथि किसी के आतिथ्य के बाद किसी के योग्य मेजबान को मूल्यवान सामान लूटने की कोशिश करता है, और इस प्रक्रिया में मेजबान के नौकरों द्वारा पकड़ा जाता है और अपमानित किया जाता है। मानवीय वासना और उसकी भ्रष्ट इच्छाएँ कामुक हैं। इस दुनिया के माध्यम से इस यात्रा में, किसी

की अपनी सही अर्जित संपत्ति ही उसकी अपनी सच्ची संपत्ति है जिसे कोई भी अपने सामान के रूप में ले जा सकता है। इस गेस्ट हाउस (या आधुनिक समय में होटल) में, कोई भी केवल कानूनी और सत्य से ही लाभ उठा सकता है। लोभ किसी का भला नहीं करेगा।

आठ. दुनिया का अगला उदाहरण, यानी इसकी आकर्षक प्रकृति का यह है कि मनुष्य इसमें खो जाता है [आकर्षण की स्थिति में]। इतना कि परलोक को पूरी तरह से भूल जाता है। उदाहरण के लिए, एक जहाज पर सवार लोगों का एक समूह। वे अपने रास्ते में एक द्वीप पर पहुंचते हैं जहां वे थोड़ी देर के लिए थोड़ी छुट्टी, व्यक्तिगत स्वच्छता और स्नान करने के लिए बाहर निकलते हैं। कप्तान ने घोषणा की कि जहाज को जल्द ही प्रस्थान करना चाहिए, इसलिए उन्हें अपनी सभी जरूरतों को जल्दी से पूरा करना चाहिए और जहाज को जल्दी से फिर से शुरू करना चाहिए। उनमें से समझदार लोग तेजी से ऐसा करते हैं, जबकि अकर्मण्य का दूसरा समूह, इधर-उधर बिखर जाता है, दृष्टि से ओझल हो जाता है, अनावश्यक रूप से द्वीप का दौरा करता है, जगह की प्राकृतिक सुंदरता, इसकी वनस्पतियों और जीवों और रंगीन सीपियों का आनंद लेता है। जब वे लौटते हैं, तो वे पाते हैं कि जहाज पर सभी आरामदायक स्थान ले लिए गए हैं। इसलिए उन्हें अंधेरे और गंदे नुक्कड़ में बैठना पड़ता है। उनके बाद आने वाले लोगों का अगला समूह अपने साथ इन शंखों का भारी बोझ लेकर आता है। वे अपने इसी तरह के बेकार भ्रमण के कारण अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में बदतर स्थान प्राप्त करते हैं। वे इतने भ्रमित हो जाते हैं कि उन्हें बोर्ड पर बैठने के लिए शायद ही कोई जगह मिलती है। इसके अलावा, उन्हें अपने गले में बंधे इन खूबसूरत गोले का भार उठाना पड़ता है। दो दिनों के बाद, ये गोले गंदे हो जाते हैं और बदबू आने लगती है। इससे भी बुरी बात यह है कि जगह की कमी के कारण वे इस बोझ को दूर भी नहीं कर सकते। उनकी शर्म और पश्चाताप भी उतना ही भारी है। आलसी लोगों का अंतिम समूह द्वीप की खोज में इतना तल्लीन हो जाता है कि अपनी अनिश्चितताओं में, वे त्वरित असेंबली के लिए कप्तान के कॉल पर ध्यान देने में पूरी तरह से विफल हो जाते हैं, अपने जहाज को याद करते हैं और जंगल में मर जाते हैं।

संक्षेप में, उनमें से पहला समूह विश्वासियों की तरह है और उनमें से अंतिम अविश्वासियों की तरह है जो उन लोगों की तरह हैं जो ईश्वर, उनके पवित्र पैगंबर (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) और न्याय के दिन को भूल गए हैं:

استحبوا الحياة الدنيا على الآخرة

"उन्होंने परलोक की तुलना में इस दुनिया के प्यार को प्राथमिकता दी है।

मध्यस्थ दो समूह पापी हैं जिन्होंने अपने बेहतर निर्णय और व्यवहार के निर्धारित पाठ्यक्रम के खिलाफ गलती की। वे इस लोक में और परलोक में पीड़ित हैं। उन्हें अपने कुकर्मों के लिए ईश्वरीय प्रतिशोध के अधीन किया जाता है।

सावधान रहें कि यह दुनिया की निंदा नहीं है। आखिरकार, दुनिया को भगवान द्वारा बनाया गया है, इसलिए यह बिना उद्देश्य के नहीं हो सकता है। इस दुनिया में सभी चीजें बुरी नहीं हैं। उदाहरण के लिए,

"'*इल्म*' या अपने आप में ज्ञान और "*अमल*' (निर्धारित आचरण के अनुसार कार्यों का प्रदर्शन) अपने आप में महत्व के दो गुण हैं। इतना अधिक, कि वे दोनों जाहिरा तौर पर इस दुनिया में हैं, लेकिन वास्तव में मनुष्य के साथ परलोक में जाएंगे। उदाहरण के लिए, ईश्वर के "*मारिफा*' या ज्ञान का ज्ञान और उसकी प्राप्ति मनुष्य के अस्तित्व की परिणति है। "'अमल" या किसी के कार्यों और अच्छे कर्मों का अपना सकारात्मक स्थायी प्रभाव होता है, अर्थात्, आत्मा की परिणामी पवित्रता और पवित्रता जो बुराई को त्यागने और ईश्वर की समर्पित पूजा द्वारा आत्मा के पोषण से आती है। ईश्वर का निरंतर स्मरण मनुष्य का अनन्त पुरस्कार है:

وَٱلْبَٰقِيَٰتُ ٱلصَّٰلِحَٰتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ

"परन्तु धर्म के स्थायी काम तेरे रब के बदले में बेहतर हैं। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 46)

"धिक्कार" *का सुस्वादुता, आनंद,* यानी ईश्वर का स्मरण, उत्तम है। हम उनकी पूजा करते हैं और इस दुनिया में इसके आकर्षण का आनंद लेते हैं लेकिन वास्तव में यह इससे संबंधित नहीं है। यह परलोक का आशीर्वाद है। इस दुनिया का एक आनंद भी है जो इंसान के मरते ही खत्म हो जाता है। लेकिन उसके प्रेम और आराधना का आनंद हमेशा जीवित रहता है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

الدنيا ملعونة وملعون مافيها الاذكر الله وما والاه

"दुनिया और सांसारिक संपत्ति अभिशाप हैं। लेकिन वे चीजें जो किसी व्यक्ति को परमेश्वर को याद करने में सहायता और सहायता करती हैं, वे धन्य हैं।

दुनिया और इसके कई लक्षणों पर यह ग्रंथ वर्तमान प्रवचन के उद्देश्य के लिए पर्याप्त है। इसके परिणाम और अन्य संबंधित मामलों, ईश्वर की इच्छा से, उचित समय पर चर्चा की जाएगी।

मृत्यु के बाद के जीवन को जानना

अल-ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "किमिया-ए-सादत" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" *में शाश्वत खुशी और सच्ची स्थायी सफलता की कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट)* में से अंतिम की व्याख्या करते हुए, शाश्वत आनंद की इस कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट) के चार शीर्षकों (या आवश्यकताओं) में से अंतिम की व्याख्या करते हुए जो "बाद के जीवन की वास्तविकता को जानना" है। शाश्वत आनंद के परिवर्तनकारी एजेंट की चौथी आवश्यकता की व्याख्या करते हुए - "मृत्यु के बाद के जीवन की वास्तविकता को जानने के लिए", वह लिखते हैं [5]:

प्रिय प्रिय! याद रखें कि जब तक आप मृत्यु की वास्तविकता को नहीं जान पाते, तब तक आप यह नहीं समझ पाएंगे कि परलोक का क्या अर्थ है। बदले में, मृत्यु की वास्तविकता, का जीवन पर सीधा संदर्भ और प्रभाव पड़ता है। जीवन की सत्यता आत्मा ("रुह") के महत्व को समझने की कोशिश में निहित है, जो दूसरे शब्दों में, स्वयं के ज्ञान ("*नफ्स*") के समान है। सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए, आत्मा और स्वयं पर्यायवाची हैं। अब तक, हम पहले ही इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि मनुष्य को अपने संपूर्ण बुनियादी ढांचे और आत्मा ("रुह") के साथ एक भौतिक फ्रेम के रूप में बनाया गया है। यह दोहराना सार्थक है कि आत्मा सवार है और शरीर वह पर्वत है जिस पर वह सवारी करता है।

आत्मा अपने रूप के अनुसार स्वर्ग में या नरक में होगी, चाहे वह शरीर किसी भी हो। इसे या तो पवित्र किया जाएगा या निंदा की जाएगी। शरीर के बिना, मनुष्य पर ईश्वरीय कृपा से प्रभावित हृदय की अमूल्य संपत्ति को "आत्मा का स्वर्ग" कहा जाता है। ऐसी आत्मा के साथ ईश्वर के धन्य व्यक्ति को परलोक में सुंदर महलों, बगीचों और असंख्य अन्य प्रसन्नताओं के साथ पुरस्कृत किया जाएगा [जो किसी भी आंखों ने कभी नहीं देखा है, और किसी भी दिल ने कभी कुरान और भविष्यसूचक शिक्षाओं के अनुसार कल्पना नहीं की है]। इसके विपरीत, शरीर के बिना अपने स्वयं के बुरे कर्मों के कारण पीड़ा और कष्टों से ग्रस्त आत्मा को "आत्मा में आग" कहा जाता है। उसका निवास नर्क होगा। कांटेदार हेजेज और बिच्छू [वहां] किसी के साथी होंगे। इस विषय पर अधिक विवरण इस कार्य के साथी खंड में प्रदान किया गया है [मेरी पुस्तक में] "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए पथ के ज्ञान का पुनरुद्धार"। बहुत से लोग उस मौत के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं जिस पर हमने यहां छुआ है; लोग मृत्यु के विषय के बजाय स्वर्ग और नरक पर अधिक ध्यान देना पसंद करते हैं। "*हदीस कुद्सी*" (पैगंबर मुहम्मद की परंपराएं [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो] जिसमें उन्होंने ईश्वर से प्रेषित किया था) में कहा गया है कि:

اعدت لعبادی الصالحین ما لا عین رأت ولا اذن سمعت

ولا شکر علی قلب بشر

"मैंने अपने धर्मी दासों के लिए [ऐसी खुशियों] को तैयार किया है, जो न किसी आंख से देखे गए हैं, न किसी कान से सुने गए हैं, और न किसी मनुष्य के हृदय में आए हैं।

इसके अलावा, मनुष्य के दिल में एक खिड़की है जो आकाशीय (या आध्यात्मिक) क्षेत्र की ओर खुली है जिसके माध्यम से वह अदृश्य ("ग़ैब") के रहस्यों को देखता है। यह उन्हें सुनी-सुनाई बातों से नहीं जानता है, लेकिन यह वास्तव में उन्हें देखता है और परलोक में आशीषों की स्थिति या परलोक में निंदा किए जाने की स्थिति को देखता है। यह स्पष्ट रूप से समझता है, एक चिकित्सक के रूप में स्वस्थ या बीमार होने की दो स्थितियों के बीच स्पष्ट अंतर होगा। यह बीमारी में उचित दवा लेने के गुण के प्रति और डॉक्टर द्वारा निर्धारित रोकथाम का पालन करने के गुण के प्रति पूरी तरह से जीवित हो जाता है, उन चीजों से दूर रहने के लिए जो उसने मना किया है। इस प्रक्रिया को शरीर की धन्य ("*सादाह बदनिया")* कहा जाता है। इसके विपरीत, अधिक खाने और अपने डॉक्टर पर ध्यान न देने जैसी अतिभोग बुरी है और इसे शरीर की बीमारी ("*शकवातु बदानिया")* कहा जाता है। व्यावहारिक अवलोकन किसी को स्पष्ट रूप से देखता है कि हृदय, आदम की संतान, यानी मनुष्य की आत्मा, में गुण और नीचता दोनों हैं। सदाचार का प्रतिफल प्राप्त करने का 'इलाज' ईश्वर की पूजा और ज्ञान ("मारिफा") में निहित है, जबकि शाप, नीचता का जहर अज्ञानता की मूर्खता और अभद्र आचरण में निहित है [क्योंकि महान उद्देश्य केवल महान साधनों के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं और अभद्र उद्देश्य ही अभद्र साधनों का एकमात्र परिणाम हैं]। इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए, महान ज्ञान प्राप्त करना है। जिन लोगों ने खुद को "*उलेमा" या विद्वान कहा है, उनमें से कई न* केवल इस ज्ञान में सीखे हुए हैं, बल्कि इसके विरोधी और इनकार करने वाले भी हैं। निश्चित रूप से किसी चीज़ को जानने से व्यक्ति झुक जाता है ("अलीम") और उसे न जानने के लिए एक अज्ञानी बन जाता है। फिर भी, वे वहां हैं। वे भौतिक स्वर्ग या नरक के बारे में ही जानते हैं। उनके लिए, इसके बाद अफवाहों तक ही सीमित है या आँख बंद करके 'अक्सर पीछा किए जाने वाले' का पालन करना है। यह जोड़ने की जरूरत नहीं है कि हमने अरबी में ठोस तर्कों के आधार पर विषय के अध्ययन और शोध में तथ्यों को लिखा है।

हम परिस्थितियों में, केवल यह जोड़ सकते हैं कि एक बुद्धिमान और चतुर व्यक्ति जिसका आंतरिक ("बैटिन") या आत्मा शुद्ध और पूर्वाग्रहरहित है, वह कुछ लोगों के विपरीत, जो इसके बारे में पूरी तरह से अंधेरे में हैं, परलोक के न्याय की ओर ले जाने वाला धर्मी मार्ग ढूंढेगा।

मृत्यु के बारे में सच्चाई को समझने के लिए, आपको पता होना चाहिए कि मनुष्य की दो प्रकार की आत्माएं होती हैं। "*रुह हैवानी*" का अर्थ है भौतिक, पशु आत्मा। दूसरे को "*रुह इंसानी*" कहा जाता है जो मनुष्य में स्वर्गदूतों की आत्मा की उत्पत्ति से आत्मा है। पशु आत्मा का स्रोत, डेल्टा, फव्वारा मांस की वह गांठ है जिसे [भौतिक] 'हृदय' कहा जाता है जिसे मनुष्य के ऊपरी बाईं ओर रखा जाता है। इसकी निम्नलिखित विशिष्ट विशेषताएं हैं:

एक. इसमें मध्यम प्रकृति के शारीरिक संयुग्मन की नाजुक भोली ज्वरता होती है।
दो. ज्वर या हल्का बुखार जो अपनी उत्पत्ति में मध्यम है, [शारीरिक] हृदय की नसों से निकलता है, मस्तिष्क और शरीर के अन्य भागों तक पहुंचता है।
तीन. यह स्पंदित है।

संक्षेप में, यह पशु आत्मा है जो माध्यम और गति की जिम्मेदारी को वहन और संचालित कर रही है। जब यह मस्तिष्क तक पहुंचता है, तो इसकी गर्मी कम हो जाती है और क्लेमेंट बन जाती है। आंखें इसके माध्यम से देख सकती हैं और कान सुन सकते हैं। यह धीरे-धीरे सभी इंद्रियों तक फैलता है। आत्मा की तुलना दीपक से की जा सकती है। जब यह घर में पहुंचता है, तो जहां इसे रखा जाता है, उसके चारों ओर की दीवारें जगमगा उठती हैं। उसी प्रकार जिस प्रकार यह दीपक घर के आस-पास के वातावरण को प्रबुद्ध करता है, उसी प्रकार ईश्वर अपनी परम कृपा से प्रकाश, आंखों में देखने की शक्ति और इस आत्मा द्वारा कानों में सुनने की क्षमता प्रदान करता है और सभी ज्ञानेन्द्रिय सक्षम (सक्षम) होते हैं।

दूसरी ओर, यदि कुछ नस प्रभावित हो जाती है और मुड़ जाती है या गांठ हो जाती है, तो लकवाग्रस्त, सुस्त और निष्क्रिय होने के लिए उपयुक्त है और चिकित्सक यह देखने की पूरी कोशिश करता है कि यह गाँठ खुल जाए और किसी तरह हटा दी जाए। दूसरे शब्दों में, आत्मा दीपक की लौ की तरह है, हृदय बाती है और भोजन तेल है। तेल के बिना, दीपक को डॉज किया जाता है। भोजन के बिना, यानी तेल के बिना, आत्मा का संयमी स्वभाव रुक जाता है और इस प्रकार मृत्यु हो जाती है। यदि तेल है लेकिन बाती बहुत अधिक तेल का उपयोग कर रही है, तो इसका मतलब है कि यह दोषपूर्ण हो गया है और उस चरण तक पहुंच सकता है जब यह बिल्कुल भी काम नहीं कर सकता है। अंत में हृदय के साथ यही होता है - यह अपने भोजन को स्वीकार करने और आत्मसात करने में असमर्थ हो जाता है। इसी तरह, यदि दीपक को ढक दिया जाता है, तो यह बाती और तेल की उपस्थिति के बावजूद बुझ जाएगा। इसी तरह, एक जानवर गंभीर रूप से घायल होने पर मर जाता है।

आइए पॉलिश किए गए दर्पण का उदाहरण देखें। जब तक यह साफ और साफ रहता है, तब तक यह जो कुछ भी प्रक्षेपित होता है उसे स्वीकार करता है और इसे बहुत संतोषजनक ढंग से प्रतिबिंबित करता है। हालाँकि, यह तब नहीं कर सकता जब यह गंदा, कलंकित या धूल से ढक जाता है। इसमें चीजों के चित्र

और उपस्थिति दिखाई नहीं देती है, इसलिए नहीं कि वे वहां नहीं हैं, बल्कि इसलिए कि दर्पण बहुत गंदा हो गया है और इसलिए छवियों को प्रतिबिंबित करने में असमर्थ है।

इसी तरह, इसे हलचल करने में सक्षम बनाने के लिए माध्यम की क्षमता और पशु आत्मा में अंगों की संवेदनाएं, संयम के अपने अंतर्निहित प्राकृतिक स्वभाव के कारण और इसकी महीन नाजुक रूप से भोली ज्वर के कारण भी है। लेकिन जैसे ही क्लेमेंट प्रकृति की यह विशेषता, उसका संयम खो जाता है, इसकी ताकतें जो प्राइम मूवर्स के रूप में काम करती हैं, काम करना बंद कर देती हैं। इस प्रकार, परमेश्वर का यह अनूठा आशीर्वाद खो दिया जाता है। शारीरिक अंग काम करना बंद कर देते हैं और मनुष्य को मृत घोषित कर दिया जाता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा सौंपे गए देवदूत का काम, जिसे हम "*मलिक उल-मौत*" या "मौत के दूत" के रूप में जानते हैं, शुरू होता है। ऐसे मामलों का संज्ञान उसे सबसे अच्छी तरह से पता है। हम उन्हें सुनी-सुनाई बातों से "मलिक *उल-मौत*" या "मौत के दूत" के रूप में जानते हैं, लेकिन उनकी वास्तविक ईमानदारी कुछ ही लोगों के ज्ञान में है।

मनुष्य की मृत्यु का प्रश्न हालांकि अलग है। ऊपर वर्णित पशु आत्मा के अलावा, मनुष्य की एक और आत्मा ("रुह") है *जिसे* "रूह इंसानी" या "मानव आत्मा" या "हृदय" *कहा जाता है*। यह आत्मा, उपरोक्त भौतिक या जैविक आत्मा के विपरीत, बहुत उच्च स्तर पर है। मनुष्य की आत्मा विभाजन को स्वीकार नहीं करती। इसके महत्व और महत्व को इस तथ्य से देखा जा सकता है कि इसमें ईश्वर की "*मारिफा*" या सूक्ति हो सकती है। वास्तव में, ईश्वर भी एक और केवल है। उनके "*मारिफा*" या ग्नोसिस का विभाजन भी मान्य नहीं है। इसलिए उनके "*मारिफा*" या ग्नोसिस की अवधारणा को किसी भी शारीरिक रूप में सीमित किया जाना ईशनिंदा के समान है।

प्रिय प्रिय! यदि तर्क के लिए, हम मनुष्य में बाती, उसकी लौ और प्रकाश की उपस्थिति को पूर्व-मान लें, तो हम केवल दीपक के भौतिक घटकों, अर्थात् इसकी संरचना और बाती को पशु रूप से जोड़ पाएंगे, तो भी हम इसके प्रकाश को इस तरह से नहीं बता पाएंगे, मनुष्य की 'मानव आत्मा' के अनुरूप। यह स्पष्ट है, क्योंकि इसका पूर्व क्षणिक है, लेकिन बाद वाला नहीं है, अर्थात, भौतिक दीपक का प्रकाश दीपक के अधीन है। यदि दीपक टूट जाता है, तो उसकी रोशनी बुझ जाएगी। लेकिन मनुष्य की वास्तविक आत्मा (यानी, 'मानव आत्मा') कभी भी बुझती या नष्ट नहीं होती है, हालांकि, किसी की 'पशु आत्मा' नष्ट हो सकती है। एक तरह से, मनुष्य में पशु आत्मा किसी की वास्तविक आत्मा का पर्वत है जिस पर वह काठी और सरपट दौड़ता है। यह भी, साधन है, किसी के लिए ऐसा करने के लिए, किसी के लाभ के लिए उपकरण। इसलिए, जब यह पर्वत (यानी, पशु आत्मा) नष्ट हो जाता है, तो मनुष्य अपना उपयोग खो देता है। ठीक उसी तरह, जैसा कि इसकी अनुपस्थिति में, व्यक्ति अधिक आत्मविश्वास प्राप्त करता है और अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बन जाता है। यह किसी के लिए सबसे कम मायने रखता है, खासकर इस अवधि के

दौरान, क्योंकि मनुष्य ने इतनी मेहनत की है कि उसने पहले से ही गणना और उल्लेखनीय की स्थिति की कुछ योग्यता हासिल कर ली है। इस महिमा पर अधिकार की मुहर लगाने के लिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने भी कहा है कि, "मृत्यु एक आस्तिक के लिए एक उपहार है"।

स्थिति एक शिकारी के समान है जो किसी के शिकार गियर और सामग्री के साथ मैदान में है। तर्क के लिए, यदि कोई उस शिकार को प्राप्त करने में सफल हो जाता है जिसके लिए वह विशेष रूप से सभी तरह से आया है, लेकिन [उस प्रक्रिया में] अपना गियर खो देता है, तो वह अभी भी बेहतर है। वैकल्पिक रूप से, यदि कोई शिकार प्राप्त करने से पहले अपना शिकार गियर खो देता है, तो किसी की स्थिति उसकी निराशा के लिए बदतर हो जाएगी [किसी के उद्देश्य को प्राप्त करने में विफलता के कारण]। इसके लिए इसमें एक गहरा सबक है। ऐसा व्यक्ति अपनी असफलता को अपने हाथों से पूरा करता है। परलोक का प्रतिशोध एक से आगे निकल जाता है, जिसके परिणामस्वरूप असंख्य पीड़ाएं होती हैं।

कुछ अंगों में लकवा मार सकता है। किसी के हाथ-पैर काम करना बंद कर सकते हैं। किसी को याद रखना चाहिए कि किसी ने इन उपकरणों का उपयोग खो दिया है। जो ठीक नहीं हो सकता उसे सहना चाहिए। इसलिए, जब तक मनुष्य, मास्टर एजेंट, जीवित है, तब तक इन अंगों का महत्व गौण है। किसी की सच्चाई, इसलिए वास्तविकता उनमें नहीं है, न पीठ, पेट या सिर में। उस मामले के लिए, भले ही किसी के शरीर के सभी अंग, उसके शरीर ने काम करना बंद कर दिया हो, अपने सेवक होने से रोक दिया हो और किसी के नियंत्रण में न रहें, फिर भी किसी की अमरता संभव है, क्योंकि पशु आत्मा मानव आत्मा के समान नहीं है। तथापि, इसके दो पहलू हैं जिन पर पुन जोर दिए जाने की आवश्यकता है:

- एक. एक प्रकार के अस्तित्व में [जिसे जीवन कहा जाता है], शरीर की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। भूख, प्यास, नींद आदि ऐसी घटनाएं हैं जो भौतिक रूप के बिना नहीं होती हैं या कार्य नहीं करती हैं, लेकिन मनुष्य के मरने पर मर जाती हैं।
- दो. दूसरे अस्तित्व में [केवल 'मानव आत्मा' या "*रुह इंसानी*" के साथ], शरीर का कोई अस्तित्व नहीं है। यह अस्तित्व दिव्य सौंदर्य ("*जमाल इलाही*") की खोज के भगवान के ज्ञान ("*मारिफा*") का भव्य प्रिक्स है, उनकी शानदार भव्यता और महिमा उत्कृष्टता; सुंदर, विस्मयकारी और इतना रमणीय मनोरम, कि आनंद अपने सर्वोच्च परमानंद में स्तब्ध खड़ा है। ये अनन्त आशीषें हैं ("*बकियात उस-सलीहात*") जिनका उल्लेख परमेश्वर पवित्र पुस्तक (कुरान) में करता है। ये 'धन्य के शाश्वत आशीर्वाद, अनुसमर्थित भले' ईश्वर का अद्वितीय पुरस्कार हैं, जिसके लिए मानव आत्मा को हमेशा संतुष्ट रहना चाहिए। भगवान के अभिजात वर्ग, चुने हुए लोगों के पास यह गुण उनके स्वयं ("*नफ्स*") में सबसे आगे होता है जो स्वचालित रूप से उन्हें एक निरंतर आरोही उच्च आसन पर उठाता है। इसके विपरीत, उपेक्षा, अज्ञानता और मूर्खता इसका दूसरा पक्ष है जो कलंकित होने और आत्मा के अंधेपन के समान है:

وَمَن كَانَ فِي هَٰذِهِۦٓ أَعۡمَىٰ فَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ أَعۡمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلٗا ٧٢

"और जो कोई इस [संसार] में अंधा है, वह परलोक में अंधा होगा और [सत्य के] मार्ग से और भटक जाएगा। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 72)

जब तक आप मनुष्य में इन दो प्रकार की आत्माओं के बीच अंतर नहीं करते हैं, तब तक आप मृत्यु को नहीं समझ पाएंगे।

पशु आत्मा भौतिक पाठ्यक्रम के क्रम में है, कच्चा मुख्य रूप से वाष्पशील आनुवंशिकी से संबंधित है, जैसा कि पहले वर्णित है। पित्त, फाइब्रोसिस और अन्य मलमूत्र मिलकर इसका यौगिक बनाते हैं। उनके मूल तत्व पानी, अग्नि, धूल और हवा हैं। इसलिए उनकी परस्पर क्रिया द्वारा चिह्नित परिणामी एकरूपता या भिन्नता को प्रासंगिक गर्मी, ठंड, नमी और सूखापन के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। चिकित्सा ज्ञान या उसका चिकित्सक - डॉक्टर - परिणामस्वरूप अपने महत्व के लिए पूरी तरह से जीवित रहता है।

हालांकि, वे यह नहीं जानते हैं कि अपने रोगियों के शरीर का इलाज करते समय, वे अनजाने में शरीर के भौतिक ढांचे को 'मानव आत्मा' द्वारा सवारी करने के लिए उपयुक्त बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जो मनुष्य की वास्तविक आत्मा है। प्रकृति में एंजेलिक, "*नफ्स अल-मुतमैना*" या मनुष्य की परिष्कृत आत्मा जो आंतरिक शांति और पूर्ण संतुष्टि के स्तर तक पहुंच गई है, में भव्य विशेषताएं हैं। मनुष्य की जीवन यात्रा किसी की अपनी इच्छा से नहीं होती है। किसी को ऐसा करने के लिए नियुक्त किया जाता है, ताकि वह इस खतरों के मार्ग के बारे में अपनी वास्तविक योग्यता दिखा सके और इसे उड़ते हुए रंगों के साथ लक्ष्य पोस्ट तक पहुंचा सके और कड़ी मेहनत और क्लेशों का प्रतिफल प्राप्त करे, जिसका सामना [सांसारिक जीवन के] इस कठिन मार्ग में वीरतापूर्वक किया गया था। भगवान कहते हैं:

قُلۡنَا ٱهۡبِطُواْ مِنۡهَا جَمِيعٗاۖ فَإِمَّا يَأۡتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدٗى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا
هُمۡ يَحۡزَنُونَ ٣٨

"हमने कहा: 'तुम सब यहाँ से नीचे उतरो [अर्थात्, परमेश्वर की उपस्थिति में स्वर्ग से; यह आदम और हव्वा को एक साथ संबोधित किया गया था; मेरे मार्ग का अनुसरण करने वाले के पास मेरे मार्गदर्शन के लिए तुम्हारे पास आएगा, फिर जो कोई मेरे मार्गदर्शन का पालन करेगा, उस पर कोई भय नहीं होगा, और न ही वे शोक करेंगे। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 28)

दयालु परमेश्वर ने यह भी जोड़ा है:

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَـٰٓئِكَةِ إِنِّى خَـٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن طِينٍ ﴿٧١﴾

فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِى فَقَعُوا۟ لَهُۥ سَـٰجِدِينَ ﴿٧٢﴾

"भगवान ने स्वर्गदूतों से कहा, 'मैं मिट्टी से मनुष्य को बनाने जा रहा हूं, इसलिए जब मैंने मनुष्य को बनाया है और एक में सांस ली है, तो आत्मा मेरे द्वारा बनाई गई है ...'" (कुरान, अध्याय 38, आयत 71-72)

इस आयत में, इन दो आत्माओं ("रूह") के बीच के अंतर का सूक्ष्म संदर्भ है। एक को धूल के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है और प्रकृति में इसके संयम का अर्थ प्रदान करने के लिए शब्द का उपयोग किया गया है, जबकि "*नफख्तू फेहे मिन रूही*" या "मैंने एक में सांस ली मेरी आत्मा" 'अपने स्वयं के स्व' के लिए एक नाजुक संकेतक है। यह रूई की मशाल बनाकर उसमें आग लगाने जैसा है, जिससे रोग के कीटाणुओं को खत्म किया जा सके।

यह याद रखा जा सकता है कि प्रमुख कारक "मनुष्य के लिए ईश्वरीय कानून और आचार संहिता" है जो किसी के मार्गदर्शक, मॉडरेटर और मॉनिटर के रूप में कार्य करता है। अंतिम विश्लेषण में, हम फिर से उसी चीज़ पर आते हैं, अर्थात्, मनुष्य के अस्तित्व का सार, ईश्वर के "*मारिफा*" या सूक्ति को प्राप्त करने के लिए स्वयं के बोध में होना। अपने आप को कैसे समझें और पहचानें, यह इस बात की कुंजी है कि ईश्वर के "मारिफा" या सूक्ति को कैसे प्राप्त किया जाए। उसी प्रकार इन आत्माओं के बारे में सच्चाई को समझना ही परलोक का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना है।

विश्वास की मूल नींव ("दीन" या ईश्वर का मार्ग), अन्य पूर्व-आवश्यकताओं के बीच, ईश्वर और उसके द्वारा निर्धारित 'न्याय के दिन' में स्पष्ट विश्वास में निहित है। इसमें अपने एकांत में एक गुप्त समझौता है जहां हमें छूने की अनुमति नहीं है। न ही इसे आसानी से समझा या समझा जा सकता है क्योंकि इसकी गहरी गहराई में, "*मारिफा तुल हक*" और "*अखिराह*", यानी, सर्वोच्च भगवान की सच्चाई और उसके द्वारा वादा किए गए परलोक छिपा हुआ है। तो, आप इसके ज्ञान और समझ को प्राप्त करने के प्रयास में पूरी तरह से प्रवेश कर सकते हैं और अपनी बुद्धि को समाप्त कर सकते हैं। इसका शोध इतना भयानक, इतना अलौकिक, इतना जटिल है कि यह इस हद तक अथाह है कि जिन लोगों ने इसके बारे में कम से कम सुना है, वे विस्मय में फंस गए, स्तब्ध रह गए और इसके अल्फ़ाज़ और ओमेगा को भी स्वीकार करने से इनकार कर दिया और कहा कि यह असंभव है, विचार की अपवित्रता पर आधारित है और व्यर्थता में पूरी तरह से अयोग्य अभ्यास पर आधारित है। न तो भविष्यद्वाणी की परंपराएं और न ही पवित्र कुरान इस मुद्दे पर

[स्पष्ट रूप से] आधारित है। फिर तुम ऐसा करने का साहस कैसे कर पाओगे? यही कारण है कि लोग इसे सुन नहीं सकते। इसलिए भविष्यवक्ताओं ने कहा है:

كلموا الناس على قدر عقولهم

"लोगों से उनकी बुद्धि [और मानसिक क्षमताओं] के स्तर के अनुसार बात करें।

यही कारण है कि कुछ भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर के द्वारा अवगत कराया गया था, कि वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उन विशेषताओं को न छुएं जिन्हें लोग समझने में सक्षम नहीं होंगे क्योंकि जब वे उन्हें समझने में सक्षम नहीं होंगे, तो वे उन पर विश्वास करने से इनकार कर देंगे जो उनके लिए हानिकारक होंगे।

मनुष्य की वास्तविक आत्मा ('मानव आत्मा') के बारे में सच्चाई का विस्तार से वर्णन किया गया है। 'पशु आत्मा' तब मर जाती है जब मनुष्य के शरीर के अंग निष्क्रिय और बेजान हो जाते हैं। 'मानव आत्मा' [जीवन या मृत्यु] की परवाह किए बिना प्रकट रहती है। इसलिए, मनुष्य का पुनरुत्थान, न्याय का दिन, पुनरुत्थान शब्दों का व्युत्पत्ति में अर्थ यह नहीं है कि 'शून्यता' के बाद, मनुष्य को फिर से अस्तित्व में लाया जाएगा। बल्कि, इसका मतलब है कि किसी को रूप, एक नया शरीर दिया जाएगा, जिस तरह से यह पहले किया गया था और फिर उसे फिर से अपेक्षित विशेषताओं और गुणों के साथ नवीनीकृत किया जाएगा। यह बहुत आसान होगा [भगवान के लिए पहली सृष्टि की तुलना में जिसमें शरीर और आत्मा दोनों बनाए गए थे]।

उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि अच्छे कर्मों से आत्मा की पवित्रता और भव्यता होती है। ऐसे गैर-अनुरूपतावादियों को स्वीकार करने में विफल क्यों होना चाहिए, यह किसी की समझ से परे है। इसलिए, किसी को तार्किक रूप से सीखना चाहिए कि संत (ज्ञानवादी), ईश्वर के अभिजात वर्ग, खुद को इस दुनिया के माध्यम से यात्रा में मानते हैं। ऐसा व्यक्ति, इस मार्ग पर यात्रा करते हुए, अपने लाभ के लिए माल का व्यापार और इकट्ठा करता है और नुकसान को रोकने के लिए गैर-लाभकारी सामग्री इकट्ठा करता है, वास्तव में अपने अंतिम गंतव्य, अर्थात्, परलोक के रास्ते में किसी के द्वारा किए गए अच्छे सौदेबाजी को ले जा रहा है। एक जानता है:

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّآ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ

"हम परमेश्वर के हैं और उसी के लिए हमारी अंतिम वापसी (गंतव्य और घर वापसी) है। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 156)

इसलिए, व्यक्ति हर समय पारगमन में रहने की स्थिति के प्रति पूरी तरह से जीवित रहता है। किसी का वास्तविक देश यह दुनिया नहीं है। इस प्रकार, कोई व्यक्ति इस मार्ग पर आगे बढ़ता है और विभिन्न पड़ाव बिंदुओं (स्टॉप) और मील के पत्थर पर अपने प्रवास में अंतिम माल एकत्र करता है, यह पूरी तरह से जानते हुए कि जब कोई अपने लक्ष्य तक पहुंचता है, तो उसे अपने स्थायी निवास के देश में, परलोक में, एक के लिए उचित मूल्य मिलेगा।

आत्मा की यात्रा में चार अलग-अलग स्टेशन या मील के पत्थर हैं। आत्मा मनुष्य की वास्तविकता है जबकि शरीर नहीं है। आत्मा का एक विश्राम स्थल भी है - जिस स्थान से इसकी उत्पत्ति हुई है वह उसका वास्तविक घर या देश है और यह अपनी यात्रा में इस दुनिया में आया है और अपने मूल में वापस लौटने से पहले इसके कई मील के पत्थर हैं। आत्मा की यात्रा में हर मील का पत्थर, अपने आप में एक दुनिया है अगर कुछ दार्शनिक चिंतन के साथ देखा जाए। वे इस प्रकार हैं:

1. पहला मील का पत्थर "*आलम महसुसात*" या "भावना और संवेदनाओं का क्षेत्र" है।

2. दूसरा मील का पत्थर "आलम *तखैयुलत*" या "अवधारणा के दायरे [विचारों और विचारों का] है"।

3. तीसरा मील का पत्थर "आलम *मौहुमात*" या "अविवेकी लोगों के विवेक का क्षेत्र" है।

4. चौथा मील का पत्थर "आलम *मकुलात*" या "अच्छी व्यवस्था, उपलब्धि और आत्म-जागरूकता के क्षेत्र" का है। यह इस मील के पत्थर में है कि व्यक्ति को स्वयं या अपनी वास्तविकता और सत्य के बारे में जागरूकता मिलती है।

आइए निम्नलिखित उदाहरण से उनकी स्थिति को समझने का प्रयास करें:

एक. जब तक कोई "आलम *महसुसात*" या "भावना और संवेदनाओं के क्षेत्र" में रहता है या रहता है, तब तक वह एक पतंगे की तरह होता है जो जलती हुई लौ के चारों ओर घूमता रहता है और सहज रूप से मंडराता रहता है। पतंगे के पास आंखें हैं लेकिन सोचने और याद रखने की बुद्धि नहीं है। जलती हुई लौ के लिए पतंगे का आकर्षण अंधेरे से बचने और प्रकाश के प्यार से भड़कने के लिए इसकी आंतरिक विशेषता के लिए लौकिक है। चूंकि यह संतुलित विचार और सुरक्षा की शक्ति के साथ नहीं है, रोशनी में बाहर निकलने की तलाश में, यह गलती से जलती हुई लौ को उस उद्घाटन के रूप में मानता है, जिसके परिणामस्वरूप यह अंततः गरमागरम लौ पर गिरता है और मर जाता है। यदि कीट तर्क करने की क्षमता से संपन्न होता, तो वह अपने पंखों पर महसूस होने वाली पहली गर्म चमक के बाद लौ के पास नहीं जाता। यह कमी [बुद्धि की] कीट को किसी भी गणना की स्थिति तक नहीं पहुंचाता है। उदाहरण के लिए, इसके विपरीत, अन्य जानवर

चोट लगने पर किसी चीज़ से दूर भागने की कोशिश करते हैं। छड़ी को देखते ही वे खतरे से भाग जाते हैं।

दो. "आलम तखैयुलत" *या "गर्भाधान के क्षेत्र [विचारों और विचारों का]" के दूसरे चरण में, मनुष्य मवेशियों और कमजोर दिमाग वाले जानवरों के दायरे में रहता है।*

तीन. तीसरा क्षेत्र उपरोक्त "आलम *मौहुमात*" या "अविवेकी लोगों के विवेक के क्षेत्र" का है। इस स्तर पर, मनुष्य बकरी और घोड़े के बराबर आता है, इसलिए कहने के लिए, अर्थात्, दूसरे चरण के कमजोर दिमाग वाले जानवरों के विपरीत, इस स्तर पर, व्यक्ति अपने शत्रुओं को पहचानता है और प्राकृतिक आवेगों द्वारा खतरे को टालने की कोशिश करता है, अर्थात्, अपने जीवन के लिए भागने का प्रयास, जिस क्षण कोई भेड़िये या शेर पर अपनी आँखें डालता है, हालांकि किसी ने उन्हें पहले नहीं देखा होगा। एक में कुछ एक शक्तिशाली बैल, ऊंट या जिराफ से डरने के लिए नहीं कहता है, हालांकि, वे उनसे आकार में बड़े हैं। यह वृत्ति स्वाभाविक रूप से [और आंतरिक रूप से] ईश्वर द्वारा एक में निहित है। फिर भी ये जानवर इतने बुद्धिमान नहीं हैं, अर्थात, उस स्तर पर जहां उन्हें चौथे चरण में आने वाले स्वयं की देखभाल करने के लिए सक्षम माना जा सकता है।

चार. चौथा चरण "आलम *मकुलात*" या "अच्छी व्यवस्था, उपलब्धि और आत्म-जागरूकता के क्षेत्र" का है जैसा कि पहले कहा गया है। तीसरे चरण तक मनुष्य अस्पष्टता के क्षेत्र में रहता है। यह वास्तव में यहीं से है कि मनुष्य मनुष्य होने की स्थिति में प्रवेश करता है, अर्थात, मनुष्य की महिमा के दायरे में। इस चरण में ऐसी चीजें देखी जाती हैं जहां अनुमान और अंधविश्वास पूरी तरह से समाप्त हो जाते हैं।

"*आलम महसुसात*" या "भावना और संवेदनाओं के क्षेत्र" में, मनुष्य आने वाली चीजों से बचते हुए अपने सही परिप्रेक्ष्य में चीजों का आकलन और मूल्यांकन करना शुरू कर देता है। यहां, कोई चीजों को वैसे ही सारांशित करता है जैसे कोई उन्हें देखता है। चीजों की एक इकाई होती है, एक पहचान होती है। कोई उन्हें सही ढंग से वर्गीकृत करने का प्रयास करता है और आम तौर पर ऐसा करने में सफल होता है। स्वाभाविक रूप से, "*महसुसात*" या "इंद्रियों और संवेदनाओं के क्षेत्र" की दुनिया में, मनुष्य की एकाग्रता ऐसी भावनाओं पर आधारित होती है जो पृथ्वी पर चलने जैसी किसी की समझदार संवेदनाओं द्वारा एक व्यक्ति तक पहुंचाई जाती हैं। लेकिन अंतिम, चौथे चरण में, इसका तात्पर्य पानी पर चलने की तरह उससे कहीं अधिक करने में सक्षम होने की क्षमता से भी है। यह मनुष्य के उत्थान का चरण है, "आलम *म'कुलत*" या "अच्छी व्यवस्था, उपलब्धि और आत्म-जागरूकता का क्षेत्र"। यहां स्पष्ट तुलना में, एक घूमना एक अलग प्रकृति के तथ्यों की सत्यता पर आधारित हो सकता है, जिसे किसी की आत्मा द्वारा स्वीकार किया जाता है और इस तरह पानी पर चलने में सक्षम होने का लाभ उठाया जा सकता है। यह भविष्यवक्ताओं और ईश्वर के "वालि" या अंतरंग मित्रों या संतों की प्रमुख स्थिति है, जैसे हवा में चलना। लोगों ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पूछा कि

क्या यीशु (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) या यीशु मसीह पानी पर चल सकते हैं? उसने उत्तर दिया:

وَلَوْ اِزْدَادَ يَقِيْنًا لَمَشٰى فِى الْهَوَاءِ

"[यीशु पानी पर चलता था, हालांकि,] अगर उसका विश्वास दृढ़ होता, तो वह हवा में चलता था।

इससे पता चलता है कि ऐसी चीजें "आलम *इद्रक*" या "कल्पनीय या संभव के क्षेत्र" में हैं। इस प्रकार, मनुष्य के कई चरण हैं जो प्रतिष्ठा के पहले पायदान से लेकर अंतिम पायदान तक कद की सीढ़ी पर चढ़ते हैं और स्वर्गदूतों के लक्षण प्राप्त करते हैं जो मनुष्य को अपने "मेराज" या उपलब्धि और महिमा के शिखर पर ले जाते हैं। इस चढ़ाई में "*अस्फालस सफीलीन*" (निम्नतम में से निम्नतम) के सबसे निचले स्तर से लेकर "*आला इलियीन*" (उच्च में से उच्चतम) के चरम तक कई खतरे हैं जैसा कि पवित्र कुरान में कहा गया है:

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا
وَحَمَلَهَا ٱلْإِنسَٰنُ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

"हम ने आकाश और पृथ्वी और पहाड़ों पर भरोसा चढ़ाया, परन्तु उन्होंने उसे उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए; मनुष्य ने इसे ढोया जो निश्चित रूप से अन्यायी और अज्ञानी था। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 72)

मनुष्य के उत्थान में जानवरों और पत्थरों की निम्नतम स्थिति से लेकर स्वर्गदूतों के आसन तक विभिन्न चरण हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि "जमादात" में पृथ्वी पर जो कुछ भी है उसमें कोई खतरा नहीं है या पत्थर, वृद्धि और वनस्पति है। वे नहीं जानते। इसके विपरीत, "*आला इलियीन*" या उच्च के उच्चतम अपनी महिमा की ऊंचाई पर तैनात हैं। उनके लिए वहां से उतरना संभव नहीं है, जैसा कि पवित्र कुरान में लिखा है:

وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ

"हम में से हर एक का वहां एक ज्ञात स्टेशन है। (कुरान, अध्याय 37, आयत 164)

जानवर "Asfalus Safileen" *में से हैं,* जो सबसे कम है। इसलिए, उनके लिए कोई प्रगति नहीं है। हालाँकि, [आध्यात्मिक सीढ़ी की] मध्य पायदान पर मनुष्य खतरे में है। कोई भी जानवरों की गहराई तक,

सबसे निचले स्तर तक [उनके जैसा बनने के लिए] डूब सकता है। कोई भी स्वर्गदूतों के स्तर ("मलाइका") की ऊंचाइयों तक ऊंची उड़ान भर सकता है। इसलिए "*अशरफुल मखलूकत*" या सभी रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ होने की ऐसी गंभीर जिम्मेदारी उठाने की क्षमता, पराक्रम [मनुष्य का] [सच्चे] सार का मामला है। इसका तात्पर्य यह है कि केवल मनुष्य ही इस चुनौती को स्वीकार कर सकता है, जो किसी के भव्य कद में "*अशरफुल मखलूकत*" या सभी रचनाओं में सबसे अच्छा है।

इसलिए, इस ग्रंथ का अर्थ और उद्देश्य चीजों में गहराई से देखना है, न केवल सतही रूप से देखने के लिए कि वे सतही रूप से क्या दिखाई देते हैं, बल्कि यह पता लगाने के लिए कि वे वास्तव में क्या हैं। जीवन के माध्यम से मनुष्य की यात्रा के उद्देश्य के बारे में यह प्रवचन उन लोगों के लिए विचार के लिए भोजन के रूप में है जो ज्ञान के शब्दों को उठाना चाहते हैं और अपने आंतरिक मूल्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। इस प्रकृति के बहुत से कार्य नहीं हैं और न ही बहुत से लोग हैं जो इसे समझना चाहते हैं या समझने में सक्षम हो सकते हैं। इसलिए, विषय पर वर्तमान संवाद पर्याप्त होना चाहिए।

बहुत से लोग हैं जो न तो बुद्धिमान हैं और न ही वे ईश्वरीय कानून का पालन करते हैं। ऐसे लोग हैं जो खुद को "*अखिरा*" या परलोक की स्थिति के बारे में उदास पाते हैं। बल्कि उन्हें इस पर संदेह है। वास्तव में, जब सांसारिक इच्छाएं उनसे बेहतर हो जाती हैं, तो यह उन्हें परलोक का खंडन करने के लिए उपयुक्त है। वे ऐसा करते हैं और अपना बचाव करने के बहाने बनाते हैं। शैतान अपने बुरे कर्मों से, अपने सभी आकर्षण और सहायता के साथ उन पर देखरेख करता है और उन्हें यह सोचने के लिए उकसाता है कि न्याय के दिन की सजा लोगों को डराने के लिए बनाई गई एक काल्पनिक मतिभ्रम है। जहां तक धर्मी लोगों के लिए स्वर्ग के वादे का संबंध है, वे इसे केवल करिश्माई दिखावे के रूप में भी ब्रांड करते हैं, मानसिक धूमधाम की एक कल्पना मनुष्य को शुष्क, नीरस जीवन की कठिनाइयों में डालने के लिए विकसित हुई है और कुछ नहीं। इसलिए, वे ईश्वरीय कानून के अनुयायियों को हेय दृष्टि से देखते हैं।

कुछ लोग लत्ता (विनम्र सूफियों या आध्यात्मिक यात्रियों या आध्यात्मिक प्राप्ति के मार्ग में चलने वाले लोगों *की पोशाक) पहनते हुए इस तरह के सभी विचारों से ऊपर होने का दिखावा करते हैं*। इस तरह के दिखावे से उन्हें कम से कम मदद नहीं मिलती है। न ही उनके पास योग्यता का कोई पद है। वास्तव में, ऐसे धोखेबाज खुद को उतना ही नुकसान पहुंचाते हैं जितना कि अन्य साधारण लोगों को जो उनके द्वारा धोखा दिए जाते हैं और उन्हें कुछ आध्यात्मिक स्थिति के लोग मानते हैं, जिन्हें वे समझ नहीं सकते हैं। वास्तव में, उनके पास उनका समर्थन करने के लिए कोई तर्क या तर्क नहीं है। ऐसे लोगों में कोई वास्तविक छिपा हुआ मूल्य कैसे हो सकता है? उनकी आस्तीन में कुछ भी नहीं है। इन परिस्थितियों में, उन्हें स्पष्ट शब्दों में बताया जाना चाहिए कि यदि एक लाख चौबीस हजार पैगंबर, उस समय के सभी ऋषि, सभी विद्वान विद्वान ("*उलेमा*") और संत (ईश्वर के मित्र और अंतरंग या "*अवलिया*") सभी गलत थे और

केवल वे ही सही हैं, तो उनकी अज्ञानता और अहंकार के प्रकाश में इस विषय में जोड़ने के लिए और कुछ नहीं है।

कोई कह सकता है कि शायद आप ही गलत हैं। इसलिए, आप परलोक और परमेश्वर के दंड के बारे में सच्चाई को नहीं समझ सके ("'*अधाब*'), आत्मा की यातना, हमारी संवेदी धारणाओं के प्रभुत्व के कारण "आत्मा" का बहुत ही नियम, जो पांच इंद्रियों द्वारा अनुभव नहीं किया जाता है, उसे स्वीकार करना कि ऐसी कमजोर जमीन पर गलत नहीं है। इस तरह के दंभ वाले व्यक्ति को तुरंत निदान किया जाना चाहिए कि वह अपने सही तत्वों में बिल्कुल भी नहीं है, खासकर जब कोई कहता है, "जैसे मैं जानता हूं कि दो एक से अधिक हैं, मुझे बताने की आवश्यकता नहीं है, मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि 'आत्मा' जैसी कोई चीज नहीं है। इसका कोई स्थायित्व नहीं है, और शारीरिक आनंद या दर्द को किसी भी परिस्थिति में आत्मा के सुख या दर्द के साथ नहीं माना जा सकता है। यह ऐसे लोग हैं जिनके बारे में परमेश्वर ने कहा है:

وَإِن تَدْعُهُمْ إِلَى ٱلْهُدَىٰ فَلَن يَهْتَدُوٓا۟ إِذًا أَبَدًا

"इसलिए, यदि आप उन्हें मार्गदर्शन के लिए बुलाते हैं, तो भी उन्हें कभी निर्देशित नहीं किया जाएगा। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 57)

मान लीजिए कि कोई इस तर्क को आगे बढ़ाता है, "मुझे अपना शेष जीवन धर्मपरायणता के घर में क्यों बिताना चाहिए और अनावश्यक रूप से खुद को उन खुशियों से रोकना चाहिए जो दुनिया मुझे प्रदान करती है, जब मुझे इस बात का कोई सुराग नहीं है कि आप मुझे आत्मा और परलोक की सत्यता के बारे में क्या बताने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि वे मुझे दूर की कौड़ी लगते हैं? किसी भी मामले में, मुझे इन मामलों की जानकारी नहीं है। ऐसे मामले में, उत्तर यह है कि, "अब जब आपने इतना स्वीकार कर लिया है, तो आप ईश्वरीय नियम और मार्गदर्शन का पालन क्यों नहीं करते? यह तर्क पर आधारित है कि जब आपको किसी चीज के बारे में पता नहीं होता है, तो आपको कोई जोखिम नहीं लेना चाहिए। मान लीजिए कि आप एक प्लेट से खाने के लिए अपना हाथ बढ़ाते हैं और आपको बताया जाता है कि एक सांप ने अभी-अभी अपना मुंह उसमें डाला है, तो आप तुरंत भोजन से हट जाएंगे। यह कथन गलत हो सकता है, फिर भी, आपके अंदर की समझदारी आपको कभी भी भोजन में भाग नहीं लेगी, चाहे वह कितना भी स्वादिष्ट क्यों न हो। इसी तरह, मान लीजिए कि आप बीमार हैं और अपने जीवन के डर में हैं और जो व्यक्ति उपचार के आकर्षण लिखता है, वह आपसे एक को थोड़ी मात्रा में चांदी देने के लिए कहता है, ताकि कोई आपके लिए ताबीज तैयार करने में सक्षम हो सके, आप अपनी आशंकाओं के बावजूद इस मांग को स्वीकार करेंगे [और आरक्षण] इसके विपरीत। इसके अलावा, यदि कोई दिव्यदर्शी आपको बताता है कि जब चंद्रमा अमुक अवस्था में पहुंच जाता है तो आपको अपने इलाज के लिए कुछ कड़वी

दवा लेनी चाहिए। इसकी कल्पना के बावजूद, आप अपने स्वास्थ्य के लिए किसी की सलाह का पालन करेंगे, इस आधार पर भी कि कोई सही हो सकता है।

तो एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर, कई ऋषि, विद्वान विद्वान ("*उलेमा*"), और संत या ईश्वर के अंतरंग ("*अवलिया*") *गलत* और सुनी-सुनाई बातें कैसे हो सकते हैं, जबकि एक नीम हकीम या ज्योतिषी सही हो सकता है? इससे मनुष्य को अपनी स्थिति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। यह संभावना है कि कोई इस आधार पर ऐसा करने के लिए प्रेरित हो सकता है कि यदि ये लोग सही हैं तो मैं परलोक को क्यों नकारूं, हो सकता है कि उनकी बात न सुनने और सांसारिक सुखों में आँख बंद करके लिप्त होने से, मैं अगली दुनिया में अपरिवर्तनीय रूप से परेशान हो सकता हूं। तो मुझे अब [अपनी अस्थिर स्थिति से दूर क्यों नहीं जाना चाहिए जो कायम नहीं रह सकती]?

काल्पनिक रूप से, यदि पूरी दुनिया को राई-मकई से भर दिया जाए और एक गौरैया को हर एक हजार साल में एक राई मकई लेने का काम सौंपा जाए, तो भी यह एक विवादास्पद बिंदु है कि राई-मकई अनंत काल तक पूरा होगा। तो यहां से न्याय के दिन तक परलोक की सजा का जोखिम क्यों उठाया जाए, किसी को सोचना चाहिए। लोग नावों और जहाजों में यात्रा करते हैं और अपने निर्वाह के लिए अपना माल बेचने के लिए कठिनाइयों का सामना करते हैं। मनुष्य को ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए? धर्मपरायणता, धैर्य और दृढ़ता स्ट्राइवर को अच्छे लाभांश का भुगतान करती है।

अली (ईश्वर की कृपा उन पर बनी रहे) (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के एक महान साथी और चचेरे भाई ने एक धार्मिक बहस में एक नास्तिक से कहा, "यदि आप जो कह रहे हैं वह सही है तो आप बच जाएंगे और हम बच जाएंगे लेकिन अगर हम जो कह रहे हैं वह सही है [और आप जो कह रहे हैं वह गलत है] तो केवल हम बच जाएंगे और आपको शाश्वत ईश्वरीय प्रतिशोध का सामना करना पड़ेगा। अली (भगवान की कृपा उन पर हो) एक ऋषि थे। वह तर्क को अधिक शक्तिशाली रूप से आगे नहीं बढ़ा सकता था। उन्होंने ऐसा इसलिए नहीं कहा क्योंकि उन्हें जो कह रहे थे उसमें कोई संदेह था, बल्कि उन्होंने नास्तिक की मानसिकता को देखते हुए अपने बयान के परिसर को इतनी मजबूती से तैयार किया था।

इसलिए, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि एक व्यक्ति जो अपने परलोक की कीमत पर सांसारिक मामलों में अपना समय बेकार (बर्बाद) करता है ("*अखिराह*"), एक का परलोक खतरे में है। यहां दिए गए मजबूत तर्कों की ताकत और दिए गए उदाहरणों के आलोक में, असंतुष्ट के लिए कोई जोखिम नहीं लेना और टेरा फ़िरमा (ठोस जमीन) पर रहना उचित है।

وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى

"और शांति उस पर हो जो मार्गदर्शन का पालन करता है।

हमने ईश्वर, स्वयं ("*नफ्स*"), *इस दुनिया और परलोक के ज्ञान (*"मारिफा") *पर प्रवचन को सारांशित किया है*। ईश्वर की इच्छा से अब हम अनन्त *खुशी और अनन्त सफलता के लिए* चालीस आवश्यक तत्वों ("अराकान" या कदम) की व्याख्या करेंगे।

इस तरह ग़ज़ाली ने अपनी महान पुस्तक "किमिया-ए-सादत" या "शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के लिए परिवर्तन का कीमिया या परिवर्तनकारी *एजेंट" में शाश्वत आनंद और चिरस्थायी सफलता के परिवर्तनकारी एजेंट की चार उपाधियों (या आवश्यकताओं) की अपनी अद्भुत व्याख्या को समाप्त किया*। फिर उन्होंने शाश्वत सुख और शाश्वत सफलता के चालीस सिद्धांतों का निम्नलिखित परिचय प्रदान किया [6]:

हम पहले ही निम्नलिखित पर कुछ विस्तार से चर्चा कर चुके हैं:

एक. भगवान का *ज्ञान ("मारिफा*"),
दो. स्वयं को जानना ("*नफ्स*"),
तीन. दुनिया की वास्तविकता को जानना ("*दुनिया*"), और
चार. परलोक की वास्तविकता को जानना ("*अखिराह*")।

परमेश्वर की स्वीकृति और उसकी आशीषें प्राप्त करने का रहस्य, उसकी आराधना करने में और उसकी आज्ञाकारिता में निहित है। परिणामस्वरूप मनुष्य को निम्नलिखित कार्य करने में सावधानी बरतनी चाहिए:

अ. व्यक्ति को न केवल परमेश्वर का सबसे विनम्र और आज्ञाकारी सेवक होना चाहिए और उसकी आराधना करनी चाहिए, बल्कि उसके पास एक अच्छे इंसान का असर, व्यक्तित्व, अच्छा आचरण भी होना चाहिए। किसी का सामान्य आचरण इस प्रकार दूसरों के लिए आकर्षक हो जाएगा [जो सभी ईश्वर के सहसेवक हैं, चाहे उनकी जाति, धर्म, रंग, राष्ट्रीयता, संस्कृति, विश्वास या ऐसा कुछ भी हो], अपने स्वयं के अलावा।

आ. यह बात है कि कोई व्यक्ति कैसा दिखता है। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। समाज में भी इस तरह से व्यवहार करना चाहिए कि उसका आचरण ईश्वरीय नियम और मार्गदर्शन की सीमा में बना रहे। तब किसी को इस तरह पहचाना जाएगा।

इ. उपरोक्त व्यक्ति के बाहरी आचरण का गठन करता है जिसे अन्य लोग देखते हैं। अब हम किसी की आत्मा [या आंतरिक वास्तविकता] पर आते हैं। इस प्रकार, यह मनुष्य पर निर्भर है कि वह अपने हृदय को बुराई और उसकी तबाही से बचाए [कि यह किसी के आंतरिक अस्तित्व पर उसके बाहरी अस्तित्व के लिए अशुभ परिणामों के साथ तबाही मचाता है]।

ई. व्यक्ति को न केवल उपर्युक्त "क्या न करें" का ध्यान रखना चाहिए, बल्कि इसके "क्या करें" का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए, अर्थात, अपने हृदय, अपनी आत्मा को बुराई से बचाने के बाद, व्यक्ति को एक ही समय में आत्मा को अच्छे सद्गुण और महान आंतरिक गुणों से सजाना और अलंकृत करना चाहिए।

इस प्रकार, आत्मा में जो बुरा और हानिकारक है उसे न जाने देने के "क्या न करें" का पालन करके और उन सभी चीजों को करने के "क्या करें" का पीछा करके जो अच्छे और शुद्ध हैं और आत्मा के सुंदर आंतरिक गुणों को विकसित करते हैं, व्यक्ति अपनी आत्मा को भोजन के साथ खिला रहा होगा जो इसकी भलाई के लिए अनुकूल है। इस प्रकार, व्यक्ति "*मुहलिकत*" या आंतरिक बुराई (सभी नकारात्मकताओं और हानिकारक प्रवृत्तियों, लक्षणों, स्वभावों और आंतरिक अस्तित्व की अवस्थाओं) के घातक प्रभावों से बचाया जाएगा और आत्मा के "*मुंजियत*" या आंतरिक [उदात्त] गुणों द्वारा मजबूत किया जाएगा जो इसे शुद्ध, सुशोभित और सुशोभित करते हैं, जिस पर किसी की आत्मा को गर्व होगा। ये चार आवश्यक तत्व [परिवर्तन की कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट जो अनन्त खुशी और अनन्त सफलता लाते हैं] प्रत्येक को दस भागों में विभाजित किया गया है और वे इस प्रकार हैं ...

इस बिंदु पर, ग़ज़ाली शाश्वत आनंद और अनन्त सफलता के चालीस सिद्धांतों (या कदमों) की व्याख्या शुरू करती है। इन चालीस सिद्धांतों में से, बीस सिद्धांत हमारे बाहरी जीवन के संचालन से संबंधित हैं और बीस हमारे आंतरिक जीवन से संबंधित हैं, जो हमारे जीवन को बदलने के लिए हमारे दिल और आत्मा को बदलने की दृष्टि से हैं। इस प्रदर्शनी के अगले दो भागों में, हमारे आंतरिक जीवन और आंतरिक परिवर्तन से संबंधित बीस सिद्धांतों को यहां गज़ाली के ज्ञान के संग्रह "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" में अद्भुत व्याख्या से संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस ग्रंथ का पहला भाग जो मनुष्य की वास्तविकता और मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य और शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता की प्राप्ति से संबंधित है, अब समाप्त हो गया है। अब इस ग्रंथ का दूसरा भाग शुरू होता है।

भाग 2: आंतरिक विनाशकारी विशेषताएं- नकारात्मक आंतरिक गुण व्यक्तियों, समाजों और पूरे राष्ट्रों को नुकसान पहुंचाते हैं और खतरे में डालते हैं

पिछली चर्चाओं में मनुष्य के आंतरिक अस्तित्व और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की वास्तविकता को समझाने के बाद, अब हम आंतरिक विनाशकारी विशेषताओं की व्याख्या शुरू करेंगे - निचले स्व से नकारात्मक आंतरिक लक्षण जो आत्मा के भीतर गहरे अंतर्निहित हैं। ये लक्षण व्यक्तियों, समाजों, पूरे राष्ट्रों और दुनिया की भलाई के लिए पूरी तरह से विनाशकारी हैं क्योंकि वे उन कष्टों की ओर ले जाते हैं जो आज हमारे आंतरिक प्राणियों, समाजों, समुदायों, राष्ट्रों और दुनिया को पीड़ित करते हैं। अगले दो अध्यायों के बाद जो मनुष्य की आंतरिक वास्तविकता का पता लगाते हैं, अगले आठ अध्याय इन आंतरिक विनाशकारी विशेषताओं को समझने और उन्हें मिटाने के लिए इलाज की रूपरेखा तैयार करने के लिए करीब से देखेंगे। ग़ज़ाली ने अपनी पिछली पुस्तक में एक गहन सत्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि अनादि काल से लेकर अब तक पूरे मानव इतिहास में दुनिया में जो भी कठिनाइयाँ, उथल-पुथल, विनाश और पराजय हुई हैं, और अंत तक होंगी, मनुष्य के निचले स्व के कारण हुई हैं और होंगी (*मिन्हाज अल-आबिदीन* या "उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग", अध्याय 3 जिसका शीर्षक है "चार घाटियों की बाधा [आंतरिक पूर्णता के मार्ग में]") यही कारण है कि निचले स्व की विनाशकारिता को आंतरिक अस्तित्व में अत्यंत ईमानदारी के साथ उन्मूलन की आवश्यकता है। इस पुस्तक का दूसरा भाग उस मार्ग पर प्रकाश डालता है जो व्यक्ति को भीतर से निकलने वाली विनाशकता को हराने के लिए अपनाना चाहिए, ताकि

भीतर की सकारात्मक शक्तियां पनप सकें और व्यक्तियों, समाजों और पूरी दुनिया को उनकी पूरी क्षमता तक उठा सकें।

अध्याय 1- आत्मा के रहस्यों को जानना आत्म-जागरूकता, रोशनी और आत्मज्ञान की आध्यात्मिक यात्रा के लिए एक अनिवार्य

ग़ज़ाली की पहली पुस्तक उनकी महान *कृति" इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में हृदय और आत्मा के चमत्कारों और रहस्यों से संबंधित है, जिस तरह से वे नकारात्मकता में फंस जाते हैं, और जिस तरह से विचारों में अच्छाई और सकारात्मकता के मार्ग पर चलने के लिए उनकी रक्षा और पोषण किया जा सकता है, भावनाएं, शब्द, कर्म और अस्तित्व। विषय की यह अद्भुत आंखें खोलने वाली व्याख्या सभी को आंतरिक शांति, शांति और सच्ची खुशी प्राप्त करने के साधनों की ओर मार्गदर्शन करेगी। ग़ज़ाली की व्याख्या को यहाँ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है [7]:

स्वयं (नफ्स*), आत्मा (*रुह*), हृदय (*कल्ब*) और बुद्धि ('*अक़ल*)* शब्दों का अर्थ और उद्देश्य

यह स्पष्ट हो कि इन चार शब्दावली का उपयोग आंतरिक विनाशकारी और रचनात्मक लक्षणों, गुणों, विशेषताओं, प्रवृत्तियों, स्वभावों और स्वभाव से संबंधित चर्चाओं में बहुतायत में किया जाएगा। विद्वानों में बहुत कम लोग हैं जो इन चार शब्दावली के वास्तविक अर्थों से परिचित हैं और उनके अर्थों, सीमाओं और निहितार्थों के अंतर का सही ज्ञान रखते हैं। इसीलिए, इन शर्तों के इरादे में गलतियाँ की जाती हैं। मैं इन शब्दों की व्याख्या इस तरह से प्रदान करूंगा जो हमारे इरादे और उद्देश्य से संबंधित है [आत्मा के चमत्कारों और रहस्यों को समझाने का] इस प्रकार है:

पहला शब्द - हृदय (*Qalb*): "हृदय" का उपयोग दो अर्थों में किया जा सकता है: मांस का एक टुकड़ा जो छाती के बाईं ओर होता है। यह एक अजीबोगरीब प्रकार का मांस है जिसके बीच में एक गैप होता है जिसमें काले रंग का खून होता है और यह आत्मा का फव्वारा और जीवन का साधन है। हालाँकि, इसके आकार, रूप और स्थिति की व्याख्या हमारी चर्चा के उद्देश्य से बंधी नहीं है। चिकित्सकों के लिए यही विषय है। धार्मिक और आध्यात्मिक मामले इससे संबंधित नहीं हैं क्योंकि मनुष्यों के अलावा, यहां तक कि

जानवर भी इससे रहित नहीं हैं और मृत और जीवित शरीर दोनों के पास है। इस पुस्तक में, जहाँ कहीं भी इस शब्द "हृदय" का उपयोग किया जाएगा, इसका अर्थ इसका भौतिक आकार, रूप और अवस्था नहीं होगा क्योंकि इसका अर्थ यह होगा कि यह मांस का एक टुकड़ा है और दृश्य के दायरे से संबंधित है। न केवल मनुष्य बल्कि जानवर भी इसे अपनी आंखों से देख सकते हैं।

इस शब्द का दूसरा अर्थ यह है कि "हृदय" एक दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता है जो शरीर के अंदर भौतिक हृदय से संबंधित है और यही सूक्ष्मता मनुष्य की वास्तविकता है। यह वही है जो मानता है। यह वह है जिसे [दिव्य रूप से] संबोधित किया जाता है और अनुशासन और परिणामों के अधीन होता है। बुद्धि इस सूक्ष्मता ["हृदय"] के भौतिक हृदय के साथ संबंध को समझने में असमर्थ हैं क्योंकि यह संबंध वही है जो आयामों के शरीर और [आंतरिक] गुणों के साथ होता है, उन गुणों और उपकरणों के मालिकों के साथ उपकरण और निवास के साथ एक निवासी के साथ। इस समानता, रिश्ते और संबंध को दो कारणों से समझाया नहीं जाएगा। पहला कारण यह है कि यह आध्यात्मिक रूप से अनावरण किए गए ज्ञान (*उलूम अल-मुकाशफा*) से संबंधित है, जबकि इस पुस्तक का उद्देश्य प्रकट ज्ञान (*उलूम अल-मुआमला*) की व्याख्या है। दूसरा कारण यह है कि इसे समझाने के लिए आत्मा के रहस्य से पर्दा हटाना होगा। यह एक ऐसा रहस्य है कि पैगंबर की जीभ से इसके बारे में कुछ भी प्रकट या कहा नहीं गया है [यानी, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) सहित किसी भी पैगंबर ने आत्मा के रहस्य के बारे में कुछ भी प्रकट नहीं किया]। एक गैर-पैगंबर (भले ही कोई संत हो या आध्यात्मिक रूप से सिद्ध व्यक्ति हो) को इसके बारे में कुछ भी कहने का क्या अधिकार है? यह याद रखना चाहिए कि इस पुस्तक में जहां भी "हृदय" शब्द का उपयोग किया गया है, यह उस दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता को संदर्भित करेगा जिसका उल्लेख पहले किया गया था [और मानव शरीर में भौतिक हृदय नहीं]। मैं इस सूक्ष्मता की अवस्थाओं और गुणों की व्याख्या करूंगा [जिसे "हृदय" कहा जाता है]। इसकी वास्तविकता और इसके संविधान के बारे में चर्चा करना मेरा उद्देश्य नहीं है।

<u>दूसरा शब्द – आत्मा (रुह):</u> इसके भी दो अर्थ हैं। पहला यह है कि "आत्मा" एक सूक्ष्म पदार्थ का नाम है जो भौतिक हृदय के अंदर अंतरिक्ष में रहता है। इस केंद्र से आत्मा नसों और धमनियों के माध्यम से पूरे शरीर में फैलती है। शरीर के अंदर आत्मा का प्रसार और शरीर के अंगों को जीवन का प्रकाश देना और पांच इंद्रियों को संवेदी क्षमताएं प्रदान करना, घर में रखे गए दीपक और उससे प्रकाश को घर के अंदर सर्वत्र फैलाने के समान है। यह उपमा साबित करती है कि "आत्मा" एक दीपक की भूमिका निभाती है, और जीवन प्रकाश के समान है और शरीर के माध्यम से चलने वाली आत्मा एक दीपक के समान है जो अपने परिवेश में प्रकाश फैलाती और व्याप्त होती है। "आत्मा" शब्द का यह अर्थ चिकित्सकों की शब्दावली के अनुसार है। दूसरे शब्दों में, आत्मा एक सूक्ष्म ज्वर या हल्का बुखार है जो अपनी उत्पत्ति में मध्यम है, [भौतिक] हृदय की नसों से निकलता है और अपनी स्वयं की ज्वरता से बनता है। यह अर्थ [आत्मा का] इस चर्चा के लिए प्रासंगिक नहीं है, बल्कि उन चिकित्सकों के लिए रुचि का विषय है जो

शारीरिक बीमारियों के इलाज का प्रशासन करते हैं। धर्म के डॉक्टर (आध्यात्मिक गुरु) जो हृदय के रोगों (यानी, आंतरिक आध्यात्मिक रोगों) का इलाज करते हैं, वे इस अर्थ से खुद को चिंतित नहीं करते हैं, बल्कि वे कहते हैं कि आत्मा मनुष्य में एक बोधगम्य सूक्ष्मता है। इस सूक्ष्मता की व्याख्या हृदय की व्याख्या में भी प्रदान की गई है। निम्नलिखित श्लोक उसी अर्थ की ओर इशारा करता है:

قُلِ ٱلرُّوحُ مِنۡ أَمۡرِ رَبِّي

"उन्हें (हे पैगंबर मुहम्मद) से कहो कि आत्मा मेरे रब की आज्ञा से है। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 85)

यह इतना रहस्यमय दिव्य रूप से संबंधित सूक्ष्म अस्तित्व है कि अधिकांश बुद्धि इसकी वास्तविकता और संविधान को समझने में असमर्थ हैं।

<u>तीसरा पद – स्वयं (*नफ्स*):</u> इस शब्द का अर्थ कई अन्य शब्दों के साथ भी साझा किया गया है। इस शब्द के दो अर्थ इस स्पष्टीकरण के उद्देश्य के करीब हैं। एक यह है कि "स्व" (*नफ्स*) वह अस्तित्व है जो मनुष्यों में क्रोध, क्रोध और शारीरिक सुखों की शक्तियों का संग्रह है। यह अर्थ सूफियों के बीच सबसे अधिक प्रचलित है (आध्यात्मिक मार्ग में आध्यात्मिक पूर्णता, रोशनी और परिणामस्वरूप, अंतरंगता और ईश्वर की ज्ञानशीलता की तलाश में)। इसलिए वे कहते हैं कि *आत्म (*नफ्स) के खिलाफ आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष (*मुजाहिद्दा*) और शारीरिक सुखों की इच्छाओं को नियंत्रित करना और वश में करना आवश्यक है [जो इससे उत्पन्न होता है] आवश्यक है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने नीचे दिए गए अपने कथन में यही इरादा किया है:

اعدى عدوك نفسك التي بين جنبيك

"आपका सबसे बड़ा दुश्मन वह है जो आपके अंदर है (यानी, आपका अपना स्व)"। (हदीस [भविष्यद्वाणी की शिक्षाओं] संग्रह से लिया गया है इब्ने अब्बास के अधिकार पर बेहाकी [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

स्वयं का दूसरा अर्थ (*नफ्स*) भी दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता से संबंधित है जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है । वास्तव में, उस अर्थ के अनुसार, यह मनुष्य की वास्तविकता और अस्तित्व है। लेकिन यह स्वयं अलग-अलग स्थितियों में अलग-अलग आंतरिक गुणों से ओत-प्रोत है। इसलिए, जब यह ईश्वरीय आज्ञाकारिता के साथ शांति में हो जाता है और इसका विरोध और संदेह समाप्त हो जाता है, तो इसे "शांति से स्व" (*नफ्स अल-मुतमा-इन्ना) कहा जाता है*। परमेश्वर ने "शांति से स्वयं" को इन शब्दों के साथ संबोधित किया है:

يَٰٓأَيَّتُهَا ٱلنَّفْسُ ٱلْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ٱرْجِعِىٓ إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

"हे शांति से आत्मा! अपने रब के पास इस अवस्था में लौट आओ कि तुम उससे प्रसन्न हो जाओ और वह तुम से प्रसन्न हो। (कुरान, अध्याय 89, आयत 27-28)

स्वयं का अर्थ जिसका पहले उल्लेख किया गया है, वह ईश्वर की ओर लौटने का प्रतिनिधित्व नहीं करता है [और ईश्वरीय मार्गदर्शन] जो कि [ईश्वर के लिए] दासता की महिमा है, बल्कि इसके बजाय उस अर्थ में, हम ईश्वरीय मार्गदर्शन के विद्रोह और अस्वीकृति को पाते हैं जो शैतान द्वारा प्रेरित और उकसाया गया है। स्वयं की एक और अवस्था यह है कि यह दासता की पूर्णता और [ईश्वर की] पूजा से रहित है, लेकिन यह अपनी कमियों के लिए खुद को फटकारता है। इस अवस्था में स्वयं को "निंदनीय स्व" (*नफ्स अल-लाववामा) कहा जाता है*। भगवान कहते हैं:

وَلَآ أُقْسِمُ بِٱلنَّفْسِ ٱللَّوَّامَةِ

"मैं उस निंदनीय स्वयं की कसम खाता हूं [जो अपनी कमियों और बुराइयों के लिए खुद को दोषी ठहराता है, अर्थात, *नफ्स अल-लाववामा*]." (कुरान, अध्याय 75, श्लोक 2)

स्वयं की एक और अवस्था यह है कि यह आधार के प्रवाह और दबाव को रोकने में असहाय है, शारीरिक सुखों और बुराई के लिए कम इच्छाएं और घोर समर्पण के साथ इसके प्रति समर्पण करता है। उस अवस्था में स्वयं को "दुष्ट प्रेरक स्व" कहा जाता है (*नफ्स अल-अम्मरतु बी अस-सु*) / कुरान ने मिस्र के शासक के साथ पैगंबर जोसेफ (यूसुफ) (ईश्वर की शांति उस पर हो) की घटना में उस स्थिति में स्वयं का उल्लेख किया है:

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِىٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ

"मैं पवित्रता को नहीं मानता और अपने 'स्व' को निर्दोष नहीं मानता [क्योंकि] निचला स्व केवल [मनुष्य के दिल में] बुराई को प्रेरित करता है। (कुरान, अध्याय 12, श्लोक 53)

संक्षेप में, 'स्व' (*नफ्स*) बुरा है जब यह बुराई, कम आधार वाली इच्छाओं और शारीरिक सुखों की प्रवृत्ति के प्रति झुकाव रखता है (*नफ्स अल-अम्मरतु बी अस-सु*) और अच्छा और प्रशंसनीय होता है जब यह शांति में होता है और संतुष्ट होता है [ईश्वरीय आज्ञाओं और मार्गदर्शन से और सभी आकारों और रूपों में सभी बुराइयों और नकारात्मकताओं से बचना] (*नफ्स अल-मुतमा-इन्ना*)।

<u>चौथा शब्द – बुद्धि ('*Aql*):</u> इस शब्द का उपयोग भी कई अर्थों के लिए किया जाता है। इनमें से दो अर्थ इस पुस्तक के उद्देश्य के करीब हैं। पहला यह है कि 'बुद्धि' पदार्थों और चीजों की वास्तविकता के ज्ञान का नाम है। इस मामले में, बुद्धि ज्ञान की [आंतरिक] विशेषता से बंधी हुई है और इसका निवास हृदय है। कभी-कभी, 'बुद्धि' ज्ञान के मालिक (मुद्रिक *अल-उलूम*) को संदर्भित करता है जो हृदय की विशेषता है। इस अर्थ के मामले में, 'बुद्धि' वही दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता है जिसका उल्लेख पिछले तीन शब्दावली की व्याख्या में किया गया है । कृपया 'बुद्धि' के दो अर्थों की व्याख्या के बारे में समझें, कि हर कोई इस वास्तविकता को जानता है कि ज्ञाता या ज्ञानी व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से मौजूद है और प्रत्यक्ष और दृश्यमान है, और ज्ञान की विशेषता ऐसे व्यक्ति के भीतर गहराई से समाई हुई है। गुणवत्ता या विशेषता इसके मालिक के अलावा कुछ और है। इसलिए, 'बुद्धि' कभी-कभी इस विशेषता को संदर्भित करती है जिसे ज्ञान के रूप में संदर्भित किया जाता है और कभी-कभी यह उस विशेषता के मालिक को संदर्भित करता है। एक भविष्यसूचक कथन (पैगंबर मुहम्मद की हदीस [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो] उसी अर्थ को इस प्रकार संदर्भित करता है:

اول ما خلق العقل

"पहली चीज जो भगवान ने बनाई वह बुद्धि थी (*'अक्ल*)".

यहां संदर्भित विशेषता, ज्ञान नहीं हो सकती है क्योंकि ज्ञान अपने आप में मौजूद नहीं है, लेकिन जिसे संदर्भित किया गया है वह एक शरीर (अवधि) है। शरीर को पहले क्यों बनाया जाता है क्योंकि पहले समझ के निवास की आवश्यकता होती है, फिर ज्ञान का निर्माण करना होता है जो इस निवास की विशेषता है या दोनों को एक साथ बनाने की आवश्यकता है? साथ ही, ज्ञान की विशेषता को संबोधित करना संभव नहीं है।

इसका परिणाम [चार महत्वपूर्ण शब्दों की चर्चा] यह है कि इन चार शब्दों का आयात समान होने के साथ-साथ भिन्न भी है। इन चार शब्दों की वास्तविकता से परिचित व्यक्ति जानता है कि इन शब्दों में कोई अंतर नहीं है। इस बिंदु को समझाने के लिए, इन चार शब्दों के अर्थों में समानता और अंतर की व्याख्या करना आवश्यक था।

जहां कहीं भी कुरान और हदीस (पैगंबर मुहम्मद के पैगंबर कथन (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) 'दिल' शब्द का उपयोग करते हैं, वे उस संकाय का उल्लेख कर रहे हैं जो चीजों की वास्तविकता को समझता है। यह क्षमता मनुष्य के भीतर मौजूद है। 'हृदय' शब्द का उपयोग इस संकाय को संदर्भित करने और इंगित करने के लिए किया जाता है क्योंकि धारणा के इस संकाय का भौतिक हृदय के साथ एक

विशेष संबंध है। भले ही यह संकाय पूरे शरीर से संबंधित है और शरीर के सभी अंगों का उपयोग अपने-अपने कार्यों को करने के लिए करता है, लेकिन यह सीधे शरीर के अंगों से संबंधित नहीं है बल्कि केवल भौतिक हृदय के माध्यम से है। इसका मतलब यह है कि मानव शरीर में भौतिक हृदय इस दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता, ज्ञानी, राजधानी शहर और इस पर्वत के सवार का निवास स्थान है। इसका मतलब यह है कि भौतिक हृदय इस दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता का राज्य है [जिसे "हृदय" या "आत्मा" कहा जाता है] और यह वह सिंहासन है जिस पर वह बैठता है और शरीर के पूरे राज्य पर शासन करता है। भौतिक हृदय इस सूक्ष्मता के प्रभुत्व का प्रारंभिक बिंदु है। इसका परिणाम यह है कि "हृदय" नामक दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता का भौतिक हृदय और शरीर के साथ जो संबंध है, वह वही संबंध है जो ईश्वर का "अर्श" (या "दिव्य सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व") और "*कुर्सी*" (या दिव्य सिंहासन या "सर्वोच्च दिव्य उत्कृष्टता की स्वर्गीय सीट") के साथ है।

दिल की सेना (*Qalb*)

भगवान कहते हैं:

وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ

"तेरे रब की सेनाओं को उसके सिवा कोई नहीं जानता। (कुरान, अध्याय 74, श्लोक 31)

इस पद में परमेश्वर की सेनाओं का उल्लेख है जिनकी संख्या उसके अलावा किसी और को नहीं पता है। ये सेनाएं दिल, आत्मा और विभिन्न अन्य असंख्य ब्रह्मांडों में मौजूद हैं। चूंकि हमारी चर्चा का विषय हृदय है, इसलिए मैं हृदय की कुछ सेनाओं का उल्लेख करूंगा।

हृदय की दो सेनाएँ होती हैं: पहली जिसे बाहरी आंख से देखा जा सकता है और दूसरा जिसे बुद्धि की आंख के माध्यम से देखा जा सकता है ('*अक़्ल*)। हृदय राजा की तरह है और उसकी सेनाएँ उसके मंत्रियों और सेवकों की तरह हैं। बाहरी आंख से देखी जा सकने वाली सेनाओं में हाथ, पैर, आंखें, कान, जीभ और शरीर के अन्य सभी अंग शामिल हैं। ये सभी शारीरिक अंग, चाहे बाहरी हों या आंतरिक, हृदय के सेवक हैं [क्योंकि वे इसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और इसकी सेवा करते हैं] और वे इसकी आज्ञाकारिता के लिए बाध्य हैं और यह उन्हें अपनी इच्छानुसार उपयोग करता है, और उनका कर्तव्य हृदय की सेवा और आज्ञाकारिता है और वे इसके खिलाफ विद्रोह करने या उसकी इच्छाओं और इच्छाओं के विरुद्ध कार्य करने में सक्षम नहीं हैं। उदाहरण के लिए, जब आंख को खोलने का आदेश दिया जाता है तो

यह खुल जाता है, जब इसे बंद करने का आदेश दिया जाता है तो यह बंद हो जाता है। जब पैरों को हिलने का आदेश दिया जाता है, तो वे हिलते हैं, जब जीभ को बोलने का आदेश दिया जाता है तो वह बोलती है। सभी अंग ऐसे ही हैं। उनकी आज्ञाकारिता कुछ कारणों से स्वर्गदूतों के परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के समान है। इसलिए, स्वर्गदूत अपने स्वभाव से ही [परमेश्वर के प्रति] आज्ञाकारी हैं क्योंकि उनकी सृष्टि का उद्देश्य [ईश्वरीय] आज्ञाकारिता है और वे इस उद्देश्य से विचलित नहीं हो सकते हैं। राज्य के देवदूत हैं:

لَّا يَعْصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ

"वे परमेश्वर की आज्ञाओं से विचलित नहीं होते हैं और वे वही करते हैं जो उन्हें बताया गया है। (कुरान, अध्याय 66, श्लोक 6)

हालाँकि, स्वर्गदूतों की आज्ञाकारिता और शारीरिक अंगों की आज्ञाकारिता के बीच एक अंतर है: स्वर्गदूतों को उनकी आज्ञाकारिता का ज्ञान है, लेकिन शारीरिक अंगों में वह नहीं है। जब आँखें खोलने के लिए कहा जाता है, तो वे खुल जाती हैं, लेकिन उन्हें अपने अस्तित्व के बारे में पता भी नहीं होता है और न ही वे जानते हैं कि वे अपने राजा और उसके शासन, जो कि हृदय है, की आज्ञाकारिता में खुल रहे हैं।

जिस तरह हृदय को एक सवारी पर्वत की आवश्यकता होती है और दिव्य वास्तविकता की आध्यात्मिक यात्रा के लिए प्रावधान की आवश्यकता होती है (*ईश्वर के "मारिफा*" या सूक्ति तक पहुंचने के लिए सुलुक *या आध्यात्मिक संघर्ष,* जो जीवन का उद्देश्य है जैसा कि ग़ज़ाली ने पहले कहा है), उसी तरह इसे सहायकों और सेवकों की आवश्यकता होती है। यही वह यात्रा है जिसके लिए इसे बनाया गया है। भगवान कहते हैं:

وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

"और मैंने *जिन्नों* (अलौकिक अदृश्य जीव जो पृथ्वी पर मौजूद हैं) और मनुष्यों को केवल अपनी पूजा के लिए बनाया है। (कुरान, अध्याय 51, श्लोक 56)

हृदय का सवारी पर्वत शरीर है, ज्ञान इस [आध्यात्मिक] यात्रा के लिए इसका प्रावधान है और इस प्रावधान को प्राप्त करने का तरीका धार्मिक अच्छे कर्म करना है। किसी भी सेवक के लिए [ईश्वर का, यानी, मनुष्य] इस दुनिया में रहने के बिना [और सांसारिक जीवन जीने] के लिए भगवान तक पहुंचना संभव नहीं है। सबसे दूर के गंतव्य तक पहुंचने के लिए, निकटतम गंतव्य तक पहुंचना अनिवार्य है। यही कारण है कि दुनिया को "परलोक की कृषिभूमि" कहा जाता है [क्योंकि जो तुम यहां बोओगे, वही तुम वहां काटेंगे], दुनिया मार्गदर्शन के गंतव्यों में से एक गंतव्य है [सत्य की ओर]। इसे "दुनिया" कहा जाता है क्योंकि यह

एक निकट गंतव्य है। इसलिए अगले गंतव्य तक पहुंचने के लिए, इस [निकटतम] गंतव्य से प्रावधान लेना आवश्यक है। चूंकि शरीर को [अंतिम] गंतव्य [दिव्य उपस्थिति या ईश्वर की ज्ञान] तक पहुंचने के लिए सवारी पर्वत का दर्जा प्राप्त है, इसलिए शरीर की रक्षा और सुरक्षा करना अनिवार्य है। शरीर का संरक्षण और सुरक्षा इसे उसके स्वास्थ्य और भलाई के लिए अनुकूल भोजन देने और इसे हानिकारक या घातक भोजन से रोकने के माध्यम से की जाती है। भोजन प्राप्त करने के लिए दो सेनाओं की आवश्यकता होती है: पहला आंतरिक है और वह है भूख (इच्छा या भूख) और दूसरा बाहरी है जैसे हाथ और अन्य शारीरिक अंग जो भोजन प्राप्त करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

इसी कारण से हृदय में इच्छा पैदा हुई है और इस इच्छा की पूर्ति के लिए बाहरी शारीरिक अंगों को संपन्न किया गया है। इसी तरह, विनाशकारी चीजों से सुरक्षा के लिए [मनुष्यों को] दो सेनाएँ प्रदान की गई हैं। पहला आंतरिक अस्तित्व में है जिसे "क्रोध" कहा जाता है और दूसरा बाहरी में है जो हाथों और पैरों से बना है। मनुष्य क्रोध के निहितार्थ को पूरा करने के लिए उनका उपयोग करता है। शरीर में इन अंगों की उपस्थिति एक सैनिक की तरह है जिसके पास युद्ध के हथियार और उपकरण हैं। इसके अतिरिक्त, भोजन की इच्छा और आवश्यकता पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके बजाय, मनुष्य को भोजन की स्थिति को जानना चाहिए और इसीलिए, आंतरिक और बाहरी सेनाओं की आवश्यकता है। बाहरी सेनाओं में सुनने, देखने, सूंघने, छूने और चखने जैसी पांच इंद्रियां शामिल हैं और आंतरिक सेनाओं में शामिल हैं कि कोई इन पांच इंद्रियों की धारणा से रहित नहीं है। दिल के नौकरों और सहायकों पर बहुत चर्चा की जा सकती है। यह चर्चा इतनी विस्तृत है कि [पुस्तकों की] मात्रा भी इसके लिए पर्याप्त नहीं है। मैंने कृतज्ञता की पुस्तक में इस पर कुछ लिखने का प्रयास किया है [इस वर्तमान पुस्तक "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार"] (अध्याय 12)। सत्य के साधक (सालिक) को इसी से संतोष करना चाहिए।

हृदय के सेवक तीन प्रकार के होते हैं: पहले प्रकार के सेवक वे होते हैं जो किसी ऐसी चीज़ की इच्छा पैदा करते हैं जो या तो लाभ प्राप्त करने के लिए है या नुकसान को दूर करने के लिए है। पहले वाले का उदाहरण इच्छा (जैसे, भूख) है और दूसरे का उदाहरण क्रोध है। इस प्रकार के नौकर को "इरादा" भी कहा जाता है। दूसरे प्रकार में वे सेवक शामिल हैं जो किसी उद्देश्य की प्राप्ति या किसी इरादे को पूरा करने के लिए अंगों (या शारीरिक अंगों) की गति का कारण बनते हैं। इसे "शक्ति" या "क्षमता" (*कुद्रा)* कहा जाता है जो सभी अंगों और शरीर की हर धमनी और नस में फैलता है। दूसरे प्रकार में वे सेवक शामिल हैं जो जासूसों जैसी चीजों की वास्तविकता को समझते हैं और उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। दृष्टि, श्रवण, गंध, स्पर्श और स्वाद की क्षमताएं उसी से संबंधित हैं। ये बल अपने-अपने अंगों में फैले हुए हैं। इस प्रकार को "ज्ञान और धारणा" कहा जाता है। इन आंतरिक सेवकों के साथ, बाहरी सेवक भी होते हैं जो उपकरण और कारणों की भूमिका निभाते हैं, जैसे कि उंगलियों में पकड़ने की शक्ति और आंखों में देखने की क्षमता। अन्य बलों और अंगों को समान रूप से निकाला और समझा जा सकता है।

हमारी चर्चा का फोकस बाहरी अंग नहीं है क्योंकि वे भौतिक क्षेत्र से संबंधित हैं [जो दिखाई दे रहा है] लेकिन हम आंतरिक सहायकों और सेवकों पर चर्चा करेंगे जिन्हें आंख से देखा और देखा नहीं जा सकता है और इन्हें "धारणा और समझ की ताकतों" के रूप में जाना जाता है। तब धारणा की ये शक्तियाँ दो प्रकार की होती हैं: कुछ बाहरी अंगों में निवास करती हैं और वे श्रवण, देखने, स्वाद, स्पर्श और गंध की पांच इंद्रियां हैं और कुछ मस्तिष्क की नसों में रहती हैं और वे भी पांच हैं। जब कोई किसी चीज को देखता है और फिर आंखें बंद कर लेता है, तो जो देखा गया था उसकी तस्वीर अभी भी दिल में है और इसे "कल्पना" कहा जाता है। तब यह चित्र उस वस्तु की याद से जुड़ जाता है और उसे "स्मृति" कहा जाता है। जब कोई स्मृति में जो कुछ बचा है उस पर विचार करता है और कुछ को दूसरों के साथ जोड़ता है और जो भूल गया है उसे याद करता है, और उस चीज़ की तस्वीर या छवि मन में फिर से प्रकट होती है और उसके विचार में सभी इंद्रिय धारणाओं को इकट्ठा करती है, तो इसे स्मरण, चिंतन और साझा भावना कहा जाता है। यदि ईश्वर ने याद रखने, मनन, स्मरण, कल्पना और सोच की शक्तियों का निर्माण नहीं किया होता तो मस्तिष्क उनसे रहित होता जैसे हाथ और पैर उनके लिए इच्छित शक्तियों के अलावा अन्य शक्तियों से रहित होते हैं। चूंकि ये शक्तियां प्रकृति में आंतरिक हैं, इसलिए उनके निवास भी आंतरिक हैं।

ये हृदय के विभिन्न प्रकार के सैनिक हैं। उन्हें समझना और समझना दूरदर्शिता पर निर्भर है। ज्ञान की कमी वालों द्वारा इन्हें समझाने के लिए, विवरण की आवश्यकता होती है। इसीलिए, इन प्रकारों पर प्रकाश डालने के लिए कुछ उदाहरणों का उपयोग किया जाएगा ताकि शुरुआती लोग भी उन्हें समझ सकें।

दिल के आंतरिक सेवक (*Qalb*) और उनके आसानी से समझे जाने वाले उदाहरण

जब क्रोध और इच्छा, हृदय के दो सेवक, हृदय की पूरी तरह से आज्ञा मानते हैं और उसके अधीन हो जाते हैं तो यह आध्यात्मिक पथ में एक जबरदस्त मदद है। दिल उन्हें आध्यात्मिक यात्रा में सबसे अच्छा साथी और निस्वार्थ और ईमानदार सहायक मानता है। कभी-कभी, ये दोनों सेवक अवज्ञा और विद्रोह पर आमादा होते हैं और हृदय की आज्ञा मानने के बजाय, उसे अपनी आज्ञा मानने के लिए मजबूर करते हैं और हृदय के विनाश का कारण बन जाते हैं। हालाँकि, हृदय के पास इनके अलावा अन्य सेवक और सहायक हैं और यदि इच्छा और क्रोध विद्रोह की ओर प्रवृत्त हो तो हृदय को निराश नहीं होना चाहिए, इसके बजाय, उसे उनके खिलाफ अन्य सेवकों की मदद लेनी चाहिए। कभी-कभी, क्रोध और इच्छा शैतान के समूह में शामिल हो जाते हैं। यदि हृदय दिव्य सेनाओं से मदद नहीं लेता है और इसके बजाय

क्रोध और इच्छा की सेनाओं को स्वयं पर हावी होने देता है (*नफ्स*) तो यह विनाश और जबरदस्त नुकसान के रास्ते पर होगा। अधिकांश लोग इस अवस्था में हैं, उनकी बुद्धि वासनाओं और इच्छाओं के अधीन है और अपनी पूर्ति के लिए बहाने ढूंढती है। इसके बजाय जो होना चाहिए था, वह यह है कि वासनाएं और इच्छाएं उनकी बुद्धि के अधीन हो जानी चाहिए थीं। इस महत्वपूर्ण बिंदु को कुछ उपमाओं के माध्यम से इस प्रकार विस्तृत किया जाएगा।

पहला सादृश्य: मान लीजिए कि मानव स्व, दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता जिसका उल्लेख कई बार किया गया है, अपने देश और राजधानी में राजा के समान है। शरीर अपने प्रभुत्व का केंद्र है और राजधानी [शहर] है। शारीरिक अंग शाही कर्मचारियों के समान होते हैं। बुद्धि की शक्ति इसका ईमानदार सलाहकार और बुद्धिमान और वफादार मंत्री है। क्रोध उसका अंगरक्षक और नगर का न्यायाधीश है, और राजा को उसके शत्रुओं से बचाना उसके शाही कर्तव्यों में शामिल है। वासना (या इच्छा) उसका दुर्व्यवहार और बदमिजाज नौकर है जो शहर के लोगों के लिए भोजन उपलब्ध कराने के लिए जिम्मेदार है। यह व्यक्ति आदतन झूठा, धोखेबाज, धोखेबाज और दुष्ट है जो ईमानदार दिखाई दे सकता है लेकिन इसकी ईमानदारी के मुखौटे के पीछे एक घातक जहर है। ईमानदार सलाहकार और मंत्री (यानी बुद्धि) की राय और योजना से असहमत होना उसकी प्रकृति और आदत है और एक भी क्षण ऐसा नहीं है जिसमें वह बुद्धि का विरोध न करे। इस मामले में, यदि राजा अपने मंत्री के सुझावों और योजना पर कार्य करता है, तो उसके साथ परामर्श करता है और इस दुष्ट सेवक से बचकर दिखाता है कि शासन के सर्वोत्तम हित में इससे दूर रहना सबसे अच्छा है। इसके अलावा, यह शहर के न्यायाधीश (यानी, क्रोध) को इस दुष्ट सेवक और उसके अनुयायियों पर नज़र रखने और गलत कार्यों में लिप्त होने पर उसे दंडित करने का निर्देश देता है। आशा है कि इस स्थिति में यह सेवक विद्रोह नहीं कर पाएगा और राजा के अधीन और आश्रित रहेगा और सरकार न्याय और अनुशासन से चलेगी। इसी तरह, यदि स्वयं (*नफ्स*) बुद्धि से सहायता लेना जारी रखता है और कभी-कभी क्रोध के अंगरक्षक के माध्यम से वासना पर प्रहार करता है; और कभी-कभी क्रोध की ताकत और प्रभुत्व को कम करने के लिए वासना (या इच्छा) से मदद मांगता है, तो उसकी सभी शक्तियां और क्षमताएं संयम में रहेंगी [संतुलन की स्थिति में], इसका व्यवहार और चरित्र अच्छा रहेगा। यदि यह इस मार्ग से [संयम के] भटक जाता है, तो यह उन लोगों के बीच होगा जिनके बारे में परमेश्वर कहता है:

أَفَرَءَيْتَ مَنِ ٱتَّخَذَ إِلَٰهَهُۥ هَوَىٰهُ وَأَضَلَّهُ ٱللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ

"क्या तुमने उस व्यक्ति की दशा देखी है जिसने अपनी इच्छाओं को निचले स्व से अपने परमेश्वर के रूप में बनाया है और परमेश्वर ने उसके ज्ञान के बावजूद उसे गुमराह किया है? (कुरान, अध्याय 45, आयत 23)

وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُۚ فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ ٱلْكَلْبِ إِن تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَث

"उसने अपनी मूल इच्छाओं [और वासनाओं] का पालन करना शुरू कर दिया, इसलिए उसकी स्थिति कुत्ते की तरह हो गई, जिसे यदि आप मारते हैं, तो पैंट और यदि आप इसे छोड़ देते हैं, तो यह अभी भी पैंट करता है। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 176)

कुरान उस व्यक्ति के बारे में कहता है जो वासनाओं के धोखे से स्वयं की रक्षा करता है:

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ وَنَهَى ٱلنَّفْسَ عَنِ ٱلْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

فَإِنَّ ٱلْجَنَّةَ هِىَ ٱلْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

"जो अपने भगवान के सामने खड़े होने से डरता था और स्वयं को रोकता था (*नफ्स*) नीच इच्छाओं और वासनाओं से, स्वर्ग किसी का निवास स्थान होगा। (कुरान, अध्याय 79, आयत 40-41)

क्रोध और इच्छा को एक दूसरे पर थोपने की स्थिति और इस [आंतरिक संघर्ष] द्वारा प्राप्त लाभों को स्वयं को अनुशासित करने के लिए आध्यात्मिक संघर्ष के अध्याय में सूचीबद्ध किया जाएगा, ईश्वर-इच्छा।

दूसरा सादृश्य: मान लीजिए कि शरीर एक शहर और बुद्धि है, अर्थात, मनुष्य में धारणा की शक्ति, इसका शासक है और बाहरी और आंतरिक इंद्रियां इसके सहायक और सैनिक हैं, शारीरिक अंग इसके विषय हैं, निम्न आत्म - बुराई के लिए इच्छुक है (*नफ्स अल-'अम्मारा*) - जिसे इच्छा और क्रोध के रूप में माना जा सकता है, इसका दुश्मन है और सभी विषयों को मारने के लिए [बुद्धि की] सरकार को संभालने का इच्छुक है। इस मामले में, शरीर युद्ध के मैदान के अनुरूप है जहां शहर का शासक दुश्मन से लड़ने के लिए व्यक्तिगत रूप से मौजूद होता है। यदि यह युद्ध पर हावी हो जाता है और दुश्मन को भागने के लिए मजबूर करता है, तो इस संघर्ष को शाही दरबार में श्रद्धांजलि और प्रशंसा मिलेगी। भगवान कहते हैं:

فَضَّلَ ٱللَّهُ ٱلْمُجَٰهِدِينَ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ عَلَى ٱلْقَٰعِدِينَ دَرَجَةً

"भगवान ने उन लोगों की श्रेणी को बढ़ाया और ऊंचा किया है जो अपने आप और अपने धन के साथ संघर्ष करते हैं, उन लोगों की तुलना में जो सिर्फ घर पर बैठते हैं [और ज्यादा कुछ नहीं करते हैं]। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 95)

हालांकि, अगर यह (यानी, बुद्धि) बहादुरी से कार्य नहीं करता है और दुश्मन (यानी, निचले स्व) से हार जाता है, तो यह एक दुर्भाग्यपूर्ण कार्य होगा और लापरवाही के गंभीर परिणाम भुगतेंगे।

एक भविष्यद्वाणी कथन (हदीस) उसी प्रयास को इस प्रकार संदर्भित करता है:

رجعنا من الجهاد الاصغر الى الجهاد الاكبر

"हम एक छोटे से प्रयास (समुदाय के अस्तित्व को खतरे में डालने वाली हमलावर सेना के खिलाफ वैध आत्मरक्षा और आत्म-संरक्षण के लिए लड़ी गई लड़ाई) से एक बड़े प्रयास (अपनी बुरी प्रवृत्तियों को हराने के लिए अपने स्वयं को वश में करने के लिए आध्यात्मिक संघर्ष) की ओर लौट रहे हैं"।

तीसरा सादृश्य: मान लीजिए कि बुद्धि एक सवार है जो शिकार के इरादे से जा रहा है। इच्छा और वासना उसका घोड़ा है, और क्रोध उसका कुत्ता है। यदि सवार के पास शिकार करने, घोड़े को प्रशिक्षित करने और कुत्ते को पालतू बनाने में विशेषज्ञता है तो यह सवार किसी के उद्देश्य में सफल होगा। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सवार शिकार के साथ सफलतापूर्वक घर लौट आएगा। दूसरा परिदृश्य यह है कि सवार इस कला, घोड़ा विद्रोही और कुत्ते के पागल से अनजान है। ऐसे व्यक्ति के बारे में यह उम्मीद नहीं की जा सकती है कि वह सफलतापूर्वक वापस लौट आएगा। अगर कोई सुरक्षित घर लौटता है तो यह पर्याप्त से अधिक है। सवार के ज्ञान और विशेषज्ञता की कमी मनुष्य की अज्ञानता की तरह है, घोड़े का विद्रोहीपन वासनाओं के वर्चस्व की तरह है और कुत्ते का पागलपन क्रोध के वर्चस्व के समान है।

मानव हृदय के लक्षण (*Qalb*)

अब तक जो कुछ कहा गया है, वह सिर्फ इंसानों के पास ही नहीं बल्कि जानवरों के पास भी है। उदाहरण के लिए, इच्छा, क्रोध, आंतरिक और बाहरी इंद्रियां जानवरों में हैं जैसे वे मनुष्यों में हैं। यह इस हद तक है कि भेड़िये को देखने वाली बकरी समझती है कि वह उस पर हमला करना चाहता है और यह महसूस करता है कि वह अपने दिल से भाग जाता है। यह आंतरिक धारणा है जो मनुष्यों के लिए विशिष्ट नहीं है और यहां तक कि बुद्धि से रहित जानवर भी इस क्षमता का उपयोग करते हैं और इसके माध्यम से अपने लाभ और हानि को समझते हैं। यहां उद्देश्य उन मामलों को सूचीबद्ध करना है जो मनुष्य के लिए विशिष्ट हैं और उनके कारण वे अन्य रचनाओं पर श्रेष्ठता और उत्कृष्टता और ईश्वर के साथ निकटता और अंतरंगता का आनंद लेते हैं।

बता दें कि मानव हृदय से संबंधित मामले केवल दो हैं: पहला ज्ञान और दूसरा इरादा है। यहाँ ज्ञान का तात्पर्य सांसारिक, अगला-सांसारिक और बौद्धिक वास्तविकताओं का ज्ञान है। इन मामलों और वास्तविकताओं को इंद्रियों के माध्यम से नहीं माना जाता है और जानवर मनुष्यों के साथ उन्हें समझने की क्षमता साझा नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त, तर्क और कारण भी बुद्धि के लिए विशिष्ट हैं क्योंकि केवल मनुष्य ही यह तय कर सकते हैं कि एक व्यक्ति का एक ही समय में दो स्थानों पर उपस्थित होना संभव नहीं है। भले ही किसी ने सीमित संख्या में ही लोगों को देखा हो, लेकिन यह सिद्धांत दुनिया के सभी लोगों पर लागू होता है। इस प्रकार, हम जानते हैं कि इस सिद्धांत को सभी लोगों पर लागू करना एक अतिरिक्त मामला है जो केवल बुद्धि से संबंधित हो सकता है। जब अर्जित और बाहरी ज्ञान के साथ ऐसी स्थिति होती है, तो व्यक्तिगत अवलोकन के माध्यम से प्राप्त ज्ञान उस सिद्धांत के अधिक योग्य होता है। जब मनुष्य किसी भी पदार्थ के अंतिम छोर को देखता है और उसमें कुछ अच्छाई देखता है, तो वह उसके लिए एक समानता पैदा करता है और उसे प्राप्त करने का उत्साह एक में पैदा होता है। यह इरादे में वह नहीं है जिसे "वासना" या "इच्छा" कहा जाता है जो जानवरों में भी मौजूद है, बल्कि यह वासना के इरादे के विपरीत है। एक उदाहरण से वासना और आशय के बीच का अंतर स्पष्ट हो जाएगा जहां बीमारी के दौरान वासना सभी प्रकार के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों की ओर प्रवृत्त होती है, लेकिन बुद्धि इसे हानिकारक मानकर इस भोग से रोकती है। यह निषेध वासना से नहीं बल्कि बुद्धि से है। यदि ईश्वर ने बुद्धि और मनुष्य को आकर्षित करने वाले इरादे को नहीं बनाया होता, तो बुद्धि के निर्माण का उद्देश्य समाप्त हो गया होता।

इससे पता चलता है कि मानव हृदय में ज्ञान और इरादा दो ऐसे मामले हैं जो जानवरों और यहाँ तक कि छोटे बच्चों में भी नहीं पाए जाते हैं। इसके बजाय, यह विशेषता [ज्ञान और बुद्धि की जो सही और गलत, हानिकारक और लाभकारी के बीच अंतर करने में मदद करती है] यौवन के बाद उनमें पैदा हो जाती है, भले ही उनमें शुरू से ही वासना, क्रोध, बाहरी और आंतरिक इंद्रियां होती हैं।

इस ज्ञान को प्राप्त करने की दो डिग्री: हम जानते हैं कि एक बच्चा यौवन के बाद [ज्ञान और बुद्धि की] इस विशेषता को प्राप्त करता है। इस प्राप्ति या अधिग्रहण की दो डिग्री हैं। पहली डिग्री यह है कि किसी को मूल बातों का ज्ञान हो, अर्थात, व्यक्ति असंभव को असंभव और यथासंभव संभव मानता है। इस मामले में यह कहा जाएगा कि व्यक्ति को मूल बातें पता हैं लेकिन उसके पास देखे गए ज्ञान नहीं हैं। हालांकि, यह कहा जा सकता है कि कोई भी देखे गए ज्ञान को प्राप्त करने के करीब है जो बुनियादी ज्ञान के संबंध में, सुलेखक की तरह है जो सुलेख से परिचित नहीं हो सकता है, लेकिन सुलेख के उपकरणों जैसे स्याही, कलम और अक्षरों से परिचित है। ऐसे व्यक्ति को सुलेखक नहीं कहा जा सकता है, लेकिन यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि व्यक्ति इस कला के करीब है।

दूसरी डिग्री यह है कि कोई अनुभव, चिंतन और सक्रिय सीखने के माध्यम से इन ज्ञानों का खजाना प्राप्त करता है और व्यक्ति इस ज्ञान को अपनी स्मृति के भंडार में इस इरादे से संरक्षित करता है कि जब भी कोई चाहे इससे लाभ उठा सकता है। ऐसा व्यक्ति एक विशेषज्ञ सुलेखक की तरह होता है जो इस समय भले ही लिख न रहा हो लेकिन सुलेख के ज्ञान से अच्छी तरह वाकिफ हो और जब चाहे लिख सकता है। यह मनुष्य की सबसे बड़ी डिग्री है। इस डिग्री में असंख्य रैंक हैं। ज्ञान की मात्रा, चाहे कम या ज्यादा हो, और काम, जांच के तरीकों में अंतर हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होता है और इसलिए, हर कोई एक अलग स्थिति में होता है। कुछ दिल इन ज्ञानों को आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा (*इल्हाम*) और आध्यात्मिक अनावरण (*कशफ*) के माध्यम से देखते हैं। कुछ दिल इसे निर्देश और सीखने के माध्यम से प्राप्त करते हैं। कुछ लोग इतने बुद्धिमान और तेजी से सीखने वाले होते हैं कि वे सबसे कठिन मामलों को सेकंडों में समझ जाते हैं। कुछ लोग इतने सुस्त दिमाग वाले और धीमे दिमाग वाले होते हैं कि वे दोहराव, चिंतन और विचार-विमर्श के बिना कुछ भी नहीं समझते हैं। विद्वानों, बुद्धिमानों, भविष्यद्वक्ताओं और संतों की श्रेणी इस ज्ञान में सभी अलग-अलग हैं। जहां तक उच्चतम रैंक का सवाल है, इसकी कोई सीमा या अंत नहीं है क्योंकि ज्ञान का दायरा बहुत विस्तृत है। इसमें सर्वोच्च पद उस भविष्यवक्ता का है जिस पर सर्वशक्तिमान की कृपा से बिना किसी प्रयास या सीखने के अधिकांश या सभी वास्तविकताएं उसके सामने प्रकट होती हैं। यह सौभाग्य और वास्तविक सफलता (सादाह) व्यक्ति को ईश्वर के करीब लाती है। यह निकटता स्थान और दूरी की निकटता नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक अर्थ, वास्तविकता और आंतरिक विशेषताओं के संदर्भ में निकटता है। इस निकटता [और ईश्वर के साथ घनिष्ठता] में रैंकों पर चढ़ना और इस आध्यात्मिक यात्रा में एक स्टेशन पर रहना, आध्यात्मिक यात्रियों के लिए मील के पत्थर हैं। इस आध्यात्मिक यात्रा में रैंक, डिग्री और स्टेशनों की कोई सीमा नहीं है। हर राहगीर को तय किए गए मील के पत्थर के बारे में पता होता है लेकिन भविष्य के बारे में पता नहीं होता है। हालाँकि, कोई भी अदृश्य में विश्वास के कारण उन पर विश्वास करता है, जैसे हम भविष्यवक्ताओं और भविष्यद्वक्ताओं में विश्वास करते हैं, भले ही भविष्यद्वक्ताओं के अलावा किसी और को पता नहीं है। जिस तरह भ्रूण में एक अजन्मे बच्चे को दूध पिलाने वाले बच्चे की स्थिति का पता नहीं होता है और दूध पिलाने वाले बच्चे को बड़े बच्चे की स्थिति का पता नहीं होता है जिसने चीजों को समझना शुरू कर दिया है और ऐसा बच्चा बदले में एक बड़े बुद्धिमान व्यक्ति की स्थिति या ज्ञान को नहीं जानता है जो एक (बड़ा हो गया बुद्धिमान व्यक्ति) ने अर्जित किया है। इसी तरह, एक समझदार या बुद्धिमान व्यक्ति यह नहीं जानता है कि परमेश्वर ने अपने संतों और भविष्यद्वक्ताओं को क्या आशीषें [और आध्यात्मिक संपत्ति] प्रदान की हैं और कौन से रहस्य (अदृश्य क्षेत्र की वास्तविकताएँ जो साधारण लोगों के लिए अज्ञात हैं) उनके सामने प्रकट की गई हैं। भगवान कहते हैं:

مَّا يَفْتَحِ ٱللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا

"जब परमेश्वर अपनी दया और आशीषों के द्वार खोलता है, तो कोई भी ऐसा नहीं होता जो उन्हें बंद करने में सक्षम हो। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 2)

यह ईश्वरीय दया और आशीर्वाद सभी के लिए [बिना किसी भेदभाव के] ईश्वरीय उदारता और अनुग्रह से सामान्य है और इसमें कोई कंजूसी नहीं है। हालाँकि, यह उन दिलों में प्रकट होता है जो ईश्वरीय दया और उदारता की हवाओं के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिन्हें इस तरह के आगमन के लिए खुला रखा गया है जैसा कि एक हदीस में कहा गया है (पैगंबर मुहम्मद का एक कथन या परंपरा [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो]):

ان لربكم في ايام دهركم لنفحات الا فتعرضوا لها

"आपके जीवन के दिनों में, परमेश्वर की दया और आशीर्वाद की कई हवाएँ हैं। आपको उनकी तलाश में रहना चाहिए [जैसा कि वे तब प्राप्त होते हैं जब कोई उन्हें पहले प्राप्त करने के लिए तैयार और सक्षम होता है]।

"इन हवाओं की प्रतीक्षा करने और उनकी तलाश में रहने" का अर्थ है कि किसी को हृदय [और आत्मा] को निंदनीय और बुरी विशेषताओं और शिष्टाचार के कारण इसमें जमा होने वाली मैलापन, अशुद्धियों और गंदगी से शुद्ध और शुद्ध करने की आवश्यकता है। जल्द ही इसके बारे में विस्तार से बताया जाएगा। इस दिव्य उदारता और उदारता का उल्लेख निम्नलिखित *हदीस* (पैगंबर मुहम्मद का एक कथन [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो]) में किया गया है:

ينزل الله كل ليلة الى سماء الدنيا فيقول هل من داع فاستجيب له

परमेश्वर हर रात पृथ्वी के स्वर्ग (अर्थात् सात स्वर्गों में से सबसे निचला) पर उतरता है और कहता है, 'क्या कोई है जो मुझसे भीख माँगता है कि मैं उसे दे सकूँ? (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *बुखारी* और *मुसलमान* अबू हुरैरा और अबू सईद के अधिकार पर [भगवान उन दोनों से प्रसन्न हो])

हदीस कुदसी *(पैगंबर मुहम्मद की एक परंपरा [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो] जिसमें ईश्वर को उनके द्वारा उद्धृत किया गया है)* का पालन करते हुए उसी दिव्य दया की घोषणा इस प्रकार की गई है:

لقد طال شوق الابرار الى لقائي وانا الى لقاءهم اشد شوقا

"धर्मपरायण लोग मुझसे मिलने की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे हैं और मैं उनसे मिलने का अधिक इच्छुक हूं। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *मसनद अल-फिरदौस* अबू अल-दर्दा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

من تقرب الي شبرا تقربت اليه ذراعا

"जो एक बित्ता से मेरे करीब आता है, मैं एक हाथ से एक के करीब आता हूं। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* बुखारी *और* मुस्लिम *को अबू हुरैरा के अधिकार पर इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])*

इन परंपराओं से यह सीखा जाता है कि हृदय [आध्यात्मिक] ज्ञान [और ज्ञान] के [आंतरिक] प्रकाश से रहित होना सृष्टिकर्ता और दाता (ईश्वर) की ओर से किसी बाधा या कंजूसी के कारण नहीं है, बल्कि इसके बजाय, हृदय इन [आंतरिक आध्यात्मिक] रोशनी से वंचित हैं बुराई, मैलापन, गंदगी और ईश्वर के अलावा अन्य के प्रति जुनून के कारण। दिल बर्तनों की तरह होते हैं और जब तक वे पानी से भरे रहते हैं, तब तक उनमें हवा नहीं बहती है। इसी तरह, भगवान के ज्ञान (*मारिफा*) का प्रकाश भगवान के अलावा अन्य दिलों में प्रवेश नहीं करता है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

لولا ان الشياطين يحومون على قلوب بني آدم لنظروا إلى ملكوت السماء

"यदि शैतान आदम के बच्चों (यानी, सभी मनुष्यों) के दिलों के चारों ओर नहीं मंडराते हैं, तो उन्होंने स्वर्ग के प्रभुत्व को देखा होगा [उनकी आंतरिक शुद्धता, लंगड़ा और आध्यात्मिक उत्कृष्टता के कारण]। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद* अबू हुरैरा के अधिकार पर)

संक्षेप में कहें तो मनुष्य की विशेषता और विशेषता ज्ञान और बुद्धि के कारण है और सभी ज्ञानों में सबसे श्रेष्ठ ईश्वर के अस्तित्व (*धत),* गुणों (*सिफत*) और कार्यों (अफेल*)* का ज्ञान है। इस ज्ञान में मानव पूर्णता का रहस्य निहित है और यह पूर्णता किसी की सर्वोच्च प्रसन्नता, अंतहीन विजय और शाश्वत खुशी (सादा *आबादी)* पर निर्भर करती है। इसके माध्यम से मनुष्य ईश्वर की निकटता और निकटता में रहने और दिव्य उपस्थिति प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है। शरीर स्वयं के लिए पर्वत (या परिवहन वाहन) है और स्वयं ज्ञान का निवास है और [दिव्य] ज्ञान (ईश्वर या *मारिफा* की ज्ञान) मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य है और यह किसी का विशिष्ट गुण है। एक केवल इसी उद्देश्य के लिए बनाया गया है। जिस तरह घोड़ा गधे के साथ भारी मात्रा में वजन उठाने की शक्ति और शक्ति रखने का गुण साझा करता है, लेकिन भव्यता, सुंदरता और गति में उससे कहीं बेहतर है, कुछ ऐसे गुण हैं जो मनुष्य को गधे या घोड़े से श्रेष्ठ बनाते हैं और ये विशिष्ट गुण स्वर्गदूतों के गुणों से संबंधित हैं जो भगवान के करीब हैं। मनुष्य स्वर्गदूतों और जानवरों के बीच एक रचना है क्योंकि भोजन और पोषण के मामले में, एक वनस्पति है; इंद्रियों, गति, क्षमताओं और कार्यों के संदर्भ में व्यक्ति एक जानवर है; और उपस्थिति और निर्माण के संदर्भ में, एक दीवार पर एक छवि है। ज्ञान की [मानव] गुणवत्ता और चीजों और मामलों की वास्तविकता की धारणा किसी को जानवरों से अलग करती है। जो ज्ञान और कर्म की तलाश में अपने शारीरिक अंगों और इंद्रियों का उपयोग करता है [उस ज्ञान के अनुसार, यह ध्यान में रखते हुए कि सभी ज्ञानों में सबसे श्रेष्ठ दिव्य ज्ञान है जो किसी को ज्ञान की स्थिति प्रदान करता है], न केवल स्वर्गदूतों जैसा दिखता है, बल्कि स्वर्गदूतों की श्रेणी में शामिल होने और "भगवान का दूत" कहलाने का हकदार है (*मलक रब्बानी*)) जिस तरह परमेश्वर ने पैगंबर यूसुफ

(ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) की सुंदरता को देखने वाली महिलाओं को बनाया, उसी तरह स्वीकार करें:

مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَآ إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ

"यह एक आदमी नहीं हो सकता, लेकिन [इसके बजाय,] परमेश्वर का दूत है। (कुरान, अध्याय 12, श्लोक 31)

जो व्यक्ति अपने शारीरिक सुखों को अपने विचारों और कार्यों (अर्थात् अपने जीवन के उद्देश्य) का केंद्र बनाता है और उनमें पूरी तरह से तल्लीन हो जाता है, तो वह उन मवेशियों की तरह होता है जिनके पास चरने और खाने के अलावा कोई उद्देश्य नहीं होता है और वह जानवरों की श्रेणी में प्रवेश करता है। उस स्थिति में, कोई बैल की तरह मूर्ख होगा या सुअर की तरह लालची होगा या कुत्ते की तरह क्रोधी होगा या ऊंट की तरह तीखा होगा या चीता की तरह अहंकारी या लोमड़ी की तरह धोखेबाज होगा और यदि कोई इन सभी विशेषताओं और पशुवत गुणों का अवतार है तो वह शापित शैतान (*शैतान अल-राजीम) होगा*।

एक भी बाहरी अंग या आंतरिक भावना (या संकाय) नहीं है जिसे ईश्वर के साथ निकटता और अंतरंगता के लिए नियोजित नहीं किया जा सकता है क्योंकि इसे कृतज्ञता और कृतज्ञता की पुस्तक में समझाया जाएगा। जो अपने अंगों का सही उपयोग (सही उद्देश्यों के लिए) करता है, उसे सफलता मिलती है और जो [ईश्वरीय आज्ञाओं] की अवज्ञा करता है, उसे बहुत नुकसान होता है और अपमानित होता है। किसी की खुशी और सफलता और प्रसन्नता की पूर्णता यह है कि व्यक्ति ईश्वर से मिलने को अपना उद्देश्य [जीवन का] बनाता है, इसके बाद अपने सच्चे घर के रूप में, वर्तमान दुनिया को एक अस्थायी मील के पत्थर या स्टेशन के रूप में, शरीर को एक सवारी पर्वत के रूप में, [शारीरिक] अंग [और इंद्रियों] को अपने सेवकों के रूप में, और किसी की धारणा और समझ की क्षमता, जिसका निवास [भौतिक] हृदय का मध्य भाग है, राजा के रूप में और मस्तिष्क के सामने के हिस्से में विचार और कल्पना के संकाय को राजा के दूत के रूप में मानता है क्योंकि इंद्रियों से समाचार एक के पास आता है और स्मृति, स्मरण और स्मरण के संकाय में रहता है, और उन्हें (यानी, इंद्रियों से समाचार) एक कोषाध्यक्ष की तरह [जो खजाने की रक्षा करता है] की रक्षा करता है। जीभ इसकी अभिव्यक्ति या प्रवक्ता है, सक्रिय अंग इसके अभिनेता हैं, पांच इंद्रियां इसके राज्य की जासूस हैं और इनमें से प्रत्येक इंद्रिय को समाचार की खोज और आपूर्ति के लिए नियुक्त किया गया है। आंखों की जिम्मेदारी का क्षेत्र रंगों की दुनिया से संबंधित है, कान ध्वनियों की दुनिया से और नाक गंध की दुनिया से संबंधित है। ये सभी इंद्रियां अपनी-अपनी दुनिया से समाचार जमा करती हैं और उन्हें विचार-विमर्श और विचार के संकाय को आपूर्ति करती हैं। विचार-विमर्श और विचार की संकाय, जो संदेशवाहक है, इन समाचारों को राज्य के कोषाध्यक्ष तक पहुंचाता है जो स्मृति का संकाय है। स्मृति संकाय राजा (धारणा और विचार-विमर्श के संकाय) को समाचार सौंपता है और एक उन समाचारों का चयन करता है जो राज्य के मामलों को चलाने में उपयोगी होते हैं, हाथ में यात्रा को पूरा करने में मदद करते हैं, राज्य के दुश्मनों को

हराते हैं और रास्ते के डाकुओं से निपटते हैं। अंगों [और इंद्रियों] को उनकी जिम्मेदारियों के बारे में सूचित करना और उन्हें निर्वहन में व्यस्त रखना एक बड़ी खुशी और सफलता है और इसमें भगवान के [अपार] आशीर्वाद के लिए आभार निहित है। जो अंगों [और इंद्रियों] को [अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए] लापरवाही में रखता है, वह एक बदकिस्मत अपमानित हारा हुआ व्यक्ति है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर के उपहारों से इनकार करने वाला है क्योंकि उसने दिव्य सेनाओं या सेनाओं को बर्बाद कर दिया है जो उन्हें दुश्मनों के खिलाफ नियोजित करने के लिए दी गई थीं, दुश्मनों का सम्मान किया और दिव्य सेनाओं को अपमानित किया। अंत में, व्यक्ति परलोक में कठोर दंड और अपमान का हकदार है। हम परलोक के अपमान और उसके प्रतिशोध से परमेश्वर की शरण चाहते हैं। 'आमीन'।

हमारी बताई गई सादृश्य [ऊपर] काब अल-अहबर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) की परंपरा के माध्यम से पुष्टि की जाती है [जो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के साथी और सहायक थे]। उन्होंने कहा कि उन्होंने आयशा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) से कहा [जो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की पत्नी थीं और पैगंबर परंपराओं का एक महान ट्रांसमीटर थीं]: "मनुष्य की आंखें किसी की मार्गदर्शक हैं, कान किसी के रक्षक हैं, जीभ प्रवक्ता या ट्रांसमीटर है, हाथ सैनिक हैं, पैर दूत हैं और हृदय राजा है। अगर राजा अच्छा है, तो उसकी प्रजा भी अच्छी होगी। उसने जवाब दिया: "आप सही कह रहे हैं। मैंने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से ऐसा सुना है। (इस परंपरा को किसके द्वारा प्रेषित किया गया है? [*पुस्तक] "पैगंबर चिकित्सा" में* अबू नईम, *"*मसनाद अत-तसीन*" में अत-तबारानी*, और *पैगंबर साथी और सहायक अबू हुरैरा के अधिकार पर "*शाब अल-ईमान*" में बेहाकी* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])। अली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) [जो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के साथी और सहायक थे] ने यह कहकर दिल की एक उपमा खींची: "हृदय पृथ्वी पर ईश्वर के बर्तन हैं। उनमें से परमेश्वर का सबसे प्रिय और उसके द्वारा सबसे अधिक पसंद किया जाने वाला सबसे नरम, शुद्ध और दृढ़ है। हृदय की कोमलता, पवित्रता और दृढ़ता यह है कि यह अपने भाइयों के लिए नरम है, अपनी निश्चितता में स्पष्ट और शुद्ध है और दिव्य मार्ग (दीन) में दृढ़ है।

उबैय बिन काब (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) [जो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के साथी और सहायक थे] निम्नलिखित आयत की व्याख्या करते हुए:

مَثَلُ نُورِهِۦ كَمِشْكَوٰةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ

"परमेश्वर के प्रकाश का दृष्टांत ऐसा है मानो कोई जगह हो और उसके भीतर एक दीपक हो। (कुरान, अध्याय 24, श्लोक 35)

कहा: "यह विश्वासी और उसके हृदय के [आंतरिक] प्रकाश का दृष्टांत है और यह दृष्टांत है:

أَوْ كَظُلُمَٰتٍ فِى بَحْرٍ لُّجِّىٍّ

"या एक विशाल गहरे समुद्र में अंधेरे की गहराई के समान है। (कुरान, अध्याय 24, श्लोक 40)

एक पाखंडी के दिल की तरह है"।

ज़ैद बिन असलम ने "संरक्षित टैबलेट" ("*लोह महफूद*") कहा है; संरक्षित टैबलेट में सभी रचनाओं और अस्तित्व और उनसे संबंधित सभी घटनाओं का पूरा रिकॉर्ड है) कुरान में एक आस्तिक के दिल के रूप में उल्लेख किया गया है और [प्रसिद्ध संत और ज्ञानवादी] सहल अल-तुस्तरी ने दिल की तुलना "*अर्श*" (बस "सिंहासन" से की है, लेकिन वास्तव में, यह दिव्य सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व है) और "*कुर्सी*" (सर्वोच्च दिव्य उत्कृष्टता की स्वर्गीय सीट)।

हृदय की व्यापक विशेषताएं (*Qalb*) और इसके उदाहरण

बता दें कि मनुष्य की रचना और संरचना चार चीजों का समूह है। इसलिए, किसी में चार प्रकार के गुण और विशेषताएं होती हैं अर्थात् पशु, पशु, शैतानी और दिव्य। क्रोध और क्रोध के मामले में, वे किसी को दुश्मनी, विद्वेष, मार-पीट, मौखिक दुर्व्यवहार और शाप जैसे पाशविक कार्य करने का कारण बनते हैं। एक पर हावी होने वाली वासना और दैहिक इच्छाओं के संदर्भ में, व्यक्ति लोभ, लोभ, व्यभिचार और ईर्ष्या जैसे पशुवत कार्य करता है। कुरान में कहा गया है कि ईश्वरीय आदेश होने के संदर्भ में:

قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى

"कहो (हे मुहम्मद!), आत्मा मेरे रब की आज्ञा से है। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 85)

एक आधिपत्य का दावा करता है और अहंकार, दूसरों पर श्रेष्ठता, विशेषताओं और व्यक्तित्व की ख़ासियत पसंद करता है, और [भगवान के प्रति], विनम्रता और अधीनता को नापसंद करता है। उसी तरह, व्यक्ति सभी ज्ञान के प्रति जागरूक होना पसंद करता है और ज्ञान के साथ जुड़ाव व्यक्ति को प्रिय होता है और अज्ञान के साथ संबंध व्यक्ति को नापसंद होता है। एक मामलों की वास्तविकता को समझने का दावा करता है और ज्ञान और ज्ञान प्राप्त करने का दावा करता है, भले ही सभी वास्तविकताओं को समझने की विशेषताएं और सभी रचनाओं पर श्रेष्ठता प्रभुत्व की विशेषताएं हैं [जो एक इंसान के लिए नहीं बल्कि केवल

भगवान के लिए उपयुक्त है], लेकिन दासता और दासता की विशेषताएं [भगवान के लिए] नहीं। जानवरों और जानवरों के साथ क्रोध और वासना की विशेषताओं को साझा करने के बावजूद, मनुष्य के पास विवेक की क्षमता है, इसलिए एक अतिरिक्त विशेषता है जो शैतानी गुण है। शैतान सिर से पैर तक बुरा है और मनुष्य बुरे तरीकों से किसी की विवेक का उपयोग करता है और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए धोखाधड़ी और धोखे का उपयोग करता है और अच्छाई (यानी, मानव अस्तित्व) के निवास में बुराई का बीज बोता है। ये शैतानों की विशेषताएं हैं और यहां तक कि वे लोग भी शैतानों की विशेषताओं को साझा करते हैं जिनमें दिव्य, शैतानी, पाशविक और पशुवत गुण हैं। इन चारों गुणों का केंद्र हृदय ऐसा है कि मानव त्वचा के भीतर सूअर, कुत्ता, शैतान और बुद्धिमान सभी एक साथ इकट्ठे होते हैं। सूअर वासना और व्यभिचार का प्रतीक है। यह अशुद्ध जानवर जो बुरे आंतरिक गुणों का मालिक है, अपने रंग और बाहरी रूप के कारण बुरा नहीं है, बल्कि इसके बजाय अपने लालच और वासना के कारण बुरा है। यह भी एक कुत्ते की स्थिति है जो क्रोध का अवतार है। कुछ जानवरों को नापसंद नहीं किया जाता है क्योंकि वे जानवर हैं, बल्कि इसलिए कि उनके पास पशुता और दुश्मनी जैसे चरम पशुवत गुण हैं। उसी तरह, मनुष्य के आंतरिक अस्तित्व (*बातिन*) में जानवरों की पाशविकता, शत्रुता, क्रोध और सूअर का लालच और वासना होती है। जंगली जानवर अपने क्रोध को नरसंहार करने के लिए उकसाता है और सूअर अपने लालच को व्यभिचार करने के लिए उकसाता है और शैतान इन दोनों [बुरे गुणों] को एक-दूसरे के खिलाफ निरंतर युद्ध में रखता है - कभी-कभी वह क्रोध के खिलाफ लालच को भड़काता है और कभी-कभी लालच का विरोध करने के लिए क्रोध को भड़काता है, साथ ही, वह इन गुणों से निकलने वाली जन्मजात प्रवृत्तियों की प्रशंसा करता है।

बुद्धि को एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में माना जाता है। इसका काम शैतान के धोखे और धोखाधड़ी को दूर करना और उसकी गहरी अंतर्दृष्टि और स्पष्ट प्रकाश [तर्क, शालीनता और समझ] का उपयोग करना, शैतान के आक्षेपों को नष्ट करना और कुत्ते के क्रोध से सूअरों की वासना को हराना है क्योंकि वासना क्रोध के साथ समाप्त होती है [वासना के हानिकारक प्रभावों के खिलाफ]। इसी तरह, बुद्धि को कुत्ते की पशुता को समाप्त करने के लिए सूअर को उसके ऊपर थोपना चाहिए और कुत्ते (क्रोध/क्रोध) को अपनी बुद्धि और रणनीति के माध्यम से संयमित और आज्ञाकारी रखना चाहिए। यदि वह (बुद्धि) ऐसा करती है, तो शरीर का राज्य एक न्यायपूर्ण और संतुलित प्रणाली बनाए रखेगा और अंग अपने इच्छित कर्तव्यों का पालन करते रहेंगे। हालाँकि, यदि बुद्धिमान व्यक्ति (बुद्धि) अपने प्रयासों में विफल रहता है और शैतान का सामना करने और सूअरों और कुत्ते को अपने अधीन करने में सक्षम नहीं होता है, तो ये तीनों एक पर हावी हो जाएंगे और एक को अपनी जंजीरों में इस तरह से मजबूती से फंसा लेंगे कि वह प्रयास के बावजूद मुक्त नहीं होगा, बल्कि इसके बजाय, वह जीवन भर उसका सेवक और आज्ञाकारी रहेगा। अधिकांश लोग इसी कारावास में अपना जीवन जी रहे हैं [सच्ची मुक्ति और स्वतंत्रता से दूर] क्योंकि उनका पूरा संघर्ष पेट और निजी अंगों की लालसा के लिए है। आश्चर्य की बात है जब ये लोग मूर्तिपूजा को अपनी आलोचना का निशाना बनाते हैं और उसका उपहास करते हैं। यदि उनकी आँखों से लापरवाही और लापरवाही के मोटे पर्दे हटा दिए जाएँ, तो वे परमेश्वर के अलावा किसी और की अपनी आज्ञाकारिता और आराधना को देखेंगे।

कभी वे सूअरों के सामने साष्टांग प्रणाम करते हैं और कभी हाथ जोड़कर खड़े होते हैं और कुत्ते के सामने झुकते हैं [उसे प्रणाम करने के लिए]। उनकी इच्छाओं को पूरा करना उनका विश्वास है और उनके इशारे पर इंतजार करना ही उनका कार्य है। यदि ऐसे लोगों के सामने वास्तविकताओं को भौतिक रूप में सन्निहित किया जाता है, तो वे अपनी आँखों से देखेंगे कि उनके और मूर्तिपूजकों के बीच कोई अंतर नहीं है। वे ऐसे जानवरों (निचले स्व की बुरी प्रवृत्तियों और मांगों) की पूजा करके शैतान की स्वीकृति प्राप्त करते हैं। यह शैतान ही है जो सूअर और कुत्ते को इंसान से खुद को सटीक सेवा देने के लिए उकसाता है। इस मामले का तथ्य यह है कि जो लोग सूअर और कुत्ते के इशारे पर हैं, वे शैतान के धोखे के जाल में फंस गए हैं।

ईश्वर के प्रत्येक दास (यानी, मनुष्य) को किसी की गतिविधियों और शांति, भाषण और मौन पर सतर्क नजर रखनी चाहिए, और अंतर्दृष्टि की आंतरिक आंख को खुला रखना चाहिए। यदि कोई अपनी आंतरिक अवस्थाओं में न्याय और निष्पक्षता के साथ ऐसा करने में सक्षम है, तो उसे पता चल जाएगा कि वह अपना दिन परमेश्वर की आज्ञाकारिता में बिताता है या निम्न स्व की आराधना करने में। यह कितना बड़ा उत्पीड़न है कि निचले स्व के उपासकों ने एक स्वामी को गुलाम बना दिया है और प्रभुत्व को वश में कर लिया है! वर्चस्व और नेतृत्व का अधिकार बुद्धि का था, लेकिन सूअर, कुत्ते और शैतान ने इसे तुरंत छीन लिया है और इसे अपने अधीन और कैद कर दिया है। जब बुद्धि को नेतृत्व से वंचित कर दिया जाता है, तो यह इन तीन [नीच] विशेषताओं की आज्ञाकारिता को पूरा करता है और इस तरह की विशेषताएं हृदय पर जड़ जमा जाती हैं जिसका अंतिम अंत विनाश और अपमान के अलावा और कुछ नहीं है।

वासना और व्यभिचार के सूअरों के प्रति आज्ञाकारिता से निर्लज्जता, नीचता, अपव्यय, कंजूस, आडंबर, अपमान, अनैतिकता, लोभ, वासना, चापलूसी, ईर्ष्या, शत्रुता, घृणा और अन्य नीच [और नकारात्मक] विशेषताएं पैदा होती हैं। क्रोध और क्रोध के कुत्ते के प्रति आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप अत्यधिक कटुता, आत्म-अभिमान, आत्म-धार्मिकता, आत्म-केंद्रितता, अहंकार, आत्म-बड़ाई, उपहास, नीचा दिखाना, बुरे इरादे और क्रूरता की इच्छा और अन्य बुरी विशेषताएं पैदा होती हैं। क्रोध और वासना के देवताओं के प्रति प्रणाम वास्तव में शैतान की आज्ञाकारिता है जिसके परिणामस्वरूप उपर्युक्त नकारात्मक और नीच आंतरिक विशेषताओं का जन्म होता है और इसके अलावा धोखाधड़ी, धोखाधड़ी, प्रचलन, जिद्दीपन, बेईमानी, अश्लीलता और उनके जैसे विभिन्न अन्य लोगों की बुरी आंतरिक विशेषताओं को हवा देता है। यदि स्थिति इसके विपरीत है और इन सभी बुराइयों और उनके कारणों के स्रोत ईश्वरीय गुणों के ज्ञान और प्रकाशमान प्रभाव के अधीन हो जाते हैं, तो ज्ञान, ज्ञान, निश्चितता, चीजों की वास्तविकताओं की समझ, मामलों में गहरी अंतर्दृष्टि, दूरदर्शिता और ज्ञान की शक्ति के कारण दूसरों पर प्रमुखता के दिव्य गुण, ज्ञान की पूर्णता के कारण दूसरों पर भेद का अधिकार और हृदय के अन्य [उदात्त सकारात्मक आंतरिक] गुण हृदय को ढक लेते हैं। अब वासना और क्रोध के प्रति आज्ञाकारिता और अधीनता होना आवश्यक नहीं रह गया है, बल्कि इसके बजाय, वासना के सूअरों को उसकी सीमाओं में कैद करके [शालीनता और ईश्वरीय

नियम] के परिणामस्वरूप मासूमियत, शालीनता, संतोष, शांति, सांसारिकता और भौतिकवादी लालच जैसे महान आंतरिक गुण प्राप्त होते हैं (*ज़ुहद*), सादगी, पवित्र विस्मय, ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भय, आंतरिक संतुष्टि और खुशी, विनम्रता और शर्म, एक सुंदर शारीरिक और बाहरी उपस्थिति, सुंदर आंतरिक स्वभाव, चरित्र और व्यवहार हृदय को प्रभावित करते हैं। क्रोध के कुत्ते को उसकी जंजीरों में संयमित रखने से बहादुरी, दया, महानता [आत्मा की], धैर्य, निचले स्व को रोकना [अनियंत्रित होने और खुद को और दूसरों को नुकसान और कठिनाइयों का कारण बनने से], किसी के सभी व्यवहारों में सहनशीलता, दृढ़ता और शालीनता और इसी तरह के उदात्त आंतरिक गुण हृदय में पैदा होते हैं। हृदय एक [पॉलिश] दर्पण की तरह है [अपने मूल रूप में इससे पहले कि यह धूल से ढक जाए या आत्मा में आंतरिक बुराइयों और नकारात्मकताओं से कलंकित हो जाए]। क्रोध, वासना और शैतान की आज्ञाकारिता [बुरे अनुनय के रूप में जो यह हृदय में भर जाती है] इस दर्पण की सुंदरता और स्पष्टता पर नकारात्मक प्रभाव डालती है और [परिणामस्वरूप] मनुष्य इसे अपनी छवि में स्पष्ट रूप से नहीं देख सकता है। [आत्मा के] प्रशंसनीय सुंदर आंतरिक गुण इस दर्पण की चमक और चमक को इस हद तक बढ़ा देते हैं कि यहां तक कि दिव्य सुंदरता [भगवान की] भी अपनी पूरी महिमा के साथ इसमें प्रकट होती है (इसे ही "*मारिफ़ा*" या ईश्वर की ज्ञान, जिसकी प्राप्ति किसी के जीवन का वास्तविक उद्देश्य है) और पदार्थ की वास्तविकता जो खोजी जाती है [किसी के आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष के उद्देश्य के रूप में सत्य और शाश्वत सत्यों के अनावरण के संदर्भ में]। के परिणामस्वरूप *हदीस* (पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक भविष्यसूचक परंपरा या कहावत इस तरह के स्वच्छ, स्पष्ट और प्रबुद्ध हृदय की ओर इशारा करती है:

اذا اراد الله لعبد خيرا جعل له واعظا من قلبه

"जब परमेश्वर [अपने] के एक सेवक के लिए भलाई का इरादा करता है, तो वह दिल में एक चेतावनी देने वाला बनाता है [किसी को सही चीजों और सभी मामलों में अच्छे के लिए प्रेरित करने के लिए]। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अद-दयालामी* पैगंबर मुहम्मद की पत्नी के अधिकार पर [उन पर शांति हो] उम्म सलमा [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

एक अन्य भविष्यसूचक कथन (हदीस) में कहा गया है कि जिस व्यक्ति के हृदय में एक उपदेशक है, परमेश्वर ऐसे हृदय की रक्षा के लिए एक अभिभावक नियुक्त करता है। ऐसा हृदय ईश्वर की याद का केंद्र होता है और ऐसे दिव्य स्मरण से शांति पाता है। भगवान कहते हैं:

أَلَا بِذِكۡرِ ٱللَّهِ تَطۡمَئِنُّ ٱلۡقُلُوبُ

"वास्तव में, हृदय को परमेश्वर की याद में शांति और शांति मिलती है। (कुरान, अध्याय 13, श्लोक 28)

निंदनीय और बुरी नैतिकता और शिष्टाचार का हृदय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, ठीक उसी तरह जैसे धुआं और धूल दर्पण की स्पष्टता और चमक को धुंधला कर देते हैं। पापों के अंधकार से हृदय का दर्पण काला हो जाता है। यह अंधेरा एक प्रकार का पर्दा है जो एक सेवक (यानी, मनुष्य) और भगवान के बीच खींचा जाता है। इस घूंघट को "मुहर" (तबा*)* और "जंग" (रान*) कहा जाता है*। कुरान ऐसे दिल के बारे में निम्नलिखित कहता है:

كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ

"यह पदार्थ की वास्तविकता नहीं है, लेकिन [इसके बजाय,] उनके [गलत और बुरे] कार्यों के कारण उनके दिलों पर जंग बस गई है। (कुरान, अध्याय 83, श्लोक 14)

أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

"अगर हम चाहते तो हम उनके अपराधों के कारण उन्हें नष्ट कर देते और हमने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिए वे नहीं सुनते (अपने दिल से मामलों की वास्तविकता को समझते और समझते हैं)। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 100)

एक अन्य श्लोक में, [सत्य और अपनी भलाई के लिए सलाह] न सुनना को हृदयों की मुहर के रूप में माना जाता है। एक अन्य स्थान पर, सुनने को पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर (तकवा) का भय रखने की सशर्त बना दिया गया है। भगवान कहते हैं:

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا ۗ

"पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय रखो, और सुनो। (कुरान, अध्याय 5, श्लोक 108)

وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۗ

"पवित्र भय, श्रद्धा और परमेश्वर का भय रखो; और वह वही है जो आपको ज्ञान प्रदान करता है [और आपको अपने स्वयं के लाभ के मामलों के बारे में सिखाता है, भौतिक और सारहीन दोनों, जिनके बारे में आप पहले नहीं जानते थे]। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 282)

जब पाप (बुराई, अनैतिक, हानिकारक, नकारात्मक और आत्म-नुकसान पहुंचाने वाले कार्य) बढ़ते हैं, तो हृदय सील हो जाता है और सत्य को समझने और किसी की [आंतरिक नकारात्मक] अवस्थाओं के सुधार की क्षमता से वंचित हो जाता है। परलोक का विषय व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण नहीं रहता है, सांसारिक आडंबर और चमक एक के लिए सब कुछ बन जाती है, व्यक्ति सांसारिक संपत्ति और धन के लिए लालची

हो जाता है और अपनी सारी ऊर्जा अपनी प्राप्ति में खर्च कर देता है, परलोक के बारे में उपदेश दिल को प्रभावित किए बिना हवा की तरह उसके कानों से गुजरती है और अपनी गलतियों को सुधारने और पापों से पश्चाताप करने की क्षमता उससे छीन ली जाती है।

कुरान और हदीस (भविष्यद्वाणी कथन) *में हृदय का जिस अंधकार का उल्लेख किया गया है* , वह वास्तव में हृदय की ऐसी स्थिति को संदर्भित करता है। मैमून इब्ने मुहरान (ईश्वर उस पर दया करे) (एक प्रसिद्ध ऋषि और संत) ने कहा: "जब कोई दास [ईश्वर का] पाप करता है, तो उसके दिल पर एक काला बिंदु दिखाई देता है। यदि कोई इससे दूर रहता है [उसके बाद] और हृदय के सच्चे सच्चे पश्चाताप के साथ परमेश्वर के सामने पश्चाताप करता है, तो यह बिंदु मिट जाता है और हृदय अपनी स्थिति में वापस आ जाता है [यह उस पाप को करने से पहले था]। यदि कोई उस पाप की ओर लौटता है या अन्य [प्रकार] पाप करता है, तो उस बिंदु का अंधेरा और आकार दोनों तब तक बढ़ता है जब तक कि [एक समय ऐसा नहीं आता है जब] यह काली बिंदी पूरे हृदय को घेर लेती है। यह बहुत ही अंधेरा दिल की जंग है [जिसके परिणामस्वरूप इसकी सीलिंग होती है जो किसी भी सकारात्मकता और रोशनी को उस तक पहुंचने से रोकती है]"। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

قَلْبُ الْمُؤْمِنِ أَجْرَدُ فِيهِ سِرَاجٌ يَزْهَرُ وَقَلْبُ الْكَافِرِ أَسْوَدُ مَنْكُوسٌ

"एक आस्तिक का हृदय स्वच्छ होता है [और प्रकाशित और प्रबुद्ध] उसमें एक दीपक जलाया जाता है [जो हर सकारात्मक चीज की ओर परिवर्तन के लिए किसी के आध्यात्मिक प्रयासों के कारण अपनी स्पष्टता और चमक के माध्यम से प्रकाश निकालता है] और एक अविश्वासी का दिल अंधेरा होता है और उल्टा हो जाता है [आध्यात्मिक प्रयासों की कमी और इसके नकारात्मक के साथ संतोष के कारण, नीचे की ओर प्रवृत्ति]। (द्वारा सुनाई गई *हदीस ने भविष्यवक्ता साथी अबू सईद के अधिकार पर* मुसनद अहमद *और* अत-तबरनी *को इकट्ठा किया* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता [ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करके] और निचले स्व (*नफ्स) की वासनाओं का विरोध करना*, हृदय को चमकाने वाले के रूप में कार्य करना और पाप इसे (हृदय) अंधेरी रात की तरह अंधेरी बना देते हैं। पाप करने के बाद पुण्य कर्म करने से हृदय में अंधेरा नहीं पड़ता है, बल्कि इसका प्रकाश ठीक वैसे ही कम हो जाता है जैसे गर्म सांस के संपर्क में आने वाले दर्पण को फिर साफ किया जाता है और फिर गर्म सांस के संपर्क में आने से इसकी सतह पर दाग लग जाता है, इसकी चमक में कुछ कमी आती है और इस धब्बा का प्रभाव पूरी तरह से मिट नहीं पाता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चार प्रकार के दिलों का उल्लेख किया है:

القلوب اربعة قلب اجرد فيه سراج يزهر فذالك قلب المؤمن وقلب اسود
منكوس فذالك قلب الكافر وقلب اغلف مربوط على غلافه فذالك قلب
المنافق وقلب مصفح فيه ايمان ونفاق فمثل الايمان فيه كمثل البقلة يمدها
الماء الطيب ومثل النفاق كمثل القرحة يمدها القيح والصديد فاى المادة
غلبت عليه حكم لها وفى رواية ذهبت به

"हृदय चार प्रकार के होते हैं: एक प्रकार का हृदय स्वच्छ होता है [और इसमें स्पष्टता और लंपटता होती है], इसमें एक दीपक जलता है [रोशन और प्रकाश]। यह एक आस्तिक का दिल है। एक प्रकार अगर दिल काला है और उल्टा है। यह एक अविश्वासी का दिल है। एक प्रकार के हृदय को एक आवरण में ढक दिया जाता है और उसका उद्घाटन बंद कर दिया जाता है। यह एक पाखंडी का दिल है। एक प्रकार के हृदय में विश्वास और पाखंड दोनों सह-अस्तित्व होते हैं। ऐसे हृदय में विश्वास की सादृश्यता हरियाली [और वनस्पति] की तरह है जो शुद्ध पानी के माध्यम से बढ़ती है और पाखंड की सादृश्य एक घाव की तरह है जो उसमें स्राव और गंदे पदार्थ के कारण तेजी से बढ़ता जा रहा है। जो भी पदार्थ हावी होगा वह ऐसे दिल को नियंत्रित करेगा। (द्वारा सुनाई गई *हदीस ने भविष्यद्वाणी के साथी अबू सईद अल-खुदरी के अधिकार पर* मुसनद अहमद *और* अल-तबरनी सगीर *को इकट्ठा किया* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

भगवान कहते हैं:

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْاْ إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ ٱلشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُواْ فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ

"वास्तव में जिनके पास पवित्र भय, श्रद्धा, चेतना और परमेश्वर का भय है, जब उन्हें शैतान से [उनके दिलों में] एक [नीच] अनुनय मिलता है, तो वे परमेश्वर की याद में संलग्न हो जाते हैं और तुरंत इससे चौंक जाते हैं [यह अच्छी तरह से जानते हुए कि शैतान उन्हें कुछ बुरा करने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा है और वे अपने दिलों में एक पल के लिए भी इसके बारे में सोचने की अनुमति नहीं देंगे]। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 201)

इस श्लोक से पता चलता है कि हृदय, ज्ञान, विवेक और [उच्च स्तर की चेतना और] जागरूकता का जीवन ईश्वर के स्मरण के माध्यम से प्राप्त किया जाता है और केवल वे लोग ही ईश्वरीय स्मरण में संलग्न होते हैं जिनके पास *तकवा* (पवित्र भय, श्रद्धा, चेतना और ईश्वर का भय) का [आंतरिक] गुण होता है। ईश्वरीय स्मरण आध्यात्मिक अनावरण (*कशफ*) की ओर ले जाता है जो एक जबरदस्त सफलता है और भगवान के साथ मिलने का एक साधन है (यानी, सूक्ति या *"मारिफा"*, जिसकी उपलब्धि किसी के जीवन का वास्तविक उद्देश्य है)।

ज्ञान के संबंध में हृदय की उपमा- हृदय का पॉलिश किया हुआ दर्पण और उसमें परिलक्षित होने वाला सत्य का प्रकाश

यह ज्ञात होना चाहिए कि ज्ञान का आसन और निवास हृदय है। दूसरे शब्दों में, यह दिव्य आध्यात्मिक सूक्ष्मता है जो सभी अंगों और संकायों की प्रणाली को चलाती है । सभी अंग इस सूक्ष्मता की सेवा करते हैं और इसके अधीन हैं। चीजों और ज्ञान की वास्तविक प्रकृति के संबंध में, हृदय की समानता दृश्य वस्तुओं या समझदार चीजों के संबंध में दर्पण की तरह है। हर दृश्य वस्तु और उपस्थिति की छवि [हृदय के] दर्पण में देखी जाती है। इसी तरह हर ज्ञात वस्तु की वास्तविकता हृदय पर अंकित हो जाती है। जिस तरह दर्पण एक अलग वस्तु है, दृश्य वस्तुओं का रूप अलग-अलग वस्तुएं हैं और दर्पण में उनका प्रतिबिंब एक अलग पदार्थ है, वही अंतर हृदय के लिए मौजूद है और दर्पण की तरह, हृदय से संबंधित तीन चीजें हैं। पहला हृदय है, दूसरा चीजों की वास्तविकता या सच्ची प्रकृति, और तीसरा हृदय में प्रकट होने वाली चीजों की वास्तविकता का प्रतिबिम्ब। हृदय ज्ञाता है; वास्तविकता और चीजों की वास्तविक प्रकृति इसमें प्रवेश करती है। ज्ञात तथ्य वस्तुएं हैं, और ज्ञान हृदय में इन ज्ञात तथ्यों के प्रतिबिंब का नाम है। जैसे तलवार पकड़ने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है: वह जो पकड़ता है, जैसे कि हाथ; जो पकड़ा जाता है, जैसे तलवार; और तलवार को हाथ में रखकर तलवार और हाथ को एक साथ लाने का कार्य जिसे लोभी का कार्य कहा जाता है, इसी तरह दिल में समझदार की छवि की उपस्थिति को भी समझ कहा जाता है। इसी तरह, दिल में समझदार या ज्ञात की छवि के प्रतिबिंब को ज्ञान कहा जाता है। कभी-कभी, वास्तविकताएं और तथ्य मौजूद होते हैं, और हृदय भी मौजूद होता है लेकिन ज्ञान और समझ का कोई अधिग्रहण नहीं होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ज्ञान हृदय में आने वाली वास्तविकताओं का नाम है। जैसे तलवार और हाथ अलग-अलग मौजूद हैं, लेकिन कोई पकड़ या पकड़ नहीं है, क्योंकि ऐसा होने के लिए, हाथ को तलवार तक पहुंचना चाहिए और उसे पकड़ना चाहिए। लोभी और ज्ञान में अंतर यह है कि लोभी में तलवार हाथ में चली जाती है, लेकिन वास्तविकता दिल में नहीं जाती है। एक व्यक्ति के पास अग्नि का ज्ञान है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अग्नि स्वयं हृदय में मौजूद है। इसके बजाय, यह कहा जाएगा कि आग की वास्तविकता हृदय में है जो उसके बाहरी अस्तित्व और स्वरूप से मिलती जुलती है। इसलिए, हृदय की तुलना दर्पण से की गई है क्योंकि इसमें कुछ भी [शारीरिक रूप से] प्रवेश नहीं करता है, इसके बजाय, किसी वस्तु का प्रतिबिंब या छवि उसके वास्तविक अस्तित्व के अनुरूप उसमें दिखाई देती है।

दर्पण के साथ हृदय की समानता और उपमा: दर्पण के साथ हृदय की तुलना करना बेहतर है। एक कारण यह है कि ऊपर क्या उल्लेख किया गया है। दूसरा कारण यह है कि कुछ कारणों से दर्पण में [किसी वस्तु की] छवि दिखाई नहीं देती है। इसी तरह, कुछ परिस्थितियों में, हृदय का दर्पण चीजों की वास्तविकताओं के ज्ञान से वंचित रहता है। वस्तुओं की छवियों के दर्पण में प्रतिबिंबित न होने के पांच कारण हैं: पहला, इसके गठन में एक दोष के कारण, उदाहरण के लिए, यह सिर्फ कच्चे लोहे का एक टुकड़ा हो सकता है [जिसे आकार और पॉलिश नहीं किया गया है] या इसके पदार्थ में कोई दोष हो सकता है, या इसका रूप सही नहीं हो सकता है। दूसरा, किसी दोष के कारण जो इसमें घुस गया हो या इसमें जंग लग गया हो या इसकी चमक और स्पष्टता कम हो सकती है [इसकी सतह को ढकने वाली धूल के कारण]। तीसरा, क्योंकि इसे उस वस्तु की दिशा से दूर कर दिया गया है या दूर ले जाया गया है जिसकी छवि को इसे प्रतिबिंबित करना चाहिए, उदाहरण के लिए, वस्तु [इसे प्रतिबिंबित करना चाहिए] को दर्पण के पीछे ले जाया गया है। चौथा, दर्पण और वस्तु के बीच एक घूंघट या पर्दा खींचा गया है। पांचवां, उस वस्तु की दिशा की अज्ञानता के कारण जिसकी छवि को दर्पण में देखने की आवश्यकता होती है, जबकि आवश्यकता यह है कि इसे दर्पण की स्थिति और दिशा के सामने रखा जाए ताकि इसकी छवि को प्रतिबिंबित किया जा सके।

दिल के आईने की स्थिति ऐसी है। इसमें सत्य और वास्तविकताओं के सभी मामले प्रकट किए जा सकते हैं। लेकिन कई दिलों को ये ज्ञान नहीं मिलते हैं। इसके वही पांच कारण हैं। सबसे पहले, हृदय आंतरिक रूप से दोषपूर्ण हो सकता है, उदाहरण के लिए, बच्चे के दिल में इन वास्तविकताओं के रहस्योद्घाटन की क्षमता नहीं होती है। दूसरा, हृदय पापों (गलत, नकारात्मक और निंदनीय विचारों, भावनाओं, शब्दों और कर्मों) और वासनाओं की गंदगी से गंदा और कलंकित हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप इसकी स्पष्टता, लंपटता, पवित्रता और चमक खो जाती है। अंधेरे दिल में सत्य प्रकट नहीं होता है। वास्तविकता उसके अंधेरे और उस पर जमा गंदगी के अनुपात में उसमें प्रकट होना बंद कर देती है। एक भविष्यसूचक कथन (पैगंबर मुहम्मद की हदीस [शांति उन पर हो]) उसी वास्तविकता की ओर इशारा करती है:

من قارف ذنبا فارقه عقل لا يعود اليه ابدا

"एक व्यक्ति की बुद्धि जो पाप करता है, उस व्यक्ति से अलग हो जाता है जो कभी वापस नहीं आता है [और इस प्रकार वह मामलों की वास्तविकता को समझने में असमर्थ हो जाता है]।

इसका मतलब है कि पापों के कारण हृदय में ऐसी कीचड़ और बुराई दिखाई देगी जो कभी भी नष्ट नहीं होगी, और इसके लिए कोई सुधार नहीं किया जा सकता है। यह कहना सही है कि पाप करने के बाद धार्मिक और अच्छे कर्म करने से हृदय पर पापों का प्रभाव समाप्त हो जाता है, लेकिन क्या हृदय उसी मूल स्थिति में वापस आ सकता है जिस पर वह पापों से पहले था? ऐसा कभी नहीं! वास्तविकता यह है कि यदि उस व्यक्ति ने केवल नेक कर्म किए होते, तो हृदय की चमक और लंगड़ा बढ़ जाता। बढ़ी हुई चमक

का नुकसान, इसमें कोई संदेह नहीं है, ऐसा नुकसान है जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती है। जब जंग लगे दर्पण का इलाज किया जाता है और पॉलिश किया जाता है, तो यह अपनी चमक वापस पा लेता है, लेकिन क्या उपचारित दर्पण की तुलना स्पष्टता और चमक में उस दर्पण से की जा सकती है जिसमें कभी जंग नहीं लगा है? किसी भी मामले में, ईश्वर की आज्ञाकारिता और वासना के झुकाव का विरोध करना या निचले स्व की मूल इच्छाओं का पालन करना, हृदय में स्पष्टता और लंगड़ा पैदा करता है और पापों की धुंधलापन [और नतीजों] को दूर करता है। भगवान कहते हैं:

وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُوا۟ فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ

"जो लोग हमारे तरीकों से प्रयास करते हैं, हम निश्चित रूप से और निश्चित रूप से उन्हें अपने मार्गों पर मार्गदर्शन करेंगे। (कुरान, अध्याय 29, श्लोक 69)

ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

من عمل بما علم ورثه الله علم ما لم يعلم

"ईश्वर उसे उस ज्ञान को प्रदान करता है जो उस ज्ञान पर कार्य करता है जिसे वह जानता नहीं है। (यह कथन भविष्यद्वाणी परंपराओं के संग्रह में बताया गया है *अबू नईम फिल हुलिया* भविष्यद्वक्ता साथी और सहायक अनस के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])।

तीसरा कारण यह है कि हृदय वांछित वास्तविकता का सामना करने से दूर हो सकता है, उदाहरण के लिए, एक पवित्र और धर्मी व्यक्ति है जो ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन कर रहा है और उसके कारण, किसी के पास एक ऐसा हृदय है जिसमें स्पष्टता है लेकिन सत्य उस हृदय में प्रतिबिंबित नहीं होता है क्योंकि वह सत्य का साधक नहीं है। ऐसा व्यक्ति अपने पूरे प्रयासों और ऊर्जा को पूजा के शारीरिक कार्यों और आर्थिक साधनों को जमा करने पर खर्च करता है [सांसारिक सुख-सुविधाओं के लिए] और इस प्रकार, ईश्वर के प्रभुत्व (*रुबुबियाह*), प्रभुत्व और छिपी हुई दिव्य सत्यों और वास्तविकताओं पर विचार करना कुछ ऐसा नहीं है जिसका कोई आदी है [या खोज]। सत्य और दिव्य वास्तविकताएं ऐसे हृदय में प्रकट और प्रतिबिंबित नहीं होती हैं [क्योंकि यह उनकी तलाश भी नहीं कर रहा है और इसके बजाय, अन्य भौतिकवादी, सांसारिक और गैर-आध्यात्मिक मामलों में लगा हुआ है]। बल्कि, केवल उन्हीं मामलों को प्रकट किया जाता है जिन पर कोई आम तौर पर विचार करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति अपने कार्यों और कर्मों के दोषों और कमियों और अपने निचले स्व की कमियों पर विचार-विमर्श करता है, तो उनसे संबंधित वास्तविकताएँ उसके हृदय में प्रकट हो जाती हैं। यदि कोई आर्थिक मामलों की पेचीदगियों पर विचार-विमर्श करता है [किसी की आजीविका से संबंधित] तो इन पेचीदगियों का अनावरण

किया जाता है। तो विचार करें, यदि अपने आप को धार्मिक कर्मों और पूजा के शारीरिक कार्यों तक सीमित रखना सत्य की झलक (आध्यात्मिक क्षेत्र से शाश्वत सत्यताओं, सत्य और वास्तविकताओं) के अनावरण के रास्ते में एक पर्दा या बाधा बन जाता है, तो निचले स्व की इच्छाएं और वासनाएं और दुनिया और सांसारिकता के प्रति लगाव और उलझना वास्तविकताओं के अनावरण के लिए बाधा क्यों नहीं होगी?

चौथा कारण है वह पर्दा जो सत्य के अनावरण के मार्ग में बाधा बन जाता है। उदाहरण के लिए, कभी-कभी एक व्यक्ति जो अपनी वासनाओं और वासनाओं को नियंत्रित करता है, एक आज्ञाकारी और आराधक सेवक [ईश्वर का] होता है, फिर भी विचार-विमर्श और चिंतन के बावजूद वास्तविकताओं की समझ से वंचित रहता है। यह अभाव कुछ विश्वास के कारण है जो बचपन से ही किसी के दिमाग में अपने पूर्वजों के [अंधे] अनुसरण के कारण बसा हुआ है और उन सिद्धांतों की सख्त व्याख्याओं के विरोध में किसी के दिल में कुछ भी प्रकट होने से रोकता है जिन्हें किसी ने आँख बंद करके स्वीकार किया है। यह विश्वास अब हर उस मामले के खिलाफ एक अड़ियल ठोकर बन गया है जो इसके खिलाफ जाता है या इसके बिल्कुल विपरीत है। यह एक ऐसा पर्दा है जो कई विद्वानों, बुद्धिजीवियों, ज्ञानी लोगों लेकिन धार्मिक पूर्वाग्रह और कट्टरता के साथ छाया देता है, और यहां तक कि सुधार के लोग (*सुलाहा*) भी जिनके विचार और चिंतन आकाश और पृथ्वी के प्रभुत्व पर केंद्रित हैं, वास्तविकताओं और सत्य की समझ से रहित हैं। वे हठधर्मी विश्वासों के अंधे अनुसरण के कारण छिपे हुए हैं जो उनके दिल और दिमाग में इस हद तक मजबूती से समा गए हैं कि वे किसी भी ऐसी चीज को स्वीकार करने की क्षमता खो देते हैं जो उनके खिलाफ है [भले ही वह सच हो]। इसी तरह, ये हठधर्मिता विश्वास सत्य को समझने और समझने के उनके मार्ग में बाधा और पर्दा बन जाती हैं।

पांचवां कारण उस दिशा की अज्ञानता है जहां से वांछित ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। एक [शुरुआती या नौसिखिया] छात्र के लिए जो मांगा जा रहा है उससे संबंधित ज्ञात ज्ञान प्राप्त किए बिना अज्ञात का ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है। तब केवल प्रासंगिक ज्ञात ज्ञान होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि, इसे एक विशेष क्रम में व्यवस्थित करने की आवश्यकता है जिसे ज्ञान के लोगों द्वारा विश्वसनीय माना जाता है [ताकि तार्किक कटौती हो सके]। अज्ञात के मांगे गए ज्ञान को कैप्चर करना ज्ञात ज्ञान पर डाले गए जाल के माध्यम से संभव है [कटौती की प्रक्रिया के माध्यम से एक निश्चित तरीके से व्यवस्थित]। प्रत्येक ज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि दो ज्ञान हों जो एक निश्चित क्रम में हों और तीसरे ज्ञान के परिणामस्वरूप एक साथ संयुक्त हों [जो पहले अज्ञात था] ठीक उसी तरह जैसे एक बच्चा नर और मादा के संयोजन से पैदा होता है। यह भी आवश्यक है कि ज्ञान संगत हो और प्राकृतिक आत्मीयता के साथ एक दूसरे से निकटता से जुड़ा हो। इसलिए, यदि कोई घोड़े और ऊंट के मिलन से बछड़ा प्राप्त करना चाहता है तो उसे निराशा होगी क्योंकि ऐसा होने के लिए, नर और मादा घोड़ों की आवश्यकता होगी और ऊंट उस आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता है [एक अलग प्रजाति होने के कारण]। इसी तरह, प्रत्येक ज्ञान के लिए, दो विशेष सिद्धांत होते हैं और उनके मिलन के लिए एक विशेष पद्धति होती है और केवल सही पद्धति का पालन

करने से वांछित ज्ञान प्राप्त होगा। इन सिद्धांतों की अज्ञानता और उनके संयोजन के तरीके के बारे में ज्ञान और समझ में बाधा डालती है। इसलिए, जैसा कि दर्पण के सादृश्य में ऊपर उल्लेख किया गया है, वांछित वस्तु की दिशा की अज्ञानता जिसके प्रतिबिंब दर्पण में मांगी जाती है, के परिणामस्वरूप दर्पण में छवि प्रदर्शित नहीं होगी और उद्देश्य प्राप्त नहीं होगा। उदाहरण के लिए, यदि कोई दर्पण में अपनी गर्दन देखना चाहता है, लेकिन उसने दर्पण को अपने चेहरे के सामने रखा है, तो जाहिर है कि गर्दन उस दर्पण में नहीं दिखाई देगी जो मांगा गया है; चेहरे की छवि, जो मांगी नहीं गई थी, उसमें दिखाई देती है। इसी तरह अगर गर्दन के पीछे भी दर्पण लगाया जाए तो गर्दन नजर नहीं आएगी, बल्कि दर्पण दृष्टि से गायब हो जाएगा। गर्दन को देखने के लिए एक दूसरे दर्पण की आवश्यकता होती है और इसे आंखों के सामने इस तरह से रखना चाहिए कि उसमें दूसरा दर्पण [गर्दन के पीछे रखा गया] दिखाई दे। उस स्थिति में, कोई अपनी गर्दन को देख सकता है क्योंकि गर्दन का प्रतिबिंब पहले दर्पण पर डाला जाएगा और उस प्रतिबिंब का प्रतिबिंब दूसरे दर्पण पर पड़ेगा [आंखों के सामने ताकि गर्दन दिखाई दे]। ज्ञान की खोज में ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, बल्कि उनमें बहुत अधिक जटिल मुद्दों का सामना करना पड़ता है। पृथ्वी पर ऐसे लोग मौजूद नहीं हैं जो ऐसी सभी जटिलताओं का सामना कर सकते हैं और यही कारण है कि कई वास्तविकताओं और ज्ञानों को नहीं माना जाता है। ये कुछ कारण हैं जो हृदय द्वारा सत्य और [शाश्वत आध्यात्मिक] वास्तविकताओं को समझने के मार्ग में बाधा बन जाते हैं, अन्यथा, प्रत्येक हृदय [या आत्मा] आंतरिक रूप से वास्तविकताओं को समझने में सक्षम है क्योंकि यह एक ईश्वरीय आदेश है, प्रभुत्वपूर्ण और महान है [अपने दिव्य मूल के कारण], और ब्रह्मांड के सभी पदार्थों से और उससे परे [अपने विशेष गुणों और महान गुणों के कारण] अलग है। हृदय [या आत्मा] की उत्कृष्टता, भेद और श्रेष्ठता का अंदाजा नीचे से लगाया जा सकता है ईश्वरीय कथन:

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا
ٱلْإِنسَٰنُ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

"वास्तव में हम ने स्वर्ग, पृथ्वी और पहाड़ों को भरोसा चढ़ाया, और उन्होंने इसे सहन करने से इनकार कर दिया और इससे डरते थे, लेकिन मनुष्य ने इसे सहन करने का बीड़ा उठाया। वास्तव में, एक (इंसान) अन्यायी और अज्ञानी था। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 72)

यह श्लोक मनुष्य की उस विशेष विशेषता को संदर्भित करता है जो किसी को आकाश, पृथ्वी, पहाड़ों जैसी ऊँची, विस्तृत और मजबूत [दिव्य] रचनाओं से स्पष्ट रूप से अलग करता है, और परमेश्वर के विश्वास को सहन करने के लिए योग्य बनाता है [जब अन्य सभी रचनाओं को ऐसा करने के लिए उपयुक्त नहीं समझा गया था]। यह [दिव्य] विश्वास ईश्वर का एकेश्वरवाद या एकता (*तौहीद*) और ज्ञान (अनुभवात्मक आध्यात्मिक ज्ञान या *मारिफा*) है। प्रत्येक व्यक्ति सहज और आंतरिक रूप से इस [शानदार दिव्य] विश्वास का भार उठाने में सक्षम है, लेकिन उपरोक्त कारणों से इस विश्वास को साकार करने के लिए साहस खो

देता है और अब इस विश्वास का भार वहन करने में सक्षम नहीं है। इस संबंध में, ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

كل مولود يولد على الفطرة فابواه يهودانه وينصرانه ويمجسانه

"प्रत्येक बच्चा '*फित्रा* (मनुष्य की सच्ची जन्मजात आंतरिक मूल प्रकृति) पर पैदा होता है जो ईश्वरीय इच्छा, दिव्य वास्तविकता और शाश्वत सार्वभौमिक सत्यों के साथ पूरी तरह से अनुरूप है और ईश्वर के विश्वास के प्रति पूर्वनिर्धारित है कि मनुष्य स्पष्ट रूप से एकेश्वरवाद और दिव्य ज्ञान से संपन्न है, फिर किसी के माता-पिता एक यहूदी, ईसाई बनाते हैं, या मैगियन (दुनिया में मौजूद विभिन्न धार्मिक और वैचारिक परंपराओं की ओर इशारा करते हुए, इस प्रकार किसी को अपने धार्मिक, वैचारिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और बौद्धिक संदर्भ के सांचे में ढालते हैं)। (यह कथन भविष्यसूचक कथनों के संग्रह द्वारा रिपोर्ट किया गया है *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* भविष्यवक्ता साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने आगे कहा: "अगर आदम के बच्चों (यानी, मनुष्यों) के दिलों पर मंडराते शैतान नहीं होते, तो वे स्वर्ग के प्रभुत्व को देखते"। यह इनमें से कई बाधाओं का संदर्भ है जो हृदय और [स्वर्गीय] प्रभुत्व के बीच पर्दा बन जाती हैं। किसी ने अब्दुल्लाह बिन उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) (जो एक भविष्यवक्ता साथी और सहायक थे) से ईश्वर के बारे में पूछा और क्या वह स्वर्ग या पृथ्वी पर है या नहीं, उन्होंने उत्तर दिया: "ईश्वर अपने विश्वासी सेवकों के दिलों में है। *पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि* व सल्लम की हदीस या परंपरा) है:

لم يسعني ارضي ولا سمائي ووسعني قلب المؤمن اللين الوادع

"[परमेश्वर ने कहा:] न तो मेरी पृथ्वी और न ही मेरे स्वर्ग में मुझे समाहित किया जा सकता है, परन्तु मेरे दास का कोमल और शांत हृदय मुझे धारण करने की क्षमता रखता है।

एक और भविष्यसूचक कथन (हदीस) इस प्रकार है:

قيل يا رسول الله من خير الناس، فقال كل مؤمن مخموم القلب، فقيل وما
مخموم القلب، فقال: هو التقي النقي الذي لا غش فيه، ولا بغي ولا غدر ولا
غل ولا حسد

ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से पूछा गया था: "सबसे अच्छे लोग कौन हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: "हर आस्तिक जो '*मखमूम अल-क़ल्ब* है"। उनसे पूछा गया था: "*मखमूम अल-क़ल्ब*" का क्या उल्लेख है?" उन्होंने उत्तर दिया: "एक हृदय जो ईश्वर का भय मानने वाला और शुद्ध है [और सभी आंतरिक गंदगी, नकारात्मकताओं और बुराई से शुद्ध है] कि उसमें झूठ और धोखे की कोई गंदगी नहीं है, न विश्वासघात या विद्रोह, न ही बेईमानी या अविश्वसनीयता, न ही द्वेष या ईर्ष्या [इस प्रकार हृदय शुद्ध है और सभी बुराइयों, नकारात्मकताओं और दोषों से रहित है]।

यही कारण है कि उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "जब भी मेरा दिल भगवान को देखता था, तो '*तकवा*' (धर्मपरायणता और पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय) के कारण पर्दा हट जाता था। क्योंकि यदि परमेश्वर और किसी के हृदय के बीच किसी के लिए पर्दा हटा दिया जाता है, तो कोई दृश्य भौतिक संसार और स्वर्गीय प्रभुत्व या अदृश्य संसार के प्रभुत्व को देखता है और कोई स्वर्ग को देखता है, जिसका एक भाग आकाश और पृथ्वी का है। जहां तक दूसरे स्वर्ग का सवाल है, यह अभी भी सीमित है, भले ही यह विस्तार में व्यापक और कम्पास में दूरगामी होने के कारण आकाश और पृथ्वी के विस्तृत विस्तार में फिट नहीं है। लेकिन दिल द्वारा देखा गया स्वर्ग अपनी लंबाई और चौड़ाई में कोई सीमा नहीं जानता है, दिव्य साम्राज्य ('*आलम अल-मुल्क*) और स्वर्गदूतों ('*आलम अल-मलकूट)* के अदृश्य क्षेत्र के प्रभुत्व का स्वर्ग है। हालाँकि, इसका जो हिस्सा दिल में आता है वह सीमित है, लेकिन अगर आप इसे दिव्य ज्ञान के दृष्टिकोण से देखते हैं, तो यह एक ऐसा क्षेत्र है जो अनंत और अपार है। यदि ईश्वरीय साम्राज्य (*'आलम अल-मुल्क*) और स्वर्गदूतों के क्षेत्र ('आलम *अल-मलकूट)* के दो क्षेत्रों का एक साथ उल्लेख किया जाता है, तो उन्हें प्रभु की उपस्थिति कहा जाता है जो सभी मौजूदा चीजों को शामिल करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वरीय प्रभुत्व में सभी चीजें शामिल हैं। परमेश्वर के अलावा जो कुछ भी मौजूद है, वह या तो उसके कार्य या प्रभुत्व या सेवक हैं। इन अस्तित्वों से मानव हृदय में जो प्रकट होता है वह कुछ लोगों के लिए स्वर्ग है, लेकिन सत्य के लोगों के लिए, यह स्वर्ग नहीं है, बल्कि इसके योग्य होने का एक साधन है और स्वर्ग में मनुष्य के प्रभुत्व का अस्तित्व किसी के ज्ञान की सीमा के समानुपाती होता है। दूसरे शब्दों में, जो कोई परमेश्वर के गुणों और उसके कार्यों के बारे में जानता है जो एक के लिए प्रकट किया गया था, उस हद तक स्वर्ग उसके लिए विस्तृत होगा। आज्ञाकारिता और पूजा के कार्यों का उद्देश्य यह है कि हृदय की सतह दर्पण की तरह शुद्ध और शुद्ध हो जाए और उसमें कोई मैलापन और गंदगी न रहे। हृदय की शुद्धि का उद्देश्य यह है कि विश्वास का प्रकाश और [रोशनी] ग्नोसिस (*मारिफा*) की चमक इसमें व्याप्त हो। निम्नलिखित दो पद विश्वास के एक ही प्रकाश और ज्ञान की रोशनी और ज्ञानवर्धन (मारिफा) को संदर्भित करते *हैं:*

فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهْدِيَهُۥ يَشْرَحْ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ ۖ

"ईश्वर जिसे भी मार्गदर्शन करना चाहता है, वह इस्लाम के लिए अपने दिल का विस्तार करता है (शब्द के सही अर्थ में, यह ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण और आत्मा की पवित्रता और रोशनी को संदर्भित करता है जो विश्वास और दिव्य ज्ञान का सच्चा प्रकाश इसमें लाता है)। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 125)

أَفَمَن شَرَحَ ٱللَّهُ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِۦ

"जिसके हृदय को परमेश्वर ने आत्म-समर्पण की इच्छा के साथ खोल दिया है और व्यापक रूप से विस्तारित किया है, ऐसा व्यक्ति एक प्रकाश द्वारा प्रकाशित होता है [जो किसी के पालनकर्ता (यानी, भगवान) से बहता है [क्या ऐसे व्यक्ति की तुलना हृदय के अंधे और बहरे से की जा सकती है?]" (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 22)

रोशनी और विश्वास की डिग्री: इस रोशनी और विश्वास [और ईश्वर में निश्चितता] में तीन डिग्री हैं: पहली डिग्री आम लोगों का विश्वास है जो विशुद्ध रूप से अंधी नकल है। दूसरी डिग्री शैक्षिक धर्मशास्त्रियों का विश्वास है जो तार्किक तर्क के साथ मिश्रित है। तीसरी डिग्री ज्ञानवादियों का विश्वास है, जो निश्चितता [और विश्वास की निश्चितता] के प्रकाश के साथ स्पष्ट रूप से देख रहा है।

[विश्वास की] इन डिग्रियों को स्पष्ट करने के लिए [यहाँ] एक उदाहरण दिया जा रहा है। उदाहरण यह है कि घर में जैद की उपस्थिति का पता तीन तरीकों से लगाया जा सकता है। एक [विधि] यह है कि आप एक भरोसेमंद व्यक्ति के माध्यम से उसकी उपस्थिति की खबर प्राप्त करते हैं जिसे झूठ और झूठ बोलने के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया गया है। आप ऐसे व्यक्ति द्वारा लाई गई खबरों से संतुष्ट हो जाते हैं और यह विश्वास विकसित करते हैं कि जैद वास्तव में घर में है। यह आम लोगों या आम लोगों के विश्वास का एक उदाहरण है जो [केवल अंधे] अनुसरण पर आधारित है। आम लोगों की स्थिति ऐसी है कि जब कोई बच्चा विवेक प्राप्त करता है [और अपने दम पर जीवन को समझने में सक्षम होता है] तो वह अपने माता-पिता और शिक्षकों से बिना किसी हिचकिचाहट के ईश्वर के अस्तित्व, ज्ञान, शक्ति और इस तरह के अन्य दिव्य गुणों के बारे में जो कुछ भी सुनता है, उसे स्वीकार करता है। इस तरह की मान्यताएं उनके दिमाग में बस जाती हैं और [गहरी] जड़ें जमा देती हैं कि उनके खिलाफ कुछ भी उनके दिमाग में भी नहीं आता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पास अपने माता-पिता और शिक्षकों की सत्यता के बारे में एक अच्छी राय है और उनसे किसी भी समाचार [या जानकारी] को स्वीकार करने और विश्वास करने में कोई संकोच नहीं है। इस तरह का विश्वास परलोक में उद्धार का कारण है, लेकिन ऐसे विश्वासी "दाहिने हाथ के लोगों" ("*अशब अल-यामीन*" या साधारण पवित्र और धर्मी लोगों को ईश्वरीय स्वीकृति प्राप्त करने के हकदार हैं) की डिग्री और श्रेणी में रहते हैं, और वे ईश्वर के अंतरंग लोगों में शामिल नहीं हैं (*मुकर्रबीन*) [जिनके पास उच्चतम डिग्री आध्यात्मिक पूर्णता है, ईश्वर के सामने प्राप्ति और पद] क्योंकि ईश्वर (तकारब) के साथ अंतरंगता के लिए, यह आवश्यक है कि हृदय रहस्यमय अनावरण, गहरी आंतरिक आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और निश्चितता के प्रकाश से हृदय के विस्तार से प्रकाशित हो। ये [महान] विशेषताएँ अंधे अनुसरण के आधार पर विश्वास में नहीं पाई जाती हैं, इसके अलावा व्यक्तियों से सुनने से जो याद किया जाता है [जो सिद्धांत से संबंधित है] में त्रुटियों की संभावना होती है।

घर में जैद की उपस्थिति का ज्ञान प्राप्त करने का दूसरा तरीका यह है कि जब वह घर में हो तो आप खुद अपने कानों से उसकी आवाज सुनें और आप घर की चारदीवारी के बाहर हों। उसकी आवाज़ सुनने से [घर में ज़ैद की उपस्थिति] किसी [विश्वसनीय और भरोसेमंद] की तुलना में अधिक पता चलेगा जो आपको इसके बारे में बता रहा है क्योंकि आवाज उपस्थिति और रूप के लिए तर्क देती है और यह दिल को होता है कि आवाज एक विशिष्ट व्यक्ति की है। यद्यपि यह विश्वास प्रेम और प्रमाण के साथ मिश्रित है, लेकिन त्रुटि की संभावना अभी भी है [इस प्रकार के विश्वास में] क्योंकि आवाजें कभी-कभी एक-दूसरे से मिलती-जुलती होती हैं और कभी-कभी एक व्यक्ति दिखावा करके दूसरे व्यक्ति की आवाज की नकल कर सकता है, और श्रोता दो आवाजों के बीच अंतर करने में सक्षम नहीं होता है और धोखा खा सकता है, क्योंकि किसी ने ऐसी किसी चीज के बारे में नहीं सोचा था [कि कोई ऐसा काम करेगा और इस तरह की नकल का उद्देश्य]।

तीसरा तरीका [उदाहरण के लिए, घर में ज़ैद की उपस्थिति की निश्चितता विकसित करने का] घर के अंदर जाना और ज़ैद को अपने लिए देखना है। यह वास्तविक ज्ञान-विज्ञान (*मारिफा*) या वास्तविक अनुभवात्मक ज्ञान और निश्चितता के साथ अवलोकन है। यह सूक्ति (*मारिफा*) या अनुभवात्मक ज्ञान ईश्वर के अंतरंग और मित्रों (*मुकर्रबीन*) और संतों या सत्य के लोगों (*सिद्दीकीन*) से मिलता-जुलता है क्योंकि वे [व्यक्तिगत] अवलोकन के बाद विश्वास करते हैं। इस तरह, उनके विश्वास में आम लोगों और विद्वानों (*मुतकलेमीन*) की आस्था शामिल है, लेकिन अवलोकन में वृद्धि के कारण, विश्वास इस हद तक मजबूत हो जाता है कि त्रुटि की कोई संभावना नहीं रह जाती है। हालाँकि, ईश्वर के *सभी मित्रों (मुकर्रबीन*) और संतों या सत्य के लोगों (सिद्दीकीन*) का ज्ञान (*मारिफा*) या आध्यात्मिक अनुभवात्मक ज्ञान* समान स्तर पर नहीं है, बल्कि इसके बजाय डिग्री में अंतर है [उनकी निकटता, अंतरंगता, आध्यात्मिक अनावरण और ईश्वर के साथ निश्चितता]। डिग्री और रैंक में इन अंतरों की व्याख्या फिर से ज़ैद के उदाहरण से ली जा सकती है। एक व्यक्ति दिन के उजाले में घर के आंगन में जैद को अच्छी तरह से देखता है। एक दूसरा व्यक्ति उसे एक कमरे के अंदर या दूर से या शाम को देखता है जब दिन का उजाला कम हो जाता है। पहले व्यक्ति का अवलोकन दूसरे व्यक्ति की तुलना में अधिक परिपूर्ण है, भले ही दूसरे व्यक्ति की धारणा अभी भी सही है, लेकिन कोई भी अपने चेहरे की विशेषताओं के सूक्ष्म विवरण और छिपी हुई विशेषताओं का निरीक्षण नहीं करता है। ईश्वरीय रूप से प्रकट सत्य और [आध्यात्मिक] ज्ञान को देखने की डिग्री में भिन्नता इस तरह की है। [आध्यात्मिक] ज्ञान की प्राप्ति में अंतर ऐसा है जैसे कि कोई जैद, अम्र और बकर को देखता है और दूसरा केवल जैद को देखता है। पूर्व का ज्ञान निश्चित रूप से बाद वाले की तुलना में अधिक है [पूर्व को ज्ञात चीजों की प्रचुरता के कारण और आध्यात्मिक अनुभवात्मक ज्ञान के संबंध में दिलों की स्थिति ऐसी है]।

सीखना (*Ta'allum*) और आध्यात्मिक प्रेरणा (*Ilham*) के बीच अंतर - शैक्षिक धर्मशास्त्रियों और आध्यात्मिक पथ के यात्रियों के बीच अंतर की वास्तविकता:

हृदय में गैर-पारंपरिक ज्ञान का आगमन अलग-अलग तरीकों से होता है। कभी-कभी यह ज्ञान हृदय में ऐसे इकट्ठा हो जाता है जैसे कि उन्हें अगोचर रूप से इसमें डाल दिया गया हो और कभी-कभी, वे तर्कों और सीखने के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं। पूर्व ज्ञान को "आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा" (*इल्हाम*) कहा जाता है और बाद वाले को "अर्जित ज्ञान" कहा जाता है। पूर्व ज्ञान दो प्रकार का होता है: पहला यह है कि प्राप्तकर्ता इस ज्ञान के स्रोत को नहीं जानता है और इसे आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा (*इल्हाम*) या "हृदय को बंदोबस्ती" (*नुफिखा फिल कल्ब*) के रूप में जाना जाता है। दूसरा यह है कि जिस माध्यम से यह ज्ञान व्यक्त किया जाता है, उसे जाना जाता है, दूसरे शब्दों में, उस ज्ञान को हृदय में रखने वाले देवदूत को देखा जाता है और इसे "दिव्य रहस्योद्घाटन" (*वाही*) कहा जाता है। पहला संतों और ज्ञानवादियों से जुड़ा है और दूसरा भविष्यवक्ताओं से जुड़ा है, और सीखने और प्रमाणों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान विद्वानों के लिए विशिष्ट है।

वास्तविकता यह है कि मनुष्य के हृदय में चीजों की वास्तविकताओं को स्पष्ट करने की क्षमता होती है। यदि हृदय इस क्षमता को खो देता है, तो यह पहले बताए गए उन्हीं पांच कारणों के कारण होता है। ये कारण हृदय के दर्पण और "संरक्षित गोली" (*लोह महफूध*) के बीच पर्दा बन जाते हैं, जिसमें सभी मामले अंकित होते हैं जो अनंत काल से तय किए गए हैं। संरक्षित टैबलेट के दर्पण से हृदय के दर्पण में सत्य का प्रकट होना एक दर्पण से दूसरे दर्पण में दिखाई देने वाली छवि की तरह है। इस तरह की बाधाओं के कारण इन वास्तविकताओं से दिलों को वंचित करना दो दर्पणों के बीच आने वाले पर्दे के समान है। जिस तरह हाथ से घूंघट हटाया जा सकता है, उसी तरह हृदय की प्रजनित गोली (लोह *महफूद)* और दर्पण के बीच का घूंघट दया की दिव्य हवा से हट जाता है और उसमें वे वास्तविकताएं दिखाई देने लगती हैं जो संरक्षित टैबलेट (लोह *महफूध) में होती हैं*।

ऐसा कभी-कभी सपनों में होता है और भविष्य की घटनाएं एक से पहले आती हैं। घूंघट का पूर्ण रूप से हटाना मृत्यु के समय होता है। मृत्यु एक ऐसी वास्तविकता है कि इसके साथ सभी छिपे हुए मामले स्पष्ट हो जाते हैं और वास्तविकताओं को समझने में आने वाली सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं। नतीजतन, ज्ञान की पेचीदगियों की रोशनी अदृश्य क्षेत्र से प्रकट होती है; कभी-कभी कुछ क्षणों के लिए बिजली के बोल्ट की तरह और कभी-कभी लगातार और स्थायी रूप से लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता है। ज्ञान और ज्ञान के संदर्भ में सीखने (*ता'अल्लुम*) और आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा (*इल्हाम*) के बीच कोई अंतर नहीं है जहां ज्ञान रहता है (यानी, हृदय)। यदि कोई अंतर है तो यह सिर्फ इतना है कि आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा (इल्हाम) में पर्दा उठाया जाता है और सीखने में, [ज्ञान के] प्राप्ति के साधनों को नियोजित करने और

घूंघट को उठाने की आवश्यकता होती है, न कि किसी के नियंत्रण में। इसी तरह, ईश्वरीय रहस्योद्घाटन (*वाही*) और आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा (*इल्हाम*) के बीच एकमात्र अंतर यह है कि प्रेरणा देने वाला उत्तरार्द्ध में नहीं देखा जाता है और इसे ईश्वरीय रहस्योद्घाटन में देखा जा सकता है। चाहे ज्ञान ईश्वरीय रहस्योद्घाटन (वाही) या आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा (*इल्हाम) के माध्यम से प्राप्त किया जाता है,* सभी मामलों में स्वर्गदूतों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। भगवान कहते हैं:

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ ٱللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِن وَرَآيِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِىَ بِإِذْنِهِۦ مَا يَشَآءُ

"किसी भी इंसान की ऐसी हैसियत नहीं है कि भगवान एक से [सीधे] बात करेंगे, लेकिन [तीन तरीकों से,] या तो आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा (*इल्हाम) के माध्यम से* या एक घूंघट के पीछे से या एक स्वर्गदूत को भेजकर जो अपनी इच्छा या इच्छा के अनुसार संदेश देता है। (कुरान, अध्याय 42, श्लोक 51)

यहां यह समझाना आवश्यक है कि *सूफियों* (आत्म-सुधार के लिए आध्यात्मिक मार्ग पर यात्री और यात्री जो ईश्वर की प्राप्ति की ओर अग्रसर होते हैं) आध्यात्मिक जागृति या प्रेरणा (इल्हाम) से जुड़े ज्ञान की ओर प्रवृत्त होते हैं। यही कारण है कि वे पारंपरिक शिक्षा में समय का निवेश नहीं करते हैं, न ही वे लेखकों की किताबें पढ़ते हैं, या कहावतों और प्रमाणों के साथ बहस करते हैं, इसके बजाय वे कहते हैं कि किसी को आध्यात्मिक रूप से प्रयास करना चाहिए, [इस प्रकार] सभी नकारात्मक और नीच (नकारात्मक, निम्न और निंदनीय) आंतरिक गुणों को नष्ट कर देना चाहिए; [आध्यात्मिक मार्ग पर] ऐसी सभी बाधाओं को समाप्त करने के बाद, व्यक्ति को अपना पूरा ध्यान ईश्वर पर केंद्रित करना चाहिए। जब यह प्राप्त हो जाता है, तो परमेश्वर स्वयं हृदय का रक्षक और [आध्यात्मिक] ज्ञान की रोशनी का प्रदाता बन जाता है। ईश्वरीय दया की छाया एक पर होगी, प्रकाश किसी के हृदय को रोशन करेगा और हृदय का विस्तार [आध्यात्मिक रोशनी प्राप्त करने के लिए] प्राप्त किया जाएगा और हृदय के दर्पण पर पर्दा छट जाएगा और दिव्य मामलों की वास्तविकताओं की छवियां उस पर गिर जाएंगी। एक सेवक [परमेश्वर का, अर्थात्, एक साधारण व्यक्ति] के पास सत्य को स्वीकार करने की क्षमता विकसित करने के लिए केवल हृदय की शुद्धि [सभी आंतरिक बीमारियों, नकारात्मक विचारों और नीच प्रवृत्तियों से] की जिम्मेदारी है। दृढ़ दृढ़ संकल्प और सत्य की खोज करने से व्यक्ति का साहस दृढ़ रहेगा, ईश्वरीय दया के माध्यम से पूर्ति की प्रतीक्षा करेगा। भविष्यद्वक्ताओं और संतों के सामने जो मामले उजागर होते हैं और परिणामस्वरूप उन्हें आंतरिक रोशनी मिलती है, वे शिक्षण, सीखने और पुस्तकों का अध्ययन करने में उनके लिप्तता के कारण नहीं होते हैं, बल्कि इसके बजाय, उनके पास दुनिया से वैराग्य (*ज़ुहद)* है, वे बुरे विचारों के स्रोतों को हटा देते हैं, और इसका कारण यह है कि वे *ज़ुहद को* अपनाते हैं (सांसारिकता से अलगाव) और पूर्ण दृढ़ संकल्प, साहस और इरादे के साथ, अपना ध्यान केवल ईश्वर पर केंद्रित करें। जो कोई भी ईश्वर का व्यक्ति बन जाता है, वह ईश्वर उसका हो जाता है।

सूफियों *के बीच एक कहावत है* कि ईश्वर का व्यक्ति बनने के लिए सांसारिक बाधाओं से पूरी तरह से अलग हो जाना चाहिए (आध्यात्मिक मार्ग में) तो हृदय को खाली कर देना चाहिए [ताकि वह आध्यात्मिक संघर्ष के लिए उपलब्ध हो जाए] और रिश्तेदारों, बच्चों, संपत्ति, देश, ज्ञान, प्रसिद्धि और शक्ति से अपना ध्यान हटाकर हृदय में ऐसी स्थिति पैदा करनी चाहिए ताकि किसी वस्तु की उपस्थिति या अनुपस्थिति समान हो जाए, अपने आप को एकांत करें, केवल आवश्यक और आवश्यक चीजों और मुकदमेबाजी पर भरोसा करें, ईश्वर को छोड़कर हर चीज के दिल को इस हद तक खाली कर दें कि कुरान के अर्थों और *हदीस* (भविष्यसूचक कथन) की पुस्तकों पर विचार करने से भी दिल का ध्यान विचलित न हो। बल्कि, व्यक्ति को यह प्रयास करना चाहिए कि परमेश्वर के अलावा किसी के हृदय में कुछ भी न आए। जब किसी की जीभ पर एकमात्र कथन "*अल्लाह, अल्लाह*" ("अल्लाह" भाषाओं की परवाह किए बिना ईश्वर का एकमात्र व्यक्तिगत नाम है, जबकि "भगवान" एक अंग्रेजी भाषा-विशिष्ट सामान्य शब्द है, जो अस्तित्व में आने वाली हर चीज का निर्माता, पालनकर्ता और प्रदाता है, क्योंकि हर भाषा में "भगवान" के लिए अपनी सामान्य शब्दावली है) निजी और सार्वजनिक दोनों में, जबकि यह कथन हृदय की पूर्ण उपस्थिति के साथ और इतनी प्रचुरता में कहा जाता है कि भले ही जीभ न हिले, हृदय इसे पढ़ते हुए दिखाई देता है, तभी एक [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति में पहुंच जाता है जहां इस कथन का प्रभाव जीभ और हृदय से मिटा दिया जाता है [इसके बजाय] [दृढ़ता से और स्थायी रूप से] इसके [दिव्य] स्मरण में इस हद तक स्थापित हो जाता है, कि दिल से भी, अक्षरों और शब्दों का आकार गायब हो जाता है और अर्थ हर समय स्थायी रूप से वहीं रहते हैं, जैसे कि दिल और अर्थ एक दूसरे के लिए परस्पर आवश्यक हो जाते हैं। एक दास [ईश्वर का, यानी, एक मनुष्य,] के पास इस तरह के स्तर तक पहुंचने की क्षमता और विशेषाधिकार है [आध्यात्मिक परिवर्तन का]। किसी में यह भी क्षमता है कि इस [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति को स्थायी बनाने के लिए, कोई भी व्यक्ति ईश्वर के अलावा अन्य चीजों के विचारों और प्रेरणा को पीछे हटा सकता है। हालाँकि, ईश्वरीय कृपा और दया के आकर्षण और अवशोषण पर किसी का नियंत्रण नहीं होता है, लेकिन ईश्वरीय कृपा को स्वयं की ओर आकर्षित करने की क्षमता विकसित होती है। [आध्यात्मिक प्राप्ति के] इस स्तर तक पहुंचने के बाद, एक दास [ईश्वर के} को ईश्वरीय अनुग्रह के उद्घाटन की प्रतीक्षा करनी चाहिए, कि जैसे ये उद्घाटन भविष्यद्वक्ताओं और संतों को दिए गए थे, वैसे ही उन्हें भी एक को प्रदान किया जाएगा। इस मामले में, यदि किसी के पास सच्चा इरादा है, सही संकल्प, दृढ़ता की सुंदरता है, वासनाओं और इच्छाओं से दूर रहना है [निम्न स्व से], और सांसारिक आसक्ति और चिंताओं से कुछ भी नहीं गुजरता है, तो सत्य का प्रकाश हृदय में चमकना शुरू हो जाएगा - शुरू में कुछ क्षणों के लिए बिजली की तरह फिर से उसी तरह। कई बार देरी होगी लेकिन उनकी वजह से निराश होने की जरूरत नहीं है। धीरे-धीरे और धीरे-धीरे, ये [आंतरिक आध्यात्मिक] रोशनी दिल में रहने लगेंगी। कभी-कभी वे जिस समय के लिए रुके थे वह इतना कम होता है कि किसी को उनकी प्यास महसूस होती है। कभी-कभी वे अधिक समय तक रहेंगे; कभी-कभी [आध्यात्मिक रोशनी की] रोशनी एक के बाद एक दिल पर चमकेगी। इस संबंध में, ज्ञानवादियों के पास इतनी अलग-अलग डिग्री और स्तर हैं कि उनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है, ठीक उसी तरह जैसे रचनाओं और उनके चरित्र लक्षणों (*इखलाक) के बीच अंतर की* कल्पना करना कठिन है।

इस चर्चा का नतीजा यह है कि हृदय को जीवन में लाना और उसे शुद्ध करना [सभी मैलापन, मैलापन और नकारात्मकताओं से] सेवक (यानी, प्रत्येक व्यक्ति) की जिम्मेदारी है। इसकी क्षमता बढ़ाना और धैर्यपूर्वक इस पर काम करना भी व्यक्तिगत दायित्वों में से एक है। बाहरी शिक्षाओं ('*उलेमा अल-जहीर) के धार्मिक विद्वान* भी इसका खंडन नहीं करते हैं क्योंकि अधिकांश भविष्यवक्ताओं, संतों और ज्ञानवादियों के पास समान आध्यात्मिक अवस्थाएं होती हैं। लेकिन वे इस रास्ते और विधि को कठिन मानते हैं। उनकी राय में, इस रास्ते पर चलने वाले परिणामों और फलों के लिए एक लंबा इंतजार करना पड़ता है। इस पथ में निर्धारित शर्तों का पालन करना आसान नहीं है। सबसे पहले, सभी सांसारिक जिम्मेदारियों, आसक्ति और समस्याओं से बेखबर रहना मुश्किल है। यहां तक कि अगर यह आध्यात्मिक कठोरता और अनुशासन के माध्यम से होता है, तो यह लंबे समय तक नहीं रह सकता है क्योंकि हृदय में छोटी-छोटी गलतफहमियां और [शैतानी] अनुनय इसकी शांति और शांति को बर्बाद कर देते हैं। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

قلب المؤمن اشد قدرا فی غلیاتها

"एक आस्तिक का दिल [खाना पकाने] बर्तन के उबलने से भी अधिक उबलता है (यानी, हृदय लगातार प्रवाह की स्थिति में रहता है और बदलने के लिए उत्तरदायी होता है)"। (यह कथन भविष्यसूचक कथनों के संग्रह द्वारा रिपोर्ट किया गया है *मुसनद अहमद* और *हकीम* भविष्यद्वाणी के साथी मिकदाद बिन अल-असवद के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

भविष्यवक्ता ने यह भी कहा है:

قلب المؤمن بین اصبعین من اصابع الرحمٰن

"एक आस्तिक का हृदय परम दयालु की उंगलियों के बीच दो अंगुलियों के बीच रहता है (अर्थात, ईश्वर हर समय हृदय की स्थिति को नियंत्रित करता है और इसे कभी भी बदल सकता है जैसा वह चाहता है)। (यह कथन भविष्यवक्ता साथी अब्दुल्ला बिन उमर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो] द्वारा बताया गया है)।

इस आध्यात्मिक संघर्ष के दौरान, स्वभाव अप्रिय हो जाता है, बुद्धि कम हो जाती है, स्वास्थ्य में गिरावट आती है और विभिन्न प्रकार की शारीरिक बीमारियां फैल जाती हैं। यदि [निम्न] स्वयं की शुद्धि के लिए आध्यात्मिक कठोरता से पहले ज्ञान की तलाश नहीं की जाती है, तो हृदय कई प्रकार के बुरे और नकारात्मक विचारों से भर जाता है और स्वयं पूरे जीवनकाल के लिए उनमें उलझा रहता है जो बिना किसी सफलता के [आध्यात्मिक पथ में] बीत जाता है। कई *सूफियों* (आध्यात्मिक मार्ग में चलने वाले) ने इस मार्ग को अपनाया है और बाद में किसी एक (बुराई, नकारात्मक या विनाशकारी) विचार में उलझे रहे हैं कि

बीस साल बीत जाने के बाद भी [आध्यात्मिक मार्ग में] एक कदम भी आगे बढ़े बिना बीत जाते हैं। उस समय, उन्हें एहसास होता कि यदि उन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया होता, तो बीस वर्ष व्यर्थ नहीं जाते और उस विचार के परिणाम [आध्यात्मिक प्रगति की इस निराशाजनक स्थिति के लिए जिम्मेदार] अर्जित ज्ञान के कारण पहले ही दिन प्रकट हो गए होते। इससे पता चलता है कि ज्ञान के मार्ग से आध्यात्मिक प्रयास की घाटी में कदम रखना न केवल विश्वसनीय है बल्कि इसके उद्देश्यों के करीब भी है। बाहरी ज्ञान के विद्वानों (शैक्षिक धर्मशास्त्रियों) की राय है कि *सूफियों* की उपमा उन व्यक्तियों की तरह है जो *फिक़्ह* (पूजा के बाहरी, दृश्य और शारीरिक कार्यों का ज्ञान) नहीं सीखते हैं और दावा करते हैं कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इस बाहरी ज्ञान को प्राप्त नहीं किया और *फकीह* बनने का दावा किया (बाहरी धार्मिक ज्ञान के विद्वान और अभ्यासी) ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और प्रेरणा के माध्यम से, इसलिए वे (यानी, *सूफी*) भी आध्यात्मिक अभ्यासों में दृढ़ता और निरंतरता के माध्यम से और उसी स्रोत [ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और प्रेरणा के] के माध्यम से वैसे ही बन जाएंगे, वे भी वही बाहरी ज्ञान (*फ़िक़्ह)* प्राप्त करेंगे). एक ही प्रकार के निरर्थक और नीच विचारों में उलझा हुआ व्यक्ति स्वयं के प्रति दमनकारी हो रहा है और अपने जीवन के अनमोल क्षणों को बर्बाद करने में व्यस्त है। ऐसा सूफी (यानी, कोई ऐसा व्यक्ति जो वास्तविक *सूफी नहीं है* , बल्कि केवल एक आत्म-भ्रमित व्यक्ति है, जो यह सोचकर कि वह आध्यात्मिक मार्ग पर प्रयास कर रहा है) एक ऐसे व्यक्ति की तरह है जो न तो जमीन पर खेती करता है [फसल उगाने के लिए] और न ही किसी प्रकार के काम को छूता है [या आजीविका कमाने के लिए पेशे को] और फिर भी उसे उम्मीद है कि कोई खजाना प्राप्त करेगा; ऐसा परिणाम केवल संभावित है लेकिन आवश्यक नहीं है क्योंकि सफलता की संभावना है बहुत कम। नतीजा यह है कि एक सूफी (आध्यात्मिक मार्ग पर यात्रा करने के आकांक्षी) को पहले ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और विद्वानों की बातों के वास्तविक अर्थों को समझना चाहिए, फिर [वे उचित हैं] [आंतरिक आध्यात्मिक] ज्ञान की प्रतीक्षा करें जो धर्म की बाहरी शिक्षाओं के विद्वान (शैक्षिक धर्मशास्त्री) से रहित हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस तरह के ज्ञान [निरंतर और लगातार] आध्यात्मिक प्रयासों और कठोरता के बाद प्रकट होते हैं [पूजा और ईश्वरीय आज्ञाकारिता के बाहरी कार्यों के ज्ञान को प्राप्त करने और ईमानदारी से कार्य करने के बाद]।

परिचित उदाहरणों के साथ प्रकट और अर्जित ज्ञान के बीच अंतर की व्याख्या

हृदय के चमत्कारों और रहस्यों को समझना [मानव] इंद्रियों के दायरे से बाहर है। यहां तक कि हृदय भी इंद्रियों के माध्यम से महसूस करने वाली चीज नहीं है। इसके अलावा, इंद्रियों के माध्यम से नहीं देखी जाने वाली किसी चीज को आंतरिक रूप से कमजोर बुद्धि के माध्यम से नहीं समझा जा सकता है, क्योंकि बुद्धि ऐसा करने के लिए बीमार है जब तक कि इंद्रियों के दायरे से एक उदाहरण उद्धृत नहीं किया जाता है। इसे आम लोगों को समझाने के लिए यहां इंद्रियों के दायरे से उदाहरण दिए जा रहे हैं।

पहला उदाहरण: मान लीजिए कि किसी भूमि में एक जलाशय खोदा गया है। इसमें पानी डालने के दो तरीके हैं। एक तरीका यह है कि इसके चारों ओर पानी के चैनल बनाए जाएं और इन चैनलों के लिए [पानी के स्रोतों से] पानी के द्वार खोल दिए जाएं ताकि जलाशय में पानी जमा हो जाए। दूसरा तरीका यह है कि जलाशय के उथले हिस्से को इतनी गहराई तक खोद दिया जाए कि उसमें से पानी ही बाहर निकल जाए। दूसरी विधि से प्राप्त पानी शुद्ध, लंबे समय तक चलने वाला होगा और प्रचुर मात्रा में और प्रचुर मात्रा में हो सकता है। इस उदाहरण के प्रकाश में, हृदय को एक जलाशय के रूप में, ज्ञान को पानी के रूप में और पांच इंद्रियों को जल चैनलों के रूप में माना जाना चाहिए। ज्ञान तक हृदय की पहुंच पांच इंद्रियों के माध्यम से हो सकती है ताकि किसी के पास जो भी अवलोकन हो, वह ज्ञान से भरे हृदय में आ जाए। दूसरी विधि यह है कि इन जल चैनलों को एकांत के माध्यम से बंद कर दिया जाए ताकि ज्ञान प्राप्ति के लिए पंचेंद्रियों का उपयोग न हो और हृदय के जलाशय को इस हद तक गहरा खोदा जाए कि ज्ञान के झरने भीतर से निकलने लगें। यह केवल तभी हो सकता है जब हृदय को सावधानीपूर्वक शुद्ध और शुद्ध किया जाता है, और [आध्यात्मिक वास्तविकताओं का अनावरण करने के लिए] उसमें से पर्दे हटा दिए जाते हैं।

इस प्रश्न के संबंध में, "ज्ञान हृदय से कैसे निकलेगा जब वह उसमें मौजूद भी नहीं है?", इसका उत्तर हृदय के चमत्कारों और रहस्यों से संबंधित है। बाहरी ज्ञान के दृष्टिकोण से, इस प्रश्न के उत्तर में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि चीजों की वास्तविकताएं [देखे जाने के दायरे से] संरक्षित टैबलेट (*लोह महफूध*) पर निहित हैं, बल्कि स्वर्गदूतों के दिलों पर जो [दिव्य वास्तविकता के करीब] हैं। जिस तरह घर बनाने से पहले एक इंजीनियर उसका खाका और विस्तृत डिजाइन तैयार करता है और उसी के अनुसार घर का निर्माण करता है, उसी तरह आकाश और पृथ्वी के निर्माता ने भी शुरू से अनंत अनंत काल तक अस्तित्व में आने वाली हर चीज का एक खाका और विस्तृत डिजाइन तैयार किया है। यह मास्टर प्लान संरक्षित टैबलेट (*लोह महफूध*) में संरक्षित है। दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है वह उसी के अनुसार हो रहा है। इस मास्टर प्लान के लिए कुछ दिल पर विचार करना दूर की कौड़ी नहीं है। इसलिए, जब कोई चीज एक बार अस्तित्व में आती है जो बाद में अस्तित्व में नहीं रहती है, लेकिन फिर भी धारणा और कल्पना के माध्यम से उसके रूप और उपस्थिति की कल्पना की जा सकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई दृश्य क्षेत्र को देखने के बाद अपनी आँखें बंद कर लेता है तो पृथ्वी और आकाश का रूप और स्वरूप उसकी धारणा और कल्पना में होगा और ऐसा महसूस होगा जैसे वह उन्हें देख रहा है। यदि मान लीजिए कि स्वर्ग और पृथ्वी का अस्तित्व समाप्त हो जाता है और केवल वही व्यक्ति रहता है जिसने उन्हें देखा है, तो वह व्यक्ति अपनी कल्पना और विचार में उनके चित्र से वंचित नहीं रहेगा। यह विचार हृदय को प्रभावित करता रहेगा और चीजों की वास्तविकताएं हृदय में प्रकट होती रहेंगी जो विचार और धारणा में मौजूद थीं [कुछ समय पहले]। जो कुछ भी दिल में आता है वह काल्पनिक रूप और उपस्थिति के अनुसार होता है जो उस वस्तु के वास्तविक बाहरी रूप और उपस्थिति जैसा दिखता है जो संरक्षित टैबलेट (लोह *महफूध) में मौजूद मानचित्र के अनुसार होता है*।

अस्तित्व के प्रकार: ऊपर से यह सीखा जाता है कि अस्तित्व के चार स्तर हैं। अस्तित्व का पहला [स्तर] वह है जो संरक्षित टैबलेट (*लोह महफ़ूध)* में है। यह अस्तित्व भौतिक अस्तित्व से श्रेष्ठ है। अस्तित्व का दूसरा स्तर वास्तविक अस्तित्व है - जो इस [सांसारिक] जीवन में है। अस्तित्व का तीसरा स्तर काल्पनिक है - एक जो विचारों और धारणाओं में है। यह उस अस्तित्व को संदर्भित करता है जिसका स्वरूप और रूप वास्तविक अस्तित्व के बाद विचार और कल्पना में प्रकट होता है। अस्तित्व का चौथा स्तर बौद्धिक अस्तित्व है, जो कि काल्पनिक अस्तित्व के बाद हृदय में आने वाला रूप और रूप है। इन चार अस्तित्वों में से कुछ आध्यात्मिक हैं, और कुछ भौतिक हैं। आध्यात्मिक अस्तित्व के भीतर भी भिन्नताएं हैं क्योंकि कुछ दूसरों की तुलना में अधिक आध्यात्मिक हैं। ये सभी मामले परमेश्वर की बुद्धि के चमत्कार और रहस्य हैं। देखें कि परमेश्वर ने आंख को इतना छोटा बनाया है, लेकिन अपने छोटे आकार के बावजूद, यह आकाश और पृथ्वी के विशाल विस्तार को उसमें इकट्ठा कर सकता है। यह एक नियम है कि जब तक कोई मामला एक तक नहीं पहुंचता है, तब तक उसे इसकी जानकारी नहीं होती है। इसलिए, यदि परमेश्वर ने संसार की सृष्टिओं का उदाहरण, रूप और स्वरूप नहीं बनाया होता, तो तुम लोगों को उनके बारे में पता नहीं होता या तुम लोगों को उनका ज्ञान नहीं होता। यह आपके प्रभु की शक्ति की पूर्णता और उन सभी चीजों पर पूर्ण प्रभुत्व का एक छोटा सा नमूना है जिन्हें उन्होंने आंखों और दिलों में इन चमत्कारों के विशाल खजाने प्रदान किए हैं। चेतावनी पाने के लिए, कुछ हृदयों को अंतर्दृष्टि से रहित और कुछ आँखों को दृष्टि से रहित बना दिया गया है, इस हद तक कि कुछ हृदय इतने बेखबर हैं कि वे अपने स्वयं के दोषों को नहीं जानते हैं, या उन चमत्कारों और रहस्यों की खबर प्राप्त करते हैं [आध्यात्मिक क्षेत्र से] जो हृदय के पास होना चाहिए, न ही वे इनके बारे में जानते हैं या इन रहस्यों से अवगत हैं।

अब हम इन उद्घाटन टिप्पणियों के बाद यहां अपने मुख्य उद्देश्य पर लौटते हैं। यहां जिस बात की चर्चा की गई वह यह है कि हृदय में किसी चीज का अस्तित्व इंद्रियों के माध्यम से हो सकता है और संरक्षित टैबलेट (लोह *महफ़ूध)* के कारण भी हो सकता है। जिस तरह सूर्य का रूप कभी उसे देखकर आंखों में आ जाता है तो कभी पानी में उसका प्रतिबिंब देखकर और वह प्रतिबिंब वास्तविक सूर्य के समान हो जाता है, उसी तरह जब हृदय और संरक्षित पट्टिका (*लोह महफ़ूध)* के बीच पर्दा उठाया जाता है तो उसमें पदार्थों की वास्तविकताएं झलकने लगती हैं और उनका ज्ञान हृदय में आ जाता है। उस स्थिति में, हृदय को अब [ज्ञान] को कम करने और इंद्रियों से लाभ उठाने की आवश्यकता नहीं है। इस विधि से ज्ञान का आगमन [और उदय] पृथ्वी से निकलने वाले पानी के समान है [एक फव्वारे से] जलाशय को भरना। कभी-कभी हृदय ऐसे विचारों में व्यस्त होता है जो उसे इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है। ये विचार संरक्षित टैबलेट (लोह *महफ़ूध) के लिए बाधा बन जाते हैं,* इसलिए यदि इस तरह के विचार जल भंडार को भर देते हैं और इसके निचले हिस्से को भर देते हैं, तो यह अपने तल से नहीं हटता है।

दिल के दो दरवाजे: दिल के दो दरवाजे होते हैं। एक दरवाजा देवदूत क्षेत्र ('*आलम अल-मलकूट)* की ओर खुलता है और दूसरा पांच इंद्रियों की ओर खुलता है जो भौतिक क्षेत्र या दृश्य के दायरे से समाचार

प्राप्त करते हैं (*'आलम अल-मुल्क वा अस-शहादा,* जिसे दिव्य सर्वशक्तिमानता और शक्ति की उपस्थिति के दायरे के रूप में भी जाना जाता है)। दोनों क्षेत्रों का घनिष्ठ संबंध है। जहां तक पांच इंद्रियों की ओर दरवाजा खोलने का सवाल है, यह सर्वविदित है, हालांकि, देवदूत क्षेत्र (*'आलम अल-मलकूट*) या संरक्षित टैबलेट (*लोह महफूध*) की ओर दरवाजा खोलना असंभव नहीं है। सपने की स्थिति को देखें और उस अवस्था में चमत्कारों को कैसे देखा जाता है। कुछ लोग भविष्य की घटनाओं और अतीत की घटनाओं को सपनों में देखते हैं, हालांकि इंद्रियां सपनों में शामिल नहीं होती हैं, लेकिन यह द्वार केवल उन लोगों के लिए खोला जाता है जो अपने दिव्य स्मरण में अद्वितीय हैं। इसका अर्थ है कि वे परमेश्वर की याद में इस तरह से तल्लीन और लीन हैं कि परमेश्वर के अलावा [किसी और चीज या किसी को] कोई चिंता नहीं रह जाती है। एक भविष्यद्वाणी परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

سبق المفردون' قيل ومن هم المفردون يا رسول الله' قال المتنزهون
بذكر الله تعالى' وضع الذكر عنهم اوزارهم فوردوا القيامة خفافا

"एकाग्र दिमाग वाले लोग (*मुफरीदून*) ने उत्कृष्ट और उन्नत किया है [ईश्वर के आध्यात्मिक मार्ग में बाकी सभी की तुलना में]"। पैगंबर से पूछा गया: "हे ईश्वर के दूत! एकल-दिमाग वाले लोग कौन हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: "वे लोग जो [ईश्वर के सच्चे और धर्मनिष्ठ के माध्यम से आंतरिक आध्यात्मिक शुद्धि] के माध्यम से शुद्ध हो गए। परमेश्वर की याद ने उनके पापों का बोझ हल्का कर दिया है और न्याय के दिन, वे हल्के वजन के साथ आएंगे [जैसे कि उन पर से गलत कामों के बोझ का बोझ हटा दिया गया होता]। (यह कथन किसके द्वारा रिपोर्ट किया गया है? हदीस *सहीह* मुस्लिम और *हकीम* को भविष्यवक्ता साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

इसके बाद, पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ईश्वर (*हदीस कुद्सी) से निम्नलिखित कहा:* "मैं अपना चेहरा उनकी ओर मोड़ता हूं; क्या तुम लोग जानते हो कि मैं किसकी ओर अपना मुँह घुमाता हूँ और मैं उन्हें क्या देना चाहता हूँ? उन्हें मेरा पहला उपहार यह है कि मैं उनके दिलों में अपना प्रकाश डालता हूं, फिर वे मेरे बारे में समाचार देना शुरू कर देते हैं जैसा कि मैं उनकी अवस्थाओं के बारे में जानता हूं। यह समाचार उसी आंतरिक द्वार से प्रवेश करता है [दिव्य सर्वशक्तिमानता और शक्ति की उपस्थिति के अदृश्य क्षेत्र का सामना करने वाले हृदय का] जिसका अभी उल्लेख किया गया था। एक ओर भविष्यवक्ताओं और संतों के ज्ञान और दूसरी ओर विद्वानों और बुद्धिमानों के बीच का अंतर यह है कि भविष्यसूचक ज्ञान उस दरवाजे से आता है जो हृदय में खुलता है जो स्वर्गदूत क्षेत्र (*'आलम अल-मलकूट) का सामना कर रहा है* और ज्ञान का ज्ञान इंद्रियों के द्वारों के माध्यम से प्रवेश करता है जो भौतिक क्षेत्र की ओर खोला जाता है (*'आलम जहीर*)). इस उदाहरण के माध्यम से, दो लोकों के बीच का अंतर स्पष्ट किया गया है। जहां तक अदृश्य के दायरे के रहस्यों और चमत्कारों का संबंध है (*'आलम अल-ग़ैब वा अस-शहादा जिसे* ईश्वरीय सर्वशक्तिमानता और शक्ति की उपस्थिति के अदृश्य क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है) का संबंध है, वे इतने सारे हैं कि उन्हें मानव अनुमान के दायरे में भी नहीं लगाया जा सकता है।

दूसरा उदाहरण: इस उदाहरण के माध्यम से, मैं विद्वानों के ज्ञान और ज्ञानवादियों (या भगवान के संतों या अंतरंग लोगों को अवलिया के रूप में भी जाना जाता है) के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से स्पष्ट करना चाहूंगा। विद्वान ज्ञान की इकाई को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और इसे अपने दिल की ओर खींचने की कोशिश करते हैं और *अवलिया* (ज्ञानवादी, संत या ईश्वर के अंतरंग) खुद को हृदय की शुद्धि, सुधार, पॉलिशिंग और जीवंतता में व्यस्त रखते हैं। जैसा कि एक परंपरा है, रोमनों और चीनियों ने अपने निर्माण और कलात्मक क्षमताओं की प्रशंसा की और प्रत्येक समूह ने एक राजा के सामने दूसरे को उत्कृष्टता प्राप्त करने का दावा किया। राजा ने दोनों समूहों के विशेषज्ञों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर देने के बारे में सोचा। यह निर्णय लिया गया कि दोनों को अपनी कलात्मक क्षमताओं को व्यक्त करने के लिए एक इमारत का एक हिस्सा दिया जाएगा। एक तरफ चीनी कलाकृति का प्रदर्शन करेंगे और दूसरी तरफ रोमन। दो भागों के बीच में एक पर्दा होगा ताकि प्रत्येक समूह दूसरे के काम से अनजान रहे। दोनों को यह टास्क दिया गया था। रोमनों ने असंख्य अद्भुत रंग लाए, जबकि चीनी बिना किसी रंग के इमारत के अपने हिस्से में प्रवेश कर गए और उन्हें सौंपे गए हिस्से को पॉलिश करना शुरू कर दिया। जब रोमनों ने अपना काम पूरा होने की घोषणा की, तो चीनी भी यह कहते हुए सामने आए कि उनका काम भी पूरा हो गया है। राजा [चीनियों की] कलाकृति के प्रकार पर आश्चर्यचकित था जिसे किसी भी रंग या पेंट की आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने राजा से अनुरोध किया कि वह भवन के दोनों हिस्सों के बीच में पर्दे उठाने का आदेश दे। जब पर्दे उठाए गए, तो रोमन कलाकृति में रंगों की चमक चमकने लगी और उनकी चमक और चमक कई गुना बढ़ गई क्योंकि चीनियों ने अपने हिस्से की दीवारों को इतना पॉलिश किया कि दीवारें एक साफ पॉलिश किए गए दर्पण की तरह खूबसूरती से पॉलिश हो गईं [जो रोमन कलाकृति की सुंदरता को दर्शाता है]। यह *अवलिया* (संतों, ज्ञानवादी और ईश्वर के अंतरंग) की स्थिति है कि वे, चीनी की तरह [इस दृष्टांत में], हृदय की शुद्धिकरण, पुनरुद्धार और सुधार [सभी नकारात्मकताओं, नीच और बुरी प्रवृत्तियों, प्रवृत्तियों और झुकावों से] में इतना प्रयास करते हैं कि यह सत्य के साथ प्रकाशित हो जाता है जबकि विद्वान और बुद्धिमान सीखने के पारंपरिक साधनों के माध्यम से ज्ञान और प्रभाव प्राप्त करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।

ज्ञान प्राप्त करने का साधन जो भी हो, उस हृदय के लिए कोई विलुप्त नहीं होता है जिसमें [दिव्य] ज्ञान का प्रकाश होता है [जैसा कि हृदय इसके द्वारा अमर होता है]। ज्ञान मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता है और न ही मृत्यु का हृदय की पवित्रता और शिथिलता पर कोई प्रभाव पड़ता है और न ही इसमें कोई मैलापन प्रवेश करता है। इसलिए, हसन अल-बसरी (ईश्वर उस पर दया करे) [जो सबसे महान *अवलिया* और ज्ञानवादियों में से एक थे] ने कहा कि विश्वास का निवास (यानी, हृदय) मिट्टी द्वारा भस्म नहीं किया जाता है (यानी, दिव्य वास्तविकता में विश्वास रखने वाले हृदय का जीवन, मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता है)। ज्ञान, इसे स्वीकार करने की क्षमता और क्षमता, और हृदय की पवित्रता और लंगड़ा एक आस्तिक (मोमिन) के लिए आवश्यक है। बाद के जीवन में अनन्त खुशी और अंतहीन सफलता (सादाह) की इसके बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती है। साथ ही, इस शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता की अलग-अलग

डिग्री है। जिस तरह धन के प्रत्येक स्वामी को धनी कहा जाता है, उसी तरह *सादाह* (शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता) के प्रत्येक स्वामी को "*सईद*" (शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता के जबरदस्त प्रचुरता का अधिकारी) कहा जाता है। हालांकि, क्या एक लाख *दिरहम* (सोने के सिक्कों के रूप में अतीत की एक पुरानी मुद्रा) का मालिक उस व्यक्ति के बराबर हो सकता है जिसके पास दस लाख *दिरहम हैं*? यह शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के लिए समान है [क्योंकि इस जबरदस्त इनाम के सभी मालिकों के पास इसकी समान डिग्री नहीं है]। कुछ इसके उच्चतम स्तर पर हैं, कुछ इससे कम हैं और कुछ इसके निचले स्तर पर हैं। शाश्वत खुशी की ये डिग्री ग्नोसिस (*मारिफा*) और विश्वास (ईमान) *की अलग-अलग डिग्री के कारण हैं*।

अबू सुलेमान अल-दरानी (अतीत के एक महान ज्ञानवादी) ने कहा: "दिल की उपमा एक गुंबद की तरह है जिसके चारों ओर कई बंद दरवाजे हैं। उनके बीच जो दरवाजा खुलता है, दिल उसी के माध्यम से काम करता है। इसके माध्यम से हम जानते हैं कि हृदय के दरवाजों के बीच, इसका एक दरवाजा स्वर्गदूत क्षेत्र ('*आलम अल-मलकूट*) और उच्च आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर खुलता है। यह द्वार एक जोरदार और निरंतर आध्यात्मिक संघर्ष, ईश्वर का भय और निम्न स्व की वासनाओं और भोगों से दूर रहने के बिना नहीं खुलता है। इसीलिए, उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने अपने सेनापतियों को एक पत्र में निर्देश दिया कि वे जो कुछ भी ईश्वर के पवित्र दासों द्वारा बताए गए हैं, उन्हें याद रखना चाहिए क्योंकि उच्च [सार्वभौमिक] सत्यों से संबंधित मामले उनके सामने प्रकट होते हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि ईश्वर का हाथ बुद्धिमान [आध्यात्मिक ज्ञान के लोगों] के मुंह पर है और वे केवल सत्य का उच्चारण करते हैं। एक ज्ञानवादी ने कहा कि वह दावा कर सकता है कि परमेश्वर उन लोगों के लिए कुछ रहस्य प्रकट करता है जो उसके सामने विनम्रता अपनाते हैं।

Insinuations (Waswaas) के *माध्यम से दिलों पर शैतान का प्रभुत्व* - आक्षेपों का अर्थ और शैतान के प्रभुत्व के कारण

दिल सिर्फ एक गुंबद के समान है जिसमें कई दरवाजे हैं और हर दरवाजे के माध्यम से आंतरिक अवस्थाएं लगातार आती हैं और जाती हैं। इसके कई उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, हृदय एक लक्ष्य की तरह है जिसे लगातार सभी तरफ से तीरों द्वारा लक्षित किया जा रहा है या यह एक दर्पण की तरह है जिसमें विभिन्न छवियां एक के बाद एक परिलक्षित होती हैं और कोई भी क्षण निष्क्रिय नहीं होता है या यह एक जलाशय की तरह है जो इसके चारों ओर बने विभिन्न कनेक्टिंग जल चैनलों से पानी प्राप्त करता है। हृदय पर अलग-अलग प्रभावों की निरंतर उपस्थिति बाहरी और आंतरिक दोनों इंद्रियों के माध्यम से होती है। यही

कारण है कि विचार, वासनाएं, क्रोध और अन्य [आंतरिक] चरित्र लक्षण इन्हीं प्रभावों और राज्यों के नाम हैं। हृदय में निरंतर परिवर्तन हर समय होते रहते हैं। यदि किसी वस्तु को इंद्रियों के माध्यम से देखा जाता है, तो उसका प्रभाव हृदय पर दिखाई देगा। इसी तरह, यदि भोजन की प्रचुरता और स्वभाव की शक्ति वासना को भड़काती है तो हृदय प्रभावित होगा। दिल के विचार बदलते रहते हैं और यह एक विचार से दूसरे विचार में जाता रहता है। यही अर्थ है हृदय परिवर्तन का। विचार-विमर्श और यादों के परिणामस्वरूप हृदय में पैदा होने वाले प्रभाव को "खतरे" (*खवातिर)* कहा जाता है। दिल से अनुभव किए गए ज्ञान को 'विचार-विमर्श' और 'यादों' द्वारा संदर्भित किया जा रहा है, चाहे वे नए हों या पहले से ज्ञात हों और अब उनका उल्लेख किया जा रहा है। [कथित] खतरों (*खवाटीर*) को इस तरह से संदर्भित किया जाता है क्योंकि वे दिल पर तब थोप जाते हैं जब मनुष्य उनके प्रति लापरवाह होता है। ये खतरे इरादों को भड़काते हैं और [मानव] संकल्प करते हैं क्योंकि इरादा, दृढ़ संकल्प और कार्य योजना तभी पैदा होती है जब विचार दिल को पार कर जाता है। कर्म इन खतरों (खवातिर) से पैदा होते हैं और शुरू होते हैं। खतरा इच्छा को भड़काता है, इच्छा संकल्प को उकसाती है, संकल्प को उकसाती है, इरादे या कार्य योजना को प्रेरित करती है, और इरादा शारीरिक अंगों को [विचार या हृदय में कथित खतरे के अनुसार कार्य करने के लिए] उकसाता है।

दो प्रकार के खतरे - ईश्वरीय प्रेरणा (*इल्हाम*) और संकेत (*वासवास*)*:* इच्छा को भड़काने वाले खतरे दो प्रकार के होते हैं। पहला खतरा ऐसा है कि यह किसी को एक ऐसे मामले में आमंत्रित करता है जो बुराई (शर*)* है या दूसरे शब्दों में जीवन के अंतिम परिणाम और अनन्त जीवन ('*आकीबा) के लिए हानिकारक है*। दूसरा खतरा ऐसा है कि यह व्यक्ति को एक ऐसे मामले में आमंत्रित करता है जो अच्छा और महान है (खैर*)* जो बाद के जीवन में लाभ और अच्छाई का स्रोत है। इस तरह दो अलग-अलग खतरे (*खवातिर*) हैं और उन दोनों के अलग-अलग नाम हैं। अच्छे खतरे (*खतिर महमूदा)* को "दिव्य प्रेरणा" (*इल्हाम*) कहा जाता है और निंदनीय खतरे (*खतिर मदमुमा) को* "आक्षेप" (वाससा) कहा जाता है। ये खतरे क्षणभंगुर या आकस्मिक (*हवादिथ*) हैं और उनके लिए एक निर्माता (आकस्मिक होना या *हदीस)* आवश्यक है। चूंकि खतरे विभिन्न प्रकार के होते हैं, इसलिए उनके अंतर हमें बताते हैं कि उनके कारण और स्रोत भी अलग-अलग होंगे। ईश्वर की दिव्य बुद्धि और मार्ग (सुन्नत*)* निरंतर रूप से व्याप्त है और कारणों और प्रभावों के क्रम में जारी रहता है। जैसा कारण है, प्रभाव वैसा ही होगा। इसलिए, यदि किसी कमरे में आग जलाई जाती है और उसकी रोशनी के माध्यम से, कमरे की दीवारें रोशन हो जाती हैं और छत धुएं से काली हो जाती है, तो छत के कालेपन को प्रकाश के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा। इसी तरह, हृदय के अंधकार और रोशनी के अलग-अलग कारण हैं। [दूसरे] खतरे के कारण को "स्वर्गदूत" कहा जाता है जो अच्छाई को आमंत्रित करता है और [पहले] खतरे का कारण "शैतान" कहलाता है जो बुराई को आमंत्रित करता है। सूक्ष्मता और विनम्रता जो हृदय में अच्छाई को स्वीकार करने की क्षमता पैदा करती है, उसे "*तौफीक*" (अच्छा करने के लिए ईश्वरीय सक्षमता) कहा जाता है और जो किसी को शैतानी आक्षेपों को स्वीकार करने में सक्षम बनाता *है उसे "खधलान*" कहा जाता है (दुर्भाग्य की गहराई और नीचे की ओर आध्यात्मिक प्रक्षेपवक्र में निम्न स्तर पर डूबना)। अर्थों का अंतर अलग-अलग शब्दावली की ओर ले जाता है।

देवदूत और शैतान: "देवदूत" उस सृष्टि को संदर्भित करता है जिसे परमेश्वर ने अच्छा, ज्ञान का प्रकाश फैलाने, सत्य को प्रकट करने, अच्छे का वादा करने और अच्छे और महान को आदेश देने के लिए बनाया है। इन नियुक्त कार्यों के लिए देवदूत [भगवान के हाथ में] मोहित है। "शैतान" (*शैतान)* उस सृष्टि को संदर्भित करता है जो उपर्युक्त सभी चीजों में एक स्वर्गदूत के सीधे विपरीत है। दूसरे शब्दों में, शैतान को बुराई का वादा करने, बुरे और बुरे को आमंत्रित करने, और भलाई करने की ओर झुकाव रखने वाले व्यक्ति को भयभीत करने के लिए बनाया गया है। इससे यह पता चला है कि संकेत (*वासवासा)* ईश्वरीय प्रेरणा (इल्हाम) के विपरीत है, शैतान देवदूत के विपरीत है, और दुर्भाग्य की गहराई और नीचे की ओर आध्यात्मिक प्रक्षेपवक्र (खधलान) में निम्न स्तर तक डूबना अच्छा करने के लिए ईश्वरीय सक्षमता (*तौफीक) के विपरीत है*। निम्नलिखित श्लोक उसी को संदर्भित करता है:

وَمِن كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ

"और हमने सब कुछ दो की जोड़ी में बनाया है। (कुरान, अध्याय 51, श्लोक 49)

इसका मतलब है कि सभी रचनाएँ जोड़े में हैं, सिवाय लॉर्ड माइटी मैजेस्टिक को छोड़कर, जो एक और अद्वितीय हैं, कोई भी उनके खिलाफ प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहा है, वह सत्य हैं और सभी जोड़ियों के निर्माता हैं। देवदूत और शैतान दोनों दिल को अपनी ओर खींचने में व्यस्त हैं। इसलिए, एक परंपरा के अनुसार, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

في القلب لمتان' لمة من الملك ايعاد بالخير و تصديق بالحق' فمن وجد
ذالك فليعلم انه من الله سبحانه و ليحمد الله و لمة من العدو و ايعاد بالشر و
تكذيب بالحق' و نهي عن الخير فمن وجد ذالك فليستعذ بالله من
الشيطان الرجيم (ثم تلا هذه الاية) الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ

"'हृदय में दो निकटताएँ हैं: एक स्वर्गदूत से निकटता है जिसका काम अच्छे का वादा करना और सत्य का पता लगाना है; जो कोई भी यह जानता है उसे पता होना चाहिए कि यह परमेश्वर की ओर से है और इसके लिए परमेश्वर का आभारी होना चाहिए। दूसरी निकटता [हृदय की] शैतान की है जिसका काम सत्य को अस्वीकार करना और भलाई से किसी को रोकना है; जो कोई भी यह जानता है उसे शैतान, शापित से परमेश्वर की शरण लेनी चाहिए। इसके बाद, पैगंबर ने निम्नलिखित आयत पढ़ी: 'और शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है और तुम्हें बुरे और शर्मनाक [और अभद्र] काम करने की आज्ञा देता है'"। (यह कथन किसके द्वारा रिपोर्ट किया गया है? *हदीस* ने भविष्यद्वाणी के साथी अब्दुल्ला इब्न मसूद के अधिकार पर *तिर्मिज़ी* और *नसाई को* इकट्ठा किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

हसन अल-बसरी (एक महान ज्ञानवादी) ने कहा कि दो विचार [इरादे और संकल्प के] दिल के चारों ओर घूमते हैं। एक भगवान से और एक दुश्मन से। ईश्वर उस व्यक्ति पर दया करे जो किसी के विचार पर रुकता है। यदि यह ईश्वर की ओर से है तो किसी को इस पर कार्य करना चाहिए और यदि यह शत्रु (यानी,

शैतान) से है तो किसी को इसके खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। [निम्नलिखित] *हदीस* (भविष्यवाणी की परंपरा) इन [प्रतिस्पर्धी और विरोधी] विचारों के बीच संघर्ष की ओर इशारा करती है:

قلب المؤمن بين اصبعين من اصابع الرحمٰن

"एक आस्तिक का हृदय दयालु [परमेश्वर] की उंगलियों से दो उंगलियों के बीच में होता है"।

मांस से बनी उंगलियों से ऊपर भगवान महान हैं, रक्त और हड्डियों. इसके बजाय यहाँ उंगलियां इस तथ्य को संदर्भित करती हैं कि जिस तरह एक मनुष्य अपनी उंगलियों के माध्यम से तेजी से काम करता है और चीजों को घुमाता है और उनके साथ [वस्तुओं] को घुमाता है, उसी तरह परमेश्वर स्वर्गदूत और शैतान को भी उनके अधीन करने के बाद [उनके सम्मानजनक] कार्य करने के लिए उपयोग करता है। उन दोनों (देवदूत और शैतान) को दिलों को मोड़ने और उन्हें इधर-उधर पलटने के लिए अधीन किया जाता है, जैसे आपकी उंगलियां [आपकी इच्छा के अनुसार] वस्तुओं को स्थानांतरित करने और पलटने के लिए अधीन हैं। हृदय, अपनी अंतर्निहित प्रकृति में, देवदूत और शैतान दोनों के प्रभावों को समान रूप से स्वीकार करने में सक्षम है और एक को दूसरे पर वरीयता है। हालाँकि, निचले स्व से इच्छाओं का पालन करना या उनका विरोध करना एक पक्ष (देवदूत या शैतान) को दूसरे पक्ष पर वरीयता देता है। इसलिए, यदि मनुष्य क्रोध और वासना के निहितार्थों पर कार्य करता है, तो शैतान निचले स्व से इच्छाओं के माध्यम से किसी पर हावी हो जाएगा और हृदय उसका घोंसला, इनक्यूबेटर और समर्थक होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि निचले स्व की इच्छाएँ शैतान के चरागाहों को चराने हैं। यदि कोई इच्छाओं के खिलाफ एक बहादुर संघर्ष करता है और उन्हें एक पर हावी नहीं होने देता है और स्वर्गदूतों के चरित्र लक्षणों को अपनाता है, तो ऐसे व्यक्ति का दिल स्वर्गदूतों का विश्राम स्थल और गंतव्य बन जाएगा। वह हृदय जो वासना, क्रोध, लालच, लोभ और लंबे समय तक [अविरल] इच्छाओं में निवास करता है, वह हृदय सभी परिस्थितियों में शैतानी आक्षेपों का लक्ष्य होगा। एक भविष्यसूचक कथन में कहा गया है:

ما منكم من احد الا وله شيطان، قالوا وانت يارسول الله؟ قال وانا الا ان الله
اعانني عليه فاسلم فلا يامر الا بخير

"तुम में से हर एक पर शैतान नियुक्त किया गया है। भविष्यवक्ताओं के साथियों ने पूछा: 'और तुम पर भी?' पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जवाब दिया: "हाँ, मुझ पर भी। हालाँकि, परमेश्वर ने उसके विरुद्ध मेरी मदद की है और वह एक *मुसलमान* (ईश्वरीय इच्छा और आदेश के अधीन) बन गया है। वह मुझसे अच्छे के अलावा कुछ नहीं कहता है। (यह कथन किसके द्वारा रिपोर्ट किया गया है? *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* भविष्यवक्ता के साथी अब्दुल्ला इब्न मसूद के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])।

शैतान वासना को नियंत्रण और हेरफेर के अपने उपकरण के रूप में उपयोग करता है। वह व्यक्ति जो ईश्वरीय रूप से किसी की वासना से सहायता करता है ताकि वह किसी के अधीन हो जाए इस हद तक कि वह उपयुक्त सीमाओं के अलावा फिर से उभर न आए, तो वह बुराई का आह्वान करने वाला नहीं रहता है और न ही शैतान के पास अपने स्वयं के [नापाक] उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग करने का अपना तरीका है। शैतान के पास दिलों में आक्षेप पैदा करने की क्षमता है जब वे दुनिया की याद [और सांसारिकता] और

निचले स्व (नफ्स) की इच्छाओं से प्रभावित होते हैं। यदि हृदय ईश्वर की याद की ओर मुड़ता है, तो शैतान के पास दूर जाने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं बचता है [इस व्यक्ति से जिसमें ईश्वरीय स्मरण प्रबल है] और उसके पास आक्षेप (वासवास) फैलाने की क्षमता नहीं बची है। उस समय फरिश्ता आकर अच्छे की आज्ञा देता है। स्वर्गदूतों और शैतानों की सेनाएँ इस तरह से एक गहन संघर्ष में बंद हैं। युद्ध की यह स्थिति तब तक जारी रहती है जब तक कि हृदय जीत नहीं लिया जाता और दो [सेनाओं] में से एक के अधीन नहीं हो जाता। उस स्थिति में, हृदय विजेता का विश्राम निवास और स्थान बन जाता है [देवदूत और शैतान के बीच से]। यदि [पराजित] विरोधी उसके पास से गुजरता है, तो वह एक हमलावर के रूप में ऐसा करता है, न कि उसके मालिक और विजेता के रूप में। यह दुख के साथ और फिर से बड़े दुख के साथ है कि [मानवता के] अधिकांश दिलों को शैतानों ने अपने जोड़तोड़ और षड्यंत्रों के लिए जीत लिया है। ये विजित, गुलाम और पराधीन दिल [मनुष्यों के विशाल बहुमत से संबंधित] [नीच और नापाक] शैतानी कटाक्षों (वासवा) के निवास बन गए हैं। उन्होंने परलोक की तुलना में दुनिया (सांसारिक जीवन और महत्वाकांक्षाओं) को प्राथमिकता दी है। शैतानी सेना के प्रभुत्व का कारण [दिलों पर] निचले स्व से वासनाओं का अनुसरण करना है। परमेश्वर के पास उनकी (यानी, हृदयों) की वापसी केवल उस स्थिति में हो सकती है जब शैतानी पकड़ और नियंत्रण हटा दिया जाता है और हृदय निचले स्व से इच्छाओं से खाली हो जाता है और [इसके बजाय] निवास किया जाता है और परमेश्वर की याद से भर जाता है। देवदूत ईश्वरीय स्मरण के माध्यम से हृदय की घाटी में उतरते हैं और शैतान के पास अपनी सेना और सहयोगियों के साथ उससे भागने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

जाबिर इब्न जुबैदातु अल-अदवी ने कहा, "मैंने दिल में पैदा हुए बुरे विचारों (शैतानी संकेत) के बारे में अला इब्न ज़ियाद (भगवान उस पर दया करे) (एक महान ज्ञानवादी) से शिकायत की"। उन्होंने कहा: "इसका उदाहरण चोरों के घर में घुसने जैसा है। अगर घर में कुछ है, तो चोर उसे अपने साथ ले जाएंगे और अगर कुछ नहीं है, तो उन्हें असफलता में [खाली हाथ] लौटना होगा। इस उदाहरण के माध्यम से, अला इब्न ज़ियाद ने बताया कि शैतान निचले स्व की इच्छाओं से रहित हृदय में प्रवेश नहीं करता है। इसलिए, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कहा है:

إِنَّ عِبَادِى لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَٰنٌ

"[परमेश्वर ने शैतान से कहा] मेरे विशेष सेवकों पर तुम्हारा कोई नियंत्रण नहीं होगा। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 65)

एक व्यक्ति जो निचले स्व की इच्छाओं के [आवेगों और आदेश] के अधीन है, वह ईश्वर का सेवक नहीं है, बल्कि इसके बजाय, इच्छाओं का सेवक है [निचले स्व से]। ईश्वर ने एक और स्थान पर [कुरान में] कहा है:

أَفَرَءَيْتَ مَنِ ٱتَّخَذَ إِلَٰهَهُۥ هَوَىٰهُ

"क्या आपने एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति देखी है जिसने ईश्वर को निम्न स्व की इच्छाओं से बनाया है। (कुरान, अध्याय 45, आयत 23)

इस श्लोक में हमें बड़ी स्पष्टता के साथ सूचित किया गया है कि जो लोग निम्न स्व से अपनी इच्छाओं के अधीन हैं, उन्होंने उनमें से भगवान बनाया है (अर्थात, वे अपनी इच्छाओं की पूजा करते हैं जैसे कि वे भगवान हों)।

शैतान से सुरक्षा का रास्ता: अम्र बिन अल-आस (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से कहा: "हे ईश्वर के दूत! शैतान मेरे और मेरी प्रार्थनाओं के बीच में आता है (दूसरे शब्दों में जब मैं अपनी प्रार्थनाओं में कुरान पढ़ता हूं, तो शैतान मेरे दिमाग और दिल को ईश्वर के अलावा अन्य चीजों में उलझा देता है)। उसने उत्तर दिया:

ذالک شيطان يقال له خنزب فاذا احسسته فتعوذ بالله منه واتفل عن يسارک ثلاثا

उन्होंने कहा, 'यही शैतान है जिसे 'खिनजब' कहा जाता है। जब आप इसे महसूस करें, तो उनसे भगवान की शरण लें और अपनी बाईं ओर तीन बार थूकें। (यह कथन *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* द्वारा पैगंबर साथी 'अम्र इब्न अल-आस' के अधिकार पर बताया गया है)।

अम्र इब्ने आस (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा कि जब उन्होंने इस पद्धति का पालन किया, तो शिकायत का समाधान किया गया। इन परंपराओं से यह पता चला है कि शैतान से खुद को बचाने का एक ही तरीका है और वह है ईश्वरीय स्मरण (*धिक्कार*)। इस स्मरण के साथ, शैतान की आत्मा अंदर तक हिल जाती है और वह अपनी सभी साजिशों में विफल हो जाता है। एक बौद्धिक कारण जो परमेश्वर की याद के कारण शैतान के भागने के लिए समझ में आता है, वह यह है कि हृदय शैतानी आक्षेपों से रहित होगा, जब कुछ और इसमें प्रवेश करेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि जब कोई विचार दिल में आता है तो जो पहले से था वह नहीं रहता। इसलिए, किसी और चीज के साथ दिल पर कब्जा करने से शैतानी संकेत समाप्त हो जाएगा, हालांकि, यह भी संभव है कि दिल में एक नए विचार के रूप में आक्षेप पैदा हो। ईश्वरीय स्मरण ही एकमात्र ऐसी चीज है जिसमें शैतान अपनी उपस्थिति में कुछ भी करने में सक्षम नहीं है। यह एक नियम है कि हर चीज का इलाज उसके विपरीत से किया जाता है। शैतानी आक्षेपों के विपरीत ईश्वर (*इस्तिआधा*) और ईश्वर की शरण लेना है और अपनी शक्ति और शक्ति के दिखावे को अस्वीकार करना है, जैसा कि हम शैतान के खिलाफ सुरक्षा के लिए निम्नलिखित कहते हैं:

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

"मैं शापित शैतान से परमेश्वर की शरण चाहता हूँ। ईश्वर के अलावा कोई शक्ति और शक्ति नहीं है, जो सर्वोच्च है।

केवल वे ही शैतान से अपना बचाव करने में सक्षम हैं जिनके पास परमेश्वर का पवित्र भय, श्रद्धा और भय है और जिन पर ईश्वरीय स्मरण प्रबल है। शैतान अपनी साजिशों से उन पर हावी होना चाहता है, लेकिन वे उसे परमेश्वर की याद की शक्ति से हरा देते हैं। भगवान कहते हैं:

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ إِذَا مَسَّهُمْ طَـٰٓئِفٌ مِّنَ ٱلشَّيْطَـٰنِ تَذَكَّرُوا۟ فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ

"जिन लोगों को ईश्वर का पवित्र भय, श्रद्धा और भय होता है, जब शैतान की ओर से उनके पास कोई संकेत आता है, तो वे तुरंत ईश्वरीय स्मरण में संलग्न हो जाते हैं और इस बुरी घटना से चौंक जाते हैं और [कार्रवाई में] जागृत हो जाते हैं।" (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 201)

नीचे दी गई कविता की व्याख्या में:

مِن شَرِّ ٱلْوَسْوَاسِ ٱلْخَنَّاسِ

"[मैं भगवान में शरण लेता हूं] शैतानी संकेतों की बुराई से। (कुरान, अध्याय 114, श्लोक 4)

मुजाहिद (पैगंबर के साथी अब्दुल्ला बिन अब्बास के एक महान शिष्य जो कुरान की व्याख्या में विशेषज्ञता रखते थे) ने कहा कि शैतान दिल पर अपनी छाया डालता है; जब दिल का कोई व्यक्ति ईश्वर का नाम याद करता है ["*अल्लाह*" जो ईश्वर का एकमात्र व्यक्तिगत नाम है जबकि "ईश्वर" उसे संदर्भित करने के लिए एक भाषा विशिष्ट सामान्य शब्द है और प्रत्येक मानव भाषा का "भगवान" के लिए अपना समकक्ष सामान्य शब्द है] फिर वह (शैतान) पीछे हट जाता है और पूरी तरह से सिकुड़कर बैठ जाता है, और जब मनुष्य उससे बेखबर और बेपरवाह होता है तो वह (शैतान) हृदय पर फैलता रहता है। परमेश्वर के स्मरण और शैतानी संकेत के बीच का विरोधाभास इतना बड़ा है जितना कि यह दिन के उजाले और अंधेरे के बीच है या जैसा कि दिन और रात के बीच है, जैसे कि जब एक आता है, तो दूसरे का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। पवित्र [दिव्य] श्लोक का अनुसरण उसी विरोधाभास को संदर्भित करता है:

ٱسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ ٱلشَّيْطَـٰنُ فَأَنسَىٰهُمْ ذِكْرَ ٱللَّهِ ۚ

"शैतान ने उन पर अपना पूरा नियंत्रण पूरा कर लिया है और उन्हें परमेश्वर की याद भूल दिया है। (कुरान, अध्याय 58, श्लोक 19)

अनस बिन मलिक (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं कि उन्होंने कहा:

ان الشيطان واضع خرطومه على قلب ابن آدم فان هو ذكر الله تعالى قنس
وان نسى الله تعالى التقم قلبه

"शैतान ने आदम (मनुष्य) के पुत्र के हृदय पर अपनी पूंछ रखी है। जब कोई ईश्वर को याद करता है, तो वह (शैतान) दूर चला जाता है और जब कोई ईश्वर को भूल जाता है, तो वह (शैतान) उसके (मनुष्य के) दिल को निगल जाता है। (यह कथन हदीस *संग्रह* इब्न अबी अद-दुन्या, अबू याला *और* इब्न 'आदि) *द्वारा रिपोर्ट किया गया है*।

इब्ने वद्दा (रश्मा उस पर दया करे) ने कहा है कि जब कोई मनुष्य चालीस वर्ष का हो जाता है और अपने पापों से पश्चाताप नहीं करता है, तो शैतान किसी के चेहरे पर अपना हाथ रखता है और कहता है: "मैं इस

सुंदर चेहरे की कैसे पूजा करता हूं, जिसका उद्धार किसी की नियति के रूप में नहीं होगा"। जिस तरह वासनाओं और प्रलोभनों को [मानव] मांस और रक्त के साथ मिला हुआ है, उसी तरह शैतान किसी की रगों में लहू के साथ घूम रहा है और उसने हृदय को चारों ओर से घेर लिया है। इसलिए पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

ان الشيطان يجري من بني آدم مجرى الدم فضيقوا مجاريه بالجوع

"शैतान मानव शरीर में रक्त के साथ घूमता है; इसलिए भूख के साथ उसके मार्ग को कम करें (यानी, उपवास और शानदार और अत्यधिक भोजन और पेय से संबंधित वासनाओं में लिप्त न होने के माध्यम से)"।

[शैतान के] अंशों को कम करने की सलाह दी गई थी क्योंकि भूख वासनाओं को समाप्त कर देती है और शैतान वासनाओं के माध्यम से शरीर में प्रवेश करता है और रक्त में घूमना शुरू कर देता है, विशेष रूप से हृदय के चारों ओर चारों दिशाओं (सभी तरफ) से क्योंकि वासनाओं का केंद्र केवल हृदय है। शैतान के चारों दिशाओं से हमला करने का प्रमाण इस पद में मिलता है जिसमें परमेश्वर, महामहिम, ने शैतान की भाषा के माध्यम से वर्णन किया है जिसने कहा:

لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَٰطَكَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾

ثُمَّ لَءَاتِيَنَّهُم مِّنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَٰنِهِمْ وَعَن شَمَآئِلِهِمْ ۖ

"मैं आपकी कसम खाता हूं (हे भगवान!) कि मैं उनके (मनुष्यों) के लिए आपके सीधे मार्ग (सही मार्गदर्शन) पर बैठूंगा, फिर मैं उन पर उनके सामने से और उनकी पीठ से, उनकी दाहिनी ओर से और उनकी बाईं ओर से भी हमला करूंगा। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 16-17)

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के कथन के अनुसार कि [शैतानी] संकेत आशंकाएं हैं [विभिन्न मामलों से संबंधित जो मनुष्य का सामना करते हैं] जो उनके अनुनय के माध्यम से दिल में आती हैं। कोई भी इन आशंकाओं से रहित नहीं है जैसा कि एक भविष्यद्वाणी कथन (हदीस) में उल्लेख किया गया है कि हर इंसान के लिए, एक शैतान है; यदि [मनुष्यों के बीच इस बात के संदर्भ में कि वे उसके साथ कैसे व्यवहार करते हैं], तो यह केवल इस हद तक है कि कुछ लोग शैतान का विरोध करते हैं, [जबकि] कुछ उसके अधीन हैं।

शैतान क्या है? यहां कुछ लोग शैतान की प्रकृति के बारे में सवाल उठा सकते हैं जैसे "क्या उसके पास सूक्ष्म शरीर है या कोई शरीर नहीं है?", "यदि वह एक शरीर है तो वह मानव शरीर में कैसे प्रवेश करता है और नसों में [रक्तप्रवाह के माध्यम से] कैसे घूमता है?" शैतान की प्रकृति और वास्तविकता बाहरी ज्ञान से संबंधित नहीं है। इस तरह के सवाल उठाने वाले व्यक्ति की तुलना उस व्यक्ति की होती है जिसके शरीर में सांप प्रवेश करता है और उसे बाहर निकालने की चिंता करने के बजाय, व्यक्ति इसके आकार, रंग,

लंबाई और चौड़ाई के बारे में कहानियों में लिप्त होता है। यह शुद्ध अज्ञान है। शैतान आपका शत्रु है और उसकी शत्रुता एक खुली किताब की तरह स्पष्ट है। आपको एक बहादुर संघर्ष करने और उसके खिलाफ लड़ने में व्यस्त होना चाहिए। वह आपके शरीर, दिल और नसों के अंदर छिपा हुआ है। आपको उसे बाहर निकालने के बारे में चिंता करनी चाहिए। ईश्वर ने अपनी पुस्तक (कुरान) में कई बार मनुष्यों के प्रति अपनी शत्रुता का उल्लेख किया है। उसने कहा:

إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَٱتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا۟ حِزْبَهُۥ لِيَكُونُوا۟ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلسَّعِيرِ

"वास्तव में, शैतान तुम्हारा शत्रु है, इसलिए उसे अपना शत्रु मानें। वह अपने समूह को [अनुयायियों के बुरे और गलत के लिए] कहता है ताकि लोग नरक के निवासी बन जाएं [जो कि उसके साथ अधिक से अधिक संभव संख्या में मनुष्यों को नरक में ले जाने का उसका एकमात्र मिशन है]। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 6)

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا۟ ٱلشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ

"ऐ आदम की सन्तानों! (यानी, शुरू से लेकर समय के अंत तक पूरी मानवता) क्या मैंने तुम्हें शैतान की पूजा न करने की चेतावनी नहीं दी थी [उसके आदेशों का पालन करके, बुरी प्रेरणाओं और आपके व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण के लिए हर चीज के बारे में नीच, बुराई, नकारात्मक और हानिकारक हर चीज के बारे में]? वास्तव में, वह आपका खुला और घोषित शत्रु है। (कुरान, अध्याय 36, श्लोक 60)

मनुष्य को इस शत्रु से अपनी रक्षा करनी चाहिए और यह नहीं पूछना चाहिए कि यह शत्रु कहाँ से है, उसका वंश और रंग क्या है? अगर किसी को पूछने की जरूरत है तो उसे पूछना चाहिए कि यह दुश्मन कैसे हमला करता है, उसके पास किस प्रकार के हथियार हैं, और वह अपने दुश्मन (पूरी मानवता) को वश में करने के लिए क्या रणनीति अपनाता है? यह पहले समझाया जा चुका है कि शत्रु (शैतान के) हथियार निचले स्व से आधारहीन इच्छाएँ हैं और इन्हीं इच्छाओं के माध्यम से उसमें निहित शक्ति के माध्यम से, वह शरीर के राज्य और शासन में गहराई से प्रवेश करता है। आक्षेपों और बुरी प्रेरणाओं की रणनीतियों के माध्यम से, वह कमजोर विश्वास वाले लोगों को हराता है [और संकल्प]। शैतान के हमलों से बचने की रणनीतियों को भी समझाया गया है और उस हथियार का उल्लेख किया गया है जो शैतान की आत्माओं और महत्वाकांक्षाओं को निराश करता है और उसे युद्ध के मैदान से भागने के लिए मजबूर करता है। आम लोग आम लोग हैं, यहां तक कि विद्वानों (शैक्षिक धर्मशास्त्रियों) को भी इससे अधिक जानने की अनुमति नहीं दी जाएगी। शैतान के अस्तित्व और गुणों की वास्तविकता को पहचानना ज्ञानवादियों ("*'अरीफीन*" या संत और ईश्वर के ज्ञाते) से संबंधित है। ये लोग गूढ़ ज्ञान ("*'इल्म अल-मुकाशाफा*" या आध्यात्मिक अनावरण का ज्ञान) में लीन हैं।

हृदय में होने *वाले विचार (*खवातिर) के प्रकार: वे तीन प्रकार के होते हैं: सबसे पहले वे विचार जो अच्छे के लिए आमंत्रित और बुलाने वाले होते हैं। इस तरह के विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के *इल्हाम* या ईश्वरीय प्रेरणा के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। दूसरे, वे विचार जो बुराई [या नकारात्मक, निराशाजनक और हानिकारक चीजों] की ओर आमंत्रित करते हैं। इस तरह के विचारों को

बिना किसी संदेह के शैतानी संकेत और अनुनय (*वाससा*) के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। तीसरा, जो ईश्वरीय प्रेरणा और शैतानी संकेत के बीच में हैं और यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि वे स्वर्गदूत या शैतान से हैं क्योंकि शैतान के धोखे का एक रूप बुराई को अच्छे के रूप में प्रस्तुत करना है। दोनों के बीच अंतर करना बहुत मुश्किल है। ज्यादातर लोग इस धोखे का शिकार हो जाते हैं और इससे नष्ट हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, शैतान एक विद्वान (शैक्षिक धर्मशास्त्री) को सलाह के तरीके से कहता है, "लोगों को देखो! अज्ञानता उन्हें विलुप्त होने की ओर धकेल रही है और लापरवाही उन्हें विनाश के करीब ले जा रही है। वे नरक के करीब पहुंच गए हैं और दैवीय क्रोध उन्हें घेरने वाला है। क्या तुम परमेश्वर के इन सेवकों पर दया नहीं करते हो, ताकि तुम अपनी बहुमूल्य सलाह और विद्वतापूर्ण प्रवचनों के माध्यम से उन्हें विनाश से बचा सको? परमेश्वर ने आपको स्पष्ट अंतर्दृष्टि, गहरी समझ और दूसरों के कष्टों के लिए महसूस करने वाले हृदय जैसे [महान] गुणों के साथ संपन्न किया है। आपका भाषण आकर्षक है, आपके भाषण की शैली [प्रवचनों की] लोकप्रिय है, आपके शब्दों में विश्वास का प्रकाश है। आप परमेश्वर की इन [विशाल] आशीषों के लिए कृतघ्न क्यों हो रहे हैं? ऐसा न हो कि आपको अपनी कृतघ्नता के लिए [भगवान द्वारा] दंडित किया जाए और आप उसकी नाराजगी अर्जित करें और संभवतः ज्ञान के प्रसार और लोगों को भगवान के पास आमंत्रित करने की आपकी क्षमताओं को सजा के रूप में आपसे छीन लिया जाए। शैतान लगातार इस और इसी तरह की अन्य सलाह को इतनी बार चेतावनी देता है कि एक विद्वान का दिल उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह जाता है, और अंत में वह उपदेश देने के क्षेत्र में कदम रखता है और अपने एकांत से बाहर निकलकर लोगों की सभा में आ जाता है। इस बात पर, शैतान किसी को यह कहकर धोखा देता है कि कुछ भी दिल को तब तक प्रभावित नहीं करता जब तक कि सलाह देने वाला और लोगों को सुभाव देने वाला दिखने वाला अच्छा न हो, अच्छी तरह से कपड़े पहने और अच्छी तरह से बोला न जाए। व्यक्ति इस [शैतानी] धोखे में पड़ जाता है और धीरे-धीरे एक ऐसे स्थान पर आ जाता है जहाँ से आडंबर, अहंकार, आत्म-धार्मिकता, और प्रसिद्धि और शक्ति की इच्छा पैदा होती है और इस व्यक्ति के अलावा हर कोई स्वयं नीच और हीन लगता है। विचार करें कि कैसे शैतान ने अच्छाई की आड़ में बुराई के इतने सारे स्रोत बनाए, और ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी सलाह विद्वान के साथ ईमानदारी पर आधारित थीं, जबकि वह गुप्त रूप से एक को विनाश में खींच रहा था। यह गरीब [अनभिज्ञ] विद्वान या उपदेशक शब्दों में ज्ञान के मोती फैला रहा है और सोचता है कि किसी का उद्देश्य अच्छा है, हालांकि दिल [जनता के बीच] प्रसिद्धि और लोकप्रियता के संघर्ष में व्यस्त है। सोचता है कि मेहनत रंग लाएगी और परलोक में कोई पद मिलेगा।

परंपराओं के अनुसार, शापित शैतान एक आदमी के रूप में यीशु (शांति और ईश्वर की आशीषों को उस पर हो) के पास आया और उसे "*ला इलाहा बीमार अल्लाह*" या "भगवान के अलावा कोई भगवान नहीं है" कहने के लिए कहा। यीशु ने उत्तर दिया: "यद्यपि यह कथन (परमेश्वर के बारे में गवाही) सत्य है, मैं इसे [सिर्फ] नहीं कहूंगा क्योंकि आपने मुझे यह कहने के लिए कहा था। यीशु के इनकार का कारण वही है कि अच्छे काम करने के लिए शैतान का अनुनय भी नुकसान और जाल से रहित नहीं है और अच्छाई के माध्यम से शैतान के फंसने का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। उनके माध्यम से, वे सभी विद्वान (विद्वान धर्मशास्त्री और प्रचारक), उपासक, सांसारिकता से दूर रहने वाले, आध्यात्मिक यात्री और उदार नष्ट हो जाते हैं जो सभी परिस्थितियों में खुली बुराई को पसंद नहीं करते हैं और इसके अलावा, वे पाप करने के लिए सहमत नहीं होते हैं। शैतान के धोखे के कुछ उदाहरण अहंकार और आत्म-दंभ के बारे में पुस्तक में [ग़ज़ाली की *महान रचना "इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का

पुनरुद्धार" के तीसरे खंड में प्रस्तुत किए जाएंगे और यदि भगवान मुझे जीवन देते हैं, तो मैं उसी विषय पर एक पुस्तक लिखने की योजना बना रहा हूं जिसका शीर्षक "*तालबीज इब्लिस"* है" (शैतान के अनुनय और फंदे)। हर जगह, देश और राष्ट्र में, हर व्यक्ति शैतान के अनुनय और जाल का शिकार है। विशेष रूप से, उसने (शैतान) लोगों को [धार्मिक] विश्वासों और धार्मिक विचारों (माधीब) के बारे में फंसाने में सभी सीमाओं को पार कर लिया है। अब अच्छाई और धार्मिकता केवल एक कर्मकांड का विषय बन गया है। मनुष्य को अपने हर विचार और इरादे को रोकना चाहिए और [उन पर कार्य करने से पहले] उनके सभी अच्छे और बुरे पहलुओं की जाँच करनी चाहिए, और यह निर्धारित करना चाहिए कि क्या वह विचार और इरादा एक शैतानी संकेत या ईश्वरीय प्रेरणा है और जितना संभव हो उतना रुकें और चिंतन, और मूल्यांकन (मानसिक और बौद्धिक क्षमताओं) की अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग करें क्योंकि यह ज्ञान की व्यापकता के बिना निर्धारित नहीं किया जाता है, अंतर्दृष्टि और विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर के प्रति भय की गहराई (*तक़्वा)* जैसा कि भगवान ने कहा है:

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوۡاْ إِذَا مَسَّهُمۡ طَـٰٓئِفٌ مِّنَ ٱلشَّيۡطَـٰنِ تَذَكَّرُواْ فَإِذَا هُم مُّبۡصِرُونَ

"जब भी शैतान से कोई विचार [या संकेत] आता है, तो [परमेश्वर के धर्मी सेवक] ईश्वरीय स्मरण में संलग्न होते हैं और इससे चौंक जाते हैं जो बदले में उनकी आँखें खोलती हैं [वास्तव में उनके साथ क्या हो रहा है]। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 201)

दूसरे शब्दों में, इन परिस्थितियों में, वे (धर्मी लोग) अपने दिलों की तलाशी लेते हैं और उनका आंतरिक प्रकाश उन्हें अज्ञानता के अंधकार से बाहर निकालता है। "*कश्फ*" (जागने की अवस्था में आध्यात्मिक अनावरण) और अंतर्दृष्टि (*बसीराह) के साथ*, सभी जटिलताएँ और रहस्य सुलझ जाते हैं। ईश्वर के प्रति पवित्र विस्मय, श्रद्धा और भय से रहित व्यक्ति (तकवा) *अपने* निचले स्व से अपनी इच्छाओं के दबाव में आता है, शैतान के धोखे को स्वीकार करता है और उसे अच्छा (खैर) मानता है और अनजाने में विनाश के मार्ग पर चलना शुरू कर देता है। ऐसे लोगों के बारे में कुरान निम्नलिखित कहता है:

وَبَدَا لَهُم مِّنَ ٱللَّهِ مَا لَمۡ يَكُونُواْ يَحۡتَسِبُونَ

"उन्हें परमेश्वर की ओर से एक ऐसा मामला मिलेगा जो उनकी कल्पना से परे होगा। (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 47)

शैतान के धोखे का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत रूप से अनिवार्य है: बाहरी मामलों (बाहरी ज्ञान या "*इल्म मुआमला")* के ज्ञान में, महत्वपूर्ण बात यह है कि निचले स्व (नफ्स) के धोखे और शैतान की चालाकी के बारे में जागरूक और सूचित होना चाहिए। यह हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य है, लेकिन लोग इस दायित्व को पूरा करने के लिए लापरवाह और लापरवाह हैं और ऐसा ज्ञान प्राप्त करने में व्यस्त हैं जो आगे बढ़ेगा उन आक्षेपों और प्रेरणाओं (शैतान *से वासवा)* को उकसाएं जो शैतान को [लोगों पर] अपना गला घोंटने का अवसर प्रदान करेंगे। वे उसकी दुश्मनी और इस तरह के ज्ञान प्राप्त करने में शामिल होकर उससे खुद को बचाने के तरीकों के बारे में भूल जाते हैं। ढेर सारे आक्षेपों और संकेतों से छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका ऐसे विचारों के दरवाजे बंद करना है। ऐसे विचारों या कथित खतरों के

दरवाजे (या "*खवातीर*" जिन्हें इस तरह से संदर्भित किया जाता है क्योंकि वे हृदय पर तब थोप जाते हैं जब मनुष्य के पास आंतरिक सुरक्षा होती है और वह उनसे बचाव करता है और उनसे लापरवाह होता है) बाहरी पर पांच इंद्रियां और अंदर की ओर वासनाएं और सांसारिक उलझाव हैं। एक छोटे से घर में एकांत अपनाने से पांच [बाहरी] इंद्रियों के मार्ग बंद हो जाते हैं। रिश्तेदारों और धन से दूरी बनाए रखने से कामवासना और सांसारिकता का प्रेम कम होता है। इस स्थिति में [जब सभी अंदर और बाहर के दरवाजे बंद हो जाते हैं], केवल विचारों के दरवाजे खुले रहते हैं, लेकिन उन्हें परमेश्वर की याद की रक्षा के साथ संरक्षित किया जा सकता है। कभी-कभी ये विचार गार्ड को सफलतापूर्वक दिल में घुसाने में सक्षम होते हैं। यदि ऐसा होता है, तो इस "चोर" के खिलाफ एक गहन संघर्ष की आवश्यकता है। यह [गहन आंतरिक आध्यात्मिक] संघर्ष कभी समाप्त नहीं होता है, बल्कि इसके बजाय किसी के जीवन की अंतिम सांस तक जारी रहता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक जीवित व्यक्ति कभी भी शैतान से मुक्त नहीं हो सकता है जो हमेशा घात लगाकर हमला करने और अवसर मिलते ही हमला करने की स्थिति में [ध्यान से] देखता रहता है। इस दुश्मन (शैतान) के खिलाफ हर समय सतर्क रहना अनिवार्य है। कभी-कभी कोई इस शत्रु को अपने अधीन कर लेता है और आध्यात्मिक संघर्ष के माध्यम से उस पर प्रहार कर देता है, लेकिन यह पराजय स्थायी नहीं बल्कि केवल अस्थायी होती है। जैसे ही शैतान को मौका मिलता है, वह फिर से हमला करता है। जब तक नसों में खून घूम रहा है, तब तक शैतान के खिलाफ संघर्ष जारी रखना आवश्यक है। हृदय के "अभयारण्य शहर" के दरवाजे जीवन भर शैतान के लिए हमेशा खुले रहते हैं और वे कभी बंद नहीं होते हैं। ये वासनाओं, क्रोध, ईर्ष्या, लोभ और लोभ के द्वार हैं जिन्हें जल्द ही समझाया जाएगा। जब शहर के प्रवेश द्वार खुले होते हैं, और दुश्मन सतर्क होता है, तो शहर की रक्षा केवल [आध्यात्मिक] संघर्ष और सतर्कता के माध्यम से की जा सकती है। एक व्यक्ति ने हसन अल-बसरी (भगवान उस पर दया करे) से पूछा: "हे अबू सईद! क्या शैतान सोता है?" उसने जवाब दिया: "अगर वह सो जाता, तो क्या हमें शांति और आराम के कुछ पल नहीं मिलते?" यद्यपि एक विश्वासी सेवक शैतान से बच नहीं सकता है, फिर भी कोई उसे हरा सकता है और शैतान की शक्ति को कमजोर करके उसके खिलाफ अपना बचाव कर सकता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

ان المؤمن ينضى شيطانه كما ينضى احدكم بعيره فى سفره

"एक विश्वासी सेवक शैतान को क्षीण और कमजोर बनाता है क्योंकि आप अपनी यात्रा के माध्यम से अपने ऊंटों के साथ ऐसा करते हैं"। (यह कथन *हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद द्वारा* भविष्यद्वाणी के साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर बताया गया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

अब्दुल्लाह बिन मसूद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा कि एक आस्तिक का शैतान [जो जीवन भर किसी की छाया और साथ देता है] कमजोर है। कैस बिन अल-हज्जाज (एक महान ज्ञानवादी) ने कहा: "मेरे शैतान ने मुझसे कहा कि जब मैंने तुममें प्रवेश किया, तो मैं ऊंट के आकार और ताकतों की तरह था और अब मैं एक पक्षी की तरह हूं"। मैंने उससे इसका कारण पूछा। उसने उत्तर दिया, "तुम परमेश्वर की याद के द्वारा मेरे शरीर को पिघलाते रहो। किसी भी तरह, पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर (तकवा) के भय वाले लोगों के लिए, शैतान के दरवाजे बंद करना, उन पर सतर्कता से नजर रखना, दूसरे शब्दों में, बाहरी दरवाजों को बंद करना और उन स्पष्ट तरीकों को कम करना जो किसी को पाप और बुराई के लिए आमंत्रित करते हैं, मुश्किल नहीं है। हालाँकि, वे भी शैतान के जटिल तरीकों से धोखा खाते हैं और उसके

खिलाफ अपना बचाव करने में सक्षम नहीं होते हैं, जैसा कि विद्वानों (शैक्षिक धर्मशास्त्रियों) और प्रचारकों के बारे में उपरोक्त में समझाया गया है कि शैतान गुप्त रूप से उन्हें अच्छे [कर्मों] के द्वारों के माध्यम से बुराई की ओर ले जाता है।

चुनौती की विशालता यह है कि शैतान के लिए हृदय में प्रवेश करने के लिए कई दरवाजे हैं जबकि स्वर्गदूत के प्रवेश के लिए केवल एक ही द्वार है। यह दिव्य स्वर्गदूत द्वार [हृदय का] शैतान के असंख्य दरवाजों की उपस्थिति में संदिग्ध हो जाता है। इन दरवाजों (हृदय में प्रवेश द्वार) के संबंध में, एक मनुष्य एक यात्री की तरह होता है जो एक अंधेरी काली रात में जंगल से यात्रा करता है, जो एक निश्चित स्थान पर रुकता है जहां असंख्य कठिन और कठिन रास्ते उभरते हैं जो किसी को चौंकाने वाला होता है कि कौन सा रास्ता चुनना है जो किसी को आगे बढ़ने और गंतव्य तक पहुंचने में मदद करेगा। असंख्य और अस्पष्ट रास्तों में से सही मार्ग का चयन दो तरीकों से किया जा सकता है: पहला बुद्धि और अंतर्दृष्टि के साथ; सूरज की रोशनी के साथ दूसरा। इस मामले में, पवित्र विस्मय, ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भय, बुद्धि और अंतर्दृष्टि, [ईश्वरीय] पुस्तक और भविष्यद्वाणी के तरीके (सुन्नत) का ज्ञान सूर्य के प्रकाश के बराबर है। जिस तरह सूर्य का प्रकाश गंतव्य की ओर सही मार्ग खोजने में मदद करता है, उसी तरह, [ईश्वरीय] पुस्तक और भविष्यद्वाणी के मार्ग (सुन्नत) के ज्ञान का प्रकाश, व्यक्ति को मंजिल की ओर ले जाता है, अन्यथा शैतान के मार्ग [किसी को नीचता की ओर छोड़ना] असंख्य हैं और उनसे रक्षा करना बहुत कठिन है। अब्दुल्लाह इब्ने मसूद (रश्मा उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि एक बार पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) ने एक रेखा खींची और कहा: "यह ईश्वर का मार्ग है"। उसके बाद, उन्होंने उस [पहली] रेखा के दाएं और बाएं विभिन्न रेखाएं खींचीं और कहा: "ये भी रास्ते हैं लेकिन इनमें से हर एक में, एक शैतान मौजूद है जो लोगों को उस रास्ते पर चलने के लिए आमंत्रित करता है"। उसके बाद उन्होंने निम्नलिखित श्लोक सुनाए:

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَٰطِى مُسْتَقِيمًا فَٱتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا۟ ٱلسُّبُلَ

"और यह मेरा मार्ग है जो सीधा और दृढ़ है [किसी भी अपूर्णता से रहित है क्योंकि यह सीधे भगवान की ओर ले जाता है]। इसलिए, इस मार्ग पर चलो और दूसरे रास्तों पर मत चलो। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 153)

उन्होंने (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने विभिन्न रेखाओं को सीधे रास्ते (सीरत *अल-मुस्तकीम)* के चारों ओर खींचे गए पथ के रूप में कहा। इस भविष्यसूचक कथन से शैतानी रास्तों की प्रचुरता के बारे में कोई जानता है। इन रास्तों के बीच से, एक मार्ग है जिसकी ओर शैतान विद्वानों (शैक्षिक धर्मशास्त्रियों) को आमंत्रित करता है, धर्मपरायण, जिन्होंने निम्न स्व से इच्छाओं को नियंत्रित किया है, और जो पापों के जीवन से बचते हैं, उन्हें इसके माध्यम से धोखा देकर। अब इन रास्तों के बीच से एक रास्ता (धोखे का) उल्लेख किया जाएगा कि मनुष्य अनजाने और अगोचर रूप से चलना शुरू कर देता है। इस घटना का उल्लेख एक भविष्यद्वाणी कथन (हदीस) में किया गया है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने इज़राइल के बच्चों से एक भिक्षु (सभी सांसारिक इच्छाओं को नकारते हुए एकांत की स्थिति में ईश्वरीय पूजा करने वाला व्यक्ति) का उल्लेख किया, जिसके शहर में, शैतान ने एक लड़की का गला घोंट दिया और फिर उसके परिवार के सदस्यों के दिल में यह विचार डाल दिया कि उसका इलाज उस भिक्षु के पास है। वे उसे भिक्षु के पास ले आए, जिसने [उस स्थिति से निपटने के लिए] साफ इनकार कर दिया, लेकिन उन्होंने तब तक लगातार जोर दिया जब तक कि भिक्षु उसे ठीक करने के लिए मजबूर

नहीं हो गया। उसके बाद, शैतान ने भिक्षु के हृदय में व्यभिचार के विचारों को भड़काना शुरू कर दिया और उसे व्यभिचार के लिए तब तक उकसाया जब तक कि वह व्यभिचार नहीं कर लेता, और वह गर्भवती नहीं हो गई। शैतान ने तब बदनामी और अपमान का डर पैदा किया और [अपने अपराध के] रहस्य को छिपाने के लिए भिक्षु के दिल में उसकी हत्या का संकेत दिया और फिर वह किसी तरह उसके परिवार को उसकी प्राकृतिक मृत्यु का आश्वासन दे सकता था। उसने ठीक यही किया। शैतान ने तब भिक्षु के खिलाफ अपनी कार्रवाई जारी रखी और लड़की के परिवार के दिल में यह बात पैदा कर दी कि भिक्षु ने अपमान के डर से उसे गर्भवती करने के बाद उसे मार डाला। वे भिक्षु के पास आए और उससे उसके बारे में पूछताछ की। भिक्षु ने वही जवाब दिया जो शैतान ने उसके दिल में डाला था कि लड़की बीमार है, और उसकी बीमारी के कारण उसकी मृत्यु हो गई, लेकिन उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया और उसे गिरफ्तार करना चाहते थे। शैतान ने तब भिक्षु को बताया कि जो कुछ भी हुआ वह उसके अपने षड्यंत्र के कारण था क्योंकि वह वही था जिसने उसका गला घोंट दिया था, वह वही था जिसने उसके माता-पिता को उसे (भिक्षु) उसके पास भेजने के लिए राजी किया था, वह वही था जिसने उसे (भिक्षु) को व्यभिचार करने और उसे मारने के लिए उकसाया था और अब वह वह है जो उसे (भिक्षु) उस स्थिति से बाहर निकलने में मदद कर सकता है। भिक्षु ने उससे पूछा कि वह उसकी (शैतान) बात कैसे मान सकता है। शैतान ने उससे कहा कि वह उसके सामने दो बार दण्डवत करके स्थिति से बाहर निकल सकता है। भिक्षु ने फिर शैतान के सामने साष्टांग प्रणाम किया। फिर शैतान यह कहते हुए चला गया: "मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता; मैं आपके बारे में क्या जानता हूं?" परमेश्वर ने ऐसे लोगों के बारे में निम्नलिखित कहा है:

كَمَثَلِ ٱلشَّيْطَٰنِ إِذْ قَالَ لِلْإِنسَٰنِ ٱكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّى بَرِىٓءٌ مِّنكَ

"शैतान की उपमा यह है कि वह सबसे पहले मनुष्य को [ईश्वर में] अविश्वास करने के लिए कहता है। फिर जब कोई काफ़िर बन जाता है, तो शैतान कहता है, 'मुझे उस व्यक्ति (इंसान) से कोई लेना-देना नहीं है। (कुरान, अध्याय 59, श्लोक 16)

विचार करें कि कैसे शैतान ने अपने धोखे से भिक्षु को उसके आदेशों का पालन करके भारी पाप (*कबैर)* करने के लिए मजबूर किया। अगर उसने [शैतान की] सलाह [और अनुनय] को ठीक करने के लिए काम नहीं किया होता, तो उसने व्यभिचार नहीं किया होता और फिर हत्या नहीं की होती। जाहिरा तौर पर, इलाज की सलाह अच्छी थी और कोई भी कल्पना नहीं कर सकता था कि इसके भीतर बुराई अंतर्निहित होगी। फिर भी, शैतान की रणनीति अच्छे और नेक प्रयासों के मार्ग के माध्यम से बुराई को खोजने की है और एक बार जब वह एक को बुराई के मार्ग पर ले जाता है, तो वह एक बुराई से दूसरी बुराई की ओर तब तक खींचता है जब तक कि उद्धार के सभी मार्ग बंद नहीं हो जाते, और मनुष्य को ऐसा करने की इच्छा किए बिना भी बुराई के मार्ग पर चलते रहने के लिए मजबूर किया जाता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अर्थ उनकी निम्नलिखित कहावत में भी यही है:

من حام حول الحمى يوشك ان يقع فيه

"जो चराई (चारागाह) भूमि के चारों ओर घूमता है, उसके [अनजाने में] इसमें प्रवेश करने का खतरा होता है [इसलिए, इसमें गिरने की संभावना से बचने के लिए बुराई के करीब जाने से बचना आवश्यक है]। (यह

कथन *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम द्वारा* भविष्यवक्ता साथी नौमान बिन बशीर के अधिकार पर रिपोर्ट किया गया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

दिलों में शैतान का प्रवेश

हृदय एक किले की तरह है और शैतान एक शत्रु की तरह है जो उस पर कब्जा करने और उसे अपना अधिकार बनाने के लिए उसमें प्रवेश करना चाहता है। किले को दुश्मन से बचाने का केवल एक ही तरीका है जो किले में प्रवेश को संभव बनाने वाले प्रवेश द्वारों और रास्तों की रक्षा करना है। जिसे इन प्रवेश द्वारों के बारे में पता भी नहीं है, ऐसा व्यक्ति उनकी रक्षा कैसे कर सकता है और दुश्मन को उनके माध्यम से प्रवेश करने से कैसे रोक सकता है? इसलिए इससे यह पता चला है कि शैतान से हृदय की रक्षा करना अनिवार्य है, बल्कि यह प्रत्येक समझदार और वयस्क व्यक्ति पर व्यक्तिगत रूप से अनिवार्य (*फर्द ऐन*) है, और जो कुछ भी व्यक्तिगत रूप से अनिवार्य है, वह भी अनिवार्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शैतान को उसके प्रवेश के मार्गों को जाने बिना [हृदय में] प्रवेश करने से नहीं रोका जा सकता है। इसीलिए, इन रास्तों को जानना भी आवश्यक है। ये प्रवेश द्वार और मार्ग बाहरी इंद्रियों के माध्यम से नहीं देखे जा सकते हैं, बल्कि वे आंतरिक चरित्र लक्षण या व्यक्तियों के गुण हैं। शैतान [हृदयों में] प्रवेश के लिए अपने साधन के रूप में इन्हीं लक्षणों का उपयोग करता है। ये लक्षण संख्या में बड़े हैं और इसलिए केवल कुछ प्रवेश द्वारों का उल्लेख इस प्रकार किया जाएगा जहाँ शैतान के सैनिकों की बड़ी सभाएँ हैं:

क्रोध और वासना: बुद्धि हृदय के दो बड़े प्रवेश द्वारों अर्थात् क्रोध और वासना के माध्यम से नष्ट हो जाती है। शैतान की सेना [दिल] पर हमला करती है जब बुद्धि की सेना कमजोर हो जाती है। जब मनुष्य क्रोध का शिकार होता है, तो शैतान एक के साथ खेलता है जैसे एक बच्चा गेंद से खेलता है। एक परंपरा के अनुसार, शैतान ने पैगंबर मूसा (जिसे मूसा [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद के रूप में भी जाना जाता है] के नाम से भी जाना जाता है) से मुलाकात की और कहा: "ऐ मूसा! परमेश्वर ने आपको भविष्यद्वाणी के पद पर नियुक्त किया है और आपको उससे बात करने का सम्मान दिया है। मैं भी ईश्वर की रचना हूँ। मैंने पाप किया है [परमेश्वर की अवज्ञा करने का जब उसने शैतान को आदम के सामने दण्डवत् करने की आज्ञा दी (उस पर शांति हो)] और पश्चाताप करना चाहता हूं। कृपया मेरी ओर से परमेश्वर से विनती करें कि मैं मेरा पश्चाताप स्वीकार कर सकूँ। मूसा (उस पर शांति हो) ने उसके (शैतान) के लिए मध्यस्थता करने का वादा किया। तब मूसा सीनै पर्वत पर गया और परमेश्वर से बात की। इसके बाद जब वह [पहाड़ से] उतर रहा था, तो परमेश्वर ने उससे कहा: "ऐ मूसा! विश्वास लौटाओ!" मूसा ने कहा, "हे परमेश्वर! आपका सेवक इबलीस (शैतान) अपने किए गए पाप पर पछतावा कर रहा है और पश्चाताप कर रहा है। कृपया उनके पश्चाताप को स्वीकार करें। मूसा के पास एक दिव्य रहस्योद्घाटन आया (परमेश्वर की शांति उस पर हो): "ऐ मूसा! आपकी दलील स्वीकार कर ली गई है! इबलीस (शैतान) को आदम की कब्र के सामने दण्डवत् करने के लिए कहो (उस पर शांति हो) ताकि वह अपना खेद व्यक्त कर सके [उसके पश्चाताप की सच्चाई के प्रतीक के रूप में उसके द्वारा किए गए पाप के लिए]"। मूसा (परमेश्वर की शांति उस पर हो) ने शैतान को यह ईश्वरीय आज्ञा दी। शैतान क्रोध से जल उठा [यह सुनकर] और सरासर अहंकार से कहा: "जब आदम जीवित था तो मैं उसके सामने दण्डवत् नहीं करता था, क्या अब जब वह मर जाएगा तो क्या मैं

उसके सामने दण्डवत् करूंगा? हालाँकि, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मेरी ओर से परमेश्वर से विनती की और उस [अनुग्रह] के कारण, अब आपका मुझ पर अधिकार है। उस अधिकार को पूरा करने के लिए, मैं तुमसे कहता हूं कि यदि आप मुझे तीन अवसरों पर याद करते हैं, तो मैं आपको नुकसान नहीं पहुंचा पाऊंगा: पहला, क्रोध के समय क्योंकि मेरी आत्मा आपकी आत्मा में है और मेरी आंख आपकी आंखों के भीतर है। मैं शरीर की हर नस में खून की तरह घूमता हूं, इसलिए क्रोध के समय मुझ पर ध्यान जरूर दें। जब मनुष्य को क्रोध होता है, तो मैं उसकी नाक में फूंक मारता हूं तो वह इस बात की जानकारी खो देता है कि वह क्या कर रहा है। दूसरे, युद्ध के समय क्योंकि जब मनुष्य युद्ध के मोर्चे पर किसी दुश्मन से लड़ना चाहता है, तो मैं अपने घर, पत्नी और बच्चों की याद दिलाता हूं ताकि वह युद्ध में लड़ने का विचार छोड़ दे और उससे दूर भाग जाए। तीसरा, कभी भी एक गैर-महेरेम महिला के साथ अकेले न बैठें (जो संभावित रूप से उसके लिए विवाह योग्य है क्योंकि वह मां, सास, दादी, बेटी, पोती, बहन, भतीजी या चाची के निषिद्ध संबंधों में से नहीं है)। मैं पुरुष और स्त्री के दिलों के बीच में एक संदेशवाहक बन जाता हूं और हर एक के दिल में दूसरे के बारे में बात करता हूं। मैं ऐसा तब तक करना जारी रखता हूं जब तक कि वे दोनों पाप के क्लेश (*फितना*) में शामिल नहीं हो जाते।

लालच और ईर्ष्या: शैतान ने तीन अवसरों के माध्यम से तीन आंतरिक गुणों की ओर इशारा किया, अर्थात् क्रोध, वासना और लालच। ऐसा इसलिए है क्योंकि युद्ध से बचना सांसारिक संपत्ति और धन के लालच के कारण है, मृतक आदम (परमेश्वर की शांति उस पर हो) को दंडवत न करना ईर्ष्या के कारण है जो शैतान के लिए एक बड़ा प्रवेश द्वार भी है। एक संत (ज्ञानवादी) ने शैतान से मनुष्यों पर अपना प्रभुत्व दिखाने के लिए कहा। उन्होंने कहा, "मैं मनुष्यों को क्रोध और वासना की स्थिति में फंसा देता हूं और उन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करता हूं। शैतान एक भिक्षु के सामने आया जिसने उससे पूछा: "आदम (मनुष्यों) की संतानों के कौन से गुण आपके लिए अधिक सहायक हैं?" उन्होंने जवाब दिया: "क्रोध की तीव्रता। इसलिए, जब मनुष्य क्रोध की तीव्रता के कारण उत्तेजित होता है, तो मैं मुड़ता हूं और एक बच्चे को अपने पैर से गेंद को लात मारता है। यह शैतान की भी एक कहावत है: "आदम (मनुष्यों) की संतान मुझ पर नियंत्रण कैसे कर सकते हैं जैसे कि जब कोई खुश होता है, तो मैं उसके दिल में रहता हूं और जब कोई क्रोधित होता है, तो मैं उसके सिर में उड़ जाता हूं"। लालच या लोभ भी शैतान का एक बड़ा प्रवेश द्वार है क्योंकि यह व्यक्ति को अंधा और बहरा बना देता है। उसके बाद, कोई भी अच्छी सलाह नहीं सुन सकता है और न ही अच्छाई का मार्ग देख सकता है। एक भविष्यसूचक कथन कहता है:

حبك الشيء يعمي ويصم

"किसी चीज़ के साथ आपका प्यार आपको अंधा और बहरा बना देता है। (यह कथन किसके द्वारा रिपोर्ट किया गया है? *हदीस* संग्रह *अबू दाऊद* भविष्यवक्ता साथी अबू अल-दर्दा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])।

केवल अंतर्दृष्टि के प्रकाश के माध्यम से, मनुष्य शैतान के प्रवेश द्वारों के बारे में जागरूक हो सकता है। जब लालच और लोभ का अंधकार अंतर्दृष्टि के प्रकाश को अपने अधीन कर लेता है, तो शैतान उस अवसर का पूरा लाभ उठाता है और हर उस चीज के लिए इच्छा और लालच को उसके दिल में डाल देता है जो उसके लिए हानिकारक और घातक है। एक परंपरा के अनुसार, जब बड़े पैमाने पर बाढ़ आई, तो पैगंबर नूह (जिसे नूह (ईश्वर की शांति के रूप में भी जाना जाता है) अपने राष्ट्र के सभी विश्वासियों और जानवरों

की हर जोड़ी के साथ अपने जहाज पर सवार हुए। उसने जहाज में एक बूढ़े आदमी को बैठे देखा जो एक अजनबी था। उसने उससे पूछा कि वह कौन है। उसने कहा: "मैं तेरे साथियों का दिल छीनने आया हूँ। उनके शरीर तेरे साथ रहेंगे, परन्तु उनका हृदय मेरे साथ रहेगा। पैगंबर नूह (ईश्वर की शांति उस पर हो) ने कहा: "ऐ ईश्वर के शत्रु! यहाँ से बाहर चले जाओ! यहां आपके लिए कोई जगह नहीं है। उसने उत्तर दिया, "पाँच चीज़ें हैं जिनके द्वारा मैं लोगों को नष्ट करता हूँ। मैं तुम्हें तीन बताऊंगा लेकिन दो नहीं बताऊंगा। एक दिव्य रहस्योद्घाटन आया [पैगंबर नूह (ईश्वर की शांति उस पर हो)]: "ऐ नूह! आपको उन तीन चीजों की कोई आवश्यकता नहीं है जो वह आपको बताना चाहता है। उससे पता करें कि वह आपसे क्या छुपा रहा है। पैगंबर नूह (ईश्वर की शांति उन पर हो) ने उनसे दो चीजों के बारे में पूछा। उसने उत्तर दिया: "लालच और ईर्ष्या। ये दो चीजें मुझे कभी धोखा नहीं देंगी और लोगों को नष्ट करने में कभी असफल नहीं होंगी। यह वह ईर्ष्या है जिसके कारण मुझे शापित किया गया है [ईश्वरीय दया से हटा दिया जा रहा है] और 'शैतान, शापित' की उपाधि दी गई है और यह लालच है, क्योंकि आदम के लिए स्वर्ग में सब कुछ उसके लिए अनुमेय बनाया गया था, सिवाय एक पेड़ को छोड़कर और मैंने उसकी इच्छा उसके दिल में डाल दी, जिसने उसे वहां से बाहर निकाल दिया।

तृप्ति: भरपेट भोजन करना, भले ही यह अनुमेय (*हलाल*) और शुद्ध हो, वासनाओं और वासनाओं पर इसके ऊर्जावान और कायाकल्प प्रभाव के कारण शैतान के लिए [हृदय में] एक बड़ा प्रवेश द्वार है। एक परंपरा के अनुसार, शैतान पैगंबर जकर्याह के बेटे पैगंबर जॉन के सामने प्रकट हुआ (जिसे जकारिया के पुत्र याह्या के रूप में भी जाना जाता है [उन दोनों पर शांति और ईश्वर का आशीर्वाद हो]) और उसके पास फंसाव था [रस्सियों से बना]। पैगंबर जॉन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) ने उनसे पूछा: "ये जाल किस लिए हैं?" उसने उत्तर दिया: "ये वासना और व्यभिचार के जाल हैं। मैं इनके साथ आदम (मनुष्यों) के बच्चों को पकड़ता हूं। उसने पूछा: "क्या मेरे लिए भी कोई फंसाव है?" उन्होंने जवाब दिया: "हाँ। जब आप भरपेट खाते हैं, तो मैं आपसे प्रार्थना करना कठिन बना देता हूं। उसने पूछा: "क्या मेरे लिए कुछ और है? उन्होंने जवाब दिया: "इसके अलावा और कुछ नहीं"। उन्होंने कहा, "मैं भगवान की कसम खाता हूं, मैं आज के बाद पेट भर खाना नहीं खाऊंगा। शैतान ने जवाब दिया: "मैं यह भी कसम खाता हूं कि मैं कभी भी एक मुसलमान [आप जैसा] को कोई भी फायदेमंद बात नहीं बताऊंगा (यानी, जो पूर्ण रूप से ईश्वर में विश्वास करता है और ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण की स्थिति में ईश्वर की सेवा करता है)। ऐसा कहा जाता है कि पेट भर खाने के छह नुकसान होते हैं: पहला, परमेश्वर का भय हृदय में नहीं रहता; दूसरा, कोई साथी मनुष्यों और ईश्वर की रचनाओं पर करुणा महसूस नहीं करता है क्योंकि वह दूसरों को स्वयं के रूप में सोचता है (एक की तरह तृप्त) और भूख की पीड़ा को महसूस नहीं करता है; तीसरा, व्यक्ति को लगता है कि आराधना बोझिल है; चौथा, जब कोई ज्ञान के किसी भी वचन को सुनता है, तो उसका हृदय विनम्रता में पिघलता नहीं है और सुनने और स्वीकार करने में सक्षम नहीं हो जाता है; पांचवां, जब कोई ज्ञान और सलाह की बातें कहता है, तो उसका दूसरों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है; छठा, इससे विभिन्न [शारीरिक और आध्यात्मिक] रोग पैदा होते हैं।

धूमधाम और चमक: धूमधाम पाना, चमक-दमक, विशिष्ट उपभोग और धन का प्रदर्शन करना, आकर्षक बनाना भी शैतान के लिए एक प्रवेश द्वार है। यह प्रदर्शन, धूमधाम और चमक ड्रेसिंग, भौतिक संपत्ति और निवास में होती है। जब शैतान मनुष्य के हृदय में धूमधाम और चमक प्रदर्शित करने की इच्छा को देखता है, तो वह उसे और भड़काता है और बड़ी इमारतों का सपना दिखाता है और उसे विश्वास

दिलाता है कि उसके घर के चारों ओर की दीवारें ऊँची होनी चाहिए, घर चकाचौंध और अच्छी तरह से सजाया जाना चाहिए, कपड़े सुंदर होने चाहिए और सवारी या वाहन महंगा और सजाया जाना चाहिए। जब ऐसी इच्छाएँ हृदय में पूरी तरह से बैठ जाती हैं, तो शैतान जानता है कि ये इच्छाएँ कभी भी हृदय से अलग नहीं होंगी और एक इच्छा दूसरी इच्छा को जन्म देगी और एक चीज़ को प्राप्त करने से दूसरी चीज़ को प्राप्त करने की चिंता तब तक उत्पन्न होगी जब तक कि मृत्यु न आ जाए और किसी को संसार को छोड़ने के लिए सब कुछ पीछे छोड़ना पड़े। शैतान का निचले स्व से इच्छाओं का तरीका भी किसी के विश्वास के लिए खतरनाक है। कभी-कभी, इच्छाओं की लौ अपने उपासक को अविश्वास ("*कुफ्र"* या ईश्वर की अस्वीकृति) के मार्ग पर चलने के लिए मजबूर करती है। भगवान हमें निचले स्व की इच्छाओं से बचाएं!

लोगों से लालच और अपेक्षाएँ: दूसरों से लालच और अपेक्षाएँ भी शैतान के लिए [हृदय में] एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार है। जब लालच [और दूसरों से अपेक्षाएं] दिल पर हावी हो जाती हैं, तो शैतान लगातार किसी को उनके सामने कृत्रिमता, आडंबर और दिखावा करने के लिए राजी करता है, जिससे उसकी उम्मीदें और लालच होता है। यह इस हद तक जाता है कि जिसके साथ कोई उम्मीदें रखता है, वह अपना भगवान बन जाता है और उम्मीदों को पालने वाला, हमेशा उस व्यक्ति के दिल में जगह बनाने का प्रयास करता है जिससे वह चाहता है, भले ही वह झूठ, धोखे, दिखावे और अनुनय के माध्यम से हो। इसका सबसे निचला स्तर यह है कि कोई व्यक्ति जिसकी वह अपेक्षा कर रहा है उसकी प्रशंसा करने में अतिशयोक्ति करता है और किसी को ठेस न पहुँचाने के कारण किसी को अच्छाई के लिए प्रोत्साहित करने और बुराई से रोकने का काम करने में अनिच्छुक होता है। एक बार शैतान अब्दुल्लाह इब्ने हनजाला (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) के सामने आया और कहा: "हे हंजला के पुत्र! मैं आपको सलाह देने जा रहा हूं इसलिए इसे याद रखें। अब्दुल्लाह इब्न हनजाला ने कहा: "मुझे आपसे सलाह की कोई आवश्यकता नहीं है"। शैतान ने कहा: "पहले इसे सुनो, अगर यह अच्छा है तो इसे स्वीकार करो, अगर यह बुरा है तो इसे अस्वीकार करो। हे हनजाला के पुत्र! भगवान के अलावा, कभी भी किसी से ऐसा प्रश्न न पूछें जिसमें लालच और लालच निहित हो। इसके अलावा, गुस्से में अपने आप को नियंत्रित करें क्योंकि जब कोई नौकर खुद पर नियंत्रण खो देता है, तो मैं एक पर नियंत्रण करने में सक्षम होता हूं।

जल्दबाजी और दृढ़ता की कमी: ये दो गुण या चरित्र लक्षण भी शैतान के लिए प्रवेश बिंदु हैं। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

العجلة من الشيطان والاناة من الله

"जल्दबाजी (या सावधानीपूर्वक विचार-विमर्श के बिना कुछ करने के लिए जल्दबाजी करना) शैतान से है और जानबूझकर रुकना भगवान की ओर से है। (यह कथन किसके द्वारा रिपोर्ट किया गया है? *हदीस* संग्रह *तिर्मिजी* भविष्यद्वाणी के साथी सहल बिन साद के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])।

भगवान कहते हैं:

خُلِقَ ٱلْإِنسَٰنُ مِنْ عَجَلٍ

"मनुष्य को जल्दबाजी में बनाया गया है। (कुरान, अध्याय 21, श्लोक 37)

وَكَانَ ٱلْإِنسَـٰنُ عَجُولًا

"मनुष्य में जल्दबाजी करने की प्रवृत्ति होती है। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 11)

ईश्वर ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद को उन पर हो) को आदेश दिया:

وَلَا تَعْجَلْ بِٱلْقُرْءَانِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰٓ إِلَيْكَ وَحْيُهُۥ

"आपके पास आने वाले ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के पूरा होने से पहले कुरान [पढ़ने] में जल्दबाजी न करें। (कुरान, अध्याय 20, श्लोक 114)

जल्दबाजी से ईश्वरीय निषेध का कारण यह है कि सब कुछ ज्ञान, अनुसंधान और जांच के साथ किया जाना चाहिए, और जांच के लिए, विराम और विचार-विमर्श की आवश्यकता होती है, जबकि जल्दबाजी विराम और जांच की अनुमति नहीं देती है। जल्दबाजी के समय, शैतान मनुष्यों पर अपनी बुराई इस तरह से थोपता है कि वे इसे समझ भी नहीं पाते। एक परंपरा के अनुसार, जब यीशु (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का जन्म हुआ, तो सभी शैतान (*शायतीन*) अपने नेता इबलीस के पास गए और उनसे कहा: "आज पृथ्वी के चेहरे पर सभी मूर्तियों को गिरे हुए देखा गया था"। इब्लिस ने कहा: "निश्चित रूप से कुछ नया हुआ है। मैं देखने के लिए पृथ्वी पर जा रहा हूं। इबलीस पृथ्वी के चारों ओर घूमता रहा लेकिन कुछ भी नहीं देखा। एक जगह उसने कुछ स्वर्गदूतों को एक नवजात शिशु को घेरते हुए देखा। इबलीस अपने राष्ट्र [शैतानों के] पास गया और उनसे कहा: "आज रात एक भविष्यद्वक्ता का जन्म हुआ। दुनिया में आज तक जितनी भी गर्भधारण हुई है, मुझे उनके बारे में पता चला है और जन्म मेरी उपस्थिति में हुआ है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि मुझे इस महिला की गर्भावस्था के बारे में पता नहीं था और न ही मुझे जन्म के बारे में पता था। अब मूर्ति पूजा से निराश हो जाओ। हालाँकि, ईश्वर के सेवकों (मनुष्यों) को उनकी जल्दबाजी के क्षणों में प्रेरित करें [और आप उन पर अपना रास्ता बना लेंगे]"।

धन और भौतिक संपत्ति: *दिरहम* और *दीनार* (सोने और चांदी की मुद्राएं), भौतिक संपत्ति, संपत्ति और स्वामित्व वाली भूमि के टुकड़े शैतान के लिए [मानव हृदय में] सभी बड़े प्रवेश द्वार हैं। आवश्यकता से अधिक भौतिक संपत्ति रखने वाले व्यक्ति का हृदय, शैतान का निवास स्थान है और केवल आवश्यक सामग्री के मालिक के पास एक स्वतंत्र हृदय है। यदि व्यक्ति को सौ दीनार मिल जाएं तो हृदय में तरह-तरह की इच्छाएं पैदा हो जाती हैं। इनमें से सबसे बड़ा सौ और प्राप्त करना है और यह एक कभी न खत्म होने वाला चक्र है। जब किसी के पास कुछ नहीं था, तो कोई इच्छा नहीं थी, कोई लालच नहीं था, और कोई आवश्यकता नहीं थी। जब एक को सौ दीनार मिलते हैं, तो वह खुद को अमीर समझने लगता है, भले ही वह नौ सौ से अधिक की जरूरतमंद हो जाता है। सौ *दीनार* मिलने से यह विचार आया कि अगर किसी के पास नौ सौ और होते, तो वह एक घर खरीदता। घर के बाद, घरेलू सामान सतहों को प्राप्त करने की आवश्यकता के बाद ड्रेसिंग और आराम से रहने के मुद्दे आते हैं और जरूरतों की यह श्रृंखला लगातार बढ़ रही है। जो चीजें मौजूद हैं, उनके लिए जो चीजें मौजूद नहीं हैं, वे आवश्यक हो जाती हैं। किसी की चिंता खत्म होने से पहले ही दूसरी चिंता शुरू हो जाती है और यह जरूरतों की श्रृंखला नरक में समाप्त हो जाती है। थाबित अल-बनानी (भगवान उन पर दया करें - एक प्रसिद्ध ज्ञानवादी और संत) ने कहा: "जब पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को पैगंबर की उपाधि दी गई थी [उनकी

चालीस वर्ष की आयु में], इब्लिस (शैतानों के नेता) ने अपने समूह से कहा: 'आज एक नई घटना हुई है। जाओ और देखो क्या हुआ। सभी शैतान पृथ्वी के चारों ओर फैल गए लेकिन कुछ भी नहीं मिला और असफल लौट आए। इबलीस ने उनसे कहा, "यहीं रहो! मैं जाकर देखूंगा'। वह वापस आया और अपने शिष्यों से कहा: 'भगवान ने मुहम्मद को पैगंबर बनाया है। अब उसके मित्रों और साथियों के पीछे जाओ [उन्हें ईश्वरीय मार्गदर्शन से दूर करने के लिए]'। शैतान धरती की ओर मुड़े और असफल होकर लौटे और कहा: 'हमने आज तक ऐसे लोगों को कभी नहीं देखा। जब हम उन्हें कोई गलती करने के लिए प्रेरित करते हैं, तो वे प्रार्थना के लिए उठते हैं और इससे उनकी गलतियों के लिए [दिव्य] क्षमा मिलती है। इब्लिस ने कहा: 'रुको और धैर्य रखो। जल्द ही वे दुनिया पर हावी हो जाएंगे तो हम निश्चित रूप से अपनी योजना बनाने में सफल होंगे।

एक परंपरा है कि एक बार यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) एक चट्टान पर अपना सिर रखकर [जमीन पर] लेटा हुआ था [इसे तकिए के रूप में उपयोग कर रहा था जो उसकी गरीबी और विनम्रता की स्थिति को दर्शाता है]। शैतान वहाँ से गुजरा और चुटकी लेते हुए बोला: "ऐ यीशु! क्या आपका भी झुकाव दुनिया की ओर है?" यीशु ने अपने सिर के नीचे से चट्टान उठाई और शैतान पर फेंक दिया और कहा: "यह पत्थर और इस दुनिया की बाकी सब कुछ केवल आपके लिए है"। इससे निष्कर्ष यह निकाला जाता है कि एक पत्थर भी दुनिया से एक भौतिक संपत्ति है और शैतान अभी भी एक पत्थर के साथ अपना कार्य [मानवजाति को गलत रास्तों पर गुमराह करने का] कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति सुबह के शुरुआती घंटों में *तहज्जुद* की नमाज़ के लिए उठता है (भोर से पहले की नमाज़ जो आध्यात्मिक उन्नति के लिए अत्यंत पुण्य और सहायक होती है और रात के तीसरे भाग में की जाती है जब सूर्यास्त और भोर के बीच रात का समय तीन भागों में विभाजित होता है) और प्रार्थना में साष्टांग प्रणाम के स्थान के पास एक पत्थर पाता है । इस स्थिति में, शैतान निश्चित रूप से किसी के दिल में यह विचार डालेगा कि वह पत्थर पर अपना सिर थोड़ा टिकाकर लेट जाए। यह लेटना नींद का अग्रदूत होगा जो बदले में किसी को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने से रोकेगा । अगर पत्थर नहीं होता तो किसी ने तकिया रखने के बारे में नहीं सोचा होता, लेटने की जरूरत नहीं पड़ती, जिससे नींद आती और *तहज्जुद* की नमाज से वंचित रह जाता। [जैसा कि उपरोक्त में देखा गया है,] इस एक पत्थर से भी इतना नुकसान हुआ था, फिर लोगों की स्थिति पर एक नज़र डाली, अपने लिए सबक प्राप्त करने की दृष्टि से, जिनके पास रेशम से बने आरामदायक बिस्तर और तकिए हैं और उनके घरों में आराम की तलाश करने वाले सभी सामान हैं। क्या ऐसा व्यक्ति ईश्वरीय उपासना का स्वाद भी ले सकता है? किसी के दिल में हमेशा आराम की इच्छा बनी रहेगी।

गरीबी और कंजूसी का डर: ये दो नीच और नकारात्मक गुण भी शैतान के लिए [मानव हृदय में] दो बड़े प्रवेश द्वार हैं। कंजूसी और गरीबी का भय दो ऐसे नकारात्मक विनाशकारी [आंतरिक] लक्षण हैं जो किसी को ईश्वर के मार्ग में [धर्मार्थ कार्यों में] खर्च करने से रोकते हैं और किसी को अपनी संपत्ति को जमा करने और पकड़ने के लिए राजी करते हैं। कुरान ऐसे लोगों को दर्दनाक परिणामों की भविष्यवाणी करता है:

وَٱلَّذِينَ يَكْنِزُونَ ٱلذَّهَبَ وَٱلْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

"जो लोग सोने और चांदी की जमाखोरी करते हैं और उन्हें ईश्वर के मार्ग में खर्च नहीं करते हैं (मानव

समाज की आर्थिक भलाई को बढ़ावा देने वाले मानवता के लिए धर्मार्थ कारणों और लाभकारी प्रयासों पर), उन्हें एक दर्दनाक ताड़ना की खबर देते हैं। (कुरान, अध्याय 9, श्लोक 34)

खैथामा बिन अब्दुर रहमान (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - एक महान भविष्यद्वाणी साथी) ने कहा कि शैतान का दावा है: "मनुष्य मुझ पर कितना भी हावी क्यों न हो, तीन चीजें ऐसी हैं जो उन मामलों पर मुझ पर कभी हावी नहीं हो सकतीं। सबसे पहले, किसी की संपत्ति को अनुचित रूप से लेना; दूसरे, उचित अवसर और आवश्यकता के बिना खर्च करना; तीसरा, जहां खर्च करने की आवश्यकता है, वहां खर्च नहीं करना। सुफियान अल-थवरी (भगवान उस पर दया करे - एक महान संत और ज्ञानवादी) ने कहा: "शैतान के पास गरीबी के डर से अधिक प्रभावी रणनीति नहीं है। जब व्यक्ति गरीबी से डरने लगता है, तो उसमें झूठ और गलत की ओर झुकाव पैदा होता है। व्यक्ति सत्य से दूर रहता है, निचले स्व से इच्छाओं को प्राथमिकता देता है और अपने भगवान के बारे में कम राय रखने का दोषी होता है। कंजूसी लालच को जन्म देती है और लालच मनुष्य के पैरों में एक जंजीर बन जाता है जो किसी को बाजारों और वस्तुओं की कमाई के स्थानों से बाहर नहीं निकलने देता। ये बाज़ार शैतान के घोंसले और विश्राम स्थल हैं [क्योंकि किसी में भौतिकवादी होने की प्रवृत्ति होती है और किसी भी आध्यात्मिक विचारों और उसमें महान और निस्वार्थ उपक्रमों से बेखबर होता है]"। अबू उमामा (भगवान उनसे प्रसन्न हों - एक भविष्यद्वक्ता साथी) ने कहा: "जब इबलीस (शैतानों का नेता) दुनिया में आया, तो उसने भगवान से विनती की: 'हे भगवान! तूने मुझे अपनी दया से दूर कर दिया है और मुझे इस धरती पर फेंक दिया है। कृपया मेरे लिए यहां एक घर बनाएं। भगवान ने कहा: 'बाथरूम आपका घर है। उन्होंने पूछा: 'मेरे लिए कंपनी रखने के लिए एक जगह नियुक्त करें'। परमेश्वर ने कहा: "बाज़ार और सड़कें तुम्हारी संगत के स्थान हैं। उन्होंने पूछा: 'मेरे लिए भोजन और भोजन नियुक्त करें'। परमेश्वर ने उत्तर दिया, "वह भोजन तुम्हारा भरण-पोषण है, जिस पर मेरा नाम [इसे खाने वाले लोगों द्वारा] नहीं लिया गया है। उन्होंने कहा: 'भोजन नियुक्त किया गया है; क्या मुझे भी पानी मिल सकता है?' भगवान ने उत्तर दिया: "नशे और नशीले पदार्थ तुम्हारे पेय हैं। उन्होंने पूछा: 'कृपया मुझे एक आमंत्रित व्यक्ति प्रदान करें'। परमेश्वर ने आज्ञा दी: 'संगीत वाद्ययंत्रों से [अपने इस उद्देश्य को] पूरा करो'। उन्होंने पूछा: 'पढ़ने और लिखने के बारे में आपका क्या आदेश है'। भगवान ने उत्तर दिया: 'कविता पढ़ो [जो अच्छे को आमंत्रित नहीं करता है] और शरीर पर टैटू गुदवाओ'। उन्होंने पूछा: 'मुझे एक कथा प्रदान करें'। परमेश्वर ने उत्तर दिया: 'झूठ तुम्हारी कथा है'। उसने पूछा: 'मुझे शिकार के लिए जाल (फंसाएं) प्रदान करें'। भगवान ने उत्तर दिया: 'विपरीत लिंग के पीछे वासना करना शुद्ध है [यानी, अगर अनैतिक और अनैतिक तरीकों से पीछा किया जाता है]'"।

धार्मिक कट्टरता: जिसे यहां धार्मिक कट्टरता के रूप में संदर्भित किया जा रहा है, वह एक दूसरे के खिलाफ विचारों के विभिन्न स्कूलों [और धर्मों] के लोगों का अहंकार और पूर्वाग्रह है। इसका आधार सत्य नहीं बल्कि निचले स्व से इच्छाएं हैं। लोग अपने विरोधियों से नफरत करते हैं [धार्मिक और वैचारिक मतभेदों के मामलों में] और उन्हें हेय दृष्टि से देखते हैं। यह एक ऐसी बुराई है जो हर उपासक (या धार्मिक व्यक्ति) और पापी को समान रूप से नष्ट कर देती है। लोगों की आलोचना करना और उनके साथ दोष ढूंढना पशुवत गुणों के एक मेजबान के बीच से एक पशु गुणवत्ता का अंतर्गत आता है। जब शैतान इस निंदनीय विशेषता को किसी अच्छी चीज़ के रूप में प्रस्तुत करता है, तो मानवीय स्वभाव जो पहले से ही इसके करीब हैं, इसे अपनाता है और वह इसमें पूरी तरह से संलग्न हो जाता है और इस विचार से खुश महसूस करता है कि वह एक धार्मिक संघर्ष में शामिल है [और इसलिए इसे एक ईश्वरीय चीज़ के रूप में

सोचता है], भले ही कोई शैतान की आज्ञा का पालन कर रहा हो। धार्मिक और सांप्रदायिक मतभेदों की स्थिति ऐसी है कि [उदाहरण के लिए] एक व्यक्ति ने अबू बक्र के लिए अपने प्यार में कट्टरता को अपनाया है (भगवान उससे प्रसन्न हों - एक महान भविष्यद्वाणी साथी) लेकिन यह प्रेम शुद्ध नहीं है, इसके बजाय यह मिलावटी है और *हरम* (निषिद्ध चीजें), झूठ, दुश्मनी और कटु कलह [जो उथल-पुथल की ओर ले जाता है] के साथ मिश्रित है। यदि अबू बक्र (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) ऐसे व्यक्ति को [आज] देखता है, तो वह अपने मित्र के बजाय किसी को अपना शत्रु घोषित कर देगा। ऐसा इसलिए है, क्योंकि उसका (अबू बकर का) दोस्त वह है जो उसके रास्ते पर चलता है और उसके महान गुणों और चरित्र को अपनाता है और किसी की जीभ को बेकार की बातों से रोकता है [जैसा कि वह करता था]। अबू बकर का तरीका ऐसा था कि वह खुद को बेकार की बातें कहने से रोकने के लिए अपने मुंह में कंकड़ डाल देता था। यह व्यक्ति जो बेकार और अनावश्यक बातें कहता है [जो अबू बक्र से प्यार करने का दावा करता है], उसे अबू बक्र (भगवान उससे प्रसन्न हो) के लिए अपने प्यार और दोस्ती का दावा करने का क्या अधिकार है? [लोगों के धर्मों के आधार पर संघर्ष, झगड़े और घृणा को इस तरह समझा जा सकता है]

एक दूसरे व्यक्ति ने अली के लिए अपने प्यार में अतिशयोक्ति की सभी सीमाओं को पार कर लिया है (भगवान उससे प्रसन्न हों - एक महान भविष्यसूचक साथी) भले ही कोई उसके (अली) कार्यों और महान चरित्र के थोड़ा भी करीब न हो। अली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने *अपने शासन के शासनकाल (खिलाफा)* के दौरान एक *दिरहम* से भी कम के लिए एक पोशाक पहनी थी, जबकि उसके प्यार का झूठा दावेदार रेशमी कपड़े पहने हुए घूम रहा है (जो धार्मिक संहिता के अनुसार पुरुषों के लिए निषिद्ध हैं) जो बदले में निषिद्ध (हराम) पैसे से बने होते हैं। न्याय के दिन, अली (भगवान उससे प्रसन्न हों) ऐसे व्यक्ति को अपना मित्र नहीं बल्कि शत्रु मानेगा। क्या किसी व्यक्ति को अपनी दोस्ती में सच्चा घोषित किया जा सकता है जो अपने दोस्त के प्यारे बच्चे को अपने घर ले जाता है और उसे पीटता है, उसके बाल खींचता है और उसके शरीर को घायल करता है, लेकिन इसके साथ भी, यह दावा करता रहता है कि वह बच्चे के माता-पिता का एक सच्चा दोस्त है और एक से बहुत प्यार करता है। उन लोगों की स्थिति ऐसी है जो चार सही निर्देशित खलीफाओं (अबू बकर, उमर, उस्मान और अली [ईश्वर उन सभी से प्रसन्न हों]) और महान भविष्यवक्ता साथी (ईश्वर उन सभी से प्रसन्न हों) से प्रेम करने का दावा करते हैं और धर्म को नष्ट करने में शामिल हैं, भले ही धर्म उनके लिए सबसे प्रिय चीज थी (खलीफा और अन्य महान भविष्यद्वक्ता साथी) और उन्होंने इसे अपने जीवन पर प्राथमिकता दी, संपत्ति, परिवार और रिश्तेदार। ये लोग ईश्वरीय कानून में दोषी हैं जो इसे वासनाओं की कैंची से टुकड़ों में काटते हैं, भविष्यद्वाणी के साथियों के लिए अपने प्यार का दावा करना कभी बंद नहीं करते हैं, लेकिन वास्तव में, परमेश्वर और उसके दोस्तों के संयुक्त दुश्मन - शैतान, शापित का पालन करते हैं। यह वास्तविकता न्याय के दिन [क्रिस्टल] स्पष्ट हो जाएगी जब उन्हें अपने "दोस्तों" के सामने दंडित किया जाएगा। न्याय के दिन के बारे में भूल जाओ, यदि उन्हें भविष्यसूचक साथियों के उनके बारे में और इस संसार में वे किस प्रकार के लोगों को पसंद करते हैं, के बारे में जान जाते हैं, तो वे अपनी स्वयं की स्थिति को देखकर बहुत शर्मिंदा हो जाएँगे और अपनी गंदी जीभ पर इन महान पवित्र लोगों के नाम लाने की हिम्मत नहीं करेंगे। शैतान इन अनुयायियों को [विभिन्न भविष्यद्वक्ताओं के] भी विश्वास दिलाता है कि यदि कोई अबू बक्र और उमर (ईश्वर उन दोनों से प्रसन्न हो) के प्रति प्रेम में मर जाता है, तो आग [नरक की] उसके करीब भी नहीं आएगी। शैतान दूसरों को आश्वासन देता है कि

यदि वे उस्मान और अली के प्रति अपने प्रेम में अपने जीवन का बलिदान करते हैं (ईश्वर उन दोनों से प्रसन्न हों) तो वे बिना किसी जवाबदेही के स्वर्ग जाएंगे [अपने सांसारिक कार्यों के लिए] जबकि वास्तव में उस दिन किसी के भी प्रेम और निकटता का कोई लाभ नहीं होगा, केवल इस सांसारिक जीवन में किसी के अपने [अच्छे और धार्मिक] कर्मों से लाभ होगा। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपनी प्यारी बेटी फातिमा (भगवान उससे प्रसन्न हो) से कहा:

اعملی فانی لا اغنی عنکم من اللّٰہ شیئا

"कर्म (अच्छे महान धर्मकर्म) करो क्योंकि मैं तुम्हें परमेश्वर से किसी भी चीज़ से नहीं बचा सकता। (यह कथन *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* द्वारा भविष्यवक्ता साथी अबू हुरैरा [भगवान उनसे प्रसन्न हो] के अधिकार पर बताया गया है)।

यह निचले स्व से इच्छाओं का पालन करने का एक उदाहरण है जिसका उल्लेख यहां किया गया है। यही बात उन लोगों पर भी लागू होती है जो विचारों के पारंपरिक स्कूलों के लिए पूर्वाग्रह रखते हैं (समुदाय की आम सहमति द्वारा एक हजार से अधिक वर्षों के लिए व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है, जो कि इमाम शफाई, अबू हनीफा, मलिक और अहमद (भगवान उन सभी पर दया करें) के पारंपरिक इस्लामी पद्धति के हिस्से के रूप में पारंपरिक इस्लामी पद्धति के हिस्से के रूप में स्वीकार करते हैं और अपने पूर्वाग्रह में इस हद तक आगे बढ़ते हैं कि देख रहे हैं विचारों के अन्य स्कूलों में नीचे निश्चित हो जाता है। हर कोई अपने इमाम की सत्यता का दावेदार है लेकिन अपने महान चरित्र का पालन नहीं करता है। कयामत के दिन, ये महान *इमाम* अपने अनुयायियों से पूछेंगे: "हमारे विचार के स्कूल कार्यों से बने थे, न कि कहावतें और बातें भी कार्यों के लिए थीं, तो आपके द्वारा कहावतों को महत्व देने का क्या कारण है, जबकि कार्यों से बचते हुए, इस प्रकार हमारी कार्यप्रणाली और चरित्र का विरोध करते हुए, हमारे विचारों के अनुयायी होने के झूठे दावे करते हैं?" यह शैतान के लिए एक बड़ा प्रवेश द्वार है और उसके आगमन के लिए एक बड़ा मार्ग है [हृदय में]। कई विद्वान (विद्वान धर्मशास्त्री) इस तरह से शैतान के हाथों विनाश तक पहुंचे। ये वे लोग हैं जिन्हें ईश्वर का भय नहीं था, जो दुनिया के लिए लालच और झुकाव रखते हैं, धर्म में उनकी अंतर्दृष्टि कमजोर है, और उनके [धार्मिक शिक्षाओं] पालन में इसके पीछे प्रेरक शक्ति ईमानदारी [और ईश्वर के प्रति भक्ति] नहीं है, बल्कि इसके बजाय लोगों से भक्ति और सम्मान प्राप्त करने की इच्छा है। इसीलिए, वे धार्मिक कट्टरता में शामिल रहे हैं और इस कट्टरता को अच्छा मानते हैं। वे नहीं जानते कि यह कट्टरता एक शैतानी कार्य है, लेकिन अफसोस, ये लोग शैतान के धोखेबाजी और साजिशों से अवगत नहीं हैं, और इसके बजाय व्यावहारिक रूप से उसके षड्यंत्रों को लागू करने में शामिल हैं। आम लोगों ने विद्वानों (शैक्षिक धर्मशास्त्रियों) की आलोचना करना शुरू कर दिया है, धर्म के सिद्धांतों को भुला दिया गया है, और धार्मिक कानून (फिक़्ह) की पेचीदगियों में मतभेदों *को* महत्व दिया गया है। इन विद्वतावादी धर्मशास्त्रियों ने दूसरों के साथ खुद को नष्ट कर लिया है। भगवान हमारे और उनके पश्चाताप को स्वीकार करें। हसन अल-बसरी (भगवान उस पर दया करें - एक महान ज्ञानवादी और संत) ने शैतान के इस उद्धरण का

उल्लेख किया: "मैंने पापों को मुहम्मद के राष्ट्र और अनुयायियों (उम्माह) के लिए अलंकृत और सजाए गए तरीके से प्रस्तुत *किया*, लेकिन उन्होंने पश्चाताप के माध्यम से मेरी पीठ तोड़ दी। उसके बाद, मैंने उनके सामने ऐसे पापों को अलंकृत किया जिससे वे पश्चाताप नहीं करते। ये पाप निम्न स्व (नफ्स) की इच्छाएं हैं"। शैतान ने [इस मामले में] सच कहा है। लोगों को यह भी नहीं पता कि इन मामलों में वे पापों की ओर जा रहे हैं, तो वे पश्चाताप भी कैसे करेंगे? शैतान का एक बड़ा धोखा यह है कि कोई अपने दायित्वों के बारे में भूल जाता है और इसके बजाय मतभेदों [विचारों के] में शामिल हो जाता है जो शैक्षिक धर्मशास्त्र और [पेचीदगियों] विश्वासों से संबंधित मुद्दों में मौजूद हैं। अब्दुल्लाह इब्ने मसूद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो, एक भविष्यवक्ता साथी) ने कहा कि एक बार कुछ लोग ईश्वर की याद (धिक्र*)* में व्यस्त थे तो शैतान आ गया। उसका इरादा था कि वे अपनी सभा [ईश्वरीय स्मरण की] छोड़ दें और उन्हें रोक दें, लेकिन उसकी महत्वाकांक्षाओं में सफल नहीं हो सके, और जो लोग परमेश्वर को याद करते हैं वे उसकी हर रणनीति को विफल कर देते हैं। फिर उसे पास बैठे कुछ लोगों को परेशान करने के लिए मजबूर किया गया जो सांसारिक बातचीत में लगे हुए थे। बातचीत के दौरान वे आपस में इस हद तक लड़ने लगे कि वे एक-दूसरे को पीटने और घायल करने लगे। दिव्य स्मरण के जमावड़े से, कुछ लोग लोगों के दूसरे समूह को रोकने के लिए उठे और उन्हें लड़ने से मना किया। यहाँ शैतान का उद्देश्य लड़ाई का कारण बनना नहीं था, बल्कि वह परमेश्वर के स्मरण को रोकना चाहता था और ऐसा करने वाले लोगों को छोड़ना चाहता था।

सामान्य लोक और दार्शनिक बहस: शैतान के तरीकों में से एक यह है कि वह आम लोगों को उन ज्ञानों में शामिल होने के लिए उकसाता है जिनमें वे कमजोर हैं और उन्हें उन मामलों पर विचार-विमर्श करने के लिए आमंत्रित करता है जिन्हें वे बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, ईश्वर के अस्तित्व और उसके दिव्य गुणों का ज्ञान, और इसी तरह के अन्य मामलों का ज्ञान जो उनकी कमजोर बुद्धि समझने में असमर्थ हैं। इस स्थिति में उन्हें अपनी कमजोर और सीमित बुद्धि नहीं दिखती है और न ही उन्हें अपने ज्ञान की कमी दिखाई देती है, बल्कि वे धर्म पर संदेह करने लगते हैं और ईश्वर के बारे में ऐसे विचार उनके मन में पैदा हो जाते हैं जो उन्हें धर्म के क्षेत्र से बाहर कर देते हैं और इसके बजाय उन्हें धर्म (बिदा) में अविश्वास और नवीनता के घेरे में डाल देते हैं या धर्म में नवीनता और विदेशी विचारों को अपनाते हैं। वे यह भी नहीं जानते हैं कि उन्होंने विश्वास की अमूल्य वस्तु खो दी है, और इसके बजाय वे इससे खुश हैं और सोचते हैं कि जो कुछ भी उनके दिल में हुआ है वह वास्तविक समझ और अंतर्दृष्टि है, और यह उनकी अपनी बुद्धि और अत्यधिक बुद्धि के माध्यम से प्राप्त किया गया है। इन गरीब लोगों को यह भी नहीं पता है कि सबसे नासमझ व्यक्ति वह है जो अपनी बुद्धि पर बहुत भरोसा करता है और सबसे बुद्धिमान वह है जो अपनी बुद्धि को हीन समझता है और विद्वानों (और विद्वानों) से पूछता रहता है। आयशा (ईश्वर उससे प्रसन्न हो - पैगंबर की पत्नी और एक प्रमुख विद्वान और शिक्षक) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से उद्धृत करता है:

ان الشيطان ياتى احدكم فيقول: من خلقك؟ فيقول الله تبارك وتعالى فيقول فمن خلق الله؟ فاذا وجد احدكم ذالك فليقل آمنت بالله ورسوله فان ذالك يذهب عنه

शैतान तुम में से एक के पास आता है और पूछता है: 'तुम्हें किसने बनाया? एक जवाब देता है: 'भगवान'। फिर वह पूछता है: 'भगवान को किसने बनाया?' यदि आप में से किसी को भी इस स्थिति का सामना करना पड़ता है, तो उसे कहना चाहिए: 'मैं ईश्वर और उसके पैगंबर में विश्वास करता हूं'। ऐसा कहने से, [शैतानी] कटाक्ष समाप्त हो जाएगा। (यह कथन हदीस *संग्रह* अहमद, बज़्ज़र, अबू याली, सहीह बुखारी *और* सहीह मुस्लिम *द्वारा रिपोर्ट किया गया है*)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आक्षेपों को दूर करने पर बौद्धिक बहस की अनुमति नहीं दी क्योंकि यह आक्षेप आम लोगों को होता है, न कि विद्वानों को। मूल लोगों को अपने विश्वास को नवीनीकृत करना चाहिए और पूजा और आर्थिक गतिविधियों में खुद को संलग्न करना चाहिए और ज्ञान को विद्वानों के लिए छोड़ देना चाहिए। एक साधारण व्यक्ति परमेश्वर और उसके मार्ग के बारे में आधारहीन बातें कहकर अविश्वास तक पहुँच सकता है। सच्चे ज्ञान में गहराई प्राप्त किए बिना कुछ कहना तैरने को जाने बिना खुद को लहरों के सामने पेश करने जैसा है। यह स्पष्ट है कि इसके परिणाम कोई और नहीं बल्कि स्वयं का विनाश होगा। विश्वासों और धर्मों के बारे में शैतान के धोखे इतने अधिक हैं कि उनका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता है। उनके बारे में जो उल्लेख किया गया है वह इन धोखे का एक नमूना है।

नकारात्मक और बुरी राय रखना: शैतान के धोखे के दरवाजों में से एक [साथी] मुसलमानों [और बाकी सभी] के बारे में बुरी राय रखना है। भगवान कहते हैं:

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱجْتَنِبُوا۟ كَثِيرًا مِّنَ ٱلظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ ٱلظَّنِّ إِثْمٌ

"ऐ ईमान वालो! बहुत सारी बुरी राय से दूर रहें क्योंकि कुछ बुरी राय पाप हैं। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 12)

जो अपने भाई (या बहन) के बारे में बुरी राय रखता है, वह निश्चित रूप से शैतान के धोखे का शिकार होगा। शैतान किसी की बुरी राय को भड़काएगा और किसी को उसके खिलाफ बैकबाइट करने या उसके प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा नहीं करने या उसके प्रति किसी के सम्मान में आलस्य दिखाने या उसके प्रति आलस्य दिखाने के लिए राजी करेगा या उसे नीचा दिखाएगा और खुद को उससे बेहतर समझेगा। ये

सब स्थितियां स्वयं के विनाश की हैं। यही कारण है कि ईश्वरीय व्यवस्था ने [लोगों] को दोष के स्थानों से बचने का आदेश दिया है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اتقوا مواضع التهم

"दोष के स्थानों से बचें [गलत तरीके से देखे जाने से बचने के लिए क्योंकि आंतरिक और बाहरी शांति की स्थिति को बनाए रखने के लिए गलतफहमी और संघर्षों से बचने के लिए धारणाओं को भी प्रबंधित करने की आवश्यकता है]"।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) खुद दोष और संदेह से बचते थे। यही कारण है कि अली बिन हुसैन ने सफिया बिंत है बिन अख्तरब से यह सुनाया है (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - पैगंबर की एक पत्नी जो एक स्थानीय यहूदी आदिवासी प्रमुख की बेटी थी) ने कहा: "पैगंबर मस्जिद में *इतिकाफ* (ईश्वरीय पूजा के लिए एकांत) में थे। मैं उनसे मिलने आया था। मुझे [संयोग से] मासिक धर्म हो गया। जब शाम हो गई, तो मैंने [अपने घर] वापस जाना शुरू कर दिया। पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी मेरे साथ चलने लगे। रास्ते में, *अंसारों* (मदीना शहर के लोग) में से दो आदमी मिले। उन्होंने पैगंबर को शांति के सलाम (*सलाम) के साथ अभिवादन किया* और अपने रास्ते चले गए। पैगंबर ने उन्हें बुलाया और कहा: 'यह सफिया बिंत है है'। उन्होंने जवाब दिया: "हे परमेश्वर के पैगंबर! हमारे पास आपके बारे में एक अच्छी राय है (यानी, हम आपके बारे में कुछ भी बुरा नहीं सोच सकते हैं, इसलिए आपको हमें यह समझाने की भी आवश्यकता नहीं थी कि आप अपनी पत्नी के साथ थे)। भविष्यवक्ता ने कहा: '[आप सच कह रहे हैं, लेकिन] शैतान मनुष्य की रगों में घूमता है [रक्तप्रवाह में और दूसरों को दोष देने और संदेह करने के लिए प्रेरित करता है कि वे उनके बीच कलह और संघर्ष बोएं]। मेरे मन में यह विचार था कि वह आपको मना सकता है [या संदेह और दोष की तर्ज पर कुछ बुरा संकेत दे सकता है] आपके दिलों में [उस महिला के बारे में जिसके साथ मैं था और इसलिए, मुझे समझाना आवश्यक लगा]"। (यह कथन किसके द्वारा रिपोर्ट किया गया है? *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम*)

विचार करें कि पैगंबर (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपने धर्म की रक्षा करने और अपने परलोक की भलाई के बारे में कितनी परवाह की [उनके दिलों में गलत संदेह और दोष के उदय को रोककर]। साथ ही, उन्होंने अपने अनुयायियों को उन जगहों से बचने का तरीका सिखाकर कितनी दया दिखाई जो संदेह और दोष को आमंत्रित कर सकते हैं और सिखाते हैं कि एक विद्वान व्यक्ति को भी किसी की स्थिति के बारे में आलस्य नहीं दिखाना चाहिए। जो व्यक्ति ईश्वर के प्रति श्रद्धा, श्रद्धा और भय के लिए जाना जाता है और ईश्वरीय नियम का पालन करने के लिए जाना जाता है, उसे यह नहीं सोचना चाहिए कि लोगों की किसी के बारे में बुरी या नकारात्मक राय नहीं होगी और आवश्यक रूप से एक के बारे में अच्छी राय होगी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि कोई ज्ञान और परमेश्वर का भय मानने में कितना भी श्रेष्ठ है,

लोग एक को केवल एक ही तरह से नहीं देखते हैं। कुछ लोग एक को अच्छा और कुछ को बुरा मानते हैं। बल्कि, एक के बारे में बुरा सोचने वाले लोगों की संख्या उन लोगों से अधिक है जो एक के बारे में अच्छा सोचते हैं। दूसरों की बुरी राय और बुरे लोगों के दोष से खुद को बचाना अनिवार्य है। उनसे बुरी राय की उम्मीद की जाती है। जब आप किसी को दूसरों के बारे में बुरी राय रखने और उनके साथ दोष खोजने में व्यस्त देखते हैं, तो जान लें कि वह आंतरिक स्व की बुराई [और नकारात्मकता] में शामिल है। दूसरों की बुरी राय किसी की आंतरिक बुराई [और नकारात्मकता] का प्रतिबिंब है और हर किसी को अपने [बुरे और नकारात्मक] अस्तित्व की छवि में देखना चाहता है। एक विश्वासी अपने भाई (या बहन के) कार्यों के लिए बहाने ढूंढता है। एक पाखंडी के पास चुगली करने के अलावा कुछ भी करने की क्षमता नहीं होती है। एक आस्तिक का हृदय हर व्यक्ति के प्रति साफ और स्पष्ट होता है [और खुले दिल से उनसे मिलता है और उनके बारे में सोचता है]।

यह शैतान के प्रवेश द्वार [मानव हृदय में] पर एक छोटी चर्चा थी। ये प्रवेश द्वार इतने अधिक हैं कि इनका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। मेरी राय में, जो कुछ भी लिखा गया है और जो भी प्रवेश द्वार यहां उल्लेख किए गए हैं, अन्य सभी प्रवेश द्वार [मनुष्य के हृदय में शैतान के] उनसे निकाले जा सकते हैं। हालाँकि, किसी व्यक्ति में जो कई नकारात्मक आंतरिक लक्षण होते हैं, उनमें से प्रत्येक गुण शैतान का एक हथियार है और शैतान के दरवाजों के बीच से [मानव हृदय में] एक द्वार है।

शैतान से सुरक्षा का मार्ग: यहाँ यह प्रश्न पूछा जा सकता है: "शैतान की साजिशों से अपनी रक्षा करने का क्या इलाज है? क्या भगवान का स्मरण और '*ला हवला वा ला कुव्वता इल्ला बिल्ला*' या 'भगवान के अलावा कोई शक्ति और शक्ति नहीं है' कहने से उसके खिलाफ सुरक्षा होगी? यह ज्ञात होना चाहिए कि हृदय को ठीक करना केवल तभी संभव है जब सभी प्रवेश द्वार बंद हो जाएं जिसके माध्यम से शैतान दिलों में प्रवेश करता है और उन्हें प्रदूषित करता है। दूसरे शब्दों में, हृदय को सभी नकारात्मक और नीच आंतरिक विनाशकारी गुणों से शुद्ध किया जाना चाहिए। आंतरिक विनाशकों से हृदय की शुद्धि एक व्यापक विषय है। [वर्तमान] पुस्तक "*इह्या उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या चौथाई का एकमात्र उद्देश्य [मानव हृदय में] आंतरिक विनाशकारी गुणों का इलाज करना है। चूँकि इस तरह के हर आंतरिक विनाशकारी गुण को अपने स्वयं के अध्याय की आवश्यकता होती है [पूरी तरह से उपचार के लिए] जैसा कि आप अगले पृष्ठों में देखेंगे, यहाँ यह उल्लेख करना पर्याप्त है कि यदि हृदय को इन आंतरिक विनाशकारी नकारात्मक बुरे गुणों से शुद्ध और शुद्ध किया जाता है तो शैतान को हृदय में अपने पैर मजबूत करने का अवसर नहीं मिलता है। वह सबसे अधिक आकर गुजर सकता है। भगवान की याद उसके रास्ते में बाधा बन जाती है। ईश्वर की याद का हृदय पर प्रभाव पड़ता है जब वह पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर के भय (तकवा) के प्रकाश से प्रबुद्ध होता है और नकारात्मक निंदनीय आंतरिक लक्षणों के प्रदूषण से शुद्ध होता है। यदि ऐसा नहीं है, तो परमेश्वर की याद को केवल एक विचार

या हृदय की क्षणिक अवस्था के रूप में माना जाएगा, और इस पर उसका शासन और प्रभुत्व नहीं होगा। यह आसानी से दिल की शतरंज की बिसात पर अपना नियंत्रण मजबूत कर लेता है। भगवान कहते हैं:

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ ٱلشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُوا۟ فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ

"जिन लोगों के पास पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर (*तकवा)* का भय है, जब शैतान से उनके दिल में कोई खतरा (एक नकारात्मक बुरा विचार) आता है, तो वे तुरंत परमेश्वर की याद में आ जाते हैं और उनकी आँखें तुरंत खुल जाती हैं [क्योंकि वे पूरी तरह से चौंक जाते हैं और जानते हैं कि वे अपने दिलों में जो नकारात्मकता पा रहे हैं वह शैतान से है और उन्हें तुरंत इससे छुटकारा पाने की आवश्यकता है। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 121)

इस श्लोक में, परमेश्वर का भय मानने वाले व्यक्ति के लिए एक विशेष भेद किया गया है। शैतान का उदाहरण भूखे कुत्ते की तरह है। अगर आपके पास इसके लिए कोई रोटी या मांस नहीं है तो आप उसे अपने से दूर धकेल सकते हैं लेकिन अगर आपके हाथ में मांस है और कुत्ता भी भूखा है तो वह उसे दूर धकेलने से दूर नहीं जाएगा बल्कि मांस पर कूद जाएगा। शैतान दिल से एक डांट सुनकर भाग जाता है जहां उसके लिए भोजन नहीं है। हालांकि, जहां उसका भोजन मौजूद है, वह निश्चित रूप से उन पर हमला करता है और उसे जीभ से डांटना ही काफी नहीं है। वासनाओं से प्रभावित हृदय परमेश्वर की याद की वास्तविकता को अपने अंदर नहीं आने देता है और वह हृदय शैतान के लिए विश्राम स्थल बन जाता है। वह ईश्वर-भीरु लोगों के दरवाजे नहीं खटखटाता है जो निचले स्व की इच्छाओं से रहित हैं और उनके पास वासना होने के कारण आंतरिक विनाशकारी गुणों से रहित हैं, लेकिन जब वह उन्हें दिव्य स्मरण के प्रति लापरवाह और लापरवाह देखता है तो वह उन पर दस्तक देता है। परन्तु ऐसे दिलों से दूर भागते हैं जब वे परमेश्वर की याद में लौटते हैं। ईश्वरीय स्मरण के माध्यम से उसके भागने का प्रमाण कुरान की आयतें और *हदीस* (भविष्यद्वाणी परंपराएं) हैं जो शैतानी आक्षेपों के समय ईश्वर की शरण लेने का आदेश देती हैं। उदाहरण के लिए, एक श्लोक है:

فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ ٱلرَّجِيمِ

"शैतान, शापित से परमेश्वर की शरण लो। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 98)

अबू हुरैरा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हों - एक भविष्यद्वाणी साथी) ने कहा: "एक बार शैतान (शैतान के अनुयायी) जो एक विश्वासी और एक अविश्वासी के साथ हैं, मिले। दोनों ने एक-दूसरे का हालचाल पूछा। अविश्वासी का शैतान अधिक वजन वाला था और उसके शरीर पर अत्यधिक चर्बी थी, लेकिन विश्वासी का शैतान कमजोर, कमजोर, चिंताजनक और बेघर था। अविश्वासी शैतान ने उससे पूछा: 'तुमने अपने आप को ऐसी हालत क्यों बना ली है? तुम इतने कमजोर और पतले क्यों हो?' उन्होंने उत्तर दिया, "मैं एक ऐसे व्यक्ति

के साथ हूँ जो भोजन करते समय परमेश्वर के नाम से शुरू होता है। मैं भूखा रहता हूं [इसके परिणामस्वरूप]। जब कोई पानी पीता है, तो वह भगवान के नाम से शुरू होता है और मुझे प्यास से घबराहट होती है। जब कोई कपड़े पहनता है तो भगवान का नाम लेता है, इसलिए मेरा शरीर खुला रहता है। जब कोई अपने बालों में तेल लगाता है [बालों की जड़ों को मजबूत करने के लिए जैसा कि कई संस्कृतियों में प्रथागत है] तो वह भगवान का नाम लेता है, इसीलिए, मेरे बाल सूखे और अस्त-व्यस्त रहते हैं। अविश्वासियों के शैतान ने उससे पछतावा व्यक्त किया और कहा: 'मुझ पर एक ऐसे व्यक्ति पर थोपा जा रहा है जो तुम्हारे साथी की तरह कुछ भी नहीं करता है। किसी के खाने-पीने और कपड़े पहनने में, मैं उसके बराबर का भागीदार हूं। मुहम्मद बिन अल-वसे (ईश्वर उन पर दया करे - एक महान ज्ञानवादी और संत) शैतान से सुरक्षा के लिए हर दिन यह प्रार्थना करते थे:

اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ سَلَّطْتَ عَلَيْنَا عَدُوًّا بَصِيرًا بِعُيُوبِنَا يَرَانَا هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ
لَا نَرَاهُمْ اَللّٰهُمَّ فَآيِسْهُ مِنَّا كَمَا آيَسْتَهُ مِنْ رَحْمَتِكَ وَقَنِّطْهُ مِنَّا كَمَا قَنَّطْتَهُ مِنْ
عَفْوِكَ وَبَاعِدْ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ رَحْمَتِكَ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ

"हे परमेश्वर! आपने हम पर एक ऐसा दुश्मन थोपा है जो हमारे दोषों से अच्छी तरह वाकिफ है। वह और उनका समूह हमें इस तरह से देखता है कि हम उन्हें देख नहीं पाते हैं। हे परमेश्वर! उन्हें हमसे इतना निराश करो जैसे तुमने उन्हें अपनी दया से निराश किया है। उसे हमसे इतना निराश करो जैसे कि आपने उसे अपनी क्षमा से निराश कर दिया है। उसके और हमारे बीच इतनी दूरी और अलगाव पैदा करें जैसा कि आपने उनके और अपनी दया के बीच बनाया है। वास्तव में, आप सब कुछ करने में सक्षम हैं।

मुहम्मद अल-वसाय (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "एक बार मैं *मस्जिद* (मस्जिद या पूजा और पूजा करने और भगवान की महिमा करने के स्थान) के रास्ते में शैतान से मिला, जिसने मुझसे पूछा: 'क्या आप मुझे जानते हैं? मैंने कहा: 'नहीं'। उन्होंने कहा, "मैं *इबलीस* (शैतान या शैतान का नेता) हूं। मैंने उनसे रास्ते में इस तरह मिलने के उद्देश्य के बारे में पूछा और उन्होंने कहा: 'मेरी इच्छा है कि आप यह प्रार्थना किसी और को न सिखाएं। मैं कभी आपका विरोध नहीं करूंगा। मैंने जवाब दिया: 'मैं भगवान की कसम खाता हूँ कि अगर कोई इस दुआ को सीखना चाहता है, तो मैं उसे सीखने से नहीं रोकूँगा। जाओ और वही करो जो तुम्हारा दिल चाहता है। अब्दुर रहमान इब्ने अबी लैला (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - एक भविष्यद्वाणी साथी) ने कहा: "शैतान अपने हाथ में आग की चिंगारी लेकर पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो) के सामने आता था, जब वह प्रार्थना कर रहा था। वह प्रार्थनाओं और परमेश्वर की शरण लेने से दूर नहीं गया। एक बार प्रधान स्वर्गदूत गेब्रियल (*जिब्राईल* [परमेश्वर की शांति उस पर हो]) आया और उसे निम्नलिखित प्रार्थना पढ़ने के लिए कहा:

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ
فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَمِنْ فِتَنِ اللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ وَمِنْ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِلَّا طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمٰنُ

"मैं परमेश्वर की शरण उसके वचनों के माध्यम से चाहता हूँ, जिसे कोई पार नहीं कर सकता, चाहे वह कोई अच्छा हो या बुरा, उस चीज़ से जो पृथ्वी में प्रवेश करती है और जो उसमें से निकलती है और जो स्वर्ग में चढ़ती है और जो स्वर्ग से उतरती है, दिन और रात की परीक्षाओं और क्लेशों से, रात और दिन के उतार-चढ़ाव और क्लेशों से, सिवाय इसके कि [रात और दिन की] घटना जो अच्छाई से भरी हुई है, हे दयालु! (इस परंपरा को इब्ने अबी अद-दुनिया ने अपनी पुस्तक में कॉपी किया है। *मका-इद अश-शैतान*", इमाम मलिक द्वारा [हदीस संग्रह] *मुवत्ता* द्वारा [भविष्यद्वाणी के साथी] याह्या इब्न सईद के अधिकार पर, और इब्न अब्दुल बर्र द्वारा [भविष्यद्वाणी के साथी] इब्ने मसूद [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो)

जब पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इन शब्दों का पाठ किया, तो उन्होंने शैतान की लौ को बुझा दिया और वह उसके चेहरे के बल जमीन पर गिर पड़ा। हसन अल-बसरी (भगवान उस पर दया करें - एक महान ज्ञानवादी और संत) ने कहा कि महादूत गेब्रियल पैगंबर के पास आए और उनसे कहा: "एक जिन्न आपको धोखा देना चाहता है, इसलिए जब आप बिस्तर पर जाएं, तो [दिव्य] सिंहासन की आयत (जिसे आयत *अल-कुर्सी कहा जाता है* [कुरान, अध्याय 2, श्लोक 255])"।

एक भविष्यसूचक परंपरा के अनुसार:

ما سلک عمر فجا الا سلک الشیطان فجا غیر الذی سلکه عمر

उमर जिस भी रास्ते पर चलता है, शैतान उस रास्ते से भाग जाता है और दूसरे रास्ते पर चला जाता है।

इसका कारण यह था कि इन विशिष्ट व्यक्तियों के हृदय शैतान के लिए किसी भी भोजन से रहित थे, दूसरे शब्दों में कहें तो वासनाएँ उनके हृदयों से नहीं गुजरती थीं। यदि कोई चाहता है कि शैतान एक से दूर हो जाए, केवल ईश्वर की याद के माध्यम से जब कोई उमर (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) से दूर चला गया तो यह असंभव है। इस उम्मीद को पालने वाला कोई व्यक्ति उस व्यक्ति की तरह है जो दवाएं लेता है लेकिन रोकथाम से दूर रहता है [हानिकारक चीजों से जो दवाएं लेने के लिए प्रतिकूल हैं]। उस स्थिति में दवाओं का क्या लाभ हो सकता है जब पेट हानिकारक और अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों से भरा होता है? इस तरह के भोजन के [हानिकारक प्रभावों से] छुटकारा पाने का समय नहीं है, भले ही दवा को शरीर के विभिन्न हिस्सों में स्थानांतरित किया जाता है ताकि इसे फायदेमंद बनाया जा सके। ईश्वरीय स्मरण दवा की तरह है

और *तकवा* (ईश्वर का पवित्र भय, श्रद्धा और भय जो किसी को गलत और बुरे मामलों में शामिल होने से रोकता है, चाहे वह आंतरिक हो या बाहरी) रोकथाम है। इस रोकथाम का नतीजा यह है कि हृदय निचले स्व की इच्छाओं और वासनाओं से रहित होना चाहिए। इसलिए जब परमेश्वर के अलावा किसी भी चीज़ से रहित हृदय में ईश्वरीय स्मरण होता है, तो शैतान उस [हृदय] से भाग जाएगा ठीक उसी तरह जैसे दवा जब खाली पेट जाती है, तो बीमारी और बीमारी उससे बच जाती है। भगवान कहते हैं:

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُۥ قَلْبٌ

"यह उस व्यक्ति के लिए एक महान सबक है जिसके पास [बोधगम्य] हृदय है। (कुरान, अध्याय 50, श्लोक 37)

भगवान एक और जगह कहते हैं:

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُۥ مَن تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُۥ يُضِلُّهُۥ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ ٱلسَّعِيرِ

"जिसके विषय में (अर्थात् शैतान) परमेश्वर के साथ लिखा गया है कि जो कोई भी उसके साथ सम्बन्ध रखेगा, वह (शैतान) उसे भटकाएगा और उसे नरक की सजा का मार्ग दिखाएगा। (कुरान, अध्याय 22, श्लोक 4)

एक व्यक्ति जो किसी के [गलत, नकारात्मक और बुरे] कार्यों के साथ शैतान की मदद करता है, उसे उसका मित्र और सहयोगी कहा जाएगा, भले ही कोई अपनी जीभ से परमेश्वर को याद कर सकता है [और किसी के बाहरी आचरण में एक अच्छा नैतिक और धार्मिक व्यक्ति प्रतीत हो सकता है]।

जीभ द्वारा दिव्य स्मरण पर्याप्त नहीं है: यदि आप कहते हैं कि एक हदीस (भविष्यद्वाणी का कथन) कहता है कि ईश्वरीय स्मरण (*धिक्र*) शैतान को एक से दूर कर देता है और इसमें किसी भी प्रतिबंध और शर्तों का कोई उल्लेख नहीं है और इन सभी विशिष्ट विवरणों का आविष्कार विद्वानों द्वारा किया गया था और भविष्यसूचक कथन उस [विशिष्ट] जानकारी को व्यक्त नहीं करता है, उस आपत्ति का उत्तर यह है कि केवल जीभ के माध्यम से ईश्वरीय स्मरण प्रभावी नहीं है, यह है कि मैं आपको बाहरी तर्क प्रदान करने के बजाय अपने स्वयं को देखने के लिए आमंत्रित करता हूं। आपको दी गई समाचार और जानकारी [अपनी आंखों से] गवाह के समान स्तर पर नहीं है और आप देखेंगे कि मेरा दावा वैध है या नहीं। हर कोई जानता है कि ईश्वर के स्मरण और पूजा का उद्देश्य प्रार्थना (*नमाज़* या आवश्यक दैनिक प्रार्थना के साथ-साथ ईश्वर से वैकल्पिक अतिवादी प्रार्थना) है। जब तुम प्रार्थना करते हो, तो अपने हृदय की स्थिति पर एक नज़र डालो। शैतान तुम्हारे हृदय को असंख्य स्थानों - सड़कों, गलियों, बाजारों, मनोरंजन केन्द्रों, आदि की ओर ले जाता है, और तुम्हारे विचारों को विविध चीज़ों के माध्यम से ले जाता है और उसे असंख्य चीज़ों की

इस हद तक याद दिलाता है कि वह तुम्हें उन चीज़ों की भी याद दिलाता है जिनके बारे में तुम पूरी तरह से भूल गए हो [सभी प्रार्थनाओं के दौरान जब तुम्हें केवल परमेश्वर पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिए, क्योंकि तुम अपने एकमात्र ध्यान के बिंदु के रूप में हो, इससे वास्तव में आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण ईश्वर के साथ एक गहरे आंतरिक संबंध का विकास है और परिणामस्वरूप ईश्वर की ज्ञानदर्शिता]।

शैतान निश्चित रूप से प्रार्थना की स्थिति में आपके दिल पर हमला करता है। [इस दौरान क्या होता है] ईश्वरीय स्मरण और उपासना के अन्य कार्यों का अनुमान प्रार्थना के दौरान [उपरोक्त स्थिति का सामना करना] से लगाया जा सकता है। प्रार्थना दिलों की कसौटी है जो दिलों के प्रशंसनीय गुणों और दोषों को प्रकट करती है। दिलों की प्रार्थनाएं, जो सांसारिक वासनाओं के केंद्र बन गई हैं, स्वीकार नहीं की जाती हैं। इस तरह की प्रार्थनाएँ शैतान को पीछे नहीं हटाती हैं, इसके बजाय वे [शैतान से] आक्षेपों और अनुनय में वृद्धि की संभावना को सुविधाजनक बनाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे रोकथाम के बिना दवाएं अच्छे से अधिक नुकसान करती हैं। यदि आप शैतान से छुटकारा पाना चाहते हैं, तो पहले तकवा (ईश्वर के प्रति पवित्र भय, श्रद्धा और भय जो व्यक्ति को गलत और बुरे मामलों में शामिल होने से रोकता है, चाहे वह आंतरिक हो या बाहरी) की रोकथाम को अपनाएं, फिर उसके बाद, दिव्य स्मरण (धिक्र) की दवा का उपयोग *करें*। शैतान तुमसे वैसे ही डरेगा जैसा वह उमर से डरता था। वहाब बिन मुनब्बीह (ईश्वर उस पर दया करे - एक संत और ज्ञानवादी) ने कहा: "भगवान से डरो और शैतान को बाहर से बुरा मत कहो, जबकि तुम उसकी आज्ञा मानने के मामले में अंदर से उसके दोस्त हो"। एक संत ने कहा: "लोगों के लिए यह आश्चर्य की बात है कि वे अपने उपकारी (ईश्वर) की अवज्ञा करते हैं, भले ही वे उन पर उसके एहसान को जानते हों और शापित (शैतान) की आज्ञा का पालन करते हों, बावजूद इसके कि वे उसके विद्रोह को जानते हुए भी उसकी अवज्ञा करते हैं"। जिस तरह आप एक प्रार्थना करते हैं और इसे स्वीकार नहीं किया जाता है, भले ही भगवान ने कहा है कि "मुझे पुकारो, मैं आपकी बुलाहट का जवाब दूंगा", उसी तरह शैतान आपके दिव्य स्मरण के बावजूद आपसे दूर नहीं हटता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वहां प्रार्थनाओं की शर्तें [ईश्वरीय रूप से स्वीकार की जाने वाली] अनुपस्थित थीं और यहाँ, ईश्वरीय स्मरण की शर्तें अनुपस्थित हैं। किसी ने इब्राहिम बिन अधम (ईश्वर उन पर दया करे - एक महान संत और ज्ञानवादी) से एक ही प्रश्न पूछा: "हमारी प्रार्थनाओं को [ईश्वरीय रूप से] स्वीकार क्यों नहीं किया जाता है, भले ही ईश्वर ने [कुरान में उनकी स्वीकृति] का वादा किया हो?" उसने उत्तर दिया: "ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम्हारे दिल मर चुके हैं। उन्होंने पूछा: "हमारे दिलों की मौत का कारण क्या है?" उसने उत्तर दिया: "तुम्हारे आठ गुणों ने हृदय की मृत्यु का कारण बना है: सबसे पहले, तुम अपने ऊपर परमेश्वर के अधिकारों को जान गए लेकिन तुमने उसके अधिकारों को पूरा नहीं किया; दूसरे, आप कुरान पढ़ते हैं लेकिन आप इसकी सीमाओं पर कार्य नहीं करते हैं [स्वीकार्य और गैर-स्वीकार्य व्यवहार और आंतरिक और बाहरी दोनों तरह के कार्यों की]; तीसरा, आप ईश्वर के रसूल (पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से प्यार करने का दावा करते हैं, लेकिन आप उनके मार्ग का अनुसरण नहीं करते हैं [धार्मिकता और ईश्वर

के प्रति भक्ति]; चौथा, आप कहते हैं कि आप मृत्यु से डरते हैं लेकिन आप इसके लिए तैयारी नहीं करते हैं; पांचवां, परमेश्वर कहता है:

إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَٱتَّخِذُوهُ عَدُوًّا

"वास्तव में, शैतान आपका [असली] दुश्मन है, इसलिए उसे अपने दुश्मन के रूप में लें। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 6)

लेकिन आपने पाप करके (ईश्वरीय सीमाओं के विरुद्ध उल्लंघन) करके उसकी ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया है; छठा, तुम नरक के अपने भय को व्यक्त करते हो लेकिन उन कार्यों को करते हो जो इसमें तुम्हारा प्रवेश निश्चित बनाते हैं; सातवां, तुम स्वर्ग के इच्छुक हो, लेकिन [अच्छे, धार्मिक] कार्यों को नहीं करते जो आपको वहां ले जाते हैं; आठवां, जब आप अपने बिस्तर से उठते हैं, तो आप अपनी गलतियों को अपनी पीठ के पीछे रख देते हैं और दूसरों के साथ दोष खोजने में शामिल हो जाते हैं। ये सभी लक्षण दैवी अप्रसन्नता का कारण हैं। उनकी उपस्थिति में, आपकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करने की उम्मीद करना व्यर्थ है।

वुहैब इब्न अल-वार्ड (ईश्वर उस पर दया करे - एक ज्ञानवादी और संत) ने कहा: "हमें पता चला है कि शैतान एक बार पैगंबर याह्या (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) (जिसे जॉन के नाम से भी जाना जाता है) के सामने प्रकट हुआ और कहा: 'मैं आपको एक सलाह देना चाहता हूं'। उन्होंने कहा, 'मुझे आपकी सलाह की कोई जरूरत नहीं है। हालाँकि, मुझे मनुष्यों के बारे में कुछ बताएं (यानी, आप किस तरह के इंसानों के साथ व्यवहार करते हैं)?' उन्होंने कहा, 'इंसान तीन तरह के होते हैं। एक तरह के लोग ऐसे होते हैं जो हम पर बहुत कठोर होते हैं। जब हम उनके पास जाते हैं और उन्हें पाप की स्थिति में फंसाते हैं और उन्हें अपने नियंत्रण में लाते हैं, तो वे पाप करने के बाद तुरंत पश्चाताप की तलाश करते हैं और इस तरह वे हमारी सारी मेहनत को बर्बाद कर देते हैं। हम फिर से कड़ी मेहनत करते हैं, और वे फिर से वही बात दोहराते हैं (यानी, वे अपने गलत कामों के लिए पश्चाताप करते हैं)। हमारी स्थिति इतनी अजीब है कि हम न तो उनसे निराश हैं और न ही हम उनके साथ अपना रास्ता बना पा रहे हैं। दूसरे प्रकार के मनुष्य एक बच्चे के हाथ में एक गेंद की तरह होते हैं क्योंकि हम उन्हें अपनी इच्छानुसार घुमा सकते हैं। ये लोग हमें हमारी मेहनत का पूरा बदला देते हैं। तीसरे प्रकार के लोग आपके जैसे होते हैं - पवित्र स्वभाव के, निर्दोष और पापों से दूर। हम उन पर काबू नहीं पा सकते।

शैतान का मनुष्यों के सामने शारीरिक रूप से प्रकट होना: यहाँ प्रश्न उठते हैं: "शैतान [कुछ] लोगों के सामने शारीरिक रूप से कैसे प्रकट होता है, जबकि वह दूसरों के सामने प्रकट नहीं होता है और जब वह प्रकट होता है, तो क्या यह उसका वास्तविक रूप या रूपक रूप है? यदि यह उसका वास्तविक रूप है,

तो यह विभिन्न रूपों में दिखाई देता है और कैसे उसे दो स्थानों पर दो अलग-अलग रूपों में देखा जाता है ताकि दो लोग उसे दो अलग-अलग रूपों में देख सकें?" उस संबंध में यह कहने की आवश्यकता है कि शैतानों और स्वर्गदूतों के पास वास्तविक रूप है, लेकिन हर कोई अपने वास्तविक रूप को देखने में सक्षम नहीं है, इसके बजाय, उन्हें भविष्यद्वाणी के प्रकाश के साथ देखा जा सकता है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने महादूत गेब्रियल को उनके वास्तविक रूप में केवल दो बार देखा - एक बार उन्होंने खुद उनसे उन्हें अपना वास्तविक रूप दिखाने का अनुरोध किया और उन्होंने (गेब्रियल) ऐसा करने का वादा किया और अपने मूल रूप में हीरा पर्वत [मक्का में] में प्रकट हुए और पश्चिम से पूर्व तक पूरा क्षितिज उनके अस्तित्व से भर गया; दूसरी बार, वह अपने मूल रूप में पैगंबर के स्वर्गीय स्वर्गारोहण (मिराज) की रात को *सिदरत अल-मुंताहा* (एक लोटे पेड़ जो सातवें स्वर्ग के अंत को चिह्नित करता है, वह सीमा जहां कोई भी सृष्टि नहीं गुजर सकती है, इस्लामी मान्यताओं के अनुसार) और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने उन्हें देखा। आम तौर पर, पैगंबर ने उन्हें मानव रूप में देखा है। गेब्रियल अक्सर दह्या कल्बी के रूप में आता था (भगवान उससे प्रसन्न हों - एक भविष्यवक्ता साथी जो अपने अच्छे दिखने के लिए जाना जाता था) [एक पैगंबर कथन या *संग्रह में हदीस* के अनुसार *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम*]।

हृदय के अधिकांश लोगों (आध्यात्मिकता) के पास *मुकश्फा* (आध्यात्मिक अनावरण) इस तरह से होता है कि उनके वास्तविक रूप का उदाहरण उनके सामने प्रकट होता है। इसलिए शैतान जागने की अवस्था में उनके सामने आ जाता है। वे उसे देखते और सुनते हैं। वास्तविक रूप का यह उदाहरण वास्तविक रूप का विकल्प बन जाता है। कई धर्मी लोग अपने सपनों में इस स्थिति का सामना करते हैं [जागने की स्थिति के विपरीत]। आध्यात्मिक अनावरण (*कश्फ*) का व्यक्ति वह है जिसका बाहरी इंद्रियों का उपयोग आध्यात्मिक अनावरण में बाधा नहीं डालता है। दूसरे शब्दों में, जो दूसरों को सपनों के माध्यम से पता चलता है, वह उनके द्वारा जागने में देखा जाता है। उमर बिन अब्दुल-अजीज (ईश्वर उन पर दया करे) ने बताया कि एक व्यक्ति ने भगवान से प्रार्थना की कि वह उसे मानव हृदय के अंदर वह स्थान दिखाए जहां शैतान रहता है। फिर उन्होंने एक सपने में मानव शरीर को एक पारदर्शी कांच के रूप में देखा, जिसके माध्यम से वहां जो कुछ भी है उसे बाहर से देखा जा सकता है। उसने शैतान को कंधे के जोड़ और कान के बीच बाएं कंधे पर बैठे मेंढक के रूप में देखा। उसके पास एक पतली और लंबी सूंड थी जिसे उसने मनुष्य के दिल में डाला था और उसके माध्यम से संकेत दे रहा था। जब उस व्यक्ति ने परमेश्वर को याद किया, तो शैतान उसके ट्रक को दिल से हटा देगा। कभी-कभी यह अवलोकन जागने के दौरान होता है। इसीलिए, आध्यात्मिक अनावरण करने वाले कुछ लोगों ने शैतान को कुत्ते के रूप में शव पर लेटे हुए और लोगों को उसमें आमंत्रित करते हुए देखा है। शव दुनिया का एक उदाहरण है। इस प्रकार की गवाही मूल रूप का विकल्प है। यह पहले भी कहा जा चुका है कि हृदय के दो पहलू होते हैं। एक तरफ "*आलम अल-मलकूट*" या देवदूत क्षेत्र का सामना करना पड़ता है - यह पक्ष ईश्वरीय रहस्योद्घाटन (वाही*)*, दिव्य प्रेरणा (*इल्हाम*) और आध्यात्मिक संकेतों और संकेतों (*इशरत)* के लिए प्रवेश बिंदु है। दूसरा पक्ष [दिल का] "आलम *अल-जहीर*" या दृश्य के दायरे का सामना करता है। हालाँकि, चूंकि दोनों पक्ष एक-दूसरे से

जुड़े हुए हैं, इसलिए देवदूत क्षेत्र का सामना करने वाले पक्ष का प्रभाव दृश्य क्षेत्र का सामना करने वाली तरफ देखा जाता है।

दृश्य क्षेत्र में चीजें उनके कथित रूपों और दिखावे में देखी जाती हैं क्योंकि संपूर्ण दृश्य क्षेत्र बोधगम्य होता है। धारणाओं में यह संभव है कि बाहरी इंद्रियों के माध्यम से किसी के हृदय में जो रूप आता है, वह उनकी वास्तविक [आंतरिक] प्रकृति के अनुसार नहीं हो सकता है। इसलिए, एक व्यक्ति स्पष्ट रूप से सुंदर दिखता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि उसकी बाहरी सुंदरता आंतरिक सुंदरता के अनुसार हो। कोई भीतर से एक बदसूरत व्यक्ति हो सकता है। दृश्यमान क्षेत्र केवल वास्तविकता की धारणा है [वास्तविकता के विपरीत]। हालाँकि, वह रूप और रूप जो स्वर्गदूत क्षेत्र की चमक और चमक के माध्यम से विचार में प्रकट होता है, [हमेशा] अपनी वास्तविक आंतरिक प्रकृति के अधीन और उसके अनुसार होता है। इसलिए, जो अंदर से बदसूरत है वह बाहर से उतना ही बुरा दिखाई देगा। इसलिए शैतान कुत्ते, मेंढक और सूअर के रूप में प्रकट होता है जबकि स्वर्गदूत अच्छे रूप में दिखाई देते हैं। यह [सुंदर] रूप [आंतरिक] अर्थ के कारण है और आंतरिक की सच्ची तस्वीर है। यही कारण है कि सपने में किसी को कुत्ते या बंदर के रूप में देखना अपनी आंतरिक बुराई के बारे में बहस करता है और एक को बकरी के रूप में देखना एक अच्छे स्वभाव के होने के बारे में तर्क देता है। सपनों की व्याख्या के साथ ऐसी स्थिति है। यह मामला हृदय के रहस्यों से संबंधित है और व्यावहारिक आध्यात्मिकता के ज्ञान में इसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। इस विषय को यहाँ लाने का एकमात्र कारण इस निश्चितता को विकसित करना है कि शैतान और स्वर्गदूत कभी-कभी हृदय के लोगों को नींद में एक उदाहरण और सादृश्य के रूप में और कभी-कभी अपनी वास्तविक वास्तविकता के रूप में प्रकट होते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि एक उदाहरण या अनुरूप रूप देखा जाता है जो आंतरिक वास्तविकता जैसा दिखता है। भले ही रूप एक उदाहरण या सादृश्य है, लेकिन आंख से इसकी गवाही वास्तविक है, हालांकि, केवल आध्यात्मिक अनावरण वाले लोग ही इसे देख सकते हैं जबकि आसपास के लोग इसे नहीं देख सकते हैं। ठीक उसी तरह जैसे सोता हुआ व्यक्ति एक सपना देख सकता है जबकि उसके आस-पास के लोग [जो सोते नहीं हैं] उसे देख नहीं सकते।

दिल के संकेत, अंधविश्वास, खतरे और इरादे

हृदय की क्रियाएं शारीरिक अंगों द्वारा कार्य करने से पहले कई चरणों से गुजरती हैं। पहली चीज जो दिल पर आती है उसे "*खतीर*" या विचार कहा जाता है। उदाहरण के लिए, हृदय किसी ऐसे व्यक्ति के विचार की कल्पना करता है जिसे यदि कोई [देखना] चाहता है तो उसे घुमाकर देखा जा सकता है। दूसरा, देखने की इच्छा जागृत हो जाती है, यानी किसी के स्वभाव में वासना सक्रिय हो जाती है। यह इच्छा सबसे पहले एक विचार से पैदा होती है जिसे झुकाव कहा जाता है [किसी के दिल या स्वभाव का] और पहले विचार को

"निचले स्व का कथन" (*हदीत अल-नफ्स*) कहा जाता है। तीसरा, इस झुकाव के लिए हृदय की अनुमति, उदाहरण के लिए, उस व्यक्ति को देखने के लिए हृदय की आज्ञा। कभी-कभी, हृदय का झुकाव होता है लेकिन शर्म और भय जैसी कुछ बाधाएं हृदय को देखने की अनुमति नहीं देती हैं। संकोच से इन बाधाओं को दूर किया जाता है और बुद्धि निर्णय करती है। इस कार्य को विश्वास कहा जाता है। चौथा, किसी के पास यह देखने का दृढ़ संकल्प होता है कि किसे संकल्प या इरादा कहा जाता है। इस इरादे का आधार कभी-कभी कमजोर होता है लेकिन जब मन पहले विचार पर पूरी तरह से केंद्रित हो जाता है तो यह संकल्प दृढ़, इरादा मजबूत और दृढ़ संकल्प बन जाता है। कभी-कभी नीयत की दृढ़ता के बावजूद पछतावे के कारण कार्रवाई नहीं कर पाता है, कभी लापरवाही के कारण उसका ध्यान कर्म पर नहीं होता है, कभी-कभी कोई बाधा आ जाती है जो किसी की इच्छा के बावजूद किसी इरादे के व्यावहारिक क्रियान्वयन को रोकती है।

किसी क्रिया को करने से पहले हृदय की चार अवस्थाएँ: अपशॉट यह है कि किसी क्रिया को करने से पहले हृदय की चार अवस्थाएँ होती हैं: निचले स्व का वर्णन (*हदीद अल-नफ़्स*), हृदय का झुकाव, विश्वास और दृढ़ संकल्प। जहां तक [पहले] विचार या "निचले स्व से कथन" का संबंध है, इसके लिए कोई जवाबदेही नहीं है क्योंकि यह मनुष्य के नियंत्रण से बाहर है। यही बात हृदय के झुकाव पर भी लागू होती है क्योंकि यह अवस्था भी किसी के नियंत्रण में नहीं होती है। इन दो राज्यों का मतलब पैगंबर मुहम्मद (शांति और ईश्वर का आशीर्वाद उन पर हो) के कथन में है कि मेरे राष्ट्र के लिए दिल के मामलों को माफ कर दिया गया है। "निचले स्व से कथन" उन विचारों को संदर्भित करता है जो हृदय में आते हैं कि किसी का उन पर कार्य करने का कोई इरादा नहीं है। इरादा और दृढ़ संकल्प वह नहीं है जिसे "निचले स्व से कथन" द्वारा संदर्भित किया जाता है।

हृदय की तीसरी अवस्था को "विश्वास" कहा जाता है, दूसरे शब्दों में, हृदय यह दृढ़ संकल्प करता है कि एक निश्चित कार्य करना स्वीकार्य है। यह विश्वास या तो सचेत (जानबूझकर अपनाया गया) या अवचेतन (अपनी इच्छा के बिना अवचेतन रूप से हृदय में प्रवेश किया जा सकता है)। चेतन के लिए [दिव्य] गणना और जवाबदेही है, लेकिन अवचेतन के लिए नहीं। हृदय की चौथी शर्त एक कार्य करने का इरादा और दृढ़ संकल्प है जो जवाबदेही और गणना के लिए उत्तरदायी है। यदि किसी कारण से कोई कर्म करने में सक्षम नहीं है तो यह देखा जाएगा कि कर्म से दूर रहना शर्म या ईश्वर के भय के कारण था या नहीं। यदि ईश्वर की शर्म या भय किसी को अपने इच्छित कार्य को पूरा करने से रोकता है, तो एक के लिए एक धार्मिक कार्य लिखा जाएगा क्योंकि पाप को पूरा करने का संकल्प लेना पाप है और एक पापपूर्ण इरादे को पूरा करने से रोकना और अपने निचले आधार स्वयं की इच्छाओं के खिलाफ संघर्ष करना एक धार्मिक कार्य है [ईश्वरीय स्वीकृति के योग्य]। यदि कोई पाप करने का इरादा रखता है, तो निचले स्व के आग्रह से वश में हो जाता है, तो यह ईश्वर से बचने और लापरवाही का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, बल्कि अपने निचले स्व के खिलाफ संघर्ष करके पाप के इरादे को त्यागना निश्चित रूप से एक बड़ी बात है। यदि कोई शैतान का अनुसरण करके पाप करने का इरादा रखता है, तो अपने [आंतरिक] झुकाव का विरोध करके [इस प्रकार गलत और बुराई के खिलाफ एक आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष करना] उससे दूर रहना उसे एक अच्छे धार्मिक कार्य के योग्य बनाता है। हालांकि, अगर कोई किसी बाधा के कारण [बुराई करने के इरादे को पूरा नहीं कर

सकता है] [अपने निचले स्व को छोड़े बिना और अभी भी बुराई करने की इच्छा के बिना] तो एक बुरा काम एक के लिए लिखा जाएगा क्योंकि दिल का इरादा किसी के नियंत्रण में है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का कथन जो इस बारे में तर्क देता है, वह इस प्रकार है:

قالت الملائكة عليهم السلام، رب ذاك عبدك يريد ان يعمل سيئة و هو ابصر به
فقال: ارقبوه فان هو عملها فاكتبوها له بمثلها و ان تركها فاكتبوها له حسنة و انما
تركها من جرائى

"स्वर्गदूत परमेश्वर से यह कहते हैं: 'हे परमेश्वर! तुम्हारा यह सेवक पाप करना चाहता है। [यद्यपि परमेश्वर किसी की स्थिति के बारे में किसी और की तुलना में अधिक जानता है,] वह कहता है: 'एक पर नजर रखो। यदि कोई अपने इरादे को पूरा करता है, तो अपने कर्म के बराबर एक बुरा कर्म [अपने कर्मों के खाते में] लिखें। यदि कोई अपने [बुरे] इरादे से कार्य करने से बचता है, तो अपने खाते में एक अच्छा काम लिख दो क्योंकि उसने मेरे कारण यह पाप छोड़ दिया है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *सहीह मुस्लिम* [भविष्यद्वाणी के साथी] अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

एक और भविष्यसूचक कथन कहता है:

انما يحشر الناس على نياتهم

"लोग अपने इरादों पर [न्याय के दिन] जी उठेंगे"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *सहीह मुस्लिम* उम्म सलमा और आयशा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इस परंपरा से पता चलता है कि अगर कोई कुछ करने का इरादा करता है और उसे लागू करने से पहले मर जाता है तो वह उस इरादे पर मर जाता है और उस इरादे पर उठ खड़ा होता है, भले ही उसने उस पाप को पूरा नहीं किया हो। इस मामले को पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की निम्नलिखित परंपरा द्वारा स्पष्ट रूप से समझाया गया है:

اذا التقى المسلمان بسيفيهما فالقاتل و المقتول فى النار، فقيل يا رسول
الله هذا القاتل فما بال المقتول، قال لانه اراد قتل صاحبه

"जब दो मुसलमान एक-दूसरे को मारने की लड़ाई में अपनी तलवारें फैलाकर एक-दूसरे का सामना करते हैं, तो हत्यारा और हत्या किए गए दोनों नरक में जाएंगे। पैगंबर से पूछा गया: 'हे ईश्वर के पैगंबर! हत्यारे का नरक में जाना समझ में आता है, लेकिन हत्या (पीड़ित) नरक में क्यों जाएगा? उसने जवाब दिया: 'ऐसा इसलिए है क्योंकि वह दूसरे को मारने का भी इरादा रखता था'"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* [पैगंबर साथी] अबू बकरा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इस स्पष्टीकरण के बाद कोई यह नहीं मान सकता है कि परमेश्वर हृदय के इरादों पर विचार नहीं करता है। इस संबंध में, याद रखने योग्य सिद्धांत यह है कि हर जानबूझकर किया गया इरादा और संकल्प गणना के

अधीन है। यह स्पष्टीकरण यह भी साबित करता है कि उन मामलों पर कोई गणना और जवाबदेही नहीं है जो मानव नियंत्रण और क्षमता से परे हैं। कुछ लोग हृदय के विभिन्न कार्यों के बीच अंतर नहीं करते हैं और हृदय में आने वाली हर चीज को "निचले स्व से कथन" या "विचार" कहते हैं। उनकी यह राय मान्य नहीं है। जब अहंकार, आत्म-धार्मिकता (या आत्म-बड़ाई), आडंबर, ईर्ष्या, आदि [जो व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण के लिए अत्यंत हानिकारक हैं] हृदय के कार्य हैं और [कुरान से] आयतें और भविष्यसूचक कथन साबित करते हैं कि उनके लिए गणना और जवाबदेही है। इस मामले की सच्चाई यह है कि सभी कार्य जो एक सेवक [ईश्वर के, यानी, एक मनुष्य] की क्षमता के भीतर हैं, गणना और जवाबदेही के अधीन होंगे। इसलिए, यदि एक *गैर-महरेम* (दैवीय कानून के अनुसार संभावित रूप से विवाह योग्य) महिला पर अनजाने में एक नज़र पड़ती है, तो इसके लिए कोई गणना नहीं है, लेकिन अगर दूसरी नज़र जानबूझकर और जानबूझकर डाली जानी है, तो यह [दिव्य] गणना के अधीन होगा। दिल के विचारों की ऐसी स्थिति है। बल्कि, यह गणना पहले दिल की होनी चाहिए क्योंकि दिल ही असली चीज है [अर्थात, हृदय मनुष्य का आधार और वास्तविकता है]।

आक्षेप के प्रकार: कई प्रकार के संकेत हैं:

पहला प्रकार - सत्य और सही के लिए निमंत्रण: एक प्रकार का [संकेत] यह है कि शैतान सत्य को संदिग्ध बनाने के लिए इसे [दिलों में] डालता है। उदाहरण के लिए, वह किसी से कहेगा: "किसी को सांसारिक सुखों को नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि जीवन लंबा है और लंबे समय तक इच्छाओं को रोकना एक कठिन कार्य है जिसके लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है"। इस बिंदु पर, यदि सेवक [ईश्वर का, अर्थात्, एक मनुष्य] परमेश्वर के जबरदस्त अधिकारों, उच्च पुरस्कारों और दर्दनाक दंडों पर विचार करता है और किसी के दिल को समझाता है कि जीवन लंबा हो सकता है लेकिन मृत्यु के बाद के जीवन की तुलना में, यह वास्तव में महत्वहीन है और सभी सांसारिक सुख क्षणभंगुर और क्षणभंगुर हैं, भले ही जाहिरा तौर पर, उनके साथ धैर्य रखना मुश्किल है, लेकिन नरक की आग की तुलना में, यह बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। दोनों में से एक आवश्यक है: यदि कोई सांसारिक सुखों पर धैर्य रखने की कठिनाई को सहन करता है तो उसे नरक की कठिनाई को सहन नहीं करना पड़ेगा, और यदि किसी ने दुनिया पर धैर्य नहीं रखा तो उसे परलोक की कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। फिर भी, परमेश्वर के वादों, चेतावनियों और विश्वास और निश्चितता के पुनरुद्धार की याद और अनुस्मारक, शैतान को भागने के लिए मजबूर करता है क्योंकि वह यह नहीं कह सकता है कि नरक की आग पापों पर धैर्य रखने या पाप करने से नरक नहीं जाता है। यहां तक कि अगर वह इस तरह के दावे करता है, तो विश्वास करने वाला सेवक परमेश्वर की पुस्तक (ईश्वरीय आदेश और तर्क का प्रकाश) में विश्वास करने के कारण [शैतान से] ऐसे वादों पर भरोसा नहीं करेगा। इसी तरह, यदि वह आत्म-दंभ का संकेत देता है कि किसी के पास आपसे अधिक ईश्वर की ज्ञान-दृष्टि नहीं है, न ही आपकी पूजा की तरह कोई उदाहरण है और यह कि आपको ईश्वर के सामने उच्च दर्जा प्राप्त है। इस बिंदु पर, सेवक को यह सोचना चाहिए कि ज्ञान, पूजा, उच्च आध्यात्मिक स्थिति [ईश्वर के सामने], सभी अंग जो कार्य करते हैं और सभी कार्य जिनके माध्यम से व्यक्ति ने ज्ञान प्राप्त किया है, सभी ईश्वर की रचनाएँ हैं और धन पर उनका द्वारा प्रदान किया गया है और उनमें कोई व्यक्तिगत उत्कृष्टता नहीं है। इस विचार के बाद, आत्म-धार्मिकता, आत्म-अभिमान, आत्म-प्रशंसा और घमंड के लिए कोई जगह नहीं बचती है, और शैतान को अपमानजनक हार मिलती है क्योंकि वह यह नहीं कह सकता

कि ये परमेश्वर की रचनाएँ नहीं हैं। यहां तक कि अगर वह यह दावा करता है, तो एक नौकर की सूक्ति और विश्वास कभी भी किसी को इस पर विश्वास करने की अनुमति नहीं देगा। इस तरह का आक्षेप ईश्वरीय स्मरण के माध्यम से विश्वास और ज्ञान के प्रकाश के मालिकों और ईश्वर के ज्ञाताओं (ज्ञानवादियों) के दिलों से पूरी तरह से समाप्त हो जाता है।

दूसरा प्रकार - वासनाओं और वासनाओं को भड़काने वाला: दूसरे प्रकार का संकेत यह है कि शैतान वासनाओं को भड़काता है। यह भी दो प्रकार का होता है। एक यह है कि नौकर को वासना के पाप होने के बारे में पता है। दूसरा यह है कि कोई इसके बारे में एक प्रमुख अनुमान के माध्यम से जानता है। निश्चित रूप से, शैतान वासना को भड़काने से नहीं परहेगा, लेकिन वह इस उकसावे को प्रभावी बनाने में सक्षम नहीं होगा। यदि यह निश्चित नहीं है, लेकिन एक अनुमान है, तो शैतान का उकसाना प्रभावी हो सकता है। ऐसे में इसे मिटाने के लिए आध्यात्मिक संघर्ष की आवश्यकता होगी। इस प्रकार का संकेत ईश्वरीय स्मरण के समय पूरी तरह से समाप्त नहीं होता है, हालांकि, यह हावी होने में भी सक्षम नहीं है।

तीसरा प्रकार - विचार पारित करना: तीसरे प्रकार का संकेत केवल विचारों को पारित करना और प्रार्थना के दौरान होने वाले छिपे हुए मामलों को याद करना है। इसलिए, जब कोई दिव्य स्मरण (धिक्कार) में संलग्न होता है तो ये गुजरते हुए विचार थोड़ी देर के लिए समाप्त हो जाते हैं फिर वे वापस आ जाते हैं और फिर समाप्त हो जाते हैं। कभी-कभी विचारों को पारित करने का आगमन निरंतर और निरंतर होता है, जैसे कि ऐसा लगता है कि विचार और ईश्वरीय स्मरण एक ही श्रृंखला में दो वलय हैं। यह इस हद तक होता है कि कभी-कभी गुजरने वाले विचार [कुरान के] पाठ के अर्थों के साथ एक साथ आते हैं जैसे कि दिल में दोनों के लिए दो अलग-अलग स्थान हैं और दोनों एक साथ रह सकते हैं। इस तरह के आक्षेप को पूरी तरह से काटना मुश्किल है, लेकिन असंभव नहीं है क्योंकि पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

من صلى ركعتين لم يحدث فيهما نفسه بشئ من امر الدنيا غفر له ما تقدم من ذنبه

"*जो व्यक्ति प्रार्थना के दो चक्र इस प्रकार करता है कि उसका निम्न स्व* सांसारिक मामलों के बारे में बात नहीं करता है, तो उसके पिछले सभी पापों को क्षमा कर दिया जाएगा।

यदि हृदय में कोई आक्षेप न होना संभव नहीं होता, तो पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इसका उल्लेख नहीं किया होता। यह हर दिल के साथ मामला नहीं है [किसी भी आक्षेप से रहित होना] लेकिन इसकी कल्पना केवल उस हृदय के साथ की जा सकती है जिसमें ईश्वर का प्रेम इस हद तक हावी है कि कोई अन्य विचार उस पर नहीं आता है। जिस तरह एक सच्चे प्रेमी के दिल में प्रिय के अलावा कोई अन्य विचार नहीं होता है, उसी तरह अगर कोई दुश्मन के बारे में चिंतित है तो वह अपने विचार और शत्रु द्वारा उसे नुकसान पहुंचाने के विचार में इतना तल्लीन होता है कि वह प्रार्थना के दौरान भी दूर नहीं होता है और न ही किसी को याद रहता है कि उसने कितने चक्रों की प्रार्थना की है और प्रार्थना के प्रत्येक चक्र में उसने क्या पाठ किया है। यह [ऐसे विचारों में तल्लीन और अवशोषण] इस हद तक है कि अगर कोई वहां से गुजरता है तो उसे पता भी नहीं चलता है, भले ही आंखें खुली हों और राहगीर को देख रहे हों। सांसारिक मामलों में तल्लीन होना ऐसा हो सकता है कि नरक का भय और स्वर्ग की इच्छा इस तरह के तल्लीन होने

को बढ़ावा देगी [तब हम कल्पना कर सकते हैं कि दिव्य प्रेम कितना मोहक हो सकता है]। हालांकि, आस्था की कमजोरी के कारण यह अवस्था आम नहीं है।

[इस चर्चा] का नतीजा यह है कि कुछ क्षणों के लिए शैतान से छुटकारा पाना संभव है, लेकिन पूरे जीवन के लिए नहीं। यदि कोई शैतान के आक्षेपों और उकसावे से सुरक्षित और सुरक्षित रह सकता था, तो यह पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) का महान व्यक्तित्व होता, लेकिन परंपरा कहती है कि प्रार्थना के दौरान, जब उसकी नज़र उसके कपड़ों पर कुछ पैटर्न और डिजाइनों पर पड़ी, तो उसने प्रार्थना करने के बाद, बस उन कपड़ों को फेंक दिया और कहा:

شغلنی عن الصلاۃ‘ اذهبوا بها الی ابی جهم

"इस [पोशाक] ने मुझे प्रार्थनाओं से जोड़ा, इसलिए इसे अबू जाहम (भविष्यवक्ता साथी जिसने पोशाक उपहार में दी) के पास वापस ले जाएं"।

इसी तरह की एक घटना एक सोने की अंगूठी के साथ हुई जिसके परिणामस्वरूप पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे फेंक दिया (*हदीस* अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास के अधिकार पर नसाई द्वारा वर्णित है)। पोशाक और सोने की अंगूठी पर डिजाइन पैटर्न के कारण विभाजित ध्यान और ध्यान [प्रार्थना के दौरान पैगंबर (शांति उन पर हो) को भगवान पर पूर्ण ध्यान केंद्रित करने से रोकते हुए] शैतान के संकेत का एक कार्य था। यह याद दिलाया जाना चाहिए कि सोने की अंगूठी से जुड़ी घटना पुरुषों के लिए सोने के ईश्वरीय निषेध से पहले हुई थी। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने सोने की अंगूठी पहनी थी क्योंकि उस समय [इसके बाद के निषेध से पहले] इसकी अनुमति थी। उन्होंने इसे हटा दिया क्योंकि यह सांसारिक संपत्तियों और संपत्ति से संबंधित आक्षेप और आक्षेप पैदा कर रहा था, उन्हें केवल उनसे हटाकर ही मिटाया जा सकता है।

जब तक किसी के पास आवश्यकता से अधिक संपत्ति है, तब तक शैतान निश्चित रूप से एक को आक्षेप में शामिल करेगा, भले ही वह अतिरिक्त संपत्ति सिर्फ एक *दिरहम* या *दीनार* (क्रमशः पुरानी सोने और चांदी की मुद्राएं) हो। उस स्थिति में आक्षेप का रूप यह होगा कि शैतान किसी व्यक्ति को उनकी सुरक्षा के बारे में चिंतित और चिंतित रखेगा और किसी को सलाह देगा कि इसे कहाँ खर्च करना है और इसे कैसे छिपाना है ताकि अन्य लोग इसकी उपस्थिति के बारे में न जान सकें या इसे इस तरह से प्रकट न करें कि लोग उसकी श्रेष्ठता को स्वीकार कर लें। ये और उनके जैसे अन्य संकेत किसी को चिंतित रखेंगे। जो लालच के पंजे से भौतिक धन के शव को पकड़ने के बाद शैतान से बचाए जाने की इच्छा रखता है, वह उस व्यक्ति के समान है जो शहद में गिर गया है और मक्खियों से अपेक्षा करता है कि वे एक पर न बैठें। यह सिर्फ एक दरवाजा नहीं है, बल्कि असंख्य दरवाजे हैं जिनके माध्यम से शैतान की सेनाएं, संकेतों के बोझ से लदी हुई, लगातार और निरंतर अंदर आती हैं और बाहर जाती हैं [जैसा वे चाहें]। एक बुद्धिमान व्यक्ति (ऋषि) ने कहा है कि शैतान पाप के मार्ग से एक के पास आता है। यदि यह मार्ग बंद हो जाता है, तो वह सलाह का मार्ग अपनाता है और व्यक्ति को उन मामलों में शामिल करता है जो व्यक्ति को ईश्वरीय मार्गदर्शन (बिद*'आ) से विचलित करते हैं*। यदि वह मार्ग बंद हो जाता है, तो शैतान व्यक्ति को [स्व-थोपे गए] कठिनाइयों, संकुचन और अतिवाद के मार्ग पर ले जाता है, जैसे कि कोई अपने लिए उन चीजों को भी

मना कर देता है जो निषिद्ध नहीं हैं (*हराम) /* यदि कोई उस मार्ग को भी बंद कर देता है, तो शैतान को स्नान (*वुडू*, यानी, औपचारिक प्रार्थनाओं की आध्यात्मिक स्थिति में प्रवेश करने के लिए आवश्यक शारीरिक शुद्धि) और प्रार्थनाओं के बारे में संदेह और संदेह में शामिल करता है। यदि कोई उस मार्ग को भी बंद कर देता है [शैतान के प्रवेश के लिए], तो शैतान उसके लिए अच्छे धर्मी कर्मों को आसान बना देता है। जब लोग एक को पवित्र, धैर्यवान, निर्दोष और नैतिक शुद्धता के मालिक के रूप में सोचने के करीब आने लगते हैं, तो शैतान एक को आत्म-धार्मिकता, आत्म-प्रशंसा, आत्म-प्रशंसा और व्यर्थता (*'उजुब*) में शामिल करता है और इसके साथ एक को नष्ट कर देता है। यहाँ शैतान अपनी शक्ति और शक्ति में अपना सब कुछ खर्च करता है, क्योंकि यह उसका आखिरी अवसर है जिसे वह चूकना नहीं चाहता है क्योंकि वह जानता है कि यदि वह चूक गया, तो उसका शिकार उसके [शिकार] जाल में नहीं फंसेगा और इसके बजाय, सीधे स्वर्ग में चला जाएगा।

उस संबंध में हृदय और हृदय के प्रकारों में तेजी से परिवर्तन

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, हृदय विभिन्न विपरीत गुणों से घिरा हुआ है। यह एक ऐसे लक्ष्य की तरह है जिस पर चारों तरफ से तीरों की बौछार की जा रही है। अगर किसी चीज का उस पर असर होता है तो कुछ और आता है और उसका प्रभाव खत्म हो जाता है। शैतान उसे निचले स्व की इच्छाओं की ओर खींचता है। एंजेल इसे विपरीत दिशा में खींचता है। एक शैतान उसे एक बुराई की ओर खींचता है और दूसरा शैतान उसे दूसरी बुराई की ओर खींचता है। इसी तरह, एक देवदूत इसे एक अच्छे काम की ओर बुलाता है तो दूसरा देवदूत इसे दूसरे के पास बुलाता है। कभी-कभी वह हृदय दो स्वर्गदूतों के बीच और कभी दो शैतानों के बीच और कभी-कभी स्वर्गदूत और शैतान के बीच संघर्ष में शामिल होता है। इसमें शांति का कोई क्षण नहीं होता है और जब यह पहले से व्यस्त नहीं होता है। निम्नलिखित श्लोक हृदय की उसी स्थिति की ओर इशारा करता है:

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَٰرَهُمْ

"और हम उनके दिल और नज़ारे को दूर कर देंगे। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 110)

ऐसा इसलिए है क्योंकि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) दिल के चमत्कारों में ईश्वर की अद्भुत रचना से अवगत थे और जानते थे कि मांस का यह टुकड़ा हमेशा एक क्षणभंगुर, लुप्त होने वाली और हमेशा बदलती स्थिति में होता है। इसलिए वह कसम खाता था:

ومقلب القلوب

"मैं दिलों के परिवर्तक (यानी, भगवान) की कसम खाता हूं"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *[भविष्यद्वाणी के साथी] अब्दुल्लाह इब्न उमर के अधिकार पर* सहीह बुखारी [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

वह निम्नलिखित प्रार्थना बहुतायत से करते थे:

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ

"ऐ दिलों को बदलने वाले! मेरे हृदय को अपने मार्ग पर स्थिर रखो।

लोगों ने उससे पूछा: "हे परमेश्वर के दूत! क्या आपको भी अपने दिल के बारे में आशंकाएं हैं?" उसने उत्तर दिया:

ومايؤمنني والقلب بين اصبعين من اصابع الرحمن يقلبه كيف يشاء

"किस कारण से मैं निडर हो जाऊँ, जबकि हृदय दयालु (परमेश्वर) की दो अंगुलियों के बीच में है, कौन इसे अपनी इच्छानुसार घुमा सकता है?"

हृदय की परिवर्तनशीलता और उसमें परमेश्वर के रहस्यों को केवल वे लोग ही समझ सकते हैं जो इस पर हमेशा चौकस रहते हैं और लगातार चिंतन की स्थिति में रहते हैं।

हृदय की परिवर्तनशीलता और स्थिरता के संदर्भ में हृदय के तीन प्रकार हैं: अच्छे या बुरे पर इसकी स्थिरता के संदर्भ में हृदय तीन प्रकार के होते हैं या दोनों के बीच झिझक रहती है:

पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर के भय (तकवा) के प्रकाश से भरा हृदय *(*तकवा): एक हृदय ऐसा है जो पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर के भय (तकवा) के प्रकाश से भरा हुआ है और सभी निम्न और नीच आंतरिक विशेषताओं से शुद्ध हो गया है। इस प्रकार के हृदय को अदृश्य क्षेत्र के खजाने और स्वर्गदूत क्षेत्र ('आलम *अल-मलकूट)* से अच्छे विचार प्राप्त होते हैं। बुद्धि उनकी सूक्ष्मताओं, पेचीदगियों, रहस्यों और लाभों को समझने के लिए उन पर विचार करती है। जब अंतर्दृष्टि का प्रकाश (*बसीराह*) कुछ अच्छा के रूप में प्रकट करता है तो बुद्धि इसके महत्व के बारे में निर्णय लेती है और हृदय को उस पर कार्य करने के लिए राजी करती है। जब देवदूत [हृदय में दिव्य प्रकाश लाने के लिए जिम्मेदार] देखता है कि हृदय का सार शुद्ध और शुद्ध है, बुद्धि और ध्वनि तर्क के प्रकाश ने इसे प्रकाशित किया है, ईश्वर के भय की प्रकाश किरणें प्रकाशित करती हैं [स्वयं और दूसरों के लिए नकारात्मक, नीच और हानिकारक हर चीज के खिलाफ नैतिक संयम के रूप में कार्य करना] हर जगह गिर रही है और दिव्य ज्ञान का दीपक जल रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसा हृदय स्वर्गदूतों का निवास स्थान है जहां वे उतरते हैं और रहते हैं, फिर देवदूत अदृश्य की सेनाओं की सहायता करता है और कई वस्तुओं पर कार्य करने में मदद करता है धार्मिक कर्म जब तक कि धार्मिकता और कर्म जो इसे पोषित करते हैं, जन्मजात दूसरी प्रकृति बन जाते हैं जैसा कि भगवान कहते हैं:

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ﴿٥﴾ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٦﴾

فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلْيُسْرَىٰ ﴿٧﴾

"इसलिए जिसने दान दिया [अपने प्रभु के चेहरे की तलाश में] और पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय था और सही चीज (ईश्वर के लिए मार्ग) की सच्चाई में विश्वास करता था, हम ऐसे व्यक्ति के लिए आसानी पैदा करेंगे। (कुरान, अध्याय 92, आयत 5-7)

ऐसे हृदयों में ईश्वरीय प्रभुत्व के दरबार से प्रचुर रोशनी होती है कि यहां तक कि [सूक्ष्म बुराइयां जैसे] छिपी हुई बहुदेववाद भी आंखों से छिपी नहीं रहती है, जो एक अंधेरी काली रात में रेंगने वाली एक गहरी काली चींटी की तुलना में अधिक सूक्ष्म है [इस प्रकार किसी भी चीज़ के प्रति संवेदनशीलता जो थोड़ी सी भी नीच या नकारात्मक है, इसके खिलाफ एक मोहरा के रूप में कार्य करती है]। शैतान का धोखा ऐसे दिलों पर प्रभावी नहीं होता है। वह अपनी परिश्कृत बातों के माध्यम से धोखा देने और धोखा देने की पूरी कोशिश करता है, लेकिन सेवक [भगवान का, यानी, एक धर्मी व्यक्ति] इस पर थोड़ा सा भी ध्यान नहीं देता है। ऐसा हृदय *आंतरिक विनाशकारी गुणों* (मुहलिकत या घातक आंतरिक गुण जो किसी के दिल और आत्मा का विनाश लाते हैं) को खत्म करने के बाद उद्धार और शुभ आंतरिक गुणों (*मुंजियात*) से सुशोभित हो जाता है । इन उद्धारक आंतरिक गुणों में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता [बिना पूछे सभी को दिए गए असंख्य आशीषों के लिए], धैर्य [सभी प्रतिकूलताओं के खिलाफ क्योंकि यह आध्यात्मिक जागरूकता के उच्च स्तर तक ले जाता है], पवित्र विस्मय, ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भय (तकवा*)*, ईश्वर से आशावाद और आशा (रीजा*)*, आध्यात्मिक गरीबी (सभी परिस्थितियों में ईश्वर की आवश्यकता या आवश्यकता), भौतिकवाद (जुहद) से परहेज*,* ईश्वर के प्रति प्रेम (*महबा*)*,* ईश्वरीय आदेश (रिदा) से संतुष्टि, ईश्वर की उत्सुकता और स्नेह और उसके साथ रहने की इच्छा (शौक), ईश्वर पर भरोसा (तवाकुल*)*, दिव्य प्रेम को विकसित करने के लिए भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के चमत्कारों और रहस्यों में गहन चिंतन (तफक्कुर*)*), ईश्वरीय पूजा, आज्ञाकारिता और अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य (इहतिसाब) को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक मार्ग में प्रयास करने में अपनी कमियों के लिए स्वयं को कार्य करना, आदि। परमेश्वर का ध्यान ऐसे हृदय पर है और यही वह हृदय है जिसका उल्लेख नीचे की आयत में किया गया है:

أَلَا بِذِكْرِ ٱللَّهِ تَطْمَئِنُّ ٱلْقُلُوبُ

"वास्तव में, हृदय परमेश्वर की याद में शांति [और आंतरिक शांति] पाते हैं। (कुरान, अध्याय 13, श्लोक 28)

يَٰٓأَيَّتُهَا ٱلنَّفْسُ ٱلْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ٱرْجِعِىٓ إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

"हे आत्मा शांति और शांति में रहने वाली है! अपने रब के पास [उसकी दया और उदारता की विशालता तक] इस तरह की स्थिति में लौटें कि आप उससे प्रसन्न हों और वह आपसे प्रसन्न हो। (कुरान, अध्याय 89, आयत 27-28)

निचले स्व की इच्छाओं से भरा दिल: दूसरे प्रकार का हृदय पहले प्रकार के विपरीत होता है। दूसरे शब्दों में, यह निचले आधार स्व की इच्छाओं से भरा हुआ है और निंदनीय आदतों [और प्रवृत्तिओं] से कलंकित है। इस हृदय के द्वार शैतान के लिए खुले हैं और स्वर्गदूतों के लिए बंद हैं। इस प्रकार के हृदय

में बुराई की शुरुआत निचले स्व से इच्छा की कल्पना करने से होती है, जिसके बाद पाप और बुराई में लिप्त होने में झिझक होती है। हृदय शासक से परामर्श करता है जो बुद्धि है। चूंकि बुद्धि पहले से ही निचले स्व का गुलाम रही है और बहुत पीड़ित है और उससे जुड़ी हुई है, यह अपने पक्ष में निर्णय लेती है और औचित्य के लिए साधन प्रदान करती है [ऐसे मामले के लिए जो गलत, नीच और हानिकारक है]। इस तरह, निचला आधार स्व (*नफ्स*) हृदय को पकड़ लेता है [और उस पर पूर्ण नियंत्रण रखता है] जो इसे पाप में मदद करता है। व्यक्ति का हृदय निचले स्व की इच्छाओं के लिए खुल जाता है और लालच का अंधेरा हर जगह फैलने लगता है क्योंकि बुद्धि की सेना पहले ही प्रतिरोध की अपनी शक्ति खो चुकी है और अपना पूरा नियंत्रण निचले आधार वाले स्व को सौंप दे चुकी है [जो आंतरिक रूप से गलत और बुराई के प्रति प्रवृत्त है]। शैतान के प्रभुत्व का चक्र और भी फैलता है, जो हृदय को बाहरी फिजूलखर्ची [विशिष्ट उपभोग के माध्यम से], धोखे और धोखाधड़ी, और झूठी आशाओं में उलझाता है और इस तरह के अन्य मामलों को इंगित करता है। नतीजतन, विश्वास का प्रभुत्व [ईश्वर और ईश्वरीय मार्गदर्शन में नैतिक शुद्धता की ओर ले जाता है जो सभी ज्यादतियों के खिलाफ एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है] कमजोर हो जाता है और निश्चितता का प्रबुद्ध दीपक [ईश्वरीय मार्गदर्शन की सत्यता में जो किसी को धार्मिकता की ओर ले जाता है] बुझ जाता है। दूसरे शब्दों में, ईश्वरीय वादों, स्वर्ग और नरक और परलोक में विश्वास और निश्चितता समाप्त हो जाती है। निचले स्व की इच्छाएं धुएं की तरह हैं जो सभी दिशाओं से हृदय को घेर लेती हैं और विश्वास और निश्चितता के दीपक को बुझा देती हैं। बुद्धि ऐसी अवस्था में आ जाती है जैसे किसी व्यक्ति की आंख धुएं से भर जाती है और वह देखने की क्षमता खो देती है। वासनाओं का वर्चस्व [विभिन्न प्रकार के - भौतिक, सारहीन और दैहिक] हृदय से सोचने और चिंतन करने की क्षमता और इसकी अंतर्दृष्टि को हटा देता है, और यह (हृदय) मार्गदर्शन [जीवन में सही मार्ग के बारे में] के प्रति इतना बेखबर हो जाता है कि भले ही कोई उपदेशक किसी अच्छी चीज के बारे में सलाह देना चाहता है, फिर भी वह उसे समझने में सक्षम नहीं होता है। निम्नलिखित छंद एक ही हृदय की ओर इशारा कर रहे हैं:

أَرَءَيْتَ مَنِ ٱتَّخَذَ إِلَٰهَهُۥ هَوَىٰهُ أَفَأَنتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَٱلْأَنْعَٰمِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

"हे पैगंबर! क्या आपने उस व्यक्ति की स्थिति देखी है जिसने अपनी इच्छाओं से निम्न स्व से भगवान बनाया है [जैसे कि कोई ऐसे देवता को प्रणाम कर रहा हो]? तो, क्या आप ऐसे व्यक्ति पर नज़र रख सकते हैं [किसी को खुद को नुकसान पहुंचाने से बचाने के लिए]? या क्या आपको लगता है कि ऐसे लोगों में से अधिकांश लोग सुनते और समझते हैं? [नहीं, बल्कि] वे मवेशियों की तरह हैं, बल्कि [सही] मार्ग से और भी अधिक विचलित हैं [क्योंकि वे यह देखने की क्षमता से भी रहित हैं कि क्या सही और गलत, फायदेमंद और हानिकारक, हानिकारक और विनाशकारी, और हानिकारक और स्वास्थ्यवर्धक है]। (कुरान, अध्याय 25, आयत 43-44)

لَقَدْ حَقَّ ٱلْقَوْلُ عَلَىٰٓ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

"उनमें से अधिकांश पर यह साबित हो चुका है कि वे [सच्चाई में] विश्वास नहीं करेंगे। (कुरान, अध्याय 36, श्लोक 7)

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

"[हे पैगंबर! इससे कोई फर्क नहीं पड़ता] चाहे आप उन्हें [गलत कार्यों में लिप्त होने के नतीजों के बारे में] चेतावनी दें या नहीं, वे [सच्चाई में] विश्वास नहीं करेंगे। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 6)

कुछ दिलों की सभी प्रकार की वासनाओं में एक जैसी अवस्था होती है, कुछ कुछ कामवासनाओं में उलझते हैं और कुछ किसी वासना के करीब भी नहीं जाते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग सामान्य पापों से दूर रहते हैं लेकिन जब वे एक सुंदर चेहरा देखते हैं, तो वे खुद को नियंत्रित नहीं कर पाते हैं और बुद्धि को पीछे छोड़ते हैं और उससे संबंधित गलत में शामिल हो जाते हैं। कुछ लोग शक्ति, प्रसिद्धि और पद [उच्च सामाजिक स्थिति का संकेत] के इतने भूखे होते हैं कि जब इसकी प्राप्ति का अवसर आता है, तो वे उसके पीछे पागलों की तरह भाग जाते हैं। कुछ लोग अपने स्वयं के दोषों के बारे में नहीं सुन सकते हैं और अपने अपमान को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। अगर कोई उनके खिलाफ एक शब्द भी कहता है, तो वह क्रोध से क्रोधित हो जाता है। कुछ लोग ईश्वर-भय (तकवा) और स्वच्छता (*तहारा*) के प्रति चौकस रहते हैं, लेकिन जब पैसे से निपटने की बात आती है, तो वे ईश्वर-भय और ईश्वरीय उत्कर्ष के सभी वस्त्रों को टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं और हड्डी पर कुत्ते की तरह धन और संपत्ति पर गिर जाते हैं। ये सभी पाप उन हृदयों द्वारा किए जाते हैं जो *निचले स्व (नफ्स) से जिद्दी* गलत सिर वाली मूर्खता (*हवा*) के धुएं से ढके होते हैं, आंतरिक अंतर्दृष्टि की चमक कम हो जाती है, शर्म [या विनम्रता जो सभी प्रकार की व्यभिचार और नीच के खिलाफ नैतिक संयम के रूप में कार्य करती है] और विश्वास चला जाता है, और ये लोग शैतान के उद्देश्य और उद्देश्य को पूरा करने में लगे रहते हैं।

वासना और विश्वास के बीच में दिल: तीसरे प्रकार के हृदय में जिद्दी गलत सिर वाली मूर्खता या निचले स्व की इच्छाओं से पैदा होने वाले विचार होते हैं जो इसे बुराई के लिए आमंत्रित करते हैं। उसी समय, विश्वास [शाश्वत सत्यों में] के विचार आते हैं और इसे अच्छाई और धार्मिकता के लिए आमंत्रित करते हैं। अपनी सभी वासनाओं के साथ निम्न स्व बुरे विचारों की ओर झुका हुआ है, वासनाओं को भड़काता है, और आनंद और आराम की उत्कृष्टता का वर्णन करता है। बुद्धि धार्मिकता के विचारों में सहायता करती है, वासनाओं की आलोचना करती है और निचले स्व को बताती है कि यह [इस मामले पर विचार किया जा रहा है] अज्ञानता का काम है और जानवरों और जंगली जानवरों के कार्यों से मिलता-जुलता है क्योंकि वे परिणामों की परवाह किए बिना बुराई पर गिर गए थे। यदि स्वयं बुद्धि की सलाह के प्रति झुका हुआ है, तो शैतान निचले स्व का पीछा करना छोड़ देता है और बुद्धि के पीछे चला जाता है और इस तरह वह वासनाओं से जुड़े कारकों को मजबूत करता है। शैतान बुद्धि से कहता है : "तुम बिना किसी कारण के अपने आप को क्यों सीमित करते हो? आपने अपनी इच्छाओं को एक तरफ क्यों रखा? क्या तुम्हारे समकालीनों में से कोई ऐसा व्यक्ति है जो किसी की इच्छाओं का विरोध करता है और उसकी ज़रूरतों को त्याग देता है? वे सांसारिक सुखों का अपना हिस्सा प्राप्त कर रहे हैं और आपके भाग्य में, केवल संकुचन [और अच्छे जीवन से संयम] है। वे भाग्यशाली हैं जबकि आप वंचित, दुर्भाग्यपूर्ण, परेशानियों से घिरे हुए हैं। दुनिया के लोग आपका मज़ाक उड़ाते हैं और दूसरों के उदाहरण देते हैं जिन्होंने उस मार्ग का अनुसरण किया है जो मैंने उन्हें चलने के लिए कहा था और महान पदों [और प्रसिद्धि] को प्राप्त किया है। आप उनके नक्शेकदम पर क्यों नहीं चलते? क्या आप ऐसे विद्वानों को नहीं देखते हैं जो वे अमुक चीजें करते हैं और अगर ये बुरी चीजें थीं तो उन्होंने (पवित्र और धार्मिक लोगों) ऐसा क्यों किया होगा? [इस

सशक्त और प्रतीत होने वाले तार्किक और ठोस अनुनय के परिणामस्वरूप,] निचला स्व शैतान की ओर झुक जाता है। इसी उदाहरण पर, देवदूत निचले स्व का मार्ग अवरुद्ध कर देता है और उसे बताता है: "एक व्यक्ति जो वर्तमान के सुख प्राप्त करने के लिए, सभी मामलों के अंतिम परिणाम और निष्कर्ष से बेखबर हो जाता है, नष्ट हो जाता है। क्या आप इन [अल्पकालिक सांसारिक] सुखों पर भरोसा करने के कारण स्वर्ग की शाश्वत आशीषों और खुशियों को छोड़ने के लिए तैयार हैं जो केवल कुछ दिनों तक रहेंगे? क्या आप नरक की पीड़ा को वासनाओं पर धैर्य रखने से आसान मानते हैं? लोगों का अनुसरण मत करो और शैतान के बहकावे में मत आओ। अन्य लोगों के पाप आपकी सजा के दर्द को कम नहीं कर सकते। यदि आपको भीषण गर्मी और गर्मी के समय एक आरामदायक और ठंडा घर मिलता है, तो क्या आप अभी भी उन लोगों के साथ होंगे [जो अल्पकालिक सांसारिक सुखों का आनंद लेने में व्यस्त हैं] या उस घर को पसंद करेंगे जहां शरीर सूरज की तीव्रता से पिघलते नहीं हैं और जहां हवा के गर्म झोंके शरीर को उत्तेजित नहीं करते हैं? संसार में तुम्हारी अवस्था (सांसारिक अस्तित्व) ऐसी है कि तुम सूर्य की गर्मी को सहन नहीं कर सकते। आप इसमें खड़े नहीं हो सकते हैं, तो यह अज्ञात है कि आपको नरक से डरने से क्या रोक रहा है? क्या नरक की गर्मी सूरज की गर्मी से कम है? इस सलाह से स्वयं का झुकाव देवदूत की ओर हो जाता है। संक्षेप में, देवदूत और शैतान के बीच संघर्ष और संघर्ष जारी है और इस झगड़े में, व्यक्ति अपने जीवन के मील के पत्थर को कवर करता है। कभी-कभी शैतानी गुण हावी हो जाते हैं और निम्न स्व पूरी तरह से शैतान की ओर झुका हुआ हो जाता है और उसका सहयोगी और सहायक बन जाता है। यह दयालु व्यक्ति (ईश्वर) के समूह से बचता है और वे सभी कार्य उसके शारीरिक अंगों के माध्यम से किए जाते हैं जिन्हें पूर्व-निर्धारित नियति द्वारा मुहरबंद कर दिया गया है और [ये कार्य ऐसे हैं] जो व्यक्ति को ईश्वर से दूर ले जाते हैं। जब स्वर्गदूतों के क्षेत्र से [महान] गुण हावी हो जाते हैं, तो स्वयं शैतान के जाल में नहीं फंसता है और उसके धोखे को नष्ट कर देता है। कोई परलोक के मामलों में आलस्य नहीं दिखाता है, बल्कि इसके बजाय दयालु (ईश्वर) के समूह को प्रणाम करता है और ऐसे कार्य उसके शारीरिक अंगों द्वारा किए जाते हैं जो ईश्वरीय स्वीकृति और अनुमोदन लाते हैं। यह भी पूर्व-निर्धारित नियति के अनुसार होता है। [पूर्वोक्त] भविष्यसूचक कथन कि "एक विश्वासी का हृदय दयालु व्यक्ति (परमेश्वर) की दो अंगुलियों के बीच में होता है" उसी संघर्ष की ओर इशारा करता है जो दो विरोधियों के बीच चल रहा है। ऐसे हृदय स्थायी रूप से [दो] समूहों में से किसी एक की ओर झुकाव नहीं रखते हैं, बल्कि इसके बजाय, ऐसे दिलों में क्रांति और परिवर्तन का कार्य जारी रहता है [क्योंकि वे अच्छे और बुरे की ताकतों के बीच एक कठिन संघर्ष और युद्ध के रणक्षेत्र हैं]।

आज्ञाकारिता और उल्लंघन के कार्य [ईश्वरीय आज्ञाओं के लिए] सभी भौतिक अस्तित्व के दायरे में अदृश्य के खजाने से प्रकट होते हैं और हृदय उन्हें लाने का एक साधन बन जाता है क्योंकि हृदय अदृश्य और पारलौकिक देवदूत क्षेत्र के खजाने से खजाना है। दिल के लोग इस उपस्थिति का उपयोग [ईश्वरीय रूप से नियुक्त] भाग्य की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए करते हैं। जिन्हें स्वर्ग के लिए बनाया गया है, उन्हें [दिव्य] आज्ञाकारिता के साधन प्रदान किए गए हैं, और जिन्हें नरक के लिए बनाया गया है, उन्हें अवज्ञा के साधन प्रदान किए गए हैं और उन्हें बुरे दोस्तों की संगति प्रदान की गई है, और उनके दिलों में शैतानी संकेत पैदा किए गए हैं।

शैतान ईश्वरीय दया और उदारता का संदर्भ देकर लोगों को अत्यधिक मूर्ख बनाता है। वह उन्हें यह भी बताता है कि बहुत सारा जीवन बचा है इसलिए पाप करना जारी रखें और फिर पश्चाताप करें [बाद में लंबे

जीवन के अंत में]। वह उन्हें यह भी बताता है कि ईश्वर से डरने वाले लोगों की कोई कमी नहीं है और यदि आप उनके मार्ग का विरोध करते हैं तो कुछ भी बुरा नहीं होगा। कुरान ने अपने [झूठे और भ्रामक] वादों की एक सटीक तस्वीर चित्रित की है:

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ إِلَّا غُرُورًا

"शैतान उनसे वादे करता है और उन्हें [लंबे जीवन की आशा के साथ] लालची बनाता है और शैतान उनसे केवल झूठी प्रतिज्ञाएँ करता है। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 120)

इसका मतलब है कि वह पश्चाताप का वादा करता है और क्षमा की आशा जगाता है और ऐसे बहानों और साजिशों से लोगों को नष्ट कर देता है। लोग शैतान के धोखे से प्रभावित हो जाते हैं और उसके तर्कों को स्वीकार करते हैं और [परिणामस्वरूप] उनके हृदय अनन्त भाग्य के निर्देशों से संकुचित हो जाते हैं जैसा कि परमेश्वर ने कहा है:

فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهْدِيَهُۥ يَشْرَحْ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُۥ

يَجْعَلْ صَدْرَهُۥ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى ٱلسَّمَآءِ

"इसलिए जिसके लिए ईश्वर मार्गदर्शन करना चाहता है, वह ईश्वरीय इच्छा (इस्लाम) के प्रति समर्पण के लिए अपने हृदय का विस्तार करता है, और जिसके लिए ईश्वर (ईश्वरीय मार्गदर्शन और शाश्वत सत्य के मार्ग से) भटकना चाहता है, वह किसी के हृदय को गंभीर रूप से संकुचित कर देता है जैसे कि कोई स्वर्ग पर चढ़ रहा हो। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 125)

إِن يَنصُرْكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۖ وَإِن يَخْذُلْكُمْ فَمَن ذَا ٱلَّذِى يَنصُرُكُم مِّنۢ بَعْدِهِۦ ۗ

अगर भगवान आपकी मदद करते हैं तो कोई भी आप पर हावी नहीं हो सकता है और अगर वह आपकी मदद नहीं करता है तो उसके बाद, कौन है जो आपकी मदद कर सकता है? और केवल परमेश्वर में, विश्वासियों को अपना भरोसा रखना चाहिए। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 160)

इन आयतों से यह सीखा जाता है कि केवल ईश्वर ही मार्गदर्शन प्रदान करने वाला है और वह ही है जो गुमराह करता है (इसलिए हर उस चीज से बचने की आवश्यकता है जो एक के साथ और अपने कार्यों के साथ ईश्वरीय अप्रसन्नता की ओर ले जाती है]:

يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ وَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ

"परमेश्वर वही करता है जो वह चाहता है और वह तय करता है कि वह क्या चाहता है।

कोई भी उसकी आज्ञा से बच नहीं सकता है, न ही कोई उसके निर्णय को अस्वीकार कर सकता है। उसने स्वर्ग और उन लोगों को बनाया जो इसके योग्य हैं और उन्हें [दिव्य] आज्ञाकारिता के मार्ग पर चलने के लिए

प्रेरित किया। उसने नरक और उन लोगों को भी बनाया जो इसके योग्य हैं और उन्हें [दिव्य] अवज्ञा के मार्ग पर चलने के लिए मजबूर किया और अपने सेवकों को स्वर्ग और नरक के योग्य लोगों के संकेत बताए और यह घोषणा की:

إِنَّ ٱلْأَبْرَارَ لَفِى نَعِيمٍ ﴿١٣﴾ وَإِنَّ ٱلْفُجَّارَ لَفِى جَحِيمٍ ﴿١٤﴾

"पवित्र और धर्मी आशीर्वाद और आराम में होंगे, और वास्तव में नीच नरक में होगा। (कुरान, अध्याय 82, आयत 13-14)

ईश्वर उच्च और सर्वोच्च है:

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ

"वह जो करता है उसके लिए उससे पूछताछ नहीं की जा सकती है, और दूसरों से पूछताछ की जा सकती है कि वे क्या करते हैं। (कुरान, अध्याय 21, श्लोक 23)

दिल के चमत्कारों पर यह संक्षिप्त विवरण पर्याप्त होगा और इस विषय पर इससे अधिक कहने के लिए बाहरी ज्ञान (बाहरी मामलों का ज्ञान या *इल्म अल-मुआमला) के संबंध में उपयुक्त नहीं है*। यहां जो उल्लेख किया गया है उसका उद्देश्य उन लोगों को विदेशी ज्ञान (उलूम अल-मुआमला) के रहस्यों और पेचीदगियों से परिचित कराना भी है जो बाह्यताओं (इस ज्ञान के बाहरी आयात) से जूझना नहीं चाहते हैं और बाहरी आवरण पर पिथ (आंतरिक सार) को पसंद करते हैं और वास्तविकताओं की [आंतरिक] जटिलताओं के लिए उत्सुकता रखते हैं। यह आशा की जाती है कि यह संक्षिप्त विवरण उनकी [शाश्वत सत्यों के लिए] प्यास बुझाएगा और उनके लिए लाभकारी होगा।

अध्याय 2- आत्मा की शुद्धि के लिए आध्यात्मिक संघर्ष, प्रदीप्त आंतरिक गुणों की प्राप्ति और आत्मा के आंतरिक अंधकार और रोगों को ठीक करना

ग़ज़ाली की दूसरी पुस्तक उनकी *महान कृति* "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में आत्मा की बीमारियों को ठीक करने और उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक कठोरता के माध्यम से प्रयास करने से संबंधित है। यह बदले में आत्मा को परिष्कार, जागरूकता, आध्यात्मिक उत्थान और ज्ञान (मारिफा) के उच्च स्तर तक ले जाता है, जो प्रत्येक मनुष्य के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक स्तरों पर आपदाओं को दूर करने और व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर मानवता के

उत्थान के लिए आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए एक व्यक्तिगत अनिवार्यता के रूप में है। इस पुस्तक को यहां संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है [8]:

बता दें कि चरित्र की सुंदरता पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की [आंतरिक और सहज] विशेषता है और आध्यात्मिक रूप से सिद्ध, संतों, ज्ञानवादियों और रहस्यवादियों (सिद्दीकीन) की सबसे श्रेष्ठ क्रिया है। वास्तव में, यह धर्म का आधा हिस्सा है। यह ईश्वर का भय मानने वालों और धर्मनिष्ठ उपासकों के आध्यात्मिक प्रयास का फल है। बुरी नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र घातक जहर हैं और उनके भाग्य में अपमान, निराशा और बदनामी है। वे एक को परमेश्वर से दूर करते हैं और शैतान के करीब लाते हैं। ये नरक के प्रवेश बिंदु हैं।

सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक स्वभाव, स्वभाव, अस्तित्व की स्थिति, और चरित्र (*इखलाक अल-हसन)* स्वर्ग के लिए खुले दरवाजे हैं और दिव्य निकटता और अंतरंगता के साधन हैं। खराब नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र (*इखलाक अल-कबीथा*) दिल की बीमारियां और बीमारियां हैं। शारीरिक रोग सांसारिक जीवन से वंचित कर देते हैं और हृदय और आत्मा के रोग परलोक के [शाश्वत] जीवन को समाप्त कर देते हैं। शरीर के रोगों और हृदय और आत्मा के रोगों के बीच कोई स्पष्ट संबंध नहीं है, लेकिन हम देखते हैं कि चिकित्सक शारीरिक रोगों का इलाज करते हैं और उन्होंने असंख्य नियम और विनियम तैयार किए हैं और उनके प्रकाश में, निदान किया जाता है और दवाएं निर्धारित की जाती हैं। जब मनुष्य इस नश्वर शरीर के रोगों के संबंध में प्रयास करता है, तो उसे हृदय और आत्मा के रोगों के संबंध में भी प्रयास करना चाहिए। इस तरह की बीमारियों में एक पद्धति भी होती है [निदान और इलाज और उसके लिए आवश्यक ज्ञान] जो हर इंसान के लिए सीखने के लिए आवश्यक है क्योंकि हर दिल में कुछ बीमारियां होती हैं, अगर वे ठीक नहीं होती हैं तो वे विनाशकारी हो जाती हैं और उनके परिणामस्वरूप उनमें से कई अन्य बीमारियां पैदा होती हैं। इसलिए इन बीमारियों का ज्ञान प्राप्त करना, उनके कारणों की खोज करना और उनके इलाज के तरीकों से परिचित होना महत्वपूर्ण है। कुरान की निम्नलिखित आयत में:

قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّىٰهَا

"वास्तव में, एक व्यक्ति को खुशी और सच्ची सफलता मिली जिसने इसे शुद्ध किया (यानी, इसके सभी रोगों की आत्मा)। (कुरान, अध्याय 91, श्लोक 9)

इसका मतलब है कि हृदय का इलाज है:

وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّىٰهَا

"और वंचित और असफल वह है जिसने आत्मा को बर्बाद कर दिया [ईश्वरीय मार्गदर्शन, नैतिक गिरावट, आंतरिक भ्रष्टाचार, नकारात्मकता और नीचता के खिलाफ अपराधों के साथ]। (कुरान, अध्याय 91, श्लोक 10)

यह श्लोक [हृदय की बीमारियों और बीमारियों] को ठीक करने में लापरवाही का उल्लेख कर रहा है। इस पुस्तक में हृदय की कुछ बीमारियों और उनके इलाज की अवस्थाओं के बारे में संक्षेप में बताया जाएगा। इस [तीसरे] खंड की शेष पुस्तकों में हर बीमारी को अलग-अलग समझाया जाएगा [ग़ज़ाली के "*इहया अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" जो विशेष रूप से आत्मा के विनाशकारी गुणों से संबंधित है]। यहां उद्देश्य नैतिकता, शिष्टाचार और आंतरिक चरित्र उत्कृष्टता का अधिग्रहण करना है और इसे प्राप्त करने के तरीकों पर प्रकाश डालना है। लेकिन सबसे पहले, शारीरिक बीमारी के इलाज का उल्लेख एक उदाहरण के रूप में किया जाएगा [या आध्यात्मिक बीमारियों को ठीक करने के लिए एक सादृश्य]। इस चर्चा के साथ, सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र की उत्कृष्टता को इसकी वास्तविकता के साथ समझाया जाएगा। इसके अलावा, यह समझाया जाएगा कि एक दृढ़ [आध्यात्मिक] प्रयास के माध्यम से, अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र लक्षणों को अपनाया जा सकता है (विकसित और प्राप्त)। अच्छे चरित्र लक्षण प्राप्त करने के तरीकों और साधनों के बारे में बताया जाएगा। सभ्यता और चरित्र के परिष्करण और आध्यात्मिक प्रयासों के तरीकों के साथ-साथ उन संकेतों और संकेतों का उल्लेख किया जाएगा जिनके माध्यम से हृदय के रोगों की पहचान की जाती है।

अच्छे महान चरित्र की उत्कृष्टता और बुरे घृणित चरित्र के नुकसान

छंद और भविष्यसूचक कथन: ईश्वर ने अपने प्रिय पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की प्रशंसा करते हुए उन पर अपना इनाम व्यक्त करते हुए कहा:

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ

"वास्तव में, आप महान और उदात्त चरित्र के एक ऊंचे स्तर पर हैं। (कुरान, अध्याय 68, श्लोक 4)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

هو ان تصل من قطعک و تعطی من حرمک و تعفو عمن ظلمک

"चरित्र की सुंदरता यह है कि आप उन लोगों से जुड़ते हैं जो आपके साथ [आपके रिश्तेदारों से] संबंध तोड़ते हैं, आप दयालु, दयालु होते हैं और उस व्यक्ति को देते हैं जो आपको वंचित करता है, और आप उस व्यक्ति को माफ करते हैं जो आप पर अत्याचार करता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *इब्न मर्दाविया* [भविष्यद्वाणी के साथी] जाबिर, अनस और कैस बिन साद बिन उबादा के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

उन्होंने यह भी कहा:

انما بعثت لاتمم مكارم الاخلاق

"मुझे [दिव्य रूप से] अच्छे चरित्र, नैतिकता और शिष्टाचार की पूर्णता और पूर्णता के लिए नियुक्त किया

गया है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *मुसनद अहमद*, *हाकिम* और *बयाकी* [भविष्यद्वाणी के साथी] अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

اثقل مايوضع فى الميزان يوم القيامة تقوى الله و حسن الخلق

"न्याय के दिन कर्मों (मीजान) के पैमाने पर सबसे भारी चीज जो रखी जाएगी, वह है ईश्वर का भय और अच्छे चरित्र, नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक स्वभाव और स्वभाव। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *अबू दाऊद* और *तिर्मिज़ी* [भविष्यद्वक्ता साथी] अबू अल-दर्दा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक व्यक्ति ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पूछा: "हे ईश्वर के दूत! अपशकुन क्या है (यानी, जो कुछ भी अच्छा है उससे वंचित)? उन्होंने जवाब दिया: "बुरा चरित्र, नैतिकता और शिष्टाचार"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है [पैगंबर की पत्नी] आयशा के अधिकार पर मुसनद अहमद [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

एक आदमी पैगंबर के पास आया और उनसे सलाह मांगी। उसने उत्तर दिया:

اتق الله حيث كنت، قال: زدنى، قال اتبع السيئة الحسنة تمحها، قال: زدنى
قال: خالق الناس بخلق حسن

"पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय रखो, चाहे आप कहीं भी रहते हों। उन्होंने और सलाह मांगी। पैगंबर ने जवाब दिया: "यदि आप कुछ गलत करते हैं या पाप करते हैं, तो कुछ अच्छा और महान करने के साथ इसका पालन करें जैसे अच्छे कर्म पापों को मिटा देते हैं"। उन्होंने और सलाह मांगी। पैगंबर ने जवाब दिया: "लोगों के साथ अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र के साथ व्यवहार करें"।

उनसे पूछा गया: "हे ईश्वर के दूत! सभी कार्यों में सबसे अच्छा क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया: "सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र"।

अबू अल-दर्दा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा कि उन्होंने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को यह कहते हुए सुना:

اول مايوضع فى الميزان حسن الخلق والسخاء، ولما خلق الله الايمان قال:
اللهم قونى، فقواه بحسن الخلق والسخاء ولما خلق الله الكفر قال اللهم
قونى، فقواه بالبخل وسوء الخلق

उन्होंने कहा, "कर्मों के पैमाने (मीजान) में सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र (*हुस्न-उल-खुलक*) और उदारता (*सखा) को* पहले स्थान पर रखा जाएगा। जब परमेश्वर ने [उसमें] विश्वास पैदा किया, तो उसने पूछा: "हे परमेश्वर! मुझे सशक्त और मजबूत बनाओ!' भगवान ने इसे सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र (*हुस्न-उल-खुलक*) और उदारता (*सखा) के साथ मजबूत किया।* जब उसने ईश्वर (कुफ्र) के प्रति अविश्वास और अस्वीकृति पैदा की, तो उसने पूछा: 'हे भगवान! मुझे सशक्त और मजबूत बनाओ!' भगवान ने इसे

कंजूसी (बुखुल) और बुरी घृणित नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र (सु *उल-खुलक) की शक्ति दी*। (हाफ़िज़ इराकी, के एक महान विद्वान *हदीस या भविष्यसूचक कथन, जिन्होंने* इस पुस्तक इमाम ग़ज़ाली की "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" में हदीसों के स्रोत संदर्भ पर शोध और प्रदान किया, ने कहा कि वह इस हदीस का स्रोत संदर्भ खोजने में सक्षम नहीं थे, हालांकि, *हदीस* संग्रह अबू *दाउद* और *तिर्मिज़ी* उसी कथावाचक (अबू अल-दर्दा [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो)) से एक भविष्यद्वाणी परंपरा का वर्णन किया है: "कर्मों के पैमाने में, सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र से भारी कुछ भी नहीं होगा")

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

ان الله استخلص هذا الدين لنفسه ولا يصلح لدينكم الا السخاء وحسن الخلق الا فزينوا دينكم بهما

"भगवान ने इस धर्म को अपने लिए और आपके धर्म (दीन या भगवान के मार्ग) के लिए उदारता और सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र से अधिक उपयुक्त कुछ भी नहीं है। चौकस रहना! इन दोनों गुणों से अपने धर्म को सुशोभित करें। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *दार क़ुतनी* और *खारा-एती* [पैगंबर साथी] अबू सईद अल-खुदरी के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक भविष्यसूचक कथन में कहा गया है:

حسن الخلق خلق الله الاعظم

"सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र ईश्वर का [दिव्य] गुण है, जो सर्वोच्च है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *तबरानी अवसत* [भविष्यद्वाणी के साथी] अम्मार बिन यासिर के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

انكم لن تسعوا الناس باموالكم فسعوهم ببسط الوجه وحسن الخلق

"यदि आप अपने धन और संपत्तियों के माध्यम से लोगों के साथ विस्तार नहीं कर सकते हैं (यानी, यदि आपके पास अपनी उदारता के साथ लोगों की जरूरतों को पूरा करने में मदद करने के लिए वित्तीय साधन नहीं हैं) तो उनके साथ विस्तार करें (लोगों के प्रति उदार बनें) मुस्कुराते हुए चेहरे और सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र के साथ [उनके प्रति]। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* [पैगंबर साथी] अबू हुरैरा के अधिकार पर *बज़्ज़र,* अबू *याला* और *तबरानी को* इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

बारा बिन आज़िब (रज़िल उन पर प्रसन्न हो) ने कहा: "पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) सबसे सुंदर और अच्छे दिखने वाले और लोगों के प्रति सबसे अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और व्यवहार के थे। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *खारा-एती)*

अबू मसूद (रजि.) ने बताया कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) निम्नलिखित प्रार्थना करते थे:

اَللّٰهُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِيْ فَحَسِّنْ خُلُقِيْ

"हे परमेश्वर! तुमने मेरे बाहरी रूप को अच्छा बना दिया है, कृपया मेरे आंतरिक चरित्र को भी अच्छा बना दें (दूसरे शब्दों में, केवल अच्छा दिखना ही पर्याप्त नहीं है क्योंकि बुराई और नीच आंतरिक अस्तित्व के साथ अच्छा दिखना किसी काम का नहीं है; जो चीज किसी को वास्तव में सुंदर बनाती है वह है सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव के साथ-साथ अच्छा दिखना, यानी, एक सुंदर दिल और आत्मा)। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *खारा-एती*)

अब्दुल्लाह बिन उमर (रल्लम उन पर प्रसन्न हो) ने कहा कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) निम्नलिखित प्रार्थना बहुतायत से और गहराई से करते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ الصِّحَّةَ وَالْعَافِيَةَ وَحُسْنَ الْخُلُقِ

"हे परमेश्वर! मैं आपसे विनती करता हूं कि आप मुझे अच्छा स्वास्थ्य, शांति और सुरक्षा प्रदान करें [इस दुनिया और परलोक में सभी नुकसानों से], और सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र (क्योंकि इन आशीर्वादों का संयोजन ईश्वर द्वारा प्रदत्त आशीर्वादों की पूर्णता है)"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *खारा-एती*)

उसामा बिन शरीफ (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "एक बार मैं पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से मिलने गया था, जब कुछ रेगिस्तानी अरब उनसे सबसे अच्छी चीज के बारे में पूछ रहे थे जो एक सेवक [ईश्वर के] को प्रदान की गई है। उन्होंने जवाब दिया: 'सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (*हुस्न उल-खुलक*)'। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्ने माजा*)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

ان احبكم الى واقربكم منى مجلسا يوم القيامة احسنكم اخلاقا

"न्याय के दिन, वे लोग मेरे सबसे प्रिय और सबसे करीब होंगे जिनके पास बेहतर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव है।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाई गई है:

ثلاث من لم تكن فيه او واحدة منهن فلا تعتدوا بشی من عمله تقوى
تحجزه عن معاصی الله او حلم یکف به السفیه او خلق یعیش به بین الناس

"जिस व्यक्ति के पास ये तीन चीजें नहीं हैं या उनमें से कोई एक नहीं है, वह अपने किसी भी कर्म पर भरोसा नहीं करता है: पवित्र, भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय *(तकवा)* जो किसी को ईश्वर की अवज्ञा से रोकता है; धैर्य, सहनशील स्वभाव, दया और संयम (*हिल्म*) जो किसी को मूर्ख व्यक्ति के साथ [लड़ने] से रोकता है; और अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (खुलक) जिनके साथ कोई लोगों के बीच अपना जीवन जीता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* उम्म सलमा के अधिकार पर *खारा-एती* और *तबरनी कबीर* का संग्रह करती है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव की गुणवत्ता को आगे बताया:

من سعادة المرء حسن الخلق

"सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (*हुस्न-उल-खुलक*) शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के लिए परिवर्तनकारी एजेंट [परिवर्तन का] में से एक है (*सादाह*) एक व्यक्ति के लिए"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *खारा-एती*)

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने एक बार कहा था:

ان المسلم المسدد ليدرك درجة الصائم القائم بحسن خلقه وكرم مزيته

"एक मुसलमान जिसे ईश्वर अच्छा करने की क्षमता देता है, वह एक उपासक का पद प्राप्त करता है जो पूरी रात उपवास करता है और अपनी सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र के माध्यम से और अपने दयालु आंतरिक स्वभाव के माध्यम से भगवान की पूजा करता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *अब्दुल्ला बिन अम्र के अधिकार पर हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने एक बार कहा था:

ان العبد ليبلغ خلقه عظيم درجات الاخرة و شرف المنازل واله لضعيف
فى العبادة

"एक सेवक [ईश्वर का, यानी, एक मनुष्य] अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव के माध्यम से महान [आध्यात्मिक] रैंक और डिग्री प्राप्त करेगा, भले ही कोई [दिव्य] पूजा में कमजोर हो"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अनास बिन मलिक के अधिकार पर *खारा-एती* और *तबरनी* का संग्रह करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

سوء الخلق ذنب لا يغفر وسوء الظن خطيئة تضوح

"खराब नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और नीच आंतरिक स्वभाव एक अक्षम्य पाप है और दूसरों के बारे में बुरी राय रखना एक ऐसा पाप है जो अन्य पापों को जन्म देता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तबरनी सगीर* [पैगंबर की पत्नी] आयशा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

जुनैद बगदादी ने कहा, "ज्ञान और धर्मी कार्यों की कमी के बावजूद, चार गुण हैं जो मनुष्य को महान आध्यात्मिक डिग्री तक ले जाते हैं: पहला है सहनशीलता, दूसरा विनम्रता, तीसरा उदारता और चौथा है सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव। ये चार गुण विश्वास की पूर्णता हैं। कट्टानी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "*तसव्वुफ* (ज्ञान, व्यावहारिक पद्धति और आध्यात्मिकता की स्थिति) *अखलाक* (सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव) का नाम है। जो अखलाक में बड़ा है वह तसव्वुफ *में भी बड़ा है*। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव वाले लोगों से मिलें और अपने कार्यों से उनसे दूर रहें [ताकि उन्हें कोई नुकसान न हो]। याह्या बिन मुआद (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "बुरी नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र एक ऐसी बुराई है जिसकी उपस्थिति में अच्छे कर्मों की प्रचुरता फायदेमंद नहीं है। अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र एक ऐसा गुण है जिसकी उपस्थिति में कमियों की प्रचुरता हानिकारक नहीं है। अब्दुल्ला बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) से पूछा गया: "बड़प्पन (करम) क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया: "कुरान में बड़प्पन का उल्लेख इस प्रकार है:

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ

'वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में तुम लोगों में से जो महान है, वह वह है जिसके पास परमेश्वर के प्रति पवित्र भय, श्रद्धा और भय है (*तकवा*)'". (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 13)

अब्दुल्ला बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "हर इमारत की एक नींव होती है और इस्लाम की नींव सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव है। अत (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "जिसने भी [आध्यात्मिक] ऊंचाइयों को प्राप्त किया, सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव के माध्यम से प्राप्त किया। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के अलावा किसी और ने सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव में पूर्णता प्राप्त नहीं की। वे लोग ईश्वर के करीब हैं जो सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (हुस्न उल-खुलक) का पोषण करने में पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के नक्शेकदम पर चलते *हैं*।

अच्छे महान चरित्र और बुरे घृणित चरित्र की वास्तविकता

सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव की वास्तविकता: दो [प्रासंगिक] शब्द हैं - *खल्क* (अच्छा बाहरी रूप) और *खुलक* (अच्छा आंतरिक चरित्र और स्वभाव)। इन दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग भी किया जाता है। उदाहरण के लिए, यह कहा जाता है कि फलां व्यक्ति अच्छा दिखने वाला और अच्छा चरित्र दोनों है। क्रम में कहें तो व्यक्ति का रूप अच्छा होता है और उसकी नैतिकता,

शिष्टाचार, आचरण, चरित्र और आंतरिक स्वभाव भी अच्छा होता है। इस व्यक्ति में बाहरी सुंदरता के साथ-साथ आंतरिक सुंदरता भी होती है। इस तरह के एक बयान में, *खल्क का* अर्थ है बाहरी रूप और खुलक का अर्थ है आंतरिक उपस्थिति और ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य शरीर और आत्मा का एक संयोजन है। शरीर को आंख से देखा जा सकता है और आत्मा को अंतर्दृष्टि (*बसीराह*) या आंतरिक आंख से देखा जा सकता है। शरीर और आत्मा दोनों की एक स्थिति और उपस्थिति है। यह रूप मनभावन और बदसूरत दोनों हो सकता है। आत्मा, जिसे अंतर्दृष्टि (बसीराह) या आंतरिक आंख के माध्यम से देखा जाता है, आंख द्वारा देखे गए शरीर से श्रेष्ठ और ऊंचा है। इसलिए, ईश्वर ने आत्मा को स्वयं को जिम्मेदार ठहराते हुए, इसकी महानता को इस प्रकार व्यक्त किया:

إِنِّي خَـٰلِقٌۢ بَشَـرًا مِّن صَلْصَـٰلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِى فَقَعُوا۟ لَهُۥ سَـٰجِدِينَ ﴿٢٩﴾

"मैं एक ध्वनि मिट्टी से मनुष्य बनाने जा रहा हूं। इसलिए, जब मैं इसे बनाना समाप्त कर लेता हूं और इसमें (यानी, मनुष्य का बाहरी रूप जो शरीर है) मुझसे एक आत्मा डाल देता हूं, तो आप सभी [हे स्वर्गदूतों] उसके सामने साष्टांग प्रणाम करते हुए गिर गए (मेरी इच्छा और मनुष्य को बनाने के ईश्वरीय उद्देश्य के प्रति समर्पण करने के लिए और अपनी आत्मा की ऊंचाई के अधीन होने के लिए, दिव्य रहस्य और आध्यात्मिक उपलब्धि के शिखर तक पहुंचने की क्षमता के कारण, इसमें अंतर्निहित रूप से निहित दिव्य ज्ञान के रूप में)। (कुरान, अध्याय 15, आयत 28-29)

इस श्लोक में, शरीर का श्रेय मिट्टी को दिया गया है और आत्मा को भगवान को जिम्मेदार ठहराया गया है। यहां आत्मा (रुह) और स्वयं (*नफ्स*) एक ही चीज को संदर्भित करते हैं और यदि आत्मा के स्थान पर स्वयं शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो कोई भ्रम नहीं होना चाहिए। अब *खुलक* (आंतरिक चरित्र और स्वभाव) की व्याख्या सुनते हैं। *खुलक* स्वयं की ऐसी अंतर्निहित आंतरिक अवस्था का नाम है जिसके माध्यम से कर्म आसानी से किए जाते हैं। यदि इस स्थिति से उत्पन्न कर्म ईश्वरीय नियम (शरिया) और बुद्धि के अनुसार अच्छे हैं तो इसे सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव कहा जाएगा और यदि कर्म खराब हैं तो इसे खराब नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव कहा जाएगा।

इस परिभाषा में, स्वयं की अंतर्निहित आंतरिक स्थिति की स्थिति ताकि कर्म आसानी से और सहजता से किए जा सकें, इसलिए निर्धारित किया गया था क्योंकि [धर्मार्थ कार्यों में और जरूरतों में लोगों की मदद करने के लिए], बल और संघर्ष आदि के माध्यम से क्रोध को नियंत्रित करने का प्रयास करने के लिए, सहनशीलता नहीं है क्योंकि *खुलक* (आंतरिक चरित्र और स्वभाव) एक ऐसी चीज है जो बिना किसी प्रयास के कर्मों (या तो अच्छे या बुरे) के माध्यम से खुद को व्यक्त करती है।

यहाँ चार मामले हैं: पहला, कोई कर्म अच्छा है या बुरा; दूसरा, चाहे वह अच्छा या बुरा कर्म करने में सक्षम हो; तीसरा, उनकी वास्तविकता को जानना (अर्थात, कर्म चाहे वे अच्छे हों या बुरे); चौथा, स्वयं के भीतर एक अंतर्निहित आंतरिक स्थिति की उपस्थिति जो सौंदर्य या कुरूपता की ओर प्रवृत्त हो जाती है और उनमें से कोई एक इसके लिए आसान हो जाता है। *खुलक* (आंतरिक चरित्र और स्वभाव) चौथे अर्थ से संबंधित है - दूसरे शब्दों में, यह अंतर्निहित आंतरिक अवस्था है [स्वयं के भीतर गहराई से समाई हुई] जिसके माध्यम

से मनुष्य सक्रिय रूप से कंजूसी या उदारता में [या तो नकारात्मक या सकारात्मक गतिविधि जैसे] में लगा हुआ है।

आंतरिक सौंदर्य के चार घटक: जिस तरह बाहरी सुंदरता केवल सुंदर आंखों का नाम नहीं है, बल्कि सभी अंगों - आंखों, नाक, कान, होंठ, गाल आदि का संतुलन और अनुपात - सौंदर्य कहलाता है और इन सभी की सुंदरता के माध्यम से, सुंदरता की पूर्णता [और पूर्णता] आती है। इसी तरह, आंतरिक सुंदरता के भी चार घटक होते हैं और [आंतरिक सुंदरता को धारण करने के लिए] सभी चार घटकों में सुंदरता होना आवश्यक है। यदि ये सभी [चार] घटक संतुलित और आनुपातिक रहें, तो मनुष्य आंतरिक सुंदरता के मामले में पूर्ण कहलाएगा। ये चार घटक हैं ज्ञान की शक्ति, क्रोध की शक्ति, इच्छा की शक्ति और न्याय की शक्ति, यानी पहली तीन शक्तियों को संतुलन और संयम की स्थिति में रखने की शक्ति।

ज्ञान की शक्ति की उत्कृष्टता और सुंदरता यह है कि इसके माध्यम से, एक मनुष्य कथनों में झूठ और सत्य, विश्वासों में सत्य और असत्य, और कार्यों में सुंदरता और कुरूपता के बीच अंतर करने में सक्षम हो जाता है। जब यह शक्ति इस स्तर पर पहुंच जाएगी, तो इसका फल ज्ञान (हिकमा) के रूप में दिया जाएगा। सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (*इखलाक) की वास्तविकता* वह ज्ञान है जिसके बारे में परमेश्वर कहते हैं:

وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِىَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ

"और जिसे बुद्धि दी गई है, उसे बहुत भलाई [का स्रोत] मिला है। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 269)

क्रोध और इच्छा की शक्तियों की उत्कृष्टता यह है कि, ये दोनों बुद्धि की दिशा में कार्य करते हैं, अर्थात बुद्धि और ईश्वरीय नियम। संतुलन और न्याय की शक्ति का उद्देश्य क्रोध और इच्छा की शक्तियों को ज्ञान के अधीन और अधीन बनाना है। बुद्धि एक सलाहकार और दयालु सहायक की तरह है और संतुलन और न्याय की शक्ति बुद्धि से सलाह का कार्यान्वयन करती है। क्रोध वह शक्ति है जिसमें बुद्धि की दिशा को स्वीकार करने की क्षमता होती है। इसकी समानता एक शिकारी कुत्ते की तरह है जिसे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और उसके बाद यह ऐसा हो जाता है कि शिकारी के संकेत के बिना, यह न तो आगे बढ़ता है और न ही पीछे की ओर पीछे हटता है। इच्छा एक घोड़े की तरह है जो शिकार पर निकलने के लिए घुड़सवार होता है। घोड़ा कभी प्रशिक्षित और सभ्य होता है तो कभी जंगली और विद्रोही। संतुलन और न्याय की शक्ति के माध्यम से, इच्छा को नियंत्रण में रखा जाता है अन्यथा शिकार [शाश्वत सुख और अनन्त सफलता] के बजाय, मनुष्य स्वयं शिकार हो जाता है।

जिसके पास [संतुलित] संयम के स्तर पर [आंतरिक सुंदरता के] इन चार घटकों को धारण करता है, वह सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव का व्यक्ति होगा। एक व्यक्ति जिसके पास

[आंतरिक सुंदरता के] कुछ घटक संयमित हैं और कुछ असंतुलित और असंयमित हैं (यानी, चरम सीमा पर क्योंकि किसी के पास इन घटकों का बहुत कम या बहुत अधिक हो सकता है) तो एक को मध्यम लोगों के संबंध में अच्छा चरित्र कहा जाएगा। इसका उदाहरण उस व्यक्ति की तरह है जिसके चेहरे पर खूबसूरत आंखें हैं, लेकिन अन्य चीजें अच्छी नहीं हैं। इस मामले में, किसी को आंखों के संबंध में सुंदर और अन्य अंगों के संबंध में बदसूरत कहा जाता है। क्रोध की शक्ति की सुंदरता और संतुलित संयम को बहादुरी कहा जाता है; इच्छा की शक्ति के संतुलित संयम और सौंदर्य को मासूमियत (*'इफा)* कहा जाता है। यदि क्रोध की शक्ति संतुलित संयम के स्तर से अधिक है, तो इसे अत्यधिक क्रोध (*ताहूर)* कहा जाएगा; यदि यह संतुलित संयम के स्तर से नीचे है तो इसे कायरता कहा जाएगा। इसी तरह, संतुलित संयम के स्तर से ऊपर इच्छा की शक्ति को "बुराई का भड़कानेवाला" (शार) कहा जाता है और संतुलित संयम के स्तर से नीचे को ठहराव (जमूद) कहा जाता है। दोनों [चरम सीमाओं] के बीच आवश्यक संतुलित संयम का स्तर बहादुरी और मासूमियत है। स्पेक्ट्रम या चरम सीमाओं के दो सिरों पर क्या है, दूसरे शब्दों में, कमी या अधिकता उद्देश्य नहीं है, इसके बजाय, उनकी (चरम सीमाओं) निंदा की गई है और उत्कृष्टता (*फदा-इल) कहे जाने के बजाय*, उन्हें विकृति (राधा-इल) कहा जाता है। न्याय की शक्ति (*'Adl)* में कोई कमी या अधिकता नहीं है [जैसा कि यह संतुलित संयम के स्तर पर है] और इसके विपरीत उत्पीड़न है। जब न्याय नहीं होता है, तो उत्पीड़न बाहर निकलता है। ज्ञान के संतुलित संयम के स्तर को ज्ञान (हिकमा) कहा जाता है और गलत उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग करना इसे संतुलित संयम के स्तर से बाहर निकालना है। यदि इसका उपयोग [गलत तरीकों से] अधिकता के लिए है, तो इसे बुराई और धोखे कहा जाता है और यदि इसका उपयोग कमी के लिए है तो इसे मूर्खता कहा जाता है। ज्ञान का मध्य स्तर [जो सभी चरम सीमाओं से बचता है] ज्ञान कहलाता है। इन विवरणों से पता चलता है कि अच्छे चरित्र (इखलाक) के मूल सिद्धांत और घटक चार हैं: ज्ञान, बहादुरी, मासूमियत और न्याय।

बुद्धि स्वयं की स्थिति (*नफ्स*) को संदर्भित करती है जिसमें कोई सही और गलत में अंतर कर सकता है, वे सभी मामले हैं जो किसी की क्षमता के भीतर हैं। न्याय स्वयं की स्थिति (*नफ्स*) को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से व्यक्ति क्रोध और इच्छा पर शासन करता है और उन्हें ज्ञान के अधीन बनाता है। बहादुरी उस स्थिति को संदर्भित करती है जिसमें क्रोध की शक्ति बुद्धि की शक्ति के अधीन और आज्ञाकारी होती है और उनकी अनुमति के बिना कार्य नहीं करती है या कार्य करने से परहेज नहीं करती है। मासूमियत उस शक्ति को संदर्भित करती है जिसके माध्यम से, इच्छा और वासना को अनुशासित और बुद्धि और ईश्वरीय कानून के अधीन बनाया जा सकता है। सभी अच्छे गुणों और चरित्र लक्षणों की उत्पत्ति और स्रोत ये चार सिद्धांत हैं। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित प्रशंसनीय आंतरिक गुण बुद्धि की शक्ति के संतुलित संयम से पैदा होते हैं: मामलों के माध्यम से सोचकर बुद्धिमान निर्णय लेना, दिमाग का तीक्ष्णता, मामलों पर बुद्धिमान दृष्टिकोण, निचले स्व के छिपे हुए नुकसान के बारे में जागरूकता और मामलों और कार्यों की सूक्ष्मता। इस शक्ति की अधिकता [बुद्धि की] गलतियों के प्रति आंतरिक नकारात्मक स्वभाव को जन्म देती है, [दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिए], धोखे और चालाकी की योजना बनाती है। गरीबी [बुद्धि की शक्ति की] अनुभव की कमी (विशेषज्ञता और जानकारी), मूर्खता, मूर्खता, जागरूकता की कमी

[मामलों की वास्तविकताओं के बारे में] और जुनून (जुनूनी व्यवहार) जैसी बीमारियों को जन्म देती है। अनुभव की कमी से तात्पर्य कल्पना विचार प्रक्रिया की सुदृढ़ता के बावजूद अनुभव नहीं होने से है क्योंकि कुछ व्यक्ति एक मामले में अनुभवी होते हैं लेकिन दूसरे में पूरी तरह से अनुभवहीन होते हैं। मूर्खता और जुनून के बीच अंतर यह है कि मूर्ख व्यक्ति का उद्देश्य सही है लेकिन उद्देश्य को प्राप्त करने का तरीका नहीं जानता है। जुनून एक ऐसी चीज को अपनाना है जो अपनाने के लायक नहीं है क्योंकि यह एक और दूसरे के लिए पूरी तरह से हानिकारक है। बहादुरी का संतुलित संयम इन सुंदर आंतरिक गुणों को बढ़ावा देता है: बड़प्पन, दुस्साहस, स्वयं पर कड़ी नजर रखना, सहनशीलता, दृढ़ता, क्रोध को रोकना, गरिमा, संयम, आदि। बहादुरी की शक्ति की कमी अपमान, अपमान, भय, सस्तापन, हीन भावना, साहस की कमी और कम मनोबल को जन्म देती है। मासूमियत का संतुलित संयम उदारता, विनम्रता और शर्मीलापन, धैर्य, दूसरों के दोषों को नजरअंदाज करने, संतोष, ईश्वर का भय, सूक्ष्मता, उच्च साहस और मनोबल, व्यापक हृदय और उदारता और लालच की कमी को बढ़ावा देता है। मासूमियत के संतुलित संयम की सीमाओं को पार करने के लिए आंतरिक रोगों और नकारात्मक विनाशकारी गुणों को जन्म देता है जैसे कि लालच, लोभ, निर्लज्जता, बुराई के प्रति आंतरिक स्वभाव, फिजूलखर्ची और खर्चीला, आडम्बर, दूसरों का अपमान करना, बड़बड़ाना, चापलूसी, ईर्ष्या, अपमानित करना और गरीब और विनम्र को नीचा दिखाना।

इसका नतीजा यह है कि सुंदर चरित्र, गुण और आंतरिक स्वभाव के चार सिद्धांत हैं: ज्ञान, बहादुरी, मासूमियत और न्याय। अन्य सभी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षण और गुण इन चार प्रमुख गुणों की शाखाएं हैं। इन चार सिद्धांतों (नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षणों और गुणों की उत्कृष्टता) में, संतुलित संयम की पूर्णता पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के अलावा किसी और को नहीं दी गई थी। उनके बाद आने वाले लोग इस उत्कृष्टता और पूर्णता में उनके करीब नहीं हैं। इन गुणों में एक व्यक्ति जिस हद तक पैगंबर से मिलता-जुलता है और उसका अनुकरण करता है, वह उस हद तक ईश्वर के करीब होगा और जो इन गुणों में पैगंबर से दूर है, वह उस हद तक ईश्वर से दूर होगा। एक व्यक्ति जो इन सभी सुंदर नैतिकताओं, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षणों और गुणों का अवतार है, वह किसी के सभी कार्यों में दूसरों द्वारा आज्ञाकारी, संदर्भित और अनुसरण करने का हकदार है। वह व्यक्ति जो उनसे रहित है और इसके बजाय उनके विरोधियों का मूर्त रूप है, उसे शहर से निर्वासित किया जाना चाहिए और लोगों द्वारा उसका बहिष्कार किया जाना चाहिए क्योंकि ऐसे व्यक्ति में मानवता नहीं बची है, बल्कि वह शैतान का प्रतिनिधि बन गया है। जिस तरह शैतान से दूरी बनाए रखी जाती है [बुराई और गलत से दूर रहकर], उसी तरह ऐसे व्यक्ति को भी दूर रखा जाना चाहिए। जिस प्रकार एक व्यक्ति नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षणों और गुणों की उत्कृष्टता का अवतार है और स्वर्गदूतों के गुणों से निकटता रखता है, वह नेतृत्व और अनुकरण के योग्य है, उसी तरह, शैतानी गुणों के साथ जुड़ाव के कारण एक व्यक्ति ईश्वरीय दया से दूर होने और उससे बचने का हकदार है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को *इखलाक* (सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक

चरित्र लक्षण, स्वभाव और गुण) के पूरा होने और पूर्णता के लिए भेजा गया है। ये वे गुण हैं जिनका उल्लेख कुरान ने विश्वासियों के गुणों के हिस्से के रूप में किया है:

إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟

بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلصَّٰدِقُونَ

"पूर्ण विश्वासी वे हैं जो ईश्वर और उनके पैगंबर में विश्वास करते थे, तब कभी भी [ईश्वरीय मार्गदर्शन] पर संदेह नहीं करते थे और ईश्वर के मार्ग में प्रयास करते थे [ईश्वर की निकटता तक पहुंचने के लिए एक ईमानदार प्रयास के साथ] अपनी [भौतिक] संपत्ति और अपने स्वयं के साथ। ये सच्चे लोग हैं (*सदिक़ून,* यानी, जो ईश्वर के ज्ञान, मित्रता और अंतरंगता के योग्य हैं)। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 15)

बिना किसी संदेह और झिझक के ईश्वर और उसके दूत पर विश्वास करना निश्चितता की शक्ति का कार्य है और निश्चितता की शक्ति बुद्धि और ज्ञान की पूर्णता का फल है। भौतिक संपत्ति के साथ प्रयास करना उदारता है और यह प्रयास तब हो सकता है जब इच्छा और वासना को नियंत्रित किया जाता है। अपने आप के साथ प्रयास करना बहादुरी है और यह प्रयास बुद्धि की शर्तों के साथ किया जाता है और संतुलित संयम की सीमा के भीतर क्रोध की शक्ति का उपयोग किया जाता है।

आध्यात्मिक प्रयास और संघर्ष के माध्यम से चरित्र और आंतरिक गुणों में परिवर्तन

जिन लोगों को [गलत] मान्यताओं का गलत मार्गदर्शन है, वे प्रयास करना (सभी नकारात्मक और हानिकारक प्रवृत्तियों और गुणों से दिल और आत्मा को मुक्त करके बेहतर व्यक्ति बनने के लिए आंतरिक आध्यात्मिक परिवर्तन प्राप्त करने का आध्यात्मिक प्रयास) बोझिल और कठिन [या असंभव भी] मानते हैं। वे अपने आंतरिक स्व की शुद्धि और परिवर्तन और अपने चरित्र के निर्माण और इसे सभ्य बनाने में खुद को व्यस्त करने के लिए तैयार नहीं हैं। वे अपने चरित्र की कमियों और नुकसान पहुंचाने वाली प्रवृत्तियों पर विचार नहीं करते हैं, यह उनकी अपनी व्यक्तिगत असफलताओं, कमियों और नकारात्मक प्रवृत्तियों के कारण होता है। इसके बजाय, वे यह बनाए रखते हैं कि चरित्र, नैतिकता और शिष्टाचार जैसे हैं वैसे ही रहते हैं, और उनमें कोई परिवर्तन संभव नहीं है क्योंकि किसी के आंतरिक स्वभाव को बदला नहीं जा सकता है। उन्होंने अपने दावे के पक्ष में दो तर्क पेश किए हैं। सबसे पहले, *खुलक* किसी के आंतरिक रूप और रूप का नाम है और *खल्क* किसी के बाहरी रूप और रूप का नाम है। किसी के बाहरी स्वरूप और रूप में कोई परिवर्तन संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, एक छोटा व्यक्ति लंबा बनने के लिए

ऊंचाई नहीं बढ़ा सकता है और न ही एक लंबा व्यक्ति छोटा हो सकता है। बदसूरत व्यक्ति सुंदर नहीं बन सकता और सुंदर बदसूरत नहीं बन सकता। आंतरिक रूप और उपस्थिति को बाहरी रूप के रूप में माना जाना चाहिए। उनका दूसरा तर्क यह है कि सुंदर चरित्र वासना और क्रोध को खत्म करने का इरादा रखता है, लेकिन हमने अनुभव और परीक्षणों के माध्यम से पाया है कि वासना और क्रोध सहज मानव स्वभाव का हिस्सा हैं, और वे कभी समाप्त नहीं होते हैं और उनके पीछे जाना व्यर्थ प्रयास है और बेकार के प्रयासों में अपना जीवन बर्बाद करना है, क्योंकि स्वयं की शुद्धि का उद्देश्य यह है कि हृदय क्षणभंगुर सुखों की ओर झुकाव नहीं रखता है और वह है असाध्य। निम्नलिखित में, इन दोनों तर्कों के लिए एक उत्तर प्रदान किया जाएगा।

पहले तर्क का उत्तर: यह है कि यदि चरित्र में परिवर्तन और परिवर्तन संभव नहीं होता तो किसी उपदेश, सलाह, प्रशिक्षण और शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं होती और न ही पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा था:

"अपनी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और गुणों को अच्छा बनाएं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अबू बक्र बिन लाल फी मकरीम अल-इखलाक* मुआध के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुणों का परिवर्तन और परिवर्तन विशेष रूप से मनुष्य के लिए आरक्षित नहीं है, बल्कि जानवरों के गुण भी बदल जाते हैं। बाज को देखो कि हालांकि यह जंगली है, यह इंसानों का आदी हो जाता है। एक शिकारी कुत्ता प्रशिक्षण के बाद अपने मालिक के आदेश पर शिकार के पीछे दौड़ने और उसे पकड़ने और उसे खाए बिना अपने मालिक को पेश करने में सक्षम हो जाता है। इसी तरह, एक जंगली घोड़ा प्रशिक्षण के बाद आज्ञाकारी हो जाता है। क्या ये सभी चरित्र परिवर्तन के उदाहरण नहीं हैं? इसके संबंध में मामले की वास्तविकता यह है कि अस्तित्व दो प्रकार के होते हैं: सिद्ध और कमी। सिद्ध अस्तित्व वे हैं जो अपने अस्तित्व के संदर्भ में पूर्ण हैं - उनमें कोई कमी या वृद्धि नहीं होती है क्योंकि मनुष्य के पास उनमें कमी या वृद्धि करने की शक्ति नहीं होती है। उदाहरण के लिए, आकाश, तारे, शरीर के बाहरी और आंतरिक भाग, जानवर और उनके [आंतरिक और बाहरी] भाग, आदि। अभाव वाले अस्तित्व वे हैं जिनका अस्तित्व अभी तक पूरा नहीं हुआ है। वे पूर्णता तक पहुंच सकते हैं बशर्ते उनके पास पूर्णता तक पहुंचने की शर्तें हों। उदाहरण के लिए, खजूर का बीज न तो फल है और न ही एक पेड़ है, लेकिन इसकी संरचना ऐसी है कि अगर इसे लगाया जाए और इसे पानी देकर परोसा जाए तो यह बीज एक पेड़ बन सकता है क्योंकि इसमें पेड़ बनने की क्षमता है। लेकिन अगर कोई इस बीज को सीधे फल में बदलना चाहता है तो यह संभव नहीं है क्योंकि इसमें फल बनने की क्षमता नहीं है। जब बीज की अवस्था ऐसी होती है कि वह मनुष्य के विशेषाधिकार से प्रभावित होती है और एक अवस्था से

दूसरी अवस्था में परिवर्तित हो जाती है, तो क्रोध और इच्छा की शक्तियों का रूपांतरण कैसे नहीं हो सकता है? हालाँकि, इन शक्तियों को पूरी तरह से मिटा देना हमारे नियंत्रण में नहीं है। आध्यात्मिक कठोरता और अभ्यास और आध्यात्मिक प्रयासों के माध्यम से हम इन शक्तियों को अपने नियंत्रण में ला सकते हैं लेकिन हम उन्हें समाप्त नहीं कर सकते। हमें [ईश्वरीय रूप से] ऐसा करने की आज्ञा दी गई है और यह ईश्वर के बाद और ईश्वर तक पहुंचने के बाद के जीवन में हमारे उद्धार का साधन है (*वुसुल इल-अल्लाह*, यानी, ज्ञान और ईश्वरीय अंतरंगता)। हालांकि, [मानव] स्वभाव विभिन्न या अलग हैं - कुछ स्वभाव परिवर्तन को स्वीकार करते हैं और जल्दी से बदल जाते हैं और कुछ इसे देर से स्वीकार करते हैं। स्वभाव में अंतर के दो कारण हैं: पहला यह है कि जिस विशेषता का परिवर्तन वांछित है, वह तब तक जीवित रहने के कारण स्वभाव में मजबूती से समाया हुआ है। वासना, क्रोध और अहंकार के लक्षणों का परिवर्तन सभी संभव है, लेकिन सबसे कठिन परिवर्तन वासना और इच्छा की विशेषता है क्योंकि यह जन्म से ही एक के साथ है। यही कारण है कि छोटे बच्चे भी इससे वंचित नहीं हैं। क्रोध आमतौर पर सात साल की उम्र के बाद पैदा होता है और उसके बाद ही विवेक शक्ति का जन्म होता है। दूसरा यह है कि एक विशेष चरित्र विशेषता उस पर और उसके निहितार्थों पर प्रचुर मात्रा में कार्य करने और लगातार इसे अच्छा मानने के कारण दूसरी प्रकृति बन गई है।

चार डिग्री मनुष्य :- इसमें चार डिग्री मनुष्य हैं । पहली डिग्री यह है कि वह उसी स्थिति में रहता है जिसमें वह पैदा होता है और सत्य और असत्य, अच्छे और बुरे के बीच अंतर नहीं करता है, और अपने वास्तविक स्वभाव के संदर्भ में, सभी प्रकार की मान्यताओं से रहित है। ऐसे व्यक्ति का इलाज आसान होता है, और व्यक्ति थोड़े समय में स्वस्थ हो सकता है। ऐसे रोगी को एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक (*मुर्शिद*) और एक आंतरिक उत्प्रेरक और ड्राइव की आवश्यकता होती है ताकि इस तरह के उत्प्रेरक आध्यात्मिक प्रयास की ओर ले जा सकें। ऐसे व्यक्ति की नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक स्वभाव और चरित्र जल्दी ही अच्छा बन सकता है। दूसरी डिग्री यह है कि कोई बुराई को बुराई के रूप में सोचता है लेकिन अच्छे अच्छे कर्म करने की आदत में नहीं है। इसके बजाय, शैतान ने किसी को बुरे कर्मों में उलझाए रखा है और ऐसा व्यक्ति अपनी इच्छाओं और अराधों के अधीन होता है, लेकिन सत्य के मार्ग से भटकने के बावजूद उसकी कमियों से अवगत होता है। ऐसे व्यक्ति का परिवर्तन [उस व्यक्ति की तुलना में कठिन है जो पहली डिग्री में है] क्योंकि सुधार के दो चरण होंगे: सबसे पहले, किसी की बुरी आदतों को तोड़ने की जरूरत है; दूसरे, व्यक्ति को अच्छे कर्मों का आदी बनाने की आवश्यकता है। किसी का सुधार इस शर्त पर संभव है कि ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक कठोरता और प्रयास के लिए सक्रिय रूप से तैयार हो। तीसरी डिग्री यह है कि कोई बुरी नैतिकता और चरित्र लक्षणों के बारे में अच्छा सोचता है, और बुरे और बुरे कार्य आवश्यक हैं [जीवन का हिस्सा] एक के लिए और एक को ऐसी नैतिकता और कार्यों के साथ उठाया गया है। ऐसे व्यक्ति का इलाज असंभव है और ऐसे व्यक्ति के [आंतरिक आध्यात्मिक] परिवर्तन की उम्मीद नहीं की जा सकती है क्योंकि यदि गुमराह होने का एक कारण है तो इसे हटाया जा सकता है, इसके बजाय, यहां ढेर सारे कारण हैं [गुमराह के] और यह देखना चौंकाने वाला है कि किन कारणों को हटाया जा सकता है। चौथी डिग्री यह है कि कोई व्यक्ति स्वयं एक बुराई में शामिल है और [उसके ऊपर] दूसरों को एक की

तरह करते हुए देखना चाहता है और दूसरों को नष्ट करने पर गर्व महसूस करता है [नैतिक और आध्यात्मिक रूप से जो अंततः हर मायने में पूर्ण विनाश की ओर ले जाता है]। ऐसा व्यक्ति बहुत कठिन स्तर पर होता है और किसी का गुमराह परतों पर परतों में होता है। ऐसे व्यक्ति का सुधार असंभव और अकल्पनीय है।

इन चार डिग्री या श्रेणियों में, पहला व्यक्ति सिर्फ अज्ञानी है, दूसरा अज्ञानी और गुमराह है, तीसरा अज्ञानी, गुमराह और बुराई से ग्रस्त है (*फासिक),* चौथा अज्ञानी, गुमराह है, बुराई के लिए प्रवृत्त है और नुकसान और क्लेशों के प्रति आमंत्रित है।

दूसरे तर्क का उत्तर: विरोधियों का कहना है कि आध्यात्मिक अभ्यास का उद्देश्य इच्छा और क्रोध की शक्ति को मिटाना है, भले ही यह असंभव हो। हम मानते हैं कि इन शक्तियों का उन्मूलन उद्देश्य नहीं है, इसके बजाय इच्छा की शक्ति का निर्माण [कुछ] फायदेमंद है और मनुष्यों में इसकी उपस्थिति आवश्यक है। इसलिए अगर खाने की इच्छा नहीं है तो वह नष्ट हो जाएगा। यदि संभोग करने की इच्छा नहीं रहेगी तो मानव जाति का अंत हो जाएगा। यदि क्रोध का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, तो व्यक्ति हानिकारक चीजों से अपना बचाव नहीं कर पाएगा और नष्ट हो जाएगा। इसका उद्देश्य इन शक्तियों को मिटाना नहीं है, बल्कि केवल उन्हें अधिकता और कमी से बचाना और उन्हें संतुलित संयम के स्तर पर लाना है। उदाहरण के लिए, क्रोध का उद्देश्य यह है कि न तो क्रोध की अत्यधिक मात्रा में लापरवाही बनी रहे और न ही कोई कायरता हो, बल्कि इसके बजाय, क्रोध की शक्ति बुद्धि और ईश्वरीय नियम के अधीन हो जाती है। भगवान कहते हैं:

وَٱلْكَـٰظِمِينَ ٱلْغَيْظَ وَٱلْعَافِينَ عَنِ ٱلنَّاسِ ۗ

"और वे वही हैं जो अपने क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 134)

इस श्लोक में उन लोगों की प्रशंसा की गई है जो अपने क्रोध को संयमित करते हैं। यह उन लोगों को संदर्भित नहीं करता है जो शुरू में गुस्सा भी नहीं करते हैं। इससे पता चलता है कि क्रोध और इच्छा का उन्मूलन एक अप्राकृतिक मामला है, और यह ईश्वरीय व्यवस्था का उद्देश्य नहीं है। ईश्वरीय कानून का उद्देश्य दो शक्तियों [क्रोध और इच्छा की] को संतुलित संयम के ऐसे स्तर पर लाना है कि बुद्धि उन्हें वश में करना और उन पर हावी होना शुरू कर दे, न कि उस स्तर तक जहां वे बुद्धि पर हावी हों। यह आंतरिक चरित्र लक्षणों और स्वभावों के परिवर्तन का उद्देश्य है। कभी-कभी वासना (या इच्छा) मनुष्य पर इतनी तीव्रता से हमला करती है कि बुद्धि उसे पीछे हटाने में सक्षम नहीं होती है। हालाँकि, आध्यात्मिक प्रयासों के साथ, इसे संतुलित संयम में लाना संभव है। टेस्ट और अनुभव इसे साबित करते हैं और इसमें कोई

संदेह नहीं बचा है। कुरान से प्रमाण है कि नैतिकता, शिष्टाचार और आंतरिक चरित्र लक्षणों के मामले में, संतुलित संयम की आवश्यकता है, न कि अधिकता या कमी की चरम सीमा, निम्नलिखित आयत है:

وَٱلَّذِينَ إِذَآ أَنفَقُواْ لَمۡ يُسۡرِفُواْ وَلَمۡ يَقۡتُرُواْ وَكَانَ بَيۡنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا

"और जब वे खर्च करते हैं, तो वे न तो खर्चीले होते हैं और न ही कंजूस होते हैं, बल्कि [बल्कि] उनका खर्च दो चरम सीमाओं (यानी, मध्यम स्तर पर) के बीच होता है। (कुरान, अध्याय 25, श्लोक 67)

" यह श्लोक उदारता को संदर्भित करता है जो लापरवाह खर्च और कंजूसी के [चरम] स्तरों के बीच का एक स्तर है [जो स्पेक्ट्रम के विपरीत छोर पर हैं]। इसके अलावा, परमेश्वर कहते हैं:

وَلَا تَجۡعَلۡ يَدَكَ مَغۡلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبۡسُطۡهَا كُلَّ ٱلۡبَسۡطِ

"अपने हाथों को अपनी गर्दन से न बांधें और न ही उन्हें पूरी तरह से खुला छोड़ें (यानी, या तो कंजूस या खर्चीला मत बनो, बल्कि दो चरम सीमाओं के बीच में रहो)। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 29)

खाने की इच्छा में भी संयम पर जोर दिया गया है। भगवान कहते हैं:

وَكُلُواْ وَٱشۡرَبُواْ وَلَا تُسۡرِفُوٓاْۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلۡمُسۡرِفِينَ

"खाओ और पियो और [संयम की] सीमाओं और सीमाओं को पार न करो। वास्तव में, भगवान उन लोगों को पसंद नहीं करते हैं जो [संयम की सीमा को पार करते हैं और चरम सीमा तक जाते हैं]। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 31)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

"सर्वोत्तम मामले बीच में हैं [सभी प्रकार की चरम सीमाओं और अतिवादों से बचने के लिए संतुलित संयम के रूप में]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *बैहकी* मुतरफ बिन अब्दुल्ला के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

संतुलित संयम के स्तर पर मामलों की प्रशंसा, वरीयता और खोज के पीछे एक [दिव्य] रहस्य है। इस रहस्य की पड़ताल यह है कि परलोक की शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता (सादाह) सांसारिकता के सभी आसक्तियों और अशुद्धियों से हृदय की शुद्धि पर निर्भर करती है जैसा कि भगवान कहते हैं:

إِلَّا مَنْ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ

"[मोक्ष, शाश्वत सुख और सफलता] उसके लिए होगी जो ईश्वर के लिए एक स्वस्थ हृदय लाता है (अर्थात, सांसारिकता के आसक्ति और अशुद्धियों सहित सभी गंदगी से शुद्ध हृदय)। (कुरान, अध्याय 26, श्लोक 89)

कंजूसी और लापरवाह खर्च दोनों अशुद्धियों और सांसारिकता के प्रति लगाव से संबंधित हैं। हृदय इन दोनों छोरों से रहित होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हृदय को भौतिक संपत्ति को जमा करने की ओर झुकाव नहीं होना चाहिए [भौतिकवादी मानसिकता के साथ] और न ही इसे खर्च करने की ओर झुकाव होना चाहिए, क्योंकि जिसे खर्च करने का लालच होता है, उसके प्रति अपने दिल का ध्यान और लगाव होता है, जैसे कि यह (भौतिक वस्तुएं, संपत्ति और धन) कहां से आएगा और कहां खर्च करेगा। दूसरी ओर, कंजूस का दिल विशेष रूप से जमाखोरी पर केंद्रित होगा। हृदय की सुरक्षा दोनों [चरम सीमाओं] से रहित होना है क्योंकि उन्हें मिटाना संभव नहीं है, इसीलिए, एक ऐसी स्थिति निर्धारित की गई थी जहां ये दोनों [चरम] नहीं थे और वह संतुलन और संयम की स्थिति है। उस अवस्था में, ये दोनों [नकारात्मक] गुण नहीं होते हैं। इसीलिए, जब गर्मी गर्म पानी छोड़ती है और यह ठंडा भी नहीं होता है, तो इसे "गुनगुना" कहा जाता है। यह उदारता अत्यधिक खर्च और कंजूसी का संयम है। बहादुरी अत्यधिक आक्रामकता (हिंसा) और अपौरुष (कायरता) के बीच संयम का गुण है। मासूमियत लालच (वासना) और ठहराव के बीच संयम का बिंदु है। अन्य सभी आंतरिक गुणों और चरित्र लक्षणों को इससे निकाला जाना चाहिए [स्पष्टीकरण]।

हर चरित्र विशेषता और [मानव] गुणवत्ता में, अधिकता और कमी दोनों की निंदा की जाती है, और उद्देश्य संतुलित संयम है। शिक्षक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक को अपने छात्रों के सामने क्रोध और कंजूसी के नुकसान को सामने लाना चाहिए और किसी भी अपवाद की अनुमति नहीं देनी चाहिए क्योंकि यदि वे इन [विनाशकारी] गुणों की थोड़ी सी भी अनुमति देते हैं, तो वे और अधिक के लिए एक बहाना खोज लेंगे। हालांकि, अगर वे थोड़ी सी भी अनुमति नहीं देते हैं तो यह संभव है कि वे कम पर समझौता कर सकते हैं और अधिक के लिए इच्छुक नहीं होंगे और इस तरह वे संतुलित संयम के स्तर को प्राप्त करेंगे। कम के लिए अनुमति अधिक के लिए बहाना बन जाएगा। इसीलिए, आध्यात्मिक मार्ग के छात्रों और साधकों से कहा गया है कि इन दोनों शक्तियों को रहने भी नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें समाप्त कर देना चाहिए। यह रहस्य यहां नहीं लिखा जाना चाहिए था क्योंकि कम बौद्धिक क्षमता वाले लोग इससे धोखा खा जाते हैं और उन्हें लगता है कि क्रोध उनका अधिकार है और कंजूसी भी उनका अधिकार है। [इसी तरह, अन्य मानवीय गुणों और आंतरिक चरित्र लक्षणों में संतुलन और संयम की आवश्यकता को इस चर्चा से निकाला

जा सकता है क्योंकि यह सभी मानव आंतरिक चरित्र लक्षणों और गुणों को शामिल करने वाली एक व्यापक चर्चा है]

सुंदर आंतरिक चरित्र, स्वभाव और गुणों का साधन और स्रोत (*हुस्न-उल-खुलक*) सभी चरम सीमाओं को दूर करना है

अब तक आप यह अच्छी तरह से समझ चुके हैं कि सुंदर आंतरिक चरित्र लक्षणों और गुणों का सार यह है कि बुद्धि की शक्ति मध्यम होनी चाहिए, बुद्धि (बुद्धि का मध्यम स्तर) सिद्ध होना चाहिए, इच्छा और क्रोध की शक्तियां, संयम के स्तर पर होने के अलावा, ईश्वरीय नियम और बुद्धि के अधीन और आज्ञाकारी होनी चाहिए। यह [स्तर] मॉडरेशन दो कारणों से प्राप्त किया जाता है। पहला कारण [या साधन] व्यक्ति पर ईश्वर की कृपा और दया है और [यह अहसास कि] व्यक्ति अपने जन्म के दिन से है, अच्छे चरित्र वाला और बुद्धि को सिद्ध करता है। वासना और क्रोध एक पर हावी नहीं हैं, इसके बजाय वे दोनों बुद्धि और ईश्वरीय कानून के अधीन हैं। ऐसे व्यक्ति को एक सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति बनने के लिए विद्वान बनने के लिए बाहरी शिक्षा और बाहरी तौर-तरीकों की शिक्षाओं की आवश्यकता नहीं होती है। इसके बजाय, ऐसा व्यक्ति एक स्वाभाविक विद्वान और यीशु (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो), जॉन (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) और सभी पैगंबरों में से अंतिम, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) थे। यह कोई दूर की बात नहीं है कि किसी के स्वभाव और स्वभाव में [महान आंतरिक] गुण हैं जो सीखने और प्रयास से प्राप्त होते हैं। कुछ बच्चे शुरू से ही सच्चे, साहसी और देने वाले होते हैं। कुछ बच्चे शुरू से ही झूठे, कायर, धोखेबाज और कंजूस होते हैं। हालांकि, ये लक्षण कभी-कभी उन लोगों की संगति रखते हुए पैदा होते हैं जिनके पास वे हैं और कभी-कभी सीखते हैं [सीखने के विभिन्न साधनों का उपयोग करके दूसरों से सीखते हैं, जिसमें वे अपने आसपास के अन्य लोगों में जो देखते हैं उसका अनुकरण करते हैं]। दूसरा कारण [या साधन] यह है कि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक कठोरता, प्रयासों और अभ्यासों के माध्यम से सुंदर आंतरिक चरित्र लक्षणों, स्वभावों और गुणों को प्राप्त करता है। दूसरे शब्दों में, निचले स्व से काम को सटीक करके ताकि वांछित आंतरिक चरित्र विशेषता या गुणवत्ता प्राप्त की जा सके। उदाहरण के लिए, उदार होने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को उदारता के लोगों का अनुसरण करना चाहिए और धन खर्च करना चाहिए, भले ही किसी को निचले स्व (नफ्स) के साथ धैर्य रखने की आवश्यकता होगी [क्योंकि यह बेहतर के लिए परिवर्तन के लिए खुला नहीं है]। यह [प्रयास] तब तक जारी रहना चाहिए जब तक कि निम्न स्व इसे एक आदत के रूप में प्राप्त नहीं कर लेता है और जब तक उदारता किसी के स्वभाव और आंतरिक स्वभाव का हिस्सा नहीं बन जाती।

इसी तरह, जो अहंकार के गुण पर हावी है और विनम्र बनना चाहता है, उसे विनम्रता के लोगों के कार्यों का पालन करना चाहिए और प्रयास और आध्यात्मिक संघर्ष जारी रखना चाहिए और निचले स्व को विनम्रता की ओर झुकाने का प्रयास करना चाहिए जब तक कि यह आंतरिक चरित्र विशेषता एक आदत न बन जाए

और जब तक कि नम्रता कम स्व के लिए आसान न हो जाए। यह सभी अच्छे और प्रशंसनीय आंतरिक चरित्र गुणों और लक्षणों को प्राप्त करने का एक ही तरीका है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

جعلت قرة عيني في الصلاة

"मेरी आंखों की ठंडक प्रार्थनाओं में है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *नासाई* अनस के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

पैगंबर ने प्रार्थनाओं में अपनी आंखों की ठंडक महसूस की क्योंकि यह नेक काम उनकी आदत और दूसरा स्वभाव बन गया। जब तक निम्न स्व को पूजा में कठिनाई और निषेधों को छोड़ने में कठिनाई महसूस नहीं होगी, तब तक नुकसान बना रहेगा, और शाश्वत आनंद की पूर्णता प्राप्त नहीं होगी। हालांकि, कठिनाई और दर्द की भावनाओं के साथ अच्छे धर्मों में दृढ़ता उनमें दृढ़ता की कमी से बेहतर है, हालांकि, यह उन्हें इच्छा और आंतरिक झुकाव के साथ करने से बेहतर नहीं है। भगवान कहते हैं:

وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى ٱلْخَٰشِعِينَ

"वास्तव में प्रार्थना करना कठिन है, सिवाय उनके जिनके हृदय में नम्रता है। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 45)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اعبد الله في الرضا فإن لم تستطع ففي الصبر على ما تكره خيرا كثيرا

"रिदा *की अवस्था में भगवान की पूजा करें* (भगवान की इच्छा में इस तरह से आनन्दित हों कि आप जो कुछ भी वह आपके लिए चुनता है उससे प्रसन्न होते हैं, चाहे वह अच्छा लगे या बुरा)। यदि यह संभव नहीं है [इस आध्यात्मिक अवस्था की ऊंचाई के कारण आपके लिए] तो जो कुछ भी आप नापसंद करते हैं, उसके साथ धैर्य रखना इसमें बहुत अच्छा है [क्योंकि यह आध्यात्मिक खजाने का भंडार है]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* कलेक्शन *तबरानी कबीर)*

यह सादा *(किसी का सौभाग्य जो शाश्वत सुख और अंतहीन विजय का पूर्वाभास देता है) की पूर्णता नहीं है कि कभी-कभी एक [धार्मिक] कार्य* रिदा (ईश्वरीय आदेश की पूर्ण स्वीकृति और उस पर आनन्दित) और आंतरिक झुकाव के साथ किया जाता है और किसी को ऐसा करने में खुशी मिलती है और कभी-कभी यह विपरीत होता है। इसके बजाय, हर पल और हर मोड़ पर एक ही स्थिति में होना चाहिए। बल्कि जैसे-जैसे

व्यक्ति उम्र में आगे बढ़ता है, इच्छा और स्नेह, आंतरिक झुकाव, दिव्य प्रेम और ईश्वरीय आदेश की लालसा और स्वीकृति में वृद्धि होनी चाहिए।

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) जब सादाह (किसी का सौभाग्य जो शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय का पूर्वाभास देता है) के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा:

طول العمر فی طاعة الله

"[यह] भगवान की आज्ञाकारिता और पूजा में एक लंबा जीवन है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अद-दयालामी* अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यही कारण है कि पैगंबर (शांति और ईश्वर की आशीषें उन सभी पर हो) और संत मृत्यु को नापसंद करते थे क्योंकि एक भविष्यसूचक कथन के अनुसार: "दुनिया परलोक की एक खेती (कृषि भूमि) है"। जितना जीवन है, उस हद तक ईश्वरीय पूजा की मात्रा होगी और उस सीमा तक परमेश्वर की ओर से प्रतिफल और प्रतिफल होगा। स्वयं स्वच्छ से शुद्ध में बदल जाएगा, आंतरिक चरित्र लक्षण और गुण मजबूत से मजबूत और अच्छे से उत्कृष्ट में प्रगति करेंगे। इसके अलावा, पूजा का उद्देश्य हृदय पर प्रभाव डालना है [क्योंकि ईश्वरीय पूजा केवल पूजा के लिए नहीं है, बल्कि हृदय और आत्मा को पोषित करने के लिए है ताकि उन्हें दिव्य वास्तविकता के दरवाजे तक पहुंचने में सक्षम और सशक्त बनाया जा सके] और ऐसा तब होता है जब पूजा में निरंतर दृढ़ता और दृढ़ता होती है।

इन सुंदर नैतिकताओं, शिष्टाचारों, आंतरिक चरित्र लक्षणों और स्वभावों का उद्देश्य यह है कि सांसारिकता का प्रेम हृदय में नहीं रहता है, परमेश्वर का प्रेम हृदय में मजबूती से बैठ जाता है, परमेश्वर के साथ [घर वापसी और] मिलन के अलावा कुछ भी प्रिय नहीं रहता है, व्यक्ति भौतिक संपत्ति को उन तरीकों से खर्च करता है जिनके माध्यम से वह परमेश्वर तक पहुँच सकता है। क्रोध और इच्छा दोनों को मानव निपटान में डाल दिया गया है [अधीनता की स्थिति में] ईश्वरीय कानून द्वारा उल्लिखित तरीकों के अनुसार उपयोग करने के लिए और उन्हें ज्ञान और दिव्य अंतरंगता की स्थिति में ईश्वर तक पहुंचने का साधन बनाने के लिए। उसके बाद, व्यक्ति को ऐसे कर्मों से खुश होना चाहिए और उन्हें सुखद मानना चाहिए। यदि किसी को प्रार्थना में आराम मिलता है या उसमें आंखों की ठंडक मिलती है या दिव्य पूजा अच्छी लगती है, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि स्वयं में [अच्छी] आदतें और भी अधिक अद्भुत और अजीब चीजों के प्रकट होने का कारण बन सकती हैं। हम पाते हैं कि राजा और समृद्ध लोग हमेशा दुख और दर्द से घिरे रहते हैं। दूसरी ओर, उस गरीब जुआरी को देखें जो हारने के बाद भी खुश है और उसमें आनंद पाता है और इसके बिना, जीवन बहुत कठिन हो जाएगा। जुए से धन की हानि होती है, घर और परिवार नष्ट हो जाता है, जीवन की सुख-सुविधाएं छीन ली जाती हैं और कानून प्रवर्तन के प्रति जवाबदेही का डर उनके

ऊपर तलवार की तरह लटक जाता है। फिर भी वे इस लत से छुटकारा नहीं पा सकते हैं क्योंकि कुछ समय तक (जुआ) खेलने के बाद व्यक्ति इसका आदी हो जाता है और कोशिश करने के बाद भी इसे छोड़ने में असमर्थ होता है। कबूतर उड़ाने वाला इस खेल से इतना आसक्त हो जाता है कि व्यक्ति पूरे दिन धूप में खड़ा रहता है और कबूतरों के प्रति प्रेम और उन्हें खुली जगह में उड़ते हुए देखने में रुचि के कारण सूर्य की किरणों की कठोरता महसूस नहीं करता है और उन पर दांव लगाना किसी का पसंदीदा शगल है। बुरे स्वभाव वाले लोगों की भी यही स्थिति है, जिन्हें दिन-रात भयानक दंड दिया जाता है और कैद की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन फिर भी वे अपने गलत कार्यों से नहीं हटते हैं और अपने लीलाओं को गर्व के योग्य नहीं मानते हैं और खुशी-खुशी सभी दंडों का सामना करते हैं। उनकी सीमा [अपनी आपराधिक गतिविधियों के लिए जुनून और पागलपन] है कि भले ही चोरों को मार दिया जाए, वे यह नहीं बताएंगे कि उन्होंने चोरी का सामान कहां छिपाया है और [अपराध में] अपने भागीदारों की पहचान नहीं की है। इसका कारण यह है कि वे अपने काम को [मानवीय प्रयासों की] उत्कृष्टता और पूर्णता और अत्यधिक हिंसा के रूप में बहादुरी के रूप में सोचते हैं, और इन गतिविधियों के इतने आदी हो गए हैं कि वे [गिरफ्तारी, मुकदमे और] दंड का सामना करने से परहेज नहीं करते हैं। ये सजाएं उनके लिए आराम का स्रोत हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति में व्यस्त और व्यस्त रहता है और अपने प्रयासों और व्यवसायों पर गर्व करता है, चाहे वह शासक और नेता हों, या चौकीदार और नाई हों। ये सभी मामले एक ही काम में दृढ़ता और दृढ़ता के परिणामस्वरूप सामने आते हैं और जब समान स्वभाव और अनुनय के लोगों में एक ही मामला देखा जाता है, तो ये मामले और भी अधिक मजबूती से जुड़ जाते हैं।

किसी भी मामले में, जब मानव स्वयं को झूठ [और गलत] में आनंद मिल सकता है और बुराई की ओर झुकाव हो सकता है, तो वह सत्य में आनंद क्यों नहीं पा सकता है और यह अच्छाई और धार्मिकता की ओर झुकाव क्यों नहीं हो सकता है? वास्तविकता यह है कि जन्मजात [मानव] प्रकृति बुरी चीजों और आंतरिक विनाशकारी गुणों की ओर झुकाव नहीं रखती है। यह एक ऐसे व्यक्ति की तरह है जिसमें मिट्टी खाने की इच्छा और झुकाव होता है। क्या इस झुकाव को प्राकृतिक झुकाव कहा जा सकता है? ज्ञान, ईश्वर के प्रति प्रेम, दिव्य ज्ञान और पूजा के प्रति किसी का झुकाव खाने-पीने के प्रति झुकाव की तरह है [जो एक शुद्ध प्राकृतिक घटना है]। जिस तरह भोजन खाने के प्रति झुकाव जन्मजात [मानव] स्वभाव का हिस्सा है, उसी तरह ईश्वर के प्रेम, ज्ञान और पूजा के प्रति झुकाव हृदय की सहज प्रकृति का एक आवश्यक परिणाम है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हृदय [या आत्मा] एक ईश्वरीय आदेश है, इच्छा और वासना के निहितार्थ के प्रति इसका झुकाव अस्थायी हो सकता है लेकिन यह शाश्वत और सहज रूप से स्वाभाविक नहीं हो सकता है। हृदय [या आत्मा] का वास्तविक पोषण ज्ञान, दिव्य ज्ञान और दिव्य प्रेम है। यदि बाधाओं के कारण, यह अपने वास्तविक जन्मजात स्वभाव के निहितार्थ से विचलित हो जाता है, तो यह उस व्यक्ति की तरह है जिसे पेट की समस्या हो गई है और उसके पास भोजन की इच्छा नहीं बची है, भले ही पेट का पोषण भोजन के माध्यम से हो और मानव जीवन इस पर निर्भर करता है। इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि जिस हद तक एक हृदय परमेश्वर के अलावा [चीजों और मामलों] की ओर झुका हुआ है, उस हद तक वह (हृदय या आत्मा) रोगग्रस्त हो जाएगा। हालाँकि, यदि ईश्वर के अलावा किसी अन्य का प्रेम

ईश्वर के लिए है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है, इसके बजाय, ऐसा प्रेम भी सच्चे जन्मजात [मानवीय] स्वभाव का एक हिस्सा होगा।

यह स्पष्टीकरण संदेह की किसी भी छाया से परे साबित करता है कि आध्यात्मिक प्रयासों और संघर्ष के माध्यम से, सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षण और स्वभाव [स्पष्ट रूप से] प्राप्त किए जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में, यदि कोई संघर्ष और प्रयास से उन्हें प्राप्त करता है और उनका पालन करता रहता है तो अंत में, ये आंतरिक गुण और चरित्र लक्षण जन्मजात और दूसरी प्रकृति बन जाते हैं। यह हृदय और शारीरिक अंगों के बीच एक अजीब संबंध है क्योंकि हृदय में जो भी गुण पैदा होते हैं, वे आवश्यक रूप से अंगों को प्रभावित करते हैं और वे हृदय से संकेत प्राप्त करने पर आगे बढ़ने लगते हैं। इसी तरह, अंगों द्वारा किए गए कार्य हृदय को प्रभावित करते हैं। हृदय और अंगों के [पारस्परिक] प्रभाव की यह श्रृंखला जारी है। यह एक उदाहरण के माध्यम से इस वास्तविकता को समझने में मदद करेगा। मान लीजिए कि कोई सुलेख की कला में विशेषज्ञता हासिल करना चाहता है। इसे प्राप्त करने का तरीका विशेषज्ञ सुलेखकों के उदाहरण का अनुकरण करना और अक्षरों और शब्दों को वैसे ही लिखना है जैसे वे करते हैं। इस अभ्यास को लंबे समय तक जारी रखना चाहिए जब तक कि सुलेख एक आदत न बन जाए और जिस तरह पहले बड़े प्रयास से सुंदर अक्षर बनते थे, वैसे ही वे अब आसानी से बनने लगते हैं। इसी तरह, यदि कोई विद्वान धर्मशास्त्री (*फकीह) बनना चाहता है,* तो उसे विद्वानों का अनुसरण करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, किसी को शैक्षिक धर्मशास्त्र (फ़िक़्ह) से संबंधित मुद्दों (मामलों या ज्ञान के बिंदुओं) को लगातार दोहराना और पूर्वाभ्यास करना चाहिए ताकि कोई उन्हें याद कर सके ताकि उनका प्रभाव दिल तक पहुंच सके और वह वास्तव में एक विद्वान धर्मशास्त्री बन जाए जो जो सीखे गए का पालन करता है। इसी तरह, उदार, ईश्वर का भयभीत, सहिष्णु, सहनशील और विनम्र होने के इच्छुक व्यक्ति को उन लोगों के पदचिन्हों पर चलना चाहिए जो वास्तव में उदारता, ईश्वर के भय, सहिष्णुता, सहनशीलता और विनम्रता के आभूषणों से संपन्न हैं। यह अनुसरण शुरू में बड़े प्रयासों के साथ किया जाता है, लेकिन बाद में इन कार्यों का पालन किया जाता है, आदत बन जाते हैं और किसी के स्वभाव और आंतरिक स्वभाव में [दृढ़ता से] निहित हो जाते हैं। सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र गुण, लक्षण और स्वभाव प्राप्त करने की यही रणनीति है।

यहां यह याद रखना चाहिए कि जिस तरह एक दिन की छुट्टी लेने के कारण शैक्षिक धर्मशास्त्र का एक छात्र अपने उद्देश्य में असफल नहीं होता है, उसी तरह एक दिन के लिए [शैक्षिक धर्मशास्त्र के ज्ञान के बिंदुओं को याद करने के लिए] अध्ययन और दोहराने से एक विद्वान धर्मशास्त्री नहीं बन जाता है। इसी तरह, सत्कर्मों के माध्यम से हृदय की शुद्धि, पूर्णता और सौंदर्यीकरण का साधक एक दिन के लिए भी प्रयास करके अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता है और न ही पाप का एक दिन इस उद्देश्य के लिए बाधा बन जाता है। विद्वानों का यह कथन कि एक बड़ा पाप अनन्त हानि का कारण नहीं है, का अर्थ एक ही बात है [जैसे किसी के पश्चाताप, पश्चाताप और सुधार के माध्यम से ईश्वरीय क्षमा का द्वार हमेशा खुला

होता है]। हालांकि, एक दिन का ब्रेक एक और दिन के ब्रेक का कारण हो सकता है और अगर यह जारी रहता है, तो यह किसी के स्वभाव में आलस्य पैदा कर सकता है और निचला स्व निष्क्रियता का आदी हो सकता है। ईश्वर हमें इससे बचाए [क्योंकि आलस्य के परिणामस्वरूप हमारी आध्यात्मिक स्थिति में सुधार के मामले में निष्क्रियता का परिणाम एक शाश्वत हानि, अभाव और दुःख की ओर ले जाता है]। उन लोगों की स्थिति ऐसी होती है जो छोटे-मोटे पापों को ज्यादा महत्व नहीं देते हैं और उन्हें छोटा समझते हैं और अपने निचले हिस्से को भविष्य के पश्चाताप से धोखा देते हैं और यह इस हद तक चलता है कि उन्हें पश्चाताप करने का अवसर नहीं मिलता है और मृत्यु की लोहे की पकड़ उन पर हावी हो जाती है। पापों पर उनके जिद के कारण उनके दिल [तब तक] अंधेरे छा गए हैं और वे अब पश्चाताप करने में सक्षम नहीं हैं [सुधार करने के लिए]। अली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - पैगंबर मुहम्मद के एक साथी [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो]) ने कहा: "दिल में विश्वास की शुरुआत एक सफेद बिंदु [दिव्य प्रकाश का एक कण] से शुरू होती है। जैसे-जैसे आस्था बढ़ती है, इस बिंदु की रोशनी और आकार भी तब तक बढ़ता जाता है जब तक कि पूरा हृदय प्रकाशित न हो जाए [दिव्य प्रकाश की चमक के साथ] । पाखंड एक काले बिंदु [दिल पर काला धब्बा] से शुरू होता है। जैसे-जैसे पाखंड बढ़ता है, इस कण का अंधेरा और किसी के प्रत्यक्ष अस्तित्व में इसकी उपस्थिति तब तक बढ़ती जाती है जब तक कि पूरे दिल [और आत्मा] के साथ अंधेरा नहीं हो जाता।

इस विस्तृत व्याख्या से यह सिद्ध होता है कि सुंदर शिष्टाचार, नैतिकता, आंतरिक चरित्र लक्षण और स्वभाव (*इखलाक*) कभी-कभी जन्मजात होते हैं [किसी के स्वभाव में] और स्वाभाविक रूप से मानव स्व में पाए जाते हैं [उस व्यक्ति पर एक दिव्य बंदोबस्ती और उदारता के रूप में] और कभी-कभी उन्हें प्रयासों के माध्यम से प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। यह अधिग्रहण शुरू में प्रयास और दर्द के साथ किया जाता है लेकिन बाद में वही सुंदर शिष्टाचार, नैतिकता, आंतरिक चरित्र लक्षण और स्वभाव आदत और स्वभाव बन जाते हैं और किसी के स्वभाव का हिस्सा बन जाते हैं। ये अच्छे लोगों को देखकर और उनके नक्शेकदम पर चलकर भी प्राप्त किए जाते हैं क्योंकि स्वभाव नकल करने में अच्छे होते हैं और सभी मामले (स्वभाव) चाहे अच्छे हों या बुरे, उनके द्वारा अवशोषित किए जाते हैं। एक व्यक्ति जिसके पास [अच्छे चरित्र का एक हिस्सा] स्वभाव, आदत और शिक्षा है, वे तीनों उत्कृष्टता के बहुत उच्च स्तर पर हैं। और एक व्यक्ति ईश्वर से अपमान और दूरदर्शिता के चरम स्तर पर होता है जिसका स्वभाव दोषपूर्ण होता है, अपने आंतरिक स्वभाव और उसके प्रति प्रवृत्ति के कारण बुराई पसंद करता है और उसके बुरे दोस्त और साथी भी होते हैं। अन्य सभी लोग इन दो डिग्री [स्पेक्ट्रम के विपरीत छोर पर] के बीच [आध्यात्मिक] डिग्री में हैं। कुरान कहते हैं:

فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُۥ ﴿٧﴾

وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ ﴿٨﴾

"जो एक परमाणु के वजन के लायक भलाई करता है, वह इसे [परलोक में] देखेगा और जो एक परमाणु के वजन के लायक बुराई करता है, वह इसे [भी] देखेगा। (कुरान, अध्याय 99, श्लोक 7-8)

وَمَا ظَلَمَهُمُ ٱللَّهُ وَلَٰكِن كَانُوٓاْ أَنفُسَهُمۡ يَظۡلِمُونَ

"और परमेश्वर ने उन पर [थोड़ी सी भी सीमा तक] अत्याचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया [अपने अधर्मी, बुरे और बुरे कामों के माध्यम से जो उन्होंने अपने सांसारिक जीवन में किए थे]। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 33)

नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव की सभ्यता प्राप्त करने के तरीके की विस्तृत प्रदर्शनी

शरीर और स्व: आपने यह पहले सीखा है कि आंतरिक चरित्र लक्षणों में संयम स्वास्थ्य का संकेत है और संयम से विचलन बीमारी का संकेत है। यह शरीर के स्वभाव में संयम और संतुलन के समान है, जो स्वास्थ्य का संकेत है और इससे विचलन बीमारी का संकेत है। चर्चा की जा रही विषय वस्तु के संबंध में, हम शरीर के उदाहरण का उपयोग कर सकते हैं। जिस प्रकार स्वास्थ्य और शारीरिक कल्याण की स्थिति लाने के लिए शारीरिक बीमारियों को दूर करने के प्रयास किए जाते हैं, उसी प्रकार आंतरिक विनाशकारी विशेषताओं (चरित्र लक्षण, आंतरिक गुण और स्वभाव जो किसी के आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और बौद्धिक कल्याण के लिए हानिकारक होते हैं) को स्वयं से हटा दिया जाता है और इसे सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षणों और स्वभावों से अलंकृत किया जाता है। भौतिक मानव शारीरिक प्रणाली में, वास्तविक उद्देश्य संतुलन और संयम है। भोजन में दोष और उससे संबंधित इच्छाएं पेट में दोष पैदा कर सकती हैं। इसी तरह, मानव के आंतरिक स्व में वास्तविक उद्देश्य भी संतुलन और संयम है। आंतरिक स्व के इस संतुलन और संयम *का संकेत* पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक प्रसिद्ध परंपरा (हदीस) में दिया गया है कि प्रत्येक बच्चा एक मध्यम स्वभाव और सच्चे सहज स्वभाव के साथ पैदा होता है [जो कि सभी अच्छे के लिए इच्छुक है] लेकिन बाद में माता-पिता उसे अपने सांचे में ढालते हैं। हदीस के शब्द इस प्रकार हैं:

كل مولود يولد على الفطرة وانما ابواه يهوّدانه او ينصّرانه او يمجّسانه

"प्रत्येक बच्चा सच्ची जन्मजात प्रकृति पर पैदा होता है [जिस पर भगवान ने पूरी मानव जाति को इस तरह बनाया है कि वह पहले से ही ईश्वर में विश्वास, सत्य और धार्मिकता के प्रति समर्पण, हर चीज जो अच्छी और सकारात्मक है, शांति और सद्भाव के लिए प्रेरित होकर पैदा होता है, और ज्ञान की स्थिति के माध्यम से अपने स्वर्गीय मूल तक पहुंचने की लालसा आंतरिक रोशनी और शाश्वत सत्यों की ओर ले जाती है]

लेकिन किसी के माता-पिता उसे यहूदी में परिवर्तित कर देते हैं, ईसाई और मैगियन (दुनिया में मौजूद विभिन्न धार्मिक और वैचारिक परंपराओं की ओर इशारा करते हुए, इस प्रकार किसी को अपने धार्मिक, वैचारिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और बौद्धिक संदर्भ के सांचे में ढालते हैं)"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* को भविष्यवक्ता साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

यदि शरीर स्वस्थ है, तो चिकित्सक स्वास्थ्य को संरक्षित करने के तरीकों पर विचार करता है और यदि यह बीमार है, तो चिकित्सक इसे स्वास्थ्य की स्थिति में वापस करने के लिए संघर्ष करता है। इसी तरह, व्यक्ति को एक शुद्ध, विनम्र और सभ्य आत्म की रक्षा करने का प्रयास करना चाहिए और स्वयं में उत्कृष्टता और पवित्रता के गुणों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए जो इससे रहित है। जिस प्रकार शरीर की भौतिक प्रणाली में संतुलित संयम को दुर्बल और नष्ट करने वाले कारकों का उपचार उनके विपरीतों के माध्यम से किया जाता है, उसी प्रकार स्वयं के रोगों का इलाज भी उनके विपरीतों के माध्यम से किया जाता है। उदाहरण के लिए, शिक्षा के माध्यम से अज्ञान का इलाज होता है, कंजूसी की बीमारी का इलाज उदारता के माध्यम से होता है, अहंकार विनम्रता के माध्यम से, वासना इच्छाओं की बाढ़ के सामने बाधाओं को डालने के माध्यम से होता है, भले ही यह दर्द और परेशानी का कारण बन सकता है। जिस तरह शरीर की बीमारियों का इलाज दवा की कड़वाहट को सहन करना और स्वयं की इच्छाओं को दबाना है [जो इलाज के लिए अनुकूल नहीं हैं], उसी तरह आत्म (या आत्मा) के रोगों को आध्यात्मिक संघर्ष (मुजाहिद्दा) की कड़वाहट और कठोरता को धैर्यपूर्वक सहन किए बिना दूर नहीं किया जाता है। इसके बजाय, हृदय के रोगों के लिए इस संघर्ष की और भी अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि शरीर के रोगों का अंत मृत्यु के समय होता है जब मनुष्य की आत्मा शरीर को छोड़ देती है, लेकिन आत्मा की बीमारियां मृत्यु के बाद भी हमेशा के लिए बनी रहती हैं [क्योंकि आत्मा कभी नहीं मरती]। गर्मी से पैदा होने वाले रोगों को उन दवाओं से ठीक नहीं किया जाता है जो प्रकृति में ठंडी होती हैं और उचित मात्रा में रोग की तीव्रता और कमजोरी पर सावधानीपूर्वक विचार करके निर्धारित की गई हैं। चिकित्सकों ने विभिन्न दवाओं की मात्रा पर मानक स्थापित किए हैं, और वे उन्हें इन मानकों के आलोक में रोग के अनुरूप उपयुक्त और लाभकारी मात्रा में लिखते हैं। यदि इन मानकों का पालन नहीं किया गया तो बीमारी कम होने के बजाय बढ़ेगी।

आत्मा (या स्वयं) के रोगों की भी यही स्थिति है। आध्यात्मिक मार्गदर्शकों को समान मानकों का पालन करना चाहिए जब उनके विपरीत के माध्यम से आत्मा के रोगों के लिए इलाज किया जाता है। दवा का मानक बीमारी [स्तर और प्रकृति] के अनुसार निर्धारित किया जाता है। आध्यात्मिक मार्गदर्शकों को अपने आध्यात्मिक रोगियों पर आध्यात्मिक अभ्यास और कठोरता का इतना बोझ नहीं डालना चाहिए कि वे सहन न कर सकें। इसके अलावा, एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक को तब तक इलाज नहीं लिखना चाहिए जब तक कि बीमारी की प्रकृति सही ढंग से निर्धारित न हो जाए। इलाज के संबंध में एक चिकित्सक के लिए यह

अनिवार्य है कि वह बीमारी के आकलन के अनुसार इलाज और दवा निर्धारित करे। यदि कोई एक ही दवा से सभी बीमारियों को ठीक करने की कोशिश करता है, तो इससे रोगी की मृत्यु के अलावा कुछ भी नहीं होगा। इसी तरह, एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक को आध्यात्मिक मार्ग के [सभी] छात्रों के सुधार के लिए एक ही पद्धति नहीं अपनानी चाहिए। यदि कोई ऐसा करता है, तो वह अपने आध्यात्मिक रोगियों के दिलों को नष्ट कर देगा। आध्यात्मिक मार्गदर्शक के लिए यह अनिवार्य है कि वह पहले अपने शिष्य (आध्यात्मिक पूर्णता के मार्ग में साधक) के रोग का निदान करे, विद्यार्थी की विशिष्ट परिस्थितियों की समीक्षा करे, अपनी आयु और वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखें और देखें कि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक संघर्ष की कठोरता और तीव्रता को सहन करने में कितना सक्षम है । इन सभी मामलों पर ध्यान से विचार करने के बाद, एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक को एक आध्यात्मिक अभ्यास निर्धारित करना चाहिए।

यदि छात्र (आध्यात्मिक पूर्णता के मार्ग में साधक) एक नौसिखिया है [आध्यात्मिक मार्ग में] और ईश्वरीय कानून की सीमाओं [स्वीकार्य मानव आचरण और कार्यों की] से अनजान है, तो सबसे पहले किसी को बाहरी [शारीरिक] स्वच्छता (व्यक्तिगत स्वच्छता और शुद्धि), प्रार्थना और पूजा के बाहरी कार्यों को करने के सही तरीके सिखाए जाने चाहिए। यदि छात्र अवैध (*हराम*) भौतिक संपत्ति में शामिल है और पाप करता है तो उसे [शिक्षक या आध्यात्मिक मार्गदर्शक द्वारा] रोकने और पापों का जीवन जीने से मना करने और रोकने की आवश्यकता है [नकारात्मक और हानिकारक विचारों, भावनाओं और प्रवृत्तियों के आंतरिक पापों सहित]। जब किसी का बाहरी अस्तित्व बाहरी पापों की अशुद्धियों और अशुद्धियों से शुद्ध हो जाता है और [दिव्य] पूजा के कार्यों के प्रकाश से प्रबुद्ध होता है, तो आध्यात्मिक मार्गदर्शक को बाहरी अवस्थाओं के संकेतों के माध्यम से छात्र के आंतरिक अस्तित्व की जांच करनी चाहिए और हृदय की नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, झुकाव, आदतों और रोगों का विश्लेषण करना चाहिए। यदि विद्यार्थी के पास आवश्यकता से अधिक भौतिक सम्पत्ति है, तो आध्यात्मिक मार्गदर्शक को इसे लेना चाहिए और इसे दान में वितरित करना चाहिए ताकि किसी के हृदय में भौतिक संपत्ति के प्रति झुकाव न रहे और वह केवल ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम हो। इसी तरह यदि छात्र (आध्यात्मिक पूर्णता के मार्ग में साधक) में अभिमान, अहंकार और श्रेष्ठता की भावना है, तो किसी को भीख मांगने में अपना हाथ बढ़ाने के लिए बाजार में भेजा जाना चाहिए क्योंकि ये [आंतरिक विनाशकारी विशेषताएं] अपमान के बिना दूर नहीं होती हैं, और भीख मांगने से अधिक अपमानजनक कुछ भी नहीं है और व्यक्ति को इसे तब तक करते रहने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए जब तक कि यह बीमारी पूरी तरह से समाप्त न हो जाए [अपने आंतरिक अस्तित्व से]। अभिमान और अहंकार दिल की सबसे बुरी बीमारियों में से हैं। यदि किसी छात्र के मन में शरीर और पोशाक की अत्यधिक स्वच्छता (*नज़फ़ाह*) का विचार है क्योंकि उसका झुकाव अधिक हो सकता है, तो उसे घर की सफाई और गंदी जगहों पर झाड़ू लगाने के लिए कहा जाना चाहिए या उसे रसोई का कोई काम दिया जाना चाहिए जहां उसे [चूल्हे से] धुएं से जूझना पड़ता है और [परिणामस्वरूप] अत्यधिक स्वच्छता का अभिमान और इसके बारे में नकचढ़ा नहीं रहता है। जो लोग कपड़ों में विशिष्ट उपभोग को अपनाते हैं और लगातार सुंदर कपड़ों की तलाश करते हैं, उनके और [जल्द ही होने वाली]

दुल्हनों के बीच कोई अंतर नहीं है क्योंकि वे पूरे दिन खुद को सुशोभित करने में व्यस्त रहते हैं। इसके अलावा, किसी के स्वयं की पूजा करने और पत्थर या मूर्ति की पूजा करने में कोई अंतर नहीं है।

जब भी कोई दास [ईश्वर का, यानी, एक मनुष्य] ईश्वर के अलावा [किसी भी चीज या किसी को] की पूजा करता है, तो उसका दिल भगवान से ढका हो जाता है (एक और भगवान के बीच एक पर्दा या बाधा खींची जाती है)। जो किसी पोशाक की साफ-सफाई और अनुमति से अधिक की चिंता करता है, वह स्वयं का उपासक है। आध्यात्मिक संघर्षों की सूक्ष्मताओं में से एक यह है कि यदि कोई छात्र या साधक आंतरिक विनाशकारी बुराइयों में से किसी एक से परहेज नहीं करता है, तो उसका ध्यान और दिशा उस नकारात्मक गुण से दूर एक भिन्न नकारात्मक गुण की ओर मुड़ जाती है जो निम्न स्तर का होता है । उदाहरण के लिए, एक बच्चे को पहले स्कूल में बल्ले और गेंद के खेल में शामिल किया जाता है, फिर खेल से अच्छे कपड़ों की ओर झुकाव होता है, फिर अच्छे कपड़ों और आत्म-अलंकरण में गर्व से, राजनीतिक पद और प्रसिद्धि की तलाश करने की ओर और अंत में परलोक के जीवन की ओर झुकता है। यदि किसी का हृदय प्रसिद्धि और शक्ति की इच्छा को अचानक त्यागने की ओर नहीं झुकता है, तो उसे निम्न स्तर की प्रसिद्धि और शक्ति के लिए राजी किया जाना चाहिए और धीरे-धीरे इस [आंतरिक विनाशकारी] गुण से दूर किया जाना चाहिए। इसी प्रकार यदि किसी शिष्य में किसी आध्यात्मिक मार्गदर्शक को भोजन का लालच दिखाई देता है तो उसे व्रत और कम खाने का दायित्व देना चाहिए, तो उसे स्वादिष्ट भोजन तैयार करने और दूसरों को खिलाने के लिए जिम्मेदार ठहराना चाहिए लेकिन स्वयं को इस हद तक नहीं खाना चाहिए कि वह स्वयं (*नफ्स*) को इसका आदी हो जाए, और उसमें धैर्य की शक्ति का जन्म होता है और लालच का अंत होता है। इसी तरह, यदि कोई छात्र युवा है और शादी करना चाहता है, लेकिन वह शादी का समर्थन करने में सक्षम नहीं है [पति अपनी पत्नी का समर्थन करने के लिए बाध्य है] तो उसे उपवास किया जाना चाहिए। कभी-कभी उपवास से तीव्र इच्छा कम नहीं होती है। उस स्थिति में, साधक (आध्यात्मिक यात्री) को केवल पानी के साथ [और कोई अन्य भोजन नहीं] के साथ अपना उपवास तोड़ने और रोटी नहीं खाने के लिए कहा जाना चाहिए। दूसरे दिन रोटी के साथ व्रत तोड़ना चाहिए लेकिन किसी भी मांस या किसी अन्य करी या व्यंजन का इस हद तक उपयोग न करें कि इच्छा की तीव्रता समाप्त हो जाए। शुरुआत में भूख से बेहतर कोई इलाज नहीं है।

यदि आध्यात्मिक मार्गदर्शक साधक में क्रोध का प्रभुत्व देखता है, तो व्यक्ति को सहनशीलता, धैर्य और मौन रखने का आदेश दिया जाना चाहिए और उन लोगों के साथ काम करने के लिए कहा जाना चाहिए जो दुर्व्यवहार करते हैं और उनकी सेवा करने के लिए कहा जाना चाहिए ताकि व्यक्ति उनके द्वारा दिए गए दर्द पर धैर्य का अभ्यास करके धैर्य का आदी हो जाए। यह एक संत (आध्यात्मिक गुरु) के बारे में वर्णित किया गया है, जो अधिकांश भाग के लिए, ऐसे लोगों के लिए एक शारीरिक मजदूर के रूप में काम करते थे जो दुर्व्यवहार और कठोर थे और अशिष्ट भाषा का उपयोग करना उनकी आदत थी। वह उनके द्वारा दिए गए सभी दर्द को धैर्य के साथ सहन करते थे और [उनके दुर्व्यवहार के लिए उनके प्रति] अपने क्रोध

को नियंत्रित करते थे। शुरुआत में उनके लिए ऐसा करना कठिन था, लेकिन बाद में, धैर्य दूसरे स्वभाव के रूप में उनमें मजबूती से समा गया और उनका नाम आम लोगों द्वारा धैर्य के मॉडल के रूप में लिया जाने लगा। कुछ संतों ने अपने आप में कमजोरी और कायरता पाई। जब मौसम ठंडा था, और लहरें परेशान और अशांत थीं, तो उन्होंने समुद्र की सतह में यात्रा करके [इन अवांछनीय गुणों] को ठीक कर लिया। कुछ संत शुरुआत में धीमे थे और उन्होंने पूरी रात सिर नीचे खड़े रहकर खुद को ठीक कर लिया जब तक कि स्वयं इसकी तीव्रता से परेशान नहीं हो गया और [पूजा में] पैरों पर खड़े होने के लिए सहमत नहीं हो गया। कुछ लोगों ने नदी में पैसा डालकर अपने दिल से धन और भौतिक संपत्ति के प्रति प्रेम को हटा दिया। वे दान में पैसे देने के बजाय नदी में पैसा डालना पसंद करते थे क्योंकि दान में आडंबर का खतरा था।

ये उदाहरण हमें हृदय के रोगों को ठीक करने के तरीके दिखाते हैं। यहां उद्देश्य हर बीमारी के लिए दवा की व्याख्या करना नहीं है। दवाओं और इलाज के तरीकों के बारे में अगले पन्नों में बताया जाएगा। इस समय, उद्देश्य केवल यह समझाना है कि प्रत्येक [आध्यात्मिक] बीमारी का इलाज इसके विपरीत कार्य करके संभव है। परमेश्वर ने अपनी पुस्तक में उपचार की विधि को केवल एक वाक्य में समझाया है [निम्नानुसार है]:

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ وَنَهَى ٱلنَّفْسَ عَنِ ٱلْهَوَىٰ

فَإِنَّ ٱلْجَنَّةَ هِىَ ٱلْمَأْوَىٰ

"जो [इस दुनिया में] अपने रब के सामने खड़े होने से डरता था [हिसाब के दिन] और अपने आप को निचले स्व से [सभी] इच्छाओं से रोकता था (*हवा* या जिद्दी गलत सिर वाली मूर्खताएं) [जो किसी के भौतिक और अभौतिक (आध्यात्मिक) जीवन में किसी के व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण के लिए हानिकारक हैं], स्वर्ग ऐसे व्यक्ति का [अंतिम] गंतव्य होगा। (कुरान, अध्याय 79, आयत 40-41)

आध्यात्मिक संघर्ष में वास्तविक और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्ति को वह पूरा करना चाहिए जो उसने करने का संकल्प लिया है। इसलिए, यदि कोई सभी वासनाओं को अस्वीकार करने का दृढ़ संकल्प करता है और रास्ते में कुछ कठिनाइयों का सामना करता है, तो व्यक्ति इन कठिनाइयों और बाधाओं को दूर करने का साहस रखता है और अपने दृढ़ संकल्प को पूरा करने के लिए इन कठिनाइयों के खिलाफ संघर्ष करना ही वास्तविक आध्यात्मिक संघर्ष है। यदि कोई अपने दृढ़ संकल्प को पूरा नहीं करता है [सभी प्रतिकूलताओं के खिलाफ आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ने के लिए] तो आत्मा इसका आदी हो जाएगा (यानी, अपने दृढ़ संकल्प को त्यागना) और वह नष्ट हो जाएगा [अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने से चूकने और ऊपर की ओर आध्यात्मिक उत्थान के माध्यम से शाश्वत सुख और अंतहीन विजय की प्राप्ति के संदर्भ में, और इसके बजाय, इसके कारण अनंत हानि और दुःख की ओर ले जाने वाले नीचे की

ओर बढ़ते हुए। यदि ईश्वर न करे, तो व्यक्ति अपने दृढ़ संकल्प से मुकर जाता है, तो उसे अपने आप को दंडित करना चाहिए जैसा कि "आत्म-परीक्षण और अपनी सभी कमियों और दोषों के लिए स्वयं को कार्य करना" (अध्याय 18) के अध्याय में समझाया गया है। यदि कोई अपने स्वयं को दंडित करने में विफल रहता है [इसकी सुस्ती और आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ने के दृढ़ संकल्प को त्यागने के लिए], तो निम्न स्व पर हावी हो जाएगा [ऐसे व्यक्ति] और अब तक किए गए सभी आध्यात्मिक संघर्ष व्यर्थ हो जाएंगे।

आत्मा के रोग और स्वास्थ्य के संकेत

बता दें कि हर शरीर का अंग किसी खास मकसद से बनाया गया है। जिस क्रिया के लिए इसे बनाया गया है वह उसके द्वारा नहीं किया जाता है या दर्द और कठिनाई से नहीं किया जाता है, तो यह कहा जाएगा कि अंग ने अपना स्वास्थ्य खो दिया है। हाथ की बीमारी (या विकृति) यह है कि यह समझने की क्षमता खो देता है। आंख की बीमारी यह है कि वह देखने की क्षमता से वंचित हो जाती है। इसी तरह, हृदय (या आत्मा) की बीमारी यह है कि वह उस विशिष्ट कार्य को करने में असमर्थ हो जाता है जिसके लिए इसे बनाया गया है और वह है दिव्य ज्ञान, बुद्धि, दिव्य ज्ञान, दिव्य प्रेम, दिव्य पूजा, दिव्य स्मरण में आनंद प्राप्त करना, किसी की हर एक इच्छा पर उसे वरीयता देना और इस [उद्देश्य] को प्राप्त करने के लिए अपनी सभी इच्छाओं और अंगों से सहायता प्राप्त करना । इसलिए भगवान कहते हैं:

وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

"मैंने नहीं बनाया है *जिन्न* और मेरी आराधना को छोड़कर मनुष्य हैं। (कुरान, अध्याय 51, श्लोक 56)

किसी भी मामले में, हर अंग का कुछ न कुछ लाभ होता है। हृदय की अजीबोगरीब क्रिया ईश्वर की बुद्धि और ज्ञान है। मनुष्य में विशेष गुण वह है जिसके माध्यम से व्यक्ति को जानवरों से अलग किया जाता है क्योंकि खाने, पीने, देखने और संभोग करने की शक्ति जानवरों में भी मौजूद होती है। मनुष्य का विशिष्ट गुण यह है कि व्यक्ति चीजों की वास्तविकता को समझता है और यह एक तथ्य है कि सभी चीज़ों की उत्पत्ति, उनका आविष्कारक और निर्माता परमेश्वर है। अगर किसी को किसी चीज का ज्ञान है लेकिन वह उसके आविष्कारक को नहीं जानता और पहचानता है तो कहा जाएगा कि उसे उस चीज की वास्तविकता का पता भी नहीं है। जानने का संकेत प्रेम है। जो परमेश्वर को जानता है वह भी उससे प्रेम करेगा और प्रेम का चिन्ह यह है कि संसार में किसी भी चीज़ को उसके ऊपर वरीयता नहीं दी जाती है। जिसके हृदय में परमेश्वर के अलावा किसी और चीज़ का प्रेम है, ऐसे व्यक्ति का हृदय बीमार है, और यह उस पेट की तरह है जिसे रोटी खाने के बजाय गंदगी खाने की आदत हो जाती है। ऐसे पेट को बीमार कहा जाता है। ये हृदय की बीमारियों के लक्षण हैं और इस व्याख्या से यह ज्ञात होता है कि सभी हृदय बीमार हैं, सिवाय उन लोगों के जिन्हें परमेश्वर ने सुरक्षित रखा है।

कुछ बीमारियां इतनी विवेकपूर्ण होती हैं कि रोगी को उनके बारे में पता भी नहीं चलता। दिल के रोगों की स्थिति ऐसी ही होती है और मरीज को इन बीमारियों के बारे में पता भी नहीं चलता है। इसीलिए, कोई उनके साथ लापरवाही बरतता है। अगर किसी को बीमारी की स्थिति के बारे में पता चलता है, तो वह इसकी दवा की कड़वाहट पर धैर्य रखने का साहस खो देगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि हृदय के रोगों की दवा वासनाओं और इच्छाओं का विरोध कर रही है और ऐसा करने का दर्द मृत्यु के दर्द से अधिक दर्दनाक होता है। यहां तक कि अगर किसी में धैर्य रखने की क्षमता है, तो एक विशेषज्ञ डॉक्टर नहीं मिलता है जो [आत्मा के रोगों के लिए] इलाज को सही ढंग से दे सकता है। हृदय के रोगों के डॉक्टर या इलाज करने वाले [धार्मिक] विद्वान हो सकते हैं लेकिन उनके अपने दिल [ऐसे] बीमारियों में शामिल होते हैं। जब वे खुद को ठीक करने में असमर्थ हैं, तो वे दूसरों को कैसे ठीक कर सकते हैं? उस संबंध में, हृदय के रोग बढ़ गए हैं और लाइलाज हो गए हैं। दिल के रोगों को ठीक करने का ज्ञान विलुप्त हो गया है क्योंकि न तो लोग ऐसे बचे हैं जो इन बीमारियों को समझते हैं और न ही वे जो इन्हें ठीक करेंगे। लोग पूरी तरह से सांसारिकता के प्रेम में डूबे हुए हैं और ऐसे कार्यों में लिप्त हैं जिनका बाहरी रूप पूजा है और आंतरिक [वास्तविकता] आडंबर और दिखावा है। अब तक, वास्तविक बीमारियों के संकेतों का उल्लेख किया गया था। अब इलाज के परिणामस्वरूप प्राप्त स्वास्थ्य के संकेतों को सुनें।

इस संबंध में, जिस बीमारी को ठीक करने की आवश्यकता है, उसे ध्यान में रखा जाना चाहिए। यदि वह रोग है, उदाहरण के लिए, कंजूसी जो विनाशकारी है [किसी की आध्यात्मिकता, आध्यात्मिक मार्ग और आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं को नष्ट करने की अपनी आंतरिक क्षमता के कारण] और ईश्वर से दूरदर्शिता पैदा करती है, तो इसका इलाज धन और भौतिक संपत्ति को खर्च करने के माध्यम से हो सकता है। लेकिन कभी-कभी खर्च की सीमा पार हो जाती है और यह फिजूलखर्ची में बदल जाती है जो एक बीमारी भी है। वांछित स्तर [सभी चरम सीमाओं के बीच] संयम का है। खर्च में, मध्य स्तर वह उद्देश्य है जो [दो चरम सीमाओं] फिजूलखर्ची और कंजूसी के बीच में है। यदि आप संयम की बात और दो चीजों के बीच को खोजना चाहते हैं, तो इसका तरीका उन कार्यों पर एक नज़र डालना है जो कुछ आंतरिक गुणवत्ता के माध्यम से अस्तित्व में आए हैं। यदि वह क्रिया आसान और सुखद लगती है, तो किसी को पता होना चाहिए कि आंतरिक गुण [उस क्रिया से बंधा हुआ] स्वयं (नफ्स) पर हावी है। उदाहरण के लिए, यदि जरूरतमंदों और योग्य लोगों पर धन खर्च करना धन जमा करने और जमा करने से अधिक घृणित है, तो किसी को पता होना चाहिए कि कंजूसी का आंतरिक गुण स्वयं पर हावी है। उस स्थिति में, किसी को पात्र व्यक्तियों पर खर्च करने और उनके अधिकारों को वापस करने की व्यवस्था करनी चाहिए। यदि [निचला] स्वयं को गैर-योग्य व्यक्तियों पर खर्च करने में खुशी मिलती है और यह खर्च बचत से आसान लगता है, तो इससे यह समझा जा सकता है कि फिजूलखर्ची स्वयं पर हावी है। उस स्थिति में, किसी को धन को बचाने और फिजूलखर्ची से रोकने का सहारा लेना चाहिए। स्वयं (*नफ्स*) को इस तरह से देखा जाना चाहिए और उसकी रक्षा की जानी चाहिए और यह देखा जाना चाहिए कि कौन से कार्य स्वयं के लिए कठिन हैं और कौन से आसान हैं। यह सतर्कता और सुरक्षा तब तक जारी रहनी चाहिए जब तक कि धन और भौतिक

संपत्ति के प्रति इच्छा और झुकाव समाप्त न हो जाए ताकि स्वयं को न तो खर्च करने में दिलचस्पी हो और न ही जमाखोरी की ओर झुकाव हो। इसके बजाय, यह पानी की तरह हो जाता है जिसे जरूरत पड़ने पर रोक दिया जाता है और जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा, बचत पर खर्च करने को प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए [या इसके विपरीत]। एक हृदय जो इस डिग्री तक पहुंचता है [सभी मामलों में संतुलित संयम का, सभी चरम सीमाओं को दूर करते हुए] सभी विनाशकारी बुराइयों और नकारात्मक आंतरिक चरित्र लक्षणों से शुद्ध और शुद्ध रहेगा।

ईश्वर तक पहुंचने के लिए [दिव्य ज्ञान की स्थिति में], हृदय को दुनिया के सभी उलझनों और उलझनों से अलग करना अनिवार्य है ताकि जब [दिव्य] आदेश इस दुनिया (यानी, मृत्यु) से यात्रा में आगे बढ़ने के लिए आता है तो हृदय न तो किसी भी चीज़ [भौतिक] की ओर झुका हुआ है और न ही यह किसी भी साधन पर केंद्रित है [भौतिकवाद के रूप में इस दुनिया से बाहर की यात्रा सारहीन है]। इस अवस्था में [परमात्मा के साथ लगाव की], दिव्य उपस्थिति में स्वयं की वापसी सूक्ष्म [अस्तित्व] स्वयं (*नफ्स*) की वापसी होगी जो अपने स्वामी से प्रसन्न है और भगवान भी इससे प्रसन्न हैं। ऐसे स्वयं हैं जिन्हें पैगंबर (*अंबिया),* संतों और ज्ञानवादियों (*सिद्दीकीन*), शहीदों (*शुहादा),* और धर्मी (*सुल्हा*) के वर्ग में गिना जाता है [जो अभौतिक और पारलौकिक आध्यात्मिक क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों के मामले में उस क्रम में मनुष्यों की चार शीर्ष श्रेणियों में से हैं और शाश्वत सुख और अंतहीन विजय की उच्चतम डिग्री प्राप्त करने वाले हैं]। परमेश्वर ने ऐसे स्वयं को इन वचनों से संबोधित किया है:

يَٰٓأَيَّتُهَا ٱلنَّفْسُ ٱلْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ٱرْجِعِىٓ إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

"हे शांति से आत्मा! अपने रब के पास इस अवस्था में लौट आओ कि तुम उससे प्रसन्न हो जाओ और वह तुम से प्रसन्न हो। (कुरान, अध्याय 89, आयत 27-28)

दो चरम स्तरों के बीच का मध्य स्तर अत्यंत सूक्ष्म होता है। इसके बजाय, यह कहना बेहतर होगा कि यह बालों से पतला और तलवार से भी तेज है। वे लोग जो इस सांसारिक जीवन में इस कठिन मार्ग पर दृढ़ रहेंगे, वे *सीरत* के पुल (नरक पर एक संकरा पुल जिसके दूसरे छोर पर स्वर्ग है, जो बालों से भी पतला और तलवार से भी तेज है और प्रत्येक व्यक्ति को न्याय के दिन उस पुल के ऊपर से गुजरना होगा जैसा कि भविष्यसूचक शिक्षाओं द्वारा समझाया गया है) सुरक्षा के साथ। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य संतुलित संयम (सीरत *अल-मुस्तकीम*) के इस मध्य मार्ग के एक तरफ या दूसरी तरफ झुकता है और इसलिए, हृदय उस पक्ष से जुड़ा होता है जिसकी ओर वह झुकता है। जिन लोगों में पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय है (*मुत्ताकीन*) वे हैं जो इससे दूर होने के बजाय संतुलित संयम (सीरत अल-मुस्तकीम*) के मध्य मार्ग के करीब बने हुए* हैं। संतुलित संयम (*सीरत अल-मुस्तकीम)* के मध्य मार्ग में दृढ़ता बनाए रखने की कठिनाई को ध्यान में रखते हुए, कुरान का प्रारंभिक अध्याय जिसे *सूरह अल-फातिहा* के नाम से जाना जाता है,

जिसे हर दिन सत्रह बार अनिवार्य दैनिक प्रार्थनाओं में पढ़ा जाता है, इस प्रार्थना को अनिवार्य कर दिया गया है:

اَهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

"[हे भगवान!] हमें सीधे रास्ते पर ले जाएं (संतुलित संयम का मध्य मार्ग) (*सीरत अल-मुस्तकीम*)." (कुरान, अध्याय 1, श्लोक 6)

भले ही संतुलित संयम के सीधे रास्ते पर कदम रखना बहुत मुश्किल है, लेकिन जितना संभव हो सके इसके करीब रहने में कोई लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति सटीक संतुलित संयम प्राप्त करने में असमर्थ है, तो उसे यह स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि शाश्वत उद्धार केवल धार्मिक कर्मों पर निर्भर है और अच्छे कर्म सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक गुणों, चरित्र लक्षणों और स्वभावों से पैदा होते हैं। इस संबंध में, [परमेश्वर के] प्रत्येक दास को [लगातार] अपने गुणों, नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षणों और स्वभावों की जांच करनी चाहिए ताकि यदि कोई कमी है, तो उन्हें दूर किया जा सके।

अपने स्वयं के दोषों को खोजने की विधि

परमेश्वर जिसके साथ भी भलाई करने का इरादा रखता है, वह अपने स्वयं के दोषों में से एक को सूचित करता है। गहरी अंतर्दृष्टि वाले व्यक्ति में स्वयं से दोष छिपे नहीं होते हैं और जब कोई दोषों के बारे में जागरूक हो जाता है तो उन्हें ठीक करना आसान हो जाता है, लेकिन अधिकांश लोग अपने स्वयं के दोषों से अनजान होते हैं। स्थिति ऐसी है कि व्यक्ति दूसरों में छोटे-छोटे दोष तो देख सकता है लेकिन अपने भीतर बड़े दोष नहीं देख सकता। अपने स्वयं के दोषों को पहचानने के चार तरीके हैं:

पहली विधि : व्यक्ति को ऐसे आध्यात्मिक मार्गदर्शक की सभा में भाग लेना चाहिए जो स्वयं के दोषों और उसकी छिपी हुई विनाशकारी क्षमता से अवगत हो । ऐसे आध्यात्मिक मार्गदर्शक को सुनना चाहिए और आध्यात्मिक संघर्ष के बारे में निर्देशों पर कार्य करना चाहिए। आध्यात्मिक *मार्गदर्शक (*मुर्शिद) के साथ एक साधक (*मुरीद)* और शिक्षक के साथ एक छात्र की ऐसी स्थिति होती है। एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक साधक को सूचित करता है और एक शिक्षक छात्र को अपने आंतरिक दोषों और कमियों के बारे में सूचित करता है और उनसे छुटकारा पाने के तरीके सुझाता है। इस दिन और उम्र में, इस पद्धति पर कार्य करने वालों को ढूंढना दुर्लभ है।

दूसरा तरीका: व्यक्ति को एक ईमानदार, वफादार, बुद्धिमान और ईश्वर सचेत मित्र की तलाश करनी चाहिए और अपने स्वयं के ऊपर एक पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्त करना चाहिए ताकि ऐसा मित्र किसी की आंतरिक अवस्थाओं और कार्यों पर नजर रख सके और जो भी दोष किसी के बाहरी या आंतरिक अस्तित्व में दिखाई देता है, उसे इसके बारे में चेतावनी देनी चाहिए। ईश्वर के मार्ग के महान पूर्ववर्ती विद्वानों ने इस पद्धति का अनुसरण किया है।

उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) और दूसरे खलीफा के सहायक और साथी) कहते थे: "भगवान उस व्यक्ति पर दया करे जो मुझे मेरे दोषों के बारे में सूचित करेगा"। एक बार सलमान अल-फ़ारसी (भगवान उनसे प्रसन्न हों - एक और भविष्यवक्ता साथी) उनके पास आए और उन्होंने उनसे पूछा: "अगर आपने मेरे बारे में कोई बुरी बात सुनी है तो कृपया मुझे बताएं ताकि मैं खुद को सुधार सकूं"। सलमान (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने जवाब देने से खुद को माफ करने की कोशिश की, लेकिन जब उमर (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने जोर दिया, तो उन्होंने उनसे कहा: "मैंने सुना है कि आपके खाने की चटाई पर दो व्यंजन (खाद्य पदार्थ) हैं और आपके पास दो जोड़ी कपड़े हैं, एक रात के लिए और एक दिन के लिए। उमर (खुदा उनसे प्रसन्न हो) ने पूछा, "क्या आपको इसके अलावा कुछ और पता चला है"। सलमान ने जवाब दिया, "नहीं। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "इन दो मामलों के बारे में संतुष्ट रहें [क्योंकि उनमें से कोई भी सच नहीं है क्योंकि मैं भोजन के लिए केवल एक खाद्य पदार्थ खाता हूं और मेरे पास केवल एक जोड़ी कपड़े हैं]"। उमर (रइश्वर उनसे प्रसन्न हों) हुदैफा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हों) से उनके दोषों के बारे में पूछते थे और उनसे पूछते थे: "आप इस रहस्य के पैगंबर के साथ सह-भागीदार हैं कि पाखंडी कौन हैं। क्या तुम भी मुझमें पाखंड के कोई लक्षण देखते हो?" विचार कीजिए, कैसे उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) अपनी महिमा [एक निडर नेता के रूप में जिसने दुनिया के एक विशाल क्षेत्र पर शासन किया] और उच्च स्थिति [एक महान आध्यात्मिक उपलब्धि हासिल करने वाले के रूप में] के बावजूद, [अपनी कमियों के लिए] खुद को दोषी ठहराया और लोगों पर उसे अपने दोषों के बारे में बताने के लिए जोर दिया।

जिसकी बुद्धि अधिक है और [आध्यात्मिक] स्थिति उच्च है, वह आत्म-धार्मिकता या आत्म-अभिमान ('*उजुब* या आत्म-प्रशंसा और अपने आप को हर चीज के बारे में सही होने के बारे में उच्च सोचना) की बीमारी से संक्रमित नहीं होगा, सिवाय इसके कि कुछ हद तक [जिसे आध्यात्मिक संघर्ष के माध्यम से भी दूर किया जा सकता है]। ऐसा व्यक्ति लगातार खुद को गलत समझता है और अच्छा और शुद्ध होने के बजाय उसके गलत कामों के लिए निगरानी के योग्य है [उमर (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) का उदाहरण इसका एक उदाहरण है]। इस दिन और उम्र में, ऐसे दोस्त मिलना मुश्किल है जो बिना किसी रियायत के किसी के दोषों के बारे में सूचित करें। अधिकांश दोस्त चापलूसी करना पसंद करते हैं और किसी गलती को एक विशेषज्ञता (या गर्व करने के लिए कुछ अच्छा) कहने में कोई समस्या नहीं पाते हैं और ऐसा करने के बारे में सोचते हैं कि दोस्ती के अधिकारों को पूरा करना [अच्छे दोस्त बनकर]। कुछ दोस्तों का स्वभाव ईर्ष्यालु होता है और वे

उन्हें बताने में दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं। ईमानदार, निस्वार्थ और सच्चे दोस्त का अस्तित्व दुर्लभ है। इसीलिए, ज्ञानवादी दाउद ता-ई (भगवान उस पर दया करें) ने खुद को ऐसे लोगों से अलग कर लिया। कुछ लोगों ने उनसे पूछा: "आप लोगों से क्यों नहीं मिलते?" उसने जवाब दिया: "मैं उन दोस्तों से मिलकर क्या करूँगा जो मुझे मेरी गलतियों के बारे में नहीं बताएंगे?"

जो लोग दीन (ईश्वर के मार्ग) से प्यार करते हैं , उनकी सबसे बड़ी इच्छा होती है कि अन्य लोग उन्हें अपनी गलतियां बताएं। इस दुनिया में [कथित] अपमान [किसी के दोषों के बारे में सूचित होने के परिणामस्वरूप] परलोक के [वास्तविक] अपमान की तुलना में बहुत छोटा है [जहां किसी की आत्मा के भीतर इन दोषों को रखने के लिए परिणाम होंगे]। लेकिन अब लोगों के साथ स्थिति इसके विपरीत है। ऐसे दोस्त खुद को दुश्मनों की सूची में सबसे ऊपर पाते हैं जो हमें हमारे दोषों के बारे में सूचित करते हैं और हमें उनके बारे में सलाह देते हैं। यह हमारे विश्वास की कमजोरी का संकेत है कि जब हमारे दोष हमारी ओर इंगित किए जाते हैं तो हम नाराज और क्रोधित हो जाते हैं। खराब नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षणों, गुणों और स्वभावों की समानता सांप और बिच्छू की तरह है। यदि ये घातक जीव आपके कपड़ों में प्रवेश करते हैं और कोई आपको उनके नुकसान के बारे में सूचित करता है और आपको उनसे खुद को बचाने की सलाह देता है या आपको उस स्थिति में उनसे खुद को बचाने का कोई तरीका बताता है तो क्या वह व्यक्ति आपका दुश्मन बन जाएगा? बिलकुल नहीं! हमें ऐसे व्यक्ति के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए और बिच्छू आदि से खुद को बचाने का प्रयास करना चाहिए, भले ही बिच्छू के विष का प्रभाव एक-दो दिन तक बना रहेगा, लेकिन बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षण, गुण और स्वभाव का प्रभाव मृत्यु के बाद भी बना रहेगा। फिर आखिर क्या बात है कि हम अपने सलाहकार और शुभचिंतक को अपना दुश्मन मानते हैं और ऐसे व्यक्ति द्वारा बताए गए दोषों को दूर नहीं करते हैं? इसके बजाय, हम उस व्यक्ति में दोष खोजने लगते हैं ताकि ऐसा व्यक्ति भविष्य में हमें सलाह देने की हिम्मत न करे। हमारे शुभचिंतक [जो हमें हमारे दोषों के बारे में सूचित करता है] को एक दुश्मन के रूप में सोचना उन लोगों द्वारा किया जाता है जिनके दिल अत्यधिक पापों [और गलत कामों] के कारण काले और कठोर हो गए हैं। यह विश्वास की कमजोरी का कार्य है। हे परमेश्वर! हमें शुद्धता और मार्गदर्शन का मार्ग दिखाएं और हमें हमारे दोषों के बारे में सूचित करें और हमें उन्हें मिटाने की शक्ति प्रदान करें और हमें उन लोगों को धन्यवाद देने में सक्षम बनाएं जो हमें हमारे दोषों के बारे में सूचित करते हैं। *अमीन!* (आमीन!)

तीसरी विधि: शत्रुओं के माध्यम से अपने दोषों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए क्योंकि शत्रुओं की आँखें दोषों के अलावा कुछ नहीं देखती हैं, और उनकी जीभ दोषों के अलावा कुछ नहीं कहती है। इस बारे में मेरा विचार यह है कि उन दोस्तों की तुलना में जो चापलूसी करना पसंद करते हैं, कोई भी गलती चुनने, गलती देखने और गलती बोलने वाले दुश्मनों से अधिक लाभ उठा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दोस्त आमतौर पर प्रशंसा करते हैं, और उनकी आंखें केवल अच्छी चीजें देखती हैं और उनकी जीभ केवल अच्छी तरह से बोलती है। यह सच है कि मनुष्य, अपने सहज स्वभाव में, अपने शत्रुओं को अस्वीकार

करते हैं और उनसे आने वाली हर चीज को [उनकी] ईर्ष्या के कारण आने वाली समझते हैं। हालाँकि, अंतर्दृष्टि वाले लोग अपने शत्रुओं का भी फायदा उठाते हैं।

चौथा तरीका : व्यक्ति को लोगों के साथ घुलमिल जाना चाहिए और उनमें जो भी दोष दिखाई देते हैं, उन्हें सामने रखना चाहिए और यदि वे स्वयं में पाए जाते हैं तो स्वयं को (*नफ्स*) को कार्य में ले लेना चाहिए। एक आस्तिक एक विश्वासी का दर्पण है [जिसे एक भविष्यद्वाणी के कथन में कहा और पुष्टि की गई है]। हर किसी को अपने मुस्लिम भाई [या बहन] के आईने में अपनी छवि देखनी चाहिए और अपने दोषों के माध्यम से, अपने दोषों का पता लगाना चाहिए और इस बात पर विचार करना चाहिए कि इच्छाओं का पालन करने के मामले में, स्वभाव आम तौर पर एक-दूसरे के करीब होते हैं। कोई चीज जो एक में मौजूद है, उसका हिस्सा या पूरा दूसरे में भी होगा। इन सिद्धांतों के प्रकाश में, व्यक्ति को अपने स्वयं के दोषों का पता लगाना चाहिए और उनके हृदय को शुद्ध करना चाहिए। यदि अच्छे शिष्टाचार और आंतरिक शुद्धि के लिए इस पद्धति को अपनाया जाता है, तो प्रत्येक व्यक्ति का सुधार अपने आप हो जाएगा क्योंकि शिष्टाचार के मार्गदर्शक और शिक्षक की आवश्यकता नहीं होगी। किसी ने यीशु से पूछा: "तुम्हें *आदब* (नैतिकता, शिष्टाचार और शिष्टाचार) किसने सिखाया?" उन्होंने जवाब दिया: "किसी ने मुझे *अदब* (नैतिकता, शिष्टाचार और शिष्टाचार) नहीं सिखाया, अज्ञानी की अज्ञानता मुझे बुरी लगी, इसलिए मैंने खुद को उससे अलग कर लिया"। यह उन लोगों की पद्धति है जिन्हें एक शिक्षक (आध्यात्मिक मार्गदर्शक) नहीं मिलता है जो उत्कृष्टता [चरित्र], अंतर्दृष्टि, दिव्य ज्ञान और बुद्धि जैसे गुणों के साथ रखता है, जो सभ्यता और स्वयं की शुद्धि के साथ काम करने के बाद, अब भगवान के सेवकों (यानी, साथी मनुष्यों) की शिक्षा और सभ्यता में व्यस्त है और उन्हें करुणा के साथ सलाह देता है और उन्हें अच्छे मार्ग पर मार्गदर्शन करता है। जिसके पास ऐसे [आध्यात्मिक] शिक्षक की संगति है, वह ऐसा है जैसे कि उसके पास एक पैदल अस्पताल है जहां [आत्मा की] हर [आंतरिक] बीमारी का इलाज उपलब्ध है। ऐसे शिक्षक के साथ जुड़े रहना चाहिए जो किसी के [आंतरिक] रोगों को ठीक करेगा और उसे विनाश से बचाएगा।

इच्छाओं और वासनाओं को अस्वीकार करने और ईश्वरीय कानून से इसके प्रेषित प्रमाणों और साक्ष्यों के माध्यम से हृदय के रोगों का इलाज

यदि आप उपरोक्त विवरणों पर विचार करते हैं, तो अंतर्दृष्टि के द्वार [आपके लिए] खुल जाएंगे और ज्ञान और निश्चितता के प्रकाश के साथ, आत्मा के रोग और इलाज की विधि स्पष्ट हो जाएगी। हालाँकि, यदि आप चिंतन के माध्यम से बीमारियों और उनके इलाज को जानने में असमर्थ हैं, तो अभी भी इस तरह का अनुसरण करना चाहिए और अदृश्य (*इमान बी अल-ग़ैब*) में विश्वास के माध्यम से उनका पता लगाना चाहिए क्योंकि विश्वास की डिग्री अलग है और ज्ञान की डिग्री इससे अलग है। विश्वास के बाद ज्ञान की प्राप्ति होती है। भगवान कहते हैं:

يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ

"परमेश्वर तुम में से उन लोगों की श्रेणी बढ़ाएगा जो विश्वास रखते हैं और जो ज्ञान से संपन्न हैं। (कुरान, अध्याय 58, श्लोक 11)

इसलिए, जिसने औचित्य के लिए पूछे बिना यह पता लगा लिया कि ईश्वर तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग (ईश्वरीय उपस्थिति की स्थिति में) इच्छाओं का विरोध करना है [और निचले आधार के स्वयं से वासनाओं], विश्वास में विश्वास करने वालों की श्रेणी प्राप्त की, और जो इस [दिव्य] रहस्य की वास्तविकता को प्राप्त कर लिया, वह उन लोगों में से है जो विश्वास के साथ-साथ ज्ञान से संपन्न हैं। परमेश्वर ने विश्वास के लोगों और ज्ञानी लोगों दोनों से भलाई का वादा किया है। भगवान कहते हैं:

وَكُلًّا وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلْحُسْنَىٰ

"और दोनों के लिए, भगवान ने भलाई का वादा किया है। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 95)

ईश्वरीय कानून से साक्ष्य: वास्तविकता यह है कि इच्छाओं को छोड़ना ईश्वर तक पहुंचने का एकमात्र तरीका है (ईश्वरीय उपस्थिति प्राप्त करना) को [ईश्वरीय पुस्तक - कुरान की], भविष्यसूचक परंपराओं (*हदीस*) *और* विद्वान विद्वानों की कहावतों द्वारा प्रमाणित और प्रमाणित किया गया है। भगवान कहते हैं:

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ وَنَهَى ٱلنَّفْسَ عَنِ ٱلْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

فَإِنَّ ٱلْجَنَّةَ هِىَ ٱلْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

"जो अपने भगवान के सामने खड़े होने से डरता था और खुद को नीच इच्छाओं और जिद्दी गलत सिर वाली मूर्खताओं से रोकता था (*हवा*), ऐसे का अंतिम निवास स्वर्ग होगा। (कुरान, अध्याय 79, आयत 40-41)

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ٱمْتَحَنَ ٱللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ ۚ

"ये वे लोग हैं जिनके दिलों को भगवान ने पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर के भय के लिए शुद्ध किया है (*तकवा*)." (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 3)

इसकी व्याख्या यह है कि परमेश्वर ने उनके हृदय से निचले स्व से इच्छाओं के प्रति प्रेम को हटा दिया है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

المؤمن بين خمس شدائد، مؤمن يحسده، ومنافق يبغضه، وكافر يقاتله،
وشيطان يضله، ونفس تنازعه

"एक आस्तिक पांच कठिनाइयों के बीच में है: दूसरा आस्तिक एक से ईर्ष्या करता है, पाखंडी एक के प्रति शत्रुता रखता है, अविश्वासी एक के खिलाफ लड़ता है, शैतान एक को गुमराह करता है, और स्वयं (*नफ्स*) एक के साथ विवाद करता है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह अनस के अधिकार पर *मकरीम अल-इखलाक* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यह भविष्यसूचक परंपरा सूचित करती है कि स्वयं एक विवादास्पद बहस करने वाला शत्रु है और इसके खिलाफ [आध्यात्मिक] संघर्ष जरूरी है। एक कथन के अनुसार, परमेश्वर ने पैगंबर दाऊद (दाऊद) (ईश्वर की कृपा उस पर हो) को प्रकट किया: "हे दाऊद! अपने साथियों को निचले स्व से इच्छाओं को आसान बनाने से डरें क्योंकि ऐसे दिलों की बुद्धि इच्छाओं से जुड़ी होती है और वे (दिल) मेरे साथ जुड़े होते हैं। यीशु (परमेश्वर की शांति उस पर हो) ने कहा: "उस व्यक्ति के लिए खुशखबरी हो जो भविष्य के लिए वादा की गई चीजों के लिए [वर्तमान में] वर्तमान इच्छाओं और वासनाओं को छोड़ देता है (दूसरे शब्दों में, स्वर्ग)"। उन्होंने आगे कहा:

المجاهد من جاهد نفسه في طاعة الله عز وجل

"एक सीढ़ी [ईश्वर के मार्ग में] वह है जो ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, निचले स्व [और उसकी इच्छाओं] के खिलाफ [आध्यात्मिक] संघर्ष करता है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने फधाला बिन सईद के अधिकार पर* तिर्मिज़ी *और* इब्ने माजा *को* इकट्ठा किया है।

संतों और ज्ञानवादियों की बातें: सुफियान अल-थौरी (भगवान उन पर दया करें) ने कहा: "मुझे स्वयं को ठीक करने से अधिक कठिन कोई इलाज नहीं मिला है। स्वयं कभी-कभी लाभकारी होता है और कभी-कभी हानिकारक होता है। अबू अल-अब्बास मुसाली (ईश्वर उन पर दया करे) अपने आप से यह कहते थे: "आप न तो राजकुमारों की तरह दुनिया का आनंद लेते हैं और न ही आप एक उपासक की तरह आध्यात्मिक संघर्ष करते हैं। क्या आप मुझे स्वर्ग और नरक के बीच जेल में डाल देंगे? क्या आपको कोई शर्म नहीं है?" हसन अल-बसरी (भगवान उस पर दया करें) ने कहा: "एक जंगली घोड़े की तुलना में, स्वयं को एक घोड़े की अधिक आवश्यकता होती है [क्योंकि यह एक जंगली अदम्य घोड़े की तुलना में अधिक बड़े पैमाने पर दौड़ता है]"। याह्या बिन मुआद (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "आध्यात्मिक संघर्ष की तलवार के साथ स्वयं के खिलाफ लड़ो और वह तलवार यह है कि व्यक्ति कम खाता है, कम सोता है, केवल जरूरत पड़ने पर ही बोलता है और लोगों से प्राप्त कठिनाइयों के साथ धैर्य रखता है। इच्छाएँ [निम्न निम्न स्वयं से] और वासनाएँ कम खाने से समाप्त हो जाती हैं, कम सोने से व्यक्ति के इरादों में पवित्रता आती है, कम बात करने से व्यक्ति को परीक्षाओं और क्लेशों से बचाया जाता है, और लोगों से प्राप्त दर्द और कठिनाइयों पर धैर्य रखने से व्यक्ति के उद्देश्य और गंतव्य तक पहुँचने में सफलता मिलती है। किसी के लिए सबसे कठिन बात है दर्द और पीड़ा के समय सहनशीलता और विपत्ति के समय धैर्य। इसलिए जब स्वयं में इच्छाएं और वासनाएं पैदा होती हैं या व्यर्थ की बातों का सुख और मिठास तेज हो जाती है, तो

उस समय कम नींद के म्यान से कम खाने की तलवार निकालनी चाहिए और मौन के हाथों से घातक प्रहार करना चाहिए ताकि आत्मा अपने उत्पीड़न से दूर रहे, और इससे आने वाले क्लेश ठंडे हो जाते हैं और हृदय इच्छाओं और वासनाओं की गंदगी से शुद्ध और शुद्ध हो जाता है। यदि स्वयं के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है, तो वह शुद्ध, शुद्ध, प्रकाशित और हल्का हो जाएगा, धार्मिकता के क्षेत्र उसके मार्ग होंगे, [दिव्य] आज्ञाकारिता की घाटियाँ इसके मार्ग होंगे और यह इन खेतों और घाटियों में मैदानों में बेरोकटोक सरपट दौड़ने वाले घोड़े की तरह दौड़ेगा या बगीचे में राजा की तरह टहलेगा।

याह्या बिन मुआद (ईश्वर उस पर दया करे) भी कहा करते थे: "मनुष्य के तीन शत्रु हैं: संसार, शैतान और स्वयं। अपने आप को दुनिया (या सांसारिकता) से संयम के माध्यम से [इसमें लिप्तता से] सुरक्षित रखें, शैतान का विरोध करके उस पर प्रभुत्व प्राप्त करें [और उसके उपदेश और अनुनय], और इच्छाओं और वासनाओं को त्यागकर स्वयं को वश में करें। एक बुद्धिमान आध्यात्मिक मार्गदर्शक ने कहा: "जो स्वयं पर हावी हो गया है वह वासनाओं का कैदी है, किसी के पैर इच्छाओं से बंधे हुए हैं, कोई अब बुद्धि से निर्देशित नहीं है, वे (इच्छाएं और वासनाएं) उसे पकड़ लेते हैं और जहां चाहे वहां ले जाते हैं, और दिल को कोई लाभ नहीं दिया जा सकता है। ज्ञान और ज्ञान के सभी लोग इस बात से सहमत हैं कि इस दुनिया के [भौतिक] आशीषों को अलविदा कहे बिना (यानी, स्वर्ग) के बाद के जीवन की आशीषें प्राप्त नहीं की जाती हैं [जबकि इस दुनिया के अभौतिक (आध्यात्मिक) आशीर्वाद इस दुनिया से नहीं हैं]। अबू याह्या वार्राक (भगवान उस पर दया करें) ने कहा: "जो कोई भी इच्छाओं और वासनाओं में लिप्त होकर अंगों को प्रसन्न करता है, वह हृदय के देश में शर्म के बीज बोता है"। वोहैब इब्न अल-वार्ड (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "रोटी के अलावा कुछ भी निचले स्व की इच्छाओं से है"। उन्होंने आगे कहा: "जो इस दुनिया की इच्छाओं और वासनाओं से प्यार करता है, उसे बाद के जीवन के अपमान के लिए तैयार रहना चाहिए"। जब पैगंबर यूसुफ (यूसुफ) (ईश्वर की शांति उन पर हो) को मिस्र के खजाने के लिए जिम्मेदार बनाया गया था और उन्होंने मिस्र के बारह हजार अभिजात वर्ग के एक शानदार जुलूस का नेतृत्व किया था, तो जुलैखा (मिस्र के मंत्री की पत्नी जो पैगंबर जोसेफ [सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम] से प्यार में पड़ गई थी, जब वह छोटा था, जिसने बाद में दशकों की कैद के बाद उससे शादी कर ली, रिहाई और मिस्र के खजाने के प्रभारी के रूप में नियुक्त) ने उससे कहा: "ऐ यूसुफ! लालच और इच्छाओं ने राजाओं को गुलाम बना दिया और धैर्य और पवित्र विस्मय, ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भय (*तक़्वा*) ने दास बना दिया। पैगंबर यूसुफ (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि यह ईश्वर की निम्नलिखित कहावत के अनुसार सच है:

إِنَّهُۥ مَن يَتَّقِ وَيَصۡبِرۡ فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجۡرَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ

"वास्तव में, जो पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर के भय की स्थिति में पापों से दूर रहता है और धैर्यवान है, परमेश्वर ऐसे अच्छे कार्यों [और सच्चे प्रयासों] को ऐसे अच्छे काम करने वालों के लिए व्यर्थ नहीं जाने देता है। (कुरान, अध्याय 12, श्लोक 90)

जुनैद बगदादी ने कहा, "एक रात मैं जाग रहा था और प्रार्थना करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मैं वह आंतरिक आनंद हासिल नहीं कर सका जिसका मुझे आदी था। मैंने सोने की कोशिश की लेकिन नहीं बैठ सका, उठने की कोशिश की लेकिन नहीं बैठ सका। इससे मजबूर होकर मैं बाहर आया और देखा कि कंबल ओढ़े एक आदमी सड़क के किनारे लेटा हुआ है। जब उसने मेरे कदमों की आहट सुनी, तो उसने मुझे अपने पास आने के लिए कहा। मैंने उससे कहा, 'तुमने मुझे अपने आने की सूचना नहीं दी!' उन्होंने कहा, "मैंने भगवान से प्रार्थना की कि वह आपके दिल को मेरी ओर झुकाए। मैंने कहा, "भगवान ने आपकी प्रार्थना सुनी, अब मुझे अपना उद्देश्य बताओ (यहां आने का)। उन्होंने कहा, "हे अबू अल-कासिम! मुझे बताओ, [निचले] स्वयं के लिए इलाज क्या है? मैंने कहा: 'जब कोई अपनी इच्छाओं का विरोध करता है तो स्वयं को इससे दर्द और यातना महसूस होती है, लेकिन यही इसका इलाज और दवा है। उसने कहा, "हे स्वयं! इसे सुनो! मैंने तुम्हें सात बार एक ही उत्तर दिया, परन्तु तुमने मेरी बात नहीं सुनी। अब जुनैद भी यही बात का पता लगा रहे हैं। क्या तुम उसकी बात भी नहीं मानोगे? किसी ने उमर बिन अब्दुल अजीज (भगवान उन पर दया करे) से पूछा: "मुझे कब बोलना चाहिए?" उन्होंने जवाब दिया: "जब आपको चुप रहने की इच्छा हो"। उसने पूछा: "मुझे कब चुप रहना चाहिए?" उन्होंने जवाब दिया: "जब आप बोलने की इच्छा रखते हैं"। अली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने कहा: "जो स्वर्ग जाने की इच्छा रखता है, उसे इस दुनिया में इच्छाओं से दूर रहना चाहिए"। मलिक बिन दीनार (भगवान उन पर दया करे) बाजार में जाते थे और जब वह कुछ अच्छा देखते थे और उनका मन उसे खरीदने की ओर झुकता था, तो वह अपने आप को आराम देते थे, उसे धैर्य रखने की सलाह देते थे और कहते थे: "मैं भगवान की कसम खाता हूं! मैं आपको आपकी भव्यता और महानता के कारण इससे मना करता हूं [आपके पास सर्वोच्च आध्यात्मिक ऊंचाइयों पर चढ़ने की क्षमता के कारण]"।

विद्वानों का सर्वसम्मत निर्णय: सभी विद्वान विद्वानों और ज्ञानी लोगों का सर्वसम्मत निर्णय है कि परलोक में शाश्वत सुख और अंतहीन विजय (सादाह) प्राप्त करने का केवल एक ही तरीका है और वह है आत्म को जिद्दी, गलत सिर वाली मूर्खता (हवा - अहंकार और हर चीज के बारे में सही होने के बारे में आत्म-भ्रम से उत्पन्न होने वाले दृढ़ विश्वास से) और लालच से दूर रखना और इसे इच्छाओं और वासनाओं का पालन करने से रोकना। निचला स्व। इस संबंध में, इस निर्णय पर विश्वास करना और उस पर कार्य करना अनिवार्य है। आध्यात्मिक संघर्ष का परिणाम और सारांश यह है कि स्वयं केवल उन चीजों का लाभ उठाता है जो कब्र में किसी के साथ नहीं जाएंगी जैसे कपड़े, विवाह, खाना, पीना, निवास, आदि, जो जीवन के लिए आवश्यक हैं। इन वस्तुओं की आवश्यक मात्रा की सीमा को पार करने का मतलब यह होगा कि कोई इन चीजों से प्यार करता है और मृत्यु के बाद, दुनिया में वापस आना चाहता है और केवल वही व्यक्ति दुनिया में वापस आने की इच्छा कर सकता है जिसका परलोक के प्रतिदान और इनाम में कोई हिस्सा नहीं है। इस संसार का साहचर्य एक बीमारी है और इस बीमारी से छुटकारा पाने का एक ही उपाय है और वह यह है कि व्यक्ति का हृदय पूरी तरह से ईश्वर के प्रेम, ज्ञान, स्मरण और चिंतन में लिप्त हो और व्यक्ति सांसारिक चीजों (साधनों) से केवल इस हद तक संतुष्ट रहता है कि वे इस भोग में बाधा न बनें। यह स्थिति केवल परमेश्वर के अनुग्रह और आशीषों के साथ और उसके द्वारा दी गई शक्ति और शक्ति के माध्यम से आती है।

चार प्रकार के लोग: जो लोग इस वास्तविक आध्यात्मिक अभ्यास तक पहुंचने में सक्षम नहीं हैं, उन्हें निश्चित रूप से इसके करीब पहुंचने का प्रयास करना चाहिए। इस संबंध में, चार प्रकार के लोग हैं। कुछ

लोग ऐसे होते हैं कि उनके हृदय परमेश्वर की याद में [पूरी तरह से] लीन हो जाते हैं। आर्थिक आवश्यकता के अपवाद को छोड़कर, उनका ध्यान दुनिया पर नहीं है। ये लोग सिद्दीकी की श्रेणी में से हैं (पैगंबरों के बाद लोगों की दूसरी सर्वोच्च श्रेणी जिन्हें ज्ञानवादी के रूप में भी जाना जाता है या जो सत्य के प्रति समर्पित हैं, और आध्यात्मिक संघर्ष के परिणामस्वरूप उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान, मित्रता और ईश्वर की अंतरंगता प्राप्त की है)। यह [उच्च आध्यात्मिक] पद केवल एक लंबे समय तक आध्यात्मिक संघर्ष और लंबे समय तक इच्छाओं और वासनाओं को त्यागने के बाद प्राप्त होता है। दूसरे प्रकार में वे लोग शामिल हैं जिनका हृदय दुनिया में हर पल (सांसारिकता या भौतिक अस्तित्व) डूबा रहता है। भले ही वे परमेश्वर को याद करते हों, यह केवल जीभ पर है और हृदय का इससे कोई लेना-देना नहीं है। वे विनाश की ओर जाने वालों की श्रेणी में शामिल हैं [बाद के जीवन में क्योंकि उन्होंने अनन्त जीवन के लिए कार्य नहीं किया था और उनका ध्यान पूरी तरह से इस संसार के भौतिक जीवन पर था]। तीसरे प्रकार के लोगों में वे शामिल हैं जो *दीन* (ईश्वर या ईश्वरीय मार्गदर्शन का मार्ग) और दुनिया दोनों में लगे हुए हैं लेकिन *दीन* दिल पर हावी है। उन्हें दैवीय प्रतिशोध मिलेगा लेकिन दिल पर ईश्वरीय चिंताओं के प्रभुत्व की सीमा के अनुरूप जल्द ही इससे छुटकारा मिल जाएगा। चौथे प्रकार के लोगों में वे लोग शामिल हैं जो दीन (ईश्वर के मार्ग) और दुनिया दोनों में लगे हुए हैं लेकिन उनके दिल में सांसारिक चिंताएं ईश्वरीय चिंताओं पर हावी हैं। इन लोगों को तुलनात्मक रूप से लंबी अवधि के लिए ईश्वरीय दंड के अधीन किया जाएगा, लेकिन अंत में इसका सामना करने के बाद इससे बाहर आ जाएंगे क्योंकि भले ही दुनिया उनके दिलों पर हावी थी, लेकिन वे *दीन* (भगवान या दिव्य मार्गदर्शन) से भी वंचित नहीं थे। दिव्य याद की शक्ति उनके उद्धार का स्रोत होगी।

अनुमेय चीज़ों से सुख: कुछ लोग सोचते हैं कि अनुमेय चीज़ों से आनंद प्राप्त करना स्वीकार्य है और इससे परमेश्वर से दूर नहीं होना चाहिए। उनका यह विचार गलत है। वास्तविकता [या मामले की सच्चाई] उन लोगों के लिए प्रकट हुई जिन्होंने सांसारिकता के प्रेम को सभी पापों की जड़ कहा है और जिनकी राय में इस प्रेम में सभी धार्मिक कर्म व्यर्थ हो जाते हैं। किसी की आवश्यकता से अधिक अनुमेय चीज़ें रखना, भले ही यह अनुमेय हो, सांसारिकता में शामिल है और सृष्टिकर्ता से दूरी बनाता है। इब्राहिम अल-खवास (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "एक बार मैं लिकम पर्वत पर रह रहा था और मैंने एक पेड़ पर अनार देखा। मैं इसे खाना चाहता था, इसलिए मैंने एक को पेड़ से तोड़ दिया और जब मैंने इसे खाया, तो यह खट्टा था। मैंने उसे फेंक दिया और अपने रास्ते पर चला गया। मैंने रास्ते पर एक आदमी को देखा जिसे बार-बार मधुमक्खियों द्वारा डंक मारा जा रहा था। उसने मुझे पुकारा, "ऐ इब्राहीम! मैंने आश्चर्य से जवाब दिया: 'आप कौन हैं और आप मुझे कैसे जानते हैं? उन्होंने कहा: 'जो ईश्वर को जानता है (दिव्य ज्ञान है), ऐसे व्यक्ति से कुछ भी छिपा नहीं है'। मैंने कहा, 'आप एक ईश्वरीय संत हैं। आप अपने लिए भगवान से प्रार्थना क्यों नहीं करते कि वह आपके लिए मधुमक्खियों और उनके द्वारा दिए गए दर्द से छुटकारा पाए। उन्होंने उत्तर दिया, "आप भी एक ईश्वरीय संत हैं। तुमने अपने दिल से अनार की इच्छा को दूर करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना क्यों नहीं की? मधुमक्खियों का दर्द केवल इस दुनिया में है। इच्छाओं और वासनाओं के कारण होने वाले कष्ट मृत्यु के बाद भी आपका साथ नहीं छोड़ेंगे। मैं इसका जवाब नहीं दे सका और आगे बढ़ गया। सारी अल-सकाती (भगवान उन पर दया करें) ने कहा: "चालीस साल से, मेरा दिल चाहता है कि मैं खजूर के अमृत में रोटी डुबोऊं और इसे खाऊं, लेकिन मैंने अपने दिल से इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया है"।

अनुमेय मामलों से बचना: स्वयं का सुधार तब तक संभव नहीं है जब तक कि इसे अनुमेय मामलों के सुखों को [लिप्त] करने से रोका न जाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि कोई अनुमेय मामलों के सुखों को पार करने और अनुमेय मामलों में लिप्त होने के लिए उत्तरदायी है। उदाहरण के लिए, यदि कोई चाहता है कि उसकी जीभ चुगली और बेकार की बातों में लिप्त न हो तो उसे केवल ईश्वरीय स्मरण के शब्दों और आध्यात्मिक आवश्यकताओं से संबंधित मामलों का उच्चारण करना चाहिए। व्यक्ति को शेष मामलों में मौन का पालन करना चाहिए, भले ही वे अनुमेय हों (मुबा*)*, जब तक कि बोलने की वासना (बोलने) का अंत नहीं हो जाता है और जीभ को सत्य की आदत नहीं हो जाती है (नैतिकता, नैतिकता और ईमानदारी के पालन के साथ शब्दों के उच्चारण में संवेदनशीलता)। ऐसे में बोलना भी पूजा बन जाएगा और मौन भी पूजा बन जाएगा। आंख की स्थिति भी ऐसी ही है। अगर हर अच्छी चीज को देखने की आदत है तो किसी न किसी दिन यह कुछ बुरा भी देखेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो चीज कानूनी और अनुमेय है उसके लिए वासना का कारण बनती है, निषिद्ध और गलत की इच्छा को भी जन्म देती है। इस संबंध में, वासना एक है और इसे निषिद्ध (हराम) से रोकना अनिवार्य है। यदि किसी को केवल आवश्यक चीजों से संतोष करने की आदत नहीं है, तो वासना उस पर हावी हो जाएगी और यह वासना जो शुरू में अनुमेय से संबंधित थी, अपनी सीमा को पार कर जाएगी और निषिद्ध (हराम) तक पहुंच जाएगी। यह अनुमेय (मुबा) के नुकसान में से कम से कम है और इसके अलावा कई अन्य नुकसान भी हैं। इन नुकसानों में से एक यह है कि आत्मा (*नफ्स*) सांसारिक सुखों से प्रसन्न हो जाता है और वह अपने लिए शांति और शांति की तलाश करता है और उनके (यानी, सांसारिक सुख) नशे में इतना मदहोश हो जाता है कि व्यक्ति स्वयं से बेखबर हो जाता है और स्वयं को भूल जाता है। यह खुशी और परिणामी नशा, एक घातक जहर है जो किसी की सभी नसों और अस्तित्व में फैलता है और उसके दिल से परमेश्वर की याद, उसके बाद के जीवन की जवाबदेही के डर और न्याय के दिन की भयानक घटनाओं को दूर करता है। इस अवस्था को "हृदय की मृत्यु" कहा जाता है।

स्वयं को अनुशासित करना: हृदय के कुछ लोगों ने अपने हृदय की परीक्षा ली और पाया कि सांसारिक सुखों में उनकी खुशी में, हृदय विद्रोही, अवज्ञाकारी (ईश्वरीय मार्गदर्शन) और ईश्वरीय स्मरण से विचलित होते हैं, जबकि दुःख की स्थिति में वे आज्ञाकारी, लंगड़ा और दिव्य स्मरण से प्रेरित होते हैं। इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि [सांसारिक बाहरी] सुख के साधनों (जैसे भोजन, पेय, वस्त्र, धन, यश, सामाजिक जीवन, भौतिकवाद, विशिष्ट उपभोग आदि) से शाश्वत दुःख और दूरदर्शिता की स्थिति मोक्ष का कारण है। इसलिए, उन्होंने अपने आप (*नुफस) को* सभी प्रकार की वासनाओं और इच्छाओं के साथ धैर्य रखने के लिए प्रेरित किया, चाहे उन्हें अनुमति दी गई हो (हलाल) या निषिद्ध (*हराम) /* वे जानते थे कि [यहां तक कि] अनुमेय इच्छाओं के लिए [दिव्य] जवाबदेही होगी और अनुमेय इच्छाओं के लिए [दिव्य] प्रतिशोध होगा और संदिग्ध इच्छाएं [जो अनुमेय और अनुमेय के बीच एक ग्रे क्षेत्र में हैं] निंदा का कारण होंगी। प्रतिशोध एक स्पष्ट प्रतिशोध है जबकि जवाबदेही और निंदा भी प्रतिशोध के रूप हैं [जो छिपे हुए हैं]। इन शुद्ध आत्माओं ने अपने आप को जवाबदेही के प्रतिशोध से बचाने की कोशिश की, यहां तक कि अनुमत (हलाल) से भी दूर रहकर, और अपने आप को इच्छाओं की कैद और पकड़ से मुक्त किया और इस तरह खुद को दोनों दुनियाओं की शाश्वत मुक्ति और प्रभुत्व प्रदान किया (यह एक और इसके बाद आने वाला)। उन्हें ईश्वरीय स्मरण के साथ आंतरिक शांति, संतुष्टि और अनुकूलन मिला, और अपने आप को [दिव्य] आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करने के लिए, उन्होंने अपने आप के साथ उसी तरह व्यवहार किया जैसे बाज के साथ किया जा रहा था। यानी एक बाज को शुरू में एक अंधेरे कमरे में रखा जाता है और उसकी

आंखों को सिल दिया जाता है ताकि उसे हवा में उड़ने की आदत न रहे। फिर उसे अपने मालिक को मांस खिलाकर उससे परिचित कराया जाता है ताकि वह अपने मालिक को पहचाने और बुलाए जाने पर एक की ओर दौड़ता रहे। स्वयं की स्थिति (*नफ्स*) भी इसी तरह की है। स्वयं अपने भगवान (ईश्वर) का आदी नहीं होता है जब तक कि उसे उन [गलत] आदतों से बेखबर नहीं किया जाता है, एकांत और परहेज के माध्यम से, जैसे कि कान अनावश्यक बातें सुनना, अनावश्यक चीजों को देखना, और जीभ अनावश्यक शब्दों का उच्चारण करना और उनसे [अंगों] की रक्षा करना। इस अवस्था से गुजरने के बाद, स्वयं को दिव्य स्मरण और महिमा के पोषण से पोषित किया जाता है ताकि वह अपने स्वामी और स्वामी से आसक्त हो जाए और सभी सांसारिक उलझाव और आसक्ति दूर हो जाए। यह आध्यात्मिक यात्री (मुरीद) के स्वयं के लिए कठिन है, लेकिन जब यह निरंतर आध्यात्मिक प्रयासों के माध्यम से उनके लिए अभ्यस्त हो जाता है, तो वही एकांत स्वयं को अपना आनंद प्रदान करता है और वही वैराग्य इसके प्रलोभन [और संवर्धन] का स्रोत प्रदान करता है। इस संबंध में, आध्यात्मिक यात्री एक बच्चे की तरह है जिसे दूध से छुड़ाया गया है। पहले तो दूध की कमी के कारण बच्चा बहुत रोता है क्योंकि दो साल तक दूध ही एकमात्र आहार था और अब अचानक बच्चा उससे वंचित हो गया है। इसीलिए, बच्चा रोता है, दौरे फेंकता है, कुछ भी नहीं खाता या पीता है लेकिन धीरे-धीरे अन्य पोषण लेना शुरू कर देता है जब तक कि दूध का विचार भी समाप्त नहीं हो जाता। जिस भोजन से बच्चे को घृणा होती है वह स्वीकार्य होने लगता है।

एक सवारी करने वाले जानवर की भी यही स्थिति है। प्रारंभ में, काठी को बन्धन, लगाम कसना और इसे माउंट करना बहुत मुश्किल है। सवारी करने वाला जानवर अपने सवार को परेशान करता है लेकिन अगर सवार इसे समझदारी से करता है और उसे राइडिंग गियर का आदी बना देता है, तो उसका विद्रोह आज्ञाकारिता में बदल जाता है। शुरुआत में इसे पकड़ लिया जाता है और जंजीरों और रस्सियों में बांध दिया जाता है लेकिन धीरे-धीरे यह इतना अनुशासित हो जाता है कि सवार उसे जहां भी छोड़ता है, वह वहां से हिलता भी नहीं है, चाहे वह बंधा हुआ हो या नहीं। जिस तरह पक्षियों और पालतू जानवरों को अनुशासित और नियंत्रित किया जाता है, उसी तरह स्वयं भी अनुशासित होता है। स्वयं को अनुशासित करना यह है कि उसे सांसारिक आशीषों और सुखों के साथ खुशी से रोका जाता है, उन्हें देखने और उपयोग करने से प्रतिबंधित किया जाता है, और हर उस चीज से रोका जाता है जो मृत्यु के बाद उसकी मदद नहीं करेगी, और यह बताया जा रहा है कि ऐसी चीजों से प्यार करने का कोई फायदा नहीं है जो परलोक में किसी की मदद नहीं कर सकती है और रास्ते में एक स्टेशन पर फंसे हुए व्यक्ति को छोड़ देती है [अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य के अंतिम गंतव्य की ओर]। जब स्वयं इस वास्तविकता की निश्चितता विकसित करता है कि कोई वस्तु इस दुनिया से कितनी भी प्रिय क्यों न हो, उससे अलगाव अवश्य होगा तो वह इन क्षणभंगुर और अस्थायी चीजों से जुड़ने के बजाय, दिव्य स्मरण जैसी शाश्वत और स्थायी चीजों से जुड़ जाता है जो कब्र में भी उसके साथ रहेगा और उससे उसकी भयावहता को दूर कर देगा। हालांकि, कुछ दिनों के लिए धैर्य का प्रयोग करने के बाद स्वयं इस निश्चितता को विकसित करता है (यानी, लघु सांसारिक अस्तित्व)। अनन्त जीवन की तुलना में, सांसारिक जीवन केवल कुछ दिनों का होता है। हमें ऐसा कोई बुद्धिमान व्यक्ति नहीं मिलता है जो [अपने अंतिम गंतव्य पर] शाश्वत राहत और आराम के लिए कुछ दिनों के लिए यात्रा की कठिनाइयों को सहन करने के लिए तैयार न हो या वर्षों तक शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए कुछ महीनों या वर्षों के लिए एक नया कौशल सीखने को तैयार न हो। यह देखा जा सकता है कि अनंत काल की तुलना में, सांसारिक जीवन किसी के पूरे जीवनकाल की तुलना में एक दिन के समान भी नहीं है। जब इस जीवन के लिए कठिनाई, दर्द और कष्ट सहन किए जाते हैं जो कुछ दिनों के बराबर है

[अनन्त जीवन की तुलना में जिसका कोई अंत नहीं है], तो उन्हें अनन्त जीवन के लिए क्यों नहीं सहन किया जा सकता है?

आध्यात्मिक संघर्ष और अभ्यास की विधि: यह विधि प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग है, बल्कि यह कहना अधिक सही है कि प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्मिक संघर्ष की विधि के बारे में सूचित किया जाता है और उसके स्वभाव (अपने आंतरिक अस्तित्व की स्थिति) के अनुसार व्यायाम किया जाता है। लेकिन हर व्यक्ति के लिए इतना ही है कि सांसारिक साधनों से जो कुछ भी सुख देता है, उससे अलग हो जाना चाहिए (अर्थात हृदय की आंतरिक वैराग्य के माध्यम से)। उदाहरण के लिए, जिन लोगों को भौतिक संपत्ति, धन और प्रसिद्धि से सुख मिलता है, उन्हें अपने हृदय से प्रेम को हटा देना चाहिए, जिन्हें अपनी सुखद बातों और भाषणों की प्रभावकारिता से सुख मिलता है, उन्हें ऐसे विचारों को त्याग देना चाहिए, जिन्हें राजनीतिक शक्ति, नियंत्रण, शासन, प्रतिष्ठा और छात्रों की प्रचुरता से सुख मिलता है, उन्हें ऐसे विचारों से अपना हृदय अलग करना चाहिए। यदि वे इन चीजों से वंचित होने के कारण दुखी, दुखी और चिंतित हैं तो समझ लें कि कुरान ने ऐसे लोगों के बारे में निम्नलिखित उद्घोषणा की है:

وَرَضُوا۟ بِٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَٱطْمَأَنُّوا۟ بِهَا

"और वे सांसारिक जीवन के साथ संघर्ष कर रहे हैं और इसमें लिप्त हो गए हैं [इस हद तक कि यह उनकी संतुष्टि का स्रोत बन गया है, हालांकि यह चीजों की समग्र योजना में उनके लिए हानिकारक है]। (कुरान, अध्याय 10, श्लोक 7)

सांसारिकता के ये साधन आध्यात्मिक यात्री (मुरीद) के लिए एक घातक जहर का काम करते हैं। व्यक्ति को उनसे खुद को अलग करने और लोगों से खुद को अलग करने के बाद एकांत अपनाना चाहिए, व्यक्ति को अपने हृदय की रक्षा करनी चाहिए ताकि हर पल, वह ईश्वर के स्मरण और चिंतन में लगे रहे और इस [दिव्य] स्मरण और चिंतन में घुसपैठ करने वाली सभी इच्छाओं, वासनाओं और आक्षेपों पर नजर रखनी चाहिए। व्यक्ति को अपनी जड़ों से छुटकारा पाकर ऐसी इच्छाओं, वासनाओं और आक्षेपों को दूर करना चाहिए या उन साधनों को मिटा देना चाहिए जिनके परिणामस्वरूप इन आक्षेपों और वासनाओं का प्रकटन होता है। जीवन भर व्यक्ति को इस आत्म-जवाबदेही और चिंतन को जारी रखना चाहिए और उन्हें हटाने और उन्मूलन की इस प्रक्रिया को जारी रखना चाहिए। [आध्यात्मिक] संघर्ष और [स्वयं की शुद्धि] का प्रयास केवल मृत्यु पर समाप्त होता है [एक सच्चे और दृढ़ आध्यात्मिक यात्री के लिए जो वास्तव में इस आध्यात्मिक संघर्ष की परवाह करता है जो इस जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सभी नकारात्मकताओं से रहित और सभी सकारात्मकताओं से ओत-प्रोत एक बेहतर व्यक्ति बनने के लिए है जिसके परिणामस्वरूप शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता मिलती है]।

अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुणों के संकेत

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने [आंतरिक] दोषों से अनजान होते हैं और अपने तुच्छ आध्यात्मिक संघर्ष को अपनी [आध्यात्मिक] यात्रा की अंतिम मंजिल मानते हैं और अश्लीलता से दूर रहना आध्यात्मिक संघर्ष का

शिखर मानते हैं। वे इस भ्रामक धारणा में आ जाते हैं कि उन्होंने अपने आप को अनुशासित किया है और अपनी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव को अच्छा बना लिया है और उन्हें किसी भी [आगे] आध्यात्मिक संघर्ष की आवश्यकता नहीं है और न ही उन्हें आध्यात्मिक मार्ग में किसी प्रयास की आवश्यकता है। ऐसे लोगों की शालीनता को दूर करने के लिए, अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव के संकेतों को सूचीबद्ध करना अनिवार्य है। संक्षेप में, उन्हें यह समझना चाहिए कि अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव विश्वास है, और बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव पाखंड है। कुरान ने विश्वासियों और पाखंडियों के गुणों को सूचीबद्ध किया है। वे सभी अच्छी या बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव के परिणाम और परिणाम हैं। क़ुरआन में ख़ुदा कहते हैं:

وَعِبَادُ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى ٱلْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ ٱلْجَٰهِلُونَ قَالُوا۟ سَلَٰمًا ﴿٦٣﴾

وَٱلَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَٰمًا ﴿٦٤﴾

"दयालु के विशेष सेवक वे हैं जो विनम्रता के साथ पृथ्वी पर चलते हैं और जब अज्ञानी लोग उनसे अज्ञानता से बात करते हैं, तो वे कहते हैं, 'शांति!' [अज्ञानता और बुराई को दूर करने के लिए जिसमें वे लिप्त होने से बचते हैं और ऐसे सभी अनुनय और प्रलोभनों को पीछे धकेलते हैं] और [इसके अलावा,] वे वे हैं जो अपनी रातें अपने प्रभु के सामने दण्डवत् करते और खड़े होते हैं [विस्मय, श्रद्धा और भक्ति की स्थिति में उनके चेहरे, निकटता और अंतरंगता की तलाश में]। (कुरान, अध्याय 25, आयत 63-64)

ये आयतें मानदंड हैं: जिस व्यक्ति की आंतरिक स्थिति संदिग्ध हो जाती है, उसे इन आयतों (कुरान से) के प्रकाश में स्वयं का मूल्यांकन करना चाहिए। इन गुणों की उपस्थिति अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव का संकेत है और उनकी अनुपस्थिति खराब नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव का संकेत है। यदि किसी में इनमें से कुछ गुण हैं और कुछ अनुपस्थित हैं, तो उसे उन लोगों की रक्षा करनी चाहिए जो मौजूद हैं और जो अनुपस्थित हैं उन्हें प्राप्त करने और विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने [ईश्वर के] विश्वासियों के गुणों की अनगिनत संख्या का उल्लेख किया और उनके माध्यम से अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव की उत्कृष्टता की ओर इशारा किया। उन्होंने एक बार कहा था:

لا يؤمن احدكم حتى يحب لاخيه ما يحب لنفسه

"कोई भी आस्तिक (जो ईश्वर में विश्वास रखता है) तब तक नहीं हो सकता जब तक कि कोई अपने भाई [या बहन] को वह पसंद न करे जो वह अपने लिए पसंद करता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* अनस के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों]) [यहां "भाई" शब्द प्रत्येक मनुष्य को संदर्भित करता है जो इस प्रकार अपनी चिंता में पूरी मानवता में प्रवेश करता है, जिससे यह किसी की देखभाल और करुणा के योग्य हो जाता है।

من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليكرم ضيفه

"जो परमेश्वर में विश्वास करता है और न्याय के दिन उसे अपने अतिथि का सम्मान करना चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* अबू शरीह अल-खज़ाई के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक अन्य परंपरा में यह कहा गया है "[जो परमेश्वर में विश्वास करता है और न्याय के दिन] उसे अपने पड़ोसी का सम्मान करना चाहिए"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अबू हुरैरा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक अन्य परंपरा में यह कहा गया है:

فليقل خيرا وليصمت

"[जो परमेश्वर में विश्वास करता है और न्याय के दिन] उसे अच्छा बोलना चाहिए या चुप रहना चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

एक स्थान पर, उन्होंने अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव (*इखलाक) वाले व्यक्ति को* आस्तिक घोषित किया। उसने कहा:

أكمل المؤمنين إيمانا أحسنهم أخلاقا

"विश्वासियों में, एक विश्वास में सबसे पूर्ण है जो अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव में सबसे अच्छा है (*इखलाक*)."

उन्होंने एक बार कहा था:

إذا رأيتم المؤمن صموتا وقورا فادنوا منه فإنه يلقى الحكمة

"यदि आप एक आस्तिक को शांत और प्रतिष्ठित के रूप में देखते हैं तो ऐसे एक के करीब पहुंचें क्योंकि एक को [दिव्य रूप से] ज्ञान में निर्देशित किया जा रहा है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्ने माजाह* अबू खलद के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

उसने कहा:

من سرته حسنته وساءته سيئته فهو مؤمن "जो अपने अच्छे कर्मों को अच्छा और बुरे को बुरे के समान पाता है, वह आस्तिक है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस*

संग्रह *मुसनद अहमद, अत-तबारानी* और *हाकिम* अबू मूसा अल-अशरी के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

لا يحل لمؤمن ان ينظر الى اخيه بنظرة تؤذيه

"यह [यहां तक कि] एक आस्तिक के लिए अनुमेय नहीं है (यानी, यह निषिद्ध है) कि कोई [यहां तक कि] अपने भाई को नुकसान पहुंचाने वाली नज़र से देखता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अल-मुबारक फी अज़-ज़ुहद*)

उन्होंने आगे कहा:

لا يحل لمسلم ان يروع مسلما

"यह एक मुसलमान के लिए भी जायज़ नहीं है (यानी, यह वर्जित है) कि कोई मुसलमान को डांटता है।

انما يتجالس المتجالسان بامانة الله عز وجل فلا يحل لاحدهما ان يفشى على

"दो लोग भगवान के भरोसे एक साथ बैठते हैं। इसीलिए, किसी के लिए अपने भाई के बारे में कुछ भी दूसरों के सामने प्रकट करना जायज़ नहीं है, जिसे प्रकट किया जाना कोई नापसंद कर सकता है।

कुछ [बुद्धिमान और विद्वान लोगों] ने अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव के संकेतों के रूप में सूचीबद्ध किया है कि किसी में शर्मीलापन और विनम्रता (*हया) है*, किसी को भी नुकसान नहीं पहुंचाता है (यानी, किसी भी साथी मनुष्य) को नुकसान नहीं पहुंचाता है, धर्मी और शुद्ध है [दिल और आत्मा की आंतरिक शुद्धता के साथ], सच्चा है, बहुतायत में अच्छे कर्म करता है, कम गलतियाँ करता है, बेकार की बातों से दूर रहता है, गरिमापूर्ण, धैर्यवान, कृतज्ञ, सहिष्णु, दयालु, दयालु और सौहार्दपूर्ण होता है; मुंह खराब नहीं करता, बुरी बातें नहीं करता, पीठ नहीं काटता, लोगों की पीठ पीछे शिकायत नहीं करता, उतावलापन नहीं करता, दुश्मनी नहीं रखता, कंजूसी और ईर्ष्या नहीं करता; अस्वीकार करता है और केवल परमेश्वर के लिए प्रेम करता है। एक बार पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से एक आस्तिक और पाखंडी के संकेतों के बारे में पूछा गया, जिस पर उन्होंने जवाब दिया:

ان المؤمن همته فى الصلاة والصيام والعبادة والمنافق همته فى الطعام والشراب كالبهيمة

"एक आस्तिक की आकांक्षाएं और प्रयास प्रार्थना, उपवास और [दिव्य] पूजा में होते हैं और एक अविश्वासी की आकांक्षाएं और प्रयास मवेशियों की तरह खाने और पीने में होते हैं।

विद्वान पूर्ववर्तियों की बातें: हातिम अल-अस्म (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "एक आस्तिक पूरी तरह से चिंतन में लगा हुआ है और सबक लेता है [एक के आसपास की घटनाओं और अतीत की घटनाओं से स्वयं या दूसरों के लिए] और पाखंडी लालच और लंबे समय तक जीने की आशा में लगा हुआ है [सही काम करने में पूर्वाग्रह पैदा करता है]; एक आस्तिक ईश्वर के अलावा अन्य सभी के लिए निराशा है [क्योंकि ईश्वर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो लाभ और हानि पहुंचा सकता है, और हर कोई और सब कुछ ईश्वरीय इच्छा के अधीन है, और हमारे जीवन में और हमारे आस-पास होने वाली सभी घटनाएं ईश्वरीय इच्छा के अनुसार एक दिव्य रूप से निर्धारित उद्देश्य के लिए पूरी तरह से होती हैं जिसकी बुद्धि अधिकांश या सभी लोगों द्वारा देखी जा सकती है या नहीं भी देखी जा सकती है] जबकि एक अविश्वासी ईश्वर के अलावा हर किसी से डरता है। एक आस्तिक अपने विश्वास को [मामूली भौतिक और सांसारिक लाभ के लिए] नहीं बेचता है और [इसके बजाय,] अपनी भौतिक संपत्ति और जीवन [शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए ईश्वरीय सेवा में] खर्च करता है, जबकि एक पाखंडी धन के सामने किसी के विश्वास को महत्व नहीं देता है। एक आस्तिक अच्छे कर्म करने के बाद भी रोता है [भगवान के भय और किसी के अच्छे कर्मों में कमियों के कारण क्योंकि वे बराबर नहीं हो सकते हैं] जबकि एक पाखंडी पाप करने के बाद भी मुस्कुराता है [जैसे कि एक गलत धारणा के तहत है कि किसी के बुरे कर्मों का कोई नकारात्मक परिणाम नहीं है जो स्वयं के लिए और ईश्वर के सामने खड़े होने के लिए हानिकारक है]। एक विश्वासी [अच्छाई के] बीज बोता है, लेकिन फिर भी परिणामों से डरता है [किसी के कार्यों में कमियों के कारण जो ईश्वरीय स्वीकृति की ओर नहीं ले जा सकता है] जबकि एक अविश्वासी कोई बीज नहीं बोता है [अच्छाई का] लेकिन उन्हें बर्बाद कर देता है और अभी भी अच्छी उम्मीदें रखता है। एक विश्वासी सही को चेतावनी देता है और गलत के खिलाफ चेतावनी देता है और परमेश्वर की रचनाओं के सुधार और सुधार के लिए काम करता है जबकि एक पाखंडी बुराई फैलाता है।

अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव रखने की पहली परीक्षा यह है कि व्यक्ति दूसरों के बुरे व्यवहारों, दृष्टिकोणों और शिष्टाचार पर धैर्य रखता है। यदि कोई दूसरों से बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव पर संदेह कर रहा है, तो समझें कि वह स्वयं इन गुणों को धारण कर रहा है। अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव दूसरों द्वारा दिए गए दर्द के सामने धैर्यवान बने रहने और जब वे एक कठिन समय देते हैं तो सहनशील रहने का नाम है। एक बार पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) नजरान से एक मोटी शॉल के साथ खुद को कवर कर रहे थे और अनस बिन मलिक (भगवान उनसे प्रसन्न हों) के साथ कहीं जा रहे थे। वे एक बेडौइन (एक रेगिस्तानी अरब जिसे आम तौर पर असभ्य, खुरदरा और असभ्य माना जाता था) से मिले, जिसने शॉल के एक सिरे को पकड़ लिया और उसे इतनी जोर से खींच लिया कि पैगंबर की गर्दन के चारों ओर की शॉल कस गई और उसका दम घुट गया। बेडौइन ने पूछा: "हे मुहम्मद! जो कुछ परमेश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें से कुछ मुझे दो!" पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) ने उनकी ओर देखा और मुस्कुराए और बेडौइन को कुछ देने के लिए कहा। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अनस बिन मलिक के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* को इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])। जब कुरैश की जनजाति (जिसे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने परेशान किया और उसे पीटा, तो उसने शिकायत करने के बजाय यह प्रार्थना की:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِىْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ "हे परमेश्वर! मेरे देश को माफ कर दो क्योंकि वे नहीं जानते। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न हिब्बान* और *बैहाकी* सहल बिन साद के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इस तरह की शानदार नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव के कारण, कुरान ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की प्रशंसा इस प्रकार की:

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ

"इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप उत्कृष्ट नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव की महानता पर हैं।

यूसुफ बिन असबात (ईश्वर उन पर दया करे) [एक महान संत और ज्ञानवादी] ने कहा: "अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव के दस संकेत हैं: [दूसरों] का विरोध करना, न्याय की सुंदरता का उपयोग करना [लोगों के साथ व्यवहार में], बदला न लेना, बुरी चीजों से घृणा करना, माफी और बहाने स्वीकार करना, स्वयं की निंदा करना, दूसरों के विपरीत अपने दोषों पर नज़र रखना, युवा या बूढ़े सभी के साथ गर्मजोशी और स्नेह के साथ व्यवहार करें, और [सामाजिक स्पेक्ट्रम में] निम्न या उच्च सभी के साथ नरम और कोमल बातचीत करें। किसी ने सहल अल-तुस्तारी (भगवान उस पर दया करें) [एक महान संत और ज्ञानवादी] से पूछा: "सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया: "इसकी सबसे निचली डिग्री बदला लेना और दूसरों के कारण होने वाले दर्द को धैर्य के साथ सहन करना नहीं है, उत्पीड़क पर दया करना और [भगवान] से क्षमा मांगना है"। ऐसी घटनाओं [और कहावतों] से यह पता चला है कि इन संत लोगों के स्वयं निरंतर आध्यात्मिक कठोरता के माध्यम से संयम के स्तर पर पहुंचे, और धोखे, बेईमानी, शत्रुता और ईर्ष्या जैसे लक्षणों से शुद्ध हो गए, और वे सभी परिस्थितियों में भगवान के [नियुक्त] भाग्य के लिए संतुष्ट और आभारी थे। इस डिग्री पर स्वयं का आगमन सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव का सर्वोच्च मानक है। बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव की पराकाष्ठा यह है कि व्यक्ति ईश्वर के आदेश और निर्णय से नाराज है और ईश्वर द्वारा नियुक्त नियति के खिलाफ लड़ रहा है (अर्थात, व्यक्ति को धैर्य और निरंतर प्रयास के साथ उस बुरी स्थिति को बदलने का प्रयास करना चाहिए जिसमें वह ईश्वर की इच्छा के प्रति धैर्य और आभारी है, बिना किसी अधीरता और ईश्वर के आदेश के खिलाफ शिकायत के)। फिर भी, ये सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव के कुछ संकेत हैं। एक व्यक्ति जिसका आंतरिक अस्तित्व इन संकेतों से रहित है, उसे यह विश्वास करने में भ्रमित नहीं होना चाहिए कि उसके पास अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव है। किसी का स्वयं (*नफ्स*) बीमार है और उसे आध्यात्मिक प्रयासों और कठोरता के माध्यम से इसे ठीक करना चाहिए ताकि वह सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र और स्वभाव के उच्च स्तर तक पहुंच सके जो ईश्वर (*मुकर्रबीन*) और सत्य के प्रति पूरी तरह से समर्पित लोगों के पास है जिसके परिणामस्वरूप दिव्य ज्ञान (सिद्दीकीन) होता है।

बच्चों की शिक्षा और पालन-पोषण और उनकी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुणों को सभ्य और सुशोभित करना

बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए एक प्रभावी तरीका अपनाना अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक बच्चा माता-पिता के हाथों में भगवान का भरोसा है और बच्चे का दिल एक अच्छे, स्वच्छ और सरल दर्पण की तरह है, जो किसी भी प्रकार के छापों या आकृतियों से रहित है, सभी प्रकार के छापों और प्रभावों के प्रभाव को स्वीकार करने में सक्षम है और यह किसी भी चीज की ओर झुका हो सकता है। इसलिए यदि बच्चे में अच्छी आदतें डाली जाएं और ज्ञान का निर्देश दिया जाए तो ऐसा उत्कृष्ट पोषण (पालन-पोषण) प्राप्त करने के बाद बच्चा इस जीवन और परलोक के जीवन की वास्तविक सफलता प्राप्त करता है। इस [सफलता] में, बच्चे के माता-पिता और शिक्षक [बच्चे की अच्छी परवरिश के लिए भगवान की ओर से] पुरस्कारों में हिस्सा लेने के हकदार हो जाते हैं। और अगर बच्चे में बुरी आदतें डाली जाती हैं और अगर बच्चे को जानवरों की तरह बिना किसी बाधा के (अलावारिस/स्वतंत्र) छोड़ दिया जाता है, तो बच्चा बदतमीजी करने के बाद नष्ट हो जाता है। पाप का बोझ [इस तरह की लापरवाही का] किसी के (बच्चे के) अभिभावक और देखभाल करने वाले पर पड़ता है। भगवान, महान ने कहा है:

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا

"ऐ ईमान वालो! अपने आप को और अपने परिवारों को नरक की आग से बचाओ। (कुरान, अध्याय 66, श्लोक 6)

और जब पिता अपने बच्चे को इस दुनिया की आग से बचाता है, तो पहली प्राथमिकता के रूप में, यह उस पर निर्भर (अनिवार्य) है कि वह अपने बच्चे को परलोक (नरक की आग) की आग से बचाए, और ऐसा करने का एकमात्र तरीका यह है कि वह बच्चे को शिष्टाचार और सभ्यता सिखाता है, और उसे सर्वोत्तम नैतिकता में शिक्षित करता है और उसे बुरे साथियों और दोस्तों से बचाता है और इच्छा को नहीं छोड़ना चाहिए शारीरिक सौंदर्यीकरण, उत्तम वस्त्र, अलंकरण, शारीरिक सहजता और सुख-सुविधा के लिए उसके हृदय में बस जाए, अन्यथा बच्चा बड़ा होने के बाद इन नीच चीजों की इच्छा और खोज में अपना अनमोल जीवन बर्बाद कर देगा और उनके द्वारा हमेशा के लिए नष्ट हो जाएगा। इसके बजाय, यह पिता पर निर्भर है कि वह बहुत कम उम्र से ही [अपने बच्चे की] सख्त निगरानी और देखभाल करे।

अनुमेय (हलाल) भोजन की आवश्यकता और महत्व: बच्चे के पालन-पोषण और दूध पिलाने के लिए, [माँ की अनुपस्थिति में या संस्कृतियों में जहां इस उद्देश्य के लिए एक अलग व्यवस्था की जाती है] अच्छे चरित्र और धार्मिकता की एक महिला को नियुक्त किया जाना चाहिए, जो वैध (हलाल) भोजन खाती है क्योंकि वह दूध जो अवैध भोजन से आता है, इसमें कोई बेहतरी या आशीर्वाद नहीं है, इसके बजाय, यदि बच्चे को अवैध (हराम) स्रोतों से आने वाले दूध के साथ लाया जाता है, तो बुराई बच्चे के बहुत फाइबर (चेतना/मनोविज्ञान/आंतरिक अस्तित्व) में प्रवेश कर जाती है, और उसके कारण, बच्चे का स्वभाव शैतानी (बुरे) कर्मों की ओर झुक जाता है। और जब [माता-पिता को लगता है कि] बच्चा अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने में सक्षम है, तो बच्चे की पूरी परवरिश शुरू होनी चाहिए। यह [बच्चे के जीवन का चरण] शर्म के प्रारंभिक लक्षणों (हया/विनम्रता) के प्रकट होने से संकेत मिलता है, क्योंकि जब बच्चा अपने स्वयं के

सम्मान और सम्मान को महसूस करते हुए शर्म महसूस करने लगता है और शर्म के कारण कुछ चीजें करना छोड़ना शुरू कर देता है, तो यह केवल एक में उभरने वाली बुद्धि के प्रकाश का परिणाम है। यह [बुद्धि के प्रकाश का उद्भव] इस हद तक होता है कि व्यक्ति कुछ चीजों को अच्छा और कुछ चीजों को बुरा समझने लगता है, और कुछ कर्मों के बारे में शर्मनाक महसूस करने लगता है और यह शर्म (*हया*) का एहसास भगवान द्वारा बच्चे पर एक बड़ा एहसान है। और यह एक स्पष्ट संकेत है जो नैतिक मूल्यों और हृदय की शुद्धता के प्रति उसके संयम के लिए तर्क देता है (स्पष्ट रूप से दिखाता है)। इसके बजाय, हमें इसके बारे में इस तरह से सोचना चाहिए कि [बच्चे में] अच्छे और बुरे की प्राप्ति की यह चेतना, प्रकृति (यानी, भगवान) से एक सुखद समाचार है कि यह बच्चा यौवन प्राप्त करने पर पूर्ण बुद्धि के पास होगा। इसीलिए, एक बच्चे को शर्मीलेपन (हया/विनम्रता) से मुक्त नहीं छोड़ा जाना चाहिए, बल्कि इसके बजाय, किसी के शर्मीलेपन (*हया*) और विवेक [अच्छे और बुरे के बीच] का उपयोग करते हुए, एक पूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

खाने के शिष्टाचार की व्याख्या: पहली बुरी इच्छा जो एक बच्चे पर हावी होती है, वह है अधिक खाने का लालच; इसलिए, खाने के शिष्टाचार को सिखाना बेहद जरूरी है। उदाहरण के लिए, [शिष्टाचार हैं] केवल दाहिने हाथ से खाना खाना, शुरुआत में "*बिस्मिल्लाह*" ("मैं भगवान के नाम से शुरू करता हूं") का पाठ करना, सामने से [थाली के] खाने के लिए, दूसरों के शुरू होने की प्रतीक्षा करने के लिए उससे पहले कि वह ऐसा करे, भोजन को घूरना शुरू न करें [जब दूसरे पहले शुरू करते हैं], यहां तक कि दूसरों को घूरना भी नहीं जो खा रहे हैं, अनावश्यक जल्दबाजी में न खाना, भोजन को ठीक से चबाना, भोजन का निवाला लगातार [या जल्दबाजी में] अपने मुंह में न डालना [बल्कि धीरे-धीरे करना चाहिए], भोजन के साथ अपने हाथ और कपड़ों को गंदा न करना [इसे गिराकर]। कभी-कभी, बच्चे को केवल रोटी खिलानी चाहिए ताकि कोई करी [रोटी के साथ जाने] को एक आवश्यकता न समझे ताकि इसके बिना भी काम न कर सके। इसी तरह, एक (माता-पिता या अभिभावक) को बच्चे के सामने बहुत अधिक खाने की अवांछनीयता के बारे में बताना चाहिए। बच्चे को कहा जाना चाहिए कि जो बच्चे बहुत अधिक खाते हैं उनका पालन न करें, और जो बच्चे कम खाते हैं और अच्छी तरह से प्रशिक्षित हैं, उनकी बच्चे के सामने प्रशंसा की जानी चाहिए। बच्चे का ध्यान दूसरों की खातिर भोजन का त्याग करने की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए [जो कम भाग्यशाली हैं] अपने दोस्तों की जरूरतों का ख्याल रखते हुए [जिन्हें जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की अधिक आवश्यकता हो सकती है]। बच्चे में यह आदत विकसित की जानी चाहिए कि वह [ठीक] भोजन की बहुत अधिक परवाह न करे और साधारण भोजन से संतुष्ट रहे।

ड्रेसिंग के शिष्टाचार की व्याख्या: इसी तरह, रंगीन और रेशमी कपड़ों के बजाय, बच्चे के दिल में साधारण और सादे कपड़ों के लिए प्यार और इच्छा विकसित की जानी चाहिए। किसी के मन में यह दृढ़ता से अंकित होना चाहिए कि ऐसे कपड़े पहनना उचित नहीं है और धर्मपरायण लोग इस तरह के कपड़े पहनने से घृणा करते हैं। ऐसी बातें (चेतावनी) समय-समय पर बच्चे को सामान्यीकृत तरीके से बतानी चाहिए। और यह माता-पिता का दायित्व है कि जब वे किसी बच्चे को अपने सामने रेशमी या चमकीले रंग के कपड़े पहने हुए देखें, तो उन्हें बच्चे के सामने [कपड़े पहनने के ऐसे तरीकों के लिए] अपनी अस्वीकृति व्यक्त करनी चाहिए और बच्चे के दिल में अपनी अवांछनीयता पैदा करनी चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चे को उन सभी बच्चों से मिलने से बचाना चाहिए जो समृद्धि के आदी हैं, आराम (आरामदायक जीवन शैली) की तलाश करते हैं, और गर्व से कपड़े पहनते हैं। उन्हें (माता-पिता) बच्चे को उन सभी लोगों की संगति से भी बचाना चाहिए जो बच्चे को भोग के ऐसे तरीकों के बारे में कहानियां सुनाते हैं [जैसे आराम की

तलाश करना, गर्व से कपड़े पहनना, आदि]। कोई भी बच्चा, जो किसी के प्रारंभिक विकास (पालन-पोषण) के दौरान [ऐसी चीजों में] लावारिस रह जाता है, बड़े होने के बाद आमतौर पर बदतमीजी, झूठा, चोर, कहानी-वाहक, हठी (जिद्दी), दुष्ट बात करने वाला, व्यंग्यात्मक, चालाक, धोखेबाज और मूर्ख बन जाता है। बच्चे को इन सभी बुराइयों से बचाने का एकमात्र स्रोत अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण है, उसके बाद, बच्चे को एक स्कूल में प्रवेश दिया जाना चाहिए ताकि कोई कुरान और *हदीस* (पैगंबर मुहम्मद की परंपराएं (पैगंबर मुहम्मद की परंपराएं उस पर हो), ईश्वर के धर्मी दासों की स्थितियों, जीवनी और परंपराओं का ज्ञान प्राप्त कर सके ताकि बचपन से ही, संतों का प्रेम (भगवान उन सभी पर दया करें) व्यक्ति के हृदय में स्थापित हो जाता है। इसके अलावा, बच्चे को रोमांटिक कविता और रोमांस-उन्मुख कवियों से बचाएं और उन लेखकों से भी दूर रखें जो सोचते हैं कि ऐसी कविता दिल के जीवन और धारणा [या अभिव्यक्ति] की सूक्ष्मता का संकेत है, क्योंकि ऐसी चीजें *बच्चों के मन में भ्रष्टाचार (*फसाद) और बुराई के बीज बोती हैं।

अच्छाई को मनाने और बुराई के खिलाफ नसीहत देने की विधि: जब भी बच्चा कोई अच्छा गुण प्रदर्शित करे या प्रशंसनीय कार्य का प्रदर्शन करे, तो पिता को बच्चे की प्रशंसा करनी चाहिए और एक ऐसा उपहार देना चाहिए जिससे बच्चे को खुशी मिले और दूसरों के सामने बच्चे की प्रशंसा करनी चाहिए। यदि बच्चा तब [किसी के प्रशंसनीय गुण या कार्य के विपरीत] कुछ करता है, तो इसके बारे में अनभिज्ञता दिखाना उचित है और [पिता] को बच्चे का अपमान या अपमान नहीं करना चाहिए और न ही उसे दोष को उजागर करना चाहिए। इसके बजाय, पिता [या माता-पिता] को बच्चे को यह भी नहीं बताना चाहिए कि वह यह भी सोचता है कि बच्चे में उसके सामने ऐसा काम करने का साहस है, खासकर उस मामले में, जब बच्चा खुद गलती को छिपाने और छिपाने की कोशिश करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कभी-कभी [बच्चे की] गलतियों को प्रकट करना, बच्चे के लिए इस हद तक अधिक साहसी होने का कारण होता है कि धीरे-धीरे और धीरे-धीरे बच्चा अपने दोषों के प्रकट होने की भी परवाह नहीं करता है। इतनी सावधानी बरतने के बाद भी, यदि बच्चा फिर से वही [बुरा] काम करता है, तो किसी को अकेले में फटकार लगाना उचित है और बुरे काम का दोष उसके सामने प्रकट किया जाना चाहिए और उससे कहा जाना चाहिए, "सावधान रहें! इस बुरी बात को फिर कभी न करें। भगवान न करे, अगर यह किसी को मिल जाए, तो आप लोगों के सामने अपमानित हो जाएंगे", [आदि। आदि, आदि और अन्य कथन इससे निकाले जा सकते हैं]।

अत्यधिक डांटने के नुकसान: लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे को अत्यधिक फटकार न लगाई जाए, क्योंकि इससे बच्चे में निंदा और डांट-फटकार सुनने की आदत पैदा होती है और व्यक्ति में गलत काम करने का साहस बढ़ता है। और धीरे-धीरे और धीरे-धीरे, बच्चे के दिल से चेतावनियों का मूल्य कम हो जाता है। इसी तरह, पिता के लिए यह आवश्यक है कि जब वह बच्चे से बात करता है, तो वह अपना विस्मय और श्रद्धा बनाए रखता है [बच्चे के दिल में] और शायद ही कभी किसी को डांटना चाहिए और जब बच्चा जिद्दी हो रहा हो तो मां को उसे पिता से डराना चाहिए और बच्चे को बुरे काम करने से सख्ती से रोकना चाहिए।

सोने के शिष्टाचार: बच्चे को दिन में सोने के लिए नहीं कहना चाहिए क्योंकि इससे आलस्य पैदा होता है, लेकिन रात को सोने से नहीं रोकना चाहिए। हालांकि, बच्चे को अभी भी मुलायम बिस्तर पर सोने से रोकना चाहिए ताकि बच्चे के शारीरिक अंग मजबूत हो जाएं और शरीर विकृत न हो जाए, जिससे बच्चा

आराम के बिना नहीं रह पाएगा। इसके बजाय बच्चे में सख्त बिस्तरों पर सोना, सादा कपड़े पहनने, सादा खाना खाने की आदतें डालनी चाहिए। बच्चे को गुप्त तरीके से काम करने से रोका जाना चाहिए क्योंकि कोई जानता है कि यह बुरा है, इसलिए बच्चा इसे छुपाता है। अगर इसे नजरअंदाज किया जाए तो बच्चे को बुरे काम करने की आदत पड़ जाएगी।

इसी तरह बच्चे में दिन में टहलने और व्यायाम करने की आदत डालनी चाहिए ताकि व्यक्ति सुस्त और आलसी न बने। हालांकि, यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए कि बच्चा किसी के सिर, घुटनों, जांघों आदि को उजागर न करे। इसके अलावा, बच्चे को बहुत तेजी से नहीं चलना चाहिए और न ही अपने हाथों को खुला रखना चाहिए [जो आलस्य का संकेत है] लेकिन इसके बजाय, बच्चे को अपने हाथों को शरीर के करीब रखना चाहिए और सक्रिय होना चाहिए।

अहंकार और अभिमान का निषेध: बच्चे को अपने माता-पिता की संपत्ति, खाद्य पदार्थों, कपड़े, यहां तक कि किसी के लिखने की गोली और स्याही जैसी किसी भी चीज़ पर गर्व करने से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। इसके बजाय, अपने सभी साथी बच्चों के साथ विनम्रता, सम्मान, सम्मान और शुद्ध (स्वच्छ/सभ्य) बातचीत करने की आदत को एक में विकसित किया जाना चाहिए और अन्य बच्चों से कुछ भी लेने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। यदि यह धनी माता-पिता की संतान है तो किसी को समझाया जाना चाहिए कि सम्मान और पद देने में है न कि लेने में, इसके बजाय, [दूसरों से] लेने में [नीचता, अपमान और गिरावट की विशेषताएं] हैं। अगर यह गरीब माता-पिता की संतान है, तो किसी को सिखाया जाना चाहिए कि लालच रखना और दूसरों से कुछ लेना अपने अपमान और अपमान का कारण है, और यह एक कुत्ते की विशेषता है कि वह अपनी पूंछ हिलाता रहता है, इंतजार करता रहता है और [भोजन का] एक निवाला के लिए लालची रहता है। इसी तरह, बच्चे को सोने और चांदी से घृणा करनी चाहिए और सांपों और बिच्छू के प्यार से भी बदतर इन चीजों के प्यार से डरना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि सोने और चांदी का प्यार और लालच, बच्चों और वयस्कों को जहर से होने वाले नुकसान की तुलना में कहीं अधिक नुकसान पहुंचाता है [सांप और बिच्छू से]।

लोगों के साथ मिलने-जुलने और बातचीत करने के शिष्टाचार: बच्चे को सार्वजनिक रूप से न थूकना, नाक न उठाना, किसी के सामने जम्हाई नहीं लेना, किसी की ओर पीठ न मोड़ना, पालथी मारकर न बैठना, अपनी हथेली को ठुड्डी के नीचे रखते हुए या हाथों से सिर को सहारा देते हुए नहीं बैठना सिखाना चाहिए क्योंकि ये सभी सुस्ती और आलस्य के संकेत हैं, दूसरे शब्दों में, बच्चे को बैठने का उचित शिष्टाचार भी सिखाया जाना चाहिए। बच्चे को बहुत अधिक बोलने से रोकना चाहिए और किसी के दिमाग में यह स्पष्ट रूप से अंकित होना चाहिए कि ये सभी शर्मनाक चीजें हैं और अच्छे व्यवहार वाले बच्चों के काम नहीं हैं। इसके अलावा, बच्चे को सच या झूठी कसम खाने से पूरी तरह से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए ताकि किसी को बचपन से ही शपथ लेने की आदत न पड़े। इसी तरह, बच्चे को पहले बातचीत शुरू करने से रोका जाना चाहिए और यह आदत डालनी चाहिए कि किसी को केवल [प्रश्नों] का उत्तर देने के लिए बोलना चाहिए और वह भी प्रश्न के अनुपात में होना चाहिए। जब कोई बच्चे से बात कर रहा हो तो उसे बहुत ध्यान से सुनना चाहिए और जो बड़े हैं उनके लिए अधिक जगह बनाने के लिए उठना चाहिए और फिर उनके सामने उचित शिष्टाचार के साथ बैठना चाहिए। बच्चे को बेकार की बात, गंदी बात, गाली-गलौज, आरोप-प्रत्यारोप, मौखिक दुर्व्यवहार से रोका जाना चाहिए और ऐसे लोगों से मिलने से मना

किया जाना चाहिए जो ये काम करते हैं क्योंकि साथी बच्चों के बुरे गुण बच्चे को [बुरे तरीके से] प्रभावित करते हैं। और बच्चों के [उचित] प्रशिक्षण का असली रहस्य बच्चों को बुरे साथियों की कंपनी से बचाने में निहित है।

धैर्य और सहनशीलता: यह भी आवश्यक है कि जब शिक्षक बच्चे को अनुशासित करता है, तो बच्चा न तो चिल्लाना चाहिए और न ही चिल्लाना चाहिए और न ही किसी का सहारा लेना चाहिए, इसके बजाय, [बच्चे] को धैर्य और सहनशीलता का प्रयोग करना चाहिए। बच्चे को यह समझाने के लिए, किसी को बताया जाना चाहिए कि धैर्य रखना बहादुरों का तरीका (विशेषता) है और चीखना, चिल्लाना और रोना उन लोगों के काम हैं जिनमें गरिमा की कमी है।

शारीरिक व्यायाम का महत्व और लाभ: अपनी पढ़ाई खत्म करने के बाद, बच्चे को कुछ अच्छा खेल खेलने की अनुमति दी जानी चाहिए, जिसकी मदद से स्कूल से थकान से छुटकारा मिल सकता है और आराम मिल सकता है। लेकिन बच्चे को इतना खेलने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए कि वह खेल के कारण थक जाए। क्योंकि, बच्चे को खेलने से पूरी तरह से रोकने के लिए और सिर्फ पढ़ाई के दबाव में रखने के लिए, अपने दिल को मृत कर देता है, अपनी बुद्धि को शून्य और बेकार कर देता है, और व्यक्ति के जीवन को दुखी कर देता है, इसके कारण बच्चा पढ़ाई से छुटकारा पाने के बहाने खोजने लगता है।

बड़ों का सम्मान करने के शिष्टाचार: यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि बच्चे को माता-पिता, शिक्षकों और उन सभी लोगों की आज्ञाकारिता सिखाई जानी चाहिए जो स्वयं से बड़े हैं, चाहे वह व्यक्ति रिश्तेदार हो या नहीं। और किसी को उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखने के लिए कहा जाना चाहिए और उनके सामने खेल छोड़ देना चाहिए। जब बच्चा युवावस्था में पहुंच जाता है, तो उसे स्वच्छता (व्यक्तिगत स्वच्छता) और पवित्रता में आलस्य की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए और प्रार्थना न करने के लिए उसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। *रमजान* (उपवास का महीना) के कुछ दिनों में, बच्चे को [यौवन प्राप्त करने से पहले] कुछ दिनों में उपवास करना चाहिए और रेशम से दूर रखना चाहिए और सोना और चांदी पहनना चाहिए। आवश्यकतानुसार बच्चे को ईश्वरीय सीमाओं और ईश्वरीय नियमों के बारे में बताया जाना चाहिए और उसे चोरी, अवैध कमाई और भोजन, विश्वास भंग, बेईमानी, बेशर्मी और किशोरावस्था के दौरान बच्चे के स्वभाव (व्यक्तित्व) में पैदा होने वाली सभी बुरी चीजों से डरना चाहिए। जब बचपन से ही बच्चे की परवरिश इस तरह होगी, तब तक बच्चा यौवन तक पहुंचता है, वह इन मामलों के पीछे के रहस्यों और ज्ञान को स्पष्ट रूप से समझ पाएगा। इस चरण के दौरान [बचपन या किशोरावस्था के], किसी को यह समझाया जाना चाहिए कि जो भी अनुमेय (हलाल) भोजन है, वह भी दवाओं की तरह है और उनका एकमात्र उद्देश्य यह है कि मनुष्य, उन्हें खाने के बाद, ईश्वर, परम के प्रति आज्ञाकारी हो सके।

दुनिया की नश्वरता: यह [बच्चे के] मन पर भी स्पष्ट रूप से प्रभावित होना चाहिए कि दुनिया स्वयं [हमारे जीवन का] उद्देश्य नहीं है, और [दुनिया] अवास्तविक है, स्थायित्व के बिना है, और इसका अंत है। मृत्यु इन [भौतिक] आशीषों को समाप्त कर देती है और दुनिया केवल एक जगह है जहां से हम गुजर रहे हैं [अनन्त जीवन की ओर]। यह संतुष्टि का स्थान नहीं है और बसने की जगह नहीं है। लेकिन परलोक की दुनिया शांति और शांति का वास्तविक स्टेशन है और शांति और संतुष्टि का स्थान है और मृत्यु, हर समय, सांसारिक जीवन को समाप्त करने के लिए घात लगाकर पड़ी रहती है।

बुद्धिमान कौन है? वास्तव में, बुद्धिमान वह है जो परलोक के अनन्त जीवन के लिए इस नश्वर दुनिया से निर्भरता (परलोक की यात्रा के लिए आवश्यक प्रावधान) और अच्छे कर्मों की पूंजी प्रदान करता है, ताकि व्यक्ति ईश्वर, उच्च और स्वर्ग के असीम आशीर्वाद के सामने स्वीकृति का एक उच्च पद प्राप्त कर सके। यदि बच्चे की प्रारंभिक परवरिश अच्छी होती, तो किशोरावस्था के दौरान, यह चर्चा स्वयं (नफ्स) को प्रसन्न करने वाली और प्रभावी साबित होगी, और पत्थर पर एक [अमिट] शिलालेख की तरह दिल पर अंकित हो जाएगी और इस प्रकार बच्चे के लिए अच्छा होगा।

इसके विपरीत, यदि बच्चे का मानसिक (बौद्धिक) विकास गलत तरीके से हुआ होता, तो बुराई, बेशर्मी, बहुत अधिक खाने की इच्छा, अच्छे वस्त्रों का लालच, आडंबर और अलंकार, भड़कीलापन, अहंकार और अभिमान के गुण एक में पैदा हो गए होते, और किसी का हृदय सूखी दीवार की तरह इस तथ्य (यानी, सांसारिक जीवन की नश्वरता और परलोक के जीवन के लिए काम करने की आवश्यकता) को स्वीकार करने से इनकार कर देगा सूखी मिट्टी को स्वीकार करने से इनकार करता है (यानी, ऐसी शिक्षाएं बच्चे के दिल से नहीं चिपकेंगी)। संक्षेप में, ये शुरुआती मामले हैं जिन पर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

बच्चे का स्वभाव और माता-पिता का दायित्व: चूंकि बच्चे के दिल की संरचना ऐसी है कि वह अच्छे और बुरे, धर्मी और बुरे दोनों के प्रभावों को स्वीकार कर सकता है, इसलिए यह पिता और माता की जिम्मेदारी है कि वे बच्चे को अच्छे या बुरे की ओर झुकाएं (ग़ज़ाली इस मामले में कोई विकल्प नहीं दे रही है, लेकिन इसके बजाय, माता-पिता से बच्चे को अच्छे की ओर झुकाने का आग्रह करना, अन्यथा, माता-पिता की लापरवाही के कारण बच्चा अपने आप बुराई की ओर झुक जाएगा)। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

كل مولود يولد على الفطرة فابواه يهودانه او ينصرانه او يمجسانه

"प्रत्येक बच्चा सच्ची जन्मजात प्रकृति पर पैदा होता है [जिस पर भगवान ने पूरी मानव जाति की रचना की है, जैसे कि कोई पहले से ही ईश्वर में विश्वास, सत्य और धार्मिकता के प्रति समर्पण, सब कुछ जो अच्छा और सकारात्मक है, सभी के साथ शांति और सद्भाव, और ज्ञान की स्थिति के माध्यम से अपने स्वर्गीय मूल तक पहुंचने की लालसा आंतरिक रोशनी और शाश्वत सत्य की ओर ले जाता है] लेकिन एक के माता-पिता एक को परिवर्तित करते हैं यहूदी, ईसाई या मैगियन में (दुनिया में मौजूद विभिन्न धार्मिक और वैचारिक परंपराओं की ओर इशारा करते हुए, इस प्रकार किसी को अपने धार्मिक, वैचारिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और बौद्धिक संदर्भ के सांचे में ढालना)"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* को भविष्यवक्ता साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

अच्छी परवरिश के कारण सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने का एक ऐतिहासिक प्रमाण: शेख सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी (भगवान उन पर दया करें) ने कहा: "जब मैं तीन साल का था, तो मैं अपने मामा

मुहम्मद बिन सावर (भगवान की दया करे) की *तहज्जुद* नमाज़ (रात के अंतिम भाग में की जाती है, जो ईश्वर के मार्ग पर आध्यात्मिक उन्नति के लिए अत्यधिक अनुशंसित है) की आध्यात्मिकता को देखने के लिए रात में उठता था उस पर)। एक बार उसने मुझसे कहा, 'क्या तुम परमेश्वर की याद में शामिल नहीं हो, जो महान है, जिसने तुम्हें बनाया? मैंने पूछा, 'मुझे भगवान को कैसे याद करना चाहिए? उन्होंने कहा, 'रात में, जब आप [सोने से पहले बिस्तर पर] अपना पक्ष बदलते हैं, तो अपनी जीभ को हिलाए बिना अपने दिल में केवल तीन बार निम्नलिखित का पाठ करें:

अल्लाहु मैया, अल्लाहु नजीरुन इलैया, अल्लाह तल्लाहु अलैहि व सल्लम

भगवान मेरे साथ हैं, भगवान मुझे देख रहे हैं, भगवान मेरे सामने हैं।

मैंने कुछ रातों के लिए ऐसा किया, और फिर मैंने उसे इसके बारे में सूचित किया, जिस पर उसने कहा, 'अब हर रात, एक ही काम सात बार करें। मैंने ऐसा किया और उन्हें इसके बारे में सूचित किया जिस पर उन्होंने कहा, 'अब ऐसा ग्यारह बार करें'। मैंने भी ऐसा ही किया और इसके परिणामस्वरूप मुझे अपने दिल में इसका स्वाद और मिठास महसूस होने लगी। जब इस [हर रात] पर कार्य करते हुए एक वर्ष बीत गया, तो उन्होंने कहा, 'जो स्मरण मैंने तुम्हें सिखाया है, उसे अच्छी तरह से याद रखना चाहिए, और जब तक तुम मर न जाओ तब तक उस पर कार्य करते रहो। यह इस लोक में और परलोक में आपके लिए लाभ का स्रोत होगा। मैं इसे कुछ वर्षों तक करता रहा, जब तक कि मैंने अपने अंतरतम अस्तित्व के सबसे गहरे खांचे में इसके स्वाद (गहरे प्रभाव) को महसूस करना शुरू नहीं कर दिया। फिर एक दिन उसने कहा, 'हे साहल! परमेश्वर, जब वह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ होता है, जिसे वह [हर एक पल] देखता है, जिसके सामने वह होता है, तो क्या वह व्यक्ति कभी भी परमेश्वर, परम परमेश्वर की अवज्ञा कर सकता है? चौकस रहना! कभी भी परमेश्वर के विरुद्ध अपराध न करो और उसकी अवज्ञा न करो!' इसलिए, मैं एकांत में रहने लगा। फिर उसने मुझे एक स्कूल भेजने की कोशिश की, लेकिन मैंने कहा, 'मुझे इस खतरे का एहसास है कि मेरा ध्यान [भगवान की ओर] विभाजित हो जाएगा। लेकिन यह बेहतर होगा, अगर आप शिक्षक से यह प्रतिबद्धता प्राप्त कर सकते हैं कि मैं कुछ समय के लिए उनके साथ अध्ययन करूंगा तो मैं जल्दी से भगवान की याद में शामिल होने के लिए वापस आ जाऊंगा।

फिर बाद में, मैं शिक्षक के पास गया और जब मैं छह या सात साल का था, तब तक मैंने पूरे कुरान को कंठस्थ कर लिया। मैं हमेशा उपवास करता था और जब तक मैं बारह वर्ष का नहीं था, तब तक जौ की रोटी मेरा प्राथमिक भोजन (आहार) थी। इस समय के दौरान, जब मैं तेरह वर्ष का था, तो मुझे एक विशेष धार्मिक मामले के बारे में जानने (पता लगाने) की आवश्यकता थी, और फिर मैंने अपने परिवार से अनुरोध किया कि मुझे बुसरा [इराक में] जाने की अनुमति दी जाए ताकि मैं वहां के विद्वानों से इस मामले के बारे में पूछ सकूं। इसलिए, मैं बुसरा आया और वहां के विद्वानों से इस मामले के बारे में पूछा लेकिन उनमें से किसी ने भी मुझे संतुष्ट नहीं किया। इसके बाद, मैं शेख हबीब हमजा बिन अब्दुल्ला अबादानी (ईश्वर उन पर दया करे) की उपस्थिति में 'अबादान' गया और उनसे उसी धार्मिक मामले के बारे में पूछा जिस पर उन्होंने मुझे संतोषजनक जवाब दिया। फिर मैं *उनकी पुस्तक* 'मुलफूज़त अल-कुदसिया' से आध्यात्मिक लाभ (*फ़यद*) प्राप्त करने के लिए लंबे समय तक उनकी उपस्थिति में रहा और उनसे [आध्यात्मिक] शिष्टाचार सीखना जारी रखा। फिर मैं टस्टर लौट आया और अपने आहार को इस तरह से बांटा कि मेरे लिए एक *दिरहम* (एक पुरानी मुद्रा) के बराबर जौ पिसा जाए और उसमें से मेरे लिए रोटी तैयार की जाए। हर रात, *सुहूर* (उपवास शुरू करने से पहले सुबह का भोजन) के समय, मैं रोटी से एक *आओकिया*

(आज एक औंस के बराबर माप की एक पुरानी इकाई) खाता था, इसके साथ किसी भी करी का उपयोग किए बिना। इसलिए, एक *दिरहम* [जो बहुत छोटी राशि है] मेरे लिए पूरे साल [के लिए भोजन] के लिए पर्याप्त हुआ करता था।

मैंने इस मामले में इस हद तक प्रगति की कि मैं तीन रातों के बाद अपना उपवास तोड़ता था (दूसरे शब्दों में, वह तीन दिन और रात तक लगातार उपवास करता था), फिर पांच रातों के बाद, फिर सात रातों के बाद, फिर मैं धीरे-धीरे पच्चीस रातों तक पहुंच गया। मैं लगातार बीस वर्षों तक इसी तरह चलता रहा। फिर मैंने कई वर्षों तक दुनिया का दौरा किया और टस्टर लौट आया। मैं लगभग पूरी रात पूजा और प्रार्थना करता था।

इमाम अहमद (खुदा उन पर दया करे) ने कहा, "मुझे कभी कोई सबूत नहीं मिला कि उन्होंने (यानी शेख सहल तुस्तरी) कभी भी [जब उन्होंने खाया तो अपनी रोटी के साथ] करी का इस्तेमाल किया। ग़ज़ाली (ग़ज़ाली (ईश्वर उन पर दया करे) ने इस परंपरा का उल्लेख नहीं किया ताकि हम अपने बच्चों की परवरिश भी इस तरह से करें कि शेख सहल (भगवान उन पर दया करें) ने अपने बचपन से किए थे। इसका उल्लेख करने में ग़ज़ाली का उद्देश्य इस बात को उजागर करना है कि यदि माता-पिता द्वारा बच्चे की उचित परवरिश के लिए उचित व्यवस्था की जाती है, तो बच्चा मानवीय क्षमता के शिखर तक पहुंच सकता है, अन्यथा, इस तरह के गहन आध्यात्मिक और शारीरिक व्यायाम और कठोरता सभी के लिए आवश्यक और आवश्यक नहीं हैं।

आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने की शर्तों, आध्यात्मिक संघर्ष की शुरुआत और आध्यात्मिक मार्ग पर आध्यात्मिक साधक के क्रमिक विकास के बारे में विवरण

यह ज्ञात होना चाहिए कि जो व्यक्ति हृदय के माध्यम से निश्चितता के साथ परलोक का पालन करता है, परलोक का बन जाता है, इसके लिए संघर्ष करता है, इसके लिए निर्भरता जमा करता है, उस मार्ग पर चलता है और सांसारिक सुखों और आशीर्वादों के लिए उसके हृदय में कोई महत्व नहीं रहता है। यदि किसी के पास मोती हो और उसकी नजर किसी अनमोल रत्न पर पड़ जाए, तो मोती दिल से निकल जाता है और वह मोती के स्थान पर मणि प्राप्त करने की इच्छा रखता है। जो न तो परलोक की इच्छा रखता है और न ही ईश्वर से मिलने का, वह उस व्यक्ति के समान है जो ईश्वर और अंतिम दिन में विश्वास की कमी के कारण एक छोटे मोती को अनमोल रत्न से श्रेष्ठ मानता है। यह मूर्खता केवल वही कर सकती है जिसकी दृष्टि केवल रत्न पर है, रत्न की वास्तविकता पर नहीं। ऐसा व्यक्ति स्पष्ट रूप से एक छोटे मोती को अमूल्य समझेगा और गहना का कोई महत्व नहीं देखेगा। फिर भी, आध्यात्मिक संघर्ष और आध्यात्मिक मार्ग (सुलुक) को पार किए बिना ईश्वर तक पहुंचना संभव नहीं है, जो बदले में बिना इरादे के संभव नहीं है। इरादे के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा विश्वास से रहित होना है। जिसे याद किया जाता है (ईश्वर) में विश्वास नहीं है। आध्यात्मिक मार्गदर्शकों और [सही ढंग से निर्देशित] विद्वानों को सत्य का मार्ग दिखाना चाहिए और साथी मनुष्यों को बताना चाहिए कि यह दुनिया बहुत कम मूल्य की है, इसका कोई स्थायित्व नहीं है, और परलोक का जीवन निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, केवल इसमें स्थायित्व, शाश्वतता और अनंत काल है,

और [कि] लोग [अपने जीवन के सच्चे उद्देश्य और अर्थ और इसे प्राप्त करने के मार्ग के] लापरवाही में लिप्त हैं, वासनाओं और इच्छाओं में डूबा हुआ, अपने वास्तविक लाभ और नुकसान से बेखबर और सपने देखने की स्थिति में पूरी तरह से नशे में। ऐसे विद्वान विद्वान नहीं मिलते हैं जो उन्हें उनकी नींद से जगा सकते हैं, उन्हें उनकी वासनाओं और इच्छाओं से दूर कर सकते हैं, और उन्हें उनकी लापरवाही और लापरवाही के बारे में चेतावनी दे सकते हैं [सच्चे उद्देश्य, जीवन का अर्थ और शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता का मार्ग]।

यदि कोई व्यक्ति अपनी असावधानी की नींद से जाग जाता है, तो ऐसा व्यक्ति अविश्वास और पाखंड के अंधकार से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं ढूंढता है और अपनी अज्ञानता के कारण [अपनी भलाई और सच्ची सफलता के ज्ञान के] हर मोड़ और स्थान पर ठोकर खाता है और गिर जाता है। यदि ऐसा व्यक्ति विद्वानों से मार्ग के बारे में पूछता है [अपने आस-पास के अंधेरे से बाहर, सच्ची आंतरिक रोशनी और शांति के जीवन में] तो वे एक का उत्तर देने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि वे स्वयं नीच इच्छाओं और वासनाओं के दास हैं और निचले स्व (नफ्स) से इच्छाओं के कैदी हैं। इरादे की कमजोरी, मार्ग से अपरिचितता, और [तथाकथित] विद्वानों का गुमराह वे कारण हैं जिनके कारण ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग राहगीरों, आध्यात्मिक यात्रियों और भटकने वालों से रहित है। जब उद्देश्य [और किसी के जीवन का अर्थ और इसे प्राप्त करने का मार्ग] दृष्टि से छिपा होता है, तो किसी के [सच्चे] उद्देश्य [और जीवन के उद्देश्य] की ओर ले जाने का मार्गदर्शक गायब हो जाता है, [आंतरिक] स्वयं पर जिद्दी गलत सिर वाली मूर्खताओं (हवा) और वासनाओं का प्रभुत्व होता है, और साधक [सत्य, मार्गदर्शन और आंतरिक रोशनी का] लापरवाही में लिप्त होता है, तो कोई रास्ता कैसे खोज सकता है? यदि यह [किसी भी संयोग से] मिल जाता है और किसी ने इसकी ओर कदम बढ़ाया है, तो वह मंजिल तक कैसे पहुंचेगा जब वह मार्ग पर चलना भी नहीं जानता है?

आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने की शर्तें: यदि कोई बुद्धिमान है और अपने दम पर या किसी के अनुनय पर परलोक के लिए इरादा करता है, तो [इसकी ओर] एक कदम उठाने से पहले, उसे आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने की शर्तों का पता लगाना चाहिए। आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने से पहले, निम्नलिखित शर्तों को पूरा करना आवश्यक है:

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने के लिए शर्त यह है कि व्यक्ति अपने और सत्य के बीच जो भी पर्दा (छिपाने और अस्पष्ट करने वाली चीजें) पाता है, उसे हटा देता है। [स्वयं और सत्य] के बीच कई पर्दे छिपे होने के कारण लोग सत्य का अनुभव करने से वंचित हैं। भगवान कहते हैं:

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

"और हमने उनके सामने एक अवरोध खड़ा कर दिया है, उनके पीछे एक बाधा खड़ी कर दी है और इसके साथ, हमने उन्हें चारों ओर से घेर लिया है, इसलिए वे [सत्य का प्रकाश नहीं देख सकते हैं और यह सत्य की खोज के प्रति उनकी अपनी लापरवाही और अपने स्वयं के गलत कार्यों के कारण किया गया है]। (कुरान, अध्याय 36, आयत 9)

घूंघट के प्रकार: आध्यात्मिक साधक और सत्य के बीच चार पर्दे होते हैं (जीवन में सत्य में बाधा डालने और सही मार्ग को बाधित करने वाली बाधाएं जो जीवन के सच्चे उद्देश्य, आंतरिक रोशनी, शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की प्राप्ति की ओर ले जाती हैं): धन, [यश] की इच्छा, [विभिन्न विचारधाराओं की] अंधा अनुसरण, और पाप। धन का पर्दा तब मिट जाता है जब वह साधक के अधिकार से बाहर हो जाता है और केवल उसकी जरूरतों की सीमा तक ही रह जाता है। भले ही एक *दिरहम* (एक पुरानी मुद्रा) साधक के पास रह जाए जो किसी की जरूरतों से परे है, किसी का दिल उसके प्रति चौकस रहेगा, *दिरहम* दिल पर राज करेगा और वह भगवान की ओर झुक नहीं पाएगा। प्रसिद्धि का पर्दा तब उठा होता है जब साधक प्रसिद्धि और अधिकार के स्थानों से दूर रहता है, विनम्रता और विनम्रता को अपनी आदत के रूप में बनाता है, गुमनामी के जीवन को प्राथमिकता देता है, प्रसिद्धि के कारणों से अनासक्त रहता है, और उस प्रकार के कार्य करता है [ईश्वरीय कानून और शालीनता की सीमा के भीतर] जो लोगों में एक के खिलाफ घृणा पैदा करते हैं। ईश्वरीय कानून और तर्क के विभिन्न स्कूलों के खिलाफ पूर्वाग्रहपूर्ण मानसिकता को अलग करके अंधे अनुसरण का पर्दा हटा दिया जाता है [इसी तरह विभिन्न धार्मिक परंपराओं के खिलाफ] और केवल यह सुनिश्चित करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है और मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) ईश्वर के दूत हैं। इन वचनों की सच्चाई और सत्यता की व्यावहारिक अभिव्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि सभी संबंधों को हर चीज से काट दिया जाए और भगवान के अलावा पूजा के योग्य समझे जाने वाले हर प्राणी से, विशेष रूप से [अपने स्वयं के] भगवान (*नफ्स या अहंकार) के साथ सभी संबंधों को काट दिया जाए* क्योंकि इस "भगवान" को बहुत महत्व दिया जाता है और इसके हर आदेश का पालन किया जाता है और इसके हर इशारे को सिर झुकाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। यदि ईश्वर की एकता और एकता के इस कथन को इस तरह से प्रमाणित किया जाता है, तो [विभिन्न विचारधाराओं के] अंधे अनुसरण से निकलने वाली सभी मान्यताएं रद्द हो जाएंगी। यह आध्यात्मिक संघर्ष और प्रयास (मुजाहिद) के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, न कि तर्क और बहस के माध्यम से [लोगों के साथ]। यदि पूर्वाग्रह और असहिष्णुता किसी पर हावी है और [परिणामस्वरूप] किसी के [लंबे समय से आयोजित और संचित] विश्वासों के खिलाफ कुछ भी सुनने को तैयार नहीं है, तो यह अंधे अनुयायियों का गला घोंटना है और इस जकड़ से बाहर निकलना बहुत मुश्किल है। यह एक साधक होने की शर्त नहीं है कि कोई व्यक्ति एक निश्चित विचारधारा [ईश्वरीय कानून का] का सख्त पालन करता है, बल्कि इसके बजाय, किसी भी विचारधारा का प्रशंसक और अनुयायी आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने के मार्ग को पार कर सकता है। पाप का पर्दा तब तक नहीं हटाया जाता जब तक कि कोई [अपने स्वयं के सभी गलत कामों से परमेश्वर के लिए] पश्चाताप नहीं करता, पिछले सभी पापों पर खेद और पश्चाताप व्यक्त करता है और उन सभी के अधिकारों को वापस नहीं करता है जिन्हें उन्होंने [उनके अधिकारों को हड़पकर] उत्पीड़ित किया है। जो अपने पापों से पश्चाताप किए बिना आध्यात्मिक रोशनी और अनावरण (*मुकाशाफा)* के माध्यम से ईश्वर (दीन) के मार्ग के रहस्यों और आंतरिक ज्ञान के बारे में सूचित होना चाहता है, वह उस व्यक्ति की तरह है जो अरबी सीखे बिना कुरान के अर्थ और इरादे को समझना चाहता है जबकि कुरान अरबी [भाषा] में है। कुरान की एक भी आयत का अर्थ अरबी सीखे बिना नहीं समझा जा सकता है, और इसके रहस्यों, सूक्ष्मताओं और ज्ञान को समझना इस वजह से और भी कठिन है। इसी तरह, आध्यात्मिक प्रयास की घाटी में कदम रखने से पहले, ईश्वरीय कानून की शिक्षाओं का पालन करना अनिवार्य है [ईश्वरीय पूजा के कार्यों और सभी साथी मनुष्यों के साथ सामाजिक व्यवहार के माध्यम से किसी

के बाहरी जीवन का संचालन करने के लिए]। बाहरी जीवन का संचालन करने के लिए ईश्वरीय कानून का पूर्ण पालन, दिव्य रहस्यों के द्वार खोलने की ओर ले जाता है और शाश्वत सत्य के फव्वारे निकलते हैं।

एक सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक की आवश्यकता : इन सभी चार स्थितियों का पालन करने वाला और धन और प्रसिद्धि की इच्छाओं से बचने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति की तरह है जो गंदगी से गंदा होने के बाद साफ हो जाता है और स्नान करने के बाद (*वुडू* - शारीरिक शुद्धि का एक कार्य जो प्रार्थना करने के लिए एक आवश्यक शर्त है) प्रार्थना करने के लिए पात्र हो जाता है । हालाँकि, यह पात्रता प्रार्थना करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके बजाय, कभी-कभी किसी को मण्डली के एक नेता (*इमाम*) की आवश्यकता होती है जिसके नेतृत्व में, प्रार्थना की जा सकती है। इसी तरह, इन चार शर्तों को पूरा करना और उन पर कार्य करना पर्याप्त नहीं है, लेकिन एक शिक्षक या आध्यात्मिक मार्गदर्शक (*स्केख*) की भी आवश्यकता है जो मार्गदर्शन के सीधे मार्ग पर मार्गदर्शन कर सके और चल सके [जिसमें कोई कुटिलता, विचलन और नुकसान नहीं है]। ईश्वर (*दीन*) का मार्ग अत्यंत जटिल और कठिन है और यह सभी तरफ से ढेर सारे शैतानी (बुरे) रास्तों से घिरा हुआ है [जो किसी को आत्म-विनाश की ओर ले जाता है]। यदि कोई (आध्यात्मिक मार्गदर्शक) नहीं मिलता है, तो यह संभव है कि शैतान नेतृत्व और मार्गदर्शन के लिए आगे आ सकता है, जो किसी व्यक्ति को मार्गदर्शन के सीधे मार्ग से भटकाने की कोशिश करता है और उसे अपने मार्ग पर ले जाता है। एक [आध्यात्मिक] मार्गदर्शक के बिना खतरनाक रास्तों पर चलना [आध्यात्मिक] मृत्यु की यात्रा करने के समान है। जिन लोगों को खुद पर इतना भरोसा होता है और वे अपने आप ही राह पर चलने लगते हैं, वे रास्ते पर उगने वाले पौधों की तरह हैं। उनका जीवन छोटा हो सकता है, और उनका जीवन कभी भी समाप्त हो सकता है [जीवन में गलत रास्ते लेने के कारण जो संभावित रूप से हानिकारक हैं]। यदि वे जीवित रहते हैं, तो वे फल उत्पन्न करने में सक्षम नहीं होंगे [आध्यात्मिक मार्ग में, जो बदले में, किसी के बाहरी जीवन में सकारात्मक और लाभकारी कार्यों के लिए प्रभाव डालता है]।

इन चार शर्तों को पूरा करने के बाद, जिस मामले का सबसे अधिक महत्व है, वह है एक सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक (*शैख अल-कामिल*) का अस्तित्व, जिसका होना एक अंधे व्यक्ति की तरह आत्मविश्वास का आदेश देता है, जिसे अपने साथी पर पूरा भरोसा है और जिसका वह रास्ते के नुकसान की परवाह किए बिना अनुसरण करता है। यह आध्यात्मिक साधक (*मुरीद*) की स्थिति होनी चाहिए जो खुद को आध्यात्मिक मार्गदर्शक को सौंप देता है और वही करता है जो मार्गदर्शक किसी को करने के लिए कहता है [ईश्वरीय कानून की सीमा के भीतर - एक सच्चा आध्यात्मिक मार्गदर्शक कभी भी डरे हुए कानून के ईश्वरीय आदेशों के खिलाफ नहीं जाएगा और इसे सर्वोच्च सम्मान में रखेगा] और यह निश्चितता है कि भले ही आध्यात्मिक मार्गदर्शक गलती करे, यह किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगा और यह एक के लिए फायदेमंद साबित होगा। आध्यात्मिक मार्गदर्शक की गलती अकेले आध्यात्मिक मार्ग पर चलने से बेहतर है [आध्यात्मिक मार्गदर्शक के बिना अपने स्वयं के अनुमानों और विचारों को मार्गदर्शक के रूप में उपयोग करके] और सही [आध्यात्मिक] मार्ग का चयन करने का जोखिम उठाना [क्योंकि एक सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक होने से व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग में कई कदम पीछे की ओर एक कदम आगे बढ़ने से रोकता है] ।

आध्यात्मिक मार्गदर्शक के कर्तव्य : जब कोई आध्यात्मिक साधक किसी को अपना मार्गदर्शक और अगुआ बनाता है तो मार्गदर्शक के लिए यह बाध्य होता है कि वह आध्यात्मिक साधक को एक सुरक्षित अभयारण्य प्रदान करे [प्रभावी आध्यात्मिक शिक्षाओं, मार्गदर्शन और सहायता के संदर्भ में] और आध्यात्मिक साधक के संरक्षण की व्यवस्था ऐसे मजबूत किले में करे जहां राजमार्ग लुटेरों और लुटेरों की

सीढ़ियां न पहुंचें । इस तरह के एक सुरक्षित अभयारण्य और किले के आसपास की चार दीवारें हैं: एकांत, शांति, भूख और जागना [लोगों की संगति में होने के विपरीत, निरंतर जल्दबाजी और गति की स्थिति में, तृप्त और भरे हुए, और लंबे समय तक सोते हैं क्योंकि ये आध्यात्मिक पथ की प्रमुख बाधाएं हैं]। आध्यात्मिक साधक का उद्देश्य हृदय का सुधार है [जिसे आत्मा के शोधन और शुद्धि के रूप में भी जाना जाता है, इसलिए यह उन बेड़ियों को तोड़ने में सक्षम हो जाता है जो इसे दबाए रखते हैं और इसे अस्तित्व के उच्च क्षेत्रों में ऊपर उठाते हैं, मैलापन से लंगड़ा में, शाश्वत खुशी में और भौतिक क्षेत्र में सांसारिक और कथित असफलताओं के तनाव से अंतहीन विजय में] ताकि दिव्य दृष्टि [की आंख के साथ] आत्मा] संभव हो जाता है और व्यक्ति दिव्य निकटता प्राप्त करता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उपर्युक्त चार चीजें आवश्यक हैं। भूख हृदय में रक्त के प्रवाह को कम कर देती है जो बदले में इसमें स्पष्टता जोड़ती है और यह स्पष्टता हृदय की रोशनी है। भूख हृदय में कठोरता को कम करती है और इसमें विनम्रता, करुणा और कोमलता पैदा होती है जो बदले में आध्यात्मिक अनावरण (*मुकाशाफा*) की कुंजी है, जबकि कठोरता इसके प्रति एक पर्दा है। रक्त का कम प्रवाह [वास्तविक] दुश्मन [मानव जाति, यानी, शैतान] के मार्ग को कम कर देता है क्योंकि वासनाओं और इच्छाओं से भरी नसें इसके मार्ग हैं और इन नसों में रक्त के माध्यम से, यह पूरे शरीर में घूमती है। यीशु ने अपने साथियों से कहा: "अपने दिलों को भूखा रखो, शायद तुम अपने रब का दर्शन कर सको। सहल बिन अब्दुल्ला तुस्तारी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "*अब्दाल* (संतों और ज्ञानवादियों की उच्चतम श्रेणियों में से एक) चार चीजों से बने हैं: भूख, जागना, मौन और एकांत"। ज्ञान और हृदय की रोशनी पर भूख का प्रभाव एक निर्विवाद तथ्य है। अनुभव इसकी पुष्टि करता है। विवरण "दो इच्छाओं को तोड़ना" (अध्याय 3) अध्याय में प्रदान किया जाएगा।

जागने से हृदय में लंबन, चमक और रोशनी भी आती है। जब यह प्रकाश भूख से उत्पन्न प्रकाश में जुड़ जाता है [इसे प्रकाश पर हल्का बनाने के लिए], हृदय एक चमकीले तारे या एक पॉलिश किए गए दर्पण की तरह बन जाता है जो दिव्य सुंदरता को दर्शाता है और इसमें परलोक की उच्च डिग्री की गवाही मिलती है, और सांसारिक अस्तित्व की तुच्छता, अपमान और नुकसान होते हैं। इस गवाही के बाद, आध्यात्मिक साधक की दृष्टि में सांसारिकता का कोई महत्व नहीं रह जाता है और व्यक्ति पूरी तरह से परलोक पर ध्यान केंद्रित कर लेता है [जो मानव आत्मा की यात्रा में स्थायित्व और अनंत काल का अंतिम गंतव्य है क्योंकि यह अस्तित्व के एक स्तर से दूसरे स्तर तक जाता है]। नींद (ज्यादती) दिल को कठोर और मृत बना देती है लेकिन अगर यह जरूरत के हिसाब से है तो इसमें छिपे हुए दायरे के रहस्य खुल जाते हैं। *अब्दल* (बहुत उच्च आध्यात्मिक क्षमता के संत और ज्ञानवादी) के गुणों में लिखा है कि उनका पोषण भूख है, वे केवल तभी सोते हैं जब सबसे अधिक जरूरत होती है, और केवल उस आवश्यकता के अनुसार बात करते हैं जो ईश्वरीय स्मरण और चिंतन से मिलने वाली थकान को दूर करने में मदद करता है। शांति और मौन हृदय को मजबूत करते हैं और ईमानदारी (वारा') और ईश्वर-भय (*तकवा*) की ओर ले जाते हैं।

एकांत का पूरा लाभ तब प्राप्त होता है जब आंखें और कान, जो हृदय के द्वार हैं, बंद हो जाते हैं और हृदय की व्यस्तता में [दिव्य स्मरण और चिंतन में] कुछ भी हस्तक्षेप नहीं करता है। शरीर में हृदय का उपमा एक जलाशय की तरह होता है जिसमें चारों तरफ से गंदा पानी उसमें गिर जाता है। आध्यात्मिक संघर्ष और प्रयास का उद्देश्य उन सभी चैनलों को बंद करना है जो गंदे पानी को [जलाशय में, यानी हृदय में] ले जाते हैं और जलाशय को गहराई से खोदते हैं ताकि इसे किसी बाहरी स्रोत की आवश्यकता न हो [पानी के लिए], इसके बजाय, पानी स्वयं जलाशय के नीचे से निकलता है। जलाशय को पानी में आत्मनिर्भर बनाने

के लिए, गंदे पानी के जलाशय को पूरी तरह से खाली करना आवश्यक है और यह तभी हो सकता है जब जलाशय की ओर जाने वाले सभी चैनल बंद हों। यदि कोई चैनल खुला रखना चाहता है [जलाशय में गंदे पानी के प्रवाह के लिए] और जलाशय में शुद्ध और ताजा पानी जमा करना चाहता है तो यह काफी असंभव है। हृदय के चैनल [जो उसमें अशुद्धियों और गंदगी को ले जाते हैं] इंद्रियां हैं। इंद्रियों को रोकने का तरीका है कि अंधेरे घर में एकांत अपनाएं और यदि अंधेरा कमरा उपलब्ध न हो तो सिर पर कपड़ा रखकर वहां बैठना चाहिए। व्यक्ति एकांत में सत्य की आवाज सुनता है और ईश्वरीय विधान की महिमा का गवाह बनता है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को इसी स्थिति में सत्य की इस आवाज द्वारा संबोधित किया गया था [उनकी पैगंबर की शुरुआत से पहले एकांत और आध्यात्मिक चिंतन]। इस स्पष्टीकरण का परिणाम यह है कि भूख, जागना, शांति और एकांत के ये चार गुण एक आध्यात्मिक यात्री के आश्रय हैं। कोई भी इन [चार] साधनों के माध्यम से [आध्यात्मिक] मार्ग [ईश्वर की ओर ले जाने] के डाकुओं और लुटेरों से अपनी रक्षा कर सकता है।

आध्यात्मिक मार्ग (सुलुक) में प्रयास करने की शुरुआत : इन सभी शर्तों को पूरा करने के बाद, व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग (सुलुक) में प्रयास करने के मार्ग में कदम रखना चाहिए और इस बात से अवगत होना चाहिए कि आगे बढ़ने के लिए मार्ग में कई कठिन घाटियाँ (या घाटियां) हैं जिन्हें पार करना होगा। ईश्वर के मार्ग की घाटियाँ कोई और नहीं बल्कि हृदय के [नकारात्मक और बुरे आंतरिक] गुण हैं जो सांसारिक इच्छाओं को पैदा करते हैं। इनमें से कुछ घाटियाँ विशाल हैं जिन्हें पार करना मुश्किल है और कुछ छोटी हैं जिन्हें पार करना आसान है। इन घाटियों को पार करने के लिए [सही] अनुक्रम एक आसान घाटी को पार करना है, फिर एक जो पहले वाले की तुलना में थोड़ा कठिन है, फिर एक अधिक कठिन है [और इसी तरह]। ये गुण उन्हीं बाधाओं के रहस्य और संकेत हैं जिन्हें आध्यात्मिक संघर्ष की शुरुआत में पार किया गया था जैसे कि धन, प्रसिद्धि, रचनाओं [स्वयं सृष्टिकर्ता के विपरीत] की ओर झुकाव, और पाप। जिस तरह इन बाधाओं के संकेत बाहरी अस्तित्व से काट दिए गए थे, उसी तरह उन्हें [स्वयं के] आंतरिक अस्तित्व से मिटा दिया जाना चाहिए। लेकिन इसके लिए एक लंबे आध्यात्मिक संघर्ष की आवश्यकता है। मैंने यह पहले भी लिखा है कि वास्तविक आध्यात्मिक संघर्ष [निचले स्व की] इच्छाओं और वासनाओं का विरोध है।

जब आध्यात्मिक यात्री का हृदय इच्छाओं और वासनाओं से खाली हो जाता है और हृदय में ऐसा कुछ भी नहीं बचता है जो आध्यात्मिक प्रयासों का विरोध करता है तो आध्यात्मिक मार्गदर्शक, (*मुर्शिद* या *शेख*) को आध्यात्मिक यात्री के दिल की निरंतर निगरानी रखनी चाहिए [जो छात्र या *मुरीद* का मार्गदर्शक होता है] और किसी को अत्यधिक बाहरी भक्ति या मुकदमे से रोकना चाहिए (*अवरद*). इसके बजाय, किसी को [धार्मिक कार्यों] दायित्वों (फराइद) और पैगंबर कृत्यों (सुनन) से संतुष्ट होने की सलाह दी जानी चाहिए [जो धार्मिक दायित्वों के स्तर से नीचे हैं और पैगंबर के पवित्र कार्यों और भक्ति का अनुकरण करने के रूप में माना जाता है जो पूजा के अनिवार्य कार्यों से ऊपर और परे हैं]। अधिक से अधिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक को किसी को वह स्मरण बताना चाहिए जो सभी यादों और लिटनीज़ का सारांश है, अर्थात, जब हृदय ईश्वर के अलावा अन्य सभी चीजों से खाली हो जाता है, तो आध्यात्मिक यात्री को सर्वोच्च नाम "अल्लाह" (यानी, ईश्वर का एकमात्र व्यक्तिगत नाम, जबकि, "ईश्वर" सर्वोच्च व्यक्ति को संदर्भित करने का एक सामान्य भाषा

विशिष्ट तरीका है, जो गुरु है, सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और हर उस चीज़ का प्रदाता जो उसने अस्तित्व में लाया)। हालाँकि, जब तक हृदय आध्यात्मिक मार्ग ('अलैक) की अन्य बाधाओं की ओर झुका हुआ है, तब तक किसी को यह स्मरण *नहीं करना चाहिए*। इसीलिए, शिबली (भगवान उन पर दया करें) अपने एक छात्र से कहा करते थे: "यदि आपके दिल में कुछ ऐसा होता है जो इस शुक्रवार और अगले शुक्रवार के बीच में भगवान के अलावा है, तो अगले शुक्रवार को मुझसे मिलने न आएं"। इस प्रकार की ईमानदारी आध्यात्मिक मार्ग को पार करने और दिव्य प्रेम प्राप्त करने के सच्चे इरादे के प्रभुत्व के बिना प्राप्त नहीं की जाती है। हृदय ईश्वर के अलावा किसी अन्य से रहित है, जब हृदय में ईश्वर के अलावा किसी और का विचार भी नहीं आता है, और व्यक्ति इतना सच्चा प्रेमी बन जाता है कि एक चिंतन के अलावा कोई अन्य चिंतन नहीं रह जाता है। यदि कोई आध्यात्मिक यात्री ऐसी आंतरिक अवस्था में आ जाता है, तो आध्यात्मिक मार्गदर्शक को ऐसे व्यक्ति को एकांत में एक कोने में बैठने की अनुमति देनी चाहिए और किसी को अनुमेय (हलाल) भोजन लाने के लिए नियुक्त करना चाहिए। भोजन के लिए अनुमेय होना अनिवार्य है क्योंकि ईश्वर (*दीन*) के मार्ग का आधार अनुमेय भोजन खाना है [जैसा कि अनुमेय भोजन के विपरीत है जैसे कि अवैध और अनैतिक साधनों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जैसे कि रिश्वत, जबरन वसूली, चोरी, धोखाधड़ी, आदि, या अवैध रूप से अर्जित धन या उस प्रकार के माध्यम से जो पवित्र कानून में निषिद्ध है]।

एकांत के लिए एक अनुमति देने के बाद, एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक को एक दिव्य स्मरण (धिक्र) करने के लिए कहना चाहिए जिसमें किसी का दिल और जीभ दोनों पूरी तरह से लिप्त रहें, जैसे, "*अल्लाह, अल्लाह*" ("अल्लाह" *अल्लाह का एकमात्र व्यक्तिगत नाम है), "*सुभान अल्लाह" (ईश्वर की महिमा हो जो सभी अपूर्णताओं, कमियों, त्रुटियों और हर चीज की कमी, नीच और नकारात्मक से ऊपर है), आदि। इस स्मरण में इस हद तक दृढ़ता बरतनी चाहिए कि जीभ की गति रुक जाए, और ऐसा लगेगा कि यह बिना किसी जानबूझकर आंदोलन के जीभ पर जारी है। यह लिटनी इस हद तक जारी रहनी चाहिए कि जीभ का कोई भी शेष प्रभाव [इस दिव्य स्मरण पर] अस्तित्व में न रह जाए और केवल [सर्वोच्च नाम के] शब्द का रूप हृदय में रह जाए। तब एक ऐसा चरण आएगा [इस आध्यात्मिक प्रयास में निरंतर प्रयास के माध्यम से] जहां शब्द का रूप भी हृदय से मिट जाता है और केवल इसके अर्थ की वास्तविकता रह जाती है। यह इस तरह से होता है कि अर्थ हर समय दिल के साथ रहता है और कभी गायब नहीं होता है, और इसकी उपस्थिति में, हृदय में किसी अन्य अर्थ का विचार भी नहीं होता है।

जब दिल किसी चीज में लिप्त होता है, तो चाहे वह कुछ भी हो, उसके अलावा किसी और चीज के लिए उसमें कोई जगह नहीं बची है। इसलिए, यदि हृदय परमेश्वर की याद में व्यस्त है और वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे खोजा जा रहा है और साथ ही साथ उसका उद्देश्य भी है, तो हृदय परमेश्वर के अलावा अन्य सभी चीजों से रहित हो जाएगा। इस स्तर पर पहुंचने के बाद, एक आध्यात्मिक यात्री (*सालिक* या *मुरीद*) को अपने दिल पर कड़ी नजर रखनी चाहिए और दिल में किसी और चीज की कल्पना की अनुमति देने का प्रयास नहीं करना चाहिए - न तो किसी के अपने अस्तित्व से संबंधित है और न ही किसी और से संबंधित है [या कुछ भी]। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि हृदय किसी भी पक्ष की ओर झुका हुआ है, तो वह ईश्वरीय स्मरण से रहित हो जाएगा, भले ही यह एक पल के लिए भी हो जाए, यह एक बड़ी क्षति है। इस प्रकार के नुकसान से बचना चाहिए। आक्षेपों के बारे में हृदय की स्थिति यह है कि यदि कोई बाहरी आक्षेपों से छुटकारा पा लेता है और हृदय को एक कथन [ईश्वरीय स्मरण के] पर केंद्रित करता है, तो वह भी आक्षेपों

का स्रोत बन जाएगा, जैसे, "यह कथन क्या है?", "इसका क्या अर्थ है?", "यह [ईश्वर की] पूजा क्यों है?" यह संकेत दरवाजे या चिंताओं को खोल देगा और शैतान नए तैयार किए गए संकेतों के साथ [हृदय में] प्रवेश करेगा। उनमें ऐसे संकेत शामिल होंगे जो किसी को विश्वास की सुरक्षा से लेकर अविश्वास के विनाश तक, भविष्यद्वाणी के मार्ग (*सुन्नत)* के प्रकाश से लेकर नए गढ़े गए मामलों के अंधेरे और विश्वास में नवाचारों तक ले जाएंगे (*बिदा,* यानी, ऐसे मामले जो किसी के विश्वास के लिए हानिकारक हैं क्योंकि वे विश्वास की शुद्ध, मूल और सच्ची शिक्षाओं से विचलन हैं)। यदि आध्यात्मिक यात्री सक्रिय है [किसी के विश्वास के इस तरह के अतिक्रमण से बचने में] और इस तरह के आक्षेप लाने वाले रास्तों पर कड़ी नजर रखता है, तो किसी भी नुकसान का कोई खतरा नहीं है।

दो प्रकार के संकेत: एक आध्यात्मिक यात्री के सामने आने वाले संकेत दो प्रकार के होते हैं। कुछ संकेत वे हैं जिनके लिए निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि परमेश्वर उनसे पूरी तरह से मुक्त है [क्योंकि वे दिव्य महिमा और सुंदरता के अनुकूल नहीं हैं] लेकिन शैतान अभी भी उन्हें हृदय में स्थापित करने की कोशिश करता है। शैतान की ऐसी साजिशों से खुद को बचाने का तरीका ईश्वरीय स्मरण में संलग्न होना है। भगवान कहते हैं:

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ ۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

"यदि आपको शैतान से बुरा विचार आने लगता है तो परमेश्वर की शरण में जाओ। वास्तव में, वह सर्व-श्रवण और सर्वज्ञ है। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 200)

उन्होंने आगे कहा:

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ ٱلشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُوا۟ فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ

"वास्तव में जिन लोगों को परमेश्वर का पवित्र भय, श्रद्धा और भय होता है, जब उन्हें शैतान से खतरा (एक बुराई, हानिकारक, और नकारात्मक विचार) का सामना करना पड़ता है, तो वे तुरंत ईश्वरीय स्मरण में संलग्न हो जाते हैं और उनकी आँखें अचानक खुल जाती हैं (आंतरिक आध्यात्मिक बोध की स्थिति में जो किसी के लिए हानिकारक सभी के खिलाफ एक बाधा और सुरक्षा के रूप में भी कार्य करती है)। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 201)

दूसरे प्रकार में ऐसे संकेत शामिल हैं जिनमें झिझक और संदेह होता है। उनके बारे में पूरे विश्वास के साथ यह नहीं कहा जा सकता है कि परमेश्वर उनसे मुक्त है। जब इस तरह के आक्षेपों का सामना करना पड़ता है, तो स्वयं निर्णय लेने के बजाय, आध्यात्मिक यात्री को आध्यात्मिक मार्गदर्शक की राय के बारे में पूछताछ करनी चाहिए। इतना ही नहीं, बल्कि किसी को आध्यात्मिक मार्गदर्शक के साथ अपने दिल की स्थिति को साझा करना चाहिए, चाहे वह सुस्ती हो या स्फूर्ति, किसी चीज के प्रति झुकाव या इरादे की सच्चाई [आध्यात्मिक मार्ग को पार करने के लिए], संक्षेप में, हर [आंतरिक] स्थिति [हृदय की] को आध्यात्मिक मार्गदर्शक के साथ साझा किया जाना चाहिए ताकि कोई इलाज लिख सके [हृदय की आंतरिक अवस्थाओं के लिए जिन्हें इलाज की आवश्यकता है]। यह भी आवश्यक है कि इन्हें आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अलावा किसी और के साथ साझा न करें, जिसे आध्यात्मिक यात्री (मुरीद या आध्यात्मिक पथ पर किसी के छात्र) की [आंतरिक] अवस्थाओं पर भी गहरी नजर रखनी चाहिए और [आध्यात्मिक यात्री की] बुद्धि और

दूरदर्शिता के अनुसार [नकारात्मक और क्षति पहुंचाने वाली आंतरिक अवस्थाओं के इलाज के संदर्भ में] निर्णय लेना चाहिए। यदि आध्यात्मिक मार्गदर्शक यह देखता है कि चिंतन और आंतरिक चिंतन करने की अनुमति से आध्यात्मिक यात्री स्वचालित रूप से सत्य के प्रति जागरूक हो जाएगा, तो किसी को उस मार्ग पर रखा जाना चाहिए और इस [आध्यात्मिक] चिंतन को बनाए रखने के लिए कहा जाना चाहिए ताकि ईश्वर से दिव्य प्रकाश प्रकट हो जो वास्तविकताओं को प्रकट करता है। हालांकि, यदि यह माना जाता है कि आध्यात्मिक यात्री स्वयं और सत्य को स्वचालित रूप से प्रकट नहीं करने का मार्ग नहीं खोज पाएगा, तो आध्यात्मिक मार्गदर्शक को किसी के संदेह को कम करना चाहिए और उन वास्तविकताओं में से एक को सूचित करना चाहिए जो वह सहन करने में सक्षम है, उसे सलाह देना चाहिए और अपने मानक (मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताओं) पर विचार करना चाहिए। कुछ तर्क प्रस्तुत करें। आध्यात्मिक मार्गदर्शक को [आध्यात्मिक] मामलों को समझने के लिए अधिक जोर नहीं देना चाहिए, इसके बजाय, जो कुछ भी कहा या सलाह दी जानी चाहिए, उसे दयालुता और सहजता के साथ किया जाना चाहिए क्योंकि यह मार्ग [ईश्वरीय उपस्थिति में आध्यात्मिक उत्थान का] बहुत कठिन और घातक खतरों से भरा हुआ है । कुछ आध्यात्मिक यात्री ईश्वरीय स्मरण और चिंतन की आध्यात्मिक गतिविधि के दौरान हानिकारक विचारों से घिरे रहते हैं और परिणामस्वरूप वास्तविकताओं के आध्यात्मिक अनावरण की क्षमता खो देते हैं । इसके परिणामस्वरूप, वे एक बेकार रास्ते पर चलना शुरू कर देते हैं [जहां उनका समय और प्रयास बर्बाद हो जाते हैं] और विनाश के करीब पहुंच जाते हैं। यह बहुत बड़ा नुकसान है। जिसका हृदय ईश्वरीय स्मरण में संलग्न होने के लिए स्वतंत्र है और जो बाधाएं भी मौजूद नहीं हैं, वह भी कभी-कभी इसी तरह के हानिकारक विचारों में शामिल हो जाता है। एक आध्यात्मिक यात्री खतरों से घिरे जहाज के यात्री की तरह होता है। यदि कोई बच जाता है, तो वह [आध्यात्मिक] मार्ग का राजा बन जाता है। यदि कोई बच नहीं सकता है, तो वह नष्ट हो जाता है [अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक स्वर्गारोहण के संघर्ष को खोने और परिणामस्वरूप अनन्त खुशी और अंतहीन विजय]।

पूजा के बाहरी कार्यों से संबंधित बुनियादी विश्वास और विश्वासों को अनुसरण (ज्ञान के साथ दूसरों का अनुसरण करना) के माध्यम से प्राप्त करने के बाद , व्यक्ति को धार्मिक कार्यों में संलग्न होना चाहिए [ईश्वरीय पूजा और दूसरों की सेवा से संबंधित]। किसी अन्य तरीके से कार्य करने में कई खतरे हैं। इसीलिए, कुछ लोगों ने आध्यात्मिक मार्गदर्शक के लिए यह आवश्यक समझा है कि वह अपने छात्रों (आध्यात्मिक यात्रियों) की [आंतरिक] स्थिति को खोजने के लिए किसी की अंतर्दृष्टि [और अंतर्ज्ञान] का उपयोग करे। यदि कोई बुद्धिमान नहीं है और बाहरी मामलों के बारे में विश्वास रखता है [आंतरिक आध्यात्मिक मामलों के विपरीत पूजा के बाहरी कार्यों से संबंधित], तो उसे ईश्वरीय स्मरण में शामिल करने के बजाय, उसे पूजा के बाहरी कार्यों और निरंतर *अवरद* (वाद) में शामिल होना चाहिए या उसे उन लोगों की सेवा में शामिल होना चाहिए जिन्होंने खुद को ईश्वरीय स्मरण और चिंतन में समर्पित कर दिया है ताकि उनका आशीर्वाद भी प्राप्त किया जा सके। ईश्वरीय स्मरण में लगातार लगे रहते हुए, आध्यात्मिक यात्री [जो केवल बाहरी पूजा के स्तर से ऊपर उठ गया है और बाहरी कार्यों में दूसरों का अनुसरण करता है] अच्छी आंतरिक अवस्थाओं का अनुभव करता है और [यहां तक कि] असाधारण करतब [चमत्कार की तरह] एक के माध्यम से होने लगते हैं। ये आंतरिक अवस्थाएं और असाधारण करतब अयोग्य आध्यात्मिक यात्री को [किसी की कम आध्यात्मिक क्षमता और आध्यात्मिक पथ पर एक नौसिखिया होने के कारण] आत्म-धार्मिकता, आत्म-दंभ, दिखावा और खुशी में लगे होने का कारण बनते हैं [अपने स्वयं के गलत अनुमान और राय में दूसरों से श्रेष्ठ होने के बारे में]। यह याद रखना चाहिए कि ये स्थितियाँ और अवस्थाएँ

आध्यात्मिक प्रयासों की बाधाएँ हैं। यदि आध्यात्मिक यात्री उनके प्रति चौकस हो जाता है और व्यक्ति इन अवस्थाओं में डूब जाता है, तो इससे आध्यात्मिक मार्ग में रुकावट आएगी, बल्कि यह आशंका है कि आध्यात्मिक यात्री आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ना बंद कर देगा। यह बेहतर है कि कोई व्यक्ति अपने पूरे जीवन में एक प्यासे व्यक्ति की तरह रहे, जिसे पूरे समुद्र के पानी से भी तृप्त नहीं किया जा सकता है [क्योंकि आत्म-संतुष्टि आध्यात्मिक उन्नति और पूर्णता को बाधित और उलट देती है]।

आध्यात्मिक यात्री की पूंजी किसी के रिश्ते (यानी, हृदय का लगाव) को सृष्टिओं के साथ समाप्त कर रही है [यानी, ईश्वर की, यानी, ईश्वर के अलावा प्रत्येक और हर चीज के साथ उनके प्रति लगाव उनके नश्वरता और वास्तविक शक्ति की कमी के कारण एक अंतिम निराशा और मोहभंग की ओर ले जाता है], ईश्वर (निर्माता) के साथ लगाव, और एकांत [इसे धूमधाम में हृदय के भोग के रूप में संभव बनाने के लिए, दुनिया की चमक और महिमा सभी आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं को मार देती है]। एक [आध्यात्मिक] यात्री ने कहा: "मैंने एक *अब्दाल* (बहुत उच्च आध्यात्मिक उपलब्धि के ज्ञानवादी) से जांच के मार्ग के बारे में पूछा। उन्होंने जवाब दिया: 'आप दुनिया में ऐसे रहते हैं जैसे एक यात्री कहीं रहता है'। मैंने उनसे पूछा: 'मुझे वह काम बताओ जिसके कारण मेरा दिल हमेशा भगवान के साथ रहता है'। उन्होंने उत्तर दिया: 'सृष्टिओं को इस तरह मत देखो कि उन्हें देखना (आत्मा का) अंधकार है। मैंने जवाब दिया, 'यह जरूरी है'। उन्होंने जवाब दिया: 'उनकी बात मत सुनो क्योंकि इससे दिल की कठोरता होती है'। मैंने कहा, 'यह भी जरूरी है'। उन्होंने जवाब दिया: 'उनके साथ कोई व्यवहार न करें क्योंकि इससे डर लगता है'। मैंने कहा: 'यह भी आवश्यक है, क्योंकि मैं अपना जीवन उनके बीच बिताता हूं। यह कैसे संभव है कि उनके साथ कोई लेन-देन न हो?' उन्होंने जवाब दिया: 'उनके साथ मत रहो। उनके साथ रहना विनाश है। मैंने जवाब दिया: 'यह बीमारी भी छूटने वाली नहीं है'। उन्होंने कहा: 'आप लापरवाह और बेखबर लोगों को देखते हैं, अज्ञानी की बात सुनते हैं, बेकार लोगों के साथ व्यवहार करते हैं (कम या कोई आध्यात्मिक महत्वाकांक्षा नहीं रखने वाले लोग जिनकी संगति एक के लिए उपयोगी नहीं है) और फिर भी चाहते हैं कि आपका दिल परमेश्वर के साथ रहे? यह कभी संभव नहीं होने वाला है।

आध्यात्मिक संघर्ष का उच्चतम स्तर : आध्यात्मिक संघर्ष का उच्चतम स्तर यह है कि एक आध्यात्मिक यात्री (*मुरीद*) हर पल और दूसरे समय ईश्वर के साथ अपने हृदय को उपस्थित पाता है और यह स्तर तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि किसी का हृदय ईश्वर के अलावा अन्य सभी चीजों से खाली न हो जाए और यह लंबे [और दृढ़] आध्यात्मिक संघर्ष के बिना संभव नहीं है । जब मानव हृदय में ईश्वर की याद के अलावा कुछ भी नहीं रहता है, तो ईश्वरीय विधान की महिमा उस पर प्रकट होती है, उस पर सत्य का प्रकाश आता है, और उच्च [आध्यात्मिक] क्षेत्रों की सभी सूक्ष्मताओं का अनावरण किया जाता है जिनके गुणों की व्याख्या नहीं की जा सकती है। फिर भी, यदि किसी आध्यात्मिक यात्री (मुरीद) पर विशेष ईश्वरीय कृपा है और उपर्युक्त मामले से कोई भी बात प्रकट होती है, तो व्यक्ति को ऐसी आध्यात्मिक स्थिति की रक्षा करनी चाहिए [क्योंकि यह अमूल्य है]। आध्यात्मिक अवस्था की इतनी उच्च डिग्री प्राप्त करने के बाद, कई राजमार्ग लुटेरे किसी के मार्ग (आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति और आरोहण) में बाधा डालते हैं । सबसे बड़ा राजमार्ग डाकू [किसी की आध्यात्मिक यात्रा में बाधा डालना] यह है कि कोई व्यक्ति ऐसी [आंतरिक आध्यात्मिक] अवस्थाओं को [आम जनता को] चेतावनी और सलाह के रूप में सुनाना शुरू कर देता है और उपदेश देने और सार्वजनिक वक्तृत्व के लिए उत्कट रूप से इच्छुक हो जाता है [जैसा कि कोई इस गलत धारणा और भ्रमपूर्ण स्थिति को विकसित करता है कि आध्यात्मिक पथ में अंतिम मंजिल अब पहुंच

गई है और सामान्य के साथ उच्च आंतरिक अवस्थाओं के रूप में अपनी आंतरिक आध्यात्मिक उपलब्धियों को साझा करने का समय आ गया है सार्वजनिक। यह अक्सर उनकी मदद करने के विचार के साथ किया जाता है लेकिन वास्तव में, निचला स्व (*नफ्स*) आराम, प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, सम्मान और परिणामी उल्लास और भौतिक लाभ [किसी की आध्यात्मिकता के लिए प्रतिकूल] की तलाश कर रहा है।

यह शौक निचले स्व (नफ्स) को अवर्णनीय आनंद प्रदान करता *है*। यह [वास्तव में] आनंद नहीं है, यह नशा है। मनुष्य अपने लाभ और हानि के प्रति पूरी तरह से बेखबर होने की स्थिति में इस शगल में पूरी तरह से लीन है। इतना ही नहीं, उपदेशों को अधिक प्रभावी और स्वीकार्य बनाने के लिए, व्यक्ति [अच्छे और प्रभावशाली] शब्दों के चयन में लिप्त हो जाता है, [कला] रंगीन प्रवचन, और ज्ञान प्रदर्शित करने की इच्छा को पूरा करने के लिए, कोई कुरान और हदीस (भविष्यद्वाणी कथन) से कहानियों, उदाहरणों और साक्ष्यों की खोज करता है और उन्हें दर्शकों के सामने प्रस्तुत करता है। कभी-कभी शैतान किसी के दिमाग में यह बात रखता है : "तुम्हारा यह कार्य महान और जबरदस्त है, तुम्हारे भाषण मृत हृदयों को जीवन दे रहे हैं, लापरवाही के पर्दे [जीवन के वास्तविक उद्देश्य के प्रति और इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक आध्यात्मिक प्रयास] दूर जा रहे हैं। आप ईश्वर और उसके सेवकों के बीच एक मध्यस्थ हैं, आप किसी भी लाभ या गुप्त उद्देश्य के लिए भगवान की रचनाओं को अच्छे के लिए आमंत्रित नहीं कर रहे हैं, बल्कि केवल सच्चाई और ईमानदारी की भावना के साथ ऐसा कर रहे हैं। शैतान का यह धोखा तब प्रकट होता है जब आध्यात्मिक यात्री के समकालीनों में से कोई और [भगवान को] निमंत्रण और शिक्षा का समान दायित्व निभा रहा होता है, जो वक्तृत्व क्षमताओं के कारण लोगों के बीच भी लोकप्रिय है। यदि ऐसे व्यक्ति के प्रति ईर्ष्या की भावना आध्यात्मिक यात्री के हृदय में उत्पन्न होती है, तो यह समझना चाहिए कि किसी का उपदेश शुद्ध आनंद के लिए होता है, न कि लोगों की भलाई और ईश्वरीय प्रतिफल और प्रतिफल के लिए। यदि किसी का उद्देश्य पवित्र होता, तो वह अपने समकालीन उपदेशक के प्रति ईर्ष्या नहीं करता। इसके बजाय, किसी को खुशी होती कि उसे एक अतिरिक्त व्यक्ति का समर्थन प्राप्त होता [लोगों को सत्य, धार्मिकता और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की ओर आमंत्रित करने के महान उपक्रम के लिए]। यह किसी अज्ञात मृत व्यक्ति के शव को खोजने जैसा है और दफनाने की जिम्मेदारी किसी के कंधे पर आ जाती है। यदि किसी को कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो इस धार्मिक मामले में सहयोग करता है, तो क्या यह खुशी या ईर्ष्या का स्थान होगा? इसी तरह, लापरवाह और बेखबर लोग [वास्तव में] मर चुके हैं, भले ही उनके शरीर चलते और चलते हुए प्रतीत होते हैं, लेकिन वे, वास्तव में, [जीवित] आत्मा से रहित हैं। विद्वान विद्वान और [शाश्वत] सत्यों के लिए आमंत्रित करने वाले मृत आत्माओं को जीवन प्रदान करते हैं। यदि सत्य को बुलाने वाले को किसी अन्य आमंत्रित व्यक्ति की सहायता और साहचर्य मिलता है, तो यह किसी के लिए सांत्वना का कारण है और दुःख का कारण नहीं है, लेकिन सांसारिक विद्वान और उपदेशक इसे एक आराम नहीं मानते हैं, बल्कि इसे एक-दूसरे के क्षेत्रों और प्रभुत्व की सीमाओं में हस्तक्षेप के रूप में मानते हैं। एक आध्यात्मिक यात्री को इससे बचना चाहिए क्योंकि यह शैतान का एक जाल है जिसके माध्यम से यह उन लोगों पर घात लगाता है जो दिव्य ज्ञान की घाटी में कदम रखते हैं। लोग इस जाल में फंस जाते हैं क्योंकि सांसारिकता का प्रेम मानव स्वभाव पर हावी होता है। भगवान, उच्च कहते हैं:

بَلْ تُؤْثِرُونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا

"… इसके बजाय, आप दुनिया के जीवन को पसंद करते हैं (यानी, अनन्त जीवन के विपरीत अल्पकालिक सांसारिक अस्तित्व)। (कुरान, अध्याय 87, श्लोक 16)

परमेश्वर ने यह भी कहा कि बुराई [और नकारात्मक प्रवृत्तियाँ और झुकाव] पहले से ही [मानव] स्वभावों पर हावी थीं क्योंकि इसका उल्लेख पिछले राष्ट्रों की दिव्य रूप से प्रकट की गई पुस्तकों और स्क्रॉल में भी पाया जाता है। भगवान कहते हैं:

إِنَّ هَٰذَا لَفِى ٱلصُّحُفِ ٱلْأُولَىٰ ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿١٩﴾

"यह पिछली दिव्य रूप से प्रकट की गई पुस्तकों में, इब्राहीम और मूसा के स्क्रॉल में भी मौजूद है। (कुरान, अध्याय 87, श्लोक 18-19)

यह आध्यात्मिक यात्री के आध्यात्मिक संघर्ष, प्रयास और प्रशिक्षण का एक संक्षिप्त रेखाचित्र है। बाद के अध्यायों में विस्तृत चरण प्रदान किए जाएंगे जिनके बारे में [नकारात्मक और हानिकारक] आंतरिक लक्षणों को समाप्त किया जाना चाहिए और कैसे [इसे प्राप्त किया जाए] और कौन से [उदात्त] आंतरिक लक्षणों को हृदय में सजाया जाना चाहिए।

सभी मानव [आंतरिक चरित्र] लक्षणों में सबसे प्रभावशाली और प्रबल पेट, निजी अंगों और जीभ की वासनाएं हैं। उनके बाद, यह क्रोध का गुण है जो उनका समर्थन करता है। इन वासनाओं के आदी और अभ्यस्त होने के बाद मनुष्य के हृदय में सांसारिकता का प्रेम बढ़ता है और धन और यश की इच्छा पैदा होती है। इस इच्छा के गर्भ के माध्यम से अहंकार, आत्म-धार्मिकता और आत्म-उन्नति के कीटाणु पैदा होते हैं, और मनुष्य उनमें इस तरह से फंस जाता है कि कोई उनसे मुक्त होने की कल्पना भी नहीं कर सकता है। व्यक्ति को धर्म के केवल उन पहलुओं को पसंद है जिनमें प्रभुत्व, प्रतिष्ठा और शक्ति के कुछ साधन हैं। मामले की गंभीरता और संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए, हम इन दो अध्यायों के अंत में विनाशकारी नकारात्मक आंतरिक गुणों पर चर्चा करेंगे जो किसी के दिल और आत्मा (मुहलिकत) का विनाश लाते हैं। यह चर्चा अगली आठ पुस्तकों में होगी [या "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" पुस्तक के चार खंडों में से तीसरे से जो इस कार्य के अगले आठ अध्यायों के अनुरूप हैं]। सबसे पहले, पेट और निजी अंगों की वासना; दूसरा, जीभ के खतरे; तीसरा, क्रोध, द्वेष और ईर्ष्या; चौथा, सांसारिकता की निंदा और उसके धोखे के बारे में विवरण; पांचवां, धन, भौतिक संपत्ति और कंजूसी का प्यार; छठा, आडंबर [आत्म और आत्म-केंद्रित लक्षणों के प्रदर्शन से संबंधित] और प्रसिद्धि का प्यार; सातवां, अहंकार और आत्म-अभिमान; और आठवां: आत्म-भ्रम की अवस्थाएं। इन आठ पुस्तकों के माध्यम से, हमारा उद्देश्य प्राप्त होगा जो हमारे सामने "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड से है [जो विनाशकारी नकारात्मक आंतरिक गुणों को स्पष्ट करने के बारे में है जो किसी के दिल और आत्मा का विनाश लाते हैं ताकि कोई भी उनके खिलाफ सुरक्षा उपायों को अपना सके]। पिछले दो अध्यायों में से पहले अध्याय (ग़ज़ाली उन्हें पुस्तकों के रूप में संदर्भित करता है) में, हमने आंतरिक लक्षणों और गुणों या हृदय के प्रदर्शन को स्पष्ट किया है, क्योंकि हृदय सभी विनाशकारी

आंतरिक गुणों (मुहलिकात) का स्रोत और निवास है, और आंतरिक गुणों को प्रदान करने वाले उद्धारक, शुभ, जीवन और सफलता का स्रोत है (*मुंजियात*)) [जो व्यक्ति को अनन्त सुख और अंतहीन विजय की ओर ले जाता है]। दूसरी पुस्तक (या अध्याय जो यह वर्तमान है) ने किसी के आंतरिक चरित्र लक्षणों और स्वभावों (इखलाक) को सभ्य और सुशोभित करने की पद्धति प्रदान की और हृदय [या आत्मा] की बीमारियों और बीमारियों के लिए पूरी तरह से ठीक होने के लिए इलाज निर्धारित किया गया था। यह चर्चा संक्षिप्त है, लेकिन आगामी अध्यायों में विवरण होगा।

وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ

"ईश्वर के अलावा कोई भी अच्छे कर्मों का प्रवर्तक नहीं है, मैं उस पर अपना पूरा भरोसा रखता हूं और उसकी ओर मैं सभी सहायता और जरूरतों के लिए निरंतर लौटता हूं।

अध्याय 3- निचले स्व से दो प्रबल आधार इच्छाओं की पकड़ को तोड़ना

ग़ज़ाली की तीसरी पुस्तक उनके *महान कृति* "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में भोजन में लिप्तता और शारीरिक सुखों में लिप्तता की दो प्रबल इच्छाओं को तोड़ने से संबंधित है। ये दो इच्छाएं अपने जुनूनी स्वभाव के कारण अत्यधिक शक्तिशाली हैं, स्वास्थ्य को खतरे में डालती हैं, और किसी के जीवन के वास्तविक उद्देश्य के प्रति लापरवाही और लापरवाही पैदा करती हैं, आध्यात्मिक प्रयासों और प्रयासों के लिए बहुत कम या कोई जगह नहीं छोड़ती हैं। शारीरिक सुखों और शारीरिक गतिविधियों में लिप्त होने के कारण आध्यात्मिक यात्रा पूरी तरह से बाधित हो जाती है, जिससे गैर-आत्म-केंद्रित सकारात्मक प्रयासों के लिए बहुत कम जगह बचती है। शारीरिक सुखों के लिए अनियंत्रित इच्छा, सकारात्मक परोपकारी प्रयासों के लिए बहुत कम जगह छोड़ती है जो दूसरों के लिए सहानुभूति पर आधारित हैं। इसके बजाय, आत्म-केंद्रित जुनून व्यक्ति को स्वार्थ और इसके सभी दुर्बल करने वाले प्रभावों की ओर ले जाता है जो देखने के लिए स्पष्ट हैं। दुनिया की विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं में, भूख को आध्यात्मिक उपक्रमों के लिए एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया है, जिससे इसके यात्रियों के लिए रास्ता आसान हो गया है। ग़ज़ाली हमारे अपने आध्यात्मिक प्रयासों को सुविधाजनक बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में भोजन में आंशिक भूख और संयम की प्रधानता पर फिर से जोर देती है जो बदले में दुर्भाग्यपूर्ण, वंचितों और कष्टों से घिरे लोगों के लिए सकारात्मक परोपकारी प्रयासों और सहानुभूति को बढ़ावा देती है। एक बार जब आत्मा की स्पष्टता और हृदय की संवेदनशीलता आधार इच्छाओं पर अंकुश लगाने के माध्यम से विकसित हो जाती है, तो व्यक्ति अपने अस्तित्व की हर तंत्रिका, फाइबर और परमाणु में दूसरों के दर्द और पीड़ा को महसूस करता है। दूसरों की बीमारी उसकी अपनी बीमारी बन जाती है, दूसरों का दुख उसका अपना दुख बन जाता है, दूसरों की समस्याएं उसकी अपनी समस्या बन जाती हैं, और दूसरों के दर्द और पीड़ा उसका अपना दर्द और पीड़ा बन जाती है। कोई भी अब स्वार्थी, आत्म-केंद्रित और कठोर दिल वाला नहीं रहता है क्योंकि वह भीतर से निकलने वाली एक निरंतर शक्ति के माध्यम से महान प्रयासों के लिए प्रेरित होता है। यह बदले में आध्यात्मिक मार्ग में किसी के उत्थान को प्रेरित करता है। ग़ज़ाली की यह पुस्तक

जिसका शीर्षक है "दो [प्रबल आधार] इच्छाओं की पकड़ को तोड़ना [निचले स्व से]" यहां संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है [9]:

जान लें कि आदम (यानी, पूरी मानवता) की संतानों के लिए, सबसे घातक और विनाशकारी वासना पेट की वासना है। यह इस वजह से है, आदम और हव्वा [पूरी मानव जाति के क्रमशः पिता और माता] (उन दोनों पर शांति हो) को स्वर्ग से निष्कासित कर दिया गया था [आराम के जीवन से] और इस दुनिया में भेजा गया था [संघर्षों, प्रयासों, कड़ी मेहनत, चुनौतियों, अप्रिय परिस्थितियों और दर्द जैसी अवांछनीय चीजों से भरा एक नया जीवन शुरू करने के लिए, पीड़ा, दुख, भूख, बीमारियां और त्रासदियाँ जो विरोधाभासी रूप से हमें ईश्वरीय उपस्थिति की छाया में हमारे वास्तविक स्वर्गीय मूल में वापस जाने में मदद करने के लिए हैं]। उन्हें एक विशेष पेड़ के [फल] खाने से मना किया गया था, लेकिन इच्छा ने उन पर हावी हो गए, और उन्होंने [निषिद्ध] पेड़ से खाना समाप्त कर दिया। इस अवज्ञा के परिणामस्वरूप [ईश्वरीय आदेश के लिए], तब तक छिपे हुए सभी दोष (शर्म के बातें) प्रकट हो गए।

पेट - सभी वासनाओं, इच्छाओं और प्रबल आग्रहों का फव्वारा: वास्तविकता यह है कि पेट सभी वासनाओं का स्रोत है और सभी नुकसानों की उत्पत्ति और स्रोत है। पेट की वासना शारीरिक सुखों की वासना को उत्तेजित करती है। जब किसी का पेट भर जाता है, तो वह अत्यधिक दैहिक सुखों में लिप्त होने के बारे में सोचता है। भोजन और मैथुन की अत्यधिक इच्छाएं, प्रसिद्धि और भौतिक संपत्ति (धन) की इच्छा पैदा करती हैं। प्रसिद्धि और धन दो ऐसी चीजें हैं जो विवाह और बढ़िया भोजन की संख्या में वृद्धि के स्रोत हैं। धन की प्रचुरता और प्रसिद्धि में अतिशय, अहंकार पैदा करता है, [विभिन्न भौतिक चीजों के लिए] प्रतिस्पर्धा में दूसरों से आगे निकलने की इच्छा पैदा करता है, और उन लोगों के खिलाफ ईर्ष्या की भावना पैदा करता है जो एक से श्रेष्ठ हैं [भौतिक संपत्ति, प्रसिद्धि और शक्ति में] और उनके गर्भ से ही दिखावटी, शेखी, अभिमान और उनकी पसंद की बुराइयों को जन्म मिलता है। इसके परिणामस्वरूप कटुता, शत्रुता और विद्वेष की भावना को उड़ा दिया जाता है। फिर व्यक्ति विद्रोह, अवज्ञा [ईश्वरीय मार्गदर्शन और आदेशों के प्रति], और विद्रोह पर झुक जाता है, और बुराइयों और व्यभिचार में डूब जाता है। पेट खाली न रखने के ये सभी परिणाम और फल हैं क्योंकि यह सब पेट भर खाना खाने का अहंकार और नशा है। यदि किसी ने अपने आप को (*नफ्स*) भूख से अपमानित रखा होता और शैतान के मार्ग (पूरे शरीर में रक्त परिसंचरण के लिए नसें) पर सख्त पहरा और निगरानी रखी होती, तो वह कभी भी विद्रोह का सहारा नहीं लेता [शालीनता, सभ्यता, सामान्य भलाई और ईश्वरीय आदेशों के मानदंडों के खिलाफ]। इसके बजाय, कोई व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता और अहंकार, आडंबर (आत्म-केंद्रित, स्वयं का अहंकारी प्रदर्शन), अवज्ञा [ईश्वरीय आदेशों के प्रति] और विद्रोह के मार्ग पर नहीं चलता होता। कोई सांसारिक सुखों में नहीं डूबता और न ही शाश्वत (परलोक) के बजाय लौकिक (संसार) को प्राथमिकता देने की गलती करता और न ही सांसारिक संपत्ति और धन पर झपटता जैसे शिकारी अपने शिकार पर झपटते हैं। फिर भी, पेट की लालसा के नुकसान इतने खतरनाक और घातक हैं, भगवान के सेवकों (सभी मनुष्यों) को इसके खतरों और इससे बचाव के तरीकों के बारे में सूचित करना अनिवार्य है। यौन वासना के साथ भी यही स्थिति है क्योंकि यह पेट की वासना के अधीन है। हम इस चर्चा को परमेश्वर द्वारा दी गई सहायता और क्षमता के साथ [इस अध्याय के] कुछ खंडों में पूरा करेंगे। पहले खंड में, भूख की उत्कृष्टता और

लोलुपता की निंदा के बारे में बताया जाएगा फिर [भूख के] लाभों का उल्लेख किया जाएगा। इसके बाद कम खाने और भोजन में देरी करने के माध्यम से पेट की वासना को दूर करने के आध्यात्मिक प्रयास की विधि स्पष्ट हो जाएगी। भूख के लाभ के संबंध में, लोगों की अवस्थाओं के मतभेदों का उल्लेख किया जाएगा। उसके बाद गुप्तांगों की वासना पर चर्चा की जाएगी। बाद में, एक आध्यात्मिक यात्री के लिए शादी करना आवश्यक है या नहीं, यह समझाया जाएगा। उसके बाद उन लोगों की श्रेष्ठता का उल्लेख किया जाएगा जो पेट, गुप्तांग और आंखों की वासनाओं के विरोधी हैं।

भूख की उत्कृष्टता और लोलुपता की निंदा

भूख की उत्कृष्टता पर परंपराएं [पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और ईश्वर की आशीष) इस प्रकार हैं:

جاهدوا انفسکم بالجوع والعطش فان الاجر فی ذالک کاجر للمجاهد فی
سبیل الله فانه لیس من عمل احب الی الله من جوع وعطش

"आध्यात्मिक संघर्ष करो और भूख और प्यास के साथ अपने आप (नफ्स) के साथ प्रयास करो क्योंकि इसमें वही दिव्य प्रतिफल है जो [वैध] आत्मरक्षा में संलग्न होने के लिए है [जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति और शांति को बनाए रखने के लिए] भगवान के मार्ग में। ऐसा इसलिए है क्योंकि भूख और प्यास से अधिक प्रिय परमेश्वर का कोई कार्य नहीं है।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से यह वर्णन करते हैं:

لا یدخل ملکوت السموات من ملا بطنه

"स्वर्ग के देवदूत ऐसे व्यक्ति के पास नहीं आते हैं जो पेट भरता है [किसी के जीवन के उद्देश्य से बेखबर होने की स्थिति में लिप्तता का संकेत देता है और इसे प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है]।

البسوا وکلوا واشربوا فی انصاف البطون فانه جزء من النبوة

"[कपड़े पहनें जो ढकने की जरूरत है], आधा खाली पेट खाएं और पीएं क्योंकि यह भविष्यवाणी का एक हिस्सा है।

الفکر نصف العبادة وقلة الطعام هی العبادة

"चिंतन आधी पूजा है और थोड़ी मात्रा में भोजन करना पूर्ण पूजा है।

افضلكم عند الله منزلة يوم القيامة اطولكم جوعا وتفكرا فى الله سبحانه
وابغضكم عند الله عز وجل يوم القيامة كل نوم اكول شروب

"न्याय के दिन, सर्वोच्च रैंकिंग वाला व्यक्ति वह होगा जो बहुत भूखा रहता था और परमेश्वर के प्रचुर चिंतन में संलग्न रहता था। न्याय के दिन, वह व्यक्ति परमेश्वर की नज़रों में नीचा होगा जो बहुत सोता था, खाता था और पीता था।

لا تميتوا القلب بكثرة الطعام والشراب فان القلب كالزرع يموت اذا اكثر
عليه الماء

"खाने-पीने की बहुतायत से अपने दिलों को मृत न करो। यह एक खेत की तरह होने के कारण है - जब इसे अत्यधिक पानी से सिंचित किया जाता है, तो यह नष्ट हो जाता है।

ماملا ابن آدم وعاء شرا من بطنه، حسب ابن آدم لقيمات يقمن صلبه، وان
كان لابد فاعلا فثلث لطعامه، وثلث لشرابه وثلث لنفسه

"आदम के पुत्र (यानी मनुष्य) ने पेट से भी बुरा कोई बर्तन नहीं भरा है। आदम के बेटे के लिए कुछ निवाले पर्याप्त हैं जो पीठ को सीधा रख सकते हैं। यदि भरना आवश्यक है, तो पेट को तीन भागों में विभाजित किया जाना चाहिए - भोजन के लिए एक भाग (पेट का एक तिहाई), पानी के लिए एक भाग और सांस लेने के लिए एक भाग (यानी, पेट के एक तिहाई हिस्से को आसान सांस लेने के लिए खाली छोड़ दिया जाना चाहिए और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए सकारात्मक चिकित्सा प्रभाव डालने के लिए अत्यधिक खाने-पीने से बचने के लिए)। (इस परंपरा को *हदीस* संग्रह *तिर्मिज़ी में* भविष्यवक्ता के साथी मिक़दम के अधिकार पर वर्णित किया गया है [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

एक लंबी परंपरा में [पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और ईश्वर का आशीर्वाद उन पर हो) उसामा बिन ज़ैद और अबू हुरैरा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) द्वारा वर्णित है:

ان اقرب الناس من الله عزوجل يوم القيامة من طال جوعه وعطشه وحزنه فى
الدنيا الاحفياء الاتقياء الذين ان شهدوا لم يعرفوا وان غابوا لم يفتقدوا تعرفهم
بقاع الارض وتحف بهم ملائكة السماء نعم الناس بالدنيا ونعموا بطاعة الله
عزوجل افترش الناس الفرش الوثيرة، وافترشوا الجباه والركب، ضيع
الناس فعل النبيين واخلاقهم وحفظوها؟ هم تبكى الارض اذا فقدتهم
ويسخط الجبار على كل بلدة ليس فيها منهم احد لم يتكالبوا على الدنيا
تكالب الكلاب على الجيف، أكلوا العلق ولبسوا الخرق شعثا غبرا يراهم
الناس فيظنون ان بهم داء وما بهم داء، ويقال قد خولطوا فذهبت عقولهم وما
ذهبت عقولهم، ولكن نظر القوم بقلوبهم الى امر الله الذى اذهب عنهم الدنيا
فهم عند اهل الدنيا يمشون بلا عقول عقلوا حين ذهبت عقول الناس، لهم
الشرف فى الاخرة يا اسامة اذا رايتهم فى بلدة فاعلم انهم امان لاهل تلك البلدة،

ولا يعذب الله قوما هم فيهم الارض بهم فرحة والجبار عنهم راض اتخذهم
لنفسك اخوانا عسى ان تنجوا بهم، وان استطعت ان ياتيك الموت وبطنك
جائع وكبدك ظمان فافعل، فانك تدرى بذلك شرف المنازل وتحل مع
النبيين وتفرح بقدوم روحك الملائكة ويصلى عليك الجبار

"न्याय के दिन, वे लोग परमेश्वर के करीब होंगे जो [अपने रिश्ते और परमेश्वर के साथ खड़े होने से संबंधित मामलों में] अधिक भूखे, प्यासे और पश्चाताप में रहेंगे। ये लोग इतने छिपे हुए *मुत्तकून* हैं (जिनके पास पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय है) जो उनमें मजबूती से बसे हुए हैं, कि अगर वे मौजूद हैं, तो कोई भी उन्हें नोटिस नहीं करेगा और अगर वे दूर हैं, तो कोई भी उनकी तलाश नहीं करेगा, भले ही पृथ्वी का हर कण उनसे अच्छी तरह परिचित है और स्वर्गदूत उन्हें घेर लेते हैं। ये लोग दुनिया के सबसे अच्छे लोग हैं। [अन्य] लोग नरम, आरामदायक बिस्तरों पर लेट जाते हैं [रात भर शांति से सोने के लिए] जबकि वे अपने माथे को साष्टांग दंडवत करते हैं और अपने घुटनों के बल घुटने टेकते हैं [परमेश्वर की पूजा और भक्ति के कार्यों में]। [अन्य] लोगों ने भविष्यद्वक्ताओं के महान तरीके और [उच्च] चरित्र को बर्बाद कर दिया है, जबकि उन्होंने उनकी रक्षा की है [उन्हें अपनी आत्मा के भीतर गहराई से अपनाकर]। जब वे [अपने सांसारिक अस्तित्व से] चले जाते हैं तो पृथ्वी उनके लिए रोती है और ईश्वरीय क्रोध (अप्रसन्नता) उस शहर पर उतरता है जिसमें उनमें से कोई भी नहीं है [क्योंकि वे दिव्य आशीर्वाद के साधन थे जहां वे रहते थे]। वे सांसारिकता के लिए नहीं गिरते जैसे कुत्ते शव के लिए गिर जाते हैं। वे न्यूनतम आवश्यकता का भोजन करते हैं, पुराने और फटे कपड़े पहनते हैं, और अस्त-व्यस्त रहते हैं। उन्हें देखकर लोग यह राय बनाते हैं कि शायद वे किसी बीमारी से पीड़ित हैं, हालांकि वास्तव में, उन्हें कोई बीमारी नहीं है। कुछ लोग उन्हें

मूर्ख कहते हैं, भले ही उनके पास [तीक्ष्ण और तेज] बुद्धि हो। लेकिन उनके पास ऐसी बुद्धि नहीं है जिसके लिए सांसारिक लोगों की नजर है और जिसे भगवान ने उनसे दूर रखा है। सांसारिक लोग सोचते हैं कि शायद वे बुद्धि के बिना घूम रहे हैं [और दुनिया में आराम से रहने के लिए आवश्यक बुद्धिमत्ता], हालांकि वे अपनी बुद्धि को तब बनाए रखते हैं जब यह हर किसी से दूर हो जाती है [अत्यधिक वासना या भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और अन्य संकटों के कारण]। हे उसामा! परलोक में ऐसे लोगों के लिए मान-सम्मान और श्रेष्ठता है। जब आप उन्हें किसी भी शहर में देखते हैं, तो इसे उस शहर के लिए शांति का आदेश मानें। परमेश्वर किसी राष्ट्र को क्लेश में नहीं डालता है जिसमें ऐसे लोग मौजूद हों। पृथ्वी उनसे प्रसन्न है और परमेश्वर उनसे प्रसन्न है। उन्हें अपना भाई बनाओ, शायद तुम भी उनके माध्यम से उद्धार प्राप्त कर सकते हो। अगर आप ऐसा कर सकते हैं कि जब आपकी मृत्यु का समय आए, आपका पेट भूखा हो, और आपकी किडनी प्यासी हो, तो ऐसा करें। आप परलोक के चरणों में विशिष्टता प्राप्त करेंगे, आप भविष्यद्वक्ताओं के साथ रहेंगे, स्वर्गदूत आपकी आत्मा के आगमन से प्रसन्न होंगे [अपने स्वर्गीय मूल में वापस] और परमेश्वर आप पर अपनी दया बरसाएगा। (इस परंपरा को किताब *उस-ज़ुहद में* खतीब द्वारा और *अल-मौदुअत* में इब्न अल-जावज़ी द्वारा भविष्यद्वाणी के साथियों उसामा बिन ज़ैद और अबू हुरैरा [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो] *हाफ़िज़ इराकी [एक महान* हदीस *(पैगंबर मुहम्मद की भविष्यद्वाणी परंपराएं) विद्वान* के हदीस प्रमाणीकरण के अनुसार वर्णित किया गया है, जिन्होंने सभी *हदीसों को* प्रमाणित किया ग़ज़ाली की पुस्तक "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" में उल्लेख किया गया है)

यीशु मसीह (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपने शिष्यों और सहायकों (*हवारीयून)* से कहा: "अपने पेट को भूखा और शरीर को नग्न रखें [उन हिस्सों को अनिवार्य रूप से ढकने के अलावा जिन्हें विनम्रता से और शरिया (ईश्वरीय कानून) के अनुपालन में कवर किया जाना चाहिए] ताकि आपके हृदय में ईश्वर को देखने की शक्ति विकसित हो [भौतिक आंखों के विपरीत हृदय की आंख से]"। इसी तरह की परंपरा पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से आई है, जिसे तावूस ने सुनाया है। टोरा (एक और दिव्य पुस्तक जो पैगंबर मूसा को प्रकट की गई थी [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो]) में एक परंपरा है कि भगवान एक मोटे विद्वान को पसंद नहीं करते हैं क्योंकि मोटापा [भगवान से] लापरवाही और भोजन में अत्यधिक भोग का संकेत है। यह विशेष रूप से [धार्मिक] विद्वानों के लिए एक बुरी आदत है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक और परंपरा में ये शब्द हैं:

ان الشيطان يجرى من ابن آدم مجرى الدم فضيقوا مجاريه بالجوع والعطش

"शैतान आदम (मनुष्यों) की संतानों की रगों में [रक्त परिसंचरण के माध्यम से] दौड़ता है। भूख और प्यास के कारण उसके मार्ग को संकरा बना दो। (इस परंपरा का वर्णन हदीस *संग्रह* इब्ने अबी अद-दुनिया *में किया गया है*)

आयशा (रल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी) ने कहा: "पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कभी भी पेट भर खाना नहीं खाया। कभी-कभी मैं उस पर भूख के निशान देखता था और रोता था और उसके पेट पर हाथ रखकर कहता था: 'मेरा जीवन आपको व्यतीत हो! आपको कम से कम उतनी मात्रा में खाना चाहिए जो आपको ताकत दे और आपकी भूख को

खत्म करे। वह जवाब देता था: 'हे आयशा! मेरे अत्यधिक दृढ़ निश्चयी भाई भविष्यद्वक्ताओं [आदम, नूह, अब्राहम, इश्माएल, इसहाक, याकूब, यूसुफ, दाऊद, सुलैमान, मूसा, यूहन्ना और यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उन सभी पर हो)] ने इससे कहीं अधिक परीक्षणों, क्लेशों और कष्टों पर धैर्य रखा था। जब वे दुनिया को छोड़कर अपने प्रभु की उपस्थिति में आए, तो उन्हें जबरदस्त [दिव्य रूप से संपन्न] प्रतिफल और असीमित सम्मान और उच्च दर्जा मिला। मुझे शर्म आती है कि कल मेरे साथ ऐसा हो सकता है कि मैं कुछ दिनों के जीवन के आराम [आनंद लेने] के कारण [भगवान के सामने] उनसे कम डिग्री प्राप्त कर लूं। मेरे लिए परलोक में कम हिस्सा पाने की तुलना में कुछ दिनों के लिए धैर्यपूर्वक कठिनाइयों को सहना बेहतर है और मुझे अपने दोस्तों और भाइयों (अतीत के महान भविष्यवक्ताओं) के साथ रहने के अलावा कुछ भी पसंद नहीं है। आयशा (भगवान उससे प्रसन्न हों) ने कहा: "इस बातचीत के एक सप्ताह बाद भी वह अपने भगवान से मिले [क्योंकि वह इस लौकिक अस्तित्व से दिव्य उपस्थिति में अपने शाश्वत निवास में चले गए]"।

भूख के लाभ और लोलुपता के नुकसान

भूख की उत्कृष्टता के बारे में जो प्रश्न उठता है वह यह है: "पेट में दर्द करने वाले कार्य की इतनी सारी उत्कृष्टता क्यों हैं? यदि अपने आप को दर्द और पीड़ा के अधीन करना [भूख की तरह] एक अच्छी बात होती, तो ऐसा करने के अन्य रूप भी हो सकते थे जैसे कि खुद को छड़ी से मारना, नापसंद चीजें खाना, आदि। हालांकि, हम देखते हैं कि उन चीजों की अनुमति नहीं है, फिर पेट को वंचित करने को एक अच्छा काम क्यों घोषित किया गया है और सभी अच्छे कामों का आधार बनाया गया है? इस सवाल का जवाब यह है कि भूख एक दवा की तरह है। यदि कोई दवा के माध्यम से स्वस्थ हो जाता है और अनुमान लगाता है कि उसने दवा की कड़वाहट और अप्रियता के कारण स्वास्थ्य प्राप्त कर लिया है और यह निष्कर्ष निकालता है कि हर कड़वी और अप्रिय चीज फायदेमंद है और इसलिए हर कड़वी और अप्रिय चीज खाने लगता है, तो किसी को बताया जाएगा कि दवा की कड़वाहट स्वास्थ्य प्राप्त करने में प्रभावी नहीं है, बल्कि इसके बजाय इसमें एक निश्चित गुण है जो केवल चिकित्सकों को पता है। यही हाल भूख का भी है। [धार्मिक] विद्वान इसके लाभों से परिचित हैं। जो ईश्वरीय कानून में भूख की उत्कृष्टता पर विश्वास करते हुए भूखा रहता है, वह भूख के लाभों के बारे में जानकार होने या न होने की परवाह किए बिना लाभ प्राप्त करेगा। हालांकि, उन व्यक्तियों के लिए जो विश्वास के स्तर से ज्ञान के स्तर तक प्रगति करना चाहते हैं [और इसके साथ आने वाली निश्चितता], भूख के लाभों को समझाया जाएगा। भूख के दस फायदे हैं जिन्हें यहां अलग से समझाया गया है:

पहला लाभ - हृदय की पवित्रता, स्पष्टता और लंगड़ा (*सफा अल-क़ल्ब*): हृदय की पवित्रता, स्पष्टता और लंकीपन में आंतरिक दूरदर्शिता की पूर्णता और मामलों की वास्तविकता (*बसीराह)* को देखने की क्षमता शामिल है। लोलुपता मन की सुस्ती पैदा करती है, हृदय की रोशनी कम हो जाती है, मन काला हो जाता है, नशीले पदार्थों की तरह वाष्प, मस्तिष्क के माध्यम से फैलता है और इसे इस तरह से घेर लेता है कि चिंतन के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता है, हृदय कुछ भी समझने में सक्षम नहीं होता है और सोचने

और समझने के सभी संकाय कम हो जाते हैं। एक बच्चा जो अधिक खाता है, स्मृति शक्ति में कमी का अनुभव करता है, मन धुंधला हो जाता है और बुद्धि को नीरसता से बदल दिया जाता है। अबू सुलेमान अल-दरानी (भगवान उस पर दया करें) [एक प्रसिद्ध ज्ञानवादी और संत] ने कहा: "भूख को अपनाएं क्योंकि यह निचले स्व (नफ्स) को अपमानित करता है [जो हर निम्न, नकारात्मक, हानिकारक और नीच प्रवृत्ति, विशेषता और आंतरिक विशेषता के लिए इच्छुक है], हृदय में मधुरता पैदा करता है [कठोरता, निर्दयता, अहंकार और स्वार्थ के विपरीत] और स्वर्गीय ज्ञान का उत्तराधिकारी बनने में सक्षम हो जाता है (ज्ञान जो दिव्य ज्ञान की स्थिति के साथ आता है या *मारिफा*)"। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

احيوا قلوبكم بقلة الضحك وقلة الشبع وطهروها بالجوع تصفو وترق

"अपने दिलों को कम हंसने और कम खाने से जीवित रखें और उन्हें भूख से शुद्ध करें। वे स्वच्छ और नरम रहेंगे [जो बदले में आध्यात्मिक पथ पर चढ़ने में मदद करेंगे]।

शिबली (भगवान उन पर दया करें) (एक प्रसिद्ध संत और ज्ञानवादी) ने कहा: "जब भी मैं भगवान के लिए किसी दिए गए दिन [विशुद्ध रूप से] भूखा रहता था, तो मेरे दिल में ज्ञान और शिक्षा के नए रास्ते खुल जाते थे जो पहले मेरे लिए अज्ञात थे"। यह स्पष्ट हो दें कि पूजा का वास्तविक उद्देश्य चिंतन की प्राप्ति है जो व्यक्ति को *दिव्य ज्ञान और ज्ञानवाद (मारिफा) के आध्यात्मिक* अनावरण (*कश्फ) की ओर ले जाता है* और आध्यात्मिक वास्तविकताओं (*हका-आईक*) और लोलुपता इस मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है [आध्यात्मिक पूर्णता और प्राप्ति के लिए]। भूख दिव्य ज्ञान और ज्ञान (*मारिफा*) के द्वार खोलती है और बदले में स्वर्गीय स्वर्ग का द्वार है [ईश्वर की उपस्थिति में]। इस संबंध में, भूख स्वर्ग के दरवाजे पर दस्तक देने की भूमिका निभाती है। लुकमान (ईश्वर उस पर दया करे) (पैगंबर दाऊद के समय में इज़राइल के बच्चों के एक प्रसिद्ध संत (उस पर ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो)) ने अपने बेटे से कहा: "हे पुत्र! जब पेट भर जाता है, तो चिंतन की शक्ति नींद में चली जाती है, ज्ञान गूंगा हो जाता है और अंगों में [दिव्य] पूजा के लिए कोई क्षमता और ऊर्जा नहीं बचती है। बयाज़िद अल-बौस्तामी (भगवान उस पर दया करें) (एक प्रसिद्ध संत और ज्ञानवादी) ने कहा: "जब एक सेवक [भगवान का] भूखा होता है, तो ज्ञान दिल से बारिश की तरह निकलता है"। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

نور الحكمة الجوع والتباعد من الله عز وجل الشبع والقربة الى الله عز وجل
حب المساكين والدنو منهم لا تشبعوا فتطفئوا نور الحكمة من قلوبكم ومن
بات في خفة من الطعام بات الحور حوله حتى يصبح

"बुद्धि का प्रकाश भूख है और परमेश्वर से दूर होने का कारण लोलुपता है। ईश्वर की निकटता और निकटता *(कुर्ब)* गरीबों से प्यार करने और उनके करीब रहने में है। भरपेट मत खाओ, तुम अपने दिल में ज्ञान की मोमबत्ती बुझा दोगे। एक व्यक्ति जिसका पेट हल्का होता है, वह सुबह तक स्वर्गीय साथियों [भौतिक आंखों से अनदेखी] से घिरा रहता है। (इस परंपरा को *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अद-दयालामी में* भविष्यवक्ता साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर वर्णित किया गया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

दूसरा लाभ – हृदय की कोमलता और नम्रता: भूख से हृदय नरम हो जाता है और उसमें दिव्य स्मरण से आनंद पाने की क्षमता पैदा होती है। कई बार, हृदय की उपस्थिति के साथ दिव्य स्मरण होता है लेकिन इसमें कोई आनंद नहीं होता है और हृदय इससे विचलित नहीं होता है, जैसे कि हृदय और दिव्य स्मरण के बीच एक पर्दा है जिसे "*कसावा*" या "हृदय की कठोरता और असंवेदनशीलता" कहा जा सकता है। कभी-कभी हृदय में इतनी कोमलता और नम्रता होती है कि दिव्य स्मरण से जबरदस्त आनंद मिलता है। इस सुख की प्राप्ति का सबसे स्पष्ट कारण पेट का खालीपन [भूख की स्थिति में] है। जुनैद (भगवान उन पर दया करें - एक महान संत और ज्ञानवादी) ने कहा: "कुछ लोग भोजन में लिप्त होने के इच्छुक हैं और साथ ही साथ परमात्मा के साथ अंतरंग बातचीत की मिठास चाहते हैं"। अबू सुलेमान अल-दरानी (भगवान उन पर दया करें - एक महान संत और ज्ञानवादी) कहा करते थे: "जब कोई भूखा और प्यासा होता है, तो हृदय में शिथिलता और कोमलता होती है; जब पेट भरा होता है, तो व्यक्ति के हृदय में अंधापन और मैलापन होता है। इस विवरण से यह स्पष्ट है कि चिंतन में आसानी और ईश्वर या ज्ञानवाद (मारिफा) के साथ ज्ञान और अंतरंगता होना एक बात है और इसमें आनंद प्राप्त करना एक अलग बात है।

तीसरा लाभ - हृदय की नम्रता और मधुरता: भूख का तीसरा लाभ यह है कि यह विनम्रता और मधुरता को जन्म देता है, और अहंकार और उत्साह [सांसारिक सुखों के बारे में] समाप्त हो जाता है - जो दोनों परमेश्वर के प्रति विद्रोह और लापरवाही के स्रोत हैं। लोअर सेल्फ (*Nafs*) भूख से ज्यादा किसी भी चीज़ से नरम या अपमानित नहीं होता है। जब कोई भूखा होता है, तो वह अपने भगवान का नाम लेता है [दिव्य स्मरण की स्थिति में, पूरी तरह से आवश्यकता में भगवान के पास लौटता है], उसकी आज्ञा का पालन करता है और विनम्र और नम्र रहता है [भगवान के सामने जो बदले में किसी को आसपास के सभी लोगों के साथ सही काम करने के लिए मजबूर करता है]। भूख के समय व्यक्ति की ताकत कमजोर हो जाती है और रोटी का एक टुकड़ा और एक घूंट पानी न होने के कारण जीवन संकुचित हो जाता है। जब तक कोई इंसान अपने अपमान और कमजोरी को नहीं देखता, तब तक कोई अपने प्रभु की महानता, महिमा और प्रबल पहुंच को स्वीकार नहीं करता है [किसी के गलत कार्यों के लिए किसी को जवाबदेह बनाने के लिए]। मनुष्य की शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता (सादाह) *अपमान और अक्षमता की आंखों से* अपने निचले स्व (नफ्स) को देखने में है; और ईश्वरीय महिमा और सर्वशक्तिमान शक्ति की दृष्टि से परमेश्वर को देखना, हमेशा भूखे और परमेश्वर के जरूरतमंद रहना, इस आवश्यकता और व्याकुलता में आनंद पाना।
इसीलिए, जब दुनिया के खजाने को पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के सामने रखा गया (दिखाया गया) [दिव्य सर्वशक्तिमानता द्वारा], उन्होंने कहा:

لابل اجوع يوما واشبع يوما فاذا جعت صبرت و تضرعت واذا شبعت شكرت

"नहीं, (मैं उन्हें नहीं चाहता)! इसके बजाय, मैं एक दिन [उपवास की स्थिति में] भूखा रहूंगा और दूसरे दिन खाना खाऊंगा। जब मैं भूखा रहूंगा, तो मैं धैर्य रखूंगा और आपके सामने रोऊंगा (हे भगवान!) [आपकी पूरी आवश्यकता की स्थिति में, महामहिम और शक्ति के अधीन नतमस्तक होकर] और [जिस दिन] मैं भोजन करूंगा, तो मैं आपके प्रति अपना गहरा आभार व्यक्त करूंगा! (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिडी*)

पेट और गुप्तांग दोनों नरक के द्वार हैं और इसकी ओर जाने वाला मार्ग लोलुपता से होकर गुजरता है। [परमेश्वर के सामने] विनम्रता और नम्रता स्वर्ग के द्वार हैं और इसकी ओर जाने वाला मार्ग भूख से होकर गुजरता है। जो नरक का एक दरवाजा बंद कर देता है, वह निश्चित रूप से स्वर्ग के लिए एक दरवाजा खोलता है क्योंकि स्वर्ग और नरक पूर्व और पश्चिम की तरह एक दूसरे के सीधे विपरीत हैं [दिशाएं]। खुद को एक से दूर करना, एक को दूसरे के करीब लाता है।

चौथा लाभ – ईश्वरीय प्रतिशोध का स्मरण और कठिनाइयों और कष्टों का सामना करने वाले लोगों की स्थिति से सबक लेना: चौथा लाभ यह है कि व्यक्ति ईश्वरीय दंड को नहीं भूलता है [अपने स्वयं के गलत कामों के लिए] और उन लोगों को याद करता है जो कुछ कष्टों से पीड़ित हैं। ऐसा होता है कि तृप्त व्यक्ति भूख के बारे में भूल जाता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो किसी को कष्ट में देखकर परलोक के कष्टों को याद करता है। प्यासा होने के कारण, किसी को कल्पना करनी चाहिए कि लोग न्याय के दिन न्याय के क्षेत्र में प्यास से पीड़ित होंगे। भूखे होने के कारण, किसी को नरक के निवासियों की भूख की कल्पना करनी चाहिए; जब वे भूखे और प्यासे होंगे, तो वे कांटेदार पेड़ खाएंगे और मवाद और खून पीएंगे। परलोक की सजा और उसके दर्द और पीड़ा को कभी भी एक सेवक (यानी, मनुष्य) की आंखों से गायब नहीं होना चाहिए क्योंकि यह ईश्वर के भय को भड़काता है [जो कि सभी प्रकार की बुराइयों और गलत कामों से एक निवारक है] और एक [परिणामस्वरूप] सावधानी से चलता है, अपने आप को पापों से बचाता है। एक व्यक्ति जो अपमान या वित्तीय कठिनाइयों या किसी भी प्रकार की पीड़ा में नहीं फंसा हुआ है या किसी भी बीमारी से पीड़ित नहीं है, वह परलोक की सजा के प्रति लापरवाह और उपेक्षित हो जाता है। न तो किसी के मन के किसी भी भाग में यह रहता है कि कल न्याय के दिन [उसके सभी कर्मों का] जवाबदेही होगी, और न ही परमेश्वर का भय उसके हृदय पर हावी होगा। इसलिए, एक सेवक के लिए [परमेश्वर के] लिए किसी चिंता या परीक्षा से घिरा रहना बेहतर है। यदि ऐसा नहीं है, तो कम से कम कुछ चिंता और परीक्षण किसी के अवलोकन में रहना चाहिए। सभी परीक्षण और चिंता में सबसे बड़ी चिंता जो दर्द का कारण बनती है वह है भूख की चिंता। कोई सब कुछ सहन कर सकता है लेकिन भूख नहीं। परलोक की सजा के स्मरण के अलावा भूख के असंख्य लाभ हैं। भविष्यद्वक्ताओं और संतों (ईश्वर के ज्ञानवादी और अंतरंग) द्वारा सामना किए जाने वाले परीक्षणों और क्लेशों का रहस्य यह है कि इन क्लेशों के माध्यम से, इसके बाद हमेशा उनके सामने रहता है और परलोक की निरंतर अबाधित याद और कल्पना करने से उनके आध्यात्मिक रैंकों में प्रगति होती है [जिससे ईश्वर के लिए आध्यात्मिक स्वर्गारोहण होता है]। किसी ने पैगंबर यूसुफ (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से पूछा: "जब मिस्र के खजाने की चाबियां आपके हाथ में हैं तो आप भूखे क्यों रहते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: "मुझे डर है कि पेट भर खाने से, मैं भूखे [गरीब और निराश्रित] की उपेक्षा कर सकता हूं"। भूखे और गरीबों को याद करना [और इसके परिणामस्वरूप उनकी मदद करने के लिए मजबूर होना] भी भूख के असंख्य लाभों में से एक है क्योंकि यह लोगों के प्रति दया और दया की भावनाओं और उन्हें खिलाने की इच्छा को बढ़ावा देता है। तृप्त व्यक्ति भूखे के दर्द को कैसे महसूस करेगा?

पांचवां लाभ - वासनाओं का उन्मूलन और निचले स्व की अधीनता जो किसी को बुराई के लिए उकसाती है (*नफ्स अल-अम्मारा*): यह सबसे महत्वपूर्ण लाभ है। सभी पापों [और गलत कामों] का आधार वासना और मानवीय क्षमताएं (शारीरिक अंग और आंतरिक संकाय) हैं जो भोजन द्वारा सहायता प्राप्त करते हैं। यदि भोजन का सेवन कम हो जाता है, वासना और लालच कमजोर हो जाते हैं, तो

शारीरिक शक्ति भी कमजोर हो जाती है। सौभाग्य की पूर्णता (सादाह या शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता) यह है कि व्यक्ति निचले स्व (*नफ्स*) पर हावी होता है और दुर्भाग्य की पूर्णता (ऊंचाई) *(शकावा* या शाश्वत दुख, अभिशाप और अंतहीन असफलता) यह है कि निचला आत्म एक पर हावी होता है। जिस तरह एक जंगली विद्रोही घोड़े को पानी और चारे से वंचित करके वश में किया जाता है, उसी तरह विद्रोही और अड़ियल निचले स्व को भूख के अधीन करके वश में कर लिया जाता है। यदि घोड़ा विद्रोही है और बहुत खाता और पीता है, तो उसका विद्रोह कम नहीं होता है, बल्कि बढ़ता है। निचले स्व (*नफ्स*) की स्थिति भी यही है क्योंकि अधिक [और शानदार] भोजन, विशेष रूप से जिन्हें यह पसंद करता है और इच्छुक है, इसे और अधिक विद्रोही और अवज्ञाकारी बनाता है। किसी ने एक ऋषि (ज्ञानवादी और ईश्वर के अंतरंग) से पूछा: "आप बहुत कमजोर हैं और अपने जीवन के एक नाजुक चरण में प्रवेश कर चुके हैं। आप अपने शरीर का पोषण [भोजन से] क्यों नहीं करते?" उसने उत्तर दिया: "भाई! यह शरीर बहुत जल्द गर्व करने लगता है और अगर इसकी लगाम थोड़ी सी भी ढीली हो जाती है, तो यह नए शरारती काम करने लगता है। मैं इसे [भोजन के साथ] पोषित नहीं करता हूं ताकि यह विद्रोही न हो जाए और मुझे विनाश में डाल दे। इसके कारण पापों में शामिल होने की तुलना में इसके प्रति कोई नरमी दिखाए बिना सख्ती से निपटना बेहतर है। धुन नून अल-मिसरी (ईश्वर उन पर दया करे - एक प्रसिद्ध मिस्र के संत और ज्ञानवादी) ने कहा: "जब भी मैंने अपने पेट भर खाया, तो मैं किसी पाप में शामिल हो गया या इसके बारे में एक विचार दिल में आया"। आयशा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - पैगंबर मुहम्मद की पत्नी) ने कहा: "पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के निधन के बाद, पहला नवाचार (*बिद'आ* या एक नया मामला जो विश्वास के स्थापित सिद्धांतों का उल्लंघन करता है और इस प्रकार इसके द्वारा स्वीकृत नहीं है) तृप्ति (लोग अपना पेट भर खाते हैं) के रूप में प्रकट हुआ। जब लोगों का पेट भर जाता है, तो उनके निचले हिस्से *(नुफस)* विद्रोह को अपना लेते हैं और उनकी लगाम परलोक की दिशा से सांसारिकता की ओर खींच ली जाती है। यह [भूख का] एकमात्र लाभ नहीं है, इसके बजाय इस एक लाभ में असंख्य अव्यक्त लाभ अंतर्निहित हैं, बल्कि इसे "लाभ का खजाना" कहना बेहतर होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि भूख को भगवान के खजाने से खजाना कहा गया है। भूख का कम से कम लाभ यह है कि न तो गुप्तांगों की वासना रहती है और न ही बोलने की वासना; भूखे व्यक्ति का दिल ज्यादा बात करने की इच्छा नहीं करता है। इस तरह, व्यक्ति को बोलने के नुकसान [ज्यादतियों और अश्लीलताओं] जैसे झूठ बोलने, चुगली करने, अश्लीलता और लोगों की पीठ पीछे शिकायत करने से बचाया जाता है। जिसका पेट भरा हुआ है वह हास्य के बारे में सोचता है। यह स्पष्ट है कि कोई व्यक्ति लोगों का अपमान करके (यानी, उनकी गरिमा के साथ छेड़छाड़ करके) अपने हास्य की भावना को संतुष्ट करेगा। लोग अपनी जीभ की फसल काटकर नरक में जाएंगे। व्यभिचार की बुराइयां स्पष्ट हैं। भूखा व्यक्ति इसकी बुराइयों से भी सुरक्षित रहता है। यदि पेट भरा हुआ है, तो उनके सिर में वासनाएं आ जाती हैं और व्यक्ति निजी अंगों को नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होता है। यदि ईश्वर का भय (*तकवा*) उनकी इच्छाओं की पूर्ति में बाधा के रूप में कार्य करता है, तो आंखों के व्यभिचार से बचना मुश्किल हो जाता है। अगर कोई आंखें बंद कर लेता है, तो दिल पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है। [कामुक] आक्षेपों के कई प्रकार के रूप इसे परेशान रखेंगे और अश्लील और अश्लील विचारों से छुटकारा पाना बहुत मुश्किल हो जाएगा। कभी-कभी, ये विचार [परमेश्वर से] प्रार्थनाओं और प्रार्थनाओं की शांति और शांति को नष्ट कर देंगे। जीभ और निजी अंगों के नुकसान [लोलुपता के कारण] का उल्लेख यहां एक उदाहरण के रूप में किया गया है। अन्यथा, सभी सात अंगों के पापों का कारण वही शक्ति है जो लोलुपता के माध्यम से प्राप्त होती है।

छठा लाभ - शक्ति और रहने की क्षमता: कम खाने से जागने की शक्ति पैदा होती है। जो अधिक खाता है वह अधिक पानी पीएगा और इससे नींद आएगी। इसीलिए, कुछ आध्यात्मिक मार्गदर्शक अपने शिष्यों से कहते थे: "ऐ सत्य के साधकों के समूह! ज्यादा मत खाओ! यदि आप अधिक खाते हैं, तो आप अधिक पीएंगे और जब आप अधिक पीते हैं, तो आप अधिक सोएंगे और जब आप अधिक सोते हैं, तो आप अधिक नुकसान का अनुभव करेंगे [अपने आप को आध्यात्मिक लाभों से वंचित करने के संदर्भ में जो आप सुबह की पूजा से प्राप्त कर सकते थे]। सत्तर ज्ञानवादी [इस दावे के साथ] सहमत हैं कि जब अधिक पानी का सेवन किया जाता है तो व्यक्ति अधिक सोता है और जब कोई अधिक सोता है तो उसका जीवन अधिक बर्बाद होता है, सुबह की नमाज़ (*तहज्जुद* नमाज़ जो आध्यात्मिक उन्नति के लिए योग्य होती है) पूरी नहीं होती है, जिससे व्यक्ति के स्वभाव में आलस्य और उसके हृदय में कठोरता पैदा होती है। जीवन [या जीवन के लिए] एक अत्यंत अमूल्य रत्न है, मनुष्य की वास्तविक संपत्ति (पूंजी) यही जीवन है और इसके माध्यम से व्यक्ति परलोक के लिए व्यापार और व्यापार करता है। नींद मृत्यु के समान है; इसकी अधिकता जीवन की पूंजी को कम कर देती है। यदि कोई नींद के प्रभुत्व के बावजूद सुबह की प्रार्थना करने में सक्षम है, तो वह इसकी मिठास का स्वाद नहीं लेगा। संक्षेप में, [अत्यधिक] नींद कई नुकसान पहुंचाती है और लोलुपता नींद को जन्म देती है और भूख इसे समाप्त कर देती है।

सातवां लाभ – पूजा में दृढ़ता में आसानी: अत्यधिक पूजा के रास्ते में लोलुपता एक बाधा है क्योंकि इसे खाने में समय लगता है। कभी-कभी, किसी को खाद्य पदार्थों को खरीदने के लिए बाहर जाना पड़ता है और उन्हें आवश्यकतानुसार पकाना पड़ता है। भोजन के बाद, हाथ धोने, भोजन के दौरान और बाद में पानी पीने में समय लगता है। यदि यह सारा [कीमती] समय ईश्वरीय स्मरण, प्रार्थनाओं और पूजा के अन्य कार्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है, तो यह जबरदस्त लाभ का स्रोत होगा। जीवन का हर पल इतना उत्तम गहना है कि इसकी कीमत समय के बाजार में निर्धारित नहीं की जा सकती। इसे बर्बाद करने के बजाय, इसके साथ एक खजाना खरीदना बेहतर है जो परलोक में [स्थायित्व और अनंत काल की स्थिति में] रहेगा। इस व्यावसायिक लेन-देन को परमेश्वर की याद और आज्ञाकारिता में अपने समय का उपयोग करके अंतिम रूप दिया जाता है। लोलुपता का आदी व्यक्ति पवित्रता की स्थिति में न रहने की चिंता से घिरा हुआ है [स्नान जो प्रार्थना जैसे पूजा के कुछ कार्यों के लिए आवश्यक है], न ही कोई अपना सारा समय पूजा में बिता सकता है क्योंकि किसी को बार-बार पानी पीने और खुद को राहत देने के लिए इससे बाहर आने की आवश्यकता होगी। लोलुपता का आदी व्यक्ति आसानी से उपवास नहीं कर सकता क्योंकि उपवास का अभ्यास किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा आसानी से किया जा सकता है जो भूख का आदी है। उपवास, ईश्वरीय पूजा के लिए स्थायी एकांत, सतत पवित्रता (या स्नान की स्थिति जो पूजा के कई कार्यों के लिए एक पूर्व-आवश्यकता है), पूजा के लिए भोजन प्राप्त करने में खर्च किए गए समय का उपयोग करना ऐसे महान लाभ हैं जिन्हें केवल लापरवाह लोगों द्वारा अनदेखा किया जा सकता है। ऐसे लोगों के बारे में कुरान निम्नलिखित कहता है:

وَرَضُواْ بِٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَٱطۡمَأَنُّواْ بِهَا

"वे इस दुनिया के जीवन से संतुष्ट हो गए हैं और इससे संतुष्ट हो गए हैं [जैसे कि भौतिकवादी, सुखवादी जीवन ही वह सब कुछ है जो वहां है और इसके ऊपर और परे कुछ भी नहीं है, विशेष रूप से अभौतिक, उच्च, आध्यात्मिक क्षेत्र में]। (कुरान, अध्याय 10, श्लोक 7)

يَعْلَمُونَ ظَـٰهِرًا مِّنَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ ٱلْءَاخِرَةِ هُمْ غَـٰفِلُونَ

"वे केवल इस दुनिया के जीवन के बाहरी पहलुओं (अस्तित्व के भौतिक क्षेत्र) के बारे में जानते हैं और वे परलोक के प्रति बेपरवाह हैं। (कुरान, अध्याय 30, श्लोक 7)

अबू सुलेमान अल-दरानी (भगवान उस पर दया करें - एक प्रसिद्ध ज्ञानवादी और संत) ने लोलुपता के छह नुकसानों का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा: "एक व्यक्ति जो भर पेट खाता है, छह परीक्षणों और क्लेशों में शामिल हो जाता है: व्यक्ति अंतरंग दिव्य बोलचाल की मिठास खो देता है, ज्ञान के बिंदुओं को याद नहीं रखता है, अपने दिल में अन्य लोगों के प्रति कोई दया नहीं रखता है क्योंकि जब उसका अपना पेट भरा होता है, तो वह दूसरों के बारे में भी यही अनुमान लगाता है कि उसका पेट भी भरा हुआ है, ऐसे व्यक्ति के लिए [दिव्य] पूजा कठिन हो जाती है, वासनाएं बढ़ती हैं, और सबसे बड़ा नुकसान यह है कि सभी विश्वासी ईश्वरीय पूजा के निवासों की ओर आकर्षित होते हैं और ऐसा व्यक्ति रेस्तरां की ओर आकर्षित होता है।

आठवां लाभ – स्वास्थ्य: कम खाने वाला व्यक्ति स्वस्थ रहता है। अधिकांश बीमारियां लोलुपता के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं क्योंकि अधिक खाने से पेट और नसों में खराब [भोजन] सामग्री जमा हो जाती है और विभिन्न प्रकार की बीमारियां होती हैं। यदि कोई बीमार है, तो वह न तो पूजा कर सकता है और न ही कोई शांति से ईश्वरीय स्मरण कर सकता है क्योंकि वह हर समय बेचैन और परेशान रहता है, जिससे जीवन का आनंद (शांति, शांति और उद्देश्यपूर्ण जीवन) बर्बाद हो जाता है। एक बीमार व्यक्ति को शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं, दवाओं और डॉक्टरों की आवश्यकता होती है और यह आवश्यकता बिना पैसे के पूरी नहीं होती है। लोलुपता के कारण शरीर और मन दोनों चिंतित, कमजोर और सुस्त रहते हैं। एक और चिंता यह है कि चिकित्सा उपचार प्राप्त करने के लिए धन कहां से लाया जाए [स्वयं को किए गए नुकसान और अत्यधिक भोजन के सेवन से होने वाली बीमारियों के लिए] जो पैसे के बिना संभव नहीं है। यदि किसी ने धैर्य रखा होता [अपनी पसंद के सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों को अत्यधिक खाने की इच्छा के साथ] और कम मात्रा में भोजन पर संतुष्ट होता, तो वह इतनी सारी चिंताओं से नहीं निपटता [जो इस तरह की लापरवाही का परिणाम है]। एक [बुद्धिमान] चिकित्सक [अतीत के] ने कहा: "एक दवा जिसकी उपस्थिति में बीमारी की कोई संभावना नहीं है, वह यह है कि जब तक आपको [सच्ची] इच्छा न हो तब तक न खाएं और जब कुछ [खाने] की इच्छा बनी रहे, तब तक अपना हाथ [भोजन से] उठाएं"। जब नीचे पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की सलाह का उल्लेख पुस्तक के लोगों (यानी, यहूदी या ईसाई परंपरा से) के एक दार्शनिक को किया गया था:

ثلث طعام وثلث شراب وثلث النفس

"[जब आप खाते हैं, तो आपके भोजन का सेवन ऐसा होना चाहिए कि पेट में लगने वाली जगह को इस तरह विभाजित किया जाए] भोजन के लिए एक तिहाई, पानी के लिए एक तिहाई और आसान सांस लेने के लिए एक तिहाई खाली छोड़ दिया जाए।

दार्शनिक इससे पूरी तरह चकित था और उसने कहा: "भोजन के बारे में इस कहावत से अधिक सटीक और फायदेमंद कुछ भी नहीं हो सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक बुद्धिमान व्यक्ति की कहावत है।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

البطنة اصل الداء والحمية اصل الدواء ' وعودوا كل جسم ما اعتاد

"वास्तविक [उत्पत्ति] बीमारी लोलुपता है और वास्तविक दवा रोकथाम है। शरीर के साथ व्यवहार करें कि यह उसके लिए उपयुक्त है (यानी, शरीर को उन चीजों के अधीन नहीं किया जाना चाहिए जो इसके लिए हानिकारक हैं जैसे कि अत्यधिक भोजन का सेवन, अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थ और पेय, ड्रग्स, नशीले पदार्थ, आदि)।

मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि दार्शनिक उपरोक्त भविष्यसूचक कथन से अधिक चकित हुआ होगा। इब्ने सलीम ने कहा: "यदि कोई उचित शिष्टाचार के साथ गेहूं की रोटी खाता है, तो वह कभी बीमार नहीं होगा"। उनसे पूछा गया: "शिष्टाचार के साथ खाने का क्या मतलब है?" उन्होंने जवाब दिया: "भूख लगने के बाद खाना और पेट भरने से पहले खाना बंद कर देना"। कुछ विशेषज्ञ चिकित्सकों ने लोलुपता की निंदा करते हुए कहा, "पेट में प्रवेश करने वाली सबसे फायदेमंद चीज अनार है और पेट में प्रवेश करने वाली सबसे हानिकारक चीज नमक है लेकिन अधिक मात्रा में अनार खाने की तुलना में नमक का कम सेवन फायदेमंद होता है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक परंपरा कहती है:

تصوموا تصحوا

"उपवास का पालन करें और आप स्वस्थ रहेंगे। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तबरानी अवसत* भविष्यद्वाणी के साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])। इस्लाम में, उपवास का अर्थ है भोर (सूर्योदय से काफी पहले का समय जब अभी भी अंधेरा होता है) और सूर्यास्त के बीच सभी खाद्य पदार्थों, पेय और वैवाहिक संबंधों से पूरी तरह से बचना है, और उच्च स्तर पर यह सभी नैतिक बुराइयों से भी बचना है [जैसे कि झूठ बोलना, धोखाधड़ी, झगड़े, अश्लीलता, बेईमानी, और विचारों में सभी प्रकार के हानिकारक और हानिकारक व्यवहार। भावनाएँ, शब्द और कर्म]।

इससे यह ज्ञात होता है कि उपवास में, भूखे रहने और कम खाने में, शरीर के लिए इलाज के साथ-साथ हृदय के लिए दवा [पुनरुद्धार, कायाकल्प, शुद्धि और शक्ति के लिए] भी है। यदि शरीर को संयमित किया जाता है [उपवास और कम खाने के माध्यम से], हृदय भी विद्रोह (सभी प्रकार के नकारात्मक, हानिकारक और हानिकारक व्यवहार) और अवज्ञा की ओर नहीं झुकते हैं [ईश्वरीय आदेशों के लिए जो पहली जगह में मानवता की भलाई और लाभ के लिए हैं]।

नौवां लाभ – व्यय में कमी: जो कम खाता है, उसे कम मात्रा में धन और संपत्ति पर्याप्त मिलेगी। पेट लोलुपता के लिए सभी संघर्षों का केंद्र और केंद्र बिंदु है और पेट के नरक को भरने के लिए, कोई भी सभी प्रकार की योजना और योजना बनाता है, सभी प्रकार के अपमान जमा करता है, अवैध और निषिद्ध (हराम) को अपनाता *है* जब कानूनी (हलाल) साधन [पैसा और आजीविका कमाने का] पर्याप्त नहीं होते हैं। अवैध तरीकों से कमाई करने में पाप है और अनुमेय साधनों से कमाई करने में अपमान, चिंता और कठिनाइयां हो सकती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जहां भी कोई [आय के स्रोत के लिए] देखता है, वहां लालच के बिना कमाई नहीं होती है, वह उसमें लालच अंतर्निहित पाता है। लालच अत्यधिक अपमान है।

आस्तिक वह है जिसका खर्च कम हो जाता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा: "मैं अक्सर अपनी ज़रूरतों को त्यागकर उन्हें पूरा करता हूँ। इससे दिल को बहुत संतुष्टि मिलती है। एक बुद्धिमान ने कहा: "जब मुझे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए ऋण लेने की आवश्यकता महसूस होती है, तो मैं उस इच्छा को त्यागने के लिए सहमत होकर अपने आप से ऋण लेता हूं और मेरा स्वयं मुझे एक बड़ा ऋण देता है"। इब्राहिम बिन अधम (ईश्वर उन पर दया करे) अपने साथियों से विभिन्न आवश्यक खाद्य पदार्थों की कीमत पूछते थे और यदि वे किसी वस्तु को महंगा बताते थे, तो वह उन्हें इसे छोड़कर सस्ता करने के लिए कहते थे। सहल बिन अब्दुल्लाह अल-तुस्तारी (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "एक व्यक्ति जो बहुत खाता है वह तीन स्थितियों में बुरा है: यदि कोई उपासकों में से है, तो वह अधिक खाने के बाद आलसी हो जाएगा; यदि कोई उन लोगों में से है जो किसी विशेष पेशे में कुशल हैं, तो वह कठिनाइयों से [स्वयं] की रक्षा करने में सक्षम नहीं होगा; अगर किसी को कुछ आय मिलती है, तो वह अपने दिल से न्याय नहीं कर पाएगा [अपनी आध्यात्मिक आकांक्षाओं और राज्यों की रक्षा करके]। फिर भी, संसार का लोभ (धन और भौतिक सम्पत्ति) होना ही उसके विनाश का वास्तविक कारण है और यह लोभ पेट और गुप्तांगों के कारण पैदा होता है और गुप्तांगों की वासना का वास्तविक कारण पेट होता है। कम खाएगा तो न गुप्तांगों की वासना रहेगी और न ही संसार का लालच। संसार (धन और भौतिक संपत्ति) के लिए लोभ नरक का द्वार है। यदि यह दरवाजा बंद हो जाता है, तो स्वर्ग का द्वार खुल जाता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اديموا قرع باب الجنة بالجوع

"भूख के कारण स्वर्ग का द्वार खटखटाते रहो"।

जो एक रोटी (एक पतली पीटा रोटी की तरह) से संतुष्ट होने का साहस रखता है, उसे सभी वासनाओं से दूर रखा जा सकता है। इस संतोष में, स्वयं और चेतन की मुक्ति और स्वतंत्रता है, जो लोगों के पास है उससे बेखबर है [और नुकसान पहुंचाने और एक को लाभ प्रदान करने में सक्षम हैं], आंतरिक आराम (हृदय की शांति और शांति), ईश्वर की पूजा करने की क्षमता, और परलोक के लिए व्यापार में संलग्न होने की क्षमता। ऐसे लोगों का उल्लेख निम्नलिखित पद में किया गया है:

لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَٰرَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ ٱللَّهِ

"वे सांसारिक व्यापारों (खरीद, बिक्री और अन्य सांसारिक व्यस्तताओं के कारण जो किसी के सांसारिक प्रवास और अल्पकालिक अस्तित्व में जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं) के कारण भगवान के स्मरण से विचलित नहीं होते हैं। (कुरान, अध्याय 24, श्लोक 37)

ये लोग परमेश्वर की याद के प्रति लापरवाह और लापरवाह नहीं हैं क्योंकि वे सांसारिक मामलों से अनासक्त हैं (अर्थात, सांसारिक उलझनों और शयनों से हृदय का लगाव नहीं है, यद्यपि वे सांसारिक जीवन में आवश्यक सभी चीजों का भुगतान करते हैं)। जो लोग दुनिया के जरूरतमंद हैं (अर्थात, जो सांसारिक मामलों के लिए अपने दिल का लगाव रखते हैं और अपनी आत्मा की कीमत पर पूरी तरह से इसमें डूबे हुए हैं) वास्तव में बेपरवाह और बेखबर हैं [अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य के लिए जो बदले में शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय की ओर ले जाता है]।

दसवां लाभ – जरूरतमंद लोगों पर दान और खर्च: कम खाने का एक फायदा यह है कि कोई भी भोजन जिसका उपयोग नहीं किया जाता है, उसे अनाथों और गरीबों को दान में दिया जा सकता है। जो जरूरतमंद लोगों पर दान और खर्च करने का आदी है, वह किसी के दान की छाया में होगा जैसा कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की विभिन्न महान परंपराओं में उल्लेख किया गया है। अधिक खाने से क्या हासिल होता है? [अत्यधिक] उपभोग के बाद भोजन मानव अपशिष्ट बन जाता है और कचरे के खजाने में जमा हो जाता है जबकि दान में दिया गया भोजन भगवान के खजाने में जमा हो जाता है। मानव धन और [भौतिक] संपत्ति जो बची हुई है, वे केवल वही हैं जो परमेश्वर के मार्ग में खर्च की गई हैं। इसके अलावा, जो कुछ भी खर्च किया जाता है वह विलुप्त हो जाएगा (समाप्त हो जाएगा), चाहे वह [भोजन के रूप में] खाया गया हो या [कपड़ों के रूप में] पहना गया हो। हसन अल-बसरी (ईश्वर उन पर दया करे - एक महान ज्ञानवादी और संत) ने कुरान की निम्नलिखित आयत का पाठ किया:

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا
وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا ٱلْإِنسَٰنُ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا

उन्होंने कहा, "हमने इस भरोसे को आकाश और पृथ्वी के सामने प्रस्तुत किया, लेकिन उन्होंने इसकी जिम्मेदारी स्वीकार करने से इनकार कर दिया और इससे डर गए, लेकिन मनुष्य ने इस जिम्मेदारी को अपने ऊपर ले लिया। एक (यानी, मनुष्य) [निस्संदेह] दमनकारी और अज्ञानी है। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 72)

फिर उसने कहा: "परमेश्वर ने तारों से सजे सातों आकाशों से कहा कि वे इस [ईश्वरीय] भरोसे का बोझ उठाएं और कहा: 'क्या तुम इस भरोसे और इसमें जो कुछ है, उसे ढोने को तैयार हो?' उन्होंने पूछा, 'इस ट्रस्ट में क्या है?' उन्होंने उत्तर दिया: 'यदि कोई बुराई करता है, तो उसे दंड मिलेगा और यदि कोई अच्छा करता है, तो उसे [उत्कृष्ट] प्रतिफल मिलेगा'। स्वर्ग ने उत्तर दिया: 'हम इस विश्वास को ले जाने में असमर्थ हैं'। तब इस ट्रस्ट को धरती पर पेश किया गया था लेकिन इसने भी मना कर दिया। ऊंचे पहाड़ों से पूछा गया, और उन्होंने इस भरोसे को सहन करने में अपनी असमर्थता और कमियों को व्यक्त करने में अपनी शांति भी समझी। जब मनुष्य से इसके बारे में पूछा गया [इस दुनिया में आने से पहले आत्माओं के दायरे में], तो किसी ने इस जिम्मेदारी को स्वीकार कर लिया क्योंकि वह स्वयं पर अत्याचारी था (*नफ्स*) और इस ईश्वरीय आज्ञा के पीछे के ज्ञान से अनजान था। भगवान की कसम! अब हम मनुष्य के उत्पीड़न और अज्ञानता को देख रहे हैं। लोग धन के बदले में अपना विश्वास बेचते हैं, अपनी कब्रों को संकुचित करने और संकुचित करने के बदले में अपने घरों के विस्तार [और वैभव] को बढ़ाने के लिए प्रचुर मात्रा में कमाते हैं (यानी, परलोक में अपने जीवन को बर्बाद कर देते हैं), अपने जानवरों को (घुड़सवारी माउंट जो पारंपरिक रूप से गर्व, प्रतिष्ठा और सामाजिक प्रतिष्ठा का स्रोत रहे हैं) को अपने दीन बनाने के बदले में मोटा बनाते हैं (परमेश्वर का मार्ग और उसके साथ संबंध) पतला। ऐसे लोग सुबह-शाम राजाओं (यश और अधिकार के शक्तिशाली और प्रभावशाली लोगों) के पास जाते हैं और [इसके परिणामस्वरूप] अपने प्रति अत्याचारी होते हैं। किसी के दिल में भौतिक संपत्ति और धन की इच्छा चल रही है, किसी और के दिल में प्रसिद्धि की इच्छा है। कोई व्यक्ति [दिव्य कानून में] अनुमेय के किसी भी भेदभाव पर विचार किए बिना

[दिव्य कानून में] या निषिद्ध की प्राप्ति पर विचार किए बिना [शानदार और विविधता] भोजन की इच्छा के साथ घूमता है। जब यह अपच और टाइफाइड का कारण बनता है, तो नौकरों से ऐसी दवाएं लाने की मांग की जाती है जो ऐसी स्थितियों को कम करती हैं। किसी को इस मूर्ख से पूछना चाहिए: 'उन अनाथ बच्चों, विधवाओं और गरीबों का क्या हुआ, जिनकी देखभाल करना आपका [नैतिक] दायित्व है, जिन्हें आप भोजन और स्वाद की इच्छा के कारण भूल गए हैं?'"

इस विवरण का उद्देश्य इस बात को घर लाना है कि केवल आवश्यक मात्रा में भोजन का सेवन किया जाना चाहिए और आराम दान में दिया जाना चाहिए ताकि यह परलोक के भंडार में जमा हो जाए। एक बार पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक मोटे आदमी को देखा और उन्होंने अपने पेट पर उंगली रखी [मोटापे की अवांछनीयता की ओर इशारा करते हुए - इसका कारण लोलुपता है, आकार से बाहर है, किसी के स्वास्थ्य और आंतरिक आध्यात्मिकता के लिए इसके हानिकारक प्रभाव] और कहा: "अगर यह भोजन आपके पेट के बजाय किसी और के पेट में होता [जिसे गरीबी के कारण इसकी आवश्यकता है] तो बेहतर होता आपके लिए [शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* ने भविष्यद्वाणी के साथी जदा अल-हथमी के अधिकार पर *मुसनद अहमद, हकीम और बेहाकी को* इकट्ठा किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

हसन अल-बसरी (भगवान उस पर दया करे) ने कहा: "भगवान की कसम! हमने ऐसे लोग देखे हैं जिनके पास खाने के लिए बहुत कम था और अगर उन्होंने खाया होता तो उनके लिए यह अपर्याप्त होता। उन्होंने फिर भी कहा कि वे उस अल्प मात्रा को भी स्वयं नहीं खाएंगे, बल्कि परमेश्वर के लिए दूसरों को भी इसमें शामिल करेंगे।

ये भूख के दस लाभ हैं जहां हर लाभ असंख्य [अन्य] लाभ का गठन करता है। इन सभी लाभों का परिणाम यह है कि भूख परलोक का खजाना है। इसीलिए, कई बुद्धिमान विद्वानों ने कहा है कि भूख परलोक की कुंजी है और सांसारिकता से दूर रहने का द्वार है, और लोलुपता सांसारिकता की कुंजी और लालच का द्वार है। इस विषय को भूख की उत्कृष्टता और तृप्ति [और लोलुपता] की निंदा के लिए उल्लिखित कथनों और परंपराओं के माध्यम से भी सिद्ध किया गया है। इन लाभों के बारे में जागरूकता प्राप्त करने के बाद, इस विषय के विवरण और इसके वास्तविक अर्थों का ज्ञान, निश्चितता (*याकीन*) और गहरी अंतर्दृष्टि (*बसीराह)* पर आधारित होगा। यदि किसी को इन लाभों का ज्ञान नहीं है, लेकिन फिर भी भूख को श्रेष्ठ मानता है, तो वह [पदार्थ की वास्तविकता को समझे बिना] (तकलीद) का पालन करके विश्वास के स्तर पर होगा।

भूख से संबंधित निर्णयों, उत्कृष्टता और मानव राज्यों में अंतर

बता दें कि संयम या मध्यम मार्ग के स्तर को प्राप्त करना सभी मामलों में उद्देश्य है और *इखलाक* (सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षण, स्वभाव और गुण) में जैसा कि नीचे *हदीस* (पैगंबर मुहम्मद की परंपरा और ईश्वर की शांति उन पर हो) में उल्लेख किया गया है:

خير الامور اوساطها

"सबसे अच्छे मामले वे हैं जिनमें संयम का प्रयोग किया जाता है या बीच का रास्ता अपनाया जाता है"।

दो पक्ष [या स्पेक्ट्रम के दो छोर] या चरम सीमाएं, दूसरे शब्दों में, [सभी मामलों में किसी भी चीज़ की] अधिकता या कमी दोनों की निंदा की जाती है। भूख की उत्कृष्टता में [यहां] जो लिखा गया है, उससे यह समझा जा सकता है कि भूख की अधिकता उद्देश्य है, भले ही वास्तव में ऐसा नहीं है। इसके बजाय, ईश्वरीय कानून के रहस्य, जो ज्ञान से भरे हुए हैं, इस तरह के प्रकृति के हैं कि उन मामलों में जहां मानव स्वभाव चरम सीमाओं की ओर झुका हुआ है और उनमें [आंतरिक और बाहरी] उथल-पुथल के बीज हैं, तो उन मामलों को बड़ी अतिशयोक्ति (जोर) के साथ इस तरह से मना किया जाता है कि एक अज्ञानी भी समझ सकता है कि ईश्वरीय कानून का उद्देश्य किसी को स्वभाव के खिलाफ कार्य करना है [एक बेहतर इंसान बनाने के लिए]। केवल एक विद्वान (धार्मिक ज्ञान और समझ में पारंगत व्यक्ति) ही यह समझता है कि [हानिकारक मामलों से] मना करने में अतिशयोक्ति का उद्देश्य [किसी को संयम या मध्य मार्ग [सभी चरम सीमाओं से रहित] के स्तर पर लाना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि [केवल] एक विद्वान जानता है कि लोलुपता मानव स्वभाव पर हावी है और लोग चरम (भोजन के सेवन में अत्यधिकता) के स्तर तक पहुंच गए हैं और भूख की अधिक से अधिक उत्कृष्टता का उल्लेख करना अधिक उपयुक्त है और लोगों को अतिशयोक्ति के साथ लोलुपता से रोका जाना चाहिए ताकि [मानव] स्वभाव संयम के स्तर तक पहुंच जाए [भोजन की खपत से संबंधित इस मामले में]। [मानव] स्वभाव को समाप्त करना संभव नहीं है, लेकिन इसे संयम या मध्य पथ के स्तर पर लाना संभव है। इसलिए, यदि कोई स्वभाव के विरुद्ध जाता है और अत्यधिक खर्च करता है, तो ईश्वरीय कानून इस कार्य की निंदा करता है। उदाहरण के लिए, हदीस (पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) में रात में जागने और उपवास करने की असंख्य श्रेष्ठताओं का उल्लेख किया गया है , लेकिन जब पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को पता चला कि कुछ लोग हमेशा उपवास करते हैं और पूरी रात जागते हैं तो उन्होंने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया। सिद्धांतों पर इस चर्चा के बाद यह ज्ञात हो जाना चाहिए कि खाने में श्रेष्ठ और संयमी विधि केवल उतना ही खाएं जिससे न तो पेट में भारीपन आए और न ही भूख की पीड़ा हो। खाने का उद्देश्य जीवन को बनाए रखना और पूजा के लिए शारीरिक शक्ति प्राप्त करना है। पेट का भारीपन भी पूजा में बाधक है और पेट का खालीपन भी दिल को व्यस्त रखता है। व्यक्ति को इस हद तक खाना चाहिए कि यह भूख की पीड़ा को मिटा देता है जबकि भोजन के प्रभाव का भी पता नहीं चलता है। इस तरह खाने से मनुष्य स्वर्गदूतों जैसा दिखता है क्योंकि वे भूख और भोजन के भारीपन से ऊपर होते हैं [पेट में]। उनका अनुसरण करने से मनुष्य केवल उत्कृष्टता और पूर्णता के स्तर तक पहुंच सकता है जो किसी की रचना का उद्देश्य है। संयम के इस स्तर के एक तरफ लोलुपता है और दूसरी तरफ भूख है। ये दोनों घातक हैं। संयम का मार्ग अपनाने के लिए इन दोनों से खुद को बचाने में जीवन का निर्वाह निहित है। इसकी समानता एक चींटी की तरह है जिसे आग के घेरे के बीच में छोड़ दिया जाता है। यह जिस भी तरफ मुड़ता है, मृत्यु होती है क्योंकि चक्र चारों तरफ से गर्म होता है और इसकी छोटी लौ इसके छोटे से जीवन को समाप्त कर सकती है। हालांकि, अगर चींटी केंद्र में रहती है और किसी भी दिशा में नहीं जाती है, तो वह आग से दूर रहेगी और अपने जीवन को सुरक्षित रखने में सक्षम होगी। मनुष्य की अवस्था ऐसी होती है जैसे वासनाओं ने व्यक्ति को चारों ओर से घेर लिया है। देवदूत वासनाओं से बहुत दूर हैं। उनकी समानता प्राप्त करने का एकमात्र तरीका वासनाओं से खुद को दूर करना है

क्योंकि संयम का स्तर सभी तरफ से समान दूरी पर है [वृत्त के वास्तविक केंद्र में रहने के लिए]। इसलिए, यह (संयम) की मांग की जा रही है और चूंकि संयम का स्तर सभी पक्षों से समान दूरी पर है और इसका प्रमाण *हदीस* (पैगंबर मुहम्मद की परंपरा (पैगंबर मुहम्मद की परंपरा और ईश्वर की कृपा हो) में पाया जाता है, "सभी मामलों में सबसे अच्छा वे हैं जिनमें संयम का प्रयोग किया जाता है या बीच का रास्ता अपनाया जाता है" और कुरान की इस आयत द्वारा सत्यापित किया गया है:

وَكُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ وَلَا تُسْرِفُوٓا۟ ۚ

"खाओ और पियो और ज्यादती करने के लिए संयम की सीमा को पार न करो। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 31)

भूख और तृप्ति में संयम: जब तक मनुष्य भूख और लोलुपता के भारीपन की पीड़ा महसूस नहीं करता, तब तक [दिव्य] पूजा पर ध्यान केंद्रित नहीं किया जा सकता है। पूजा और चिंतन को आसान बनाने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति न तो भूखा रहे और न ही तृप्त रहे। चूंकि मानव स्व (*नफ्स*) शुरू में विद्रोही, वासनाओं का शौकीन और संयम की सीमाओं से दूर है, इसलिए इसे अधिकता और कमी के केंद्र बिंदु पर लाने में कठिनाइयाँ हैं। शुरुआत में इसे चीजों से मना करने में अतिशयोक्ति होती है। उदाहरण के लिए, इसे भूख और लोलुपता के बीच मध्य स्तर पर लाने के लिए, पहली बात यह है कि इसे भूखा रखकर स्वयं को कठिनाइयाँ पैदा करना है, ठीक वैसे ही जैसे एक जंगली विद्रोही घोड़े को शुरू में भूखा, प्यासा रखा जाता है और यहां तक कि उसे नियंत्रण में लाने के लिए पीटा जाता है। इस अवस्था से गुजरने के बाद, घोड़ा नियंत्रित हो जाता है और अपने स्वामी की इच्छाओं के अधीन हो जाता है। एक बार जब घोड़ा अपना विद्रोहीपन छोड़ देता है और आज्ञाकारी हो जाता है, तो उसे भूखा, प्यासा और शारीरिक कठिनाइयों के अधीन रखने की कोई आवश्यकता नहीं बचती है। एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक शिष्यों (आध्यात्मिक पथ पर आकांक्षी और यात्रियों) को समान व्यवहार देता है और उन्हें उन चीजों को करने के लिए कहता है जो मार्गदर्शक स्वयं नहीं करता है। उदाहरण के लिए, कोई उन्हें भूखे रहने और सभी वासनाओं को त्यागने के लिए कहता है, हालांकि मार्गदर्शक स्वयं भूखा नहीं रहता है और न ही सभी इच्छाओं से पूरी तरह से अलग होता है (कई इच्छाएं ईश्वरीय कानून की सीमा के भीतर वैध हैं)। कभी-कभी, मार्गदर्शक भोजन के बाद फलों में संलग्न होता है और अन्य स्वादों और इच्छाओं का आनंद लेता है क्योंकि व्यक्ति का स्वयं आज्ञाकारी होता है [और ईश्वरीय आदेशों के अधीन होता है] और इसे अधिक आध्यात्मिक अभ्यास और प्रशिक्षण के अधीन करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है । परन्तु चूंकि स्वयं (*नफ्स*) में ईश्वरीय उपासना में लोभ, वासना, विद्रोह और आलस्य का प्रभुत्व है, इसलिए भूख उसके लिए बेहतर है ताकि वह अपने दर्द को महसूस करता रहे और विनम्र हो जाए और इसके माध्यम से संयम के स्तर तक पहुंच जाए, अर्थात भोजन के सेवन में संयम । आध्यात्मिक मार्ग के यात्रियों में, केवल दो [प्रकार] लोग भूखे रहने से बचते हैं - एक ज्ञानवादी और एक आत्म-भ्रमित मूर्ख। एक ज्ञानवादी को भूखे रहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि स्वयं मार्गदर्शन के सीधे मार्ग पर है और सत्य के मार्ग पर चलने में, उसे भूख से पीड़ित होने की आवश्यकता नहीं है। एक मूर्ख भूखा नहीं रहता है क्योंकि किसी के अपने बारे में यह अनुमान है कि वह एक ज्ञानवादी है और स्वयं को आध्यात्मिक प्रयास और अनुशासन की कोई आवश्यकता नहीं है। यह एक बड़ा धोखा है और ज्यादातर लोग आंख के इस धोखे में शामिल होते हैं। स्वयं को पूर्ण रूप से अनुशासित करने में बड़ी कठिनाई होती है। आम तौर पर, लोग ज्ञानवादियों की आध्यात्मिक अवस्थाओं को लेते हैं

और सोचते हैं कि उनकी अपनी अवस्थाएँ ऐसी ही हैं, भले ही यह सही हो या नहीं, और [सिर्फ] ज्ञानवादियों की तरह, [ऐसी उदात्त आध्यात्मिक अवस्थाओं को प्राप्त करने के साधनों से बेखबर हो जाते हैं और उन साधनों को नहीं अपनाते हैं]।

एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक को शिष्यों (आध्यात्मिक मार्ग की शुरुआत में जो आध्यात्मिक यात्री हैं) के सामने रहस्यों [आध्यात्मिक मामलों और विभिन्न आध्यात्मिक शिक्षाओं के पीछे आंतरिक ज्ञान से संबंधित] का उल्लेख नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, उन्हें जितना संभव हो सके भूखे रहने का निर्देश दिया जाना चाहिए। उन्हें संयम के स्तर के बारे में शिक्षित करना [भोजन के सेवन में] उपयुक्त नहीं है क्योंकि वे कुछ हद तक संयम से विचलित हो जाएंगे [क्योंकि वे शुरुआती छात्र हैं]। उन्हें बहुत अधिक भूख का व्यायाम करने का निर्देश दिया जाना चाहिए ताकि उनके लिए संयम के स्तर को प्राप्त करना आसान हो जाए [जैसा कि शिष्य उनसे कहा जाता है उससे कम करते हैं]। शिष्यों (आध्यात्मिक यात्रियों) को यह नहीं बताया जाना चाहिए कि एक आध्यात्मिक रूप से सिद्ध व्यक्ति (ज्ञानवादी) को आत्मिक कठोरता और स्वयं के अनुशासन की आवश्यकता नहीं है [जैसा कि एक व्यक्ति पहले से ही उस से गुजर चुका है और उच्च आध्यात्मिक डिग्री प्राप्त कर चुका है]। यदि उन्हें यह बताया जाता है, तो शैतान उनके दिलों में यह संकेत देगा कि उन्होंने बहुत उच्च स्तर की ज्ञान-विज्ञान और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त कर ली है और उन्हें अब और अधिक आध्यात्मिक कठोरता की आवश्यकता नहीं है जैसा कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक (*शेख) द्वारा सूचित किया गया है*। इब्राहिम अल-खवास (ईश्वर उन पर दया करे - एक ज्ञानवादी, संत और आध्यात्मिक मार्गदर्शक) की यह दिनचर्या थी कि उन्होंने अपने शिष्यों को जो भी आध्यात्मिक कठोरता का निर्देश दिया, वह स्वयं उन्हें पूरा करते थे (भले ही उन्हें स्वयं उनकी आवश्यकता नहीं थी, लेकिन उन्होंने उन्हें शिष्यों को एक भ्रामक धारणा न देने के लिए किया कि उन्हें उनकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि उन्हें उनकी आवश्यकता नहीं है] ताकि वे यह न सोचें कि उन्हें निर्देश दिए गए हैं उन चीजों को करने के लिए जो आध्यात्मिक मार्गदर्शक स्वयं नहीं करते हैं। यह विचार शिष्यों (आध्यात्मिक यात्रियों) को आध्यात्मिक प्रयासों से घृणा करने के लिए प्रेरित कर सकता है [आध्यात्मिक मार्गदर्शक में पाखंड को भ्रामक रूप से समझकर, क्योंकि शैतान सक्रिय रूप से लोगों को मार्गदर्शन के सही मार्ग से दूर करने का प्रयास कर रहा है, हर कदम पर और हर स्थिति में वह है]। आध्यात्मिक मार्गदर्शक (*शेख* या *मुर्शिद*) को कभी-कभी किसी के [आध्यात्मिक] पद से नीचे आने की आवश्यकता होती है, जैसे पहलवान कमजोर कार्य करते हैं और यहां तक कि अपने छात्रों को विभिन्न कुश्ती चालों को सिखाने के लिए व्यायाम और प्रशिक्षण के लिए बाहर हो जाते हैं। स्वयं को प्रशिक्षित करने के लिए, शारीरिक व्यायाम की तुलना में, नम्रता और सूक्ष्मता की अधिक आवश्यकता होती है। आध्यात्मिक प्रयास और कठोरता [आध्यात्मिक यात्रियों के लिए] महान परीक्षण के आधार हैं। भविष्यवक्ताओं और संतों को इस तरह के परीक्षणों और क्लेशों से गुजरना पड़ा है। इसलिए इस मामले में सावधानी बरतनी चाहिए। जब उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हों - एक महान भविष्यद्वाणी साथी जो बाद में एक महान विश्व नेता बन गए) को पता चला कि उनका बेटा अब्दुल्ला हर दिन रोटी के साथ मांस खाता है, तो वह क्रोधित हो गया और उससे कहा: "हे अयोग्य व्यक्ति! एक दिन मांस के साथ रोटी खाएं, एक दिन दूध के साथ रोटी खाएं, एक दिन घी (दूध आधारित वसा) के साथ रोटी खाएं, एक दिन तेल के साथ रोटी खाएं, एक दिन नमक के साथ रोटी खाएं और कुछ दिन सिर्फ रोटी खाएं और कुछ नहीं। इससे पता चलता है कि यही मॉडरेशन है। मांस खाने और वासनाओं में लिप्त होने में स्थायित्व और नियमितता का अभ्यास करना [हर दिन की तरह] अतिरेक है [और इस प्रकार खाने से संबंधित मामलों में अतिवाद]। उन्हें पूरी तरह से त्याग देना कमी है और कभी-कभी खाना और कभी-कभी न खाना संयम है।

कम खाने और वासनाओं को त्यागने के नुकसान

यह ज्ञात होना चाहिए कि जो कामों का त्याग करता है, वह दो नुकसानों का लक्ष्य बन जाता है। ये नुकसान किसी के पसंदीदा खाद्य पदार्थ खाने से ज्यादा खतरनाक होते हैं। एक नुकसान यह है कि स्वयं कुछ वासनाओं को नहीं छोड़ सकता। आध्यात्मिक यात्री उन्हें छोड़ना चाहता है लेकिन स्वयं (*नफ्स*) इसकी अनुमति नहीं देता है। निचले स्व की इच्छा को पूरा करने के लिए, आध्यात्मिक यात्री अपनी पसंदीदा चीज को लोगों से छिपाकर गुप्त रूप से खाता है। यह छिपा हुआ बहुदेववाद (*स्क्रिर्क अल-खाफी*) है। यदि यह स्थिति उत्पन्न होती है, तो व्यक्ति को अपनी इच्छा प्रकट करनी चाहिए। यह प्रकटीकरण किसी की [आंतरिक] स्थिति की सच्चाई के बारे में है। अपने दोषों को गुप्त रखना और दूसरों को अपनी श्रेष्ठता दिखाना उनमें दो नुकसान हैं। जब तक कोई इससे ईमानदारी से पश्चाताप नहीं करता, तब तक ईश्वरीय नाराजगी दूर नहीं होती है। यह सूक्ति (*मारिफा*) की पूर्णता है कि वह ईश्वर के लिए वासनाओं को त्याग दे और यह दिखाता रहे कि कोई उनमें शामिल है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि व्यक्ति लोगों की नजरों में नीच बन जाए। एक संत अच्छे खाद्य पदार्थ खरीदकर अपने घर में प्रमुख स्थानों पर रख देते थे ताकि लोगों को लगे कि वह उन चीजों को खाते हैं हालांकि वह बहुत ही साधारण भोजन करते थे। प्रदर्शन लोगों को उन्हें संत के रूप में नहीं सोचने की अनुमति देने के लिए था, इसलिए वे उन्हें एक संत के रूप में सोचकर उनके पास नहीं जाएंगे। *ज़ुहद* (सांसारिकता से परहेज) की पूर्णता यह है कि कोई यह दिखाने के लिए इसके खिलाफ कार्य करता है कि कोई संयमी नहीं है बल्कि इसके बजाय वासनाओं में शामिल है। यह ज्ञानवादियों या आध्यात्मिक रूप से सिद्ध व्यक्तियों (सिद्दीकीन) की क्रिया है क्योंकि उन्होंने अपने आप पर दो बोझ डालकर दो सत्यों को जोड़ा है (*नफ्स*) और दो बार धैर्य का प्रयोग किया है - एक बार जब उन्होंने अपनी पसंदीदा चीजों को अलविदा कहा और दूसरी बार जब लोगों ने उनकी बाहरी अवस्थाओं को देखकर उनकी निंदा और आलोचना की [जो वासनाओं में शामिल प्रतीत होते थे, सांसारिकता और गैर-संयमी कार्य करते हैं क्योंकि उन्होंने जानबूझकर उस धारणा को बनाया है जो एक संत या ज्ञानवादी होने के साथ आने वाली प्रसिद्धि और पूजा से बचने के लिए है]। ऐसे लोगों के बारे में कहा गया है:

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ

"ऐसे लोगों को दोगुना ईश्वरीय प्रतिफल मिलेगा। (कुरान, अध्याय 28, श्लोक 54)

उनकी स्थिति उस व्यक्ति की तरह होती है जो सबके सामने उपहार देने पर स्वीकार कर लेता है लेकिन बाद में उसे गुप्त रूप से वापस कर देता है। ऐसे व्यक्ति को दो चीजों के कारण पीड़ा होगी: पहला, सबके सामने किसी को कुछ देने से अपमानित होने के कारण [जैसे दूसरों से चीजें लेने में नीचता है]; दूसरे, उसी चीज़ को गुप्त रूप से वापस लौटाने के कारण, भले ही किसी को इसकी आवश्यकता हो। यदि कोई आध्यात्मिक यात्री (*सालिक*) इस पद तक पहुंचने में सक्षम नहीं है, तो उसे अपने दोषों की घोषणा करने और इच्छाओं से दूर रहने में अपनी असमर्थता व्यक्त करने से परहेज नहीं करना चाहिए, और शैतान के इस धोखे से मूर्ख नहीं बनना चाहिए कि यदि कोई अपने दोषों को प्रकट करता है, तो लोग उन दोषों में ऐसे दोषों का अनुसरण करेंगे और लोगों को सुधारने के लिए अपने दोषों को छिपाकर रखना बेहतर है।

आध्यात्मिक यात्री या साधक को यह समझना चाहिए कि लोगों के सुधार की तुलना में उसका अपना [आंतरिक आध्यात्मिक] सुधार अधिक महत्वपूर्ण है। लोगों को सुधारने की दृष्टि से अपने दोषों को छिपाने का उद्देश्य आडंबर या दिखावा (*रिया*) है। ऐसा व्यक्ति दूसरों को सुधारने के बहाने शैतान का अनुसरण करने में व्यस्त रहता है। वास्तविकता यह है कि, ऐसा व्यक्ति अपने दोषों को प्रकट नहीं करना चाहता क्योंकि लोगों के डर से कोई एक से बच जाएगा। ऐसा व्यक्ति न तो अपना सुधार चाहता है और न ही दूसरों का सुधार।

दूसरा नुकसान यह है कि आध्यात्मिक यात्री या साधक व्यावहारिक रूप से वासनाओं को त्यागने में सक्षम है, लेकिन व्यक्ति को [सांसारिकता से] (जाहिद) के रूप में प्रसिद्ध होने का शौक है और जब लोग किसी को "पापरहित" कहते हैं तो वह प्रसन्न होता है। इस साधक ने एक कमजोर वासना [भोजन से संबंधित] को छोड़ दिया है, लेकिन एक बहुत बड़ी वासना में शामिल है और वह है प्रसिद्धि की तलाश और सम्मान और प्रतिष्ठा की इच्छा। यह एक गुप्त वासना है और जो इसमें शामिल है, उसे इसमें शामिल होने के बारे में काफी देर से पता चलता है। भोजन की लालसा को खत्म करने की तुलना में इस वासना को खत्म करना अधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक है। जो दिखावा से दूर है लेकिन भोजन की लालसा में लिप्त है, वह उस व्यक्ति से बेहतर है जिसने भोजन की लालसा को त्याग दिया है लेकिन प्रसिद्धि के लिए प्रेम में लिप्त है। अबू सुलेमान (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "जब आपके सामने कुछ भोजन आए जिसे आपने छोड़ दिया है, तो उसमें से थोड़ी मात्रा में खाओ, लेकिन अधिक खाने से स्वयं की इच्छा को पूरा न करें। इस तरह, स्वयं की वासनाएं दोनों समाप्त हो जाएंगी - भोजन की लालसा और प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा की लालसा [सांसारिकता से दूर रहने के लिए]"। भोजन की लालसा को त्यागने वाला और दिखावे की लालसा में लिप्त होने वाला उस व्यक्ति की तरह है जो बिच्छू से भागकर सांप के किनारे शरण लेता है, हालांकि सांप एक के लिए अधिक घातक होता है [बिच्छू की तुलना में]। इसी तरह, दिखावा भोजन की इच्छा से अधिक हानिकारक है।

निजी अंगों की वासना

यह ज्ञात होना चाहिए कि मैथुन की इच्छा मनुष्य में दो लाभों के लिए [दिव्य रूप से] पैदा की गई है। एक लाभ यह है कि मनुष्य मैथुन के आनंद से परलोक के सुख को कम कर सकता है। यदि यह आनंद लंबे समय तक चलने वाला होता, तो यह सभी शारीरिक सुखों में सबसे मजबूत होता। लोगों को शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन और अनुनय की आवश्यकता होती है और यह आवश्यकता पूरी तरह से पूरी हो जाती है जब कुछ दर्द जिसे महसूस किया जा सकता है या कुछ खुशी जिसे महसूस किया जा सकता है और महसूस किया जा सकता है, शाश्वत खुशी के साधन के रूप में नियोजित किया जाता है।

मैथुन का दूसरा लाभ मानव जाति की निरंतरता है। ये दो फायदे हैं, लेकिन इसमें कई नुकसान भी समाहित हैं, अगर कोई खुद पर नियंत्रण नहीं रखता है और इस वासना को संयम के स्तर पर नहीं लाता है, क्योंकि वह सांसारिक सफलता के साथ-साथ विश्वास दोनों को खो सकता है। एक परंपरा में बताया गया है कि पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) एक सभा में बैठे थे जब शैतान [मानव रूप में] आया। उसके सिर पर एक टोपी थी जिसमें बहुत सारे रंग चमक रहे थे। इस सभा में पहुंचने के बाद, उन्होंने अपनी टोपी उतार दी और उनका अभिवादन किया। पैगंबर मूसा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) ने उनसे कहा, "तू कौन है? उसने उत्तर दिया: "मैं *इब्लेस* (शैतान) हूँ"। भविष्यवक्ता मूसा ने कहा: "परमेश्वर तुम्हें मृत्यु दे! तुम यहाँ क्यों आए?" उन्होंने कहा: "आप भगवान के सामने एक महान पद और डिग्री पर हैं, इसलिए मैं आपको अपना अभिवादन करने आया हूं"। भविष्यवक्ता मूसा ने पूछा: "तुमने अलग-अलग रंगों की टोपी क्यों पहनी थी?" उन्होंने उत्तर दिया: "मैं इस टोपी के माध्यम से मनुष्यों के दिलों को छीनता हूं और उन्हें धोखा देता हूं"। भविष्यवक्ता मूसा ने पूछा: "आप किन मानवीय कार्यों के माध्यम से उन्हें अपने अधीन कर सकते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: "जब मनुष्य के हृदय में अहंकार पैदा होता है और व्यक्ति अपने छोटे-छोटे कार्यों (अच्छे कर्मों) को बड़ा समझता है और अपने पापों को भूल जाता है। मैं आपको तीन मामलों के बारे में चेतावनी देता हूं: एक अजनबी (संभावित रूप से विवाह योग्य) महिला के साथ अकेले नहीं रहना है क्योंकि जब ऐसा होता है, तो मैं व्यक्तिगत रूप से अपने किसी भी शिष्य को भेजे बिना उनके बीच में आता *हूं ताकि उन्हें फितना* (अनुचित कार्यों के कारण परीक्षण और क्लेश) में शामिल किया जा सके। दूसरा यह है कि आप जो भी वादे करते हैं उन्हें पूरा करें। तीसरा यह कि जो पैसा आप अनिवार्य और स्वैच्छिक दान के लिए अलग रखते हैं, उसे तुरंत वितरित करें। मैं भी ऐसे मौकों पर पहुंचने की जल्दबाजी करता हूं और ऐसे बहाने अपनाता हूं कि कोई उस इरादे को बदल देता है जो किसी को दान देने से रोकता है। इसके बाद, शैतान यह कहते हुए चला गया : "हाय! मूसा अब उन बातों को जानता है जिनमें मनुष्य पीड़ित हैं [उनके नुकसान के लिए]"। शैतान की आधी सेना वासना है और उसका आधा हिस्सा क्रोध है। इसी सेना के माध्यम से [वासना और क्रोध दोनों से मिलकर], शैतान दिलों को जीत लेता है। विपरीत लिंग की वासना में सभी वासनाओं में सबसे बड़ी है।

निजी अंगों की वासनाओं के तीन स्तर: भोजन की वासना की तरह, इस वासना के भी तीन स्तर हैं: अधिकता, कमी और संयम। अतिरेक यह है कि यह वासना बुद्धि पर हावी हो जाती है और यौन संतुष्टि प्राप्त करने के अलावा किसी के पास कोई उद्देश्य नहीं बचता है। व्यक्ति इसमें डूब जाता है और परलोक के मार्ग के बारे में भूल जाता है और यह किसी के विश्वास पर हावी हो जाता है और उसे बुराइयों में शामिल कर देता है। इस वासना की अधिकता कई बुराइयों को जन्म देती है। उदाहरण के लिए, कोई उन दवाओं के बारे में चिंतित है जो इस क्षमता को बढ़ाती हैं। यह जंगली जानवरों और सांपों से घिरे होने जैसा है और जब वे लापरवाह हो जाते हैं जो किसी को भागने की अनुमति देता है, तो व्यक्ति उन्हें अपनी प्राकृतिक प्रवृत्ति के अनुसार खुद पर हमला करने के लिए जगाता है। इस वासना की अधिकता को पूरा करने के लिए व्यक्ति को हर तरह के अपमान का सामना करना पड़ता है, यहां तक कि इसकी गुलामी को भी स्वीकार करना पड़ता है। मनुष्य अपनी बुद्धि और ज्ञान के मृत शरीर को इस वासना के चरणों में डाल

देता है, भले ही मनुष्य की रचना की गई हो ताकि अन्य सभी रचनाएँ उनका पालन करें। मनुष्य का निर्माण इसलिए नहीं किया गया है कि कोई अपने वासनाओं और वासनाओं का गुलाम बन जाए और उनकी सेवा करने में कोई कसर न छोड़े। यह एक ऐसे दिल की बीमारी है जिसका कोई और उद्देश्य नहीं है। किसी को उसके प्रारंभिक चरण में वासना से बचाया जा सकता है। एक बार जब यह मजबूत हो जाता है और पूरी तरह से [किसी के मन, हृदय और आत्मा में] स्थापित हो जाता है, तो इसे मिटाना बहुत मुश्किल हो जाता है। धन, यश, संपत्ति और संतान के प्रेम की भी यही स्थिति होती है क्योंकि उनका प्रेम पूरी तरह से जुड़ने के बाद समाप्त नहीं होता है। यह इस हद तक होता है कि विभिन्न खेलों, इत्मीनान से गतिविधियों [और अन्य गतिविधियों, जुनून और व्यसनों] में व्यक्ति की रुचि होती है कि वह दुनिया की किसी भी चीज़ को महत्व नहीं देता है और उनके सामने विश्वास करता है। ये चीजें हर समय व्यक्ति को परेशान और बेचैन रखती हैं। जो प्रारंभिक अवस्था में वासना की आग (जुनून और व्यसन जो व्यक्ति को सत्य के मार्ग से विचलित करते हैं और किसी भी आध्यात्मिक आकांक्षा को नष्ट कर देते हैं) को बुझा देता है, वह उस व्यक्ति की तरह है जो चाहता है कि घोड़ा दरवाजे से प्रवेश न करे। इसलिए, जब भी वह अपना चेहरा दरवाजे की ओर मोड़ता है, तो कोई उसकी लगाम पकड़ता है और उसे दूर खींच लेता है। जो आग भड़कने के बाद उसे बुझाने की कोशिश करता है, वह उस व्यक्ति की तरह है जो पहले घोड़े को दरवाजे से प्रवेश करने की अनुमति देता है और जब वह प्रवेश करता है, तो वह उसकी पूंछ पकड़ लेता है और उसे बाहर निकालने की कोशिश करता है। क्या घोड़ा तब विरोध नहीं करेगा और विद्रोही नहीं होगा? दोनों स्थितियों के बीच कितना बड़ा अंतर मौजूद है? इसलिए, शुरुआती चरणों में देखभाल और सावधानी बरतना बेहतर होता है। जब कोई बीमारी गंभीर हो जाती है, तो उसे ठीक करने के लिए जबरदस्त प्रयास और संघर्ष करना पड़ता है। यह भी निंदनीय है कि कोई व्यक्ति अमानवीय बनने की इस क्षमता को खो देता है। संयम का स्तर यह है कि कोई व्यक्ति वासना के अधीन नहीं होता है, बल्कि इसके बजाय, वासना बुद्धि और ईश्वरीय कानून के अधीन होती है और उनके निर्देशों का पालन करती है। इस वासना की अधिकता (गुप्तांगों की) भूख और विवाह के माध्यम से ठीक की जा सकती है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

يامعشر الشباب من استطاع منكم النكاح فليتزوج فمن لم يستطع
فعليه الصيام فانه له وجاء

"हे नौजवानों! आप में से जो भी शादी करने में सक्षम है, उसे ऐसा करना चाहिए और जो शादी करने में सक्षम नहीं है [जीवन में अपनी स्थिति के कारण वैवाहिक जिम्मेदारियों को पूरा करने में सक्षम नहीं होने के कारण] उसे उपवास करना चाहिए क्योंकि उपवास ऐसे व्यक्ति के लिए, एक निष्क्रिय बनाने का एक तरीका है [शारीरिक अंतरंगता की इच्छा के संदर्भ में उपवास किसी के जुनून और वासनाओं को नियंत्रण में रखने के लिए एक आंतरिक आत्म नियंत्रण विकसित करने में मदद करता है]।

आंखों के व्यभिचार से सुरक्षा की उत्कृष्टता: जो ऐसा करने का अवसर होने के बावजूद खुद को व्यभिचार से बचाता है, वह वह है जो खुद को आंखों के व्यभिचार से बचाता है। यह ज्ञात होना चाहिए कि व्यभिचार का प्रारंभिक बिंदु आंख है। इसकी सुरक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। चूँकि आँखों को यह देखने से रोकना अधिक कठिन है [जो उन्हें नहीं देखना चाहिए], लोगों ने इस बारे में लापरवाही करना शुरू कर दिया है (अपनी आँखों को यह देखने से बचाना कि क्या अनैतिक और देखने के लिए अनुचित माना जाता है), और यह सोचना शुरू कर दिया है कि यह कोई बड़ी बात नहीं है, और इसके पाप को महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं [रोकने के लिए पर्याप्त] हालांकि सभी नुकसानों का शुरुआती बिंदु आंखें हैं। पहली दृष्टि, यदि किसी उद्देश्य या इरादे की कोई भागीदारी नहीं है, तो [ईश्वरीय रूप से] क्षमा किया जाता है, लेकिन दूसरी नज़र के लिए गणना और जवाबदेही होती है [जो आमतौर पर एक इरादे और उद्देश्य के साथ किया जाता है]। क्योंकि नजर से दिल में वासना का बीज बोया जाता है। हालांकि, अगर आंखों की रक्षा की जाती है और [सभी प्रकार की अनुचित चीजें] देखने से रोका जाता है तो दिल कई नुकसानों से सुरक्षित रहता है।

अध्याय 4- अनर्गल भाषण के अपूरणीय नुकसान

ग़ज़ाली की चौथी पुस्तक उनके महान *कृति "इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के लिए पथ के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में इस संकाय के अनर्गल भाषण और बेईमान उपयोग के कारण होने वाली आपदाओं से संबंधित है। नुकसान किया जाता है और व्यक्तियों, समाजों और पूरे राष्ट्रों के बीच संघर्ष बोए जाते हैं, जिससे दुश्मनी और यहां तक कि युद्ध भी होते हैं जब अधिकार वाले लोग कथित विरोधियों के खिलाफ अपनी जीभ फैलाते हैं। इसके परिणामस्वरूप पूरा राष्ट्र अंतहीन संघर्षों में घिर जाता है। व्यक्तिगत स्तर पर, अनर्गल और अविवेकपूर्ण बातचीत से लोगों के बीच संबंध खराब और टूटे हो सकते हैं, और दोस्ती दुश्मनी में बदल सकती है जिससे आपसी नफरत हो सकती है जो नियंत्रण से बाहर हो सकती है। अनर्गल भाषण बोले गए शब्दों तक ही सीमित नहीं है। प्रकाशित सामग्री के रूप में लिखित शब्द नुकसान पहुंचाने और आंतरिक और बाहरी शांति को नष्ट करने वाले संघर्षों को बोने में अधिक शक्तिशाली होते हैं। इसलिए, जीभ की फसल हर स्तर पर घातक और विनाशकारी हो सकती है। ग़ज़ाली अनियंत्रित भाषण के नुकसान, अनर्गल भाषण में मजबूर होने के कारणों, और लोगों और राष्ट्रों के बीच शांति, सम्मान और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए इस बीमारी का इलाज करती है। किसी की आत्मा के भीतर सकारात्मकता, सद्भाव और शांति पैदा करने और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने का कोई भी उपक्रम, इस मानव संकाय को रोकने पर बहुत अधिक निर्भर करता है जो एक संभावित बिगाड़ने वाला है। "जीभ के

दुरुपयोग के नुकसान" नामक पुस्तक में अत्यधिक महत्व के इस विषय पर ग़ज़ाली का उत्कृष्ट उपचार यहां संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है [10]:

जीभ - एक महान आशीर्वाद: जीभ ईश्वर के आशीर्वाद से एक महान आशीर्वाद है और [दिव्य] रचनाओं की सूक्ष्मताओं से एक सूक्ष्मता है। इसका आकार छोटा हो सकता है लेकिन इसकी आज्ञाकारिता [ईश्वरीय आज्ञाओं के प्रति] जबरदस्त है और पाप भी जबरदस्त है। विश्वास (*इमान*) और अविश्वास (*कुफ्र)* दोनों की वास्तविकताओं को जीभ के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। पहली उल्लिखित चीज (विश्वास) [ईश्वरीय] आज्ञाकारिता का शिखर है और दूसरी उल्लिखित बात (अविश्वास) [ईश्वरीय] अवज्ञा की चरम सीमा है। सब कुछ चाहे वह अस्तित्व में हो या नहीं, सृष्टिकर्ता हो या सृष्टि, काल्पनिक हो या वास्तविक, अनुमानित या अंधविश्वास, जीभ पर आता है [और इसके द्वारा व्यक्त किया जाता है] और यह या तो इसकी पुष्टि करता है या इनकार करता है। जो कुछ भी ज्ञान के दायरे में है, चाहे वह सत्य हो या असत्य, जीभ के माध्यम से विस्तृत किया जाता है। यह एक ऐसी विशेषता है जो जीभ को अन्य सभी [शारीरिक] अंगों से अलग करती है। आंख की पहुंच रंगों और रूपों तक ही सीमित है, कानों के अधिकार क्षेत्र का दायरा सिर्फ ध्वनियां हैं, हाथों को केवल उन चीजों तक बढ़ाया जा सकता है जिनके पास भौतिक अस्तित्व है, और सभी [शारीरिक] अंगों की स्थिति भी यही है। जीभ उनमें से एकमात्र ऐसा है जिसके अधिकार क्षेत्र का एक विस्तृत और विस्तृत क्षेत्र है। जिस तरह जीभ अच्छाई के क्षेत्र में दौड़ने में सक्षम है, उसी तरह बुराई के मैदान में उसे हराने वाला कोई नहीं है। इसलिए इसे नियंत्रण में रखना जरूरी है। जो अपनी जीभ पर नियंत्रण नहीं रखता है, शैतान उसे जो चाहे कह देता है और उसे बुरे अंत की ओर ले जाता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

ولا يكب الناس فى النار على مناخرهم الا حصائد السنتهم

"लोग, अपनी जीभ से बोई गई फसल काटने के लिए, उनकी नाक से नरक में फेंक दिए जाएंगे।

केवल वही व्यक्ति जीभ की बुराइयों से खुद को बचा सकता है जो उस पर ईश्वरीय कानून (शरियाह) की बागडोर रखता *है*, और पैगंबर के तरीके (सुन्नत) की जंजीरों को रखता *है*, और इसे केवल तभी मुक्त करता है जब उसे किसी ऐसी चीज के बारे में बात करने की आवश्यकता होती है जो सांसारिक मामलों के साथ-साथ परलोक के लिए भी फायदेमंद हो। इसके अलावा, कोई इसे हर उस चीज से रोकता है जिसकी शुरुआत और अंत के परिणामस्वरूप बुरे परिणाम हो सकते हैं।

हालांकि, यह पता लगाना कि किस बारे में बात करना अच्छा है और क्या बुरा या बुरा, जहां बात करने के लिए जीभ को मुक्त करना बेहतर है और कहां यह बुरा है, बेहद मुश्किल है। अगर यह ज्ञात भी है, तो उस पर कार्य करना और भी कठिन है। सभी मानव अंगों में से, सबसे बड़ी संख्या में अवज्ञा [ईश्वरीय आदेशों के लिए जो सामान्य सार्वभौमिक मानव शालीनताओं से संबंधित हैं] जीभ के साथ होती है। ऐसा इसलिए क्योंकि न तो इसे हिलाने में दिक्कत होती है और न ही ऐसा करने में कोई थकान और आलस्य होता है। लोग जीभ के नुकसान से खुद को बचाने में आलस्य का प्रयोग करते हैं और इसकी बुराई को महत्वहीन मानते हुए इसे अनदेखा करते हैं, भले ही यह शैतान के शस्त्रागार में सबसे प्रभावी हथियार है [व्यक्तियों, समुदायों और राष्ट्रों के बीच कलह, अराजकता, उथल-पुथल और खुले युद्ध के लिए बोने के लिए]। यह जीभ के माध्यम से है, शैतान परमेश्वर के सेवकों को हराने में सक्षम है और उन्हें गुमराह करने के मार्ग पर चलने के लिए मजबूर करता है। आने वाले पन्नों में, परमेश्वर द्वारा दी गई क्षमता के अनुसार, हम जीभ के नुकसानों को अलग से और बड़े विस्तार से सूचीबद्ध करेंगे, सभी नुकसानों की सीमाओं और परिणामों का उल्लेख करेंगे, और उनसे खुद को बचाने की रणनीतियों का उल्लेख करेंगे। जीभ के कुल बीस नुकसान होते हैं। उन्हें समझाने से पहले, जीभ के [दुरुपयोग] और मौन की उत्कृष्टता के खतरों का उल्लेख सबसे पहले किया जाएगा।

जीभ का बड़ा खतरा और मौन की उत्कृष्टता

यह ज्ञात होना चाहिए कि जीभ का खतरा बहुत बड़ा है और इससे बचाव का एकमात्र तरीका मौन है। इसलिए, ईश्वरीय कानून ने मौन की प्रशंसा की है और अपने अनुयायियों को चुप रहने के लिए राजी किया है [अनावश्यक रूप से बात न करके]। इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

من صمت نجا

"जो चुप रहा, उसने मोक्ष प्राप्त किया (ईश्वर के सामने खड़े होने सहित कई नुकसानों और खतरों से मुक्ति और सुरक्षा, जो ईश्वरीय क्षमा और स्वीकृति प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है)। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिजी* भविष्यद्वक्ता साथी अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

الصمت حكم وفاعله قليل

"मौन ज्ञान है, लेकिन केवल कुछ ही हैं जो इस पर कार्य करते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अद-दयालामी* भविष्यद्वक्ता साथी अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

उक़बा बिन अमीर (ख़ुदा उनसे प्रसन्न हो) ने कहा कि मैंने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पूछा: "मोक्ष का मार्ग क्या है?" उसने कहा:

امسك عليك لسانك وليسعك بيتك وابك على خطيئتك

"अपनी जीभ की रक्षा करें और नियंत्रित करें, आपका घर आपके लिए पर्याप्त होना चाहिए और आपकी गलतियों और गलत कामों पर आंसू बहाना चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिडी*)

सहल बिन साद अल-सादी पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं:

من يتكفل لي بما بين لحييه ورجليه اتكفل له الجن

"जो मुझे दो कानों (यानी, जीभ) और दो पैरों (यानी, निजी अंगों) के बीच क्या है, इसकी पवित्रता की गारंटी देता है, मैं ऐसे व्यक्ति को स्वर्ग की गारंटी दूंगा। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी*)

من وقي شر قبقبه وذبذبه ولقلقه فقد وقي الشر كله

"जिसने अपने पेट, गुप्तांग और जीभ की बुराइयों से खुद को बचाया, वह सभी प्रकार की बुराइयों से सुरक्षित रहा। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अद-दयालामी* भविष्यद्वाणी के साथी अनस बिन मलिक के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

ये तीन अंग हैं; उसकी वासना लोगों का विनाश लाती है। इसलिए, पेट और निजी अंगों की वासना के बारे में विस्तार से बताने के बाद, मैंने जीभ के [दुरुपयोग] के नुकसान के बारे में विस्तार से बताना आवश्यक समझा। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उस चीज के बारे में पूछा गया जिसकी वजह से लोग स्वर्ग जाएंगे। उसने उत्तर दिया:

تقوى الله وحسن الخلق

"[पवित्र विस्मय, श्रद्धा और] ईश्वर (तकवा*)* का भय और सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (इखलाक)।

उनसे पूछा गया: "कृपया हमें यह भी बताएं कि लोगों को नरक में क्या ले जाएगा?" उसने उत्तर दिया:

الاجوفان الفم والفرج

"दो खोखली चीजों के कारण: मुंह और निजी अंग। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने भविष्यद्वाणी के साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर* तिर्मिधी *और* इब्ने माजा *को* इकट्ठा किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इस *हदीस* (भविष्यसूचक परंपरा) में, "मुंह" को जीभ के नुकसान के रूप में भी संदर्भित किया जा सकता है क्योंकि मुंह जीभ का निवास है और यह पेट को मुंह के रूप में भी संदर्भित कर सकता है, पेट भरने का मार्ग। मुआध बिन जबल (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पूछा: "हे ईश्वर के पैगंबर! क्या हम जो कुछ भी कहते हैं [यहां तक कि] उनके लिए जवाबदेही भी होगी [जैसे कि सिर्फ कुछ कहना, चाहे वह कुछ भी हो, यहां तक कि कोई बड़ी बात भी नहीं होनी चाहिए]? उस पर, उन्होंने उत्तर दिया:

تكلتك امك يا ابن جبل، وهل يكب الناس فى النار على مناخرهم
الا حصائد السنتهم

"हे इब्ने जाबाल! आपकी माँ आपके लिए रोए! लोगों को उनकी जीभ की फसल काटने के लिए उल्टा नरक में डाल दिया जाएगा। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने* तिर्मिज़ी, *हकीम* और *इब्ने माजा* को भविष्यद्वाणी के साथी मुआध बिन जबल के अधिकार पर संग्रह किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

अब्दुल्लाह बिन उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं, जिन्होंने कहा:

من كف لسانه ستر الله عورته ومن ملك غضبه وقاه الله عذابه ومن اعتذر الى
الله قبل الله عذره

"जो अपनी जीभ को [बेकार और बुरे कथनों से] रोकता है, परमेश्वर ऐसे व्यक्ति के दोषों को छुपाता है, और जो किसी के क्रोध को नियंत्रित करता है [जब कोई उचित और ऐसा करने का हकदार महसूस करता है, तब भी लोगों पर उसे निकालने और फटकारने से], परमेश्वर उसे अपने प्रतिशोध से बचाता है [अपने स्वयं के गलत कामों के लिए], और जो कोई भी परमेश्वर के सामने बहाना प्रस्तुत करता है, वह बहाना स्वीकार करता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया* भविष्यद्वाणी के साथी अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

यीशु मसीह (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हों) को एक ऐसी कार्रवाई के बारे में सूचित करने के लिए कहा गया था जो किसी को स्वर्ग तक ले जाएगा। उन्होंने जवाब दिया: "कभी मत बोलो"। प्रश्नकर्ता ने कहा: "यह संभव नहीं है"। फिर उन्होंने कहा, "अगर बोलना जरूरी है तो जो अच्छा है उसके अलावा कुछ भी मत कहो। एक बेडौइन (खानाबदोश रेगिस्तानी अरब आदमी) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के पास आया और एक ऐसी कार्रवाई के बारे में पूछा जो स्वर्ग की ओर ले जाएगा। उसने जवाब दिया:

اطعم الجائع واسق الظمان وامر بالمعروف وانه عن المنكر فان لم تطق
فكف لسانك الا من خير

"भूखों को खाना खिलाओ, प्यासे को पानी दो, अधिकार को आज्ञा दो, बुराई के खिलाफ उपदेश दो, यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते तो जीभ को अच्छे के अलावा कुछ भी कहने से रोकें। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया*)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اذا رأيتم المؤمن صموتا وقورا فادنوا منه فانه يلقن الحكمة

"जब आप एक आस्तिक को शांत और प्रतिष्ठित देखते हैं तो करीब आएं क्योंकि ऐसे व्यक्ति को [दिव्य रूप से] ज्ञान में निर्देशित किया जा रहा है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्ने माजाह* भविष्यद्वाणी के साथी अबू खालिद के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यीशु मसीह (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हों) ने कहा: "उपासना के दस भाग हैं। नौ का संबंध मौन से है और एक हिस्सा लोगों से भागने से संबंधित है।

मौन की श्रेष्ठता का कारण: बोलने में बहुत नुकसान होते हैं। गलतियाँ, झूठ, चुगली करना, कहानी सुनाना, आडंबर, अश्लीलता, दिखावा, आत्म-बड़ाई, झगड़ा, बेकार की बात, आत्म-प्रशंसा, अतिशयोक्ति, नुकसान पहुंचाना, लोगों के दोषों को सामने लाना और इस तरह के अन्य नुकसान जीभ के अलावा किसी और से संबंधित नहीं हैं। जीभ को हिलाने में कोई दर्द, प्रयास और थकान नहीं होती है। इसके बजाय, बोलने में आनंद होता है। किसी का अपना स्वभाव व्यक्ति को बात करने के लिए उकसाता है और शैतान भी उसे इसके लिए धक्का देता है [हृदय में अपने आक्षेपों के माध्यम से]। वे लोग जो [अनावश्यक रूप से और अत्यधिक बात करने के आदी हैं], वे शायद ही कभी अपनी जीभ को बोलने से रोकने में सक्षम होते हैं चाहे कोई अवसर हो या नहीं। इसके बजाय, वे परिणामों की परवाह किए बिना बात करना जारी रखते हैं। फिर भी, बोलने में कई खतरे हैं और मौन में सभी खतरों से सुरक्षा है। इसलिए, इसकी श्रेष्ठता और उत्कृष्टता कहीं अधिक है। मौन के अनगिनत लाभ हैं। व्यक्ति का साहस एकत्रित रहता है और विचार बिखरे नहीं पड़ते, व्यक्ति गरिमापूर्ण रहता है [मौन के परिणामस्वरूप]। मनन, दिव्य स्मरण और पूजा का समय होता है। दुनिया में बोलने के गलत परिणामों और उसके बाद के जीवन में इसकी जवाबदेही से छुटकारा मिलता है। भगवान ने कहा है:

مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ

"कोई एक शब्द भी नहीं बोलता है कि पास में एक पर नजर रखने वाला एक व्यक्ति के लिए तैयार है (यह उन दो स्वर्गदूतों का जिक्र कर रहा है जो हर इंसान के पास हैं, एक सभी अच्छे कर्मों को लिख रहा है और एक उस व्यक्ति के लिए मानवीय कार्यों के अपने संबंधित रजिस्टर में अपने सभी बुरे कर्मों को लिख रहा

है। इन रजिस्टरों को उस व्यक्ति के लिए अंतिम न्याय के लिए न्याय के दिन परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किया जाएगा। (कुरान, अध्याय 50, श्लोक 18)

चुप रहने की उत्कृष्टता के संबंध में यहां एक उत्कृष्ट तर्क दिया गया है। वाणी चार प्रकार की होती है। पहले प्रकार का इसमें केवल नुकसान है। दूसरे प्रकार के इसमें केवल लाभ हैं। तीसरे प्रकार के लाभ और हानि दोनों हैं। चौथे प्रकार का न तो कोई लाभ है और न ही हानि। जहां तक भाषण के प्रकार का सवाल है जिसमें केवल नुकसान है, इससे दूर रहना और चुप रहना अनिवार्य है। वही निर्देश भाषण के लिए लागू होता है जिसमें लाभ और हानि दोनों होते हैं, बशर्ते नुकसान लाभ से अधिक हो। जिस प्रकार का न तो लाभ है और न ही हानि है, वह बेकार है और उससे चुप रहना बेहतर है क्योंकि इसमें लिप्त होने से व्यक्ति का समय बर्बाद हो रहा है और यह एक सर्वोच्च हानि है। अब केवल चौथा प्रकार बचा है [जो कि वह प्रकार है जिसमें केवल लाभ है]। इस तरह, भाषण के चार में से तीन भाग चले जाते हैं और केवल एक हिस्सा बचता है और इसमें खतरे और नुकसान की संभावनाएं मौजूद होती हैं। कभी-कभी, आडंबर, कृत्रिमता, अलंकरण, चुगली करना, आत्म-प्रशंसा और अन्य बुराइयां भाषण में इस तरह से घुस जाती हैं कि वक्ता को इसका एहसास भी नहीं होता है। इसीलिए, लाभकारी बात और बातचीत करने वाला भी खतरों से खेलने वाले की तरह है। एक व्यक्ति जो जीभ से संबंधित नुकसान की सूक्ष्मताओं को समझता है, उसे यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा कि इस संबंध में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की नीचे दी गई कहावत इस विषय पर अंतिम शब्द की स्थिति को बरकरार रखती है:

من صمت نجا

"जो चुप रहा, उसने मोक्ष प्राप्त किया (ईश्वर के सामने खड़े होने सहित कई नुकसान और खतरों से मुक्ति और सुरक्षा, जो ईश्वरीय क्षमा, स्वीकृति और अंतरंगता प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है)। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिज़ी* भविष्यद्वक्ता साथी अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को कुछ शब्दों में अत्यंत सार्थक बातें कहने की क्षमता प्रदान की गई थी और उन्हें ज्ञान का अमूल्य रत्न प्रदान किया गया था। उनकी धन्य जीभ से निकलने वाला हर शब्द उसमें अर्थों और ज्ञान का एक अथाह महासागर है। इस अथाह महासागर के तल से गोता लगाना और मोती निकालना केवल चयनित विद्वानों का काम है (जो अपने ईश्वर के भय, सत्य के प्रति पूर्ण समर्पण और अपनी आत्मा की अत्यंत शुद्धता के साथ इसका पालन करने में ईमानदारी के कारण ज्ञान में दृढ़ता से समाए हुए हैं)। भविष्यवाणी भाषण के गहरे आंतरिक ज्ञान को समझना हर किसी के दायरे में नहीं है [चाहे वह विद्वान हो या नहीं]।

जीभ या वाणी के दुरुपयोग के नुकसान

जीभ का पहला नुकसान – बेकार की बात: किसी के शब्दों को उन सभी नुकसानों से बचाना बेहतर है जिनका उल्लेख अभी किया गया है जैसे कि चुगली करना, किस्सा सुनाना, झूठ बोलना और वाद-विवाद करना, आदि, और केवल वही बातें कहें जो अनुमेय हैं और उन्हें कहने से वक्ता या श्रोता को नुकसान नहीं होता है। जीभ से बोली जाने वाली कुछ अनुमेय और हानिरहित बातें ऐसी हैं जिन्हें बोलने की आवश्यकता नहीं है। ये बेकार और गैर-लाभकारी चीजें हैं। उनमें समय की बर्बादी के साथ-साथ परलोक की जवाबदेही और कुछ बेहतर को पीछे छोड़ने और उसे कुछ हीन के लिए बदलने का कार्य भी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर वक्ता बोलने के बजाय अपने दिल और दिमाग को ईश्वर के अस्तित्व (धत) और दिव्य गुणों (सिफत) में चिंतन करने के लिए प्रवृत्त करता है, तो यह एक के लिए बेहतर होता। यह बहुत संभव था कि इस चिंतन के परिणामस्वरूप, ईश्वरीय आशीर्वाद के द्वार एक के लिए खुल गए होंगे और हृदय को एक विस्तार (स्पष्टता, रोशनी, लंपटता) प्राप्त हुआ होगा। बोलने के बजाय, यदि किसी ने परमेश्वर की महिमा की होती और ईश्वरीय स्मरण में उसकी पवित्रता और एकता व्यक्त की होती, तो यह उसके लिए बेहतर होता। कितने शब्द ऐसे हैं कि अगर ऐसा एक शब्द भी बोला जाता है, तो स्वर्ग में एक महल बन जाता है जिसके परिणामस्वरूप [उन्हें बोलने वाले के लिए]। जो खजाना पाने में सक्षम है लेकिन पत्थर इकट्ठा करना शुरू कर देता है, उसे दुर्भाग्य के अलावा और कुछ भी नहीं कहा जाएगा? यह एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जो ईश्वरीय स्मरण को त्याग देता है और इसके बजाय, एक बेकार और गैर-लाभकारी कार्य में व्यस्त हो जाता है। भले ही ऐसा करने के लिए कोई पाप नहीं कर रहा है, लेकिन क्या यह कम नुकसान है कि एक व्यक्ति ने बहुत अधिक लाभ नहीं कमाया और जो काम में लगा हुआ है, उससे कोई लाभ नहीं होगा? पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

فان المؤمن لا يكون صمته الا فكرا ونظره الا عبرة ونطقه الا ذكرا

"एक आस्तिक की चुप्पी चिंतन है, दृष्टि सबक प्राप्त कर रही है, और वाणी दिव्य स्मरण है।

किसी व्यक्ति की वास्तविक संपत्ति समय है। यदि कोई बेकार के प्रयासों में समय का उपयोग करता है और इस संपत्ति को परलोक के लिए जलाशय के रूप में नहीं बचाता है, तो उसे नुकसान के अलावा और क्या मिलेगा? इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

من حُسن اسلام المرء تركه ما لا يعنيه

"जो बेकार है उसे त्यागना किसी के इस्लाम की सुंदरता का संकेत है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने भविष्यद्वाणी के साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर* तिर्मिधी *और* इब्ने माजा *को* इकट्ठा किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

जो बेकार काम करता है वह कयामत के दिन जवाबदेही से बच नहीं पाएगा जो कि सजा का भी एक रूप है। अबू धर (रश्मा उनसे प्रसन्न हो) ने बताया कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उनसे पूछा: "क्या मुझे आपको एक ऐसे काम के बारे में नहीं बताना चाहिए जो शरीर पर हल्का है और कयामत के दिन के तराजू में भारी है? उसने उत्तर दिया, "हे ईश्वर के दूत! हां, कृपया हमें बताएं"। उसने उत्तर दिया:

هو الصمت وحسن الخلق وترك ما لا يعنيك

"वह [कर्म] मौन, अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार और आंतरिक स्वभाव है, और बेकार [क्रिया या भाषण] को त्याग देना है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया*)

इब्ने अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो), एक भविष्यद्वाणी साथी, ने कहा: "पांच चीजें हैं जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद हैं: एक बेकार और गैर-लाभकारी बात नहीं करना है क्योंकि यह अनावश्यक और अतिरिक्त है और इसमें हमेशा पाप का खतरा रहता है। दूसरा यह कि अगर कोई लाभकारी बात करता है, तो भी पहले उसे यह देखना चाहिए कि लाभकारी बात करने का भी कोई अवसर है या नहीं, क्योंकि कभी-कभी अवसर और अवसर के बिना की गई लाभकारी बात भी पीड़ा का स्रोत हो सकती है। तीसरा यह कि किसी को सहिष्णु या मूर्ख व्यक्ति के साथ बहस नहीं करनी चाहिए, क्योंकि एक सहिष्णु व्यक्ति के साथ बहस करना एक क्रोधित करना है और एक मूर्ख व्यक्ति के साथ बहस करना अपने आप को दर्द के अधीन करना है। चौथा यह कि किसी को अपने भाई का उल्लेख इस तरह से करना चाहिए कि वह खुद का उल्लेख करना चाहता है। पांचवां यह है कि कोई कुछ भी करता है, इसे इस निश्चितता के साथ किया जाना चाहिए कि यदि यह कार्य अच्छा है, तो इसे पुरस्कृत किया जाएगा लेकिन यदि यह बुरा और बुरा है, तो इसका परिणाम [परलोक में] दंड होगा। बेकार की बातें कई कारणों से की जाती हैं। कभी वक्ता को अनावश्यक बातें पूछने का लालच होता है, तो कभी उसे फैलाने की आदत होती है या वह श्रोता को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। कभी-कभी कोई श्रोता के प्यार में पड़ जाता है और श्रोता को लंबे समय तक अपनी ओर झुकाए रखने के लिए बातचीत को लंबा खींचना किया जाता है। कभी-कभी, कहानियां [अलग-अलग लोगों के बारे में] एक शगल के रूप में बताई जाती हैं। इस सब का इलाज यह है कि किसी के सामने मृत्यु पर विचार किया जाए और यह सोचें कि मुझे हर बोले गए शब्द के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा। मेरी सांसें मेरी संपत्ति हैं और जीभ मेरा जाल है [अन्य सांसारिक लाभों के संदर्भ में कुछ कीमती पकड़ने के लिए]। किसी की संपत्ति को बर्बाद करना और जाल को अप्रयुक्त [या गलत चीजों में इस्तेमाल किया गया] छोड़ना बुद्धिमानी नहीं है। यह बेकार की बातों का ज्ञान-आधारित इलाज है। इसका व्यावहारिक इलाज यह है कि एकांत अपनाना या कभी-कभी लाभकारी मामलों से भी अपनी जीभ को रोक देना ताकि उसे बेकार की बातें न कहने की आदत हो जाए।

दूसरा नुकसान – अत्यधिक बोलना: अत्यधिक बोलना भी एक अवांछनीय कार्य है। इसमें बेकार की बातें करने के साथ-साथ लाभकारी बातें भी शामिल हैं जो आवश्यकता की सीमा से अधिक हैं। लाभकारी भाषण संक्षिप्त हो सकता है। एक व्यक्ति जो संक्षिप्त होने की क्षमता रखता है, लेकिन फिर भी एक के विपरीत दो शब्दों का उपयोग करता है, उसे अत्यधिक बात करने वाला माना जाएगा, भले ही इसका मतलब [सार्वजनिक] भाषण या जोर के रूप में हो, भले ही इसमें कोई पाप न हो। अता इब्न अबी-रबाह (ईश्वर उन पर दया करे - एक संत और ज्ञानवादी) ने कहा: "आपके सामने ऐसे लोग थे जो बेकार की बातों से नफरत करते थे। उनके लिए, ईश्वर की पुस्तक, पैगंबर के मार्ग से संबंधित एक बातचीत के अलावा, सही और बुराई को मना करना, और सबसे महत्वपूर्ण सांसारिक जरूरतों के लिए, वे हर दूसरी बात को अत्यधिक मानते थे। यह बताना मुश्किल है कि कौन सी बात, या बातचीत अत्यधिक है, और कौन सी

अनावश्यक है क्योंकि इसके लिए कोई सीमा नहीं है। हालाँकि, कुरान ने लाभकारी और आवश्यक बातचीत के लिए एक सीमा प्रदान की है जैसा कि ईश्वर कहते हैं:

لَّا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَىٰهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَٰحٍۭ بَيْنَ ٱلنَّاسِ

उन्होंने कहा, 'आम लोगों की ज्यादातर चर्चाओं में कोई फायदा नहीं होता। हालांकि, कुछ ऐसे भी हैं जो दूसरों को दान करने, या कुछ नेक काम करने या लोगों के बीच आपसी सुलह और सुधार लाने के लिए राजी करते हैं। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 114)

हजारों सावधानियों के साथ किसी की प्रशंसा करते समय भी मुंह से कुछ ऐसे शब्द निकलते हैं जो तथ्यों के खिलाफ होते हैं और बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए जाते हैं। भले ही प्रशंसा तथ्यात्मक हो, एक खतरा है कि शैतान किसी को अनावश्यक बातें कहने के लिए प्रेरित कर सकता है। मुजाहिद (खुदा उस पर दया करे) ने कहा: "एक इंसान द्वारा बोले गए हर शब्द को इस हद तक लिखा और दर्ज किया जाता है कि एक पिता अपने बेटे से कहता है कि वह उसके लिए एक निश्चित चीज खरीदेगा और वास्तव में ऐसा करने का उसका इरादा नहीं था, यह उसके लिए झूठ के रूप में दर्ज किया जाएगा। हसन अल-बसरी (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "हे मनुष्य! आपके कर्मों का रजिस्टर खुला हुआ है और उस पर आपके कर्मों को लिखने के लिए दो स्वर्गदूतों को नियुक्त किया गया है। अब यह आपकी इच्छा पर निर्भर करता है कि आप क्या करना चाहते हैं, चाहे आप कम या ज्यादा करें, आपका हर काम दर्ज किया जाएगा और न्याय के दिन, कर्मों का यह रजिस्टर आपके पक्ष में या आपके खिलाफ एक बड़ा सबूत होगा। एक परंपरा के अनुसार, पैगंबर सुलैमान (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपने एक जिन्न को कहीं भेजा और अपने पीछे कुछ अन्य *जिन्नों* को भेजा ताकि वे उन्हें बता सकें कि वह कहां गए और उन्होंने क्या किया। वे वापस आए और उसे बताया कि वह एक बाजार में गया था और वहां पहुंचने के बाद, उसने आकाश की ओर देखा और फिर नीचे मनुष्यों की ओर देखा। फिर उसने अपना सिर हिलाया और आगे बढ़ गया। पैगंबर सुलैमान इस पर आश्चर्यचकित हुए और उनसे इसके बारे में पूछा। उन्होंने उत्तर दिया: "मुझे स्वर्गदूतों पर आश्चर्य हुआ कि वे कितनी जल्दी अपने सिर पर बैठकर मनुष्यों के कर्मों को लिख रहे थे और फिर मुझे आश्चर्य हुआ कि मनुष्य कितनी जल्दी गुमराह हो जाते हैं [गलती में]"। इब्राहिम तैय्यामी (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "एक आस्तिक बोलने से पहले देखता है कि यह उसके लिए फायदेमंद है या हानिकारक। कोई तभी बोलता है जब यह फायदेमंद हो, अन्यथा चुप रहता है, और बुराई और पाप के प्रति झुकाव रखने वाला व्यक्ति बिना सोचे-समझे बोलता है। एक बुद्धिमान ने कहा था: "अगर कोई सभा में बात करना पसंद करता है तो उसे मौन अपनाना चाहिए और अगर कोई चुप रहना पसंद करता है तो उसे बात करनी चाहिए"। ज़ैद इब्ने अबी हबीब (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "एक विद्वान के लिए परीक्षा सुनने की तुलना में बात करने में है क्योंकि कोई व्यक्ति [सत्य की], अनुनय [मन में स्वार्थ के साथ], और किसी की वाणी की सजावट (अलंकरण) के खतरों के लिए उत्तरदायी है"। इब्राहिम बिन अधम (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "एक मनुष्य धन और वाणी की अधिकता से नष्ट हो जाता है"।

तीसरा नुकसान - गलत का उल्लेख: गलत को एक ऐसी बात के रूप में संदर्भित किया जाता है जो पाप से संबंधित है। उदाहरण के लिए, विपरीत लिंग की सुंदरता और शारीरिक विशेषताओं के बारे में बात

और बातचीत, रोमांटिक कहानियां सुनाना, पापों के जमावड़े का वर्णन करना, अमीरों की ज्यादती, शासकों के बुरे कर्म, ये सभी मामले गलत हैं और उनमें लिप्तता निषिद्ध है (*हराम)* / अनावश्यक बात करना मना नहीं है [ईश्वरीय कानून में], यह केवल नापसंद है और अनुशंसित नहीं है, इसी तरह अत्यधिक बात करना भी मना नहीं है, इसे नापसंद किया जाता है, हालांकि, बुरी बात निषेध के दायरे में आती है। हालांकि, यह कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति अनावश्यक विषयों के बारे में बहुत कुछ बोलता है, वह गलत बातों में लिप्त होने के करीब है [इसलिए, इससे बचना बेहतर है]। आजकल मनोरंजन की बात करना एक खास शौक है और लोग उसके लिए विशेष समारोहों का आयोजन करते हैं। इन सभाओं के विषय कुछ गलत होते हैं, किसी का मजाक उड़ाया जाता है, किसी के दोष उजागर होते हैं, किसी के दोष खोजा जाते हैं, किसी के खिलाफ साजिश की जाती है, आदि। वास्तव में, ऐसी कोई भी सभा पाप से रहित नहीं है। ये इतने अलग-अलग प्रकार के पाप हैं कि इनकी गिनती करना आसान नहीं है। उनसे छुटकारा पाने का तरीका यह है कि आप अपनी बातचीत और बातचीत में खुद को धार्मिक [और आध्यात्मिक संघर्ष से संबंधित] मामलों और आवश्यक सांसारिक जरूरतों तक सीमित रखें। बुरे मामलों का उल्लेख करना एक खतरनाक प्रस्ताव है और व्यक्ति इसका आदी हो जाता है, नष्ट हो जाता है [आध्यात्मिक रूप से किसी के भौतिक और बाहरी जीवन पर भी नतीजों के साथ], भले ही कोई इसे तुच्छ समझ सकता है और इसके खतरों को महसूस और समझ नहीं सकता है। हालाँकि, न्याय के दिन, यह प्रकट होगा कि जिस पाप को तुच्छ माना जाता है, उसने एक के लिए इतना विनाश लाया है। बिलाल बिन अल-हार्थ (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो), पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाई गई है:

ان الرّجل يتكلم بالكلمة من رضوان الله ما يظن ان تبلغ به ما بلغت فيكتب
الله بها رضوانه الى يوم القيام وان الرجل يتكلم بالكلمة من سخط الله ما يظن
ان تبلغ به ما بلغت فيكتب الله عليه بها سخطه الى يوم القيامة

"एक आदमी एक ऐसा शब्द कहता है जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है और सोचता है कि वहां उसे उससे कोई महत्वपूर्ण ईश्वरीय अनुमोदन नहीं मिला होगा; हालाँकि, परमेश्वर ने न्याय के दिन तक उस वचन के लिए अपनी दिव्य स्वीकृति लिखी है। कभी-कभी, एक आदमी एक ऐसा शब्द कहता है जो परमेश्वर को अप्रसन्न करता है और सोचता है कि वह इससे अप्रसन्न नहीं होगा, लेकिन उस एक शब्द के कारण, परमेश्वर न्याय के दिन तक अपनी दिव्य अप्रसन्नता लिखता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्ने माजा* और *तिर्मिज़ी)*

बुरी और गलत बातें चुगली करने, कहानी सुनाने और दोष खोजने से अलग प्रकार है और यह निषिद्ध मामलों का उल्लेख करने से संबंधित है और ऐसा करने की कोई धार्मिक आवश्यकता नहीं है। इसमें [धार्मिक मामलों में] नवाचारों का उल्लेख करना, पथभ्रष्ट विचारधाराओं का उल्लेख करना और यहां तक कि भविष्यद्वाणी के साथियों के बीच आपसी मतभेदों का उल्लेख करना शामिल है [जो कलह बोने और सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है]।

चौथा नुकसान - लोगों की बातचीत और बहस में कटौती: जब लोग बात कर रहे हों तो उन्हें काटना मना है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لا تمار اخاك ولا تمازحه ولا تعده موعدا فتخلفه

"अपने भाई को [जब वह बात कर रहा हो] न बांधें, उसके साथ अभद्र मजाक न करें और ऐसा वादा न करें जिसे आप पूरा नहीं कर सकते। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *भविष्यद्वाणी के साथी अब्दुल्ला इब्न अब्बास के अधिकार पर तिर्मिज़ी [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])*

ذروا المراء فانه لا تفهم حكمته ولا تؤمن فتنته

"बातचीत को काटना बंद करो क्योंकि इसमें कोई ज्ञान नहीं है जिसे समझा जा सकता है, और न ही कोई इसके नुकसान से दूर रह सकता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *भविष्यवक्ता साथी अबू दर्दा के अधिकार पर तबरनी [भगवान उनसे प्रसन्न हों])*

من ترك المراء وهو بنى له بيت فى اعلى الجنة ومن ترك المراء وهو مبطل
بنى له بيت فى ربض الجنة

"जो सही (या सत्य के पक्ष में) रहते हुए लोगों की बातचीत को काटना छोड़ देता है, वह ऐसे व्यक्ति के लिए स्वर्ग के उच्चतम स्तर पर एक घर बनाया जाएगा; और जो गलत (या झूठ के पक्ष में) होने पर लोगों की बातचीत को काटना छोड़ देता है, ऐसे व्यक्ति के लिए स्वर्ग के बीच में एक घर बनाया जाएगा।

यह कहा गया है कि विवाद [और तर्कों] के कारण [दिव्य] मार्गदर्शन का प्रकाश प्राप्त करने के बाद राष्ट्रों को गुमराह किया गया है। अनस बिन मलिक (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने कहा: "बातचीत को काटने और लोगों के साथ बहस करने से दिल की कठोरता होती है और उसी के कारण दिलों में दुश्मनी के बीज जमा हो जाते हैं"। बिलाल बिन साद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "जब आप किसी को आत्म-विचारित, झगड़ालू और अपनी राय पर आग्रही देखते हैं, तो जान लें कि ऐसे व्यक्ति को परलोक के नुकसान के लिए नियत किया गया है"। अबू अल-दर्दा (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने कहा: "हमेशा लोगों के साथ लड़ना या बहस करना ऐसे व्यक्ति के लिए पापी होने के लिए पर्याप्त है"। उमर (रइश्वर उस पर प्रसन्न हो) ने कहा: "तीन चीजों के लिए ज्ञान प्राप्त न करो और न ही तीन चीजों के कारण खुद को ज्ञान प्राप्त करने से रोको। जिन तीन चीजों के लिए ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहिए, वे हैं विवाद (और लोगों के साथ तर्क), गर्व और दिखावा। तीन चीजें जिनके लिए ज्ञान प्राप्त करने से नहीं रोकना चाहिए, वे हैं ज्ञान प्राप्त करने में शर्माना, ज्ञान प्राप्त करने से परहेज करना और अज्ञान से संतुष्टि प्राप्त करना। ईसा मसीह ने कहा: "जो बहुत झूठ बोलता है, वह अपनी सुंदरता को समाप्त पाता है, जो लोगों के साथ बहुत बहस करता है, वह अपनी गरिमा को आहत करता है, जो बहुत चिंता करता है वह बीमार हो जाता है, जिसका नैतिकता और शिष्टाचार खराब है, वह खुद को ईश्वरीय दंड में शामिल हो जाता है।

लोगों को काटने की परिभाषा: इसकी परिभाषा किसी की बातचीत में दोष ढूंढना और उस आधार पर उस पर आपत्ति करना है, चाहे यह दोष शब्दों, अर्थ या इरादे में हो। इस संबंध में, यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि आप जो भी बातचीत सुनते हैं, अगर वह सच है तो उसकी सच्चाई को प्रमाणित करें और यदि गलत है तो चुप रहें, बशर्ते कि यह धार्मिक मामलों के बारे में न हो। वक्ता को यह बताकर शब्दों में दोष पाया जाता है कि शब्द व्याकरण के नियमों के विरुद्ध हैं और शब्दों के वितरण में शब्दों के सही क्रम का पालन नहीं किया जाता है। शब्दों में ऐसी गलतियां कई कारणों से होती हैं। कभी-कभी, लोग भाषा से अच्छी तरह परिचित नहीं होते हैं, कभी-कभी लोग एक बात कहना चाहते हैं लेकिन मुंह से कुछ और निकलता है; शब्दों में गलती का कारण जो भी हो, आलोचना का कोई औचित्य नहीं है। शब्दों का अर्थ यह कहकर आपत्ति का लक्ष्य बन जाता है: "आपने अमुक गलत बात कही है, आपने अमुक राय में गलती की है, आपका विचार या राय सही नहीं है", आदि। इरादे की आलोचना यह कहकर की जाती है: "यह बात जो आप कह रहे हैं, हालांकि तथ्यों पर आधारित है, लेकिन आपका इरादा तथ्यों की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह कुछ और है"। ऐसे सभी मौकों पर चुप रहना अनिवार्य है। हालांकि, अगर सवाल करने का उद्देश्य ज्ञान और लाभ प्राप्त करना है, न कि दुश्मनी और आलोचना करने का अवसर खोजना, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। तर्क का उद्देश्य प्रतिद्वंद्वी को चुप कराना है, उसकी अज्ञानता, दोषों और कमियों की घोषणा करना है ताकि व्यक्ति अपमानित हो और लोग ऐसे व्यक्ति का उपहास करें। इस तरह के नापाक उद्देश्य का संकेत यह है कि यदि आपत्ति सत्य के लिए है, तो किसी अन्य उपयुक्त विधि का उपयोग करने के बजाय, व्यक्ति एक ऐसी विधि अपनाता है जो विरोधी के लिए अपमानजनक हो और एक पर अपनी श्रेष्ठता व्यक्त की जाए।

विवादों से दूर रहने और बातचीत बंद करने का तरीका: दोनों से खुद को बचाने का तरीका यह है कि अनुमेय मामलों में भी चुप रहें। ये दो बुराइयां प्रतिद्वंद्वी को बदनाम करने और अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के उद्देश्य से पैदा होती हैं। ये निचले स्व की दो ऐसी वासनाएं हैं जिन्हें नियंत्रित करना कठिन है। किसी की श्रेष्ठता की अभिव्यक्ति आत्म-धार्मिकता की श्रेणी से संबंधित है, जो बदले में स्वयं को उच्च और महान मानने की प्रतिक्रिया है। हालाँकि, सामर्थ और महानता केवल परमेश्वर के गुण हैं और केवल उसके लिए उपयुक्त हैं। उसी तरह, किसी को दोषपूर्ण और दीन समझना इस बात का संकेत है कि वह पशुवत स्वभाव रखता है क्योंकि एक जंगली जानवर दूसरे को चीर-फाड़ कर चोट पहुँचाना पसंद करता है। ये दो बुरे गुण अत्यंत निंदनीय और हानिकारक हैं। बहस करना और बातचीत को काटना इन [नीच और नकारात्मक] गुणों को बढ़ावा देता है [दूसरों को दोषपूर्ण और नीच मानने]। जो विवादित तर्कों और आलोचनाओं में लिप्त रहता है, वह इन दो विनाशकारी आंतरिक गुणों को विकास के लिए पोषण प्रदान करता रहेगा। विवाद और लोगों की बातचीत को काटना दोनों घृणित कार्यों की सीमा को पार कर जाते हैं, बल्कि यदि इसके कारण दूसरों को चोट पहुँचते हैं तो वे दोनों पाप हैं। जहां तक विवादित तर्कों और आलोचनाओं का सवाल है, कोई भी यह नहीं कह सकता कि वे दर्द का कारण नहीं बनते हैं। जिसके साथ बहस की जाती है, वह क्रोधित हो जाता है और उसी तरह से जवाब देने की कोशिश करता है और वे दोनों कुत्तों की तरह लड़ने लगते हैं। उनमें से हर एक दूसरे को इस हद तक नुकसान पहुंचाना और अपमानित करना चाहता है कि कोई सिर भी नहीं उठा पाएगा या ऐसी प्रतिक्रिया भी नहीं दे पाएगा कि लोग प्रतिद्वंद्वी में बुद्धि की कमी के बारे में आश्वस्त हो जाएं। यह एक बीमारी है और इसका इलाज उस अहंकार को मिटाना है जो किसी को श्रेष्ठता की भावना की ओर ले जाता है, और इसे व्यक्त करने का दुस्साहस भी

करता है और इसी तरह, इस पाशविक भावना को कुचला जा सकता है जो किसी को दूसरों को नीचा दिखाने के लिए उकसाता है।

इसके इलाज का विवरण अहंकार और आत्म-दंभ की निंदा (अध्याय 10) के अध्याय में समझाया जाएगा। यहां सिर्फ इतना ही कहा जा सकेगा कि किसी भी बीमारी का इलाज उस बीमारी के कारणों को दूर करने से होगा। लोगों की बातचीत और विवाद को बंद करने के कारण अहंकार, अभिमान और पाशविक गुण हैं। जब तक इन कारणों को दूर नहीं किया जाता, तब तक रोग दूर नहीं होगा। जब कोई काम लगातार किया जाता है तो वह आदत बन जाती है और दूसरी प्रकृति बन जाती है और उससे छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। इमाम अबू हनीफा (खुदा उन पर दया करे) ने दाऊद अल-ताई (ईश्वर उन पर दया करे) से एकांत और एकांत के कारण के लिए पूछा। उन्होंने जवाब दिया: "मैं एकांत में रहता हूं इसलिए मैं दूसरों के साथ न लड़ने का संघर्ष कर सकता हूं"। इमाम अबू हनीफा ने कहा, "यह कोई आध्यात्मिक संघर्ष नहीं है, बल्कि यह लोगों की सभाओं में जाने, उनकी बात सुनने और चुप रहने के लिए है। दाऊद अल-ताई ने कहा कि उन्होंने इस पर काम किया और महसूस किया कि इससे अधिक कठिन कोई अन्य आध्यात्मिक प्रयास नहीं हो सकता है। यह वास्तविकता भी है क्योंकि किसी को गलत बात कहते हुए सुनना और चुप रहना बहुत मुश्किल होता है, खासकर उस स्थिति में जब कोई अपनी गलती को सुधारने में सक्षम होता है। इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उस व्यक्ति को स्वर्ग की खुशखबरी दी, जो सही और सत्य पर होने के कारण अभी भी लोगों की बातचीत में कटौती नहीं करता है क्योंकि सत्य और सही को जानकर, गलत बात पर चुप रहना स्वयं के लिए बहुत मुश्किल है। विशेष रूप से, धर्मों और विश्वासों से संबंधित मामलों में सही बात व्यक्त करने की इच्छा प्रमुख है। तर्क पहले से ही किसी के स्वभाव का एक हिस्सा है और जब कोई सोचता है कि सही विश्वास दिखाने में भगवान की ओर से इनाम है, तो दिल उस दिव्य इनाम और प्रतिफल का लालची हो जाता है। इस तरह, ईश्वरीय कानून और व्यक्ति का स्वभाव दोनों, इन विवादित तर्कों में सहायता करते हैं। हालाँकि, यह सोचना कि ये वाद-विवाद और तर्क ईश्वरीय पुरस्कारों का स्रोत हैं, अपने आप में एक गलती है।

एक इंसान के लिए यह बेहतर है कि वह साथी सह-धर्मवादियों को कुछ भी कहने से बचना चाहिए; यदि कोई किसी को नवाचारों में शामिल पाता है [धार्मिक मामलों में जिसे बिदा के रूप में भी जाना जाता है], तो किसी को ऐसे व्यक्ति को निजी तौर पर चेतावनी देनी चाहिए [सार्वजनिक रूप से ऐसा करने के विपरीत जो आक्रोश और जिद की ओर ले जाता है]। कोई भी सार्वजनिक बहस को एक आदर्श के रूप में लेगा और सोचता है कि सभी धर्मों और विश्वासों के लोग अपने-अपने धर्मों की सत्यता को साबित करने के लिए ऐसा करते हैं और अपने विरोधियों को चुप कराने में उनकी सफलता पर विचार करते हैं। यह किसी के दिल में [धार्मिक मामलों में] नवाचार को मजबूती से स्थापित करेगा [इसे छोड़ने के विपरीत]। यदि कोई देखता है कि सलाह का नवाचार में शामिल व्यक्ति के दिल पर वांछित प्रभाव नहीं पड़ रहा है [विश्वास के मामलों में] और ऐसे व्यक्ति में सत्य को स्वीकार करने की कोई क्षमता नहीं बची है, तो उसे अपने स्वयं के सुधार में व्यस्त हो जाना चाहिए और दूसरे व्यक्ति को अकेला छोड़ देना चाहिए। जो वाद-विवाद करने का आदी होता है, और लोग ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा करते हैं और उसे सम्मान और सम्मान के साथ देखते हैं, तो ये विनाशकारी आंतरिक गुण व्यक्ति के हृदय में मजबूती से बैठ जाते हैं और मजबूत हो जाते हैं और इनसे छुटकारा पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। इसलिए, यदि किसी के दिल में, क्रोध, अहंकार, दिखावा, आत्म-धार्मिकता और वर्चस्व की इच्छा जैसे आंतरिक विकार जमा हो जाते हैं, तो उनके खिलाफ संघर्ष

करना बहुत मुश्किल हो जाता है। ऐसे ही एक गुण के खिलाफ संघर्ष करना मुश्किल है, यह कल्पना की जा सकती है कि उन सभी के खिलाफ एक साथ संघर्ष करना कितना कठिन होगा।

पांचवां नुकसान - शत्रुता और शत्रुता: यह भी एक निंदनीय [आंतरिक] विशेषता है। उनमें शत्रुता और शत्रुता का भी विवाद होता है, लेकिन इसका उद्देश्य किसी की संपत्ति या अधिकार को हड़पना होता है। परंपराओं ने इस नीच आंतरिक विशेषता या गुणवत्ता की निंदा व्यक्त की है। आयशा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से निम्नलिखित सुनाती हैं:

ان ابغض الرجال الى الله الالد الخصام

"परमेश्वर की दृष्टि में, लोगों में सबसे बुरा वह है जो झगड़ालू है और शत्रुता और शत्रुता से ग्रस्त है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी*)

एक ऋषि ने कहा: "शत्रुता और शत्रुता से बचें क्योंकि वे ईश्वर (दीन) के लिए किसी के मार्ग को नष्ट कर देते हैं"। कहा जाता है कि ईश्वर से डरने वाले और धर्मपरायण दूसरों से झगड़ा नहीं करते। बशर इब्ने अब्दुल्लाह (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "शत्रुता और दुश्मनी से बुरा कुछ भी नहीं है। यह ईश्वर के प्रति किसी की आस्था और मार्ग को नष्ट कर देता है, किसी की शालीनता और गरिमा को दोष देता है, जीवन के आनंद को समाप्त कर देता है, और हृदय ईश्वरीय स्मरण और चिंतन में शामिल होने के बजाय शत्रुता और शत्रुता की चिंताओं में फंस जाता है। यहां यह कहा जा सकता है कि यदि किसी के पास दूसरे के कारण अधिकार है जो इसे देने को तैयार नहीं है, तो उसे पाने का प्रयास करना चाहिए। निंदनीय विवाद या शत्रुता वह है जो झूठ पर आधारित है या ज्ञान के बिना किया जाता है, उदाहरण के लिए, एक वकील यह जाने बिना किसी पक्ष का समर्थन करना शुरू कर देता है कि सच्चाई कहां है। इसी तरह, वह विवाद या शत्रुता भी निंदनीय है जिसमें किसी के वैध अधिकार की मांग की जाती है लेकिन कोई उस पर समझौता नहीं करता है, लेकिन अधिकतम शत्रुता और शत्रुता प्रदर्शित करता है क्योंकि इसका उद्देश्य किसी के अधिकार की प्राप्ति नहीं है, बल्कि प्रतिद्वंद्वी को नुकसान पहुंचाना है। यह विवाद या शत्रुता भी निंदनीय है जिसमें आहत करने वाले शब्दों का उपयोग करना शामिल है, भले ही किसी के अधिकार को व्यक्त करने और किसी के तर्क को मजबूत करने के लिए उनकी आवश्यकता न हो। वह विवाद या शत्रुता भी निंदनीय है जो स्पष्ट रूप से किसी के अधिकार को प्राप्त करने के लिए है, लेकिन वास्तव में, इसका उद्देश्य प्रतिद्वंद्वी का अपमान और अपमान है, और इसकी प्रेरक शक्ति द्वेष और शत्रुता है। इस तरह के विवाद या शत्रुता के सभी कार्य निंदनीय हैं। यदि उत्पीड़ित बिना किसी शत्रुता, अतिशयोक्ति, विद्वेष और नुकसान पहुंचाने की इच्छा के बिना ईश्वरीय कानून के तरीके के अनुसार अपने दावे को स्पष्ट करता है, तो यह निषिद्ध नहीं है यदि किसी के अधिकार को प्राप्त करने का कोई अन्य तरीका नहीं है। यदि कोई बिना किसी विवाद के अपने अधिकारों को प्राप्त करने में सक्षम है, तो उसके लिए उस मार्ग पर न जाना बेहतर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विवाद में जीभ को संयम की सीमा में रखना मुश्किल होता है। इसके अलावा, विवाद करने से हृदय में विद्वेष पैदा होता है और क्रोध की आग तेज हो जाती है और जब कोई क्रोधित होता है, तो किसी से ईश्वरीय नियम का पालन करने की उम्मीद नहीं की जा सकती है। विवाद के दौरान एक चरण आता है, जब इसका कारण दिल से गायब हो जाता है, और दावेदार के दिल में

एकमात्र उद्देश्य प्रतिद्वंद्वी को हराना है, और इसे प्राप्त करने के लिए हर संभव साधन और रणनीति का उपयोग करना है। वे एक-दूसरे को पीड़ा देने और एक-दूसरे की गरिमा को चकनाचूर करने में खुश हैं। जो विवाद शुरू करता है वह वही है जो इन सभी अपराधों को करता है। यदि कोई बहुत सावधानी बरतता है, तो इन अपराधों से दूर रहना संभव है, हालांकि, दिल को शांत रखना बहुत मुश्किल होगा। जब तक विवाद चलता रहेगा, तब तक दिल इस हद तक चिंतित रहेगा कि प्रार्थना के दौरान भी कोई भी किसी तरह विरोधी को अपने अधीन करने के बारे में सोचेगा। विवाद उथल-पुथल और बुराई को भड़काता है। विवादों और तर्कों की स्थिति भी यही है क्योंकि दोनों बुराई को जन्म देते हैं। बुराई के दरवाजे बंद करना बेहतर है ताकि जीभ और दिल दोनों विवादों के नतीजों और प्रभावों से सुरक्षित रहें और यह एक कठिन मामला है।

विवाद, विवाद और तर्क-वितर्क की सबसे कम बुराई यह है कि एक-दूसरे से अच्छी तरह से बात करने की परंपरा समाप्त हो जाती है, भले ही, एक-दूसरे के साथ बातचीत करने की सुंदरता सुंदर सह-अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण तत्व है और ईश्वरीय प्रतिफल के योग्य है। क़ुरआन में ख़ुदा कहते हैं:

وَقُولُوا۟ لِلنَّاسِ حُسْنًا

"और [सभी] लोगों से सुंदर तरीके से बात करें। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 83)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "यदि ईश्वर की रचनाओं में से कोई आपको अभिवादन और सलाम (*सलाम)* देता है, तो आपको उस व्यक्ति को अभिवादन और अभिवादन भी कहना चाहिए, भले ही वह जादूगर हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि क़ुरआन में अल्लाह कहते हैं:

وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا۟ بِأَحْسَنَ مِنْهَآ

"जब कोई आपको अभिवादन और अभिवादन के साथ बधाई देता है तो आपको और भी बेहतर शब्दों में अभिवादन और अभिवादन का जवाब देना चाहिए। (कुरान, अध्याय 4, आयत 86)

अब्दुल्ला बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने भी कहा: "भले ही फिरौन मुझसे कुछ अच्छा कहे, मैं भी उसे कुछ अच्छा जवाब दूंगा"।

अनस बिन मलिक (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं कि उन्होंने कहा:

ان فی الجنۃ لغرفا یری ظاهرها من باطنها وباطنها من ظاهرها اعدها اللہ
تعالیٰ لمن اطعم الطعام والان الکلام

उन्होंने कहा, 'स्वर्ग में ऐसे आवास हैं जिनमें बाहर से अंदर का दृश्य और अंदर से बाहर का दृश्य बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। परमेश्वर ने ऐसे घरों को उन लोगों के लिए तैयार किया है जो [सभी के लिए भोजन परोसते हैं, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो जरूरतमंद हैं] और [सभी लोगों के साथ] अपनी बातचीत में कोमलता अपनाते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिडी)*

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) ने भी कहा:

الكلمة الطيبة صدقة

"[कहना] एक अच्छा शब्द दान है [परमेश्वर के मार्ग में]। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* भविष्यद्वाणी के साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

दूसरों के साथ अच्छी बातचीत करने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए। शायद, भगवान ऐसा करने के लिए ईश्वरीय प्रतिफल प्रदान कर सकते हैं। यह सारी चर्चा एक सुंदर भाषण और बातचीत [सभी लोगों के साथ] करने के बारे में रही है जो लड़ाई, वाद-विवाद और बहस के विपरीत है और इन तीनों की श्रेणी में सभी बातें नापसंद, दर्दनाक और उकसाने वाली हैं। परमेश्वर हमें लोगों के साथ अच्छी बातचीत करने और बुरी बातचीत से दूर रहने में सक्षम बनाए।

छठा नुकसान – भाषण में अलंकरण और कृत्रिमता: सार्वजनिक बोलने के कई इच्छुक लोगों को अपनी बात को अलंकृत करने की आदत होती है। वे लंबे परिचय और शुरुआत करते हैं और उन्हें तुकबंदी और बड़े शब्दों से अलंकृत करते हैं। यह कृत्रिमता और अलंकरण निंदनीय है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का एक भविष्यद्वाणी कथन कहता है:

انا واتقياء امتي براء من التكلف

"मैं और मेरे राष्ट्र के ईश्वर-भय मानने वाले [भाषण में] कृत्रिमता और अलंकरण से दूर हैं।

एक अन्य परंपरा में उन्होंने कहा:

ان ابغضكم الي وابعدكم مني مجلسا الثرثارون المتفيهقون المتشدقون
في الكلام

"तुम लोगों में से, मुझसे सबसे बुरे और दूर (भविष्यद्वाणी का तरीका) वे हैं जो तुच्छ बात करने वाले, अत्यधिक बात करने वाले और भाषण में अलंकरण [और कृत्रिमता] को अपनाने वाले हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद* और *तिर्मिजी* भविष्यवक्ता साथी अबू थलाबा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

फातिमा (ईश्वर उससे प्रसन्न हो - पैगंबर की बेटी) ने कहा कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

شرار امتي الذين غذوا بالنعيم ياكلون الوان الطعام ويلبسون الوان الثياب و
يتشدقون في الكلام

"मेरे राष्ट्र [या अनुयायियों] (*उम्मा)* में सबसे खराब लोग वे हैं जो आराम और समृद्धि में पले-बढ़े हैं, सभी प्रकार के भोजन खाते हैं, सभी प्रकार के कपड़े पहनते हैं (विशिष्ट उपभोग में उनके लिप्तता का संकेत है), और बातचीत में अलंकरण और कृत्रिमता को अपनाते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया* और *बेहाकी फी अल-शुआब*)

एक बार उन्होंने कहा और इसे तीन बार दोहराया:

واهلک المتنطعون

"खबरदार! अतिशयोक्ति करने वाले बर्बाद हो जाते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* भविष्यद्वक्ता के साथी अब्दुल्लाह इब्ने मसूद के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

बातचीत ऐसी होनी चाहिए कि श्रोता इसे समझ सके। बातचीत और भाषण का उद्देश्य दूसरों को इसे समझाना है, और कुछ भी बेकार है और कृत्रिमता और अस्वाभाविकता में शामिल है जिसकी ईश्वरीय कानून ने निंदा की है और इसे पसंद करता है। हालांकि, धार्मिक उपदेशों में जो तुकबंदी आम है, उसे इस शर्त पर छूट दी जाती है कि इसमें कोई अधिकता और अतिशयोक्ति न हो। उपदेश और चेतावनी से उपदेशक का उद्देश्य यह है कि श्रोता अपने दिलों में प्रज्वलित हो जाएंगे, धार्मिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन और इच्छा। इस संबंध में, शब्दों के प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता है। हालांकि, सामान्य बातचीत में, [शब्दों में], तुकबंदी, संकेत या अर्थ की कोई आवश्यकता नहीं होती है। इसीलिए, दिन-प्रतिदिन की बातचीत में उपदेश शैली को अपनाना पूरी तरह से अज्ञानता है। इस कृत्रिमता और अस्वाभाविकता का उत्प्रेरक दिखावा (*रिया)* है, और इस आपदा में शामिल व्यक्ति चाहता है कि लोग किसी की वक्तृत्व और वाक्पटुता से प्रभावित हों, और ऐसे व्यक्ति के लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त करें।

सातवां नुकसान - अश्लीलता, अश्लीलता और अश्लील शाप: इसकी निंदा भी की जाती है और [ईश्वरीय कानून में] भी निषिद्ध है। अश्लीलता और अश्लीलता की उत्पत्ति आंतरिक बुराई और नम्रता [आंतरिक स्वभाव की] है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اياكم والفحش فان الله تعالى لا يحب الفحش ولا التفحش

"अपने आप को अश्लीलता और अश्लीलता से बचाओ। इसमें कोई शक नहीं कि भगवान को अश्लीलता, अश्लीलता और अश्लीलता पसंद नहीं है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* ने नसई *और* हकीम को *भविष्यद्वक्ता साथी अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर इकट्ठा किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])*

एक अन्य परंपरा में उन्होंने कहा:

ليس المؤمن بالطعان ولا اللعان ولا الفاحش ولا البذى

"दोष खोजने वाला, शाप देने वाला, भद्दा और अश्लील बात करने वाला, और अत्यधिक बात करने वाला आस्तिक नहीं हो सकता। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *भविष्यवक्ता साथी अब्दुल्ला बिन मसूद के अधिकार पर तिर्मिज़ी [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])*

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने भी कहा:

الجنة حرام على كل فاحش يدخلها

"हर भद्दे बात करने वाले को स्वर्ग में प्रवेश करने से मना कर दिया गया है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया* भविष्यद्वक्ता साथी अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

अहनाफ बिन कैस ने कहा, "क्या मुझे आपको एक घातक बीमारी के बारे में सूचित नहीं करना चाहिए? यह अश्लीलता और बुरे व्यवहार, नैतिकता और आंतरिक स्वभाव है।

शर्मनाक मामलों का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख करना अश्लीलता और अश्लीलता है। उदाहरण के लिए, निजी अंगों के नाम लेना और मैथुन से संबंधित मामलों का वर्णन करना। जो लोग बुरे चरित्र के होते हैं और उथल-पुथल बोने के लिए इच्छुक होते हैं [भले ही यह नैतिकता, सभ्यता और सामान्य मानवीय शालीनता से संबंधित मामलों में हो], उन्होंने इससे संबंधित स्पष्ट और भद्दी अभिव्यक्तियाँ विकसित की हैं और बिना किसी हिचकिचाहट और शर्म के उनका उपयोग करते हैं, जबकि पवित्र और अच्छे स्वभाव वाले लोग इस तरह के अभिव्यक्तियों का उपयोग करने से खुद को बचाते हैं। इसके बजाय, ऐसे मामलों में [जिनका उल्लेख एक वैध आवश्यकता के कारण किया जाना चाहिए], वे व्यंग्य और अस्पष्ट शब्दों में बात करते हैं। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "ईश्वर में शर्म है। वह परोपकारी है, वह पापों को क्षमा करता है और [प्रकृति में स्पष्ट चीजों का उल्लेख करता है] व्यंग्य में उल्लेख करता है। इसलिए, कुरान मैथुन के साथ स्पर्श का अर्थ है। "आना", "स्पर्श" और "साहचर्य" जैसे शब्द मैथुन के लिए संकेत हैं [जिनका उपयोग कुरान में वैवाहिक संबंधों से संबंधित नियमों का वर्णन करते हुए किया गया है]। उनमें कोई अश्लीलता और अश्लीलता नहीं है।

लोगों ने खुद को "मैथुन" करने के लिए नहीं रोका है, इसके बजाय, इसकी व्याख्या करने और इसका अर्थ लगाने के लिए, उन्होंने ऐसे भावों और शब्दों का आविष्कार किया है जो किसी को शर्मिंदा करते हैं बस उन्हें सुनने से घृणा और घृणा की भावना पैदा होती है। इनमें से कुछ शब्द दूसरों की तुलना में कम अश्लील हैं। इस संबंध में, हर देश और क्षेत्र के लिए आदतें अलग-अलग होती हैं। किसी भी मामले में, कम स्तर के अश्लील और अश्लील शब्दों को नापसंद किया जाता है (*मकरूह*) और अत्यधिक डिग्री के लिए निषिद्ध (*हराम*) है। दो डिग्री के बीच के शब्द संदेह से रहित नहीं हैं [पवित्र कानून में उन्हें नापसंद या निषिद्ध होने के संदर्भ में]। ये शब्द विशेष रूप से मैथुन से संबंधित नहीं हैं, बल्कि बुरे स्वभाव के लोग अश्लील बातें करते हैं, यहां तक कि शब्दों में भी जो इससे संबंधित नहीं हैं। मानव अपशिष्ट से संबंधित शब्द इस प्रकृति के हैं और उनका स्पष्ट रूप से उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। इसी तरह, यदि किसी को कोई दोष है, उदाहरण के लिए, कुष्ठ रोग, त्वचा विकार, आदि, या कोई बीमारी, तो इसका स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि परोक्ष रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए, अमुक व्यक्ति को कोई गंभीर स्थिति या बीमारी है। रोग का स्पष्ट रूप से उल्लेख करना अश्लील है [विशेषकर जब इससे पीड़ित व्यक्ति इसका खुलासा या उल्लेख करना पसंद नहीं करता है] और जीभ के नुकसान में शामिल है। अश्लील और अश्लील बातों का उत्प्रेरक आदत [लंबे समय तक इसका अभ्यास करने के बाद किसी के दिल में बसे हुए] और पाप और अनैतिकता के लोगों की संगति दोनों है जो अश्लीलता और अश्लीलता के आदी हैं। एक बार एक बेडौइन पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के पास आया और कुछ सलाह मांगी जिसने जवाब दिया:

عليك بتقوى الله وان امرو عيرك بشى تعلمه فيه ويكن وباله عليه واجره
لك ولا تسبن شيئا

"पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय बनाए रखें। यदि कोई आप में कुछ [बुरा] नोटिस करता है और आपको उत्तेजित करता है, तो आपको ऐसे में कुछ [बुरा] देखने के बाद बदले में उसे उत्तेजित नहीं करना चाहिए। [यदि आप इस तरह से कार्य करते हैं] ऐसे व्यक्ति पर जिम्मेदारी बनी रहेगी और आपको दिव्य पुरस्कार मिलेगा [आपके धैर्य, संयम और तरह से प्रतिशोध न लेने के लिए], न ही आपको कुछ भी [या किसी को] कोसना चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस *इब्न अहमद* और *तबरनी को* भविष्यद्वक्ता साथी अबू जरी अन-नजीमी के अधिकार पर संग्रह करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

बेडौइन ने कहा: "इस सलाह के बाद, मैंने कभी भी कुछ भी बुरा नहीं कहा"। आयद बिन हमार (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने पूछा: "हे ईश्वर के पैगंबर! एक व्यक्ति जो [सामाजिक स्तरीकरण में] मुझसे कम रैंक में है और मुझे शाप देता है, अगर मैं ऐसे व्यक्ति के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करता हूं तो क्या कोई नुकसान है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उत्तर दिया:

المتسابان شيطانان يتكاذبان ويتهاتران

"दोनों दुर्व्यवहार करने वाले [एक जो दुर्व्यवहार शुरू करता है और दूसरा जो तरह से जवाबी कार्रवाई करता है] दो शैतान हैं जो एक-दूसरे को गलत साबित करते हैं और एक-दूसरे का खंडन करते हैं और एक-दूसरे के खिलाफ निंदा करते हैं"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अबू दाऊद तायालिसी* और *मुसनद अहमद*)

आठवां नुकसान - ईश्वरीय दया के विच्छेद की कामना (*लाना*): ईश्वरीय दया से विच्छेद की कामना करना (*लाना*) [जिसका परिणाम सभी तरफ से आपदाओं की बारिश है] चाहे वह मनुष्य के लिए हो, जानवर या पत्थर निंदनीय है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لا يكون المؤمن لعانا

"एक आस्तिक वह नहीं है जो *लाना (*ईश्वरीय दया से विच्छेद की इच्छा करता है) का अभ्यास करता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *भविष्यवक्ता साथी अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर तिर्मिज़ी [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])*

हुदैफा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "एक राष्ट्र जो एक दूसरे के बीच ईश्वरीय दया से अलग होना चाहता था, वह ईश्वरीय प्रतिशोध का पात्र बन गया"। एक परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

ان اللعانين لا يكونون شفعاء ولا شهداء يوم القيامة

"जो लोग [आदत] ईश्वरीय दया से अलग होने की इच्छा रखते हैं, वे न्याय के दिन न तो मध्यस्थ होंगे और न ही गवाह होंगे"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* भविष्यवक्ता साथी अबू अल-दर्दा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

लाना का अर्थ है ईश्वर से दूर करना और दूर करना। इस शब्द का उपयोग किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सही होगा जिसके पास ऐसे गुण हैं जो किसी को परमेश्वर से दूर करते हैं जैसे अविश्वास और उत्पीड़न। उस स्थिति में, यह कहना जायज़ होगा: "अत्याचारियों पर परमेश्वर का अभिशाप (*लाना*) हो", "परमेश्वर का अभिशाप उन लोगों पर हो जो सत्य को अस्वीकार करते हैं [और झूठ का पक्ष लेते हैं]", आदि। किसी को ईश्वरीय दया से दूर या दूर करने की कामना करने में खतरा है। यह एक संवेदनशील अवस्था है और यह दावा करना कि ईश्वर ने किसी को अपनी निकटता से वंचित कर दिया है, यह एक छिपे हुए क्षेत्र से ऐसा मामला है जिसके बारे में ईश्वर के अलावा कोई और नहीं जानता है, या यदि ईश्वर अपने पैगंबर (मुहम्मद) को सूचित करता है, तो वह भी जागरूक हो सकता है। वे गुण जो ईश्वरीय दया से दूरी और अभाव पैदा करते हैं, वे तीन हैं: अविश्वास (*कुफ्र*), स्थापित धार्मिक सिद्धांतों और शिक्षण (बिदा) में नवीनता (विषयांतर), और ज़बरदस्त पाप (*फिस्क*) / ईश्वरीय दया से वंचित होने के लिए एक विशिष्ट पापी की कामना करना जायज़ नहीं है क्योंकि इसमें एक बड़ी उथल-पुथल और खतरा है। किसी को पाप में लिप्त देखकर शैतान को ईश्वरीय दया से वंचित करने की कामना करना बेहतर है क्योंकि शैतान ही वह है जो लोगों को बुराई के लिए उकसाता है और उसे शाप देने में कोई बुराई नहीं है। उचित जांच के बिना एक मुसलमान को अविश्वास (*कुफ्र*) और ज़बरदस्त पाप (*फिस्क*) के लिए जिम्मेदार ठहराना गलत है क्योंकि पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और ईश्वर का आशीर्वाद हो) ने कहा था:

لا يرمي رجل رجلا بالكفر ولا يرميه بالفسق الا ارتدت عليه ان لم يكن صاحبه كذلك

"यदि कोई किसी पर अविश्वास का आरोप लगाता है और वह व्यक्ति ऐसा नहीं है, तो यह अविश्वास और पाप का आरोप आरोप लगाने वाले के पास वापस आ जाएगा। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* को *भविष्यवक्ता* साथी अबू धर के अधिकार पर संग्रह करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

अब्दुल्लाह बिन उमर (खुदा उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "भगवान उस व्यक्ति को दृढ़ता से नापसंद करते हैं जो आदतन लोगों को बहुतायत में शाप देता है"। नुकसान पहुंचाने के लिए भगवान का आह्वान करना और प्रार्थना करना, ईश्वरीय दया (*लाना*) *के विच्छेद की इच्छा के करीब है*। अत्याचारी के बारे में यह कहना भी अच्छा नहीं है कि भगवान ऐसे व्यक्ति को बीमार करते हैं या बीमारी से स्वास्थ्य प्रदान नहीं करते हैं या ऐसे व्यक्ति को मरने का कारण बनते हैं, आदि। एक *हदीस* [पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो)] कहता है:

ان المظلوم ليدعو على الظالم حتى يكافئه ثم يبقى للظالم عنده فضلة يوم القيامة

"एक उत्पीड़ित व्यक्ति उत्पीड़क को नुकसान पहुंचाने के लिए प्रार्थना करके अपना बदला लेता है। तभी जो अधिक है [उत्पीड़ितों की इस तरह की प्रार्थना के परिणामस्वरूप उत्पीड़क को नुकसान हुआ] न्याय के दिन उत्पीड़क के लिए छोड़ दिया जाता है।

नौवां नुकसान - संगीत और कविता: इस विषय पर भक्ति पाठ और आध्यात्मिक परमानंद की पुस्तक में पूरी तरह से चर्चा की गई है (*किताब अदब उस-समा' वा अल-वज्द* - ग़ज़ाली की आठवीं पुस्तक उनके महान कृति "इह्या *अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के दूसरे खंड या तिमाही में; पहला खंड [ईश्वरीय पूजा के कार्यों और उनके पीछे आंतरिक ज्ञान के बारे में] और दूसरा खंड [साथी मनुष्यों के साथ सामाजिक व्यवहार के बारे में] ग़ज़ाली की महान रचना को इस पुस्तक में शामिल नहीं किया गया है) कि कौन सा संगीत अनुमेय है और कौन सा नहीं। उस चर्चा को दोहराने की यहां आवश्यकता नहीं है। जहां तक कविता का सवाल है, अच्छी [उद्देश्यपूर्ण और शिक्षाप्रद] कविता अच्छी है और बुरी कविता [लोगों को गलत और अभद्रता के लिए उकसाना] बुरी है। हालांकि, खुद को कविता के लिए समर्पित करना और इसे एक शौक बनाना अच्छा नहीं है। एक ज्ञानवादी से कविता के एक श्लोक के बारे में पूछा गया, जिस पर उन्होंने उत्तर दिया: "कविता को छोड़ो और दिव्य स्मरण (*धिक्कार*) में संलग्न हो"। फिर भी, कविता के छंद कहना या बनाना (*हराम)* मना नहीं है। हालाँकि, शर्त यह है कि इसमें ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिए जो ईश्वरीय कानून की सीमा से अधिक हो। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

ان من الشعر لحكمة

"इसमें कोई संदेह नहीं है कि कविता के कुछ छंद ज्ञान से भरे हुए हैं।

कविता के छंदों में आमतौर पर प्रशंसा और निंदा के विषय होते हैं। उनमें झूठ बोलने के लिए एक बड़ी जगह है। हालाँकि, न तो एकमुश्त निंदा नापसंद है और न ही एकमुश्त प्रशंसा। प्रशंसा में कुछ अतिशयोक्ति की जा सकती है क्योंकि इसमें कुछ ढिलाई है। उदाहरण के लिए, कविता के इस प्रकार के छंदों को निषिद्ध (हराम) कहा जा सकता है क्योंकि उनमें झूठ का कुछ मिश्रण है:

ولو لم يكن في كفه غير روحه   لجاد بها فليتق الله سائله

"अगर उसके पास आत्मा के अलावा कुछ नहीं होता, तो वह भी खर्च कर देता। जो मांगता है, उसे भी परमेश्वर का भय मानना चाहिए [जो कोई पूछ रहा है]।

यदि कविता के इस श्लोक में प्रशंसा की गई है, उदार नहीं है, तो यह श्लोक केवल एक पूर्ण झूठ है [जो ईश्वरीय कानून द्वारा निषिद्ध है]। हालाँकि, यदि प्रशंसा वास्तव में उदार है, तो यह अतिशयोक्ति स्वीकार्य

होगी और इसे काव्यात्मक कविता की सुंदरता कहा जाएगा क्योंकि [इस अतिशयोक्ति का] उद्देश्य वास्तविकता नहीं है, बल्कि प्रशंसित की अत्यधिक उदारता को व्यक्त करना है। कविता के ऐसे छंद जिनमें इस स्तर की अतिशयोक्ति है, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के सामने कई बार पढ़े गए थे, लेकिन उन्होंने उन्हें प्रतिबंधित नहीं किया। आयशा (ईश्वर उससे प्रसन्न हो - पैगंबर की पत्नी) बताती है: "एक बार वह पहिया घुमा रही थी (एक छोटा, पोर्टेबल, हाथ से घुमाया गया पहिया जो कपास और अन्य रेशों को कताई के लिए इस्तेमाल किया जाता था) और पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और ईश्वर का आशीर्वाद हो) अपने जूते सिल रहे थे [मरम्मत के लिए क्योंकि वह अत्यधिक गरीबी का अवतार थे]। मैंने उसकी ओर देखने के लिए अपनी आँखें उठाईं और देखा कि उसके माथे पर पसीने की बूंदें सूरज की रोशनी में चमक रही थीं और सितारों की तरह चमक रही थीं। मैं इस तरह के एक खूबसूरत दृश्य से चकित और अवाक रह गया। उसने मुझे आश्चर्य से अपनी ओर देखते हुए देखा तो उसने पूछा: 'ऐ आयशा! तुम इतने हैरान क्यों दिख रहे हो?' मैंने कहा, "हे ईश्वर के पैगंबर! आपके माथे पर पसीने की बूंदें सितारों की तरह चमक रही हैं। अगर बू कबीर हुदली (पैगंबर से पहले के युग के एक प्रसिद्ध अरब कवि) ने आपको देखा होता, तो वह आपको अपनी कविता के छंदों की अभिव्यक्ति कहते। पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पूछा: 'बू कबीर हुदली क्या कहते हैं?' मैंने उन्हें निम्नलिखित दो छंद [बू कबीर हुदली की कविता की] सुनाईं:

ومبرا من كل غبر حيضة   وفساد مرضع وداء مغيل
واذا نظرت الى اسرة وجهه   برقت كبرق العارض المتهلل

स्तुति करने वाला मासिक धर्म की अशुद्धता, नर्सिंग की कमजोरी और सभी बीमारियों के पतन से मुक्त है।

जब मैं ऐसे व्यक्ति के चेहरे पर बारीक विवरणों को देखता हूं, तो वे बादलों में बिजली की तरह चकाचौंध करते हैं।

जब पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इन काव्यात्मक आयतों को सुना, तो उन्होंने अपना काम छोड़ दिया और मेरे माथे को चूमा और कहा:

جزاك الله خيرا يا عائشة ما سررت مني كسروري منك

'हे आयशा, भगवान आपको एक अच्छा प्रतिफल प्रदान करें! आप मुझसे इतने खुश कभी नहीं हुए होंगे जितना मैं इस समय आपसे खुश हूं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *बेहाकी दलैल अल-नबुव्वा*)

दसवां नुकसान – हास्य: यह भी निषिद्ध और नापसंद है लेकिन अगर यह कम मात्रा में हो तो कोई नुकसान नहीं है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لا تمار اخاك ولا تمازحه

"अपने भाई की बातचीत को मत काटो और उसके साथ मजाक मत करो"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिडी*)

इस संबंध में, इस बात पर आपत्ति की जा सकती है कि बातचीत को काटने और हस्तक्षेप करने पर रोक लगाने का कारण समझ में आता है क्योंकि वास्तव में, बातचीत करने वाले का अपमान शामिल है और किसी को असहज करना शामिल है, हालांकि, हास्य में किसी के लिए कोई अपमान और परेशानी नहीं है और यह सद्भावना और अच्छे शगल का संकेत है। फिर इसे प्रतिबंधित क्यों किया जा रहा है? इसका उत्तर यह है कि शगलों में अधिकता और उनमें दृढ़ता भी निषिद्ध है [क्योंकि यह जीवन में किसी के उद्देश्य के प्रति लापरवाही और उससे निराशा की ओर ले जाता है]। दृढ़ता का अर्थ यह है कि हृदय हमेशा खेल और हास्य में लीन रहता है। खेल की अनुमति है लेकिन इसमें बने रहना प्रतिबंधित है। इसमें अधिकता और अतिशयोक्ति, हँसी में वृद्धि का कारण बनती है और अत्यधिक हँसी हृदय की मृत्यु का कारण बनती है और किसी का गरिमापूर्ण विस्मय समाप्त हो जाता है [इसके परिणामस्वरूप]। कभी-कभी इसकी वजह से दिलों में दुश्मनी पैदा हो जाती है। अगर हंसी इन दाग-धब्बों से रहित है, तो यह कोई बुरी बात नहीं है। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

انى لا امازح ولا اقول الا حقا

"मेरे पास हास्य है, हालांकि, इसमें सच्चाई के अलावा कुछ भी नहीं है।

यह उनकी विशिष्टता थी कि अच्छे हास्य और शगल के अवसरों पर भी, उन्होंने अपनी जीभ से केवल सत्य का उच्चारण किया। अन्य लोग, चाहे सांसारिकता (जुहद) और अपने ईश्वर-भय (तकवा*) से दूर रहने की उनकी डिग्री कितनी भी बड़ी क्यों न हो,* जब वे हास्य में कदम रखते हैं तो वे झूठ से खुद को बचाने में असमर्थ होते हैं। उनका उद्देश्य लोगों को हंसाना है, चाहे वह कैसे भी किया जाए। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "जो अधिक हंसता है, वह अपनी गरिमापूर्ण विस्मय (हाइबा) खो देता है; जो हास्य में लिप्त है, लोगों के दिलों में अपना सम्मान खो देता है; जो कुछ बहुत कुछ करता है, उसे उससे पहचाना जाता है; जो बहुत बोलता है, वह अक्सर गलतियाँ करता है; जो अधिक गलतियाँ करता है, शर्म और विनम्रता खो देता है (हया); जो शर्म और विनम्रता खो देता है, वह अपने हृदय की मृत्यु का कारण बनता है; इसके अतिरिक्त, अत्यधिक हँसी परलोक की लापरवाही का संकेत है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لو تعلمون ما اعلم لبكيتم كثيرا ولضحكتم قليلا

"यदि आप जानते हैं कि मैं क्या जानता हूं, तो आप अधिक रोएंगे और कम हंसेंगे। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* ने *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम को* भविष्यवक्ता साथी अनस बिन मलिक के अधिकार पर संग्रह किया [भगवान उनसे प्रसन्न हों]) [उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि ईश्वर के एक पूर्ण अंतरंग के रूप में, दिव्य ज्ञान, दिव्य उपस्थिति और संबंधित दिव्य रूप से प्रकट किए गए मामले, उनकी

आत्मा पर भारी पड़ते थे, हास्य के लिए कोई जगह नहीं छोड़ते थे। हालाँकि, यह उनका अंतर था कि उनके आंतरिक अस्तित्व पर भारी पड़ने वाले महत्वपूर्ण मामलों के बावजूद, वह कभी-कभी हंसने में कामयाब रहे और साथी मनुष्यों के लाभ के लिए बाहरी रूप से मानवीय सामान्यता की भावना बनाए रखने में कामयाब रहे ताकि उनके लिए दिव्य मार्ग को रोशन करना जारी रखा जा सके।

अता अल-सुलामी (ईश्वर उन पर दया करे) ने अपने जीवन के चालीस साल बिना हंसे बिताए। वुहैब इब्ने अल-वार्ड (ईश्वर उन पर दया करे) ने कुछ लोगों को *ईद* (उपवास के महीने के बाद उत्सव और धन्यवाद का दिन) पर हंसते हुए देखा और कहा: "यदि भगवान ने उन्हें क्षमा कर दिया है तो यह उन लोगों का तरीका नहीं है जो भगवान के प्रति आभारी हैं और यदि उन्हें ईश्वर से क्षमा नहीं किया गया है तो यह उन लोगों का तरीका नहीं है जिनके पास पवित्र भय है, ईश्वर का सम्मान और भय"। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - एक भविष्यवक्ता साथी) ने कहा: "जो व्यक्ति पाप करने के बाद हंसता है वह रोते हुए नरक में प्रवेश करेगा"। यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि जो हंसी अवांछनीय है उसमें आवाज है। मुस्कान [जो आवाज के साथ नहीं है] अवांछनीय या निषिद्ध नहीं है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऐसे ही मुस्कुराते थे। कासिम मौला मुआविया बताते हैं कि एक बेडौइन (एक रेगिस्तानी अरब) लाल ऊंट पर सवार होकर पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो) के पास आया और उन्हें सलाम किया। जब भी वह पैगंबर से कुछ पूछने के लिए उनके करीब जाने की कोशिश करते थे, तो ऊंट उत्तेजित हो जाता था और उन्हें [कुछ दूरी तक] ले जाता था। भविष्यद्वाणी के साथी [जो उसके साथ थे] यह देखकर हंसते रहे। अंत में, बेडौइन ऊंट को नियंत्रित नहीं कर सका और उससे गिर गया और मर गया। साथियों ने कहा: "ऊंट ने अपने सवार को गिरा दिया है और मार डाला है"। पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस पर हो) ने कहा: "वह मर गया है लेकिन तुम्हारे मुंह उसके खून से भर गए हैं"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अल-मुबारक फी अज़-ज़ुहद*)

हँसी जो किसी की गरिमापूर्ण आभा और विस्मय को नुकसान पहुंचाती है, निषिद्ध है। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "जो [बहुत] हंसता है वह [कद और गरिमा में] हल्का हो जाता है"। साद बिन अल-आस (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने अपने बेटे को सलाह देते हुए कहा: "हे पुत्र! एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ मजाक मत करो, वह आपसे घृणा करेगा; न ही आपको एक नीच [चरित्र लक्षणों में] और नीच आदमी के साथ मजाक करना चाहिए क्योंकि वह आप पर साहसी और दुस्साहसी हो जाएगा। उमर बिन अब्दुल-अजीज (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "भगवान से डरो और हास्य से बचें क्योंकि हास्य दिलों में कटुता पैदा करता है और बुराई की ओर ले जाता है। कुरान को अपनी चर्चाओं का विषय बनाएं और इसके लिए सभाएं स्थापित करें। यदि यह आप पर भारी पड़ता है तो अच्छी बातचीत करें और अच्छे लोगों का उल्लेख करें। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने लोगों से पूछा: "क्या आप जानते हैं कि हास्य (*मिजा*) को हास्य क्यों कहा जाता है?" उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया। उन्होंने कहा, "यह मूल शब्द '*अज़ाह*' से आया है जिसका अर्थ है 'अलग होना और दूर जाना' क्योंकि इसके कारण कोई सत्य से दूर हो जाता है, इसलिए इसका नाम 'हास्य' (*मिजा*) *रखा गया है*। कुछ ज्ञानवादियों ने कहा है कि हर चीज में कुछ फल होते हैं और हास्य का फल शत्रुता होता है। कुछ ज्ञानवादियों ने कहा है: "हास्य के कारण बुद्धि नष्ट हो जाती है और व्यक्ति अपने दोस्तों से अलग हो जाता है"।

ग्यारहवां नुकसान – उपहास: किसी का उपहास करना भी एक पसंद करने योग्य कार्य नहीं है क्योंकि इससे दूसरों को दर्द होता है। भगवान ने कहा है:

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا يَسۡخَرۡ قَوۡمٞ مِّن قَوۡمٍ عَسَىٰٓ أَن يَكُونُواْ خَيۡرٗا مِّنۡهُمۡ

وَلَا نِسَآءٞ مِّن نِّسَآءٍ عَسَىٰٓ أَن يَكُنَّ خَيۡرٗا مِّنۡهُنَّۖ

"ऐ ईमान वालो! एक राष्ट्र (या समुदाय या लोगों के समूह) को दूसरे राष्ट्र पर हंसना नहीं चाहिए। यह अच्छी तरह से मामला हो सकता है कि जिन लोगों पर हंसा जा रहा है वे उन लोगों से बेहतर हो सकते हैं जो हंस रहे हैं। न ही महिलाओं को दूसरी महिलाओं पर हंसना चाहिए। यह अच्छी तरह से मामला हो सकता है कि वे (जिन पर हंसी उड़ाई जा रही है) उनसे बेहतर हो सकते हैं (जो हंस रहे हैं)। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 11)

उपहास का अर्थ किसी के दोषों का उल्लेख करना है, किसी का अपमान और अपमान करने के इरादे से, इस तरह से कि श्रोता जिसका उपहास किया जा रहा है उस पर हंसें। उपहास शब्दों, इशारों, व्यंग्यों और किसी के कार्यों की नकल करके किया जा सकता है। अगर यह पीठ पीछे किया जाता है, तो यह चुगली है और अगर किसी के सामने किया जाता है तो यह उपहास और व्यंग्य है जो चुगली नहीं है, लेकिन यह उससे कम नहीं है [अपराध की गंभीरता के संदर्भ में]। आयशा (ईश्वर उससे प्रसन्न हो - पैगंबर की पत्नी) ने कहा कि एक बार उसने किसी का मज़ाक उड़ाया था, जिस पर पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

والله ما احب اني حاكيت انسانا ولي كذا وكذا

"भगवान की कसम! मुझे किसी दूसरे इंसान का मजाक उड़ाना पसंद नहीं है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह अबू *दाऊद* और *तिर्मिज़ी*)

किसी आस्तिक का मज़ाक उड़ाना और अपनी गलती या विकृति पर हंसना पापों में से एक है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक परंपरा में, हमें उन लोगों के बाद के जीवन में अंतिम अंत के बारे में सूचित किया गया है जो दूसरों का उपहास करते हैं:

ان المستهزئين بالناس يفتح لاحدهم باب من الجنة فيقال لهم هلم
فيجيئ بكربه وغمه فاذا جاء اغلق دونه ثم ليفتح له باب آخر فيقال له هلم
هلم فيجيئ بكربه وغمه فاذا اتاه اغلق دونه فما يزال كذلك حتى ان الرجل
ليفتح له الباب فيقال له هلم هلم فلا ياتيه

"[न्याय के दिन] उपहास करनेवालों के लिए स्वर्ग का द्वार खोला जाएगा, और उन्हें भीतर आने के लिए कहा जाएगा। जब वे अपने दुख और दर्द की स्थिति के साथ दरवाजे पर पहुंचेंगे, तो उनके लिए दरवाजा

बंद कर दिया जाएगा। फिर एक दूसरा दरवाजा खोला जाएगा, और उन्हें अंदर आने के लिए कहा जाएगा। वे अपने दुख और दर्द के साथ उस द्वार तक पहुंचेंगे, लेकिन यह उनके लिए बंद हो जाएगा। यह तब तक होता रहेगा जब तक कि एक चरण नहीं आएगा जब उन्हें अंदर आने के लिए कहा जाएगा, लेकिन वे नहीं आएंगे [उनके चेहरे पर बार-बार दरवाजे बंद होने के बाद अंदर आने की अनुमति मिलने से उनकी निराशा के कारण]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया*)

मुअद बिन जबल (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर से यह वर्णन करता है:

من عير اخاه بذنب قد تاب منه لم يمت حتى يعمله

"जो अपने भाई को उस पाप के बारे में ताना मारता है जिसके लिए उसने पश्चाताप किया है, वह उसी पाप पर कार्य करने से पहले नहीं मरेगा। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिडी*)

इन सभी [पवित्र] परंपराओं का परिणाम यह है कि दूसरों का अपमान करना, अपमानित करना और उनका उपहास करना [ईश्वरीय कानून में] अनुमेय नहीं है। [कुरान की] आयत ने एक कारण भी प्रदान किया है कि जिन्हें आप बुरा मानते हैं, वे संभवतः आपसे बेहतर हो सकते हैं। किसी पर हंसना उस स्थिति में वर्जित है जब इससे एक दर्द होगा, लेकिन अगर कोई हंसने पर खुश है तो यह हास्य में शामिल है। हास्य के बारे में विवरण पिछले पृष्ठों में समझाया गया है। यहां केवल यह उल्लेख करने की आवश्यकता है कि जो उपहास (हराम) निषिद्ध है वह है जो किसी को भी दर्द देता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी बातचीत के दौरान, किसी के द्वारा कोई गलत वाक्य या शब्द बोला जाता है और कोई उस पर हंसता है, या किसी के उच्चारण या बातचीत की शैली का मजाक उड़ाता है, या किसी खराब हस्तलेखन वाले व्यक्ति को यह बताता है कि ऐसा व्यक्ति बहुत अच्छा लिखता है [व्यंग्यात्मक तरीके से], या एक लंबा व्यक्ति एक छोटे से वाक्य पर हंसता है, या कोई बड़ा व्यक्ति किसी दुबले-पतले व्यक्ति पर हंसता है, या किसी के नुकसान पर हंसता है, ऐसे सभी उपहास और व्यंग्यों को [पवित्र (दिव्य) कानून में] मना किया गया है।

बारहवां नुकसान - रहस्यों और गोपनीय मामलों को उजागर करना: किसी के रहस्यों और गोपनीय मामलों को उजागर करना भी [ईश्वरीय कानून में] निषिद्ध है क्योंकि यह दोस्तों और परिचितों के अधिकारों का दर्द और उल्लंघन भी करता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اذا حدث الرجل الحديث ثم التفت فهي امانة

"अगर कोई आदमी कुछ कहता है और छोड़ देता है तो यह एक ट्रस्ट है [जब तक कि वह इसके साझा करने के लिए सहमत न हो जाए, तब तक इसे गोपनीय रखा जाना चाहिए]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अबू दाऊद *और* तिर्मिज़ी *को भविष्यद्वक्ता साथी जाबिर के अधिकार पर इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों]*)

एक और भविष्यवाणी परंपरा कहती है:

الحديث بينكم امانة

"आपकी आपसी बातचीत और मामले [जो विश्वास में घटित होते हैं,] एक विश्वास [गोपनीय रखा जाना चाहिए]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया*)

हसन (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "एक भाई (या एक बहन) के मामले का खुलासा करना जिसे वह गुप्त रखना चाहता है, बेईमानी और गबन है"। किसी के रहस्य का खुलासा करना बेईमानी (विश्वास का उल्लंघन) है और अगर इससे किसी को नुकसान होता है तो इसे मना किया जाता है, और भले ही किसी को कोई नुकसान न हो, यह उथलेपन का संकेत है।

तेरहवां नुकसान – झूठे वादे: यह ज्ञात होना चाहिए कि जीभ वादे करने में सबसे आगे है, लेकिन निम्न स्व (*नफ्स*) उनका पालन नहीं करता है और उन्हें पूरा करने के लिए इच्छुक नहीं होता है, जिससे वादे का उल्लंघन होता है। यह पाखंड का संकेत है। भगवान ने कहा:

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَوۡفُواْ بِٱلۡعُقُودِۚ

"ऐ ईमान वालो! अपने वादे पूरे करें। (कुरान, अध्याय 5, श्लोक 1)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने वादे को एक उपहार करार दिया है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तबरनी अवसत* भविष्यद्वाणी के साथी क़बाथ बिन अथीम के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों] इसके अलावा कुछ अन्य संग्रहों में इसका उल्लेख किया गया है)। जिस तरह कोई उपहार वापस नहीं लिया जाता है, उसी तरह वादे से मुकर जाना भी सही नहीं है। ईश्वर ने विशेष रूप से कुरान में पैगंबर इश्माएल (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो) के गुण का उल्लेख किया है कि उन्होंने अपने वादों और प्रतिबद्धताओं का दृढ़ता से पालन किया। अबू हुरैरा (रइश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने बताया कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

ثلاث من كن فيه فهو منافق وان صام و صلى وزعم انه مسلم اذا حدث كذب و اذا وعد اخلف، و اذا ائتمن خان

उन्होंने कहा, 'अगर तीन चीजें मौजूद हैं, तो कोई पाखंडी बन जाता है, भले ही वह उपवास करता है, प्रार्थना करता है और दावा करता है कि वह मुसलमान है। [पहला यह है कि] कोई बात करते समय झूठ बोलता है, उन्हें पूरा किए बिना वादे करता है, जब किसी पर भरोसा सौंपा जाता है तो वह विश्वासघाती और बेईमान होता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुहकारी* और *सहीह मुस्लिम*)

यह लक्षण वर्णन उस व्यक्ति के लिए है जो वादे करने के बाद उन्हें पूरा नहीं करने का इरादा रखता है। जो अपने वादों को पूरा करने का इरादा रखता है, लेकिन बाद में कुछ बाधा आती है और परिणामस्वरूप उन्हें पूरा करने में सक्षम नहीं होता है, उसे इस लक्षण वर्णन में प्रवेश नहीं किया जाएगा और पाखंडी नहीं

कहा जाएगा, भले ही यह पाखंड का रूप हो। इसीलिए, जिस तरह खुद को वास्तविक पाखंड से बचाना अनिवार्य है, उसी तरह पाखंड की झलक और निशान से भी बचना आवश्यक है। किसी भी [वैध] आवश्यकता के बिना, किसी को वादों को पूरा करने से स्वयं को क्षमा नहीं करना चाहिए।

चौदहवां नुकसान – झूठ बोलना और गाली देना: यह भी सबसे बुरा दोष और एक बड़ा पाप है। अबू बक्र (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक परंपरा का वर्णन करते हैं, जिन्होंने कहा:

اياكم والكذب فانه مع الفجور وهما في النار وعليكم بالصدق فانه مع البر وهما في الجنة

"अपने आप को झूठ बोलने से बचाएं क्योंकि यह बुरे कामों और झूठ दोनों के साथ होता है, और बुराई करने वाले लोग नरक में होते हैं। सत्य को अपनाएं [इसके बजाय] क्योंकि यह धार्मिक कार्यों के साथ होता है और वे दोनों स्वर्ग में हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न माजा* और *नसाई)*

हसन (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "बाहरी और आंतरिक, शब्दों और कर्मों के बीच का अंतर, और जो [हृदय] में प्रवेश करता है और छोड़ता है, उसे पाखंड कहा जाता है और इस अंतर और पाखंड का आधार झूठ बोलने पर है"। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

كبرت خيانة ان تحدث اخاك حديثا ولك به مصدق وانت له به كاذب

"विश्वास का एक बड़ा उल्लंघन और बेईमानी का कार्य (*खियानाह*) यह है कि आप अपने भाई से कुछ ऐसा कहते हैं जो वह सच मानता है लेकिन [वास्तव में] आप उससे झूठ बोल रहे हैं"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने* बुखारी फी अल-अदब अल-मुफ़राद *और* अबू दाऊद *को भविष्यसूचक साथी सूफ़ियान बिन ओसैद के अधिकार पर इकट्ठा किया [भगवान उनसे प्रसन्न हों])*

अब्दुल्लाह बिन मसूद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं:

لا يزال العبد يكذب ويتحرى الكذب حتى يكتب عند الله كذابا

"एक नौकर हमेशा झूठ बोलता है और झूठ के लिए प्रयास करता है [उन्हें फैलाने के लिए] जब तक कि ऐसा व्यक्ति भगवान द्वारा झूठा नहीं लिखा जाता है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुहकारी* और *सहीह मुस्लिम*)

क़ुरआन में ख़ुदा कहते हैं:

إِنَّمَا يَفْتَرِي ٱلْكَذِبَ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ

"जो लोग झूठ का आविष्कार करते हैं, वे वे हैं जो परमेश्वर के छंदों पर विश्वास नहीं करते हैं। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 105)

अनस (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति उन पर हो) से सुनाते हैं कि उन्होंने कहा था: "मुझसे छह चीजें स्वीकार करो, मैं तुम्हें स्वर्ग का वादा करूंगा"। साथियों ने पूछा: "वे छह चीजें क्या हैं?" उसने उत्तर दिया: "जब तुम बोलो, तो झूठ मत बोलो; जब तुम प्रतिज्ञा करते हो, तो उससे मुकर न जाओ; विश्वास का उल्लंघन न करें; अपनी टकटकी कम करें [अनुचित चीजों को देखने से]; अपने निजी लोगों की रक्षा करें; और अपने हाथों को [दूसरों को नुकसान पहुंचाने से] रोकें"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *मुस्तद्राक हकीम* और *खारा-एती अला मकरीम अल-इखलाक*)

एक परंपरा है कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहैया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक ऐसे गवाह की गवाही स्वीकार करने से इनकार कर दिया था जिसने झूठ बोला था (इस परंपरा को *हदीस* संग्रह *इब्ने अबी अद-दुनिया* में पैगंबर साथी मूसा इब्न शबीह के अधिकार पर वर्णित किया गया है)। आयशा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताती हैं कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) झूठ और झूठ से ज्यादा किसी भी गुण को नापसंद नहीं करते थे। इसलिए, जब उसे एक साथी के बारे में पता चलता है जिसे वह बढ़ा-चढ़ाकर करता है, तो उसके दिल में एक बादल छा जाता था जो तब तक साफ नहीं होता था जब तक कि उसे पता नहीं चलता कि उसने अपने पाप के लिए नए सिरे से भगवान से पश्चाताप किया है। पैगंबर मूसा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) ने ईश्वर से विनती की: "हे प्रभु! तेरे दासों में से कौन नेक काम करने में बेहतर है?" जवाब आया: "वह दास जिसकी जीभ झूठ नहीं बोलती, जिसके दिल में बुराई करने का विचार नहीं आता और जिसके गुप्तांग व्यभिचार या व्यभिचार में लिप्त नहीं हैं"। लुकमान (भगवान उस पर दया करें - पैगंबर डेविड के समय एक इज़राइली ऋषि [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो]) ने अपने बेटे को चेतावनी देते हुए कहा: "झूठ मत बोलो, भले ही झूठ पक्षी के मांस की तरह स्वादिष्ट हो, लेकिन एक छोटा सा झूठ अपने वक्ता को नष्ट कर देता है"। सत्य की स्तुति में पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से निम्नलिखित कथन बताया गया है:

اربع اذا كن فيك فلا يضرك مافاتك من الدنيا صدق الحديث' وحفظ
الامانة' وحسن خلق وعفة طعمة

"यदि आपके पास चार लक्षण हैं, तो जो आपके पास सांसारिक संपत्ति से नहीं है, वह आपको नुकसान नहीं पहुंचाएगा [अर्थात, ये गुण आपके लिए इस लोक और परलोक में महान ऊंचाइयों पर चढ़ने के लिए पर्याप्त होंगे]: भाषण में सत्यता, ट्रस्टों की रक्षा करना [दूसरों द्वारा सौंपा गया चाहे वह भौतिक हो या गैर-भौतिक], अच्छा चरित्र और स्वभाव, और केवल वैध भोजन करना"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर *हदीस संग्रह खारा-एती* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

झूठ बोलने में एक विद्वान धर्मशास्त्री का धार्मिक फरमान (*फतवा* या गैर-बाध्यकारी धार्मिक राय या फरमान) भी शामिल है, जिसने मामलों की पूरी जांच नहीं की है। इसमें एक भविष्यसूचक परंपरा भी शामिल है जिसे प्रामाणिकता के लिए प्रमाणित नहीं किया गया है क्योंकि [उद्धरण का] उद्देश्य किसी के ज्ञान, उत्कृष्टता और श्रेष्ठता को व्यक्त करना है। इसीलिए, कोई इसे "*ला अदरी*" या "मुझे नहीं पता" कहने में व्यक्तिगत अपमान मानता है। उचित जांच के बिना फरमान जारी करना और भविष्यवाणियों का हवाला देना निषिद्ध है (हराम) [पवित्र कानून में]।

पंद्रहवां नुकसान – चुगली करना: ईश्वर ने कुरान में चुगली की निंदा की है और इसे अपने मृत भाई का मांस खाने के समान घोषित किया है [क्योंकि नरभक्षण पहले से ही घृणित और निषिद्ध है और जब इसमें अपने स्वयं के मृत भाई को शामिल किया जाता है, तो घृणा और घृणा बहुत बढ़ जाती है। इस तरह से चुगली का चित्रण इस कृत्य से घृणा, प्रतिकर्षण और निषिद्धता को घर ले जाने का एक दिव्य तरीका है जो मानव बातचीत में स्थानिक लगता है]। भगवान कहते हैं:

وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ
أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ

"और किसी को भी दूसरे का बैकबाइट नहीं करना चाहिए। क्या तुम लोगों में से कोई अपने मरे हुए भाई का मांस खाना पसंद करता है? [नहीं] आप इससे घृणा करते हैं!" (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 12)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

كل المسلم على المسلم حرام دمه وماله وعرضه

"एक मुसलमान - एक का खून, संपत्ति और सम्मान - सभी दूसरे मुसलमान के लिए निषिद्ध हैं (क्योंकि ये पवित्र कानून में पवित्र और अनुल्लंघनीय हैं)"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

चुगली करना किसी अन्य मुस्लिम या किसी अन्य इंसान के सम्मान का उल्लंघन करता है। एक और भविष्यवाणी परंपरा कहती है:

لا تحاسدوا ولا تباغضوا ولا يغتب بعضكم بعضا وكونوا عباد الله اخوانا

"आपसी ईर्ष्या और आपसी दुश्मनी मत करो, और न ही तुम में से कुछ लोगों को कुछ दूसरों का उल्टा करना चाहिए। [इसके बजाय] परमेश्वर के सच्चे सेवक बनें और एक-दूसरे के भाइयों के लिए [क्योंकि यह परमेश्वर के सच्चे सेवकों के लिए उचित नहीं है कि वे अपना ध्यान ईश्वर से दूर निचले आत्म के निम्न और नीच लक्षणों की ओर रखें, जैसा कि आपसी ईर्ष्या, शत्रुता, चुगली और अन्य समान नकारात्मक लक्षणों से

प्रकट होता है]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अबू हुरैरा और अनस के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لا تحقرن من المعروف شيئا ولو ان تصب من دلوك فى اناء المستقى وان تلقى اخاك ببشر حسن وان ادبر فلا تغتابنه

"किसी भी अच्छी चीज को [दुनिया में] महत्वहीन मत समझो, भले ही वह कुछ [छोटी] हो, जैसे कि प्यासे व्यक्ति के बर्तन में अपनी बाल्टी से पानी डालना [जिसे आपने कुएं से खींचा था] और अपने भाई (या किसी अन्य इंसान) के साथ मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ मिलना [या अच्छे तरीके से] और जब कोई अनुपस्थित हो तो उसकी चुगली न करना [या आपसे दूर हो जैसा कि इस मामले में अच्छी बात है कि आप डीआईडी अपने आप को किसी अन्य इंसान के लिए कुछ भी गलत या हानिकारक करने से रोक रहा है]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्ने अब-अद-दुनिया)*

एक परंपरा के अनुसार, ईश्वर ने पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को प्रकट किया: "जो चुगली से पश्चाताप करने के बाद मर जाता है, वह बाकी सभी के बाद स्वर्ग में प्रवेश करेगा, और जो बिना पश्चाताप किए मर जाएगा [चुगली से] वह नरक में प्रवेश करने वाला पहला व्यक्ति होगा"। भविष्यवक्ता साथी एक-दूसरे से शालीनता से मिलते थे, इसके विपरीत, पाखंडी जाहिरा तौर पर एक-दूसरे से अच्छी तरह से मिलते थे लेकिन उनकी पीठ पीछे वे पीठ काटते थे। क़ुरआन में ख़ुदा कहते हैं:

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ

"धिक्कार उस पर है जो [लोगों] की कमियों को पीठ के पीछे उठा लेता है। (कुरान, अध्याय 104, श्लोक 1)

एक संत ने कहा: "हमने उन पवित्र पूर्ववर्तियों में से महान लोगों को देखा है जिन्होंने प्रार्थना और उपवास को [दिव्य] पूजा के रूप में नहीं माना, बल्कि उन्होंने लोगों का अनादर करने से परहेज करने को पूजा के कार्य के रूप में माना"। अब्दुल्ला बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "जब आप किसी मित्र के दोषों को सूचीबद्ध करने का इरादा रखते हैं, तो अपने स्वयं के दोषों को याद रखें [पहले क्योंकि यह आपको अपने दोस्त की चुगली करने से रोकेगा]"। हसन अल-बसरी (ईश्वर उस पर दया करे) मानवता को यह कहकर संबोधित करते थे: "ऐ आदम की बच्चों! आप [ईश्वर में] विश्वास की वास्तविकता को तब तक नहीं समझ सकते और महसूस नहीं कर सकते जब तक कि आप अपने भीतर की गलती के लिए लोगों को बुरा कहना बंद नहीं कर देते और पहले इसे अपने भीतर सुधारते हैं। जब आप अपने [निचले] स्व के सुधार में व्यस्त हो जाते हैं, तो वह अकेले आपके लिए पर्याप्त व्यस्तता होगी, और आपको दूसरों के दोषों पर एक नज़र डालने के लिए कोई खाली समय नहीं मिलेगा। परमेश्वर के सबसे प्रिय सेवक ऐसे लोग हैं। मलिक इब्न दीनार (भगवान उन पर दया करें - एक महान संत और ज्ञानवादी) ने कहा: "यीशु मसीह (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) अपने शिष्यों और साथियों की संगति में एक मरे हुए कुत्ते के पास से गुजरे। किसी ने कहा: 'इस [मृत] कुत्ते में बहुत बदबू है'। उसने कहा, "उसके दांत कितने सफेद हैं!

इसलिए, उन्होंने उन्हें [मृत] कुत्ते को चुगली करने से रोक दिया और उन्हें भगवान की रचनाओं के अच्छे गुणों का उल्लेख करने की सलाह दी। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "ईश्वर की याद (*धिक्र)* में संलग्न रहें, इसमें [आंतरिक आध्यात्मिक] उपचार है; लोगों का उल्लेख न करें [या याद रखें], इसमें [आंतरिक आध्यात्मिक] रोग है [क्योंकि लोग चुगली करने, निंदा करने, उपहास करने और उनसे नफरत करने और उनसे संबंधित अन्य समान आंतरिक बीमारियों के लिए प्रवृत्त हो जाते हैं]"।

चुगली का अर्थ और इसकी सीमाएं: चुगली करने की परिभाषा यह है कि किसी का उल्लेख इस तरह से किया जाता है कि यदि कोई इसे सुनता है, तो वह इसे बुरा मानेगा [और उस तरह से बात नहीं करना चाहेगा]। चाहे यह उल्लेख किसी शारीरिक विकृति या नैतिक बुराइयों से संबंधित हो, चाहे किसी के शब्दों को लक्षित किया गया हो या उसके कर्मों से, चाहे दोष किसी के नाम पर उठाए गए हों या किसी के वंश [या जाति] में, चाहे किसी के विश्वास से संबंधित मामलों में हों या किसी के सांसारिक मामलों में। शरीर की विकृति किसी को अंधे, टेढ़ी आंखें, गंजा, छोटी, लंबी, काली या पीली या किसी आंतरिक विशेषता से जोड़ना है, जिसकी उपस्थिति को बुरा माना जाता है। अपने वंश में दोष निकालना अपने पिता को गुलाम, पापी, नीच, जूता ठीक करने वाला, या नापसंद (मकरूह) पेशे से संबंधित कहकर किया जाता है। किसी को बदमिजाज, कंजूस, अहंकारी, दिखावटी, गुस्सैल, कायर, कमजोर, विनम्र, अस्वीकृत या इस तरह के किसी नैतिक दुर्गुण में लिप्त कहकर नैतिक कमियां। किसी को अपनी आस्था और धर्म में दोष खोजने का काम चोर, झूठा, शराबी, बेईमान, अत्याचारी, प्रार्थना और उपवास जैसे ईश्वरीय पूजा के कार्यों में आलसी कहकर किया जाता है, जो अच्छी तरह से प्रणाम और साष्टांग प्रणाम नहीं करता है, या जो चुगली और बुरी बातों से बचकर अपने उपवास की रक्षा नहीं करता है [क्योंकि ये दुर्गुण किसी के उपवास को नष्ट करते हैं जिसे प्राप्त करने का कार्य माना जाता है आध्यात्मिक शुद्धि]। किसी के सांसारिक मामलों में दोष खोजने का काम किसी को दुर्व्यवहारी, असभ्य, लोगों के अधिकारों को अस्वीकार करने वाला, अधिकारवादी, बातूनी, पेटू और नींद में बैठने वाला, विषम समय पर सोने, बैठने के लिए किया जाता है। कपड़ों में दोष का पता यह कहकर किया जाता है कि आस्तीन बहुत चौड़ी है, शर्ट बहुत चौड़ी है, कपड़े गंदे और गंदे हैं।

कुछ लोग कहते हैं, कि धार्मिक मामलों के बारे में लोगों से कुछ कहना [जैसे फटकार और निंदा] चुगली का गठन नहीं करता है क्योंकि यह किसी ऐसी चीज की निंदा है जिसे परमेश्वर नापसंद करता है। यदि कोई पापी है और उसके पापों के कारण उसे ऐसा कहा जाता है, तो इसमें [उनके अनुसार] कुछ भी गलत नहीं है। यह तर्क गलत है क्योंकि साथियों ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को दोष खोजने या अपमान के उद्देश्य से ऐसी बुराइयों का उल्लेख नहीं किया था, बल्कि उनका उद्देश्य धार्मिक मामलों और आदेशों से परिचित होना था और पैगंबर के जमावड़े के अलावा किसी अन्य सभा में उनका उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। विद्वानों की आम सहमति (*इज्मा)* है कि चुगली का नतीजा किसी के बारे में कुछ कहना है जो अगर कोई सुनता है, तो इसके बारे में बुरा लगता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चुगली को इस तरह परिभाषित किया है और यदि कोई दूसरे का इस तरह से उल्लेख करता है, तो वह चुगली करने का दोषी होगा, उसे अपने रब की अवज्ञा करने वाला कहा जाएगा, और वह अपने [मृत] भाई का मांस खाने वाला होगा [क्योंकि चुगली करना उसके समान है]।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों से पूछा: "क्या आप जानते हैं कि 'चुगली' किसे कहा जाता है? उन्होंने उत्तर दिया: "ईश्वर और उसके पैगंबर सबसे अच्छे जानते हैं!" उसने कहा: "अपने भाई के मामलों का उल्लेख करना कि वह उल्लेख करना पसंद नहीं करता है [चुगली है]"। साथियों

ने पूछा: "क्या होगा यदि उल्लिखित चीज़ [जो प्रकृति में बुरी है और वह इसका उल्लेख करना पसंद नहीं करता है] वास्तव में उसमें मौजूद है?" उन्होंने जवाब दिया: "अगर यह [वास्तव में] उसमें मौजूद है तो यह [वास्तव में] चुगली [के बारे में है] अन्यथा [यदि यह उसमें मौजूद नहीं है], यह [आधारहीन] आरोप है [जो कहीं अधिक बुरा है]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

चुगली केवल मौखिक रूप से नहीं की जाती है, इसके बजाय हर कार्य चुगली का गठन करता है जो किसी अन्य व्यक्ति की गलती को प्रकट करेगा, चाहे वह इशारे, व्यंग्य या किसी स्पष्ट या अस्पष्ट [शारीरिक] आंदोलन से हो। चुगली के संबंध में, सब कुछ निषिद्ध है (हराम) और अवैध जो स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है, अस्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है, शब्द, कार्रवाई, व्यंग्य और हावभाव। वही [दिव्य] आज्ञा [चुगली करने के निषेध के बारे में] किसी की नकल करने पर लागू होती है, उदाहरण के लिए, किसी ऐसे व्यक्ति की नकल करना जो लंगड़ा जाता है [किसी के पैर में विकलांगता के कारण] चुगली करने से भी बदतर है। बैकबिटिंग को लिखित रूप में भी किया जा सकता है क्योंकि लेखन भी भाषण की तरह अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। यदि कोई लेखक [या किसी भी रूप में लेखन के किसी भी माध्यम में] किसी के लेखन में किसी का नाम लेता है और किसी के दोषों की गणना करता है [यह अभी भी चुगली है] सिवाय इसके कि जब यह एक वैध कारण के लिए किया जाता है। जब पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) किसी अन्य व्यक्ति के कार्य को नापसंद करते थे, तो वह यह नहीं कहते थे कि फलां व्यक्ति अमुक काम करता है, इसके बजाय वह कहते थे: "लोगों को क्या हो गया है कि वे इस तरह की चीजें करते हैं?" (इस परंपरा का वर्णन किया गया है आयशा के अधिकार पर *हदीस* संग्रह अबू *दाऊद* [भगवान उससे प्रसन्न हों])

विद्वानों और शैक्षिक धर्मशास्त्रियों द्वारा चुटकी लेना: सबसे खराब बात विद्वानों और शैक्षिक धर्मशास्त्रियों (पादरी या *उलेमा*) द्वारा आलोचना की जाती है, जो दिखावा करने के इच्छुक होते हैं, क्योंकि वे अच्छे [पवित्र लोगों के रूप में कार्य करके अपने उद्देश्य को व्यक्त करते हैं, लेकिन फिर भी, ईश्वर और धर्म के नाम पर अन्य लोगों पर एक आत्म-धर्मी तरीके से कटाक्ष करते हैं] और लोग (आम लोग और आम आदमी) सोचते हैं कि वे (यानी, विद्वान) अपनी अज्ञानता के कारण पीछे नहीं हटते हैं, क्योंकि वे नहीं जानते कि ऐसे विद्वान एक साथ दो पाप कर रहे हैं - एक चुगली करने का और दूसरा दिखावा करने का [अन्य लोगों को उनके पापों और गलतियों के लिए नीचे रखकर उनकी धार्मिकता और पवित्रता]। इसलिए, जब उनके सामने किसी व्यक्ति का उल्लेख किया जाता है [किसी की गलतियों, पापों या नैतिक शुद्धता और ईमानदारी की कमी के लिए], तो वे कहते हैं: "हम पर उसके अनुग्रह के लिए भगवान का सभी धन्यवाद कि उसने हमें राजाओं [या शक्तिशाली राजनीतिक अभिजात वर्ग] से मिलने की परीक्षा में नहीं डाला और हमें दुनिया की तलाश के अपमान से बचाया"। या वे प्रार्थना के रूप में कहेंगे: "भगवान हमें इस तरह की बेशर्मी और अपमान से बचाए"। उनका उद्देश्य दूसरों के दोषों को प्रकट करना है, लेकिन इसके लिए कभी-कभी, वे [ईश्वर को व्यक्त करने] कृतज्ञता के शब्दों का उपयोग करते हैं और कभी-कभी प्रार्थना और प्रार्थना के रूप का उपयोग करते हैं [भगवान से] लेकिन उनका उद्देश्य न तो प्रार्थना है और न ही ईश्वरीय कृतज्ञता। कभी-कभी वे चुगली करने से पहले किसी की प्रशंसा करते हैं। उदाहरण के लिए, वे कहेंगे: "अमुक व्यक्ति कितना अच्छा है, ऐसा व्यक्ति कितना पूजा करता है लेकिन उसमें एक बुरा गुण होता है और केवल उस व्यक्ति को ही नहीं, हम सभी उस बुरे गुण में शामिल हैं जो धैर्य और संतोष की

कमी है"। जाहिर है, इसमें उनकी अपनी निंदा है, लेकिन यहां उद्देश्य अपने स्वयं के निचले स्व की निंदा करना नहीं है, बल्कि किसी और की गलती को प्रकट करना है। हालाँकि, इसके लिए यहां अपनाई गई शैली श्रोताओं को उनकी विनम्रता और ईमानदारी के बारे में समझाना है ताकि उन्हें धर्मी में गिना जा सके। इस तरह के एक 'विद्वान' ने तीन पापों को जोड़ा है [ऐसा करने में] - चुगली करना, दिखावा करना और स्वयं की शुद्धि का दावा करना - दूसरे शब्दों में, खुद को धर्मी लोगों में गिनना [आत्म-धर्मी अहंकार की आत्म-भ्रमपूर्ण स्थिति में खुद को धर्मपरायणता का श्रेय देकर, जो बदले में आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष और परिवर्तन में बाधा डालता है] और मूर्खता के कारण, खुद को चुगली से शुद्ध मानता है।

शैतान ऐसे लोगों का बहुत आसानी से शिकार करता है। ये लोग सही ज्ञान से रहित हैं और [उनके] निम्न स्व (*नफ्स*) उन्हें लगातार धोखा देते हैं। कभी-कभी वे एक साथी साथी के बारे में यह कहकर चुगली सुनने पर ध्यान देते हैं: "परमेश्वर के लिए सभी पूर्णता (क्योंकि वह किसी भी त्रुटि और दोषों से मुक्त है)! यह बहुत अजीब है!" यहां भगवान के नाम को ईश्वरीय भव्यता और महिमा की अभिव्यक्ति और स्वीकारोक्ति के रूप में नहीं लिया गया है, बल्कि उनकी अपनी आंतरिक बुराई की अभिव्यक्ति के रूप में लिया गया है। कभी-कभी चुगली के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द होता है: "हम अपने दोस्त की ऐसी [बुरी] स्थिति से बहुत दुखी और दुखी हैं। भगवान उन्हें आराम दें। [ईश्वर से] दुःख और प्रार्थना का यह बंटवारा करुणा की [सच्ची] भावनाओं के साथ नहीं किया जाता है, बल्कि अपनी श्रेष्ठता की अभिव्यक्ति का उद्देश्य होता है। यदि प्रार्थना वास्तव में करने का इरादा होता, तो वे इसे सार्वजनिक सभा में करने के बजाय, अपनी प्रार्थना के बाद एकांत में करते। इसी तरह, अगर वे वास्तव में दुखी होते, तो वे इसे उन लोगों के सामने व्यक्त नहीं करते जो इससे अपरिचित थे। कभी-कभी वे कहते हैं: "क्या अफ़सोस की बात है! फलाना व्यक्ति बड़े कष्ट से घिरा हुआ है! भगवान हमें और उसे पश्चाताप करने की क्षमता प्रदान करें! जाहिरा तौर पर यह एक प्रार्थना है, लेकिन परमेश्वर उनकी आंतरिक बुराई से अच्छी तरह वाकिफ है और जानता है कि उनके हृदय किस चीज से भरे हुए हैं [जैसा कि परमेश्वर जानता है कि हृदय में दबे रहस्यों और आत्मा के अंतरतम में छिपी सूक्ष्म बुराइयों को जानता है], लेकिन वे, अपनी अज्ञानता के कारण, यह नहीं जानते कि इस प्रार्थना के माध्यम से, वे *इनाम (*थवाब) के बजाय (ईश्वरीय) दंड (*आदब*) के हकदार हो गए हैं। चुगली सुनना और उस पर आश्चर्य व्यक्त करना, भी बैकबिटिंग है क्योंकि यह बैकबिटिंग के लिए बैकबिटर को प्रोत्साहित करता है। चुगली का श्रोता चुगली के पाप में तब तक भागीदार होता है जब तक कि कोई इसे जीभ से नहीं रोक देता। अगर किसी में लोगों को ऐसा करने से रोकने का साहस और शक्ति नहीं है, तो उसे इसे दिल में बुरा समझना चाहिए या उठकर उस सभा को छोड़ देना चाहिए या विषय को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। उन स्थितियों में, श्रोता की ओर से कोई गणना नहीं होगी। यदि कोई इसे सुनने की इच्छा रखते हुए इसे जीभ से प्रतिबंधित करता है, तो यह पाखंड है। न्याय की कसौटी हृदय है। जब कोई इसे हृदय में बुरा मानेगा तो वह पाप से सुरक्षित रहेगा। हृदय में इसे प्रतिबंधित करने के संबंध में, इसे स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित करना और उल्लिखित का बचाव करना आवश्यक है।

बैकबिटिंग के कारण: चुगली करने के असंख्य कारण हैं, लेकिन वे सभी ग्यारह कारणों के दायरे में आते हैं। उनमें से, [पहला] आठ आम लोगों से संबंधित हैं और [अंतिम] तीन प्रमुख (गैर-साधारण) लोगों से संबंधित हैं।

पहला कारण - शत्रुता और विद्वेष: एक ऐसी घटना होती है जो हृदय में क्रोध की आग को प्रज्वलित करती है और जब ऐसा होता है, तो यह केवल क्रोध पैदा करने वाले के दोषों का उल्लेख करके बुझ जाती है, चाहे [यह उल्लेख] क्रोधित होने वाले द्वारा किया गया हो या किसी और द्वारा। कभी-कभी कोई व्यक्ति क्रोध को नियंत्रित करने में सफल हो जाता है, लेकिन हृदय में द्वेष रहता है जो क्रोध से भी बदतर होता है, क्योंकि हृदय में बनी हुई द्वेष और शत्रुता, चुगली की स्थायी नींव रखती है। इससे पता चलता है कि दुश्मनी और विद्वेष दोनों ही चुगली के कारण हैं।

दूसरा कारण - दूसरों से सहमत होना: दूसरे शब्दों में, दोस्तों और साथियों के साथ सहमत होना और उनकी पुष्टि करना और उन्हें ऐसा करते हुए देखते हुए स्वयं इसमें शामिल होना और उनकी मदद करने और उनसे सहमत होने की आवश्यकता महसूस करना। इसलिए जब किसी सभा में लोग किसी के सम्मान और उपहास के साथ खेलते हैं, तो वह सोचता है कि अगर कोई इसमें भाग लेने से इनकार करता है, उनसे असहमत होता है, विषय बदल देता है या चला जाता है, तो वे परेशान हो जाएंगे और ऐसे व्यक्ति से नफरत करने लगेंगे। इस विचार के साथ, कोई उनसे सहमत होता है और इसे सामाजिक व्यवहार और एकरूपता का एक महत्वपूर्ण आधार मानता है। कभी-कभी किसी के साथी गुस्से में किसी को काट देते हैं। व्यक्ति उनकी तरह क्रोधित होने का नाटक करता है और स्वयं चुगली में शामिल हो जाता है और इस क्रिया के माध्यम से दिखाता है कि वह हर स्थिति में अपने दोस्तों के साथ है, चाहे वह आनंद, दुख, चिंता या सहजता हो।

तीसरा कारण - सावधानी और पूर्व-निष्कासन: कभी-कभी कोई अनुमान लगाता है कि किसी को किसी द्वारा देखा जा रहा है और ऐसा व्यक्ति किसी महत्वपूर्ण [या शक्तिशाली] व्यक्ति के सामने एक के खिलाफ उल्टा पड़ जाएगा या कुछ मामलों में एक के खिलाफ सबूत देगा। इन आशंकाओं और आशंकाओं के कारण, व्यक्ति सक्रिय रूप से बैकबाइट करना शुरू कर देता है और ऐसे व्यक्ति को लक्षित करना शुरू कर देता है ताकि ऐसे व्यक्ति से जो कहने की उम्मीद की जाती है उसे कम किया जा सके और [सक्रिय रूप से] [ऐसे व्यक्ति] को बदनाम किया जा सके। कोई व्यक्ति पहले किसी अन्य व्यक्ति के बारे में सही बातें भी कह सकता है, ताकि वह ऐसे व्यक्ति के बारे में सही जानकारी प्रदान करने की प्रतिष्ठा विकसित कर सके, इसलिए बाद में कोई व्यक्ति उस व्यक्ति के विरुद्ध झूठ और अफवाहें फैला सकता है [झूठ फैलाने के संदेह के बिना] और दावा कर सकता है कि "झूठ बोलना मेरे स्वभाव में नहीं है और जो मैंने पहले इस व्यक्ति के बारे में कहा था, सच साबित हुआ और अब मैं जो कह रहा हूं वह भी सच है। कोई सोचता है कि इस तरह की अग्रिम योजना और सावधानी के कारण, व्यक्ति सुरक्षित हो जाएगा क्योंकि जिस व्यक्ति से डर लगता है वह किसी के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं करेगा और यदि कोई ऐसा करता है, तो उसे महत्व नहीं दिया जाएगा और उस पर विश्वास नहीं किया जाएगा।

चौथा कारण - गलत कामों से छूट: कभी-कभी, चुगली का उद्देश्य पापों से छूट दिखाना होता है। इस संबंध में, कोई दावा करता है कि गलत काम करने वाला व्यक्ति अकेला नहीं है। यदि किसी की छूट का इरादा था, तो किसी को किसी और का संदर्भ दिए बिना अपने स्वयं के कारणों का उल्लेख करना चाहिए [गलत काम करने के लिए]। चूंकि किसी अन्य व्यक्ति को शामिल करने से किसी का तर्क मजबूत हो जाता है, इसलिए एक में दूसरे व्यक्ति को शामिल किया जाता है [चुगली के माध्यम से]।

पांचवां कारण - अभिमान और शेखी बघारने की अभिव्यक्ति: यह दूसरों में दोष ढूंढकर अपनी श्रेष्ठता दिखाकर किया जाता है। उदाहरण के लिए, यह बयान देना कि अमुक व्यक्ति अज्ञानी है, उसकी समझ दोषपूर्ण है, और उसकी वाणी कमजोर और बेकार है। इस तरह की आलोचना का उद्देश्य दूसरे पर अपनी श्रेष्ठता दिखाना और यह साबित करना है कि एक के पास दूसरे की तुलना में अधिक ज्ञान है, उसके पास समझने की शक्ति है और उसकी वाणी अच्छी है। यह आलोचना लोगों को अपने जैसे किसी और का सम्मान करने से रोकने और दूसरे को समाज में एक प्रमुख स्थान हासिल करने से रोकने के लिए है।

छठा कारण - ईर्ष्या: कभी-कभी ईर्ष्या व्यक्ति को यह देखकर चुगली करने के लिए उकसाती है कि लोग ईर्ष्यालु लोगों की प्रशंसा कर रहे हैं, प्यार कर रहे हैं और उनका सम्मान कर रहे हैं। कोई इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता है और चाहता है कि इन आशीषों को ईर्ष्यालु लोगों से छीन लिया जाए और लोग ईर्ष्यालु लोगों से नफरत और अनादर करना शुरू कर दें। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, कोई ईर्ष्यालु के दोषों को इंगित करना शुरू कर देता है। ईर्ष्या शत्रुता और द्वेष के अलावा एक अन्य स्थिति है, जो तब सामने आती है जब कोई अन्य व्यक्ति किसी के खिलाफ कुछ अधिकता करता है और वे बदला लेने का प्रतीक होते हैं। ईर्ष्या में वह तत्व नहीं होता [बदला का]। कभी-कभी व्यक्ति अपने ही परोपकारी मित्र और करीबी साथी से भी ईर्ष्या करने लगता है।

सातवां कारण - मज़ाक: दूसरे शब्दों में, किसी के दोषों को [सामाजिक] सभा में रुचि पैदा करने और प्रतिभागियों को अच्छा समय बिताने के लिए हंसने के लिए बाहर लाया जाता है।

आठवां कारण - अवमान: कभी-कभी चुगली किसी अन्य व्यक्ति के अपमान और अपमान के कार्य के रूप में की जाती है। यह अहंकारी लोगों की पहचान है। इसमें दूसरे व्यक्ति के उपस्थित होने या न होने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। कुछ लोग अपने सामने बैठे व्यक्ति की आलोचना और उपहास करते हैं, बिना यह सोचे कि वे कितना अपमान कर रहे हैं, और अगर वे दूसरे व्यक्ति की जगह होते तो उनका क्या होता।

प्रमुख लोगों से संबंधित चुगली के कारण: ये तीनों बहुत ही सूक्ष्म और जटिल हैं। वे शुद्ध दुष्ट हैं, लेकिन शैतान उनमें लालच पैदा करता है कि ये सभी कारण अच्छे हैं या उनमें कुछ अच्छाई है लेकिन शैतान उनमें बुराई को मिला देता है।

पहला कारण - आश्चर्य: कभी-कभी एक धार्मिक व्यक्ति गलती करता है इसलिए आश्चर्य की अभिव्यक्ति के रूप में एक कहता है: "हम उस व्यक्ति के इस तरह के कार्य पर आश्चर्यचकित हैं। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह सच है कि किसी धार्मिक व्यक्ति की गलती आश्चर्य का कारण होती है, लेकिन उस बयान को देने वाले को आश्चर्य व्यक्त करने में किसी भी नाम का उल्लेख नहीं करना चाहिए। शैतान ने इस धार्मिक भावना को चुगली में बदल दिया, और एक को नामों का उल्लेख करने के लिए उकसाया और एक को पाप में शामिल किया। इसी तरह यह कहना भी चुगली में शामिल है: "यह अमुक व्यक्ति के लिए आश्चर्य की बात है कि कोई ऐसे बदसूरत व्यक्ति [विपरीत लिंग से] से प्यार करता है या एक शिक्षित व्यक्ति होने के नाते अमुक अज्ञानी व्यक्ति के पास जाता है"।

दूसरा कारण – सहानुभूति और सहानुभूति की भावना: दूसरे शब्दों में, व्यक्ति किसी की स्थिति पर दुखी हो जाता है और उस व्यक्ति को किसी बुरी चीज में शामिल देखकर कहता है: "ऐसे व्यक्ति की वर्तमान स्थिति ने मुझे परेशान कर दिया है। मुझे उस व्यक्ति की स्थिति पर खेद है। अफसोस का दावा

सही और सराहनीय है, लेकिन नाम लेने से यह खराब हो गया था और एक अच्छी भावना बैकबाइटिंग का कारण बन गई थी। एक मुसलमान की गलतियों पर पछतावा करना और उसके लिए सहानुभूति और सहानुभूति महसूस करना अच्छी बात है, लेकिन शैतान किसी को नामों का उल्लेख करने के लिए उकसाता है और इसलिए बुराई को कुछ अच्छी चीज में मिला देता है।

तीसरा कारण – ईश्वर के लिए आक्रोश: किसी को अशोभनीय कार्य में शामिल देखना या उसके बारे में कुछ बुरा सुनना, विश्वास के प्रणोदन के कारण क्रोध पैदा कर सकता है। यदि आक्रोश आया और नामों का उल्लेख करके व्यक्त किया गया, तो यह कार्य न केवल ईश्वरीय प्रतिफल से वंचित हो जाएगा, बल्कि इसके विपरीत चुगली का कारण भी बन जाएगा। अच्छाई को मनाने और बुराई के खिलाफ चेतावनी देने के लिए आक्रोश अच्छा है, लेकिन यह माना जाना चाहिए कि यदि इसे किसी निश्चित व्यक्ति के प्रति व्यक्त करने की आवश्यकता है, तो इसे इस तरह से किया जाना चाहिए कि किसी और को पता न चले कि यह किसके लिए है। यदि नामों का उल्लेख करना आवश्यक है, तो किसी को आक्रोश व्यक्त नहीं करना चाहिए। ये ऐसी सूक्ष्मताएं हैं जिनके बारे में न केवल आम आदमी, बल्कि विद्वान भी जानते हैं और सोचते हैं कि, यदि आश्चर्य, परोपकार और आक्रोश भगवान के लिए है, तो नामों का उल्लेख करने में कोई बुराई नहीं है, जो एक गलत अनुमान है।

चुगली का इलाज: सभी हानिकारक आंतरिक प्रवृत्तियों, गुणों और नीच आदतों को ज्ञान और कार्यों के संयोजन के माध्यम से [अर्जित ज्ञान के अनुसार] ठीक किया जा सकता है। इन बीमारियों को ठीक करने के लिए केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है और न ही अकेले कार्य ही पर्याप्त हैं। प्रत्येक बीमारी की दवा उस बीमारी के कारण के विपरीत होती है। सबसे पहले, हमें चुगली करने के कारणों का पता लगाना चाहिए और इसके बारे में पिछले पन्नों में बहुत कुछ लिखा गया है। जीभ को चुगली करने से रोकने के दो तरीके हैं: एक संक्षिप्त है और दूसरा एक विस्तृत विधि है।

पीठ कसने का संक्षिप्त तरीका : यह है कि किसी का यह दृढ़ विश्वास है कि वह चुगली करके परमेश्वर की नाराजगी को प्राप्त करता है और न्याय के दिन इसके परिणामस्वरूप अच्छे कर्म व्यर्थ हो जाएंगे, क्योंकि चुगली करने से अच्छे कर्मों को [पिट्ठेबाज के] उस व्यक्ति को स्थानांतरित कर दिया जाता है जिसे दोषी ठहराया गया है। यदि किसी के पास पर्याप्त अच्छे कर्म नहीं हैं, तो पीड़ित के पाप [कर्मों के] खाते में स्थानांतरित हो जाते हैं। इसके अलावा, कोई भी एक नरभक्षी के समान हो जाता है, जो अपने भाई के खिलाफ चुगली करके अपने ही मृत भाई का मांस खाता है [संबंध में, विश्वास में या मानवता में, यानी किसी भी व्यक्ति में]। यह अपमान कितना बड़ा है? यदि किसी के कर्मों के खाते में अच्छे और बुरे दोनों कर्म हैं, लेकिन बुरे कर्मों का पैमाना भारी है, तो यह व्यक्ति नरक में जाएगा। मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दो तराजू [वजन में] बराबर हैं। घटनाओं के एक दुखद मोड़ में, इस व्यक्ति के एक पाप ने चुगली के कारण बुरे कर्मों के पैमाने को झुका दिया और एक को नरक का योग्य बना दिया।

जब कोई [भविष्यवाणी] परंपराओं और उन चेतावनियों को देखता है जो डर के कारण चुगली करने के बारे में दी गई हैं, तो जीभ चुगली करने के लिए सहमत नहीं होगी। यह रणनीति भी उपयोगी हो सकती है कि कोई व्यक्ति चुगली करने से पहले खुद पर एक नज़र डाले। शायद कोई अपने भीतर एक दोष ढूंढ सकता है और फिर उसे कम करने के बारे में चिंता कर सकता है, बजाय इसके कि वह किसी और में दोष

उठाकर उसके परिणामस्वरूप पाप अर्जित करे। यदि कोई अपने भीतर कोई दोष पाता है, तो उसे अपने स्वयं के निचले स्व (*नफ्स*) की निंदा करनी चाहिए और उसकी निंदा करनी चाहिए। दूसरों को बदनाम करने की आवश्यकता क्यों है [यदि किसी के भीतर दोष हो और शायद ही कोई इससे रहित हो]? यह सोचना चाहिए कि जैसे कोई अपने भीतर के दोषों को दूर करने में सक्षम नहीं है, वैसे ही दूसरे ऐसा करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। यह तब है जब वह दोष किसी की अपनी पसंद से है [इसे बने रहने देने के संदर्भ में] और यदि यह जन्म से है [और इसलिए किसी के स्वयं के विकल्प के द्वारा नहीं] तो इसकी निंदा करना सृष्टिकर्ता की निंदा करना है। जैसे एक आदमी ने एक ऋषि को इस तरह पुकारा: "हे बदसूरत आदमी!", उसने जवाब दिया: "हे भाई! अगर सुंदरता या कुरूपता मेरे वश में होती, तो मैं अपने चेहरे को अच्छा बना लेता। यदि कोई व्यक्ति अपनी आत्मा में कोई दोष नहीं पाता है, तो उसे परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने उसे पापों से बचने की क्षमता प्रदान की है और उसे चुगली में शामिल नहीं किया है जो दोषों में से एक बड़ा दोष है, तो शव का मांस खाने से बुरा कार्य क्या है? यदि कोई इस मामले में [गहराई से] देखता है, तो कोई भी दोषों से रहित नहीं है। केवल ईश्वर का अस्तित्व ही किसी भी दोष [और दोष] से रहित है। अपने आप को सभी दोषों से रहित समझना शुद्ध अज्ञानता और मूर्खतापूर्ण विचार है और यह अपने आप में एक बड़ा दोष है। अपने आप को चुगली से बचाने के संबंध में, एक बात जो उपयोगी हो सकती है वह यह है कि कोई व्यक्ति दूसरों के रूप में खुद को कम करता है (समझता है), दूसरे शब्दों में, किसी को यह सोचना चाहिए: "जैसे मैं मेरे खिलाफ चुगली करने से दुखी हूं, वैसे ही दूसरों को भी उनके खिलाफ मेरी चुगली से दुखी किया जाएगा। जैसे मैं अपने खिलाफ चुगली करने से खुश नहीं हूं, क्या दूसरे उनके खिलाफ चुगली करने से प्रसन्न होंगे?

इलाज की विस्तृत विधि: इलाज की विस्तृत विधि उन कारणों को देखना है जो चुगली को भड़काते हैं। हर बीमारी का इलाज उसके मूल कारण को मिटाकर संभव है। बैकबिटिंग के कारणों और भड़काने वाले कारकों का उल्लेख पहले किया जा चुका है। इसलिए, यदि चुगली का कारण [किसी के प्रति] क्रोध है, तो इसे [स्वयं को आश्वस्त करके] ठीक किया जाना चाहिए कि: "यदि मैं क्रोधित हो जाता हूं और इसे नियंत्रित नहीं करता हूं, तो परमेश्वर मेरी चुगली के कारण मुझसे नाराज हो जाएगा क्योंकि उसने चुगली करने पर रोक लगा दी है और मैंने उसकी अवज्ञा की है और उसकी आज्ञा को महत्वहीन माना है"। चुगली का दूसरा कारण अनुरूपता (या अपने साथियों के साथ सद्भाव में होना) है, अर्थात, अपने दोस्तों के साथ एक अच्छा खेल बनने के लिए चुगली करना [जब वे चुगली कर रहे हों]। किसी को यह सोचना चाहिए कि यदि कोई सृष्टि की स्वीकृति प्राप्त करता है, जब इसके परिणामस्वरूप परमेश्वर की नाराजगी होती है, जो श्रेष्ठ [सभी का निर्माता और स्वामी] है? कौन इतना मूर्ख है कि परमेश्वर के अलावा किसी और की प्रसन्नता की तलाश में प्रभु को अप्रसन्न कर दे?

चुगली का तीसरा कारण स्वयं को पवित्रता का श्रेय देना है, दूसरे शब्दों में, दूसरों को पापों और गलत कामों के लिए जिम्मेदार ठहराना, उनसे अपने स्वयं के दोषमुक्ति को व्यक्त करना और अपने स्वयं की शुद्धता की गणना करना। यह सोचना चाहिए कि ईश्वर की नाराजगी के सामने लोगों की नाराजगी का कोई मतलब नहीं है। तब चुगली करने के कारण ईश्वर की नाराजगी निश्चित है लेकिन लोगों की अनुमोदन, जिनके सामने अपने स्वयं को दोषमुक्त करना वांछित है, इसके माध्यम से गारंटी नहीं है। इस दुनिया की गरिमा को केवल वैसे ही माना जा सकता है (वांछित) जैसा कि किसी को मिल सकता है या नहीं भी हो

सकता है, हालांकि, परलोक का अपमान और हानि निश्चित है कि किसी को चुगली के परिणामस्वरूप मिलना तय है। पदचिह्नों पर चलने की अनुमति केवल उन लोगों को दी जाती है जो परमेश्वर की इच्छा के अधीन हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। यह उन लोगों के लिए जायज़ नहीं है जो ईश्वरीय आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं, चाहे वे इस सांसारिक जीवन में कितने भी उच्च पद पर हों। यदि चुगली का कारण दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता व्यक्त करना है, तो व्यक्ति को इस बात पर विचार करके इसका इलाज करना चाहिए कि परमेश्वर के सामने मेरी जो भी हैसियत थी, वह इस चुगली के कारण चली गई थी। अगर अभी भी किसी को कुछ सांसारिक इनाम और सम्मान मिलता है, तो उसका मूल्य क्या है? इसके अलावा, यह निश्चित नहीं है कि किसी को यह भी मिलेगा क्योंकि लोग [दूसरों को चुगली करने के संदर्भ में] किसी की बात पर विश्वास कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं। अगर वे विश्वास भी नहीं करते हैं, तो जो भी बची हुई गरिमा बची है, वह नाली में चली जाएगी और वे एक को झूठा समझना शुरू कर देंगे।

ईर्ष्या के कारण चुगली करने से ईश्वरीय प्रतिशोध दोगुना हो जाता है - पहला सांसारिक आशीर्वादों पर ईर्ष्या करने के कारण होता है जो घटना तय है, और दूसरा यह है कि इसमें उस व्यक्ति को चुगली करने के कारण परलोक का प्रतिशोध जोड़ा जाता है जिससे वह ईर्ष्या करता था। इससे इस दुनिया और विश्वास दोनों का नुकसान होता है। चुगली का एक और नुकसान यह है कि किसी के अच्छे कर्म उस व्यक्ति को हस्तांतरित हो जाते हैं जिसे पीठ में काट लिया गया है और किसी के बुरे कर्म बैकबिटर में स्थानांतरित हो जाते हैं। यदि चुगली करने के लिए प्रोत्साहन उपहास है, तो किसी को यह समझना चाहिए कि एक दूसरे को अपमानित करके परमेश्वर के सामने अपमान जमा कर रहा है। यदि कोई अपने अंतिम अंत को देखता है और देखता है कि नरक की ओर कदम रखते हुए न्याय के दिन उसे कितनी शर्म और अपमान सहना होगा, तो अपने कंधों पर उपहास किए गए लोगों के पापों का बोझ उठाना होगा। अगर कोई इस तरह से सोचता है, तो दिल में परमेश्वर का भय पैदा हो जाएगा और वह दूसरे का उपहास करने की हिम्मत भी नहीं करेगा। एक दूसरे की तुलना में उपहास के अधिक योग्य है क्योंकि दूसरे का उपहास करने में अपनी मूर्खता है, परिणामस्वरूप, खुद को न्याय के दिन के अपमान के लिए सौंप देता है।

पापों के कारण किसी पर दया करना एक प्रशंसनीय भावना है, हालाँकि, शैतान इस धर्मी कार्य से ईर्ष्या करता है और किसी व्यक्ति को एक ऐसा वचन बोलकर गुमराह करना चाहता है जिससे उसके धर्मी कर्मों को उस व्यक्ति को स्थानांतरित कर दिया जा सकता है जिस पर उसने दया की थी। इस तरह, दूसरे के नुकसान की भरपाई की जाएगी [पापों और गलत कामों में शामिल] और व्यक्ति स्वयं एक ऐसे नुकसान में शामिल हो जाएगा जिसकी भरपाई इस प्रकार स्वयं पर दया के योग्य होने के लिए नहीं की जा सकती है। परमेश्वर की खातिर नाराजगी में चुगली नहीं होनी चाहिए। जब कोई ईश्वर के लिए दूसरे से नाराज होता है, तो शैतान चाहता है कि वह ईश्वरीय प्रतिफल से वंचित हो जाए, जो उसे चुगली में लिप्त होने से मिलने की उम्मीद की जाती है। यही आश्चर्य की स्थिति है। यदि कोई दूसरे की स्थिति पर आश्चर्य व्यक्त करता है, तो वह चुगली में शामिल हो जाता है। दूसरे, कोई भी किसी के आश्चर्य का पात्र नहीं है, इसके बजाय किसी को अपने स्वयं पर आश्चर्यचकित होना चाहिए (*नफ्स*) किसी अन्य व्यक्ति के विश्वास या सांसारिक मामले पर आश्चर्य व्यक्त करके अपने धर्म को खोने के लिए इस प्रकार सांसारिक प्रतिशोध के योग्य हो जाता है। यह आश्चर्य के बहाने का उपयोग करके और उन्हें सार्वजनिक रूप से उजागर करके किसी अन्य व्यक्ति के छिपे हुए दोषों से पर्दा उठाने के कारण है। इसी तरह, किसी के अपने दोषों को उजागर किया जाएगा जिसके परिणामस्वरूप अपमान होगा। इन सभी रोगों का इलाज ज्ञान और ज्ञान [ईश्वर का] है। जीभ को

उस व्यक्ति के लिए चुगली से बचाया जाता है जिसका विश्वास मजबूत है और दिव्य [ज्ञान] की सच्ची समझ रखता है।

दिल से चुगली करने का निषेध: मोहभंग या दूसरों के प्रति कम राय रखना (सु *अल-ज़ुन्न*) बुरी, बुरी और अशिष्ट बातों की तरह [ईश्वरीय कानून में] निषिद्ध है। दूसरे शब्दों में, जैसे आपको दूसरों के दोष बताने की अनुमति नहीं है, उसी तरह, आपके लिए यह जायज़ नहीं है कि आपके दिल में दूसरे के बारे में कोई गलत विचार हो, दूसरे से मोहभंग हो जाए। मोहभंग का अर्थ है जानबूझकर किसी अन्य व्यक्ति को बुरा समझना। हालाँकि, यदि यह अनजाने में होता है, तो इसे [ईश्वरीय रूप से] क्षमा कर दिया जाता है, बल्कि संदेह को भी क्षमा कर दिया जाता है। जो निषिद्ध है वह दूसरों के बारे में बुरी और नीच राय रखना है और यह दिल के झुकाव और इरादे से संबंधित है [दूसरों के बारे में बुरे विचार रखने के लिए]। कुरान में यह मोहभंग वर्जित है:

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱجْتَنِبُوا۟ كَثِيرًا مِّنَ ٱلظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ ٱلظَّنِّ إِثْمٌ

"ऐ ईमान वालो! अधिकांश अनुमानों से बचें क्योंकि कुछ अनुमान पाप हैं [क्योंकि वे आपको मोहभंग, नकारात्मकता, घृणा और उनकी पसंद की ओर ले जाते हैं, जो बदले में आपको भौतिक और आध्यात्मिक रूप से विनाशकारी पथ पर ले जाते हैं]। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 12)

मोहभंग या दूसरों के बारे में कम राय रखना (*सु अल-ज़ुन्न*) निषिद्ध है क्योंकि केवल अदृश्य (यानी, भगवान) से रहस्यों का ज्ञाता ही दिलों के रहस्यों से परिचित है। इसीलिए, किसी भी सेवक (ईश्वर के, यानी मनुष्य) के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह दूसरे के बारे में अपने दिल में गलत (नकारात्मक) विचार रखे। हालाँकि, यदि गलत चीजें इस तरह से स्पष्ट हो जाती हैं कि खंडन या अर्थ के लिए कोई जगह नहीं बची है [कि यह वैसा नहीं हो सकता है जैसा लगता है] तो एक गलत विचार आ सकता है और अपने स्वयं के प्रत्यक्ष ज्ञान और अवलोकन के कारण हृदय में बस सकता है। हालाँकि, एक बुराई का विचार जिसे किसी ने नहीं देखा है और न ही विश्वसनीय स्रोतों से सुना है, वह शैतान से है। शैतान वह है जो इस तरह के आक्षेपों को हृदय में डालता है, और इसका मुखर रूप से खंडन करने की आवश्यकता है, क्योंकि एक पापी (या बुराई के प्रति इच्छुक किसी व्यक्ति) द्वारा दी गई खबर विश्वसनीय नहीं है और शैतान पापियों [और गलत काम करने वालों] का प्रमुख है। भगवान कहते हैं:

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوٓا۟ أَن تُصِيبُوا۟ قَوْمًۢا بِجَهَـٰلَةٍ

"ऐ ईमान वालो! यदि कोई पापी (या आदतन गलत काम करने वाला या बुराई के प्रति झुकाव वाला कोई व्यक्ति) आपके लिए समाचार लाता है, तो गलती से किसी राष्ट्र (या लोगों के समूह) को नुकसान पहुंचाने से बचने के लिए [इस पर विश्वास करने से पहले] इसकी पूरी तरह से और पूरी तरह से जांच करें। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 6)

इससे पता चलता है कि शैतान द्वारा लाए गए समाचारों (दूसरों के बारे में गलत विचारों से संबंधित हृदय में आक्षेप) का पता लगाना जायज़ नहीं है। यदि मोहभंग या दूसरों के बारे में बुरी राय रखना, दिल में अपना

रास्ता खोज लेता है, तो किसी को इसे समाप्त करने का एक तरीका सोचना चाहिए और स्वयं (*नफ्स*) को यह समझना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति की आंतरिक स्थिति इससे छिपी हुई है और जो घटना मोहभंग का कारण बन रही है, उसमें अच्छे और बुरे दोनों की संभावनाएं हो सकती हैं और अच्छाई की संभावना को छोड़ते हुए बुराई को प्राथमिकता देना आवश्यक नहीं है। मोहभंग को उसकी निशानियों से पहचाना जाता है और संकेत यह है कि कोई किसी से प्यार करता था लेकिन अब नफरत करने लगता है, पहले वह उस व्यक्ति के प्रति मेहमाननवाजी और सम्मानजनक हुआ करता था लेकिन अब उस व्यक्ति के साथ व्यवहार करने में खुशी नहीं रह जाती है। हृदय परिवर्तन से यह समझना चाहिए कि एक दूसरे से मोहभंग हो रहा है। इलाज यह है कि यदि बुरा अनुमान कभी भी हृदय में आता है, तो किसी को इसे रहने और [हृदय में] बसने की अनुमति नहीं देनी चाहिए और न ही इसे शारीरिक अंगों के माध्यम से व्यक्त करना चाहिए। हृदय में बस जाने वाले मोहभंग की अभिव्यक्ति यह है कि व्यक्ति घृणा और घृणा व्यक्त करना शुरू कर देता है और अंगों के माध्यम से अभिव्यक्ति हृदय में मोहभंग के अनुसार कार्य करना शुरू कर देती है। किसी भी मामले में, शैतान अन्य लोगों के प्रति हृदय में मोहभंग करने के लिए एक बहाने के रूप में थोड़े से बहाने का उपयोग करता है और इसके साथ ही, किसी को यह विश्वास दिलाता है कि वह बुराई को समझने में कितना बुद्धिमान और बुद्धिमान है, और यह कि एक विश्वासी परमेश्वर के प्रकाश के साथ देखता है, भले ही वास्तव में, वह दिव्य प्रकाश के साथ अनुभव नहीं करता है, इसके बजाय कोई शैतान के धोखे के अंधकार को समझता है। हालांकि, यदि कोई भरोसेमंद और विश्वसनीय व्यक्ति आपको किसी चीज के बारे में सूचित करता है और आपका अनुमान उस व्यक्ति का पता लगाने की ओर झुका हुआ है, तो उसे [मोहभंग के लिए नैतिक जिम्मेदारी से] छूट दी जाती है क्योंकि यदि कोई ऐसे व्यक्ति को अस्वीकार करता है, तो यह एक सच्चे व्यक्ति के प्रति मोहभंग की अभिव्यक्ति होगी जो सूचित करता है और पता लगाने के योग्य है और सच्चाई के कारण अस्वीकृति नहीं है। यह किसी भी तरह से उपयुक्त नहीं है कि किसी के बारे में अच्छी राय रखने के लिए दूसरे से मोहभंग हो जाए। हालांकि, किसी को यह देखना चाहिए कि मुखबिर की कोई दुश्मनी नहीं है और वह उस व्यक्ति से ईर्ष्या नहीं करता है जिसकी खबर दी जा रही है, अन्यथा, संप्रेषित समाचार को एक निंदा के रूप में संदेह किया जा सकता है जो गवाही को अस्वीकार करने का एक [वैध] कारण है। यदि कोई इस स्थिति का सामना करता है, तो उसे रुकना चाहिए और न ही आरोपी को झूठा या सच्चा समझना चाहिए, इसके बजाय उसे यह सोचना चाहिए कि उस व्यक्ति की [आंतरिक] स्थिति, जिसकी खबर मुखबिर द्वारा दी गई है, पहले से छिपी हुई है और अब भी छिपी हुई है।

यदि आपका किसी मुसलमान से मोहभंग हो जाता है, तो आपको उसके प्रति अपना आतिथ्य और सम्मान बढ़ाना चाहिए और [उस व्यक्ति के लिए] अच्छे के लिए भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए। इस तरह, आपका दिल [मोहभंग] साफ हो जाएगा और शैतान आपसे निराश हो जाएगा और आपसे अपना हाथ हटा लेगा और इस डर के कारण आपके दिल में दूसरों की बुरी राय रखने की कोशिश नहीं करेगा कि आप अच्छे के लिए विनती करना शुरू कर देंगे और उस व्यक्ति के प्रति अधिक सम्मान दिखा देंगे। यदि एक विश्वसनीय गवाही या व्यक्तिगत अवलोकन के माध्यम से, आपको एक मुसलमान में एक बुराई के बारे में पता चलता है, तो शैतान के प्रभाव में आने के बजाय एक के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करने के लिए, आपको एक को इस तरह से सलाह देनी चाहिए कि दूसरों को इसके बारे में पता न चले। यदि आप सलाह देते हैं, तो यह प्रसन्न करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि आपको दूसरे के दोषों के बारे में पता चल गया है, और यह कि भगवान ने आपको एक चेतावनी और उपदेशक के रूप में भेजा है और आपको दूसरों को [सही] रास्ता दिखाने की क्षमता प्रदान की है, न ही आपको अपने दिल में अपनी महानता या

दूसरे की दीनता के बारे में विचार करना चाहिए। इसके बजाय, जैसे आप अपने नुकसान के बारे में जानने के बाद परेशान हो जाते हैं, वैसे ही आपको दूसरे की स्थिति के बारे में पछतावा होना चाहिए। इरादा यह होना चाहिए कि दोष दूसरे व्यक्ति में न रहे। किसी को यह कोशिश करनी चाहिए कि दूसरा व्यक्ति आपकी सलाह की आवश्यकता के बिना अपने दम पर सही रास्ते पर आ जाए या कोई और ऐसी सलाह दे जिससे दूसरे को लाभ हो। यदि आपने इस पद्धति पर कार्य किया है, तो एक के बजाय, आपको [भगवान से] तीन पुरस्कार मिलेंगे: पहला सलाह देने के लिए, दूसरा दूसरे की स्थिति पर पश्चाताप करने के लिए, और तीसरा दूसरे के धर्म के लिए आपके द्वारा प्रदान की गई सहायता के लिए।

चुगली करने के लिए अपवाद: [पवित्र कानून में] चुगली करने के निषेध के छह अपवाद हैं, अर्थात, इन छह स्थितियों में ऐसा करने की अनुमति है:

- एक. सबसे पहले उत्पीड़न के निवारण के लिए [उत्पीड़क के उत्पीड़न के बारे में अधिकारियों से शिकायत करने के रूप में],
- दो. दूसरा बुराई को कम करने के लिए और पापों को दूर करने के लिए [किसी ऐसे व्यक्ति से जो मदद करने की शक्ति रखता है] सहायता प्राप्त करने के लिए [और यह किसी के अपने पाप हो सकते हैं],
- तीन. तीसरा, कानूनी राय प्राप्त करने के लिए [धर्मशास्त्रियों और न्यायविदों से उन्हें दूसरों के बारे में वास्तविक घटनाओं और शिकायतों का वर्णन करके],
- चार. चौथा, मुसलमानों को दूसरों की बुराई से रोकना [यदि कोई उन्हें धर्म की आड़ में गलत विचारधाराओं की ओर झुका हुआ देखता है],
- पाँच. पांचवां नाम के लिए जो लोगों के बीच प्रचलित हो गया है [यह अपमानजनक लग सकता है लेकिन जिसका नाम ज्ञात हो गया है, उसे कोई आपत्ति नहीं है],
- छः. छठा दूसरे के खुले पापों के लिए [जो एक खुले तौर पर करता है और उस पर गर्व करता है]।

सोलहवां नुकसान - किस्सा: दूसरों की गपशप और गुप्त मामलों को फैलाना जो नुकसान या परेशानी का कारण बन सकते हैं, जीभ के नुकसानों में से एक है। भगवान कहते हैं:

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيمٍ ﴿١١﴾

"और उस व्यक्ति की मत सुनो जो झूठी गाली देने का आदी है, एक सस्ता (असम्मानजनक) व्यक्ति है, उसका कोई मूल्य नहीं है [जैसा कि कोई तुच्छता के लिए समर्पित है], जो बहुत ताने मारता है और एक कहानीकार है। (कुरान, अध्याय 68, श्लोक 10-11)

एक श्लोक के बाद, परमेश्वर कहता है:

عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ

"वह जो कठोर स्वभाव और दुष्ट व्यक्ति है। (कुरान, अध्याय 68, श्लोक 13)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لا يدخل الجنة نمام

"एक कहानीकार स्वर्ग नहीं जाएगा". (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस अबू हुदैफा के अधिकार पर* सहीह बुखारी *और* सहीह मुस्लिम *को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

अबू हुरैरा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं, जिन्होंने कहा:

احبكم الى الله احاسنكم اخلاقا الموطئون اكنافا يالفون ويؤلفون وان
ابغضكم الى الله المشاؤن بالنميمة المفرقون بين الاخوان الملتمسون
للبراء العشرات

"आप में से भगवान के लिए सबसे प्रिय वे हैं जो आप उनके व्यवहार (नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक और बाहरी स्वभाव) में सबसे अच्छे हैं, जो नरम दिल के हैं, जो प्यार करते हैं और [दूसरों द्वारा] प्यार करते हैं। आप लोगों में सबसे ज्यादा नापसंद करने वाले लोग वे हैं जो कहानीकार हैं, जो भाइयों के बीच कलह बोते हैं और निर्दोष लोगों की गलतियां तलाशते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तबरनी अवसत* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

कहानी की परिभाषा किसी ऐसी चीज़ को प्रकट करना है जिसका रहस्योद्घाटन बुरा है, खासकर यदि वह व्यक्ति जिसके बारे में कुछ प्रकट किया गया है, वह इसे बुरा मानता है, या जो सुनता है वह इसे नापसंद करता है। यह आवश्यक नहीं है कि रहस्योद्घाटन जीभ द्वारा किया गया हो क्योंकि लेखन और संकेत जीभ के विकल्प हैं। इसके अलावा, यह आवश्यक नहीं है कि कहानी [किसी के बुरे] शब्दों या कार्यों या दोषों से संबंधित हो। Talebearing किसी भी चीज़ की अभिव्यक्ति (या रहस्योद्घाटन) है जिसे नापसंद किया जाता है। जब कोई अन्य लोगों के अवांछनीय मामलों या राज्यों में आता है [किसी द्वारा उन्हें प्रकट करने के परिणामस्वरूप], तो उसे मौन अपनाना चाहिए। हालांकि, अगर किसी मुसलमान को फायदा पहुंचाना है या पाप को दूर करना है तो बोलना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई किसी को अनुचित रूप से किसी का कब्जा या संपत्ति लेते हुए देखता है, तो उसे पीड़ित के अधिकारों की रक्षा के लिए गवाही देनी चाहिए और सूचित करना चाहिए कि अमुक व्यक्ति ने उसकी संपत्ति ले ली है।

कहानी बनाने के पीछे प्रेरक शक्ति उस व्यक्ति को नुकसान पहुंचाना है जिसकी कहावत या संबंधित मामला सामने आया है या उस व्यक्ति के प्रति प्यार का इजहार करना है जो समाचार लाता है या सिर्फ एक अच्छा समय बिताने के लिए क्योंकि बेकार मामलों में शामिल होना किसी को कहानी बनाने के लिए उकसाता है। यदि कोई किसी के सामने किस्साबाजी करता है और कहता है: "अमुक व्यक्ति आपके बारे

में ऐसा कहता है, आपके खिलाफ ऐसा कर रहा है, आपको नुकसान पहुंचाने के लिए आपके खिलाफ साजिश कर रहा है, आपके दुश्मन का दोस्त है, या आपको नष्ट करने की कोशिश कर रहा है", और इस तरह की अन्य चीजों पर, व्यक्ति को छह चीजों पर कार्य करना चाहिए। सबसे पहले, किसी को ऐसे व्यक्ति पर विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि कहानीकार एक पापी (*फासिक)* है और ऐसे व्यक्ति की गवाही भी स्वीकार्य नहीं है। भगवान कहते हैं:

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِن جَآءَكُمۡ فَاسِقُۢ بِنَبَإٖ فَتَبَيَّنُوٓاْ أَن تُصِيبُواْ قَوۡمَۢا بِجَهَٰلَةٖ

"ऐ ईमान वालो! यदि कोई व्यक्ति बुराई की ओर प्रवृत्त है, तो आपके लिए कोई समाचार लाता है, उसकी अच्छी तरह से जांच करें। आखिरकार, आप अज्ञानता के कारण एक राष्ट्र [या लोगों के समूह] को नुकसान पहुंचा सकते हैं [वास्तविक मामले को नहीं जानने और गुप्त उद्देश्यों वाले लोगों के झूठ से धोखा खाने]। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 6)

दूसरे, किसी को [कहानी कहने वाले] को कहानी कहने से मना करना चाहिए, [इसके खिलाफ] सलाह देनी चाहिए और इस तरह के कार्य की बुराई को स्पष्ट करना चाहिए क्योंकि भगवान ने कहा है:

وَأۡمُرۡ بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَٱنۡهَ عَنِ ٱلۡمُنكَرِ

"और अच्छे कार्यों की चेतावनी दो और बुरे कामों के खिलाफ उपदेश दो। (कुरान, अध्याय 31, आयत 17)

तीसरा, किसी को ईश्वर के लिए एक कथावाचक के प्रति नापसंद होना चाहिए क्योंकि ऐसा व्यक्ति ईश्वर द्वारा नापसंद किया जाता है और किसी ऐसे व्यक्ति को नापसंद करना अनिवार्य है जिसे भगवान नापसंद करते हैं [इस अनैतिक कार्य के कारण]। चौथा, किसी को अपने भाई (या बहन) से मोहभंग नहीं होना चाहिए जो अनुपस्थित है [जब उसके खिलाफ कहानी की जाती है]। भगवान ने कहा है:

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱجۡتَنِبُواْ كَثِيرٗا مِّنَ ٱلظَّنِّ إِنَّ بَعۡضَ ٱلظَّنِّ إِثۡمٞۖ

"ऐ ईमान वालो! अधिकांश अनुमानों से बचें क्योंकि कुछ अनुमान पाप हैं [क्योंकि वे आपको मोहभंग, नकारात्मकता, घृणा और उनकी पसंद की ओर ले जाते हैं, जो बदले में आपको विनाशकारी रास्ते पर ले जाते हैं]। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 12)

पांचवां, किसी को अधिक जानकारी प्राप्त करने के बारे में उत्सुक नहीं होना चाहिए जब किसी के सामने जो पूर्वाभ्यास किया गया था उसे सुनना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा करने से मना किया है। उसने कहा:

وَلَا تَجَسَّسُواْ

"और एक-दूसरे की जासूसी न करें [या दूसरों के निजी या अवांछनीय मामलों की जांच करने के लिए बेकार जिज्ञासा रखें जिन्हें लोग प्रकट करना पसंद नहीं करते हैं]। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 12)

छठा, किसी को उसी मामले में शामिल नहीं होना चाहिए कि कोई कहानी कहने वाले को मना करता है, उदाहरण के लिए, "अमुक व्यक्ति (कथाकार) ने मुझे अमुक व्यक्ति (उस व्यक्ति जिसके अवांछनीय मामले को उजागर किया जा रहा है) के बारे में यह बताया है"।

उमर बिन अब्दुल अजीज (भगवान उन पर दया करे) ने कहा कि एक आदमी उनके पास आया और दूसरे व्यक्ति के बारे में कुछ कहना शुरू कर दिया, लेकिन उन्होंने उनसे कहा: "यदि आप चाहें, तो हम आपकी बात की जांच कर सकते हैं। अगर यह झूठ निकला तो आप वही होंगे जो यह आयत (कुरान की) कहती है, 'यदि कोई पापी आपके पास समाचार लेकर आता है, तो उसकी पूरी तरह से जांच करो', और यदि यह सच है, तो आप उस आयत (कुरान की) के तरह होंगे जो कहती है, 'ऐसा व्यक्ति एक तुच्छ व्यक्ति है जो ताना मारता है और किस्साएं करता है'। तीसरी स्थिति यह है कि मैं आपको माफ कर दूंगा। उस आदमी ने कहा, "ऐ विश्वासियों के अगुआ! कृपया मुझे क्षमा करें, मैंने गलती की है और यह गलती दोबारा नहीं करूंगा। एक परंपरा के अनुसार, एक बुद्धिमान व्यक्ति का एक मित्र उससे मिलने आया और उसने अपने दूसरे दोस्त के बारे में कुछ कहना शुरू कर दिया। बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा: "तुम इतने दिनों के बाद आए और आते ही तुमने तीन अपराध किए: पहला, तुमने मेरे और मेरे दोस्त के बीच दुश्मनी बोई; दूसरे, तुमने मेरे शांत और खाली [किसी भी द्वेष और बुरे विचारों से] दिल और दिमाग को संकट और बेचैनी से भर दिया; तीसरा, आपने अपनी ईमानदारी और विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचाया है। हसन (ईश्वर उस पर दया करे) कहते थे: "जो किसी अन्य व्यक्ति के बारे में कहानी करता है वह किसी और के खिलाफ आपके खिलाफ किस्से करेगा"। यह इस तथ्य का संकेत है कि एक कथाकार विश्वास करने और सच माने जाने के योग्य नहीं है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति ने झूठ बोलने, चुगली करने, शरारत बोने, बेईमानी, धोखेबाजी, पाखंड, ईर्ष्या और मुसलमानों के बीच कलह बोने जैसे गंभीर पाप किए हैं। ऐसा व्यक्ति उन बंधनों को समाप्त करने पर तुला हुआ है [प्रेम, मित्रता, सद्भाव और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व] जिन्हें बनाए रखने के लिए ईश्वरीय रूप से आदेश दिया गया है और इसके बजाय, पृथ्वी (दुनिया) पर अराजकता और उथल-पुथल (फसाद) फैलाता है। भगवान कहते हैं:

وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ

"वे [आपसी प्रेम, दोस्ती, सद्भाव और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व] के बंधन को तोड़ देते हैं जिन्हें परमेश्वर ने [अक्षुण्ण] रखने की आज्ञा दी है और [इसके बजाय,] दुनिया में उथल-पुथल फैलाते हैं। (कुरान, अध्याय 13, श्लोक 25)

एक अन्य श्लोक में, परमेश्वर कहता है:

إِنَّمَا ٱلسَّبِيلُ عَلَى ٱلَّذِينَ يَظْلِمُونَ ٱلنَّاسَ وَيَبْغُونَ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ

"दोष केवल उन लोगों पर है जो लोगों पर क्रूरता और उत्पीड़न करते हैं और दुनिया में विद्रोही हैं [उनके हानिकारक व्यवहार के लिए] कोई अधिकार या औचित्य नहीं है। (कुरान, अध्याय 42, श्लोक 42)

यहां तक कि अगर एक कथाकार सच्चा है, तो वह नम्रता से रहित नहीं है क्योंकि ऐसा व्यक्ति दूसरों की गरिमा के प्रति सचेत नहीं है और [अपने निजी मामलों के] छिपाने पर कार्य नहीं करता है। कुछ लोगों ने कहा है कि कहानी झूठ से बनी है, ईर्ष्या और पाखंड और ये तीन लक्षण अपमान के घटक हैं [और कहानी कहने वाले के लिए नीचता]। संक्षेप में, कहानीकार की बुराई बहुत बड़ी है, और व्यक्ति को इससे बचाव करना चाहिए।

सत्रहवां नुकसान - दो-चेहरे वाला रवैया या पाखंड: जीभ का पाखंड भी [एक] बहुत बड़ा [पाप] है। एक दोहरी बात करने वाला दो शत्रुओं के बीच शत्रुता का बहुत लाभ उठाता है। जो कोई भी ऐसा व्यक्ति मिलता है, वह उसे अपनी ईमानदारी और समर्थन सुनिश्चित करता है, और दूसरे पक्ष को बुरा कहता है। ऐसा शायद ही कभी होता है कि कोई दो विरोधियों से मिलता हो और उन दोनों के पक्ष में बोलने से दूर रहता हो। यह असली पाखंड है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

تجلون من شر عباد الله يوم القيامة ذاالوجهين الذى يأتى هؤلاء بحديث
وهؤلاء بحديث

"कयामत के दिन एक दोमुंहा व्यक्ति बहुत बुरी स्थिति में पाया जाएगा, जो एक से कुछ और दूसरे से कुछ कहता था। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

अबू हुरैरा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) कहा करते थे: "दो मुखी व्यक्ति ईश्वर की दृष्टि में भरोसेमंद नहीं है"। हर कोई इस बात पर सहमत है कि दो अलग-अलग लोगों के साथ दो-चेहरे की बैठक करना पाखंड है। यदि कोई दो विरोधियों के एक-दूसरे के लिए विरोध की प्रशंसा करता है और उन दोनों को एक-दूसरे के समर्थन का आश्वासन देता है [उनके साथ अलग-अलग बैठकों में], तो यह दोतरफा रवैया है। इसी तरह, अगर कोई चेहरे पर किसी की प्रशंसा करता है लेकिन उसकी अनुपस्थिति में अपने दोषों को गिनाने लगता है तो यह भी दोतरफा रवैया है। मौन अपनाना या केवल उस व्यक्ति की प्रशंसा करना बेहतर है जो सही है और यह प्रशंसा चेहरे पर या पीठ के पीछे समान होनी चाहिए, भले ही यह किसी के प्रतिद्वंद्वी के सामने की गई हो। अब्दुल्ला बिन उमर (भगवान उनसे प्रसन्न हों) को लोगों ने सूचित किया कि वे अभिजात वर्ग और अधिकारियों के सामने ऐसी बातें कहते हैं जो वे तब नहीं कहते जब वे उनके साथ नहीं होते हैं। उन्होंने कहा, "हम पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के समय इसे पाखंड मानते थे। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तबरनी*)। अगर किसी में हिम्मत है तो उसे अवैध बातें या बुरी बातें बंद करनी चाहिए। यदि किसी में क्षमता नहीं है, तो उसे चुप रहना चाहिए लेकिन इसे दिल में बुरा मानना चाहिए।

अठारहवां नुकसान – प्रशंसा: कुछ अवसरों पर, प्रशंसा की भी अनुमति नहीं है। जहां तक किसी के दोषों का वर्णन करने का संबंध है, यह चुगली करने की आज्ञा [निषेध के संबंध में] के अंतर्गत आता है। प्रशंसा के छह नुकसान हैं। उनमें से चार एक की प्रशंसा करने वाले से संबंधित हैं और दो उस व्यक्ति से संबंधित हैं जिसकी प्रशंसा की गई है।

एक की तारीफ करने से जुड़े चार नुकसान: पहला नुकसान यह है कि तारीफ करने वाला व्यक्ति इतना अतिशयोक्ति करता है कि वह झूठ बन जाता है। दूसरा नुकसान यह है कि कभी-कभी दिखावा प्रशंसा में शामिल हो जाता है, दूसरे शब्दों में, हालांकि प्रशंसा सच हो सकती है, प्रशंसा करने वाला व्यक्ति प्रशंसा के लिए अपने प्यार को प्रदर्शित करना चाहता है, हालांकि दिल में कोई प्यार नहीं है, या कोई अपने दिल में प्रशंसा के लक्षणों के बारे में आश्वस्त नहीं है, जिसके लिए कोई केवल दिखावा के रूप में प्यार व्यक्त कर रहा है। इस तरह व्यक्ति पाखंडी हो जाता है। तीसरा नुकसान यह है कि कभी-कभी कोई ऐसी बातें कहता है जिसकी उसने जांच नहीं की है या जिसके बारे में कुछ ज्ञान और जानकारी है। एक आदमी ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने किसी की प्रशंसा की, जिसने उनसे कहा:

ويحك قطعت عنق صاحبك، لو سمعها ما افلح ثم قال ان كان احدكم لا بد مادحا
اخاه، فليقل احسب فلانا ولا ازكى على الله احدا حسيبه الله ان كان يرى
انه كذلك

"आपने अपने साथी की गर्दन तोड़ दी है (लौकिक रूप से बोलते हुए यह दर्शाता है कि चेहरे पर प्रशंसा करना बहुत विनाशकारी हो सकता है क्योंकि यह व्यक्ति को गौरवान्वित करने, घमंडी और अहंकारी होने का कारण बनता है, और आत्म-प्रशंसा और अन्य समान आंतरिक विनाशकारी गुणों में शामिल हो जाता है जो किसी की आध्यात्मिकता को नुकसान पहुंचाते हैं क्योंकि वे आत्मा के रोग हैं)! यदि कोई इसे सुनता है, तो उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी [जैसा कि आपकी प्रशंसा के परिणामस्वरूप आत्मा के रोग विकसित हो गए होंगे]। यदि आपके लिए अपने भाई की प्रशंसा करना आवश्यक है तो कहें कि, 'मैं इस तरह और इस तरह पर विचार करता हूं (निश्चितता के विपरीत अनुमान की ओर इशारा करते हुए) और ईश्वर के सामने उसकी पवित्रता को प्रमाणित नहीं करता क्योंकि ईश्वर उसका [वास्तविक] ज्ञाता है [और उसकी आंतरिक वास्तविकता के रूप में ईश्वर एक व्यक्ति के आंतरिक अस्तित्व के हर तंतु का जानकार है]'। यह [पानी की तरह] प्रशंसा [जहां मामले की सच्चाई को जानने के लिए भगवान को जिम्मेदार ठहराया गया है] तब की जानी चाहिए जब आप जानते हैं कि [निश्चित रूप से] कि वह ऐसा है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अबू बकरा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* का संग्रह करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यह नुकसान उन स्पष्ट लक्षणों से संबंधित है जो प्रमाणों (साक्ष्य) के माध्यम से जाने जाते हैं [इसलिए, उनके बारे में दृढ़ विश्वास का एक तत्व है], उदाहरण के लिए, यह कहना कि अमुक व्यक्ति ईश्वर का भय मानने वाला, धर्मी, संयमी [सांसारिकता से] और दान देने वाला है। यह स्पष्ट है कि ये लक्षण छिपे हुए हैं, और वे किसी व्यक्ति के आंतरिक अस्तित्व से संबंधित हैं और हमारे पास उन्हें [निश्चितता के साथ] जानने का कोई तरीका नहीं है। हालांकि, यह कहना सही है कि, 'मैंने किसी को सुबह-सुबह (*तहज्जुद*) की नमाज पढ़ते हुए देखा है या किसी को तीर्थयात्रा करते और दान करते हुए देखा है', क्योंकि ये मामले निश्चित हैं और

सीधे तौर पर देखे जाते हैं। किसी को न्यायसंगत कहना या ईश्वरीय भाग्य (क़ाधा) से सहमत होना भी सही नहीं है, क्योंकि न्याय और ईश्वर द्वारा नियुक्त नियति को स्वीकार करना किसी के आंतरिक अस्तित्व से संबंधित मामले हैं और किसी के आंतरिक अस्तित्व से संबंधित परीक्षण (परीक्षण और क्लेश) के बिना उनका ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है। उमर (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) ने एक आदमी को दूसरे की प्रशंसा करते हुए सुना तो उसने उससे पूछा: "क्या तुमने उसके साथ यात्रा की है?" उसने कहा: "नहीं!" उसने फिर पूछा: "क्या तुम सुबह और शाम को उसके पड़ोसी हो? उसने फिर उत्तर दिया: "नहीं!" उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "मैं ईश्वर की कसम खाता हूँ! मेरी राय में आप उसे नहीं जानते। आप बिना किसी जानकारी और जांच के उसकी प्रशंसा कर रहे हैं। किसी के [आंतरिक] लक्षण हर समय यात्रा, व्यवहार और निकटता में स्पष्ट हो जाते हैं, जबकि आप यात्रा के दौरान उसके साथी नहीं हैं, न ही पड़ोसी हैं या खरीदने और बेचने से संबंधित उसके साथ व्यवहार किए हैं। आप किस आधार पर उनकी प्रशंसा कर रहे हैं? चौथा नुकसान यह है कि प्रशंसा के साथ प्रशंसा करने वाला एक उत्पीड़क या एक दुष्ट कर्ता के लिए खुशी का अवसर प्रदान करता है, भले ही यह अवैध है [पवित्र ईश्वरीय कानून में]। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

ان اللّٰہ تعالٰی یغضب اذا مدح الفاسق

"वास्तव में भगवान अप्रसन्न हो जाते हैं जब एक दुष्ट करने वाले की प्रशंसा की जाती है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने अनस बिन मलिक के अधिकार पर* इब्न अबी अद-दुनिया *और* बेहाकी *को इकट्ठा किया* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

हसन (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "जिसने एक अत्याचारी की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की, उसने यह इच्छा व्यक्त की है कि दुनिया में भगवान की अवज्ञा करने के निरंतर कार्य लंबे समय तक जारी रहें। अत्याचारी और दुष्ट करने वाले निंदा और निषेध के योग्य हैं ताकि ऐसा व्यक्ति दुखी हो जाए और अपने उत्पीड़न और बुराई से दूर रहे। ऐसा व्यक्ति प्रशंसा के योग्य नहीं है।

प्रशंसा से संबंधित दो नुकसान: पहला नुकसान यह है कि प्रशंसा और प्रशंसा दिल में अहंकार (किबर*)* और आत्म-दंभ ('*उजुब* या खुद के बारे में उच्च राय रखना, चाहे गलत हो या नहीं, और यह विनम्रता के सीधे विपरीत है) के जन्म का कारण बनता है। ये दोनों आंतरिक गुण घातक और विनाशकारी हैं [किसी के आंतरिक अस्तित्व और आध्यात्मिकता के लिए जो बदले में बाहरी शारीरिक नुकसान पहुंचा सकता है]। दूसरा नुकसान यह है कि व्यक्ति प्रशंसा से प्रसन्न हो जाता है और यह गलतफहमी दिल में मजबूती से बैठ जाती है कि, "मैं अच्छा हूं इसलिए लोग मेरी प्रशंसा करते हैं"। यह विश्वास या स्वयं के लिए उच्च सम्मान व्यक्ति को [धार्मिक और अच्छे] कर्म करने में आलसी बना देगा और व्यक्ति को आत्म-धार्मिकता [या आत्म-अभिमान] ('*उजूब*) की बीमारी से संक्रमित कर देगा और हृदय में इस अहसास को जन्म देगा कि अब कोई भी [धार्मिक और अच्छे] कार्य करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसीलिए, उपरोक्त परंपरा में प्रशंसा करने वाले के बारे में यह कहा गया है कि, "तुमने अपनी प्रशंसा से अपने दोस्त के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया और गर्दन तोड़ दी; अगर कोई इसे सुनता है, तो उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी।

मुत्राफ (ईश्वर उन पर दया करें) ने कहा: "जब भी मैंने किसी अन्य व्यक्ति की जीभ से अपनी प्रशंसा सुनी, तो मैं अपनी दृष्टि में नीच हो गया और मेरा स्वयं *(नफ्स)* मेरे लिए अपमानित हो गया"। ज़ियादा इब्ने अबी मुसलमान (रइश्वर उस पर दया करे) ने फरमाया : "जो कोई भी अपनी प्रशंसा या स्तुति सुनता है, शैतान ऐसे व्यक्ति को घमंड और घमंड में शामिल करता है, लेकिन एक आस्तिक उससे बच जाता है"। इब्न अल-मुबारक (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "मुत्रफ और ज़ियादा दोनों की बातें सही हैं, हालांकि, ज़ियादा ने जो कहा है वह आम लोगों के दिलों की तस्वीर है और मुतराफ की कहावत [आध्यात्मिक] अभिजात वर्ग (अवलिया या संत और ज्ञानवादी) की वास्तविकता है, दूसरे शब्दों में, आम लोग उनकी प्रशंसा के परिणामस्वरूप गर्व करते हैं और अभिजात वर्ग विनम्र हो जाते हैं"। जिसकी प्रशंसा की जाती है वह सत्कर्म करने में आलसी हो जाता है या प्रशंसा करने से आत्म-धार्मिकता और अहंकार का जन्म होता है और ये दोनों घातक रोग हैं जो आत्मा की मृत्यु का कारण बनते हैं जैसे हत्या शरीर की मृत्यु का कारण बनती है। यदि प्रशंसा करने वाले व्यक्ति को उपरोक्त नुकसान से बचाया जाता है, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है, इसके बजाय, इस प्रकार की प्रशंसा अच्छी है। इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपने विभिन्न साथियों की प्रशंसा की। भविष्यद्वाणी के साथियों का चरित्र इतना उच्च था कि इस तरह की प्रशंसा से उनके दिलों में घमंड, घमंड, आत्म-धार्मिकता और अहंकार की भावनाएँ पैदा नहीं हुईं। इसके बजाय, वे परमेश्वर के प्रति आभारी रहते थे और और भी अधिक विनम्रता और अपमान अपनाते थे। इसीलिए, अपनी जीभ से खुद की प्रशंसा करना अच्छी बात नहीं है क्योंकि उसे इस पर गर्व है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

انا سید ولد آدم ولا فخر

"मैं आदम की सभी संतानों का नेता हूं (यानी, पृथ्वी पर शुरू से अंत तक, शुरू से अंत तक पूरी मानवता) और इसमें कोई गर्व नहीं है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस *अबू सईद अल-खुदरी के अधिकार पर* तिर्मिज़ी *और* इब्ने माजा *को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

दूसरे शब्दों में, वह इसे अन्य लोगों की तरह गर्व या शेखी बघारने के लिए नहीं कह रहा था, जो उनके गुणों को गिनते थे और उन पर गर्व व्यक्त करते थे। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का गर्व (इस वाक्य में "खुशी" के संदर्भ में शब्द का उपयोग किया गया है) [गर्व और घमंड के तत्व के बिना] ईश्वर के साथ निकटता और अंतरंगता के कारण था, यह मानवता के नेता होने या [दिव्य रूप से] सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण [ईश्वर द्वारा किसी को या कुछ भी बनाने से पहले] बनाया गया होने के कारण नहीं था (यह उन रहस्यमय शिक्षाओं में से एक है जो सृष्टि के रहस्य को खोलती हैं जब आत्मा की आंख से समझा जाता है जब यह दिव्य रोशनी से प्रकाशित होता है, जैसा कि हर युग के ज्ञानवादियों द्वारा समझा जाता है)। मुजाहिद (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "स्वर्गदूत आदम (यानी, सभी मनुष्यों) के बच्चों के साथ हैं। जब कोई मुसलमान अपने भाई का अच्छे तरीके से जिक्र करता है तो फरिश्ते कहते हैं, 'भगवान आपको भी ऐसा ही करे!' लेकिन जब गलत तरीके से इसका जिक्र किया जाता है तो फरिश्ते

कहते हैं, 'हे इंसान! आपके दोष छिपे हुए हैं, बस उस पर रुकें और भगवान के प्रति आभार व्यक्त करें कि उन्होंने आपके दोषों को उजागर करके आपको अपमानित नहीं किया।

प्रशंसा की जिम्मेदारी: जिसे प्रशंसा मिलती है, उसे अपनी प्रशंसा पर गर्व नहीं करना चाहिए और अहंकार (किबर*)* और आत्म-प्रशंसा (*'उजुब*) से थोड़ी सी भी धूल को अपने दिल की सतह पर नहीं गिरने देना चाहिए। यह केवल तभी हो सकता है जब कोई अपनी प्रशंसा के समय सोचता है कि इस दुनिया से प्रस्थान का क्षण बहुत नाजुक और खतरनाक है, आडंबर और धार्मिक कर्मों के अन्य विनाशकारी गुण घात में पड़े हुए हैं; एक पल में, सभी नेक कर्म पूरी तरह से बर्बाद हो सकते हैं। प्रशंसा करने वाले को अपने स्वयं के दोषों की जांच करनी चाहिए जिनके बारे में प्रशंसा करने वाले को पता भी नहीं है, अन्यथा वह कभी प्रशंसा नहीं करता।

उन्नीसवां नुकसान – वाणी की गलतियों के साथ लापरवाही: भाषण और बातचीत की सूक्ष्म गलतियों के साथ लापरवाही, [जीभ का] भी एक बड़ा नुकसान है, विशेष रूप से वे जो ईश्वर के अस्तित्व और गुणों से संबंधित हैं और धर्म से जुड़े हुए हैं, और ऐसे शब्दों को विद्वानों और वाक्पटुओं द्वारा सही ढंग से कहा जा सकता है। ज्ञान और वाक्पटुता से रहित लोगों की वाणी गलतियों से रहित नहीं होती है। हालाँकि, वक्ता की अज्ञानता के कारण परमेश्वर ऐसी गलतियों को क्षमा कर देता है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि एक व्यक्ति पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के पास आया और कहने लगा: "जो कुछ भी ईश्वर और उनके पैगंबर चाहते हैं वह होना चाहिए"। पैगंबर ने उत्तर दिया:

اجعلتني لله عديلا بل ما شاء الله وحده

"क्या आप मुझे भगवान का भागीदार बना रहे हैं [दिव्यता में जैसा कि आपके शब्दों से पता चलता है]? [मैं केवल परमेश्वर का दास और दूत हूँ और दिव्यता में उसका भागीदार नहीं हूँ। इसके बजाय [आपको कहना चाहिए], 'जो कुछ भी भगवान, जिसका [देवत्व में] कोई भागीदार नहीं है, चाहता है'"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह नासाई और *इब्न माजा*)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "आप में से कुछ लोग भगवान के साथ इस तरह से भागीदार बताते हैं कि आप एक कुत्ते को यह कहकर भागीदार बनाते हैं, 'अगर यह कुत्ता नहीं होता, तो रात में हमारे घर में चोरी हो जाती'।

उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं, जिन्होंने कहा:

ان الله تعالى ينهاكم ان تحلفوا بآبائكم من كان حالفا
فليحلف بالله وليصمت

"भगवान आपको अपने पूर्वजों के नाम की शपथ लेने से मना करते हैं। जिसे शपथ लेने की जरूरत है, उसे या तो भगवान की कसम खानी चाहिए या चुप रहना चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम*)

ये कुछ उदाहरण हैं। भाषण में की गई गलतियों का अनुमान उनसे लगाया जा सकता है कि आम लोग इस पर ध्यान नहीं देते हैं, भले ही उनके लिए जवाबदेही हो। इन गलतियों को समझना संभव नहीं है। अब तक बताई गई जीभ के नुकसान पर विचार करने से पता चलता है कि जीभ को मुक्त छोड़ने में कोई सुरक्षा नहीं है [बकबक करने या कुछ भी कहने के लिए जो कोई चाहता है] और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की यह कहावत ज्ञान से भरी हुई है:

من صمت نجا

"जो चुप रहा उसने मोक्ष प्राप्त किया"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिडी*)

ऐसा इसलिए है क्योंकि जीभ का दुरुपयोग करने के ये सभी नुकसान घातक हैं और स्वयं (नफ्स) को खतरे में डालने में सक्षम हैं। एक व्यक्ति को चुप रहकर इन विनाशों और खतरों से बचाया जा सकता है क्योंकि बोलने में केवल खतरे होते हैं, सिवाय इसके कि [उन स्थितियों में] जब किसी के पास वाक्पटुता, ज्ञान, ईश्वर-भय और आंतरिक आध्यात्मिक चिंतन (*मुराकाबा*) की क्षमता हो।

बीसवां नुकसान - आम लोगों के प्रश्न: यह भी एक बड़ा नुकसान है क्योंकि आम लोग दिव्य गुणों (ईश्वर के गुण) के बारे में सभी प्रकार के प्रश्न पूछते हैं और दिव्य भाषण के बारे में पूछते हैं, और पत्र और शब्द [प्रश्नों के साथ] जैसे, "क्या ये लौकिक हैं (जो किसी समय अस्तित्व में आए) या प्राचीन (हमेशा के लिए मौजूद)?", हालांकि, आम लोगों के पास एकमात्र अधिकार कुरान से ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि [करना] कार्य और कर्म स्वयं (नफ्स) पर कठिन होते हैं और जीभ और मन बेकार के तर्कों में स्वाद महसूस करते हैं। इसीलिए, ऐसे लोगों को ज्ञान के द्वार पर दस्तक देते हुए देखा गया है जिनके पास इसके साथ थोड़ी सी भी उपयुक्तता नहीं है (यानी, ऐसे लोग ज्ञानी होने का दिखावा करते हैं जो

थोड़ा भी जानकार नहीं हैं)। शैतान उन्हें उकसाता है और उन्हें विश्वास दिलाता है कि, "आप विद्वान हैं, आशीर्वाद और उत्कृष्टता के मालिक हैं [ज्ञान में], आपके पास एक योग्य राय है और आपको इसे [सार्वजनिक लाभ के लिए] व्यक्त करना चाहिए"। कभी-कभी, शैतान इन स्व-घोषित "विद्वानों" से ऐसे शब्द प्राप्त करता है जो शुद्ध अविश्वास होते हैं और किसी को उनके द्वारा कही गई बकवास का एहसास भी नहीं होता है। एक आम आदमी के लिए, ये बौद्धिक तर्क बड़े पापों से भी अधिक खतरनाक हैं, विशेष रूप से वे जो ईश्वर के अस्तित्व (धत) और गुणों (*सिफत*) से संबंधित हैं। उनका काम केवल कुरान में प्रकट की गई बातों पर विश्वास करना है, बिना किसी बहस, तर्क और झिझक के और ईश्वरीय पूजा में संलग्न होना है। ज्ञान के सूक्ष्म बिंदुओं के बारे में बात करना जो किसी का दिमाग समझने में असमर्थ है, वह भी एक आम आदमी की तरह है, भले ही उसके पास अन्य विषयों पर अच्छी बात करने का कौशल हो। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

ذروني ما تركتكم فانما هلك من كان قبلكم بكثرة سؤالهم
واختلافهم على انبياءهم ما نهيتكم عنه فاجتنبوه وما امرتكم
به فاتوا به ما استطعتم

"जिस बात के बारे में मैंने तुम्हें नहीं बताया है, वह मुझ पर छोड़ दो क्योंकि तुमसे पहले के लोग बर्बाद हो गए थे क्योंकि वे बहुतायत से प्रश्न पूछते थे और अपने भविष्यद्वक्ताओं से मतभेद करते थे। मैंने तुमसे कहा है कि तुम इससे दूर रहो और जो मैंने तुम्हें करने की आज्ञा दी है, उतना करो जितना तुम कर सको। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अबू हुरैरा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आगे कहा:

يوشك الناس يتساءلون حتّى يقولوا قد خلق الله الخلق،
فمن خلق الله؟ فاذا قالوا ذلك فقولوا قل هو الله احد الله الصمد
حتّى تختموا السورة ثم ليتفل احدكم عن يساره ثلاثا و
يستعذ بالله من الشيطان الرجيم

"मुझे ऐसा लगता है कि [अत्यधिक] पूछताछ के दौरान, लोग कहना शुरू कर देंगे, 'अगर भगवान ने सृष्टि की है तो भगवान को किसने बनाया है?' यदि लोग ऐसा पूछते हैं तो उन्हें बताएं, 'ईश्वर एक है, ईश्वर को किसी भी चीज या किसी की आवश्यकता नहीं है', उन्हें ईमानदारी का पूरा अध्याय सुनाएं [कुरान से, यानी अध्याय 110, जो ईश्वरीय एकता पर व्याख्या करता है] तो आप में से एक को बाईं ओर तीन बार थूकना चाहिए और शैतान, शापित से भगवान की शरण लेनी चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस*

अबू हुरैरा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

[अनावश्यक प्रश्न न पूछने के महत्व को खिज्र और पैगंबर मूसा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हो) की कहानी से भी रेखांकित किया गया है (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 60-82)] खिज्र (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पैगंबर मूसा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह स्पष्ट कर दिया था कि जब तक वह स्वयं इसका उल्लेख न कर ले, तब तक उनसे कोई प्रश्न न पूछें। जब पैगंबर मूसा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आश्चर्य की स्थिति में नाव के आधार में छेद करने का कारण पूछा, तो उन्होंने उन्हें अपने वादे की याद दिला दी। पैगंबर मूसा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इसके लिए माफी मांगी लेकिन ऐसा तीन बार हुआ। अंत में, खिज्र (उस पर शांति हो) ने पैगंबर मूसा (उन पर शांति हो) के साथ अपने रास्ते से अलग होने की घोषणा की।

धर्म से संबंधित रहस्यों (आंतरिक ज्ञान) और सूक्ष्म मामलों के बारे में पूछने वाले आम लोगों को इसमें बहुत नुकसान होता है क्योंकि इससे कठिन परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं। इसलिए, आम लोगों को इस तरह के प्रश्न पूछने से रोकना और प्रतिबंधित करना अनिवार्य है [क्योंकि यह उन्हें वह काम करने से रोकता है जो उन्हें करना चाहिए]। उनका काम ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करना है, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और इसके बजाय उन चीजों (बेकार पूछताछ और तर्क जो विकर्षण और बाधाओं का कारण बनते थे) में शामिल हो गए, जिनकी उनसे आवश्यकता नहीं थी। ऐसा व्यक्ति ईश्वरीय गणना के योग्य है।

अध्याय 5- क्रोध, क्रोध, कटुता और ईर्ष्या के कारण होने वाली आपदाएँ

ग़ज़ाली की पांचवीं पुस्तक उनकी *महान कृति" इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में है, जो मानव स्वभाव में गहराई से समाई हुई हैं - क्रोध, क्रोध, शत्रुता और ईर्ष्या की बीमारियाँ। साथी मनुष्यों के साथ और राष्ट्रों और समाजों के बीच एक व्यक्ति के संबंधों में आत्मा के इन आंतरिक विनाशकारी गुणों के कारण होने वाला कहर सभी स्वयं-स्पष्ट हैं। ग़ज़ाली इन नकारात्मक शक्तियों के उदय के पीछे के कारणों की गहराई से पता लगाती है और उनकी विनाशकारी प्रकृति के अंततः उन्मूलन के लिए इलाज बताती है। ग़ज़ाली की इस पुस्तक की सामग्री यहाँ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत की गई है [11]:

क्रोध आग की एक चमकती चिंगारी है। यह एक आग है जिसके बारे में कुरान की निम्नलिखित आयत प्रकट हुई थी:

نَارُ ٱللَّهِ ٱلْمُوقَدَةُ ﴿٦﴾ ٱلَّتِى تَطَّلِعُ عَلَى ٱلْأَفْـِٔدَةِ ﴿٧﴾

"यह भगवान द्वारा जलाई गई आग है [मनुष्यों के लिए एक परीक्षा के रूप में ताकि वे इसके नुकसान को समझ सकें और फिर अपने लाभ के लिए इसे दूर करने का प्रयास कर सकें] जो दिलों तक पहुंचेगी [यदि अनियंत्रित छोड़ दिया जाए]। (कुरान, अध्याय 104, श्लोक 6-7)

यह आग राख में चिंगारी की तरह दिल की गहराई में छिपी रहती है। जिस तरह आग के पत्थरों को एक-दूसरे से रगड़ने पर आग दिखाई देती है, उसी तरह अहंकार के अग्नि पत्थरों को थोड़ा सा भी रगड़ने पर क्रोध की आग भड़कती है। ज्ञान के लोगों (*बसीराह*) और आध्यात्मिक अनावरण (*मुकाशाफा)* ने इस वास्तविकता को इस वास्तविकता के प्रकाश के साथ देखा है कि मनुष्य की एक नस खुद को शैतान तक फैलाती है। जिसे क्रोध का अत्यधिक दौरा पड़ता है वह शैतान के साथ अपनी निकटता का दावेदार है। धूल की भव्यता [जो विनम्रता का प्रतीक है] शांत, रचित और गरिमापूर्ण बने रहने में है, और आग की भव्यता प्रज्वलित करने और सक्रिय रहने में है [अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चीज को फैलाने और जलाने में]। इसलिए यदि मनुष्य क्रोध के वशीभूत है तो समझ लीजिए कि ऐसे मनुष्य की रचना में धूल कम

और अग्नि अधिक होती है। शत्रुता और ईर्ष्या दोनों ही क्रोध के परिणाम हैं और ये दोनों ही अत्यंत विनाशकारी हैं। वे विनाश फैलाने का कारण हैं, वे उथल-पुथल और उथल-पुथल का कारण हैं, और हृदय उनका स्थान और केंद्र है। हृदय [अपने भौतिक रूप में] मांस का एक टुकड़ा है जो जब ध्वनि होता है, तो [मानव] शरीर का पूरा प्रशासन सही ढंग से कार्य करता है और जब यह दोषपूर्ण होता है, तो शरीर की पूरी प्रणाली विफल हो जाती है। इससे पता चलता है कि तीनों चीजें विनाशकारी हैं। इसीलिए, मैंने यात्रियों और यात्रियों को उनकी अंतर्निहित विनाशकारिता के आध्यात्मिक मार्ग पर सूचित करना उचित और उचित समझा ताकि वे उनसे बचाव करके आगे बढ़ सकें, यदि ये बुरे गुण उनके दिलों में निहित हैं, तो वे उन्हें जड़ से उखाड़ फेंक सकते हैं और [एक स्थायी] इलाज के लिए उनका इलाज कर सकते हैं। बुराइयों के बारे में सूचित करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि जो उनके बारे में नहीं जानता है, वह उनमें शामिल हो जाता है। केवल बुराई के बारे में जागरूक होना भी तब तक पर्याप्त नहीं है जब तक कि कोई उनके खिलाफ रोकथाम की रणनीतियों से अवगत न हो। इस पुस्तक के आगामी अध्यायों में [जिसे "क्रोध, क्रोध, कटुता और ईर्ष्या के नुकसान" कहा जाता है], क्रोध, क्रोध, कटुता और ईर्ष्या के नुकसान के बारे में बताया जाएगा और उनके खिलाफ सुरक्षा की रणनीतियों पर चर्चा की जाएगी।

क्रोध और क्रोध की निंदा

भगवान कहते हैं:

إِذْ جَعَلَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فِى قُلُوبِهِمُ ٱلْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ ٱلْجَٰهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَعَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ

"जब अविश्वासियों ने अपने दिलों में दुश्मनी और क्रोध को जगह दी और वह शत्रुता और क्रोध भी अज्ञानता से पैदा हुए, तो ईश्वर ने पैगंबर (मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और विश्वासियों (एक शत्रुतापूर्ण स्थिति को शांत करने और अज्ञानता और शत्रुता के साथ अज्ञानता और शत्रुता का मुकाबला करने से रोकने के लिए) पर खुद से शांति और सहनशीलता का अवतरण किया। यह केवल संघर्षों को और अधिक भड़काता है और इसमें शामिल लोगों और राष्ट्रों की हानि के लिए नियंत्रण से बाहर हो जाता है, क्योंकि कूलर सिर और दिल लोगों और राष्ट्रों के बीच शत्रुता को कम करने में अधिक सक्षम होते हैं]। (कुरान, अध्याय 48, श्लोक 26)

अब्दुल्लाह बिन मसूद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने पूछा: "आप सभी को क्या लगता है कि वह मजबूत और शक्तिशाली है"। हमने जवाब दिया: "जिसे कुश्ती में हराया नहीं जा सकता"। उन्होंने कहा, "ऐसा नहीं है। मजबूत और शक्तिशाली वह है जो क्रोध के समय अपने [निम्न] स्व (*नफ्स*) को नियंत्रण में रखता है (अर्थात, किसी के क्रोध को रोकता है और धैर्यपूर्वक इसे सहन करता है)। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम*)

अब्दुल्लाह बिन उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति उन पर हो) ने कहा:

من كف غضبه ستر الله عورته

"जो किसी के क्रोध को नियंत्रित करता है, भगवान ऐसे व्यक्ति के दोषों को छुपाता है [अपमान और अपमान का कारण सार्वजनिक ज्ञान बनने से]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया*)

एक ज्ञानवादी ने अपने बेटे से कहा: "ऐ बेटा! क्रोध के समय बुद्धि (स्पष्ट तर्कसंगत सोच और मन की स्वस्थ स्थिति) [यथास्थिति] नहीं रहती है। कम से कम गुस्सा उन लोगों को आता है जो सबसे बुद्धिमान होते हैं। यदि क्रोध संसार के लिए है, तो यह एक धोखा और धोखा है और यदि यह परलोक के लिए है, तो यह सहनशीलता और ज्ञान है। यह भी कहा गया है कि क्रोध बुद्धि का दुश्मन है। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) अपने उपदेशों में कहा करते थे: "आपके बीच से वह व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करेगा जो लोभ, निम्न स्व से इच्छाओं और क्रोध से दूर रहता है"। एक ज्ञानवादी ने कहा: "एक व्यक्ति जो [अपनी खुद की] वासना और क्रोध के अधीन है, ये दो बुरे आंतरिक लक्षण ऐसे व्यक्ति को नरक की ओर धकेलते हैं"।

क्रोध की वास्तविकता: भगवान ने जानवर [और मनुष्य की तरह सभी जीवित प्राणियों] को इस तरह से बनाया है कि यह अपने आंतरिक और बाहरी कारणों के कारण समाप्त हो जाता है। भगवान ने जानवर की शारीरिक संरचना के अनुसार पोषण पैदा किया है और उसमें उसकी इच्छा भी पैदा की है ताकि वह अपनी जरूरतों के अनुसार खाए, इस प्रकार खुद को विलुप्त होने से बचाए। तलवार और अन्य हथियारों जैसे खतरों के संदर्भ में बाहरी कारक और कारण मौजूद हैं। परमेश्वर ने मनुष्य में एक ऐसी शक्ति बनाई है जिसका उपयोग किसी की रक्षा और इन नुकसानों से बचाने के लिए किया जा सकता है। परमेश्वर ने आग से क्रोध की शक्ति पैदा की है। जब भी कोई ऐसी चीज सामने आती है जो उसकी इच्छा के विरुद्ध होती है या किसी को उसके उद्देश्य से रोका जाता है, तो वह आग प्रज्वलित हो जाती है और लौ इस हद तक तेज हो जाती है कि हृदय में रक्त सक्रिय हो जाता है और ऊपर की सभी नसों में फैल जाता है। जिस तरह आग की लपटें ऊपर की ओर उठती हैं या बर्तन का फोड़ा ऊपर की ओर उठता है, उसी तरह किसी व्यक्ति का चेहरा और आंखें त्वचा की कोमलता और स्पष्टता के कारण लाल हो जाती हैं जो रक्त की लालिमा को व्यक्त करती हैं जैसे गिलास के अंदर एक वस्तु प्रदर्शित होती है। यह वह स्थिति है जब कोई व्यक्ति [शारीरिक, राजनीतिक, भौतिक या सामाजिक-आर्थिक शक्ति के संदर्भ में] निचले स्तर के किसी व्यक्ति पर क्रोधित हो जाता है और जानता है कि वह बदला लेने में सक्षम है। यदि कोई उच्च पद के किसी व्यक्ति पर क्रोधित हो जाता है और बदला लेने में सक्षम नहीं होता है, तो रक्त फैलने के बजाय बाहरी त्वचा से हृदय में जमा हो जाता है और निराशा और दुःख का कारण बन जाता है। यही कारण है कि इस अवस्था में चेहरा पीला पड़ जाता है। यदि कोई समान रैंक के व्यक्ति पर क्रोधित हो जाता है, तो ये दोनों अवस्थाएँ बाहरी रूप से व्यक्त होती हैं - चेहरा कभी लाल हो जाता है तो कभी पीला पड़ जाता है। यह व्याकुलता की स्थिति है।

क्रोध के लक्षण : क्रोध के लक्षण जो बाहरी शरीर पर दिखाई देते हैं वे यह हैं कि चेहरे का रंग बदल जाता है, शरीर कांपने लगता है और अंगों की क्रियाओं में कोई क्रम और संतुलन इस हद तक नहीं रहता है कि

मुंह से झाग निकलने लगता है, आंखें लाल हो जाती हैं, नाक फूलने लगती है और सिकुड़ने लगती है और चेहरा विकृत हो जाता है। यदि क्रोधित व्यक्ति क्रोध के समय किसी के चेहरे को देखता है, तो वह अपनी ही दृष्टि में कम (अपमानित) हो जाएगा और अपनी कुरूपता पर इतना शर्मिंदा होगा कि पूरा क्रोध दूर हो जाएगा। यह सोचना चाहिए कि जब क्रोध का शरीर पर इतना प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है कि चेहरा विकृत हो जाता है, तो इसका आंतरिक अस्तित्व पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है और इससे उसका कितना विकृति होती है। बाहरी अस्तित्व आंतरिक अस्तित्व का शीर्षक और प्रतिबिंबित प्रतिबिंब है। सबसे पहले, आंतरिक अस्तित्व बिगड़ता है तो यह गिरावट बाहरी स्वरूप की ओर बढ़ती है। बाहरी का परिवर्तन इंटीरियर के परिवर्तन का फल और परिणाम है। क्रोध का जीभ पर प्रभाव यह होता है कि एक व्यक्ति कोसना शुरू कर देता है और ऐसे गंदे शब्दों का प्रयोग करना शुरू कर देता है कि जब संवेदनशील और सभ्य लोग उन्हें सुनते हैं, तो वे शर्म से भर जाते हैं। व्यक्ति को उन्हें बोलने पर शर्म आएगी, बशर्ते कि वह क्रोध की स्थिति में न हो या जब क्रोध समाप्त हो जाए और उसे क्रोध की स्थिति याद हो और वह बकवास और अश्लील बातें करता हो, अश्लीलता के साथ शब्दों को सही ढंग से उच्चारण करने में सक्षम न हो, न ही वाक्यों में तार्किक क्रम रखने में सक्षम हो, इसके बजाय वह अधिकांश ऐसे शब्द बोले जिनका कोई मतलब भी नहीं था।

क्रोध में संयम की डिग्री: क्रोध बिल्कुल भी नहीं होना वांछित नहीं है। वह क्रोध वांछित है जो बुद्धि और दिव्य मार्ग (दीन) के अधीन है ताकि यह तब आए जब मुखरता की आवश्यकता हो [उदाहरण के लिए, उन स्थितियों में जहां एकमुश्त दुर्व्यवहार, क्रूरता और उत्पीड़न देखा जाता है] और जब सहनशीलता की आवश्यकता होती है तो यह नहीं आता है। इसे संयम की सीमा के भीतर रखना वह दृढ़ता (*इस्तिकामा*) है जिसके लिए ईश्वर ने अपने सेवकों को जवाबदेह ठहराया है, और जिसकी प्रशंसा पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने इन शब्दों में की है:

خير الامور اوساطها

"सबसे अच्छे मामले वे हैं जो संयम की सीमा के भीतर हैं [जीवन के सभी मामलों में चरम सीमा और अतिवाद से बचना]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *बयाकी*)

जो कभी भी उन अवसरों पर क्रोधित नहीं होता है जब कायर बहादुर हो जाते हैं [अपने आसपास की गलतियों के लिए कर्तव्यनिष्ठ होने के कारण], उसे अपने आप को ठीक कर लेना चाहिए। इसी तरह, जिसका क्रोध [संयम, नैतिकता, नैतिकता और अच्छे आचरण] की सीमा से अधिक हो गया है, उसे भी इलाज की आवश्यकता है जब तक कि कोई अत्यधिक और मध्यम क्रोध के बीच अंतर करने में सक्षम न हो। दूसरे शब्दों में, क्रोध को अनुपस्थिति (या कमी) और अत्यधिकता दोनों में ठीक करने की आवश्यकता होती है। अच्छी स्थिति संयम की स्थिति है जिसे कुरान द्वारा "दृढ़ता का सीधा मार्ग" (*सीरत अल-मुस्तकीम*) (कुरान, अध्याय 1, श्लोक 6) के रूप में वर्णित किया गया है, भले ही यह "दृढ़ता का सीधा मार्ग" एक बाल से भी पतला और तलवार से भी तेज है [यह दर्शाता है कि सभी चरम सीमाओं के बीच संतुलन और संयम का मार्ग, नाजुक और पालन करना कठिन है, जैसे-जैसे मानव स्वभाव संयम के मध्य मार्ग से मानव अस्तित्व के सभी मामलों में चरम प्रवृत्तियों और पदों की ओर मुड़ता है]। जो संयम की स्थिति तक पहुंचने में सक्षम नहीं है, उसे निराशा में झुकने के बजाय जितना संभव हो उतना करीब जाने की कोशिश करनी चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि जो हर काम अच्छे तरीके से नहीं कर पाता है, वह हर

काम को बुरे तरीके से करता है। कुछ बुराइयां अन्य बुराइयों की तुलना में हल्की होती हैं और कुछ अच्छी चीजें अन्य अच्छी चीजों से बेहतर होती हैं। इसीलिए, जितना संभव हो, व्यक्ति को अच्छा करने और बुराई को रोकने के करीब रहना चाहिए। अच्छा करने में सफलता और क्षमता (*तौफीक*) केवल ईश्वर से ही प्राप्त होती है।

क्या आध्यात्मिक प्रयास के माध्यम से क्रोध को मिटाया या कम किया जा सकता है?

अगर किसी की प्यारी चीज छीन ली जाती है, चोरी हो जाती है या क्षतिग्रस्त हो जाती है, तो उसे उस पर गुस्सा आता है। तीन प्रकार की चीजें हैं जो एक व्यक्ति को पसंद हैं। पहले प्रकार में ऐसी चीजें शामिल हैं जो सभी के लिए आवश्यक हैं जैसे भोजन, निवास, कपड़े और स्वास्थ्य, आदि। यदि कोई शरीर को नुकसान पहुंचाने या घायल करने के लिए किसी को पीटता है, तो ऐसे व्यक्ति के खिलाफ क्रोध करना चाहिए क्योंकि शरीर (या बाहरी अस्तित्व) की रक्षा करना अनिवार्य है। कोई भी उन चीजों को नष्ट करना पसंद नहीं करता है जो किसी के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं और व्यक्ति को इस तरह के नुकसानों के खिलाफ क्रोध करना चाहिए। दूसरे प्रकार की चीजें जो किसी को पसंद आती हैं, उनमें ऐसी चीजें शामिल हैं जो किसी भी इंसान के लिए आवश्यक नहीं हैं जैसे कि प्रसिद्धि, शक्ति, धन की प्रचुरता, नौकर, सवारी आदि। हालांकि, लोगों ने [पारंपरिक रूप से] उन्हें उनकी आदतों और अज्ञानता के कारण आवश्यक माना है, और उन्हें इस हद तक प्यार करते हैं कि यदि वे उनमें से किसी को खो देते हैं, तो उनके दुःख और दुःख की तीव्रता बहुत अधिक होती है और परिणामस्वरूप उनके नुकसान पर और उन लोगों पर गुस्सा आता है जिन्हें वे मानते हैं कि उन्होंने उस नुकसान का कारण बनाया है। तीसरी तरह की चीजें जो किसी को पसंद हैं, उनमें ऐसे मामले शामिल हैं जो कुछ के लिए आवश्यक हैं लेकिन दूसरों के लिए नहीं। उदाहरण के लिए, एक विद्वान के लिए किताबें आवश्यक हैं, इसीलिए, एक विद्वान पुस्तकों को [उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों के लिए] पसंद करता है, इसलिए यदि कोई उन्हें फाड़ देता है, जलाता है या डुबो देता है, तो वह क्रोधित हो जाता है।

इन तीन प्रकार की चीजों पर आध्यात्मिक प्रयास का क्या प्रभाव पड़ता है जो किसी को प्रिय हैं ? पहले प्रकार के लिए, क्रोध को मिटाने के लिए आध्यात्मिक संघर्ष नहीं किया जाता है, बल्कि यह इसलिए किया जाता है ताकि हृदय अब इसके अधीन न रहे और जाहिरा तौर पर किसी को इसका उपयोग केवल उस सीमा तक करना चाहिए जो ईश्वरीय कानून और बुद्धि को पसंद है। यह आध्यात्मिक संघर्ष (मुजाहिद) के माध्यम से संभव है और कुछ समय के लिए इससे निपटने में सहनशीलता और धैर्य का उपयोग करने का प्रयास करना जब तक कि सहिष्णुता और सहनशीलता व्यक्ति की दूसरी प्रकृति न बन जाए। हृदय से क्रोध को पूरी तरह से हटाना वह नहीं है जो मानव स्वभाव की मांग करता है और न ही यह संभव है, हालांकि, इसकी तीव्रता को समाप्त करना और इसकी ताकत को कम करना संभव है ताकि आंतरिक अस्तित्व में कोई गड़बड़ी न हो, और इसका बाहरी पक्ष पर ऐसा प्रभाव पड़ना चाहिए कि कोई भी क्रोध की वर्तमान स्थिति को किसी को देखने से नहीं बता सके [क्रोध के खिलाफ आंतरिक संयम के कारण]। भले

ही यह एक कठिन आध्यात्मिक संघर्ष है, लेकिन यह असंभव नहीं है। यदि कोई निरंतर प्रयास करता है, तो असफलता का कोई कारण नहीं होगा [क्रोध को नियंत्रित करने की स्थिति प्राप्त करने में]। यही बात तीसरी तरह की चीजों पर भी लागू होती है क्योंकि कुछ चीजें कुछ के लिए आवश्यक होती हैं, जैसे कि पहली तरह की चीजें [जो सभी मनुष्यों के लिए सार्वभौमिक रूप से आवश्यक हैं]। आध्यात्मिक संघर्ष के परिणामस्वरूप दोनों प्रकार की चीजों पर समान प्रभाव देखने को मिलेगा।

दूसरे प्रकार की चीजों पर जो क्रोध होता है, वह आध्यात्मिक संघर्ष के माध्यम से इन चीजों के प्यार को अपने दिल से निकालकर और खुद को यह विश्वास दिलाकर पूरी तरह से मिटाया जा सकता है कि उसकी मातृभूमि कब्र है और अंतिम निवास परलोक है और यह दुनिया सिर्फ एक पुल है जिसे हम परलोक के निवास तक पहुंचने के लिए गुजरते हैं। या दुनिया सिर्फ एक [स्टॉपओवर] स्टेशन है जहां कोई भी आगामी यात्रा और अगले स्टेशन पर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक निर्भरता (प्रावधानों) को इकट्ठा करने के लिए कुछ क्षणों के लिए रहता है जो किसी का स्थायी गंतव्य है। इसके अलावा (यानी, आगामी यात्रा के लिए एकत्र किए गए प्रावधान), जो कुछ भी है वह एक बोझ है जो उस व्यक्ति पर होगा जिसका कब्र में या परलोक में कोई लाभ नहीं है। सांसारिक वस्तुओं से उदासीनता और वैराग्य अपनाना चाहिए और अपने दिल से प्यार को दूर करना चाहिए। अगर किसी को अपने कुत्ते से प्यार नहीं है, तो किसी के उसे मारने पर गुस्सा नहीं आएगा। यह दर्शाता है कि क्रोध प्रेम [और किसी चीज के प्रति लगाव] के अधीन है। इस तरह की चीजों के लिए आध्यात्मिक संघर्ष का उद्देश्य क्रोध को पूरी तरह से समाप्त करना है। हालांकि, ऐसा होना बहुत मुश्किल है, इसके बजाय, क्रोध को कमजोर करना या इसके निहितार्थ पर कार्य न करना आसान है। वह प्राप्त होने पर भी संतुष्ट किया जा सकता है। एक व्यक्ति जो ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और एकता (तौहीद) पर हावी है और हर चीज को ईश्वर के उपहार के रूप में सोचता है जो ईश्वरीय शक्ति और विशेषाधिकार के भीतर है, वह [ईश्वर की] रचनाओं पर क्रोधित नहीं होता है [जैसा कि कोई जानता है कि ईश्वर सभी मामलों का अंतिम निपटान करने वाला है और कुछ भी एक तक नहीं पहुंचता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, भगवान की अनुमति को छोड़कर], क्योंकि किसी का यह विश्वास है कि रचनाओं का अपना कोई विशेषाधिकार नहीं है और वे सभी ईश्वरीय शक्ति और सर्वशक्तिमानता के अधीन हैं और उन पर विजय प्राप्त की जाती है, जैसे एक कलम एक लेखक के हाथ में होती है [ताकि यह कलम नहीं बल्कि लेखक है जो लिख रहा है और कलम केवल वही कर रहा है जो लेखक चाहता है]। इससे यह पता चला है कि ईश्वर की एकता और सर्वशक्तिमानता (तौहीद) के प्रभुत्व के परिणामस्वरूप क्रोध का उन्मूलन हो जाता *है और ईश्वर (*हुस्न अल-धुन) के *बारे में अच्छी राय रखना* (यह विश्वास कि ईश्वर केवल वही करेगा जो किसी के लिए अच्छा है, भले ही वह ऐसा न लगे) इस संबंध में भी प्रभावी है क्योंकि कोई समझता है कि जो कुछ भी होता है, भगवान से आता है और जो कुछ भी भगवान किसी के साथ करता है वह एक अच्छी बात है चाहे वह किसी को भूखा और प्यासा रखना हो, एक को घायल करना हो, या यहां तक कि किसी के माध्यम से किसी का जीवन खोना हो [या कुछ और]। इस विश्वास के बाद, क्रोध का कोई कारण नहीं बचता है, जैसे रक्त निकालने वाले व्यक्ति पर कोई क्रोधित नहीं होता है [चिकित्सा कारणों के लिए जैसा कि यह माना जाता है कि यह स्वास्थ्य को संरक्षित करने और प्रदान करने के उद्देश्य से किया जाता है]।

इस चर्चा का नतीजा यह है कि क्रोध की आग से सुरक्षा का केवल एक ही तरीका है जो दुनिया को पूरी तरह से दिल से हटा रहा है (जहां भी ग़ज़ाली "दुनिया" शब्द का उपयोग करता है, वह सांसारिक आसक्तियों और हृदय की उलझनों का उल्लेख कर रहा है जो हृदय को नष्ट कर देता है जो मानव अस्तित्व

का सार है, और वह अपने आप में दुनिया का उल्लेख नहीं कर रहा है क्योंकि ग़ज़ाली ने बार-बार उल्लेख किया है कि दुनिया शाश्वत सुख और अंतहीन विजय प्राप्त करने का एक साधन है)। यह तभी संभव है जब साधक (सत्य के मार्ग पर) (आध्यात्मिक यात्री) को संसार के नुकसान (अर्थात् सांसारिक आसक्ति और हृदय की उलझन) के बारे में पता हो। सांसारिकता की निंदा की व्याख्या आने वाली है जहां इन नुकसानों को स्पष्ट किया जाएगा। यहां यह सूचित करना पर्याप्त है कि जिसका हृदय संसार के प्रेम से रहित हो जाता है, वह क्रोध के अधिकांश कारणों से सुरक्षित हो जाता है। जिन कारणों को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सकता है, वे [अभी भी] कमजोर हो सकते हैं, और उन्हें कमजोर करने से भी क्रोध कमजोर हो सकता है। हम ईश्वर से इस प्रयास में सही और परिणामी सफलता (तौफीक) करने की क्षमता की सुंदरता की तलाश करते हैं [क्रोध को मिटाने या कमजोर करने का]।

क्रोध के कारण

यह अब तक अच्छी तरह से ज्ञात है कि किसी बीमारी को ठीक करने का तरीका उसकी सामग्री और कारणों को मिटाना है। यूहन्ना (याह्या [परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हो]) ने यीशु से पूछा: "कौन सी बात कठिन है?" उसने जवाब दिया: "आपका गुस्सा"। यूहन्ना ने पूछा: "क्रोध क्यों होता है और उसके पोषण के कारण क्या हैं?" यीशु ने जवाब दिया: "अहंकार, उतावलेपन, सम्मान और शोहरत की लालसा। क्रोध की तीव्रता को बढ़ाने वाले कारक हैं: अहंकार, उपहास, अतिशयोक्ति, उकसाना, किसी की बातचीत में बाधा डालना, कठोर आग्रह, भौतिक संपत्ति और प्रसिद्धि के लिए लालच, आदि। ये सभी बुरी और विनाशकारी नैतिकता, शिष्टाचार, स्वभाव और आंतरिक स्वभाव के दायरे में आते हैं, और ईश्वरीय व्यवस्था में उनकी निंदा की जाती है। इन कारणों की उपस्थिति क्रोध से छुटकारा पाना असंभव बना देती है। इसीलिए, यह आवश्यक है कि यदि किसी के पास क्रोध के कारणों में से एक या अधिक है तो उन्हें उनके विपरीत के माध्यम से निपटाया जाता है और कम किया जाता है। इसलिए, अहंकार को दूर किया जाना चाहिए, हालांकि [वास्तविक आंतरिक रूप से] विनम्रता, आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा (*'उजुब*) को अपने निचले आधार स्व (नफ्स) की निंदा के माध्यम से हटा दिया जाना चाहिए, और इस विश्वास के माध्यम से अभिमान को दूर किया जाना चाहिए कि दूसरा व्यक्ति [जो किसी के क्रोध का विषय है] भी एक इंसान है और अन्य सेवकों की तरह, वह भी ईश्वर का सेवक है - [सभी] लोग [दुनिया के] वास्तव में एक ही पिता के बेटे और बेटियां हैं [और माँ, यानी, आदम और हव्वा] जो बाद में [भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषाई, नस्लीय, जनजातीय, धार्मिक और जातीय रेखाओं के साथ एक-दूसरे से अलग हो गए] और मतभेदों की दीवारें उभरी [जिसने उनके बीच एकीकरण और सद्भाव में बाधा डाली], लेकिन सभी अपनी मानवता में समान हैं। गर्व (इस संदर्भ में इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द किसी के आंतरिक सुख और आनंद के अर्थ में है, न कि "गर्व" प्रति से) आंतरिक उत्कृष्टता पर होना चाहिए [जो अच्छे, स्वास्थ्यप्रद, रचनात्मक और सकारात्मक नैतिकता, शिष्टाचार, स्वभाव और आंतरिक स्वभाव हैं जो किसी के आंतरिक अस्तित्व और किसी की वास्तविक वास्तविकता - हृदय और आत्मा की विशेषताएं हैं]। आत्म-दंभ, अहंकार और अभिमान विनाशकारी बुराइयां हैं जो बुरी आंतरिक बुराइयों की जड़ें और आधार हैं और यदि आप उनसे रहित नहीं हैं, तो आप दूसरों से बिल्कुल बेहतर नहीं हैं। अभिमान आपको शोभा नहीं देता। जिन लोगों

पर आप गर्व महसूस करते हैं, उनकी तुलना में अन्य लोग आपसे कैसे कमतर हैं और किस मायने में? जैसे तुम्हारे पास नाक, कान और आंखें हैं, उनके पास एक ही अंग हैं, वे उसी पिता (आदम [उस पर शांति हो]) की संतान हैं, जिसकी तुम भी संतान हो [और इसलिए वे तुम्हारे भाई और बहन हैं]। विश्वास के अभ्यास से संबंधित गंभीर मामलों में शामिल होकर हास्य को समाप्त किया जा सकता है [जो नीच, नीच, आंतरिक गुणों, स्वभावों और प्रवृत्तियों को मिटाने के लिए नैतिक शुद्धता और आध्यात्मिक संघर्ष की मांग करते हैं और उन्हें उच्च नैतिकता, शिष्टाचार, गुण, स्वभाव और स्वभाव के साथ प्रतिस्थापित करते हैं जिनके लिए जीवन भर बहादुर और निरंतर संघर्ष की आवश्यकता होती है] ताकि किसी को व्यर्थ के प्रयासों में लिप्त होने का समय भी न मिले [जैसे कि दूसरों का उपहास करना और नीचा दिखाना]। व्यक्ति को आंतरिक उत्कृष्टता (*फदा-इल),* अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार और आंतरिक स्वभाव (*इखलाक अल-हसन),* और धार्मिक ज्ञान के अधिग्रहण में खुद को व्यस्त करके बेकार प्रयासों से बचना चाहिए [जो व्यक्ति को इन महान लक्ष्यों की ओर ले जाता है और आत्मा के शोधन और शुद्धि को लाता है, पहले एक इंसान को सामंजस्य और मानवीय बनाता है, और फिर उसे मानव उपलब्धि के शिखर पर ले जाता है जो निकटता और ज्ञान है (*मारिफा*) परमात्मा का] इस विश्वास के साथ कि ये चीजें व्यक्ति को परलोक की शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता (सादा) तक ले जाती हैं। उपहास के बारे में याद रखना चाहिए कि जैसे मैं दूसरे लोगों के उपहास का शिकार होने से दुखी हूं, वैसे ही दूसरों को भी मेरे द्वारा उपहास किए जाने से परेशान होना चाहिए, इसलिए किसी का उपहास नहीं किया जाना चाहिए। किसी की जीभ से एक बुरा शब्द न बोलने से दोष खोजने की आदत को छोड़ा जा सकता है, अन्यथा जिस व्यक्ति को संबोधित किया जाता है [गलत दोष खोजने के तरीके से] वह भी जीभ रखता है; यह संभव है कि जिस व्यक्ति को संबोधित किया गया हो, वह और भी कठोर कुछ कह दे। लालच की तीव्रता का उन्मूलन केवल उसी चीज़ से संतोष के माध्यम से संभव है जिसकी हमें वास्तव में आवश्यकता है [कथित जरूरतों के विपरीत जो यथार्थवादी भी नहीं हो सकती हैं]। संतुष्टि में गरिमा है और अनावश्यक चीजों से बेखबर है, जबकि [किसी या किसी चीज की] जरूरत में अपमान है।

इन [नकारात्मक और] निंदनीय आंतरिक लक्षणों, स्वभावों, प्रवृत्तियों, शिष्टाचार और स्वभावों के बीच से किसी भी लक्षण के लिए इलाज आसान नहीं है। इसके बजाय, कठिनाइयों और गहन आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष को सहने की आवश्यकता है। इस आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष का उद्देश्य सबसे पहले इन सभी बुरे आंतरिक लक्षणों, स्वभावों, प्रवृत्तियों, शिष्टाचार, स्वभाव और नीच आदतों के नुकसान से परिचित होना है ताकि हृदय उनसे घृणा कर ले और उनकी बुराइयां बिल्कुल स्पष्ट हो जाएं। उसके बाद, व्यक्ति को इन नीच और बुरे आंतरिक लक्षणों, स्वभावों, प्रवृत्तियों, शिष्टाचार और स्वभावों के विपरीत पर कार्य करने की आवश्यकता होती है और जब तक उन्हें अपनी दूसरी प्रकृति बनने में समय लगता है और जब तक वे आदतें नहीं बन जाते और उन पर कार्य करना कठिन नहीं रह जाता, तब तक उन पर लगातार कार्य करते रहना चाहिए। क्रोध से छुटकारा पाने के लिए, स्वयं (*नफ्स) के लिए* इन आंतरिक बुराइयों से शुद्ध होना अनिवार्य है क्योंकि वे क्रोध की उत्पत्ति और पोषण करने वाली [बुरी] आदतों का स्रोत और उत्पत्ति हैं।

अज्ञानियों को क्रोध एक और कारण से होता है। ये दयनीय लोग, अपनी अज्ञानता और समझ की कमी के कारण, सोचते हैं कि क्रोध प्रदर्शित करने में मर्दानगी (दुस्साहस और साहस) और बहादुरी है और जो लोग क्रोधित नहीं होते हैं वे "पुरुष" कहलाने के योग्य नहीं हैं। ऐसे लोग क्रोध को आत्म-सम्मान, उच्च आकांक्षा

और गरिमा के रूप में समझते हैं और [अवांछनीय रूप से] इसे तब तक अच्छा नाम देते हैं जब तक कि स्वयं इसकी ओर झुकाव नहीं कर लेता और इसे अच्छा मानना शुरू नहीं कर देता। क्रोध को आत्ममान, पराक्रम कहना अज्ञान है, बल्कि यह हृदय की बीमारी है, बुद्धि में दोष का संकेत है। इसके लिए तर्क यह है कि एक बीमार व्यक्ति को स्वस्थ व्यक्ति से अधिक गुस्सा आता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति कमजोर दिल का होता है। एक बदचलन और बुरे चरित्र वाला व्यक्ति एक अच्छे व्यवहार और धर्मी व्यक्ति की तुलना में क्रोध का अधिक शिकार हो जाता है। इसलिए, एक नीच व्यक्ति एक निवाले के लिए और एक अनाज के लिए कंजूस क्रोधित हो जाता है। इन अज्ञानियों के साथ उपचार करने का तरीका यह है कि उन्हें सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा और धर्मी लोगों की उदारता की परंपराओं के बारे में बताया जाना चाहिए और उन्हें बताया जाना चाहिए कि वे अपने क्रोध को नियंत्रित करते थे। ऐसी परंपराएं पैगम्बरों, संतों, ज्ञानवादियों, बुद्धिमानों, विद्वानों और अच्छे नेताओं से भी आई हैं, जबकि विपरीत परंपराएं अज्ञानियों और मूर्खों से आई हैं।

उकसाने के बाद क्रोध का इलाज

अब तक की चर्चा का नतीजा यह है कि क्रोध के कारणों को दूर धकेल दिया जाना चाहिए, और इसके अंतर्निहित कारणों को मिटा दिया जाना चाहिए ताकि क्रोध गलत तरीके से कभी न हो। यहां उद्देश्य यह समझाना है कि अगर किसी को गुस्सा आता है तो उसे क्या करना चाहिए। क्या किसी को इसके निहितार्थों पर कार्य करना चाहिए या दृढ़ता रखनी चाहिए और स्वयं (*नफ्स*) को क्रोध के निहितार्थ पर कार्य करने से रोकना चाहिए? यह स्पष्ट है कि उत्तरार्द्ध बुद्धि की अभिव्यक्ति है और यह एक महान आध्यात्मिक प्रयास है और इसकी परिणति ज्ञान और कार्य के माध्यम से होती है।

ज्ञान के माध्यम से क्रोध का उन्मूलन: निम्नलिखित छह मामले ज्ञान का सार हैं [क्रोध के उन्मूलन से संबंधित]: **सबसे पहले**, क्रोध, क्षमा, सहनशीलता और सहिष्णुता को नियंत्रित करने की श्रेष्ठता और उत्कृष्टता के बारे में अतीत की घटनाओं और परंपराओं पर विचार और विचार-विमर्श करना चाहिए और इसका परिणाम इन उत्कृष्टता को प्राप्त करने की इच्छा का जागरण होगा। यह इच्छा व्यक्ति को बदला लेने से रोकेगी और क्रोध की आग को बुझा देगी। मलिक इब्न अवस इब्न अल-हद्दन बताते हैं कि एक बार [खलीफा] उमर (भगवान उनसे प्रसन्न हों) किसी पर क्रोधित हो गए और उन्हें सजा सुनाने का आदेश दिया [उनके द्वारा किए गए अपराध के कारण]। उस आदमी ने कहा, "ऐ विश्वासियों के अगुआ! कृपया इस आयत पर विचार करें [कुरान से]:

خُذِ ٱلْعَفْوَ وَأْمُرْ بِٱلْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْجَٰهِلِينَ

"क्षमा का अभ्यास करो और [लोगों] को अच्छे धर्म के काम करने और अज्ञानताओं से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित करो। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 199)

इस परंपरा के कथाकार का कहना है कि उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) इस आयत को बार-बार पढ़ते थे और इसके अर्थों पर विचार करते थे। यही उनकी दिनचर्या थी। कुरान के अर्थों और समझ पर जबरदस्त

महारत हासिल होने के बावजूद, उन्होंने कुरान पर विचार-विमर्श करना जारी रखा। इसलिए इस आयत ने उन्हें विचार-विमर्श करने के लिए आमंत्रित किया। नतीजा यह हुआ कि उस आदमी को राहत मिली और वह उससे बाहर निकल गया।

दूसरे, किसी को अपने निचले स्व (*नफ्स*) को परमेश्वर के प्रतिशोध से डरना चाहिए [ईश्वरीय न्याय से बाहर अपने स्वयं के गलत कामों के लिए] और यह बताना चाहिए कि ईश्वर एक के ऊपर दूसरे की तुलना में कहीं अधिक शक्ति रखता है। अगर मैं दूसरे पर अपना गुस्सा निकालने की कोशिश करता हूं, तो यह संभव है कि मैं न्याय के दिन परमेश्वर के क्रोध [अपने स्वयं के अन्याय और दूसरे के प्रति ज्यादतियों पर] से बचने में सक्षम नहीं हो सकता हूं, जब मुझे [दिव्य] क्षमा और दया की अधिक आवश्यकता होगी। कुछ दिव्य रूप से प्रकट शास्त्रों में यह अंकित है कि भगवान ने यह रहस्योद्घाटन भेजा: "हे मनुष्य! जब तुम क्रोधित होओगे, तो मुझे स्मरण करो, मैं तुम्हें तुम्हारे साथ अपनी नाराजगी के समय [तुम्हारे अपने गलत कामों के कारण] याद करूंगा और तुम्हें उन लोगों में शामिल नहीं करूंगा जिन्हें विनाश के लिए नियत किया गया है [शालीनता और निष्पक्षता की सीमाओं के खिलाफ उनकी अपनी ज्यादतियों और अपराधों के कारण]"। यह वर्णित है कि बुद्धिमान (ऋषि) आवश्यक रूप से इस्राएल के राजाओं के साथ जाते थे। जब भी कोई राजा क्रोधित होता था, तो उसका बुद्धिमान साथी उसके सामने एक चर्मपत्र रखता था जिस पर लिखा होता था, "गरीबों पर दया करो, [अपनी मृत्यु से डरो और परमेश्वर के सामने गणना करो] और परलोक को याद करो"। राजा इस लेखन को पढ़कर शांत हो जाते थे।

तीसरा, किसी को शत्रुता और प्रतिशोध के नतीजों और शत्रुता के परिणामस्वरूप होने वाले कष्टों और कठिनाइयों के बारे में खुद को आशंकित करना चाहिए, जिस पर मैं क्रोधित होऊंगा, वह मेरा विरोधी बन जाएगा और मेरे लिए परेशानी पैदा करने की कोशिश करेगा। लेकिन सांसारिक विचारों, कष्टों और कठिनाइयों के लिए क्रोध न करना भी खतरे से रहित नहीं है, क्योंकि इसमें सांसारिक जीवन को सौहार्दपूर्ण रखने की वासना और इच्छा निहित है। यह निश्चित रूप से परलोक की कार्रवाई नहीं है, बल्कि यह क्रोध पर वासना थोप रही है। क्रोध की तरह वासना भी एक बुराई है। इसीलिए, संसार (सुखद सांसारिक जीवन) के लिए क्रोध को दबाने से [भगवान से] एक भी पारिश्रमिक नहीं मिलेगा। यदि कोई सांसारिक चिंता हृदय और शरीर की शांति में बाधा डाल रही है [आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपने प्रयासों को जारी रखने के लिए], तो इसे दूर करने से निश्चित रूप से ईश्वरीय पारिश्रमिक मिलेगा।

चौथा, जब कोई क्रोधित हो रहा हो, तो उसे अपने बाहरी रूप की कुरूपता की कल्पना करनी चाहिए [क्रोध के कारण क्योंकि यह किसी को कुरूप दिखाने में एक प्रमुख कारक है]। जैसे क्रोध के समय लोगों के चेहरे विकृत हो जाते हैं, वैसे ही मेरा अपना चेहरा विकृत हो गया होता। इस तरह से हृदय में क्रोध की घृणा पैदा होगी। यह भी सोचना चाहिए कि क्रोधित होने वाला व्यक्ति पागल कुत्ते और क्रूर जंगली जानवर जैसा दिखता है, जबकि एक व्यक्ति जो सहिष्णु, सहनशील और क्रोध से ग्रस्त नहीं है, वह अपनी विशेषताओं में भविष्यद्वक्ताओं, संतों और बुद्धिमान के समान होता है। उस अवसर पर, किसी को अपने निचले स्व (नफ्स) को यह विकल्प देना चाहिए कि क्या वह कुत्तों, जानवरों और बुरे व्यक्तियों के समान दिखना चाहता है या वह भविष्यवक्ताओं और विद्वानों के समान दिखना चाहता है। यदि स्वयं (*नफ्स*) में एक कण की भी शालीनता और विश्वास मौजूद है, तो यह निश्चित रूप से विद्वानों और भविष्यवक्ताओं के अनुसरण की ओर झुका होगा और कभी भी कुत्तों के समान नहीं दिखना चाहेगा [क्रोध के पागलपन में]।

पांचवां, किसी को उस कारण पर विचार-विमर्श करना चाहिए जो किसी को बदला लेने के लिए आमंत्रित कर रहा है और क्रोध को रोकना मुश्किल लगता है। जाहिर है, निश्चित रूप से एक कारण होगा क्योंकि क्रोध बिना किसी कारण के नहीं आता है। उदाहरण के लिए, इसका कारण यह हो सकता है कि शैतान किसी को बदला लेने के लिए उकसाता है और दिल में ऐसे विचार पैदा करता है कि, "यदि तुम अपने क्रोध को नियंत्रित करते हो और बदला नहीं लेते हो, तो लोग तुम्हें अक्षम और पराजित घोषित कर देंगे, वे तुम्हें अपमानित और अपमानित करेंगे और तुम्हें नीच समझेंगे"। यदि यही कारण है तो किसी को अपने निचले स्व (नफ्स) से यह कहना चाहिए, "आपको सांसारिक जीवन का अपमान और अपमान पसंद नहीं है और इससे बचने के लिए बदला लेने की ओर झुकाव है, लेकिन आप न्याय के दिन उस महान अपमान का सामना करने के बारे में नहीं सोचते हैं जब कोई व्यक्ति आपको आपका हाथ पकड़ लेगा और आपसे अपना बदला ले लेगा और आप ऐसा नहीं कर पाएंगे कुछ भी। आप लोगों की नज़र में क्षीण होने से डरते हैं लेकिन भविष्यद्वक्ताओं, संतों और स्वर्गदूतों की दृष्टि में क्षीण होने का कोई डर नहीं है। क्रोध को परमेश्वर के लिए दूर किया जाना चाहिए, आपको [साथी] मनुष्यों से क्या चाहिए [जैसा कि यह उनके लिए नहीं किया जाता है]? क्या अपमान और सम्मान उनके हाथों में है? यहां तक कि अगर कोई आप पर अत्याचार करता है, तो आपको बदला नहीं लेना चाहिए क्योंकि यह उत्पीड़न न्याय के दिन अत्याचारी के लिए बड़े अपमान का स्रोत होगा। क्या आप न्याय के दिन खड़े होना पसंद नहीं करते हैं जब यह घोषित किया जाएगा कि जो कोई भी परमेश्वर से देय है, उसे खड़ा होना चाहिए, तो वे लोग खड़े होंगे जिन्होंने अत्याचारियों को क्षमा कर दिया होगा [और इस प्रकार उनकी उदारता के कारण विशाल ईश्वरीय प्रतिफल के योग्य हो गए]?

छठा, किसी को यह सोचना चाहिए, "मेरा क्रोध वास्तव में एक संकेत है कि [मेरा वास्तविक विश्वास यह है] कि कुछ चीज मेरी इच्छाओं और इच्छाओं के अनुसार क्यों नहीं हुई और यह परमेश्वर की इच्छा और इरादे के अनुसार क्यों हुई? ऐसा कैसे हो सकता है कि मेरा उद्देश्य परमेश्वर के उद्देश्य से श्रेष्ठ है? केवल वही होगा जो भगवान की इच्छा है। मेरे क्रोध और गुस्सैल स्वभाव का कोई अन्य परिणाम नहीं हो सकता है कि मुझे इसके लिए सजा का सामना करना पड़ेगा और ईश्वरीय प्रतिशोध के अधीन हो जाऊंगा।

कर्मों द्वारा क्रोध को भड़काने का उन्मूलन : यदि किसी को क्रोध आता है, तो उसे जीभ से यह कहना चाहिए :

أعوذ بالله من الشيطان الرجيم

"मैं शैतान, शापित से परमेश्वर की शरण चाहता हूँ"।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने गुस्सा आते समय ऐसा ही कहने की सलाह दी है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* सहीह बुखारी *और* सहीह मुस्लिम *को सुलेमान इब्न सरद के अधिकार पर संग्रह करता है [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])*

जब [पैगंबर की पत्नी] आयशा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) क्रोधित हो जाती थी, तो पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसकी नाक पकड़ लेते थे और कहते थे: "हे ओवैश! इसे इस तरह कहो [परमेश्वर से प्रार्थना के माध्यम से]:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَاَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِيْ وَاَجِرْنِيْ مِنْ مُضِلَّاتِ
الْفِتَنِ

हे परमेश्वर! मुहम्मद के भगवान! मेरे पापों को क्षमा करें, मेरे दिल में क्रोध को दूर करें और मुझे उन परीक्षणों और क्लेशों से बचाएं जो किसी को गुमराह करने की ओर ले जाते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अस-सनी फी अल-यौम वा अल-लैला*)

क्रोध के समय इस प्रार्थना (प्रार्थना) को करने की सलाह दी जाती है। यदि इसके बाद भी क्रोध बना रहता है, तो व्यक्ति को सभा को बदलना चाहिए, खड़े होने की स्थिति में बैठ जाना चाहिए, बैठने की स्थिति में लेट जाना चाहिए और उस पृथ्वी के करीब जाना चाहिए जहां से एक बनाया गया है, इससे स्वयं में विनम्रता पैदा होगी (*नफ्स*). बैठने-लेटने में यह औचित्य (ज्ञान) है कि हृदय शांत हो जाता है क्योंकि क्रोध का कारण गर्मी है और गर्मी गति के कारण होती है। यदि गति रुक जाती है, तो गर्मी दूर हो जाएगी, और क्रोध भी समाप्त हो जाएगा। यदि क्रोध इस रणनीति के साथ समाप्त नहीं होता है, तो व्यक्ति को स्नान करना चाहिए या ठंडे पानी से स्नान करना चाहिए क्योंकि आग पानी से बुझ जाती है जैसा कि एक भविष्यद्वाणी परंपरा में वर्णित है:

ان الغضب من الشيطان وان الشيطان خلق من النار وانما تطفا النار بالماء
فاذا غضب احدكم فليتوضا

"क्रोध शैतान की ओर से है और शैतान को आग से बनाया गया है, और आग पानी के माध्यम से बुझ जाती है। यदि आप में से किसी को गुस्सा आता है, तो उसे स्नान (*वुडू*) करना चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अबू दाऊद* अतिया अल-सादी के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

एक और भविष्यद्वाणी का वर्णन क्रोध के समय [भगवान को] साष्टांग प्रणाम करने की ओर इशारा करता है क्योंकि उस अवस्था में, एक इंसान सबसे अच्छे [शारीरिक] अंगों (माथे और गाल) को सभी स्थानों (यानी, जमीन) में सबसे विनम्र पर रखता है। इस अवसर पर साष्टांग प्रणाम का ज्ञान यह है कि हृदय में विनम्रता और नम्रता का जन्म होता है और क्रोध को भड़काने वाले हृदय से घमंड, अहंकार और श्रेष्ठता की भावना दूर हो जाती है।

सहनशीलता की उत्कृष्टता

सहनशीलता, नम्रता और सौम्यता (*हिल्म*) क्रोध को रोकने से भी बेहतर है क्योंकि क्रोध को रोकने का अर्थ है जबरन सहनशीलता का अभ्यास करना। दूसरे शब्दों में, जो किसी के क्रोध को नियंत्रित करेगा, वह वही है जो पहले स्थान पर क्रोधित हुआ। यह एक कठिन चरण है और एक कठोर आध्यात्मिक अभ्यास है,

लेकिन [क्रोध को रोकने में] निरंतर प्रयास से बलपूर्वक सहनशीलता का अभ्यास करने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी, इसके बजाय व्यक्ति धीरे-धीरे क्रोधित न होने का आदी हो जाएगा। क्रोध आने पर भी उसे छोड़ने में कोई कठिनाई महसूस नहीं होगी। यह आंतरिक [प्राकृतिक] सहनशीलता है और इस सहनशीलता का अर्थ है कि व्यक्ति के पास पूर्ण बुद्धि है, बुद्धि उस पर हावी है, और क्रोध की शक्ति भी बुद्धि के अधीन है। इससे यह पता चला है कि क्रोध को रोकना सहनशीलता का प्रारंभिक चरण है और स्वाभाविक अंतर्निहित सहनशीलता इसकी परिणति है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

انما العلم بالتعلم والحلم بالتحلم ومن يتخير الخير يعطه ومن يتوق الشر يلقه

"ज्ञान सीखने से प्राप्त होता है और सहनशीलता [प्राप्त की जाती है] जानबूझकर कर्तव्यनिष्ठ प्रयासों के माध्यम से [अप्रिय मामलों को सहन करके] सहनशील बनकर। जो अच्छाई का इरादा रखता है, उसे अच्छाई दी जाएगी (ईश्वरीय उदारता और उदारता के माध्यम से) और जो बुराई से रक्षा करता है उसे इससे बचाया जाएगा। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अबू अल-दर्दा के अधिकार पर *तबरानी* और *दरोक्तानी को* इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

अबू हुरैरा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं:

اطلبوا العلم واطلبوا مع العلم السكينة والحلم، لينوا لمن تعلمون ولمن تتعلمون منه، ولا تكونوا من جبابرة العلماء، فيغلب جهلكم علمكم

"ज्ञान प्राप्त करें और ज्ञान के साथ-साथ सम्मानजनक शांति और सहनशीलता की खोज करें। अपने छात्र और शिक्षक के साथ सौम्य और सौम्य तरीके से व्यवहार करें। कठोर और गर्म दिमाग वाले विद्वानों के बीच मत बनो ताकि आपकी अज्ञानता आपके ज्ञान पर हावी हो जाए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अस-सनी फी अल-रियदतुल मुता'अल्मीन*)

इसमें बताया गया है कि अहंकार और श्रेष्ठता की भावना क्रोध को जन्म देती है और यही आंतरिक विशेषताएं व्यक्ति को सहनशीलता और नम्रता से रोकती हैं। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) इन शब्दों में प्रार्थना करते थे:

اَللّٰهُمَّ اَغْنِنِيْ بِالْعِلْمِ، وَزَيِّنِّيْ بِالْحِلْمِ، وَاَكْرِمْنِيْ بِالتَّقْوٰى، وَجَمِّلْنِيْ بِالْعَافِيَةِ

"हे परमेश्वर! मुझे ज्ञान से समृद्ध करें, मुझे सहनशीलता और नम्रता से अलंकृत करें, मुझे पवित्र विस्मय, श्रद्धा और आपके भय से सम्मानित करें, और मुझे स्वास्थ्य और सुरक्षा से सुशोभित करें।

अबू हुरैरा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाते हैं:

ابتغوا الرفعة عند الله' قالوا وماهى يا رسول الله! قال تصل من قطعک'
وتعطى من حرمک' وتحلم عمن جهل عليک

"भगवान के साथ महानता की खोज करें"। लोगों ने पूछा: "वे कौन से मामले हैं जो किसी को परमेश्वर के सामने उच्च पद प्राप्त करने का कारण बनते हैं?" उसने उत्तर दिया: "जो उन्हें तोड़ देता है, उससे अपना सम्बन्ध रखो, जो तुम्हें वंचित करता है, उसे दे दो, और जो तुम्हारे साथ अज्ञानता से व्यवहार करता है, उसके साथ सहनशीलता और नम्रता से व्यवहार करो"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *हकीम* और *बेहाकी*)

एक व्यक्ति (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के समय प्रार्थना की: "हे भगवान! मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं दान में दे सकूं [अपनी भौतिक गरीबी के कारण], हालांकि, मैं इतना कर सकता हूं कि जिसने मुझे कोई भी पीड़ा दी है उसे मैं माफ कर दूं और वह मेरे पक्ष में एक दान बन जाता है। ईश्वर ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को यह रहस्योद्घाटन भेजा कि उन्होंने इस प्रार्थना के कारण उन्हें माफ कर दिया है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अबू नईम फी अस-सहाबा* और *बेहाकी फी अल-शुआब*)

एक बार पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने साथियों से पूछा: "क्या आप में से कोई अबू दम्दम की तरह नहीं बन सकता है?" साथियों ने पूछा: "अबू दम्दम कौन है और उसकी क्या खास विशेषताएं हैं कि हम उसके जैसे नहीं हैं?" उसने कहा: "वह पहले के राष्ट्रों का एक व्यक्ति था जो सुबह उठकर यह बिनती करता था: 'हे परमेश्वर! आज मैं उन लोगों को दान में अपनी गरिमा और सम्मान देता हूं जो मुझ पर अत्याचार करते हैं।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

ثلاث من لم تكن فيه واحدة منهن فلا تعتدوا بشئ من عمله' تقوى تحجزه
عن معاصى الله عزوجل وحلم يكف به السفيه' وخلق يعيش به فى الناس

"तीन चीजें ऐसी हैं कि यदि वे एक में मौजूद नहीं हैं तो किसी के कार्यों को महत्वपूर्ण न मानें: पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर का भय (*तकवा*) जो किसी को ईश्वर की अवज्ञा से रोकता है, सहनशीलता (*हिल्म*) जो किसी को मूर्खता से रोकती है, और अच्छे आंतरिक चरित्र लक्षण (*इखलाक*) जिसके साथ कोई अपना जीवन लोगों के बीच बिताता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है उम्म सलमा के अधिकार पर *हदीस* संग्रह *तबरनी* [भगवान उससे प्रसन्न हों])

क्रोध के मामले में लोगों की अलग-अलग अवस्थाएं: क्रोध के मामले में लोगों की अलग-अलग अवस्थाएं होती हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो अपने क्रोध को दबाने में सक्षम नहीं हैं, लेकिन जल्द ही अपनी मूल स्थिति [शांति की] में लौट आते हैं, कुछ क्रोध का प्रदर्शन नहीं करते हैं बल्कि अपने दिलों में हमेशा के लिए दुश्मनी और द्वेष बनाए रखते हैं। यदि हम जानबूझकर क्रोध के मामले में चार प्रकार के लोग होते हैं:

पहला, घास की तरह जो जल्द ही आग पकड़ लेती है लेकिन जल्द ही बुझ भी जाती है; दूसरे, जैसे कोयले में आग देर से लगती है और देर से बुझती है; तीसरा, गीली लकड़ी की तरह जो देर से आग पकड़ती है और जल्द ही बुझ जाती है - यह स्थिति बहुत अच्छी है बशर्ते कि यह उदासीनता से बाहर न हो; चौथा, किसी ऐसी चीज की तरह जो जल्द ही आग पकड़ लेती है और देर से बुझ जाती है - ऐसे लोग काफी बुरे होते हैं। बिल्कुल भी गुस्सा न होना भी अच्छी बात नहीं है। इमाम शफ़ाई ने कहा: "जो किसी को क्रोधित करने की कोशिश करने के बाद भी क्रोधित नहीं होता है [क्रोध पैदा करने वाली चीजों से] वह गधा है और जो तुष्टिकरण के बाद भी शांत नहीं होता है वह शैतान है"। अबू सईद अल-खुदरी (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से सुनाते हैं कि उन्होंने कहा:

الا ان بنى آدم خلقوا على طبقات شتى فمنهم بطى الغضب' سريع الفى و
منهم سريع اغضب سريع الفى' فتلك بتلك' ومنهم سريع الغضب بطى
الفئ الا وان خيرهم البطى الغضب السريع الفى وشرهم السريع الغضب
البطى الفى

याद रखें, आदम के वंशज (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) (यानी, सभी मनुष्य) को अलग-अलग समूहों में बनाया गया है [उनके आंतरिक चरित्र लक्षणों, स्वभाव, स्वभाव और प्रवृत्तियों के संदर्भ में]। कुछ ऐसे भी होते हैं जो देर से क्रोधित होते हैं और जल्द ही शांत हो जाते हैं, कुछ ऐसे भी होते हैं जो जल्द ही क्रोधित हो जाते हैं और जल्द ही शांत हो जाते हैं, इस तरह से एक [खराब गुण जैसे जल्दी क्रोधित होना] दूसरे के साथ मुआवजा दिया जाता है [गुणवत्ता जो अच्छी है, जैसे जल्दी शांत हो जाना]; कुछ ऐसे भी होते हैं जो जल्दी गुस्सा करते हैं और देर से शांत हो जाते हैं। याद रखें, उनमें से बेहतर व्यक्ति वह है जो देर से गुस्सा करता है लेकिन जल्द ही शांत हो जाता है और उनमें से सबसे बुरा वह है जो देर से गुस्सा करता है और देर से शांत हो जाता है।

चूंकि यह साबित हो चुका है कि क्रोध मानव हृदय और दिमाग को प्रभावित करता है, इसलिए शासन करने वाले अधिकारियों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वे क्रोध की स्थिति में किसी को भी दंडित न करें क्योंकि कोई आवश्यकता की सीमा को पार कर जाता है [गुस्सा होने पर]। इसके अलावा, अपने क्रोध को बाहर निकालना भी निचले स्व की संतुष्टि और आनंद का एक साधन है क्योंकि क्रोध की स्थिति में, जब तक कि कोई अपने क्रोध के लिए किसी को लक्षित नहीं करता है, तब तक शांत और शांतिपूर्ण नहीं होता है, भले ही, जो होना चाहिए था वह यह है कि किसी का क्रोध और प्रतिशोध दोनों केवल ईश्वर के लिए होना चाहिए था [और किसी के व्यक्तिगत अहंकार के लिए नहीं]।

विद्वेष की वास्तविकता और परिणाम और क्षमा और नम्रता की उत्कृष्टता

जब कोई क्रोधित हो जाता है और अपनी कमजोरी के कारण बदला लेने में सक्षम नहीं होता है, तो वह उसे रोकने के लिए मजबूर हो जाता है। वही क्रोध व्यक्ति के हृदय में द्वेष और द्वेष में बदल जाता है। विद्वेष

का अर्थ यह है कि किसी के प्रति घृणा और शत्रुता हमेशा के लिए किसी के दिल में पैदा होती है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

المؤمن ليس بحقود

"एक आस्तिक द्वेष और द्वेष से रहित होता है [दिल में और इसलिए, एक शुद्ध दिल वाला व्यक्ति है जो किसी के खिलाफ कोई द्वेष और बुराई नहीं रखता है]"।

क्रोध के परिणामस्वरूप द्वेष और द्वेष होता है जिसके परिणामस्वरूप निम्नलिखित परिणाम और परिणाम होते हैं:

पहला परिणाम ईर्ष्या है और इसका अर्थ है कि द्वेष आपके हृदय में यह इच्छा पैदा करता है कि दूसरे व्यक्ति के पास जो भी धन और आशीर्वाद है, वह छीन लिया जाता है; यदि किसी अन्य व्यक्ति के पास कुछ आशीर्वाद है, तो आप उससे दुखी और दुखी होते हैं और यदि वह व्यक्ति कठिनाई में पड़ जाता है, तो आप प्रसन्न हो जाते हैं। यह एक पाखंडी की कार्रवाई (पहचान) है और इसकी निंदा जल्द ही स्पष्ट की जाएगी। **दूसरा** परिणाम यह है कि ईर्ष्या की अधिकता है, जिसका अर्थ है कि आप किसी अन्य व्यक्ति की कठिनाइयों पर हंसते हैं और उनका मजाक उड़ाते हैं। **तीसरा** परिणाम यह है कि आप किसी अन्य व्यक्ति को छोड़ देते हैं और सभी संबंधों को तोड़ देते हैं, भले ही कोई आपसे मिलने का इच्छुक हो और यहां तक कि उस इरादे से आपके पास भी आता है। **चौथा** परिणाम यह है कि आप किसी का अपमान और अपमान करते हैं। **पांचवां** परिणाम यह है कि आप एक ऐसे व्यक्ति के बारे में ऐसी बातें कहते हैं जो कहने की अनुमति भी नहीं है [ईश्वरीय कानून में], उदाहरण के लिए, आप झूठ बोलते हैं, पीठ काटते हैं, किसी के रहस्यों को प्रकट करते हैं [या निजी मामले जिन्हें कोई जनता की आंखों से छिपाना चाहता है], और दोष ढूंढते हैं। **छठा** परिणाम यह है कि आप किसी का अपमान और उपहास करने के विचार से एक की नकल करते हैं। **सातवां** परिणाम यह है कि आप एक शारीरिक नुकसान पहुंचाते हैं, दूसरे शब्दों में पिटाई (हिंसा) और शारीरिक शोषण। **आठवां** परिणाम यह है कि आप अपने अधिकारों को वापस नहीं करते हैं और यदि आपके पास ऋण है, तो आप उसे वापस नहीं करते हैं, रिश्तेदारी के अधिकारों को पूरा नहीं करते हैं, और अपनी जब्त की गई चीज वापस नहीं करते हैं। इन सभी परिणामों और परिणामों को निषिद्ध (हराम) [ईश्वरीय कानून में]। द्वेष और द्वेष के बारे में कम से कम आप इतना तो कर सकते हैं कि आप अपने आप को इन आठ उपर्युक्त नुकसानों से बचाएं और [इन आठ परिणामों में से किसी एक या सभी में लिप्त होकर] परमेश्वर की अवज्ञा के लिए उत्तरदायी न बनें, इसके बजाय इसे गलत समझें और इसे बुरा [दिल से] मारें। [यदि आप अपने दिल में द्वेष को बुरा मानते हैं लेकिन फिर भी] आप पहले की तरह किसी से खुशी से बात नहीं करते हैं, अपनी जरूरतों का ख्याल नहीं रखते हैं, किसी के साथ सभा में नहीं बैठते हैं, किसी के साथ दिव्य स्मरण नहीं करते हैं, अपने लाभ के लिए मदद नहीं करते हैं, किसी के लिए प्रार्थना नहीं करते हैं और न ही किसी की प्रशंसा करते हैं, किसी को नेक कामों के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं, किसी के साथ सहानुभूति नहीं रखते हैं या दुःख साझा नहीं करते हैं, तब यह छोटा सा द्वेष आपके दीन (भगवान के मार्ग) में आपकी डिग्री में कमी का कारण बनेगा और एक महान आशीर्वाद और ईश्वरीय प्रतिफल प्राप्त करने में एक बाधा होगी, भले ही आप इस [स्तर] द्वेष के लिए ईश्वरीय प्रतिशोध के योग्य नहीं होंगे [जहां आप इसके आठ परिणामों पर कार्य नहीं करते हैं]। इसलिए, जब अबू बक्र (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने शपथ ली कि वह अपने रिश्तेदार मिस्ता को कुछ भी नहीं देंगे [जिसे वह पहले आर्थिक

रूप से मदद करते थे] क्योंकि वह उन लोगों में से एक थे जो अपनी बेटी के खिलाफ एक निंदा में शामिल थे [जो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की प्यारी पत्नी भी थीं) आयशा (भगवान उनसे प्रसन्न हों), लेकिन जब नीचे की आयत [कुरान की] प्रकट हुई थी [पैगंबर के लिए दिव्य रहस्योद्घाटन के माध्यम से]:

وَلَا يَأْتَلِ أُو۟لُوا۟ ٱلْفَضْلِ مِنكُمْ
وَٱلسَّعَةِ أَن يُؤْتُوٓا۟ أُو۟لِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينَ وَٱلْمُهَٰجِرِينَ فِى
سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا۟ وَلْيَصْفَحُوٓا۟ ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَكُمْ

"और तुम में से जिनके पास [आध्यात्मिक] भेद और उत्कृष्टता है और जिनके पास [सांसारिक] साधन हैं, उन्हें शपथ नहीं लेनी चाहिए कि वे रिश्तेदारों, गरीबों और जरूरतमंदों और उन लोगों को नहीं देंगे जो परमेश्वर के मार्ग पर चलते हैं। उन्हें [इसके बजाय,] उन्हें [उनकी गलतियों और गलतियों] को माफ कर देना चाहिए और [उनके कारण होने वाली किसी भी चोट] की अवहेलना करनी चाहिए। क्या तुम लोगों से प्रेम नहीं है कि परमेश्वर तुम्हारे स्वयं के गलत कामों और कमियों को क्षमा करेगा? वास्तव में परमेश्वर क्षमाशील और दयालु है। " (कुरान, अध्याय 24, आयत 22)

इस आयत को सुनने के बाद, अबू बक्र (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने कहा: "इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम ईश्वर से क्षमा चाहते हैं"। उसके बाद उसने मिस्ता के साथ वैसा ही व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसा वह पहले उसके साथ करता था [आर्थिक रूप से उसकी मदद करके]। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* आयशा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* का संग्रह करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

द्वेष और द्वेष के कारण [किसी के प्रति] अपने [अच्छे] दृष्टिकोण को न बदलना बेहतर है, इसके बजाय, यदि संभव हो तो, किसी को अपने निचले स्व (नफ्स) के खिलाफ आध्यात्मिक संघर्ष के लिए और शैतान को हराने के लिए अपने सुंदर आचरण और व्यवहार को [किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति जो किसी के द्वेष का लक्ष्य है] बढ़ाना चाहिए। इस तरह का कार्य संतों और ज्ञानवादियों (*सिद्दीकी*) का दर्जा है [जो मानवता द्वारा प्राप्त सर्वोच्च पद है] और विश्वासियों (मुमिनीन) के श्रेष्ठ कार्यों में से एक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि द्वेष को आश्रय देने वाले व्यक्ति के पास तीन राज्यों में से एक हो सकता है: पहला, उस व्यक्ति के अधिकारों को पूरा करता है जिसके खिलाफ वह बिना किसी कमी या अधिकता के द्वेष रखता है - यह न्याय है। दूसरा, उस व्यक्ति के साथ क्षमा करना, उत्कृष्टता के साथ व्यवहार करना है, रिश्तेदारी के संबंध बनाए रखना - यह श्रेष्ठ है। तीसरा, क्रूरता के कारण किसी व्यक्ति के खिलाफ द्वेष रखने वाले व्यक्ति से कोई चीज छीनना - यह उत्पीड़न है। यह अंतिम स्थिति और पद घृणित और दुष्टों का है, दूसरा संतों और ज्ञानवादियों का है, और पहला धर्मियों का है।

क्षमा की उत्कृष्टता और अच्छाई में ऊपर और परे जाना

क्षमा का अर्थ है कि कोई अपने स्वयं के [वैध] अधिकारों को माफ करता है, दूसरे शब्दों में, कोई बदला या जुर्माना नहीं लेता है। भगवान कहते हैं:

وَأَن تَعْفُوٓا۟ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ

"और आपकी क्षमा [और उन चीजों को छोड़ना जिनके आप वैध रूप से हकदार हैं] पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर के भय के करीब है (*तकवा*)." (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 237)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा):

ثلاث والذى نفسى بيده لو كنت حلافا لحلفت عليهن، مانقص مال من صدق فتصدقوا ولا عفا رجل عن مظلمة يبتغى بها وجه الله الا زاده الله بها عزا يوم القيامة، ولا فتح رجل على نفسه باب مسالة الا فتح الله عليه باب فقر

"तीन चीजें ऐसी हैं कि अगर मैं कोई ऐसा व्यक्ति होता जो चीजों की कसम खाता था, तो मैं उनके बारे में शपथ लेता: एक यह है कि संपत्ति दान से कम नहीं होती है, इसीलिए, दान में दें; दूसरे, यदि कोई परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए अपने अधिकार को त्याग देता है, तो परमेश्वर न्याय के दिन ऐसा एक सम्मान प्रदान करेगा; तीसरा, यदि कोई अपने लिए [दूसरों को अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए] कहने का द्वार खोलता है, तो भगवान एक के लिए गरीबी का दरवाजा खोलते हैं। (इस परंपरा *को* हदीस *संग्रह* तिर्मिज़ी, *अबू दाऊद* और *सहीह मुस्लिम* में अबू कब्शा अल-अंसारी के अधिकार पर वर्णित किया गया है।

यह पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और ईश्वर का आशीर्वाद हो) की एक अन्य परंपरा में वर्णित किया गया है:

التواضع لا يزيد العبد الا رفعة فتواضعوا يرفعكم الله، والعفو لا يزيد العبد الا عزا فاعفوا يعزكم الله، والصدق لا تزيد المال الا كثرة فتصدقوا يرحمكم الله

"विनम्रता [इस सांसारिक और अन्य सांसारिक] उन्नति (उच्च आध्यात्मिक पद) को एक सेवक [ईश्वर के] प्रदान करती है, इसीलिए, विनम्रता अपनाओ, भगवान आपको उन्नति प्रदान करेंगे। क्षमा एक सेवक को सम्मान प्रदान करती है, इसीलिए, क्षमा करें और भगवान आपको सम्मान प्रदान करेंगे। दान से संपत्ति (भौतिक संपत्ति) बढ़ती है, इसलिए दान में दें, भगवान आप पर दया करेंगे। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस ने अनस के अधिकार पर *इस्फहानी अल-तरघीब वा अल-तर्हीब* और *अबू मंसूर अल-दयालामी को इकट्ठा किया* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

उक़्बा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताता है: "एक दिन मैं पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के पास आया। मुझे याद नहीं है कि मैंने पहले उसका हाथ पकड़ा था या उसने मेरा हाथ पकड़ा था। उसने मुझसे कहा:

يا عقبة! الا اخبرک بافضل اخلاق اهل الدنيا والآخرة صل من قطعک
وتعطی من حرمک، وتعفو عمن ظلمک

'हे उकबा! क्या मुझे तुम लोगों को इस दुनिया और अगले के लोगों के सबसे श्रेष्ठ चरित्र लक्षणों के बारे में सूचित नहीं करना चाहिए? जो तुमसे नहीं मिलता, तुम ऐसे से मिलते हो; जो तुम्हें वंचित करता है, तुम ऐसे को देते हो; जो तुम्हारे साथ अन्याय करता है और तुम पर अत्याचार करता है, तुम ऐसे को क्षमा करते हो!'" (इस परंपरा को हदीस *संग्रह* तबरानी, बेहाकी *और* इब्न अबी अल-दुन्या *में वर्णित किया गया* है)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि यीशु (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने पूछा:

يارب ای عبادک اعز عليک، قال الذی اذا قدر عفا
الاخلاق

"'हे मेरे प्रभु! तेरे सेवकों में से तुझे कौन प्रिय है? भगवान ने प्रकट किया: 'जो बदला लेने की क्षमता रखते हुए भी क्षमा करता है'"। (इस परंपरा को *हदीस* संग्रह *खारा-एती मराकिम अल-इखलाक* में अबू हुरैरा के अधिकार पर वर्णित किया गया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

नम्रता और दया की उत्कृष्टता

नम्रता या दया एक अच्छी विशेषता है और इसके विपरीत आक्रामकता और कठोरता है। [उत्तरार्द्ध] दोनों विशेषताएँ क्रोध और बुरे स्वभाव से पैदा होती हैं, जबकि नम्रता सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, स्वभाव, आंतरिक स्वभाव और शांतिपूर्ण स्वभाव से पैदा होती है। कभी-कभी आक्रामकता क्रोध से पैदा होती है तो कभी लालच की तीव्रता और वर्चस्व से। लालच की तीव्रता के समय लोग सोचने और समझने की क्षमता से वंचित हो जाते हैं और स्वभाव का संतुलन खो जाता है। हालांकि, नम्रता सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, स्वभाव और आंतरिक स्वभाव (*हुस्न उल-खुलक*) का फल है और यह कि [महान आंतरिक स्थिति] तब प्राप्त होती है जब क्रोध और वासना की शक्तियों को संयम की सीमा के भीतर रखा जाता है। इसीलिए, भविष्यसूचक कथनों में नम्रता की अत्यधिक प्रशंसा की गई है। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

يا عائشة انه من اعطى حظه من الرفق فقد اعطى حظه من خير الدنيا والآخرة
ومن حرم حظه من الرفق فقد حرم حظه من خير الدنيا والآخرة

"हे आयशा! जिसे [ईश्वरीय उदारता द्वारा] नम्रता प्रदान की गई है, उसे इस सांसारिक जीवन और परलोक दोनों की भलाई प्रदान की गई है, और जो नम्रता से वंचित हो गया है, वह इस सांसारिक जीवन और परलोक की अच्छाई से वंचित हो गया है। (इस परंपरा को *अब्दुर रहमान बिन अबी बक्र अल-मलीकी के अधिकार पर* हदीस *संग्रह अहमद और* अल-अकीली किताब अल-दुअफा में वर्णित किया गया है)

ان الله ليعطي على الرفق ما لا يعطي على الخرق واذا احب الله عبدا اعطاه
الرفق ما من اهل بيت يحرمون الرفق الا حرموا محب الله تعالى

"भगवान नम्रता और दयालुता (रिफक) के [मानव प्रदर्शन] के साथ इतना कुछ देता *है* कि वह अज्ञानता और कठोरता के [मानवीय प्रदर्शन] के साथ नहीं देता है। जब परमेश्वर किसी सेवक (मनुष्य) से प्रेम करता है, तो वह ऐसी एक नम्रता प्रदान करता है; और एक परिवार के लोग जो नम्रता से रहित हैं, वे भी परमेश्वर के प्रेम से वंचित हो जाते हैं। (इस परंपरा का वर्णन जरीर के अधिकार पर *हदीस* संग्रह *तबरानी कबीर* में किया गया है।

ان الله رفيق يحب الرفق ويعطي عليه ما لا يعطي على العنف

"ईश्वर कोमल और दयालु है, वह नम्रता से प्यार करता है और नम्रता पर इतना कुछ देता है कि वह कठोरता के साथ नहीं देता है। (इस परंपरा को *आयशा के अधिकार पर हदीस संग्रह* सहीह मुस्लिम में वर्णित किया गया है)

يا عائشة ارفقي فان الله اذا اراد باهل بيت كرامة دلهم على باب الرفق

"हे आयशा! नम्रता अपनाएं क्योंकि जब भगवान एक घर (एक व्यक्ति या एक परिवार) का सम्मान करने का इरादा रखते हैं, तो वह उन्हें नम्रता का मार्ग दिखाते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अहमद* आयशा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

من يحرم الرفق يحرم الخير كله

"जो सज्जनता से वंचित है, वह हर उस चीज से वंचित है जो अच्छी है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह मुस्लिम जरीर के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

ايما والي ولي فرفق ولا رفق الله تعالى به يوم القيمة

"जो एक राजनीतिक अधिकारी बन गया और आम जनता के साथ दयालुता से व्यवहार किया, भगवान न्याय के दिन ऐसे व्यक्ति के साथ दयालुता से व्यवहार करेंगे। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* आयशा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

الرفق يمن والخرق شؤم

"नम्रता एक जबरदस्त आशीर्वाद है और कठोरता एक अपशकुन है [जो केवल बुरे परिणाम लाता है]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *अब्दुल्ला बिन मसूद के अधिकार पर* तबरानी अवसत [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

ईर्ष्या, इसकी वास्तविकता और इसके इलाज के साधनों की निंदा

ईर्ष्या द्वेष और शत्रुता का परिणाम है और आंतरिक बुराइयों (नकारात्मक लक्षणों, प्रवृत्तियों और स्वभावों) के एक ही परिवार से संबंधित है। इसके बजाय, यह कहा जा सकता है कि ईर्ष्या द्वेष की एक शाखा है जो स्वयं क्रोध का एक घटक (परिणाम) है। ईर्ष्या से निकलने वाली इतनी शाखाएं हैं जिन्हें गिना नहीं जा सकता। ईर्ष्या की निंदा में कई [भविष्यवाणी] परंपराएं हैं। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

الحسد ياكل الحسنات كما تاكل النار الحطب

"ईर्ष्या अच्छे कर्मों को उसी तरह खा जाती है जैसे आग लकड़ी को भस्म कर देती है (अर्थात, किसी के लिए ईर्ष्या करने के बाद दिव्य पूजा, दान, लोगों की सेवा आदि जैसे अच्छे पुण्य कर्मों में कुछ भी नहीं बचता है)। (इस परंपरा को *हदीस* संग्रह अबू *दाऊद में* अबू हुरैरा के अधिकार पर वर्णित किया गया है [भगवान उससे प्रसन्न हों] और *इब्ने माजा* अनस के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक भविष्यसूचक कथन में, ईर्ष्या और उसके परिणामों और कारणों को मना किया गया है। यह कहता है:

لا تحاسدوا ولا تقاطعوا ولا تباغضوا ولا تدابروا وكونوا عباد الله اخوانا

"आपसी ईर्ष्या मत करो, एक-दूसरे से मिलना बंद मत करो [छोटी-छोटी बातों या गलतफहमियों के कारण रिश्तेदारी या दोस्ती के रिश्ते तोड़कर], आपसी दुश्मनी मत करो, एक दूसरे से मुंह मत मोड़ो, और हे परमेश्वर के सेवकों! एक दूसरे के लिए भाई [और बहन] बनो!" (इस परंपरा को *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम में वर्णित किया गया है*)

ثلاث لا ينجو منهن احد الظن والطيرة والحسد وساحدثكم بالمخرج من
ذلك اذا ظننت فلا تحقق واذا تطيرت فامض واذا حسدت فلا تبغ

"तीन चीजें हैं जिनसे कोई भी वंचित नहीं है: अनुमान, दूसरों के बारे में बुरे विचार और ईर्ष्या। मैं आपको इनसे छुटकारा पाने का तरीका बताऊंगा। जब आपके दिल में कोई अनुमान आता है तो उसे सही मत समझो, जब आपके दिल में बुरे विचार आते हैं तो अपने आप को अपने काम में व्यस्त रखें [उस पर ध्यान दिए बिना], जब ईर्ष्या पैदा हो तो उसकी कामना न करें (यानी, ईर्ष्यालु विचारों का फल)"। (इस परंपरा को *हदीस* संग्रह *इब्ने अबी अल-दुनिया में* अबू हुरैरा के अधिकार पर वर्णित किया गया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आगे कहा:

انه سيصيب امتي داء الامم قالوا وما داء الامم قال الاشر والبطر والتكاثر والتنا
فس في الدنيا والتباعد والتحاسد حتى يكون البغي ثم الهرج

उन्होंने कहा, 'मेरा देश (*उम्मा)* जल्द ही अन्य देशों की बीमारी से संक्रमित हो जाएगा। साथियों ने पूछा: "राष्ट्रों की बीमारी क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया: "अहंकार, ऐश्वर्य की अभिव्यक्ति, सांसारिक साधनों (धन) की प्राप्ति में आपसी प्रतिस्पर्धा, आपसी शत्रुता, आपसी ईर्ष्या, [ये सब] इस हद तक कि विद्रोह होगा [पहले] फिर उथल-पुथल फैल जाएगी"। (इस परंपरा को *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अल-दुनिया* और *तबरनी में* अबू हुरैरा के अधिकार पर वर्णित किया गया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

ستة يدخلون النار قبل الحساب بسنة قيل يا رسول الله من هم قال الامراء
بالجور والعرب بالعصبية والدهاقين بالتكبر والتجار بالخيانة واهل
الرستاق بالجهالة والعلماء بالحسد

"छह प्रकार के लोग गणना [और न्याय के दिन की जवाबदेही] से एक साल पहले नरक में प्रवेश करेंगे"। यह पूछा गया था: "हे ईश्वर के दूत! वे लोग कौन हैं?" पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने जवाब दिया: "उत्पीड़न के कारण राजनीतिक रूप से शक्तिशाली, राष्ट्रवादी पूर्वाग्रह वाले नस्लवाद के कारण अरब ('*अस्बियाह*) (हालांकि अरबों को पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) द्वारा मानवता को संप्रेषित इस ईश्वरीय आदेश में एक मामला बनाया गया है) इस परंपरा का तात्पर्य सभी पर लागू होता है, अर्थात, किसी भी प्रकार का नस्लवाद, जो किसी भी नस्लीय, जातीय और राष्ट्रीय समूह के लोगों द्वारा किया जाता है, उन्हें नरक द्वारा सन्निहित ईश्वरीय अरुचि की ओर ले जाता है), अहंकार के कारण किसान, बेईमानी के कारण व्यापारी, अज्ञानता के कारण ग्रामीण, और ईर्ष्या के कारण धार्मिक विद्वान। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अल-दयालामी* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यह वर्णित किया गया है कि जब पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ईश्वर के साथ बातचीत करने के लिए सिनाई पर्वत पर गए, तो उन्होंने एक व्यक्ति को दिव्य सिंहासन की छाया में देखा। उसने उस मनुष्य से ईर्ष्या की [परमेश्वर के सामने उच्च पद और हैसियत] और परमेश्वर से विनती की कि वह उसे अपना नाम बताए। परमेश्वर ने कहा, "तुम उसके नाम का क्या करोगे, इसके बदले हम तुम्हें उसके कामों के बारे में बताएंगे। वह किसी से ईर्ष्या नहीं करता था, अपने माता-पिता की अवज्ञा नहीं करता था, और कोई किस्सा-कहानी नहीं करता था (लोगों के मामलों को प्रसारित करना जिनके बारे में वे बात नहीं करना चाहते हैं या जाना नहीं चाहते हैं, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, दूसरों को या तो अनजाने में या जानबूझकर दुर्भावनापूर्ण इरादे से व्यक्त करते थे)। पैगंबर जकर्याह (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) ने कहा कि भगवान ने कहा है: "एक ईर्ष्यालु व्यक्ति मेरे आशीर्वाद का दुश्मन है, मेरे निर्णय पर क्रोधित है, और मेरे वितरण से नाखुश है [ईश्वरीय ज्ञान से दिव्य उदारता के सभी सृष्टिओं के भगवान, पालनकर्ता और संरक्षक के रूप में पूरी मानवता के लिए; भगवान के वितरण के साथ नाराजगी और क्रोध वास्तव में साथी मनुष्यों के साथ ईर्ष्या का मतलब है]"।

यह ज्ञात होना चाहिए कि ईर्ष्या का अभ्यास [दिव्य] आशीर्वाद और ईश्वरीय बंदोबस्ती के लिए किया जाता है। जब परमेश्वर किसी दास को पुरस्कृत करता है, तो दूसरे व्यक्ति के पास उसके संबंध में दो अवस्थाएँ होती हैं। सबसे पहले, व्यक्ति उस आशीर्वाद को नापसंद करता है और उसके पतन की इच्छा रखता है। यह ईर्ष्या की स्थिति है। इससे, ईर्ष्या की परिभाषा एक आशीर्वाद को नापसंद करना है [किसी अन्य व्यक्ति पर जो इससे संपन्न हो जाता है] और उसके पतन की इच्छा करना। दूसरे, कोई न तो इसके पतन की इच्छा रखता है और न ही इसकी निरंतरता पर आपत्ति करता है [किसी अन्य व्यक्ति में जो इससे संपन्न है] बल्कि वह अपने लिए भी इसे हासिल करना चाहता है। इसे "*घिब्ता" कहा जाता है* या अपने लिए एक आशीर्वाद की इच्छा करना जो किसी अन्य व्यक्ति के पास है [दूसरे व्यक्ति से इसके पतन या हटाने की इच्छा किए बिना। यह वास्तव में ईश्वरीय कानून में अनुमेय है]। ईर्ष्या सभी परिस्थितियों में निषिद्ध है, सिवाय इसके कि जब यह एक दुष्ट व्यक्ति को प्रदान की जाती है जो इसका उपयोग अराजकता और उथल-पुथल फैलाने के लिए करता है, लोगों के बीच कलह को बढ़ावा देता है और उन्हें नुकसान पहुंचाता है। इस तरह के [दुरुपयोग] एक आशीर्वाद पर नापसंदगी व्यक्त करना और उसके पतन की इच्छा करना सही है क्योंकि इस मामले में, इसके पतन के लिए आपकी नापसंदगी और इच्छा इसलिए नहीं है क्योंकि ऐसी चीज एक आशीर्वाद है, बल्कि ऐसा इसलिए है क्योंकि इसका उपयोग अराजकता और उथल-पुथल के साधन के रूप में किया गया है। अगर अराजकता और उथल-पुथल का डर नहीं होगा, तो कोई उनसे दुखी नहीं होगा और न ही कोई यह चाहेगा कि वे दूर हो जाएं। [किसी अन्य व्यक्ति पर] आशीष को बुरा मानने का अर्थ है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर के निर्णय को बुरा मानता है क्योंकि उसने कुछ चीजों में दूसरों की तुलना में अपने कुछ सेवकों को प्राथमिकता दी है। यह एक ऐसी वास्तविकता है कि इसे घृणा और नापसंद के बहाने के आधार के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है और न ही ईश्वरीय कानून यह अनुमति देता है कि कोई व्यक्ति ईश्वरीय आज्ञाओं में हस्तक्षेप करता है और अपनी इच्छाओं की कसौटी पर उनका न्याय करता है। किसी अन्य आस्तिक को आराम में न देख पाने के पाप से बड़ा पाप क्या हो सकता है, जिसका धन आपकी आंखों में कांटे के समान है, भले ही वह आपको नुकसान न पहुंचाए। कुरान में ईर्ष्या की कड़ी निंदा है:

إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا۟ بِهَا

"यदि आप अच्छी स्थिति में हैं, तो यह उनके लिए दुःख का कारण बन जाता है और यदि आप पीड़ा की स्थिति में हैं, तो यह उनके लिए सुखद है। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 120)

यदि किसी मुसलमान के पास एक निश्चित आशीर्वाद है जो ईश्वरीय कानून में प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है जैसे कि ईश्वर (*ईमान*), प्रार्थना (*सलात),* अनिवार्य दान (जकात), आदि, तो इन आशीर्वादों की प्राप्ति की इच्छा करना अनिवार्य है। उनकी इच्छा न करने का अर्थ है कि कोई व्यक्ति पाप के लिए सहमत है [ईश्वरीय पूजा के इन अनिवार्य कार्यों को नहीं करने का] जो निषिद्ध है (*हराम) /* यदि ये आशीर्वाद उत्कृष्टता (*फदा-इल)* से संबंधित हैं जैसे कि अच्छे [धर्मार्थ] कर्मों, अति-दान आदि पर धन खर्च करना, उनमें प्रतिस्पर्धा और उनकी इच्छा करना अत्यधिक प्रशंसनीय है। यदि कोई ऐसा आशीर्वाद है जिससे लाभ उठाने की अनुमति है, तो उसमें प्रतिस्पर्धा और उसकी इच्छा भी अनुमेय है। अनुमेयता का औचित्य यह है कि कोई समानता चाहता है और आशीर्वाद को बुरा माने बिना उस आशीर्वाद में भाग लेता है। इसलिए, यहाँ दो चीजें हैं: पहला, उस व्यक्ति का सम्मान करना जिसके पास वह आशीर्वाद है [और उसके पतन की इच्छा नहीं करना]; दूसरा, वही इच्छा रखने वाला व्यक्ति उसमें पीछे रह गया है। हालांकि, [केवल] अनुमेय चीजों पर दूसरों के साथ समानता और प्रतिस्पर्धा की इच्छा करना, किसी की उत्कृष्टता में कमी का कारण बनता है क्योंकि [भले ही यह अनुमेय हो] इस प्रकार की चीजें भगवान (*तवाक्कुल) में विश्वास के खिलाफ हैं* और ईश्वरीय आदेश (राडा) को स्वीकार करना [जो उच्च आध्यात्मिक अवस्थाएं हैं] और उच्च आध्यात्मिक डिग्री के मार्ग में बाधाएं हैं, हालांकि वे भगवान की अवज्ञा के बराबर नहीं हैं।

ईर्ष्या की डिग्री: ईर्ष्या की डिग्री [उनकी गंभीरता और अपराध के संदर्भ में] होती है। पहली डिग्री यह है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से आशीर्वाद के पतन की इच्छा रखता है, भले ही वह उस आशीर्वाद को [स्वयं के लिए] प्राप्त न करे। ईर्ष्या के इस स्तर में केवल सबसे बुरे लोग ही शामिल होते हैं। ईर्ष्या की दूसरी डिग्री यह है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से आशीर्वाद के पतन की इच्छा रखता है ताकि वह अपने लिए उस आशीर्वाद को प्राप्त कर सके, उदाहरण के लिए, एक सुंदर जीवनसाथी, एक शानदार घर, महान प्रसिद्धि और सामाजिक स्थिति। तीसरी डिग्री यह है कि कोई व्यक्ति किसी विशेष आशीर्वाद की इच्छा नहीं करता है, बल्कि एक समान आशीर्वाद चाहता है जो किसी अन्य व्यक्ति के पास है। इसलिए, जब कोई इसे प्राप्त करने में विफल रहता है, तो वह दूसरे व्यक्ति से उसके पतन की इच्छा करना शुरू कर देता है ताकि दोनों समान हो जाएं। चौथी डिग्री यह है कि कोई एक आशीर्वाद चाहता है जो दूसरे व्यक्ति के पास है, लेकिन इसे प्राप्त करने में विफल रहने की स्थिति में, किसी अन्य व्यक्ति से इसके पतन की इच्छा नहीं करता है। यह अंतिम डिग्री क्षम्य है यदि आशीर्वाद सांसारिक मामलों से संबंधित है और यदि यह आध्यात्मिक मामलों से संबंधित है तो प्रशंसनीय है। थर्ड डिग्री में अच्छाई और बुराई दोनों पहलू हैं। दूसरी डिग्री तीसरी डिग्री से हल्की होती है। पहली डिग्री सभी परिस्थितियों में निंदनीय है। दूसरे से आशीर्वाद के पतन की इच्छा न करना अच्छा है, लेकिन यह अच्छा नहीं है कि कोई दूसरे के पास मौजूद आशीर्वाद का मालिक बनना चाहता है।

ईर्ष्या के कारण

यद्यपि ईर्ष्या के कई कारण हैं लेकिन कुल मिलाकर, उन्हें सात कारणों के आधार पर माना जा सकता है: पहला, दुश्मनी; दूसरा, सम्मान की इच्छा; तीसरा, अहंकार; चौथा, आश्चर्य; पांचवां, अपने उद्देश्यों को खोने का डर; छठा, शक्ति (नियंत्रण) और प्रसिद्धि का प्यार; सातवां, आंतरिक बुराई और आत्मा की कंजूसी। कभी-कभी, कोई दूसरे पर आशीर्वाद नहीं देखना चाहता क्योंकि दूसरा व्यक्ति उसका दुश्मन होता है और कोई भी दुश्मन को आराम से देखना पसंद नहीं करता है। कभी-कभी, अपने अभिमान और अहंकार के कारण आशीर्वाद से संपन्न लोगों की आत्म-प्रशंसा और आत्म-प्रशंसा, उन लोगों के लिए असहनीय हो जाती है जो नहीं चाहते कि दूसरे का एक पर कोई भेद हो, इसलिए, व्यक्ति को ईर्ष्या होने लगती है ताकि दूसरे व्यक्ति से आशीर्वाद हटा दिया जाए ताकि वे दोनों समान हो जाएं। कभी-कभी, ईर्ष्यालु व्यक्ति के हृदय में दूसरे के प्रति अहंकार होता है, लेकिन कोई इसे व्यक्त नहीं कर सकता है क्योंकि किसी अन्य व्यक्ति के पास कुछ भेद (आशीष) है। कभी-कभी, आशीर्वाद इतना महान होता है, और पद इतना ऊंचा होता है [किसी अन्य व्यक्ति के लिए] कि उस आशीर्वाद और पद को प्राप्त करना आश्चर्यचकित होने का एक कारण बन जाता है। कभी-कभी, यह डर होता है कि किसी अन्य व्यक्ति के आशीर्वाद के कारण कोई अन्य व्यक्ति उसके उद्देश्यों के रास्ते में बाधा बन जाएगा। कभी-कभी, नियंत्रण और शक्ति प्राप्त करने में विफलता के कारण व्यक्ति दूसरों से ईर्ष्या करता है। कभी-कभी, इनमें से कोई भी कारण नहीं होता है, लेकिन अपनी आंतरिक बुराई और आत्मा की कंजूसी के कारण व्यक्ति दूसरों से ईर्ष्या करता है। अब इनमें से प्रत्येक कारण [ईर्ष्या के] के लिए विवरण सुनें:

पहला कारण - शत्रुता और विद्वेष: ईर्ष्या का यह कारण अन्य कारणों की तुलना में अधिक कठोर होता है। हर कोई जो अपने उद्देश्यों में पीड़ित या बाधाओं का कारण बना है, दुख पैदा करने वाले या बाधाओं को रखने वाले व्यक्ति का विरोधी बन जाता है, ऐसे व्यक्ति को बुरा मानता है, और द्वेष और क्रोध व्यक्ति को बदला लेने के लिए प्रेरित करता है। यदि कोई बदला लेने में सक्षम नहीं है, तो वह चाहता है कि दूसरे लोग बदला लें [उस व्यक्ति से जो किसी को पीड़ा देता है या उसके रास्ते में बाधा डालता है]। यह इस हद तक है कि यदि शत्रु चिंताओं और परेशानियों से घिरा हुआ है, तो वह इसे अपने उच्च पद और ईश्वर के साथ निकटता के प्रतीक के रूप में मानता है, और यदि शत्रु किसी की इच्छा के विरुद्ध आशीर्वाद या कुछ [उच्च सामाजिक] स्थिति प्राप्त करता है, तो वह इसे ईश्वरीय दरबार में अस्वीकृत होने के रूप में मानता है जो किसी की विफलता और शत्रु की जीत का कारण बनता है। इसका नतीजा यह है कि ईर्ष्या और दुश्मनी एक दूसरे के लिए आवश्यक हैं और साथ-साथ चलते हैं। ईश्वर का भय और सावधानी की मांग है कि व्यक्ति को इस तरह की ईर्ष्या को दिल में जगह नहीं बनने देनी चाहिए और [हमेशा] इसे बुरा मानना चाहिए। ईर्ष्या एक घातक [आंतरिक] बीमारी [आत्मा की] है। भगवान ने कहा:

إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا۟ بِهَا ۖ

"यदि आप अच्छी स्थिति में हैं, तो यह उनके लिए दुःख का कारण है; और यदि तुम पर कोई विपत्ति आती है, तो वे उस से प्रसन्न होते हैं। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 120)

وَدُّواْ مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ ٱلْبَغْضَآءُ مِنْ أَفْوَٰهِهِمْ وَمَا تُخْفِى صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ

"वे आपके लिए नुकसान चाहते हैं; उनके मुंह से शत्रुता स्पष्ट है [वे जो कहते हैं] और जो कुछ उन्होंने अपने दिलों में छिपाया है वह उससे कहीं अधिक है। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 118)

ईर्ष्या से पैदा हुई दुश्मनी [राष्ट्रों या विशिष्टता और शक्ति रखने वाले लोगों के समूहों के स्तर पर], आमतौर पर रक्तपात, युद्ध और हत्याओं के साथ समाप्त होती है। किसी का पूरा जीवन उस व्यक्ति से आशीर्वाद के पतन की साजिश रचने में व्यतीत होता है जो ईर्ष्या का लक्ष्य होता है क्योंकि वह कथा-कथन, अपमान, चुगली आदि जैसी बुराइयों में लिप्त होता है।

दूसरा कारण - सम्मान या प्रतिष्ठा की इच्छा: कभी-कभी, ईर्ष्या किसी ऐसे व्यक्ति के सम्मान या विशिष्टता को स्वीकार नहीं करने के कारण होती है [कुछ विशिष्ट गुण, क्षमता या कौशल के कारण] जो किसी के बराबर माना जाता है। दूसरे शब्दों में, एक ईर्ष्यालु व्यक्ति नहीं चाहता कि कोई अन्य व्यक्ति कुछ आशीष प्राप्त करने के बाद एक पर भेद व्यक्त करे। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति जो [सामाजिक प्रतिष्ठा में] उसके बराबर है, उसे उच्च पद या धन या ज्ञान मिलता है, तो ईर्ष्यालु डर है कि ऐसा व्यक्ति किसी पर गर्व और अहंकार व्यक्त करना शुरू कर सकता है, भले ही वह अहंकारी नहीं होना चाहता है, वह यह भी नहीं चाहता कि दूसरा व्यक्ति उसके प्रति अहंकारी हो। एक दूसरे व्यक्ति की समानता के लिए सहमत है लेकिन अपनी श्रेष्ठता से सहमत नहीं है।

तीसरा कारण – अहंकार: कभी-कभी, ईर्ष्या का कारण यह होता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों को अपमानित, नीच और हीन मानता है और चाहता है कि ऐसा व्यक्ति उसकी सेवा करते समय उसके नियंत्रण में रहे और अपनी आज्ञा का पालन करने के लिए सक्रिय रूप से तैयार रहे। यदि किसी भी संयोग से, दूसरे व्यक्ति को आशीर्वाद मिलता है, तो ईर्ष्यालु इस डर से परेशान हो जाता है कि आशीर्वाद के कारण दूसरा व्यक्ति बदल सकता है, एक की निंदा करना शुरू कर सकता है, किसी की आज्ञाओं का पालन करने से इनकार कर सकता है, एक के साथ समानता का दावा करता है, या एक सोच पर अपनी श्रेष्ठता की घोषणा करता है, "अभी मैं दूसरे के प्रति अहंकारी हूं लेकिन दूसरा अब मेरे प्रति अहंकारी हो सकता है"। यह डर ईर्ष्या करने के लिए मजबूर करता है। ये पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के प्रति [मक्का के] अविश्वासियों की ईर्ष्या के बहुत ही कारण थे, अर्थात, सम्मान और अहंकार की इच्छा। यह उनकी कहावत थी कि यह अनाथ लड़का हमारा नेता कैसे बन सकता है और यह कैसे संभव है कि वे उसके प्रति समर्पण करें [ईश्वर के दूत के रूप में अपने आध्यात्मिक अधिकार

में पूरी मानवता के लिए जो अनाथता और गरीबी में बहुत विनम्र मूल थी]। कुरान ने उनके विचारों को इन शब्दों में प्रतिबिंबित किया:

وَقَالُوا۟ لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ ٱلْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ

"यह कुरान इन दोनों शहरों के किसी महान व्यक्ति पर क्यों नहीं आया?" (कुरान, अध्याय 43, श्लोक 31)

दूसरे शब्दों में, "यदि आप एक प्रमुख व्यक्ति थे तो हमें आपका अनुसरण करने में कोई आपत्ति नहीं थी"। इसी तरह, कुरैश [जो व्यावहारिक रूप से अरब पर शासन करता था] यह बहुत तिरस्कार के साथ कहा करता था:

أَهَٰٓؤُلَآءِ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَيْهِم مِّنۢ بَيْنِنَآ ۗ أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِأَعْلَمَ بِٱلشَّٰكِرِينَ

"क्या ये [विनम्र, नीच, गरीब] लोग (यानी, शुरुआती मुसलमान बुतपरस्त मक्का में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं) जिन्हें भगवान ने अपना आशीर्वाद दिया है और अन्य सभी पर श्रेष्ठ बनाया है? क्या ऐसा नहीं है कि परमेश्वर जानता है कि उसके कृतज्ञ दास कौन हैं? (अर्थात्, यह परमेश्वर का निर्णय है जिसे वह अपनी आत्मिक आशीषें प्रदान करने के लिए चुनता है, और परमेश्वर की आशीषों को भौतिक अर्थों में धन और सामर्थ की अधिकता के द्वारा आंका नहीं जा सकता है। इसके बजाय, परमेश्वर जानता है कि उसके आभारी सेवक कौन हैं और यह वे हैं जिन्हें परमेश्वर ने ईश्वरीय अंतरंगता, निकटता, पूजा, सत्य के लिए मार्गदर्शन और एक आंतरिक आध्यात्मिक रोशनी के आध्यात्मिक आशीर्वाद के लिए चुना है, भले ही उनकी स्पष्ट रूप से कम सामाजिक स्थिति, किसी भी राजनीतिक शक्ति की कमी हो, और भौतिक गरीबी)। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 53)

चौथा कारण – आश्चर्य : किसी व्यक्ति को उच्च पद और उच्च पद पर या अच्छी स्थिति में देखकर आश्चर्यचकित होना भी ईर्ष्या का कारण बन सकता है । कुरान कहते हैं:

وَلَئِنْ أَطَعْتُم بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَٰسِرُونَ

"यदि आप अपने जैसे इंसान की शिक्षाओं का पालन करना शुरू करते हैं, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप नुकसान में होंगे। (कुरान, अध्याय 23, श्लोक 34)

पांचवां कारण - किसी के उद्देश्यों को खोने का डर: यह केवल उन लोगों के लिए विशिष्ट है जो एक एकल उद्देश्य के लिए प्रयास कर रहे हैं। इसलिए, एक व्यक्ति ऐसे हर आशीर्वाद पर दूसरे से ईर्ष्या करता

है जो किसी के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक हो सकता है। [का उदाहरण] इस प्रकार की ईर्ष्या में दो भाइयों (या भाई-बहन) को अपने माता-पिता के दिलों को जीतने के लिए एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या करना शामिल है, क्योंकि संपत्ति और सम्मान की प्राप्ति माता-पिता की स्वीकृति पर निर्भर करती है और हर कोई उस संपत्ति का एकमात्र मालिक बनने के लिए उनकी स्वीकृति पर जीत हासिल करना चाहता है। एक ही शिक्षक के दो छात्रों की यही स्थिति है क्योंकि शिक्षक की अधिकतम सेवा करके [ज्ञान और शिक्षा के रूप में] अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए दो छात्रों में से प्रत्येक का प्रयास है। एक राजा (या राजनीतिक सत्ता) के सहयोगियों और साथियों की आपसी नफरत और दुश्मनी इसलिए है क्योंकि हर कोई राजा के साथ निकटता प्राप्त करना चाहता है, जो प्रसिद्धि और धन प्राप्त करने का साधन है। एक ही शहर के प्रचारक एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं क्योंकि उनमें से प्रत्येक अकेले लोकप्रिय होना चाहता है ताकि कोई अधिक से अधिक धन एकत्र कर सके।

छठा कारण – प्रसिद्धि और शक्ति की इच्छा: कभी-कभी, ईर्ष्या प्रसिद्धि और शक्ति की इच्छा के कारण होती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई किसी कला या कौशल में अद्वितीय है और चाहता है कि कोई और समान विशेषज्ञता प्राप्त न करे ताकि वह लोकप्रिय बना रहे, तो लोग उसकी प्रशंसा करते हैं और उसकी चापलूसी करने के लिए मजबूर होते हैं, उसे दुनिया में एक तरह का अनूठा मानते हैं, और एक बड़ी उपाधि देते हैं। ऐसे व्यक्ति का लोगों के बीच प्रशंसा और लोकप्रियता अर्जित करने के अलावा कोई भौतिक उद्देश्य नहीं है। दूसरे शब्दों में, कोई व्यक्ति अपनी कला, कौशल या विशेषज्ञता के माध्यम से धन एकत्र नहीं करना चाहता है या किसी अन्य उद्देश्य को प्राप्त नहीं करना चाहता है। इस प्रकार, ऐसा व्यक्ति आंतरिक रूप से चापलूसी पसंद करता है और चाहता है कि लोग उस कौशल में एक पर निर्भर रहें। यदि कोई अन्य व्यक्ति उसी कौशल में कुछ विशेषज्ञता विकसित करता है, तो वह ईर्ष्या करता है और दूसरे व्यक्ति की प्रसिद्धि और समानता [उसी कौशल में] दर्दनाक पाता है और दूसरे व्यक्ति को मरने की इच्छा करता है और उस आशीर्वाद के पतन की इच्छा करता है जिसे किसी और ने भाग लिया था और उसमें अपनी विशिष्टता को समाप्त कर दिया था। उदाहरण के लिए, वीरता, ज्ञान, पूजा, कौशल, सौंदर्य, धन आदि यदि किसी के पास है, तो वह गर्व का कारण है और यदि कोई उनका एकमात्र स्वामी है तो उसके अभिमान की कोई सीमा नहीं है। ईर्ष्या का कारण [इस मामले में] सम्मान की इच्छा, अहंकार, या किसी के उद्देश्य को खोने का डर शामिल नहीं है, इसके बजाय, यह सिर्फ इच्छा है कि किसी कला या कौशल में किसी की विशिष्टता एक के साथ रहती है [किसी और को इसका हिस्सा नहीं मिलता है]।

सातवां कारण – आंतरिक बुराई या स्वयं की भ्रष्टता: निचले स्व की भ्रष्टता और धर्म के कर्मों के बारे में हृदय की कंजूसी ईर्ष्या के बड़े कारण हैं। आपको ऐसे लोग आसानी से मिल जाएंगे जो सत्ता के इच्छुक नहीं हैं, अहंकार नहीं रखते हैं, धन की तलाश नहीं करते हैं, अपने उद्देश्यों को खोने का डर नहीं रखते हैं। इसके बावजूद, यदि किसी अन्य व्यक्ति की स्थिति का उल्लेख उन्हें किया जाता है या उन्हें पता चलता है कि कोई अन्य व्यक्ति एक निश्चित ईश्वरीय वरदान का आनंद ले रहा है, तो सांप उनके दिलों पर लुढ़क

जाएंगे (यानी, वे इससे बिल्कुल नफरत करेंगे)। जब उन्हें बताया जाता है कि एक निश्चित व्यक्ति आजकल चिंताओं से घिरा हुआ है और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल रहा है या आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहा है, तो यह सुनकर, आंतरिक भ्रष्टता के ऐसे लोग अपने दिल की गहराई से प्रसन्न होंगे। ऐसे लोग चाहते हैं कि कोई भी सफल न हो, और वे परमेश्वर के पुरस्कारों को दूसरों पर बरसते हुए देखकर इतने परेशान और परेशान होते हैं मानो कि दूसरों को उनके खजाने से छीनने के बाद ये पुरस्कार दिए गए हों। ऐसा कहा जाता है कि "*बखील*" (कंजूस) एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी संपत्ति में कंजूस है और "*शाही*" (संकुचित दिल वाला) एक ऐसा व्यक्ति है जो दूसरे लोगों की संपत्ति में कंजूस है (यानी, ऐसा व्यक्ति दूसरों के लिए अच्छा नहीं चाहता है, भले ही वह अपनी जेब से कुछ भी खर्च न कर रहा हो)। ऐसे लोग ऐसे होते हैं मानो वे परमेश्वर की आशीषों में कंजूस हों और उन लोगों से ईर्ष्या करते हों जिनके पास न तो उनसे कोई शत्रुता है और न ही कोई संपर्क है। इसका प्रत्यक्ष कारण और कुछ नहीं बल्कि [निचले] स्वयं (नफ्स) की भ्रष्टता है। यह आंतरिक भ्रष्टता की प्रतिक्रिया है जो किसी की दूसरी प्रकृति बन गई है। इसका इलाज बहुत मुश्किल है क्योंकि इस कारण को छोड़कर ईर्ष्या के अन्य सभी कारण अस्थायी हैं, जिन्हें मिटाया नहीं जा सकता क्योंकि यह एक अंतर्निहित भ्रष्टता है। यह किसी अस्थायी कारण से नहीं है, इसलिए इसका उन्मूलन मुश्किल है।

ये ईर्ष्या पैदा करने वाले कुछ कारण हैं। कभी-कभी, ये सभी कारण एक ही व्यक्ति में एक साथ पाए जाते हैं, ऐसे में ईर्ष्या बड़ी होती है और इतनी शक्ति से प्रेरित होती है कि प्रयासों और इच्छा के बावजूद, दिल में छिपाया नहीं जा सकता है, इसके बजाय व्यक्ति खुली दुश्मनी का सहारा लेता है। अक्सर, यह उन लोगों की स्थिति होती है जो आंतरिक रूप से ईर्ष्यालु होते हैं।

विचार-विमर्श करने पर, यह स्पष्ट है कि ईर्ष्या के ये सभी कारण दुनिया के लिए प्रेम (सांसारिकता या जीवन पर भौतिक दृष्टिकोण) के कारण हैं क्योंकि दुनिया ही एकमात्र ऐसी चीज है जो उन लोगों के लिए पर्याप्त नहीं है जो इससे प्यार करते हैं - चाहे वह कितना भी प्रचुर क्यों न हो, वे इसकी कमी के बारे में शिकायत करते हैं। इसके विपरीत, परलोक में कोई कमी नहीं है, परलोक से संबंधित चीजों में बहुत क्षमता और विस्तार है। परलोक की समानता ज्ञान की तरह है क्योंकि इसका चक्र बिना किसी सीमा के चौड़ा है। यदि लाखों लोग किसी निश्चित चीज़ का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, तो यह थोड़ी सी भी कमी नहीं करता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति इसका पूरा लाभ उठाता है और इसका पूरा आनंद लेता है। इसलिए, जो ईश्वर की ज्ञान-विज्ञान (मारिफा या दिव्य ज्ञान और अंतरंगता) और दिव्य गुणों, स्वर्गदूतों, भविष्यद्वक्ताओं, आकाश और पृथ्वी के प्रभुत्व का ज्ञान प्राप्त करता है, वह इस ज्ञान और ज्ञान में किसी और से ईर्ष्या नहीं करता है – यदि कोई अन्य इसे प्राप्त करता है, तो [अपने स्वयं के ज्ञान और ज्ञान में] कोई कमी नहीं होती है - चाहे कितने भी लोग ज्ञानवादी बन जाएं। इसके बजाय, सच्चे ज्ञानवादियों की स्थिति ऐसी है कि वे ज्ञानवादियों की बढ़ती संख्या के साथ बढ़ते आध्यात्मिक सुख का अनुभव करते हैं । इसलिए, ईश्वरीय मार्ग (दीन) के सच्चे विद्वानों के बीच कभी भी कोई ईर्ष्या नहीं होती है क्योंकि उनका उद्देश्य ईश्वर की ज्ञान-

विज्ञान है [और दिव्य ज्ञान, निकटता और अंतरंगता जो इसके साथ आती है जो बदले में उनकी आध्यात्मिक डिग्री को बढ़ाती है], जो तटों के बिना एक अथाह महासागर है और इसमें कोई कमी नहीं है - प्रत्येक गोताखोर अपने स्वयं के प्रयासों के अनुसार अपने तल से मोती निकाल सकता है। वे अपने ज्ञान-ज्ञान के साथ परमेश्वर की अंतरंगता प्राप्त करना चाहते हैं और इसमें भी कोई कमी नहीं है, क्योंकि इसके साथ ऐसा नहीं है, कि कुछ लोग इसे प्राप्त करते हैं और बाकी लोग इससे वंचित रहते हैं। ईश्वर के पास सबसे सुखद आशीर्वाद दिव्य दृष्टि का आशीर्वाद है [जैसा कि इस दुनिया या अगले का कोई अन्य आनंद इसकी तुलना नहीं करता है] - इसके लिए कोई बाधा या प्रतिरोध नहीं होगा - इसके बजाय, सभी लोग [जो इसे प्राप्त करते हैं] समान रूप से दिव्य दृष्टि का आनंद लेंगे, बल्कि लोगों की प्रचुरता के कारण दिव्य दृष्टि का आनंद कई गुना बढ़ जाएगा।

हालांकि, यदि [धार्मिक] विद्वानों का उद्देश्य ज्ञान के माध्यम से धन और प्रसिद्धि प्राप्त करना है, तो वे आवश्यक रूप से एक-दूसरे के खिलाफ ईर्ष्या रखेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि, धन एक भौतिक और भौतिक चीज है - अगर यह एक हाथ में आता है, तो किसी और का हाथ इससे रहित होगा। प्रसिद्धि का अर्थ है दिलों का मालिक बनना - जब किसी व्यक्ति का हृदय एक विद्वान के प्रति सम्मान और भक्ति से भरा होता है, तो वह आवश्यक रूप से दूसरे विद्वान के प्रति सम्मान और भक्ति से दूर हो जाएगा - भले ही किसी के पास अभी भी [दूसरे विद्वान के प्रति] भक्ति हो, यह बहुत अधिक नहीं होगा। यह निश्चित रूप से ईर्ष्या का कारण होगा। ज्ञान और धन में अंतर यह है कि जब तक धन एक हाथ से नहीं जाता, तब तक वह दूसरे हाथ तक नहीं पहुंचता, जबकि, ज्ञान एक विद्वान के दिल में मजबूती से रचा बसा रहता है और शिक्षा और शिक्षण के माध्यम से यह कम नहीं होता है। इसके बजाय, यह बिना कम हुए छात्रों के दिलों में स्थानांतरित हो जाता है। चूंकि, धन और संपत्ति भौतिक चीजें हैं, वे एक निश्चित बिंदु पर समाप्त हो जाते हैं। यदि कोई मनुष्य पूरी पृथ्वी का स्वामी बन जाता है, तो उसके बाद कुछ भी नहीं बचेगा जिसका वह अभी भी मालिक हो सकता है। इसके विपरीत, ज्ञान की कोई सीमा और अंत बिंदु नहीं है, न ही इसे बांधना और सीमित करना संभव है।

इस चर्चा का परिणाम यह है कि जो कोई भी दिव्य वैभव, भव्यता, भव्यता और प्रभुत्व और स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभुत्व में विचार-विमर्श और चिंतन करने के लिए अपने आप को अभ्यस्त करता है, यह चिंतन इतना सुखद और मनोरम हो जाता है कि [इस सांसारिक जीवन का] कोई अन्य आनंद उसकी तुलना नहीं कर सकता है। इसीलिए, किसी को किसी के प्रति कोई ईर्ष्या नहीं होती है, भले ही दूसरा व्यक्ति दिव्य ज्ञान की डिग्री पर एक ही स्तर पर हो। ऐसा क्या है जो उसमें अपनी खुशी को कम कर दे? बिल्कुल कुछ भी नहीं! किसी को उस [विचार-विमर्श और चिंतन के प्रति और भी अधिक लगाव होगा जो बदले में ईश्वर की ज्ञान, निकटता और अंतरंगता की ओर ले जाता है]। जो लोग परमेश्वर के प्रभुत्व के चमत्कारों और वैभव में चिंतन करते हैं, उनके द्वारा अनुभव किया जाने वाला आनंद, उन लोगों की खुशी से अधिक है जो बाहरी आँखों से स्वर्ग के बगीचों, उसके फलों और फूलों को देखते हैं। गूढ़ज्ञानवादी का स्वर्ग भगवान का ज्ञान है।

यह स्वर्ग कभी विलुप्त नहीं होता है। एक ज्ञानवादी हमेशा के लिए अपने हरे-भरे पेड़ों से स्वादिष्ट फल तोड़ता है और इस समृद्ध सुस्वादु पोषण के साथ किसी की आत्मा का पोषण करता है। ये वे फल हैं जिनका वर्णन दिव्य शब्दों में किया गया है:

لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ

"[ऐसे फल जो ईश्वरीय उदारता और उदारता से प्राप्त होते हैं] कभी समाप्त नहीं होंगे और किसी भी तरह से उनसे रोका नहीं जाएगा। (कुरान, अध्याय 56, श्लोक 33)

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ

"इसके फल कम लटकने वाले होंगे [किसी की अत्यधिक संतुष्टि के लिए पूरी आसानी से तोड़ने के लिए तैयार]। (कुरान, अध्याय 69, श्लोक 23)

यदि कोई ज्ञानवादी किसी की बाहरी आँखें बंद कर लेता है, तब भी आत्मा के साथ स्वर्ग को देखने में सक्षम होता है और उसके बगीचों का दौरा करता है। यदि हम बड़ी संख्या में ज्ञानवादियों की मानते हैं, तो उनके बीच आपसी ईर्ष्या का कोई सवाल ही नहीं है। यह दुनिया के जीवन में उनकी स्थिति है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि क्या होगा जब परलोक में पर्दा हटा दिया जाएगा और किसी को प्रिय को देखने का सम्मान प्राप्त होगा। इससे यह ज्ञात होता है कि स्वर्ग में "ईर्ष्या" नामक कोई बुराई नहीं होगी। इससे यह भी ज्ञात होता है कि जो लोग स्वर्ग के निवासी होने जा रहे हैं, वे यहां भी [अपने सांसारिक अस्तित्व में] ईर्ष्या नहीं करते हैं क्योंकि स्वर्ग में न तो किसी प्रकार की कमी या संकुचन है और न ही कोई बाधा है। स्वर्ग ईश्वर की सूक्ति को प्राप्त करने का एक साधन होगा और कोई भी दिव्य ज्ञान के मार्ग में दूसरे के लिए बाधा नहीं बन सकता है। इसलिए, स्वर्ग के लोगों को ईर्ष्या करने की कोई आवश्यकता नहीं है - उन्हें इस दुनिया में या परलोक में ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है - क्योंकि यह एक ऐसा निंदनीय गुण है जो मनुष्य को उच्च के उच्चतम (*'आला 'इलियीन*) से निम्न के निम्नतम (असफल *उस-सफीलीन*) [आध्यात्मिक डिग्री में किसी के सांसारिक जीवन में निहितार्थ और प्रतिध्वनि के साथ] गिरने का कारण बनता है।

इन विवरणों से यह भी सिद्ध होता है कि ईर्ष्या उन उद्देश्यों से संबंधित है जो सीमित हैं - यदि कोई उन्हें प्राप्त करता है, तो दूसरा उनसे वंचित हो जाता है। इसीलिए, तुम देखते हो कि लोग आकाश के [विस्तृत विस्तार] के अलंकरण का आनंद लेने में एक-दूसरे से ईर्ष्या नहीं करते हैं, इसके बजाय वे बगीचों में टहलने में एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं, भले ही बगीचे इस विस्तृत पृथ्वी का एक छोटा सा हिस्सा हैं, और पृथ्वी अपनी पूरी चौड़ाई के साथ आकाश की तुलना में बहुत महत्वहीन और नीच है। चूँकि आकाश इतना चौड़ा

है कि यदि संसार के सभी लोग इसे एक साथ देखना शुरू कर दें, तो यह सभी के लिए पर्याप्त होगा, और प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रेक्षण शक्ति के अनुसार इसका आनंद ले सकता है।

यदि आपके पास सच्ची आंतरिक अंतर्दृष्टि (*बसीराह*) है और आप अपने स्वयं (नफ्स) के प्रति दयालु और उदार हैं, तो आपको उस आशीर्वाद की तलाश करनी चाहिए जिसमें कोई प्रयास और आनंद नहीं है जिसका कोई विलुप्त होना नहीं है, और ऐसा आनंद ईश्वर के अस्तित्व या अस्तित्व (*धत),* [दिव्य] गुणों (*सिफत*) और [दिव्य] कार्यों (*अफल)* के आशीर्वाद (ज्ञान) से संबंधित है). यदि आप न तो भगवान के ज्ञान की इच्छा रखते हैं और न ही इसका स्वाद लेना चाहते हैं या आपकी इच्छा कमजोर है, तो आपको इससे माफ कर दिया जाता है क्योंकि एक गैर-समझदार बच्चे में प्रभुत्व और [राजनीतिक] अधिकार की इच्छा नहीं होती है - उन्हें केवल बड़े वयस्कों द्वारा समझा और सराहा जाता है। इसी तरह, ईश्वर की ज्ञान-विज्ञान की [अपार आध्यात्मिक] खुशी केवल उन लोगों द्वारा समझी जाती है जिनके लिए [कुरान की] आयत के नीचे प्रकट किया गया था:

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ ٱللَّهِ

"वे लोग हैं जो खरीद-फरोख्त के कारण ईश्वरीय स्मरण से विचलित नहीं होते हैं (अर्थात, सांसारिक जीवन में जीने और जीवित रहने के सभी प्रकार के साधन) । (कुरान, अध्याय 24, श्लोक 37)

तीव्र इच्छा (*शॉक*) का चरण इसका स्वाद लेने के बाद आता है। जिसने [भगवान के ज्ञान] का स्वाद भी नहीं चखा है, वह इसका साधक भी नहीं होगा और इसे समझने में भी सक्षम नहीं होगा। ऐसा व्यक्ति अंततः अन्य वंचित आत्माओं के साथ अपने वास्तविक उद्देश्य और परिणामस्वरूप शाश्वत सुख और अनन्त सफलता प्राप्त करने के लिए सांसारिक जीवन के अनमोल अवसर का उपयोग किए बिना अपने वास्तविक मूल और मातृभूमि में खाली हाथ लौटने के कारण अत्यधिक अभाव और हानि के रसातल में गिर जाएगा।

ईर्ष्या को ठीक करने की दवा

ईर्ष्या हृदय की सबसे बड़ी बीमारियों में से एक है और हृदय के रोगों का इलाज ज्ञान और कर्म से ही संभव है। तुम्हारे लिए ईर्ष्या की इस बीमारी के बारे में लाभदायक ज्ञान यह जानना है कि ईर्ष्या इस दुनिया और परलोक दोनों में हानिकारक है, लेकिन यह नुकसान केवल ईर्ष्या को आश्रय देने वाले को दिया जाएगा और उस व्यक्ति [या लोगों के एक सामूहिक समूह] के साथ कुछ भी गलत नहीं होगा जिससे आप ईर्ष्या कर रहे हैं। न तो उसकी दुनिया नष्ट होगी और न ही धर्म, बल्कि ऐसे व्यक्ति को आपकी ईर्ष्या से लाभ

होगा। यदि आप इसे अंतर्दृष्टि से जानते हैं, तो आप न तो अपने स्वयं के दुश्मन (*नफ्स*) होंगे और न ही इसके वास्तविक दुश्मन के दोस्त होंगे और आप निश्चित रूप से ईर्ष्या के जाल में फंसने से बचेंगे।

ईश्वर के लिए किसी के मार्ग को ईर्ष्या का नुकसान: ईश्वर (दीन) के *लिए किसी के मार्ग को ईर्ष्या का नुकसान* यह है कि जब आप परमेश्वर के सेवकों को उसके उपहारों के वितरण के प्रति नापसंदगी व्यक्त करते हैं तो वह ईश्वर की अप्रसन्नता को प्राप्त करता है और आप परमेश्वर के न्याय पर अपनी उंगली (वस्तु) उठाते हैं जिसे उसने अपने गुप्त (गुप्त) ज्ञान के माध्यम से अपने प्रभुत्व में स्थापित किया है [जिसके बारे में सामान्य लोग नहीं जानते हैं]। यह एक गंभीर अपराध है [ईश्वरीय वितरण पर आपत्ति करना और लोगों के पास जो कुछ है उसके लिए ईर्ष्या करना]; ईश्वर की एकता (*तौहीद*) और ईश्वरीय शाश्वत सत्यों (ईमान) में विश्वास *की सीमा के भीतर इससे बड़ा कोई अपराध नहीं हो सकता है*। इसके अलावा, आपने एक आस्तिक के लिए बुराई की कामना की, जबकि आपको अच्छे की कामना करनी चाहिए थी। आपने भविष्यवक्ताओं और मित्रों के समूह और ईश्वर (अवलिया) के अंतरंग लोगों से दूरदर्शिता को अपनाया - ये लोग ईश्वर (मानवता) के सेवकों के मित्र और ईमानदार हैं। ईर्ष्या हृदय की एक बुराई है क्योंकि यह धार्मिकता और धार्मिक कार्यों को आग की तरह भस्म करती है और इसे विलुप्त कर देती है जैसे रात दिन को खा जाती है।

किसी के सांसारिक जीवन में ईर्ष्या का नुकसान: इस दुनिया में ईर्ष्या का नुकसान यह है कि जब भी आप उस व्यक्ति पर आशीर्वाद उतरते हैं जिससे आप ईर्ष्या करते हैं, तो आप लगातार दर्द से पीड़ित रहते हैं। सांप आपके दिल पर लुढ़कता है (नफरत के लिए एक रूपक) जब वह व्यक्ति जो किसी की ईर्ष्या का लक्ष्य होता है, उसे आराम से देखा जाता है, क्योंकि आपका खून उबलता है और आप इन आशीर्वादों के पतन की रणनीति बनाना शुरू कर देते हैं। जब आप इसके बारे में कुछ भी करने के लिए असहाय महसूस करते हैं, तो आप दुख, पश्चाताप, अफसोस और शर्म के अवतार बन जाते हैं - इस तरह आप अपने लिए चिंताओं और कठिनाइयों को जमा करने के अलावा कुछ नहीं करते हैं, जबकि उस व्यक्ति के साथ कुछ भी बुरा नहीं होता है जो आपकी ईर्ष्या का लक्ष्य है। मान लीजिए कि आपके पास मृत्यु के बाद पुनरुत्थान, न्याय के दिन जवाबदेही, इनाम और सजा [ईश्वरीय जवाबदेही के बाद] के बारे में निश्चितता नहीं है, फिर भी [आपका अपना व्यक्तिगत सामान्य ज्ञान और] बुद्धि की मांग है कि आप ईर्ष्या से बचें क्योंकि आप इसके माध्यम से दिल के दुख और दर्द के अलावा कुछ भी हासिल नहीं करते हैं। यदि आपको परलोक की कठोर सजा के बारे में निश्चितता है, तो आपको इससे बचने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। बुद्धि वाले व्यक्ति के बारे में यह कुछ अजीब लगता है कि कोई व्यक्ति बिना किसी भौतिक लाभ के भगवान की नाराजगी को खरीद लेता है। ईर्ष्या से क्या लाभ हो सकता है? केवल इसके विपरीत क्षति, हानि और संचय के रूप में निरंतर दंड और हृदय के लिए दर्द होता है – ईश्वर (दीन) और सांसारिक जीवन (दुनिया) दोनों नष्ट हो जाते हैं और व्यक्ति खाली हाथ रहता है। जिस व्यक्ति से आप ईर्ष्या करते हैं उस पर एक नज़र डालें और उसकी स्थिति को देखें! क्या आपकी ईर्ष्या ऐसे किसी को कोई नुकसान पहुंचा रही

है? यदि आप विचार करते हैं, तो आपको उत्तर नकारात्मक में मिलेगा। न तो किसी का सांसारिक जीवन (दुनिया) क्षतिग्रस्त होगा और न ही ईश्वर (*दीन*) का मार्ग क्योंकि उसके पास जो आशीर्वाद है, वह आपकी ईर्ष्या के कारण कम नहीं होगा, बल्कि वे तब तक रहेंगे जब तक भगवान ने उनके लिए नियत नहीं किया है। भगवान कहते हैं:

وَكُلُّ شَيْءٍ عِندَهُۥ بِمِقْدَارٍ

"सब कुछ एक निश्चित माप के साथ परमेश्वर द्वारा विभाजित और नियुक्त किया जाता है। (कुरान, अध्याय 13, श्लोक 8)

एक भविष्यवक्ता ने परमेश्वर से एक साम्राज्ञी के बारे में विनती की जो उत्पीड़न के साथ एक राष्ट्र पर शासन करती थी। यह उसके सामने प्रकट किया गया था, "अनंत काल से जो दिव्य रूप से नियत किया गया है, उसमें किसी भी परिवर्तन की कोई संभावना नहीं है, और वह निश्चित रूप से जो भी ऊंचाई और आशीर्वाद उसके लिए नियत है, उसे प्राप्त करेगी। धैर्य रखें ताकि यह युग बीत जाए जो उसके लिए नियत किया गया है [ताकि इस युग के बाद आपके धैर्य और दृढ़ता के पुरस्कार के रूप में आपके लिए बेहतर समय के अग्रदूत के रूप में एक नया युग शुरू हो जाए]"। इस [उदाहरण] से यह सीखा जाता है कि आशीर्वाद ईर्ष्या से नष्ट नहीं होता है और [व्यक्ति जो है] आपकी ईर्ष्या का लक्ष्य है, उसे किसी भी नुकसान का सामना नहीं करना पड़ता है, और यदि आप सोचते हैं कि आपकी ईर्ष्या के कारण आशीर्वाद नष्ट हो सकता है तो यह अज्ञानता की पराकाष्ठा है और यह आपके स्वयं (नफ्स) के साथ शत्रुता के समान है। यदि आपकी इच्छा है कि आपकी ईर्ष्या के कारण, सभी [ईश्वर की] रचनाओं का आशीर्वाद दूर हो जाए और आपके प्रति दूसरों की ईर्ष्या के कारण आपका अपना आशीर्वाद दूर न हो जाए तो यह इच्छा भी शुद्ध अज्ञान है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके पास कोई विशेषता नहीं है जिसके कारण आपको दूसरों पर प्राथमिकता मिलती है। यह इतना बड़ा दिव्य आशीर्वाद है कि ईर्ष्या किसी के आशीर्वाद को खत्म नहीं करती है। आपको इस महान आशीर्वाद के लिए परमेश्वर का आभारी होना चाहिए, लेकिन अफसोस, आप अपने स्वयं के कार्यों के माध्यम से इसकी सराहना नहीं करते हैं।

जहां तक आपकी ईर्ष्या का लक्ष्य है उसके लाभ का संबंध है, यह बहुत स्पष्ट है कि व्यक्ति को इस दुनिया में और अगले लोक में लाभ मिलता है। ईश्वर (दीन) या धर्म के मार्ग का लाभ यह है कि जो ईर्ष्या का लक्ष्य होता है वह आपकी वजह से उत्पीड़ित हो जाता है, खासकर ऐसे समय में जब आपकी ईर्ष्या आपके दिल से आपकी जीभ तक आती है या आपकी किसी क्रिया से प्रकट होती है, उदाहरण के लिए, जब आप बैकबाइट करते हैं, तो अपनी उंगली किसी की गरिमा पर उठाते हैं, किसी को शाप दें या मारें (नुकसान पहुंचाएं)। ये सभी उपहार हैं जो आप उस व्यक्ति को भेंट करते हैं जो आपकी ईर्ष्या का लक्ष्य है, दूसरे शब्दों में, आप अपने अच्छे कर्मों को ऐसे व्यक्ति को उस हद तक सौंप देते हैं [अपनी ईर्ष्या की] फिर जब

आप न्याय के दिन उससे मिलेंगे, तो आपके खाते में पछतावे और अभावों के अलावा कुछ भी नहीं बचेगा - आप वहां आशीषों से वंचित हो जाएंगे जैसे आप अपने सांसारिक जीवन में थे। आप उनके आशीर्वाद के पतन की कामना करते थे, लेकिन वे बरकरार रहे। इसके अलावा, किसी ने आपके अच्छे कर्मों का आशीर्वाद प्राप्त किया और उसके अच्छे कर्मों के खाते में स्थानांतरित हो गया - इस व्यक्ति को आशीर्वाद प्राप्त होगा और आपको दुर्भाग्य मिलेगा। इसके साथ ही, आपने मानवता के दुश्मन, शैतान को खुश रहने का अवसर दिया। ऐसा इसलिए है क्योंकि, शैतान को डर है कि आप उन लोगों से प्यार करना शुरू कर देंगे जिन्हें आप अपने दुश्मन के रूप में देखते हैं - जिनके पास ज्ञान, पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर के भय के गुण हैं - ताकि आप उनके दिव्य प्रतिफल में एक हिस्सा प्राप्त करें [इन महान गुणों के लिए]। शैतान चाहता है कि जैसे आप अच्छे से वंचित हैं, वैसे ही आप अच्छे के लिए प्रेम से वंचित हो जाते हैं। एक रेगिस्तानी अरब ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से पूछा: "हे ईश्वर के दूत! एक निश्चित व्यक्ति धर्मी लोगों के समूह से प्यार करता है, भले ही वह उनमें से न हो। उसने उत्तर दिया:

المرء مع من احب

"एक व्यक्ति [या लोगों के समूह] के साथ होगा जिसे वह प्यार करता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस अब्दुल्ला बिन मसूद के अधिकार पर* सहीह बुखारी *और* सहीह मुस्लिम *का संग्रह* करता है [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

ईर्ष्या अपने आप में एक पाप है। व्यक्ति को उन चीजों पर ध्यान देना चाहिए जो इससे पैदा होती हैं जैसे असहमति, सत्य को स्वीकार करने से इनकार करना, और दुश्मन से बदला लेने के लिए जीभ और हाथ की अश्लीलता का उपयोग करने की स्वतंत्रता। यह एक ऐसी बीमारी है जो पिछले राष्ट्रों के विनाश का कारण बनी।

ईर्ष्या का ज्ञान-आधारित इलाज यह है कि व्यक्ति ईर्ष्या के उद्देश्य के विरुद्ध कार्य करता है, चाहे वह कुछ बोला गया हो या कोई कार्य। इसलिए, यदि ईर्ष्या किसी को अपनी ईर्ष्या के शिकार की निंदा करने के लिए प्रेरित करती है, तो उसे उसकी प्रशंसा करने का प्रयास करना चाहिए [इसके बजाय]। यदि ईर्ष्या किसी को अपने शत्रु के प्रति अहंकार करने के लिए प्रेरित करती है, तो उसे अपने शत्रु के सामने स्वयं को विनम्र रखना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर माफी मांगने के लिए तैयार रहना चाहिए; यदि यह किसी को देने या पुरस्कृत करने के लिए प्रेरित करता है [दुश्मन के रूप में माना जाने वाला व्यक्ति], तो उसे और भी अधिक देना चाहिए, भले ही किसी को खुद को मजबूर करना पड़े और अपने दिल को मजबूर करना पड़े, क्योंकि इसमें कुछ भी गलत नहीं है। जब किसी की ईर्ष्या का निशाना बनने वाला व्यक्ति इन चीजों को देखेगा तो खुशी आएगी और किसी से प्यार करने लगेगा और जब ऐसे व्यक्ति से प्यार होगा तो ईर्ष्यालु भी बदले में प्यार करने के लिए मजबूर हो जाएगा। आपसी प्रेम सद्भाव पैदा करेगा जो बदले में ईर्ष्या को खत्म कर देगा। विनम्रता, प्रशंसा, [किसी और के] आशीर्वाद पर खुशी व्यक्त करना, धन्य के दिल को उस

प्रयास करने वाले व्यक्ति की ओर खींचा और झुका दिया जाता है [यद्यपि ईर्ष्या, किसी की आत्मा के भीतर इसका मुकाबला करने के लिए] और एक सेवक की तरह बन जाता है और एक के साथ दयालु व्यवहार करना और एक के साथ अच्छा व्यवहार करना शुरू कर देता है। व्यवहार में यह उत्कृष्टता [उस व्यक्ति से जो किसी की ईर्ष्या का लक्ष्य था] ईर्ष्या के साथ उस व्यक्ति के पास वापस लौटती है, जिससे उसका दिल प्रसन्न होता है जिसने पहले उत्कृष्टता के लिए प्रयास किया था लेकिन बाद में यह किसी की आदत और स्वभाव बन गया (दूसरी प्रकृति जो चीजों को स्वाभाविक रूप से और सहजता से करती है)। शैतान के धोखे से तुम्हें इस मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए कि यदि तुम उस व्यक्ति के साथ व्यवहार करते हो जो तुम्हारी ईर्ष्या का निशाना है, विनम्रता और प्रशंसा के साथ तो कोई तुम्हें कमजोर, दीन, पाखंडी और भयभीत मानेगा। शैतान मनुष्यों को नष्ट करने के लिए इस तरह से धोखा देता है। किसी शत्रु के साथ अच्छा व्यवहार करना, चाहे वह स्वाभाविक रूप से किया गया हो या बाध्यकारी रूप से, शत्रुता का आधार समाप्त हो जाता है और उसकी जगह दोनों तरफ से प्रेम की जगह ले लेता है और उन्हें ईर्ष्या के दर्द और दंड से मुक्ति मिलती है।

ये ईर्ष्या की दवाएं हैं और इनके लाभों से इनकार नहीं किया जा सकता है। हालांकि, दिलों को अपना स्वाद कड़वा लगता है, लेकिन कड़वी दवा वह है जो अधिक फायदेमंद होती है। जो किसी औषधि की कड़वाहट पर धैर्य नहीं रखता, उसे इलाज की मिठास नहीं मिलती। इस कड़वी दवा को सहन करना तब आसान हो जाएगा जब कोई इलाज के ज्ञान-आधारित और व्यावहारिक तरीकों पर विचार करेगा और समझेगा कि ईश्वरीय आदेशों को स्वीकार करने और ईश्वरीय प्रतिफल के लिए साधक होने के नाते, व्यक्ति को बहुत ही शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता (सादा) की ओर ले जाता है। यह सोचना कि दुनिया में कुछ भी मेरी इच्छा के विरुद्ध नहीं होना चाहिए और कुछ [मेरी इच्छाओं] के खिलाफ होना मेरे स्वयं के आत्म-सम्मान और गरिमा के खिलाफ है (*नफ्स*), शुद्ध अज्ञानता है। यदि यह [गलत] विचार हृदय में मजबूती से बैठ जाता है, तो इसका परिणाम यह होगा कि यह अपने सभी [कथित] शत्रुओं की मृत्यु की इच्छा करेगा ताकि [स्वयं के लिए] थोड़ा सा भी विरोध न रहे। इसके अलावा, वह चाहेगा कि मेरी इच्छाओं के विरुद्ध कुछ भी न हो और सब कुछ मेरी इच्छाओं के अनुसार हो, हालांकि यह असंभव है और किसी की विफलता पर (अपनी इच्छाओं के अनुसार सब कुछ होने के लिए) दुश्मनों से ईर्ष्या होगी और इसका अंतिम निष्कर्ष किसी का पूरी तरह से अपमान और अपमान होगा। इस अपमान से बचने के दो तरीके हैं: पहला, आप जो चाहते हैं वह होता है, और दूसरा, जो होता है वह आपकी इच्छा बन जाता है। पहली विधि किसी के वश में नहीं है और इसमें प्रयास करने के लिए कोई जगह नहीं है, हालांकि, आध्यात्मिक प्रयास दूसरी विधि के लिए काम करेगा। गहन आध्यात्मिक प्रयास के माध्यम से, यह संभव है कि किसी का हृदय इरादे और इच्छा से रहित हो जाए [अपनी इच्छाओं के अनुसार चीजें होने के लिए] और स्वयं को ईश्वरीय इच्छा के अधीन बना दे। इस [दूसरी] विधि को प्राप्त करना एक बुद्धिमान और बुद्धिमान व्यक्ति के लिए अनिवार्य है [आंतरिक शांति, शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय प्राप्त करने के लिए]।

अध्याय 6- सांसारिक जीवन, संपत्ति और शक्ति के प्रति लगाव और इसे अपने जीवन का उद्देश्य बनाना

सांसारिक जीवन के प्रति हृदय का लगाव और इसे वास्तविक चीज, या सबसे बड़ी चीज या एकमात्र चीज मानना, सभी नैतिक और नैतिक प्रतिबंधों और विचारों को अलग करने और इसके लिए हर तरह से लड़ने का मार्ग प्रशस्त करता है, उन मामलों के लिए जो चीजों की समग्र योजना में तुच्छ और महत्वहीन हैं। यह विचार प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर और पूरे राष्ट्र के सामूहिक स्तर पर है। व्यक्तिगत स्तर पर, यह किसी के जीवन में वास्तविक और महत्वपूर्ण क्या है, इस पर किसी के दृष्टिकोण को धुंधला कर देता है, जिससे किसी के आंतरिक और बाहरी अस्तित्व पर तीव्र तनाव होता है। यह एक चूहे की दौड़, सीमित संसाधनों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा और एक अनावश्यक संघर्ष सुनिश्चित करता है जो व्यर्थ प्रयासों में व्यक्तियों के पूरे जीवन को खा जाता है जो कि समय के लिए सबसे अच्छी पूंजी का उपभोग करता है। दूसरी ओर, सांसारिक जीवन के प्रति अलगाव, हर चीज को सही परिप्रेक्ष्य में रखने की ओर ले जाती है, किसी के मन, शरीर, बुद्धि और आत्मा को व्यर्थ के महत्वहीन प्रयासों में भस्म होने से मुक्त करती है, जो किसी के पास सबसे बड़ी पूंजी का उपभोग करती है, जो कि किसी के जीवन का सीमित समय है। सांसारिक जीवन के प्रति लगाव से अलगाव आंतरिक शांति, शांति, स्वयं के साथ शांति और सभी साथी मनुष्यों के साथ शांति को बढ़ावा देता है। एक सूफी ऋषि ने कहा है, "जब मैं दुनिया और सांसारिक जीवन को महान मानता हूं, तो मुझे लगता है कि मैं ब्रह्मांड में एक मात्र परमाणु हूं। लेकिन जब मैं सांसारिक जीवन को छोटा मानता हूं तो मुझे लगता है कि दुनिया ब्रह्मांड में एक परमाणु है, और मैं इस ब्रह्मांड का स्वामी हूं! यह टुकड़ी एक मुक्तिदायक शक्ति है जो व्यक्ति को चेतना के उच्च स्तर तक ले जाती है जो भीतर और बाहर शांति प्रदान करती है। कोई व्यक्ति कंजूसी का अभ्यास करने के बजाय साझा करना सीखता है, बेगुमनामी के विपरीत देखभाल, और स्वार्थ के विपरीत निस्वार्थता। ग़ज़ाली सांसारिक जीवन के प्रति लगाव के पीछे के कारणों, इससे होने वाले नुकसान और इस बीमारी का इलाज बताती है जो किसी के मन, शरीर, बुद्धि और आत्मा को उच्च स्तर की चेतना को आगे बढ़ाने के लिए मुक्त करती है। ग़ज़ाली की छठी पुस्तक उनकी महान *कृति* "इह्या *अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे

खंड या चौथाई में इस पर चर्चा करती है और इसके लिए उपाय निर्धारित करती है। ग़ज़ाली की इस पुस्तक की सामग्री यहाँ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत की गई है [12]:

सांसारिकता परमेश्वर का विरोधी है, परमेश्वर के मित्रों का विरोधी है और परमेश्वर के इनकार करने वालों और विरोधियों का भी विरोधी है। यह ईश्वर का विरोधी है क्योंकि यह ईश्वर के सेवकों (यानी, सभी मनुष्यों) को ईमानदारी और सही मार्गदर्शन के मार्ग पर चलने की अनुमति नहीं देता है। यह ईश्वर के मित्रों और अंतरंग लोगों (ज्ञानवादियों और संतों) का विरोधी है क्योंकि यह उनके सामने बिस्तर से सजे हुए दिखाई देता है और उन्हें जीवन और सुंदरता से भरपूर होने के साथ लुभाने की कोशिश करता है, इसलिए वे धोखे के जाल में फंस जाते हैं। इसके जाल से मुक्त होने के लिए, उन्हें धैर्य के कड़वे मसौदों को निगलना पड़ता है। परमेश्वर के इनकार करने वालों और विरोधियों के साथ उसकी दुश्मनी यह है कि उसने उनसे दोस्ती करके, उन्हें हरे-भरे चरागाह दिखाकर धोखे के जाल में फंसा दिया है जब तक कि वे इसकी पकड़ में मजबूती से नहीं आ जाते और जब वे इसके प्रति आश्वस्त हो जाते हैं, तो यह उन्हें अपमान में लपेट लेता है - यदि वे इस दुनिया में अपमान से बचने में कामयाब हो जाते हैं, वे परलोक के अपमान और शर्म से छुटकारा नहीं पा सकेंगे। जब वे दुनिया को छोड़ देंगे तो वे अनंत काल के अनंत आनंद और अंतहीन विजय से वंचित हो जाएंगे, वे इसके अलगाव के दर्द से पीड़ित होंगे; जब उन्हें परलोक की पीड़ा से पीड़ित किया जाएगा, तो वे मदद के लिए खेदजनक पुकारेंगे, लेकिन दुनिया (इस पुस्तक में "दुनिया" का अर्थ "दुनिया" नहीं है, बल्कि यह सांसारिकता या सांसारिक आसक्ति को संदर्भित करता है; आगामी चर्चा के लिए इसे लगातार ध्यान में रखने की आवश्यकता है) उनके बचाव में नहीं आएगा।

जब दुनिया की (सांसारिक आसक्ति) बुराई और कष्टों की ऐसी स्थिति होती है कि वह न तो ईश्वर का मित्र है, न ही ईश्वर के मित्रों (ज्ञानवादी, संत और ईश्वर के अंतरंग) का मित्र है, तो इससे भी अधिक उलझन की बात यह है कि यह ईश्वर के विरोधियों का मित्र भी नहीं है, तो हमारे लिए इसकी वास्तविकता से अवगत होना और इसके निर्माण के लिए [दिव्य] ज्ञान का पता लगाना अनिवार्य हो जाता है, भले ही यह सृष्टिकर्ता और सृष्टि का विरोधी है। फिर हमें यह देखना चाहिए कि यह कैसे धोखा देता है और बुराई (चिंता, अशांति और उथल-पुथल) फैलाने के लिए यह किन तरीकों का उपयोग करता है क्योंकि जब तक हम बुराई के प्रवेश बिंदुओं के बारे में जागरूक नहीं हो जाते, तब तक हम खुद को इससे नहीं बचा पाएंगे, इसके बजाय, अगर हम इसमें शामिल हो जाते हैं तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी। आगे के अध्यायों में पहले सांसारिकता के नुकसान को दिव्य श्लोकों, भविष्यसूचक कथनों और परंपराओं से समझाया जाएगा और उनकी वास्तविकता को उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट किया जाएगा, फिर सांसारिक कर्मों के बारे में विवरण प्रदान किया जाएगा कि जब लोग उनमें शामिल हो जाते हैं, तो वे ईश्वरीय स्मरण के प्रति लापरवाह और लापरवाह क्यों हो जाते हैं, इसके बाद सांसारिक आसक्ति के उपचार के लिए व्याख्या की जाती है।

कुरान ने असंख्य स्थानों पर सांसारिकता की निंदा की है और दर्शकों को इससे बचने और अपने आप को अपने रब परोपकारी की ओर निर्देशित करने का आदेश दिया गया है। भविष्यद्वक्ताओं को भेजने का उद्देश्य, जिन पर शांति हो, परमेश्वर के सेवकों (लोगों) को सांसारिक आसक्ति से रोकना है ताकि वे परलोक के मार्ग पर चल सकें। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

حب الدنيا راس كل خطيئة

"संसार का प्रेम (सांसारिक आसक्ति और उलझन) सभी पापों की जड़ है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अल-दुनिया* और *बयाकी*)

ان الدنيا حلوة خضرة وان الله مستخلفكم فيها فناظر كيف تعملون ان بني اسرائيل لما بسطت لهم الدنيا ومهدت تاهوا في الحلية والنساء والطيب والثياب

"दुनिया मीठी और हरी है, और भगवान आपको इसमें अपना उपाध्यक्ष बनाते हैं यह देखने के लिए कि आप किस तरह के कार्य और कर्म करते हैं [यहां]। जब इस्राएल के बच्चों के लिए दुनिया का विस्तार किया गया, तो वे गहने, महिलाओं, इत्र और कपड़ों से चकित हो गए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अबू सईद अल-खुदरी के अधिकार पर *तिर्मिज़ी* और *इब्ने माजा* को इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों]। उस कथन में इस्राएल के बच्चों के बारे में वह हिस्सा नहीं था जो *इब्ने अबी अल-दुनिया* द्वारा हसन के अधिकार पर सुनाया गया था [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

यीशु ने कहा: "दुनिया को अपना मालिक न बनाओ, वह तुझे अपना दास बनाएगा। अपने खजाने को किसी ऐसे व्यक्ति के साथ भरोसे के रूप में रखें जो इसे बर्बाद नहीं करेगा और इसकी रक्षा करेगा। सांसारिक खजाने का मालिक हर समय चोरी से डरता है। जिसके पास भगवान के पास अपना खजाना है, उसे किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं है। एक बार उन्होंने कहा: "ऐ शिष्यों! मैंने तुम्हारे लिए दुनिया को उल्टा कर दिया है। इसे मेरे बाद मत उठाओ। यह संसार की बुराइयों के बीच से है कि मनुष्य इस संसार के लिए परमेश्वर की अवज्ञा करता है, हालाँकि, जब तक कोई संसार को नहीं छोड़ देता, तब तक उसे परलोक नहीं मिलता। यदि आप परलोक चाहते हैं, तो ऐसे जिएं जैसे कि दुनिया सिर्फ एक मार्ग है और इसमें निवास न करें और जानें कि हर पाप की जड़ दुनिया का प्यार है। कभी-कभी वासना का एक पल लंबे समय तक दुख का कारण बन जाता है। यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) ने यह भी कहा: "संसार एक साधक है और खोजा भी जाता है। परलोक के साधक को दुनिया द्वारा खोजा जाता है ताकि वे अपना भरण-पोषण प्राप्त कर सकें [जिसे परमेश्वर ने पहले ही अपने दिव्य आदेश द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के लिए विभाजित कर दिया है]। दुनिया के साधक को परलोक तब तक खोजता है जब तक कि कोई मर न जाए और वह अपनी गर्दन पर सवार न हो जाए। यह एक परंपरा में आया है कि पैगंबर दाऊद (उन दोनों पर शांति और ईश्वर की कृपा हो) के पुत्र पैगंबर सुलैमान अपनी सेना के साथ एक उपासक से मिलने गए थे। उसके दाएं और बाएं ओर, *जिन्न* और मानव निर्मित पंक्तियाँ और पक्षी उसे ऊपर से छायांकित कर रहे थे। उपासक ने कहा, "ऐ दाऊद के बेटे! परमेश्वर ने तुम्हें एक महान प्रभुत्व प्रदान किया है। पैगंबर सुलैमान (शांति और ईश्वर की आशीष) ने कहा: "एक आस्तिक के कार्यों से एक माला की दिव्य याद उस सारी दुनिया से बेहतर है जो दाऊद के पुत्र को प्रदान की गई है। ऐसा इसलिए है

क्योंकि दाऊद के पुत्र के पास जो कुछ भी है, वह समाप्त हो जाएगा जबकि ईश्वरीय स्मरण [हमेशा के लिए] रहेगा। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

الهاكم التكاثر يقول ابن آدم مالي مالي وهل لك من مالك الا ما اكلت فافنيت اولبست فابليت او تصدقت فابقيت

"अधिकता के लालच ने आपको [भगवान की] लापरवाही और लापरवाही में रखा। आदम का पुत्र कहता है, 'मेरा धन! मेरी संपत्ति!', भले ही जो [वास्तव में] आपका है, वह वही है जो आपने खाया या इसे पहनकर पुराना बनाया या दान में दिया [और इसलिए इसे संरक्षित करने में सक्षम थे"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अब्दुल्ला इब्न अल-शकीर के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) ने भी कहा:

الدنيا دار من لا دار له' ومال من لا مال له ولها يجمع من لا عقل له' وعليها يعادى من لا علم له' وعليها يحسد من لا فقه له ولها يسعى من لا يقين له

"दुनिया उसके लिए घर है जिसके पास घर नहीं है; जिसके पास कोई अधिकार नहीं है (आध्यात्मिक श्रेष्ठता से) उसका भौतिक कब्जा। जो दुनिया को जमा करता है वह वह है जिसके पास बुद्धि नहीं है, और जो कुछ भी ज्ञान नहीं है उसके लिए लड़ता है (बहस करता है), और जिसके पास बुद्धि नहीं है, उसके साथ ईर्ष्या करता है, और इसके लिए प्रयास करना जारी रखता है क्योंकि उसके पास निश्चितता नहीं है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है आयशा के अधिकार पर *हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद* [भगवान उससे प्रसन्न हों])

एक भविष्यसूचक कथन कहता है:

من اصبح والدنيا اكبر همه فليس من الله فى شئ والزم الله قلبه اربع خصال هما لا ينقطع عنه ابدا وشغلا لا يتفرغ منه ابدا وفقرا لا يبلغ غناه ابدا واملا لا يبلغ منتهاه ابدا

"जिसकी [आंतरिक] स्थिति ऐसी है कि दुनिया (सांसारिक भौतिकवादी महत्वाकांक्षाएं और लक्ष्य) किसी का सबसे बड़ा उद्देश्य बन जाता है [जीवन में], ऐसा व्यक्ति ईश्वरत्व से रहित हो जाता है और ईश्वर ऐसे व्यक्ति

के हृदय के लिए चार गुण आवश्यक बनाता है: दुःख जो कभी अलग नहीं होता है, निरंतर व्यस्तता [सांसारिक गतिविधियों में] जो किसी भी राहत की अनुमति नहीं देती है, गरीबी (पर्याप्त नहीं होने की भावना) जो कभी भी समृद्धि तक नहीं पहुंचती है [इस हद तक कि वह पर्याप्त होने से संतुष्ट हो जाता है], और लंबी उम्मीदें जो कभी पूरी नहीं होती हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अबू धर के अधिकार पर *तबरनी अवसत* को इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों] और *इब्न अबी अल-दुनिया* अनस बिन मलिक के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

मरियम के पुत्र यीशु ने कहा: "इस दुनिया के किसी व्यक्ति के लिए यह आश्चर्य की बात है कि मृत्यु के बारे में निश्चितता होने के बावजूद कोई इसके द्वारा धोखा खा जाता है और सब कुछ छोड़कर मर जाता है, दुनिया एक को अपमानित करती है लेकिन एक [अभी भी] इससे निडर है और इस पर भरोसा करता है; जो लोग धोखा खाते हैं, उनके लिए बड़ा दुर्भाग्य है, जिन्हें दुनिया उन्हें दिखाती है कि वे क्या देखना पसंद नहीं करते हैं और उन्हें उनकी प्यारी चीजों से अलग कर देती हैं [इस दुनिया की]। अफसोस उन लोगों के लिए है जिनका उद्देश्य दुनिया है, जिनके कार्य पाप हैं, वे अपने पापों के कारण कितने अपमानित होंगे।
पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के पास एक दिव्य रहस्योद्घाटन आया: "ऐ मूसा! अत्याचारियों के इस निवास (दुनिया) से तुम्हारा क्या लेना-देना है? यह निवास निश्चित रूप से आपका नहीं है। इसे अपने विचारों और कल्पनाओं का केंद्र (केंद्र बिंदु) न बनाएं। दिल को इससे निकाल कर बुद्धि को दूर करो कि यह आपका घर है। परन्तु यदि कोई इस धाम में धर्म का कार्य करता है, तो ऐसे के लिए अच्छा घर होगा। मैं उत्पीड़कों से तब तक सतर्क रहता हूं जब तक कि मैं उत्पीड़ितों का बदला नहीं लेता।
एक पैगंबर परंपरा में यह वर्णित किया गया है कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अबू उबैदा इब्न अल-जर्राह (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) को बहरीन की यात्रा के लिए भेजा। जब वह लौटा, तो वह अपने साथ कुछ पैसे (सोने और चांदी के सिक्कों के रूप में जो उस समय प्रचलित थे) लेकर आया। अंसारी के साथियों (मदीना और उसके आसपास के मूल निवासी) ने अबू उबैदा इब्न अल-जर्राह (भगवान उनसे प्रसन्न हों) की वापसी के बारे में सुना और वह कुछ पैसे वापस ले आए हैं। उन सभी ने पैगंबर के साथ सुबह की नमाज में भाग लिया [जैसा कि वे आमतौर पर हर दिन करते थे]। जब वह प्रार्थना के बाद [घर] लौट रहा था, तो वे उसके रास्ते में खड़े हो गए। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर शांति और आशीर्वाद हो) उन्हें देखकर मुस्कुराए और फिर कहा:

انا اظنكم سمعتم ان ابا عبيدة قدم بشئ ' قالوا اجل يا رسول الله! قال: فابشروا
واملوا ما يسركم فوالله ما الفقر اخشى عليكم ولكني اخشى عليكم ان
تنبسط عليكم الدنيا كما بسطت على ما كان قبلكم فتنافسوها كما
تنافسوها فتهلككم كما اهلكتهم

"मुझे लगता है कि आपने सुना होगा कि अबू उबैदा कुछ लाया है"। साथियों ने उत्तर दिया: "हाँ, हे परमेश्वर के दूत!" उसने कहा: "तुम्हारे लिए खुशखबरी है कि परमेश्वर ने तुमसे मुसीबतें दूर कर दी हैं। भगवान की कसम! मैं आपके निराश्रित होने से नहीं डरता, लेकिन मुझे डर है कि आपके लिए दुनिया का विस्तार होगा [आपके अमीर और संपन्न होने के संदर्भ में] जैसा कि आपके पहले के लोगों के लिए था और आप एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करना शुरू कर देते हैं [सांसारिक लाभ के लिए] और यह कि दुनिया (सांसारिकता) आपको नष्ट कर देती है क्योंकि इसने उन्हें नष्ट कर दिया था। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अम्र बद्री के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* का संग्रह करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यीशु ने कहा: "कोई भी समुद्र की लहरों पर इमारत नहीं बना सकता। दुनिया भी समुद्र की लहरों की तरह है, इसे अपना निवास स्थान मत समझो। यीशु के कुछ साथियों (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हो) ने उनसे उन्हें एक ऐसी सलाह देने के लिए कहा जो उन्हें उस पर कार्य करने के बाद परमेश्वर के प्रेम के योग्य बना दे। उसने जवाब दिया: "दुनिया से प्यार करना बंद करो, भगवान आपसे प्यार करना शुरू कर देंगे। अबू दर्दा (रजिश्मा उन पर प्रसन्न हो) ने बताया कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

لو تعلمون مااعلم لضحكتم قليلا ولبكيتم كثيرا ولهانت عليكم الدنيا
ولا ثرتم الاخرة

"यदि आप जानते हैं कि मैं क्या जानता हूं, तो आप कम हंसेंगे और अधिक रोएंगे और दुनिया आपके लिए छोटी हो जाएगी और आप परलोक को पसंद करेंगे। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस *संग्रह* तिर्मिज़ी *और* इब्ने माजा)

उसके बाद, अबू धर (भगवान उनसे प्रसन्न हों - भविष्यवक्ता साथी जो सांसारिकता के त्याग के लिए प्रसिद्ध थे) ने अपने आप से जोड़ा: "यदि आप जानते हैं कि मैं क्या जानता हूं, तो आप रोते और रोते हुए पहाड़ों पर चले जाते और अपनी सारी संपत्ति और धन छोड़ देते और भाग जाते और अत्यधिक आवश्यकता के बिना उनका उपयोग नहीं करते। हालाँकि, इसके बाद आपके दिलों से गायब हो गया है और सांसारिक संपत्ति और संपत्ति का लालच [आपके दिलों में] हमेशा मौजूद है। जो कुछ भी तुम धर्म के काम करते हो, वह संसार के लिये है, और तुम उन लोगों के समान हो गए हो जो कुछ नहीं जानते। आप में से कुछ मवेशियों से भी बदतर हैं जो बुराई करने से पहले परिणामों के बारे में नहीं सोचते हैं। आपको ऐसा क्या हो गया है कि आप न तो आपसी प्रेम करते हैं और न ही एक-दूसरे के प्रति ईमानदारी रखते हैं, भले ही आप सभी ईश्वर (दीन) के मार्ग में भाईचारे के रिश्ते से जुड़े हों? आपकी आंतरिक बुराई ने आपके उद्देश्यों में अंतर पैदा किया है और आपके रास्तों को अलग कर दिया है। यदि तुम सभी धार्मिकता पर सहमत होते, तो तुम

सभी एक दूसरे से प्रेम करते। आपके साथ ऐसा क्या हो गया है कि आप सांसारिक मामलों में एक-दूसरे के प्रति ईमानदार हैं लेकिन परलोक से संबंधित मामलों में एक दूसरे के प्रति ईमानदार नहीं हैं। जिनसे आप प्यार करते हैं, आप परलोक से जुड़े मामलों में उनकी मदद नहीं करते हैं। ये सभी विश्वास की कमजोरी के संकेत हैं। यदि आपके पास परलोक की अच्छाई और बुराई में निश्चितता होती जैसे कि आपके पास इस दुनिया की निश्चितता है, तो आप परलोक के लिए संघर्ष करते जो आपको सभी मामलों में अच्छाई में मदद करता है।

यदि आप कहते हैं कि आप अपने आस-पास (सांसारिक जीवन) से अधिक प्यार करते हैं जो दूर है (परलोक का जीवन) क्योंकि दुनिया आपकी आंखों के सामने है जबकि परलोक आपकी आंखों से छिपा हुआ है, जो वर्तमान है उसे प्यार किया जाता है और जो मौजूद नहीं है उसे प्यार नहीं किया जाता है; इसका जवाब यह है कि हम देखते हैं कि आप सांसारिक चीजों को छोड़ देते हैं जो उन चीजों के लिए मौजूद हैं जो अभी तक आने वाली हैं (अपेक्षित) - तुम कड़ी मेहनत करते हो और ऐसी चीजें जो तुम्हारे सामने नहीं हैं लेकिन आशा की एक किरण है कि तुम उन्हें प्राप्त करोगे, उनके लिए तुम विभिन्न प्रकार की कठिनाइयाँ और चिंताएँ सहन करते हो। आप अच्छे लोग नहीं हैं क्योंकि आपके पास विश्वास की पूर्णता के रूप में क्या है, इस पर निश्चितता नहीं है। यदि आपको पैगंबर (मुहम्मद) द्वारा लाए गए ईश्वरीय कानून के बारे में संदेह है, तो हमारे पास आएं, हम आपको बताएंगे और विश्वास के प्रकाश के साथ, हम आपको [आध्यात्मिक] वास्तविकताओं को दिखाएंगे जो आपके दिलों को संतुष्ट करेंगी। भगवान की कसम, आप दोषपूर्ण बुद्धि के लोग नहीं हैं ताकि हम आपको [सही और गलत के बीच अंतर करने की नैतिक जिम्मेदारी से] छूट दें। सांसारिक मामलों में, आपकी राय ठोस है और अगर आपको दुनिया का थोड़ा सा हिस्सा मिल जाए, तो आपकी खुशी की कोई सीमा नहीं है। जब दुनिया से थोड़ी सी भी चीज खो जाती है, तो तुम्हारे दुःख की स्थिति देखने लायक होती है - तुम्हारे चेहरे तुम्हारे दिलों का प्रतिबिंब बन जाते हैं और तुम्हारी जीभ व्यक्त करती है कि तुम्हारे दिलों में क्या है। आप इसे कठिनाई कहते हैं। आप में से बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने अपने धर्म (दीन या भगवान के रास्ता) को अलविदा कह दिया है, लेकिन आपके दिल न तो पछताए हुए हैं और न ही यह आपके चेहरे से स्पष्ट है। [आपके दिलों में] एक अजीब असंवेदनशीलता है। मुझे ऐसा लगता है कि भगवान आपसे नाराज हैं। जब आप एक-दूसरे से मिलते हैं, तो आप खुद को खुशी व्यक्त करने के लिए मजबूर करते हैं क्योंकि इस डर से कि यदि आप असभ्य हैं, तो दूसरा व्यक्ति आपके साथ भी ऐसा ही व्यवहार करेगा। आप अपनी मृत्यु दर (जीवन का अंत) को भूल जाते हैं। मैं चाहता हूं कि ईश्वर मुझे आपसे दूर करे (मुझे आपसे अलग कर दे) और इसके बजाय, मेरे साथ उन लोगों के साथ जुड़ें जिनकी मुलाकात मैं उत्सुकता से चाहता हूं (यानी, पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो), उनके महान साथी और उनके नक्शेकदम पर ईश्वर के ईमानदार साधक)। यदि वे आज जीवित होते, तो वे तुमसे इन बातों को स्वीकार नहीं करते। अगर आपके भीतर अच्छाई का कोई तत्व है तो मैंने सब कुछ स्पष्ट रूप से समझाया है। यदि आप इसे प्राप्त करना चाहते हैं जो परमेश्वर के पास है, तो इसका तरीका कठिन नहीं है। मैं अपने और अपने लिए मदद और सहायता के लिए भगवान की मदद मांगता हूं।

यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीष) ने अपने शिष्यों से कहा: "अपने धर्म की सुरक्षा के साथ छोटी सी दुनिया से संतुष्ट रहो, जैसे दुनिया के लोगों को दुनिया की सुरक्षा के साथ छोटे धर्म से लड़ा जाता है"। अली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "जिसने अपने आंतरिक अस्तित्व में छह गुण पैदा किए हैं, उसने स्वर्ग को प्राप्त करने और अपने आप को नरक से [ईश्वर की अस्वीकृति जो प्रकट होती है] प्राप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी: पहला गुण यह है कि व्यक्ति ने ईश्वर को पहचानने के बाद उसकी आज्ञा का पालन किया, दूसरा यह कि किसी ने शैतान को पहचानने के बाद उसकी अवज्ञा की, तीसरा यह कि उसने सत्य को पहचानने के बाद उसका अनुसरण किया, चौथा यह कि किसी ने झूठ को पहचानने के बाद उसे त्याग दिया, पांचवां यह कि उसने सांसारिकता को पहचानने के बाद उसे अस्वीकार कर दिया, और छठा यह कि उसने परलोक को पहचानने के बाद उसकी खोज की। लुकमान (उस पर शांति हो - पैगंबर डेविड के समय ऋषि [ईश्वर की शांति उस पर हो]), बुद्धिमान ने अपने बेटे को चेतावनी देते हुए कहा: "हे पुत्र! दुनिया एक गहरे समुद्र की तरह है जिसमें कई लोग डूब गए हैं; ईश्वर के भय के जहाज पर इसके माध्यम से यात्रा करें, विश्वास को अपना यात्रा साथी बनाएं, भगवान को अपनी पाल के रूप में भरोसा करें, शायद आप अपने आप को इस तरह से डूबने से बचाएंगे, अन्यथा मुझे आपके जीवित रहने का कोई अन्य तरीका नहीं दिखता है। अबू सुलेमान अल-दरानी (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "जो प्रेम से दुनिया की तलाश करता है, वह अपनी इच्छा के अनुसार नहीं मिलता है, और जो प्रेम से परलोक का साधक है, उसे अपने इरादे और इच्छा से अधिक मिलता है - न तो इसका कोई अंत है और न ही कोई सीमा है"। अब्दुल्लाह बिन मसूद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "हर इंसान एक मेहमान है और जो भी भौतिक संपत्ति और धन है वह एक ट्रस्ट है; अतिथि चला जाएगा और ट्रस्ट अपने [सच्चे] मालिक [भगवान, जो इस पृथ्वी और इसमें और उससे परे मौजूद हर चीज का उत्तराधिकारी है] के पास वापस आ जाएगा। इब्राहिम बिन अधम (ईश्वर उन पर दया करे) से उनकी स्थिति के बारे में पूछा गया था, जिसका जवाब उन्होंने कविता के इन दो छंदों के साथ दिया:

نرقع دنيانا بتمزيق ديننا   فلا ديننا يبقى ولا ما نرقع
فطوبى لعبد آثر الله ربه   وجاد بدنياه لما يتوقع

उन्होंने कहा, 'हम अपनी दुनिया के निर्माण के लिए ईश्वर (दीन या विश्वास) के लिए अपना रास्ता नष्ट कर देते हैं, लेकिन न तो रास्ता (विश्वास) रहता है और न ही दुनिया। खुशखबरी उन सेवकों के लिए है जिन्होंने [भगवान के] मार्ग को अपनाया और अपेक्षित चीज (परलोक का दिव्य प्रतिपूर्ति) के लिए अपने सांसारिक जीवन का बलिदान कर दिया।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "ईश्वर ने दुनिया को तीन भागों में विभाजित किया है - एक भाग आस्तिक के लिए है, एक भाग पाखंडी के लिए है, और एक भाग अविश्वासी के लिए है। आस्तिक इस दुनिया से परलोक के मार्ग के लिए एक निर्भरता (प्रावधान) लेता है, पाखंडी [इस दुनिया के]

बाहरी अलंकरण पर ध्यान केंद्रित करता है और अविश्वासी सांसारिक सफलता प्राप्त करता है [भौतिक उपलब्धियों, शक्ति, प्रतिष्ठा और समृद्धि के संदर्भ में]"।

हसन अल-बसरी (ईश्वर उन पर दया करे) ने [खलीफा] उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (ईश्वर उन पर दया करे) को [एक पत्र] लिखा: "दुनिया [अनंत काल तक] यात्रा में एक गंतव्य है और यह [स्थायी रूप से] रहने की जगह नहीं है। आदम (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) को सजा के रूप में दुनिया में भेजा गया था, इसीलिए, अपने आप को इससे (इसके धोखे और फंसाने से) बचाएं। हे विश्वासियों के सेनापति! इसे त्यागना (यानी, अपने सभी फंदों के साथ सांसारिकता) परलोक का बहुत प्रावधान है और इसमें कम के साथ जीवन बिताना और अनावश्यक जरूरतों को त्यागना [एक व्यक्ति के लिए] बहुत ही समृद्धि है। यह हर पल को हर समय मारता है। जो इसका सम्मान करता है, वह इससे अपमानित होता है। जो इसे जमा करता है, वह इससे जरूरतमंद बन जाता है। यह एक जहर की तरह है जिसे अनजाने में सेवन किया जाता है जिससे व्यक्ति मृत्यु के आलिंगन तक पहुंच जाता है। इस दुनिया में अपना जीवन ऐसे जिएं जो किसी के घावों का इलाज करता है। दूसरे शब्दों में, उपचार के दौरान रोगी के लिए आवश्यक सभी सावधानियों और रोकथाम को इस डर से पकड़ें कि लापरवाही से बीमारी की गंभीरता हो सकती है। बीमारी के लंबे समय तक चलने से बचने के लिए रोगी को दवा की कड़वाहट और तीव्रता को सहन करने की कोशिश करनी चाहिए। इस स्थायी, विश्वासघाती, चालाक और भ्रामक दुनिया से खुद को सुरक्षित रखें। इसने अपने श्रृंगार में धोखे को छुपाया है। यह लोगों को अपनी सुंदरता के जाल में फंसा देता है और उनमें इसे प्राप्त करने की इच्छा पैदा करता है, फिर इसके प्रेमियों को इसकी उथल-पुथल और कठिनाइयों में शिकार किया जाता है कि वे होश खो देते हैं और अपने अंतिम अंत की परवाह किए बिना पूरी तरह से इससे संबंधित (संलग्न) हो जाते हैं। यह एक दुल्हन की तरह है जिसकी सुंदरता दर्शनीय स्थलों को चकाचौंध कर देती है, दिल इसे देखने के इच्छुक होते हैं, और इसे देखने के लिए परेशान होते हैं, लेकिन यह अपने प्रेमियों के लिए अंतिम अंत का दूत है। जो अपनी निकटता पाता है, विनाश उसकी नियति बन जाता है। हाय! अब लोग न तो अतीत से सीखते हैं और न ही वर्तमान से। जो लोग परमेश्वर को पहचानते हैं वे भी दुनिया से जुड़ी किसी भी सलाह पर ध्यान नहीं देते हैं। ईश्वर के ऐसे कई प्रेमी हैं जो इसका कुछ हिस्सा मिलने पर गर्व करते हैं और [ईश्वरीय आदेशों के खिलाफ] विद्रोह पर आमादा हो जाते हैं, परलोक को भूल जाते हैं और खुद को [उसमें] इतना तल्लीन कर लेते हैं, कि वे गलतियों से बच नहीं सकते। जब वे होश में लौटते हैं, तो उन्हें शर्म आती है और पछतावा दिल को खींचता है लेकिन यह आसन्न मृत्यु का समय है - एक तरफ, एक तरफ, मृत्यु की तीव्रता का सामना कर रहा है और दूसरी तरफ, शर्म और अफसोस के दर्द को सहन कर रहा है। एक व्यक्ति जो दुनिया (सांसारिकता) के प्रति झुकाव रखता है, वह न तो किसी के उद्देश्य को प्राप्त करने में सक्षम है और न ही किसी भी कठिनाई से स्वयं (*नफ्स*) को आराम देता है और बिना किसी प्रावधान और तैयारी के [अपनी अंतिम मातृभूमि में] पहुंचता है। हे विश्वासियों के सेनापति! इससे खुद को बचाएं। जब आप इससे अधिक खुश होते हैं, तो अतिरिक्त सतर्क रहें क्योंकि जब सांसारिक लोग कुछ खुशी से संतुष्ट हो जाते हैं, तो यह उन्हें कठिनाई में डाल देता है। जो इसमें खुश रहता है, वह धोखा खा जाता है। आज जिसे लाभ हो रहा है वह कल नुकसान सहेगा। सांसारिक जीवन

की व्यापकता कष्टों का अग्रदूत है और इसमें निर्वाह विलुप्त होने के साथ समाप्त होता है। इसकी हर खुशी दुख से भरी हुई है। जो इससे दूर जाता है, वह उस पर वापस नहीं लौटता। जो इसमें रहता है, वह नहीं जानता कि आगे क्या होगा इसलिए कोई इसके लिए इंतजार कर सकता था। यहां रहते हुए मनुष्य दो खतरों से घिरा रहता है- एक खतरा यह है कि आशीर्वाद चले जाएंगे, और दूसरा खतरा कठिनाइयों का है। मान लीजिए कि यदि परमेश्वर ने हमें दुनिया के [नुकसान] के बारे में सूचित नहीं किया होता और यदि परमेश्वर ने उदाहरणों के द्वारा वास्तविकता को प्रकट नहीं किया होता, तो [किसी के सामने आने वाली परिस्थितियाँ] एक लापरवाह व्यक्ति को नींद से जगाने के लिए पर्याप्त हैं। हालाँकि, परमेश्वर ने हमें बिना किसी सहायता के नहीं छोड़ा था, बल्कि उसने उनकी ओर चेतावनी देने वाले भेजे हैं। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को दुनिया के खजाने की चाबियाँ भेंट की गईं; अगर उन्होंने उन्हें स्वीकार कर लिया होता, तो उनकी रैंक कम नहीं होती लेकिन उन्होंने [फिर भी] उन्हें स्वीकार करने से इनकार कर दिया। (इस परंपरा को इस पत्र और इसके उत्तर के साथ हसन अल-बसरी (ईश्वर पर दया करे) द्वारा वर्णित किया गया है। *इब्न अबी अल-दुन्या*)

इसमें लिप्त होने के बाद दुनिया के नुकसान से रक्षा करना

सांसारिकता में डूबने के बाद उसके नुकसान से बचाव करना न केवल कठिन है, बल्कि यह असंभव है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

انما مثل صاحب الدنيا كالماشى فى الماء هل يستطيع الذى يمشى فى الماء ان لا تبتل قدماه

"इस दुनिया के एक व्यक्ति की समानता उस व्यक्ति की तरह है जो पानी में चलता है। क्या पानी में चलने वाले के लिए पैरों को गीला नहीं करना संभव है? (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने अनस के अधिकार पर* इब्न अबी अल-दुनिया *और* बेहाकी *को इकट्ठा किया* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इस भविष्यसूचक परंपरा के प्रकाश में, उन लोगों की अज्ञानता स्पष्ट हो जाती है जो कहते हैं: "हमारे शरीर [केवल] सांसारिक सुखों में लिप्त हैं, लेकिन हमारे दिल नहीं हैं, क्योंकि हमारे दिलों का शरीर से कोई संबंध नहीं है"। यह एक शैतानी धोखा है क्योंकि अगर उन्हें इन सुखों से दूर कर दिया जाता है, तो वे उनसे अलग होने में दुखी हो जाते हैं। अगर इन सुखों का उनके दिलों से कोई संबंध नहीं है, तो इस दुख का क्या अर्थ है? जिस तरह पानी में चलने का अर्थ यह है कि पैर अनिवार्य रूप से गीले हो जाएंगे, उसी तरह सांसारिक सुखों में लिप्त होने का अर्थ यह है कि हृदय अनिवार्य रूप से इससे प्रभावित होगा और इन [शारीरिक] सुखों से प्रदूषकों का प्रभाव निश्चित रूप से हृदय तक पहुंचेगा। बल्कि अगर मन में इस दुनिया का जरा सा भी ख्याल आया तो भी वह ईश्वरीय उपासना की मिठास से वंचित हो जाएगा। यीशु ने कहा:

"मैं तुम से सच कहता हूँ कि जैसे बीमार व्यक्ति भोजन का आनंद नहीं लेता, वैसे ही सांसारिक व्यक्ति भी [ईश्वरीय] उपासना की मिठास नहीं चखता। मैं आपसे यह भी सच कहता हूं कि जिस तरह एक घोड़ा अब और नहीं चलाता है, वह विद्रोही हो जाता है और उसका स्वभाव खराब हो जाता है, वैसे ही मानव हृदय भी ऐसा ही होता है - यदि उसे मृत्यु और पूजा की कठिनाई के स्मरण से नरम नहीं किया जाता है, तो उसमें कठोरता और कठोरता का जन्म होता है। यह भी सच है कि जब तक एक कंटेनर गीलेपन से अलग नहीं हो जाता और सूख जाता है, तब तक वह शहद का भंडारण करने में सक्षम नहीं होता है, इसी तरह हृदय ज्ञान और ज्ञान से परिपूर्ण होते हैं जब तक कि वे वासनाओं से अलग नहीं रहते हैं और लालच से प्रदूषित नहीं होते हैं और सुखों से कठोर नहीं होते हैं।

दुनिया में भोग और परलोक की लापरवाही का एक दृष्टांत: परलोक के प्रति दुनिया के निवासियों की लापरवाही का दृष्टांत एक जहाज पर यात्रा करने वाले लोगों के एक समूह का है जो एक दूरस्थ द्वीप पर पहुंचता है और जहाज का कप्तान उन्हें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए उतरने के लिए कहता है। इसके साथ ही, उन्हें सूचित किया जाता है कि उस स्थान पर लंबे समय तक रहना उपयुक्त नहीं है क्योंकि यह एक खतरनाक जगह है और यदि वे जल्दी नहीं करते हैं, तो जहाज अपने गंतव्य की ओर रवाना हो जाएगा। अब लोग द्वीप पर उतरते हैं और तितर-बितर हो जाते हैं। उनमें से कुछ अपनी जरूरतों को पूरा करने के तुरंत बाद जहाज पर लौट आते हैं और जहाज पर विस्तृत, उपयुक्त और वांछनीय स्थान पाते हैं। कुछ लोग द्वीप में रहते हैं। वे शानदार दृश्यों, आकर्षक फूलों, शानदार उद्यानों, पक्षियों के सुंदर गीतों, कीमती पत्थरों और द्वीप से संबंधित खनिजों से आकर्षित होते हैं। हालांकि, जहाज के दूर जाने का डर उन्हें वहां ज्यादा देर तक रहने नहीं देता। अनिच्छा से, वे जहाज पर लौट आते हैं, हालांकि, जहाज पर अच्छे स्थान पहले ही ले लिए जा चुके हैं और उन्हें संकरी जगहें मिलती हैं जिन्हें लेने के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं होता है। कुछ लोग लौट आए; हालाँकि, उन्हें द्वीप के कीमती पत्थर, सुंदर फूल और स्वादिष्ट फल इतने पसंद थे कि वे उनके बिना वापस नहीं लौट सकते थे। उन्होंने इनमें से कुछ चीजें एकत्र की और उन्हें अपने साथ वापस ले आए। जहाज में जगह पहले से ही तंग थी और वे अपने साथ जो चीजें लाए थे उन्हें समायोजित नहीं किया जा सकता था। उन्हें जहाज में शेष तंग स्थानों पर बैठने के लिए मजबूर किया गया था, उनके सिर पर अपने एकत्रित सामान रखा गया था। वे अपने दिल में शर्मिंदगी महसूस करते रहे कि वे अनावश्यक रूप से इन चीजों को अपने साथ लाए हैं। कुछ लोगों की [यात्रियों में से] आँखें चकाचौंध हो गईं और दिल द्वीप के शानदार रंगीन दृश्यों और पिछले गहनों से मोहित और मोहित हो गए, कि वे जहाज के बारे में पूरी तरह से भूल गए और द्वीप में इतनी गहराई तक चले गए कि वे कप्तान की आवाज भी नहीं सुन सके [जहाज के आसन्न प्रस्थान से पहले उन्हें वापस बुलाना]। वे फल खाने, फूलों को सूंघने और सुस्वादु बगीचों का भ्रमण करने में इतने तल्लीन थे कि अगर कप्तान की आवाज उन तक पहुंच गई होती, तब भी वे इसे सुन नहीं सकते थे, या अगर उन्होंने इसे सुना होता, तो वे इस पर ध्यान नहीं दे सकते थे। भले ही उनके दिल में क्रूर जानवरों के लिए डर था और वे समझते थे कि द्वीप में क्लेश, चिंताएं और कठिनाइयाँ हो सकती हैं, कांटे जो कपड़ों को टुकड़े-टुकड़े करते हैं, पेड़ जो शरीर को घायल करते हैं, भयावहता और भयानक आवाजें जो दिलों को कांप सकती हैं और अगर वे वापस लौटना चाहते

हैं, तो वे ऐसा नहीं कर पाएंगे। जब वे इन विचारों में उलझन में थे, तो उन्होंने जहाज पर लोगों की आवाज़ें सुनीं। उन्होंने जल्दी से अपने आप को भोजन और गहने से लदे और जहाज की ओर चले गए, लेकिन तब तक, जहाज ने अपना लंगर उठा लिया था और आगे बढ़ने के लिए उतर गया था। ये लोग निराश और निराश होकर तट पर खड़े थे और भय और भय से मर गए। कुछ लोग [जो पीछे रह गए] कप्तान की पुकार भी नहीं सुन सके - उनमें से कुछ जानवरों के लिए भोजन बन गए और कुछ चिंतित और हैरान होकर इधर-उधर घूमते हुए मर गए। किसी ने दलदल में डूबने से अपनी जान गंवा दी तो किसी को सांपों ने काट लिया।

अब जहाज के यात्रियों की स्थिति सुनो। कुछ लोग जो द्वीप में एकत्र की गई चीजों के साथ जहाज पर सवार हुए, वे अपना सामान सिर पर रखकर बैठे रहे। जहाज में बैठने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी, ऊपर से अनावश्यक चीजों के लिए जगह की और भी कमी थी। सफर लंबा था। उनके द्वारा एकत्र की गई चीजों का अंतिम अंत यह था कि फूल मुरझा गए, फल सड़ गए, गहने ने अपने रंग बदल गए, दिमाग उनकी बदबू से फटने लगे, और यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि इसके बारे में क्या करना है और इस सामान को अपने साथ सुरक्षित रूप से कैसे ले जाना है। जब कुछ नहीं सोचा जा सकता था, तो उन्होंने सब कुछ समुद्र में फेंक दिया, लेकिन बदबू ने इतना प्रभाव डाला था कि घर वापस पहुंचना मुश्किल हो गया था। जब वे [आखिरकार] घर पहुंचे, तो कई लोग बीमार हो गए। जो लोग जहाज पर देर से चढ़े, हालांकि वे जगह की कमी के कारण थोड़े चिंतित रहे लेकिन फिर भी सुरक्षित घर पहुंच गए। जो लोग जहाज पर समय पर पहुंचे और उन्हें आरामदायक स्थान मिला, वे यात्रा के दौरान शांतिपूर्ण रहे और सुरक्षित घर पहुंच गए। यह सांसारिक लोगों का उदाहरण है जो क्षणिक सुखों में लिप्त हैं और वे अपने ध्यान [और जीवन के उद्देश्य] और [अपने स्वर्गीय] मूल [जो कि उनका वास्तविक और अंतिम गंतव्य है] के बारे में कितना भूल गए हैं। वे न तो अपने अंतिम अंत के बारे में जानते हैं और न ही वे इस बात से अवगत हैं कि क्या आ रहा है [अपने स्वयं के कार्यों के परिणामस्वरूप]। वे लोग कितने बुरे हैं जो धन और भौतिक वस्तुओं को इकट्ठा करने के बाद खुद को बुद्धिमान और बुद्धिमान समझते हैं, भले ही वे यह नहीं समझते हैं कि ये सांसारिक श्रृंगार की चीजें हैं और इनमें से कोई भी चीज मृत्यु के समय उनके साथ नहीं होगी, बल्कि वे दर्द और कष्टों का स्रोत बन जाएंगे। मृत्यु से पहले, उनके कारण होने वाली कठिनाइयाँ, कम नहीं होती हैं क्योंकि कोई व्यक्ति उन्हें खोने के डर से लगातार परेशान रहता है और उनमें किसी भी कमी का दुःख होता है, उन लोगों को छोड़कर जो परमेश्वर की शरणस्थता और सुरक्षा में हैं, हृदय को रोने के लिए मजबूर करता है। ज्यादातर लोग ऐसे ही होते हैं।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों से कहा: "मेरे, आपके और दुनिया का दृष्टांत कुछ लोगों का है जो रेगिस्तान से यात्रा कर रहे हैं। वे इतने चले कि उन्हें याद नहीं था कि उन्होंने जो दूरी तय की है वह [शेष दूरी से] अधिक है या तय की जाने वाली दूरी अधिक है। [यात्रा के लिए] उनका सब कुछ समाप्त हो गया है, और उनका साहस समाप्त हो गया है। अपने प्रावधानों और बढ़ते सवारी से

वंचित, वे बंजर रेगिस्तान में बने रहे और उन्हें यह निश्चितता थी कि वे मरने के करीब थे। अचानक, उन्होंने देखा कि एक आदमी अच्छी पोशाक में उनके पास आ रहा है, जबकि उसके बालों से पानी की बूंदें टपक रही हैं। उन्होंने सोचा कि यह आदमी एक उपजाऊ क्षेत्र से आया है और वह जगह निश्चित रूप से उनके करीब है। जब वह उनके करीब आया तो उसने उनकी स्थिति के बारे में पूछा। उन्होंने उत्तर दिया: 'आप देख सकते हैं कि हम क्या कष्ट झेल रहे हैं'। अभी-अभी आए आदमी ने कहा: 'अगर मैं तुम्हें मीठे पानी और हरे-भरे बगीचों में ले जाऊं, तो तुम क्या करोगे?' उन्होंने उत्तर दिया, "हम आपकी बात मानेंगे। उसने कहा, "परमेश्वर की शपथ खाकर अपने वादों को दृढ़ करो [कि जैसा तू ने कहा था वैसा ही करोगे। उन्होंने परमेश्वर की शपथ खाई कि वे उसकी अवज्ञा नहीं करेंगे। जैसा कि वादा किया गया था, वह उन्हें मीठे पानी और हरे-भरे बगीचों के झरने में ले गया और कुछ दिनों तक उनके साथ रहा। बाद में, उसने पूछा: 'यात्रा के साथ आगे बढ़ने के बारे में आप क्या कहते हैं?' उन्होंने पूछा, 'हम कहाँ जा रहे हैं?' उन्होंने उत्तर दिया: 'ऐसे जल की ओर जो इस पानी से मीठा है और उन बगीचों की ओर जो इन बगीचों से भी अधिक हरे-भरे हैं। अधिकांश लोगों ने उत्तर दिया: 'हमने यहां जो पाया है, शायद, हम उससे अधिक कहीं और नहीं पा सकते हैं और हमारे पास आराम का जीवन है, शायद, हम इससे अधिक नहीं पा सकते हैं। इसलिए हम आपके साथ नहीं जाएंगे। कुछ लोगों ने जवाब दिया: 'क्या तुमने परमेश्वर की कसम नहीं खाई और परमेश्वर की आज्ञा न तोड़ने का वादा नहीं किया? अब अपना पहला वादा पूरा करते ही अपना वादा पूरा करो, वह अपना दूसरा वादा पूरा करेगा। कुछ लोग उसके साथ चले गए और बाकी रह गए और पिछड़ गए। सुबह में, दुश्मन सेना ने घात लगाकर हमला किया - उन्होंने कुछ को मार डाला और कुछ कैदी बन गए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस अब्दुल्ला बिन अब्बास के अधिकार पर *इब्न अबी अल-दुन्या, अहमद, बजाज़* और *तबारानी को इकट्ठा करता* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

انما مثلي و مثلكم و مثل الدنيا كمثل قوم سلكوا مغازة غبراء حتّٰى اذا لم
يدروا ما سلكوا منها اكثر او ما بقي انفدوا الزاد و خسروا الظهر و بقوا بين ظهرا
في المفازة و لا زاد و لا حولة فايقنوا بالهلكة فبينما هم كذلك اذ خرج عليهم
رجل في حل تقطر راسه فقالوا هذا قريب عهد بريف فلما انتهى اليهم قال: يا
هؤلاء فقالوا: يا هذا فقال: علام انتم فقالوا على ماترى فقال! ادائيتم ان
هديتكم الى ماء رواء و رياض خضر ما تعملون' قالوا لا نعصيك شيئا؟ قال:
عهودكم و مواثيقكم بالله فاعطوه عهودهم و مواثيقهم بالله لا يعصونه شيئا؟
قال: فاوردهم ماء رواء و رياضا خضرا فمكث فيهم ما شاء الله' ثم قال: يا هولاء
قالوا! يا هذا قال الرحيل' قالوا! والى اين؟ قال الى ماء ليس كمائكم والى
رياض ليست كرياضكم فقال اكثرهم والله ما وجدنا هذا حتّٰى ظننا ان لن
نجده و ما نضع بعيش خير من هذا و قالت طائف و هم اقلهم الم تعطوا هذا
الرجل عهودكم و مواثيقكم بالله ان لا تعصوه شيئا و قد صدقكم في اول
حديثه فو الله ليصدقنكم في آخره فراح فيمن اتبعه و تخلف بقيتهم
فبدرهم عدو فاصبحوا بين اسير و قتيل

इस भविष्यवाणी परंपरा में लोगों के दो समूहों का उल्लेख है। एक ईश्वरीय आदेशों का पालन करने वाला है और दूसरा इसके खिलाफ जाता है। उनके पास आने वाला व्यक्ति स्वयं पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो) है, दुनिया वह बंजर रेगिस्तान है जहां कारवां के लोग [एक लंबी और कठिन यात्रा से] थकने के बाद लेट जाते हैं, और वे मीठे पानी के झरने और हरे-भरे बगीचे परलोक के झरने और बगीचे हैं।

सांसारिक सुखों और गतिविधियों में लिप्तता और उनसे वियोग के दर्द का एक दृष्टांत: जिन लोगों के पास सांसारिक धन और संपत्ति है, उनका उपमा किसी ऐसे व्यक्ति की है जो एक घर बनाता है और उसे गहराई से सजाता है और फिर लोगों को घर में आने के लिए आमंत्रित करता है। लोग एक-एक करके आते हैं। जब कोई घर में पैर रखता है, तो मेजबान अतिथि को फूलों और इत्र से लदी सोने की थाली भेंट करता था ताकि मेहमान उन्हें सूंघे और आगे बढ़े, और आने वाले अगले व्यक्ति के लिए थाली छोड़ दे। हालांकि, अगर मेहमान गलती से सोचता है कि मेजबान ने अतिथि को थाली उपहार में दी है और अतिथि अब उस थाली का मालिक है और थाली और उसके इत्र के साथ दिल का लगाव विकसित करता है। जब अतिथि से थाली ले ली जाती है, तो अतिथि को पता चलता है कि फूल और इत्र केवल आनंद लेने के लिए एक को प्रस्तुत किए गए थे और किसी को उनका मालिक बनाने के लिए प्रस्तुत नहीं किए गए थे। इस बिंदु पर, अतिथि का दर्द, दुख और हताशा देखने लायक है। यह गलती इसलिए हुई क्योंकि मेहमान को मेजबान के इन शिष्टाचार और परंपराओं के बारे में पता नहीं था। इसके विपरीत, एक और अतिथि आया, जो मेजबानी परंपरा और शिष्टाचार से परिचित था और थाली ले ली, थोड़ी देर के लिए इसका आनंद लिया, मेजबान को धन्यवाद दिया और प्रसन्नता और खुले दिल के साथ इसे मेजबान को वापस कर दिया। यह उन लोगों की स्थिति है जो दुनिया के बारे में ईश्वर के इस प्राचीन तरीके से अवगत हैं

कि यह दुनिया एक गेस्ट हाउस है जो यात्रियों को [अनन्त जीवन के लिए] समर्पित है ताकि वे यहां एक [संक्षिप्त] पड़ाव बना सकें और अपने अगले गंतव्य के लिए यहां से प्रावधान एकत्र कर सकें। दूसरे शब्दों में, जिस तरह एक यात्री गेस्ट हाउस (या मोटल) का लाभ उठाता है, उसी तरह उन्हें भी दुनिया से लाभ मिलता है [अपनी वास्तविक और अंतिम मंजिल की यात्रा के लिए] और इसे (यानी, इस गेस्ट हाउस को दुनिया कहा जाता है) को अपना स्थायी निवास नहीं मानते हैं, और अपने दिलों को इससे इतना जोड़ लेते हैं कि जब अलग होने का समय आता है, इससे अलग होना, उसे अलविदा कहना और] छोड़ना मुश्किल हो जाता है। यह दुनिया, उसके कष्टों और उसके नुकसानों का उदाहरण है। हम इस मामले में भगवान से मदद मांगते हैं।

एक इंसान के लिए दुनिया की वास्तविकता और प्रकृति

यह याद रखना चाहिए कि सांसारिकता के नुकसान का ज्ञान प्राप्त करना तब तक पर्याप्त नहीं है जब तक कि यह ज्ञात न हो जाए कि दुनिया के कौन से पहलू हानिकारक हैं, दुनिया के कौन से पहलू से बचना चाहिए, और किससे बचना नहीं चाहिए। इस संबंध के साथ, यह निर्धारित करना अनिवार्य है कि क्योंकि यह (दुनिया के हानिकारक पहलू) सत्य के साधकों का दुश्मन है और सत्य के मार्ग का राजमार्ग लुटेरा है। यह ज्ञात होना चाहिए कि संसार और परलोक आपके हृदय की दो अवस्थाएँ हैं - वह अवस्था जो निकट है और वह अवस्था जो दूर है। पहली अवस्था यानी मृत्यु से पहले की अवस्था को विश्व और दूसरी अवस्था कहा जाता है अर्थात मृत्यु के बाद की अवस्था को परलोक कहा जाता है। इससे पता चलता है कि मृत्यु से पहले मनुष्य की आवश्यकता, इच्छा और आनंद से जुड़ी चीजें मनुष्य की दुनिया हैं और वे तीन प्रकार की होती हैं:

पहला प्रकार: इसमें ऐसी चीजें शामिल हैं जो परलोक में आपके साथ रहेंगी और उनके फल मृत्यु के बाद आपके सामने प्रकट होंगे और वे केवल दो चीजें हैं - ज्ञान और [अच्छे, पवित्र और धार्मिक] कर्म। यहाँ ज्ञान का तात्पर्य परमेश्वर के अस्तित्व, गुणों (गुणों) और कार्यों, और स्वर्गदूतों, ईश्वरीय रूप से प्रकट पुस्तकों, [दिव्य रूप से नियुक्त] भविष्यद्वक्ताओं और स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभुत्व को जानने से है। कर्म विशुद्ध रूप से परमेश्वर की भलाई के लिए की गई पूजा को संदर्भित करता है। कभी-कभी, एक विद्वान एक ज्ञान के प्रति इतना आसक्त हो जाता है कि वह सबसे प्रिय और आनंददायक चीज बन जाता है। कोई इसके ऊपर दूसरे आनंद को वरीयता नहीं देता है। ज्ञान के लिए व्यक्ति खाना, पीना, सोना भूल जाता है। कोई विवाह नहीं करता क्योंकि ज्ञान में जो आनंद मिलता है, वह उन [अन्य] चीजों में नहीं पाया जा सकता है, लेकिन जब हम निंदनीय सांसारिकता का उल्लेख करते हैं, तो हम इसे [सांसारिक चीज के रूप में] नहीं गिनते हैं, बल्कि इसे परलोक की चीजों में गिनते हैं। इसी तरह, एक उपासक पूजा के प्रति इतना आसक्त हो जाता है और उसमें इतना आनंद प्राप्त करता है कि यदि किसी को पूजा करने से रोका जाता है, तो यह शायद उसके लिए सबसे बड़ी सजा होगी। एक ऋषि प्रार्थना करते थे: "हे भगवान! मुझे प्रार्थना करने, झुकने और मेरी कब्र में भी आपके सामने प्रणाम करने की शक्ति प्रदान करें। वह इसकी प्रार्थना करता था क्योंकि प्रार्थना उसके लिए [आंतरिक आध्यात्मिक] आनंद का एक सहज स्रोत बन गई थी। इस प्रकार के सुख को सांसारिक भी माना जा सकता है क्योंकि यह इस सांसारिक जीवन में प्राप्त होता है, लेकिन इसे निंदनीय

सांसारिकता के रूप में नहीं गिना जा सकता है। एक प्रसिद्ध भविष्यसूचक कथन में [*हदीस* संग्रह में *नसाई* और *हकीम* अनस के अधिकार पर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो)], पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने प्रार्थनाओं को उन तीन चीजों में गिना जो उन्हें इस दुनिया से पसंद थीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि सुखों को महसूस किया जा सकता है और देखा जा सकता है, और प्रार्थनाएँ भी संवेदी और देखने योग्य होती हैं। [भगवान के प्रणाम] और प्रणाम करने के आंदोलनों के माध्यम से प्राप्त होने वाला आनंद भी एक सांसारिक सुख है, लेकिन यह निंदनीय सांसारिकता नहीं है, इसलिए, हम इस पर आपत्ति नहीं करते हैं।

दूसरा प्रकार: इसमें पूरी तरह से विपरीत प्रकार के स्वाद और सुख शामिल हैं जिनका परलोक में कोई लाभ और परिणाम नहीं है, जैसे, पापों से सुख प्राप्त करना, अनुमेय चीजों का आनंद लेना जो आवश्यकता से अधिक हैं जो अपव्यय और अहंकार की श्रेणी में हैं। उदाहरण के लिए, सोने और चांदी के ढेर, घोड़े (परिवहन के साधन जो गर्व का स्रोत भी हैं), पशुधन, नौकर, महल, महंगे कपड़े, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ, आदि। एक सेवक [परमेश्वर का] उनका आनंद लेना निंदनीय सांसारिकता से है।

तीसरा प्रकार: इसमें उन सुखों को शामिल किया जाता है जो न तो विशुद्ध रूप से सांसारिक हैं और न ही परलोक से संबंधित हैं। इसके बजाय, वे परलोक से संबंधित कर्मों में मदद करते हैं जैसे कि किसी की आवश्यकता के अनुसार भोजन, किसी की आवश्यकताओं के अनुसार कपड़े, और इसमें वह हर आनंद शामिल है जो मनुष्य अपने जीवित रहने के लिए या ज्ञान और कर्मों तक पहुँचने के लिए आवश्यक स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए प्राप्त करता है [जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है और इसके परिणामस्वरूप अनन्त सुख और अंतहीन विजय]। ये सुख पहले प्रकार की तरह नहीं हैं, लेकिन वे पहले प्रकार में मदद करते हैं और उन तक पहुंचने का साधन बन जाते हैं। इसलिए, यदि कोई ज्ञान और [अच्छे धर्म] कर्मों को करने में सक्षम होने के लिए खाता है, तो यह [भोजन] इस दुनिया का नहीं है और वह सांसारिक कहने के योग्य नहीं है। हालांकि, अगर खाने के लिए चालक अल्पकालिक सुख [पाक प्रसन्नता में] है तो यह आनंद एक सांसारिक आनंद होगा और दूसरे प्रकार में गिना जाएगा।

मृत्यु के बाद मनुष्य के पास रहने वाली चीजें: मृत्यु के बाद, एक सेवक के पास केवल तीन चीजें रह जाती हैं - सांसारिकता से प्रदूषण से शुद्ध हृदय [और सांसारिक उलझनों और आसक्ति जो इसे आध्यात्मिक क्षेत्र में उड़ने से रोकते हैं], ईश्वरीय स्मरण के प्रति लगाव और प्रेम, और हृदय की शुद्धि और लंपटता। [सब] ये ईश्वरीय स्मरण और दृढ़ता की प्रचुरता के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं, और ईश्वर का प्रेम ज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, और ज्ञान सतत चिंतन के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। ये तीनों गुण मृत्यु के बाद मनुष्य के लिए मोक्ष और शाश्वत सुख के साधन हैं।

सांसारिक वासनाओं से हृदय की शुद्धि उद्धार योग्य है क्योंकि यह ईश्वरीय प्रतिशोध और मनुष्य के बीच एक बाधा है। ईश्वर के प्रति लगाव और दिव्य प्रेम शाश्वत सुख की कुंजी है। ये दो गुण व्यक्ति को दिव्य दृष्टि और [प्रिय के साथ] मिलन का आनंद प्रदान करते हैं, और यह महान भाग्य मृत्यु के ठीक बाद प्राप्त होता है, और यह अवस्था तब तक बनी रहती है जब तक कि कोई स्वर्ग में ईश्वर की दृष्टि प्राप्त नहीं कर लेता। कब्र स्वर्ग का एक सुंदर बगीचा बन जाता है और ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए जब कब्र के निवासी का सिर्फ एक प्रिय (यानी, भगवान) था? जब ऐसा व्यक्ति दुनिया में था, तो कोई भी प्रिय से नहीं मिल सकता था क्योंकि कुछ बाधाएं थीं। मृत्यु ने उन बाधाओं को दूर किया और व्यक्ति इस दुनिया की जेल से

मुक्त हो गया - एक और प्रिय के बीच एक बाधा के रूप में खड़ी दीवार को हटा दिया गया। अब कोई भी सभी नुकसानों और खतरों से सुरक्षित रहते हुए खुशी-खुशी परलोक में कदम रखेगा। दुनिया के साधक को कब्र में सजा का सामना करना पड़ता है और ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए? किसी का प्रिय सिर्फ एक [वस्तु] था और वह दुनिया थी। उस प्रिय को एक से छीन लिया गया और कब्र की दीवार एक और अपने प्रिय (यानी दुनिया) के बीच एक बाधा बन गई। मृत्यु विलुप्त होने [या मानव अस्तित्व का अंत] का नाम नहीं है, इसके बजाय, मृत्यु एक और एक की प्रिय चीजों के बीच अलगाव का कारण बनती है और एक को ईश्वरीय अदालत में प्रस्तुत किया जाता है। इससे यह ज्ञात होता है कि परलोक के मार्ग पर चलने वाला यात्री वह है जो सदा ईश्वरीय स्मरण और चिंतन में लीन रहता है, और सांसारिक वासनाओं और इच्छाओं को मिटाने वाले कर्मों का ईमानदारी से पालन करता है, उन्हें त्याग देता है और इन सभी चीजों को स्वास्थ्य के बिना संभव नहीं है, जो बदले में भोजन के माध्यम से प्राप्त होता है, कपड़े और निवास [जीने के लिए]। इनमें से प्रत्येक को प्राप्त करना [सांसारिक] साधनों [जैसे व्यापार या रोजगार] पर निर्भर करता है। इसलिए, जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के अनुसार वस्त्र, भोजन और निवास प्राप्त करता है, वह सांसारिक कहलाने के योग्य नहीं है, इसके बजाय, ऐसे के लिए, संसार परलोक के लिए एक खेत होगा। लेकिन अगर कोई इन चीजों को [निम्न] आत्म (नफ्स) की खुशी के लिए या व्यभिचार के लिए प्राप्त करता है, तो वह सांसारिक [व्यक्ति] होगा और उन लोगों में गिना जाएगा जो सांसारिक सुखों में रुचि रखते हैं।

सांसारिक सुखों में भोग के प्रकार : सांसारिक सुखों में भोग दो प्रकार के होते हैं। जिसका भोग ईश्वरीय प्रतिशोध का विषय बन जाता है और जिसे ईश्वर द्वारा निषिद्ध (हराम) में लिप्तता कहा जाता है। दूसरे प्रकार का भोग लिप्त व्यक्ति को उपलब्धि के उच्च स्तर तक पहुंचने से रोकता है [और ईश्वरीय स्वीकृति], इसके बजाय, वे एक लंबी जवाबदेही में शामिल करते हैं [न्याय के दिन]। इस भोग का नाम "अनुमेय मामले" (हलाल) है। बुद्धिमान और आंतरिक अंतर्दृष्टि वाले लोग जानते हैं कि लंबे समय तक जवाबदेही के लिए लंबे समय तक रहना भी ईश्वरीय प्रतिशोध का एक रूप है [सांसारिक जीवन के दौरान सुखों में लिप्त होने के लिए जो आवश्यकताओं की पूर्ति का स्थान है, न कि इच्छाओं की; इच्छाओं की पूर्ति का स्थान अनन्त जीवन है]। भले ही कोई जवाबदेही न हो, लेकिन स्वर्ग में उच्च पदों में कमी और निचले स्व की क्षणिक, विलुप्त और नीच इच्छाओं के कारण उच्च [आध्यात्मिक] पदों से वंचित होने में दिल का दुख, यह अपने आप में एक सजा से कम नहीं है।

आप इस दुनिया में अपनी स्थिति से [परलोक में] अपनी इस स्थिति का अनुमान लगा सकते हैं। जब आप अपने समकालीनों और समान रैंक वाले लोगों को किसी भी क्षेत्र में [मानवीय उपलब्धि और प्रयास] में सफल होते और [अपने और दूसरों के] आगे बढ़ते हुए देखते हैं, तो आप कितना वंचित महसूस करते हैं और दिल आपके पीछे छूट जाने के लिए कितना चिंतित हो जाता है [दूसरों की तुलना में जो आपसे बेहतर कर रहे हैं], भले ही आप जानते हैं कि ये सांसारिक रैंक और आशीर्वाद अस्थायी हैं। वे चिंताओं और कठिनाइयों के साथ आते हैं, उनके साथ मिश्रित होता है। उनके पास स्थायित्व और निर्वाह नहीं है। इस पर विचार करें, जब आप सांसारिक आशीर्वाद न मिलने के लिए इतने दुखी और दुखी हैं, तो आपकी स्थिति क्या होगी जब आपके समकालीन परलोक के क्षेत्र में आपसे आगे निकल जाएंगे और आप एक महान शाश्वत सुख और शाश्वत सफलता से वंचित रहेंगे, जिसकी भव्यता को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है? परलोक में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में अपमान, भय, खतरा, कठिनाई और प्रतीक्षा शामिल है, और ये सभी मामले परलोक की पूर्ति को कम करते हैं। इसलिए, जब उमर बिन अल-खत्ताब (ईश्वर उनसे

प्रसन्न हो) को प्यास लगी [और उन्होंने पानी मांगा], तो उन्हें शहद के साथ मिश्रित पानी का एक ठंडा और मीठा प्याला भेंट किया गया। वह काफी देर तक कप को अपने हाथों में घुमाता रहा [उसमें से एक घूंट भी लिए बिना], फिर उसे वापस प्रस्तुतकर्ता को लौटा दिया और कहा:

اعزلوا عنی حسابها

"मुझे उसकी जवाबदेही से दूर रखो [न्याय के दिन परमेश्वर के सामने]"।

इसका नतीजा यह है कि कमी, प्रचुरता, अनुमेय और निषिद्ध सभी अनावश्यक हैं। केवल उस राशि को इससे बाहर रखा गया है जो किसी को पवित्र विस्मय, श्रद्धा और परमेश्वर के भय में सहायता करती है। सांसारिक आशीषों से दूर रहना किसी की ज्ञान-विज्ञान (मारिफा) की ताकत के समानुपाती होता है। एक बार यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हों) सोने के इरादे से [जमीन पर] लेट गए और अपना सिर एक चट्टान पर रख दिया। शैतान मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ और कहा: "तुम्हारा झुकाव संसार की ओर हो गया है। यह सुनकर, उसने उस चट्टान को लिया [जिसका उपयोग वह जमीन पर आराम करने के लिए अपना सिर रखने के लिए कर रहा था] और उसे फेंक दिया [अपने कार्यों से शैतान को दिखाते हुए कि उसे दुनिया से इतनी भी आवश्यकता नहीं थी]। इसी तरह, पैगंबर सुलैमान (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो), भले ही उनके पास पृथ्वी के खजाने और सांसारिक प्रभुत्व की चाबियां थीं, फिर भी वे खुद जौ की रोटी खाते थे और दूसरों को उत्कृष्ट स्वादिष्ट भोजन खिलाते थे। उन्होंने इस तरह से अपने निचले स्व (नफ्स) को वश में किया और नियंत्रित किया, भले ही यह एक कठिन कार्य था क्योंकि [विभिन्न प्रकार के शानदार] भोजन प्राप्त करने की क्षमता रखते हुए धैर्य का प्रयोग करना तीव्र कठिनाई और आध्यात्मिक प्रयास है, एक सामान्य मनुष्य की क्षमता नहीं है। यही कारण है कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की इच्छा से) से सांसारिक आशीर्वाद को दूर रखा गया था, इसीलिए, वह लगातार कई दिनों तक भूखे रहते थे। (इस परंपरा का वर्णन किसके द्वारा किया गया है? *हदीस* अब्दुल्ला बिन अब्बास के अधिकार पर *तिर्मिधी* और *इब्ने माजा* को इकट्ठा करता है । कभी-कभी भूख की पीड़ा की तीव्रता के कारण वह अपने पेट पर चट्टानें बांध लेता था।

भविष्यद्वक्ताओं और मित्रों और ईश्वर (संतों) के अंतरंग लोगों द्वारा सामना की जाने वाली निरंतर कठिनाइयों और क्लेशों का कारण यह है कि परलोक में उनका अधिकतम हिस्सा होगा और किसी भी सांसारिक सुख के कारण परलोक में उनका हिस्सा कम नहीं होगा। यह ठीक वैसा ही है जैसे एक स्नेही पिता अपने बेटे को स्वादिष्ट भोजन खाने से रोकता है और उसे उसकी बीमारी के लिए चिकित्सा उपचार कराने के लिए मजबूर करता है। वह कंजूसी या कठोर हृदय से ऐसा नहीं करता है, बल्कि अपनी भलाई के लिए अपने बेटे के लिए प्यार और स्नेह से मजबूर होने के कारण ऐसा करता है। अब इससे यह स्पष्ट हो गया है कि जो कुछ भी परमेश्वर के लिए है वह संसार नहीं है और जो कुछ भी परमेश्वर के लिए नहीं है वह संसार (या सांसारिकता) है।

दुनिया की वास्तविकता और भोग जो मनुष्य को अपने स्वयं को, ब्रह्मांड के निर्माता और अपने स्वयं के अंत को भूलने का कारण बनते हैं जब वे उनमें डूबे होते हैं

यह ज्ञात होना चाहिए कि दुनिया उन चीजों का नाम है जो मौजूद हैं और मनुष्य द्वारा आनंद लिया जाता है और जिनकी भलाई में कोई लगा हुआ है। ये तीन बातें हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि इन तीन चीजों में से एक को दुनिया (सांसारिकता) कहा जाता है। भगवान कहते हैं:

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى ٱلْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

"हमने पृथ्वी पर बहुत सी चीजें बनाई हैं, जो इसके अलंकरण के कारण हैं, ताकि उन लोगों की परीक्षा लें जो अच्छे काम करते हैं। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 7)

पृथ्वी एक बिस्तर, एक निवास और एक स्टेशन (एक अस्थायी विश्राम स्थल) की तरह है और जो कुछ भी उस पर है उसमें किसी की पोशाक, भोजन और मैथुन शामिल है। पृथ्वी पर मौजूद सभी चीजों में से, उन सभी को इन तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है: खनिज, पौधे और जीवित प्राणी। मनुष्य पौधों से भोजन और औषधियां प्राप्त करता है, तांबा और स्टील जैसे खनिजों से उपकरण और बर्तन बनाता है या उन्हें नकदी के रूप में रखता है जैसे कि सोने और चांदी के सिक्के उनसे बनाए जाते हैं या उनसे आभूषण बनाए जाते हैं। जीव दो प्रकार के होते हैं - मनुष्य और जानवर। मांस, सवारी और अलंकरण के लिए जानवरों की आवश्यकता होती है। मनुष्य को उनकी सेवाओं के लिए आवश्यक है [अनगिनत मामलों में किसी की जरूरतों के लिए क्योंकि मनुष्य हर चीज के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं], जीवनसाथी के मामले में साहचर्य है, या उद्देश्य केवल अपने दिलों को अपनी ओर झुकाना है - दूसरे शब्दों में, प्रसिद्धि की इच्छा। ये वे चीजें हैं जिन्हें "दुनिया" (दुनिया) कहा जाता है। परमेश्वर ने इन सभी को एक श्लोक में इस प्रकार जोड़ा है:

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ ٱلشَّهَوَٰتِ مِنَ ٱلنِّسَآءِ وَٱلْبَنِينَ وَٱلْقَنَٰطِيرِ ٱلْمُقَنطَرَةِ مِنَ

ٱلذَّهَبِ وَٱلْفِضَّةِ وَٱلْخَيْلِ ٱلْمُسَوَّمَةِ وَٱلْأَنْعَٰمِ وَٱلْحَرْثِ

"लोगों को महिलाओं, बेटों, सोने और चांदी के भंडार, चिह्नित घोड़ों, पशुधन, और जुताई [खेतों और विभिन्न अन्य व्यवसायों में शामिल हैं] के बीच से प्यारी चीजों का प्यार सुखद लगता है। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 14)

इस आयत में, महिलाएं और बेटे मनुष्यों को संदर्भित करते हैं, सोना और चांदी खनिजों और गहनों को संदर्भित करते हैं, घोड़े और पशुधन जानवरों को संदर्भित करते हैं और जुताई पौधों को संदर्भित करती है।

सांसारिक चीजों के साथ एक सेवक का संबंध: एक सेवक [ईश्वर का, यानी, मनुष्य] के पास सांसारिक चीजों के साथ [संबंध] के दो क्षेत्र हैं। पहला क्षेत्र हृदय के साथ है और वह यह है कि व्यक्ति उनसे प्रेम

करता है, उनका लाभ उठाता है, और अपनी प्राप्ति में अपने विचारों को इस हद तक व्यस्त रखता है कि हृदय उसका कैदी बन जाता है, और फिर इस क्षेत्र में, हृदय के वे सभी [अवांछनीय और नकारात्मक] गुण प्रवेश करते हैं, जो अहंकार जैसे संसार से संबंधित होते हैं, कंजूसी, ईर्ष्या, दिखावा, प्रसिद्धि का प्यार, दूसरों के बारे में बुरी राय, कटुता, प्रशंसा का प्यार, घमंड और श्रेष्ठता जटिल। इस क्षेत्र को आंतरिक दुनिया कहा जाता है। दूसरे क्षेत्र को बाहरी दुनिया कहा जाता है जो प्रकृति में भौतिक है। दूसरे शब्दों में, शरीर को उन चीजों की बेहतरी में व्यस्त रखना जो किसी को आनंद लेने में सक्षम बनाती हैं। इनमें वे सभी उद्योग और पेशे शामिल हैं जिनमें लोग शामिल होते हैं और व्यस्त रहते हैं।

इन दो क्षेत्रों के कारण - हृदय का प्रेम क्षेत्र [पहले वर्णित विभिन्न चीजों का] और शरीर का भोग का क्षेत्र [विभिन्न व्यवसायों और उद्योगों में] - लोगों ने अपने स्वयं (*नफ्स*) और अपने जीवन के उद्देश्य की उपेक्षा की है और भूल गए हैं। यदि वे अपने आप को, अपने भगवान को पहचानते हैं और जानते हैं, और दुनिया के निर्माण के पीछे के रहस्य और ज्ञान को जानते हैं, तो वे यह समझना शुरू कर देंगे कि जिन चीजों को हमने दुनिया कहा है (मनुष्य, खनिज, जानवर और पौधे) उस सवारी पर्वत के लिए चारे के रूप में बनाया गया है जिस पर आप सवार हैं, और परलोक के मार्ग पर अपने रास्ते पर यात्रा कर रहे हैं। यह घुड़सवारी पर्वत आपका शरीर है और शरीर भोजन, पानी, कपड़े और निवास के बिना जीवित नहीं रह सकता है। ठीक उसी तरह जैसे ऊंट घास, अनाज और पानी के बिना हज (मानवता के लाभ के लिए पृथ्वी पर रखे गए भगवान के पवित्र प्रतीकात्मक घर की तीर्थयात्रा) के लिए अपनी यात्रा पर जीवित नहीं रह सकता है। मनुष्य ने दुनिया में आने के बाद अपने स्वयं (*नफ्स*) और जीवन के उद्देश्य की उपेक्षा की है। यह एक तीर्थयात्री की तरह है जो [अंतिम गंतव्य तक] रास्ते में एक स्टेशन पर रुकता है, ऊंट को भरपूर मात्रा में खिलाता है, उसकी अच्छी देखभाल करता है, उसे नहलाता है, उसे सजाता है, उसके लिए विभिन्न प्रकार की घास इकट्ठा करता है, उसके लिए ठंडे पानी की व्यवस्था करता है, और इस तरह कारवां आगे बढ़ता है और ऊंट का यह कैदी पीछे रह जाता है। यह तीर्थयात्री ऊंट की सेवा में इतना व्यस्त है कि न तो इस यात्रा के उद्देश्य का बोध रह गया और न ही यह बोध रह गया कि जब कारवां एक को पीछे छोड़कर आगे बढ़ गया है और यह भयावह जंगल किसी की कब्र बन जाएगा, तो यात्रा कैसे आगे बढ़ाई जाएगी। जंगली जानवर न तो एक को छोड़ेंगे और न ही किसी के ऊंट को। एक बुद्धिमान तीर्थयात्री केवल एक ही उद्देश्य को दृष्टि में रखता है और ऊंट को प्रदान की जाने वाली सेवा की मात्रा [केवल ऊंट को चालू रखने के लिए आवश्यक मात्रा में होगी और] उसी उद्देश्य का हिस्सा होगी और उस उद्देश्य की प्राप्ति का एक साधन होगा। कोई भी राइडिंग माउंट की सेवा में केवल उस हद तक व्यस्त रहेगा जब तक कि उसकी ताकत बनी रहे और राइडर को अंतिम गंतव्य तक पहुंचाने में सक्षम हो। परलोक के मार्ग पर चलने वाले बुद्धिमान यात्री की भी यही स्थिति है। शरीर की सेवा उतनी ही होगी जितनी जरूरत होगी। जिस तरह कोई अनावश्यक रूप से टॉयलेट नहीं जाता है, उसी तरह शरीर की अनावश्यक सेवा नहीं करता है। मेरी राय में, पेट में खाना डालने और वहां से बाहर निकालने में कोई अंतर नहीं है। ये दोनों ही शरीर की जरूरतें हैं। जिस तरह भोजन को अनावश्यक रूप से शरीर से बाहर नहीं निकाला जाता है, उसी तरह इसे अनावश्यक रूप से नहीं डालना चाहिए। वह चीज जो मनुष्य को परमेश्वर और न्याय के दिन से दूर करती है वह है पेट। ऐसा इसलिए है क्योंकि भोजन अधिक महत्वपूर्ण है। पेट की तुलना में कपड़े और रहने से जुड़ा मामला उतना मुश्किल नहीं है। खुले आसमान के नीचे कपड़ों के बिना रह सकता है लेकिन भूखा-प्यासा नहीं रह सकता।

यदि लोगों को इन चीजों की आवश्यकता का कारण पता चल जाए, तो वे केवल आवश्यक (आवश्यक) राशि से ही संतुष्ट होंगे। जो लोग सांसारिक कामों में तल्लीन हैं, वे ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वे दुनिया की वास्तविकता और ज्ञान से परिचित नहीं हैं। वे सांसारिक कार्यों में इतनी बुरी तरह से फंस गए हैं कि वे अपने स्वयं के [सच्चे] उद्देश्यों को भूल गए हैं और केवल उन कार्यों को याद करते हैं जिनमें वे लगे हुए हैं। अब सांसारिक व्यस्तताओं के बारे में एक स्पष्टीकरण प्रदान किया जाएगा और लोगों को उनकी आवश्यकता क्यों महसूस होती है और वे उनमें शामिल होकर अपने जीवन के उद्देश्य को कैसे भूल जाते हैं।

तीन मानवीय आवश्यकताएं: सांसारिक व्यस्तताओं में वे सभी उद्योग और व्यवसाय शामिल हैं जिनमें लोग व्यस्त हैं। इन व्यस्तताओं की प्रचुरता का कारण यह है कि मनुष्य को तीन चीजों की आवश्यकता होती है: भोजन, कपड़े और निवास। भोजन जीवित रहने के लिए है, कपड़े गर्मी और ठंड को दूर करने के लिए है, और गर्मी, ठंड, बारिश से बचाने और पत्नी, बच्चों और संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए निवास है। परमेश्वर, महान ने इन तीन चीजों में से कुछ भी नहीं बनाया है जिसका किसी भी उद्योग या व्यवसायों से कोई लेना-देना नहीं है। दूसरी ओर, यह जानवरों के लिए समान नहीं है। उदाहरण के लिए, वे घास खाते हैं और उन्हें खाना नहीं बनाना पड़ता है, गर्मी और ठंड उनके शरीर को प्रभावित नहीं करती है, इसीलिए, उन्हें कपड़े और निवास की आवश्यकता नहीं है। उनके कपड़े उनकी त्वचा और बाल हैं, और उनके निवास जंगल और रेगिस्तान हैं। वे खुले आसमान के नीचे अपना जीवन जी सकते हैं। मनुष्य ऐसा नहीं है क्योंकि जीवन की आवश्यकताओं के लिए पांच बुनियादी उद्योगों और व्यवसायों की आवश्यकता होती है: खेती, चराई [पशुधन के लिए], शिकार, बुनाई और निर्माण। निर्माण एक घर बनाने के लिए है, बुनाई और उससे संबंधित मामलों को कपड़ों के लिए, घुड़सवारी के लिए चराई और मांस प्राप्त करने के लिए [पशुधन से], भोजन के लिए खेती और खेती करने के लिए है, और शिकार का अर्थ है जो परमेश्वर ने शिकार के संदर्भ में बनाया है [जैसे मछली और जानवर], खनिज, घास, लकड़ी, प्राकृतिक संसाधन, आदि।

व्यवसायों का विभाजन: किसान फसलों का उत्पादन करता है, चरवाहा जानवरों की रक्षा करता है और प्रजनन करता है, एक शिकारी (या एक प्राकृतिक संसाधन खोजकर्ता और संग्रहकर्ता) उन चीजों को प्राप्त करता है जो स्वाभाविक रूप से मौजूद हैं, उन्हें बनाने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे कई उद्योग और कौशल हैं जो इसमें शामिल हैं और उनमें से प्रत्येक को अपने स्वयं के उपकरणों की आवश्यकता होती है। ये उपकरण या तो पौधों (लकड़ी) या खनिजों (जैसे लोहे और तांबा) या जानवरों के फर से बने होते हैं। बदले में इसके लिए तीन उद्योगों की आवश्यकता होती है: शिल्प कौशल, लोहे का काम और चमड़े का काम। ये सभी व्यवसाय उपकरण बनाने से संबंधित हैं। ये बुनियादी कौशल और व्यवसाय हैं [और अन्य सभी इन बुनियादी व्यवसायों से उत्पन्न हुए हैं]।

मानव का निर्माण और सामूहिक अस्तित्व: मनुष्य को इस तरह से बनाया गया है कि कोई अकेले जीवन नहीं जी सकता है और अपनी तरह के अन्य व्यक्तियों के साथ सामूहिक अस्तित्व रखने के लिए मजबूर है। इसके दो कारण हैं। एक कारण यह है कि मानव जाति के अस्तित्व के लिए, किसी को मानव जाति को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है जो वैवाहिक जीवन में एक पुरुष और एक महिला के मिलन के बिना नहीं हो सकती है। दूसरा कारण यह है कि व्यक्ति स्वयं सभी कार्यों को करने में सक्षम नहीं है। खाना, पीना, कपड़े पहनना, बच्चों की परवरिश और इस तरह के अन्य मामले, व्यक्ति को दूसरों के साथ सहयोग की आवश्यकता का एहसास कराते हैं। बच्चे एक पुरुष और एक महिला के बीच के रिश्ते से पैदा

होते हैं और एक अकेला व्यक्ति अपनी परवरिश से लेकर अपने भोजन और कपड़ों के प्रावधान तक सभी जिम्मेदारियों को अकेले पूरा नहीं कर सकता है। इसके अलावा, [केवल] पति या पत्नी और बच्चों के साथ सामूहिक अस्तित्व होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि अपना जीवन जीने के लिए, बहुत सारे लोगों का होना महत्वपूर्ण है ताकि प्रत्येक व्यक्ति एक अलग व्यवसाय अपनाए। एक व्यक्ति खेती से संबंधित सभी कार्य नहीं कर सकता है क्योंकि खेती के लिए ऐसे उपकरणों की आवश्यकता होती है जो लोहे के कारीगर और शिल्पकार के बिना नहीं बनाए जा सकते हैं। फसल से भोजन तैयार करने के लिए, अनाज को पीसने के लिए किसी और रोटी पकाने के लिए एक बेकर की आवश्यकता होती है। इसी तरह, कोई भी अकेले कपड़े नहीं बना सकता है, क्योंकि सबसे पहले, किसी को कपास उगाने की आवश्यकता होगी और फिर बुनाई और सिलाई के लिए उपकरण बनाने होंगे। उपकरण बहुत अधिक हैं, और एक व्यक्ति अकेले इन सभी उपकरणों को स्वयं तैयार नहीं कर सकता है। इसी तरह, मनुष्य के लिए अकेले रहना संभव नहीं है, इसके बजाय, सामूहिक अस्तित्व अनिवार्य है। यदि यह सामूहिकता रेगिस्तान में है या खुले आसमान के नीचे एक नंगी भूमि पर है तो वे गर्मी, ठंड और बारिश से पीड़ित होंगे। वे चोरों और लुटेरों के हाथों परेशान होंगे। इसीलिए, घर बनाना और हर परिवार का अपना घर होना आवश्यक हो गया, जहां वे अपनी संपत्ति के साथ सुरक्षित जीवन बिताएं, गर्मी, ठंड और बारिश से खुद को बचाएं, और अपनी आजीविका के साधनों की रक्षा करें। चूंकि चोर और लुटेरे ठोस निर्मित घर में घुस सकते हैं और अपने निवासियों को परेशान कर सकते हैं, उनकी संपत्ति और साधन लूट सकते हैं, इसलिए घरों के चारों ओर ऊंची चारदीवारी बनाने की आवश्यकता उत्पन्न हुई। इस आवश्यकता ने शहरों और बस्तियों का आधार बनाया। फिर जब लोग घरों और शहरों में इकट्ठा होते थे और आपसी व्यवहार करते थे, तो इससे उनके आपसी विवाद होते थे। इसी तरह, आपसी मतभेद भी [इस सामूहिक जीवन से] पैदा हुए। पति के पास अपनी पत्नी की जिम्मेदारी है और पिता के पास अपनी संतानों के लिए जिम्मेदारी है, क्योंकि संतान कमजोर होती है और उन्हें अपना जीवन जीने के लिए अपने माता-पिता के समर्थन की आवश्यकता होती है। जिम्मेदारी और संरक्षकता के परिणामस्वरूप संघर्ष और विवाद होते हैं, इसके विपरीत, जानवरों पर संरक्षकता के परिणामस्वरूप विवाद नहीं होता है क्योंकि उनके पास विवाद करने और विरोध करने की ताकत भी नहीं होती है, भले ही उनके खिलाफ उत्पीड़न किया जाता हो। दूसरी ओर, एक महिला अपने पति के साथ विवाद करेगी और उसके खिलाफ उठ खड़ी होगी यदि उसके साथ अन्याय किया जाता है। बच्चे अपने माता-पिता के साथ बहस करते हैं। यह घर की स्थिति (या परिवार के भीतर) है। एक शहर में लोगों के बीच आपसी व्यवहार होता है और इसके परिणामस्वरूप, मतभेदों और संघर्षों का सामना करना पड़ता है। अगर उन्हें अकेला छोड़ दिया गया तो वे आपस में लड़कर एक-दूसरे को मार डालेंगे। यही हाल चरवाहों और किसानों का भी है। यदि वे चारागाहों, खेतों, नदियों और कुओं जैसे साझा [प्राकृतिक] संसाधनों से लाभान्वित होते हैं और उनके उद्देश्य उनसे पूरे नहीं होते हैं, तो उनके बीच आपसी मतभेद निश्चित रूप से बढ़ेंगे। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो कमजोरी, बीमारी, बुढ़ापे या अन्य कारणों से खेती करने या किसी उद्योग में काम करने में असमर्थ होते हैं। अगर इन लोगों को असहाय छोड़ दिया जाता है, तो वे बर्बाद हो जाएंगे (या नष्ट हो जाएंगे)। यदि उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी हर किसी पर डाल दी जाती है, तो इससे मामला हल नहीं होगा या यदि किसी एक व्यक्ति पर विशेष रूप से डाल दिया जाता है तो कोई उस जिम्मेदारी को [अकेले] क्यों उठाएगा। इन [सम्मोहक] कारणों और बाधाओं के कारण, कई अन्य उद्योगों का जन्म हुआ। उनमें से एक माप का कौशल है और इसके माध्यम से भूमि की मात्रा को मापा जा सकता है। कानून प्रवर्तन के पेशे का जन्म इसलिए हुआ क्योंकि विवादों के समय चीजों का सही आकलन किया जा सकता है

ताकि हर सही मालिक को अपना अधिकार मिल सके। जो लोग इस पेशे में पारंगत हैं, वे अपने हथियारों से शहरों की रक्षा करते हैं और शहरवासियों को चोरों और उनके दुश्मनों से बचाते हैं। एक हुनर है प्रशासन और शासन और इसकी मदद से शहरवासियों के आपसी विवादों का समाधान होता है। ऐसा ही एक कौशल है ईश्वरीय कानून (*फिक़्ह*), दूसरे शब्दों में, उन ईश्वरीय आदेशों और कानूनों से परिचित होना जिनका उपयोग सृष्टिओं के जीवन में अनुशासन पैदा करने और लोगों को ईश्वर की सीमाओं से परिचित कराने के लिए किया जाता है ताकि वे सभी मामलों में ईश्वरीय कानून की सीमा के भीतर रहें और विवादों में शामिल न हों। ये कौशल शहर प्रशासन से संबंधित हैं और उनकी आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता है। केवल वे विशिष्ट लोग ही इन कौशलों में व्यस्त हो सकते हैं जिनके पास ज्ञान, विवेक, मार्गदर्शन और इस तरह के अन्य गुण हैं।

यह स्पष्ट है कि यदि ये लोग इन कौशलों और व्यवसायों में शामिल हैं, तो वे कुछ और नहीं कर पाएंगे। उन्हें जीविकोपार्जन की जरूरत है और शहर के निवासियों को [प्रशासन के लिए] उनकी आवश्यकता है। अगर मान लीजिए कि शहर के सभी लोग युद्ध में शामिल हो जाते हैं, तो सभी उद्योगों को रोक दिया जाएगा। इसी तरह, यदि सभी सैनिक जीविकोपार्जन के लिए उद्योगों और व्यवसायों में लगे हुए हैं, तो शहर (और देश) असुरक्षित हो जाएंगे [हमलावर सेनाओं के खिलाफ कोई बचाव नहीं होने के कारण] और निवासियों का जीवन हर समय खतरे में पड़ जाएगा। इसीलिए, ऐसे लोगों की आय और जीविका के लिए पैसा खर्च करने की आवश्यकता उत्पन्न हुई, उन स्रोतों से जो किसी विशिष्ट व्यक्ति के स्वामित्व में नहीं हैं (सार्वजनिक धन जो सार्वजनिक भलाई के लिए उपयोग किए जाते हैं)। एक शहर के निवासियों को अपने संसाधनों के साथ उनकी मदद करने की आवश्यकता होगी ताकि वे [बदले में] शहर की रक्षा करने में मदद कर सकें। इससे करों की आवश्यकता पैदा हुई। करों से संबंधित मामलों से कई अन्य आवश्यकताएं उत्पन्न हुईं। उदाहरण के लिए, किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो काश्तकारों और धनी व्यक्तियों पर निष्पक्षता के साथ कर लगाए। इसके साथ ही, एकत्रित करों को सुरक्षित रखने के लिए एक कर संग्रहकर्ता और एक कोषाध्यक्ष की आवश्यकता थी। एक कर वितरक भी अपरिहार्य था। इन सभी जरूरतों के परिणामस्वरूप योग्य व्यक्तियों को जिम्मेदारियां सौंपी गईं। एक ऐसे नेता की आवश्यकता थी जो करों को इकट्ठा करने, उन्हें वितरित करने में न्याय के साथ काम करे, युद्ध की स्थिति में सैनिकों का उपयोग करे, उन्हें रक्षा के लिए हथियार दे, सेना के एक नेता की नियुक्ति करे, राज्य के मामलों के प्रबंधन के लिए असंख्य लोगों की नियुक्ति करे। इन सभी लोगों (सार्वजनिक कार्यालयों में नियुक्त) को वेतन की आवश्यकता है क्योंकि वे अपनी सार्वजनिक जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए अन्य व्यवसायों को नहीं अपना सकते हैं। इन सभी प्रयासों [प्रशासन से संबंधित] संसाधनों की आवश्यकता होती है जिन्हें करों जैसे साधनों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

इस पर विचार करें! भोजन, कपड़े और रहने के लिए जगह की आवश्यकता ने कई अन्य जरूरतों को जन्म दिया। बाकी सब सांसारिक मामलों की स्थिति ऐसी ही है। यदि एक दरवाजा [मानवीय आवश्यकता और प्रयास के लिए] खोला जाता है, तो यह कई अन्य दरवाजों को अपने आप खुलने का कारण बनता है और घटनाओं की यह श्रृंखला समाप्त नहीं होती है जैसे कि दुनिया एक गड्ढे की तरह है जिसकी गहराई की कोई सीमा नहीं है। जब कोई इंसान इस दुनिया में एक खाई में गिर जाता है और उससे बाहर नहीं निकल पाता है, तो वह दूसरी खाई में गिर जाता है और वहां से तीसरे में गिर जाता है। ये रचनाओं की व्यस्तता, [विविध] प्रयासों और आर्थिक संघर्षों के कुछ उदाहरण हैं। लोग दिन-रात इन कामों में व्यस्त रहते हैं। हर

व्यक्ति पैसा कमाने का जुनूनी है और उसने इसे अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया है। व्यक्ति अपनी गतिविधियों [और विभिन्न सांसारिक व्यस्तताओं] में इतना तल्लीन होता है कि उसके पास न तो अपने अस्तित्व का कोई बोध बचा है और न ही अपने जीवन के [वास्तविक] उद्देश्य की प्राप्ति या मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में विचार करता है। सभी लोग दुनिया के लिए लगातार संघर्ष कर रहे हैं और [उस संघर्ष में ताकि वे अपनी आत्माओं को भूल जाएं] भ्रमित होकर घूम रहे हैं। सांसारिक व्यस्तताओं से उत्पन्न कीचड़ उनकी कमजोर बुद्धि और अपूर्ण मन पर इतना हावी हो गया है कि उनके विचार भी उथल-पुथल और भ्रष्टाचार से नहीं बचे हैं!

सांसारिकता में लीन लोगों के प्रकार: दुनिया में तल्लीन लोगों के न तो विचार एक जैसे होते हैं और न ही उनका कोई सामान्य उद्देश्य होता है। कुछ लोगों का एक दृष्टिकोण होता है, कुछ का दूसरा दृष्टिकोण होता है। ऐसे ही लोगों के एक समूह की आँखें असावधानी और अज्ञानता के मोटे पर्दे से इस हद तक ढकी हुई होती हैं कि उनकी आँखों (अंतर्दृष्टि) में उनके अंतिम छोर पर नज़र डालने की कोई क्षमता नहीं बचती है। वे कहते हैं कि हमारे पास दुनिया में रहने के लिए जीवन के केवल कुछ दिन (थोड़े समय की अवधि) हैं, इसीलिए, हमें कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है ताकि हम अपना जीविका अर्जित कर सकें, खा सकें और खाने से शक्ति प्राप्त कर सकें ताकि हम फिर से जीविका अर्जित कर सकें। दूसरे शब्दों में, वे कमाने के लिए खाते हैं। यह साधकों, पेशेवरों और उन लोगों का दृष्टिकोण है जिनके पास न तो [बहुत सारे] सांसारिक सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं और न ही उनके पास धर्म में कोई हैसियत (बहुत अभ्यास) है। वे दिन में बहुत मेहनत करते हैं ताकि वे रात में भरपेट खा सकें और रात में खाते हैं ताकि वे दिन में कड़ी मेहनत कर सकें। यह एक ऐसी यात्रा और एक चक्र है जो केवल मृत्यु में समाप्त होगा।

कुछ लोग अपनी रचना के उद्देश्य को जानने का दावा करते हैं। वे कहते हैं कि ईश्वरीय कानून का उद्देश्य मनुष्यों से [धार्मिक] कर्म करवाना नहीं है और वे सांसारिक सुखों से किसी भी सुख का आनंद नहीं लेते हैं, इसके बजाय, मानव उपलब्धि (साद) की परिणति मनुष्य के लिए पेट और निजी अंगों की वासनाओं को पूरा करना है। इन लोगों ने अपने स्वयं (*नफ्स*) की भी उपेक्षा की है और शारीरिक सुखों और स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों में इतने तल्लीन हैं कि कुछ भी [और] याद नहीं किया गया है। उन्होंने जानवरों की तरह अपना जीवन जीना शुरू कर दिया और इसके ऊपर वे दावा करते हैं कि वासना (भोग और शारीरिक सुख) [जीवन का] वास्तविक उद्देश्य हैं। ऐसे मनुष्य हैं जो दिव्य याद और परलोक की याद से बेपरवाह रहते हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि मानव उपलब्धि (सादा) की वास्तविक परिणति धन और खजाने की प्रचुरता है। इसलिए, उन्होंने लंबी यात्राएं करके भौतिक संपत्ति [और धन] इकट्ठा करने में दिन के दौरान अपनी रात की नींद और शांति को बर्बाद कर दिया है और रास्ते की हर कठिनाई को सहन किया है, धन के लिए हर तरह का काम किया है, चाहे कितनी भी कठिनाई और अपमान क्यों न हो। वे सिर्फ कमाने और जमा करने में लगे रहते हैं, जिस हद तक वे [न्यूनतम आवश्यकता] से अधिक खाना पसंद नहीं करते थे, क्योंकि उनकी कंजूसी उन्हें कुछ भी खर्च करने और उनकी पूंजी में कमी का कारण नहीं बनती थी। यह ऐसा है मानो धन का संचय उनके लिए आनंद का स्रोत बन गया और अपने जीवन की अंतिम सांस तक वे उस आनंद में तब तक तल्लीन रहे जब तक कि मृत्यु नहीं आ गई और वह सारा खजाना पृथ्वी में दफन रह गया [या जहां भी उन्होंने इसे गुप्त रूप से संग्रहीत किया] या अन्य लोगों के हाथों में आ गया, जिन्होंने उन सभी को वासना और आनंद के रास्ते में बिताया। उन्होंने स्वयं कठिनाइयों के अलावा [अपने अथक प्रयासों से]

कुछ भी हासिल नहीं किया, परलोक में परिणाम इसके शीर्ष पर थे, आनंद केवल अन्य लोगों द्वारा प्राप्त किया गया था जो उनके प्रयासों से लाभान्वित हुए थे। यह आश्चर्य की बात है कि लोग देखते हैं कि कंजूस [और जमाखोर] कैसे समाप्त हो जाते हैं, लेकिन [फिर भी] परवाह नहीं करते हैं।

कुछ लोगों ने सोचा कि मानवीय उपलब्धि (सादा) की वास्तविक परिणति यह है कि उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए [और बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करनी चाहिए] और यह कि प्रत्येक व्यक्ति को उनके अच्छे कपड़ों, उनके बेदाग, सुरुचिपूर्ण और अलंकृत बाहरी रूपों की प्रशंसा करनी चाहिए। ऐसे लोग भी दिन-रात पैसे कमाने में व्यस्त रहते हैं, लेकिन वे खाने-पीने (भोजन) में खुद को विवश करते हैं और अपना सारा पैसा अच्छे कपड़े और अच्छी सवारी की खरीद में खर्च कर देते हैं। वे आंखों को चकाचौंध करने के लिए घर के दरवाजों और बाहरी दीवारों को [सुंदर] पेंट से चमकते हैं ताकि उन्हें देखने वाले लोग यह सोचने लगें कि घर का मालिक इतना अमीर है। यह स्तुति उनका बहुत ही आनंद और नशा है, और इसी आनंद के लिए वे दिन-रात कमाते हैं, बिना इस बात की परवाह किए कि उनकी मेहनत की कमाई कहां खर्च की जा रही है।

कुछ लोगों ने सोचा कि मानव उपलब्धि (सादा) की वास्तविक परिणति प्रसिद्धि और पद प्राप्त करने में है जिसका हर कोई सम्मान करता है और विनम्रता और सम्मान के साथ प्रणाम करता है और आज्ञाकारी बन जाता है। लोगों के अनुयायियों को प्राप्त करने के लिए, रैंक (उच्च सामाजिक स्थिति और शक्ति) और प्रतिष्ठा (प्रसिद्धि) की आवश्यकता थी। इसीलिए, उन्होंने सरकार में एक भूमिका हासिल करने का प्रयास करना शुरू कर दिया ताकि वे ऐसे निर्णय लेने की स्थिति में हो सकें जो लागू हो जाएं। कुछ लोगों पर शासन करना और उनकी आज्ञाकारिता प्राप्त करना उनका उद्देश्य है। यह बात अधिकांश लोगों में मौजूद है कि वे लोगों के अनुसरण को सब कुछ मानते हैं और उनकी आज्ञाकारिता (या किसी भी मामले में अनुसरण करना) ने उन्हें परमेश्वर की आज्ञाकारिता, आराधना और परलोक की कल्पना से बेखबर कर दिया है।

ये कुछ प्रकार के लोग हैं [जो सांसारिकता में तल्लीन हैं]। उनके अलावा कुछ अन्य संप्रदाय (लोगों के समूह) हैं जिनकी संख्या सत्तर से अधिक है। ये सभी समूह आंतरिक रूप से गुमराह होते हैं, और वे दूसरों को सत्य के मार्ग से गुमराह करते हैं। इस गुमराह की ओर उनके झुकाव का असली कारण यह है कि सांसारिक जीवन में वे अच्छा भोजन, अच्छे कपड़े और अच्छा घर चाहते हैं। भोजन, कपड़े और घर की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह भी देखा जाना चाहिए कि तीनों [चीजों] में से प्रत्येक में से कितनी राशि [किसी की वास्तविक जरूरतों के लिए] पर्याप्त है। आवश्यकता से अधिक राशि की आवश्यकता और इच्छा ने उन्हें इतना धक्का दिया और प्रेरित किया है कि दुनिया उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य बन गई है और वे इस उद्देश्य की ओर इस तरह से दौड़े कि वे अपने अंतिम अंत को भूल गए। वे लोग जो जीवन के साधनों - भोजन, वस्त्र और निवास की आवश्यकता को समझते हैं और अपने वास्तविक उद्देश्य से परिचित हैं, किसी भी कार्य में [इस तरह से] तल्लीन नहीं होते हैं कि वे अपनी सृष्टि के उद्देश्य की उपेक्षा करते हैं। वे जो भी काम करते हैं, उन्हें उसके उद्देश्य का ज्ञान होता है और उसमें उनका हिस्सा होता है। यह स्पष्ट है कि आर्थिक संघर्ष का उद्देश्य भोजन और वस्त्रों के माध्यम से शरीर की रक्षा करना है ताकि शरीर की मृत्यु न हो, और "पूजा" के उद्देश्य के लिए जिसे इसे बनाया गया है, प्राप्त किया जाता है। जो लोग दुनिया में अपने हिस्से का कम हिस्सा प्राप्त करते हैं, वे अपना ध्यान परलोक की ओर निर्देशित करने के लिए सांसारिक व्यस्तताओं से बेखबर हो जाते हैं। उनके दिलों पर, ईश्वरीय स्मरण

और उनके स्वयं के निधन का चिंतन [उनकी अपरिहार्य मृत्यु के रूप में] हावी होता है और हर पल वे आगामी जीवन के लिए तैयार होते हैं। जो लोग आवश्यकता (आवश्यकता) की सीमाओं को पार करते हैं, उनके सांसारिक कर्म और प्रयास उन्हें शांति से रहने नहीं देते हैं। एक [सांसारिक] जुड़ाव दूसरे को जन्म देता है और यह श्रृंखला [व्यस्तताओं की] कभी खत्म नहीं होने वाली हो जाती है। [सांसारिक] व्यस्तताओं की अधिकता, चिंताओं को बढ़ाती है और दिल और दिमाग को चिंताओं में कैद कर देती है। ऐसा व्यक्ति जिसका हृदय हमेशा संसार में लिप्त रहता है और जिसका मन उस पर छाया रहता है, ऐसा व्यक्ति परमेश्वर को कैसे याद कर सकता है? दुनिया में मगन लोगों का हाल ऐसा ही होता है।

जो लोग इस वास्तविकता को समझते हैं, वे सांसारिकता से बचते हैं लेकिन शैतान उनसे ईर्ष्या करता है और उनसे बचने में भी उन्हें गुमराह करता है। इसलिए, ऐसे लोगों के कई समूह बन गए हैं जो सांसारिकता से बचते हैं। एक समूह ने सोचा कि दुनिया कड़ी मेहनत और [सहने] कठिनाइयों का स्थान है और इसके बाद अनन्त खुशी और अंतहीन सफलता (सादा) का निवास स्थान है। इसलिए, जो कोई भी परलोक में [सफलतापूर्वक] पहुंचा, उसने शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता को गले लगाया, चाहे किसी ने इस दुनिया में दिव्य पूजा (इबाद) की हो या नहीं। इस आधार पर, उन्होंने महसूस किया कि [मार्गदर्शन का] सही मार्ग यह है कि सांसारिक कष्टों से छुटकारा पाने के लिए, मनुष्य को अपने स्वयं को नष्ट कर देना चाहिए। इसलिए, लोगों का एक समूह मृत्यु को गले लगाने के लिए आग में गिर जाता है और सोचता है कि ऐसा करने से वे सांसारिक कष्टों और दुखों से छुटकारा पा लेते हैं। लोगों के एक समूह को लगता है कि खुद को जीवित करने का कोई फायदा नहीं है, बल्कि मानवीय गुणों (प्रकृति) को खत्म करना आवश्यक है। परलोक की मानवीय उपलब्धि (सादा) की परिणति क्रोध और वासना को स्वयं (नफ्स) से पूरी तरह से अलग करने में है। इस समूह ने उनके मानव स्वभाव को मिटाने के लिए गहन आध्यात्मिक संघर्ष किया। कुछ लोग अपने आप पर इतने कठोर थे कि वे अपने आध्यात्मिक संघर्ष के दौरान मर गए और कुछ ने अपना मन और इंद्रिय खो दिया और बीमार पड़ गए और अब वे अपने आध्यात्मिक संघर्ष को जारी रखने में सक्षम नहीं थे। कुछ लोगों ने, जब उन्होंने देखा कि वे आध्यात्मिक संघर्ष के बावजूद अपने मानव स्वभाव को मिटाने में असमर्थ थे, तो उन्होंने यह सोचना शुरू कर दिया कि ईश्वरीय कानून (नैतिक, नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं के बारे में निषेधाज्ञा) पर कार्य करना असंभव है और यह कि ईश्वरीय कानून केवल एक धोखा है और इसका कोई आधार नहीं है। नतीजतन, वे अयोग्यता और ईश्वर की अस्वीकृति के मार्ग पर चल पड़े। एक समूह ने सोचा कि सभी पूजाएँ परमेश्वर के लिए की जाती हैं, जिसे उनकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि न तो एक पापी की अवज्ञा उसकी दिव्य महिमा को कम करती है और न ही एक धर्मी की पूजा उसकी महानता और पवित्रता को बढ़ाती है। [इस गलत धारणा को आश्रय देने के परिणामस्वरूप] वे अपनी वासनाओं में लौट आए और हर चीज को वैध घोषित करने के मार्ग पर चलना शुरू कर दिया [भले ही अच्छा या बुरा, नैतिक या अनैतिक, नैतिक या अनैतिक, धार्मिक या बुरा]। उन्होंने ईश्वरीय कानून और उसके आदेशों को उल्टा कर दिया और इस भ्रष्ट अनुमान में शामिल हो गए कि हर चीज को वैध [और एक निष्पक्ष खेल] मानना ईश्वरीय एकता (तौहीद) में उनके विश्वास की स्पष्टता और लंपटता का प्रमाण है क्योंकि यह उनका विश्वास है कि भगवान को अपने सेवकों (मनुष्यों) से पूजा की कोई आवश्यकता नहीं है। एक समूह का मानना था कि ईश्वरीय पूजा का उद्देश्य आध्यात्मिक प्रयास करना है ताकि सेवक [ईश्वर का] पूजा में प्रयास करके दिव्य ज्ञान तक पहुंच सके। ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करना यह दर्शाता है कि उद्देश्य प्राप्त हो गया है और अब किसी और आध्यात्मिक प्रयास की आवश्यकता नहीं है। इस तरह, इन लोगों ने आध्यात्मिक संघर्ष और पूजा को छोड़ दिया और दावा करना शुरू कर दिया कि

भगवान के ज्ञान ने उन्हें प्रयासों की सीमा से मुक्त कर दिया है - केवल आम लोग ही ईश्वरीय कानून के आदेशों का पालन करने के लिए बाध्य हैं। ऐसे लोगों के असंख्य गुमराह समूह हैं और उनकी गलत मान्यताएं इतनी अधिक हैं कि उन्हें लिखित रूप में प्राप्त करना मुश्किल है। इन समूहों में, मोक्ष प्राप्त करने वाला एकमात्र समूह वह है जो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) और उनके महान साथी (ईश्वर उन सभी से प्रसन्न हो) की पद्धति का पालन करता है, दूसरे शब्दों में, वे न तो दुनिया को पूरी तरह से छोड़ेंगे और न ही वासनाओं को मिटा देंगे (यहां इस्तेमाल किया गया शब्द "मानव स्वभाव" के अर्थ में है) पूरी तरह से - वे दुनिया से [केवल] एक आवश्यक हिस्सा लेंगे यह परलोक के मार्ग में एक निर्भरता या प्रावधान (यात्रा में आवश्यक आवश्यकताएं) बन जाएगा, और उन वासनाओं को छोड़ देगा जिन्हें ईश्वरीय कानून के पालन की सीमाओं से बाहर रखा गया है।

सही विश्वास रखने वाले आस्तिक को न तो हर वासना का पालन करना चाहिए और न ही हर वासना को छोड़ना चाहिए, इसके बजाय, संयम का मार्ग अपनाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति को न तो संसार की हर चीज़ को छोड़ना चाहिए और न ही संसार की हर चीज़ को प्राप्त करना चाहिए, इसके बजाय उसे परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज़ के उद्देश्य को समझना चाहिए और उस उद्देश्य की रक्षा करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी को ईश्वरीय पूजा के लिए शक्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यक भोजन की मात्रा लेनी चाहिए (पूजा का दायरा प्रार्थनाओं और दिव्य स्मरण तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हर कार्य चाहे वह कितना भी सांसारिक क्यों न हो, जिसमें जीविकोपार्जन और मनोरंजन शामिल है, जो ईश्वर के लिए और उसकी ओर ले जाने वाले मार्ग में उन्नति के लिए किया जाता है, ईश्वरीय पूजा का एक कार्य है), इतना घर प्राप्त करें जो किसी को चोरों और गर्म और ठंडे मौसम की कठोरता से बचा सके, इतने कपड़े जो शरीर को ढक सकें और बदलते मौसम में एक की रक्षा कर सकें ताकि जब हृदय शारीरिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाए, तो वह ईश्वर पर ध्यान केंद्रित कर सके और दिव्य स्मरण और चिंतन में संलग्न हो सके, जबकि किसी की वासनाओं (जुनून और भौतिकवादी महत्वाकांक्षाओं) पर कड़ी नजर रखना ताकि वे धार्मिकता और ईश्वर-भय की सीमाओं को पार न करें। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अनुसार ईश्वर के मार्ग पर चलने वाले उद्धार समूह का अनुसरण करने से ही इन सभी बातों का पता चलता है क्योंकि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) उनके रास्ते पर हैं और जो उनके साथियों के रास्ते पर हैं। ये लोग संयम के मार्ग पर चल रहे थे और उस स्पष्ट और प्रबुद्ध मार्ग के अनुयायी थे जिसे उपरोक्त में विस्तार से रेखांकित किया गया है। वे दुनिया के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर (*दीन)* के मार्ग के लिए दुनिया को प्राप्त करते थे, वे न तो संन्यासी जीवन शैली अपनाते थे और न ही वे दुनिया की आवश्यकताओं से बेखबर हो जाते थे। उनके मामलों में, न तो अधिकता थी और न ही कमी थी, बल्कि यह कमी और अधिकता के बीच में बीच में [सभी चरम सीमाओं से बचने के संयम का] मार्ग था क्योंकि संयम भगवान को प्रिय है।

अध्याय 7- कंजूसी और भौतिक संपत्ति के प्यार के नुकसान

ग़ज़ाली की सातवीं पुस्तक उनकी महान *कृति" इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में आध्यात्मिक पथ की दो अन्य बाधाओं से

संबंधित है - ये दोनों लालच, कंजूसी और भौतिक संपत्ति के प्रेम और लगाव से प्रेरित हैं। जीवन पर एक भौतिकवादी दृष्टिकोण व्यापक समुदाय की सामान्य भलाई के लिए उदारता को बाधित करता है, जिसका कोई हिस्सा है, और लालच को बढ़ावा देता है जो दूसरों के वैध अधिकारों को हड़पने की ओर ले जाता है। लालच और भौतिकवाद से प्रेरित स्वार्थ को बढ़ावा देने से व्यक्तियों, समाजों और समुदायों को उन लोगों की पीड़ा से प्रतिरक्षित किया जाता है जो सामाजिक व्यवस्था के निचले छोर पर हैं और बदले में अमीरों और अमीरों के बीच संघर्ष, कलह और फूट का कारण बनते हैं। ग़ज़ाली इन दो बीमारियों का निदान करती है, आध्यात्मिक पथ के लिए उनके नकारात्मक नतीजों का विश्लेषण करती है और उनके इलाज को निर्धारित करती है जो व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से आंतरिक आध्यात्मिक उत्कृष्टता का पीछा करने के लिए मुक्त करती है। ग़ज़ाली की इस पुस्तक की सामग्री यहाँ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत की गई है [13]:

सांसारिक जीवन के परीक्षण और क्लेश: यह ज्ञात होना चाहिए कि दुनिया के परीक्षण और क्लेश शाखा के बाद शाखा के साथ काफी विस्तृत हैं और असंख्य हैं। इनमें से सबसे बड़ी भौतिक संपत्ति है और कोई भी व्यक्ति इससे बेखबर नहीं हो सकता है और अगर यह हासिल हो जाता है, तो इसके नुकसान से बचाव करना बहुत मुश्किल है। इससे वंचित होना गरीबी है जो कभी-कभी किसी को अविश्वास (कुफ्र) की ओर ले जा सकती है और अमीर होना विद्रोह का कारण है [ईश्वरीय आदेशों के खिलाफ] जिसके परिणामस्वरूप नुकसान के अलावा कुछ भी नहीं होता है। नतीजा यह है कि धन के लाभ और हानि दोनों हैं। इसके लाभ बचाव गुणों में से हैं और इसके नुकसान विनाशकारी आंतरिक गुणों में से हैं। धन के दो पहलू होते हैं - अच्छा और बुरा। दोनों के बीच अंतर करना इतना मुश्किल है कि केवल वे विद्वान ही ऐसा कर सकते हैं जो ज्ञान में दृढ़ता से समाए हुए हैं और ईश्वर (दीन) के मार्ग में गहरी अंतर्दृष्टि रखते हैं, जो उन लोगों के विपरीत हैं जो प्रथागत विद्वान और धोखे से त्रस्त धार्मिक अभिजात वर्ग हैं। इसीलिए, धन और भौतिक संपत्ति के नुकसान का अलग-अलग उल्लेख करना अनिवार्य है क्योंकि पिछले अध्याय में जो समझाया गया है वह सांसारिकता से संबंधित था, न कि विशेष रूप से धन से। हर क्षणभंगुर और अल्पकालिक आनंद को "दुनिया" कहा जाता है। इस संबंध में, धन भी दुनिया का एक घटक है, केवल धन को "दुनिया" नहीं कहा जाता है। दुनिया का एक घटक प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा है, एक घटक पेट और निजी अंगों की वासनाएं हैं, एक घटक है क्रोध से वश में होना, एक घटक ईर्ष्या है, एक है अहंकार और भव्यता। ऐसे कई घटक और भाग हैं जिनसे मनुष्य आनंद प्राप्त करता है।

धन की परीक्षा: इस पुस्तक में, केवल भौतिक संपत्ति [और धन] को चर्चा का विषय बनाया जाएगा क्योंकि इसमें मनुष्यों के लिए अधिक परीक्षण और हानि हैं। यदि किसी के पास भौतिक संपत्ति की कमी है, तो यह एक व्यक्ति में गरीबी की गुणवत्ता (आध्यात्मिक अर्थों में ईश्वर की आवश्यकता को भी संदर्भित करता है) पैदा करता है और यदि यह मौजूद है, तो यह एक में धन की गुणवत्ता पैदा करता है। ये दोनों राज्य परीक्षण और परीक्षण के राज्य हैं। तब भौतिक संपत्ति से रहित व्यक्ति में दो गुण पैदा होते हैं - संतोष और लोभ। उनमें से एक (लालच) निंदनीय है और दूसरा (संतोष) वांछनीय है। लालची व्यक्ति में दो और गुण भी होते हैं - एक है दूसरे व्यक्ति की संपत्ति पर नजर रखना और उसे हड़पना चाहते हैं; दूसरा, भौतिक संपत्ति प्राप्त करने की इच्छा है जो व्यक्ति को व्यापार, रोजगार या उद्योग में व्यस्त होने के लिए प्रेरित करती है। लालच सबसे बुरे गुणों में से एक है। धनी व्यक्ति के भी दो गुण होते हैं - कंजूसी और दूसरों से रोकना (भले ही यह कुछ वैध हो जो किसी के कंजूस स्वभाव के कारण दूसरों को दिया जाना चाहिए), और खर्च। इनमें से एक गुण वांछनीय है और दूसरा निंदनीय है। खर्च करने वाले के भी दो गुण होते हैं - फिजूलखर्ची और संयम। उनमें से, संयम प्रशंसनीय है। ये सभी चीजें अस्पष्ट और सूक्ष्म हैं, इसीलिए, उन्हें समझाना महत्वपूर्ण है। इन मामलों को निम्नलिखित में समझाया जाएगा। सबसे पहले, धन के नुकसान के बारे में बताया जाएगा और उसके बाद इसके लाभ बताए जाएंगे। फिर इसके फायदे और नुकसान के बारे में विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। इसके बाद लोभ की निंदा होगी फिर उसका इलाज समझाया जाएगा। उदार लोगों की परंपराओं के साथ उदारता की व्याख्या की जाएगी, उसके बाद कंजूसी की निंदा की जाएगी और कंजूस के बारे में परंपराएं प्रस्तुत की जाएंगी। उसके बाद, उत्कृष्टता और दूसरों को अपने ऊपर प्राथमिकता देने की श्रेष्ठता के बारे में समझाया जाएगा। कंजूसी और उदारता के बारे में ईश्वरीय कानून की सीमाओं से निपटा जाएगा। कंजूसी के इलाज की रूपरेखा तैयार की जाएगी फिर धन के बारे में सामूहिक जिम्मेदारियों की व्याख्या होगी।

धन के नुकसान और इसके लिए प्यार करने की अस्वीकृति

भगवान कहते हैं:

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَٰلُكُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُكُمْ عَن ذِكْرِ ٱللَّهِ ۚ
وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ

"ऐ ईमान वालो! अपनी भौतिक संपत्ति (धन) और संतान को भगवान की याद से बेपरवाह न होने दें। जो ऐसा करता है, वह हारने वालों में से होगा। (कुरान, अध्याय 63, श्लोक 9)

إِنَّمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَأَوْلَٰدُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَٱللَّهُ عِندَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ

"आपकी भौतिक संपत्ति (धन) और आपकी संतान आपके लिए एक [कारण] परीक्षण और परीक्षा है और भगवान के साथ एक जबरदस्त प्रतिफल है [अपनी प्राथमिकताओं को सही रखने और अपना ध्यान बनाए रखने और अपने जीवन के सच्चे उद्देश्य के लिए प्रयास करने के लिए और अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों को सर्वोत्तम संभव तरीके से पूरा करने के लिए]। (कुरान, अध्याय 64, श्लोक 15)

مَن كَانَ يُرِيدُ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَٰلَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ

"जो केवल इस दुनिया के जीवन और इसकी धूमधाम और चमक [अच्छे कर्मों के प्रतिफल के रूप में] की इच्छा करता है, तो हम ऐसे लोगों को इस दुनिया में उनके [अच्छे] कर्मों का प्रतिफल देते हैं और दुनिया में उनके लिए कोई कमी [या भौतिक लाभों में कमी] नहीं है। (कुरान, अध्याय 11, श्लोक 15)

كَلَّآ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لَيَطْغَىٰٓ ﴿٦﴾ أَن رَّءَاهُ ٱسْتَغْنَىٰٓ ﴿٧﴾

"मनुष्य खुद को आत्मनिर्भर और अमीर के रूप में देखने के कारण [शालीनता, नैतिकता और अच्छे व्यवहार की] सभी सीमाओं को पार करता है। (कुरान, अध्याय 96, आयत 6-7)

أَلْهَىٰكُمُ ٱلتَّكَاثُرُ

"धन की प्रचुरता ने आपको [आपके जीवन के वास्तविक उद्देश्य और इसके लिए काम करने के लिए आवश्यक सही कार्यों के बारे में] लापरवाह कर दिया है। (कुरान, अध्याय 102, श्लोक 1)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

ماذئبان ضاريان ارسلا فی زريبة غنم باكثرا فسادا فيها من حب الشرف
والمال والجاه فی دين الرجل المسلم

"यदि दो क्रूर [और भूखे] भेड़िये बकरियों के झुंड में टूट जाते हैं, तो वे उतनी उथल-पुथल (क्षति) नहीं पहुंचाते हैं जो धन और प्रतिष्ठा (प्रसिद्धि और शक्ति) के लिए प्यार के कारण एक मुस्लिम की आस्था में होती है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने काब इब्ने मलिक के अधिकार पर* तिर्मिज़ी *और* नसाई *को* इकट्ठा किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

يقول ابن ادم مالی مالی وهل لک من مالک الا ما اكلت فافنيت اولبست
فابليت او تصدقت فامضيت

आदम का बेटा कहता है, "मेरा धन, मेरा धन। क्या आपके धन में से कुछ भी है जो वास्तव में आपका है, सिवाय इसके कि आपने इसमें से क्या खाया और इसे समाप्त किया (इस्तेमाल किया) या इससे पहना और

इसे पुराना बनाया [इसका उपयोग करके]?"   (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा और अब्दुल्ला बिन अल-शखीर के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

اخلاء بنی آدم ثلاثة واحد يتبعه الى قبض روحه والثانی الى قبره والثالث الى
محشره فالذی يتبعه الى قبض روحه فهو ماله‘ فالذی يتبعه الى قبره فهو اهله
والذی يتبعه الى محشره فهو عمله

"आदम (मनुष्यों) के बच्चों के तीन दोस्त हैं। पहले उनके साथ तब तक रहता है जब तक कि आत्मा (मृत्यु) को जब्त नहीं कर लिया जाता। दूसरा कब्र (दफन) तक एक के साथ रहता है। तीसरा न्याय के दिन तक एक के साथ रहता है। जो आत्मा को जब्त करने तक मदद करता है वह धन है। एक जो कब्र तक मदद करता है वह दोस्त, परिवार और रिश्तेदार हैं। जो न्याय के दिन तक मदद करता है वह किसी के [अच्छे, धर्मी, पवित्र और महान] कर्म हैं।   (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने नौमान बिन बशीर के अधिकार पर* तबरानी अवसत, तबरानी कबीर *और* अहमद *को* इकट्ठा किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यीशु के शिष्यों (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर बनी रहें) ने उससे कहा: "तू पानी पर चलता है, परन्तु हम नहीं कर सकते। इसका कारण क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया: " *दिरहम* और *दीनार* (पुराने समय में मुद्राओं के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सोने और चांदी के सिक्के) का क्या महत्व है?" उन्होंने कहा: "हम उन्हें अच्छा नहीं मानते"। उन्होंने उत्तर दिया: "ये दोनों मेरे लिए छोटे कंकड़ के बराबर हैं [और इसीलिए, मैं भौतिकवाद से अलग होने के कारण पानी पर चलने में सक्षम हूं]"।

एक [अरब] कवि ने [कविता में] यह कहा:

لا يغرنك من المرء قميص رقعه   او ازار فوق عظيم الساق منه رفعه
او جبين لاح فيه اثر قد خلعه   اره الدرهم تعرف حبه او ورعه

"आपको किसी के कपड़ों से धोखा नहीं खाना चाहिए [जो कि गरीबी का संकेत है], टखनों से ऊपर उठी हुई पैंट (ईश्वरीय आदेशों के पालन का संकेत) और अपने माथे पर साष्टांग प्रणाम का निशान (भगवान की भक्ति का संकेत)। किसी को *दिरहम* (सोने के सिक्के या पैसा) दिखाओ, तब आपको या तो धन के प्रति प्रेम या उससे दूर रहने का पता चलेगा [क्योंकि भौतिकवाद से परहेज किसी की धार्मिकता और आध्यात्मिकता का सही संकेत है, न कि धार्मिकता और धर्मपरायणता की बाहरी झलक]"।

धन की प्रशंसा और आलोचना के बीच संघर्ष समाधान

ईश्वरीय कानून कभी-कभी इसकी निंदा करता है और इसे शैतान की रणनीति और सभी पापों और बुराइयों का स्रोत कहता है, और कभी-कभी इसकी प्रशंसा करता है और इसे विभिन्न [दिव्य कार्यों] पूजाओं को

प्राप्त करने का एक साधन कहता है। इन [प्रतीत होता है] परस्पर विरोधी छंदों और परंपराओं के बीच संघर्ष का समाधान कैसे हो सकता है? ऐसा करने की विधि (स्पष्ट संघर्ष का समाधान) तब तक समझना कठिन है जब तक कि धन के ज्ञान, उद्देश्य और नुकसान को समझा नहीं जाता है। उसके बाद ही यह हकीकत सामने आती है कि धन एक कारण से अच्छा होता है और एक अलग कारण से बुरा होता है। अच्छा होने के लिए प्रशंसनीय और बुरा होने के लिए निंदनीय है। ऐसा इसलिए है क्योंकि धन न तो शुद्ध बुराई है और न ही शुद्ध अच्छाई है, बल्कि यह अच्छे और बुरे दोनों के लिए साधन है और दोनों को प्राप्त करने का साधन है। ईश्वरीय कृतज्ञता के अध्याय में (ग़ज़ाली के "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे खंड में और इस पुस्तक के अध्याय 12 में) हमने अच्छाई और आशीर्वाद की डिग्री की व्याख्या की है। यहां इसका उल्लेख करने का एकमात्र उद्देश्य यह है कि बुद्धिमान और रहस्यवादी अंतर्दृष्टि के धारकों का उद्देश्य परलोक की शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता (सदा*)* है जो एक टिकाऊ और स्थायी [दिव्य] आशीर्वाद है। आध्यात्मिक और बुद्धिमान लोग ही इस आशीर्वाद को प्राप्त करने का इरादा रखते हैं।

शाश्वत सुख और अंतहीन विजय प्राप्त करने के साधन:

इस संसार में, परलोक की शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता (सदा) को तीन स्रोतों के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है: पहला, स्वयं की उत्कृष्टता (नफ्स) जैसे ज्ञान और अच्छे आचरण, स्वभाव, स्वभाव और चरित्र (*इखलाक) /* दूसरे, शारीरिक उत्कृष्टता जैसे स्वास्थ्य और व्यक्तिगत कल्याण। तीसरा, उत्कृष्टता जो [किसी के स्वयं और शरीर के लिए] बाहरी हैं जैसे कि धन और सांसारिक संसाधन। इनमें से, सभी साधनों में से सबसे अच्छा [शाश्वत सुख और शाश्वत सफलता या साद प्राप्त करने के लिए] स्वयं की उत्कृष्टता है, इसके बाद शारीरिक उत्कृष्टता और अंत में वे श्रेष्ठताएं हैं जो शरीर और स्वयं दोनों के लिए बाहरी हैं और उनमें धन और धन शामिल हैं जिनकी सबसे कम स्थिति है, क्योंकि वे मनुष्यों के सेवक हैं और कुछ भी उनकी सेवा नहीं करता है। वे अन्य चीजों को प्राप्त करने के लिए [उनके माध्यम से] वांछित हैं और वे अपने लिए वांछित नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि स्वयं (*नफ्स*) एक ऐसा सूक्ष्म अस्तित्व है जिसकी शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय वांछित है, और यह ज्ञान, दिव्य ज्ञान और उच्च चरित्र लक्षणों की सेवा करता है ताकि ये गुण स्वयं के आंतरिक आंतरिक गुण बन जाएं। उसके बाद, शरीर, इंद्रियों और अंगों द्वारा स्वयं की सेवा की जाती है। भोजन और वस्त्र शरीर की सेवा करते हैं। यह पहले कहा गया है कि भोजन शरीर के संरक्षण के लिए है और विवाह मानव जाति के संरक्षण के लिए है। शरीर का उद्देश्य स्वयं की पूर्णता और पूर्णता का कारण बनना है; आत्मा की शुद्धि, ज्ञान और अच्छे चरित्र का उद्देश्य स्वयं के बगीचे को सुगंधित करना है। एक व्यक्ति जो इस अनुक्रम या आदेश से अवगत है, वह धन की वास्तविक स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ होगा [कि यह सभी उत्कृष्टताओं में से सबसे कम है और मानव अस्तित्व के उच्च उद्देश्य और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए है] और इस बात से अवगत होगा कि इसे क्या अच्छा बनाता है। भौतिक संपत्ति स्वयं के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन स्वयं अस्तित्व का वास्तविक कर्नेल है। जो किसी वस्तु के लाभ को समझता है और उसके वास्तविक उद्देश्य को जानने के बाद उसका उपयोग करता है और उसके वास्तविक उद्देश्य को ध्यान में रखता है, तो वह प्रयोग व्यक्ति के लिए बेहतर और लाभकारी होगा। जिस तरह धन एक सही उद्देश्य का साधन हो सकता है, उसी तरह यह गलत उद्देश्यों और उद्देश्यों के लिए भी एक साधन हो सकता है जो परलोक की शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता से टकराता है और ज्ञान और [धार्मिक] कार्यों के मार्गों को अवरुद्ध करता है। इसी तरह, धन (भौतिक संपत्ति) प्रशंसनीय और निंदनीय

दोनों हो सकती है - प्रशंसनीय जब इसे प्रशंसनीय उद्देश्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है और निंदनीय उद्देश्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है तो यह निंदनीय होता है। यह एक भविष्यद्वाणी कथन (हदीस) में कहा गया है कि जो व्यक्ति अपनी वास्तविक जरूरतों से अधिक भौतिक संपत्ति लेता है, वास्तव में, अगोचर रूप से अपने [स्वयं] विनाश के लिए पूछता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मानव स्वभाव वासनाओं की ओर झुका होता है और उनका अनुसरण करने में आनंद पाता है, और ये वासनाएं व्यक्ति को सत्य के मार्ग पर चलने से रोकती हैं, और धन इन वासनाओं को प्राप्त करने का एक बड़ा साधन है। इसीलिए, [वास्तव में] आवश्यकता से अधिक धन लेना, खतरे से रहित नहीं है। इसलिए, भविष्यद्वक्ताओं ने धन और भौतिक संपत्ति की बुराइयों से परमेश्वर की शरण मांगी है [क्योंकि वे गलत उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने पर किसी को गलत और बुरे तरीकों से लुभाते हैं]। निम्नलिखित प्रार्थना [ईश्वर से] पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को जिम्मेदार ठहराया जाता है:

اللّٰهم احينى مسكينا وامتنى مسكينا واحشرنى فى زمرة المساكين

"हे परमेश्वर! मुझे एक गरीब व्यक्ति के रूप में जीवित रखो, मुझे गरीबी की स्थिति में मृत्यु प्रदान करो, और मुझे गरीबों के समूह में [न्याय के दिन] उठाओ। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है अनस बिन मलिक के अधिकार पर *हदीस संग्रह तिर्मिज़ी* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

धन के नुकसान और लाभ

धन, सांप की तरह, जहर और मारक दोनों है। मारक इसके लाभों से है और जहर इसके नुकसान से है। केवल एक व्यक्ति जो इसके नुकसान और लाभों दोनों से परिचित है, वह खुद को इसके जहर से बचाने और इसके मारक से लाभ प्राप्त करने में सक्षम होगा। धन के लाभ धार्मिक होने के साथ-साथ सांसारिक भी होते हैं। सांसारिक लाभों का उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे प्रसिद्ध और प्रसिद्ध हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो लोग धन की खातिर खुद को नुकसान और विनाश में क्यों डालते? हालांकि, धार्मिक (आध्यात्मिक) लाभ ध्यान देने योग्य हैं।

धन के धार्मिक लाभ: ये तीन प्रकार के होते हैं। सबसे पहले, यह अपने आप पर पैसा खर्च करना है, चाहे वह [दिव्य] पूजा के लिए हो या तीर्थयात्रा (हज) जैसी पूजा में सहायता प्राप्त करने के लिए हो क्योंकि यह धन (वित्तीय साधन) के बिना पूरा नहीं किया जा सकता है। यह पूजा के सिद्धांतों में से एक है और एक गरीब व्यक्ति इस उत्कृष्टता को प्राप्त करने में सक्षम नहीं है। आराधना में सहायता प्राप्त करना भोजन, कपड़े, निवास और विवाह पर खर्च करके किया जाता है क्योंकि ये बुनियादी आवश्यकताएं हैं और जब तक ये पूरी नहीं हो जातीं, तब तक हृदय उनमें तल्लीन रहता है और ईश्वर (दीन) के मार्ग से संबंधित मामलों के लिए मुक्त नहीं होता है, और यह एक सिद्धांत है कि पूजा के लिए शक्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यक चीजें भी पूजा में शामिल हैं। इसीलिए, अपने धर्म के लिए सहायता प्राप्त करने के लिए अपनी [वास्तविक] आवश्यकताओं के अनुसार सांसारिक संसाधनों को प्राप्त करना [ताकि किसी की सांसारिक आवश्यकताओं और जिम्मेदारियों को पूरा किया जा सके, और आध्यात्मिक प्रयासों के लिए हृदय मुक्त हो

जाए], यह भी दुनिया के धार्मिक लाभों में से एक है। हालांकि, इसमें विशिष्ट उपभोग, ऐश्वर्य, भौतिक सुख और ऐसी मात्रा शामिल नहीं है जो किसी की वास्तविक जरूरतों से परे हैं क्योंकि उन्हें सांसारिक (शारीरिक) सुखों में गिना जाता है। दूसरे, दूसरों पर खर्च की जाने वाली संपत्ति चार प्रकार की होती है: दान, आतिथ्य, किसी के सम्मान की रक्षा करना, और प्राप्त सेवाओं के लिए भुगतान। जहां तक दान की बात है तो इसका दैवीय प्रतिफल किसी से छिपा नहीं है। यह एक ऐसा अच्छा धार्मिक कार्य है जो परमेश्वर की नाराजगी को बुझाता है [अपने स्वयं के कुकर्मों और ईश्वरीय आदेशों के उल्लंघन के लिए एक सेवक के साथ]। पिछले अध्यायों में, दान की उत्कृष्टता की गणना की गई है। आतिथ्य से हम धन खर्च करने की बात कर रहे हैं ताकि धनवान और धर्मी लोगों को दावत के लिए आमंत्रित किया जा सके और उन्हें उपहार दिया जा सके और इसे दान नहीं कहा जाता क्योंकि दान जरूरतमंदों को दिया जाता है। आतिथ्य के माध्यम से खर्च करना भी धार्मिक लाभों से वंचित नहीं है क्योंकि यह दोस्त और भाई बनाने का एक साधन है। उदारता के गुण के साथ अपने आप को सजाने से, व्यक्ति उदार लोगों में शामिल हो जाता है [क्योंकि उदारता और परोपकारिता जबरदस्त आध्यात्मिक गुण हैं]। कोई भी तब तक उदार कहलाने के योग्य नहीं है जब तक कि कोई लोगों के साथ उत्कृष्टता और आतिथ्य के साथ व्यवहार न करे। यह कार्य महान ईश्वरीय प्रतिफल का एक साधन भी है।

किसी के सम्मान की रक्षा के लिए खर्च करना भी धार्मिक लाभ से रहित नहीं है। उदाहरण के लिए, एक कवि को कुछ देना जो कविता में किसी के बारे में बुरी बातें कहता है या सभाओं में उसका मजाक उड़ाता है। इसी तरह, यह उन लोगों का मुंह बंद करने के लिए खर्च किया जा रहा है जो किसी भी आत्म-सम्मान और गरिमा से वंचित हैं और खुद को उनकी बुराई से बचाने के लिए खर्च कर रहे हैं। किसी के सम्मान और गरिमा की रक्षा के लिए खर्च करना भी इस अर्थ में ईश्वरीय प्रतिफल के योग्य है कि पिट्ठीखाता चुगली के पाप से बच जाता है और किसी के भाषण के माध्यम से कोई उथल-पुथल (*फितना*) नहीं फैलती है [और उस मामले के लिए लिखना], मुसलमान [शरण देने के जाल] दुश्मनी में नहीं फंसते हैं, और वह व्यक्ति जिसके खिलाफ पीठ काटी जाती है, बदला लेने की भावनाओं से मजबूर होने के कारण वापस प्रतिक्रिया नहीं देता है जो ईश्वरीय कानून की सीमाओं के खिलाफ है। दूसरों से सेवा प्राप्त करने के लिए क्षतिपूर्ति का भुगतान करना भी ईश्वरीय प्रतिफल से वंचित नहीं है क्योंकि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं के लिए असंख्य चीजों के लिए दूसरों पर निर्भर है । यदि कोई स्वयं करना शुरू कर देगा तो बहुत समय बर्बाद होगा और परलोक के मार्ग पर चलना मुश्किल हो जायेगा और दिव्य स्मरण के लिए समय नहीं बचेगा, हालाँकि, रूहानी यात्रियों के लिए उच्च स्थान यही दिव्य स्मरण और चिंतन है। यह स्पष्ट है कि जिसके पास धन (वित्तीय साधन) नहीं है, वह अपने सभी कार्यों को स्वयं करेगा। उदाहरण के लिए, फसलें (अनाज) खरीदना, उन्हें पीसना, उन्हें पकाना, घर की सफाई करना, यहां तक कि उन पुस्तकों की प्रतियां तैयार करने की सीमा तक जाना जिनकी हमें आवश्यकता है, स्वयं। जो भी कार्य दूसरों के माध्यम से किए जा सकते हैं, उन्हें स्वयं करने की आवश्यकता होगी। यह एक जबरदस्त नुकसान है। धनवान व्यक्ति इससे सुरक्षित रहता है। भले ही एक धनी व्यक्ति जो स्वयं सब कुछ करना शुरू कर दे, वह [धार्मिक] कर्मों, ज्ञान, दिव्य स्मरण और चिंतन से वंचित रहेगा।

तीसरा, [धन खर्च करने के धार्मिक या आध्यात्मिक लाभों में शामिल हैं] धन खर्च करना विशिष्ट व्यक्ति (व्यक्तियों) पर नहीं बल्कि सामान्य सार्वजनिक लाभ या सेवा पर। उदाहरण के लिए, मस्जिदों (भगवान की पूजा के स्थान), पुल, यात्रियों के लिए लॉज, चिकित्सा क्लीनिक, स्कूल और आध्यात्मिक शिक्षा के स्थान

(मदारी) *का निर्माण*, सार्वजनिक ट्रस्ट (वक्फ) की स्थापना के लिए भूमि और संपत्ति समर्पित करना। ये ऐसे खर्च हैं जो मृत्यु के बाद भी लाभ पहुंचाते हैं। परमेश्वर के पवित्र और धर्मी सेवक ऐसे लोगों के लिए लंबे समय तक प्रार्थना करते हैं और इससे बेहतर नेक काम क्या होगा। धन के धार्मिक लाभों के अलावा, उनके कई [स्पष्ट] सांसारिक लाभ हैं। उदाहरण के लिए, जिसके पास यह है, वह गरीबी के अपमान और आवश्यकता के दोष से बच जाता है। लोग एक का सम्मान करते हैं और एक को महत्व देते हैं। यदि कोई धनी व्यक्ति [आतिथ्य पर] खर्च करता है, तो यह उसके मित्रों का दायरा बढ़ाता है, लोग उसके साथ भाईचारे के संबंध स्थापित करने में गर्व महसूस करते हैं, और जरूरत के समय उसकी मदद करते हैं। जो धनी पवित्र और धर्मी होते हैं, वे लोग दिल से सम्मान करते हैं।

धन के नुकसान: धन के नुकसान भी दो प्रकार के होते हैं- धार्मिक और सांसारिक। धार्मिक हानि तीन प्रकार की होती है। एक यह है कि धन और भौतिक संपत्ति मनुष्य को पाप के मार्ग पर लाती है क्योंकि वासनाएं लगातार हृदय पर हमला करती हैं। [धन की] बेदखली और विनम्रता [गरीबी और आवश्यकता की स्थिति के परिणामस्वरूप] के माध्यम से, किसी को वासनाओं से बचाया जा सकता है क्योंकि जब कोई पाप करने से निराश होता है (करने में असमर्थ) होता है, तो उसके लिए प्रोत्साहन (उकसाना) (पाप या कुछ भी बुरा या दूसरों के लिए हानिकारक) भी हृदय में पैदा नहीं होता है। जब यह अहसास होता है कि अब कोई पाप कर सकता है, तो ऐसा करने के लिए दिल में उकसावा उठता है। धन की उपस्थिति एक सक्षमकर्ता है जो एक में [पाप करने, मानवीय मानदंडों के उल्लंघन, उत्पीड़न, आदि को करने की क्षमता पैदा करती है]। इस इच्छा पर कार्य करने से व्यक्ति नष्ट हो जाएगा और यदि कोई धैर्य और संयम का प्रयोग करता है तो वह कठिनाइयों को सहन करेगा क्योंकि [बुराई करने की] क्षमता की उपस्थिति में धैर्य बहुत कठिन है। धन का नुकसान (*फितना*) गरीबी के नुकसान (*फितना*) से अधिक है। दूसरा नुकसान [धन द्वारा उत्पन्न धर्म या आध्यात्मिकता के लिए] यह है कि धन की उपस्थिति से अनुमेय मामलों में ऐश्वर्य, फिजूलखर्ची और फिजूलखर्ची हो सकती है और यह धन के दुरुपयोग का पहला स्तर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक धनी व्यक्ति जौ की रोटी नहीं खा सकता है, मोटे कपड़े नहीं पहन सकता है और सभी स्वादिष्ट भोजन को छोड़ नहीं सकता है जैसा कि पैगंबर सुलैमान (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) ने अपने राज्य, प्रभुत्व और पृथ्वी के खजाने के नियंत्रण की विशालता के बावजूद किया था। लेकिन हर कोई ऐसा नहीं कर सकता है और जिसके पास धन के कारण विस्तार [और जीवन में सहजता] है, वह निश्चित रूप से ऐश्वर्य, अपव्यय और फिजूलखर्ची को अपनाएगा, अर्थात, व्यक्ति अच्छा खाएगा, अच्छे कपड़े पहनेगा और अपने आप को (*नफ्स*) को इसकी आदत बना देगा। जब कोई ऐश्वर्य, फिजूलखर्ची और फिजूलखर्ची में आनंद पाता है, तो उससे दूर होना असंभव होगा। इसके बजाय, यह आदत इस हद तक बढ़ जाएगी कि यदि किसी की समृद्धि, फिजूलखर्ची और फिजूलखर्ची को कानूनी (हलाल) साधनों के माध्यम से पूरा नहीं किया जाता है, तो वह निषिद्ध (अवैध या *हराम*) साधनों को नियोजित करने के लिए मजबूर हो जाएगा [किसी की भव्य और असाधारण जीवन शैली को बनाए रखने के लिए धन प्राप्त करने के लिए]। कोई भी हठ, झूठ, पाखंड और अन्य बुरी नैतिकता और आदतों को दिल में जगह बनाने की अनुमति देगा, ताकि किसी की अपनी दुनिया का संगठन (सेटअप और संचालन) उसकी इच्छा के अनुसार बना रहे और किसी की ऐश्वर्य, फिजूलखर्ची और फिजूलखर्ची में कोई कमी न आए। जिसके पास अधिक धन है, उसे लोगों की अधिक आवश्यकता है और वह काम पूरा करने के लिए पाखंडी तरीकों का उपयोग करता है, और उसकी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की अवज्ञा से भी बाज नहीं आता है। रचनाओं की आवश्यकता और निर्भरता दोस्ती और दुश्मनी दोनों को जन्म देती है, जो बदले में ईर्ष्या, विद्वेष,

आडंबर, अहंकार, झूठ बोलना, कहानी सुनाना, चुगली करना और ऐसे सभी पापों को फलने-फूलने की अनुमति देती है जो दिल और जीभ के लिए विशिष्ट हैं। इस बात की भी संभावना बनी हुई है कि ये पाप हृदय और जीभ से परे हो जाएंगे और अन्य [शारीरिक] अंगों में स्थानांतरित हो जाएंगे। ये सभी धन और भौतिक संपत्ति के बारे में बुरा पूर्वाभास हैं।

तीसरा नुकसान और कोई भी धनी व्यक्ति इससे वंचित नहीं है, यह है कि धन अर्जित करने और उसकी रक्षा करने में लिप्त होने के बाद, व्यक्ति ईश्वरीय स्मरण के प्रति लापरवाह हो जाता है और जो कुछ भी ऐसा नुकसान पहुंचाता है उसकी भरपाई नहीं की जा सकती है। ईश्वरीय स्मरण की असावधानी एक लाइलाज और घातक बीमारी है क्योंकि सभी पूजाओं का सार और उद्देश्य उनके अस्तित्व और गुणों में ईश्वरीय स्मरण और चिंतन है, जिसके लिए बदले में एक मुक्त हृदय की आवश्यकता होती है। अगर किसी के पास [कृषि] ज़मीन है, तो वह खेती से जुड़े मुद्दों में दिन-रात व्यस्त रहता है – कभी लेखांकन करता है, कभी सह-हिस्सेदार के साथ बहस करता है, कभी पानी [खेत के लिए आपूर्ति] और सीमाओं के बारे में असहमति होती है, कभी कर वसूली के लिए नियुक्त अधिकारियों के साथ झगड़ा होता है।

कभी-कभी कोई बिल्डरों और मजदूरों से संबंधित मुद्दों से निपट रहा होता है। एक व्यवसायी इस दुख से परेशान होता है कि किसी का बिजनेस पार्टनर मुनाफे के आधे हिस्से का हकदार है, लेकिन काम करने में समान रूप से भाग नहीं लेता है। कभी-कभी कोई यह आरोप लगाता हुआ दिखाई देता है कि उसका साथी चोरी और बेईमानी में शामिल है। पशुधन के मालिकों की भी यही स्थिति है। बल्कि, सभी प्रकार की संपत्ति और धन के लिए, मालिक लगभग उसी स्थिति में होते हैं कि परमेश्वर की याद के बजाय, वे अपनी संपत्ति में शामिल होते हैं और अपनी वृद्धि और सुरक्षा के लिए चिंतित और परेशान होते हैं। इसलिए, ईश्वर के स्मरण और चिंतन में ध्यान नहीं है, इसके बजाय, हर पल, व्यक्ति उनकी (संपत्ति) सुरक्षा के बारे में चिंताओं से घिरा रहता है। सांसारिक चिंताएँ और व्यस्तताएँ असंख्य हैं और उनकी कोई सीमा नहीं है। जिसके पास एक दिन का भोजन है, वह इन सभी चिंताओं से सुरक्षित है और इन सभी व्यस्तताओं से सुरक्षित है। ये धन के धार्मिक नुकसान हैं। इसमें यह जोड़ा जा सकता है कि अमीर धन अर्जित करने के लिए सब कुछ करते हैं। एक बार धन प्राप्त हो जाने के बाद, वे अपनी रक्षा के लिए अपने अस्तित्व के मूल में परेशान हो जाते हैं। ईर्ष्यालु की ईर्ष्या से खुद को बचाना उसके ऊपर है। हर समय, कोई भी आशंकित रहता है कि इतनी मेहनत और कठिनाइयों से अर्जित धन बर्बाद हो सकता है। इससे स्पष्ट है कि धन एक जहर है। यह केवल तभी एक मारक है जब इसे निर्वाह के साधन के रूप में माना जाता है और किसी भी अतिरिक्त धन को भगवान के मार्ग में दान (निस्वार्थ दान) के रूप में खर्च किया जाता है [दिव्य सुख और निकटता प्राप्त करने के लिए]।

लालच का इलाज और संतोष बढ़ाने की दवा

यह दवा तीन अवयवों से बनी है: धैर्य, ज्ञान और कार्य [सही ज्ञान के अनुसार]। साथ में वे पांच मामलों को जन्म देते हैं: पहला, कार्य; सटीक होने के लिए, [कार्यों का गठन] आर्थिक मामलों में कमी और [अनावश्यक] व्यय में कमी। जो व्यक्ति संतोष के सम्मान की इच्छा रखता है, उसे खर्च के लिए स्वयं के

दरवाजे बंद करने का प्रयास करना चाहिए, और केवल अपनी [वास्तविक] जरूरतों पर खर्च करना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिसका व्यय बढ़ता रहता है, वह संतोष नहीं कर पाता है। यदि कोई व्यक्ति अकेला है (अकेले रह रहा है), तो उसे मोटे कपड़े और थोड़े से भोजन से संतुष्ट होना चाहिए। यदि संभव हो, तो किसी को अपने आहार से करी को हटा देना चाहिए और इसके बिना [सिर्फ रोटी के साथ] खाना खाने की आदत डाल लेनी चाहिए। यदि किसी का परिवार है, तो उसे घर के सभी सदस्यों को साधारण कपड़े और भोजन रखने के लिए राजी करना चाहिए और उन्हें अपने रंग में रंगने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि हर चीज की थोड़ी मात्रा थोड़े से प्रयास से प्राप्त की जा सकती है, क्योंकि इस तरह से उसकी इच्छाएँ कम हो गई हैं और [परिणामस्वरूप,] जीवन संयम के साथ व्यतीत होगा। यह संतोष की वास्तविकता है। खर्चों में सौम्यता होना, एक ही बात को संदर्भित करता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

ان الله يحب الرفق في الامر كله

"निश्चित रूप से, भगवान सभी (हर और हर) मामलों में नम्रता और दया [सभी मनुष्यों द्वारा प्रयोग किए जाने के लिए] से प्यार करते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* आयशा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* का संग्रह करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

ما عال من اقتصد

"एक उदारवादी व्यक्ति (जो जीवन के हर मामले में संयम का अभ्यास करता है और सभी प्रकार की चरम सीमाओं और उग्रवादों से बचता है) कभी भी गरीब नहीं होता है (यानी, ऐसा व्यक्ति समृद्ध होता है और कभी निराश नहीं होता है)। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस अब्दुल्ला बिन मसूद के अधिकार पर* अहमद *और* तबरानी *को इकट्ठा करता* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

ثلاث منجيات خشى الله فى السر والعلانية والقصد فى الغنى والفقر
والعدل فى الرضا والغضب

"तीन चीजें प्रकृति में उद्धारक हैं: निजी और सार्वजनिक दोनों [जीवन] में पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर (*तक़्वा)* का भय, संयम चाहे [कोई हो] अमीरी या गरीबी में, और न्याय और निष्पक्षता चाहे [एक] खुशी या क्रोध में हो"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अनस बिन मलिक के अधिकार पर *बजाज़, तबरानी* और *अबू नईम* को इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

الاقتصاد وحسن السمت والهدى الصالح جزء من بضع وعشرين جزا من
النبوة

"संयम, शारीरिक संरचना की सुंदरता, और धार्मिकता [सामूहिक रूप से] भविष्यवाणी के बीस से अधिक घटकों (भागों) में से एक घटक हैं"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है अब्दुल्ला बिन अब्बास के अधिकार पर *हदीस संग्रह अबू* दाऊद [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

दूसरे, यदि किसी के पास कुछ समय के लिए न्यूनतम आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त है तो उसे भविष्य के बारे में बहुत अधिक चिंतित और चिंतित नहीं होना चाहिए। यदि कोई अपनी आशाओं और आकांक्षाओं को छोटा करता है और इस विश्वास को दृढ़ता से स्थापित करता है [हृदय में] कि उसे आवश्यक रूप से वह सब कुछ मिलेगा जो उसके लिए नियत है [ईश्वरीय आदेश के माध्यम से] चाहे उसे लालच हो या नहीं, वह भविष्य के बारे में चिंतित नहीं होगा। लालच या आशा के माध्यम से जीविका नहीं मिलती है। एक आस्तिक (मुमिन) को अपने सृष्टिकर्ता, महान के वादे पर विश्वास रखना चाहिए। ईश्वरीय आदेश है:

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزْقُهَا

"पृथ्वी पर एक भी जीवित प्राणी नहीं है, जिसका भरण-पोषण परमेश्वर की जिम्मेदारी नहीं है। (कुरान, अध्याय 11, श्लोक 6)

लालच शैतान की बुरी गतिविधियों का परिणाम है। वह मनुष्यों को गरीबी और भुखमरी से डरता है और उन्हें गलत और बुरे काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है (*मुनकिरत*) [या ईश्वरीय आदेशों के खिलाफ अपराध, गलत और बुरी चीजों के रूप में प्रकट होता है जो मानव शालीनता, सभ्यता, निष्पक्षता और न्याय के मानदंडों के खिलाफ जाते हैं]। शैतान एक से कहता है: "यदि तुम धन जमा नहीं करते और वस्तुओं को जमा नहीं करते हैं, तो भविष्य में तुम्हें चिंताएँ पड़ेंगी, तुम बीमार हो सकते हो और नम्र (जरूरतमंदो) हो सकते हो। आपको उस स्थिति में लोगों से पूछने (भीख मांगने) के अपमान का सामना करना पड़ेगा और आपको एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक भीख मांगने का कटोरा लेकर घूमना होगा। इस तरह, भविष्य में [अपेक्षित] कठिनाई का डर [विशेष रूप से बुढ़ापे में और जरूरत के समय] व्यक्ति को जीवन भर धन की तलाश में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। शैतान ऐसे व्यक्ति को इस संघर्ष में व्यस्त देखता है और एक व्यक्ति पर हंसता है: "यह मूर्ख भविष्य के डर के कारण अपने आप को इतनी कठिनाई में डाल रहा है और परमेश्वर की याद से बेपरवाह है। किसी को यह भी पता है कि [अपने भविष्य के बारे में] जो आशंकाएं मन में हैं, वे भी होंगी या नहीं?"

मानव हृदय में लालच को परमेश्वर की योजना में [सभी के लिए] पूर्ण निश्चितता के साथ मिटाया जा सकता है। यदि किसी सेवक [परमेश्वर के] को यह निश्चितता है कि भोजन के वितरण में परमेश्वर द्वारा बनाई गई नियति और उसके द्वारा बनाई गई योजना सत्य है, और यदि कोई अपने भरण-पोषण को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है, तो उसे निश्चित रूप से वह मिलेगा जो परमेश्वर ने उसके लिए नियत किया है। इस समझ के साथ, ऐसा कोई कारण नहीं है कि लालच की बुराई दिल से न निकले। इसके बजाय, एक सेवक को हमेशा याद रखना चाहिए कि कई बार ऐसा होता है, कि ईश्वर एक ऐसी जगह से जीविका प्रदान करता है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता जैसा कि कुरान कहता है:

وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجْعَل لَّهُۥ مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

"जिसके पास ईश्वर के प्रति पवित्र भय, श्रद्धा और भय है, वह ईश्वर ऐसे स्रोतों से [सभी कठिनाइयों, परीक्षणों और क्लेशों से] और ऐसे स्रोतों से भोजन का एक रास्ता प्रदान करता है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है (यानी, बहुत अप्रत्याशित स्रोतों से ईश्वरीय सहायता के रूप में)। (कुरान, अध्याय 65, श्लोक 2-3)

अबू हाज़िम (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा: "मैं दुनिया को दो चीजों से बना मानता हूं: एक जो मेरे लिए है और यह कुछ ऐसा है जिसे मैं अपने नियत समय से पहले नहीं पा सकता हूं, भले ही मैं इसे प्राप्त करने के लिए आकाश और पृथ्वी की सारी शक्ति का प्रयोग करता हूं। दूसरा किसी और के लिए है और यह कुछ ऐसा है जो मुझे न तो अतीत में मिला है और न ही मैं इसे भविष्य में प्राप्त करने की उम्मीद करता हूं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह प्राणी (यानी, भगवान) जो मेरी चीज को दूसरों तक पहुंचने से बचाता है, वही प्राणी है जो किसी और की चीज को मुझ तक पहुंचने से रोकता है। फिर इन दो प्रकार की चीजों के लिए अपनी जान देने का क्या फायदा?" यह शैतान के उन आक्षेपों का इलाज है जो वह मनुष्यों के दिलों में गरीबी और दरिद्रता के बारे में भड़काता है, और उन्हें बीमारी और आवश्यकता से भयभीत करता है। यह जानने की दवा है [रोग और उसका इलाज]।

तीसरा, किसी को पता होना चाहिए कि संतोष में किसी से कुछ भी न मांगने की गरिमा है और लालच में दूसरों से मांगने या भीख मांगने या भरोसा करने का अपमान है। यदि कोई इस गरिमा और अपमान की सच्ची समझ प्राप्त कर लेता है, तो स्वयं (*नफ्स*) के लिए संतोष की ओर झुकाव न करने का कोई कारण नहीं होगा। इसमें संदेह के लिए कोई जगह नहीं है [बाएं] कि अधिक के लिए लालसा में कठिनाई और अपमान के अलावा कुछ नहीं है [इसमें छिपा हुआ]। इस कठिनाई से परमेश्वर के अलावा कोई भी परिचित नहीं है। दूसरी ओर, लालच इंसान की आंखों से छिपा नहीं रहता क्योंकि हर कोई समझता है कि फलां व्यक्ति लालची है। इस अपमान में जो बात और बढ़ जाती है वह है परलोक की सजा जिसे सहना होगा, आत्म-सम्मान अलग से खो दिया जाता है, और किसी के पास सत्य का पालन करने की क्षमता नहीं रह गई है। जिसके पास अधिक लालच होता है उसे लोगों की अधिक आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता के कारण, वह न तो उन्हें सत्य के लिए आमंत्रित कर पाता है और न ही उन्हें गलतियाँ करने के लिए फटकार लगा सकता है, दासता व्यक्ति का स्वभाव बन जाती है, दोष अब दोष नहीं है, भले ही कोई दोष को दोष समझता है, तो भी वह उसे कहने की हिम्मत नहीं करता है, किसी का विश्वास बिना किसी कारण के नष्ट हो जाता है, और परलोक भी नष्ट हो जाता है। जो व्यक्ति पेट की वासना पर आत्म-सम्मान को प्राथमिकता नहीं देता है, वह बहुत मूर्ख और विश्वास में कमजोर होता है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

عز المؤمن استغناءه عن الناس

"एक आस्तिक की गरिमा लोगों से *इस्तिगना* में है (यानी, किसी से भी कुछ भी नहीं देखना, लोगों के पास जो कुछ भी है, उससे बेखबर रहना, और अपनी सभी आशाओं और आकांक्षाओं को अपनी सभी जरूरतों के लिए अकेले भगवान में रखना, जबकि उन्हें पूरा करने के लिए सभी मानवीय रूप से संभव प्रयास करना)। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है हदीस ने *तबरानी* और *हकीम* को *सहल* इब्ने साद के अधिकार पर इकट्ठा किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

संतोष में स्वतंत्रता और गरिमापूर्ण स्वाभिमान होता है। इसीलिए, यह कहा जाता है कि यदि आप किसी से बेखबर रहते हैं [एक से कुछ भी नहीं चाहने के संदर्भ में], तो आप उसके बराबर हो जाएंगे; और यदि तुम्हें किसी की आवश्यकता हो जाती है, तो तुम उसके कैदी बन जाओगे; और यदि आप एक पर उपकार करते हैं, तो आप किसी के नेता और मार्गदर्शक बन जाएंगे।

चौथा, इस वास्तविकता पर विचार करना चाहिए कि कितने मूर्ख, अज्ञानी और अधार्मिक लोग अमीर हैं। दूसरी ओर, भविष्यद्वक्ता [ईश्वर के], धर्मी और सही मार्गदर्शन वाले खलीफा, भविष्यवक्ता साथी, उनके तत्काल अनुयायियों का जीवन सरल था। किसी को इन दो समूहों की तुलना करनी चाहिए, उनके वृत्तांतों को सुनना चाहिए, उनके जीवन का अध्ययन करना चाहिए, फिर बुद्धि को यह विकल्प देना चाहिए कि वह किस समूह का अनुकरण करना चाहता है और उससे मिलता-जुलता है - मैल [दुनिया के] या भविष्यद्वक्ता और पवित्र। आशा है कि अभाव पर धैर्य रखने से संतोष आसान हो जाएगा। एक विश्वासी [ईश्वर में और धर्मपरायणता, नैतिक शुद्धता, और धार्मिकता के जीवन में] यह सोचना चाहिए कि भोजन में भव्यता को अपनाना कुछ भी प्रशंसनीय नहीं है क्योंकि एक गधा एक इंसान से ज्यादा खाता है। मैथुन में प्रचुरता भी प्रशंसनीय नहीं है क्योंकि एक सुअर इसे एक इंसान से कहीं अधिक करता है। पोशाक और सवारी में सुंदरता को अपनाना भी प्रशंसनीय नहीं है क्योंकि गैर-धार्मिक लोगों में ऐसे कई लोग हैं जो अच्छी तरह से कपड़े पहनते हैं और सवारी करते हैं। यदि कोई संतुष्ट है और कम से शांति में है, तो यह निस्संदेह प्रशंसनीय है क्योंकि कम में संतोष और कम में शांति से रहना, भविष्यवक्ताओं और संतों की पहचान (अंतर्निहित चरित्र विशेषता) है।

पांचवां, धन और संपत्ति के संचय के खतरों पर विचार करना चाहिए जैसा कि धन और भौतिक संपत्ति के नुकसान पर खंड में बताया गया है। ऊपर से उसमें चोरी और नुकसान का खतरा रहता है। जब किसी के पास धन और संपत्ति होती है, तो यह आशंका होती है कि यह बर्बाद हो सकता है और जब कोई खाली हाथ होता है, तो हृदय को किसी भी प्रकार का कोई दुख नहीं होता है [धन और संपत्ति की सुरक्षा से जुड़ा होता है]। किसी को यह भी सोचना चाहिए, "मुझे पांच सौ वर्षों के लिए स्वर्ग में प्रवेश करने से रोका जाएगा [धन रखने के कारण, न्याय के दिन की शुरुआत के बाद इसे कैसे हासिल किया गया और खर्च किया गया, इस पर लंबी जवाबदेही के कारण] और यदि मैं [धन प्राप्त करने में] आवश्यकता की सीमा को पार कर जाता हूं, तो मुझे अमीरों के समूह में गिना जाएगा और गरीबों की सूची से बाहर कर दिया जाएगा (फुकारा) और गरीब अमीरों से पांच सौ साल पहले स्वर्ग में प्रवेश करेंगे [क्योंकि वे विश्वास और धार्मिकता के साथ अपनी गरीबी, कमी और विपत्ति में धैर्यवान और दृढ़ रहे]"। व्यक्ति को हमेशा अपने हीन को देखना चाहिए [भौतिक संपत्ति, धन, सामाजिक स्थिति और शक्ति के संदर्भ में, और परिणामस्वरूप ईश्वर की आशीषों की सराहना करनी चाहिए और पर्याप्त न होने की शिकायत करने के बजाय नैतिक शुद्धता के साथ उनका बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए] और किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखना चाहिए जो स्वयं से श्रेष्ठ है [उसी मानदंड के संदर्भ में] जो अभी उल्लेख किया गया है। शैतान किसी के श्रेष्ठ को [सांसारिक आडंबर, चमक, धन, शक्ति, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा के संदर्भ में] एक श्रेष्ठ मॉडल के रूप में प्रस्तुत करता है [अनुसरण करने और अनुकरण करने के लिए, और इसलिए, उन्हें ईर्ष्या, घृणा, शत्रुता और भौतिक चूहे की दौड़ के दुष्चक्र में फंसा लेता है] और कहता है (दिलों में संकेत देता है): "तुम इतने आलसी क्यों हो? अमीरों को देखो कि वे जीवन का आनंद कैसे लेते हैं! वे स्वादिष्ट और स्वादिष्ट भोजन खाते हैं और अच्छे कपड़े पहनते हैं। धर्म के मामले में, शैतान तुच्छ को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है और कहता है : "तुम अपने आप को बाधाओं (प्रतिबंधों और कठिनाई) में क्यों डालते हो? फलां और फलां देखो कि [धार्मिक मामलों में] तुमसे अधिक ज्ञान होने के बावजूद, परमेश्वर का भय न मानें और तुम हमेशा परमेश्वर के भय से कांपते रहो। सभी लोग विलासिता में हैं (अच्छे जीवन का आनंद ले रहे हैं), आप उनसे अलग क्यों हैं?

ये पांच मामले हैं जो संतोष के गुण (हृदय और आंतरिक स्वभाव की विशेषता) को विकसित करने में मदद कर सकते हैं। उनमें मूलभूत महत्व धैर्य और आशाओं को कम करने का है [सांसारिकता से संबंधित मामलों के बारे में]। धैर्य का प्रयोग करते हुए, व्यक्ति को यह निश्चितता होनी चाहिए कि इस सांसारिक जीवन में, जो कुछ दिनों के लायक है, शाश्वत सुख और अनन्त जीवन की अनंत विजय प्राप्त करने के लिए धैर्य का अभ्यास करना ही उद्देश्य है। यह स्वास्थ्य और शारीरिक कल्याण प्राप्त करने के लिए दवाओं की कड़वाहट पर धैर्य का अभ्यास करने वाले एक बीमार की तरह है।

उदारता की उत्कृष्टता: यदि किसी के पास धन और भौतिक संपत्ति नहीं है, तो उसे संतुष्ट रहना चाहिए और लालच से दूर रहना चाहिए। यदि किसी के पास धन है, तो उसे परोपकारी (स्वयं पर दूसरों को प्राथमिकता देना) और उदार होना चाहिए, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए और कंजूसी से दूर रहना चाहिए। उदारता भविष्यद्वक्ताओं [ईश्वर के] चरित्र लक्षणों से [महान] चरित्र लक्षणों में से एक है और उद्धार की नींव से नींव में से एक है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने इन शब्दों में इसकी व्याख्या की:

السخاء شجرة من شجر الجنة اغصانها متدليته الى الارض' فمن اخذ
بغصن منها قاده ذلك الغصن الى الجنة

"उदारता स्वर्ग के पेड़ों में से एक है। इसकी शाखाएं पृथ्वी तक लटकी हुई हैं। जो इन शाखाओं में से एक को पकड़ लेता है, वह शाखा एक को स्वर्ग में खींच लेती है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने* इब्ने हिब्बन *को आयशा (ईश्वर से प्रसन्न हो) और* इब्न आदि *और* दरोक्तानी *को अबू हुरैरा के अधिकार पर संग्रह किया है [ईश्वर उससे प्रसन्न हो])*

قال جبرئيل عليه السلام قال الله تعالىٰ: ان هذا دين ارتضيته لنفسي ولن
يصلحه الا السخاء وحسن الخلق فاكرموه بهما ما استطعتم

"गेब्रियल ने कहा कि भगवान ने कहा था कि [शिक्षा के माध्यम से]: 'यह [दिव्य] मार्ग (दीन*)* है जिसे मैंने अपने लिए चुना है। यह केवल उदारता और सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (*हुस्न उल-खुलक)* के माध्यम से ही क्रम में रह सकता है। जहां तक संभव हो, इन दोनों [महान आंतरिक गुणों] के माध्यम से [भगवान या दीन के लिए] मार्ग का सम्मान करें। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *दरक़तानी फ़िल मुस्तज़ाद* जाबिर के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

ماجبل الله تعالىٰ وليا له الا على حسن الخلق والسخاء

"भगवान, महान ने अपने मित्रों और अंतरंग (अवलिया*)* को सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (*हुस्न-उल-खुलक*) और उदारता पर बनाया है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *दरक़तानी फ़िल मुस्तज़ाद* आयशा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

خلقان يحبهما الله عزوجل وخلقان يبغضهما الله عزوجل، فاما اللذان
يحبهما الله تعالى فحسن الخلق والسخاء واما اللذان يبغضهما الله فسوء
الخلق والبخل واذا اراد الله بعبد خيرا استعمله فى قضاء حوائج الناس

"दो आदतें ऐसी हैं जो भगवान उन्हें पसंद करते हैं, और दो आदतें ऐसी हैं जो भगवान उन्हें नापसंद करते हैं। वे सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (*हुस्न उल-खुलक*) और उदारता हैं, और जो उन्हें नापसंद हैं वे हैं खराब नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (सु *उल-खुलक*) और कंजूसी। जब परमेश्वर किसी सेवक के लिए भलाई की कामना करता है, तो वह अपने सेवक के माध्यम से लोगों की जरूरतों को पूरा करता है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अद-दयालामी* अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक भविष्यसूचक कथन में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा: " *मेरे राष्ट्र (उम्माह) के अब्दल (संतों और ज्ञानवादियों की एक उच्च श्रेणी)* अपनी प्रार्थना और उपवास के कारण स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेंगे, बल्कि वे अपने दिलों की पवित्रता के कारण स्वर्ग में प्रवेश करेंगे (कोई नकारात्मक विचार नहीं है। किसी के प्रति नफरत, क्रोध, ईर्ष्या, दुश्मनी आदि जैसी दिलों में भावनाएं, स्वभाव और झुकाव और मुसलमानों के प्रति ईमानदारी। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *दरक़ुतानी फ़िल मुस्तज़ाद* अनस के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

अबू सईद अल-खुदरी (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाया है कि उन्होंने कहा: "ईश्वर ने अपने सेवकों (सभी मनुष्यों) के लिए *एहसान के कई रूप बनाए हैं* (*ईहसान* केवल 'अच्छाई' नहीं है, बल्कि यह सभी के प्रति विचारों, भावनाओं, शब्दों और कार्यों में उत्कृष्टता के साथ ऊपर और परे जा रहा है)। पहला यह है कि, वे एहसान से प्यार करते *हैं*। दूसरे, एहसान के करने वालों का प्यार उनकी रचनाओं के दिलों में रखा गया है। तीसरा, परमेश्वर ने एहसान के साधकों को एहसान *के मालिकों की ओर* निर्देशित किया है। चौथा, उसने *एहसान* के कर्ताओं (यानी, *मुहसीनीन* या जिनके विचारों, भावनाओं, शब्दों और कर्मों में उत्कृष्टता है) के लिए दुनिया [और सांसारिक जीवन] को इतना आसान बना दिया है जो बदले में कुछ भी मांगे बिना पूरी ईमानदारी से दूसरों का भला करने के लिए आगे बढ़ते हैं, बदले में धन्यवाद की उम्मीद भी नहीं करते हैं) क्योंकि यह सूखी और बंजर भूमि पर पानी की बारिश करने वाले बादलों की तरह है, पृथ्वी और उसके निवासियों को जीवन प्रदान करना"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* कलेक्शन *दरक़ुतानी फ़िल मुस्तजाद*)

कंजूसी की निंदा

भगवान कहते हैं:

وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ

"जो किसी की आत्मा की कंजूसी से बच गया है, वह मोक्ष प्राप्त करेगा। (कुरान, अध्याय 59, आयत 9)

وَلَا يَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ هُوَ خَيْرًا لَّهُم ۖ
بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا۟ بِهِۦ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۗ

"और जो लोग किसी ऐसी चीज़ में कंजूस हैं जो परमेश्वर ने उन्हें दी है, उसकी उदारता और उदारता से, यह नहीं सोचना चाहिए कि यह [कंजूसी] उनके लिए कोई अच्छा होगा, इसके बजाय यह उनके लिए बहुत बुरा होगा। न्याय के दिन, उन्हें उन चीजों से बनी बेड़ियाँ पहनाए जाएँगी जिनसे वे कंजूस थे। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 180)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اياكم والشح فانه اهلك من كان قبلكم حملهم على ان يسفكوا دماء هم
ويستحلوا محارمهم

"अपने आप को कंजूसी से बचाओ क्योंकि इसने आपके सामने लोगों को नष्ट कर दिया है क्योंकि इसने उन्हें रक्तपात करने के लिए मजबूर किया है और यह घोषित किया है कि भगवान ने क्या मना किया है [जैसे चोरी, डकैती, लूटपाट, धोखेबाजी, धोखाधड़ी, धोखाधड़ी, हड़पना, अन्याय, भेदभाव और उत्पीड़न के माध्यम से लोगों की संपत्ति और उनके वैध अधिकारों को अवैध रूप से छीनना]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस जाबिर के अधिकार पर सहीह मुस्लिम* को *इकट्ठा करता* है [भगवान उससे प्रसन्न हो] और अब्दुल्ला बिन उमर के अधिकार पर *अबू दाऊद* और नसाई [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

لا يدخل الجنة بخيل ولا خب ولا خائن ولا سيئ الملكة

"कोई कंजूस, कोई चालाक (धोखेबाज), कोई बेईमान और कोई भी बदमिजाज (बदमिजाज) [व्यक्ति] स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद* अबू बक्र के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

ثلاث مهلكات شح مطاع وهوى متبع واعجاب المرء بنفسه

"तीन चीजें घातक और विनाशकारी हैं: कंजूसी जो पीछा की जाती है, निचले आधार स्व (*नफ्स*) से इच्छा जो आज्ञा का पालन करती है, और आत्म-दंभ (आत्म-प्रशंसा और हमेशा सही होने की धारणा के साथ खुद के बारे में उच्च सोचना)"।

ایاکم والظلم، فان الظلم ظلمات یوم القیامة، وایاکم والفحش فان اللہ لا یحب
الفاحش ولا المتفحش وایاکم والشح فانما اهلک من کان قبلکم الشح،
امرهم بالکذب فکذبوا، وامرهم بالظلم فظلموا، وامرهم بالقطیعة فقطعوا

"अपने आप को उत्पीड़न से बचाओ क्योंकि क्रूरता और उत्पीड़न न्याय के दिन खुद को अंधकार में बदल देगा, और अश्लीलता और व्यभिचार से बचेंगे क्योंकि परमेश्वर न तो अश्लील व्यक्ति को पसंद करता है और न ही अश्लीलता, और कंजूसी से दूर रहो क्योंकि यह वही चीज है जिसने आपके सामने लोगों को नष्ट कर दिया था। इसने लोगों को झूठ बोलने का आदेश दिया और उन्होंने झूठ बोला, इसने उन्हें अत्याचार करने का आदेश दिया और उन्होंने उत्पीड़न किया, इसने उन्हें [पारिवारिक संबंधों और रिश्तेदारी] के संबंध तोड़ने का आदेश दिया और उन्होंने रिश्ते तोड़ दिए। (द्वारा सुनाई गई *अब्दुल्लाह बिन अम्र के अधिकार पर हदीस* संग्रह *हकीम* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक परंपरा के अनुसार, एक प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों [जो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो)] के सदस्यों ने एक सवाल के जवाब में कहा कि उनके [आदिवासी] नेता जाद इब्न कैस हैं। पैगंबर ने पूछा: "आप किस आधार पर उन्हें अपने नेतृत्व के लिए उपयुक्त मानते हैं?" उत्तर दिया: "वह हम में सबसे धनी है, लेकिन वह कंजूसी के दोष से दूर नहीं है"। पैगंबर ने जवाब दिया: "यह एक बड़ी बीमारी है, कंजूसी से बड़ी बीमारी क्या हो सकती है? वह आपका नेता बनने के योग्य नहीं है। उन्होंने पूछा: "तो फिर हमें किसे अपना नेता चुनना चाहिए?" पैगंबर ने उत्तर दिया: "आपका नेता [अब से] बशर इब्न अल-बारा है"। [इस परंपरा से पता चलता है कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने एक जनजाति के आदिवासी नेता को उसकी कंजूसी की गुणवत्ता के कारण बदल दिया और उसकी जगह किसी ऐसे व्यक्ति को ले लिया जो उदार था, क्योंकि एक कंजूस व्यक्ति किसी भी नेतृत्व की भूमिका के लिए उपयुक्त नहीं है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *हकीम* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

خصلتان لا یجتمعان فی مؤمن البخل وسوء الخلق

"एक [सच्चे] आस्तिक में दो लक्षण जमा नहीं होते हैं - कंजूस और बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र लक्षण और आंतरिक स्वभाव"। (द्वारा सुनाई गई अबू सईद के अधिकार पर *हदीस संग्रह तिर्मिज़ी* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इमाम अबू हनीफा (रश्मा उस पर दया करे) ने कहा: "एक कंजूस न्यायी और निष्पक्ष नहीं हो सकता क्योंकि ऐसा व्यक्ति अपने उचित हिस्से और अधिकार से अधिक ले सकता है या इस डर के कारण अपने उचित हिस्से से अधिक लेने की कोशिश करेगा कि कोई नुकसान में पड़ सकता है। जो उस स्थिति में है

उस पर ईमानदार होने के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता है। पैगंबर जकारिया के पुत्र पैगंबर याह्या (जकर्याह के पुत्र जॉन - शांति और ईश्वर की कृपा उन दोनों पर हो) ने शैतान को उसके मूल रूप में देखा। उसने उससे पूछा: "आप लोगों में सबसे ज्यादा किसे पसंद करते हैं और आप किससे सबसे ज्यादा नफरत करते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: "मैं एक कंजूस आस्तिक को सबसे अधिक पसंद करता हूं और एक पापी लेकिन उदार व्यक्ति को सबसे अधिक नापसंद करता हूं"। उसने उससे इसका कारण पूछा जिस पर उसने उत्तर दिया: "एक कंजूस मुझे अपनी कंजूसी के कारण गुमराह करने की परेशानी से बचाता है [क्योंकि यह किसी को ईश्वर की अवज्ञा और अविश्वास के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करके गुमराह करता है] और मुझे एक पापी लेकिन उदार व्यक्ति के बारे में डर है कि भगवान किसी की उदारता को स्वीकार कर सकते हैं [और ऐसे व्यक्ति को मार्गदर्शन के मार्ग की ओर ले जा सकते हैं, ईश्वरीय उदारता से शुद्धता और सुधार और ऐसे एक के लिए एहसान]"। तब शैतान यह कहते हुए चला गया: "अगर यूहन्ना के अलावा किसी और ने मुझसे यह सवाल पूछा होता, तो मैं इसका जवाब नहीं देता।

परोपकारिता की वास्तविकता और इसकी उत्कृष्टता

उदारता और कंजूसी के कई स्तर हैं। उसमें परोपकारिता की बहुत उच्च डिग्री होती है। परोपकारिता का अर्थ है अपनी आवश्यकता के बावजूद किसी और को अपनी संपत्ति और धन देना, और उदारता किसी को अपनी संपत्ति और धन से उपहार देना है, चाहे वह जरूरतमंद हो या नहीं। अपनी आवश्यकता के बावजूद [दान में या दूसरों की मदद करना] खर्च करना एक कठिन चरण है और बहुत कम लोग इस चरण से सफलतापूर्वक गुजरते हैं। जिस तरह उदारता का उच्चतम स्तर अपनी आवश्यकता के बावजूद दूसरों को दे रहा है, उसी तरह कंजूसी की चरम डिग्री यह है कि वह अपने आप पर भी खर्च न करें [अपनी वैध जरूरतों के लिए] भले ही उसके पास अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए साधन और साधन हों। ऐसे कितने कंजूस हैं जिनके खजाने धन से भरे हुए हैं, लेकिन वे अपने इलाज पर खर्च करने का साहस नहीं जुटा पाने के कारण तड़पते हुए मर गए। दिल खाने का इच्छुक होता है, लेकिन उनमें खर्च करने की हिम्मत नहीं होती है, हालांकि अगर उन्हें यह मुफ्त में मिलता है तो उन्हें खाने में कोई आपत्ति नहीं होती है। इन दोनों व्यक्तियों के बीच कितना बड़ा अंतर है? सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षण, स्वभाव और गुण (*हुस्न उल-खुलक*) दिव्य उपहार हैं जो ईश्वर जिसे चाहता है उसे देता है और जिसे भी वह चाहता है, उसे वंचित करता है। परोपकारिता से बड़ी कोई डिग्री नहीं है। ईश्वर ने पैगंबर मुहम्मद (उन सभी पर शांति और आशीर्वाद हो) के साथियों की इन शब्दों में प्रशंसा की:

وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ

"वे खुद पर दूसरों को पसंद करते हैं, भले ही वे भुखमरी से पीड़ित हों [और खुद जरूरतमंद हों]।
(कुरान, अध्याय 59, आयत 9)

आयशा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपनी मृत्यु तक लगातार तीन दिनों तक कभी भी पेट भर खाना नहीं खाया। अगर हम चाहते तो भरपेट खा सकते थे, लेकिन हम खुद से ज्यादा दूसरों को पसंद करते थे। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *बयाकी*)

एक आदमी पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) का अतिथि बन गया। उस समय, उनके घर में ऐसा कुछ भी नहीं था जिसका उपयोग उस अतिथि की सेवा के लिए किया जा सके। एक अंसारी (मदीना शहर का निवासी, जिसने कई अन्य निवासियों के साथ, मक्का के प्रवासियों की मेजबानी की, जो उत्पीड़न से बचने के लिए भाग गए थे) साथी पैगंबर से मिलने आए जो उस अतिथि को अपने घर ले गए और उस समय उनके घर पर जो कुछ भी भोजन था उसे लाया और परोसा गया, और अपनी पत्नी को दीपक बुझाने के लिए कहा ताकि मेहमान [कुछ भी न देख सके और] यह सोचे कि मेजबान [और उनका परिवार] भी भोजन कर रहे हैं, क्योंकि वह [खाली] प्लेट पर अपना हाथ बढ़ाते थे और खाने का नाटक करते थे। मेजबान साथी ने ऐसा किया और अतिथि ने भरपेट खाना खाया। सुबह में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने उन्हें बताया कि भगवान ने अपने अतिथि के साथ जो किया वह पसंद आया और कुरान की इस आयत को पैगंबर को प्रकट किया:

وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ

"वे खुद पर दूसरों को पसंद करते हैं, भले ही वे भुखमरी से पीड़ित हों। (कुरान, अध्याय 59, आयत 9) (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम*)

फिर भी, उदारता ईश्वर के गुणों (दिव्य गुणों) के गुणों में से एक है और परोपकारिता उदारता की उच्चतम डिग्री है जिस पर पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) इस हद तक बने रहे कि ईश्वर ने इन शब्दों में उनके और उनके अन्य सभी महान और उदात्त गुणों के इस महान गुण की प्रशंसा की:

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ

"और इसमें कोई संदेह नहीं है, आप (हे मुहम्मद!) एक उच्च और उदात्त चरित्र के [कि सभी मानवता को अपनी भलाई और कल्याण के लिए समय के अंत तक अनुकरण करना चाहिए]। (कुरान, अध्याय 68, श्लोक 4)

सहल बिन अब्दुल्ला अल-तुस्तरी (ईश्वर उन पर दया करे - एक प्रसिद्ध संत और ज्ञानवादी) ने कहा कि पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने ईश्वर से प्रार्थना की: "हे भगवान! मुझे मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) और उनके राष्ट्र की कुछ डिग्री दिखाओ [आपके सामने]। [पैगंबर मुहम्मद से पहले मूसा, यीशु और कई महान पैगंबरों को ईश्वरीय मार्गदर्शन की परिणति के लिए पैगंबर मुहम्मद के आगमन के बारे में भविष्यवाणी की गई थी, जो समय-समय पर विभिन्न दिव्य रूप से नियुक्त पैगंबरों को भेजे गए थे ताकि वे अपने समय पर अपने राष्ट्रों को ईश्वरीय मार्गदर्शन और नैतिक

शुद्धता के मार्ग पर बने रहने में मदद कर सकें; इस दिव्य मार्गदर्शन की परिणति पैगंबर मुहम्मद के साथ हुई। समय के अंत तक पूरी मानवता के लिए] परमेश्वर ने कहा: "ऐ मूसा! तुम उस दृष्टि को सहन नहीं कर पाओगे। हालाँकि, मैं आपको उनकी महान डिग्रियों [मुझसे उनकी निकटता] से एक महान डिग्री दिखाऊंगा, जिसके कारण मैंने उन्हें अपनी सभी रचनाओं में सर्वोच्च डिग्री दी है। फिर पैगंबर मूसा की आंखों से पर्दा हटा दिया गया ताकि उन्हें स्वर्ग के चमत्कारों का दर्शन हो सके और उन्होंने पैगंबर मुहम्मद की ऊंची डिग्री और उनकी दिव्य निकटता और निकटता की प्रतिभा को देखा जिसने उनकी आंखों को चकाचौंध कर दिया। पैगंबर मूसा ने पूछा: "हे परमेश्वर! मुहम्मद इस डिग्री तक कैसे पहुंचे? परमेश्वर ने उत्तर दिया: "एक चरित्र और गुण के माध्यम से जो मैंने विशेष रूप से उसकी विशेषता के साथ की है, और वह गुण परोपकारिता है [वह श्रेष्ठ जो उसने अपने पूरे जीवन में धारण किया था]। ऐ मूसा! यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में एक बार भी परोपकार प्रदर्शित करता है, तो मुझे अपनी जवाबदेही निभाने में शर्म आएगी और मैं ऐसे व्यक्ति को बिना किसी हिसाब के स्वर्ग में प्रवेश करने दूँगा, जहाँ उसका दिल चाहे, वहाँ रहने दूँगा। एक परंपरा के अनुसार, अब्दुल्ला बिन जाफ़र (ईश्वर उन पर दया करे) ने अपनी दूर की भूमि का निरीक्षण करने के लिए यात्रा की [जो उनके स्वामित्व में थी]। यात्रा के दौरान, वह रुका और लोगों के एक समूह (जनजाति) के स्वामित्व वाले एक आर्किड में रहता था। उस ऑर्किड में एक इथियोपियाई [मुस्लिम] दास काम कर रहा था। ऐसा करते ही गुलाम का भोजन आ गया। उसी समय, एक कुत्ता आर्किड में आया और उसके पास बैठ गया। दास ने उस कुत्ते के सामने [अपनी थाली से] रोटी रखी जिसने उसे खाया। उसने अपनी दूसरी रोटी उस कुत्ते के सामने रखी जिसने उसे खाया था। फिर उसने अपनी तीसरी रोटी उस कुत्ते को खिलाई, जिसने उसे तब तक खाया जब तक कि उसका अपना भोजन सब खत्म नहीं हो गया। अब्दुल्लाह इब्न जाफ़र जो पूरी बात देख रहा था, ने दास से पूछा: "आपका दैनिक आहार क्या है?" उन्होंने जवाब दिया: "यह वही है जो आपने अभी देखा"। अब्दुल्ला ने आश्चर्य से पूछा: "फिर तुमने कुत्ते को अपना पूरा खाना क्यों खिलाया?" दास ने उत्तर दिया: "इस मामले का तथ्य यह है कि हमारा यह आर्किड कुत्तों के रहने की जगह नहीं है। यह कुत्ता खाने के लिए भोजन खोजने की उम्मीद में किसी दूर से आता है। मुझे यह पसंद नहीं आया कि मैं खाऊं जबकि यह कुत्ता भूखा रहता है। अब्दुल्ला ने पूछा, "तो फिर आप पूरे दिन क्या (खाएंगे)?" उन्होंने जवाब दिया: "मैं भूखा रहूंगा (भूखा रहूंगा)"। अब्दुल्ला ने अपने दिल में सोचा कि वह अपने दिल में गुलाम की उदारता (परोपकारिता) के लिए आलोचना कर रहा था, हालांकि वह उससे अधिक उदार था। अब्दुल्ला ने तुरंत उस आर्किड के मालिक को बुलाया और उस आर्किड को गुलाम और सभी उपकरणों के साथ खरीद लिया और उस दास को मुक्त और मुक्त कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने उस पूर्व दास को उस आर्किड को उपहार में दिया [उनके आत्म-बलिदान और परोपकारिता के लिए प्रशंसा के रूप में क्योंकि उन्होंने बंधन में अपनी अथक सेवा के लिए भगवान के सामने अपनी उच्च डिग्री को पहचाना, जो इसके ऊपर परोपकारिता के कार्यों के साथ धैर्यपूर्वक दृढ़ता के साथ किया गया था]।

उमर (भगवान उनसे प्रसन्न हों) बताते हैं कि एक भविष्यवक्ता साथी ने किसी को उपहार के रूप में एक बकरी का सिर भेजा (सिर मांस की खपत के लिए उपयोग किए जाने वाले पशुधन का सबसे महत्वहीन

और सस्ता हिस्सा है - उपहार के रूप में भेजने वाला व्यक्ति शुरू में अपने लिए इसे प्राप्त करने का जोखिम उठा सकता है, लेकिन किसी और को उपहार देने का फैसला किया, जिसे उसने सोचा था कि व्यापक गरीबी के कारण इसकी अधिक आवश्यकता है)। प्राप्त करने वाले साथी ने सोचा कि उसके निश्चित भाई (एक साथी भविष्यद्वाणी साथी) को इसकी अधिक आवश्यकता थी, इसलिए उसने उसे उपहार में दिया। तीसरे ने इसे चौथे को उपहार में दिया और इसी तरह जब तक कि इसे सात लोगों को नहीं भेजा गया, फिर पहले के पास वापस आ गया [जिसने मूल रूप से इसे उपहार में दिया था, इस प्रकार प्रत्येक प्राप्त करने वाले साथी ने दूसरे को पूर्ण परोपकारिता के कार्यों में अधिक जरूरतमंद प्राप्तकर्ता के रूप में सोचा]।

कंजूसी का इलाज

कंजूसी धन और भौतिक संपत्ति के प्रेम से पैदा होती है और इस प्रेम के दो कारण हैं।

धन के प्रति प्रेम का पहला कारण कंजूसी की ओर ले जाता है: क्या वासनाओं और [भौतिकवादी] इच्छाओं का प्रेम है, जिसकी प्राप्ति धन प्राप्त किए बिना संभव नहीं है। इसमें लंबी उम्मीदें भी शामिल हैं क्योंकि अगर मनुष्य को पता चल जाए कि वह एक दिन इस अस्थायी निवास (दुनिया) को छोड़ देगा, तो वह कंजूस नहीं होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह राशि जो एक दिन, एक महीने या एक वर्ष के लिए पर्याप्त है, वह छोटी है और कोई भी व्यक्ति अपनी अतिरिक्त पूंजी खर्च कर सकता है [सभी योग्य धार्मिक प्रयासों पर, विशेष रूप से उन लोगों पर जो किसी को परमेश्वर के मार्ग पर प्रेरित करते हैं]। कभी-कभी कोई लंबी आशा नहीं रखता है (लंबे जीवन के लिए), लेकिन उसके बच्चे लंबी आशाओं के विकल्प बन जाते हैं, और व्यक्ति अपने निर्वाह के लिए संघर्ष करता है जैसे वह अपने निर्वाह के लिए करता है। इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

الولدمبخلةمجبنةمجهلة

"[भय, आशंका, चिंता और किसी के भविष्य के लिए योजना] बच्चे कंजूस, कायरता और अज्ञानता पैदा करते हैं"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्ने माजा* याली इब्न मर्रा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यदि उसके ऊपर, गरीबी का डर है और जीविका के आगमन पर विश्वास की कमी है [जो कि ईश्वरीय प्रोविडेंस और उदारता से आता है], कंजूसी तेज हो जाती है [जिससे व्यक्ति सभी कानूनी, अवैध, नैतिक और अनैतिक साधनों से जमाखोरी, संचय और हड़पने की ओर अग्रसर होता है, भले ही यह दूसरे के उचित और वैध अधिकारों का उल्लंघन करता हो]।

धन के प्रति प्रेम का दूसरा कारण कंजूसी की ओर ले जाता है: यह है कि कोई व्यक्ति धन से अपने आप में प्यार कर सकता है [और किसी अन्य उद्देश्य के साधन के रूप में नहीं जैसे कि किसी की संतान का संरक्षण या बुढ़ापे के वित्तीय संकट को टालना]। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके पास अपने शेष जीवन के लिए पर्याप्त पूंजी होती है, बशर्ते वे नियमित रूप से खर्च करें, बल्कि उनके पास इतनी पूंजी है कि खर्च करने के बाद भी बहुत कुछ बच जाएगा। वे संतानों से वंचित हैं, उनके पास धन का ढेर है, लेकिन वे *जकात* (अनिवार्य दान जो गरीबों को किसी की नकदी और सोने की बचत से दिया जाना चाहिए जो मूल्य के 2.5% की राशि में एक वर्ष तक चलता है; पशुधन, कृषि उपज और अन्य संपत्ति भी ईश्वरीय कानून के अनुसार अनिवार्य दान के अधीन है) को बाहर निकालने का मन नहीं करता है अपनी बीमारी के लिए चिकित्सा उपचार। इसके बजाय, वे *दिरहम* और *दीनार* (पुराने समय में इस्तेमाल की जाने वाली सोने और चांदी के सिक्के की मुद्राएं) के प्रेमी हैं, जो उनके साथ अपनी उपस्थिति और उन पर अपने नियंत्रण का आनंद लेते हैं। वे [गुप्त रूप से] उन्हें भूमिगत दफना देते हैं, भले ही वे अच्छी तरह से जानते हों कि वे मर जाएंगे [जल्दी या बाद में एक दिन] और मृत्यु के बाद, यह सारा खजाना खो जाएगा या दुश्मनों [या अजनबियों के हाथों में चला जाएगा जो उनसे जुड़े भी नहीं हैं]। इसके बावजूद, वे खुद को इससे खाने की अनुमति भी नहीं देते हैं या [अपनी वैध जरूरतों पर] इससे थोड़ी राशि खर्च नहीं करते हैं। यह दिल की एक बहुत बड़ी और घातक बीमारी है और इसका इलाज बहुत मुश्किल है, खासकर बुढ़ापे में यह लाइलाज हो जाता है। ऐसे व्यक्ति की उपमा एक प्रेमी की होती है जो किसी को अपने दूत के रूप में प्रिय के पास भेजता है, फिर दूत से प्यार करना शुरू कर देता है [प्रिय के बजाय] और प्रिय के बारे में भूल जाता है। धन एक दूत की तरह है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी जरूरतों को पूरा करता है। इसीलिए, लोग धन से प्यार करते हैं और उससे आनंद प्राप्त करते हैं और आनंद के साधन भी प्यारे होते हैं। फिर कभी-कभी जरूरतों को भुला दिया जाता है और धन असली प्रिय बन जाता है। यह अत्यधिक गुमराह है। जो कोई भी सोने और पत्थर के बीच के अंतर को समझता है, वह अज्ञानी है, सिवाय इसके कि जब कोई जानता है कि जरूरतों को सोने (धन) के माध्यम से पूरा किया जाता है और जरूरतों को पूरा करने के बाद जो बचता है वह एक पत्थर के बराबर है।

इलाज के विभिन्न तरीके: इलाज के विभिन्न तरीके इस प्रकार हैं। यह ज्ञात है कि हर स्थिति का इलाज इसके विपरीत से किया जाता है। इसलिए, वासनाओं के प्रेम का इलाज कम और धैर्य के साथ संतोष के माध्यम से है। लंबे जीवन की आशा का इलाज मृत्यु की स्मृति की प्रचुरता (किसी की अपनी मृत्यु दर और इस दुनिया के माध्यम से किसी की यात्रा का अंत) और किसी के समकालीनों की मृत्यु के माध्यम से है। धन संचय करने की इच्छा को कम करना संचित धन की बर्बादी को देखने के माध्यम से है [जो लोग मरने पर पीछे छोड़ देते हैं जो तुरंत दूसरों द्वारा ले लिया जाता है]। अपनी संतान के प्रति हृदय के झुकाव का इलाज इस विश्वास के माध्यम से है कि जिस तरह सृष्टिकर्ता ने एक ही जीविका प्रदान की है, उसी प्रकार बच्चों के जन्म के समय भरण-पोषण भी सृजित किया गया है [जैसा कि प्रत्येक बच्चा अपने साथ वह भरण-पोषण लाता है जो परमेश्वर ने उसके लिए नियत किया है]। कितने बच्चे हैं जो अपने पिता के वर्सा से कुछ भी नहीं लेते हैं लेकिन फिर भी अधिक समृद्ध जीवन जीते हैं? ऐसे व्यक्ति को यह भी याद रखना चाहिए कि व्यक्ति अपने बच्चों के लिए धन छोड़ देता है ताकि वे अच्छी तरह से जी सकें, लेकिन धन प्राप्त करने के बाद [विशेष रूप से विरासत के माध्यम से,] वे बुराई के मार्ग पर चलना शुरू कर देते हैं। यदि किसी की संतान पवित्र, धर्मी और परमेश्वर का भय मानने वाली है, तो परमेश्वर उनके लिए पर्याप्त है और उन्हें अपने पिता की विरासत की आवश्यकता नहीं होगी। यदि वे बुरे और गलत काम करने वाले हैं, तो उनकी

बुराई में मदद करने के लिए उनके लिए विरासत छोड़ना सही नहीं है। बुराई के साथ किसी की मदद करना स्वयं पाप करने के समान है। कंजूसी की निंदा करके, और उदारता की प्रशंसा करके और कंजूस को दी गई पीड़ा के बारे में प्रसारित परंपराओं पर नज़र रखकर और उन्हें किसी के चिंतन का विषय बनाकर हृदय को ठीक किया जा सकता है। धन और भौतिक संपत्ति के उद्देश्यों के लिए अपने चिंतन का विस्तार करके और यह सोचकर भी हृदय को ठीक किया जा सकता है कि उन्हें क्यों बनाया गया है? इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर है कि जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए धन और भौतिक संपत्ति का निर्माण किया गया है। इसलिए, केवल उतना ही धन खर्च किया जाना चाहिए जो किसी की जरूरतों के लिए आवश्यक है। बाकी सब कुछ ईश्वर के मार्ग में खर्च किया जाना चाहिए और इस तरह से संग्रहित किया जाना चाहिए, परलोक के लिए एक खजाने के रूप में [जैसे कि जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए मानवीय, धर्मार्थ, महान प्रयासों में खर्च किए गए धन के रूप में, ईश्वर के मार्ग में खर्च होने के रूप में अमर हो जाता है और व्यक्ति के अनन्त जीवन के लिए एक खजाना बन जाता है क्योंकि भगवान इसके लिए अथाह के साथ प्रतिफल देते हैं, अकल्पनीय, शाश्वत, अद्‌भुत और चिरस्थायी प्रतिफल]। ये दवाएं हैं जो ज्ञान और दिव्य ज्ञान से संबंधित हैं।

अपने आप को खर्च करने के लिए मजबूर करके कंजूसी को कम करना [उदात्त, मानवीय और धर्मार्थ प्रयासों में]: कंजूसी का गुण खर्च किए बिना समाप्त नहीं होता है। जिस तरह यात्रा के माध्यम से दूरी बनाए बिना प्यार का अंत नहीं होता है, भले ही प्रिय को छोड़ना और अलगाव स्वयं (नफ्स) पर बहुत कठिन है। हालांकि, अगर इस कठिनाई को एक बार सहन कर लिया जाए, तो दिल को सांत्वना देने के कुछ साधन दूर रहकर पैदा हो जाते हैं। इसी तरह, जो कंजूसी को कम करना चाहता है, उसे खुद को अपने धन और संपत्ति से अलग होने के लिए मजबूर करना चाहिए। कंजूसी से खुद को बचाने के लिए एक अच्छी रणनीति यह है कि किसी को धोखा दिया जाए और प्रसिद्धि और [सामाजिक] सम्मान प्राप्त करने के लिए उदारता से खर्च करने के लिए राजी किया जाए, जैसा कि लोग एक को उदार कहते हैं। प्रारंभ में, यह कार्य दिखावा होगा लेकिन बाद में, यह किसी के स्वभाव का हिस्सा बन जाएगा और दिल प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा की इच्छा के बिना खर्च करने की इच्छा करेगा। यह सच है कि इस रणनीति से दिल आडंबर की बुराई से दूषित हो जाता है, लेकिन आडंबर को मिटाना कंजूसी को मिटाने जितना मुश्किल नहीं है। धन की मृत्यु के बाद दिल को सांत्वना देने के साधन हैं प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा। जैसे शिशुओं को पक्षियों से विचलित करके दूध से छुड़ाया जाता है, वैसे ही वे खेल में व्यस्त हो जाते हैं और दूध के बारे में भूल जाते हैं। एक बार जब वे दूध से बेपरवाह हो जाते हैं, तो उन्हें खेल से भी हटा दिया जाता है। अन्य बुरी आदतें भी उसी स्थिति में होती हैं जिसमें एक दूसरे पर थोपा जाता है, उदाहरण के लिए, वासना को क्रोध की तीव्रता को कम करने के लिए उस पर थोपा जाता है और क्रोध की गंभीरता को कम करने के लिए वासना पर थोपा जाता है, लेकिन यह रणनीति ऐसे व्यक्ति के लिए प्रभावी होती है जिसके स्वभाव में प्रसिद्धि और आडंबर के प्रति प्रेम पर कंजूसी का गुण हावी होता है। इस तरह मजबूत को कमजोर [आदत या गुणवत्ता] से बदल दिया जाता है। हालांकि, अगर कोई उतना ही प्रसिद्धि प्रेमी है जितना कि कंजूस है, तो दिखावटी के साथ कंजूसी को खत्म करने का कोई फायदा नहीं है क्योंकि इस तरह से, एक बुराई खत्म हो जाएगी लेकिन उसी स्तर की दूसरी बुराई शुरू हो जाएगी। किसी में कंजूसी या आडंबर का प्रमुख गुण है या नहीं, इसका संकेत यह है कि इस व्यक्ति को आडंबर के लिए खर्च करना मुश्किल नहीं लगता है। यदि ऐसा है, तो यह कहा जाएगा कि आडंबर प्रमुख है क्योंकि कोई व्यक्ति आडंबर (प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा) के लिए धन

जैसी प्यारी चीज खर्च करने को तैयार है। यदि किसी को आडंबर के लिए खर्च करना मुश्किल लगता है, तो यह कहा जाएगा कि कंजूसी उस पर हावी है क्योंकि वह आडंबर के लिए खर्च करने को तैयार नहीं है।

दूसरों के माध्यम से इन नकारात्मक गुणों को मिटाने का उदाहरण यह है कि एक मृत शरीर के घटक [कब्र में दफनाए] कीड़े बन जाते हैं। जब इन कीड़ों के खाने के लिए कब्र में कुछ भी नहीं बचता है, तो ये कीड़े एक-दूसरे को तब तक खाते हैं जब तक कि उनकी संख्या [लगातार] कम न हो जाए जब तक कि अंत में केवल दो बड़े कीड़े ही रह जाएं। जब उन्हें खाने के लिए कुछ नहीं मिलता है, तो वे एक-दूसरे पर हमला करते हैं और प्रमुख दूसरे को खा जाता है। बाद में, प्रमुख कीट खाने के लिए कुछ नहीं मिलने के कारण भूख से मर जाता है। इसी तरह, यह संभव है कि बुरे गुणों में, जो गुण कमजोर है, वह उस गुणवत्ता के लिए भोजन बनना बंद कर देता है जो मजबूत है। इन गुणों के लिए भोजन बंद करने का अर्थ उनकी मांगों पर कार्य न करना है। इस तरह, वह गुण अपने आप कमजोर हो जाएगा और अंत में समाप्त हो जाएगा। उदाहरण के लिए, एक कंजूस का उद्देश्य धन को [खर्च में दूर जाने से] रोकना है। यदि कोई धन खर्च करके अपनी मांगों के विरुद्ध कार्य करता है, भले ही ऐसा करना बहुत कठिन हो, तो कंजूसी का गुण समाप्त हो जाएगा, और मन खर्च करने की इच्छा करने लगेगा और उसके स्वभाव पर कोई बोझ नहीं पड़ेगा।

कंजूसी के लिए ज्ञान-आधारित और क्रिया-आधारित इलाज: कंजूसी का ज्ञान-आधारित इलाज इसके नुकसान और उदारता के लाभों का ज्ञान प्राप्त करना है, और कार्रवाई-आधारित इलाज किसी के स्वभाव (स्वयं) को धर्मार्थ कारणों पर खर्च करने के लिए मजबूर करना है। कभी-कभी कंजूसी का गुण इतना प्रभावशाली और प्रबल होता है कि यह व्यक्ति को बहरा और अंधा बना देता है, और व्यक्ति कंजूसी में किसी भी बुराई और उदारता में किसी भी अच्छाई को देखना बंद कर देता है। दूसरे शब्दों में, कोई उस समझ और समझ को प्राप्त नहीं करता है जिसके बिना उदारता की भावना सक्रिय नहीं होती है, जो बदले में इस गुण [कंजूसी का] को मृत्यु तक हमेशा के लिए बना रहता है। जो किसी दवा को नहीं पहचानता, वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो ठीक हो जाए।

दुनिया के सभी धन और भौतिक संपत्ति की स्थिति ऐसी है [जो किसी की वास्तविक जरूरतों से परे है]। संसार (इसका सबसे प्रमुख प्रतीक संसार की धन-सम्पत्ति है) परमेश् वर के शत्रुओं का शत्रु है क्योंकि यह उन्हें नरक में ले जाता है, और परमेश् वर के मित्रों और अंतरंग लोगों का शत्रु भी है क्योंकि उन्हें इस पर धैर्य रखने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह परमेश्वर का शत्रु भी है क्योंकि यह उसके सेवकों (मनुष्यों) को उसके मार्ग पर चलने से रोकता है। यह अपना स्वयं का दुश्मन है क्योंकि यह खुद को उपभोग करता है क्योंकि धन की सुरक्षा रक्षकों के माध्यम से होती है [और इसकी सुरक्षा के विभिन्न अन्य साधन] जिसके लिए [बदले में] धन खर्च करने की आवश्यकता होती है। इस मामले का तथ्य यह है कि दुनिया (भौतिक संपत्ति) दुनिया की रक्षा करने के लिए खर्च की जाती है जब तक कि यह समाप्त नहीं हो जाता है और कुछ भी नहीं बचता है। एक व्यक्ति जो भौतिक संपत्ति के नुकसान के बारे में जानता है, वह उनका आदी नहीं होता है और न ही कोई इसके अधिग्रहण का जश्न मनाता है या कोई अपनी वास्तविक जरूरतों से अधिक लेता है। जो केवल आवश्यकताओं से संतुष्ट है, वह कंजूसी का अभ्यास नहीं करता है, क्योंकि अपनी आवश्यकताओं की मात्रा में धन और भौतिक संपत्ति को बचाना, कंजूसी नहीं है; और जिसकी आवश्यकता नहीं है, उसके लिए कोई व्यक्ति इसकी रक्षा करके स्वयं को कठिनाई में नहीं

डालता है, बल्कि इसे [साथी मनुष्यों के लाभ के लिए धर्मार्थ, लाभकारी प्रयासों पर, और इस तरह से इसका उपयोग शाश्वत सुख और अंतहीन विजय प्राप्त करने के लिए करता है]।

धन और भौतिक संपत्ति के संबंध में मानवीय दायित्व: जैसा कि नीचे समझाया गया है, धन एक अर्थ में अच्छा है और एक अर्थ में बुरा है। इसकी समानता एक सांप की तरह है जिसमें जहर और मारक दोनों होते हैं और इसका जहर घातक होता है [जबकि इसका मारक जीवन रक्षक है]। इसी तरह, धन में जहर और मारक दोनों होते हैं। जो इसके जहर से बच सकता है, वह वह है जो अपने दायित्वों पर नजर रखता है [धन और उसके अधिग्रहण के संबंध में]।

पहला दायित्व: क्या व्यक्ति को इसके उद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि परमेश्वर ने धन और भौतिक संपत्ति क्यों बनाई थी और मनुष्य को इसकी आवश्यकता क्यों है। इसे जानने के बाद, कोई व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त कमाई करेगा, जो आवश्यक है उससे अधिक की रक्षा नहीं करेगा, और किसी ऐसे व्यक्ति को अपनी संपत्ति नहीं देगा जो इसके योग्य नहीं है (कोई इसे व्यर्थ के प्रयासों के बजाय महान योग्य प्रयासों पर खर्च करेगा जो केवल सांसारिक जीवन की धूमधाम और चमक को बढ़ाते हैं)।

दूसरा दायित्व: आय के उन स्रोतों से बचने के लिए आय के स्रोतों पर नज़र रखना है जो विशुद्ध रूप से निषिद्ध हैं [ईश्वरीय कानून में जैसे जबरन वसूली, रिश्वत, सूदखोरी, चोरी, आदि] या अधिकांश भाग के लिए निषिद्ध हैं जैसे कि शासकों से प्राप्त धन। इसी तरह, व्यक्ति को अवांछनीय चीजों से बचना चाहिए जो किसी के चरित्र की शुद्धता को धूमिल करती हैं जैसे कि उपहार जिनमें रिश्वत के निशान हैं या दूसरों से पूछना (या भीख मांगना) जिसमें अपमान है।

तीसरा दायित्व: किसी की व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था (वित्तीय आवश्यकताओं) के लिए आवश्यक राशि पर विचार करना है। किसी को आवश्यकता से अधिक प्राप्त नहीं करना चाहिए [आँख बंद करके भौतिकवादी और लालची बनने से बचने के लिए जो किसी की आध्यात्मिकता और आध्यात्मिक प्रयासों को तुरंत मार देता है] और न ही ऐसी राशि जो किसी की आवश्यकता से कम हो । [मानव] जरूरतें तीन चीजों से संबंधित हैं: भोजन, कपड़े और निवास। उनमें से प्रत्येक के पास तीन डिग्री हैं: साधारण, उत्कृष्ट और मध्यम (एक जो सामान्य और उत्कृष्ट के बीच में है)। जब तक मनुष्य का झुकाव कम की ओर नहीं होगा, तब तक वह [अपनी वास्तविक] जरूरतों की सीमा के करीब होगा और जब यह उससे अधिक हो जाएगा, तो वह एक गहरे गड्ढे में गिर जाएगा जिसका कोई अंत नहीं है। हमने सांसारिकता से संयम की पुस्तक (अध्याय 14) में इन डिग्रियों का विवरण प्रदान किया है।

चौथा दायित्व: खर्च करने के अवसरों पर नज़र रखना है [महान और धर्मार्थ कारणों के साथ-साथ किसी की जरूरतों पर]। खर्च में संयम होना चाहिए - न तो अतिशयता होनी चाहिए और न ही सीमा से परे संकुचन होना चाहिए। किसी को वैध उद्देश्यों पर खर्च करना चाहिए जैसा कि किसी ने वैध तरीकों से अर्जित किया है। जिस तरह [दूसरों से उनका धन और संपत्ति] अनुचित रूप से लेना पाप है, उसी तरह अनुचित रूप से खर्च करना भी पाप है।

पांचवां दायित्व: धन और भौतिक संपत्ति लेने, देने, रोकने और खर्च करने में सही इरादे को बनाए रखना है। जब कोई भौतिक संपत्ति लेता है [कानूनी और नैतिक साधनों से], तो इरादा ईश्वरीय पूजा में उससे

सहायता प्राप्त करने का होना चाहिए। जब कोई भौतिक संपत्ति को पीछे छोड़ देता है, तो उसे सांसारिकता से दूर रहने का इरादा रखना चाहिए। जब कोई ऐसा करता है, तो धन की उपस्थिति हानिकारक नहीं होगी। इसीलिए, अली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "यदि कोई व्यक्ति दुनिया के सभी खजाने का मालिक बन जाता है, लेकिन उसका उद्देश्य ईश्वर की प्रसन्नता (रिदा) को प्राप्त करने के अलावा और कुछ नहीं है, तो उसे (सांसारिकता से) संयमी (जाहिद) कहा जाएगा, और यदि कोई सारा धन खर्च कर देता है लेकिन ईश्वर की प्रसन्नता उद्देश्य नहीं है, तब किसी को संयमी नहीं कहा जाएगा। आपकी सभी हरकतें और आराम केवल भगवान के लिए होने चाहिए - उन्हें या तो [दिव्य] पूजा या पूजा के लिए सहायक होना चाहिए।

ऐसा कुछ भी नहीं है [छोटी चीजों से जो किसी के पास है] जो भगवान (दीन) के मार्ग में सहायक नहीं हो सकता *है* जैसे शर्ट, पजामा, बिस्तर, बर्तन, आदि। ये सभी चीजें जीवन के लिए आवश्यक हैं। ऐसी चीज़ों को रखने के बजाय जो ज़रूरतों से परे हैं, किसी को यह सोचना चाहिए कि परमेश्वर के अन्य सेवकों को उनसे लाभ हो सकता है। इसीलिए, यदि कोई आपकी जरूरतों के साथ आपके पास आता है और आपके पास वह अतिरिक्त और आपकी आवश्यकता से परे है, तो आपको [मदद करने के लिए] इनकार नहीं करना चाहिए।

जो इन सिद्धांतों का पालन करता है वह उस व्यक्ति की तरह है जो सांप से मारक निकालता है जो इसका वास्तविक मूल्य है और इसके जहर से बचाव करता है। ऐसे व्यक्ति को धन की प्रचुरता से कोई नुकसान नहीं होता है। यह भेद किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा प्राप्त किया जाता है जिसे धर्म की पूरी समझ है और बेहतर ज्ञान है। जो धन संचय करता है और सोचता है कि ऐसा व्यक्ति [कुछ] भविष्यवक्ता साथी (सहाबा *)* की तरह है, जिसके पास धन है, वह उस बच्चे की तरह है जिसमें समझ की कमी है और एक सांप-स्वामी को सांप को नियंत्रित करते हुए देखने के बाद, यह सोचकर एक सांप को पकड़ना शुरू कर देता है कि जैसे सपेरा सांप को पकड़ने में सक्षम था, वैसे ही कोई भी ऐसा करने में सक्षम होगा। ऐसा बच्चा निश्चित रूप से मर जाएगा। इन दोनों के बीच यही अंतर है (भविष्यद्वाणी के साथी जिनके पास कुछ धन था और साधारण व्यक्ति जो खुद को उनके जैसा मानते हैं), हालांकि, सांप द्वारा काटा गया स्पष्ट है लेकिन एक को धन से काटा जाना स्पष्ट नहीं है।

मैं आपको बताऊंगा कि पवित्र पूर्ववर्ती (सलाफ *सलीहीन)* क्या थे और आप क्या हैं। कुछ भविष्यसूचक साथियों [जो संख्या में कुछ थे] के पास धन था ताकि उन्हें भीख मांगने या मांगने की आवश्यकता न हो और ताकि वे परमेश्वर के मार्ग में खर्च करने में सक्षम हों। उन्होंने कानूनी तरीकों से अपनी संपत्ति अर्जित की। उन्होंने अनुमेय (हलाल) भोजन खाया, मध्यम मात्रा में खर्च किया, और इसे परलोक में सफलता का साधन बना दिया। उन्होंने किसी के अधिकारों को हड़पना नहीं था, उन्होंने कंजूसी का अभ्यास नहीं किया था, उन्होंने अपनी अधिकांश संपत्ति और भौतिक संपत्ति को परमेश्वर के मार्ग में खर्च कर दिया था, और उनमें से कुछ ने अपनी पूरी संपत्ति को दूसरों की जरूरतों को खुद पर प्राथमिकता देकर दान में खर्च कर दिया [वास्तव में परोपकारी तरीके से]। मैं आपसे पूछता हूं, "क्या आप भी ऐसे ही हैं? यह स्पष्ट है कि ऐसा नहीं है। आपके पास पवित्र पूर्ववर्तियों के साथ थोड़ी सी भी समानता नहीं है।

भविष्यद्वाणी के साथी कैसे थे? भविष्यद्वाणी के साथी ऐसे थे कि वे [भौतिक] गरीबी से प्यार करते थे [जो आत्मिक समृद्धि के साथ आता था]। वे गरीबी और भुखमरी के डर से रहित थे और उन्हें अपने जीविका

के बारे में परमेश्वर पर भरोसा था। वे अपने भाग्य के बारे में खुश थे, उन कठिनाइयों को स्वीकार करते थे [जिन्हें वे सहने के लिए मजबूर थे]। उन्होंने गरीबी में आभार व्यक्त किया और कठिनाइयों में धैर्य का अभ्यास किया। उन्होंने सहजता और आराम से परमेश्वर की महिमा की, उन्होंने परमेश्वर के लिए खुद को दीन किया, और वे अहंकार, श्रेष्ठता की जटिलता और भौतिक संपत्ति की प्रचुरता पर गर्व से डरते थे। उन्होंने दुनिया से केवल वही हिस्सा लिया जो उनके लिए अनुमेय था, वे अपनी वास्तविक [कथित आवश्यकता के विपरीत] के अनुरूप राशि स्वीकार कर रहे थे, उन्होंने दुनिया (सांसारिकता) को अस्वीकार कर दिया, धैर्य के साथ इसकी कठिनाइयों को सहन किया, इसकी कड़वाहट का स्वाद चखा, इसके आराम और आशीर्वाद को अस्वीकार कर दिया। क्या आप कसम खा सकते हैं कि आप ऐसे हैं? हमारे ज्ञान में आया है कि जब दुनिया ने उनके दरवाजे पर दस्तक दी, तो वे डर से कांपते थे [भगवान के मार्ग से भटक जाने के] और यह मानते थे कि उन्होंने कुछ पाप किया है जिसका तत्काल दंड दुनिया (भौतिकवादी उपलब्धियों) के रूप में दिया जा रहा था। जब गरीबी आती थी, तो वे इसका स्वागत करते थे और इसे धर्मियों के मार्ग के रूप में अपनाते थे। कुछ भविष्यवक्ताओं के साथियों के बारे में हमें यह परंपरा मिली है कि अगर वे सुबह अपने घरों में कुछ देखते थे, तो वे अत्यधिक दुखी हो जाते थे और अगर उन्हें कुछ नहीं मिलता था, तो वे अपने दिन की शुरुआत मुस्कुराहट के साथ करते थे। अगर किसी ने इस पर आश्चर्य व्यक्त किया और कहा, "लोग अपने घरों में धन देखकर खुश होते हैं लेकिन आप दुखी हो जाते हैं", तो वे जवाब देते थे, "परिवार के साथ कुछ देखकर मुझे दुख होने का कारण यह है कि मेरा घर पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घराने के रास्ते पर नहीं चल रहा है। कुछ भविष्यद्वाणी साथियों के बारे में बताया गया है कि जब उन्होंने समृद्धि का अनुभव किया तो उनके दुःख की स्थिति देखने लायक थी और उन्हें यह कहते हुए देखा गया था, "दुनिया (सांसारिकता) का हमसे क्या लेना-देना है?" यदि उन पर कठिनाइयाँ आती थीं और उनके घरों में संकुचन ने कदम रखा था, तो वे खुश होते थे और इसे अपने लिए एक अच्छा शगुन मानते थे और कहते थे, "अब हमारे प्रभु ने हम पर परोपकार की दृष्टि डाली है"। ये पवित्र पूर्ववर्तियों (सलाफ *सलीहीन) की अवस्थाएँ और लक्षण हैं*। उनके प्रकाश में, यह अच्छी तरह से तय किया जा सकता है कि धन बेहतर है या गरीबी। अब क्या आप [भगवान की कसम] कसम खा सकते हैं और पुष्टि कर सकते हैं कि आपके पास वही [आंतरिक आध्यात्मिक] अवस्थाएं हैं? तुम इन पवित्र और पवित्र लोगों से थोड़ी सी भी समानता नहीं रखते।

तुम कैसे हो? अब मैं आपकी स्थिति का वर्णन करूंगा और आपके उन गुणों पर प्रकाश डालूंगा जो पवित्र पूर्ववर्तियों की स्थितियों और गुणों से बिल्कुल भी मेल नहीं खाते हैं। आप धन में विद्रोही हो जाते हैं, समृद्धि में घमंडी हो जाते हैं, और आराम और आराम से खुशी के साथ नृत्य करते हैं। आपके मन में गरीबी से घृणा है, भले ही यह भविष्यद्वक्ताओं के लिए गर्व की राजधानी थी। आप उनके गर्व की पूंजी से नफरत करते हैं। आप गरीबी के डर से धन संचय करते हैं, हालांकि यह परमेश्वर के बारे में बुरी राय को आश्रय दे रहा है और उसके वादे में विश्वास की कमी का प्रमाण है। यह एक मामला आपके [आसन्न] अशुभ अंत [आपकी सांसारिक यात्रा का] एक उचित गवाह है कि आप केवल सांसारिक आशीर्वादों, इच्छाओं, सुख-सुविधाओं और वासनाओं को पूरा करने के लिए धन जमा करते हैं, भले ही हमारे पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा था:

شرار امتی الذین غذوا بالنعیم فربت علیہ اجسامهم

"मेरे राष्ट्र के सबसे बुरे (दुष्ट प्रवण) लोग वे हैं जो शानदार भोजन खाते हैं और उनके शरीर को इससे पोषण

मिलता है (यानी, वे दुनिया के सुख-सुविधाओं, विलासिता और अच्छे जीवन के आदी हैं, और ईश्वर की स्वीकृति और अनुमोदन की ओर ले जाने वाले आध्यात्मिक मार्ग में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले प्रयासों और प्रयासों का कोई संबंध नहीं रखते हैं)।

एक विद्वान ने कहा है कि जब लोग कयामत के दिन अपने अच्छे पुण्य कर्मों की तलाश में आएंगे, तो उनसे कहा जाएगा:

أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا

"आपने पहले ही दुनिया में जीवन की अच्छी चीजें हासिल कर ली हैं [जैसा कि आप भव्य, भव्य जीवन जीते थे और परलोक में आपके लिए कुछ भी नहीं बचा है]। (कुरान, अध्याय 46, श्लोक 20)

अपनी लापरवाही की नींद से उठो! यदि आप इस दुनिया के आशीर्वाद के कारण परलोक के आशीर्वाद से वंचित हो जाते हैं, तो यह बहुत अभाव, दुख और कठिनाई का स्थान होगा। आप धन भी जमा करते हैं ताकि आप इसकी प्रचुरता के कारण एक-दूसरे पर गर्व व्यक्त कर सकें और अपने आप को श्रेष्ठ मान सकें [उस आधार पर]। लेकिन हमें यह परंपरा प्राप्त हुई है कि जो कोई भी अति और अभिमान के लिए संसार को जमा करता है, वह ईश्वर से ऐसी अवस्था में मिलेगा कि ईश्वर उस व्यक्ति से प्रसन्न हो जाएगा। लेकिन अफसोस, आपको परमेश्वर की नाराजगी की थोड़ी सी भी परवाह नहीं है। आप अपनी ही स्थिति में डूबे हुए हैं और अपने अंतिम अंत से बेखबर हैं। आपको अपने प्रभु की निकटता की ओर जाने की तुलना में दुनिया में रहना अधिक प्रिय लगता है। आप भगवान से मिलना पसंद नहीं करते हैं और भगवान आपसे मिलना बेहद नापसंद करते हैं। अगर दुनिया से कुछ भी आपके लिए उपलब्ध नहीं है तो आपकी अभाव की भावना देखने लायक है। आपकी स्थिति ऐसी है कि आप दुनिया (सांसारिक संपत्ति) को जमा करने के लिए खुद को धर्म के बंधनों से मुक्त करते हैं और जब आप इसे प्राप्त करते हैं, तो आप खुशी से झूलते हैं, हालांकि पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और ईश्वर का आशीर्वाद हो) ने कहा:

من احب الدنيا وسر بها ذهب خوف الآخرة من قلبه

"जो दुनिया से प्यार करता है और जब वह इसे प्राप्त करता है तो खुश होता है, ऐसे व्यक्ति के दिल को परलोक का डर छोड़ देता है।

जितना इंटरेस्ट सांसारिक मामलों में है, उतना परलोक के मामलों में नहीं लेते हैं। पापों से पीड़ित आपके लिए उतना महान नहीं है जितना कि दुनिया (धूमधाम , चमक, महिमा, धन और भौतिक संपत्ति) न मिलने से होने वाली पीड़ा। आप पापों (गलत कामों) से नहीं डरते जैसे आप धन के नुकसान से डरते हैं। प्रसिद्धि और शक्ति प्राप्त करने के लिए आप अपनी पूरी पूंजी खर्च कर सकते हैं, लेकिन आप किसी ऐसे व्यक्ति की मदद करने में असमर्थ हैं जो पीड़ित है। आप गरिमा और सम्मान पाने के लिए रचनाओं को खुश कर सकते हैं, लेकिन आपके पास ईश्वरीय स्वीकृति प्राप्त करने का समय नहीं है। यह सच है कि धन आपके दोषों को छुपाता है और लोग आपकी आलोचना नहीं करते हैं, लेकिन भगवान आपकी [सच्ची] स्थिति से अवगत हैं। लेकिन आप परमेश्वर के ज्ञान और जागरूकता की परवाह कब करते हैं [आप वास्तव में कैसे हैं]? आप इस दुनिया के अपमान को बर्दाश्त नहीं करते हैं, लेकिन आप उस अपमान के लिए तैयार हैं जिसका आप परलोक में सामना करने जा रहे हैं। ये सेवक परमेश्वर से भी अधिक प्रिय हैं। अगर यह

अज्ञानता नहीं है, तो यह क्या है? तुम्हारा आंतरिक अस्तित्व असंख्य गंदगी से भरा हुआ है और अनगिनत दोषों का स्रोत है, लेकिन तुम अपने धन को परमेश्वर के धर्मी सेवकों के धन के समान मानते हो। हाय! आप पवित्र पूर्ववर्तियों के [आचरण और चरित्र] से कितने दूर हैं! परमेश्वर की कसम, वे अनुमेय चीजों में इस हद तक परहेज करते थे कि तुम अनुमेय चीजों में नहीं हो। उन्हें आपके बड़े पापों की तुलना में छोटी-छोटी गलतियों का डर था [परमेश्वर के साथ उनके खड़े होने पर इसके प्रभाव के कारण] । वे [हममें] जिनके चरित्र लक्षण उनके (पवित्र पूर्ववर्तियों) से मेल नहीं खाते हैं, वे न तो इस दुनिया में उनके जैसे हैं और न ही परलोक में उनके साथी होंगे। लोगों के दो समूहों के बीच का अंतर काफी स्पष्ट है।

यदि आप अपने आप को पवित्र पूर्ववर्तियों का उदाहरण मानते हैं तो आपको कम से संतुष्ट होना चाहिए, [यहां तक कि अनुमेय और] कानूनी भौतिक संपत्ति से भी परहेज करना चाहिए, जितना संभव हो सके ईश्वर के मार्ग में खर्च करना चाहिए, परोपकारी बनना चाहिए, गरीबी का कोई डर नहीं होना चाहिए, धन के लालच से नफरत करनी चाहिए, कम [भौतिकवाद] और [आगे] कठिनाइयों के लिए सहमत होना चाहिए, अभाव से खुश होकर विनम्रता को अच्छा समझो, अहंकार और उच्च रुतबे की तलाश को तिरस्कार से देखो, अपने मामलों में मजबूत हो। हृदय मार्गदर्शन को नापसंद नहीं करता है, तुमने परमेश्वर के दायित्वों और अधिकारों के बारे में [इस तरीके से] अपने स्वयं के साथ जवाबदेही की होगी, और अपनी सभी अवस्थाओं को परमेश्वर की स्वीकृति और स्वीकृति के सांचे में ढाला होगा। इस स्थिति में, आपको [न्याय के दिन] जवाबदेही के लिए खड़ा नहीं किया जाएगा और आपको परमेश्वर का भय मानने वाले की श्रेणी में गिना जाएगा।

यीशु की परंपराओं से धन के लालच का एक उदाहरण: जरीर लैथ (भगवान उन दोनों पर दया करें) से बताते हैं कि एक आदमी ने यीशु की कंपनी को अपनाया (उस पर शांति और भगवान की आशीषें हों)। वे दोनों कहीं चले गए जब तक कि वे एक धारा में नहीं पहुंच गए। वे दोनों भोजन के लिए उसके बगल में बैठ गए। उनके पास तीन रोटियां थीं इसलिए दोनों ने एक-एक रोटी खाई और तीसरी रह गई। यीशु पानी पीने के लिए धारा के पास गया और जब वह वापस आया, तो तीसरी रोटी चली गई। उसने अपने यात्रा साथी से इसके बारे में पूछा, जिसने इसकी जानकारी नहीं व्यक्त की। यीशु चुप रहे और अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी। उन्हें एक मादा हिरण के साथ उसके दो बच्चे मिली। यीशु ने हिरण के बच्चों में से एक को आने के लिए कहा, जो आया और उसने उसका वध किया, मांस पकाया, और उसमें से खाया और अपने यात्रा साथी को भी परोसा। तब यीशु ने हिरण के बच्चे से कहा, "परमेश्वर की आज्ञा से जीवित हो जाओ!" और वह फिर से जीवित हो गया। उन्होंने अपने यात्रा साथी को संबोधित किया और कहा, "मैं आपसे उस प्राणी (भगवान) को शपथ दिलाकर पूछता हूं जिसने आपको यह चमत्कार दिखाया, तीसरी रोटी कहां गई? उन्होंने जवाब दिया, "मुझे नहीं पता"। उसके बाद वे दोनों एक ऐसी घाटी में पहुंचे जो पानी से भरी हुई थी जहां भी आंखें देख सकती थीं। उसने उसका हाथ पकड़ लिया और पानी पर चलकर उस घाटी को पार कर गया। जब वे सूखी भूमि पर पहुंचे, तो उसने उससे फिर पूछा, "मैं तुमसे उस प्राणी (परमेश्वर) की कसम खाकर पूछता हूँ जिसने तुम्हें यह चमत्कार दिखाया, वह रोटी किसने ली?" उन्होंने फिर जवाब दिया, "मुझे नहीं पता"। यात्रा फिर से शुरू हुई और इस बार जब वे जंगल में पहुंचे तो वह रुक गया। यीशु ने कुछ मिट्टी, ईंटें और पत्थर इकट्ठे किए और कहा, "परमेश्वर की आज्ञा से, सोना बन जाओ!" जब मिट्टी, पत्थरों और ईंटों का ढेर सोने में बदल गया, तो यीशु ने उसे तीन भागों में विभाजित किया और कहा, "एक भाग मेरा है, एक तुम्हारा है और एक उस व्यक्ति के लिए है जिसने तीसरी रोटी ली है"। उसके

सहयात्री ने तुरंत कहा, "मैं वही हूं जिसने तीसरी रोटी ली है"। यीशु ने उसे सारा सोना दिया और अपने आप को उससे अलग कर लिया और बाहर चला गया। वह आदमी सोने के ढेर के साथ जंगल में तब तक बैठा रहा जब तक कि दो आदमी नहीं आ गए। इस धन को देखकर वे लालची हो गए और उस आदमी को मारने और सारी संपत्ति छीनने का इरादा किया। उसने विनती की, "मुझे मत मारो, हम सब इस धन में बराबर के भागीदार हो सकते हैं। सबसे पहले, हम में से एक को कुछ भोजन लेने के लिए पास के गांव में जाना चाहिए। एक बार जब हम खा लेंगे, तो हम यह सब आपस में बांट देंगे। दो लोगों में से एक जो आया था, कुछ खाना लेने गया था, और अपने दिल में सोचने लगा, "अगर मैं भोजन में जहर मिलाता हूं, तो ये दोनों मर जाएंगे और मैं इस धन का एकमात्र मालिक बन जाऊंगा"। दूसरी ओर, दो लोग [जंगल में इंतजार कर रहे हैं] ने भोजन लाने के बाद उसे मारने की साजिश रची ताकि वे सोने को आपस में दो हिस्सों में समान रूप से वितरित कर सकें। तीसरा शख्स जब गांव से खाना लेकर आया तो उन्होंने उसकी हत्या कर दी तो जहरीला खाना खाकर खुद ही उसकी मौत हो गई। सोने का ढेर वहीं रहा जबकि उनके तीन शव गिद्धों और कुत्तों द्वारा खाए गए सोने के चारों ओर रखे हुए थे। कुछ दिनों के बाद, यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीष) उस स्थान से गुजरे। जब उसने यह देखा, तो उसने अपने यात्रा करने वाले साथियों से कहा, "देखो, यह दुनिया की स्थिति है, इसलिए तुम इससे सावधान रहो!"

अध्याय 8- प्रसिद्धि और प्रशंसा की तलाश के नुकसान

ग़ज़ाली की आठवीं पुस्तक उनकी महान *कृति* "इह्या *अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में प्रसिद्धि और लोकप्रियता की तलाश में होने वाले नुकसान से संबंधित है। ये बीमारियाँ इतनी आत्म-उपभोग करने वाली हैं कि वे किसी के जीवन को पकड़ लेती हैं और किसी को आध्यात्मिक मार्ग से हटा देती हैं - जो पहले से ही इस ग्रंथ के पहले भाग में उल्लिखित है - और आंतरिक शांति और शांति को लूट लेती है। ग़ज़ाली इन बीमारियों, उनकी उत्पत्ति के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, और उन्हें अपने दिल से मिटाने के तरीके बताता है, जिसके परिणामस्वरूप इसे आंतरिक शांति और शांति से भर दिया जाता है। प्रसिद्धि की तलाश अहंकार और परिणामी अहंकार को बढ़ावा देती है, साथ ही स्वयं (*नफ्स*) के प्रति जुनून और इसकी कमियों के प्रति अंधापन के साथ, इस प्रकार आत्म-सुधार की सभी संभावनाओं को नष्ट कर देती है और चीजों को बेहतर के लिए बदल देती है। प्रशंसा की तलाश करना एक और हानिकारक विशेषता है जो अच्छे मानवीय कार्यों से ईमानदारी को हटा देती है और उन्हें स्वार्थी, स्वार्थी, आत्म-प्रशंसा और गुप्त उद्देश्यों से कलंकित करती है। यह सच्चे सार और अर्थ से रहित खाली दिखावे के लिए मानव प्रयासों के मूल्य को कम कर देता है। ग़ज़ाली इन आंतरिक बीमारियों का इलाज प्रदान करती है जो आंतरिक शांति और शांति में बाधा डालती हैं। ग़ज़ाली की इस पुस्तक की सामग्री यहाँ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत की गई है [14]:

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

إني أخوف ما أخاف على امتي الرياء والشهوة الخفية التي هي اخفى من دبيب النملة السوداء على الصخرة الصماء في الليلة الظلماء

"मैं अपने देश में [प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा और लोकप्रियता की तलाश में] दिखावा और विवेकपूर्ण वासना के [दो हानिकारक आंतरिक लक्षणों] से सबसे अधिक डरता हूं। वे एक अंधेरी काली रात में एक गहरे काले रंग की चट्टान पर एक गहरे काले चींटी के रेंगने की तुलना में अधिक बुद्धिमान हैं [क्योंकि इसका पता लगाना बेहद कठिन है, इसलिए आत्मा के इन दो नुकसानों से खुद को बचाने के लिए अत्यधिक सावधानी बरतनी

चाहिए जो आत्मा के अंतरतम में दफन हो सकते हैं आध्यात्मिक पथ से विचलित करते हुए]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्ने माजा* और *हकीम* शद्दाद इब्न अवस के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

यही कारण है कि महान विद्वानों (विद्वान धर्मशास्त्रियों) को भी आडंबर और विवेकपूर्ण वासना के नुकसान के ज्ञान के बारे में पता नहीं चलता है, इसलिए हम गैर-विद्वान उपासकों (आम आदमी) और ईश्वर-भय के लोगों से इसका ज्ञान कैसे उम्मीद कर सकते हैं। आडंबर स्वयं (नफ्स) के आंतरिक नुकसानों में से एक है, और इसके विवेकपूर्ण धोखे और जो लोग विशेष रूप से उनमें शामिल हैं, वे विद्वान धर्मशास्त्री, उपासक और वे हैं जो परलोक के मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये लोग कठिन आध्यात्मिक संघर्षों के बाद अपने निचले स्व (*नुफस,* यानी, नफ्स का बहुवचन) को अपने अधीन कर लेते हैं, अपने आप को संदिग्ध मामलों से बचाते हैं [जो देखने में कठिन हैं और न केवल निषिद्ध चीजों और मामलों से जो स्पष्ट हैं] और उन्हें ईश्वरीय पूजा की ओर झुकाते हैं [आत्मा की विकर्षणों और मैलापन के बिना जो शिथिलता और स्पष्टता में बदल गया है]। इस अवस्था में, वे शारीरिक अंगों से घोर पाप करने में असमर्थ हो जाते हैं [अब तक किए गए आध्यात्मिक प्रयासों के कारण]।

इस कठिनाई [आंतरिक आत्म-संयम] से कुछ राहत पाने के लिए, वे अपने अच्छे धर्मों को प्रदर्शित करने और लोगों के बीच लोकप्रियता और सम्मान प्राप्त करने के अलावा कोई अन्य रास्ता नहीं ढूंढते हैं। यह लोकप्रियता उन्हें खुशी देती है और कठिनाई की तीव्रता को कम करती है, जिससे बाहर निकलना मुश्किल है [उनके आध्यात्मिक प्रयासों के कारण जो प्रकृति में कठिन हैं]। ये वे लोग हैं जो अपने धार्मिक कार्यों को [सार्वजनिक रूप से] व्यक्त करते हैं और सृष्टि (साथी मनुष्यों) को उनकी पूजा और प्रयासों के बारे में जागरूक करने की इच्छा रखते हैं। सृष्टिकर्ता का ज्ञान [उनकी आराधना के कार्यों और आध्यात्मिक प्रयासों के बारे में] पर्याप्त होना चाहिए था, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है और वे उनकी प्रशंसा करने वाले लोगों में खुशी पाते हैं। वे जानते हैं कि यदि हम वासनाओं और इच्छाओं को अस्वीकार करते हैं, संदिग्ध चीजों से बचते हैं, और ईश्वरीय पूजा की कठोरता से दूर नहीं होते हैं, तो लोगों की जीभ हमारी प्रशंसा करने में व्यस्त हो जाएगी, हमारी प्रशंसा में अतिशयोक्ति करेगी, उनकी आंखों में हमारे लिए सम्मान और गरिमा होगी, वे हमारे साथ मिलने और हमें देखने को बहुत सम्मान और गर्व का स्रोत मानेंगे, वे हमारी प्रार्थनाओं का लाभ उठाएंगे, हमारी राय का पालन करेंगे, हमारी सेवा करेंगे, हमें अभिवादन करने और सलाम करने में अग्रणी होंगे, [सामाजिक] सभाओं में हमारा सम्मान और सम्मान करेंगे, हमें खरीदने और बेचने में रियायतें देंगे, सभाओं में हमें [सभी से] आगे रखेंगे, हमें खाने-पीने और पहनने में खुद से ज्यादा तरजीह देंगे, वे विनम्र रहेंगे और हमारी ओर सिर झुकाए रहेंगे, और हमारे [गुप्त उद्देश्यों और] उद्देश्यों के अधीन होगा। इससे निम्न स्व (*नफ्स*) को इतना आनंद मिलता है कि पापों को छोड़ना मुश्किल नहीं रहता है और पूजा की नियमितता आसान हो जाती है, क्योंकि निम्न स्वयं ने [उपरोक्त सभी लाभों से] जो आनंद महसूस किया है, वह सभी सुखों का सार है। यह व्यक्ति सोचता है कि मेरा जीवन ईश्वर के लिए है और मैं ईश्वर की पसंद के अनुसार पूजा में व्यस्त हूं, भले ही ऐसा व्यक्ति छिपी हुई वासना में लिप्त है जो मजबूत और

मजबूत बुद्धि के अलावा किसी भी अन्य बुद्धि की धारणा से बाहर है [जो सत्य और सही समझ में दृढ़ता से आधारित हैं]। ऐसा व्यक्ति सोचता है कि मैं अपने दिल की ईमानदारी से भगवान की आज्ञा का पालन करता हूं और ईश्वर (हराम) द्वारा निषिद्ध चीजों से संयमित हूं, हालांकि, निचले स्व ने अपने आप में वासनाओं और इच्छाओं को एक स्थान दिया है ताकि भगवान के सेवकों (मनुष्यों) के सामने पूजा को अलंकृत किया जा सके और ताकि वे लोगों की झूठी स्तुति में खुशी पाएं। यह ईश्वरीय आज्ञाकारिता [और पूजा] के उनके कार्यों के ईश्वरीय प्रतिफल को रद्द कर देता है और वे अपने धर्मी कर्मों के आशीर्वाद से वंचित हो जाते हैं और उनके नाम पाखंडियों की सूची में लिखे जाते हैं, भले ही वे खुद को ईश्वर के अंतरंग मानते हों।

प्रसिद्धि और लोकप्रियता की तलाश की निंदा

लोकप्रियता [प्रसिद्धि प्राप्त करने और अनुसरण करने की इच्छा या इच्छा] की निंदा की जाती है और गुमनामी पसंद की जाती है और बेहतर होती है। अनस बिन मलिक (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

حب المرء من الشر الا من عصمه الله یشیر الناس الیه بالا صابع فی دینه و
دنیاه

"यह एक में बुराई है, सिवाय उस व्यक्ति के जिसकी ईश्वर रक्षा करता है, कि लोग अपने धर्म या दुनिया (सांसारिक स्थिति, प्रसिद्धि, कुछ क्षमता, प्रतिभा, शक्ति या धन के कारण लोकप्रियता) के बारे में अपनी उंगलियों से एक की ओर इशारा करते हैं। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *बेहाकी फी अल-शुआब*)

बशर ने कहा, "मैं किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में नहीं जानता जो लोकप्रियता पसंद करता हो और उसकी वजह से किसी की आस्था (धर्म) नष्ट या अपमानित नहीं हुई। जो प्रसिद्धि चाहता है, वह परलोक के सुखों में भाग नहीं लेता।

गुमनामी की उत्कृष्टता: पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

رب اشعث اغبر ذی طمرین لا یئوبه له لو اقسم علی الله لا بره منهم البراء بن
مالک

"ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके बाल अस्त-व्यस्त और धूल भरे शॉल हैं, जिन्हें कोई भी महत्व नहीं देता है [क्योंकि वे गरीब हैं, महत्वहीन, विनम्र और निम्न सामाजिक स्थिति से दिखते हैं, जिनके बारे में लोग किसी भी सांसारिक हैसियत और प्रतिष्ठा की कमी के कारण बहुत कुछ नहीं सोचते हैं] लेकिन अगर वे [किसी चीज पर] परमेश्वर की शपथ लेते हैं, तो परमेश्वर निश्चित रूप से [अस्तित्व में] वही लाएगा जिसकी उन्होंने शपथ खाई थी [क्योंकि उनके ज्ञान के कारण उन्हें परमेश्वर के सामने उच्च दर्जा प्राप्त है। ईश्वर के साथ अंतरंगता और निकटता] और बारा इब्न मलिक (एक भविष्यद्वक्ता साथी) उनमें से एक है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

अब्दुल्लाह बिन मसूद (रश्मा उन पर प्रसन्न हो) ने कहा कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

رب ذی طمرین لا یؤبه له لو اقسم علی اللّٰه لابرہ، لو قال: اللّٰھم انی اسالک
الجن لاعطاہ الجن ولم یعطہ من الدنیا شیئا

"कई लोग जिनके पास दो शॉल हैं [और उनके पास उस वस्त्र के लिए बस इतना ही है जो उनकी गरीबी को दर्शाता है] ऐसे हैं कि कोई भी उन्हें कोई महत्व नहीं देता है, लेकिन अगर वे किसी भी चीज पर भगवान की शपथ लेते हैं, तो भगवान निश्चित रूप से उनकी शपथ को पूरा करते हैं। यदि वे यह प्रार्थना करते हैं, 'हे परमेश्वर! मैं आपसे आपके स्वर्ग के लिए प्रार्थना करता हूं, भगवान निश्चित रूप से उन्हें स्वर्ग प्रदान करेंगे, भले ही वह उन्हें दुनिया में कुछ भी न दें। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया* और अबू *मंसूर अद-दयालामी*)

الا ادلکم علی اھل الجنة کل ضعیف مستضعف لو اقسم علی اللّٰہ لأبرہ
واھل النار کل مستکبر جوّاظ

"क्या मुझे आपको यह नहीं बताना चाहिए कि स्वर्ग के लोग कौन हैं? हर कमजोर और विनम्र व्यक्ति जो अगर परमेश्वर की शपथ लेता है, तो परमेश्वर निश्चित रूप से अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा (जिसकी उन्होंने शपथ ली थी), और नरक के लोग हर अहंकारी, असभ्य, असभ्य और अप्रिय व्यक्ति हैं। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम*)

फुदैल (भगवान उस पर दया करें) ने कहा: "यदि आप अज्ञात रह सकते हैं तो निश्चित रूप से ऐसा करें। क्या प्रसिद्धि और लोकप्रियता पाना और [हर जगह के लोगों से] प्रशंसा एकत्र करना आवश्यक है? यदि आप भगवान के प्यारे और प्रिय हैं, तो लोगों की नजर में नापसंद होने से आपको कोई नुकसान नहीं होगा। ये परंपराएं प्रसिद्धि की निंदा (अवांछनीयता और हतोत्साहित) और गुमनामी (अज्ञात होना) की उत्कृष्टता पर प्रकाश डालती हैं। प्रसिद्धि और लोकप्रियता अपने आप में नहीं मांगी जाती है, इसके बजाय, शक्ति

और प्रतिष्ठा (सामाजिक स्थिति) की प्राप्ति उद्देश्य है, और शक्ति और प्रतिष्ठा को पसंद करना सभी उथल-पुथल की जड़ है। प्रसिद्धि और लोकप्रियता की तलाश की निंदा की जाती है, लेकिन अगर कोई इसे केवल ईश्वरीय कृपा से प्राप्त करता है, तो इसके लिए इच्छा, खोज और प्रयास किए बिना यह निंदनीय नहीं है। हालाँकि, यह [मानसिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से] कमजोर लोगों के लिए परेशानी का कारण बन सकता है (फितना)। फिर भी, दृढ़ चरित्र के मालिकों को इसकी परेशानी से बचाया जाएगा। कमज़ोर का उदाहरण किसी ऐसे व्यक्ति की तरह है जो हाथ और पैर हिलाना जानता है [पानी में लेकिन फिर भी तैरना नहीं जानता है और उन लोगों में से है जो डूबने वाले हैं। यह बेहतर है कि जो लोग डूबने वाले हैं वे उस व्यक्ति को न जानते हैं जो हाथ और पैर हिलाना जानता है क्योंकि जब वे एक को हाथ और पैर हिलाते हुए देखेंगे [खुद को डूबने से बचाने के प्रयास में], तो वे ऐसे एक को पकड़ लेंगे। [नतीजतन,] वे खुद डूब जाएंगे और जो प्रयास कर रहा है उसे भी डूबने का कारण बनेंगे। हालांकि, शक्तिशाली लोगों के लिए प्रसिद्धि का कोई नुकसान नहीं है, इसके बजाय, डूबने वाले लोगों को विशेषज्ञ तैराक से अच्छी तरह परिचित होना चाहिए ताकि वे ऐसे तैराक को पकड़ सकें और किनारे की सुरक्षा तक पहुंच सकें और मोक्ष प्राप्त कर सकें।

शक्ति और प्रतिष्ठा के लिए प्रेम की निंदा: भगवान कहते हैं:

تِلْكَ ٱلدَّارُ ٱلْـَٔاخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا

"हम विशेष रूप से उन लोगों को परलोक का निवास देंगे, जो पृथ्वी पर आत्म-प्रशंसा (महानता) और उथल-पुथल की भी इच्छा नहीं रखते हैं। (कुरान, अध्याय 28, श्लोक 83)

इस आयत में, उथल-पुथल और महानता और महिमा की तलाश दोनों के इरादे और इच्छा का एक ही स्थान पर एक साथ उल्लेख किया गया है और यह कहा गया है कि परलोक केवल उन लोगों के लिए है जो इरादों और इच्छाओं दोनों से रहित हैं [उथल-पुथल फैलाने और महानता की तलाश करने के लिए क्योंकि ये दोनों किसी भी आध्यात्मिक आकांक्षाओं के लिए घातक हैं]। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

حب المال والجاه ينبتان النفاق في القلب كما ينبت الماء البقل

"धन और प्रसिद्धि के लिए प्यार दिल में पाखंड को बढ़ाता है जैसे पानी वनस्पति उगाता है।

प्रसिद्धि का अर्थ और उसकी वास्तविकता: प्रसिद्धि और धन दुनिया के दो तत्व हैं। दुनिया का अर्थ उन चीजों का मालिक बनना है जिनसे [भौतिक रूप से] लाभ उठाया जा सकता है और प्रसिद्धि का अर्थ उन दिलों का मालिक (बंदी और अधीनता) बनना है जिनका सम्मान, आज्ञाकारिता और अनुसरण वांछित है।

जिस तरह एक धनी धन का स्वामी बन जाता है और इस प्रकार अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है और निम्न स्व (नफ्स) की इच्छाओं और सुखों को पूरा करने में सक्षम होता है, उसी तरह एक प्रसिद्ध व्यक्ति दिलों का मालिक (बंदी और अधीनता) बनने के बाद, अपने हितों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उनका उपयोग करता है। जिस तरह धन विभिन्न उद्योगों और व्यवसायों के माध्यम से अर्जित किया जाता है, उसी तरह मामलों में सुंदर आचरण के माध्यम से और परोपकार के कार्यों के माध्यम से दिल जीते जाते हैं। ज्ञान और विश्वास के माध्यम से दिलों पर विजय प्राप्त की जाती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी हृदय को ऐसा होता है कि किसी के पास एक निश्चित गुण या क्षमता है, तो वह हृदय उस पर विजय प्राप्त कर लेगा और उसके विश्वास की शक्ति और तीव्रता [किसी अन्य व्यक्ति की गुणवत्ता और क्षमता में] के अनुरूप हो जाएगा, तो हृदय उस व्यक्ति के अधीन हो जाएगा। [मांग या प्रशंसित] गुणवत्ता या क्षमता को अपने आप में परिपूर्ण होने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह प्रशंसक के दिल में एक पूर्णता के रूप में माना जाने के लिए पर्याप्त है। इसीलिए, यह (प्रशंसक का दिल) कभी-कभी किसी चीज को एक पूर्णता के रूप में मानता है जो वास्तविकता में पूर्णता नहीं है और हृदय प्रशंसा किए जा रहे व्यक्ति के अधीन हो जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हृदय की अधीनता एक स्थिति (अवस्था) है और हृदय की अवस्थाएँ उसके विश्वासों, ज्ञान और कल्पनाओं के अधीन होती हैं। जिस तरह धन और भौतिक संपत्ति के प्रति आसक्त स्वभाव लोगों को नियंत्रित करना चाहते हैं, उसी तरह प्रसिद्धि पसंद करने वाले लोग स्वतंत्र मनुष्यों की गर्दन में गुलामी की बेड़ियों को डालना चाहते हैं ताकि वे अपने दिलों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर सकें ताकि वे उनका उपयोग अपने [स्वार्थी] हितों को पूरा करने के लिए कर सकें। प्रसिद्धि के साधक द्वारा मांगी गई दासता (नियंत्रण) धन के साधक द्वारा मांगी गई दासता से कहीं अधिक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक धनी और शक्तिशाली व्यक्ति बलपूर्वक उन लोगों का नियंत्रक बन जाता है, जिन्हें यदि विकल्प दिया जाता है, तो एक पल के लिए भी आज्ञाकारिता नहीं होगी। प्रसिद्धि का साधक अपनी स्वतंत्र इच्छा और पसंद से [स्वतंत्र] लोगों में से दास बनाता है, और चाहता है कि लोग ऐसे व्यक्ति का [स्वेच्छा से और] खुशी से पालन करें और यह आज्ञाकारिता और अधीनता उनका दूसरा स्वभाव बन जाएगी। इससे यह अच्छी तरह से समझा जा सकता है कि यश के साधक का उद्देश्य धन के साधक के उद्देश्य से कहीं अधिक बड़ा होता है।

फिर भी, प्रसिद्धि का अर्थ लोगों के दिलों में जगह बनाना है। दूसरे शब्दों में, उत्कृष्टता, विशिष्टता और पूर्णता के गुणों के बीच से एक विशेषता (गुणवत्ता जो एक आंतरिक विशेषता हो सकती है) की उपस्थिति के बारे में दिल में दृढ़ विश्वास रखना। पूर्णता के बारे में इस विश्वास की ताकत के आनुपातिक रूप से, निम्नलिखित की अधिकता होगी [लोगों द्वारा], और उसके समानुपाती प्रसिद्धि के नियंत्रण और हृदयों की अधीनता का साधक होगा, और दिलों के इस नियंत्रण और अधीनता के समानुपाती प्रसिद्धि और परिणामी खुशी के लिए किसी का प्यार होगा। प्रसिद्धि के फल और परिणाम होते हैं, उदाहरण के लिए, लोगों की प्रशंसा और उसमें सीमाओं को पार करना। जो किसी की पूर्णता के प्रति आश्वस्त है, वह इस विश्वास को व्यक्त करने से चुप नहीं रहता है और [कथित] पूर्णता की प्रशंसा करता है। प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा के फलों में से, प्रसिद्धि के मालिक की सेवा करना है, क्योंकि इस विश्वास वाले व्यक्ति के रूप में, खुद को सेवा के लिए समर्पित करता है और प्रसिद्धि के मालिक के अधीन रहता है जो अपनी इच्छानुसार एक का उपयोग

करता है। इसी तरह, प्रसिद्धि के स्वामी के प्रति परोपकारी होना, मतभेद न दिखाना, पहले सम्मान करना, अभिवादन करना और नमस्कार करना, सभाओं में मुख्य अतिथि बनाना, सभी मामलों में एक को सबसे आगे रखना, प्रसिद्धि के उन फलों में से हैं जो तब पैदा होते हैं जब किसी को हृदय में स्थान दिया जाता है और उसकी पूर्णता पर विश्वास किया जाता है - चाहे वह किसी के ज्ञान के कारण हो, पूजा, सुंदर आदतें, बाहरी सुंदरता, वंश, राजनीतिक अधिकार, शक्ति, या कोई अन्य पहलू जिसे लोग पूर्णता मानते हैं। ये सभी [व्यक्तिगत] गुण दिलों में जगह बनाते हैं और उनके मालिक [लोगों के बीच] सम्मान पाते हैं।

प्रसिद्धि इतनी पसंद क्यों की जाती है? जहां तक सवाल है कि कुछ लोगों को प्रसिद्धि इतनी पसंद क्यों है, शायद ही कोई ऐसा दिल है जो इससे रहित हो और गहन आध्यात्मिक प्रयासों के बिना इससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता है। प्रसिद्धि का अर्थ है लोगों के दिलों का मालिक बनना। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति सोने और चांदी का मालिक होकर अपने सभी उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होता है, उसी तरह, व्यक्ति लोगों के दिलों को अपनाकर और उन पर विजय प्राप्त करके अपने सभी उद्देश्यों को पूरा करने की क्षमता प्राप्त करता है, क्योंकि दोनों चीजों (धन और प्रसिद्धि) के प्रेम का कारण एक ही है। इसीलिए, दिलों में धन और प्रसिद्धि दोनों का प्यार होता है, लेकिन धन से प्रसिद्धि बेहतर होती है, इसलिए प्रसिद्धि का प्रेम धन से बड़ा होता है।

धन पर प्रसिद्धि को प्राथमिकता क्यों दी जाती है?धन की तुलना में प्रसिद्धि को तीन कारणों से प्राथमिकता दी जाती है:

पहला कारण: यह है कि धन के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त करने की तुलना में प्रसिद्धि के माध्यम से धन प्राप्त करना आसान है। इसलिए, यदि सांसारिकता (जाहिद) या एक विद्वान धर्मशास्त्री ('*अलीम) है,* जिसका सम्मान दिलों में मजबूती से बैठ गया है, धन कमाना चाहता है, तो वह आसानी से ऐसा कर सकता है क्योंकि सम्मानित दिल ऐसे लोगों पर अपना धन खर्च कर सकते हैं जिनका वे सम्मान करते हैं और प्यार करते हैं। हालांकि, यदि कोई व्यक्ति पूर्णता के किसी भी गुण से वंचित है, एक खजाना पाता है और ऐसा व्यक्ति प्रसिद्धि से वंचित है और धन के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहता है तो यह मुश्किल है। इससे पता चलता है कि कोई व्यक्ति प्रसिद्धि के माध्यम से धन अर्जित कर सकता है लेकिन धन के माध्यम से प्रसिद्धि अर्जित नहीं कर सकता है। इस संबंध में, प्रसिद्धि अधिक प्रिय है।

दूसरा कारण: क्या यह धन बर्बाद किया जा सकता है क्योंकि इसे चोरी किया जा सकता है, छीना जा सकता है, [सरकार] अधिकारी और उत्पीड़क इसका लालच करते हैं। उन्हें स्टोर करने के लिए सुरक्षा, सुरक्षा और सुरक्षित भंडारण की आवश्यकता होती है। वास्तव में, धन के कई नुकसान हैं [इससे जुड़े]। वहीं अगर आप दिलों के मालिक बन जाते हैं तो आपको कोई नुकसान नहीं उठाना पड़ेगा क्योंकि दिलों में

इतनी गहराई से दबे हुए छिपे हुए खजाने होते हैं कि उन्हें चुराया नहीं जा सकता और न ही लुटेरों और लुटेरों की उन तक कोई पहुंच होती है। दिलों के खजाने अपने आप में सुरक्षित हैं और इस संबंध में, प्रसिद्धि जब्ती और चोरी से आत्म-सुरक्षित है। हालांकि, दिलों के खजाने के साथ एक खतरा निश्चित रूप से मौजूद है कि कोई उन्हें गुमराह (मोहभंग) करने में सक्षम हो सकता है या प्रसिद्धि के मालिक को बदनाम कर सकता है और प्रशंसकों के दिलों से प्रसिद्धि के व्यक्ति में पूर्णता के विश्वास को मिटाने में सक्षम हो सकता है। हालाँकि, इस खतरे का सामना शायद ही कभी किया जाता है, दूसरी बात, यह (प्रशंसित व्यक्ति में पूर्णता का विश्वास) बिना किसी कठिनाई के बचाव किया जा सकता है, फिर [तीसरा] यह विश्वास आम तौर पर [दिलों में] इतनी मजबूती से बसा हुआ है कि घातक के प्रयास [आमतौर पर] सफल नहीं होते हैं [क्योंकि लोग अपने विश्वासों को नहीं छोड़ते हैं, भले ही विश्वास गलत या निराधार हों]।

तीसरा कारण: यह है कि दिलों का स्वामित्व असीम है और बिना किसी परेशानी के बढ़ता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब हृदय किसी के सम्मान से भरे होते हैं और किसी के ज्ञान और [अच्छे] कर्मों में विश्वास करते हैं, तो अन्य भाषाएँ उसकी प्रशंसा और महिमा करने के लिए मजबूर हो जाती हैं। लोग स्वयं यह विश्वास रखते हैं और इसे दूसरों के सामने व्यक्त करते हैं जो बदले में उसी सम्मान के लिए इच्छुक हो जाते हैं। इसीलिए, [मानव] स्वभाव लोकप्रियता और प्रसिद्धि को पसंद करते हैं क्योंकि जब किसी का उल्लेख आम हो जाता है, तो प्रसिद्धि एक शहर से दूसरे शहर और एक देश से दूसरे देश की यात्रा करती है जो दिलों को सम्मान और सम्मान के लिए आत्म-मजबूर करने का कारण बनती है। संचरण की यह श्रृंखला [किसी की प्रसिद्धि की] बढ़ती रहती है और इसका कोई अंत या सीमा नहीं है। धन के मामले में ऐसा नहीं है। अमीर लोग कठिनाई और प्रेम के बिना किसी के धन में वृद्धि नहीं कर सकते। प्रसिद्धि लगातार आगे बढ़ रही है और कहीं नहीं रुकती। धन एक ही स्थान पर रहता है और वृद्धि के साथ बढ़ता है। इसीलिए, धन प्रसिद्धि से कमतर है। धन पर प्रसिद्धि को प्राथमिकता देने के ये कुछ उच्च-स्तरीय कारण हैं और यदि उन्हें और विस्तृत किया जाए तो इसके असंख्य कारण हो सकते हैं।

धन और प्रसिद्धि का प्यार हर व्यक्ति के दिल में होता है। इसके दो कारण हैं। एक कारण स्पष्ट है, और हर कोई जानता है, और दूसरा कारण छिपा हुआ है और यह बड़ा कारण है लेकिन यह बहुत सूक्ष्म है। सुस्त दिमाग और बिना बुद्धि वाले लोगों से यह जानने की उम्मीद नहीं की जाती है लेकिन समझदार लोग भी इसका कारण नहीं जानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह [सूक्ष्म और बड़ा] कारण निचले स्व (नफ्स) की आंतरिक नस से और मानव स्वभाव की गुप्त मांगों से मदद लेता है और केवल वे लोग ही इससे परिचित हैं जो इस महासागर में गहरा गोता लगाते हैं।

पहला कारण - भय को दूर करना: इस कारण का परिणाम यह है कि मनुष्य भविष्य के डर के कारण धन के लालची होते हैं। बुरी राय (किसी के भविष्य के बारे में) मनुष्य को लालची बना देती है, भले ही किसी के

पास अपनी जरूरतों के लिए पर्याप्त धन हो सकता है। लेकिन चूंकि, मनुष्य लंबे जीवन के इच्छुक और उम्मीद करता है, इसलिए किसी की इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है। उसके मन में यह डर बना रहता है कि उसके स्वभाव में जो धन है, वह समाप्त हो सकता है और वह दूसरों के सामने जरूरतमंद हो सकता है। जब यह [विचार] दिल में होता है, तो डर किसी के दिल को घेर लेता है और यह डर तब तक दूर नहीं होता जब तक कि एक के लिए दूसरा धन उपलब्ध नहीं हो जाता है ताकि यह किसी दुर्घटना के कारण खो जाने पर पहले धन का प्रतिस्थापन बन जाए। हर पल कोई इन आशंकाओं से घिरा रहता है। जीवन के लिए गहन प्रेम किसी को यह अनुमान लगाने के लिए मजबूर करता है कि व्यक्ति लंबे समय तक जीवित रहेगा। इसके साथ ही, कोई यह मानता है कि किसी के जीवन के विस्तार के आनुपातिक रूप से, उसकी जरूरतें भी बढ़ेंगी। एक यह भी मानता है कि, "मेरा धन नुकसान और कठिनाइयों से घिरा हुआ है और किसी भी समय बर्बाद हो सकता है"। यह विचार व्यक्ति को भयभीत करता है जो अधिक से अधिक धन प्राप्त करके इस भय से खुद को बचाने की कोशिश करता है ताकि यदि कुछ धन बर्बाद हो जाए, तो दूसरा धन दूसरों के सामने भीख मांगने वाले हाथ को फैलाने की आवश्यकता को समाप्त कर देगा। यह डर किसी को किसी भी निश्चित मात्रा में धन पर समझौता करने की अनुमति नहीं देता है, इसके बजाय, व्यक्ति पूरी दुनिया का मालिक बनने की इच्छा रखता है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

منهومان لا يشبعان منهوم العلم و منهوم المال

"दो लालची लोग कभी तृप्त नहीं होते हैं - एक जो ज्ञान का लालची है और दूसरा जो धन का लालची है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *तबरनी* अबू मसूद के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

प्रसिद्धि के प्यार का यह लगभग एक ही कारण है। वह व्यक्ति जो दूर-दराज के देशों में रहने वाले लोगों के दिलों में अपने उच्च स्तर के सम्मान और मूल्य को स्थापित करना चाहता है, वह वास्तव में इस डर में शामिल है कि किसी को कभी-कभी अपनी मातृभूमि से अलग होने और किसी अन्य स्थान पर रहने की आवश्यकता हो सकती है, या वे लोग कुछ कारणों से अपनी मातृभूमि में आकर रहना शुरू कर सकते हैं। ऐसे में निश्चित रूप से उनकी मदद की जरूरत पड़ेगी। फिर भी, यह संभावना मौजूद है, और दूर रहने वाले लोगों से मदद लेना असंभव नहीं है। इसीलिए, यदि किसी के दिलों में उच्च स्तर का सम्मान और मूल्य स्थापित हो जाता है तो यह मामला अत्यंत सुखद और आनंददायक होता है।

दूसरा कारण: यह एक मजबूत कारण है और इसका परिणाम यह है कि आत्मा एक ईश्वरीय आदेश है। कुरान ने इन शब्दों में आत्मा का उल्लेख किया है:

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى

"वे आपसे आत्मा के बारे में पूछते हैं। उन्हें बता दो कि आत्मा मेरे रब की आज्ञा से आई है। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 85)

आत्मा के "प्रभुत्व" (ईश्वरीय आदेश से संबंधित) होने का अर्थ यह है कि आत्मा आध्यात्मिक रूप से अनावरण किए गए ज्ञान (*उलूम अल-मुकाशाफा)* के रहस्यों से संबंधित है, जिसके प्रकटीकरण की अनुमति नहीं है [ईश्वरीय ज्ञान से ज्ञानवादियों के लिए अपनी पवित्रता को उन लोगों से संरक्षित करने के लिए जो इसके लिए समझ और प्रशंसा की कमी के कारण इसके योग्य नहीं हैं, और इसे मानव जाति के सर्वश्रेष्ठ के लिए आरक्षित करने के लिए - आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध आत्माएं जो जबरदस्त आयात के इस ज्ञान के लिए प्रयास करती हैं जो सभी ज्ञानों में से एक है]। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर इसके प्रकटीकरण की अनुमति दी गई होती, तो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) निश्चित रूप से आत्मा की वास्तविकता का खुलासा करते। इस विषय पर आगे की चर्चा से पहले, यह ज्ञात हो जाना चाहिए कि आत्मा चार प्रकार के गुणों (आंतरिक लक्षण और स्वभाव के स्वभाव) की ओर झुका हुआ है। [सबसे पहले,] पशुवत गुण जैसे भोजन और मैथुन। [दूसरे,] पाशविक गुण जैसे हत्या, मारना, दर्द देना [और पीड़ा]। [तीसरा,] धोखे, चालाकी, और लोगों को मार्गदर्शन और शुद्धता के सही मार्ग से दूर करने जैसे शैतानी गुण। [चौथा,] अहंकार, सम्मान और श्रेष्ठता जैसे दिव्य गुण। इन विभिन्न गुणों के प्रति हृदय के झुकाव का कारण यह है कि मनुष्य कुछ सिद्धांतों से बना है जो समझाने में लंबे हैं। यहां यह कहना पर्याप्त है कि मनुष्य के पास "प्रभु की आज्ञा" है, इसीलिए, व्यक्ति स्वभाविक रूप से प्रभुत्व को पसंद करने के लिए इच्छुक है। प्रभुत्व का अर्थ पूर्णता में विशिष्टता और अस्तित्व में दृढ़ता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अस्तित्व में साझा करना अपूर्णता का संकेत है। इसीलिए, सूर्य की पूर्णता अस्तित्व में अपनी दृढ़ता में है। अगर कोई और सूर्य होता तो उसके लिए यह अपूर्णता होती क्योंकि उस समय यह नहीं कहा जा सकता था कि सूर्य अद्वितीय है और अपनी पूर्णता में अकेला है। अस्तित्व में अद्वितीय ईश्वर है क्योंकि उसके अलावा कोई और अस्तित्व में नहीं है। ईश्वर के अलावा जो कुछ भी है, वह उसकी सर्वशक्तिमत्ता का संकेत है जो अपने आप में मौजूद नहीं है, इसके बजाय, उनका अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व के माध्यम से है। अस्तित्व में सह-अस्तित्व रैंक में समानता की मांग करता है और रैंक में समानता उत्कृष्टता और पूर्णता में एक अपूर्णता है। सिद्ध व्यक्ति केवल वही है जिसके पास किसी के पद में एक उदाहरण (सह-हिस्सेदार) नहीं है। सूर्य का प्रकाश पूरी दुनिया को रोशन करता है तो यह उसकी अपूर्णता नहीं है, बल्कि यह इसकी पूर्णता का संकेत है। अपूर्णता तब होगी जब समान स्थिति और रैंक वाला एक और सूर्य वहां होता और वह दूसरे सूर्य से बेखबर होता। ईश्वर के अलावा सभी अस्तित्वों की स्थिति एक ही है; ये वास्तविक सूर्य (ईश्वर) से जीवन का प्रकाश प्राप्त करने के बाद भी अपने अस्तित्व को बनाए रख रहे हैं। ये सभी अस्तित्व वास्तविक अस्तित्व (ईश्वर) के अधीन हैं और वे उनके अधीन नहीं हैं। हालाँकि, प्रभुत्व (*रुबुबियाह*) का अर्थ है अस्तित्व में अद्वितीय होना। हर इंसान स्वभाव से पूर्णता में अद्वितीय होना चाहता है। इसीलिए, कुछ आध्यात्मिक मार्गदर्शकों (संतों और ज्ञानवादी) ने कहा है कि ऐसा कोई इंसान नहीं है जिसके पास किसी के आंतरिक अस्तित्व में वह नहीं है जिसे फिरौन ने विस्तृत किया था जब उसने कहा था:

أَنَا۠ رَبُّكُمُ ٱلْأَعْلَىٰ

"मैं तुम्हारा प्रभु हूँ, सर्वोच्च। (कुरान, अध्याय 79, श्लोक 24)

हालांकि, मनुष्य के पास श्रेष्ठ और सर्वोच्च बनने का कोई तरीका नहीं है। व्यक्ति पूर्णता चाहता है लेकिन उसमें पूर्ण बनने की पर्याप्त क्षमता नहीं होती है। भगवान (उबुदिया) के लिए गुलाम हुड (गुलामी) *के* पास निचले स्व (नफ्स) पर एक शक्तिशाली शक्ति है और प्रभुत्व (*रुबुबिया*) स्वभाव से प्रिय और प्रिय है। इस संबंध के कारण [जो आत्मा के पास] [दिव्य] प्रभुत्व के साथ है, जिसका उल्लेख ईश्वर की इस कहावत में किया गया है, "उन्हें बताएं कि आत्मा मेरे भगवान की आज्ञा से है", पूर्णता के लिए प्रेम और इच्छा समाप्त नहीं होती है और व्यक्ति अपनी [मात्र] कल्पना से आनंद प्राप्त करता है, हालांकि मनुष्य पूर्णता की परिणति तक नहीं पहुंचता है। प्रत्येक जीवित प्राणी अपने अस्तित्व और अस्तित्व की पूर्णता से प्यार करता है, और मृत्यु से नफरत करता है जो किसी के अस्तित्व के अंत और [कथित और कथित] पूर्णता की गुणवत्ता का कारण बनती है। यदि अस्तित्व समाप्त नहीं होता है, तो इसे पूर्णता माना जाएगा, क्योंकि [परिणामस्वरूप,] किसी के पास अधिकांश अन्य प्राणियों पर श्रेष्ठता और प्रभुत्व होगा। इसीलिए, मनुष्य को अपने स्वभाव में अधिकार, श्रेष्ठता और प्रभुत्व पसंद है। हालांकि, इसे चीजों पर प्रभुत्व के रूप में माना जाएगा जब किसी व्यक्ति के पास अपने इरादे और इच्छा को बदलने और प्रभाव डालने की शक्ति होती है, और उन चीजों को एक के अधीन किया जाता है, जो उनके साथ वह करने में सक्षम होता है जो कोई चाहता है। इस तरह, यह एक इंसान के लिए प्रिय हो गया कि वह अपने साथ की चीजों पर प्रभुत्व स्थापित करे।

प्राणियों के प्रकार: जो प्राणी मौजूद होते हैं वे कई प्रकार के होते हैं। कुछ प्राणी ईश्वर के अस्तित्व और गुणों जैसे किसी भी परिवर्तन या प्रभाव को स्वीकार नहीं करते हैं। कुछ प्राणी परिवर्तन को स्वीकार करते हैं लेकिन सृष्टियां (मनुष्यों की तरह) उन पर कोई नियंत्रण नहीं रख सकती हैं जैसे आकाश, तारे, स्वर्गीय प्रभुत्व, स्वर्गदूत प्राणी, *जिन्न* (अलौकिक अदृश्य प्राणी जो पृथ्वी पर मौजूद हैं), शैतान, आदि। तीसरे प्रकार में वे प्राणी शामिल हैं जिनमें मनुष्य पृथ्वी के घटकों, खनिजों, पौधों, जानवरों जैसे परिवर्तन का कारण बन सकता है। इन प्राणियों में, उन लोगों के दिल हैं जो शरीर की तरह ही परिवर्तन और प्रभाव को स्वीकार करते हैं, और जानवरों के शरीर में मौजूद परिवर्तन और प्रभाव की क्षमता की तरह।

ज्ञान के आधार पर प्रभुत्व की इच्छा: प्राणियों का विभाजन [जिनका अस्तित्व है] यह है कि कुछ में पृथ्वी से संबंधित चीजों की तरह मानव प्रभाव की क्षमता होती है और कुछ का कोई मानवीय प्रभाव नहीं होता है जैसे ईश्वर, स्वर्गदूतों और स्वर्ग का अस्तित्व (आकाश और ब्रह्मांड में और उससे परे भी)। इसीलिए, मनुष्य की इच्छा थी कि चूंकि वह स्वर्ग (ब्रह्मांड और उससे आगे क्या है) पर हावी नहीं हो सकता है, इसलिए उसे ज्ञान के माध्यम से प्रभुत्व प्राप्त करना चाहिए और इसके रहस्यों और सूक्ष्मताओं की समझ प्राप्त करनी

चाहिए और यह भी प्रभुत्व का एक रूप है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक चीज जो ज्ञान से घिरी हुई है, वह ज्ञान में प्रवेश करती है और एक विद्वान को उस पर हावी कहा जाता है [ज्ञान के कारण, हालांकि कोई भौतिक प्रभुत्व नहीं है]। प्रभुत्व की इच्छा ने मनुष्य को ईश्वर, स्वर्गदूतों, ब्रह्मांडों, सितारों, पहाड़ों और महासागरों के चमत्कारों और रहस्यों से परिचित होने के लिए मजबूर किया क्योंकि ज्ञान भी प्रभुत्व और प्रभुत्व का एक तरीका है, यह भी एक प्रकार की पूर्णता है। ज्ञान की पूर्णता मनुष्य को खुशी से भर देती है।

पहला प्रकार [ज्ञान के आधार पर प्रभुत्व] पृथ्वी पर मौजूद चीजों से संबंधित है। किसी को पर्याप्त ज्ञान नहीं मिलता है [सांसारिक चीजों के संबंध में] लेकिन वह नियंत्रण और प्रभाव का प्रभुत्व चाहता है ताकि वह अपनी इच्छानुसार प्रभाव और परिवर्तन के कार्य को अंजाम दे सके। पृथ्वी पर मौजूद चीजें दो प्रकार की होती हैं- शरीर और आत्मा। शरीर में सोना, चांदी, भौतिक संपत्ति आदि जैसी चीजें शामिल हैं। इन चीजों में, मनुष्य व्यावहारिक तरीके से बदलने और प्रभावित करने में सक्षम होने की इच्छा रखता है, उन्हें जहां चाहे वहां रखे, उन्हें जिसे चाहे उसे दे दें, और किसी ऐसे व्यक्ति को न दें जिसे वह नहीं चाहता है। किसी वस्तु पर प्रभुत्व और शक्ति होना "क्षमता" कहलाता है और क्षमता पूर्णता है। पूर्णता प्रभुत्व का एक गुण है और प्रभुत्व मानव स्वभाव को प्रिय है। इसीलिए, व्यक्ति धन से प्यार करता है, चाहे उसे इसकी आवश्यकता हो या न हो, कपड़े, खाने, पीने और वासनाओं की पूर्ति जैसी इच्छाओं को पूरा करने में। एक शरीर और आत्माओं को प्रभावित करता है लेकिन दिलों को जीतने में असमर्थ है क्योंकि पूर्णता के विश्वास के बिना दिलों पर विजय प्राप्त नहीं की जाती है (या अधीन) नहीं किया जाता है। हालाँकि, क्रोध पूर्णता का प्रतिस्थापन बन जाता है। क्रोध और शक्ति में भी आनंद मिलता है, क्योंकि इनमें भी नियंत्रण और विशेषाधिकार की भागीदारी होती है।

दूसरे प्रकार के [ज्ञान के आधार पर प्रभुत्व] में मनुष्य के स्वयं (नुफस*)* और हृदय (*कुलूब*) शामिल हैं। पृथ्वी के चेहरे पर उनसे बेहतर और कीमती कुछ भी नहीं है। यह मनुष्य की इच्छा है कि वह स्वयं और हृदय पर प्रभुत्व प्राप्त करे, उन पर विजय प्राप्त करे और जो कुछ भी परिवर्तन चाहे वह करने में सक्षम हो। इस इच्छा का कारण यह है कि दिलों को जीतना और उन्हें बदलना प्रभुत्व की पूर्णता है और यह दिव्य प्रभुत्व (रुबुबिया) के गुणों के साथ समानता रखता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रेम के बिना हृदय पर विजय प्राप्त नहीं होती है, और प्रेम किसी की पूर्णता के बारे में विश्वास के बिना नहीं होता है, और हर पूर्णता प्रिय और प्रिय होती है क्योंकि यह दिव्य गुणों से संबंधित होती है, और दिव्य गुण किसी के स्वभाव के लिए प्रिय होते हैं क्योंकि वे ईश्वरीय आदेश (आत्मा) के साथ जुड़े हुए हैं [जो प्रभुत्व की ओर झुका हुआ है], और मनुष्य के पास यह ईश्वरीय आदेश (आत्मा) है जिसे मृत्यु द्वारा नष्ट नहीं किया जा सकता है और न ही यह मिट्टी से खा जाता है [जब मृत्यु के बाद शरीर को पृथ्वी में दफनाया जाता है]। यह [ईश्वरीय आदेश जो हर मनुष्य में आत्मा है] विश्वास का निवास है [दिव्य अस्तित्व, वास्तविकता, प्रकाश, मार्गदर्शन और निषेधाज्ञा में] और ज्ञान, दिव्य अंतरंगता और निकटता में। यही चीज (आत्मा) ईश्वर के पास ले जाने का साधन है और दिव्य दृष्टि का कारण है।

अब तक जो लिखा गया है उसका नतीजा यह है कि प्रसिद्धि का अर्थ दिलों की अधीनता है। जिसके लिए दिलों पर विजय प्राप्त की जाती है, वह उन पर प्रभुत्व और नियंत्रण प्राप्त करने में सक्षम होता है और प्रभुत्व पूर्णता है जो बदले में ईश्वरीय प्रभुत्व का एक गुण है। इसीलिए, [मानव] स्वभाव ज्ञान और शक्ति से प्यार करते हैं। धन और प्रसिद्धि शक्ति के कारण हैं। चूंकि ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, इसीलिए, जब तक कोई चीज ज्ञान और उस पर शक्ति की सीमा से बाहर नहीं रहती है, तब तक उसके लिए इच्छा और उत्साह संतुष्ट नहीं होगा और [मानव पूर्णता में] कमी को दूर नहीं किया जा सकता है। इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ज्ञान के लालची व्यक्ति और धन के लालची व्यक्ति के बारे में कहा है कि वह कभी तृप्त नहीं होता है। इसलिए, यहां यह सिद्ध हो गया है कि जो मांगा जाता है वह पूर्णता है और पूर्णता ज्ञान और शक्ति के माध्यम से प्राप्त की जाती है। उसकी तो अनगिनती कलायें हैं। हर इंसान को उस हद तक आनंद और खुशी मिलती है जितनी पूर्णता की डिग्री होती है। यही कारण है कि यश और धन के प्रेम का जो वासनाओं की पूर्ति के बावजूद बना रहता है। दूसरे शब्दों में, प्रसिद्धि और धन का प्यार कम नहीं होता है, भले ही जरूरतें पूरी हो जाएं। ज्ञान के मामले में, मनुष्य इसे प्यार करता है, भले ही यह किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने में फायदेमंद न हो और कभी-कभी, किसी के उद्देश्य को प्राप्त करने के रास्ते में बाधा बन जाता है। हालाँकि, मानव स्वभाव मार्ग की कठिनाइयों को सहन करता है, इसकी कठिनाइयों पर काबू पाता है और हृदय को [विविध] ज्ञान के चमत्कारों से सजाता है क्योंकि ज्ञान ज्ञान के विषय पर प्रभुत्व का एक रूप है, और यह प्रभुत्व पूर्णता है, और पूर्णता एक दिव्य गुण (गुण) है, यही कारण है कि इसे आंतरिक रूप से प्यार और प्रतिष्ठित किया जाता है।

वास्तविक पूर्णता

परमेश्वर के अस्तित्व और गुणों का ज्ञान, उसके कार्य, स्वर्ग और पृथ्वी, संसार और परलोक में उसकी बुद्धि, और महत्व के सही क्रम में उनसे संबंधित मामले, वास्तविक पूर्णता है [जो मनुष्य द्वारा प्राप्त की जा सकती है]। जो इस पूर्णता से संपन्न है, वह ईश्वर के करीब होगा [ईश्वर की सूक्ति (*मारिफा*) की स्थिति में], और स्वयं की यह पूर्णता (*नफ्स*) मृत्यु के बाद भी बनी रहती है, और एक उज्ज्वल प्रकाश बन जाएगी [दिव्य ज्ञान का जो शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता की ओर ले जाता है] जिसके बारे में कुरान ने कहा है:

يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَٰنِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَآ أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا

"उनका प्रकाश उनके आगे उनके सामने और दाईं ओर बढ़ेगा, और वे प्रार्थना करेंगे, 'हे हमारे प्रभु! इस प्रकाश (रोशनी) को हमारे लिए अनंत अवस्था में परिपूर्ण करें। (कुरान, अध्याय 66, श्लोक 8)

दूसरे शब्दों में, यह ज्ञान-विज्ञान ऐसी पूंजी (संपत्ति) बन जाएगी कि जो ज्ञान दुनिया में ज्ञात नहीं था, वह भी ज्ञात हो जाएगा। इसका उपमा एक ऐसे व्यक्ति की तरह है जिसके पास एक छोटा सा दीपक है [बाती और तेल के साथ] एक कमजोर प्रकाश के साथ, जो इसका उपयोग एक और दीपक जलाने के लिए करता है जिसमें एक मजबूत प्रकाश (रोशनी) है। जिसके पास दीपक भी नहीं है, वह न तो दूसरा दीपक जला सकता है और न ही मूल प्रकाश को पूर्ण कर सकता है। जो व्यक्ति ज्ञान, निकटता और ईश्वर के साथ घनिष्ठता से वंचित है, वह उस व्यक्ति की तरह है जो एक प्रकाशमान दीपक से वंचित है। इसका उदाहरण इस प्रकार है:

كَمَن مَّثَلُهُۥ فِى ٱلظُّلُمَٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا

"[जो ज्ञान की अवस्था में दिव्य रोशनी से प्रकाशित होता है] क्या वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो [अंधेरे पर] अंधकार में डूबा हुआ है, उससे बाहर नहीं आ पा रहा है?" (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 122)

इसके बजाय, जिस अंधेरे में कोई है, उसकी उपमा इस तरह है:

أَوْ كَظُلُمَٰتٍ فِى بَحْرٍ لُّجِّىٍّ يَغْشَىٰهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ سَحَابٌ ۚ ظُلُمَٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ

"या वे ऐसे हैं जैसे कि एक गहरे समुद्र के अंधेरे में, एक बड़ी लहर से ढका हुआ है, फिर उसके ऊपर एक और लहर, फिर [समुद्र] पर काले बादल और अधिक अंधेरे के साथ [एक अंधेरी रात का] [इसलिए, ऐसा व्यक्ति अंधेरे पर अंधेरे की परतों में घिरा हुआ है, जो किसी भी प्रकाश को देखने या इस पूर्ण अंधेरे से बाहर आने में असमर्थ है]। (कुरान, अध्याय 24, श्लोक 40)

इससे यह सीखा जाता है कि ग्नोसिस (*मारिफा* या दिव्य ज्ञान और अंतरंगता) सभी अच्छे और शाश्वत सुख और अंतहीन विजय (सादाह) का स्रोत है। अन्य चीजों के ज्ञान के साथ स्थिति यह है कि उनमें से कुछ कविता और वंशावली के ज्ञान की तरह पूरी तरह से बेकार हैं। कुछ ऐसे हैं जो दिव्य ज्ञान में मदद करते हैं। आत्मा की शुद्धि का ज्ञान ईश्वर के ज्ञान की ओर मार्गदर्शन और क्षमता की ओर ले जाता है। ये सभी ज्ञान दिव्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए संसाधनों की तरह हैं। पूर्णता दिव्य ज्ञान में है और दिव्य गुणों और कार्यों को पहचानने में है और इसमें सभी अस्तित्वों का ज्ञान निहित है क्योंकि सभी अस्तित्व वास्तव में दिव्य कार्य हैं। इसलिए, जो कोई भी इस दुनिया में किसी भी चीज़ को इस दृष्टिकोण से देखता है कि वह ईश्वर का एक

कार्य है जो उसके इरादे, शक्ति और ज्ञान के साथ एकीकृत है, कि [देखो और समझना] वास्तव में दिव्य ज्ञान का एक घटक है।

यह स्पष्टीकरण [अब तक] ज्ञान के बारे में था। अब सत्ता के बारे में यह सुनें। किसी चीज़ पर शक्ति के संदर्भ में, ईश्वर के सेवक (मनुष्य) के पास वास्तविक पूर्णता नहीं होती है। वास्तविक शक्ति केवल ईश्वर की है। ईश्वर के इरादे, शक्ति और गति के सेवक से अस्तित्व में आने वाले कार्य, वास्तव में, ईश्वर द्वारा उन्हें अस्तित्व में लाने के कारण अस्तित्व में आते हैं। इस व्याख्या का सारांश यह है कि ज्ञान की पूर्णता मृत्यु के बाद भी एक सेवक [भगवान के] के पास रहती है और व्यक्ति को ईश्वर तक पहुंचाती है लेकिन शक्ति की पूर्णता में, हम [भगवान के] सेवक में शक्ति के संदर्भ में कोई पूर्णता नहीं देखते हैं। हालाँकि, शक्ति (शारीरिक क्षमताएं) ज्ञान की पूर्णता [प्राप्त] करने का एक साधन है। सभी शारीरिक अंग, क्षमताएं और क्षमताएं, अपनी शक्ति के माध्यम से, ज्ञान की पूर्णता की वास्तविकता तक पहुंचने का कारण बनती हैं। इन अंगों और संकायों को शक्ति प्रदान करने के लिए, धन और प्रसिद्धि की आवश्यकता है ताकि उनके माध्यम से कोई भोजन, वस्त्र और निवास प्राप्त कर सके। यदि कोई दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनका उपयोग नहीं करता है, तो यह स्पष्ट है कि ऐसे व्यक्ति के पास कोई अच्छी अंतर्दृष्टि नहीं है। उनका एकमात्र लाभ यह है कि वे उनका उपयोग केवल कुछ सुख प्राप्त करने के लिए करें जो [एक दिन] समाप्त हो जाएंगे। जो लोग इन क्षणिक सुखों को पूर्णता के रूप में सोचते हैं, वे पूर्ण अज्ञानी हैं। ज्यादातर लोग अज्ञानता के इस गहरे गड्ढे में गिरकर नष्ट हो गए हैं। वे सोचते हैं कि बलपूर्वक शरीरों पर अधिकार प्राप्त करना, धन में विस्तार होना, और लोगों के दिलों में प्रसिद्धि के माध्यम से महानता प्राप्त करना, पूर्णता के बारे में है। जब यह अज्ञान विश्वास बन जाता है तो वे इसे प्रिय मानते हैं और इसकी प्राप्ति में व्यस्त हो जाते हैं और इसका पीछा करते हुए मर जाते हैं और वास्तविक पूर्णता की उपेक्षा करते हैं जो किसी को ईश्वर और स्वर्गदूतों के करीब लाती है [देवदूत गुणों के कारण जो शुद्ध हैं और किसी भी पाप या दोष से रहित हैं]। वह पूर्णता ज्ञान और स्वतंत्रता की पूर्णता है। ज्ञान की चर्चा पहले भी प्रस्तुत की जा चुकी है। स्वतंत्रता और मुक्ति का अर्थ है वासनाओं और दुनिया के कष्टों से मुक्त होना, और उन पर विजय प्राप्त करना और उन्हें नियंत्रित करना जैसा कि स्वर्गदूतों द्वारा पराजित किया गया है, जो न तो वासनाओं से गुमराह होते हैं और क्रोध से उकसाए नहीं हैं। स्वयं (नफ्स) से वासना और क्रोध के प्रभावों को मिटाना पूर्णता है और यह वास्तव में स्वर्गदूतों का गुण है। ईश्वर के पूर्णता के गुणों की विशेषता यह है कि उनमें न तो कोई गिरावट या परिवर्तन होता है और न ही उन पर किसी चीज का कोई प्रभाव पड़ता है। इस संबंध में, जिस हद तक एक व्यक्ति [सांसारिक] बाधाओं [विकर्षणों, उलझनों, धोखे, आदि] से प्रभावित प्रभाव और परिवर्तन से दूर है, वह परमेश्वर के करीब होगा और उस हद तक स्वर्गदूतों के समान होगा और उस सीमा तक परमेश्वर के सामने एक पद होगा। यह ज्ञान और शक्ति की पूर्णता से अलग तीसरी पूर्णता है।

निचले स्व में प्रशंसा के लिए प्यार और आलोचना के लिए नफरत

निचले स्व में प्रशंसा के प्यार के कारण: निचले स्व (नफ्स) द्वारा अनुभव किए गए इस आनंद के चार कारण हैं:

पहला कारण: सबसे मजबूत कारण यह है कि प्रशंसा व्यक्ति को यह एहसास कराती है कि वह पूर्णता से संपन्न है, और यह पहले समझाया जा चुका है, कि पूर्णता से प्यार किया जाता है और व्यक्ति को वह सब कुछ प्राप्त करने में खुशी मिलती है जो प्यार किया जाता है। इसलिए, जब भी स्वयं को अपनी पूर्णता का एहसास होता है, तो वह इसके बारे में अत्यधिक प्रसन्न होता है और अवर्णनीय आनंद प्राप्त करता है। किसी की पूर्णता का बोध तब होता है जब कोई अन्य व्यक्ति उसकी प्रशंसा करता है। जिस गुणवत्ता या विशेषता की प्रशंसा की जाती है, वह कभी-कभी स्पष्ट होती है और कभी-कभी यह संदिग्ध होती है। यदि वह विशेषता स्पष्ट है और महसूस की जाती है, तो इसकी प्रशंसा से प्राप्त आनंद अपेक्षाकृत कम है लेकिन यह निश्चित रूप से है। उदाहरण के लिए, किसी की प्रशंसा करने के लिए कि "आप लंबे हैं और एक सुंदर रंग है", भले ही यह स्पष्ट और महसूस किया गया है और प्रशंसा करने वाला उनके बारे में जानता है, लेकिन कोई हमेशा इन लक्षणों को नहीं समझता है, इसके बजाय, वह उनके प्रति कुछ हद तक लापरवाह है। जब किसी को पता चलता है कि किसी की प्रशंसा के कारण उसके पास ये गुण हैं, तो उसे उससे [आंतरिक] आनंद मिलता है। यदि किसी के पास कोई [प्रशंसनीय] गुण या गुण है जो संदिग्ध है, तो उस गुण के लिए प्राप्त प्रशंसा उसके तह में एक ऐसा आनंद लाती है जिसकी तुलना किसी अन्य आनंद से नहीं की जा सकती है। उदाहरण के लिए, [किसी की प्रशंसा करना] यह कहकर कि "आप एक महान विद्वान हैं" या "आप बहुत ईश्वर से डरने वाले और धर्मी हैं" या "आप बहुत सुंदर हैं"। मनुष्य को अपने ज्ञान, धर्मपरायणता और सुंदरता की पूर्णता पर संदेह है और वह किसी भी तरह उस संदेह को दूर करने की इच्छा रखता है, ताकि ये लक्षण निश्चित हो जाएं (इन गुणों में पूर्णता प्राप्त करने में किसी को निश्चितता मिलती है) और कोई अन्य व्यक्ति उन लक्षणों में से एक के बराबर नहीं होगा। जब कोई और इन गुणों का उल्लेख (प्रशंसा) करता है, तो उसे संतुष्टि और निश्चितता मिलती है [स्वयं के भीतर उनके अस्तित्व में] और इस तरह यह आनंद तेज हो जाता है। यह आनंद तब और भी बढ़ जाता है जब किसी बुद्धिमान और बुद्धिमान व्यक्ति की प्रशंसा करता है जो ज्ञान, धर्मपरायणता और ईमानदारी की सुंदरता के रहस्यों से अवगत है और बिना शोध किए कुछ भी बोलना पसंद नहीं करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई शिक्षक अपने छात्र की बुद्धि और समझ की प्रशंसा करता है तो छात्र उससे बहुत प्रसन्न होता है। अगर कोई दूसरा व्यक्ति प्रशंसा करता है जिसे बिना सोचे-समझे बातें कहने की आदत है और जो बुद्धिमान और जागरूक नहीं है, तो यह आनंद कम हो जाता है। किसी की निंदा [या आलोचना] से नफरत करने का कारण यह है कि किसी व्यक्ति द्वारा उन्हें इंगित करने के कारण स्वयं (*नफ्स*) के दोषों को पता चलता है। व्यक्ति को अपने दोषों को महसूस करने का दर्द महसूस होता है और यह दर्द तब और बढ़ जाता है जब एक बुद्धिमान और बुद्धिमान व्यक्ति अपनी गलतियों को इंगित करता है।

दूसरा कारण: क्या प्रशंसा इस तथ्य के लिए तर्क देती है कि प्रशंसा करने वाले व्यक्ति का हृदय प्रशंसा के अधीन होता है और ऐसा व्यक्ति अनुयायी, प्रशंसक और प्रशंसा करने वाले की इच्छा और इच्छा के अधीन होता है। दिलों को मनोरम और वश में करना इंसानों को प्रिय है। जब कोई महसूस करता है कि अब वह दिलों का मालिक है, तो उसे खुशी महसूस होती है और यह आनंद तब बढ़ता है जब उस व्यक्ति की जीभ से प्रशंसा आती है जिसके पास शक्ति और नियंत्रण का एक विस्तृत जाल है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसे व्यक्ति के दिल को फंसाने से राजाओं, अधिकारियों या प्रमुख व्यक्तियों की तरह अधिकतम लाभ प्राप्त करने की उम्मीद होती है। यह आनंद बहुत निम्न स्तर तक कम हो जाता है जब प्रशंसा करने वाले व्यक्ति का न तो समाज में कोई महत्व होता है (जिसका कोई सामाजिक महत्व नहीं होता है) और न ही किसी के प्रभाव क्षेत्र में कुछ भी होता है या व्यक्तिगत रूप से किसी को लाभ पहुंचाने में सक्षम होता है। ऐसे व्यक्ति के हृदय पर नियंत्रण प्राप्त करना एक तुच्छ और नीच चीज़ को नियंत्रित करने के समान है। निंदा करने या आलोचना करने वाले व्यक्ति का हृदय किसी के स्वामित्व में नहीं होता है। इससे निकलने वाला दर्द कमोबेश निंदक के सामाजिक महत्व पर निर्भर करेगा उच्च या निम्न।

तीसरा कारण: किसी की प्रशंसा न केवल किसी के हृदय को प्रशंसा किए जा रहे व्यक्ति के अधीन कर देती है, बल्कि यह संभव है कि प्रशंसा कुछ अन्य लोगों को प्रभावित करती है जिनके हृदय बदले में प्रशंसा के अधीन हो जाते हैं। इस संबंध में, उन लोगों की प्रशंसा (टिप्पणियों की प्रशंसा) अत्यधिक प्रभावी है, जिनके कथन ध्यान से सुने जाते हैं और जिनकी प्रशंसा और निंदा पर विश्वास किया जाता है। फिर यह स्तुति एक बड़ी खुली सभा में की जानी चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोग इसे सुन सकें। श्रोताओं की संख्या जितनी अधिक होगी और प्रशंसा करने वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व जितना अधिक महत्वपूर्ण होगा, उस प्रशंसा से उतना ही अधिक आनंद होगा और उस हद तक निंदा का दर्द भी होगा जो निचले स्व (नफ्स) के लिए असहनीय होगा।

चौथा कारण: प्रशंसा से यह पता चलता है कि जिस व्यक्ति की प्रशंसा की जा रही है उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली है, इसीलिए, लोग ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा करने में बेचैन रहते हैं, चाहे वह स्वतंत्र इच्छा से हो या [एक सम्मोहक आंतरिक मजबूरी या] बल से। एक प्रभावशाली व्यक्तित्व होना भी एक अलंकरण है क्योंकि इसमें एक प्रकार का प्रभुत्व और शक्ति होती है। यह प्रशंसा तब भी आनंद से रहित नहीं होती है जब प्रशंसा करने वाले व्यक्ति के पास प्रशंसा करने वाले व्यक्ति के बारे में अच्छे विचार नहीं होते हैं जो डर के कारण प्रशंसा करने के लिए मजबूर होता है। इस मामले में, व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की व्याकुलता और भय के कारण और दूसरों पर अपने प्रभुत्व और शक्ति के कारण आनंद मिलता है। दूसरा कितना कमजोर और परेशान है, इस पर निर्भर करते हुए, किसी को उसके अनुपात में आनंद मिलेगा।

कभी-कभी ये चार कारण एक ही व्यक्ति की प्रशंसा करने में जमा हो जाते हैं। उस स्थिति में, [दूसरों की प्रशंसा से प्राप्त होने वाला आनंद] कई गुना बढ़ जाता है। यदि ये सभी कारण एक व्यक्ति में [एक साथ] संयोजित नहीं होते हैं, तो प्रशंसा से आनंद आनुपातिक रूप से कम हो जाएगा।

प्रेमपूर्ण प्रशंसा के उपर्युक्त कारणों का इलाज: पहला कारण यह है कि प्रशंसा करने वाले व्यक्ति द्वारा यह निश्चित किया जा सकता है कि प्रशंसा करने वाला किसी की बात में सच्चा नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि कोई यह कहकर किसी की प्रशंसा करता है, "तुम एक कुलीन वंश से हो, तुम उदार हो, तुम एक विद्वान हो, और तुम बुराइयों से दूर रहते हो", और जिसे संबोधित किया जा रहा है या प्रशंसा की जा रही है वह जानता है कि वह ऐसा नहीं है और इसके बजाय, उसके बिल्कुल विपरीत है, तो उस प्रशंसा के साथ हृदय में जो आनंद पैदा होता है वह समाप्त हो जाएगा। केवल वही आनंद रहेगा जो तब प्राप्त होता है जब कोई किसी के दिल या जीभ पर प्रभुत्व और नियंत्रण प्राप्त करता है। यदि कोई [आगे] यह महसूस करता है कि प्रशंसा करने वाला व्यक्ति जो कह रहा है, उसका हृदय उस विश्वास से रहित है और [उसके ऊपर] मैं भी उन गुणों से रहित हूं [जिनकी प्रशंसा करने वाले व्यक्ति ने उल्लेख किया है] तो दूसरा आनंद (दिलों पर प्रभुत्व और नियंत्रण रखने का) भी समाप्त हो जाएगा। इसके बाद केवल एक ही आनंद रहेगा [जो कि लोगों की जीभ पर नियंत्रण रखने का एहसास करने से मिलता है]। दूसरे शब्दों में, एकमात्र आनंद जो रहेगा वह इस अहसास का है कि प्रशंसा करने वाला मेरे डर और विस्मय के कारण मेरी प्रशंसा में अपनी जीभ खोलने के लिए मजबूर है। एक व्यक्ति जो प्रशंसा करने में गंभीर नहीं है, बल्कि इसके बजाय, केवल एक मजाक के रूप में प्रशंसा कर रहा है, तो सभी सुख [किसी की जीभ पर नियंत्रण रखने के अंतिम शेष आनंद सहित] समाप्त हो जाएंगे क्योंकि तीन कारणों में से, कोई भी कारण नहीं बचा है। इस स्पष्टीकरण से, आप अब तक समझ गए होंगे कि निम्न स्व (*नफ्स*) प्रशंसा से आनंद क्यों प्राप्त करता है और निंदा में दर्द पाता है। इन कारणों का उल्लेख किया गया है ताकि प्रसिद्धि के प्रेम, और प्रशंसा और निंदा के भय के इलाज की विधि को समझा जा सके। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब तक किसी बीमारी या बीमारी का कारण नहीं समझ लिया जाता है, तब तक उसका इलाज संभव नहीं होगा क्योंकि बीमारी के कारणों को समाप्त करने का दूसरा नाम इलाज है।

प्रसिद्धि के प्यार का इलाज

जिसके पास प्रसिद्धि का प्रेम हृदय पर हावी है, वह अपनी सारी ऊर्जा रचनाओं को प्रसन्न करने में खर्च करता है, और उनके साथ मित्रता स्थापित करने में व्यस्त रहता है, और किसी को सुनने और उसके कार्यों को देखने के बाद, अपने शब्दों और लोगों के कार्यों में बहुत सचेत रहता है। यह मामला पाखंड का समुद्र और उथल-पुथल का फव्वारा है। यह पूजा में आलस्य पैदा करता है और कभी-कभी दिलों को फंसाने के

लिए निषिद्ध और अनैतिक चीजें करने के लिए मजबूर हो जाता है। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (शांति और ईश्वर का आशीर्वाद उन पर हो) धन और प्रसिद्धि के प्यार और दो [भूखे और] क्रूर भेड़ियों के लिए अपने विश्वास के लिए उनकी विनाशकारी स्थिति से मिलता-जुलता था। उन्होंने आगे कहा है कि धन और प्रसिद्धि का प्यार पाखंड को बढ़ाता है, जैसे पानी वनस्पति उगाता है। पाखंड का अर्थ है बाहरी और आंतरिक अस्तित्व के बीच का अंतर और शब्दों और कर्मों के बीच का अंतर। एक व्यक्ति जो प्रशंसा और सम्मान की डिग्री की तलाश कर रहा है, ऐसी उत्कृष्ट आदतों और लक्षणों को प्रदर्शित करता है जो वास्तव में रहित हैं। यह शुद्ध पाखंड है। प्रसिद्धि का प्यार एक घातक बीमारी है। विश्वासियों के दिलों से इसका इलाज और उन्मूलन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह बीमारी, धन से प्यार करने की बीमारी की तरह हृदय के मूल में प्रवेश करती है [और एक आंतरिक गुण बन जाती है]। इसका इलाज भी ज्ञान और कर्म के संयोजन से ही बना है।

प्रसिद्धि के प्यार का ज्ञान आधारित इलाज: उस कारण का पता लगाना है जिसके कारण किसी को प्रेमपूर्ण प्रसिद्धि की बीमारी में शामिल होना पड़ा। वह कारण लोगों की आत्मा और शरीर पर नियंत्रण हासिल करना है। यहां तक कि अगर कोई इसे प्राप्त कर लेता है, तो इसका अंतिम अंत [उस व्यक्ति की] मृत्यु है जो अंततः आएगा। इसे उन नेक कर्मों में नहीं गिना जाता है जो हमेशा के लिए चलते हैं [*अल-बकियात उस-सलीहात*]। इसके बजाय, यदि पृथ्वी के सभी लोग तुम्हारे सामने दण्डवत् करना शुरू कर दें और पचास वर्षों तक अपने माथे को तुम्हारे पैरों में रखें, तब भी न तो साष्टांग प्रणाम करने वाले रहेंगे और न ही तुम जीवित रहोगे, और तुम्हारा अंतिम अंत वही होगा जो तुम्हारे सामने महिमा, वैभव और प्रतिष्ठा के अनगिनत लोगों को दिया गया है। विश्वास की आशीषों को [ईश्वर और उसकी ओर ले जाने वाले महान आध्यात्मिक मार्ग में] को छोड़ने के लिए, जो कि अनन्त जीवन है जो कभी समाप्त नहीं होता है, क्योंकि ऐसी क्षणभंगुर और क्षणभंगुर चीज [जैसे लोगों के दिलों में लोकप्रियता और पूजा] किसी भी तरह से उचित नहीं है। जो वास्तविक पूर्णता की वास्तविकता के साथ-साथ [झूठी] कल्पना की गई पूर्णता से परिचित है, वह प्रसिद्धि [और लोकप्रियता] को कोई महत्व नहीं देता है। इसके बजाय, जो परलोक पर नजर रखता है, वह उसे धूल के कण को जितना महत्व देता है, वह भी नहीं देता है। ऐसा व्यक्ति एक के सामने मृत्यु की कल्पना करता है और दुनिया (सांसारिकता) को नीच मानता है। [अतीत के] धर्मी लोगों का सारा ध्यान परलोक पर था और इसके लिए उन्होंने जो कार्य किया वह पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर का भय (*तकवा*) था। वे यह जानते थे कि परलोक उन लोगों के लिए है जिनके पास पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर (*तक़वा) का भय है* और उनके लिए, प्रसिद्धि और धन से अधिक नीच कुछ भी नहीं है। ज्यादातर लोगों की आंखों की रोशनी कमजोर होती है और वह सिर्फ दुनिया पर ही केंद्रित होती है। उनकी आंखों की रोशनी सभी मामलों की वास्तविकता और अंतिम अंत को देखने के लिए विस्तारित नहीं होती है जैसा कि इस दिव्य कहावत द्वारा स्पष्ट किया गया है:

بَلْ تُؤْثِرُونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَٱلْـَٔاخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ ﴿١٧﴾

"इसके बजाय, आप सांसारिक जीवन को पसंद करते हैं, भले ही, परलोक दुनिया (सांसारिक जीवन के साथ अपनी सांसारिकता के साथ) की तुलना में कहीं बेहतर और टिकाऊ (चिरस्थायी) है। (कुरान, अध्याय 87, श्लोक 16-17)

जो इस हद तक प्रसिद्धि की तलाश में लिप्त है, उसे सांसारिक हानियों और कठिनाइयों की कल्पना करके अपने दिल को ठीक करना चाहिए, दूसरे शब्दों में, दुनिया में प्रसिद्ध लोगों द्वारा सामना किए जाने वाले खतरों पर नजर रखनी चाहिए - हर प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा और उच्च स्थिति वाले व्यक्ति के पास कुछ दोस्त होने के बावजूद, शत्रुओं की कोई कमी नहीं है। ये लोग हमेशा नुकसान पहुंचाने के लिए एक उपयुक्त समय का लक्ष्य बनाते हैं और जब भी उन्हें मौका मिलता है, वे अपनी दुश्मनी फैलाते हैं। उच्च स्थिति के लोगों को हमेशा अपनी हैसियत खोने या दिल बदलने (पलटने) का डर रहता है जो उनके लिए गरिमा और सम्मान रखते हैं। दिल सम्मान करने के बीच उलझे हुए हैं [जिसे वे पसंद करते हैं और प्रशंसा करते हैं] और [जिसे वे नापसंद करते हैं और घृणा करते हैं]। दिलों में अपनी नींव के साथ बनाई गई एक इमारत समुद्र की लहरों पर बने महल से अधिक टिकाऊ नहीं होती है। दिलों को रियायतें, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा की रक्षा, ईर्ष्यालु की साजिश, शत्रुओं द्वारा होने वाले नुकसान का विरोध करना आदि, वे सांसारिक नुकसान और कठिनाइयाँ हैं जो प्रसिद्धि के आनंद को कड़वा करती हैं। प्रसिद्धि की तलाश के लिए परलोक की सजा उससे अलग है। किसी को [प्रसिद्धि की तलाश से] सांसारिक लाभों की मात्रा नहीं मिलती है जिसकी अपेक्षा की जाती है, इसके बजाय, प्रसिद्धि प्राप्त करने से जुड़ी कठिनाइयों का बहुत अधिक भंडार है। जिन लोगों को प्रसिद्धि पसंद है, उन्हें अपनी दूरदर्शिता (रहस्यवादी अंतर्दृष्टि या *बसीराह)* का इलाज करना चाहिए। जिनकी दूरदर्शिता (रहस्यवादी अंतर्दृष्टि) और विश्वास की शक्ति में गहराई है, वे संसार (सांसारिकता) पर जरा भी ध्यान नहीं देते हैं।

प्रसिद्धि के प्रेम का व्यावहारिक इलाज: इस बीमारी का व्यावहारिक इलाज यह है कि किसी व्यक्ति की प्रसिद्धि को समाप्त करने के लिए कुछ किया जाए [और दूसरे लोगों के दिलों में थामे रहे] ताकि किसी को तब तक फटकार लगाई जाए जब तक कि लोग अपनी आँखों में उसे नीचा न दिखाएँ। नतीजतन, लोकप्रियता की भावना दूर हो जाती है और व्यक्ति एकांत और गुमनामी के जीवन का आदी हो जाता है और केवल भगवान के साथ अपनी लोकप्रियता के साथ संघर्ष करता है। केवल इतना ही जायज़ है कि कोई ऐसे कार्यों के बीच से ऐसे कार्य करता है जिससे मनुष्य को लोगों में कोई प्रतिष्ठा नहीं मिलती है। एक परंपरा है कि एक राजा एक पवित्र उपासक के करीब जाने का इरादा रखता था। जब उपासक को पता चला कि राजा उसकी सभा में आया है, तो उसने उसके लिए भोजन लाने के लिए कहा और बड़े निवाले खाने लगे। जब राजा ने उसे इस तरह खाते हुए देखा तो वह उसके बारे में अपनी अच्छी राय नहीं रख सका और वह उपासक उसकी नजर में पतित हो गया। फिर उसने उसके करीब आने और [आध्यात्मिक पथ में] उसका अनुयायी बनने का अपना इरादा त्याग दिया। उपासक ने राहत की सांस ली और राजा से उसकी रक्षा करने के लिए भगवान को धन्यवाद दिया। आध्यात्मिक अवस्था के लोग कभी-कभी इन

तरीकों के माध्यम से अपने आप को ठीक करते हैं, और वे उन्हें अपने दिल के लिए फायदेमंद मानते हैं [आध्यात्मिक बीमारियों से बचाने के संदर्भ में]। इस तरह के तरीकों पर कार्य करके, वे अपनी आंतरिक अवस्थाओं को सुधारते हैं और किसी भी ज्यादतियों को खत्म करते हैं [या उनके आंतरिक प्राणियों में संयम, संतुलन और सद्भाव से विचलन]।

प्रसिद्धि के प्यार को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका: इसका सबसे अच्छा इलाज लोगों से [सामाजिक] एकांत को अपनाना है [सभी आकारों और रूपों में चाहे आधुनिक साधन हों या पारंपरिक, आवश्यकताओं और तात्कालिकताओं को छोड़कर] और अज्ञात हो जाएं या ऐसी जगह पर जाएं जहां कोई भी किसी को नहीं जानता है। घर में एकांत अपनाना भी खतरे से रहित नहीं है क्योंकि कोई व्यक्ति पूरे गांव [या नगर पालिका] में प्रसिद्ध हो जाएगा कि अमुक आध्यात्मिक यात्री ने ईश्वर से जुड़ने के लिए सभी लोगों से अलगाव को अपनाया है, ताकि एकांत भी लोगों के दिल में विश्वास पैदा करने का स्रोत बन जाए [किसी की धर्मपरायणता, अच्छाई और उच्च आध्यात्मिक स्थिति के बारे में]। यह भी संभव है कि एकांत का अभ्यास करने वाला व्यक्ति यह सोच सकता है कि किसी के दिल में प्रसिद्धि का प्यार नहीं है, हालांकि, यह प्यार दिल के किसी कोने में छिपा हो सकता है, लेकिन जाहिरा तौर पर निचला स्व (*नफ्स*) अपने उद्देश्य को प्राप्त करने से संतुष्ट है [अभी भी प्रसिद्ध होने के दौरान एकांत को अपनाने]। हालाँकि, यदि कोई इस निश्चितता को प्राप्त कर लेता है कि लोग अब उसके प्रशंसक और प्रशंसक नहीं बने हुए हैं या वे किसी एक को उल्टा करते हैं या उसे बुरी चीजों का श्रेय देते हैं, तो उसके निचले स्व (नफ्स) की [आंतरिक] संतुष्टि समाप्त हो जाएगी और वह लोगों के हृदय से अपने बारे में गलत विचारों को दूर करने के तरीकों की तलाश करने के लिए पर्याप्त रूप से परेशान हो जाएगा, भले ही किसी को झूठ बोलना पड़े या धोखे का सहारा लेना पड़े। इस मामले में यह स्पष्ट होगा कि इस व्यक्ति ने एकांत को दिखावे के रूप में अपनाया है, वास्तव में, किसी के दिल में अभी भी प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा का प्यार है। यह प्रेम धन के प्रेम की तरह है, लेकिन इससे भी अधिक बुराई पैदा करने वाला है क्योंकि प्रसिद्धि के कारण होने वाला परीक्षण अधिक है। जब तक किसी को अपने जैसे लोगों से [प्रशंसा और विस्मय का] लालच है, तब तक वह अपने दिलों में अपने लिए जगह बनाने में बेचैन रहता है। लेकिन अगर कोई अपने हाथों से कमाता है और किसी और के धन पर नजर नहीं रखता है, तो सभी लोग एक के लिए अपना महत्व खो देंगे। कोई भी अब उन लोगों के दिलों की परवाह नहीं करेगा जो पूर्व या पश्चिम में एक से दूर रहते हैं, क्योंकि कोई न तो उन्हें देख सकता है और न ही उनसे कोई लालच [या अपेक्षा] कर सकता है।

लोगों से लालच [और अपेक्षा] को केवल संतोष के माध्यम से ही मिटाया जा सकता है। जो संतुष्ट है, लोगों के प्रति बेखबर है और जो बेखबर है, वह लोगों के साथ अपने दिल को व्यस्त नहीं करता है, और अगर दूसरे दिल में अपने लिए प्रशंसा और दर्जा है, तो वह इसे बहुत महत्व नहीं देता है। यश की तलाश का परित्याग संतोष और लालच के उन्मूलन के बिना संभव नहीं है। इसके अलावा, किसी को पवित्र पूर्ववर्तियों

(सलाफ *सलीहीन*) की स्थिति को ध्यान में रखना चाहिए कि उन्होंने गरिमा पर विनम्रता को प्राथमिकता दी और सांसारिक धन की तुलना में परलोक का दिव्य प्रतिफल प्राप्त किया।

प्रशंसा के प्यार का इलाज

बहुत से लोगों को कष्ट हुआ था क्योंकि वे दूसरों के डर से घिरे हुए थे और उनकी प्रशंसा और प्रशंसा की इच्छा में लिप्त थे। [नतीजतन,] उनकी सभी हरकतें और हरकतें लोगों की इच्छा के अनुसार होती थीं ताकि वे उनकी तारीफ कर सकें। यह मामला विनाशकारी लक्षणों से है और इस संबंध में, इसका इलाज अनिवार्य है। इलाज की विधि उन कारणों पर विचार-विमर्श करना है जो प्रशंसा की इच्छा और निंदा के डर को जन्म देते हैं।

पहला कारण [प्रशंसा के प्यार के लिए]: जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, प्रशंसक का कथन [प्रशंसा का] प्रशंसित को यह एहसास कराता है कि किसी के पास पूर्णता है। इस संबंध में, किसी को प्रशंसक की प्रशंसा पर विश्वास करने के बजाय अपनी बुद्धि का सहारा लेना चाहिए, और अपने दिल से सवाल करना चाहिए कि क्या वह गुण जो किसी को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है, क्या वह वास्तव में मौजूद है या नहीं? फिर जो गुण किसी को दिया जा रहा है, वह यह है कि कुछ भी जो वास्तव में प्रशंसा के योग्य है जैसे ज्ञान, ईश्वर का भय, या यह कुछ ऐसा है जिसकी प्रशंसा भी नहीं की जानी चाहिए जैसे धन, प्रसिद्धि और सांसारिक वस्तुएं? यदि कोई गुण [जिसके लिए प्रशंसा की जाती है] सांसारिक साधनों से संबंधित है, तो उससे खुश होना घास को देखकर प्रसन्न होने जैसा है जो जल्द ही सूख जाएगी और ठूंठ बन जाएगी जिसे हवा इधर-उधर ले जाएगी। इस तरह की खुशी बुद्धि की कमी के लिए शोक होगी। सांसारिक धन और संपत्ति से प्रसन्न होना मनुष्य के लिए उचित नहीं है। यदि कोई इसके बारे में खुश होना चाहता है, तो उसे उसके अस्तित्व के लिए खुश होना चाहिए, न कि प्रशंसक द्वारा इसकी प्रशंसा के लिए। इसका मतलब यह होगा कि यह प्रशंसा के बाद अस्तित्व में आया, हालांकि यह पहले से था [लेकिन किसी की प्रशंसा करने के बाद ही खुश हुआ]।

इसके अलावा, यदि वह गुण ऐसा है कि आपको ज्ञान और ईश्वर-भय की तरह खुश रहने का अधिकार है, तो उस स्थिति में भी इसके बारे में खुश होना सही नहीं है क्योंकि सभी का अंतिम अंत [एक शाश्वत मोक्ष और खुशी या शाश्वत दुःख और अभिशाप प्राप्त करने के संदर्भ में लोग] सभी के लिए अज्ञात है। कोई नहीं जानता कि यह [प्रशंसनीय और महान] गुण रहेगा या नहीं। यह सच है कि ज्ञान और संयम (सांसारिकता से) व्यक्ति को ईश्वर के करीब लाते हैं, लेकिन [किसी के सांसारिक अस्तित्व के] अंत का खतरा हर समय

मौजूद रहता है। यदि किसी को अपने जीवन के बुरे अंत का डर है, तो वह दुनिया की किसी भी चीज से खुश नहीं होगा। इसके बजाय, कोई यह समझेगा कि दुनिया उदासी और दुख का स्थान है और खुशी और संतुष्टि का स्थान नहीं है [इसके असंख्य मुद्दों के कारण]। यदि आप अपने जीवन के अच्छे अंत की उम्मीद करते हैं, तो प्रशंसक की प्रशंसा पर खुश होने के बजाय, किसी को उस ईश्वरीय उदारता और आशीषों से खुश होना चाहिए जो आपको ज्ञान और संयम के रूप में प्रदान किया गया है [सांसारिकता से] (*ज़ुहद) /* ऐसा इसलिए है क्योंकि आनंद पूर्णता और पूर्णता की प्राप्ति का परिणाम है [यदि यह वास्तव में मौजूद है,] इसका अस्तित्व ईश्वरीय कृपाओं के लिए है, न कि प्रशंसक की प्रशंसा के लिए। स्तुति इस ईश्वरीय कृपा के अधीन है। इसीलिए, किसी को प्रशंसा से खुश नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे आपकी उत्कृष्टता में वृद्धि नहीं होगी। यदि कोई आपकी धर्मपरायणता और सांसारिकता से परहेज की प्रशंसा करता है और आप जानते हैं कि इस प्रशंसा का वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं है और यदि आप इससे बहुत खुश होते हैं तो यह पूर्ण मूर्खता है। परमेश्वर तुम्हारे स्वभाव की बुराई और तुम्हारे आंतरिक चरित्र की गंदगी से अच्छी तरह वाकिफ है और यह सिर्फ एक झूठी प्रशंसा है और इससे खुश होना अज्ञानता की पराकाष्ठा है। भले ही प्रशंसा करने वाला व्यक्ति सच्चा हो, तुम्हें प्रशंसा से खुश नहीं होना चाहिए, इसके बजाय तुम्हें परमेश्वर द्वारा तुम्हें दिए गए एहसानों और आशीर्वादों से खुश होना चाहिए। झूठी प्रशंसा आपके लिए दुःख का स्रोत होनी चाहिए, न कि खुशी की।

दूसरा कारण: क्या प्रशंसा के माध्यम से, प्रशंसा के ढेर लगाने वाले व्यक्ति के दिल की विजय स्पष्ट हो जाती है। इसका उद्देश्य प्रसिद्धि के प्रेम के समान ही है और प्रसिद्धि के प्रेम का इलाज पूर्वोक्त में समझाया गया है कि किसी को लोगों से कोई लालच नहीं होना चाहिए, और ईश्वर से पद और प्रशंसा का साधक होना चाहिए, और इस वास्तविकता में निश्चितता होनी चाहिए कि रचनाओं (सभी मनुष्यों) से पद और प्रशंसा की मांग करना व्यक्ति को ईश्वर से दूर बनाता है। इसलिए, किसी को उनकी प्रशंसा से प्रसन्न नहीं होना चाहिए।

तीसरा कारण: खुशी का तीसरा कारण यह है कि प्रशंसा के माध्यम से प्रशंसा करने वाले का गौरव और प्रभावशाली व्यक्तित्व स्पष्ट हो जाता है। [वास्तव में,] यह भी एक क्षणिक विशेषता है जिसका कोई स्थायित्व नहीं है। इस तरह की क्षणभंगुर चीज़ से प्रसन्न होने का कोई मतलब नहीं है। इस तरह की प्रशंसा दुख का कारण होनी चाहिए और प्रशंसा करने वाले को बुरा मानना चाहिए। इस तरह की प्रशंसा से किसी को नाराजगी होनी चाहिए क्योंकि यह व्यक्ति को कठिनाइयों और आपदाओं के करीब लाती है। एक ज्ञानवादी ने कहा, "जो किसी की प्रशंसा से प्रसन्न हुआ, उसने शैतान को किसी के आंतरिक अस्तित्व में प्रवेश करने का अवसर दिया"। एक अन्य ज्ञानवादी की राय थी कि, "यदि आप किसी की जुबान से यह सुनना पसंद नहीं करते हैं कि आप एक बुरे व्यक्ति हैं, लेकिन इसके बजाय आप यह सुनना पसंद करते हैं कि आप एक अच्छे इंसान हैं, तो वास्तव में, आप एक अच्छे इंसान नहीं हैं"। एक भविष्यसूचक परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

ألا لا تمادحوا وإذا رأيتم المادحين فاحثوا في وجوههم التراب

"खबरदार! एक-दूसरे की प्रशंसा न करें और जब आप प्रशंसा करने वालों को देखते हैं तो उनके चेहरे पर धूल छिड़क देते हैं (यानी, लौकिक रूप से बोलते हुए, इसका मतलब है कि ऐसे लोगों को विश्वसनीयता नहीं दी जानी चाहिए और उनकी प्रशंसा की अवहेलना की जानी चाहिए और सार्वजनिक रूप से अस्वीकार कर दी जानी चाहिए क्योंकि यह किसी के अहंकार और आत्म-धार्मिकता को बढ़ाने के मामले में किसी की आध्यात्मिकता के लिए हानिकारक है)।

यही कारण है कि भविष्यवक्ता साथी प्रशंसा से बहुत डरते थे और इसकी उथल-पुथल (*फितना* या विनाशकारी प्रभाव) और इसके परिणामस्वरूप आंतरिक आनंद और संतुष्टि से डरते थे। उसकी स्तुति सुनकर, एक भविष्यद्वक्ता साथी ने कहा, "हे परमेश्वर! तुम्हारा यह सेवक किसी ऐसी चीज़ के साथ मेरे करीब आना चाहता है जो तुम्हें अप्रसन्न करे। मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं उससे नाराज हूं। इन [पवित्र और धर्मी] लोगों के प्रशंसा के प्रति विरोधी होने का कारण यह था कि परमेश्वर इससे अप्रसन्न है। इसके अलावा, उनके हृदयों में यह सतत अहसास हुआ करता था कि परमेश्वर उनकी [सच्ची आंतरिक] अवस्थाओं [और उनकी वास्तविक वास्तविकता] के बारे में जानता है और [पूरी तरह से] उनके दोषों से अवगत है। इसीलिए, किसी की प्रशंसा से न तो अपने दोष कम होंगे और न ही बढ़ेगा। अच्छा व्यक्ति वह है जो परमेश्वर के करीब है और बुरा वह है जो उससे दूर है। जिस व्यक्ति की प्रशंसा की जा रही है, वह भगवान की दृष्टि में बुरा है और जिसका निवास नर्क है, तो किसी की स्तुति से प्रसन्न होना परम अज्ञानता है। यदि वह व्यक्ति स्वर्ग के योग्य है, तो व्यक्ति को केवल परमेश्वर की आशीषों और उदारता पर ही प्रसन्न होना चाहिए क्योंकि अन्य सेवकों की स्तुति से प्रसन्न होने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। किसी का मामला सेवकों के हाथ में नहीं है, यानी साथी मनुष्यों का। जीविका और मृत्यु सभी परमेश्वर की शक्ति और विशेषाधिकार में हैं। यदि इस बात को समझ लिया जाए, तो कोई न तो किसी सृष्टि की प्रशंसा की परवाह करेगा और न ही निंदा की। प्रशंसा का प्यार किसी के दिल से निकलना शुरू हो जाएगा और व्यक्ति आध्यात्मिक पथ के कठिन अभियानों में शरीर और आत्मा के साथ पूरी तरह से लिप्त हो जाएगा।

आलोचना और निंदा से घृणा का इलाज

यह पहले उल्लेख किया गया है कि मनुष्य निंदा से घृणा करते हैं एक कारण जिसके विपरीत कारण है कि वे प्रशंसा से प्यार करते हैं। इसीलिए, इसके इलाज को प्रशंसा के लिए प्यार के इलाज से समझा जा सकता है। इस संबंध में, संक्षिप्त विवरण यह है कि जो व्यक्ति आपकी निंदा करता है वह तीन राज्यों में से एक से वंचित नहीं है। या तो ऐसा व्यक्ति सच्चा है या उसका उद्देश्य ईमानदारी और प्रेम है, या कोई व्यक्ति अपनी निंदा में सच्चा है लेकिन उसका उद्देश्य ईमानदारी नहीं है और इसके बजाय, नुकसान पहुंचाना चाहता है। जहां तक पहले मामले का सवाल है, आपको न तो अपनी निंदा सुनकर क्रोधित होना

चाहिए और न ही किसी के प्रति शत्रुता रखनी चाहिए या प्रतिशोध में ऐसे व्यक्ति की निंदा करनी चाहिए। इसके बजाय, यह बेहतर है कि तुम अपने ऊपर किसी के एहसान को स्वीकार करो क्योंकि जो व्यक्ति तुम्हें तुम्हारे दोषों के बारे में सूचित करता है, वास्तव में, तुम्हें तुम्हारे स्वयं के विनाशकारी आंतरिक गुणों का गवाह बनाता है और तुम्हें उनसे खुद को सुरक्षित रखने की सलाह देता है। आपको अपनी आलोचना के बारे में खुश होना चाहिए और अपने स्वयं के निंदनीय [आंतरिक लक्षणों या] गुणों को खत्म करने के लिए संघर्ष करना चाहिए। निंदा करने या नापसंद करने पर पछताना या निंदा करने वाले व्यक्ति को बुरा कहना अज्ञानता है। यदि [यह दूसरा मामला है जिसके द्वारा] आलोचक ने केवल दुश्मनी के कारण और आपको नुकसान पहुंचाने के लिए आपकी आलोचना की, तब भी आपको खुश होना चाहिए क्योंकि आपको उनके कारण अपने दोषों के बारे में पता चला है। आप पहले उनके बारे में नहीं जानते थे, या यह आपको अपने दोषों की याद दिलाता था क्योंकि आप उससे पहले लापरवाह थे, या इसने आपके [बुरे आंतरिक] गुणों को आपकी आंखों में बुरा बना दिया क्योंकि आप उन्हें पहले अच्छा मानते थे। ये सभी मामले आपके शाश्वत सुख और शाश्वत सफलता (सदा) के कारण हैं और जब आपको इसका साधन मिल जाए तो अपने शाश्वत आनंद और चिरस्थायी सफलता को प्राप्त करने में देरी न करें। इसका उदाहरण यह है कि आप गंदगी से घिरे कपड़े पहनते हैं और किसी राजा के दरबार में जाने का इरादा रखते हैं और आपको पता नहीं होता है कि आपके कपड़ों पर गंदगी है। इसके अलावा, आप यह भी नहीं जानते हैं कि यदि आप इस अवस्था में प्रवेश करते हैं, तो राजा बहुत क्रोधित होंगे, और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि वह आपको इस अपमान (आचरण का उल्लंघन) के लिए अनुकरणीय दंड के साथ दंडित करता है। यदि [इस अवस्था में] कोई तुमसे कहता है, "ऐ गंदे! हे गंदे! अपने कपड़े साफ करें", आपको खुश होना चाहिए क्योंकि यह मौखिक पूर्वचेतावनी अत्यधिक मूल्यवान है। सभी बुरी और हानिकारक नैतिकताएं, शिष्टाचार, चरित्र लक्षण और आंतरिक स्वभाव परलोक में विनाश का कारण हैं। मनुष्य को अपने शत्रुओं के माध्यम से उनकी विनाशकारी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र लक्षणों और आंतरिक स्वभाव के बारे में पता चलता है जब वे निंदा करते हैं और आपको उनकी निंदा का लक्ष्य बनाते हैं। अगर आपके भाग्य में ऐसा कोई दुश्मन है तो आपको उसे महत्व देना चाहिए। यदि कोई शत्रु किसी की शत्रुता पर तुला हुआ है, तो यह परमेश्वर के मार्ग के लिए खतरनाक है [और किसी की शत्रुता के रूप में उसके साथ खड़ा होना स्वयं के भीतर नकारात्मकता को बढ़ावा दे सकता है] परन्तु यह तुम्हारे लिए एक आशीष है। आपको इस आशीर्वाद के बारे में खुश होना चाहिए [कि आपको अपने दोषों से अवगत कराया जाता है] और इसका लाभ उठाना चाहिए। आपको क्या परवाह है अगर आपका दुश्मन अपनी दुश्मनी की आग में जलकर राख हो रहा है (लाक्षणिक रूप से कहें तो) ?

तीसरा मामला यह है कि निंदा करने वाला झूठा है और आप पर किसी ऐसी चीज का आरोप लगा रहा है जिसके लिए आपको परमेश्वर के साथ दोषमुक्त कर दिया गया है। तुम्हें न तो इसके बारे में थोड़ी सी भी परवाह करनी चाहिए और न ही तुम्हें प्रतिशोध के उपाय के रूप में एक पीठ की निंदा करनी चाहिए, इसके बजाय, तुम्हें तीन बातों पर ध्यान देना चाहिए। पहला यह है कि आप उस दोष से मुक्त हो जाते हैं जिसमें आपको शामिल होने के लिए घोषित किया जा रहा है। हालाँकि, इस तरह के कितने अन्य दोष हैं

जिनमें आप शामिल हैं, लेकिन भगवान ने उन पर [शुद्ध ईश्वरीय उदारता और उदारता से] छिपाने का पर्दा डाल दिया है। तुम्हें परमेश्वर का आभारी होना चाहिए कि लोगों को उनके बारे में सूचित करने के बजाय, एक गलती उन्हें सौंप दी गई जिससे तुम दोषमुक्त हो गए। दूसरी बात यह है कि लोगों की गलती खोजना आपके अपने पापों और दोषों का प्रायश्चित बन जाएगा। दूसरे शब्दों में, लोगों ने एक गलती को जिम्मेदार ठहराया जो आप में मौजूद नहीं है, आपको कई अन्य लोगों से मुक्त कर दिया है जिनमें आप वास्तव में शामिल हैं। याद रखें कि जो कोई भी आपकी पीठ को काटता है, वह आपको अपने स्वयं के धर्मी और अच्छे कर्मों का उपहार देता है [क्योंकि चुगली करने से चुगली करने वाले के अच्छे कर्मों को उस व्यक्ति के खाते में स्थानांतरित कर दिया जाता है जिसके खिलाफ कटाक्ष किया गया है] और जो आपकी प्रशंसा करता है, वह आपकी पीठ पर घातक प्रहार करता है। यह बात कितनी अजीब है कि आप अपनी पीठ पर चोट लगने से खुश हैं और माल कर्मों का उपहार पाकर दुखी हैं, भले ही ये अच्छे कर्म आपको भगवान के करीब ले जाएंगे। तीसरी बात यह है कि वह गरीब व्यक्ति आपके खिलाफ दोष निकालकर खुद को नुकसान पहुंचा रहा है। ऐसे व्यक्ति ने किसी के विश्वास को नुकसान पहुंचाया, परमेश्वर की दृष्टि में खुद को नीचा दिखाया, और झूठे आरोपों के कारण एक दर्दनाक सजा का हकदार बन गया। क्या तुम्हारे लिए ऐसे उत्पीड़ित व्यक्ति के प्रति दमनकारी होना उचित है, जो पहले से ही [किसी के बुरे कर्मों के अनुरूप] हिसाब के लिए नियत है, और ऐसे व्यक्ति पर परमेश्वर का क्रोध पहले से ही है? आप शैतान को खुश रहने का मौका क्यों देते हैं, किसी के विनाश और ईश्वरीय क्रोध के लिए प्रार्थना करते हैं? तुम्हें ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए : "हे परमेश्वर! ऐसे व्यक्ति को सुधारो, अपने पश्चाताप को स्वीकार करो और उस पर दया करो। यह पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) द्वारा किया गया था जब उन्होंने उन लोगों के लिए निम्नलिखित प्रार्थना की थी, जिन्होंने उनके दांत तोड़ दिए, उनके चेहरे को घायल कर दिया और अपने चाचा हमजा (भगवान उनसे प्रसन्न हों) को उहद की लड़ाई में मार डाला था [जब मक्का की सेनाएं मदीना में पैगंबर और उनके सभी अनुयायियों पर हमला करने और उन्हें मारने के लिए आई थीं और उन्हें समुदाय की रक्षा करने के लिए मजबूर किया गया था]:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِيْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

"हे परमेश्वर! मेरे देश को माफ कर दो। हे परमेश्वर! मेरे राष्ट्र का मार्गदर्शन करें क्योंकि वे नहीं जानते [वे अज्ञानता से जो गलत कर रहे हैं]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *बेहाकी दला-इल अल-नबुव्वा)*

जो लोग संतोष का अभ्यास करते हैं और लोगों के धन से सभी लालच को समाप्त करते हैं, उन्हें निंदा करना बुरा नहीं लगता। यदि तुम लोगों से बेखबर हो जाते हो [और उनके पास जो कुछ भी है, जिसमें उनकी प्रशंसा और प्रशंसा भी शामिल है,] तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे तुम्हारे खिलाफ कितना बुरा बोलते हैं, इसका तुम्हारे दिल पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा। आस्था या ईश्वर (दीन) के मार्ग की वास्तविकता संतोष है जो धन और प्रसिद्धि के लालच को समाप्त कर देती है। जब तक लालच बना रहेगा, तब तक आप चाहेंगे कि जिस व्यक्ति से आपको लालच और अपेक्षाएं हैं, वह आपके दिल में आपका प्यार

और उच्च दर्जा रखे और आपकी प्रशंसा करे। आप अपने लिए अपने दिल में जगह बनाने में व्यस्त होंगे और यह आपके विश्वास या भगवान (दीन) के मार्ग को नष्ट किए बिना नहीं होगा।

कुछ लोग प्रशंसा और प्रसिद्धि की इच्छा रखते हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, यहाँ तक कि आराधना में दिखावा करने की सीमा तक भी। लोगों के दिलों को अपनी ओर झुकाने और उन्हें खुद की प्रशंसा करने के लिए मजबूर करने के लिए, वे उन चीजों को करने से भी परहेज नहीं करते हैं जो धार्मिक रूप से निषिद्ध हैं (*हराम) /* ऐसे लोग [आत्म] विनाश के रास्ते पर हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वे प्रसिद्धि और प्रशंसा की तलाश करने के लिए [धार्मिक रूप से] अनुमेय चीजों का उपयोग करते हैं क्योंकि वे न तो आराधना को इसके साधन के रूप में उपयोग करते हैं और न ही वे निषिद्ध कार्यों को करते हैं। ऐसे लोग रसातल के कगार पर हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि भाषण या कार्यों पर एक सीमा नहीं लगाई जा सकती है, इसीलिए, यह संभव है कि वे प्रशंसा की तलाश में सभी सीमाओं को पार कर सकते हैं और खुद को नष्ट कर सकते हैं। इस संबंध में, वे उन लोगों के बहुत करीब हैं जो खुद को नष्ट कर लेते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो न तो प्रशंसा की इच्छा रखते हैं और न ही इसके लिए प्रयास करते हैं, लेकिन जब उनकी प्रशंसा की जाती है, तो वे अपने दिलों में खुशी महसूस करते हैं। यदि ऐसे लोग आध्यात्मिक संघर्ष से नहीं गुजरते हैं और प्रशंसा पर घृणा व्यक्त करने के लिए स्वयं को बाध्य नहीं करते हैं, तो यह संभव है कि वे अपने आंतरिक आनंद के कारण लोगों के दूसरे समूह में शामिल हो जाएँ [प्रशंसा किए जाने पर]। यदि वे आध्यात्मिक रूप से प्रयास करते हैं और प्रशंसा पर और इसकी विनाशकता पर विचार करते हुए अपनी घृणा व्यक्त करते हैं, अपने दिलों को इससे प्रसन्न होने का अवसर नहीं देते हैं, तो ऐसे लोग आध्यात्मिक प्रयासों के खतरों से घिरे होते हैं - कभी-कभी वे सफल होते हैं और कभी-कभी उन्हें हारना तय होता है।

कुछ लोग प्रशंसा सुनकर न तो खुश होते हैं, न ही वे इससे दुखी होते हैं जैसे कि प्रशंसा उन पर अपनी छाप नहीं छोड़ती है। ऐसे लोगों को महत्व दिया जाता है, भले ही वे पूरी तरह से ईमानदार न हों। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वे प्रशंसा के प्रति अपनी घृणा व्यक्त करते हैं लेकिन इस हद तक नहीं कि वे प्रशंसा करने वाले व्यक्ति से नाराज हो जाएं या किसी को ऐसा करने से मना कर दें। इन [प्रशंसा के प्रति उनकी प्रतिक्रिया और दृष्टिकोण के संदर्भ में लोगों के विभिन्न समूहों] में उच्चतम स्तर यह है कि प्रशंसा को बुरा माना जाना चाहिए, वास्तविक घृणा दिखाई जानी चाहिए जिसे मजबूर नहीं किया जाना चाहिए [दूसरे शब्दों में, बाहरी नापसंदगी जबकि किसी को इससे आंतरिक संतुष्टि है]। दिल में प्रसन्न होने के साथ-साथ [प्रशंसा के साथ] जीभ से ईमानदारी से और सच्चाई से परेशान होना, शुद्ध पाखंड है। ऐसा व्यक्ति अपनी ईमानदारी और सच्चाई को व्यक्त करता है लेकिन आंतरिक अस्तित्व में न तो ईमानदारी होती है और न ही सत्यता। इन विभिन्न स्तरों [प्रशंसा को नापसंद करने की] के माध्यम से, प्रशंसा की निंदा करने वालों की अवस्थाओं में अंतर भी स्पष्ट हो गया है। इसकी पहली डिग्री यह है कि घृणा की अभिव्यक्ति होनी चाहिए और अंतिम डिग्री यह है कि कोई [स्वयं की] निंदा पर खुशी व्यक्त करता है। हालाँकि, एकमात्र व्यक्ति जो

स्वयं की आलोचना से खुश हो सकता है, वह वह है जिसकी अपने निचले स्व (नफ्स) से दुश्मनी है। यह निम्न स्व बहुत विद्रोही है, इसमें असंख्य दोष हैं, इसके वादों से मुकर जाना प्रसिद्ध है, इसके धोखे स्पष्ट हैं। यह एक ऐसे व्यवहार का हकदार है जो दुश्मनों के साथ किया जाता है। शत्रुओं के दोषों को सुनकर खुश रहना मानव स्वभाव की कमजोरी है। जब कोई अपने स्वयं के निचले आधार स्व (नफ्स) का दुश्मन बन गया है तो उसे इसके दोषों को सुनकर खुश होना चाहिए और उस व्यक्ति के प्रति आभारी होना चाहिए जिसने इसकी निंदा की है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति ने अपने सांप्रदायिक दायित्व (फर्द *अल-किफाया) को पूरा किया है* और मुझे अपने दोषों के बारे में सूचित करने के लिए चतुराई और बुद्धि का उपयोग किया है। इस निंदा को महत्व दिया जाता है क्योंकि लोगों की नज़र में कोई कम हो जाएगा और प्रसिद्धि के नुकसान से सुरक्षित हो जाएगा। इसके अलावा, मनुष्य बहुत सारे अच्छे कर्म करने में सक्षम नहीं है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी अगर यह निंदा [स्वयं के खिलाफ] किसी के लिए एक अच्छा काम बन जाए और किसी के दोषों का प्रायश्चित बन जाए जिसे वह मिटाने में सक्षम नहीं है। यदि एक आध्यात्मिक यात्री (*मुरीद*) अपना पूरा जीवन इस काम के लिए समर्पित कर देता है कि प्रशंसा और निंदा किसी की नजर में समान हो जाती है, तो यह सगाई किसी को [किसी और चीज के लिए] किसी भी राहत या अंतराल की अनुमति नहीं देगी। आध्यात्मिक यात्री की शाश्वत खुशी और चिरस्थायी सफलता (सादा) के मार्ग में, बहुत सारी विश्वासघाती और कठिन घाटियाँ हैं और यह उन घाटियों में से एक है। इन घाटियों को सबसे कठिन आध्यात्मिक प्रयासों (मुजाहिद्दा) को किए बिना पार नहीं किया जा सकता *है*।

अध्याय 9- दिखावा और दिखावा करने के नुकसान

ग़ज़ाली की नौवीं पुस्तक उनकी महान *कृति" इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में आडंबर के नुकसान से संबंधित है और भौतिक संपत्ति या उत्कृष्ट गुणों, प्रतिभाओं और कौशल के संदर्भ में किसी के पास मौजूद किसी भी अच्छाई को दिखाती है। ये बीमारियाँ इतनी आत्म-उपभोग करने वाली होती हैं कि वे किसी के जीवन को पकड़ लेती हैं और व्यक्ति को आध्यात्मिक पथ से हटा देती हैं, जिसे इस ग्रंथ के पहले भाग में उल्लिखित किया गया है, और आंतरिक शांति और शांति को छीन लेती है। ग़ज़ाली इन बीमारियों, उनकी उत्पत्ति के बारे में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, और उन्हें दिल से मिटाने के तरीके बताता है, जिसके परिणामस्वरूप यह आंतरिक शांति और शांति से भर जाता है। प्रसिद्धि की तलाश की तरह, आडंबर अहंकार और परिणामी अहंकार को बढ़ावा देता है, साथ ही स्वयं *(नफ्स) के प्रति जुनून* और इसकी कमियों के प्रति अंधापन इस प्रकार आत्म-सुधार की सभी संभावनाओं को मारता है और चीजों को बेहतर के लिए बदल देता है। आडंबर सभी मामलों में ईमानदारी को हटा देता है, यहां तक कि अच्छे काम

करने से संबंधित मामलों में भी, इस प्रकार किसी के अच्छे कार्यों और कर्मों के परिणामस्वरूप उसमें पैदा होने वाले किसी भी प्रकाश के दिल को खाली कर देता है। ग़ज़ाली की इस पुस्तक की सामग्री यहाँ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत की गई है [15]:

आडंबर की निंदा

आडंबर [या दिखावा या दिखावा करना] [ईश्वरीय कानून में] निषिद्ध है और ऐसा करने वाला व्यक्ति ईश्वरीय नाराजगी के योग्य है। भगवान कहते हैं [ईमानदार सेवकों का हवाला देते हुए जो खाली दिखावे से रहित हैं और दिखावा करते हैं]:

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ ٱللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَآءً وَلَا شُكُورًا

"हम आपको केवल भगवान के चेहरे (ईश्वरीय स्वीकृति, निकटता और अंतरंगता के लिए रूपक) के लिए भोजन परोसते हैं, न तो इसके प्रतिफल की इच्छा रखते हैं और न ही धन्यवाद [किसी से]। (कुरान, अध्याय 76, श्लोक 9)

فَمَن كَانَ يَرْجُوا۟ لِقَآءَ رَبِّهِۦ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَٰلِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِۦٓ أَحَدًۢا

"जो कोई भी अपने प्रभु से मिलने की आशा करता है, उसे धार्मिक कर्म करने चाहिए और परमेश्वर की पूजा में किसी भी भागीदार को नहीं बताना चाहिए (सृष्टिओं की खुशी, अनुमोदन और प्रशंसा की तलाश के लिए कुछ भी करना उन्हें ईश्वर की पूजा में शामिल करने और उन्हें ईश्वर के स्तर पर लाने के समान है)। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 110)

एक व्यक्ति ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से पूछा: "हे ईश्वर के दूत! कौन सी कार्रवाई बचाव है?" उन्होंने जवाब दिया: "एक सेवक [भगवान के] को भगवान की आज्ञाकारिता में ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिसका उद्देश्य लोग हैं [या कुछ भी जो उन्हें उनसे प्रशंसा, प्रशंसा, धन्यवाद, प्रशंसा, मौद्रिक या भौतिक लाभ, प्रतिष्ठा, रियायतें आदि प्राप्त करने के संदर्भ में पेश करना है]"। (द्वारा सुनाई गई अब्दुल्ला बिन अब्बास के अधिकार पर *हदीस* संग्रह *हकीम* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यीशु ने कहा: "जब तुम किसी दिन उपवास करते हो, तो अपने सिर (खोपड़ी) और दाढ़ी पर [बाल] तेल लगाओ और अपने चिकने हाथ को अपने होठों पर रखो ताकि लोग ध्यान न दें कि आप उपवास कर रहे हैं [जैसे सूखे होंठ उपवास का संकेत है]। जब आप अपने दाहिने हाथ से [दान में] देते हैं तो इस तरह से दें कि आपके बाएं हाथ को भी इसका पता न चले। जब आप प्रार्थना करते हैं, तो अपने दरवाजे पर एक पर्दा लगा दें [ताकि कोई भी नोटिस न करे कि आप प्रार्थना कर रहे हैं क्योंकि प्रार्थना का उद्देश्य परमेश्वर की आराधना करना है और लोगों की प्रशंसा और प्रशंसा अर्जित करने के लिए इसका सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं करना है]। भगवान प्रशंसा वितरित करते हैं क्योंकि वह जीविका [मनुष्यों सहित अपनी रचनाओं को] वितरित करते हैं। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لا يقبل اللّٰه عزّ وجلّ عملا فيه مثقال ذرّة من رياء

"भगवान एक ऐसे काम को स्वीकार नहीं करता है जिसमें एक कण के लायक दिखावा है"।

एक भविष्यसूचक कथन में कहा गया है कि न्याय के दिन, जब भगवान की छाया के अलावा कोई छाया नहीं होगी, तो उन लोगों में जो दिव्य सिंहासन की छाया में जगह पाएंगे, वे वही होंगे जिन्होंने दाहिने हाथ से दान में दिया था [इस तरह से] ताकि बाएं हाथ को इसके बारे में पता भी न चले। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* अबू हुरैरा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* को इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])। एक अन्य हदीस (भविष्यद्वाणी कथन) के अनुसार, एक गुप्त [धार्मिक] कार्य में सार्वजनिक रूप से किए गए [धार्मिक] कार्य की तुलना में सत्तर गुना अधिक उत्कृष्टता होती है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू* दर्दा के अधिकार पर बयाकी [भगवान उनसे प्रसन्न हों])। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: "कयामत के दिन, एक दिखावटी व्यक्ति को बुलाया जाएगा: 'आपके [अच्छे] काम बर्बाद हो गए हैं और आपका दिव्य प्रतिफल समाप्त हो गया है। जाओ और उन लोगों से अपने कर्मों का प्रतिफल प्राप्त करो जिनके लिए तुमने उन्हें [पहली जगह में] किया था। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अद-दुनिया* जबल अल-याहसाबी के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: "ईश्वर ने पृथ्वी को बनाया, फिर वह कांपने लगी और उस पर सब कुछ के साथ हिलने लगी। तब परमेश्वर ने पहाड़ों की रचना की और उन्हें भूमि पर खूंटियों के रूप में बनाया [इसे स्थिर करने के लिए]। स्वर्गदूतों ने एक दूसरे से कहा कि भगवान ने पहाड़ों से कठिन कुछ भी नहीं बनाया है। तब परमेश्वर ने लोहे की रचना की जो पहाड़ों को काटता है। फिर उसने आग पैदा की जिसने लोहे को पिघला दिया। फिर पानी की आज्ञा दी गई जिससे आग बुझ गई। तब हवा को आज्ञा दी गई, और इसने पानी को उल्टा कर दिया। बाद में स्वर्गदूतों की राय बदल गई, और उन्होंने परमेश्वर से पूछने के बारे में सोचा। उन्होंने पूछा: 'आपने अपनी रचनाओं में सबसे कठिन काम क्या बनाया है?' उसने उत्तर दिया, "मैंने आदम के पुत्र (अर्थात् मनुष्यों) के हृदय से अधिक कठोर कुछ भी नहीं किया है। जब कोई दाहिने हाथ से दान देता है, तो वह इसे अपने बाएं हाथ से छुपाकर रखता है (अर्थात, यह सभी स्तरों के आडंबर से बचने के लिए पूरी गोपनीयता के साथ किया जाता है और इसके लिए ईश्वर के प्रति उच्च

स्तर की ईमानदारी की आवश्यकता होती है जो आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए एक बहादुर प्रयास के साथ आती है)। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *तिरमिज़ी* अनस के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

अब्दुल्लाह बिन मुबारक (ईश्वर की दया उन पर बनी रहे) ने खालिद बिन मदान (ईश्वर की दया उन पर बनी रहे) से सुनाते हुए कहा कि उन्होंने मुअद बिन जबल से अनुरोध किया - एक महान भविष्यसूचक साथी (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) - उन्हें एक *हदीस* (पैगंबर मुहम्मद की एक परंपरा [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो]) सुनाएं, जिसे उन्होंने अपनी कठिनाई और गंभीरता के कारण प्रतिदिन याद किया और पूर्वाभ्यास किया। मुआध (भगवान उससे प्रसन्न हों) ऐसा करने के लिए सहमत हो गए, लेकिन वह बहुत देर तक रोता रहा। फिर उन्होंने कहा:

"मैं पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मिलने के लिए कितनी उत्सुकता से तरसता हूं! एक बार मैं पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था। वह ऊंट की सवारी कर रहा था और वह मुझे अपने पीछे बैठने के लिए ले गया। जब हम आगे बढ़े, तो पैगंबर ने आकाश की ओर देखा और कहा: 'सभी प्रशंसा परमेश्वर के लिए है जो अपने प्राणियों को आदेश देता है जैसा कि वह उचित समझता है'। फिर मेरी ओर मुड़कर उसने कहा: 'मैं तुम्हें कुछ बता रहा हूं, अगर तुम्हें यह याद है, तो इससे तुम्हें फायदा होगा, लेकिन अगर तुम इसे भूल जाओगे तो तुम्हारे पास परम परमेश्वर के सामने कोई तर्क नहीं होगा। हे मुआद! आकाश को बनाने से पहले, परम परमेश्वर ने सात स्वर्गदूतों को बनाया, जो हर स्वर्ग के लिए एक और द्वार के आयामों के अनुसार, आकाश के प्रत्येक द्वार पर एक स्वर्गदूत को एक रक्षक के रूप में नियुक्त किया। जब दो देवदूत *'किरमन कतीबीन* (दो स्वर्गदूत जो हर इंसान के दो कंधों पर होते हैं और अपने सभी कर्मों को दर्ज करते हैं, चाहे वह अच्छा हो या बुरा) सेवकों के कर्मों के साथ उठते हैं; उनमें सूर्य के प्रकाश के समान प्रकाश होता है। जब वे पहले स्वर्ग के द्वार पर पहुंचते हैं, तो वहां पहरेदार के रूप में खड़ा देवदूत 'किरमन *कतीबीन* (हर इंसान के संरक्षक देवदूत) से सेवक [भगवान के] (यानी, वह इंसान जिसके कार्यों को भगवान के पास ले जाया जा रहा है) के चेहरे पर काम करने के लिए कहता है। देवदूत कहता है: मैं 'चुगली' का दूत हूं। मेरे प्रभु, परमेश्वर ने मुझे आज्ञा दी है कि मुझे एक पिट्ठे के काम को ऊपर नहीं जाने देना चाहिए।

'कीरामन कटीबीन फिर से दूसरे स्वर्ग पर चढ़ती है, नौकर के कुछ और कर्मों के साथ जो धूप की तरह चमकते हैं। देवदूत उन्हें वहीं रोकता है और उन्हें नौकर के चेहरे पर काम करने के लिए कहता है, क्योंकि इस कर्म से किसी का इरादा सांसारिक लाभ अर्जित करना था। [स्वर्गदूत उनसे कहता है:] मेरे परमेश्वर ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं उस व्यक्ति के कार्य को स्वीकार न करूँ जिसने उन्हें परमेश्वर के अलावा किसी और के लिए किया है। इसके बाद देवदूत शाम *तक ऐसे व्यक्ति पर अपना 'लाना'* (अरबी शब्द 'लाना' का अर्थ है भगवान से अपने सेवक से अपनी दया को रोकने के लिए आमंत्रित करना) भेजते हैं।

तब स्वर्गदूत सेवक के अन्य [अच्छे] कर्मों जैसे भिक्षादान, उपवास और अन्य अच्छे कर्मों के साथ उठते हैं जिन्हें वे बहुत पुण्य और मूल्यवान मानते हैं। लेकिन जब वे तीसरे स्वर्ग पर पहुंचते हैं, तो रखवाली करने वाला देवदूत उन्हें रोकता है और उन्हें कर्ता के चेहरे पर कर्मों को थोपने के लिए कहता है। [रखवाली करने वाला] देवदूत कहता है कि वह 'गर्व' का दूत है। उसे उसके रब द्वारा आज्ञा दी गई है कि वह कर्मों को ऊपर न जाने दे, जैसा कि कर्ता चाहता था, कर्मों के माध्यम से, अन्य लोगों पर अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए [गर्व और अहंकार के कारण]।

'कीरामन कतीबीन फिर से इस सेवक [भगवान के] कुछ और [अच्छे] कर्मों के साथ उठती है जो सितारों की तरह चमकते हैं। इनमें प्रार्थना, '*हज* (या तीर्थयात्रा), '*तस्बीह* (भगवान का स्मरण और महिमा), उपवास आदि जैसे सुंदर कार्य शामिल हैं। जब वे चौथे आसमान पर पहुँचते हैं, तो रखवाली करने वाला देवदूत उन्हें रोकता है और उन्हें कर्ता के चेहरे पर कर्मों को थोपने के लिए कहता है। स्वर्गदूत उनसे कहता है: मैं 'आत्म-अभिमान' का दूत हूं और मुझे मेरे रब द्वारा आज्ञा दी गई है कि कर्मों को [भगवान के पास] ऊपर न चढ़ने दें क्योंकि कर्ता ने आत्म-दंभ के साथ अपने कर्मों को मिलाया है।

फिर देवदूत दुल्हन की तरह किसी के अन्य धार्मिक कार्यों को अलंकृत करते हैं जिसमें 'हज' (या तीर्थयात्रा), ईश्वर के मार्ग में प्रयास करना आदि शामिल हैं, जो सूर्य की तरह चमकते हैं। पांचवें आसमान पर ले जाते हैं। पहरा देने वाला देवदूत [पांचवें स्वर्ग के द्वार पर] उन्हें यह कहते हुए रोकता है: मैं 'ईर्ष्या' का दूत हूं। कर्ता उन लोगों से ईर्ष्या करता रहता है जिन्हें परमेश्वर ने अपनी दया से उन्हें अपना इनाम दिया है। यह व्यक्ति परमेश्वर के उदार अनुदानों से प्रसन्न नहीं है [अपने साथी मनुष्यों को]। मेरे रब ने मुझे आज्ञा दी है कि किसी के कर्मों को ऊपर न जाने दूं।

फिर देवदूत अपने कर्मों जैसे स्नान, पूर्ण शुद्धि, प्रार्थना, उपवास, '*हज*' (या तीर्थयात्रा) आदि के साथ छठे स्वर्ग पर जाते हैं। वहां तैनात रक्षक देवदूत, उन्हें यह कहते हुए रोकता है: मैं 'दया' का दूत हूं। नौकर के मुंह पर कर्मों को थोप दें क्योंकि इस व्यक्ति ने कभी किसी पर दया नहीं दिखाई है। दूसरों को परेशानी और दुर्भाग्य में देखकर प्रसन्न होता था। मेरे रब ने मुझे आज्ञा दी है कि मुझे किसी के कर्मों को ऊपर नहीं उठने देना चाहिए [जो इस अपराध का दोषी है]।

इसके बाद, *'कीरामन कतीबीन* इस व्यक्ति के कुछ और कार्यों के साथ सातवें आसमान पर चढ़ती है जिसमें दान, प्रार्थना, उपवास, ईश्वर के मार्ग में प्रयास, '*तकवा*' (पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय) आदि शामिल हैं। ये कर्म गड़गड़ाहट और बिजली की तरह तेज आवाज निकालते हैं। सातवें आसमान पर

फरिश्ता कहता है: मैं 'प्रसिद्धि और दिखावा' का दूत हूं। इस व्यक्ति का इरादा 'उलेमा' (विद्वानों) और पद और गरिमा के लोगों की कंपनी और सभाओं में घूमने के अपने कर्मों के माध्यम से प्रसिद्धि अर्जित करने का है। मेरे प्रभु ने मुझे आदेश दिया है कि मैं इस व्यक्ति के कर्मों को ऊपर न जाने दूं।

इस प्रकार, एक कार्य जो विशुद्ध रूप से महान ईश्वर के लिए नहीं किया गया है*, वह 'रिया'* (दूसरों को प्रभावित करने के लिए किए गए दिखावा, आडंबर या कर्म) है और वह ऐसे कर्मों को स्वीकार नहीं करता है। तब देवदूत अपने अच्छे कार्यों जैसे प्रार्थना, उपवास, '*जकात* (अनिवार्य गरीब-देय या दान), '*हज*' (तीर्थयात्रा), '*उमरा*' (मिनी तीर्थयात्रा), सौहार्दपूर्ण चरित्र, मौन, ईश्वर का स्मरण आदि के साथ उठते हैं। सात स्वर्गों के स्वर्गदूत उनके साथ विदा करने के लिए तब तक जाते हैं जब तक कि वे दिव्य दरबार तक नहीं पहुंच जाते जहां सभी पर्दे हटा दिए जाते हैं, और वे परमेश्वर के सामने गवाही देते हैं कि इस सेवक के कार्य विशेष रूप से परमेश्वर के लिए किए जाते हैं।

इस समय, महान परमेश्वर कहेगा: हे स्वर्गदूत [बाहर से] दासों के कामों की देखभाल करते हैं, परन्तु मैं उनके दिलों की देखभाल करता हूं। मैं जानता हूँ कि इन कर्मों के द्वारा, किसी ने मेरी प्रसन्नता की खोज करने का इरादा नहीं किया था, न ही किसी ने उन्हें केवल मेरे लिए किया था। मुझे पता है कि किसी के कर्मों से वास्तव में क्या इरादा होता है। मेरा '*लाना*' (मेरी दया से वंचित) ऐसे व्यक्ति पर हो, जैसे किसी ने आपको और लोगों को भी धोखा दिया है। हालाँकि, कोई मुझे धोखा नहीं दे सकता है क्योंकि मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि दिलों के अंतरतम अवकाश क्या छिपाते हैं। कोई भी मुझसे छिपा नहीं रह सकता है और न ही मेरी पकड़ से बच सकता है, चाहे कोई मुझसे दूर रहने की कितनी भी कोशिश कर सकता है। मुझे इस बात की पूरी जानकारी है कि अतीत में क्या हुआ है और भविष्य में क्या होगा। मेरा ज्ञान उन सभी को समाहित करता है जो मर चुके हैं और जो अभी आने वाले हैं। मैं उनके पूरे विवरण के साथ सभी रहस्यों से पूरी तरह वाकिफ हूं। कोई भी अपने कर्मों से मुझे धोखा नहीं दे सकता। मेरा सेवक अज्ञानियों को धोखा दे सकता है, लेकिन मुझे धोखा नहीं दे सकता, क्योंकि मैं अदृश्य का ज्ञाता हूं। इसलिए, मैं ऐसे व्यक्ति पर अपना '*लाना* (मेरी दया से वंचित) भेजता हूं। सात [रखवाली] स्वर्गदूत [जो सात स्वर्गों के द्वारों की रक्षा करते हैं] और तीन हजार स्वर्गदूत, सभी एक पर अपना 'लाना' (भगवान की दया से वंचित करने के लिए भगवान का आह्वान करते हुए) भेजते हैं। तब स्वर्गवासी कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति पर उनका '*लाना*' हो और उन सभी का जो ऐसे *धोखेबाज पर* अपना 'लाना' भेजते हैं।

इन सभी विवरणों को सुनने के बाद, मैं (मुआध (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) जो पैगंबर से सुनाते थे) फूट-फूट कर रोने लगे और कहा: 'हे ईश्वर के दूत! इस आपदा से छुटकारा पाने का उपाय क्या है?' पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, "हे मुआद! अपने भविष्यवक्ता की पूरी आस्था और दृढ़ विश्वास के साथ आज्ञा का पालन करो। मुआद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "आप ईश्वर के दूत हैं और मैं मुआध

बिन जबल हूं। मुझे उद्धार कैसे मिल सकता है?' ईश्वर के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: 'हे मुआद! यदि आपके कर्म सही नहीं हैं, तो अपनी जीभ को दूसरों के बारे में बुरा बोलने और दूसरों को अपमानित करने से बचाएं, विशेष रूप से अपने भाइयों और '*हफ़ाज़* (जिन्होंने पूरे कुरान को दिल से बांध दिया है)। अपने भाइयों और अन्य लोगों के मामलों में हस्तक्षेप न करें। अपने स्वयं के दुष्ट को कम करने दें (*नफ्स*), दूसरों का अनादर करने से बचें। अपने मुस्लिम भाइयों के बारे में बुरा बोलकर अपनी प्रशंसा न करें। कभी भी दूसरों को नीचा दिखाकर श्रेष्ठता स्थापित करने के बारे में नहीं सोचो। प्रसिद्धि अर्जित करने के लिए आडंबर का सहारा न लें। अपने आप को दुनिया के मामलों में इतनी उत्सुकता से व्यस्त न करें कि परलोक के मामलों की पूरी तरह से उपेक्षा करें। अगर कोई आपके साथ बैठा है, तो तीसरे व्यक्ति से गुप्त रूप से बात न करें [या फुसफुसाएं]। लोगों के बीच अपनी श्रेष्ठता को दूसरों के सामने व्यक्त न करें, ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म संसार में और परलोक में नष्ट हो जाएँ। अपनी सभाओं में बेशर्मी (अश्लीलता) और अश्लीलता के विषयों पर बात करने से बचें, ऐसा न हो कि लोग आपके दुर्व्यवहार के कारण तुमसे बच जाएं। अपनी जीभ से दूसरों के सम्मान को चोट न पहुंचाएं, ऐसा न हो कि नरक के कुत्ते आपको टुकड़े-टुकड़े कर दें। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने पवित्र कुरान में कहा है:

وَٱلنَّـٰشِطَـٰتِ نَشۡطًا ﴿٢﴾

और जब वे हड्डियों से मांस को फाड़ देते हैं। (कुरान, अध्याय 79, श्लोक 2)

फिर मैंने कहा, "हे ईश्वर के दूत! इन सभी आदेशों पर अमल करने की क्षमता किसके पास है?' पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : 'उस सेवक के लिए कर्म आसान है जिसके लिए ईश्वर आराम प्रदान करता है। दूसरों के लिए वह नापसंद करते हैं जो आप अपने लिए नापसंद करते हैं [और दूसरों के लिए वह पसंद करते हैं जो आप अपने लिए पसंद करते हैं। इस तरह से पूरी ईमानदारी से किए गए कार्य आपको आपका उद्धार दिलाएंगे]"'। (हाफ़िज़ इराकी, भविष्यद्वाणी कथनों के एक महान स्वामी [हदीस*]* जिन्होंने अपने प्रसारण की पूरी श्रृंखला के साथ लाख-लाख भविष्यसूचक कथनों को याद किया है, ने किया है *ग़ज़ाली के* "इह्या उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार"* में मौजूद सभी हदीसों का *हदीस* प्रमाणीकरण और इस भविष्यसूचक परंपरा के स्रोत संदर्भ को "*किताब अज़-ज़ुहद ली इब्न अल-मुबारक*" या "इब्न अल-मुबारक द्वारा बेस डिज़ायर से परहेज की पुस्तक" और "*इब्न अल-जावज़ी फी अल-मौदुआत*" के रूप में वर्णित किया गया है।

खालिद बिन मदान (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा कि मुअद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने पवित्र कुरान का उतना पाठ नहीं किया जितना उन्होंने इस *हदीस* (या भविष्यद्वाणी का वर्णन) पढ़ा। वह अक्सर *अपनी सभाओं में* इस हदीस के बारे में बात करते थे।

परंपराएं: यह वर्णित है कि उमर (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने एक व्यक्ति को अपनी गर्दन नीचे झुकते हुए देखा। उसने उससे कहा: "ऐ [झुके हुए] गर्दन वाले! अपनी गर्दन ऊपर उठाएं। विनम्रता गर्दन में नहीं बल्कि दिल में है। अबू उमामा अल-बहिली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने एक मस्जिद में किसी को साष्टांग प्रणाम की स्थिति में देखकर [भगवान के सामने दासत्व, आवश्यकता और विनम्रता के संकेत के रूप में] कहा: "यह कितना अच्छा होता यदि आपने अपने घर में ऐसा किया होता [जहां आपको ऐसा करते देखने वाला कोई नहीं था और इसलिए, तुम परमेश्वर के सामने सच्ची ईमानदारी रखतेओगे]"। अली (भगवान उससे प्रसन्न हों) ने कहा: "दिखावा करने वाले व्यक्ति के तीन लक्षण होते हैं - जब कोई अकेला होता है, तो वह आलसी हो जाता है; लोगों को देखने के बाद व्यक्ति सक्रिय हो जाता है; जब कोई किसी की प्रशंसा करता है, तो वह अधिक (धार्मिक) कर्म करता है, यदि कोई उसका बुरा मुंह करता है, तो वह अच्छे कर्मों को कम करता है। एक व्यक्ति ने सईद इब्न अल-मुसायब (ईश्वर उस पर दया करे) से पूछा: "हम में से एक अच्छा काम करने के बाद ईश्वरीय प्रतिफल और प्रशंसा [लोगों से] चाहता है। क्या किसी की कार्रवाई [जैसे कि यह एक] सही है? उसने उससे पूछा: "क्या आप अपने आप पर भगवान की नाराजगी चाहते हैं? उस आदमी ने नकारात्मक जवाब दिया। उन्होंने उत्तर दिया: "जब आप जो भी अच्छे काम करते हैं, तो उन्हें भगवान के लिए [विशुद्ध और अनन्य रूप से] करें और उसमें ईमानदार रहें। क़तादा (भगवान उससे प्रसन्न हो) ने कहा: "जब एक नौकर दिखावा करता है तो भगवान कहते हैं: 'मेरे दास को देखो! ऐसा कोई मेरे साथ मजाक कर रहा है!'" इब्राहिम बिन अधम (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा: "प्रसिद्धि के साधक को ईश्वर में पूर्ण विश्वास नहीं है"।

आडंबर की वास्तविकता और उसके घटित होने के मामले

आडंबर का अर्थ है अच्छी आदतों और प्रयासों को प्रदर्शित करना, आराधना के माध्यम से लोगों के दिलों में प्रशंसा और प्रतिष्ठा की तलाश करना। इस संबंध में, चार चीजें हैं। एक दिखावटी व्यक्ति या उपासक है; दूसरा वह व्यक्ति है जो प्रभावित हो रहा है, अर्थात, जिसके लिए आडंबर किया जाता है; तीसरे वे लक्षण हैं जिनमें आडंबर किया जाता है; चौथा आडंबर ही है।

जिन चीजों में आडंबर किया जाता है: एक दिखावटी व्यक्ति पांच चीजों में दिखावा करता है और उनके माध्यम से लोगों के बीच प्रसिद्धि चाहता है: शरीर, रूप, शब्द, कर्म, और अनुयायी और बाहरी वस्तुएं। सांसारिकता में डूबे हुए लोग इन पांच चीजों के माध्यम से प्रसिद्धि और रैंक की तलाश करते हैं।

अपने विश्वास में शरीर के साथ आडंबर: शरीर के साथ आडंबर का तरीका यह है कि व्यक्ति शरीर पर कमजोरी और पीलापन अपनाता है ताकि लोग सोच सकें कि यह व्यक्ति धार्मिक मामलों में बहुत मेहनत करता है और परलोक का भय किसी पर हावी है। कमजोरी कम खाने के लिए तर्क देती है और पीलापन ईश्वरीय पूजा के लिए रात में जागने का तर्क देता है। इसी तरह, बिखरे हुए बाल धर्म की देखभाल और चिंता के लिए तर्क देते हैं और यह कि व्यक्ति हर समय पूजा में व्यस्त रहता है और इसलिए उसके पास बालों में कंघी करने का भी समय नहीं होता है। जब इस प्रकार के संकेत [सार्वजनिक रूप से] देखे जाते हैं, तो लोग किसी की पवित्रता के बारे में बहस करते हैं और इससे निम्न स्व (*नफ्स*) खुश होते हैं। इसी तरह आवाज को कम रखना, आंखों के नीचे काले घेरे होना, होठों का सूखापन आदि हैं। ये इंगित करते हैं कि यह व्यक्ति हर समय उपवास करता है, परमेश्वर के भय के कारण आवाज धीमी हो गई है या भूख इसके कारण बन रही है। इसीलिए, यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) कहा करते थे, "जब तुम में से कोई उपवास करो, तो तुम्हें बालों पर तेल लगाना चाहिए, उसमें कंघी करनी चाहिए, आंखों में सुरमा डालना चाहिए, और होंठों को चिकने हाथ से रगड़ना चाहिए ताकि लोग आपको उपवास के रूप में न समझें [जैसा कि सूखे होंठ उपवास का संकेत देते हैं]"। इसी तरह की सलाह पैगंबर साथी अबू हुरैरा (भगवान उनसे प्रसन्न हो) से सुनाई गई है। इन पवित्र पुरुषों ने आडंबर के पाप से बचने के लिए लोगों को इन तरीकों की ओर निर्देशित किया। शैतान इन्हीं रास्तों के ज़रिए [परमेश्वर के] उपासक सेवकों को निशाना बनाता है। धार्मिक और आध्यात्मिक लोग इस तरह से अपने शरीर के माध्यम से आडंबर करते हैं और सांसारिक लोग स्वस्थ शरीर, बाहरी सुंदरता, लंबा, संतुलित अंगों और सुंदर त्वचा के माध्यम से आडंबर करते हैं।

दिखावा और पहनावे के साथ आडंबर: बालों को अस्त-व्यस्त रखना, मूंछों को मुंडवाना [या ट्रिमिंग] करना [धार्मिक आदेश के अनुसार], सिर नीचे करके चलना, धीमी गति से चलना [शिष्टता और गरिमा के साथ], माथे पर साष्टांग प्रणाम का निशान रखना, खुरदरे और मोटे कपड़े पहनना, ऊनी वस्त्र पहनना, लंबी शर्ट पहनना जो टखनों तक जाती है, आस्तीन को छोटा रखना, कपड़ों को गंदा और फटे हुए रखते हुए, ये सभी कार्य दिखावटी के लिए किए जाते हैं ताकि लोग सोचें कि कोई भविष्यद्वाणी के मार्ग (सुन्नत*)* और परमेश्वर के धर्मी सेवकों का अनुयायी है। इसमें सूफियों (आध्यात्मिक यात्री) से मिलते-जुलते पैच वाले और नीले रंग के कपड़े पहनना भी शामिल है , भले ही कोई अच्छी तरह से जानता हो कि वह आध्यात्मिक पथ की वास्तविकताओं से बहुत कुछ नहीं जानता है। एक लंबी शर्ट के चारों ओर एक शॉल लपेटना और उसके किनारे को आंख के ऊपर लटकाना भी आडंबर में शामिल है क्योंकि इस रूप के साथ, व्यक्ति ध्यान का केंद्र बन जाएगा और लोग किसी की सावधानी को प्रशंसा के साथ देखेंगे कि कोई रास्ते की धूल से आंखों को बचाकर रास्ते पर चलता है। यह भी दिखावा है कि एक अज्ञानी विद्वानों (*उलेमा)* की पोशाक पहनता है, उनकी उपस्थिति को सिर्फ इसलिए अपनाता है ताकि लोग एक विद्वान के रूप में सोचें और सम्मान और सम्मान के साथ व्यवहार करें। नतीजा यह है कि, उनमें से लोगों का प्रत्येक समूह [जो पोशाक के साथ दिखावा करता है] अपनी लोकप्रियता और प्रसिद्धि के साथ कम या अधिक से संतुष्ट नहीं होता है, भले ही यह [ईश्वरीय कानून में] अनुमेय हो। यह धार्मिक विचारधारा वाले लोगों की स्थिति है।

सांसारिक लोग महंगे कपड़े, अच्छी सवारी, बढ़िया शॉल, शर्ट, गाउन और महंगे सामान के माध्यम से आडंबर करते हैं। यानि घर में साधारण कपड़े पहनते हैं, लेकिन घर से बाहर निकलते हैं तो बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनकर निकलते हैं, धूमधाम से बाहर निकलते हैं ताकि लोग उन्हें अमीर समझें।

आडंबर के साथ आडंबर: धर्म या आध्यात्मिक मार्ग के लोग सलाह और उपदेश को अपने शौक के रूप में अपनाकर आडंबर करते हैं। वे ज्ञान और विवेक की चीजों को गढ़ते हैं, परंपराओं को याद करते हैं [संतों और धार्मिक लोगों की] ताकि उनका उपयोग दैनिक बातचीत में किया जा सके ताकि संबोधक अपने प्रभावशाली ज्ञान और पवित्र पूर्ववर्तियों (सलाफ सलीहीन) की राज्यों और परंपराओं के प्रति अपने व्यापक लगाव को स्वीकार कर सके। सामान्य सभाओं में भगवान की याद करते हैं, होठों को हिलाते हैं ताकि मनुष्य समझें कि हम बहुत पवित्र हैं, हर पल दिव्य पूजा में व्यस्त हैं। वे अच्छाई (धार्मिकता) का उपदेश देते हैं और बुराई का निषेध करते हैं और बुराई पर अपना आक्रोश व्यक्त करते हैं, लोगों को पाप में लिप्त देखकर अपना अपार दर्द व्यक्त करते हैं, जब वे बात करते हैं तो अपनी आवाज बहुत कम कर देते हैं, कुरान को छूने और उत्तेजक तरीके से पढ़ते हैं ताकि उनका भय और दुःख स्पष्ट हो जाए, भविष्यवाणियों के कथनों को याद करने और इसके विद्वानों से मिलने का दावा करते हैं, भविष्यद्वाणी की परंपराओं के कथाकारों के दरवाजे पर दस्तक देते हैं और यदि कोई उन्हें सुनाता है, तो वे इसमें दोष ढूंढते हैं और तुरंत इसकी प्रामाणिकता या इसकी कमी के बारे में एक राय बनाते हैं, ताकि लोग इस क्षेत्र के बारे में उनके ज्ञान से प्रभावित हों, प्रतिद्वंद्वी को वश में करने के लिए लंबे भाषण दें, और अपने ज्ञान को व्यक्त करने के लिए कुरान और भविष्यद्वाणी परंपराओं का संदर्भ दें। धार्मिक लोगों के लिए बात करने के माध्यम से असंख्य प्रकार के आडंबर हैं। सांसारिक लोग कविता और उदाहरणों को याद करके दिखावा करते हैं, शब्दों में प्रवाह और वाक्पटुता का विशेष ध्यान रखते हैं, संपन्न लोगों को प्रभावित करने के लिए अद्वितीय वाक्यों और विस्मयकारी शब्दों को याद करते हैं, और लोगों के दिलों को अपनी ओर झुकाने के लिए दोस्ती का इजहार करते हैं।

कार्यों के साथ आडम्बर: [कार्यों में आडंबर कई तरीकों से होता है, अगर जानबूझकर किया जाए, जैसे] प्रार्थना करने वाले व्यक्ति द्वारा लंबे समय तक प्रार्थना में खड़े रहना, झुकना और साष्टांग दंडवत करना, गर्दन झुकाना, [पूजा के अलावा अन्य चीजों पर ध्यान देना] का त्याग करना, शांति और गरिमा का प्रदर्शन करना, हाथ और पैर एक साथ रखना और प्रार्थना में नम्रता और भोग दिखाने वाले कार्य करना, आदि। इन दिखावटी कार्यों को करना प्रार्थनाओं के अलावा उपवास, तीर्थयात्रा, अनिवार्य दान (जकत) और प्रयास [आंतरिक और बाहरी दोनों] में हो सकता है। इसी तरह, चलने और सिर नीचे रखने में विनम्रता का कार्य, बातचीत में शांति और गरिमा, और उनके जैसे समान कार्यों में दिखावा हो सकता है। यह इस हद तक है कि एक आडंबरपूर्ण व्यक्ति अपनी जरूरतों के लिए तेजी से आगे बढ़ता है, लेकिन जब कोई धार्मिक व्यक्ति सामने आता है, तो वह अपनी गति बदल देता है और धीरे-धीरे चलना शुरू कर देता है, सिर को तब तक झुकाता है जब तक कि ठुड्डी छाती को न छू ले, धीरे-धीरे कदम उठाता है ताकि लोग उसे

जल्दबाजी और अमर्यादित व्यक्ति न कहें। इसलिए, जब वह [धार्मिक] व्यक्ति दृष्टि से गायब हो जाता है, तो वह फिर से जल्दबाजी में चलना शुरू कर देता है और जब कोई किसी को देखता है, तो वह फिर से विनम्र हो जाता है। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर को याद करके नम्रता नहीं अपनाता है, बल्कि ऐसा केवल साथी इंसानों को प्रभावित करने के लिए करता है, ताकि वे परमेश्वर के पवित्र सेवकों में से एक को शामिल कर सकें। कुछ अपेक्षाकृत सावधान लोग एकांत में चलते हैं जैसे वे दूसरों के सामने चलते हैं। उन्हें शर्म आती है कि सार्वजनिक रूप से उनकी गति उस गति के विपरीत होती है जब वे अकेले होते हैं ताकि उन्हें दूसरों के सामने अपनी गति बदलने की आवश्यकता न पड़े। उन्हें लगता है कि ऐसा करने से वे आडंबर से बचेंगे लेकिन उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि इस तरह उनका आडंबर बढ़ेगा। [ऐसा इसलिए है क्योंकि,] पहले वे सिर्फ लोगों के सामने दिखावा करते थे, अब वे इसे निजी में भी कर रहे हैं। सांसारिक लोगों का कर्मों के माध्यम से आडंबर यह है कि वे घमंड के साथ फूले हुए चलते हैं, जब वे चलते हैं तो अपने हाथों को लगातार हिलाते हैं, और अपने कंधों को कूदते हैं। वे अपनी प्रतिष्ठा और भव्यता दिखाने के लिए ऐसा करते हैं।

मित्रों और परिचितों के साथ आडंबर: किसी विद्वान से मिलने की इच्छा रखना ताकि लोग कहें कि यह व्यक्ति इतना महत्वपूर्ण है कि अमुक विद्वान या अमुक उपासक किसी को जानता है और मिलने आता है या किसी को धर्म में उच्च दर्जा प्राप्त है, इसलिए लोग आते हैं और किसी से मिलने का सम्मान प्राप्त करते हैं। कुछ लोग किसी राजा (राज्य प्राधिकरण) या उच्च पदस्थ शाही (सरकारी) अधिकारी से मिलने के इच्छुक होते हैं ताकि आम जनता धर्म में किसी की महानता को स्वीकार कर सके। कुछ लोग यह सिद्ध करने के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शकों (*शुयुख)* का भरपूर उल्लेख करते हैं कि वे उनमें से बहुत से लोगों से मिले हैं और उनसे आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किए हैं । वे उनके साथ अपनी बैठकों और उनसे आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने पर गर्व व्यक्त करते हैं, खासकर जब कोई बहस होती है या किसी विरोधी को नीचा दिखाने की आवश्यकता होती है। उन अवसरों पर, लोग दावा करते हैं कि उन्होंने अमुक विद्वानों को देखा है, अमुकने विद्वानों से सुना है, अमुकने देशों की यात्रा की है, और इतने सारे आध्यात्मिक मार्गदर्शकों और शिक्षकों की सेवा करने से लाभान्वित हुए हैं।

ये पाँच चीज़ें हैं जिनके द्वारा दिखावटी लोग आडंबर का अभ्यास करते हैं और ऐसा करने का उद्देश्य [परमेश्वर की] रचनाओं में सम्मान और स्थान प्राप्त करना है। कुछ लोग अपने बारे में रचनाओं की अच्छी राय से संतुष्ट हो जाते हैं। इसलिए, कई भिक्षु अपने पूजा स्थलों पर जाते हैं और वर्षों तक बाहर नहीं आते हैं। कई उपासक पहाड़ों की चोटियों पर चढ़कर वहां ज्यादा देर तक रुकते हैं और नीचे नहीं उतरते हैं। उनका गायब होना इस विश्वास पर है कि लोग उनके बारे में अच्छी राय रखते हैं। यदि उन्हें पता चलता है कि लोगों की अब उनके बारे में अच्छी राय नहीं है या उनके लिए कुछ अपराध जिम्मेदार ठहराया गया है, तो उनकी आंतरिक शांति नष्ट हो जाती है, और वे अब अपने बारे में अच्छी राय से संतुष्ट नहीं रहते हैं जिस पर वे एकांत अपनाने के लिए भरोसा करते थे। इसके अलावा, उनकी आंतरिक व्याकुलता यह जानने के

बाद भी समाप्त नहीं होती है कि वे परमेश्वर के सामने [उन चीजों से जो उन्हें झूठे तरीके से आरोपित किए गए हैं] दोषमुक्त कर दिए गए हैं, इसके बजाय, उनका आंतरिक उथल-पुथल और दुःख देखने लायक है। वे लोगों के दिलों में अपनी प्रतिष्ठा और रैंक की वापसी के लिए हजारों बहाने बनाते थे। हालांकि उनके पास धन का लालच नहीं है, लेकिन प्रसिद्धि से कोई बच नहीं सकता क्योंकि यह एक बड़ा नुकसान है। प्रसिद्धि एक प्रकार की पूर्णता है जो अब प्राप्त की जाती है, भले ही यह लंबे समय तक चलने वाली न हो, लेकिन चूंकि अधिकांश लोग अज्ञानी हैं, इसलिए प्रसिद्धि के असंख्य साधक दिखाई देते हैं।

बहुत से लोग दिलों में अपनी रैंक से संतुष्ट नहीं होते हैं, इसके बजाय वे चाहते हैं कि दिलों के अलावा अन्य भाषाएँ भी उनकी प्रशंसा और सम्मान करें। कुछ लोग चाहते हैं कि उन्हें दूर-दूर की जगहों पर प्रसिद्धि मिले ताकि लोग उनसे मिलने के लिए लंबी दूरी तय करें। कुछ लोग राजाओं के साथ प्रसिद्धि चाहते हैं ताकि उनकी हिमायत स्वीकार हो जाए, उनकी ज़रूरतें पूरी हों, और आम जनता में उनका सम्मान और विश्वसनीयता हो। कुछ लोग इससे धन कमाना और संचय करना चाहते हैं, भले ही यह अनाथों, गरीबों, बंदोबस्ती (वक्फ) या किसी और की निजी संपत्ति हो। दिखावटी लोगों के सभी समूहों में से, ये [पांच] सबसे खराब समूह हैं जो इन पांच तरीकों से आडंबर का अभ्यास करते हैं।

इस बीमारी के साथ दिल को ठीक करने और दिखावा करने की दवा

अब तक यह स्पष्ट हो गया है कि आडंबर अच्छे कामों को रद्द कर देता है और एक दिखावटी व्यक्ति को परमेश्वर की नाराजगी के योग्य बनाता है। यह एक घातक बीमारी है, इसीलिए, अगर किसी को यह बीमारी हो जाती है, तो इसे दूर करने के लिए दवा और इलाज की आवश्यकता होती है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इसे प्राप्त करने के लिए कितनी भी कठिनाई होनी चाहिए और इसे प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक संघर्ष की आवश्यकता है। दवा की कड़वाहट और तीखापन ठीक होने की गारंटी है। यह एक आध्यात्मिक संघर्ष है जिसकी आवश्यकता हर व्यक्ति को होती है, भले ही वह बच्चा ही क्यों न हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक बच्चा बुद्धि और समझ से वंचित है और वह वही करता है जो वह लोगों को करते हुए देखता है। जब कोई बच्चा लोगों को एक-दूसरे के साथ प्रभाव, दिखावा और कृत्रिमता करते हुए देखता है, तो उसके दिल में प्रभाव, दिखावा और कृत्रिमता का प्यार पैदा होता है [जो सभी आडंबर का हिस्सा हैं] और सभी इंद्रियों को ढक लेता है। इस आदत की विनाशकता तब प्रकट होती है जब व्यक्ति बुद्धि और विवेक प्राप्त कर लेता है लेकिन उस समय तक, यह आदत इतनी दृढ़ता से स्थापित हो जाती है कि गहन आध्यात्मिक संघर्ष (*मुजाहादा*) और अत्यधिक कठिनाई के बिना, इसे मिटाना असंभव है। इसका परिणाम यह है कि हर किसी को इस आध्यात्मिक संघर्ष की आवश्यकता है। शुरुआत में कठिनाइयां होती हैं लेकिन हाल ही में आसानी आती है। इस बीमारी को ठीक करने के दो तरीके हैं। पहला यह है कि

इसके सिद्धांत और कारण जो आडंबर के पेड़ का पोषण करते हैं, उन्हें मिटा दिया जाता है। दूसरा यह है कि आडंबर के खतरे (आक्रामक विचार) दूर हो जाते हैं।

उपचार का पहला उपाय - सिद्धांतों और कारणों का उन्मूलन : यह तरीका तब व्यावहारिक हो जाता है जब सिद्धांत और कारण [आडम्बर के] ज्ञात हो जाते हैं । इस संबंध में, यह याद रखना चाहिए कि आडंबर का आधार [और उत्पत्ति] प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा का प्यार है। यदि इसे विस्तार से समझाया जाए, तो आडंबर के तीन आधार हैं: पहला प्रशंसा का आनंद है, दूसरा है निंदा से अनुभव किए जाने वाले दुःख से घृणा, तीसरा लोगों की संपत्ति के लिए लालच है। ये चीजें आडंबर के कारण हैं और ये आडंबर को फिर से जीवंत करती हैं। कभी-कभी, किसी को प्रशंसा की इच्छा नहीं होती है, लेकिन वह निंदा के दुःख से बचना चाहता है। उदाहरण के लिए, एक कंजूस व्यक्ति कुछ उदार लोगों के बीच फंस जाता है जो परमेश्वर के मार्ग में बढ़ती मात्रा में धन खर्च कर रहे हैं [जैसे कि धर्मार्थ कार्यों में खर्च किया गया पैसा]। ऐसा कंजूस व्यक्ति दान में कुछ पैसा खर्च कर देता था ताकि कंजूस न कहा जाए। ऐसे व्यक्ति में प्रशंसा की इच्छा नहीं थी, बल्कि केवल कंजूसी की बदनामी से बचने की इच्छा थी। एक और उदाहरण एक कायर का होगा जो कुछ बहादुर लोगों के बीच फंस जाता है और बहादुर कहलाने की इच्छा के बिना कायर घोषित होने से बचना चाहता है। इसी तरह, यह वह व्यक्ति है जो कुछ उपासकों में से होता है जो रात में पूजा करने के लिए जागते हैं और रात में प्रार्थना के कुछ चक्र करते हैं ताकि लोग किसी को आलसी न कहें। ऐसा व्यक्ति निंदा से सावधान रहता है और प्रशंसा का इच्छुक नहीं होता है। कभी-कभी, कोई प्रशंसा के आनंद के साथ [खुद को संयमित करने में] धैर्य रख सकता है लेकिन निंदा के दर्द के साथ धैर्य नहीं रख सकता है। इसलिए, कोई भी प्रश्न नहीं पूछता है, भले ही कोई जरूरत हो या बिना ज्ञान के धार्मिक आदेश [फतवा] जारी करता है या भविष्यद्वाणी की परंपराओं [हदीस] के ज्ञान का दावा करता है, भले ही वह कुछ भी नहीं जानता हो, केवल निंदा [या आलोचना] से बचने के लिए। ये ऐसे मामले हैं जो एक दिखावटी व्यक्ति को आडंबर में लिप्त होने के लिए प्रेरित करते हैं।

आडंबर का विशिष्ट इलाज: यह एक निर्विवाद तथ्य है कि मनुष्य किसी चीज़ की इच्छा तभी करता है जब वे उसे लाभदायक और आनंददायक मानते हैं, चाहे लाभ या आनंद तुरंत प्रकट हो या बाद में अपेक्षित हो। लेकिन अगर किसी को यह ज्ञान हो कि उस चीज का लाभ या आनंद अस्थायी है और बाद में वह हानिकारक होगा तो उस चीज की इच्छा को समाप्त करना या उससे बचना मुश्किल नहीं रहता है। उदाहरण के लिए, कोई शहद के स्वाद से परिचित है, लेकिन अगर यह पता चलता है कि यह जहर के साथ मिलाया गया है, तो कोई इसका उपयोग कभी नहीं करेगा। इच्छाओं और झुकावों को मिटाने का आसान तरीका अस्थायी [अल्पकालिक] लाभों की उपेक्षा करना और इसके भविष्य के नुकसान को [अपनी आंखों के सामने] रखना है। यदि यह एक सेवक [ईश्वर, यानी, एक मनुष्य] के ज्ञान की बात आती है और किसी को पता चलता है कि एक दिखावटी व्यक्ति दुनिया में अच्छे कर्म करने की क्षमता से रहित है [जो अनन्त अनन्त जीवन के लिए पूंजी है], और व्यक्ति परलोक में ईश्वर की निकटता से वंचित है, न्याय के

दिन एक दर्दनाक पीड़ा प्राप्त होगी, परमेश्वर की नाराजगी के योग्य के रूप में कहा जाएगा, "पापी" और "धोखेबाज" की उपाधि के साथ बुलाए जाने से सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाएगा, और यह कहकर शर्मिंदा किया जाएगा, "क्या तुम्हें परमेश्वर की आज्ञाकारिता (आराधना) के बदले में सांसारिक धन और संपत्ति अर्जित करने में शर्म नहीं आई? आपने [परमेश्वर के सेवकों को प्रभावित करने के लिए काम करके] और [वास्तव में] परमेश्वर की आराधना के साथ मजाक किया। आप परमेश्वर से दूर होकर [परमेश्वर के] सेवकों (यानी, साथी मनुष्यों) के प्रिय बन गए। आपने उनके लिए खुद को अलंकृत किया और [परिणामस्वरूप] अपने आप को गंदगी से गंदा कर लिया। आपने खुद को परमेश्वर से दूर करके उनकी निकटता पाई। तुमने सेवकों से [कमाई] प्रशंसा अर्जित करने के लिए परमेश्वर की निंदा को महत्वहीन समझा"। जब एक सेवक [भगवान का] इस अपमान के बारे में सोचता है और [अल्पकालिक, अल्पकालिक] सांसारिक लाभों की तुलना परलोक में होने वाले नुकसान से करता है, तो कोई थोड़ा सा भी आडंबर की ओर झुकाव नहीं करेगा। आडंबर के कारण [धर्मी] कर्मों का नुकसान कोई छोटा नुकसान नहीं है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि एक ईमानदार कर्म, अच्छे कर्मों के पैमाने पर भारी पड़ता है, लेकिन जब यह आडंबर के साथ मिश्रित होता है, तो यह पापों में शामिल हो जाता है और पापों के पैमाने को भारी बना देता है। यदि आडंबर से केवल एक पूजा का नुकसान होता है, तो भी यह कम नुकसान नहीं है। यदि मान लीजिए कि संतुलन का पैमाना अच्छे कर्मों के साथ भारी है, फिर भी, एक दिखावटी कार्य किसी को अन्य सभी धार्मिक कर्मों के बावजूद भविष्यद्वक्ताओं, संतों और ज्ञानवादियों की श्रेणी में शामिल करने की अनुमति नहीं देगा।

यह था धर्म में हानि या ईश्वर के मार्ग की व्याख्या, सांसारिक हानि भी कम नहीं है। लोगों के दिलों पर विचार करना [वे जो सोचते हैं] किसी भी मामले में चिंताओं और चिंताओं का कारण है। लोगों की स्वीकृति एक ऐसी सीमा है जिस तक पहुंचना आसान नहीं है। अगर कोई आपकी किसी हरकत से खुश है तो कोई और है जो उसी कर्म से आपसे नाराज है। कुछ लोग दूसरों को परेशान करके प्रसन्न हो सकते हैं। जो ईश्वर (सृष्टिकर्ता) की अस्वीकृति के बजाय सृष्टि की अस्वीकृति को पसंद करता है, वह ईश्वर एक से अप्रसन्न हो जाता है और दूसरों को एक से नाराज कर देता है। तब यह समझ में नहीं आता कि रचनाओं से प्रशंसा का क्या लाभ है? लोग परमेश्वर की अस्वीकृति के बजाय [परमेश्वर के] सेवकों की स्तुति को क्यों पसंद करते हैं, यद्यपि उनकी प्रशंसा न तो किसी की जीविका को बढ़ाती है और न ही इसे कम करती है।

जहाँ तक लोगों के धन और संपत्ति में लालच का सवाल है, तो किसी को यह सोचना चाहिए कि सभी दिलों पर परमेश्वर ने विजय प्राप्त की है और उनके अधीन कर लिया है। उसके पास किसी भी दिल को देने और देने से रोकने के लिए किसी भी दिल को प्रेरित करने की शक्ति है। सभी रचनाएँ ईश्वर की शक्ति के अधीन हैं और भरण-पोषण केवल ईश्वर के हाथ में है। सृष्टि से भरण-पोषण का लालच रखने वाला व्यक्ति अपमान से सुरक्षित नहीं रहता है। यदि कोई उद्देश्यों को प्राप्त कर भी लेता है, तो वह अनुग्रह के बोझ से सुरक्षित नहीं रहता है। परमेश्वर की निकटता को अस्वीकार करना और झूठी आशाओं और खोखले

विचारों के लिए परमेश्वर द्वारा सम्मान प्रदान करना, मूर्खता है। इसके अलावा, यह आवश्यक नहीं है कि कोई अपने लालच के अनुसार प्राप्त करने में सक्षम हो। ज्यादातर समय, एक असफलताओं के साथ मिलता है। अगर कोई सफल भी हो जाता है, तो सफलता का आनंद बहुत अधिक खुशी नहीं देगा, इस एहसान के परिणामस्वरूप अपमान के दर्द की तुलना में जो उससे कहीं अधिक होगा।

लोगों की निंदा का डर भी मूर्खतापूर्ण है। क्या उनकी निंदा के कारण नुकसान में वृद्धि हुई है? नियति के रचयिता ने जो लिखा है, वह होना ही है। निंदा न तो मृत्यु में तेजी लाएगी और न ही भरण-पोषण में देरी करेगी। यदि वह स्वर्ग के योग्य है, तो परमेश्वर द्वारा [लोगों की निंदा के कारण] किसी को नापसंद नहीं किया जाएगा। यदि कोई परमेश्वर का प्रिय है, तो सभी मनुष्य उसके सामने असमर्थ हैं क्योंकि वे न तो लाभ उठा सकते हैं या हानि कर सकते हैं और न ही उनके पास जीवन या मृत्यु पर अधिकार है, न ही मृत्यु के बाद उनके पास जीवन पर अधिकार है। यदि कोई इस तरह से विचार करता है और दिल और दिमाग विचार-विमर्श और चिंतन की इस पंक्ति की ओर निर्देशित होता है, तो ऐसा कोई कारण नहीं है कि हृदय में आडंबर की ओर कोई झुकाव नहीं रहेगा। इसीलिए, एक बुद्धिमान व्यक्ति उन चीजों के प्रति कोई झुकाव नहीं रखता है जो लाभ से अधिक नुकसान करते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि अगर लोगों को एक दिखावटी व्यक्ति की आंतरिक स्थिति के बारे में पता चल जाता है जिसे वह दिल में दिखाना पसंद करता है लेकिन जीभ से ईमानदारी व्यक्त करता है, तो वे ऐसे व्यक्ति से नफरत करना शुरू कर देंगे। परमेश्वर किसी दिन इस रहस्य को खोल देगा ताकि व्यक्ति लोगों की दृष्टि में घृणित हो जाए और वे परमेश्वर के सामने उसके आडंबर और अपमान से अवगत हो जाएँ। ऐसा नहीं है कि केवल एक व्यक्ति का आडंबर ही लोगों के सामने स्पष्ट हो जाता है, बल्कि उसकी ईमानदारी भी स्पष्ट हो जाती है, और परमेश्वर उसकी ईमानदारी के कारण, उसे लोगों के बीच प्रिय बनाता है, उसके लिए उनके दिलों को जीत लेता है, और उनकी जीभ को उसकी स्तुति बोलने की शक्ति प्रदान करता है, हालाँकि लोगों की प्रशंसा में न तो पूर्णता है और न ही उनकी निंदा में कोई दोष है [क्योंकि वे चीजों की समग्र योजना में भी मायने नहीं रखते हैं]। लोगों की प्रशंसा या निंदा का कोई महत्व नहीं है।

जो व्यक्ति परलोक के जीवन और उस जीवन में प्राप्त किए जाने वाले कभी न खत्म होने वाले आनंद और उच्च पदों को हमेशा अपनी चेतना में रखता है, वह सांसारिक जीवन के उन आशीर्वादों को महत्वहीन मानेगा जो कठिनाइयों और मैलापन से भरे हुए हैं, और ईश्वर के प्रति चिंतन और कार्य की अपनी सारी शक्ति को केंद्रित करेगा। व्यक्ति आडंबर के अपमान और लोगों के दिलों को पीड़ा देने से खुद को बचाएगा। किसी की ईमानदारी की रोशनी का प्रतिबिंब किसी के दिल पर पड़ेगा, जो इसकी व्यापकता का कारण बनेगा। हृदय की व्यापकता सूक्ष्म आध्यात्मिक अनावरण (*मुकाशाफा*) का द्वार खोल देगी जो ईश्वर के प्रति किसी के लगाव और रचनाओं से दूरदर्शिता को बढ़ाएगी। सांसारिकता और परलोक की महानता से घृणा [किसी के दिल में] बढ़ेगी क्योंकि हृदय में रचनाओं के लिए कोई जगह नहीं बचेगी।

[फलस्वरूप] आडंबर की प्रेरणा दिल में पैदा भी नहीं होगी और ईमानदारी का रास्ता अपने आप खुल जाएगा।

कार्यों के माध्यम से आडंबर का इलाज

आडंबर का व्यावहारिक इलाज पूजा के कार्यों को छिपाने की आदत डालना है और उन्हें छिपाना है क्योंकि पापों को छिपाया जाता है, जब तक कि हृदय परमेश्वर के ज्ञान और पूजा के बारे में जागरूकता से संतुष्ट नहीं हो जाता, और किसी के निचले स्व (*नफ्स*) को ईश्वर के अलावा किसी और के ज्ञान और जागरूकता की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। एक परंपरा के अनुसार, अबू हफ्स अल-हद्दाद (भगवान उस पर दया करे) के एक साथी ने सांसारिकता (दुनिया) और दुनिया के लोगों की निंदा की, जिस पर उन्होंने जवाब दिया, "आपने कुछ ऐसा प्रकट किया जिसे आपको छिपाना चाहिए था। आज के बाद मेरे साथ मत बैठो। इस पर विचार करें क्योंकि अबू हफ्स ने उसे एक छोटी सी बात प्रकट करने से मना कर दिया था क्योंकि सांसारिकता की निंदा का दावा करने के लिए, सांसारिकता (ज़ुहद) और किसी के पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर (*तकवा*) के भय से स्वयं के परहेज की घोषणा है। दिखावे को छिपाने के लिए इससे अधिक प्रभावी और सफल कोई अन्य दवा नहीं है। आध्यात्मिक संघर्ष (मुजाहिद) के प्रारंभिक चरण में, [पूजा] को छिपाने का कार्य बहुत कठिन होता है। लेकिन अगर कुछ समय के लिए धैर्य रखा जाए और खुद को मजबूर करने के साथ भी उस [छिपाने] को एक आदत बना लिया जाए, तो इस क्रिया का बोझ कम हो जाएगा, और निरंतर ईश्वरीय कृपाओं, आशीर्वादों, क्षमता और समर्थन के कारण आसानी आएगी। लेकिन यहां किसी को प्रयासों का फल मिलता है [कर्म के संदर्भ में]। प्रयासों के अभाव में कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। भगवान कहते हैं:

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا۟ مَا بِأَنفُسِهِمْ

"वास्तव में, परमेश्वर किसी राष्ट्र की स्थिति को तब तक नहीं बदलता जब तक कि लोग स्वयं अपनी [आंतरिक] अवस्थाओं को [अपनी आत्माओं की] नहीं बदलते। (कुरान, अध्याय 13, श्लोक 11)

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ

"वास्तव में, परमेश्वर उन लोगों के लिए ईश्वरीय प्रतिफल को व्यर्थ नहीं जाने देता है जो धार्मिकता के कार्यों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं। (कुरान, अध्याय 9, श्लोक 120)

दूसरी विधि - खतरों और बाधाओं का उन्मूलन: दूसरे शब्दों में, उन आक्षेपों (वासवा*)* और चिंतित विचारों (खवातीर*) को खत्म करना* जो पूजा के दौरान दिल में आते हैं और भगवान के अलावा किसी अन्य में लिप्त होते हैं। इसे मिटाने का तरीका सीखना चाहिए। वे लोग जो अपने स्वयं के निचले स्व (नफ्स) के खिलाफ संघर्ष करते हैं और लड़ते हैं, संतोष के कार्यों को नियोजित करते हैं, लालच को अलग करते हैं, सृष्टिओं की दृष्टि में स्वयं को नीच बनाते हैं, उनकी प्रशंसा और निंदा से बेखबर होते हैं, वे अपने दिलों से आडंबर को जड़ से बाहर निकालते हैं। शैतान आराधना के दौरान उनका अनुसरण करना बंद नहीं करता है, इसके बजाय, वह उन्हें दिखावटी के विचारों से परेशान करता है। उनके अप्रिय विचार और अधर की इच्छाएं पूरी तरह से समाप्त नहीं होती हैं, बल्कि वे आध्यात्मिक संघर्ष के माध्यम से वश में हो जाते हैं। जब बाहरी कारक उन्हें फिर से सक्रिय करते हैं, तो वे पुनर्जीवित होने लगते हैं। इसीलिए, आडंबर के खतरों और कारणों को दूर करना और इसकी विधि को जानना अनिवार्य है।

आडंबर के खतरे: आडंबर के तीन खतरे हैं (यहां "खतरा" शब्द आक्रामक चिंतित विचारों को संदर्भित करता है)। कभी-कभी तीनों एक ही समय में प्रकट होते हैं और वे [सामूहिक रूप से] एक खतरे की तरह लगते हैं, कभी-कभी वे धीरे-धीरे आते हैं - शुरू में पहला, फिर दूसरा, फिर तीसरा। पहला खतरा [आडंबर का संकेत] यह है कि किसी को यह इच्छा करनी चाहिए कि उपासक [किसी की आराधना] के बारे में सूचित हो जाएं और यह इच्छा करें कि वह जागरूक हो जाए कि वे एक के बारे में जागरूक हैं। उसके बाद, निम्न स्व लोगों की प्रशंसा, प्रशंसा, पद और प्रतिष्ठा की ओर झुक जाता है [उनके दिलों में]। उसके बाद, निम्न स्व इसे [लोगों की प्रशंसा और प्रशंसा के कारण किसी की महानता का] प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है और विश्वास करता है। पहले खतरे को "जानना" कहा जाता है, दूसरे को "राज्य" कहा जाता है जिसे "वासना और झुकाव" भी कहा जा सकता है और तीसरे को "दृढ़ संकल्प और इरादा" कहा जाता है। पहले खतरे (आक्रामक चिंतित विचार) के उन्मूलन के लिए अधिक शक्ति (शक्ति और प्रयास) की आवश्यकता होती है ताकि दूसरे खतरे के आगमन की कोई संभावना न रह जाए। इसलिए, यदि किसी के हृदय को सृष्टि के ज्ञान के बारे में यह विचार मिलता है और उन्हें उस ज्ञान के बारे में सूचित किया जाता है, तो उसे स्वयं से पूछकर इसे हटा देना चाहिए, "आपको सृष्टिओं से क्या चाहिए? चाहे वे आपकी आराधना के बारे में जानते हों या नहीं, आपकी आराधना की स्वीकृति या गैर-स्वीकृति पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? परमेश्वर जानता है [सभी मामलों की वास्तविकता], वह वह है जिसके पास स्वीकार करने या अस्वीकार करने की शक्ति है, ईश्वर के अलावा अन्य के बारे में जागरूकता [आपकी आराधना] का क्या लाभ है? यदि हृदय में स्तुति की इच्छा पैदा होती है, तो व्यक्ति को आडंबर के नुकसानों पर चिंतन करके इस इच्छा को मिटा देना चाहिए और सोचना चाहिए कि, "यदि मैं इस कार्य को (ईश्वर की आराधना) हृदय की ईमानदारी से नहीं करता हूं तो मैं न्याय के दिन ईश्वरीय अप्रसन्नता और क्रोध का पात्र हो जाऊंगा और [अच्छे धार्मिक] कर्मों से वंचित हो जाऊंगा [जो ईश्वरीय आनंद और स्वीकृति अर्जित करते हैं] जब वे सबसे ज्यादा जरूरत है"। ठीक उसी तरह जैसे यह जानना कि लोग हमारी पूजा के बारे में जागरूक हैं, आडंबर की प्रवृत्ति और वासना को जन्म देते हैं, इसी तरह, आडंबर के नुकसान का उल्लेख करने से घृणा और घृणा पैदा होती है [दिखावा के दिखावटी कार्यों के प्रति]। झुकाव व्यक्ति को स्वीकृति के लिए आमंत्रित

करता है, और घृणा [आडंबर के] इनकार की ओर ले जाती है। निचला स्व (*नफ्स*) उस निमंत्रण को स्वीकार करता है जो मजबूत और प्रभावशाली है।

आडंबर के खतरों का उन्मूलन: इससे यह ज्ञात होता है कि आडंबर के खतरों (आक्रामक विचारों) को दूर करने के लिए तीन मामले आवश्यक हैं - ज्ञान, घृणा और इनकार। एक सेवक [ईश्वर का, यानी एक मनुष्य] दृढ़ संकल्प और ईमानदारी के साथ पूजा शुरू करता है, तब आडंबर का खतरा [दिल में] होता है और व्यक्ति इसे स्वीकार करता है। उस समय किसी को वह ज्ञान और घृणा याद नहीं आती है जो पहले दिल में थी। आडंबर के नुकसान और परलोक को बर्बाद करने की समझ जो पहले मौजूद थी, वश में हो जाती है। इसका दृष्टांत एक ऐसे व्यक्ति का है जो अपने हृदय में सहनशीलता का विचार रखता है, क्रोध को बुरा मानता है, और इस दृढ़ संकल्प को बनाए रखता है कि यदि क्रोध के कारण प्रकट होते हैं, तो वह सहनशीलता का उपयोग करेगा, लेकिन फिर कुछ ऐसे कारण सामने आते हैं जो क्रोध की आग को भड़कने का कारण बनते हैं और पिछले दृढ़ संकल्प के बारे में सोचकर हृदय को छोड़ देता है और क्रोध के नुकसान दृष्टि से गायब हो जाते हैं। वासना की मिठास के साथ भी ठीक यही स्थिति है। जब हृदय अपनी मिठास से भर जाता है, तो सूक्ति का प्रकाश छिप जाता है। इन सभी वासनाओं की भी यही स्थिति है जो अचानक सक्रिय हो जाती हैं और वे किसी की आस्था और आध्यात्मिक मार्ग (ईमान) को जो नुकसान पहुंचाते *हैं, उसे* याद नहीं किया जाता है [उस समय]। इससे यह ज्ञात होता है कि यदि ज्ञानवाद नहीं रहता है, तो प्रतिकर्षण [बुराई के लिए] व्यक्त नहीं किया जाता है क्योंकि प्रतिकर्षण ज्ञानवाद और गहरी समझ से पैदा होता है।

कभी-कभी, एक इंसान याद करता है और जानता है कि किसी के दिल में पैदा होने वाला खतरा (खतरनाक और आक्रामक चिंतित विचार) दिखावा का खतरा है जो ईश्वरीय नाराजगी की ओर ले जाता है। हालाँकि, वासना किसी पर इतनी हावी होती है कि गहरी समझ के बावजूद, कोई उस पर जोर देता है, निचले *स्व (नफ्स) से सनक* और जिद्दी मूर्खता (*हवा),* अपनी बुद्धि को धुंधला कर देता है, व्यक्ति जो सुख प्राप्त करता है उसे छोड़ने में सक्षम नहीं होता है, वह हृदय को सांत्वना देने के लिए पश्चाताप करने का बहाना बनाता है [बाद में पूरी तरह से सुखों में लिप्त होने के बाद], या ऐसी चीजें करता है जो किसी को सुखों के दोषों (हानिकारक परिणामों) पर विचार करने का अवसर नहीं देता है। कुछ विद्वान धर्मशास्त्री या धार्मिक विद्वान (*उलेमा*) एक भी शब्द नहीं बोलते हैं जो दिखावटी से रहित है और वे इसके बारे में जानते भी हैं, लेकिन इसके बावजूद, वे इससे बचते नहीं हैं, बल्कि वे इस पर जोर देते हैं। यह आग्रह उनके खिलाफ [कदाचार का] एक जबरदस्त सबूत होगा [न्याय के दिन] क्योंकि वे इसकी विनाशकता को जानने के बावजूद आडंबर का अभ्यास करते हैं। केवल ज्ञान और समझ ही पर्याप्त नहीं है, लेकिन इसके साथ ही घृणा (आडंबर) भी आवश्यक है। कभी-कभी किसी के पास समझ और घृणा दोनों होती है, इसके बावजूद, व्यक्ति आडंबर के उत्तेजक पदार्थों को स्वीकार करता है और उनके अनुसार कार्य करता है क्योंकि वासना की शक्ति की तुलना में घृणा [आडंबर के प्रति] कमजोर होती है। इस तरह के विद्रोह से

कोई फायदा नहीं होता है क्योंकि घृणा का पूरा बिंदु ऐसे कृत्यों से बचना है। लाभ केवल तीन मामलों के संयुक्त प्रभाव में है: समझ, घृणा और इनकार। इनकार घृणा का फल (परिणाम) है और घृणा गहरी समझ की प्रतिक्रिया है। विश्वास और ज्ञान की रोशनी (आंतरिक प्रकाश) की ताकत की सीमा तक, ज्ञान और आध्यात्मिक रोशनी (*मारिफा*) [दिव्य उपस्थिति की ओर ले जाने वाली] मजबूत होगी। हृदय में जितनी सांसारिकता का प्रेम है, परलोक की बेपरवाह रहेगी। जिस हद तक कोई व्यक्ति अपना चेहरा दिव्य उदारता से दूर कर लेता है और सांसारिक जीवन के नुकसानों से बेखबर रहता है, वह अनन्त जीवन के अनन्त उपहारों से बच जाएगा [परलोक में] और उस हद तक, किसी की ज्ञान और आध्यात्मिक रोशनी (मारीफा) [दिव्य उपस्थिति की ओर ले जाने वाली] कमजोर होगी। यह एक ऐसी चेन है जिसके लिंक एक दूसरे से जुड़े होते हैं। कुछ दूसरों के फल और परिणाम हैं। इन सभी की उत्पत्ति सांसारिकता के प्रेम और वासनाओं के वर्चस्व में है। हर पाप और गलती का आधार यही है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रसिद्धि और पद और सांसारिक उदारता के प्यार के सुख, मानव हृदय को लूटते हैं और विश्वास की आंतरिक रोशनी की शक्ति को नष्ट कर देते हैं। व्यक्ति इस आनंद में इतना तल्लीन होता है कि वह न तो इसके बाद को अपने चिंतन का विषय बना पाता है और न ही ईश्वर की पुस्तक (कुरान) और भविष्यद्वाणी के तरीके (*सुन्नत*) की रोशनी में भाग लेने में सक्षम होता है।

सच्चाई और ईमानदारी के संकेत

जहां तक सवाल यह है कि [धार्मिक] विद्वानों और उपदेशकों में ईमानदारी, सच्चाई और आडंबर से दूरदर्शिता के लक्षण क्या हैं और वे अपने ज्ञान और उपदेशों के साथ दिखावा नहीं कर रहे हैं? यह ज्ञात होना चाहिए कि इसके कुछ संकेत हैं। एक संकेत यह है कि यदि कोई ऐसे व्यक्ति के सामने आता है जो एक से बेहतर उपदेश देता है, एक से बेहतर विद्वान है, और एक से अधिक लोगों में लोकप्रिय है, तो उसे खुश रहना चाहिए और ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, हालांकि, विस्मयकारी प्रशंसा में कुछ भी गलत नहीं है। विस्मयकारी प्रशंसा यह है कि व्यक्ति अपने लिए समान ज्ञान की इच्छा रखता है। एक और संकेत यह है कि यदि किसी की सभा में विशिष्ट लोग आते हैं तो व्यक्ति अपनी व्याख्या की शैली नहीं बदलता है, बल्कि पहले की तरह बोलते रहना चाहिए। सभी लोगों को किसी की नजर में समान होना चाहिए। एक और संकेत यह है कि किसी को लोगों से यह इच्छा नहीं होती है कि वे बाजारों और रास्तों में एक के पीछे चलें और एक का अनुसरण करें। किसी की ईमानदारी और आडंबर को जानने के संकेत असंख्य हैं और उन्हें गिनना मुश्किल है। ये कुछ संकेत और संकेत हैं जिनके माध्यम से [परमेश्वर के] सेवक की आंतरिक स्थिति को जाना जाता है। जब आप [धार्मिक] विद्वानों को एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हुए और एक-दूसरे के प्रति शत्रुता रखते हुए देखते हैं, तो जान लें कि उन्होंने परलोक के बदले में सांसारिक जीवन खरीदा है।

शैतान और निचले स्व से आक्षेप का इलाज: ये सभी शैतान और निचले स्व (*नफ्स*) के संकेत हैं। उनका इलाज इन स्थितियों में अपने विचारों और चिंतनों को एक अलग दिशा देना है और यह सोचना चाहिए कि अगर लोग किसी के पाखंड के बारे में जागरूक हो जाते हैं और अपने चेतन की स्थिति के बारे में जागरूक हो जाते हैं तो वे उससे कितनी नफरत करेंगे। जब सेवकों की ऐसी स्थिति होगी [ईश्वर के, अर्थात्, मनुष्यों की] तो परमेश्वर की स्थिति क्या होगी जो सभी जागरूक और सभी ज्ञानी हैं और अपने आंतरिक स्व की हर एक अवस्था से अवगत हैं? पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

تَعَوَّذُوا بِاللّٰهِ مِنْ خُشُوْعِ النِّفَاقِ

"पाखंड से विनम्रता से भगवान की शरण लें"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू बक्र अल-सिद्दीक के अधिकार पर बेहाकी [भगवान उनसे प्रसन्न हों])*

पाखंड से पैदा हुई विनम्रता यह है कि शारीरिक अंग कांप रहे हैं [दिखावा प्रदर्शन में] लेकिन हृदय में थोड़ा सा भी प्रभाव नहीं पड़ता है [क्योंकि यह किसी भी वास्तविक विनम्रता से रहित है]। यह [भविष्यसूचक चेतावनी] परमेश्वर के दंड और क्रोध से शरण लेने और पश्चाताप करने के बारे में है क्योंकि यह कार्य कभी-कभी परमेश्वर के भय और किसी के पापों की याद और ऐसा करने के लिए पछतावे के कारण होता है, और कभी-कभी आडंबर के लिए। ये अलग-अलग आक्षेपात्मक विचार दिल पर उतरते हैं और वे एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। इसीलिए, जब ऐसा विचार आपके दिल में उतरता है, तो देखें कि वह विचार या संकेत क्यों है और इसकी उत्पत्ति कहां से हुई है। यदि कोई विचार ईश्वर की ओर से आया है, तो उसे होने दें, लेकिन भयभीत भी रहें क्योंकि आडंबर इतना चुपचाप हमला करता है कि कई बार किसी को एहसास भी नहीं होता है। यह संभव है कि आपने ईमानदारी से जो कार्य (कार्य या कर्म या प्रयास, विशेष रूप से एक धर्मी व्यक्ति जो परमेश्वर की प्रसन्नता और अनुमोदन की तलाश में है) ने ईमानदारी से शुरू किया है, हो सकता है कि वह आडंबर से भरा हुआ हो। इसलिए, यह सोचकर भयभीत हो जाओ कि परमेश्वर आपकी हर स्थिति और प्रत्येक स्थिति से अवगत है। यदि आपका कर्म थोड़ी सी भी आडंबर के साथ मिश्रित हो जाता है तो आप ईश्वरीय क्रोध और अप्रसन्नता का विषय बन जाएंगे [क्योंकि ईश्वर केवल ईश्वरीय दया, दया, क्षमा और उदारता का अवतार नहीं है, बल्कि वह किसी के जानबूझकर किए गए अपराधों, ज्यादती, गलत कामों, उत्पीड़न और हानिकारक व्यवहार के लिए भी कार्रवाई करता है जो व्यक्तिगत और सामूहिक भलाई के लिए हानिकारक है, और वह भी ईश्वरीय दया और न्याय से]। अली बिन हुसैन (ईश्वर उन पर दया करे) ने यह प्रार्थना की: "हे भगवान! मैं उस मामले से आपकी शरण लेता हूं जहां मेरा बाहरी लोगों की नजर में अच्छा है और जब मैं एकांत में उनसे दूर होता हूं, तो मेरा आंतरिक अस्तित्व आपके सामने बुरा होता है। मैं उस स्थिति से आपकी शरण लेता हूं जिसमें मैं] अपने कर्मों की रक्षा करता हूं जो लोगों को दिखाने के लिए हैं और उन कर्मों को नष्ट कर देता हूं जो केवल आपके लिए हैं और मैं अपने बुरे कर्मों के साथ आपके सामने आता हूं, धार्मिक कर्मों के माध्यम से लोगों से निकटता की तलाश करता हूं

और बुरे कामों के साथ आपके सामने आता हूं और [परिणामस्वरूप] आपके क्रोध को प्राप्त करता हूं। हे परमेश्वर! मुझे इस आडंबर और पाखंड से बचाएं।

ये आडंबर के नुकसान हैं। एक सेवक को [परमेश्वर के] इन नुकसानों पर नज़र रखनी चाहिए और उनसे परिचित होना चाहिए। एक भविष्यसूचक कथन के अनुसार, आडंबर के सत्तर दरवाजे हैं और आपने पढ़ा है कि उनमें से कुछ दूसरों की तुलना में अधिक सूक्ष्म और विवेकपूर्ण हैं, इस हद तक कि आडंबर के कुछ रूप बहुत विवेकपूर्ण हैं जैसे चींटी की गति [एक अंधेरी काली रात में एक भविष्यसूचक कथन के अनुसार एक अंधेरी काली चट्टान पर] और कुछ चींटी की गति से भी अधिक विवेकपूर्ण हैं। कोई इसे कैसे समझ सकता है? इसके लिए निरंतर सतर्कता और गहन ध्यान की आवश्यकता है। निचले स्व की निरंतर जांच और जांच के बिना आडंबर के नुकसान के बारे में सूचित होना बहुत मुश्किल है। भगवान हमें इन नुकसानों से बचाए!

आडंबर के संबंध में, शैतान की ओर से इतने सारे आक्षेप (वासवा) और धोखे हैं कि उन्हें लिखित रूप में शामिल नहीं किया जा सकता है। इन आक्षेपों से छुटकारा पाने का कोई तरीका नहीं है, सिवाय इसके कि आप ईश्वर और जीवन भर के अलावा दिल से सब कुछ हटा दें, अपने आप को (*नफ्स*) ईश्वरीय दंड में शामिल होना पसंद न करें। इसके बजाय, आपको एक ऐसे राजा की तरह रहना चाहिए जिसके पास सभी सांसारिक आशीषें और सुख उपलब्ध हैं, लेकिन वह उनका आनंद नहीं लेता है क्योंकि उसका शरीर बीमारियों से घिरा हुआ है, और व्यक्ति हर समय आशंकित रहता है कि इन [सांसारिक] सुखों में लिप्त होने से उसका विनाश हो जाएगा। यदि [दूसरी ओर,] कोई रोकथाम करता है और निचले स्व के खिलाफ आध्यात्मिक संघर्ष करता है [अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करने के लिए], तो व्यक्ति लंबे समय तक जीवित रहेगा और उसका राज्य लंबे समय तक चलेगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए, कोई चिकित्सकों और सुगंध विक्रेताओं की संगति को अपनाता है और निचले स्तर को कड़वी दवाएं लेने की आदत डालता है, भले ही भोजन की कमी के कारण शरीर कमजोर हो जाएगा, लेकिन रोकथाम और दवा के निरंतर उपयोग के बारे में अनुशासित होने से इस बीमारी से पूरी तरह छुटकारा मिल जाएगा। भले ही निम्न स्व कभी इच्छाओं की मांग करता है, वे सभी बीमारियां जिनका अंतिम अंत मृत्यु है, मूर्त रूप में एक के सामने आ जाएंगे। जब भी कड़वी दवा का उपयोग करना स्वयं के लिए कठिन होता है, तो व्यक्ति निश्चित रूप से उस स्वास्थ्य के बारे में सोचेगा जो उस दवा के परिणामस्वरूप उसे प्रदान किया जाएगा और साथ ही वह जीवन जो आराम और समृद्धि का जीवन होगा जिसमें शरीर बीमारियों से मुक्त होगा और हृदय चिंताओं से मुक्त होगा। यह एक आस्तिक की भी स्थिति है जो परलोक की इच्छा करता है और हर उस चीज से बचता है जो परलोक के विनाश का कारण बन सकती है और परलोक में सांसारिक (सांसारिक या दैहिक) सुखों और वासनाओं की तुलना में अधिक विनाशकारी क्या हो सकता है। आस्तिक सांसारिक सुखों से बचता है और थोड़ी मात्रा में संतुष्ट रहता है। व्यक्ति को कमजोरी, उदासी, अकेलापन, दुख, भय और रचनाओं के प्रति लगाव को त्यागना पसंद है ताकि ईश्वरीय क्रोध उस पर न उतरे और विनाश किसी की

नियति न बन जाए। ऐसा व्यक्ति सांसारिक (सांसारिक या दैहिक) सुखों से बेखबर रहकर मोक्ष प्राप्त करने की अपेक्षा करता है। यह भय और अपेक्षा सांसारिक सुखों से बचने के लिए धैर्य रखने की शक्ति देती है, और कोई जानता है कि जो धन उसके पास रहेगा, वह ईश्वर की स्वीकृति और अनुमोदन (*रिदा*) है। तब कोई यह भी जानता है कि परमेश्वर दयालु और परोपकारी है, और वह उन सेवकों की मदद करता है जो ईश्वरीय आदेशों पर कार्य करते हैं और उनके साथ दया और प्रेम के साथ व्यवहार करते हैं। यदि वह चाहे तो वह उन्हें सभी दुखों और कठिनाइयों से बेखबर कर सकता है, लेकिन वह [ईश्वरीय ज्ञान से और उन्हें अनन्त सुख और अनन्त सफलता के मार्ग पर ले जाने के लिए] परीक्षण करता है [परीक्षणों, क्लेशों और कठिनाइयों के साथ मनुष्यों] और अपने दिव्य ज्ञान और न्याय के साथ, उनके इरादे और सच्चाई का परीक्षण करता है।

जब मनुष्य कठिनाइयों को अपनाता है [आध्यात्मिक मार्ग जो किसी को ईश्वरीय उपस्थिति की ओर ले जाता है], तो उसे ईश्वर से पूरी सहायता मिलती है और वह कठिनाई आसान हो जाती है, धैर्य की शक्ति उपलब्ध हो जाती है, और [ईश्वरीय] आज्ञाकारिता एक प्रिय कार्य बन जाती है जब तक कि कोई उस आनंद को प्राप्त नहीं कर लेता है [ईश्वर] और [ईश्वरीय] आज्ञाकारिता के कार्यों में, जो अन्य सभी [सांसारिक और दैहिक] सुखों को महत्वहीन बना देता है, और शरीर उस शक्ति को प्राप्त करता है जो सभी सांसारिक सुखों को नष्ट कर देता है। दयालु व्यक्ति (परमेश्वर) अपने साधक की कड़ी मेहनत को व्यर्थ नहीं जाने देता है और याचक को अपने द्वार से खाली हाथ नहीं जाने देता है। वह कहते हैं [पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की परंपरा के अनुसार], "जो एक हाथ की चौड़ाई मेरी ओर बढ़ता है, मैं एक हाथ की दूरी की ओर बढ़ता हूं। जो मेरे पास चलता हुआ आता है, मैं दौड़ते हुए जाता हूं। परमेश्वर ने कहा [एक अन्य भविष्यद्वाणी कथन के अनुसार], "लोग मुझसे मिलने के इच्छुक हैं और मैं उनसे मिलने का अधिक इच्छुक हूँ"। शुरुआत में, एक सेवक को [परमेश्वर के] अपने [आध्यात्मिक] संघर्ष में सच्चाई और ईमानदारी का प्रदर्शन करना चाहिए, फिर कोई देखेगा कि परोपकारी प्रभु अपनी निकटता, प्रेम और दया के साथ व्यक्ति पर कितना वर्षा करेगा।

अध्याय 10- **अहंकार और आत्म-दंभ के नुकसान**

ग़ज़ाली की दसवीं और आखिरी पुस्तक उनके महान *कृति" इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के तीसरे खंड या तिमाही में व्यक्तियों, समुदायों और पूरे राष्ट्रों को परेशान करने वाली सभी आध्यात्मिक बीमारियों में से दो सबसे विनाशकारी बीमारियों से संबंधित है - अहंकार और आत्म-दंभ (या आत्म-धार्मिकता)। अहंकार दूसरों पर अपनी कथित झूठी श्रेष्ठता में से एक को आश्वस्त करता है, इस प्रकार इसके मालिक और उन लोगों के बीच एक बाधा पैदा करता है जिन्हें उनकी जाति, जातीयता, धर्म, राष्ट्रीयता, विचारधारा, भौतिक संपत्ति, विकृति, दोष, नुकसान और सामाजिक स्थिति के कारण देखा जाता है। अहंकार किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के परिप्रेक्ष्य को जानने के किसी भी प्रयास के दरवाजे को पूरी तरह से बंद कर देता है, और यह कठोर भावनाओं, शत्रुताओं, खुले संघर्षों और परिणामी अराजकता की ओर ले जाता है जो अंत में सब कुछ नष्ट कर देता है। आत्म-धार्मिकता या हर चीज के बारे में सही होने के रूप में खुद को अत्यधिक सोचना, अहंकार की एक और शाखा है जो एक बार और सभी के लिए सत्य की खोज के दरवाजे को बंद कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप एक को झूठ की स्थिति में डुबो दिया जाता है जिसे मिटाना मुश्किल होता जा रहा है, बाद में यह पूरे अस्तित्व को ढक लेता है। अहंकार और आत्म-धार्मिकता की ये बुराइयां विनम्रता के उदात्त आंतरिक गुण के लिए अभिशाप हैं जो सत्य को खोजने के लिए आवश्यक है। ग़ज़ाली का इन नकारात्मक प्रवृत्तियों का उत्कृष्ट उपचार और उनका इलाज जो विनम्रता, आत्म-सुधार और किसी के जीवन को बेहतर के लिए बदलने की स्वस्थ स्थिति को सामने लाता है, को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है [16]:

अहंकार (किबर*)* और आत्म-दंभ ('*उजुब* या आत्म-धार्मिकता) दो घातक रोग हैं [क्योंकि वे आंतरिक अस्तित्व और किसी भी आध्यात्मिक आकांक्षाओं के लिए विनाशकारी हैं]। अहंकारी और आत्मतुष्ट व्यक्ति बीमार रोगी होते हैं जो परमेश्वर के विरोधी होते हैं और उसके क्रोध के अधीन होते हैं। चूंकि इस [तीसरे] खंड में ["ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" पुस्तक में, आंतरिक विनाशकारी चरित्र लक्षणों, गुणों, स्वभावों और स्वभावों को समझाया जा रहा है, इसलिए, अहंकार और आत्म-दंभ पर प्रकाश डालना अनिवार्य है। इन दोनों को सबसे खराब विनाशकारी गुणों में गिना जाता है [मनुष्य के आंतरिक अस्तित्व

और आत्मा के]। यह पुस्तक (ग़ज़ाली की चार-खंड की *महान रचना "ईश्वर* के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" की चालीस पुस्तकों में से एक) को दो अध्यायों में विभाजित किया जा रहा है।

अहंकार के नुकसान

क़ुरआन में ख़ुदा कहते हैं:

سَأَصْرِفُ عَنْ ءَايَٰتِيَ ٱلَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ

"मैं उन लोगों को अपने छंदों (संकेतों और सत्य) की समझ से रोकूंगा जो दुनिया में अनुचित रूप से अहंकार का अभ्यास करते हैं (यानी, अहंकार आंतरिक अंधेपन और एक गंभीर मानसिक अवरोध का कारण बनता है जो इसके अभ्यासियों को सत्य के प्रकाश को देखने से रोकता है, और इसके परिणामस्वरूप, वे झूठ के घोर अंधकार में डूब जाते हैं जो उनके पूरे अस्तित्व को ढक लेता है)। (कुरान, अध्याय 7, आयत 146)

كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ

"और इस तरह, परमेश्वर हर अहंकारी और अत्याचारी व्यक्ति के हृदय पर मुहर लगा देता है [ताकि उसका हृदय मार्गदर्शन और सत्य के सही मार्ग को समझने में असमर्थ हो जाए]। (कुरान, अध्याय 40, श्लोक 35)

إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْمُسْتَكْبِرِينَ

"बेशक, [परमेश्वर] अहंकारी लोगों से प्रेम नहीं करता। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 23)

لَقَدِ ٱسْتَكْبَرُوا۟ فِيٓ أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا

"ये लोग अपने दिलों में अहंकारी हो रहे हैं [महानता और आत्म-प्रशंसा के विचारों को पालकर और दूसरों को नीची दृष्टि से देखकर] और [मानवीय शालीनता और ईश्वर की सीमाओं की सीमाओं को पार कर गए हैं जो लोगों को अहंकार से दूर रहने और विनम्रता अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं]। (कुरान, अध्याय 25, श्लोक 21)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ كِبْرٍ وَلَا يَدْخُلُ النَّارَ
مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ

"वह व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा जिसके हृदय में सरसों के दाने के बराबर का घमंड भी हो। वह व्यक्ति नरक में प्रवेश नहीं करेगा जिसके हृदय में सरसों के दाने के आकार का विश्वास भी हो। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अब्दुल्ला बिन मसूद के अधिकार पर [ईश्वर उससे प्रसन्न हो])

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ بَخِيلٌ وَلَا جَبَّارٌ وَلَا سَيِّئُ الْمَلَكَةِ

"कोई भी स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा जो कंजूस, अहंकारी या अपनी प्रजा के साथ दुर्व्यवहार करता है (जिनकी जिम्मेदारी एक को सौंपी गई है)"।

"सबसे बुरा सेवक [ईश्वर का, यानी, एक मनुष्य] वह है जो क्रूरता और उत्पीड़न को उजागर करता है और सबसे शक्तिशाली और सर्वोच्च शासक (भगवान) को भूल जाता है; सबसे बुरा सेवक वह है जो अत्याचार करता है और घमंडी है और महान कार्यवाहक (भगवान) को भूल जाता है; सबसे बुरा सेवक वह है जो लापरवाही और बेकार समय बर्बाद करने वाली गतिविधियों में लिप्त रहता है और कब्र की मिट्टी में सड़ने की वास्तविकता को भूल जाता है; सबसे बुरा सेवक वह है जो विद्रोह, कटुता और शत्रुता में सीमा पार करता है और [पृथ्वी पर मानव अस्तित्व की] शुरुआत और अंत को भूल जाता है। (द्वारा सुनाई गई *अस्मा बिंत अमीश के अधिकार पर* हदीस संग्रह तिर्मिज़ी [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

यीशु ने कहा, "खुशखबरी उसके लिए है जिसे परमेश्वर ने अपनी पुस्तक का ज्ञान दिया और जो अहंकार से सुरक्षित रहा। मुहम्मद इब्न हुसैन इब्ने अली (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "हृदय में अहंकार की मात्रा के अनुपात में, बुद्धि कम हो जाती है"। किसी ने सलमान अल-फ़ारसी (भगवान उनसे प्रसन्न हो) से एक बुराई के बारे में पूछा जिसकी उपस्थिति में कोई भी अच्छा, धार्मिक कार्य फायदेमंद नहीं है। उन्होंने जवाब दिया, "यह अहंकार है"। एक बार अच्छे कपड़े पहने एक युवक हसन (भगवान उससे प्रसन्न हो) के पास से चला गया। उसने उस युवक को अपने पास आने के लिए बुलाया और कहा, "एक आदमी अपनी जवानी और सुंदरता पर गर्व करता है, भले ही तुम यह सोचो कि तुम्हारा शरीर ऐसा है मानो कि कब्र ने उसे छिपा लिया है और तुम्हारे कर्म तुम्हारे सामने आ गए हैं [जो कि मृत्यु के बाद की स्थिति है]। जाओ और अपने दिल को ठीक करो। परमेश्वर अपने सेवकों से केवल यही चाहता है कि उनके हृदय में सुधार हो। एक परंपरा के अनुसार, मुतरफ इब्न अब्दुल्लाह अल-शखीर (भगवान उन पर दया करें) ने मुहलूब (एक उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी) को देखा, जो रेशमी कपड़े पहने हुए थे और गर्व के साथ चल रहे थे। उसने उससे कहा, "हे अबू अब्दुल्ला! यह चलना परमेश्वर और उसके रसूल को अप्रसन्न करता है। मुहलूब

ने उससे कहा, "शायद तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ"। उन्होंने कहा, "क्यों नहीं? मुझे पता है कि आप कौन हैं। शुरुआत में (आपके मूल में), आप शुक्राणु की एक गंदी बूंद थे और अंत में, आप एक गंदे [विघटित] शव बन जाएंगे। और अब [आपके आदि और अंत की दो अवस्थाओं के बीच], आप [अपने पेट में] गंदगी लेकर घूम रहे हैं। इसलिए, किसी की वास्तविकता को जानने से, यह किसी इंसान के लिए विनम्रता के अलावा कुछ भी नहीं है। यह सुनकर, मुहलूब चला गया और उस [अहंकारी और गर्व की शैली] को छोड़ दिया।

विनम्रता की उत्कृष्टता

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

مَا زَادَ اللّٰهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ إِلَّا عِزًّا وَمَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ لِلّٰهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللّٰهُ

"भगवान किसी की क्षमा के कारण एक सेवक की गरिमा और सम्मान को बढ़ाते हैं। जो ईश्वर के लिए विनम्रता अपनाता है, ईश्वर ऐसे व्यक्ति को उच्च श्रेणी में ले जाता है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰهُ وَمَنْ تَكَبَّرَ وَضَعَهُ اللّٰهُ وَمَنِ اقْتَصَدَ أَغْنَاهُ اللّٰهُ وَمَنْ بَذَّرَ
أَفْقَرَهُ اللّٰهُ وَمَنْ أَكْثَرَ ذِكْرَ اللّٰهِ أَحَبَّهُ اللّٰهُ

"जो परमेश्वर के लिए नम्रता अपनाता है, परमेश्वर उसे ऊँचे पद पर पहुँचाता है और जो अहंकारी होता है, परमेश्वर उसे [विनम्र अनुभवों के माध्यम से] नीचे लाता है और जो खर्चीला होता है, परमेश्वर ऐसे एक को कंगाल बनाता है, और जो परमेश्वर को बहुत याद करता है, उसे परमेश्वर अपना प्रिय बनाता है। (द्वारा सुनाई गई *तल्हा इब्न याह्या के अधिकार पर* हदीस *संग्रह* बाजार [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, "मुझे (ईश्वर द्वारा) एक विकल्प दिया गया था कि मैं या तो [ईश्वर का] दास और पैगंबर या राजा और पैगंबर बनूं। मुझे नहीं पता था कि क्या चुनना है। स्वर्गदूतों के बीच से, [महादूत] गेब्रियल मेरा मित्र है (जैसा कि पैगंबर अक्सर गेब्रियल से मिलने आते थे जो कुरान के दिव्य रहस्योद्घाटन का प्राथमिक साधन था जो 23 वर्षों तक फैला था) और मैंने उसकी ओर देखा। उन्होंने मुझसे कहा, 'अपने रब के लिए विनम्रता अपनाओ'। फिर मैंने कहा, 'मुझे [ईश्वर का] और पैगंबर बनना पसंद है (ईश्वर का दासत्व आध्यात्मिकता का प्रतीक है और दासत्व का पद ईश्वर के सामने सर्वोच्च पद है जो दासत्व में सन्निहित विनम्रता के माध्यम से प्राप्त किया जाता है)'। (द्वारा सुनाई गई

हदीस ने *अबू याला को* आयशा के अधिकार पर इकट्ठा किया है [भगवान उससे प्रसन्न हों] और *अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास के अधिकार पर तबरनी* [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])) ईश्वर ने पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को एक दिव्य रहस्योद्घाटन प्रकट किया, "मैं केवल उस व्यक्ति की प्रार्थनाओं को स्वीकार करता हूं जो मेरी महानता के सामने झुका हुआ है, जो मेरे सेवकों पर श्रेष्ठता नहीं अपनाता है, अपने हृदय में मेरा भय रखता है, मेरा दिन मेरी याद में बिताता है, और मेरे लिए निम्न स्व की इच्छाओं से दूर रहता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اَلْكَرَمُ التَّقْوىٰ وَالشَّرَفُ التَّوَاضُعُ وَالْيَقِيْنُ الْغِنٰى

"बड़प्पन [और उदात्तता] पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर (तकवा) के भय में है, सम्मान विनम्रता (तवाडु) में है, और धन निश्चितता में है (*यकीन*) [ईश्वर और दिव्य शाश्वत सत्यों में]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस ने* इब्न अबी अल-दुनिया *और* हकीम को *सुमरा के अधिकार पर संग्रहित किया है [ईश्वर उससे प्रसन्न हो])*

यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हों) ने कहा, "दीन लोगों के लिए खुशखबरी है क्योंकि वे न्याय के दिन पल्प पर बैठेंगे, खुशी की खबर लोगों के बीच शांति के दलालों के लिए है क्योंकि वे न्याय के दिन स्वर्ग के उत्तराधिकारी होंगे, खुशी की खबर उन लोगों के लिए है जो अपने दिलों को सभी सांसारिक गंदगी से साफ रखते हैं क्योंकि वे भगवान के दर्शन को प्राप्त करेंगे। न्याय का दिन"। एक भविष्यसूचक कथन के अनुसार, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "चार चीजें हैं जो केवल उन लोगों द्वारा प्राप्त की जाती हैं जिन्हें भगवान ने अपने मित्र के रूप में प्राप्त किया है: पहला मौन है जो पूजा की शुरुआत है, दूसरा ईश्वर में भरोसा है, तीसरा विनम्रता है, और चौथा दुनिया से अनासक्ति है (सांसारिक प्रसन्नता, सुख और उलझन)"। (द्वारा सुनाई गई हदीस अनस के अधिकार पर *तबरानी* और *हकीम को इकट्ठा करता है* [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

आयशा (भगवान उससे प्रसन्न हों) ने कहा, "आप लोग सबसे उत्कृष्ट पूजा [जो है] विनम्रता के प्रति लापरवाही कर रहे हैं"। यूसुफ इब्न असबात (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "बहुत सारे धार्मिक कार्यों की तुलना में ईश्वर का भय की एक छोटी मात्रा पर्याप्त है, और बहुत सारे आध्यात्मिक संघर्ष की तुलना में थोड़ी सी विनम्रता एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त है"। किसी ने फुदैल इब्ने आयद (ईश्वर उन पर दया करे) से विनम्रता के बारे में पूछा, जिस पर उन्होंने उत्तर दिया, "विनम्रता यह है कि आप सत्य के सामने झुके रहते हैं, और इस हद तक सत्य के अधीन और आज्ञाकारी होते हैं, कि भले ही आप एक बच्चे से सत्य पाते हैं, आप इसे स्वीकार करते हैं और यदि आप इसे किसी अज्ञानी से भी सुनते हैं, आप इसे स्वीकार करते हैं"। अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "सच्ची विनम्रता यह है कि आप अपने ऊपर उस व्यक्ति को पसंद करते हैं जो सांसारिक आशीषों में आपकी तुलना में कम [भाग्यशाली] है, जब तक कि ऐसे व्यक्ति को यह निश्चितता नहीं मिल जाती है कि दुनिया (सांसारिक साधन, स्थिति और शक्ति) के कारण आपकी किसी पर कोई श्रेष्ठता नहीं है। [आगे,] विनम्रता यह है कि आप अपने आप को उस व्यक्ति

से भी बदतर मानते हैं जिसके पास सांसारिक आशीर्वाद में आपसे अधिक है, जब तक कि ऐसा व्यक्ति यह नहीं समझ लेता कि सांसारिक साधनों के कारण किसी की कोई श्रेष्ठता नहीं है।

एक परंपरा के अनुसार, यीशु को एक दिव्य रहस्योद्घाटन (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) में कहा गया था, "जब मैं आप पर आशीर्वाद भेजता हूं तो इसे विनम्रता के साथ स्वीकार करता हूं, मैं उस आशीर्वाद को आप पर पूरा करूंगा"। काब (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "यदि किसी व्यक्ति को [ईश्वर द्वारा प्रदत्त] आशीर्वाद प्राप्त होता है और उसके लिए ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है और वह एक विनम्र व्यक्ति के रूप में रहता है, तो ईश्वर इस दुनिया में उस आशीर्वाद के लाभ को प्रदान करेगा और परलोक में भी रैंक बढ़ाएगा। और यदि किसी व्यक्ति को [ईश्वर द्वारा प्रदत्त] आशीर्वाद प्राप्त हुआ, लेकिन उसके पास [ईश्वर के प्रति] कृतज्ञता नहीं थी, बल्कि इसके बजाय, लोगों पर श्रेष्ठता व्यक्त की गई थी [उस आधार पर], ऐसा व्यक्ति उस आशीर्वाद के लाभ (लाभ) से वंचित रहेगा और परलोक में सजा का सामना करेगा। पैगंबर सुलैमान (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक दिनचर्या थी कि हर सुबह वह अमीरों और अभिजात वर्ग के साथ एक सरसरी बैठक करते थे, और एक बार उनके साथ काम करने के बाद, वह गरीबों की सभा में आकर बैठते थे और कहते थे, "एक गरीब गरीब केवल गरीब गरीबों के साथ अपना जीवन बिता सकता है [मेरी गरीबी और भगवान की आवश्यकता के कारण मेरी सांसारिक की विशालता के बावजूद ऐसा राज्य जिसकी परमेश्वर के प्रभुत्व से कोई तुलना नहीं है]"। ज़ियाद नमिरी ने कहा, "विनम्रता के बिना एक व्यक्ति [सांसारिकता से] परहेज करता है, जो फल के बिना पेड़ के समान है"।

इसका कारण है कि अहंकारी लोगों के स्वर्ग में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा क्योंकि अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुण (*इखलाक*) स्वर्ग में प्रवेश के द्वार हैं जो अहंकार और [अनुचित] आत्म-सम्मान (अभिमान) के कारण बंद हो जाते हैं। एक सेवक [ईश्वर का] अहंकार के कारण प्रबुद्ध नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुणों से वंचित रहता है, [ऐसा व्यक्ति] विशेष रूप से विनम्रता से वंचित होता है जो ईश्वर से डरने वालों के लिए जीवन की पूंजी और फव्वारा है और उनके [उदात्त] चरित्र लक्षणों का आधार है। व्यक्ति विनम्रता के अलावा अन्य अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुणों से वंचित रहता है [अहंकार के परिणामस्वरूप]। उदाहरण के लिए, अहंकार के साथ-साथ शत्रुता को भी नहीं छोड़ पाएगा, किसी की सलाह पर ध्यान नहीं दे पाएगा, किसी के साथ ईमानदारी नहीं रख पाएगा, लोगों को अपमानित करने और अपमानित करने से बच नहीं पाएगा, चुगली करने और दोष खोजने से खुद को नहीं बचा पाएगा। वास्तव में, सभी अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुण समाप्त हो जाएंगे और बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुण पैदा होंगे। अहंकारी लोगों में कोई बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुण नहीं होते हैं, इसके बजाय, एक अहंकारी व्यक्ति को हर बुराई और हर बुरे चरित्र गुण का समर्थन लेने के लिए मजबूर किया जाता है क्योंकि ऐसा किए बिना, व्यक्ति अपने झूठे आत्म-सम्मान [और

गलत घमंड] को बनाए रखने में असमर्थ होता है। एक भी अच्छा गुण नहीं है जिससे एक अहंकारी व्यक्ति वंचित नहीं है क्योंकि ऐसा व्यक्ति मानता है (मानता है) कि अच्छी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुण उस [गरिमा की गलत कथित भावना और] सम्मान से वंचित कर देंगे। यह एक अहंकारी व्यक्ति के स्वर्ग में प्रवेश करने में असमर्थता का कारण है कि अहंकार के साथ कई बुरी और बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र, आंतरिक स्वभाव और गुण अनिवार्य हैं। इसके साथ ही, एक बुरा गुण कई अन्य बुरे गुणों और चरित्र लक्षणों का अग्रदूत है।

सबसे खराब प्रकार का अहंकार वह है जो किसी को ज्ञान [विशेष रूप से शाश्वत सत्यों का] लाभ उठाने से रोकता है और सत्य को स्वीकार करने में एक बाधा है और सत्य का पालन करने से वंचित करता है। इस तरह के अहंकार के बारे में [कुरान से] कई [पवित्र] आयतें हैं:

وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ بَاسِطُوٓا۟ أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوٓا۟ أَنفُسَكُمُ ۖ ٱلْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ ٱلْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ غَيْرَ ٱلْحَقِّ
وَكُنتُمْ عَنْ ءَايَٰتِهِۦ تَسْتَكْبِرُونَ

"[अहंकारी लोगों की मृत्यु के समय] स्वर्गदूत अपने हाथों को आगे बढ़ा रहे होंगे [उनकी ओर कह रहे होंगे], 'अपनी आत्माओं को बाहर निकालो! आज आपको अपमानजनक सजा दी जाएगी क्योंकि आप भगवान के बारे में झूठ बोलते थे और आप भगवान के छंदों के प्रति अहंकार रखते थे। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 93)

سَأَصْرِفُ عَنْ ءَايَٰتِىَ ٱلَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ

"मैं ऐसे लोगों को अपनी आयतों (कुरान) की सच्ची समझ से दूर रखूँगा जो पृथ्वी पर अनुचित रूप से अहंकार का अभ्यास करते हैं [जैसे अहंकार उस हृदय को सील कर देता है जो ईश्वरीय मार्गदर्शन को समझने और सत्य को समझने में असमर्थ हो जाता है]। (कुरान, अध्याय 7, आयत 146)

कुरान की व्याख्या के विद्वानों ने लिखा है कि इसका मतलब है कि कुरान की समझ दिलों से उठ जाएगी। कुछ व्याख्याओं में यह लिखा है कि इसका मतलब है कि दिलों को स्वर्गीय प्रभुत्व को देखने से रोक दिया जाएगा। इब्ने जरीह (रइश्वर उस पर दया करे) ने कहा कि वे आयतों पर विचार और चिंतन नहीं कर पाएंगे और उनसे सबक नहीं ले पाएंगे। इसीलिए, यीशु (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) कहा करते थे, "खेती नरम धरती पर लगाई जाती है, न कि चट्टानों पर। इसी तरह, बुद्धि विनम्र दिलों को प्रभावित

करती है। अहंकारी दिलों पर इसका जरा सा भी प्रभाव नहीं पड़ता। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अहंकार को सत्य की अस्वीकृति से जोड़ा है और कहा है:

اَلْكِبْرُ مَنْ سَفِهَ الْحَقَّ وَغَمَصَ النَّاسَ

"अहंकारी वह है जो सत्य को अस्वीकार करता है और लोगों में दोष ढूंढता है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अब्दुल्ला इब्ने मसूद के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

जिन चीजों के साथ अहंकार प्रदर्शित किया जाता है

केवल वही व्यक्ति अहंकारी होता है जो स्वयं के बारे में उच्च सोचता है और जो स्वयं के बारे में उच्च सोचता है वह पूर्णता के गुणों में से एक का दावेदार है। तब यह पूर्णता सांसारिक और धार्मिक दोनों है। धर्म से संबंधित पूर्णता के गुण ज्ञान और कर्म हैं। पूर्णता के सांसारिक गुण वंश, सौंदर्य, शक्ति, धन और समर्थकों की प्रचुरता हैं। ये तब अहंकार के सात प्रकार और कारण हैं:

अहंकार का पहला कारण - ज्ञान: अहंकार का पहला कारण ज्ञान है। विद्वान (विद्वान धर्मशास्त्री) जल्दी अहंकार में शामिल हो जाते हैं। सबसे पहले, एक विद्वान को हृदय में किसी के ज्ञान की पूर्णता और सुंदरता का एहसास होता है। तब व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन मानता है। कोई दूसरों को योग्य नहीं समझता और उन्हें मवेशियों की तरह देखता है। कोई उन्हें अज्ञानी मानता है और उम्मीद करता है कि वे सबसे पहले किसी का अभिवादन करेंगे। यदि किसी भी तरह से, कोई दूसरों का अभिवादन करने में अग्रणी है या उनके अभिवादन और अभिवादन का अच्छे तरीके से जवाब देता है या उनका अभिवादन करने या उनके निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए उठता है, तो वह इसे उन पर किए जा रहे उपकार के रूप में मानता है और सोचता है कि उसने इस [अच्छे] व्यवहार के माध्यम से दूसरों का सम्मान किया है, भले ही वे इसके योग्य नहीं थे, इसीलिए, यह आवश्यक है कि वे उन पर किसी के पक्ष के कारण एक की सेवा करें। अहंकारी विद्वानों की यह आदत होती है कि लोग उनसे मिलने उनके पास जाते हैं, लेकिन वे किसी से मिलने नहीं जाते हैं, बीमार होने पर लोग उनसे मिलने आते हैं, लेकिन वे किसी बीमार के पास नहीं जाते हैं। अपने करीबी लोगों के साथ भी उनका रवैया अच्छा नहीं होता है। वे उनसे उनकी सेवा करवाते हैं और उनकी गलतियों को माफ नहीं करते हैं। वे लोगों को शिक्षित करना अपना एहसान मानते हैं और मानते हैं कि चूंकि उन्होंने उन्हें ज्ञान प्रदान किया है, इसलिए यह उनका अधिकार है कि वे उनकी सेवा करें। सांसारिक मामलों में उनका अभ्यास ऐसा ही होता है, परलोक से संबंधित मामलों में उनके स्वभाव की भ्रष्टता अपने चरम पर होती है। ये तथाकथित "विद्वान" सोचते हैं कि ज्ञान ने उन्हें परमेश्वर के सामने एक उच्च पद तक पहुंचा दिया है, इसलिए अब उन्हें किसी भी ईश्वरीय प्रतिशोध और

जवाबदेही से निडर होना चाहिए। वे अपने लिए [परमेश्वर के सामने अपने स्वयं के खड़े होने के बारे में] नहीं डरते, लेकिन वे आम लोगों के लिए डरते हैं। उन्हें अपने स्वयं के सुधार के बारे में कोई चिंता नहीं है, लेकिन वे आम लोगों के सुधार के बारे में परेशान हैं। ऐसे लोग विद्वान नहीं हैं, बल्कि वे अज्ञानी हैं। उनका ज्ञान से क्या लेना-देना है? वास्तविक ज्ञान वह है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति ईश्वर को पहचानता है, अपने निचले स्व की गहरी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है, अपने [अपरिहार्य] अंत के खतरों को समझता है, और यह विश्वास रखता है कि ईश्वर की गहन जवाबदेही विद्वानों के साथ होगी। वास्तविक ज्ञान परमेश्वर के भय, विनम्रता और परमेश्वर के प्रति अधीनता को और भी अधिक बढ़ाता है। जो इस ज्ञान को प्राप्त करता है [दिव्य उदारता और अनुग्रह से], वह कभी भी अपने निम्न स्व (*नफ्स) को श्रेष्ठ नहीं समझता है,* बल्कि सभी को स्वयं से श्रेष्ठ मानता है क्योंकि व्यक्ति को दूसरों की तुलना में अधिक प्रश्न के अधीन किया जाएगा। ज्ञान एक जबरदस्त आशीर्वाद है और ज्ञान के लोग इसके लिए [भगवान के प्रति] आभार व्यक्त करने में सक्षम नहीं हैं। अबू दर्दा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) कहा करते थे, "जिसके पास अधिक ज्ञान है, उसे अधिक दर्द होता है [भगवान को उनके जबरदस्त एहसान और आशीर्वाद के लिए पर्याप्त रूप से धन्यवाद देने में सक्षम नहीं होने का]"।

ज्ञान अहंकार का स्रोत बनने का एक कारण यह है कि क्यों एक सेवक [ईश्वर का, यानी, एक मनुष्य] ज्ञान प्राप्त करना शुरू कर देता है; [इस मामले में,] किसी का आंतरिक अस्तित्व [आंतरिक] बुराई का केंद्र रहा है और निचला आधार स्वयं (*नफ्स*) गंदगी का निवास स्थान रहा है, और किसी के पास खराब नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (*इखलाक) है*। ज्ञान की घाटी में कदम रखने से पहले, किसी के लिए यह अनिवार्य था कि उसे निचले स्व (नफ्स) को सभ्य बनाने और हृदय और आत्मा को शुद्ध करने के लिए अलग-अलग आध्यात्मिक संघर्षों से गुजरना पड़े, और निचले स्व को अपने भगवान की पूजा करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। इस तरह की स्थिति के लिए [जिसमें किसी को आवश्यक पहले कदम के रूप में दिल और आत्मा को सभ्य बनाने की सख्त जरूरत है], ज्ञान संभवतः फायदेमंद नहीं हो सकता है क्योंकि कार्यों का दिल में सम्मानजनक स्थान नहीं है। यह (ज्ञान) गंदगी के बीच रहने के लिए मजबूर है, न तो इसके फल फायदेमंद हो सकते हैं, न ही अच्छे के संकेत हो सकते हैं, उन पर प्रमुख दिख सकते हैं। वहाब इब्ने मुनब्बे (ईश्वर उन पर दया करे) ने इसका सबसे अच्छा उदाहरण दिया है। उन्होंने कहा, "ज्ञान बादलों के पानी की तरह है जो आंतरिक रूप से शुद्ध, स्वच्छ और मीठा है। पेड़ इसे अपनी नसों में अवशोषित करते हैं और इसे वैसे ही बदल देते हैं जैसे वे हैं। अगर किसी पेड़ के पत्ते और फल कड़वे हो जाएं तो पानी का स्वाद भी कड़वा हो जाता है और अगर वो मीठे हो जाएं तो पानी का स्वाद भी मीठा रहता है, बल्कि वह मीठा हो जाता है। ज्ञान की भी यही अवस्था है - लोग इसे अवशोषित करते हैं और इसे ड्राफ्ट करके पीते हैं और इसे अपने इरादे और दृढ़ संकल्प के अनुसार बनाते हैं जैसा कि वे चाहते हैं। एक अहंकारी अधिक अहंकारी हो जाता है, एक विनम्र विनम्र हो जाता है। जिसका इरादा अहंकार करने का था और अज्ञानी था, उसने ज्ञान प्राप्त किया और अब उसने वह हासिल कर लिया है जो अहंकार का स्रोत बन सकता था। इसलिए, ऐसे के लिए, अहंकार और भी बढ़ गया। इसी तरह, जिसे [ईश्वर से] भय था, उसने ज्ञान प्राप्त किया, तो यह भय, ईश्वरीय कार्यों के बारे में तीव्र आशंका, विनम्रता और विनम्रता और

भी बढ़ गई क्योंकि ज्ञान ने [ईश्वर के] भय का पता लगा लिया। नतीजा यह है कि यह अहंकार के सबसे बड़े कारणों में से एक है।

अहंकार का दूसरा कारण – पवित्र कर्म और दिव्य पूजा: पूजा और [पवित्र] कर्म अहंकार का दूसरा कारण हैं। एक व्यक्ति [सांसारिकता से] और आराधना करने वाला व्यक्ति भी सम्मान, प्रसिद्धि, अहंकार और लोगों के दिलों को अपनी ओर झुकाने जैसी बुराइयों से रहित नहीं होता है। वे इन बुराइयों को सांसारिक और धार्मिक दोनों मामलों में भी व्यक्त करते हैं। सांसारिक मामलों में, [वे इसे इस तरह से व्यक्त करते हैं] कि वे उनसे मिलने आने वाले लोगों को उनके पास जाने से बेहतर मानते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि लोग उनकी ज़रूरतें पूरी करें, उनका सम्मान करें, सभाओं में उनके लिए जगह बनाएं, ईमानदारी और परमेश्वर का भय मानने के गुणों के साथ उनका उल्लेख करें, और उन्हें सभी मामलों में प्राथमिकता दें। यह ऐसा है मानो वे अपनी आराधना [ईश्वर को] और आध्यात्मिक संघर्ष को सृष्टिओं पर एक एहसान के रूप में मानते हैं। धार्मिक मामलों में, उनकी स्थिति ऐसी है कि वे अपने सिवा सभी को मनहूस मानते हैं, हालांकि वे स्वयं अभागे हैं क्योंकि उनमें ही यह भ्रम है। लोगों की दुर्दशा का दावा करना उनके अपमान का प्रतिबिंब है। इस व्यक्ति ने न केवल अपने वचनों से लोगों को आधार बनाया है, बल्कि वह परमेश्वर पर गर्व भी करता है और परमेश्वर के दंड और महिमा से निडर है। एक उपासक जो इसे एक एहसान मानकर पूजा करता है और रचनाओं को नीचा दिखाता है, और वह व्यक्ति जो अपनी पूजा और आज्ञाकारिता के कारण रचनाओं से प्रेम करता है और उनका सम्मान करता है, और उनसे ईश्वर के सामने ऐसी अपेक्षा करता है जिसकी कोई अपने लिए अपेक्षा नहीं करता है।

एक परंपरा के अनुसार। इस्राएलियों में दो पुरुष थे। उनमें से एक अपने अशांत स्वभाव और बुरे कार्यों के कारण, विद्रोही के रूप में प्रसिद्ध हो गया और दूसरा व्यक्ति अपनी विपुल पूजा के कारण एक उपासक के रूप में प्रसिद्ध हो गया। उसने इतनी पूजा की थी और परमेश्वर के सामने उसका इतना ऊँचा पद था कि एक बादल हमेशा उसे छाया देता था। विद्रोही व्यक्ति ने सोचा, "मैं बहुत बदनाम हूँ, और यह उपासक बहुत ही ईश्वर-भीरु और पूजनीय मनुष्य है। अगर मैं उसके पास बैठता हूं तो संभव है कि भगवान मुझ पर अपनी दया का उतर जाएं। उपासक ने सोचा, "मैं एक उपासक हूं। यह बुरा आदमी मेरे करीब कैसे बैठ सकता है? इसलिए जब विद्रोही व्यक्ति उपासक के करीब बैठना चाहता था तो उसने उसके प्रति अपनी घृणा व्यक्त की और उसे अपने पास बैठने नहीं दिया। परमेश्वर ने उस समय के पैगंबर [जो इस्राएल के बच्चों में से भी थे] को एक दिव्य रहस्योद्घाटन भेजा ताकि उन दोनों को फिर से पवित्र कर्म करना शुरू करने के लिए कहा जा सके क्योंकि उसने विद्रोही व्यक्ति के सभी पापों को क्षमा कर दिया है और उपासक के सभी [पवित्र] कर्मों को रद्द कर दिया है। इसके बाद, बादल ने [पहले] विद्रोही आदमी को छाया देना शुरू कर दिया।

इस घटना से पता चलता है कि परमेश्वर अपने सेवकों के दिलों की खोज कर रहा है। यदि एक अज्ञानी पाप करने वाला व्यक्ति विनम्र रहना शुरू कर देता है और ईश्वर के भय से परमेश्वर की महिमा के सामने झुक जाता है, तो यह एक संकेत है कि किसी ने दिल से परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया है। इसके बजाय, एक अहंकारी धार्मिक विद्वान और एक अभिमानी उपासक की तुलना में एक बड़ा उपासक होना है। एक और नुकसान है कि बहुत कम उपासक और संयमी लोग खुद को बचाते हैं और वह यह है कि अगर कोई उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखता है या उन्हें चोट पहुंचाता है, तो वे इसे एक अक्षम्य अपराध मानते हैं। वे सोचते हैं कि ऐसा करने वाले व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा क्षमा नहीं किया जाएगा और वह परमेश्वर के क्रोध के योग्य बन गया है। यदि किसी और के साथ भी यही व्यवहार किया जाता है, तो उनके पास यह अस्वीकृत प्रतिक्रिया नहीं होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपनी उच्च स्थिति और पद के दावेदार हैं, हालांकि यह दावा पूरी तरह से अज्ञानता पर आधारित है। कुछ लोगों की मूर्खता उन्हें "अमुक अंत का बुरा अंत होगा" या "अमुक को इसके लिए दंडित किया जाएगा" आदि जैसे दावे करने के लिए मजबूर कर देता है। यदि किसी भी तरह से, अपराधी किसी घातक बीमारी से बीमार हो जाता है, तो कोई इसे अपने चमत्कार के रूप में सोचता है और कहता है कि भगवान ने किसी का बदला लिया है। कोई यह नहीं देखता कि अविश्वासियों ने परमेश्वर और उसके दूतों को शाप दिया है और यहाँ तक कि [परमेश्वर के] भविष्यद्वक्ताओं को भी नुकसान पहुँचाया है और यहाँ तक कि उन्हें मार डाला है। इसके बावजूद, परमेश्वर ने इनमें से अधिकांश अपराधियों को राहत दी और उन्हें दुनिया में कोई सजा नहीं दी। इसके बजाय, उनमें से कई को [ईश्वरीय रूप से] सत्य की ओर निर्देशित किया गया था और उन्हें न तो दुनिया में सजा मिली और न ही उन्हें परलोक में कोई सजा मिलेगी। क्या यह अज्ञानी, अहंकारी, आत्म-धोखा देने वाला उपासक सोचता है कि परमेश्वर के सामने किसी का पद इतना ऊँचा है कि उसने एक का बदला लिया जबकि यह भविष्यद्वक्ताओं के लिए भी नहीं किया गया था? शायद, कोई यह भी नहीं जानता है कि इस अहंकार और आत्म-धार्मिकता के कारण परमेश्वर द्वारा उसे अस्वीकार कर दिया गया है और वह अपने स्वयं के [आध्यात्मिक] विनाश से अनजान है। यह विश्वास उन अहंकारी लोगों का है जो बुद्धि से वंचित हैं। दो लोगों के बीच कितना बड़ा अंतर है? एक व्यक्ति के पास अपने आंतरिक और बाहरी अस्तित्व दोनों में पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर का भय होता है और वह अपने निचले स्व से आशंकित होता है [इसकी नकारात्मक और हानिकारक प्रवृत्तियों के कारण], अपने [धार्मिक] कर्मों को महत्वहीन [विनम्रता के कारण] मानता है, और इसे सुधारने के संघर्ष में लगातार व्यस्त रहता है। एक दूसरे व्यक्ति ने आडंबर, अहंकार, ईर्ष्या और धोखे की गंदगी को छिपा दिया है, इस प्रकार वह शैतान के लिए एक खिलौना बन गया है और इसके अलावा, सोचता है कि कोई व्यक्ति अपने [धार्मिक] कार्यों के माध्यम से परमेश्वर पर उपकार कर रहा है। यह एक तथ्य है कि कोई भी व्यक्ति जो यह विश्वास रखता है कि वह ईश्वर के किसी भी सेवक से श्रेष्ठ है, ऐसे व्यक्ति ने इस अज्ञानता के कारण अपनी पूरी पूंजी [अच्छे, धार्मिक और महान] प्रयासों को बर्बाद कर दिया है। अज्ञानता सबसे बुरा पाप है और इससे बड़ा कुछ भी नहीं है जो किसी को परमेश्वर से दूर कर देता है। अपने बारे में यह निर्णय लेना कि वह दूसरों से बेहतर है, केवल मूर्खता और अज्ञानता है और यह परमेश्वर की जवाबदेही से निडरता का संकेत है, भले ही परमेश्वर ने कहा हो:

فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْقَوْمُ ٱلْخَٰسِرُونَ

"कोई भी भगवान की योजना और रणनीति से निडर नहीं है (*मकर*) उन लोगों के समूह को छोड़कर जो आश्चर्यजनक नुकसान के कगार पर हैं। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 99)

संक्षेप में, अहंकार एक ऐसी विपत्ति है कि केवल परमेश्वर के वे सेवक ही सुरक्षित रहते हैं जिनके साथ परमेश्वर उसकी देखभाल में रक्षा करता है, अन्यथा, लोग आमतौर पर इस आपदा से घिरे रहते हैं।

अहंकार का तीसरा कारण – वंश (जाति, जातीयता, राष्ट्र, जनजाति, समुदाय): एक व्यक्ति जिसके पास एक उच्च वंश है [एक अच्छे, सम्मानजनक, प्रमुख और प्रसिद्ध परिवार से आने के संदर्भ में], उन लोगों को हेय दृष्टि से देखता है जो इस उच्च वंश से वंचित हैं [विनम्र पारिवारिक मूल के मामले में], भले ही वे ज्ञान और धार्मिक कार्यों में एक से बेहतर हो सकते हैं। [यह चर्चा सभी प्रकार के नस्लीय, जातीय, धार्मिक, सांप्रदायिक, आदिवासी, समुदाय, भाषाई, राजनीतिक, वैचारिक और राष्ट्रवादी गौरव, अहंकार, श्रेष्ठता परिसरों और परिणामी घृणा या उन लोगों को नीचा दिखाने पर लागू होती है जो इन विशेषताओं को साझा नहीं करते हैं और उन्हें हीन मानते हैं। एक सच्चा सेवक और ईश्वर का अंतरंग, वह है जिसके पास अपना कोई रंग नहीं है, इसके बजाय, वह दिव्य गुणों से ओत-प्रोत होकर ईश्वर के रंग को अपनाता है, जो कई दिव्य नामों से प्रभावित होता है, जैसे कि प्रेम, करुणा, दया, न्याय, समानता, ईमानदारी, परोपकारिता, निस्वार्थ सेवा, दूसरों को लाभ पहुंचाना, लोगों के कष्टों को अपना मानना, आदि]। कभी-कभी इस व्यक्ति के अहंकार की स्थिति ऐसी होती है कि कोई व्यक्ति विनम्र मूल और पृष्ठभूमि वाले लोगों को दास और नौकर के रूप में सोचता है और उनके साथ घुलने-मिलने में, खाने और पीने के लिए प्रतिकूल पाता है। कोई अपने वंश पर गर्व व्यक्त करता है और दूसरों को अपमानजनक नामों से बुलाता है या कहता है, "तुम कौन हो?", "तुम्हारे पिता क्या थे?", "मैं अमुक [महान व्यक्ति] का बच्चा या पोता हूं। आप जैसा तुच्छ व्यक्ति मुझसे कैसे बात कर सकता है या मुझे देख भी सकता है?" वंशानुगत अभिमान के प्रत्येक मालिक के पास निचले आधार स्व में यह गुप्त तंत्रिका होती है [जो सूक्ष्म या स्पष्ट तरीकों से प्रकट होती है] लेकिन जब क्रोध की आग भड़कती है, इस तंत्रिका का जमे हुए रक्त पिघल जाता है, आंतरिक प्रकाश की रोशनी बुझ जाती है तो व्यक्ति अपनी वंशावली और वंशावली के संदर्भ में [अपमानजनक और अपमानजनक तरीके से] बात करना शुरू कर देता है। इस [अपमानजनक और अपमानजनक व्यवहार] की कल्पना भी एक विनम्र दास [परमेश्वर के] से नहीं की जा सकती है। यह अबू धर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) द्वारा सुनाया गया था, जिन्होंने कहा: "जब पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) मौजूद थे, तब मेरी एक आदमी के साथ बहस हुई और गुस्से में मैंने उन्हें 'एक काली महिला का बेटा' कहा। [यह सुनकर मेरी बात सुनकर] पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुझे संबोधित किया और कहा:

طَفِّ الصَّاعِ طَفِّ الصَّاعِ لَيْسَ لِابْنِ الْبَيْضَاءِ عَلَى ابْنِ السَّوْدَاءِ فَضْلٌ

'दोनों तराजू [संतुलन के] समान हैं। एक गोरे के बेटे की एक काले के बेटे पर कोई श्रेष्ठता नहीं है [क्योंकि सभी मनुष्य भगवान की दृष्टि में समान हैं और इसलिए, नस्लीय गर्व और अहंकार व्यक्त करना किसी को शोभा नहीं देता है]'।

पैगंबर से यह सुनकर, मैं जमीन पर लेट गया और उस आदमी को खड़े होने और मेरे गाल पर कदम रखने के लिए कहा [संघर्ष की उस स्थिति में सामने आए मेरे नस्लीय अभिमान और अहंकार को मिटाने के लिए और मैं पश्चाताप करते हुए भगवान की ओर मुड़ा और इस पाप का प्रायश्चित करने के लिए उस आदमी के साथ जिसे मैंने इस तरह से नाराज किया था]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम* और *मुसनद अहमद*)

देखिए कि कैसे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अबू धर को अपनी इस गलती के बारे में बताया क्योंकि वह अपनी सफेदी को अपनी श्रेष्ठता का कारण मान रहे थे। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हल्लम) ने उन्हें बताया कि इस्लाम में श्वेत और काले दोनों समान हैं (क्योंकि जाति और त्वचा के रंग के आधार पर किसी की भी दूसरे से श्रेष्ठता नहीं है), उन्होंने उन्हें सूचित किया कि इस तरह का विचार या कल्पना करना भी पाप और अज्ञानता है। यह भी देखें कि पैगंबर की इस चेतावनी का अबू धर पर कितना तात्कालिक प्रभाव पड़ा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो - एक भविष्यसूचक साथी जो पैगंबर की आध्यात्मिक निगरानी और प्रशिक्षण के अधीन था और उस प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप खुद को सीख रहा था और सुधार रहा था) कि ठीक उसी समय, वह अपनी गलती पर शर्मिंदा हो गया, [तुरंत] पश्चाताप किया, और उस पेड़ को जड़ों से हटा दिया जिसे "अहंकार" कहा जाता है, उस व्यक्ति के पैरों के तलवों के माध्यम से [उसने अन्याय किया]। उन्होंने उसी क्षण यह सीख लिया कि सम्मान का उन्मूलन (इस मामले में गर्व और अहंकार) केवल अपमान के माध्यम से ही प्राप्त किया जाता है। इसी तरह की परंपरा के अनुसार, दो लोगों ने पैगंबर के सामने गर्व व्यक्त किया। उनमें से एक ने दूसरे से कहा, "मैं फलां का बेटा हूं। तुम्हारी माँ मर जाए, तुम कौन हो?" पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, "दो लोगों ने पैगंबर मूसा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने गर्व व्यक्त किया। उनमें से एक ने कहा, 'मैं फलां हूं, फलां का बेटा हूं' जब तक कि उसने अपने नौ पूर्वजों के नाम नहीं गिने। भगवान ने पैगंबर मूसा को एक रहस्योद्घाटन भेजा (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) कि वे नौ पूर्वज [आपके] नरक के निवासी हैं और आप दसवें निवासी हैं [इसलिए आपके और आपके पूर्वजों के अहंकार ने आप सभी को सबसे खराब जगह पर पहुंचा दिया है]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद*)

अहंकार का चौथा कारण – सौंदर्य और रूप: सुंदरता के माध्यम से अहंकार आमतौर पर महिलाओं द्वारा किया जाता है [लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं] और यह उन्हें अन्य महिलाओं के दोषों को व्यक्त करने

और उनके खिलाफ बैकबाइट करने के लिए मजबूर करता है। इसलिए, आयशा (ईश्वर पैगंबर की पत्नी) बताती है, "एक महिला पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से मिलने आई थी। उसके जाने के बाद, मैंने अपने हाथ से इशारा किया कि वह कितनी छोटी थी। पैगंबर ने मुझसे कहा: 'तुमने उसके खिलाफ काट लिया है'"। उसकी आलोचना का उद्देश्य गुप्त अहंकार था [उसके दिल में छिपा हुआ और अव्यक्त जिसे उसने खुद महसूस नहीं किया] क्योंकि अगर वह खुद छोटी होती, तो वह दूसरी महिला को छोटा नहीं कहती। यह ऐसा है जैसे उसे अपनी ऊंचाई पसंद थी और दूसरी महिला को छोटा मानते हुए, उसे "बौना" कहा जाता था। [पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहम्मद) ने अपनी प्यारी पत्नी में इस नकारात्मक विचार को तुरंत ठीक करने से नहीं परहेज किया, जिसने भी तुरंत इस मूर्खता को समझ लिया, और इस गलत विचार को अपने दिल से हटा दिया, और आने वाले सभी समय के लिए लोगों के सुधार के लिए अपने खर्च पर इस भविष्यद्वाणी की शिक्षा को ईमानदारी से रिपोर्ट किया, अपने स्वयं के आध्यात्मिक उत्थान, सुधार और परिवर्तन के लिए]।

अहंकार का पांचवां कारण – धन: यह अहंकार राजाओं द्वारा अपने खजाने के कारण, व्यापारिक लोगों द्वारा अपने व्यापारिक सामान और संपत्ति में, अपने खेतों में किसानों और अपने कपड़े और सवारी में संपन्न लोगों के कारण किया जाता है। एक अमीर गरीब को नीच समझता है और उनके प्रति अहंकारी होता है और उनसे कहता है, "तुम भिखारी, कंगाल और जरूरतमंद हो। अगर मैं चाहूं तो मैं आप जैसे लोगों को खरीद सकता हूं और आपको अपना नौकर बना सकता हूं। आप कौन हैं और आपके पास क्या है? मेरे घर में आपके पास जितना सामान था, उससे कहीं अधिक सामान है। मैं एक दिन में इतना खर्च करता हूं कि आप एक साल में खर्च नहीं कर सकते। अमीर ये सब बातें इसलिए कहता है क्योंकि इस व्यक्ति की नजर में धन के लिए बहुत महत्व और महानता है और गरीबी को नापसंद करता है, हालांकि इसका मतलब यह है कि किसी को गरीबी और धन के नुकसान की उत्कृष्टता के बारे में पता नहीं है। अगर कोई जागरूक होता, तो वह इस तरह की बात नहीं करता।

अहंकार का छठा कारण – शक्ति: यह अहंकार एक शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा कमजोर व्यक्ति पर किया जाता है। [यह शक्ति जो अहंकार का आधार है, शारीरिक, राजनीतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक शक्तियां हो सकती है, और ईश्वरीय कानून में समान रूप से निंदनीय है]।

अहंकार का सातवां कारण – सहायकों, समर्थकों, प्रशंसकों और रिश्तेदारों की प्रचुरता: कुछ लोगों में बड़ी संख्या में छात्रों, सहायकों, रिश्तेदारों, अनुयायियों, समर्थकों और प्रशंसकों के कारण अहंकार होता है। राजाओं को अपने शिष्यों की प्रचुरता के कारण अपनी सेनाओं और शिक्षकों के आकार के कारण अहंकार होता है।

इस सारी चर्चा का सार यह है कि अहंकार का कारण [जैसे सौंदर्य, शक्ति, धन, आदि] एक वरदान है जिसे पूर्णता के रूप में कहा जा सकता है, भले ही वह वास्तविकता में पूर्णता हो या नहीं। कुछ लोग शराब की खपत और मैथुन की प्रचुरता पर अपने समकालीनों पर गर्व व्यक्त करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके कार्यों में [किसी प्रकार की] पूर्णता है जो उनके पास है, हालांकि यह विश्वास अज्ञानता पर आधारित है। ये ऐसी चीजें हैं जो [पूर्वोक्त में] अहंकार के कारण हैं और यह उन लोगों के खिलाफ किया जाता है जो इन [विशेषताओं] से रहित हैं या उनके पास हैं लेकिन तुलनात्मक रूप से कम डिग्री तक।

नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र लक्षण और विनम्र लोगों के आंतरिक स्वभाव और कार्यों की व्याख्या जो अहंकार या विनम्रता के प्रभाव को दर्शाती है: यह ज्ञात होना चाहिए कि अहंकार किसी व्यक्ति की आदतों और तौर-तरीकों में होता है जैसे कि तिरस्कारपूर्ण या क्रोधित चेहरा बनाना, अपनी आंखों के कोने से देखना, किसी की छाती पर सिर रखना, एक तकिया के साथ बैठना, या यह किसी के कथनों में है जिसमें आवाज का लहजा, अक्षरों और शब्दों का वितरण, और प्रतिक्रिया देने की शैली [लोगों को वापस] शामिल है। अहंकार चलने, उठने, बैठने और शारीरिक गतिविधियों और हाव-भाव में भी है। किसी की स्थिति [होने या अभिव्यक्तियों की] को बदलना भी अहंकार की अभिव्यक्ति बन सकता है। अहंकारियों में से कुछ ऐसे होते हैं जो अपने सभी कार्यों और वचनों में अहंकार व्यक्त करते हैं और कुछ अहंकारी लोग कुछ मामलों में अहंकारी होते हैं जबकि कुछ में विनम्र होते हैं। निम्नलिखित में, कुछ आदतों [और अहंकार की अभिव्यक्ति] को समझाया जा रहा है।

उदाहरण के लिए, कुछ लोग चाहते हैं कि दूसरों को उनके सामने हाथ बांधे हुए खड़े हों [किसी अधिकारी के प्रति सम्मान, सम्मान या अधीनता के संकेत के रूप में] या जब वे आते हैं तो दूसरों को खड़ा करना चाहते हैं। अली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने कहा, "यदि आप किसी नरक के व्यक्ति को देखना चाहते हैं, तो बस उस व्यक्ति को देखें जो बैठा है लेकिन कई लोग सम्मानपूर्वक एक के सामने खड़े हैं"। अनस (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) [एक भविष्यद्वाणी परंपरा में] बताता है कि पैगंबर के साथियों को पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के लिए इतना प्यार था कि उनके मन में किसी और के लिए नहीं था। जब वे उसे देखते थे, तो वे खड़े नहीं होते थे [उसके लिए अपने प्यार और सम्मान के कारण, भले ही वे चाहते थे] क्योंकि वे जानते थे कि वह उन्हें पसंद नहीं करता था कि वे उसके लिए खड़े हों।

कुछ अहंकारी लोग तब तक चलना शुरू करना पसंद नहीं करते जब तक कि उनका अनुसरण करने वाला कोई न हो। अबू दर्दा (ईश्वर प्रसन्न हो) ने कहा, "एक सेवक (ईश्वर का) तब तक ईश्वर से दूर रहता है जब तक कि उसके पीछे कोई चल रहा हो। कभी-कभी जब पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) अपने साथियों के साथ चलते थे, तो वे उन्हें अपने आगे बढ़ने के लिए कहते थे और

वह खुद उनके पीछे चले जाते थे। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अल-दयालामी* और *मुसनद अल-फिरदौस*)

इसका उद्देश्य या तो भविष्यद्वाणी के साथियों को शिक्षित करना था या इस तरह, वह अपने स्वयं (नफ्स) से अहंकार और आत्म-प्रशंसा के शैतानी आक्षेपों को दूर करना चाहता था। अहंकारियों की यह भी आदत है कि वे उन लोगों के बगल में नहीं बैठना चाहते हैं जो उनकी तुलना में सामाजिक स्थिति में निचले स्तर पर हैं, बल्कि वे चाहते हैं कि वे उनके सामने सम्मानपूर्वक बैठें। यह विनम्रता के व्यवहार के भी खिलाफ है। अनस (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि यदि मदीना की कोई छोटी लड़की आती है और पैगम्बर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का हाथ पकड़ लेती है और वहां खड़ी हो जाती है, जबकि वह रास्ते पर चल रहे थे [कहीं जाने के लिए], पैगंबर [वहां खड़े रहते थे और] अपने हाथ को तब तक नहीं छोड़ते थे जब तक कि वह खुद उसे दूर जाने के लिए नहीं छोड़ देती थी [पूर्ण विनम्रता से बाहर कि पैगंबर के पास था और बच्चों के लिए उनका स्नेह]। यह भी अहंकार की आदत है कि वे मरीजों के पास बैठने से बचते हैं और उनसे दूर रहते हैं। यह भी अहंकार है। एक बार एक आदमी पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो) के पास आया, जिसका चेहरा चिकन बॉक्स के पिंपल्स से भरा हुआ था और उनमें से पानी निकल रहा था। उस समय कुछ लोग पैगंबर के साथ बैठे थे और उनके साथ भोजन कर रहे थे। जब वह आया, तो भविष्यवक्ता ने उठकर उसे अपने बगल में बैठाया [और उसकी बीमारी की स्थिति के लिए कोई घृणा व्यक्त नहीं की और इसके बजाय, उसे अपनी आत्मा के लिए उपचार और उसके दिल के लिए सुखदायक के रूप में अपना स्नेह और सहानुभूति दिखाई]। कुछ लोग अपने घर का कोई भी काम अपने हाथ से करना पसंद नहीं करते हैं। यह विनम्रता के भी खिलाफ है। कुछ अहंकारी [लोग] अपने सामान के साथ चलना पसंद नहीं करते हैं। यह तरीका विनम्र लोगों की आदतों के खिलाफ भी है। कपड़े पहनना और कपड़े पहनना विनम्रता और अहंकार दोनों को व्यक्त कर सकता है। यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद ने कहा), "कपड़ों की सुंदरता हृदय में गर्व पैदा करती है"। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

مَنْ تَرَكَ زِينَةً لِلّٰهِ وَوَضَعَ ثِيَابًا حَسَنَةً تَوَاضُعًا لِلّٰهِ وَابْتِغَاءً لِمَرْضَاتِهِ كَانَ حَقًّا
عَلَى اللّٰهِ أَنْ يَدَّخِرَ لَهُ عَبْقَرِيَّ الْجَنَّةِ

"जो व्यक्ति विनम्रता के कारण भगवान के लिए अलंकरण, अलंकरण और भड़कीला प्रदर्शन (जीना) छोड़ता है, और भगवान की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए अच्छे कपड़े छोड़ता है, यह भगवान की जिम्मेदारी है कि वह ऐसे व्यक्ति के लिए स्वर्ग से सबसे अच्छी पोशाक का भंडारण करे। (द्वारा सुनाई गई *अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास के अधिकार पर* हदीस *संग्रह* अबू नईम [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

كُلُوا وَاشْرَبُوا وَالْبَسُوا وَتَصَدَّقُوا فِي غَيْرِ سَرَفٍ وَلَا مَخِيلَةٍ

"खाओ, पीओ, कपड़े पहनो और दान में न तो अतिशयता (फिजूलखर्ची) और न ही अहंकार के साथ"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *तिर्मिज़ी* अम्र इब्न शुऐब के अधिकार पर उनके दादा से)

यीशु ने अपने साथियों से कहा, "तुम्हें क्या हो गया है? आप लोग भिक्षुओं की पोशाक पहनते हैं और आपके सीने में जानवरों के दिल हैं! राजाओं की पोशाक पहनो और ईश्वर के भय से अपने दिलों (निचले स्व) को मार डालो। विनम्रता की एक आदत यह है कि जब कोई व्यक्ति शाप देता है या दर्द देता है या [के] अधिकारों को हड़प लेता है, तो वह सहनशील और सहिष्णु होता है और विनम्रता व्यक्त करता है। यही असली विनम्रता है। हम इसे एक सारांश के रूप में उल्लेख करते हैं कि सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, विशेषताओं, आंतरिक लक्षणों और स्वभावों (*इखलाक*) और विनम्रता का शिखर पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और ईश्वर का आशीर्वाद हो) के आचरण का सुंदर पैटर्न है। इस तरह उनके सुंदर उदाहरण का अनुसरण करना अनिवार्य है और इन्हें अपना शिक्षक और मार्गदर्शक बनाया जाना चाहिए [आध्यात्मिक पथ पर]।

अहंकार का इलाज और विनम्रता प्राप्त करने का तरीका

पिछले पन्नों में जो उल्लेख किया गया है, उससे हम जानते हैं कि अहंकार एक घातक बीमारी है और सृष्टि में शायद ही कभी कोई ऐसा हो जो इस बीमारी से सुरक्षित हो। तब इस बीमारी को केवल इरादे और इच्छा से खत्म नहीं किया जाता है, बल्कि इसके इलाज और ऐसी दवाओं के उपयोग की आवश्यकता होती है जो इसे खत्म कर सकें। अहंकार का इलाज दो तरीकों से किया जाता है। एक तरीका यह है कि इस बीमारी की जड़ों को दिल से बाहर निकाला जाए। दूसरी विधि उन कारणों को दूर करना है जो किसी को अहंकार करने के लिए मजबूर करते हैं।

अहंकार को ठीक करने की पहली विधि: इलाज की इस विधि के दो रूप हैं: ज्ञान-आधारित और व्यावहारिक। इस इलाज के दोनों रूपों का उपयोग किए बिना, पूर्ण इलाज (वसूली और आगामी स्वास्थ्य) प्राप्त नहीं किया जाता है।

ज्ञान-आधारित इलाज: क्या मनुष्य अपने स्वयं (नफ्स) और स्वयं के निर्माता (यानी, भगवान) की *ज्ञान-विज्ञान (पूर्ण समझ और मान्यता) प्राप्त* करता है। यदि कोई सच्चा ज्ञान (*मारिफा*) प्राप्त कर लेता है तो

आशा की जाती है कि अहंकार की बीमारी दूर हो जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि कोई मनुष्य स्वयं की गहरी समझ प्राप्त कर लेता है, तो वह निश्चित रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचेगा कि स्वयं एक अत्यंत अपमानित और नीच चीज है। केवल एक चीज जो इसके लिए उपयुक्त है वह है विनम्रता, अपमान और नम्रता। यदि कोई [भी] अपने प्रभु की ज्ञान-बुद्धि प्राप्त करता है तो यह निश्चितता निश्चित रूप से [हृदय में] पैदा होगी कि महानता और महिमा जैसी विशेषताएं केवल ईश्वर की महिमा के अनुरूप हैं [और मनुष्य के लिए नहीं, इसलिए मनुष्य के लिए कार्रवाई और स्थिति का सबसे अच्छा तरीका विनम्र और ईश्वर की महिमा के प्रति विनम्र और अधीन रहना है]। प्रभु की ज्ञान-बुद्धि और उनकी महानता और उच्चता पर विस्तृत चर्चाएँ हैं [ग़ज़ाली के ज्ञान के संग्रह "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" में]। भले ही स्वयं को जानने का विषय कम विस्तृत उन्मुख नहीं है, फिर भी, हम यहां केवल उतना ही लिखते हैं जितना कि विनम्रता और नम्रता के लक्षणों को उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त है [भगवान की महिमा, भव्यता और महिमा के सामने]। इसके लिए, हम कुरान की केवल एक आयत को एक लंबी चर्चा के बजाय अपने विचार-विमर्श का विषय बनाएंगे:

قُتِلَ ٱلْإِنسَٰنُ
مَآ أَكْفَرَهُۥ ﴿١٧﴾ مِنْ أَىِّ شَىْءٍ خَلَقَهُۥ ﴿١٨﴾ مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُۥ فَقَدَّرَهُۥ ﴿١٩﴾ ثُمَّ
ٱلسَّبِيلَ يَسَّرَهُۥ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ أَمَاتَهُۥ فَأَقْبَرَهُۥ ﴿٢١﴾ ثُمَّ إِذَا شَآءَ أَنشَرَهُۥ ﴿٢٢﴾

"[परमेश्वर के प्रति] इतना कृतघ्न होने के लिए मनुष्य को धिक्कार है! भगवान ने किसके साथ एक (मनुष्य) को बनाया है? शुक्राणु ड्रॉप के साथ बनाया गया, फिर किसी का आकार बनाया, फिर माप के साथ अंगों का निर्माण किया, फिर एक के लिए रास्ता आसान बना दिया [जन्म लेने और दुनिया में आने के लिए], फिर एक मौत दी, फिर एक को कब्र में ले गया, फिर जब भगवान चाहेगा, तो वह एक को पुनर्जीवित करेगा। (कुरान, अध्याय 80, श्लोक 17-22)

इस श्लोक में, मानव की शुरुआत, अंत और बीच की अवस्थाओं का उल्लेख किया गया है। यदि मनुष्य किसी की शुरुआत, अंत और उसके बीच की जीवन की स्थिति पर एक नज़र डालता है, तो वह इस दिव्य श्लोक का अर्थ समझ जाएगा। मनुष्य की शुरुआत यह है कि किसी के पास [जन्म से पहले] कोई उल्लेख भी नहीं था क्योंकि वह विलुप्त हो गया था और लंबे समय तक [अनंत काल से] विलुप्त होने के पर्दे में इस हद तक रहा कि किसी के विलुप्त होने की शुरुआत का भी पता नहीं है। विलुप्त होने और आसपास न होने से ज्यादा अपमानजनक और नीच क्या हो सकता है? तब परमेश्वर ने एक अत्यंत नीच और गंदी चीज़ के साथ एक को बनाया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने पहले मिट्टी के साथ एक बनाया, फिर शुक्राणु के साथ एक बनाया, फिर रक्त के साथ एक जमी हुआ रूप बनाया, फिर हड्डियाँ बनाईं, फिर हड्डियों पर मांस डाला, [माँ के गर्भ में]। यह मानव सृष्टि की शुरुआत है। [प्रारंभिक] सृजन के बाद भी, कोई बुरी रचना पर बना रहा क्योंकि एक को शुरुआत में पूरी तरह से नहीं बनाया गया था, इसके बजाय एक बेजान पत्थर की

तरह था जिसमें सुनने, देखने, हिलने, देखने, देखने, समझने और समझने की शक्ति और क्षमता नहीं थी। एक ने जीवन से पहले मृत्यु (विलुप्त होने), क्षमता और शक्ति के सामने कमजोरी, ज्ञान के सामने अज्ञानता, देखने से पहले अंधापन, सुनने से पहले बहरापन, बोलने से पहले गूंगापन, मार्गदर्शन से पहले गुमराह, धन के सामने गरीबी, और ताकत और क्षमता के सामने लाचारी और अक्षमता से पहले [किसी की जीवन यात्रा] शुरू की।

तब परमेश्वर ने शारीरिक अंगों की रचना की जो परमेश्वर के संकेतों और चमत्कारों की अभिव्यक्ति हैं। जब कोई इन अंगों से वंचित था, तो उसे सख्त जरूरत थी, लेकिन भगवान ने उसे अमीर बना दिया [इससे पहले कि कोई उनसे मांगने की क्षमता रखता है, तो उसे एक अद्भुत शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षमताएं प्रदान करके], वह भूखा था लेकिन भगवान ने पेट के लिए पोषण प्रदान किया, एक नग्न था लेकिन भगवान ने उसके शरीर को ढक लिया, एक गुमराह था लेकिन भगवान ने एक मार्गदर्शन दिया। देखो और देखो कि परमेश्वर ने किस योजना से मनुष्य को बनाया और [सत्य की ओर जिसने इसे खोजा था] का मार्गदर्शन किया, फिर मनुष्य की विद्रोहशीलता को देखें! कोई कितना कृतघ्न होता है और कितना बड़ा अज्ञानी होता है! परमेश्वर के आशीर्वाद और अनुग्रह पर एक नज़र डालें! कैसे उन्होंने मनुष्य को अपमान, नीचता और गंदगी से बाहर निकाला और एक को उच्चता और महानता की ओर ले जाया [आत्मा की ऊंचाई के माध्यम से जो मानव अस्तित्व का सार है और ज्ञान प्राप्त करने के लिए मुख्य ईश्वरीय रूप से प्रभावित साधन है, सत्य को प्राप्त करने और ईश्वर तक पहुंचने के लिए, जो स्रोत और मूल या सभी अस्तित्व हैं], और विलुप्त होने से अस्तित्व प्रदान किया। क्या शून्यता और गैर-अस्तित्व से अधिक महत्वहीन और नीच कुछ हो सकता है? क्या पूर्ण विलुप्त होने (गैर-अस्तित्व) से कम डिग्री है? परमेश्वर ने एक अस्तित्व में बनाया [जीवन के उपहार के साथ जो सभी मनुष्यों पर ईश्वर का सबसे बड़ा अनुग्रह है], पहले नीची मिट्टी से जिसे पैरों के नीचे कुचल दिया जाता है ताकि कोई अपने अस्तित्व की नीचता के बारे में जागरूक रहे और अपने स्वयं के ज्ञान और समझ को बनाए रख सके (*नफ्स*)। तब परमेश्वर ने एक पर अपने उपकार पूरे किए ताकि कोई इन ईश्वरीय अनुग्रहों के प्रकाश में अपने प्रभु को पहचान और जान सके, परमेश्वर की महिमा, सम्मान और भव्यता की सूझबूझ प्राप्त कर सके ताकि कोई जान सके कि भव्यता और महानता केवल उसके लिए उपयुक्त है [और किसी और के लिए]।

पति-पत्नी इसलिए बनाए गए ताकि मानव पीढ़ियाँ निरंतर जारी रह सकें। जिसकी शुरुआत (उत्पत्ति) की स्थिति यह है और जिसकी परिस्थितियाँ ऐसी हैं, ऐसे व्यक्ति को घमंड, अहंकारी, घमंडी और अहंकारी होने का क्या अधिकार है? एक निश्चित रूप से नीच लोगों में से बहुत नीच है और कमजोरों में बेहद कमजोर है। हालांकि, यह एक तुच्छ और नीच व्यक्ति की आदत है कि जब कोई व्यक्ति जाहिरा तौर पर [दुनिया में प्रसिद्धि, धन, शक्ति, आदि जैसी चीजों के कारण] एक उच्च स्थान प्राप्त करता है, तो वह खुद को महान के रूप में कल्पना करना शुरू कर देता है, हालांकि खुद को महान मानना अपने आप में एक अपमान है। शक्ति, शक्ति, सम्मान और महानता सभी केवल परमेश्वर के लिए हैं। हालाँकि, यदि मनुष्य

को पूरी तरह से [परमेश्वर की किसी भी भागीदारी के बिना] सृजा गया होता और उसके सभी मामलों को एक को सौंप दिया गया होता, और उसके पास अपने स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखने की क्षमता होती, तो उसे विद्रोही होने का, और अपने स्वयं के आदि और अंत की उपेक्षा करने का अधिकार होता।

मनुष्य किसी के नुकसान के लिए सहमत हो या न हो, व्यक्ति भूखा और प्यासा रहने के लिए मजबूर है, बीमार होने के लिए मजबूर है, और मरने के लिए मजबूर है [इस सांसारिक अस्तित्व में]। कोई अपने स्वयं के लाभ और हानि का मालिक होने में असमर्थ है। कोई न तो अपने अच्छे का मालिक है और न ही बुरे का। व्यक्ति किसी चीज का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है लेकिन अज्ञान के अलावा कुछ नहीं प्राप्त करता है, कोई कुछ याद रखना चाहता है लेकिन उसे भूल जाता है, वह अपने दिल को किसी महत्वपूर्ण मामले में व्यस्त रखना चाहता है, लेकिन आक्षेप उसे पकड़ लेता है और उसे चिंताओं और चिंताओं के असीम सागर में गहरा डुबकी लगाने के लिए मजबूर कर देता है। न तो किसी का अपने दिल पर नियंत्रण होता है और न ही खुद पर उसका अधिकार होता है। यह वह हृदय है जो हमेशा उन चीज़ों की कामना करता है जिनके भीतर गुप्त रूप से किसी का विनाश अंतर्निहित होता है, और उन चीज़ों से घृणा करता है जिनके साथ किसी का जीवन जुड़ा होता है। व्यक्ति विभिन्न प्रकार के भोजन का आनंद लेता है, हालांकि ये खाद्य पदार्थ एक के लिए घातक हैं, कोई दवाओं से नफरत करता है, हालांकि वे शरीर को रोग और स्वास्थ्य से छुटकारा दिलाते हैं। क्या किसी के दिन-रात के किसी भी क्षण इस खतरे से बचा जा सकता है कि उसकी सुनने की शक्ति छीन ली जाए, दृष्टि छिन जाए, अंग लकवा मार दिए जाएं, बुद्धि नष्ट हो जाए, आत्मा चली जाए, दुनिया में जो कुछ भी पसंद है, उससे सब कुछ छीन लिया जाए? दयनीय मनुष्य घोर लाचारी का अवतार है! यदि महान सृष्टिकर्ता (ईश्वर) किसी को [राहत के साथ] छोड़ देता है, तो वह रहता है और यदि वह [किसी का जीवन] छीन लेता है, तो वह विलुप्त हो जाता है। एक खरीदे गए दास की तरह है जिसके पास किसी के नियंत्रण में कुछ भी नहीं है और न ही दूसरे व्यक्ति के कार्यों पर उसका कोई नियंत्रण है। इससे बड़ी विनम्र बात क्या हो सकती है? अहंकार कहाँ है जो ऐसे व्यक्ति के लिए उपयुक्त है? मनुष्य का निष्कर्ष मृत्यु है। दूसरे शब्दों में, आत्मा को मनुष्य से छीन लिया जाएगा। किसी की सुनने, देखने, ज्ञान, शक्ति, इंद्रियों, धारणाओं, गति आदि की सभी शक्तियां और क्षमताएं छीन ली जाएंगी। कोई पत्थर की तरह हो जाएगा और ठीक वैसा ही बन जाएगा जैसा पहले था [यानी, शून्यता और विलुप्त होने की स्थिति में एक निर्जीव इकाई]। अंगों का आकार [शुरू में] रहेगा लेकिन कोई गति और भावना नहीं होगी। फिर इसे [कब्र की] मिट्टी में रखा जाएगा। फिर यह गंदा, बदबूदार शव बन जाएगा, जैसा कि जन्म से पहले गंदे जमे हुए मांस के रूप में था। फिर अंग सड़ जाएंगे, और उनके घटक अलग हो जाएंगे, हड्डियां कणों में विघटित हो जाएंगी। कीड़े शरीर के सभी मांस को खा जाएंगे। वे पहले आंखों के सॉकेट में प्रवेश करेंगे और उन्हें खत्म करेंगे, फिर वे गालों पर हमला करेंगे और उन्हें साफ करेंगे। शरीर का कोई भी अंग ऐसा नहीं रहेगा जो इन कीड़ों के पेट में जाने के बाद गंदगी न बन जाए। मनुष्य की बेहतर स्थिति वैसी ही बन जाती है जैसी वह पहले हुआ करती थी, अर्थात सड़ने और सड़ने के बाद फिर से गंदगी बन जाती है। अस्तित्व में रहने के बाद, व्यक्ति फिर से विलुप्त हो जाता है जैसे कि कोई कभी अस्तित्व में ही नहीं था।

पृथ्वी पर एक पैच बनने के बाद, व्यक्ति इस अवस्था में रहता है लेकिन कयामत के दिन पुनरुत्थान के रूप में एक और क्रांति की प्रतीक्षा कर रही है। शरीर के सभी बिखरे हुए कण फिर से शरीर में एकजुट हो जाएंगे और कयामत के दिन की भयावहता का सामना करने के लिए कब्र से ऊपर उठाया जाएगा। एक के आसपास के दृश्यों को देखकर कोई भी भयभीत हो जाएगा - न्याय का दिन चालू है, ब्रह्मांड हवा में कपास के गोले के रूप में चारों ओर बिखरा हुआ है, पृथ्वी सभी बदल गई है, पहाड़ चारों ओर उड़ रहे हैं, चंद्रमा, सूरज और सितारों ने इस रोशनी को खो दिया है, यह चारों ओर अंधेरा है, हर जगह एक कठोर स्वर्गदूतों के पंख देखेंगे, नरक अपने सभी निवासियों को बुला रहा होगा, अपराधी [जिन्होंने सभी प्रकार के अपराध, ज्यादतियों और बुराइयों को अंजाम दिया] स्वर्ग को खेदजनक तड़प के साथ देखेंगे, कर्मों का रजिस्टर (हर इंसान के लिए एक) खुला होगा, और अपराधियों को अपने कर्मों के रजिस्टर को पढ़ने के लिए कहा जाएगा [जो हर काम, अच्छे या बुरे को दर्ज करता है, मनुष्य द्वारा उनके सांसारिक अस्तित्व के दौरान किया गया]। वे पूछेंगे, "उन कर्मों के रजिस्टरों में क्या है?" उन्हें बताया जाएगा, "आपके सांसारिक जीवन में जहां आप बहुत खुश और घमंडी थे, आप में से हर एक पर दो स्वर्गदूत नियुक्त किए गए थे, जो आपके सभी शब्दों और कर्मों को लिखते थे, चाहे वे छोटे हों या बड़े, आपके खाने-पीने वाले, उठने और बैठने, सब कुछ इन कर्मों के रजिस्टर में लिखा है। आप भूल गए हैं लेकिन भगवान ने आपकी एक-एक हरकत और आपके हर मामले को [कर्मों के इस रजिस्टर में] कैद कर लिया है। आओ और जवाबदेही लें और [अपने कर्मों के लिए] जवाब देने के लिए तैयार रहें, अन्यथा सजा के लिए तैयार रहें। यह सुनते ही दिल डर से कांप उठेंगे, भले ही अभी कर्मों का रजिस्टर नहीं खोला गया हो। जब वे उन्हें देखेंगे, तो वे कहेंगे, "हाय! कर्मों के इन रजिस्टर में सब कुछ समाहित है! छोटे या बड़े, सभी पापों की गिनती यहाँ की गई है!"

यह मनुष्य का अंतिम अंत है! क्या इस अवस्था में किसी व्यक्ति के लिए अहंकार और श्रेष्ठता रखना स्वीकार्य है? अस्तित्व की शुरुआत और मध्यवर्ती अवधि में मनुष्य की स्थिति [जिसे इस दुनिया में जीवन कहा जाता है] ज्ञात है। यदि किसी को अंतिम अवस्था भी ज्ञात है, तो वह मनुष्य के बजाय सुअर या कुत्ता बनना चाहेगा, ताकि वह पता भी न सुने या [न्याय के दिन] किसी दंड का सामना न करे। वास्तविकता यह है कि, यदि कोई मनुष्य परमेश्वर के न्याय में नरक के योग्य है, तो एक सुअर एक से बहुत बेहतर है - यह पहले धूल थी और फिर से धूल बन जाती है, यह न तो जवाबदेही के चरण से गुजरेगी और न ही किसी दंड का सामना करेगी। जिसका अंत ऐसा है, उसे अहंकारी होने का क्या अधिकार है? कोई घमंडी और घमंडी कैसे हो सकता है? हाँ, यदि परमेश्वर किसी को क्षमा करता है तो यह एक अलग बात है [क्योंकि उस समय कोई खुश और गौरवान्वित हो सकता है]। कोई अपने आप में ऐसा क्या देखता है जो व्यक्ति को अपनी श्रेष्ठता और उत्कृष्टता के बारे में इतना आश्वस्त करता है? ऐसा कोई सेवक नहीं है जिसने पाप नहीं किया है और ईश्वरीय प्रतिशोध के योग्य हो गया है, सिवाय इसके कि परमेश्वर अपनी उदारता और दया से किसी को क्षमा करता है। उसकी दया से आशा की जाती है कि वह क्षमा करेगा। कोई नहीं जानता कि उसका अंतिम अंत क्या होगा। किसी के लिए न्याय के दिन की जवाबदेही के बारे में भय और

दुःख की स्थिति में रहना और उस दिन के अपमान और अपमान की प्रतीक्षा करना पर्याप्त है। यह अहंकार के ज्ञान-आधारित इलाज का विवरण था।

अहंकार का व्यावहारिक उपचार: अहंकार का व्यावहारिक इलाज यह है कि ईश्वर के लिए, व्यक्ति को परमेश्वर की रचनाओं के प्रति विनम्र लोगों के कार्यों को अपनाना चाहिए, और उनमें दृढ़ रहना चाहिए क्योंकि धर्मी लोगों की अवस्थाओं का उल्लेख करते हुए, नम्रता के इस गुण पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। किसी ने सलमान से पूछा, "आप नए कपड़े क्यों नहीं पहनते?" उसने उत्तर दिया, "मैं परमेश्वर का दास हूँ। जिस दिन मुझे (भगवान से) मुक्ति (स्वतंत्रता) की घोषणा मिलेगी, मैं नए कपड़े पहनूंगा। उन्होंने परलोक की स्वतंत्रता की ओर इशारा किया [जो व्यक्ति जीवन के परीक्षणों और परीक्षा को पारित करके प्राप्त करता है और ईश्वरीय जवाबदेही के अंत में न्याय के दिन सफल घोषित किया जाता है]। विनम्रता [विनम्रता] के कार्यों के माध्यम से पूरी (प्रभावित) होती है। यही कारण है कि अहंकारी अरबों [जो अभी भी पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के समय अज्ञानता के युग से बाहर आ रहे थे, जो उन्हें पूर्ण आध्यात्मिक परिवर्तन की ओर मार्गदर्शन कर रहे थे] को [ईश्वरीय रूप से] [ईश्वर में] विश्वास रखने और एक साथ [ईश्वर से] प्रार्थना करने का आदेश दिया गया था और उन्हें बताया गया था कि प्रार्थना ईश्वर के मार्ग की नींव है (दीन). प्रार्थनाओं में कुछ रहस्य और रहस्य होते हैं और इस आधार पर प्रार्थना को विश्वास की नींव कहना सही है। इन रहस्यों में से एक यह है कि प्रार्थना विनम्रता की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति है। परमेश्वर के सामने हाथ बांधकर खड़े होकर, झुकना और दण्डवत् करना [परमेश्वर के सामने] वे सभी कार्य हैं जो पूरी तरह से विनम्रता व्यक्त करते हैं [बशर्ते प्रार्थना के दौरान हृदय भी मौजूद हो]। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के आगमन से पहले, अरबों का यह स्वभाव था कि वे किसी के सामने सिर झुकाना पसंद नहीं करते थे, और उनके लिए प्रार्थना के सभी कार्य अपमान और नीचता के प्रतीक थे। [बुतपरस्त] अरबों ने साष्टांग प्रणाम के कार्य को [प्रार्थना की स्थिति में भगवान को] अपमान (विनम्रता) और नीचता की पराकाष्ठा के रूप में माना। इसीलिए, उन्हें सबसे पहले [भगवान में] विश्वास के बाद प्रार्थना करने की आज्ञा दी गई थी, ताकि यह कार्य [प्रार्थना करने का] उनके अभिमान और अहंकार को तोड़ दे ताकि दिलों में विनम्रता पैदा हो जाए।

नतीजा यह है कि, जो व्यक्ति ज्ञान (ईश्वर के मार्ग का ज्ञान और समझ) प्राप्त करता है, उसे उन सभी मामलों और कारणों पर नज़र रखनी चाहिए जो अहंकार का संकेत देते हैं, तो व्यक्ति को अपने विपरीतों पर कार्य करना चाहिए और उन कार्यों में दृढ़ रहना चाहिए ताकि व्यक्ति विनम्रता का आदी हो जाए।

हृदय तब तक सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र लक्षणों और आंतरिक स्वभाव (इखलाक) का बगीचा नहीं बनता जब तक कि इसे ज्ञान और कार्यों दोनों के फव्वारे से सिंचित नहीं किया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि [शारीरिक] अंग दृश्य (*'आलम अल-जहीर* या दृश्यमान दुनिया) के दायरे से संबंधित हैं और हृदय

[या आत्मा] स्वर्गदूतों के दायरे से संबंधित है (*'आलम अल-मलकूट* या आध्यात्मिक क्षेत्र)। दो लोकों के बीच में एक गुप्त क्षेत्र है। इसीलिए, अंगों की क्रियाएं निश्चित रूप से हृदय से प्रभावित होती हैं [क्योंकि हृदय मानव अस्तित्व का प्रमुख शासक है]।

अहंकार को ठीक करने की दूसरी विधि: यह उस अहंकार से संबंधित है जो उपरोक्त सात कारणों से संबंधित है। वास्तविक पूर्णता में ज्ञान और [अच्छे, पवित्र और धार्मिक] कार्य शामिल हैं और उनके अलावा कुछ भी नष्ट होने के लिए बाध्य है, भले ही यह स्पष्ट रूप से एक पूर्णता की तरह लग सकता है। ज्ञान और कार्यों के अलावा, हर पूर्णता एक कल्पित पूर्णता है। अहंकार के सभी सात कारणों का ज्ञान-आधारित और व्यावहारिक इलाज नीचे बताया गया है।

अहंकार का पहला कारण - वंश : जो व्यक्ति अपने वंश या वंशावली के कारण अहंकारी हो जाता है, उसे दो मामलों की गहरी समझ प्राप्त करके अपने हृदय को ठीक करना चाहिए। इस प्रकार के अभिमान और अहंकार का अर्थ यह है कि व्यक्ति किसी और की [कथित] पूर्णता से सम्मान प्राप्त करने का प्रयास करता है। यदि वंश के कारण अहंकारी व्यक्ति में व्यक्तिगत गुणों की कमी है, तो कोई अपने पूर्वजों की पूर्णता और महानता के कारण अपनी कमी को कैसे पूरा कर सकता है? दूसरे, अपने वास्तविक वंश को जानना चाहिए, दूसरे शब्दों में, अपने पिता और दादा के वास्तविक परिचय को जानना चाहिए। किसी का पिता भी शुक्राणु की एक गंदी बूंद से बना होता है और किसी के दादा (या परदादा) अब धूल हैं। मनुष्य की उत्पत्ति गंदगी है जो पैरों के नीचे रौंदी जाती है। क्या गंदगी (मिट्टी) से बने इंसान को अहंकार करना चाहिए? यदि यह कहा जाता है कि मनुष्य का गंदगी का वर्णन बहुत दूर है, तो हम कहेंगे, "फिर आपको उस चीज़ को बहुत बारीकी से देखना चाहिए जो कि शुक्राणु ड्रॉप है"। इस संबंध में, व्यक्ति को स्वयं को नीच समझना चाहिए। इस पर विचार करें! न पिता का कोई कुलीनता है और न दादा! उनकी संतानों में कुलीनता कहाँ से आई है [जो वर्तमान में आसपास है]? किसी की उत्पत्ति गंदगी है और एक शुक्राणु से आया है। यदि यह किसी का वास्तविक वंश है, तो यह बेहद बुरा है - एक (गंदगी) को पैरों के नीचे रौंद दिया जाता है और दूसरा (शुक्राणु) अगर यह शरीर को छूता है, तो उसे धोने की आवश्यकता होती है। जो वंश की इस वास्तविकता से अवगत है, वह कभी भी अहंकारी नहीं होगा। इस तथ्य से अधिक नीच क्या हो सकता है कि मनुष्य गंदगी और खून से बना है?

अहंकार का दूसरा कारण - सौंदर्य: अहंकार का दूसरा कारण सुंदरता [या सुंदरता] है। इसका इलाज किसी के आंतरिक अस्तित्व पर एक बुद्धिमान नज़र डालना है और किसी के बाहरी अस्तित्व को जानवरों की तरह नहीं देखना है। जो व्यक्ति आंतरिक अस्तित्व को देखता है, वह अपने दोषों, निंदनीय लक्षणों और कमियों से अवगत होता है जो किसी की [बाहरी] सुंदरता पर दोष लगाते हैं। इसके अलावा, मानव अंग गंदगी से भरे हुए हैं। ऐसी ही स्थिति है किसी के अस्तित्व के मध्य भाग की स्थिति [जो जन्म के बाद यह

सांसारिक जीवन है]। किसी की शुरुआत को पहले ही शुक्राणु और मासिक धर्म के रक्त के संयोजन के साथ शुरू किया जा चुका है। [इससे यह भी पता चलता है कि मनुष्य अपने मूल में बहुत विनम्र है]। फिर भी, जो इस वास्तविकता पर नजर रखता है कि वह गंदगी से पैदा हुआ है, गंदगी के साथ रहता है, और मृत्यु के बाद गंदगी बन जाएगा, वह अपनी सुंदरता पर गर्व नहीं कर सकता है। मानव सुंदरता की समानता वनस्पति की है जो कचरे के ढेर पर उगती है जो स्पष्ट रूप से मनभावन लगती है, भले ही इसकी उत्पत्ति गंदगी हो। या मानव सुंदरता की समानता जंगल के फूलों और वनस्पतियों की है जो मनभावन लगते हैं लेकिन कुछ समय बाद [सूखी] हवा उनके ऊपर चलने पर टुकड़ों (सूखी ठूंठ) में बिखर जाएगी। यहां तक कि अगर मानव सौंदर्य टिकाऊ और चिरस्थायी रहा हो [किसी के पूरे जीवनकाल में] और सभी दोषों से रहित हो, किसी को किसी ऐसे व्यक्ति पर गर्व और अहंकारी होने का अधिकार नहीं है जो सुंदर नहीं है क्योंकि जैसे किसी की सुंदरता व्यक्तिगत नहीं है [जैसा कि किसी ने इसे स्वयं नहीं बनाया है], किसी और की सुंदरता की कमी भी व्यक्तिगत नहीं है। सुंदरता टिकाऊ या लंबे समय तक चलने वाली नहीं है। हर समय, यह चिंता बनी रहती है कि यह पिंपल्स, चोट या किसी अन्य बीमारी के कारण दूर हो सकता है या चला सकता है। हर दिन और रात हम ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं जहां लोगों ने अपनी सुंदरता खो दी है [इसलिए सुंदरता जैसी अल्पकालिक और क्षणिक चीज़ पर गर्व और अहंकार होना, सरासर मूर्खतापूर्ण और घृणित है]।

अहंकार का तीसरा कारण - शक्ति और शक्ति: शक्ति और शक्ति अहंकार का एक और कारण है। इसका इलाज उन बीमारियों और बीमारियों पर विचार-विमर्श करना है जो मनुष्य पर थोपी गई हैं। यदि किसी को मानवीय असहायता का नमूना देखने की आवश्यकता है, तो यह उस समय देखा जा सकता है जब एक छोटा शारीरिक अंग दर्द से प्रभावित होता है जो व्यक्ति को सभी अक्षम लोगों की तुलना में अधिक अक्षम और सभी हताश लोगों की तुलना में अधिक हताश बनाता है। इंसान की लाचारी की स्थिति ऐसी होती है कि अगर मक्खी किसी चीज को ले भी जाती है, तो भी उसे वापस नहीं ले पाती है। यदि कोई महत्वहीन कीट, मच्छर या चींटी किसी के कान या नाक में प्रवेश करती है, तो वे बिना किसी मृत्यु के मार डालेंगे। यदि पैर या शरीर के किसी अन्य हिस्से में कांटा फंस जाता है, तो यह व्यक्ति को चलने में असमर्थ बना देगा। एक दिन तक चलने वाला बुखार ताकत का इतना नुकसान पहुंचा सकता है कि वर्षों का पोषण इसकी भरपाई नहीं कर सकता है। जो कांटा भी सहन नहीं कर सकता, मच्छर से नहीं लड़ सकता, या मक्खी से अपना बचाव नहीं कर सकता, उसे अपनी शक्ति और ताकत पर गर्व और घमंड भी होना चाहिए? इंसान कितना भी मजबूत क्यों न हो, गधे, गाय, हाथी या ऊंट से ज्यादा ताकतवर नहीं हो सकता। क्या कोई उस विशेषता पर गर्व व्यक्त कर सकता है जिसमें जानवर श्रेष्ठ हैं?

अहंकार का चौथा और पांचवां कारण – धन की प्रचुरता और बड़ी संख्या में समर्थक, सहायक, अनुयायी और प्रशंसक: अहंकार का एक कारण धन की प्रचुरता है। एक अन्य कारण दोस्तों, सहायकों, अनुयायियों और प्रशंसकों की बहुतायत है। इसमें राजाओं (सरकारी अधिकारियों) द्वारा दिए

गए रैंकों के कारण अहंकार भी शामिल है। यह अहंकार सुंदरता और ताकत पर अहंकार की तरह नहीं है क्योंकि सुंदरता और ताकत आंतरिक मानवीय गुणों का हिस्सा हैं, जबकि धन और बड़ी संख्या में दोस्तों को उनसे बाहर रखा गया है। इस प्रकार का अहंकार बेहद बुरा होता है जैसे कि कोई अपने घोड़े या घर पर अहंकार व्यक्त करता है। अब अगर घोड़ा मर जाता है या घर ध्वस्त हो जाता है, तो यह अहंकार समाप्त हो जाएगा, और व्यक्ति अपमानित हो जाएगा [क्योंकि कोई आंतरिक व्यक्तिगत गुणों से वंचित है, इसलिए, वे अधिक अल्पकालिक हैं]। जो राजाओं से पद या सम्मान प्राप्त करने के बाद अहंकार व्यक्त करता है, वह आंतरिक गुणों से वंचित होता है और एक ऐसे हृदय पर निर्भर होता है जो [उबलते] बर्तन से अधिक परेशान होता है। राजाओं का दिल बहुत जल्दी बदल जाता है। जब उनका किसी से मोहभंग हो जाता है, तो वे किसी भी चीज़ से बाज नहीं आते ताकि वह किसी को भयानक स्थिति में ले जाए। जो किसी ऐसी चीज पर अहंकारी है जो किसी के आंतरिक स्वभाव का हिस्सा नहीं है, वह शुद्ध अज्ञानी है। उदाहरण के लिए, धन एक ऐसा गुण है जो किसी के लिए आंतरिक नहीं है और एक ऐसा अंतर है जिसे एक चोर एक पल में चुरा सकता है और एक समृद्ध व्यक्ति को अपमानित और जरूरतमंद बना सकता है। वे गुण जो किसी के लिए आंतरिक नहीं हैं, स्थायी नहीं हैं, इसके बजाय, वे परलोक में कठिनाइयों और दंड का स्रोत बन जाते हैं। इन गुणों पर गर्व करना अज्ञानता है। इसके अलावा, ये परमेश्वर के हाथों में हैं जिन्होंने इन गुणों को प्रदान किया है, न कि मानव हाथों में। यदि वह चाहे तो उन्हें आपके लिए रख सकता है और यदि वह चाहे तो उन्हें जब्त कर सकता है। आप केवल खरीदे गए गुलाम हैं क्योंकि आपके पास किसी भी चीज़ पर कोई अधिकार नहीं है। इन तथ्यों से परिचित व्यक्ति अहंकार नहीं कर सकता। क्या उस अवस्था में कोई व्यक्ति [जिसका सब कुछ परमेश्वर के हाथों में है] किसी की क्षमता, धन, शक्ति और पूर्णता पर गर्व व्यक्त कर सकता है या अपने आप को अपमानित मान सकता है? ऐसी ही हर बुद्धिमान व्यक्ति की स्थिति होती है जिसके पास एक मर्मज्ञ अंतर्दृष्टि (*बसीराह*) होती है। ऐसा व्यक्ति समझता है कि वह न तो स्वयं का स्वामी है, न ही अपने शरीर, न अंगों या धन का। इसके बावजूद, व्यक्ति हानि, वासनाओं, कष्टों और बीमारियों से घिरा रहता है जो हर समय किसी के विनाश का खतरा पैदा कर रहे हैं। यह अहंकार के कारणों को ठीक करने का तरीका है जो मानव स्वभाव के लिए आंतरिक नहीं हैं।

अहंकार का छठा कारण – ज्ञान: ज्ञान पर अहंकार करना एक घातक रोग है। कभी-कभी इसका इलाज बहुत मुश्किल हो जाता है और इस बीमारी से उबरने के लिए कड़ी मेहनत और संघर्ष की आवश्यकता होती है। इसका कारण यह है कि जैसे परमेश्वर के पास ज्ञान का सम्मान महान है, वैसे ही यह [परमेश्वर के] सेवकों के साथ महान है। ज्ञान की तुलना में, धन और सौंदर्य का एक महत्वहीन दर्जा है, बल्कि, ज्ञान और कार्यों का प्रकाश [ज्ञान के आधार पर], उन्हें प्रशंसा और सम्मान प्रदान करता है। उमर (खुदा उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "एक विद्वान की गलती, जनता को गुमराह करती है"। ईश्वरीय कानून में ज्ञान की इतनी सारी उत्कृष्टता सूचीबद्ध है, कि यह कल्पना करना कठिन है कि एक विद्वान अपने बारे में बहुत अधिक नहीं सोचेगा और किसी की स्थिति को अज्ञानी से अधिक नहीं मानेगा।

ज्ञान पर अहंकार का इलाज यह है कि विद्वान को दो बातों पर विचार और चिंतन करना चाहिए। एक यह है कि परमेश्वर के प्रमाण एक विद्वान (या शैक्षिक धर्मशास्त्री) पर अधिक पूर्ण और दृढ़ हैं। इसके अलावा, एक अज्ञानी से जो सहन किया जाता है, उसका दसवां हिस्सा भी एक विद्वान द्वारा बर्दाश्त नहीं किया जाता है क्योंकि एक व्यक्ति जो ज्ञान और ज्ञान के बाद ईश्वर की अवज्ञा करता है, वह ईश्वर के ज्ञान के आशीर्वाद के अधिकारों का भुगतान न करने का सबसे बुरा पाप करता है। क़ुरआन में ख़ुदा कहते हैं:

وَٱتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ٱلَّذِىٓ ءَاتَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا فَٱنسَلَخَ مِنْهَا

"और इन लोगों को उस व्यक्ति की स्थिति का पूर्वाभ्यास करें जिसे हमने अपने छंद (ईश्वरीय संकेत, ज्ञान और ज्ञान ईश्वर के ज्ञान से निकलने वाले ज्ञान) प्रदान किए थे, लेकिन ऐसा व्यक्ति उनमें से बाहर निकल गया [अपने आप पर ईश्वरीय आशीषों की सराहना नहीं करने के कारण और इसके बजाय, क्षणिक और अल्पकालिक सांसारिक लाभ के लिए निम्न, आधार इच्छाओं के पीछे भाग गया]। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 175)

अगले पद में, परमेश्वर ने उसी व्यक्ति के बारे में यह कहा:

فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ ٱلْكَلْبِ إِن تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ

"तो, इस व्यक्ति की स्थिति एक कुत्ते की तरह हो गई जो हवा के लिए हांफता है यदि आप इसे मारते हैं और यदि आप इसे अकेला छोड़ देते हैं तो भी हवा के लिए हांफता है। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 176)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने [उपरोक्त दो आयतों की व्याख्या में] कहा कि [वे इसके बारे में प्रकट किए गए हैं] बलम बाऊरा (पैगंबर मूसा के समय में इज़राइल के बच्चों से उच्च आध्यात्मिक क्षमता के एक संत [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो]) को ईश्वर का ज्ञान प्रदान किया गया था, लेकिन [इसकी सराहना नहीं की और] इसके बजाय सांसारिक वासनाओं को प्राथमिकता दी, और परमेश्वर उसके समान एक कुत्ते से मिलता जुलता है जो सभी स्थितियों में हवा के लिए हांफता है। बालम भी एक कुत्ते की तरह व्यवहार करता था, क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि ज्ञान का खजाना उसे [ईश्वरीय उदारता और उदारता के कारण] दिया गया था या उसे नहीं दिया गया था, वह किसी भी परिस्थिति में अपनी वासनाओं को नहीं छोड़ेगा। विद्वान के लिए यही सबसे बड़ा खतरा है, कि एक विद्वान को अधिक जवाबदेही और गणना के अधीन किया जाएगा [किसी के कर्मों और कुकर्मों के लिए क्योंकि उनका जनता पर स्थायी प्रभाव पड़ता है, जो भविष्यद्वाणी के युग के अंत के बाद पैगंबरों के उत्तराधिकारी हैं, लोगों को सत्य की ओर मार्गदर्शन करने और उन्हें शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की ओर ले जाने वाले मार्ग की ओर ले जाने की जिम्मेदारी के साथ चार्ज किया गया है]। कौन सा विद्वान वह नहीं है जिसने लोगों को धार्मिकता के लिए प्रेरित किया और स्वयं को इससे वंचित रखा? एक विद्वान जो किसी के पद

को एक अज्ञानी की तुलना में श्रेष्ठ मानता है, उसे यह सोचना चाहिए कि भले ही किसी की स्थिति एक अज्ञानी से ऊपर है, लेकिन ऐसे व्यक्ति की तुलना में, एक विद्वान अधिक खतरनाक स्थिति में है [जनता की तुलना में उच्च नैतिक आधार पर होने की उम्मीद के कारण और जनता के लिए अनुसरण करने के लिए एक उच्च उदाहरण स्थापित करने के लिए]। [की प्राप्ति] यह खतरा अपने आप में अहंकार [ज्ञान पर] के लिए एक बाधा है।

यदि कोई आने वाले खतरों पर विचार करता है, तो एक में अहंकार का रत्ती भर भी नहीं छोड़ा जाएगा और वह रचनाओं में से एक महान व्यक्ति होने के बारे में नहीं सोचेगा। इसका दृष्टांत एक दास का है जिसे उसके स्वामी ने कुछ कार्य करने की आज्ञा दी है। [यह दृष्टांत बहुत उपयुक्त है क्योंकि सभी मनुष्य परमेश्वर के दास हैं और परमेश्वर उनका स्वामी सर्वोच्च है]। उन्होंने उन कार्यों को शुरू किया लेकिन उनमें से कुछ को छोड़ दिया। उनमें से कुछ काम किए गए लेकिन कमज़ोर तरीके से किए गए और कुछ पूरे हो गए लेकिन उन्हें संदेह रहता था कि क्या वह उन्हें अपने गुरु की इच्छा के अनुसार करने में कामयाब रहे या नहीं। उस दौरान, एक मुखबिर ने उसे सूचित किया, "आपके स्वामी ने आपको बुलाया है और वह आपको आपकी संपत्ति से वंचित कर देंगे और आपको अपमानित करेंगे। वह आपको गर्मी में तेज धूप में अपने दरवाजे के बाहर खड़ा कर देगा। जब आप बेहद व्याकुल और असहाय हो जाते हैं, तो वह आपकी जवाबदेही निभाएगा। जिन कार्यों को आपने सही ढंग से पूरा नहीं किया है या बिल्कुल भी पूरा नहीं किया है, वह आपसे उनके बारे में पूछताछ करेगा और आपकी सजा के लिए अपने निर्णय की घोषणा करेगा। फिर आपको एक अंधेरी कालकोठरी में कैद कर दिया जाएगा जहां आप हमेशा रहेंगे और आपको जरा सा भी आराम नहीं मिलेगा। वह दास यह भी जानता है कि उसके मालिक ने कई दासों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया है, भले ही उनमें से कुछ को माफ कर दिया गया हो। हालांकि, वह नहीं जानता कि वह दासों के किस समूह से संबंधित है - जो एक कठोर सजा में शामिल हैं या जिन्हें क्षमा की घोषणा दी गई है। इस वास्तविकता पर विचार-विमर्श करने से निचले स्व को विनम्रता की स्थिति में रखा जाएगा। अहंकार टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। व्यक्ति अपनी दृष्टि में महत्वहीन हो जाएगा। दुःख और भय किसी के दिल और दिमाग पर हावी हो जाएगा और कोई भी रचनाओं में से किसी भी विनम्र और तुच्छ व्यक्ति पर अहंकार करने में असमर्थ होगा, इसके बजाय, वह इस आशा पर सभी के साथ विनम्रता के साथ व्यवहार करेगा कि दूसरा व्यक्ति ईश्वरीय प्रतिशोध के समय एक [संभावित] मध्यस्थ हो सकता है। विद्वान के लिए गहन विचार-विमर्श के द्वार खुले हैं, यदि कोई पाप करके ईश्वरीय आज्ञाओं के उल्लंघन की मात्रा को देखता है - न केवल किसी ने पाप करने के साधन के रूप में बाहरी अंगों का उपयोग किया है, बल्कि किसी का आंतरिक अस्तित्व पापों का केंद्र रहा है [और अपराध] आडंबर (रिया*)*, ईर्ष्या (हसाद), आत्म-दंभ (*'उजुब*) और पाखंड (निफाक*)*). जाहिरा तौर पर, अंतिम अंत [ऐसे विद्वान या विद्वान धर्मशास्त्री का] अच्छा नहीं लगता है। अगर कोई विद्वान इस तर्ज पर सोचेगा तो वो अहंकार की गुलामी से मुक्ति दिलाएगा।

दूसरी बात जिसके बारे में एक विद्वान को सोचने की जरूरत है वह यह है कि अहंकार (भव्यता और महिमा) केवल भगवान के लिए उपयुक्त है। यदि कोई अहंकारी हो रहा है, तो वह परमेश्वर की नाराजगी के योग्य होगा और उसे परमेश्वर का भगोड़ा दास कहा जाएगा। परमेश्वर एक से विनम्रता चाहता है। यह दिव्य कहावतों में से एक है, "आपका मूल्य मेरे साथ तब तक है जब तक आपके अपने दिल में खुद का कोई मूल्य नहीं है। यदि आप अपने स्वयं के मूल्य पर विचार करते हैं, तो आपके पास मेरे पास कोई मूल्य नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक विद्वान को अपने आप से केवल उन कार्यों (कार्यों) को लेना चाहिए जो भगवान को पसंद हैं [और उन सभी चीजों से दूर रहना चाहिए जो भगवान को नापसंद हैं, क्योंकि भगवान के एक विद्वान और भगवान के मार्ग के बारे में जनता की तुलना में उच्च नैतिक और नैतिक मानकों की उम्मीद की जाती है]। इस वास्तविकता पर विचार करने से अहंकार को मिटाने की उम्मीद की जाती है, भले ही एक विद्वान को यह निश्चितता होती है कि किसी ने कोई पाप नहीं किया है या उसने कल्पना की है कि कोई भी पाप नहीं करेगा, जो किसी के दिल से अहंकार के अंधेरे को भी दूर करेगा। इस प्रकार के विचार-विमर्श, अंतर्दृष्टि और चिंतन ने भविष्यवक्ताओं से अहंकार को दूर करने में मदद की। उन्हें यह निश्चितता थी कि एक व्यक्ति जो ईश्वरीय महिमा, भव्यता और महिमा के इस गुण में ईश्वर के साथ प्रतिद्वंद्विता करता है, वह ईश्वर द्वारा निर्वासित (नीचे) हो जाता है। यह परमेश्वर की आज्ञा है कि अपने निचले स्व को नीच और महत्वहीन समझें ताकि परमेश्वर के पास तुम्हारा पद ऊपर उठे।

अहंकार का सातवां कारण – ईश्वर का भय: ईश्वरीय आज्ञाकारिता और पूजा के कार्यों पर अहंकार एक जबरदस्त क्लेश (*फितना*) है, और इलाज का तरीका यह है कि सभी रचनाओं के प्रति विनम्रता रखना अपने आप पर अनिवार्य है, और यह जानना कि किसी को ज्ञान के व्यक्ति पर अहंकार नहीं करना चाहिए, चाहे ऐसा व्यक्ति अपने ज्ञान पर कार्य करने में कैसा भी हो। कुरान कहते हैं:

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى ٱلَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ

"कहो (हे मुहम्मद)! क्या जो जानते हैं (ज्ञान रखते हैं) और जो नहीं जानते (जो अज्ञानी हैं) वे कभी भी समान हो सकते हैं? (कुरान, अध्याय 39, आयत 9)

इस पद के अलावा, कई अन्य छंद और भविष्यद्वाणी परंपराएं हैं जो ज्ञान की उत्कृष्टता की पुष्टि करती हैं [विशेष रूप से ईश्वरीय ज्ञान की]। यदि कोई उपासक व्यक्ति कहता है कि ये पद एक ऐसे विद्वान के बारे में प्रकट किए गए हैं जो किसी के ज्ञान पर कार्य करता है [जो ईमानदार है और सभी दोषों, कमियों और पाखंडों से रहित है] और न कि एक विद्वान के बारे में जो पाप करता है। इसका उत्तर यह है कि आपने इस आयत (कुरान से) पर विचार नहीं किया है:

إِنَّ ٱلْحَسَنَٰتِ يُذْهِبْنَ ٱلسَّيِّـَٔاتِ

"वास्तव में, अच्छे धर्म के कर्म बुरे कर्मों को मिटा देते हैं [जैसा कि ईश्वर द्वारा निर्देशित किया गया है कि किसी के अधर्मों, बुराइयों, अपराधों और पापों को मिटाने का तरीका किसी के जीवन को बदलकर उन्हें मिटा देना है। यह ईश्वर में विश्वास करने और अच्छे, धर्मी, महान, ईमानदार, सहायक और लाभकारी प्रयासों को करने से होता है जो किसी भी संभावित स्तर पर दूसरों की मदद करते हैं। (कुरान, अध्याय 11, श्लोक 114)

जिस तरह यह संभव है कि एक विद्वान को अपने ज्ञान के आधार पर जवाबदेह ठहराया जाएगा, उसी तरह यह भी संभव है कि ज्ञान एक विद्वान के लिए मोक्ष और अपने पापों के प्रायश्चित का साधन बन जाएगा। चूंकि एक उपासक को यह नहीं पता है कि एक विद्वान के साथ क्या व्यवहार किया जाना है, क्या जवाबदेही होगी या किसी को मोक्ष दिया जाएगा, इसीलिए, एक उपासक के लिए एक विद्वान को नीचा दिखाना मान्य नहीं है। इसके बजाय, किसी को एक विद्वान के प्रति विनम्र रहना चाहिए [एक विद्वान के पास मौजूद ज्ञान के सम्मान के कारण]। यहां यह कहा जा सकता है कि इस तरह, ज्ञान के धारकों (एक [धार्मिक] विद्वान या विद्वान धर्मशास्त्री) को उपासकों से श्रेष्ठ बने रहने और अहंकार करने का अवसर दिया जा रहा है क्योंकि ज्ञान पूजा से श्रेष्ठ है। जिस तरह उपासकों को विद्वानों पर अहंकार नहीं होना चाहिए, उसी तरह विद्वानों को भी अहंकार से बचना चाहिए और दोनों को अपने निचले स्व (नफ्स) के बारे में आशंकित होना चाहिए। मनुष्य को [दिव्य रूप से] अपने निचले स्व पर पहरेदार के रूप में नियुक्त किया गया है और इसके सही प्रशिक्षण के लिए जिम्मेदार है। इसीलिए, हर व्यक्ति के लिए अपने निचले स्व से आशंकित होना उचित है और दूसरों से संबंधित मामलों में, आशा और सकारात्मक विचार प्रमुख होने चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति बाहरी शरीर के अंगों से ही पूजा करता है, लेकिन हृदय में कुछ छिपे हुए पाप पैदा हो जाते हैं जिसके कारण व्यक्ति ईश्वरीय प्रतिशोध के योग्य हो जाता है। [कभी-कभी] एक व्यक्ति स्पष्ट रूप से बुराइयों में शामिल होता है, लेकिन किसी के दिल में, भगवान के प्रेम, ईमानदारी, ईश्वर के भय और सम्मान के प्रबुद्ध दीपक होते हैं। परमेश्वर किसी के हृदय की स्थिति को [इस तरह] उसके पापों के प्रायश्चित में परिवर्तित करता है। परिणाम न्याय के दिन सामने आएंगे जब कई खुले तौर पर बुरे लोग कई [भक्त] उपासकों की तुलना में बहुत बेहतर होंगे। यह संभव है और, इन मामलों में, किसी को दूर की संभावनाओं के बारे में निकट संभावनाओं के रूप में सोचना चाहिए और जब आप अपने [स्वयं] निचले स्व के लिए डरते हैं तो वह स्थिति विकसित होगी।

बुद्धि की मांग है कि आप इस बात पर ध्यान न दें कि दूसरों के लिए क्या संभव है, लेकिन आपको अपने आप से संबंधित मामलों पर विचार-विमर्श करना चाहिए जो चिंता का कारण हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के पापों की सजा का सामना करना पड़ता है, इसके अलावा, किसी और के दिव्य प्रतिशोध के कारण किसी के दिव्य प्रतिशोध में कोई कमी नहीं होती है। यदि आप इस पद्धति को

अपनाते हैं, तो आप कभी भी खुद को किसी और से श्रेष्ठ या बेहतर नहीं मानेंगे। दो प्रकार के लोग होते हैं - कुछ वे होते हैं जो आपसे बेहतर होते हैं और कुछ वे होते हैं जो आपसे भी बदतर होते हैं [उत्कृष्टता और आंतरिक गुणों में]। आपको इन दोनों समूहों के लोगों के प्रति विनम्रता रखनी चाहिए। यदि कोई आपसे बेहतर है [आंतरिक चरित्र लक्षणों, व्यक्तिगत गुणों, अच्छाई, धार्मिकता और आध्यात्मिकता में] तो आपको ऐसे व्यक्ति से मिलकर खुश होना चाहिए और यह इच्छा होनी चाहिए कि भगवान आपको ऐसा बनाते हैं। यदि कोई बदतर है, तो आपको यह सोचना चाहिए कि शायद यह व्यक्ति उद्धार अर्जित कर सकता है जबकि आप नहीं कर सकते हैं - शायद ऐसा व्यक्ति किसी के आंतरिक अस्तित्व में कुछ अच्छा करता है जो उसके लिए अच्छा हो सकता है या किसी की अच्छी आदत हो सकती है जिसके कारण भगवान उस पर दया कर सकते हैं और किसी के पश्चाताप को स्वीकार कर सकते हैं और सुंदर कार्यों के साथ एक अच्छा अंत प्रदान कर सकते हैं [अपने जीवन के अंत में]। मेरे धर्मी कर्म केवल बाहरी हो सकते हैं [ईश्वर के प्रति ईमानदारी की कमी के कारण कोई आंतरिक उत्कृष्टता के साथ] जो मेरे लिए अच्छा नहीं है, इसके बजाय पूजा के इन कार्यों में छिपे नुकसान का खतरा है [जैसे कि मेरी बाहरी धार्मिकता और दिखावे के साथ सांसारिक लाभ प्राप्त करना] जो किसी भी पुरस्कार को रद्द कर सकता है (किसी की दिव्य क्षमा के संदर्भ में ईश्वरीय प्रतिपूर्ति, उस पूजा की स्वीकृति और निकटता)। इस तरह के लोगों के विभिन्न समूहों के साथ व्यवहार करने के बाद ही, बुद्धि पूर्ण होगी, और कोई [नैतिक] नेतृत्व की भूमिका के योग्य हो जाएगा [अच्छाई में उत्कृष्टता प्राप्त करके]। फिर भी, जो नुकसान की संभावना के प्रति कर्तव्यनिष्ठ है, जैसा कि भाग्य के लेखक (भगवान) ने किसी के भाग्य में दुख लिखा हो सकता है, उसे कभी भी अहंकार नहीं होना चाहिए - यह बेहतर है कि डर इस तरह के व्यक्ति पर हावी हो और परिणामस्वरूप हर किसी को एक से बेहतर समझें।

आत्म-दंभ और उसके नुकसान की निंदा

आत्म-दंभ [या आत्म-धार्मिकता] की बुराई परमेश्वर की पुस्तक में और भविष्यद्वाणी के कथनों में सिद्ध होती है जैसा कि परमेश्वर कहता है:

وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا

"और वे इसी विचार (भ्रम) में बने रहे कि वे अच्छे काम कर रहे हैं [और उनके द्वारा कुछ भी गलत नहीं किया जा सकता है]। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 104)

इस आयत में कहा गया है कि मनुष्य के पास अपने कार्यों के बारे में अच्छे विचार और आत्म-धार्मिकता होती है - ऐसे समय में जब कोई गलती पर होता है और कभी-कभी जब वह गलती पर नहीं होता है। एक भविष्यसूचक कथन में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

ثَلٰثٌ مُهْلِكَاتٌ شُحٌّ مُطَاعٌ وَهَوًى مُتَّبَعٌ وَإِعْجَابُ الْمَرْءِ بِنَفْسِهِ

"तीन चीजें विनाशकारी हैं - कंजूसता जिसका कोई अनुयायी है, निचले स्व से आधारहीन इच्छाएं हैं जिनका वह अनुयायी है, और एक व्यक्ति जो अपने आप को महान मानता है [आत्म-दंभ की स्थिति में]"।

अब्दुल्लाह इब्ने मसूद (रइश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने फरमाया : "विनाश दो चीजों में है: निराशा और आत्म-धार्मिकता"। उन्होंने इन दो चीजों को जोड़ दिया क्योंकि *सादा* (शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता) प्रयासों, खोज और प्रयास के बिना प्राप्त नहीं की जाती है। निराश व्यक्ति न तो प्रयास करता है और न ही संघर्ष। एक आत्म-धर्मी व्यक्ति का यह विश्वास होता है कि उसने अपने वांछित लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है और इस विश्वास के कारण प्रयास भी नहीं करता है। पहले से मौजूद [या मौजूद माना जाता है] की तलाश नहीं की जाती है और असंभव की भी तलाश नहीं की जाती है। एक आत्म-धर्मी व्यक्ति सोचता है कि उसने शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता प्राप्त कर ली है और एक निराश व्यक्ति सोचता है कि इसकी तलाश करना असंभव है। दिव्य कहावत है:

فَلَا تُزَكُّوٓا۟ أَنفُسَكُمْ ۖ

"अपने आप को [आंतरिक] पवित्रता, पवित्रता और धर्मपरायणता का श्रेय न दें। (कुरान, अध्याय 53, श्लोक 32)

किसी ने आयशा से पूछा कि कोई कब बुरा हो जाता है? उसने जवाब दिया, "जब कोई सोचता है कि 'मैं अच्छा हूं'"। यह ज्ञात होना चाहिए कि आत्म-धार्मिकता के नुकसान असंख्य हैं। अन्य बातों के अलावा, यह अहंकार पैदा करता है और अहंकार से कई नुकसान होते हैं। ये नुकसान लोगों के साथ हैं। परमेश्वर से संबंधित मामलों में आत्म-धार्मिकता के तुलनात्मक रूप से अधिक नुकसान हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई आत्म-धार्मिकता में लिप्त है, तो वह पापों के बारे में भूल जाता है और उन पर कोई ध्यान नहीं देता है। व्यक्ति कुछ पापों को पूरी तरह से भूल जाता है और यदि उनमें से कुछ उसकी याद में आ जाते हैं, तो वह यह सोचकर उन्हें मिटाने के लिए कुछ भी नहीं करता है, "मैं [केवल] नेक कर्म करता हूं। मेरे 'पाप' पाप नहीं हैं। यदि वे मौजूद हैं, तो वे इतने महत्वहीन हैं कि उन्हें किसी सुधार या प्रायश्चित की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, कोई सोचता है कि उसके बड़े और छोटे पापों को परमेश्वर ने क्षमा कर दिया है। कोई व्यक्ति अपनी आराधना और धार्मिक कर्मों के बारे में बहुत सोचता है, उन पर गर्व और अहंकार व्यक्त करता है, बल्कि, वह उन्हें परमेश्वर पर अनुग्रह करने वाले व्यक्ति के रूप में सोचता है और भूल जाता है

कि वह परमेश्वर की उदारता और अनुग्रह के कारण धार्मिक कर्म करने में सक्षम था। जब मनुष्य अपने कार्यों पर आत्म-धार्मिकता व्यक्त करता है, तो वह अपने नुकसान से आंखें बंद कर लेता है जो किसी के सभी प्रयासों के बर्बाद होने का संकेत है। यदि बाहरी कर्मों को शुद्ध नहीं किया जाता है और [बुराइयों से] सभी संदूषणों से रहित नहीं किया जाता है, तो उनका लाभ बहुत कम होता है। केवल वही जो [परमेश्वर से] प्रभुत्व का भय रखता है, वह आत्म-धार्मिकता के नुकसान के बारे में पता लगाता है। आत्म-धार्मिकता से पीड़ित व्यक्ति को अपने निचले स्व (नफ्स) पर गर्व होता *है* और वह परमेश्वर के प्रति गर्व करता है, और सोचता है कि वह परमेश्वर के दंड से सुरक्षित और सुरक्षित है क्योंकि उसका परमेश्वर के सामने एक दर्जा है, महानता है, बल्कि, वह परमेश्वर पर यह अनुग्रह करता है और वह उस अधिकार पर है जिसे परमेश्वर अपने कार्यों के प्रति मानता है और उसे उसका प्रतिफल देता है। परमेश्वर पर तथाकथित व्यक्ति की कृपा, वास्तव में, परमेश्वर की आशीषें हैं, और किसी को दान हैं। आत्म-धार्मिकता व्यक्ति को आंतरिक शुद्धता की प्रशंसा करने और स्वयं को बताने के लिए मजबूर करती है।

जब किसी के पास अपने विचारों, कार्यों और बुद्धि पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा होती है, तो वह न तो दूसरे से लाभान्वित होता है और न ही किसी से परामर्श करता है, इसके बजाय अपनी राय पर जोर देता है और किसी ज्ञानी व्यक्ति से पूछना [स्वयं का] अपमान मानता है। कभी-कभी, कोई व्यक्ति मन में गलत विचारों पर आत्म-धार्मिकता रखने से खुश महसूस करता है क्योंकि ये उसके हृदय में घटित होते हैं, किसी और के हृदय में नहीं, तो वह अपने सही या गलत विचारों पर जोर देता है, न तो किसी उपदेशक की सलाह को सुनता है और न ही किसी उपदेशक के किसी उपदेश को स्वीकार करता है। इसके बजाय, कोई दूसरों को ऐसे देखता है जैसे कि वे अज्ञानी हैं और अपनी गलतियों पर जोर देते हैं। यदि सांसारिक मामलों में गलत राय व्यक्त की गई है, तो व्यक्ति अपने उद्देश्य से वंचित हो जाता है और यदि विश्वासों से संबंधित मामलों में ऐसा होता है, तो व्यक्ति को हमेशा के लिए नुकसान होता है। यदि किसी ने अपने स्वयं के [भ्रामक] विचारों पर भरोसा नहीं किया होता और कुरान के प्रकाश से रोशनी प्राप्त की होती, धार्मिक विद्वानों से मदद मांगी होती, ज्ञान के अध्ययन और ज्ञान के संग्रह में दृढ़ रहता, ज्ञान और ज्ञान के लोगों से कानूनी मामलों (*मसा-इल* या शैक्षिक धर्मशास्त्र) से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मांगने का कार्य जारी रखा होता, तब कोई निश्चित रूप से सत्य पर पहुंच गया होता। आत्म-धार्मिकता का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि व्यक्ति सफलता के अनुमान (अनुमान या भ्रम) में लिप्त हो जाता है, और इसलिए प्रयास और प्रयास करने में आलसी हो जाता है, और सोचता है कि उसे [आध्यात्मिक मार्ग में] हर [धार्मिक] कार्य की आवश्यकता नहीं है, भले ही, वह [धार्मिक] कर्मों से बेखबर नहीं है, और निश्चित विनाश उसकी नियति है। हम [*उसके प्रति*] *आज्ञाकारिता के लिए ईश्वर से* क्षमता की दिव्य बंदोबस्ती (हुस्न अल-तौफीक) की सुंदरता की तलाश करते हैं।

आत्म-धार्मिकता के कारण और उनका इलाज

यह ज्ञात होना चाहिए कि अहंकार के कारण भी आत्म-धार्मिकता के कारण हैं। अहंकार के कारणों को पहले भी समझाया जा चुका है। कभी-कभी, आत्म-धार्मिकता उन कारणों से उत्पन्न होती है जो अहंकार का कारण नहीं बनते हैं, जैसे कि किसी की दोषपूर्ण राय पर आत्म-धार्मिकता जो किसी की अपनी अज्ञानता के कारण किसी को अच्छी लगती है। आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा के आठ कारण हैं:

पहला कारण यह है कि शारीरिक गुणों और विशेषताओं जैसे कि शरीर की सुंदरता (शारीरिक संरचना), रूप, स्वास्थ्य, शक्ति, अंगों का संतुलन, चेहरे की सुंदरता, आवाज की सुंदरता आदि पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा करना और इसके परिणामस्वरूप, व्यक्ति यह भूल जाता है कि शारीरिक सौंदर्य ईश्वर का आशीर्वाद है जो घटना और नष्ट होना तय है । इसका इलाज वैसा ही है जैसा हमने अहंकार के अध्याय में लिखा है कि जिस व्यक्ति को अपनी सुंदरता पर अहंकार है, उसे अपनी शुरुआत और अंत की गंदगी की कल्पना करनी चाहिए और सोचना चाहिए कि कितने सुंदर और सुंदर लोग देश में सोए हैं (उनके निधन के बाद उनकी कब्रों में दफन हो गए हैं) और उनके फूल जैसे चेहरे उनकी कब्रों के अंदर गंदगी का ढेर बन गए हैं।

दूसरा कारण: क्या किसी के पास अपनी ताकत और शक्ति पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा है जो एक युद्ध में [पहले] हमला करने की इच्छा पैदा करती है, खुद को विनाश में डालती है, दुश्मन को मारने वाला पहला व्यक्ति होता है [एक लड़ाई में]। इसके इलाज का उल्लेख पहले किया गया था कि इस बात पर विचार करना चाहिए कि बुखार का एक दिन भव्यता के सभी विचारों को एक में निकाल सकता है और व्यक्ति की सारी ताकत को नष्ट कर देगा जो व्यक्ति को गर्व के साथ घूमने का कारण बनता है। यदि किसी के पास अपनी शक्ति और शक्ति पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा है, तो यह संभव है कि परमेश्वर किसी व्यक्ति [या लोगों या राष्ट्र के एक पूरे समूह] पर एक आपदा थोप देता है और इस शक्ति और शक्ति को छीन लेता है [जो उनके अहंकार को बढ़ावा दे रहा है]।

तीसरा कारण: यह है कि किसी के पास अपनी बुद्धि, बुद्धि, अंतर्दृष्टि और दूरदर्शिता पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा है और यह सोचने के लिए कि वह सांसारिक और धार्मिक मामलों के पीछे की सूक्ष्मताओं और आंतरिक ज्ञान से अच्छी तरह परिचित है। ऐसा व्यक्ति स्व-विचारशील (अपनी राय से आसक्त होता है) और किसी के साथ परामर्श नहीं करता है, इसके बजाय, व्यक्ति सभी लोगों को पूर्ण अज्ञानी के रूप में सोचता है जो एक से असहमत हैं। ऐसे व्यक्ति का ज्ञान और अंतर्दृष्टि वाले लोगों से बहुत कम लेना-देना होता है, इसके बजाय ऐसा व्यक्ति यह साबित करने के लिए लोगों की बात भी ध्यान

से नहीं सुनता है कि, "मैं अपनी राय और बुद्धि में पूर्ण हूँ और मुझे किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है, इसके बजाय, सभी ज्ञानी लोग मुझसे कमतर हैं और मेरी तुलना में नीच और पतित हैं"। इसका इलाज [अहंकार, आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा] परमेश्वर का धन्यवाद करना है कि उसने एक बुद्धि और समझ प्रदान की। यह भी सोचना चाहिए कि यदि कोई मानसिक रोग से पीड़ित हो जाता है, तो क्या वह एक बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति होने का दावा कर पाएगा? यह संभव है कि कोई ऐसी बीमारी से संक्रमित हो जाए जो व्यक्ति को सभी चेतना और जागरूकता से बेखबर कर दे, और [परिणामस्वरूप] कोई सड़कों पर [बचकाने] घूमता है, और छोटे बच्चे किसी के कार्यों को देखेंगे और उन्हें मनोरंजक समझेंगे और उन पर हंसेंगे। यह संभव है कि अपनी बुद्धि पर आत्म-प्रशंसा और अहंकार रखने और बुद्धि देने वाले (ईश्वर) को धन्यवाद न देने से उसकी बुद्धि दूर हो जाती है। एक आस्तिक को अपने ज्ञान और बुद्धि के बारे में कम सोचना चाहिए, भले ही वह बोधगम्य, बुद्धिमान और शिक्षित हो, जिसके पास जानकारी का एक विस्तृत चक्र हो। यह भी एक तथ्य है कि ज्ञान की प्रचुरता और जानकारी की विशालता के बावजूद मनुष्य अज्ञानी रहता है और यह कि अन्य जानकारी [जो कोई जानता है] वह कुछ है जो दूसरों को पता है। जब अन्य मनुष्यों की तुलना में किसी व्यक्ति के ज्ञान की स्थिति ऐसी होती है, तो उस ईश्वर की तुलना में किसी के ज्ञान की स्थिति क्या होगी जिसके ज्ञान में वह विशालता है जो अथाह महासागरों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है। अपनी बुद्धि को कमी के रूप में मानना [और किसी के ज्ञान को बहुत कम मानना], बहुत ही ज्ञान है। देखो

उन मूर्खों पर जो किसी और को उनसे अधिक बुद्धिमान नहीं मानते, हालांकि अन्य लोग उनकी मूर्खता पर हंसते हैं। स्वयं आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा का अभ्यास करके मूर्ख व्यक्तियों की सूची न बढ़ाएं। बौद्धिक रूप से कमजोर व्यक्ति को बुद्धि में अपनी कमी के बारे में पता नहीं होता है और अपनी मूर्खता के कारण सोचता है कि वह बुद्धिमान है। किसी की बुद्धि का निष्पक्ष मूल्यांकन करना बेहतर है, किसी और की राय पर भरोसा न करना, विशेष रूप से अपने दोस्तों के बारे में जो एक गुलाबी तस्वीर बनाते हैं और अपनी झूठी प्रशंसा से किसी की आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा में वृद्धि करते हैं।

चौथा कारण: यह है कि किसी के पास हाशमी वंश के कुछ लोगों की तरह अपने वंश पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा है (बानू हाशिम वह जनजाति है जिससे पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से संबंधित थे)। उनमें से कई लोग इस आत्म-भ्रमपूर्ण विचार को आश्रय देते हैं कि उनके वंश की महानता उनके उद्धार की गारंटर है, और उन्हें उनके पूर्वजों [जो धर्मपरायणता और नैतिक उत्कृष्टता के मॉडल थे] के कारण क्षमा कर दिया जाएगा। कुलीन वंश के कुछ लोग सोचते हैं कि सभी लोग उनके नौकर और गुलाम हैं। इसका इलाज यह सोचना है कि, "मैंने अपने पूर्वजों का विरोध किया [उनके उदाहरण (आचरण के पैटर्न) के खिलाफ जाकर] और मूर्खता के कारण यह सोचने लगा कि मैं उनके बराबर हो गया, भले ही यह मेरी गलती है। मैं उनके नक्शेकदम पर चलकर उनके जैसा बन सकता हूं, लेकिन मैं उनका अनुसरण नहीं करता। क्या उन्होंने आत्म-धार्मिकता का अभ्यास किया? उनके पास आत्म-धार्मिकता कहाँ थी? इसके बजाय, वे पूर्ण विनम्रता के अवतार थे। ईश्वर-भय उनकी रगों में और उनके प्राणियों के तंतु में समाया हुआ था। वे नीच चीजों में से सबसे नीच को अपने से श्रेष्ठ

मानते थे। उनका अपना स्वयं (*नफ्स*) उनकी अपनी दृष्टि में नीच और पतित था, भले ही वे [आध्यात्मिक पदों में] उच्च थे, उनके वंश के कारण नहीं बल्कि उनके ज्ञान, ईश्वरीय आज्ञाकारिता, विनम्रता और उनके जैसे अन्य सुंदर [आंतरिक] गुणों के कारण। उनके जैसा बनने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति उनका अनुसरण करे और उनकी अच्छी आदतों को अपनाए। परमेश्वर मानव वंश और वंशावली के बारे में निम्नलिखित कहता है:

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَـٰكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ

"ऐ लोगो! हमने आप सभी को एक पुरुष और एक महिला से बनाया है (यानी, आदम और हव्वा से [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन दोनों पर हो], इसलिए इकाई मानवता, शुरू से लेकर समय के अंत तक, एक ही वंश है)। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 13)

इसका मतलब है कि आपके वंश (जाति, जातीयता, रंग, वंशावली, जनजातियों, समुदायों और राष्ट्रों) के संदर्भ में आपस में कोई अंतर नहीं है [क्योंकि आप सभी ईश्वर की दृष्टि में समान हैं और जाति, रंग, क्षेत्र, संस्कृति, राष्ट्रीयता और इस तरह के अन्य गुणों के आधार पर किसी पर भी किसी से श्रेष्ठता नहीं है]। आप में से हर एक एक पुरुष और एक महिला से पैदा हुआ है। इस [श्लोक] के बाद, परमेश्वर वंश के लाभ (ज्ञान) की व्याख्या करता है:

وَجَعَلْنَـٰكُمْ شُعُوبًا وَقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوٓا۟ ۚ

"और उसने तुम्हें अलग-अलग राष्ट्रों और जनजातियों में बनाया ताकि तुम एक दूसरे को पहचान और जान सको। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 13)

[नस्लीय, जातीय, रंग, क्षेत्रीय, आदिवासी और राष्ट्रवादी मतभेदों के पीछे दिव्य ज्ञान एक-दूसरे को जानना, सराहना करना, सम्मान करना और प्यार करना और न्याय और समानता के आधार पर एक-दूसरे के साथ सौहार्दपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण संबंध रखना है]। उसके बाद, भगवान कहते हैं कि भेद और सम्मान पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर (तक़वा) के भय पर आधारित है, न कि वंश पर:

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ

"परमेश्वर की दृष्टि में, जो तुम्हारे बीच अधिक सम्मान रखता है, वह वह है जिसके पास परमेश्वर का अधिक भय, श्रद्धा और भय है [और परमेश्वर उसका न्यायाधीश है, तुम नहीं हो]। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 13)

पांचवां कारण: यह है कि किसी के पास क्रूर शासकों (अधिकार और शक्ति के लोगों) के सहायकों और समर्थकों के लिए खुद को जिम्मेदार ठहराने और विश्वास और [आध्यात्मिक] ज्ञान के लोगों के लिए किसी के आत्मीयता को कोई महत्व नहीं देने के द्वारा आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा है। इसका इलाज क्रूर शासकों और उनके सहयोगियों की अपमानजनक गतिविधियों पर एक नज़र डालना और यह देखना है कि वे परमेश्वर के सेवकों पर कैसे अत्याचार करते हैं, और देखें कि वे परमेश्वर (दीन) के मार्ग में कितनी शर्मनाक तरीके से उथल-पुथल फैलाते हैं। ये लोग परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं। यदि कोई नरक में अपने चेहरों को देख सकता है जो गंदगी और बदबू की लहरों से लदे हुए हैं, तो वह इतनी घृणा और घृणा विकसित करेगा कि वह उनके नामों का उल्लेख भी नहीं करेगा, इसके बजाय, अपने आप को उनके सभी संबंधों से मुक्त कर देगा और जो उनके साथ जुड़ता है उसे दोषी ठहराएगा। यदि यह उनके सामने प्रकट हो जाता है, तो ये क्रूर लोग न्याय के दिन कितना अपमान सहन कर रहे हैं, स्वर्गदूत अपने चेहरे पर उन्हें नरक में घसीटने के लिए अपने बालों को खींच रहे हैं, कोई अपने आप को कुत्तों और सूअरों के लिए जिम्मेदार ठहराना पसंद करेगा, लेकिन यह नहीं चाहेगा कि कोई भी उन मनुष्यों को दोषी ठहराए जिनके पास दुष्ट और कुटिल आंतरिक प्राणी हैं। क्रूर लोगों की संतानों का अधिकार, यदि परमेश्वर उन्हें उत्पीड़न करने से बचाता है, तो ईश्वर (दीन) के लिए उनके मार्ग की सुरक्षा के लिए परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करना और अपने पूर्वजों से इस शर्त पर क्षमा मांगना है कि वे विश्वासी थे।

छठा कारण: यह है कि कोई व्यक्ति संतानों, नौकरों, रिश्तेदारों, दोस्तों, सहायकों और अनुयायियों की प्रचुरता पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा व्यक्त करता है जैसा कि मक्का के अविश्वासी करते थे। इसका इलाज वही है जैसा अहंकार के संबंध में बताया गया था कि व्यक्ति को अपनी और उन लोगों की कमजोरी पर विचार करना चाहिए जिनकी प्रचुरता से व्यक्ति को गर्व होता है। इसके अलावा, किसी को यह सोचना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति एक जरूरतमंद और महत्वहीन इंसान है जो न तो किसी के लाभ का मालिक है और न ही किसी के नुकसान का। इसके अलावा, इन लोगों के कारण आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा व्यक्त करने का क्या लाभ है जो मृत्यु के साथ [एक से] अलग हो जाएंगे? एक व्यक्ति अकेले ही अपनी कब्र पर जाएगा। न तो कोई मित्र होगा और न ही दुःख का कोई भागीदार होगा। कोई सहानुभूतिपूर्ण परिचित व्यक्ति नहीं होगा, कोई पिता नहीं होगा, कोई संतान नहीं होगी, अपने स्वयं के लोग उसे अपने हाथों से कब्र में डाल देंगे और एक को कीड़े-मकोड़े, सांप और बिच्छू के हवाले कर देंगे। यही वह समय होगा जब किसी को उन सभी की आवश्यकता होगी, लेकिन उनका कोई फायदा नहीं होगा। इसी तरह, वे न्याय के दिन अपनी आँखें फिर लेंगे, इसके बजाय, वे [एक से] भाग जाएंगे। उस दिन के दृश्यों को कुरान द्वारा इस प्रकार खींचा गया है:

يَوْمَ يَفِرُّ ٱلْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾
وَأُمِّهِۦ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾ وَصَٰحِبَتِهِۦ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾

"उस दिन कोई अपने भाई, माता, पिता, जीवनसाथी और संतान से दूर भाग जाएगा। (कुरान, अध्याय 80, आयत 34-36)

गर्व व्यक्त करने या उन लोगों की उपस्थिति पर खुशी मनाने का क्या लाभ है जिनकी सख्त जरूरत होने पर कोई फायदा नहीं होता है और जब वे [सबसे अधिक जरूरत होती है] से बचते हैं? कब्र में, न्याय के दिन, और *सीरत* के पुल पर (जिसके दूसरे छोर पर नरक पर एक संकरा पुल है, जो बालों से पतला और तलवार से भी तेज है और प्रत्येक व्यक्ति को न्याय के दिन उस पुल से गुजरना होगा जैसा कि भविष्यवाणी की शिक्षाओं द्वारा समझाया गया है), एक मनुष्य केवल अपने [पवित्र, धार्मिक] कर्मों और ईश्वरीय कृपा से लाभान्वित होगा। जिनके पास न तो अपने लाभ-हानि पर अधिकार है, न ही अपने जीवन और मृत्यु पर कोई नियंत्रण है, वे किसी और को क्या लाभ दे सकते हैं?

सातवां कारण: यह है कि व्यक्ति अपने धन और भौतिक संपत्ति पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा व्यक्त करता है। इसका इलाज धन और भौतिक संपत्ति के नुकसान और गरीबों की उत्कृष्टता और स्वर्ग में प्रवेश करने में उनकी प्राथमिकता पर एक नज़र डालना है। इसके अलावा, किसी को यह देखना चाहिए कि धन एक ऐसी चीज है जो आती है और जाती है, इसका कोई स्थायित्व नहीं है। इसके अलावा, धन एक ऐसी विशेषता नहीं है जो विश्वासियों के लिए विशिष्ट है क्योंकि कई अविश्वासियों के पास अधिक धन होता है। अबू धर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि वह पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के साथ एक मस्जिद में प्रवेश किया और उन्होंने उनसे कहा: "हे अबू धर! अपना सिर उठाओ!" जब उसने किया, तो उसने एक बहुत अच्छे कपड़े पहने हुए आदमी को देखा। थोड़ी देर बाद उसने फिर से अपना सिर उठाया और उसकी नजर एक ऐसे आदमी पर पड़ी जिसके कपड़े बहुत पुराने थे। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

هٰذَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِنْ قِرَابِ الْأَرْضِ

"यह व्यक्ति, भगवान की दृष्टि में, पूरी पृथ्वी से बेहतर है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्न हिब्बन फी सहीहा* अबू धर के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

यह और अन्य सभी समान परंपराएं पिछली पुस्तकों (अध्यायों) में सांसारिकता से परहेज, सांसारिकता के नुकसान और धन के नुकसान पर उल्लिखित हैं, जो अमीरों की निम्न स्थिति और गरीबों के सम्मान का स्पष्ट प्रमाण प्रदान करती हैं। इन परंपराओं को ध्यान में रखते हुए, एक मुसलमान (या उस मामले के लिए किसी के लिए) से यह कल्पना भी नहीं की जा सकती है कि वह अपने धन पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा करता है। इसके बजाय, यदि किसी आस्तिक के पास धन है, तो ऐसे व्यक्ति को यह डर होना चाहिए कि वह धन के अधिकारों और दायित्वों को पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकता है। जिसके पास इस

प्रकार की आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा है, उसका धन अपने लिए अपमान के अलावा और कुछ नहीं है।

आठवां कारण: यह है कि व्यक्ति अपनी गलत राय पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा व्यक्त करता है। भगवान कहते हैं:

يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا

"ये लोग इस विचार (गलत अनुमान) में हैं कि वे अच्छे काम कर रहे हैं [हालांकि, वे नहीं हैं]। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 104)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आत्म-धार्मिकता और किसी की राय के लिए आत्म-प्रशंसा के बारे में [निम्नलिखित] कहा: "इस राष्ट्र के लिए (कयामत के दिन से पहले दुनिया का अंतिम चरण), लोगों की अपनी राय पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा करने की प्रवृत्ति [चाहे वे कितने भी गलत क्यों न हों,] प्रमुख हो जाएगी। पिछले राष्ट्र इस प्रवृत्ति के कारण नष्ट हो गए कि वे [सांप्रदायिक] समूहों में शामिल हो गए, हर राष्ट्र (*उम्मा*) कई संप्रदायों में विभाजित हो गया, हर संप्रदाय सोचता था कि उसकी मान्यताएं सही हैं। (यह परंपरा एक परंपरा की ओर इशारा कर रही है *हदीस अबू थालाबा के अधिकार पर अबू* दाऊद *और* तिर्मिज़ी *को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

धार्मिक मामलों में नवाचार के सभी लोग (बिदा) और गुमराह (*दलाल*) इन [दो] चीजों पर जोर देते हैं क्योंकि उनके पास अपनी राय पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा है [और इस अहंकार के कारण सांप्रदायिक विभाजन हुआ]। *धार्मिक मामलों में नवाचार (बिद)* पर आत्म-धार्मिकता और आत्म-प्रशंसा ('*उजुब*) का अर्थ यह है कि कोई उस क्रिया को बेहतर मानता है, जो किसी की इच्छा से उत्पन्न हुआ है [निचले आधार स्वयं से] और अपने विचार में, इसे सही मानता है। इस प्रकार की आत्म-धार्मिकता का इलाज बहुत कठिन है क्योंकि गलत राय वाला व्यक्ति किसी की गलतियों से परिचित नहीं हो सकता है और उस बीमारी को ठीक नहीं किया जा सकता है जिससे वह परिचित नहीं है। अज्ञानता एक ऐसी बीमारी है जिसे समझा नहीं गया है। हालाँकि, एक ज्ञानवादी (ईश्वर का ज्ञाता) किसी अज्ञानी को उसकी गलती के बारे में सूचित कर सकता है और इस बीमारी को दूर करने का स्रोत बन सकता है, लेकिन अगर उस अज्ञानी को किसी की अज्ञानता पर गर्व है, तो वह ज्ञानवादी क्या कर सकता है? जो ज्ञानवादी पर ध्यान भी नहीं देता है, जिसकी बात सुन सकती है और किसी की बीमारी को दूर कर सकती है, वह बिल्कुल विपरीत रास्ते पर जाता है और ज्ञानवादी को दोष देता है। भगवान ने एक पर एक आपदा थोपी है [कि किसी को अपनी गलत राय पर गर्व है और] जो विनाशकारी है, लेकिन कोई इसे आशीर्वाद के रूप में सोचकर प्रसन्न होता है। जाहिर है कि ऐसी बीमारी का इलाज भी संभव नहीं है। कोई किसी ऐसी चीज़ से

कैसे घृणा कर सकता है जिसे कोई व्यक्ति अपने लिए विशिष्टता का स्रोत मानता है? इसका उच्च-स्तरीय इलाज हमेशा किसी की राय को संदिग्ध मानना है, दूसरे शब्दों में, यह सोचें कि किसी की राय गलत हो सकती है और किसी की राय की सत्यता पर निर्भर (विश्वास) नहीं करती है।

जो अपने जीवन का हर पल शिक्षा और शिक्षा के लिए समर्पित नहीं कर सकता है, उसे धार्मिक प्रश्नों (विभिन्न कानूनी मामलों पर *मसा-इल* या न्यायिक पद) में उलझने की आवश्यकता नहीं है। किसी को केवल ईश्वर की एकता में विश्वास होना चाहिए और उसका कोई साथी नहीं है, कोई भी उसके जैसा नहीं है, मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) वास्तव में उसके पैगंबर हैं और वह जो लाया है [पूरी मानवता के लिए ईश्वरीय मार्गदर्शन के संदर्भ में] वह सत्य है। इसके अलावा, किसी को पवित्र पूर्ववर्तियों [जो भविष्यवक्ताओं के उत्तराधिकारी हैं] की पद्धति पर कार्य करना चाहिए, बहस और तर्कों के बिना कुरान के आदेशों और भविष्यद्वाणी के तरीके को स्वीकार करना चाहिए, और बिना सवाल किए, पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर के भय को अपनाना चाहिए [किसी भी ऐसी चीज से दूर रहना जो स्वयं के लिए हानिकारक या हानिकारक है], पापों से दूर रहें, और अच्छे धर्मकर्मों में लिप्त रहें [अपने और दूसरों के लाभ के लिए]। यदि कोई व्यक्ति [गहरे बोधगम्य] ज्ञान की कमी के बावजूद धार्मिक बहस में लिप्त होता है और विश्वासों के पूर्वाग्रह और नवाचार के प्रदूषण (धार्मिक *मामलों में बिडा या नई चीजें जो स्थापित सिद्धांतों का उल्लंघन करती हैं) और गुमराह (दलाल*) से खुद को नहीं बचाता है, तो वह अगोचर रूप से नष्ट हो जाएगा (आध्यात्मिक रूप से बोलना जिसका किसी के भौतिक अस्तित्व के लिए भी गहरा प्रभाव पड़ता है)। पूरी तरह से ज्ञान के लिए समर्पित लोगों की जिम्मेदारियां भी कम नहीं हैं। सबसे पहले, उन्हें तर्कों और शर्तों से परिचित होना चाहिए। इस परिचितता को प्राप्त करने का चरण इतना विस्तृत उन्मुख होता है कि कभी-कभी सत्य को जानना कठिन हो जाता है [क्योंकि सत्य के मार्ग में सूक्ष्मताएं होती हैं जिन्हें समझने में जीवन भर लगातार प्रयास करना पड़ता है]। केवल वही लोग इस अथाह समुद्र के तट पर पहुंचते हैं जो ज्ञान में दृढ़ता से समाए हुए हैं और जिनके पास ज्ञान की दिव्य रोशनी का प्रकाश है [जो उनकी आंतरिक आत्माओं को रोशन करता है और भीतर के सभी अंधेरे को दूर करता है]। ऐसे बहुत कम लोग हैं। अधिकांश लोगों ने विद्वानों के बाहरी स्वरूप को अपनाया है लेकिन उनके आंतरिक अस्तित्व में, अज्ञान सर्वोच्च है।

गर्व और लापरवाही की निंदा

सतर्क और सतर्क होना [किसी की आत्मा के भीतर बुराई के सभी आक्रमणों के खिलाफ] एक मनुष्य के लिए शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता का कारण है, और गर्व और लापरवाही में डूबा हुआ होना (जीवन के सच्चे उद्देश्य के प्रति लापरवाही और बेखबर और बुराई की घुसपैठ के प्रति जो अंततः आंतरिक

अस्तित्व को पूर्ण अंधकार में डुबो देता है) शाश्वत दुःख और अभिशाप का कारण है। ईश्वर (मनुष्य) के दास के लिए, विश्वास और ज्ञान (मारिफा या ईश्वर के साथ निकटता और अंतरंगता) से बड़ा कोई आशीर्वाद नहीं है, और इस आशीर्वाद को प्राप्त करने का साधन हृदय का विस्तार है (*शराह सद्र*) [जो आंतरिक रोशनी के माध्यम से होता है जो बदले में आंतरिक अस्तित्व को शुद्ध करने के लिए आध्यात्मिक संघर्ष का परिणाम है]। इसके विपरीत, अविश्वास और अपराध (पाप या परमेश्वर की सीमाओं को पार करना) से बुरा कुछ भी नहीं है और यह बुराई केवल उन लोगों की नियति बन जाती है जो अज्ञानता और हृदय के अंधकार की धुंधलापन में डूबे हुए हैं। अंतर्दृष्टि (आंतरिक रोशनी) के लोगों के दिलों का उदाहरण इस प्रकार है:

۞ ٱللَّهُ نُورُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِۦ كَمِشْكَوٰةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ
ٱلْمِصْبَاحُ فِى زُجَاجَةٍ ۖ ٱلزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ
زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِىٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ
عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِى ٱللَّهُ لِنُورِهِۦ مَن يَشَآءُ ۚ وَيَضْرِبُ ٱللَّهُ ٱلْأَمْثَٰلَ لِلنَّاسِ ۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ
شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾

"परमेश्वर आकाश और पृथ्वी की ज्योति है। उसके प्रकाश का उदाहरण एक जगह की तरह है जिसके भीतर एक दीपक है, दीपक कांच के भीतर है, कांच जैसे कि यह एक मोती [सफेद] तारा हो जो एक धन्य जैतून के पेड़ से जलाया जाता है, न तो पूर्व का और न ही पश्चिम का, जिसका तेल आग से अछूता होने पर भी लगभग चमक जाएगा। प्रकाश पर प्रकाश। परमेश्वर अपने प्रकाश की ओर मार्गदर्शन करता है जिसे वह चाहता है। और परमेश्वर लोगों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करता है, और परमेश्वर सभी चीजों को जानता है। (कुरान, अध्याय 24 [प्रकाश], श्लोक 35)

बेपरवाह लोगों के दिलों की स्थिति इस श्लोक में स्पष्ट की गई है:

أَوْ كَظُلُمَٰتٍ فِى بَحْرٍ لُّجِّىٍّ يَغْشَىٰهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ سَحَابٌ ۚ
ظُلُمَٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَآ أَخْرَجَ يَدَهُۥ لَمْ يَكَدْ يَرَىٰهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ ٱللَّهُ لَهُۥ
نُورًا فَمَا لَهُۥ مِن نُّورٍ ﴿٤٠﴾

"या [वे] एक अथाह समुद्र के भीतर अंधेरे के समान हैं जो लहरों से ढका हुआ है, जिस पर लहरें हैं, जिन पर अंधेरे के बादल हैं, उनमें से कुछ दूसरों पर हैं। जब कोई हाथ बाहर निकालता है, तो वह शायद ही उसे देख सकता है। और जिसे परमेश्वर ने प्रकाश नहीं दिया है - ऐसे व्यक्ति के लिए कोई प्रकाश (हृदय और आत्मा की आंतरिक रोशनी) नहीं है। (कुरान, अध्याय 24 [प्रकाश], आयत 40)

अंतर्दृष्टि के लोग [और दूरदर्शिता जो एक रहस्यवादी दृष्टि के कारण सभी मामलों की गहरी आंतरिक धारणा रखते हैं] वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर मार्गदर्शन प्रदान करता है, और उसके प्रति समर्पण की स्थिति के लिए उनके हृदय के द्वार खोलता है। लापरवाही के लोग (जीवन के सच्चे उद्देश्य और शाश्वत सत्यों के प्रति लापरवाही और बेखबरी) वे हैं जिन्हें परमेश्वर गुमराह करने का इरादा रखता है [उनकी अपनी आत्माओं के भीतर के अंधेरे के कारण जिसे उन्होंने स्वयं जानबूझकर अपने स्वयं के नुकसान के लिए आश्रय देने, संजोने और पोषित करने के लिए चुना है] और अपने दिलों को सत्य और मार्गदर्शन के लिए [दिव्य प्रकाश के लिए] सीमित कर दिया है। वे वे दुर्भाग्यपूर्ण लोग हैं जिनके लिए अंतर्दृष्टि का द्वार नहीं खुलता है, इसके बजाय वे निचले आधार वाले स्वयं (*नफ्स*) और शैतानी चिंतन और विचारों से अपनी इच्छाओं को अपना मार्गदर्शक और नेता मानते हैं।

अभिमान और लापरवाही की निंदा क्यों आवश्यक है? ऐसा इसलिए है क्योंकि गर्व और लापरवाही सभी शाश्वत दुखों और अभिशापों की उत्पत्ति और सभी विनाशों का स्रोत है। इसीलिए, उन रास्तों की व्याख्या जो गर्व को प्रवेश करने का अवसर प्रदान करती हैं और उन स्थितियों का विवरण देती हैं जहां बहुत अधिक गर्व है, आवश्यक है ताकि साधक [सत्य के मार्ग पर दिव्य ज्ञान की ओर ले जाने वाले] उन रास्तों को खोज सकें, ताकि कोई भी निचले स्व को रोक सके (*नफ्स*) उन पर चलने से। हम लोगों के हर समूह की लापरवाही पर प्रकाश डालेंगे। भले ही ये प्रकार कई हैं, हम उन्हें उदाहरण के रूप में उल्लेख करेंगे ताकि हम उनके जैसे अन्य प्रकारों पर चेतावनी प्राप्त कर सकें। ऐसे कई समूह हैं जो गर्व और लापरवाही में लिप्त हैं। हालांकि, चार समूह सभी समूहों के प्रतिनिधि हैं। वे विद्वान, सांसारिकता से परहेज, आध्यात्मिक यात्री और अभिजात वर्ग (धनवान, शक्तिशाली और प्रभावशाली) हैं।

गलतियों और भ्रमों से बचना संभव है: साहसी लोग, [आध्यात्मिक] मार्ग की हर कठिनाई को पार करते हैं और यदि किसी का इरादा सही है, तो वह पथ की छिपी बाधाओं के बारे में पता लगाता है और उन्हें दूर करने के लिए रणनीति ढूंढता है। अगर कोई इंसान चाहे तो खुले आसमान में उड़ते हुए पक्षी को नीचे गिरा सकता है, भले ही वे मीलों की दूरी पर हों। इसी तरह, अगर कोई समुद्र की गहराई से मछली निकालना चाहता है तो वह ऐसा कर सकता है, कोई सोना, चांदी और अन्य कीमती धातुओं को निकालने के लिए पहाड़ खोद सकता है, कोई जंगल से जंगली जानवरों को पिंजरे में बंद कर सकता है, कोई शेर, हाथी और अन्य क्रूर जानवरों पर विजय प्राप्त कर सकता है, कोई सांप और अजगर को नियंत्रित कर सकता है और

उनके मुंह से जहर निकाल सकता है, शहतूत के पेड़ की पत्तियों से रेशम बनाया जा सकता है, पृथ्वी पर खड़े होकर संख्यात्मक ज्ञान के माध्यम से तारों की संख्या और उनकी लंबाई और चौड़ाई का पता लगाया जा सकता है। मनुष्य रणनीतियों का भंडार है। ऐसी कोई कठिनाई नहीं है जिसे मानवीय रणनीति द्वारा हल नहीं किया जा सकता है और दुनिया में ऐसी कोई रचना नहीं है जिसे मनुष्य रणनीति के अधीन नहीं कर सकता है और इसे अपने उद्देश्यों के लिए उपयोग नहीं कर सकता है। मनुष्य घोड़े की सवारी के लिए, कुत्ते का शिकार करने के लिए, बाज़ का उपयोग पक्षियों के शिकार के लिए, मछली पकड़ने के लिए जाल का उपयोग करता है और इसी तरह इस दुनिया में हर पल इस तरह की असंख्य रणनीतियां देखी जाती हैं। इन सभी रणनीतियों को नियोजित किया जाता है ताकि लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा किया जा सके। जब मनुष्य सांसारिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीकों और रणनीतियों का उपयोग करता है, तो क्या कोई हृदय के सुधार के लिए ऐसा नहीं कर सकता है [जो मानव अस्तित्व का निर्विवाद शासक है]? यह सिर्फ मानवीय अंधविश्वास है, कुछ भी मुश्किल या असंभव नहीं है, केवल शर्त साहस है। ऐसे अनगिनत लोग गुजर चुके हैं जिन्होंने आध्यात्मिक संघर्ष के कांटेदार रास्ते पर अपने पैर रखे थे और पीछे नहीं हटे। उन्होंने हृदय के सुधार को असंभव या अकल्पनीय नहीं माना और इससे पराजित नहीं हुए। ये वे हैं जिन्हें "पवित्र पूर्ववर्ती" (*सलाफ अल-सलीहीन*) कहा जाता था। फिर उनके अनुयायी और शिष्य हैं जो सच्चे मन से उनके नक्शेकदम पर चलते हैं और वे भी सफल रहे। अब भी, जो लोग दृढ़ संकल्प, ठोस इरादों और पूर्ण साहस के साथ, [कार्य की विशालता से] निराश हुए बिना इस कांटेदार घाटी को पार करते हैं, वे सफल होंगे। अफसोस की बात यह है कि लोग अपने सांसारिक कार्यों के लिए जितनी सारी रणनीतियाँ और योजना बनाते हैं और उसके लिए वे जितना साहस और दृढ़ संकल्प प्रदर्शित करते हैं, वे इसके दसवें भाग का उपयोग परलोक से संबंधित कार्यों में भी नहीं करते हैं [अपने सांसारिक जीवन के वास्तविक उद्देश्य और अपने आसन्न अनन्त जीवन के प्रति अपनी लापरवाही और बेखबर दिखाते हुए]।

गलतियों और भ्रमों से बचने के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं: यदि मनुष्य गलतियों और भ्रमों से बचना चाहता है, तो उसके पास आवश्यक रूप से तीन चीजें होनी चाहिए: बुद्धि, ज्ञान और ज्ञान (मारिफा या गहरी अंतर्दृष्टि, दृष्टि की स्पष्टता, सभी संदेहों और अस्पष्टताओं को दूर करना जो ईश्वरीय निकटता और अंतरंगता के साथ आती हैं)। बुद्धि मूल प्रकाश और सहज प्राचीन मानव स्वभाव को संदर्भित करती है [मैलापन और कीचड़ में नहीं फंसा हुआ है, जिसे दिव्य रूप से अपने मूल रूप में इस तरह बनाया गया था,] जिसके माध्यम से मनुष्य चीजों की वास्तविकता को समझते हैं। बुद्धि और तीक्ष्णता का संबंध भी मानव स्वभाव से है और मूर्खता और घनापन का भी मूल स्वभाव से संबंध है। घना व्यक्ति भ्रम से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिए, मनुष्य के लिए स्वभाव से बुद्धिमान और तेज होना आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति बुद्धि की प्रकृति पर नहीं है, तो मूल बुद्धि मौजूद होने के अलावा इसका अधिग्रहण असंभव होगा। उस स्थिति में, अनुभव के साथ बुद्धि को बढ़ाया और तेज किया जा सकता है। इससे यह ज्ञात होता है कि शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता की सभी अवस्थाओं का आधार बुद्धि और बुद्धि पर है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

تبارك الله الذي قسم العقل بين عباده أشتاتا إن الرجلين يستوي
عملهما وبرهما وصومهما وصلاتهما ولكنهما يتفاوتان في العقل كالذرة
في جنب أحد وما قسم الله لخلقه حظا هو أفضل من العقل واليقين

"धन्य है ईश्वर का वह अस्तित्व जिसने अपने सेवकों के बीच बुद्धि को विविध तरीके से वितरित किया। दो व्यक्ति अपने कर्मों में समान हैं - उनके पवित्र कर्म, उपवास, प्रार्थना सभी समान हैं, लेकिन वे उहुद पर्वत के बगल में एक कण की तरह बुद्धि में बहुत भिन्न हैं (यानी, उनकी बुद्धि में एक विशाल पर्वत के साथ एक कण की तुलना करने की तरह अंतर की दुनिया है)। ईश्वर ने बुद्धि और निश्चितता से बड़ा आशीर्वाद नहीं बनाया है [शाश्वत सत्यों और सत्य के सभी मामलों में]। (इस परंपरा को तौउस द्वारा वर्णित किया गया है और हकीम तिर्मिज़ी द्वारा रिपोर्ट किया गया है। *नवादिर अल-उसुल*)

बुद्धि, समझ, अंतर्निहित बुद्धि सभी ईश्वर के महान आशीर्वाद हैं। यदि यह [ईश्वरीय] आशीर्वाद [किसी को] नहीं दिया जाता है और इसके बजाय, यदि मूर्खता और मूर्खता को [मनुष्यों की] अंतर्निहित प्रकृति में रखा जाता है, तो इसका कोई शमन नहीं है। गलतियों और भ्रम से बचाने के लिए दूसरी चीज है ग्नोसिस (*मारिफा*)। ज्ञान-विज्ञान का तात्पर्य चार मामलों को जानने से है: स्वयं को जानना (*नफ्स*), ईश्वर को जानना, दुनिया (*दुनिया*) की वास्तविकता को जानना, और परलोक (*अखिराह*) को जानना [जैसा कि इस पुस्तक के भाग 1 में बताया गया है]। स्वयं को जानने का अर्थ है किसी की दासता [ईश्वर के लिए] और किसी की अंतर्निहित अक्षमता और असहायता को स्वीकार करना [ईश्वरीय आदेश द्वारा शासित चीजों की समग्र योजना में]। इसके अलावा, किसी को यह जानना चाहिए कि, "मैं इस दुनिया में एक यात्री हूं [ईश्वरीय उपस्थिति में अनन्त जीवन के अंतिम गंतव्य की ओर] और इन वासनाओं [निचले स्व से] मेरे स्वभाव के साथ कोई अनुकूलता नहीं है। मेरे स्वभाव के लिए उपयुक्त केवल ईश्वर की ज्ञान-दृष्टि और दिव्य दृष्टि है। कोई भी इस वास्तविकता को तब तक नहीं जान पाता जब तक कि एक सेवक [ईश्वर का, यानी, एक मनुष्य] अपने स्वयं और अपने प्रभु के बारे में गहरी आंतरिक समझ विकसित नहीं कर लेता। इस सूक्ति को कैसे प्राप्त करें? इस संबंध में, आपको "आत्मा के रहस्य" (अध्याय 1) और "दिव्य कृतज्ञता" (अध्याय 12) के अध्यायों में विस्तार से चर्चा किए गए विषयों का उल्लेख करना चाहिए। इन अध्यायों में, हमने निचले स्व और उसके लक्षणों की ओर इशारा किया है जो इस मामले में पर्याप्त मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उसके बाद ग्नोसिस की पूर्णता (*कमल*) की अवस्था आती है। यह आध्यात्मिक अनावरण (*'इल्म अल-मुकाशाफा*) के ज्ञान से संबंधित है जो इस पुस्तक का विषय नहीं है (आध्यात्मिक अनावरण का गूढ़ ज्ञान रूमी और इब्न अल-अरबी जैसे अन्य महान आध्यात्मिक गुरुओं द्वारा कवर किया गया है। ग़ज़ाली ने मुख्य रूप से व्यावहारिक आध्यात्मिकता पर ध्यान केंद्रित किया है जिस पर सामान्य लोग काम कर सकते हैं जो व्यक्ति को आंतरिक आध्यात्मिक शुद्धि और परिवर्तन की ओर ले जाता है। यह बदले में आध्यात्मिक यात्री की आंतरिक खोज की ईमानदारी और दिव्य उदारता के कारण शाश्वत सत्यों के आध्यात्मिक अनावरण की ओर ले जा सकता है जो इसे और भी संभव बनाने के लिए अपरिहार्य है)।

संसार और परलोक की वास्तविकता को जानने के लिए, किसी को "सांसारिकता से परहेज" (अध्याय 14) और "अपनी स्वयं की नश्वरता पर चिंतन" (अध्याय 20) के अध्यायों से मदद लेनी चाहिए ताकि यह ज्ञात हो सके कि दुनिया की परलोक के साथ कोई तुलना नहीं है। जब कोई सभी चार मामलों की गहरी समझ प्राप्त कर लेता है, तो भ्रम और गलतियों से सुरक्षा के लिए संभावनाएं उज्जवल हो जाएंगी। दिव्य ज्ञान ईश्वरीय प्रेम को उत्तेजित और प्रेरित करेगा [हृदय में और आत्मा के अंतरतम अवकाशों में], यह जानते हुए कि परलोक व्यक्ति को इसकी ओर (परलोक) की ओर झुकाएगा, और दुनिया (सांसारिकता) को जानने से इसके प्रति घृणा पैदा होगी। कोई उस कर्म को सबसे महान मानेगा जो व्यक्ति को ईश्वर की ओर ले जाता है और परलोक में लाभदायक होता है। जब यह इरादा दिल पर हावी हो जाएगा तो हर मामले में नीयत सही होगी। सभी मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने, भोजन करने, कपड़े पहनने आदि में, परलोक की ओर आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए उनसे सहायता लेने का इरादा होगा । इरादे के स्वास्थ्य के माध्यम से सभी भ्रम दूर हो जाएंगे, क्योंकि भ्रम और गलतियाँ किसी के गुप्त उद्देश्यों में आकर्षण खोजने और धन, प्रसिद्धि और सम्मान की ओर झुकाव रखने से पैदा होती हैं जो इरादे को कमजोर करती है [और संकल्प]। जब तक कोई परलोक की दुनिया को पसंद नहीं करता है और अपनी इच्छाओं को ईश्वरीय अनुमोदन से अधिक नहीं कर देता है, तब तक वह इस भ्रम में फंसा रहेगा।

आध्यात्मिक पथ कैसे पार करें? व्यक्ति अपनी बुद्धि के माध्यम से निम्न स्व (*नफ्स*) और स्वयं (ईश्वर) के निर्माता का ज्ञान और समझ प्राप्त करता है। यह समझ हृदय पर ईश्वरीय प्रेम के प्रभुत्व को जन्म देती है जो एक तीसरी चीज की आवश्यकता को जन्म देती है जो यह जानना है कि आध्यात्मिक मार्ग को कैसे पार किया जाए - वे कौन से कार्य हैं जो किसी को या तो ईश्वर के करीब या उससे दूर करने का कारण बनते हैं? इसके अलावा, परलोक के मार्ग में कौन सी बाधाएँ हैं, कितने कठिन चरणों से गुजरना पड़ता है, उन बाधाओं को दूर करने का तरीका क्या है, और इन कठिन चरणों को कैसे दूर किया जाए? इन सभी सवालों के जवाब [ग़ज़ाली की उत्कृष्ट कृति] "*इहया अल-उलूम अद-दीन*" या "रिवाइवल ऑफ नॉलेज ऑफ पाथ टू गॉड" में दिए गए हैं। ईश्वरीय पूजा की शर्तें पूजा के बारे में अध्यायों में पाई जा सकती हैं [जो "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" पुस्तक के पहले खंड या चौथाई में हैं जो इस संकलन में शामिल नहीं हैं] और किसी को उनका पालन करना चाहिए, उन्हें सही न करने के नुकसान का अध्ययन करना चाहिए [ईश्वरीय स्वीकृति और निकटता प्राप्त करने के लिए दिल की ईमानदारी के साथ] और उनसे बचना चाहिए। [सामाजिक और सार्वजनिक] व्यवहार के अध्यायों में [जो "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" पुस्तक के दूसरे खंड या तिमाही में हैं, जो इस संकलन में शामिल नहीं हैं], किसी को [जीविकोपार्जन और] अर्थशास्त्र से संबंधित कानूनी मामलों का अध्ययन करना चाहिए। जो चीजें आवश्यक हैं, उन्हें ईश्वरीय कानून और अनावश्यक चीजों के प्रकाश में प्राप्त करना चाहिए, ईश्वरीय कानून में निर्धारित विधि के अनुसार उनसे बचना चाहिए। आंतरिक विनाशकारी गुणों के अध्यायों में [जो "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" पुस्तक के तीसरे खंड या चौथाई में हैं, जो सभी भाग II में इस संकलन में संक्षिप्तता के साथ शामिल हैं], व्यक्ति को उन सभी बाधाओं का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए जो किसी को ईश्वर के मार्ग पर चलने से रोकती हैं। ईश्वरीय उपस्थिति प्राप्त करने की बाधाएँ निंदनीय (नकारात्मक, बुराई और विनाशकारी)

आंतरिक लक्षण, गुण, स्वभाव, झुकाव और स्वभाव हैं। इसीलिए, किसी को उन्हें पहचानना चाहिए और उनके इलाज के बारे में पता लगाना चाहिए [जो इस संकलन में संक्षिप्तता के साथ संकलित भी किए गए हैं लेकिन गज़ाली की मूल पुस्तक में उनकी संपूर्णता में पाए जा सकते हैं]। आंतरिक रचनात्मक और लचीले गुणों पर अध्यायों से [जो "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" पुस्तक के चौथे खंड या चौथाई में हैं, जो सभी भाग III में इस संकलन में संक्षिप्तता के साथ शामिल हैं], किसी को सकारात्मक आंतरिक प्रशंसनीय लक्षणों, गुणों, स्वभावों, प्रवृत्तियों और स्वभावों का ज्ञान सीखना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब एक निंदनीय गुण दिल से मिटा दिया जाता है, तो इसे एक अच्छे प्रशंसनीय आंतरिक गुण से बदलना आवश्यक होता है। जब कोई इन सभी बातों को जानता है, तो यह आशा की जा सकती है कि वह उन सभी प्रकार की गलतियों और भ्रमों से खुद को बचाने में सक्षम होगा जिनका हमने उल्लेख किया है ["ईश्वर के लिए पथ के ज्ञान का पुनरुद्धार" पुस्तक में]। यहां इस बात की सच्चाई यह है कि ईश्वर का प्रेम आध्यात्मिक यात्री (*सालिक*) के हृदय पर हावी होना चाहिए और दुनिया (सांसारिकता) के प्रति थोड़ा सा भी झुकाव नहीं होना चाहिए, व्यक्ति की इच्छा मजबूत होनी चाहिए [ईश्वरीय स्वीकृति, निकटता और उपस्थिति प्राप्त करने के अंतिम लक्ष्य तक पहुंचने के लिए जिसके परिणामस्वरूप लचीलापन होता है, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शाश्वत खुशी, और चिरस्थायी सफलता], इरादा स्वस्थ (दृढ़) होना चाहिए और यह तब होगा जब कोई जानता है कि हमने [यहां] क्या लिखा है।

भाग 3: आंतरिक रचनात्मक और लचीले लक्षण-सकारात्मक आंतरिक गुण लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता को विकसित करते हैं जो शाश्वत व्यक्तिगत और सामूहिक मानव सफलता की शुरुआत करते हैं

अपार अच्छाई का एक स्रोत सकारात्मक आंतरिक गुणों, स्वभावों और प्रवृत्तियों का होना है जो बदले में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं और जीवन में सकारात्मक, रचनात्मक और लाभकारी चीजें करने के लिए सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। पिछले आठ अध्यायों में नकारात्मक आंतरिक लक्षणों पर गहराई से नज़र डालने के बाद, उनसे छुटकारा पाने की दृष्टि से, अब समय आ गया है कि सकारात्मक आंतरिक गुणों को देखा जाए जो एक व्यक्ति और पूरे राष्ट्रों को बदल देते हैं - ऐसे गुण जिन्हें ग़ज़ाली प्रारंभिक व्याख्या में "शाश्वत आनंद की कीमिया" या परिवर्तन के परिवर्तनकारी एजेंट के रूप में संदर्भित करते हैं ताकि किसी के जीवन को बेहतर के लिए बदल दिया जा सके और इसे अच्छाई के प्रतीक में बदल दिया जा सके। ग़ज़ाली के "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे और अंतिम खंड में ग़ज़ाली द्वारा संदर्भित दस अध्याय या पुस्तकें, इन सकारात्मक आंतरिक गुणों पर प्रकाश डालती हैं जो व्यक्तिगत और सामूहिक पुनरुद्धार और परिवर्तन के लिए आवश्यक हैं। इन अत्यधिक शिक्षाप्रद दस अध्यायों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय 11- अपने स्वयं के दोषों, गलत कामों और ज्यादतियों को महसूस करना और पश्चाताप, क्षमा और किए गए अपराधों के लिए सुधार करना

ग़ज़ाली की पहली पुस्तक उनकी महान *कृति" इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे खंड या चौथाई में है, जो अपने स्वयं के दोषों, कमियों, गलत कामों और साथी मनुष्यों के खिलाफ की गई ज्यादतियों को महसूस करने से संबंधित है, और पश्चाताप की तलाश करना और उनके खिलाफ किए गए अपने गलत कामों के लिए सुधार करना और सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, अपने स्वयं के खिलाफ। दूसरों के खिलाफ किए गए गलत काम किसी के अपने दिल और आत्मा के लिए हानिकारक होते हैं क्योंकि वे किसी भी आध्यात्मिकता को छीन लेते हैं और अपने स्वयं पर भारी पड़ते हैं। अपने स्वयं और दूसरों के खिलाफ गलत कामों में दृढ़ता, व्यक्ति को असंवेदनशील और उनके प्रति संवेदनशील बनाता है, जिससे आंतरिक चेतना के स्वयं के विनाश और मृत्यु का मार्ग प्रशस्त होता है। वे भीतर से बहुत गहरे वजन के होते हैं, आंतरिक शांति और शांति से वंचित करते हैं। हम जिस ब्रह्मांड में हैं, वह कारण और प्रभाव के साथ चिह्नित है और हर क्रिया हमारे कार्यों की सकारात्मकता और नकारात्मकता की विशालता के अनुरूप परिणाम देती है, अनुकूल या प्रतिकूल। इसलिए, अपनी स्वयं की गलतियों का एहसास और यह स्वयं को और दूसरों को कैसे प्रभावित करता है, अस्तित्व के हर स्तर पर - भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, मानसिक और आध्यात्मिक - किसी की भलाई के लिए अनिवार्य है। ग़ज़ाली स्वयं को सुधारने की दिशा में इस पहले कदम पर गहराई से नज़र डालती है जिसे यहां संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है [17]:

पापों से पश्चाताप करना और अदृश्य के ज्ञाता और दोषों को छिपाने वाले (ईश्वर) की ओर मुड़ना आध्यात्मिक पथ में पहला कदम है और [अंतिम] गंतव्य [आध्यात्मिक मार्ग] पर आने वालों की एक अनमोल वस्तु है। ईश्वरीय ज्ञान के मार्ग में आध्यात्मिक यात्री सबसे पहले पश्चाताप का मार्ग अपनाते हैं। पश्चाताप उन लोगों के लिए दृढ़ता की कुंजी है जो अपना रास्ता खो चुके हैं [अपने जीवन की सांसारिक

दिनचर्या में डूबने के कारण अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य के लिए और अपने आंतरिक प्राणियों के भीतर अंधेरे के कारण, निचले आधार स्वयं के अदम्य बोलबाला के कारण]। जो लोग ईश्वरीय उपस्थिति के करीब आते हैं, वे पश्चाताप के माध्यम से अंतरंगता और निकटता [ईश्वर के साथ] की तलाश करते हैं। भविष्यवक्ता [ईश्वर के] इसके माध्यम से अपनी शाश्वत खुशी और अनन्त विजय (सादाह) प्राप्त करते हैं, विशेष रूप से हमारे पिता [संपूर्ण मानव जाति के] आदम (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) के लिए, यह उद्धार का साधन बन गया और [आध्यात्मिक मार्ग में] उच्च डिग्री की प्राप्ति की। संतानों के लिए यह उचित है कि वे अपने पूर्वजों के नक्शेकदम पर चलें [उन सभी अच्छे कार्यों में जो उन्होंने सांसारिक अस्तित्व के प्रवास से अपने निधन से पहले किया है]। यह आश्चर्य की बात नहीं है अगर कोई कोई पाप करता है क्योंकि एक (हर कोई) गलती करने वाले आदम (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) का वंशज है। लेकिन चूंकि पिता ने [भगवान से] पश्चाताप के माध्यम से अपनी गलती का प्रायश्चित और प्रायश्चित किया, इसलिए बेटे [और बेटी] के लिए दोनों मामलों में पिता के समान होना अनिवार्य है। आदम (परमेश्वर की शांति और आशीष) ने गलती की, लेकिन उसने बहुत लंबे समय तक पश्चाताप और पछतावे के आँसू बहाए। यदि कोई व्यक्ति उसे केवल गलती करने में अपना नेता मानता है और पश्चाताप में उसका अनुसरण नहीं करता है, तो वह पथभ्रष्ट, अवज्ञाकारी और विद्रोही है और उसे अपने पिता (आदम) के प्रति खुद को जिम्मेदार ठहराने और उसका अनुयायी होने का दावा करने का कोई अधिकार नहीं है। इस मामले की सच्चाई यह है कि अच्छे और महान के साथ पूरी तरह से जुड़ना [और इसमें पूरी तरह से डूब जाना], स्वर्गदूतों की पहचान है [भगवान के], और बुराई में पूरी तरह से डूब जाना शैतान का [शाश्वत] कब्जा है।

बुराई में शामिल होना या उसमें ठोकर खाना और फिर [अपनी मूर्खता को महसूस करना और] अच्छाई की ओर मुड़ना मनुष्य का काम (प्रकृति या विशिष्ट विशेषताओं) है, जिसके स्वभाव में दोनों गुण हैं - [दोनों] अच्छे और बुरे के गुण। अब यह पूरी तरह से स्वयं पर निर्भर करता है कि वह या तो मनुष्य बन जाए या शैतान (शैतान) के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए। यदि कोई व्यक्ति पाप करने के बाद पश्चाताप करता है, तो यह कहा जाएगा कि उसने अपनी मानवता के लिए प्रमाण प्रदान किया है। जो विद्रोह पर जोर देता है [मानवीय शालीनता की सीमाओं को पार करके अपराध के कृत्यों से जो किसी के व्यक्तिगत और/या सामूहिक कल्याण को खतरे में डालता है], यह ऐसे व्यक्ति के बारे में कहा जाएगा कि वह खुद को शैतान के लिए जिम्मेदार ठहराना चाहता है। जहां तक स्वर्गदूतों को खुद को जिम्मेदार ठहराने का सवाल है, इसे मानवीय संभावना के चक्र से बाहर रखा गया है कि कोई केवल अच्छे कर्म करता है और कोई पाप नहीं करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मानव संरचना में [या जन्मजात और मौलिक मानव स्वभाव में], अच्छे और बुरे दोनों का इतना दृढ़ मिश्रण और समामेलन होता है कि उनके बीच केवल पछतावे की गर्मी के माध्यम से या नरक की आग के माध्यम से अलगाव हो सकता है। शैतान के कपट और बुराई से मानवीय सार (*जौहर)* को शुद्ध करने के लिए, इसे दो में से किसी एक में डुबोना अनिवार्य है। अब यह किसी का विशेषाधिकार है कि कोई कौन सी गर्मी का चयन करता है। जिस भी गर्मी को कोई सहनीय समझता है, उसे आगे बढ़ना चाहिए, अन्यथा मृत्यु के बाद कोई अवसर नहीं मिलेगा - वहां पर उसका निवास या तो

स्वर्ग में होगा या नर्क में। दीन (ईश्वर के मार्ग) में पश्चाताप का एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है । इसीलिए, इस पुस्तक के खंड (वर्तमान कार्य के भाग ।।। और ग़ज़ाली के "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के खंड 4) में, पहले इसका उल्लेख करना महत्वपूर्ण था ताकि इसकी वास्तविकता, स्थितियों, संकेतों, कारणों, संकेतों, फलों और परिणामों, हानि और बाधाओं, आध्यात्मिक यात्री के लिए इलाज की विधि का विवरण, [आध्यात्मिक यात्री के लिए] सभी स्पष्ट हो जाते हैं। इन सभी मामलों को चार अध्यायों (खंडों) में इस प्रकार समझाया जाएगा।

पश्चाताप की वास्तविकता और परिभाषा

पश्चाताप तीन चीजों का नाम है जो इस क्रम में पाए जाते हैं: पहला, ज्ञान; दूसरा, होने की अवस्था; तीसरा, [परिणामित] कार्य। इसमें पहले दूसरे के लिए जरूरी है और तीसरे के लिए दूसरा जरूरी है। यह क्रम और क्रम दृश्य या भौतिक (*मुल्क*) और अदृश्य या आध्यात्मिक (*मलकूट*) लोकों में दिव्य तरीके के अनुसार हैं। तीनों को इस प्रकार समझाया जाएगा।

ज्ञान यह जानना है कि पापों में [स्वाभाविक रूप से निहित] बहुत नुकसान हैं [उनके स्वभाव से]। उनका सबसे बड़ा नुकसान यह है कि पाप सेवक (मनुष्य) और प्रिय (भगवान) के बीच पर्दा बन जाते हैं। जब यह वास्तविकता दिल पर हावी हो जाती है कि मनुष्य प्रिय तक पहुंचने और उससे मिलने से वंचित हो जाएगा, तो यह अहसास दर्द का कारण बनता है क्योंकि कोई किसी भी तरह से प्रिय से अलग होने को बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसीलिए, कोई उस [पापपूर्ण] कार्य पर खेद व्यक्त करता है जो एक से उत्पन्न हुआ था जो एक (यानी, प्रेमी) और अपने प्रिय के बीच एक पर्दा बन गया। इस पछतावे को शर्म कहा जाता है और यह पश्चाताप की दूसरी चीज है जो कि [होने की] स्थिति है। जब यह पछतावा दिल पर हावी हो जाता है, तो यह एक और स्थिति पैदा करता है जिसे एक निश्चित कार्रवाई करने का इरादा कहा जाता है। यह क्रिया समय के तीनों कालखंडों (अतीत, वर्तमान और भविष्य) से संबंधित है - वर्तमान के साथ ताकि व्यक्ति उन पापों को छोड़ दे जो वह पहले करते थे; भविष्य के साथ इस अर्थ में कि कोई आने वाले जीवन में उस पाप (या नकारात्मक, हानिकारक, हानिकारक, बुराई या नैतिक रूप से निंदनीय कार्य) को छोड़ने के लिए [दृढ़ता से] संकल्प करता है, जो प्रिय से मिलने में एक बाधा होगी; अतीत के साथ ताकि कोई पाप के कारण होने वाले नुकसान का प्रायश्चित कर सके यदि इसे प्रायश्चित किया जा सकता है।

इरादे और कार्रवाई की स्थिति का स्रोत वह ज्ञान है जिसे विश्वास (इमान) और निश्चितता (*याकीन*) के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। विश्वास इस वास्तविकता का पता लगाना है कि पाप एक घातक जहर है और निश्चितता इस तरह से हृदय में इस निर्धारण की दृढ़ता से प्रवेश है कि इसमें कोई संदेह नहीं बचा है। जब विश्वास और निश्चितता का प्रकाश हृदय के क्षितिज को ढक लेता है, तो अफसोस, दुःख और शर्म की आग प्रज्वलित हो उठती है क्योंकि इस प्रकाश की रोशनी में कोई देखता है, कि वह एक निश्चित [पापपूर्ण] कार्य के कारण प्रिय से दूर हो गया है। ठीक वैसे ही जैसे कोई अंधेरे में होता है जब अचानक भोर का प्रकाश दिखाई देता है, या बादल दूर हो जाते हैं और उसके बाद सूर्योदय होता है और प्रिय अचानक दिखाई देता है जो मृत्यु के कगार पर है। यह देखकर दिल में प्यार की आग भड़क उठती है और उसकी गर्मी व्यक्ति को निश्चित रूप से [प्रिय को बचाने के लिए] कुछ रणनीति अपनाने के लिए मना लेती है। इसी तरह, जब पाप विनाश को करीब लाते हैं, तो विश्वास और निश्चितता का प्रकाश व्यक्ति को बाहर निकलने का रास्ता दिखाता है। संक्षेप में, ज्ञान, शर्मनाक, और वर्तमान और भविष्य में, पापों के परित्याग, पिछली गलतियों का प्रायश्चित और सुधार करने के इरादे के संयोजन को पश्चाताप (तौबा) कहा जाता *है*।

पश्चाताप के दायित्व का अर्थ: कोई सीखता है कि आवश्यक और अनिवार्य केवल वही है जो शाश्वत सुख और अनन्त सफलता (सादाह) की प्राप्ति का साधन है, और शाश्वत विनाश से मुक्ति का एक साधन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, कुछ करने या न करने का निर्णय लेना, यदि शाश्वत आनंद (*सादाह*) या शाश्वत अभिशाप (*शकवाह*) से संबंधित नहीं है, तो दायित्व होने के संदर्भ में इसका कोई अर्थ नहीं है। उन चीजों में लिप्त होने का कोई फायदा नहीं है जो हमारे वर्तमान और भविष्य के उद्देश्यों से संबंधित नहीं हैं। इससे यह सीखा जाता है कि अनिवार्य केवल वही चीज है जो शाश्वत सुख और चिरस्थायी सफलता की प्राप्ति का साधन है। यह तब होता है जब कोई अनिवार्य का अर्थ जानता है और यह भी जानता है कि न्याय के दिन ईश्वरीय दृष्टि से बड़ी कोई खुशी और सफलता नहीं है। इसके अलावा, एक व्यक्ति जो इस सर्वोच्च उपलब्धि [दिव्य दृष्टि प्राप्त करने की] से वंचित है, उस व्यक्ति के दुर्भाग्य और असफलता के बारे में कोई संदेह नहीं है। जो ईश्वरीय दृष्टि की सर्वोच्च उपलब्धि से वंचित है, वह वह है जो एक कैदी है और निचले आधार वाले स्वयं (*नफ्स*) की इच्छाओं का बंधक है जो स्वयं और ईश्वर के बीच एक पर्दा बन जाएगा। ऐसा व्यक्ति वियोग की आग से पीड़ित होगा [प्रिय से जो एक आग है जो किसी के दिल के भीतर गहराई से जलती है, आंतरिक पीड़ा और दुःख के कारण किसी को शांति नहीं मिलने देती] और नरक की आग से भी। व्यक्ति को पता चलता है कि एक सेवक ईश्वर से मिलने और उसकी दृष्टि से दूर है, जब वह निम्न स्व की इच्छाओं में शामिल होता है, क्षणिक क्षेत्र (दुनिया) के साथ लगाव रखता है, और उन चीजों पर गिर जाता है जो किसी के उद्धार के लिए बचना अनिवार्य हैं। एक व्यक्ति जो दिव्य दृष्टि के करीब होता है, वह वह होता है जो इस दुनिया की चमक से अपने दिल के रिश्ते (लगाव) को अलग करता है और भगवान के प्रति पूरी तरह से चौकस हो जाता है, भगवान के स्मरण के प्रति लगाव विकसित करने का प्रयास करता है, अपनी क्षमता और ईश्वर के प्रेम के अनुसार दिव्य महिमा और सौंदर्य की सूक्ति पाता है।

ऐसा व्यक्ति समझता है कि जिस तरह पापों के कारण ईश्वर से विचलन होता है, उसी तरह किसी को पापी, अवज्ञाकारी और शापित शैतान का अनुयायी कहा जाता है, उन्हीं कारणों से, व्यक्ति ईश्वर से मिलने से पर्दा डालने का हकदार होगा और उसे ऐसा व्यक्ति कहा जाएगा जो [सत्य के लिए] रास्ता खो गया है। इन सभी मामलों के बारे में जानने के बाद, किसी को इस वास्तविकता पर संदेह नहीं होगा कि ईश्वरीय अंतरंगता के लिए, उस मार्ग से भटकना आवश्यक है जो व्यक्ति को इससे दूर कर देता है। दूरदर्शिता के मार्ग से विचलन, इन तीन चीजों के बिना संभव नहीं है जिन्हें ज्ञान, शर्मनाक (पछतावा या पछतावा), और दृढ़ संकल्प कहा जाता है। इसीलिए, जब तक यह ज्ञात नहीं हो जाता कि पाप प्रिय से दूर होने का कारण हैं, तब तक पछतावा नहीं होगा और किसी को दूरदर्शिता के मार्ग पर चलने का दर्द महसूस नहीं होगा, और जब तक कोई [महसूस करने] के मार्ग पर यात्रा नहीं करता [प्रिय से अलगाव का], कोई भी वापसी की कल्पना भी नहीं करेगा [दिव्य अंतरंगता के मार्ग पर]। [प्रिय के मार्ग पर] वापसी का अर्थ है (इसमें शामिल है) पापों को त्यागने का दृढ़ संकल्प। इससे पता चलता है कि प्रिय तक पहुंचने के लिए इन तीन साधनों (ज्ञान, शर्म और दृढ़ संकल्प) की आवश्यकता होती है।

बुद्धि कब पूर्ण होती है? बुद्धि की वास्तविकता तब तक सिद्ध नहीं होती है जब तक कि वासना, क्रोध, और सभी निंदनीय आंतरिक गुण, जिन्हें शैतान मनुष्यों को गुमराह करने के साधन के रूप में नियोजित करता है, पूर्णता तक सीमित नहीं हो जाते। चालीस वर्ष की आयु में मनुष्य बुद्धि पूरी होती है परन्तु बुद्धि की उत्पत्ति तब पूरी होती है जब यौवन में पहुँचते हैं। इसके संकेत सात साल की उम्र में ही दिखने लगते हैं। वासना शैतान की सेना है, बुद्धि फरिश्तों की सेना है। जब ये दोनों सेनाएँ एक स्थान पर इकट्ठी होती हैं, तो वे [एक-दूसरे के साथ] तब तक टकराती हैं जब तक कि एक [सेना] दूसरे के सामने अपनी जमीन पर टिकने में असमर्थ न हो जाए। दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं। दिन और रात की तरह, प्रकाश और अंधेरा एक साथ नहीं मिलते हैं - यदि एक हावी हो जाता है, तो दूसरे का अस्तित्व किसी भी आकार या रूप में नहीं रहता है। चूँकि बुद्धि की पूर्णता से पहले बचपन और युवावस्था में वासनाएँ मनुष्य पर हावी हो जाती हैं, इसीलिए, शैतान के पैर पहले से ही [मानव जीवन के प्रारंभिक चरण में] दृढ़ हो जाते हैं। यही कारण है कि हृदय आमतौर पर वासनाओं के प्रेम और आसक्ति के अधीन हो जाता है और इससे छुटकारा पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। बाद में, जब बुद्धि प्रकट होती है, जो ईश्वर की पार्टी और सेना है और ईश्वर के मित्रों (ज्ञानवादी) के लिए उद्धारक है, तो यह धीरे-धीरे उन्हें ईश्वर के शत्रुओं के हाथों से मुक्त कर देती है। इसीलिए, यदि बुद्धि में शक्ति और पूर्णता नहीं है, तो शैतान अपना काम करेगा [जिसे करने के लिए वह दृढ़ है] और इस लड़ाई का विजेता होगा:

لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُۥٓ إِلَّا قَلِيلًا

"बहुत कम लोगों को छोड़कर, मैं उसके (आदम के) वंशजों (शैतान को आदम के बच्चों को नष्ट करने के लिए अपने विद्रोही इरादों के बारे में परमेश्वर को बता रहा है, यानी मानव जाति, जब परमेश्वर ने उसे न्याय के दिन तक राहत दी थी, ईश्वरीय ज्ञान से, आदम के सामने झुकने से इनकार करने के बाद ईश्वरीय

उपस्थिति से दूर होने से पहले, सरासर अहंकार के कारण, आदम [परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो] को झुकने से इनकार करने के बाद, ईर्ष्या और अहंकार)। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 62)

जब बुद्धि दृढ़ और पूर्ण हो जाती है, तो उसका पहला काम वासनाओं की पकड़ को तोड़ना, [पुरानी दृढ़ और बुरी] आदतों को त्यागना, और स्वभाव को जबरन ईश्वरीय पूजा की ओर झुकाना, शैतानी सेनाओं को करारी हार सौंपना है। यह पश्चाताप का अर्थ है कि मनुष्य उस मार्ग से भटक जाते हैं जिसका नेता शैतान है, जिसका मार्गदर्शक वासना है, और इसके बजाय, उस मार्ग पर चलते हैं जो व्यक्ति को परमेश्वर तक ले जाता है।

वासना बुद्धि को छोड़ देती है: हर मनुष्य में बुद्धि से पहले वासना होती है। बुद्धि की प्रियता [मानव स्वभाव के लिए] वासनाओं की प्रियता को पीछे छोड़ देती है। इसीलिए, हर कार्य के लिए जो भी अभिलाषाओं का पालन करने में किया गया है, हर इंसान के लिए उनसे पश्चाताप करना आवश्यक है - चाहे वह पैगंबर हो या आम आदमी। किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि पश्चाताप केवल आदम (उस पर शांति हो) की एक विशिष्ट विशेषता थी, इसके बजाय, यह मानव जाति से सभी पर लिखी गई एक शाश्वत आज्ञा है। इसके खिलाफ कुछ भी मानना तब तक संभव नहीं है जब तक कि ईश्वरीय मार्ग न बदल जाए।

यदि कोई व्यक्ति वयस्कता के दौरान अविश्वास या अज्ञानता पर था, तो उससे पश्चाताप करना उसके लिए आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति अपने माता-पिता के कारण मुसलमान है और इस्लाम की वास्तविकता (शांति का मार्ग और अपने स्वयं के आध्यात्मिक नवीनीकरण और परिवर्तन के लिए ईश्वरीय इच्छा के प्रति समर्पण) नहीं जानता है, तो यह व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह अपनी अज्ञानता और लापरवाही से पश्चाताप करे। यह पश्चाताप इस तरह से होगा कि कोई व्यक्ति इस्लाम की वास्तविकता को समझे और यह जान सके कि माता-पिता के इस्लाम से तब तक कोई लाभ नहीं होगा जब तक कि वह स्वयं मुस्लिम न हो। जब कोई यह जान लेता है, तो वासनाओं के प्रति आसक्ति और असावधानी के प्रेम से पश्चाताप करना और सही मार्ग पर चलना भी आवश्यक हो जाता है [नैतिक शुद्धता और ईश्वरीय मार्गदर्शन का]। दूसरे शब्दों में, ईश्वरीय कानून से सही आचरण की सीमाओं का पालन करना और अनिवार्य दायित्वों (*फरा-इद* जैसे प्रार्थना, उपवास, दान) को पूरा करना, चाहे वह [दूसरों को] देने में हो या [दूसरों से] लेने में, कुछ करने या न करने में, और यह चरण पश्चाताप का सबसे कठिन चरण है। अधिकांश लोग इस स्तर पर नष्ट हो गए क्योंकि वे [ऐसा करने की] इच्छा के बावजूद पश्चाताप करने में सक्षम नहीं थे। इससे यह साबित होता है कि पश्चाताप प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत रूप से अनिवार्य है। [चूंकि] कोई भी मनुष्य इससे बेखबर नहीं रह सकता है, क्योंकि आदम (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हों) जैसे दृढ़ निश्चयी भविष्यद्वक्ता

[इससे बेखबर नहीं रह सकते हैं], अन्य लोग [जो आध्यात्मिक प्राप्ति में बहुत कम हैं] ऐसा कैसे कर सकते हैं?

वासना हृदय पर जंग का कारण बनती है: कोई जिस भी वासना में लिप्त होता है, वह हृदय पर एक प्रकार का अंधेरा डालता है, ठीक उसी तरह जैसे मुंह से निकलने वाली भाप से दर्पण पर अंधेरा पड़ता है। यदि वासनाओं का निरंतर पालन किया जाए तो परत दर परत अंधकार के कारण हृदय का अंधेरा गहरा हो जाता है और उसमें जंग जैसा कुछ हो जाता है। वासनाओं के कारण हृदय पर जंग लगना, कुरान में इस प्रकार उल्लेख किया गया है:

كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ

"इसके बजाय, उनके दिलों पर जंग लग गई है क्योंकि उन्होंने [अपने बुरे घृणित कार्यों के संदर्भ में] क्या किया है। (कुरान, अध्याय 83, श्लोक 14)

यदि जंग गहरी हो जाती है, तो इसे हृदय की सील (ताला लगाना) के रूप में माना जाता है [ताकि तर्क, आंतरिक शांति और आध्यात्मिक रोशनी का कोई प्रकाश इसमें प्रवेश न करे] एक दर्पण पर जंग के समान, जिसे अगर लंबे समय तक अकेला छोड़ दिया जाता है, तो इसे पॉलिश करने की कोई क्षमता नहीं रहती है, और इस तरह के दर्पण को बेकार घोषित कर दिया जाता है (एक चला हुआ मामला क्योंकि इसे वापस बहाल नहीं किया जा सकता है)। फिर भी, जिस तरह दर्पण को साफ करने के लिए यह पर्याप्त नहीं है कि इसे कोई अतिरिक्त जंग लगने से रोका जा सके, इसके बजाय, उस जंग को हटाना भी आवश्यक है जो यह पहले ही प्राप्त कर चुका है। इसी तरह, भविष्य में वासनाओं का पालन करने से केवल पश्चाताप करना ही हृदय के लिए पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके बजाय, अतीत में किए गए पापों को भी [प्रायश्चित, प्रायश्चित, सुधार करने, जितना संभव हो सके गलतियों को सुधारने और उलटने के लिए] से भी पश्चाताप किया जाना चाहिए ताकि पिछले पापों का अंधकार मिट जाए। जैसे हृदय पापों से अंधकारमय हो जाता है, उसी तरह, हृदय धार्मिक कर्मों से उज्ज्वल और प्रकाशित होता है। ईश्वरीय आज्ञाकारिता पापों के अंधकार को दूर करती है और प्रकाश फैलता है। यह वह वास्तविकता है जिसका उल्लेख निम्नलिखित भविष्यसूचक कथन में किया गया है:

أَتْبِعِ السَّيِّئَةَ الْحَسَنَةَ تَمْحُهَا

"पाप के बाद धर्म के कर्म करने चाहिए; धार्मिक कर्म उस पाप को मिटा देंगे (यह उदार रियायत हत्या, चोरी, दूसरे के वैध अधिकारों को हड़पने आदि जैसे बड़े पापों पर लागू नहीं होती है, क्योंकि उन्हें ईश्वरीय क्षमा प्राप्त करने के लिए प्रायश्चित और प्रायश्चित की आवश्यकता होती है क्योंकि यह अपने आप में उदार

दिव्य दया है कि किसी भी पाप को उचित प्रायश्चित के साथ ईश्वरीय क्षमा के चक्र से बाहर नहीं रखा गया है)। (अबू धर के अधिकार पर हदीस *संग्रह* तिर्मिज़ी *द्वारा वर्णित)*

पश्चाताप की स्वीकृति उसकी शर्तों की पूर्ति पर निर्भर है

यदि तुम पश्चाताप का अर्थ समझ गए हो, तो तुम्हें इस मामले में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि हर सही पश्चाताप को [दिव्य] स्वीकृति प्राप्त होती है। जो लोग गहरी मर्मज्ञ अंतर्दृष्टि (बसीराह) के प्रकाश से देखते हैं और कुरान की रोशनी से लाभान्वित होते हैं, वे जानते हैं कि हर स्वस्थ हृदय [जो सभी दोषों और घिनौनी आंतरिक अवस्थाओं से रहित है] ईश्वर के सामने स्वीकार किया जाता है। यह परलोक में परमेश्वर की निकटता के सुख और प्रसन्नता को पाएगा और किसी की अनन्त आँखों के साथ परमेश्वर की दृष्टि प्राप्त करेगा [जो कि सांसारिक अस्तित्व से किसी की नश्वर आँखों को बदलने के लिए परलोक में प्रदान किया जाएगा]। वे इस वास्तविकता से भी परिचित हैं कि हर हृदय अपने मूल में, ध्वनि बनाया गया है [और सभी दोषों और घिनौनी आंतरिक अवस्थाओं से रहित है जो इसे बाद में प्राप्त होता है, जैसे-जैसे कोई सांसारिक जीवन में आगे बढ़ता है और सदाचार के मार्ग से भटकना शुरू कर देता है] जैसा कि भविष्यसूचक कथन में उल्लेख किया गया है कि प्रत्येक बच्चा '*फित्रा* (मनुष्य की सच्ची जन्मजात आंतरिक मूल प्रकृति जो ईश्वरीय इच्छा के पूर्ण अनुरूप है) पर पैदा होता है, दिव्य वास्तविकता और शाश्वत सार्वभौमिक सत्य और ईश्वरीय विश्वास के प्रति पूर्वनिर्धारित है कि मनुष्य स्पष्ट रूप से संपन्न है, अर्थात, ईश्वर का एकेश्वरवाद और ज्ञान)। (यह कथन भविष्यसूचक कथनों के संग्रह द्वारा रिपोर्ट किया गया है *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* भविष्यवक्ता साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

पापों के अंधकार और गलत कामों की धूल के कारण हृदय की सुदृढ़ता समाप्त हो जाती है। वे यह भी जानते हैं कि शर्म और पछतावे की आग, इस धूल को जलाकर राख कर देती है [हृदय की सुदृढ़ता को बहाल करने के लिए]। धार्मिकता की रोशनी, हृदय के चेहरे से पापों के अंधेरे को दूर कर देती है। पापों का अंधकार, नेक कर्मों की रोशनी को झेलने में सक्षम नहीं है। जिस तरह रात का अंधेरा दिन के उजाले के सामने नहीं टिक पाता, उसी तरह जैसे साबुन के सामने गंदगी नहीं रहती, उसी तरह जैसे एक सम्राट अपने लिए गंदे कपड़ों का चयन करना पसंद नहीं करता है, उसी तरह असली सम्राट (भगवान) खुद से अंतरंगता और निकटता के लिए गंदे गंदे दिलों का चयन नहीं करता है। फिर जैसे गंदी चीजें करने के लिए कपड़ों का उपयोग करने से वे गंदा हो जाते हैं और वे साबुन और गर्म पानी से धोए बिना साफ नहीं होते हैं, उसी तरह वासनाओं में दिलों का उपयोग करने से वे इतने गंदे और गंदे हो जाते हैं, कि आंसुओं और पछतावे के पानी के बिना, वे साफ और शुद्ध नहीं होते हैं। इस तरह से हर शुद्ध और शुद्ध हृदय को स्वीकार किया जाता है और पसंद किया जाता है जैसे [ईश्वरीय दरबार में] साफ कपड़े पसंद किए जाते हैं।

इसलिए, शुद्धिकरण (हृदय और आत्मा की) आप पर निर्भर है ताकि यह ईश्वरीय द्वारा निर्धारित नियति के अनुसार ईश्वरीय स्वीकृति के सम्मान को प्राप्त कर सके। इस स्वीकृति को कुरान में मोक्ष के रूप में संदर्भित किया गया है:

قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّىٰهَا

"निश्चित रूप से, एक मोक्ष प्राप्त हुआ जिसने इसे (यानी, आत्मा) शुद्ध किया। (कुरान, अध्याय 91, श्लोक 9)

बता दें कि पश्चाताप का अर्थ है पापों का परित्याग। किसी चीज को तब तक छोड़ना संभव नहीं है जब तक कि उसकी समझ विकसित न हो जाए। चूंकि पश्चाताप अनिवार्य है, इसलिए जिस माध्यम से पश्चाताप प्राप्त किया जाता है, वह भी अनिवार्य है। इससे पता चलता है कि पापों को समझना अनिवार्य है। पाप का अर्थ कुछ करने या न करने में ईश्वरीय आदेशों का विरोध करना है। हम कुछ प्रकार के पापों और उनके आपसी संबंध की ओर इशारा करेंगे। केवल ईश्वर ही अपनी दया और उदारता के माध्यम से मार्गदर्शन प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करता है।

मानव लक्षणों के अनुसार पापों के प्रकार: मनुष्य में अनगिनत लक्षण और गुण हैं जैसा कि आत्मा के रहस्यों की व्याख्या (अध्याय 1) में समझाया गया है। हालाँकि, वे [मानव] गुण और आंतरिक गुण जो पापों [और गलत कामों] को भड़काते हैं, चार प्रकारों में विभाजित हैं: ईश्वरीय गुण, शैतानी गुण, पाशविक गुण और पशुवत गुण। इसका कारण यह है कि मानव संरचना विभिन्न तत्वों से बनी है और प्रत्येक तत्व मनुष्य के भीतर अपना प्रभाव चाहता है। ये चार गुण मनुष्य के भीतर अपने स्वयं के अलग-अलग प्रभाव दिखाते हैं। उदाहरण के लिए, दिव्य गुणों में यह शामिल है कि किसी के पास अहंकार, गर्व, बल, प्रशंसा, धन, सम्मान, प्रभाव और शक्ति की इच्छा है, और वह चाहता है कि वह सभी रचनाओं से श्रेष्ठ हो जाए (ये गुण केवल मौजूद हर चीज के गुरु और निर्माता के लिए उपयुक्त हैं) जैसा कि मानव अस्तित्व अपनी स्थिति की जीभ से पुकारता है:

أَنَا۠ رَبُّكُمُ ٱلْأَعْلَىٰ

"मैं तुम्हारा प्रभु हूँ, सर्वोच्च। (कुरान, अध्याय 79, श्लोक 24) (कुछ आध्यात्मिक मार्गदर्शकों या संतों और ज्ञानवादियों ने कहा है कि ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिसके भीतर वह न हो जो फिरौन द्वारा घोषित किया गया था जिसका उल्लेख इस उपरोक्त आयत में किया गया है)

इस गुण से, इतने बड़े पाप पैदा होते हैं कि लोग उन्हें पापों के बीच महसूस भी नहीं करते हैं और गिनते भी नहीं हैं, भले ही वे बेहद विनाशकारी हैं और अनगिनत अन्य पापों की उत्पत्ति करते हैं। तीसरे खंड में

["*इहया अल-उलूम अद-दीन*" या "परमेश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" या इस वर्तमान कार्य के अध्याय 1-10 में], इन पापों का बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है। दूसरा गुण शैतानी है जो ईर्ष्या, विद्रोह, बहाने, धोखेबाजी, धोखाधड़ी, विवाद और उथल-पुथल को जन्म देता है। इसी गुण के आधार पर, मनुष्य धार्मिक मामलों में बुराई, पाखंड, नवीनता और नवीनता (*बिदा*) की ओर [उन चीजों को लाने के लिए जो ईश्वरीय रूप से निर्धारित नहीं हैं, जो मुख्य रूप से किसी के अहंकार और निचले आधार स्वयं से उत्पन्न होती हैं], बेईमानी और अन्य तोड़फोड़ [किसी के आंतरिक अस्तित्व के] की ओर आदेश देता है। तीसरा गुण पशुवत है जो असंख्य अन्यायों को जन्म देता है जैसे कि लालच, लोभ, पेट और निजी अंगों की वासना, चोरी, अनाथों के गुणों में गबन, और ईश्वरीय नियम का पालन न करने वाले प्रयासों में उपयोग के लिए धन संचय करने की इच्छा, आदि। चौथा गुण पाशविक है जो क्रोध, क्रोध, लोगों को पीटने, लोगों को कोसने, उनकी हत्या करने और उनकी संपत्ति को नष्ट करने जैसे असंख्य घृणित मामलों को भी बढ़ावा देता है, और ये पाप अन्य अनगिनत पापों के लिए शाखाएं हैं।

चार [मानव] गुणों का प्राकृतिक क्रम: जन्म के संदर्भ में, ये चार गुण [मनुष्य में] धीरे-धीरे पैदा होते हैं। सबसे पहले, पशुवत गुण हावी होते हैं, उसके बाद, पाशविक गुण हावी होते हैं। बाद में, दोनों गुण मिलकर बुद्धि को धोखाधड़ी, धोखे और बहाने के रास्ते पर लाते हैं। इस बिंदु पर, शैतानी गुण ऊपर उठते हैं और अंत में प्रभुत्व (दिव्य गुण) के गुण ऊपर उठते हैं (दिव्य गुण केवल ईश्वर, उच्च के हैं, और एक दास के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त हैं जिसे सांसारिक जीवन में विनम्र और नीच रहना चाहिए)। दूसरे शब्दों में, मनुष्य सभी रचनाओं पर श्रेष्ठता और प्रभुत्व प्राप्त करने का इरादा करना शुरू कर देता है। इसलिए, व्यक्ति हर अवसर पर गलत अभिमान व्यक्त करता है, श्रेष्ठता और अहंकार व्यक्त करता है, दूसरों का अपमान करके अपना सम्मान और महानता व्यक्त करता है, संक्षेप में, सभी पापों का स्रोत और उत्पत्ति ये चार गुण हैं। पाप उनसे निकलते हैं और [मानव] अंगों और अंगों में फैलते हैं। कुछ पाप हृदय से जुड़े होते हैं जैसे कि अविश्वास, नवीनता [ईश्वरीय रूप से निर्धारित मामलों में] और पाखंड। कुछ [पाप] आंखों और कानों से संबंधित हैं जैसे कि द्वेष और ईर्ष्या, कुछ पेट और निजी अंगों से संबंधित हैं, और कुछ [पाप] हाथों, पैरों और अन्य शारीरिक अंगों द्वारा किए जाते हैं। चूंकि ये सभी पाप स्पष्ट हैं, इसलिए उन्हें विस्तृत करने की आवश्यकता नहीं है।

विशाल पापों का वितरण: हम ईश्वरीय कानून के साक्ष्य से और आध्यात्मिक रोशनी के प्रकाश से जानते हैं [जो कि ज्ञानवादियों और अन्य आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध व्यक्तियों के पास है] कि सभी ईश्वरीय कानून का उद्देश्य सृष्टिओं को ईश्वर के करीब लाना है और दिव्य दृष्टि [आत्मा की आंख से] प्राप्त करने के सम्मान से पोषित होना है। हालाँकि, ईश्वर की निकटता और दृष्टि के भेद को प्राप्त करने के लिए, मनुष्य के लिए यह अनिवार्य है कि वह ईश्वर के शास्त्रों [उनके मूल अपरिवर्तित रूपों में] और भविष्यवक्ताओं से ईश्वरीय अस्तित्व और गुणों (गुणों) की समझ प्राप्त करे। कुरान इस वास्तविकता की ओर निम्नलिखित आयत में संकेत करता है:

وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

"मैंने (यानी भगवान) बनाया है *जिन्न* और मनुष्य केवल मेरी पूजा करने के लिए। (कुरान, अध्याय 51, श्लोक 56)

दूसरे शब्दों में, *जिन्नों* (अलौकिक अदृश्य जीव जो पृथ्वी पर मौजूद हैं) और मनुष्यों के निर्माण का उद्देश्य यह है कि वे परमेश्वर के सेवक बनें। एक सेवक वास्तव में [भगवान का] सेवक नहीं बनता है जब तक कि कोई अपने प्रभु के प्रभुत्व और अपने स्वयं (नफ्स) के [भगवान के] दासत्व की गहरी समझ विकसित नहीं कर लेता, और जब तक कोई यह नहीं समझ लेता कि प्रभु कौन है और स्वयं (*नफ्स*) क्या है। भविष्यवक्ताओं को इस बहुत ही उच्च उद्देश्य के लिए भेजा गया था [मनुष्यों को उनके प्रभु के साथ और ईश्वर के प्रति अपनी सेवा और इसके कर्तव्यों और दायित्वों के संदर्भ में अपने स्वयं की वास्तविकता से परिचित कराने के लिए]। परन्तु इस सांसारिक जीवन के अंत के बाद यह प्रयोजन पूरा नहीं होता है [क्योंकि इस उदात्त उद्देश्य को इसी सांसारिक अस्तित्व में प्राप्त करने की आवश्यकता है क्योंकि व्यक्ति का शाश्वत जीवन और उसमें शाश्वत सुख और शाश्वत सफलता निर्भर है]। इसीलिए, एक भविष्यसूचक कथन (पैगंबर मुहम्मद की हदीस [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो]) में, दुनिया को परलोक के लिए खेत के रूप में वर्णित किया गया है [क्योंकि इस खेत की खेती, चाहे अच्छी हो या बुरी, परलोक में जोतने वाले की खुशी या निराशा के लिए काटी जाती है]। इससे यह ज्ञात होता है कि ईश्वरीय आदेशों का पालन करने का उद्देश्य किसी के सांसारिक जीवन की रक्षा करना है [ताकि कोई आंतरिक शांति, खुशी और तृप्ति के साथ एक संपूर्ण जीवन जी सके] क्योंकि सांसारिक जीवन ईश्वर (दीन) के मार्ग का एक साधन है। इस दुनिया में परलोक से जो दो चीजें जुड़ी हैं, वे हैं धन और स्व। इस तरह, [इस अल्पकालिक सांसारिक जीवन में मानवीय उपलब्धि की] तीन डिग्री हैं: पहला है ईश्वर के ज्ञान और अंतरंगता की डिग्री (मारिफा या ग्नोसिस) [क्योंकि यह मानव उपलब्धि का शिखर और समाप्ति है] जो दिलों में सुरक्षित है; दूसरा स्वयं की सुरक्षा है जो शरीर [मनुष्य के भौतिक अस्तित्व] से संबंधित है; तीसरा, धन और भौतिक संपत्ति की सुरक्षा है जो लोगों से संबंधित है [और मानव सभ्यताओं के जीवित रहने और फलने-फूलने के लिए आवश्यक वाणिज्य और अर्थव्यवस्था के रूप में उनकी सामूहिक भलाई]।

पापों का वर्गीकरण भी इसी तर्ज पर होता है। दूसरे शब्दों में, सबसे बड़ा पाप वह है जो [लोगों के लिए] दिव्य ज्ञान (मारिफा) के दरवाजे को बंद कर देता है। उसके बाद, सबसे बड़ा पाप वह है जो लोगों के जीवन को कठिन और उनके लिए संकुचित कर देता है। उसके बाद सबसे बड़ा पाप वह है जो लोगों पर अर्थव्यवस्था के दरवाजे बंद कर देता है। फिर भी, [अच्छे धार्मिक कार्यों की] तीन डिग्री हैं: दिलों में परमेश्वर के ज्ञान और अंतरंगता की सुरक्षा, शरीरों में जीवन की सुरक्षा, और उन संपत्तियों की सुरक्षा जो परमेश्वर के सेवकों (यानी, मनुष्यों) के साथ मौजूद हैं [उनके आर्थिक हितों और कल्याण की रक्षा के लिए]। ये तीनों चीजें ईश्वरीय कानून (शरिया) के उद्देश्य हैं। कोई भी राष्ट्र [इस दुनिया में जो अपनी नस्लीय,

जातीय, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता की विशेषता है] की कल्पना नहीं की जा सकती है, जो इन [उद्देश्यों] से असहमत होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि बुद्धि यह भी स्वीकार नहीं कर सकती है कि परमेश्वर किसी भी भविष्यवक्ता को परमेश्वर (दीन) और उनके संसार (सांसारिक जीवन) के मार्ग से संबंधित सृष्टिओं के मामलों के सुधार के लिए भेजेगा, और फिर उन्हें ऐसे काम करने की आज्ञा देगा जो उसे और उसके भविष्यद्वक्ताओं को जानने के मार्ग में बाधाएँ पैदा करेंगे, या लोगों के जीवन को नष्ट कर देंगे। या उनके गुणों को नष्ट कर दें।

ईश्वर की ज्ञान-बुद्धि को इंद्रियों के दायरे से बाहर रखा गया है: यदि आपको लगता है कि पांच इंद्रियों के माध्यम से सत्य का पता लगाना पांच इंद्रियों तक ही सीमित है, तो आपके और गधे के बीच क्या अंतर होगा? यहां तक कि एक गधा भी पांच इंद्रियों के माध्यम से चीजों को देखता है। आप (हे मनुष्य!) अपने भीतर एक सूक्ष्मता (यानी, आत्मा) के कारण गधे से अलग हैं [अपने सहज प्राचीन रूप में, जिस पर भगवान ने मूल रूप से इसे '*फित्र* की स्थिति में बनाया था - मनुष्य की सच्ची सहज आंतरिक मूल प्रकृति जो ईश्वरीय इच्छा, दिव्य वास्तविकता, दिव्य उपस्थिति और शाश्वत सार्वभौमिक सत्यों के साथ पूरी तरह से अनुरूप है और ईश्वरीय विश्वास के प्रति पूर्वनिर्धारित है कि मनुष्य स्पष्ट रूप से संपन्न है, यानी, एकेश्वरवाद और ईश्वर की ज्ञान]। यह वही सूक्ष्मता है जिसे पहले स्वर्ग, भूमि और पहाड़ों के सामने प्रस्तुत किया गया था और उन्होंने इस सूक्ष्मता के साथ आने वाले बोझ की जिम्मेदारी लेने में असमर्थता व्यक्त की थी। इस सूक्ष्मता को तब मनुष्य के सामने प्रस्तुत किया गया था [जिसने इसे सांसारिक प्रवास से पहले आत्माओं के दायरे में स्वीकार किया था]। कुरान में इसे इस प्रकार समझाया गया है:

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا
وَحَمَلَهَا ٱلْإِنسَٰنُ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

"हम ने आकाश और पृथ्वी और पहाड़ों पर भरोसा चढ़ाया, परन्तु उन्होंने उसे उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए; मनुष्य ने इसे ढोया जो निश्चित रूप से अन्यायी था [अपने अधिकारों को पूरा नहीं करने के लिए] और [इस विश्वास में क्या शामिल है] से अनभिज्ञ था। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 72)]

यह वही सूक्ष्मता है जो उन चीजों को समझने में सक्षम है जिन्हें इंद्रियों के चक्र (क्षेत्र) से बाहर रखा गया है। जानवरों और जानवरों में यह सूक्ष्मता नहीं होती है [इसलिए, वे ज्ञान या दिव्य ज्ञान और अंतरंगता प्राप्त करने में असमर्थ हैं]। एक व्यक्ति जो इस सूक्ष्मता का उपयोग नहीं करता है, इसे बर्बाद करता है और घोषणा करता है कि ज्ञान और सूचना की सीमा केवल वही है जो इंद्रियों द्वारा माना जाता है, और जानवरों और जानवरों की एक ही [श्रेणी] में शामिल है [क्योंकि ऐसा व्यक्ति मनुष्य होने का क्या अर्थ है, तक उठने

में विफल रहा, और अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य तक पहुंचने में विफल रहा, जिसकी प्राप्ति से शाश्वत सुख और चिरस्थायी सफलता मिलती है]।

हे इस्लाम में भाइयों! आपको [विशेष रूप से] ऐसा नहीं होना चाहिए [लापरवाह, लापरवाह और सुखवादी तरीके से कार्य करके]! जो व्यक्ति केवल इंद्रियों से चीजों को देखता है, वह ईश्वर के बारे में भूल जाता है क्योंकि ईश्वर के अस्तित्व को इंद्रियों के माध्यम से नहीं देखा जाता है। जो ईश्वर को भूल जाता है, ईश्वर [बदले में,] व्यक्ति को अपने स्वयं को भूल जाता है (*नफ्स*) [और परिणामस्वरूप व्यक्ति इस सांसारिक अस्तित्व और इसके भौतिक संघर्षों के जंगल में खो जाता है और आंतरिक शांति और तृप्ति की कमी के संदर्भ में अपने स्वयं के नुकसान के लिए, अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य और परिणामस्वरूप शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता के बारे में पूरी तरह से अनभिज्ञ और बेखबर हो जाता है]। तब कोई व्यक्ति "सर्वोच्च क्षितिज" (दिव्य उपस्थिति) पर चढ़ने में सक्षम नहीं होता है और जानवरों के पद पर उतरता है [किसी की लापरवाही और लापरवाही के कारण आध्यात्मिक क्षेत्र में] और इस [निम्न] पद से संतुष्ट हो जाता है। ऐसा व्यक्ति वास्तव में, इस दिव्य विश्वास में एक गबन करने वाला है जो ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया है, ईश्वरीय आशीषों को अस्वीकार करने वाला (या इनकार करने वाला), और वह जो स्वयं को ईश्वरीय प्रतिशोध के अधीन करता है। ऐसे व्यक्ति की स्थिति जानवरों से भी बदतर होती है। जानवरों को मृत्यु के समय सब कुछ से मुक्त कर दिया जाता है, लेकिन एक इंसान मृत्यु के बाद भी [जिम्मेदारी से] मुक्त नहीं होता है। इसके बजाय, जो भरोसा मनुष्य को दिया गया है, उसे उसके मालिक (ईश्वर) को वापस करने की आवश्यकता होगी क्योंकि यह [ईश्वरीय] विश्वास स्वयं को उसकी ओर खींचेगा और केवल उसके साथ अपना निवास पाएगा। [ईश्वरीय विश्वास, जो वह सूक्ष्मता है जो ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को प्रदान की है, जो कि आत्मा है, को इस सांसारिक प्रवास के अंत में अपने मूल रूप में अपने स्वामी (ईश्वर) को वापस लौटाने की आवश्यकता है, लेकिन इसके अलावा उस ज्ञान से संपन्न है जिसे इसे सांसारिक जीवन में प्राप्त करने का काम सौंपा गया था। यह वह रूप है जिसमें वह अपने निर्माता को प्रिय के साथ पूर्ण सद्भाव, शांति और अंतरंगता की स्थिति में जानता है। आत्मा को इस दुनिया में अपने स्वर्गीय मूल में वापस जाने के लिए, अपने निर्माता के पास वापस जाने के लिए भेजा गया है। यह तब होगा जब आत्मा सांसारिक जीवन में प्राप्त सभी प्रकार की नीचता, बुराई और नकारात्मकताओं से शुद्ध हो जाएगी, एक बहादुर आध्यात्मिक संघर्ष के माध्यम से इसे दिव्य ज्ञान से संपन्न अपनी प्राचीन उदात्त स्थिति में वापस बदलने के लिए।

यह [दिव्य] "विश्वास" कैसा है? यह विश्वास उस शानदार सूर्य की तरह है जो अनंत काल के क्षितिज से उग आया है और इस नश्वर [मानव] शरीर में स्थापित हो गया है [सत्य की खोज करके और आत्मा की शुद्धि के लिए एक अटूट संघर्ष शुरू करके इसे ईश्वरीय उपस्थिति में चढ़ने के लिए मनुष्य द्वारा फिर से खोजा जा सकता है]। जब इस शरीर की प्रणाली उलटी हो जाएगी [मृत्यु से ठीक पहले], यह सूर्य पश्चिम से उगेगा (न्याय के दिन के आगमन का सबसे बड़ा संकेत पूर्व के बजाय पश्चिम से सूर्य का उदय है) और अपने निर्माता और फैशनर की उपस्थिति में यात्रा करेगा, या तो अंधेरे की स्थिति में या इसकी चमक और

रोशनी में वृद्धि हुई। तेज सूरज बिना किसी पर्दे के अपने भगवान के दरबार में पहुंच जाएगा। यहां तक कि अंधेरे में लिपटा सूर्य भी [दिव्य उपस्थिति में] तक पहुंच जाएगा क्योंकि ईश्वर का अस्तित्व हर चीज का अंतिम लौटने वाला स्थान है, लेकिन यह नीचे की ओर मुंह करके पहुंचेगा। इसकी दिशा "आला *'इलियीन" (मानव उपलब्धि के शिखर का जिक्र करते हुए उच्चतम) के चरम के बजाय* "अस्फालस सफिलीन" *(निम्न में से सबसे निम्न)* के सबसे निचले स्तर की ओर नीचे की ओर होगी [जैसा कि मनुष्य की नैतिक और आध्यात्मिक जिम्मेदारी है कि वह खुद को निम्न से निम्नतम होने की स्थिति से बाहर निकाले और इसके बजाय, [आध्यात्मिक रूप से] उच्च के उच्चतम की ओर चढ़ें। कुरान कहते हैं:

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا۟ رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ

"जब आप देखेंगे, तो आपको एक अजीब स्थिति दिखाई देगी। इन अपराधियों का सिर परमेश्वर के सामने झुक जाएगा। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 12)

यह दिव्य श्लोक साबित करता है कि न्याय के दिन, पापी भी ईश्वरीय दरबार में मौजूद होंगे, लेकिन परमेश्वर के आज्ञाकारी दासों की तरह नहीं, इसके बजाय उनके चेहरे पीछे की ओर मुड़ जाएंगे, और ऊपर की ओर चढ़ने के लिए इच्छुक होने के बजाय [आध्यात्मिक रैंकों में और परिणामस्वरूप ईश्वरीय निकटता में], वे पृथ्वी की ओर नीचे की ओर उतरने के लिए इच्छुक होंगे [सांसारिक जीवन में उनकी अधोगति के अनुरूप, उनकी वासनाओं और इच्छाओं के पीछे दौड़ने के मामले में निचले आधार वाले स्वयं का जो जिद्दी गलत सिर वाली मूर्खताओं में प्रकट होता है]। एक सेवक के पास इस पर कोई अधिकार नहीं होगा [क्योंकि यह उनके सांसारिक अस्तित्व के दौरान उन्होंने जो किया उसका ईश्वरीय प्रतिफल होगा]। जो व्यक्ति अच्छा करने के लिए ईश्वरीय सक्षमता से वंचित है (*तौफीक*), उसके पास ईश्वरीय आज्ञा को इस तरह से लागू किया जाएगा कि वह ईश्वरीय मार्गदर्शन के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ पाएगा। इसके बजाय, कोई भटक जाएगा और गुमराह की घाटियों में भटक जाएगा। हम गुमराह होने से और अज्ञानी लोगों की श्रेणी में गिने जाने से भी परमेश्वर की शरण चाहते हैं।

मोक्ष (वास्तविक सफलता) के प्राप्तकर्ता: ये वे लोग हैं जिन्होंने दिव्य ज्ञान और अंतरंगता (ज्ञान) प्राप्त की है। वे "सबसे अग्रणी" हैं (*मुकर्रबीन अल-सबीकीन* या आध्यात्मिक अभिजात वर्ग जो मानव जाति से सर्वोच्च उपलब्धि हासिल करने वाले हैं, क्योंकि वे मानव उपलब्धि के शिखर पर पहुंच गए हैं, शाश्वत खुशी और अनन्त विजय के जीवन की शुरुआत कर रहे हैं)। जो लोग ज्ञानवादियों की तरह धार्मिकता के मार्ग में उत्कृष्टता प्राप्त किए बिना धर्मी (*मुकल्लादीन*) के नक्शेकदम पर चलते हैं, वे भी सफल होंगे [हालांकि वे सर्वोच्च उपलब्धि हासिल करने वालों के आध्यात्मिक पद तक नहीं पहुंचे] लेकिन उन्हें "दाहिने हाथ के लोग" (*अशाब अल-यामीन*) कहा जाएगा। ईश्वरीय प्रतिफल जो "सबसे अग्रणी" को दिया जाएगा, वह शब्दों में किसी भी विवरण से परे होगा। यह केवल उसी के बारे में कहा जा सकता है जिसका उल्लेख कुरान में एक रूपक संदर्भ के रूप में किया गया है:

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ

"कोई भी आत्मा उन बातों को नहीं जानती जो [परमेश्वर द्वारा] आँखों की शीतलता के लिए गुप्त रखी गई हैं [उन लोगों की जिन्होंने धार्मिकता में उत्कृष्टता प्राप्त की और परमेश्वर को जीवन में अपना एकमात्र उद्देश्य बनाया]। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 17)

यह "*हदीस कुद्सी*" (पैगंबर मुहम्मद की परंपराएं [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो] में कहा गया है, जिसमें उन्होंने ईश्वर से प्रेषित किया था):

أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ
بَشَرٍ

"मैं ने अपने धर्मी दास के लिए वह तैयार किया है जो किसी भी आँखों ने नहीं देखा है, किसी कान ने नहीं सुना है, और न ही किसी मानव हृदय में उनके बारे में सोचा गया है।

ज्ञानवादी उसी अवस्था के साधक हैं जो किसी भी मानव हृदय में नहीं आया है। वे किसी भी स्वर्गीय जीवनसाथी, फल, दूध, शहद, शराब, गहने, वस्त्र और इस तरह की अन्य स्वर्गीय चीजों के लालची नहीं हैं। भले ही उन्हें ये चीजें दी गई हों, वे उनसे संतुष्ट नहीं होंगे, इसके बजाय वे दिव्य दृष्टि के आनंद की तलाश कर रहे होंगे जो शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय (*सदा*) और आनंद और आनंद के शिखर की परिणति है। रबिया अल-बसरी (भगवान उस पर दया करें - जो सभी महिला संतों और ज्ञानवादियों में सबसे आगे थीं) को किसी ने पूछा, "आप स्वर्ग में किस ओर झुकाव या इच्छा करेंगे?" उसने उत्तर दिया, "पहले निवास का स्वामी और फिर निवास"। ये वे लोग थे जिनके [स्वर्गीय] निवास (यानी, भगवान) के स्वामी के लिए प्रेम ने उन्हें निवास (यानी, स्वर्ग) के प्रेम से बेखबर बना दिया, इसके बजाय, इसने उन्हें उसके अलावा हर चीज से इस हद तक बेखबर कर दिया कि वे अपने स्वयं के प्राणियों से बेखबर हो गए। उनका दृष्टांत एक प्रेमी के समान है जो प्रिय के चेहरे को देखना चाहता था, और उसमें इतना तल्लीन है कि किसी के दिल में कोई अन्य देखभाल, विचार और इच्छा नहीं थी, यहाँ तक कि अपने स्वयं के लिए भी नहीं। इसके बजाय, व्यक्ति शरीर की हर चोट सहित हर चीज से बेखबर हो जाता है, प्रिय के चेहरे से घूंघट हटने की प्रतीक्षा करने के लिए। इस अवस्था को "प्रेम में विनाश" (*फना फी अल-हब्ब*) कहा जाता है। यानी अपने प्रिय के प्यार में इतना डूब गया है कि प्रिय के सिवाए कुछ भी नहीं दिखता। किसी के सभी विचारों और कल्पनाओं का ध्यान केवल एक ही फोकस है। किसी के दिल-दिमाग में किसी और के लिए भी जगह नहीं बची है। जब किसी के पास परमेश्वर की याद में वह [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति होती है, तो उसे परलोक में [ईश्वरीय लाभ और उदारता से] ऐसी [उंडेलने] बंदोबस्ती प्रदान की जाती है, कि उनके बारे में विचार भी किसी भी मानव हृदय में नहीं आया है। ठीक वैसे ही जैसे एक बहरा और अंधा व्यक्ति ध्वनि के रंग और प्रकृति के रूप को नहीं जानता है, लेकिन यदि आँखों और कानों के पर्दे ऊपर उठा दिए जाएँ, तो वह तब रंग और

ध्वनि के रूप और प्रकृति को जान लेगा और तब जान पाएगा कि कोई अपने हृदय में क्या कल्पना भी नहीं कर सकता था [उस दिन से पहले जब पर्दे हटा दिए जाते हैं]। यह दुनिया भी पर्दा है। कई ऐसी बातें जब इसे ऊपर उठाया जाएगा तो प्रकट हो जाएंगी, जिनकी सांसारिक जीवन में कल्पना भी नहीं की जा सकती है। तब व्यक्ति को शुद्ध और सुंदर जीवन का आनंद प्राप्त होगा और तब इस श्लोक की विषय-वस्तु स्पष्ट हो जाएगी:

وَإِنَّ ٱلدَّارَ ٱلْءَاخِرَةَ لَهِىَ ٱلْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ

"और केवल परलोक का जीवन ही स्थायी और शाश्वत है, अगर वे जानते थे। (कुरान, अध्याय 29, श्लोक 64)

एक छोटा सा पाप बड़ा कैसे हो जाता है?

यह ज्ञात होना चाहिए कि मामूली पाप निम्नलिखित कारणों से बड़े पाप बन जाते हैं:

पहला कारण - आग्रह और दृढ़ता: पहला कारण यह है कि व्यक्ति एक छोटे से पाप पर जोर देता है और बना रहता है। इसीलिए, यह प्रसिद्ध कहावत कहती है, "कोई भी पाप आग्रह के साथ मामूली नहीं रहता है और कोई भी पाप पश्चाताप के साथ बड़ा नहीं रहता है [जिसमें क्षमा मांगना, प्रायश्चित करना और सुधार करना शामिल है]"। इस कहावत का नतीजा यह है कि यदि कोई व्यक्ति कोई बड़ा पाप करने के बाद रुक जाता है और एक और बड़ा पाप करने से बचता है, तो आशा है कि उसके पाप को क्षमा कर दिया जाएगा। इसके विपरीत, एक छोटे से पाप से संबंधित मामला कठिन है, जिस पर दृढ़ता [और दृढ़ता] है। इसका सादृश्य एक चट्टान की तरह है जिस पर पानी बूंद-बूंद करके टपकता है [लंबे समय तक इस लगातार टपकने के परिणामस्वरूप चट्टान पर एक निशान या छेद भी होता है]। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

خَيْرُ الأُمُورِ أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَلَّ

"सबसे अच्छे मामले वे हैं जो दृढ़ता और दृढ़ता के साथ आयोजित किए जाते हैं, भले ही वे संख्या में कम हों"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* आयशा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* का संग्रह करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

ऐसा इसलिए है क्योंकि चीजों को उनके विपरीत द्वारा पहचाना जाता है [और उनके महत्व की सराहना की जाती है] [जैसे कि अंधेरे के कारण प्रकाश की सराहना की जाती है, बुराई के कारण अच्छा, अज्ञानता के कारण ज्ञान, उत्पीड़न के कारण न्याय, कठोरता के कारण दया, कुरूपता के कारण सौंदर्य, आदि। इसलिए, यह भविष्यद्वाणी परंपरा यह साबित करती है कि [धार्मिक] कार्यों की एक छोटी मात्रा जो लगातार की जाती है, अधिक फायदेमंद होती है। यह यह भी साबित करता है कि एक समय में किए जाने वाले बहुत सारे [धार्मिक] कर्म स्वयं के सुधार और हृदय की शुद्धि के लिए उतने फायदेमंद नहीं होते हैं [इसे बड़ी अवधि में लगातार करने की तुलना में, भले ही वे संख्या में कम हों]। इसी तरह, यदि कोई छोटे-छोटे पाप करने में लगाम लगाता है, तो वह हृदय को काला करने में अधिक शक्तिशाली [और घातक] हो जाता है। यह सच है कि कोई व्यक्ति तब तक बड़े पाप नहीं करता जब तक कि उसने पहले छोटे-मोटे पाप न किए हों। उदाहरण के लिए, एक व्यभिचारी अचानक व्यभिचार नहीं करता है, लेकिन पहले ऐसा करने का इरादा होता है। इसी तरह हत्यारा अचानक हत्या नहीं करता बल्कि पहले दुश्मनी और विद्वेष पैदा होता है। सभी बड़े पापों में यह स्थिति होती है कि छोटे-मोटे पाप उनके अग्रदूत के रूप में पाए जाते हैं। यदि हम एक बड़े पाप को मान सकते हैं जो बिना किसी मामूली पाप के अचानक आया, तो एक छोटे से पाप की तुलना में इसकी क्षमा की आशा है, जिस पर वह अपने पूरे जीवन में बना हुआ है।

दूसरा कारण – पाप को छोटा और महत्वहीन मानना: दूसरा कारण जो छोटे-मोटे पापों को बड़ा बना देता है, वह यह है कि व्यक्ति अपने पापों को महत्वहीन मानता है [और किसी भी देखभाल या चिंता के योग्य नहीं है]। हर पाप जिसे एक सेवक [ईश्वर का, यानी एक मनुष्य] अपने दिल में बड़ा मानता है, भगवान के पास छोटा हो जाता है और जो पाप महत्वहीन माना जाता है, वह भगवान की नजर में बड़ा हो जाता है। इसीलिए, पापों को बड़ा मानने का मतलब है कि कोई व्यक्ति अपने कार्यों को अपने दिल से गलत मानता है और उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता है। इसलिए, इस असमानता और घृणा के कारण [किसी ने किए गए पापों और गलत कामों की], कोई भी उस पाप के बहुत सारे प्रभावों को स्वीकार नहीं करता है। इसके विपरीत, पाप को महत्वहीन मानने का अर्थ है कि किसी को पापों के प्रति प्रेम और झुकाव है। फलस्वरूप, व्यक्ति उस पाप से बहुत सारे प्रभावों को स्वीकार करता है। [प्रत्येक कर्तव्यनिष्ठ मनुष्य का] उद्देश्य ईश्वरीय आज्ञाकारिता के माध्यम से हृदय को रोशन करना है। पापों से हृदय को काला करना [और प्रदूषित] करना [दिव्य रूप से] मना है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اَلْمُؤْمِنُ يَرَى ذَنْبَهُ كَالْجَبَلِ فَوْقَهُ يَخَافُ اَنْ يَّقَعَ عَلَيْهِ وَالْمُنَافِقُ يَرَى ذَنْبَهُ كَذُبَابٍ
مَرَّ عَلَى اَنْفِهِ فَطَارَهُ

"एक विश्वासी अपने पाप को अपने सिर पर एक लटकता हुआ पहाड़ मानता है जो गिरने वाला है, और एक पाखंडी किसी के पाप को उस मक्खी से अधिक महत्व नहीं देता है जो किसी की नाक के पास से उड़ जाती है जिस पर उसने स्वाइप किया था"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* अब्दुल्ला बिन मसूद के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक आस्तिक एक छोटे से पाप को भी बड़ा मानता है। इसका कारण परमेश्वर की विशालता, सामर्थ्य और योग्यता के बारे में उसका ज्ञान है। परमेश्वर ने एक भविष्यवक्ता को प्रकट किया, "उपहार की कमी को मत देखो, बल्कि उस व्यक्ति की महानता को देखो जिसने तुम्हें उपहार भेजा है; अपने पाप को महत्वहीन मत समझो, बल्कि उसके अस्तित्व की महानता और महिमा पर विचार करो जिसके साथ आपने अपने पाप के साथ प्रतिस्पर्धा की थी। पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के कुछ साथियों (उन पर प्रसन्न हो) ने अपने अनुयायियों (*तबाईन) से कहा है,* "आप ऐसे काम करते हैं जो आपकी दृष्टि में बालों से भी महीन होते हैं (यानी, महत्वहीन माने जाते हैं और चिंता का कारण नहीं हैं), हालांकि हमने उन्हें पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के समय घातक माना था। इसका कारण यह है कि साथी परमेश्वर की महिमा से अच्छी तरह वाकिफ थे। इसलिए, ईश्वरीय महिमा की तुलना में, छोटे-मोटे पाप भी उनकी दृष्टि में बड़े पापों से कम नहीं थे। यही कारण है कि एक अज्ञानी व्यक्ति किसी छोटी (महत्वहीन) चीज़ की उपेक्षा करता है लेकिन एक विद्वान (ज्ञान का व्यक्ति) उसी चीज़ को महत्वपूर्ण मानता है। कुछ चीजें जिन्हें आम लोगों से नजरअंदाज कर दिया जाता है, उन्हें एक ज्ञानवादी से माफ नहीं किया जाता है।

तीसरा कारण – पाप करने में खुशी: तीसरा कारण जो छोटे-मोटे पापों को बड़ा बना देता है, वह यह है कि व्यक्ति पाप करने के बाद खुश महसूस करता है, उस पर गर्व करता है और सोचता है कि मैंने जो किया है वह ईश्वर की विशेष कृपा और उदारता के कारण हुआ है। इसके अलावा, कोई इस तथ्य से बेपरवाह है कि यह कार्य एक कमी थी और कर्ता के लिए ईश्वरीय नाराजगी और बुराई का कारण था। इसमें आनंद पाने के अनुरूप, एक छोटा सा पाप बड़ा हो जाता है और उस हद तक, इसका अंधेरा हृदय में व्याप्त हो जाता है। कुछ पापियों (गलत कामों) को अपने पाप (गलत काम) के लिए प्रशंसा की मांग करते हुए, गर्व व्यक्त करते हुए, और इसके बारे में डींग मारते हुए देखा जाता है। उदाहरण के लिए, एक कहता है, "क्या तुमने नहीं देखा कि मैंने उसे कैसे बर्बाद कर दिया?" एक वाद-विवाद करने वाला या तर्क करने वाला कहता है, "क्या आपने देखा कि मैंने अपने प्रतिद्वंद्वी को कैसे अपमानित किया? मैंने उसकी गलतियों को प्रकट करके उसे शर्मिंदा कर दिया। खचाखच भरे दर्शकों के सामने उन्हें अपमानित किया गया। फिर मैंने उन्हें बहस में इस तरह से धोखा दिया कि उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी। एक व्यापारी कहता है, "मैंने उसे नकली मुद्रा देकर मूर्ख बनाया और उसे बड़ा नुकसान पहुंचाया। यह बहुत अफ़सोस की बात है कि वह मूर्ख बन गया और उसे नुकसान भी हुआ। ये और इनकी तरह की बातें छोटे-मोटे पापों को भी बड़े पापों में बदल देती हैं। पाप विनाशकारी हैं। यदि कोई उनमें लिप्त हो जाता है, शैतान से प्रभावित हो जाता है, जो उसे पाप और गलत काम करने के लिए मजबूर करता है, तो यह दुःख और अफसोस का स्थान है, न कि खुशी [और गर्व] का। क्या आपने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो दुश्मन के वश में होने में अपनी महानता मानता है और अपनी हार पर गर्व करता है? इसके अलावा, क्या एक कर्तव्यनिष्ठ मनुष्य इस प्रकार के [बुरे] काम करने के बाद खुश हो सकता है जो प्रिय (भगवान) को दुखी

करते हैं? ऐसे व्यक्ति की उपमा उस रोगी की तरह होती है जो दवा की बोतल टूटने पर खुश होता है। क्या ऐसा रोगी बिना दवा के ठीक होने का उम्मीदवार है?

चौथा कारण - ईश्वरीय आज्ञा से समर्थन लेना: एक और कारण जो एक छोटे से पाप को बड़ा बनाने का कारण बनता है, वह है परमेश्वर के घूंघट का समर्थन [या लाभ] [किसी के पापों और गलत कामों को पूरी तरह से ईश्वरीय परोपकार से सार्वजनिक रूप से अपमानित होने से बचाने के लिए], सहनशीलता और शिथिल पट्टा और यह नहीं जानना कि [भगवान के] शिथिल पट्टा [गलत तरीके से इसे पाप करने के लिए प्रोत्साहन के रूप में लेकर] ईश्वरीय अप्रसन्नता का कारण है। यदि कोई सोचता है कि किसी का पाप या गलत काम ईश्वरीय विधान और दया का प्रतीक है, तो यह किसी की अज्ञानता, गर्व व्यक्त करने के लिए सही स्थान [और समय] के बारे में अनभिज्ञता, और भगवान की पकड़ [और पहुंच] के बारे में साहसपूर्वक निडर होना [समान] है। ऐसे लोगों के स्वभाव का दृष्टांत निम्नलिखित पद में व्यक्त किया गया है:

وَيَقُولُونَ فِىٓ أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا ٱللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ

और वे मन में यह कहते हैं, 'वह हमें यह कहने के लिए दण्ड क्यों नहीं देता? (कुरान, अध्याय 58, श्लोक 8) [ऐसे लोग सोचते हैं कि चूँकि किसी के गलत कामों और पापों के लिए परमेश्वर की दण्ड तुरंत स्पष्ट और तात्कालिक नहीं होती है, इसलिए यह इस बात का प्रमाण है कि चाहे वे कुछ भी करें, उनके साथ कुछ भी बुरा नहीं होगा। वे इसे एक प्रोत्साहन और लाइसेंस के रूप में लेते हैं कि जब तक वे इस दुनिया में और अगले दुनिया में पकड़े नहीं जाते, तब तक बिना किसी दंड के गलत काम करते रहें]

पांचवां कारण - पाप की अभिव्यक्ति और घोषणा: एक छोटे से पाप के बड़े होने का एक कारण यह है कि कोई पाप करता है और फिर लोगों को बताता है कि उसने क्या किया है या ऐसा स्थान पर किया है जहां लोग देख रहे हैं। जो ऐसा करता है, वह उस पर्दे को काटना चाहता है जिसे भगवान ने किसी के पाप पर [ईश्वरीय दया से] रखा है और लोगों को [वही या समान] पाप करने के लिए उकसाना चाहता है, जिन्हें इसके बारे में सूचित किया गया है या किसी ने उनकी उपस्थिति में वह पाप किया है। इस मामले में, एक पाप पहले से था और दो और जुड़ गए, इसीलिए, यह पाप एक बड़ा पाप बन जाएगा। यदि कोई लोगों को उसी पाप [या बुरे कर्म] को व्यक्त करने और प्रकट करने के अलावा करने के लिए उकसाता है, तो यह चौथा पाप होगा और यह अत्यंत घातक हो जाएगा। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

كُلُّ النَّاسِ مُعَافِيٌ إِلَّا الْمُجَاهِرِينَ يَبِيتُ أَحَدُهُمْ عَلَى ذَنْبٍ قَدْ سَتَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ
فَيُصْبِحُ فَيَكْشِفُ سِتْرَ اللَّهِ وَيَتَحَدَّثُ بِذَنْبِهِ

"सभी लोगों को [ईश्वरीय रूप से] क्षमा किया जाएगा, सिवाय उन लोगों को जो अपने पापों को प्रकट करते हुए घूमते हैं। एक व्यक्ति पाप करने के बाद बिस्तर पर लेट जाता है और परमेश्वर उस पाप को रात के

अंधेरे में छिपा देता है। लेकिन जब सुबह होती है, तो कोई उस पाप को प्रकट करता है जिसे परमेश्वर ने छुपाया है और लोगों को इसके बारे में बताता है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* अबू हुरैरा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इसका कारण, जो परमेश्वर के दिव्य गुणों और अनुग्रहों में शामिल है, यह है कि वह [लोगों में] अच्छे गुणों को प्रकट करता है और बुरे कार्यों को छुपाता है और किसी के रहस्यों को प्रकट नहीं करता है। एक व्यक्ति जो अपने स्वयं के दोषों [और पापों] को उजागर करता है, वह किसी ऐसे व्यक्ति के समान है जो इस ईश्वरीय आशीर्वाद के प्रति कृतघ्न हो रहा है और व्यवहार में इस दिव्य गुण को [अपने कार्यों के माध्यम से] अस्वीकार कर देता है। एक ज्ञानवादी ने कहा, "सबसे पहले, एक सेवक को पाप भी नहीं करना चाहिए, लेकिन यदि कोई करता है, तो उसे दूसरों को नहीं मनाना चाहिए, अन्यथा, वह दो पाप करेगा"। यह पाखंडियों की विशेषता है कि वे एक-दूसरे को बुराई करने के लिए राजी करते हैं। कुरान कहते हैं:

ٱلْمُنَٰفِقُونَ وَٱلْمُنَٰفِقَٰتُ بَعْضُهُم مِّنۢ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِٱلْمُنكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمَعْرُوفِ

"पाखंडी पुरुष और पाखंडी महिलाएं, कुछ [उनमें से] कुछ दूसरों को बुराई की ओर इशारा करते हैं और [एक-दूसरे को] अच्छे कर्म करने से रोकते हैं। (कुरान, अध्याय 9, श्लोक 67)

छठा कारण - एक नेता या एक प्रमुख व्यक्ति जो पाप करता है: कुछ पाप भी बड़े हो जाते हैं क्योंकि वे किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किए गए हैं जिसका लोग धार्मिक कानूनी मामलों में पालन करते हैं, क्योंकि लोग जो करते हैं उसका पालन करते हैं। उदाहरण के लिए, एक धार्मिक विद्वान रेशम पहने हुए, या सोने [प्लेटेड] वाहनों पर सवार होकर, राजाओं [या सरकारी अधिकारियों या राजनीतिक शक्ति वाले लोगों] से संदिग्ध धन ले रहा है या उन्हें उनके गलत कामों का एहसास न कराकर उनकी मदद कर रहा है, और विशुद्ध रूप से प्रतिष्ठा के लिए ज्ञान में लिप्त है। ये ऐसे पाप हैं जिनमें सरल दिमाग वाले लोग उनका अनुसरण करते हैं। ऐसे विद्वान एक दिन मर जाएंगे लेकिन उनकी बुराई पूरी दुनिया में फैलती रहेगी [उनके जाने के बाद भी]। वह व्यक्ति कितना भाग्यशाली है जिसके पाप एक के साथ दफन हो जाते हैं [मृत्यु के समय]? [धार्मिक] विद्वानों (या नेताओं या प्रवृत्ति सेटर्स) से संबंधित मामला खतरनाक है क्योंकि उनके पास बड़ी जिम्मेदारियां हैं। जब वे अच्छे कर्म करते हैं [या लोगों के बीच अच्छे रुझान स्थापित करते हैं], तो यदि कोई भी उनका अनुसरण करता है तो उनके दिव्य पुरस्कारों में वृद्धि होती है। यदि कोई विद्वान सांसारिक आडंबर-चकाचौंध को त्याग कर उससे घृणा करता है, केवल आवश्यक चीजों से संतुष्ट रहता है, असीम दिव्य शक्ति पर भरोसा करता है, अपने लिए पुराने कपड़ों को प्राथमिकता देता है, और लोग अच्छी आदतों में उसका अनुसरण करते हैं, तो व्यक्ति को न केवल अपने [अच्छे] कर्मों के लिए ईश्वरीय पारिश्रमिक मिलेगा, बल्कि हर कोई जो एक का अनुसरण करता है [ऐसे अच्छे कर्मों में], उनका इनाम भी एक को दिया जाएगा [अनुयायियों के लिए ईश्वरीय प्रतिफल से कुछ भी कम किए बिना]। यदि कोई सांसारिक आडंबर और चमक-दमक की ओर प्रवृत्त रहता है, तो जो लोग [सांसारिक और सामाजिक]

पद में निचले स्तर पर हैं, वे उसमें एक के समान दिखने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे अपनी आर्थिक स्थिति के कारण इसमें सफल नहीं हो पाएंगे। वे राजाओं [या राजनीतिक या आर्थिक रूप से शक्तिशाली लोगों] की सेवा करने और अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए अवैध स्रोतों से धन कमाने के लिए मजबूर होंगे। इस तरह, किसी को ही उनके सभी कार्यों [बुराई या हानिकारक प्रवृत्तियों में अनुयायियों के] के लिए उद्देश्य के रूप में घोषित किया जाएगा। दोनों राज्यों में, जिस तरह एक विद्वान [या नेता या प्रवृत्ति सेटर] होने से लाभ होता है, उसी तरह नुकसान भी होता है, और इन दोनों का एक दृश्य प्रभाव पड़ता है।

पापों का अंधकार हृदय से कैसे दूर हो जाता है? पापों का अंधेरा (किए गए अकर्मियों) को दो चीजों से दूर किया जाता है: पहला है पछतावे और शर्मनाक की आग; और दूसरा आध्यात्मिक संघर्ष की तीव्रता [भविष्य में गलतियों को त्यागने के लिए]। [इन दोनों में पश्चाताप शामिल है]। पश्चाताप की कई डिग्री हैं। उनकी प्रारंभिक डिग्री भी लाभों से परिपूर्ण है। बाद की डिग्री उत्कृष्टता के उच्च स्तर पर हैं। सहल बिन अब्दुल्लाह अल-तुस्तारी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "एक दास (मनुष्य) को हर स्थिति और स्थिति में अपने भगवान की आवश्यकता होती है। हर अवस्था में परमेश्वर की ओर मुड़ना बेहतर है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। उदाहरण के लिए, यदि कोई पाप कर रहा है तो उसे प्रार्थना करनी चाहिए, 'हे परमेश्वर! कृपया मेरे पाप पर पर्दा डाल दें। जब कोई पाप से निपट जाए तो उसे प्रार्थना करनी चाहिए, 'हे भगवान! मेरे गलत काम को माफ कर दो'। पश्चाताप करने के बाद, प्रार्थना करनी चाहिए, 'मुझे फिर से पाप करने से बचाओ'। अगर कोई कुछ अच्छा करता है, तो उसे प्रार्थना करनी चाहिए, 'हे भगवान! मेरे इस काम को स्वीकार करो'। किसी ने उससे पूछा, "कौन सा पश्चाताप पापों को क्षमा करने का कारण बनता है? उन्होंने उत्तर दिया, "पश्चाताप की शुरुआत [भगवान के लिए] तपस्या है, फिर यह उसके पास लौट रहा है फिर यह पश्चाताप है। प्रायश्चित शारीरिक अंगों के कार्यों को संदर्भित करता है, ईश्वर के पास लौटना हृदय के कार्यों को संदर्भित करता है, और ईश्वर के प्रति पश्चाताप का अर्थ है रचनाओं से बेखबर होना और ईश्वर के प्रति पूरी तरह से चौकस रहना और उस पाप के लिए ईश्वर से क्षमा मांगना जो व्यक्ति लिप्त है, इसके अलावा, ईश्वरीय आशीषों की अस्वीकृति और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के परित्याग जैसे दोषों से क्षमा मांगना। आशा है कि उसके बाद किसी को क्षमा कर दिया जाएगा और वह सभी ब्रह्मांडों के भगवान के साथ शरण प्राप्त करेगा। पश्चाताप के बाद भी चरण होते हैं। पहला चरण एकांत है, फिर दृढ़ता, फिर ज्ञान की खोज, फिर चिंतन, फिर [ईश्वर से] विनती करता है, फिर स्वर्गारोहण [दिव्य उपस्थिति में], फिर सद्भाव [ईश्वर के साथ], फिर गुप्त बातचीत [ईश्वर के साथ]। लेकिन ये सभी अवस्थाएँ उस दास के हृदय पर उतरती हैं जिसका भरण-पोषण [दिव्य] ज्ञान है, रखरखाव ईश्वरीय स्मरण है, निर्भरता ईश्वरीय स्वीकृति है, साथी विश्वास है [ईश्वर में] - इस तरह के हृदय पर, परमेश्वर अपना विशेष ध्यान देता है और उसे सिंहासन पर ले जाता है जहाँ उसे दिव्य सिंहासन के धारकों के बीच स्थान मिलता है। किसी ने उनसे पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की निम्नलिखित कहावत के बारे में पूछा:

التَّائِبُ حَبِيبُ اللهِ

"पश्चाताप करने वाला व्यक्ति परमेश्वर का प्रिय होता है।

उसने उत्तर दिया, "पश्चाताप करने वाला व्यक्ति परमेश्वर का प्रिय होगा जब निम्नलिखित लक्षण एक में पाए जाएंगे:

ٱلتَّٰٓئِبُونَ ٱلۡعَٰبِدُونَ ٱلۡحَٰمِدُونَ ٱلسَّٰٓئِحُونَ
ٱلرَّٰكِعُونَ ٱلسَّٰجِدُونَ ٱلۡأٓمِرُونَ بِٱلۡمَعۡرُوفِ
وَٱلنَّاهُونَ عَنِ ٱلۡمُنكَرِ وَٱلۡحَٰفِظُونَ لِحُدُودِ ٱللَّهِ

वे वे हैं जो पश्चाताप करते हैं, परमेश्वर की आराधना करते हैं, परमेश्वर की स्तुति करते हैं, उपवास करते हैं, परमेश्वर के सामने झुकते हैं [समर्पण और आराधना में], परमेश्वर को दण्डवत् करते हैं, लोगों को अच्छे और महान के लिए प्रोत्साहित करते हैं, और उन्हें बुराई करने से रोकते हैं, और परमेश्वर की सीमाओं की रक्षा करते हैं (नैतिकता, सभ्यता और शालीनता की ईश्वरीय द्वारा निर्धारित सीमाओं को पार नहीं करते हैं)। (कुरान, अध्याय 9, श्लोक 112)

किसी को "प्रिय" कहा जाता है जब कोई अपने प्रिय व्यक्ति के प्रति इतना आज्ञाकारी होता है कि वह उस चीज़ के करीब भी नहीं आता जिसे प्यार किया जाता है। इस स्पष्टीकरण का उद्देश्य यह है कि पश्चाताप के दो लाभ हैं: पहला लाभ यह है कि पाप मिट जाता है और व्यक्ति ऐसा हो जाता है जैसे कि उसने कभी पाप नहीं किया हो; दूसरा लाभ यह है कि व्यक्ति ईश्वरीय निकटता की डिग्री प्राप्त कर लेता है, इस हद तक कि वह [ईश्वर का] प्रिय बन जाता है। फिर पापों के प्रायश्चित और प्रायश्चित की अलग-अलग डिग्री होती है - कुछ पापों को मिटा दिया जाता है जैसे कि वे कभी अस्तित्व में ही नहीं थे, कुछ पाप पश्चाताप के अनुरूप कम हो जाते हैं, लेकिन पापों के उन्मूलन में इसका समान प्रभाव पड़ता है।

जाफ़र-अल-सादिक (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "ईश्वर ने चार अन्य चीजों में चार बातें छुपाई हैं - [ईश्वर] आज्ञाकारिता में अनुमोदन, इसीलिए, आज्ञाकारिता के एक छोटे से कार्य को भी महत्वहीन न समझें, यह संभव है कि ईश्वर की स्वीकृति उसमें छिपी हो; [दिव्य] पापों में क्रोध, इसीलिए, एक छोटे से पाप को भी महत्वहीन न समझें, यह संभव है, कि पाप ही ईश्वरीय क्रोध का कारण है; [परमेश्वर के] सेवकों में ज्ञान, इसीलिए, किसी भी सेवक (मनुष्य) को महत्वहीन (नीच या घृणित) न मानें, यह संभव है कि कोई [जिसे नीची दृष्टि से देखा जा रहा है] परमेश्वर का अंतरंग हो; [ईश्वर] प्रार्थना में स्वीकृति [भगवान] के लिए,

इसीलिए, किसी भी अवसर पर भगवान से प्रार्थना (प्रार्थना) करना न छोड़ें, इसमें [भगवान की] स्वीकृति हो सकती है।

पश्चाताप की दवा और पापों पर जोर देने की विधि

यह ज्ञात होना चाहिए कि लोग दो प्रकार के होते हैं: एक वह युवा जिसका बुराई के प्रति कोई झुकाव नहीं है, जो अच्छे और महान पर उठाया गया है, और बुराई से दूर रहना एक के स्वभाव (स्वभाव या आंतरिक संरचना) में है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

يَعْجَبُ رَبُّكَ مِنَ الشَّابِّ لَيْسَتْ لَهُ صَبْوَةٌ

"आपका रब उन युवाओं पर आश्चर्यचकित है जिनका झुकाव बुराई की ओर नहीं है। लेकिन ऐसे लोग दुर्लभ हैं। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* ने *मुसनद अहमद* और *तबरनी को* 'उतबाह इब्न अमीर' के अधिकार पर संग्रह किया है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

दूसरे प्रकार में उन लोगों को शामिल किया जाता है जो पाप करते हैं। उन्हें आगे दो प्रकारों में विभाजित किया गया है: वे जो पश्चाताप करते हैं और वे जो पापों पर जोर देते हैं। मैं इस अध्याय में पापों पर जोर देने का इलाज बताना चाहूंगा और कौन सी दवा इस बीमारी को खत्म करने और स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने में प्रभावी है।

यह स्पष्टता के साथ जाना जाना चाहिए कि पश्चाताप ठीक होना है और यह वसूली एक दवा के माध्यम से प्राप्त की जाती है। दवा से परिचित होने के लिए, यह जरूरी है कि व्यक्ति को बीमारी के बारे में पता हो। चिकित्सा का अर्थ है उन कारणों के खिलाफ जाना जो किसी बीमारी के अस्तित्व का कारण बने हैं। यदि कोई किसी विशेष बीमारी का इलाज करना चाहता है, तो उस बीमारी को पैदा करने वाले कारण को समाप्त कर दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, यह भी एक स्थापित तथ्य है कि इसके विपरीत सब कुछ शून्य हो जाता है। यदि इस सिद्धांत के प्रकाश में देखा जाए, तो पापों पर जोर देने का कारण लापरवाही (लापरवाही) और वासना है। असावधानी के विपरीत ज्ञान है और वासना के विपरीत यह है कि मनुष्य उन कारकों पर धैर्य रखता है जो वासना और वासना को भड़काते हैं। लापरवाही (या असावधानी) पापों की जड़ है। असावधानी को ठीक करने के लिए जो दवा तैयार की जाएगी, उसमें धैर्य की कड़वाहट के साथ ज्ञान की मिठास के तत्व होंगे।

धार्मिक विद्वानों के दायित्व: जब कोई व्यक्ति पाप करता है [महसूस करता है या जानता है] कि उसने पाप किया है, तो उसके लिए एक विद्वान [एक आध्यात्मिक शिक्षक जो आंतरिक आध्यात्मिक रोगों और मानवता को पीड़ित करने वाली बीमारियों के बारे में जानकार है] के हाथों ठीक होना आवश्यक है। यदि कोई अपनी बीमारी को नहीं पहचानता है, तो एक विद्वान को इसके लिए इसका निदान करना चाहिए। ऐसा करने का तरीका यह है कि एक विद्वान एक देश, शहर, पड़ोस, *मस्जिद* (ईश्वर की पूजा और महिमा करने का स्थान जहां लोग ईश्वर के साथ संबंध और संबंध तलाशने जाते हैं), या लोगों के समूह के लिए जिम्मेदार हो जाएं और उन्हें ईश्वर के मार्ग (दीन) के बारे में शिक्षित करें, उन्हें उन चीजों के बारे में समझाएं जो उनके लिए हानिकारक हैं, उन्हें उन चीजों के बारे में सूचित करें जो [आध्यात्मिक रूप से] उनके लिए फायदेमंद हैं, उन्हें *सादाह* (अनन्त सुख और अंतहीन सफलता) और *शकवा* (शाश्वत अभिशाप और पूर्ण असफलता) की ओर ले जाने वाले कारकों के बारे में विस्तार से बताएं। एक विद्वान को मार्गदर्शन करने से पहले लोगों के पूछने का इंतजार नहीं करना चाहिए, इसके बजाय, एक विद्वान को लोगों को एक के पास आने या उनसे मिलने और उन्हें सही रास्ते पर मार्गदर्शन करने के लिए बुलाना चाहिए क्योंकि विद्वान [और आध्यात्मिक मार्गदर्शक] भविष्यवक्ताओं के उत्तराधिकारी हैं [भविष्यवाणी के युग के अंत के बाद]। मार्गदर्शन और शिक्षा में, यह हमेशा [सच्चे] भविष्यद्वक्ताओं [ईश्वर के] का तरीका रहा है कि वे अपने चारों ओर घूमें, लोगों को बुलाएं, हर घर में जाकर उन्हें सत्य के मार्ग पर आमंत्रित करें, हर एक को भगवान (दीन) के मार्ग के बारे में चेतावनी देते हुए खोजें। आमतौर पर लोग अपने दिल की बीमारियों से परिचित नहीं होते हैं, इसलिए विद्वानों को खुद पहल करनी चाहिए और उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। बाहरी [शारीरिक] रोगों से संबंधित मामलों में, कोई स्वयं चिकित्सक से संपर्क कर सकता है, उदाहरण के लिए, यदि किसी को विटिलिगो (बिना रंगद्रव्य वाली त्वचा के धब्बों की विशेषता वाली त्वचा का रोग) है या उसके चेहरे पर निशान हैं तो वह दर्पण में देखकर अपनी बीमारी की स्थिति जान सकता है। लेकिन हर किसी के पास दर्पण नहीं होता है और किसी को अपनी बीमारी के बारे में तब तक पता नहीं चलेगा जब तक कि कोई और इसके बारे में नहीं बताता। यह व्यक्तिगत रूप से अनिवार्य है (फर्द *अल-ऐन*) सभी विद्वानों पर [लोगों को उनकी आध्यात्मिक बीमारियों से बाहर निकालने में सक्रिय रूप से मदद करने और मार्गदर्शन करने के लिए]। लोग अज्ञानी पैदा होते हैं, इसलिए, ईश्वरीय मार्ग (दीन) के सिद्धांतों और विवरण से संबंधित मामलों में लोगों तक पहुंचना अनिवार्य है। संसार बीमारों के निवास स्थान की तरह है - जो पृथ्वी के नीचे है वह मर चुका है और जो इसकी सतह पर है वह बीमार है। शरीर के रोगों की तुलना में हृदय के रोग अधिक होते हैं, इसीलिए, इस दुनिया के अस्पताल में, आध्यात्मिक रोगों के रोगियों की संख्या शारीरिक रोगों के रोगियों से अधिक है। विद्वान [और आध्यात्मिक मार्गदर्शक] इस अस्पताल के डॉक्टर हैं और सरकारी अधिकारी इसके आयोजक [और देखभाल करने वाले] हैं। यदि कोई रोगी अपने चिकित्सक के सुझाव को स्वीकार नहीं करता है और [चिकित्सक द्वारा] बताई गई दवा नहीं लेता है, तो [ऐसे रोगी] को सरकारी अधिकारियों को सौंप दिया जाना चाहिए ताकि वे अन्य लोगों को उनकी [संक्रामक] बीमारी से बचा सकें। ठीक उसी तरह जैसे एक मरीज जो रोकथाम का पालन नहीं करता है, या तो पागल हो जाता है या जेलर को सौंप दिया जाता है ताकि वे एक को कैद कर सकें और खुद को और दूसरों को अपनी [संक्रामक] बीमारी से बचा सकें।

हृदय के रोग अधिक संख्या में क्यों हैं? शारीरिक रोगों की तुलना में हृदय के रोग अधिक होते हैं। इसके तीन कारण हैं: पहला कारण यह है कि एक मरीज को पता नहीं होता है कि वह किस बीमारी से संक्रमित है। दूसरा कारण यह है कि इसका (हृदय के रोगों) का परिणाम इस दुनिया में [आम तौर पर] दिखाई नहीं देता है, जबकि शारीरिक रोगों का परिणाम इस दुनिया में दिखाई देता है, [कभी-कभी] जिसके परिणामस्वरूप मृत्यु हो जाती है। इसलिए, लोग शारीरिक रोगों से डरते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि यदि वे खुद को ठीक नहीं करते हैं, तो मृत्यु उन्हें पृथ्वी के चेहरे से गायब कर देगी। हृदय के पापों (रोगों) का परिणाम हृदय की मृत्यु है। हालाँकि, संसार (सांसारिक जीवन) में इसके बारे में कोई नहीं जानता, इसीलिए, पापों के प्रति घृणा कम होती है। भले ही, मनुष्य जानता है कि किसी ने पाप किया है, फिर भी वह अपने पापों को अधिक महत्व नहीं देता है और पश्चाताप और क्षमा की मांग से संबंधित मामलों पर परमेश्वर पर निर्भर रहता है। हालांकि, कोई शारीरिक रोगों के लिए भगवान पर भरोसा नहीं करता है, इसके बजाय, एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के पास भागता है। तीसरा कारण सबसे महत्वपूर्ण और मूलभूत है, बल्कि यह अपने आप में एक लाइलाज बीमारी है और यह है कि दिलों के चिकित्सक [लगभग] अस्तित्वहीन हैं। जिन लोगों से इन बीमारियों में संपर्क किया जा सकता है, वे धार्मिक विद्वान हैं, लेकिन वे स्वयं आजकल सबसे खराब [आध्यात्मिक] बीमारियों से संक्रमित हैं [क्योंकि उनमें स्वयं आध्यात्मिक पूर्णता और आध्यात्मिक बीमारियों के लोगों को ठीक करने में मदद करने में परिणामी विशेषज्ञता की कमी है]। जब वे खुद को ठीक करने में असमर्थ हैं तो वे दूसरों को कैसे ठीक कर सकते हैं? ये [आध्यात्मिक] रोग (हृदय के) बड़े पैमाने पर हैं और शायद ही कभी किसी को इनसे बचाया जाता है, इसीलिए, विद्वानों का यह दोष स्पष्ट नहीं होता है और वे (विद्वान) रचनाओं को [आध्यात्मिक मार्ग से] विचलित करते हैं और उन्हें बताते हैं कि इस बीमारी को बढ़ाने वाली चीजें किस प्रकार की हैं। इन बीमारियों में सबसे विनाशकारी दुनिया का प्रेम (सांसारिकता) है और यह ईश्वर (दीन) के मार्ग के चिकित्सकों पर हावी है। यही कारण है कि वे दूसरों के लिए इलाज सुझाते हैं लेकिन खुद इस बीमारी में लिप्त हैं जिससे यह इतना व्यापक हो गया है, बल्कि यह महामारी का रूप ले रहा है।

डॉक्टरों की कमी [आध्यात्मिक बीमारियों] के कारण रचनाओं को विनाश का अनुभव हो रहा है। जिन लोगों को डॉक्टर और इलाज करने वाला होना चाहिए, वे सरल दिमाग वाली रचनाओं को लूटने और विभिन्न तरीकों से उन्हें गुमराह करने के लिए विभिन्न प्रकार के हथकंडे अपना रहे हैं। यदि वे उनके लिए अच्छा नहीं कर सकते हैं तो उन्हें उनके प्रति बेईमानी नहीं करनी चाहिए, यदि वे सुधार नहीं ला सकते हैं तो कम से कम उन्हें उन्हें बदतर नहीं बनाना चाहिए। इसके बजाय, उनके लिए चुप रहना बेहतर है क्योंकि जब भी वे अपना मुंह खोलते हैं, तो उनका उद्देश्य अधिक से अधिक लोग उनके पास आएं और उस उद्देश्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब वे लोगों को क्षमा की झूठी आशा दें, ईश्वर (रीजा) में आशा के कारणों को प्राथमिकता दें, ईश्वरीय दया के तर्कों का उल्लेख करें, और जानबूझकर उन परंपराओं के उल्लेख से बचें जिनमें लोगों को परमेश्वर के क्रोध का उल्लेख करके [गलत काम और बुराई के लिए] ईश्वरीय दंड से भयभीत किया गया है। लोगों को इस तरह के उपदेशों में बहुत संतुष्टि मिलती है

और ये चीजें उनके कानों में मिठास डालती हैं और दिलों को संपत्ति प्रदान करती हैं। जब लोग इन तथाकथित "विद्वानों" की सभाओं से लौटते हैं, तो पाप करने का उनका दुस्साहस कुछ और बढ़ जाता है और परमेश्वर की उदारता पर उनकी निर्भरता कुछ और बढ़ जाती है। यह एक स्थापित तथ्य है कि यदि कोई डॉक्टर अज्ञानी और बेईमान है तो वह अपने मरीज को एक घातक दवा देता है जो स्वास्थ्य प्रदान करने के बजाय, रोगी को मौत के जबड़े में धकेल देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक मरीज को वह दवा नहीं दी जाती है जिसकी जरूरत होती है और उसे उस तरह से दवा नहीं दी जाती है जिस तरह से उसे दी जानी चाहिए।

पापों के कारणों का इलाज: अब पापों के कारणों (बुराइयों और अकर्मों) का इलाज यहां समझाया जाएगा। पहले कारण "पापों के लिए दंड तत्काल नहीं है और किसी को दिखाई नहीं देता है" का इलाज यह सोचना है कि भविष्य में जो कुछ होना तय है वह होगा [भले ही इसमें देरी हो रही हो और सांसारिक जीवन के दौरान इसे देखा न जा सके] और वह दिन दूर नहीं है, इसके बजाय, यह किसी ऐसे व्यक्ति के बहुत करीब है जिसके पास इसे देखने के लिए आंखें हैं। इसके अलावा, मृत्यु एक इंसान के इतने करीब है जितना कि जूते के फीते [जूते के फीते] जो किसी ने पहने हुए हैं। यह मामला हो सकता है कि न्याय का दिन निकट है [क्योंकि मृत्यु मृत्यु के बाद के जीवन और न्याय के दिन की यात्रा की शुरुआत है] और कुछ क्षणों के बाद होने वाला हो सकता है। किसी को यह भी सोचना चाहिए कि मनुष्य स्वभाव से अपने भविष्य की भलाई के लिए कड़ी मेहनत करता है, कठिनाइयों को सहता है, उदाहरण के लिए, समुद्र के रास्ते यात्रा करता है [व्यापार, वाणिज्य, शिक्षा, आदि के लिए लंबी, कठिन यात्राओं पर], रेगिस्तान में इस उम्मीद में घूमता है कि इन यात्राओं के माध्यम से प्राप्त होने वाला लाभ उसे भविष्य के जीवन में मदद करेगा। इतना ही नहीं, यदि कोई बीमार पड़ जाता है और कोई चिकित्सक जो आस्तिक नहीं है, उसे सूचित करता है कि ठंडा पानी उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और यहां तक कि मृत्यु के करीब भी लाता है, हालांकि ठंडा पानी व्यक्ति के लिए बहुत सुखदायक होता है, लेकिन वह उसे छूता भी नहीं है। यह विचार करने योग्य है कि कोई व्यक्ति एक गैर-विश्वासी की सलाह पर सांसारिक आनंद [अपनी प्यास बुझाने के लिए ठंडा पानी पीने] को छोड़ देता है। यह अच्छी तरह से मामला हो सकता है कि चिकित्सक अच्छा है लेकिन कोई स्थापित चमत्कार नहीं है कि चिकित्सक के पास हर समय सही रहने के लिए चिकित्सा विशेषज्ञता का स्तर है। दूसरी ओर, [सच्चे] भविष्यद्वक्ताओं [परमेश्वर] की सत्यता पर स्थापित चमत्कार हैं। किसी को यह सोचना चाहिए कि कोई एक गैर-विश्वासी पर विश्वास कर सकता है, लेकिन एक [सच्चे] पैगंबर [ईश्वर के] पर विश्वास नहीं कर सकता है जो उन्होंने [मानवता की भलाई के लिए ईश्वरीय मार्गदर्शन के संदर्भ में] लाया है।

दूसरे कारण को इसी तरह से ठीक किया जा सकता है। यदि पापों के सुखों पर जोर है, तो जानबूझकर इसे त्याग देना चाहिए और सोचना चाहिए कि यदि कोई सांसारिक जीवन के सुखों को कुछ दिनों के लायक नहीं छोड़ सकता है तो वह अनंत जीवन के सुखों को कैसे छोड़ सकता है जो हमेशा के लिए रहता

है। यदि कोई इस जीवन में [पापों के सुख से बचने का] दर्द को सहन नहीं कर सकता है जो कुछ दिनों के लायक है और इस छोटी सी कठिनाई के साथ धैर्य नहीं रख सकता है, तो वह नरक के दर्द को कैसे सहन कर सकता है। इसके अलावा, जब कोई सांसारिक आशीषों [और सुखों] के साथ धैर्य नहीं रख सकता है जो अप्रिय परिणामों से भरे हुए हैं, तो कोई परलोक के शुद्ध और स्वच्छ आशीषों के साथ कैसे धैर्य रख सकता है।

तीसरे कारण के इलाज के बारे में, जो कि पश्चाताप की स्वीकृति की आशा में पश्चाताप करने में पूर्वाभ्यास करना है [बाद में जब कोई पूरी तरह से पापों का आनंद ले लेता है और जीवन में उन्नत या बुढ़ापे में पहुंच जाता है], किसी को यह सोचना चाहिए कि नरक के निवासियों के चिल्लाने का कारण यह देरी [पश्चाताप में] होगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे पापों से पश्चाताप में देरी करेंगे जो किसी की मृत्यु के साथ समाप्त होता है [क्योंकि मृत्यु का समय सभी जीवन प्रत्याशा अपेक्षाओं के बावजूद अज्ञात है, और सभी उम्र के लोग विभिन्न कारणों से मर जाते हैं], बाद में, पश्चाताप के लिए कोई अवसर नहीं बचेगा। यह संभव है कि कोई पश्चाताप से पहले मर जाए और अगर कोई जीवित भी हो जाए, तो कोई कैसे जानता है कि वह पापों को त्यागने में सक्षम होगा जबकि वह अभी ऐसा करने में सक्षम नहीं है क्योंकि आज मौजूद पापों को न छोड़ने का कारण बाद में भी मौजूद हो सकता है। यह भी संभव है कि लगातार गलत काम करने से आदतें बाद में दृढ़ हो जाएं। जिसने आदत नहीं बनाई है, अगर कोई इसे छोड़ना चाहता है तो उसे पीछे छोड़ना आसान लगता है, लेकिन अगर किसी की एक स्थिर [और अच्छी तरह से स्थापित] आदत है, तो उसे इच्छा के बावजूद इसे छोड़ना मुश्किल लगता है। एक prevaricator का उदाहरण किसी ऐसे व्यक्ति का है जो एक पेड़ को हटाना चाहता है, लेकिन पेड़ मजबूत है और इसे आसानी से हटाया नहीं जा सकता है और एक अगले साल ऐसा करने के लिए छोड़ देता है। कोई भी अच्छी तरह जानता है कि कोई पेड़ कितना भी लंबा रहता है, उसकी जड़ें फैलती हैं, मजबूत होती जाती हैं और जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, वह कमजोर होता जाता है। इससे बड़ी मूर्खता क्या हो सकती है कि जब कोई अपनी शारीरिक शक्ति के बावजूद अपेक्षाकृत कमजोर पेड़ को नहीं हटा पाता है, तो अपनी कमजोर अवस्था में एक मजबूत पेड़ को कैसे हटा सकता है?

चौथे कारण का इलाज, जो कि परमेश्वर की दया और उदारता की प्रतीक्षा कर रहा है, पहले समझाया जा चुका है। इसका उदाहरण किसी ऐसे व्यक्ति के समान है जो दान में अपनी सारी संपत्ति और संपत्ति को त्याग देता है, अपने परिवार को निराश्रित बना देता है, और परमेश्वर द्वारा अदृश्य में से एक जीविका भेजने की प्रतीक्षा करता है या एक [दूरस्थ उजाड़] बंजर भूमि पर एक खजाना प्रदान करता है। पापों को क्षमा करने की संभावना [पश्चाताप, प्रायश्चित और सुधार के बिना] खजाना खोजने की संभावना की तरह है; या ऐसे व्यक्ति की उपमा किसी ऐसे व्यक्ति की तरह है जो किसी ऐसे शहर में रहते हुए अपना सामान सामने के आँगन में छोड़ देता है जहाँ दिन के उजाले में चीजें लूट ली जाती हैं, और कहता है कि उसे परमेश्वर पर भरोसा है जो किसी के माल की रक्षा करेगा [लूटे जाने से], भले ही कोई उसे सुरक्षित स्थान पर रखने में

सक्षम हो। इन उदाहरणों में, खजाना ढूंढना या चोरी करने वालों से अपने सामान की रक्षा करना असंभव है। जो इस तरह के भरोसे (या गलत उम्मीद) के कारण आजीविका की कमाई छोड़ देता है या लापरवाही से अपना सामान इस तरह [असुरक्षित स्थान पर] रखता है, वह एक बड़ा मूर्ख है। इसी तरह, किसी के पापों की क्षमा संभव है, लेकिन क्षमा की उम्मीद पर पाप करते रहना और पश्चाताप न करना [उस अपेक्षा के कारण] अत्यधिक अज्ञानता है।

पांचवें कारण का इलाज, जो [सच्चे] भविष्यद्वक्ताओं [परमेश्वर के] की सत्यता पर संदेह करना है, वे कारक हैं जो भविष्यद्वक्ताओं की सत्यता और सच्चाई को साबित करते हैं। जो मनुष्य संदेह कर रहा है उसे बताया जाएगा, "पैगंबर जिनके पास चमत्कार थे जो उनके सत्य पर होने का प्रमाण थे, जिन्होंने हमें सूचित किया कि परलोक का एक क्षेत्र है जो इस क्षेत्र (दुनिया या भौतिक क्षेत्र) से अलग है और मृत्यु के बाद, व्यक्ति उस क्षेत्र से जुड़ जाता है। क्या आपके पास इस खबर की सच्चाई पर निश्चितता है या यह असंभव है जैसे कि किसी व्यक्ति के लिए एक ही समय में दो स्थानों पर उपस्थित होना असंभव है? यदि कोई जवाब देता है कि उसे यह असंभव लगता है [कि भविष्यद्वक्ता सत्य पर थे] तो ऐसे व्यक्ति के साथ बहस करना बेकार है। अगर कोई कहता है कि किसी को इस बारे में संदेह है, तो उससे पूछा जाएगा, "यदि कोई अजनबी आपको सूचित करता है कि जब आप तैयार भोजन छोड़कर अपने घर से निकले थे, तो एक सांप ने आपके भोजन में अपना मुंह डाला और उसे अपने जहर में मिला दिया। यदि आप इस अजनबी की सत्यता में विश्वास करते हैं, तो क्या आप अभी भी उस भोजन को खाएंगे या इसे छोड़ देंगे, भले ही वह सभी खाद्य पदार्थों में सबसे स्वादिष्ट हो सकता है? कोई इसका जवाब देगा, "मैं ऐसा खाना नहीं खाऊंगा, भले ही वह अजनबी झूठ बोल रहा हो, मैं इसे एहतियात से नहीं खाऊंगा। अधिक से अधिक, वह भोजन बर्बाद हो जाएगा [यदि अजनबी झूठ बोल रहा है]। लेकिन अगर वह अजनबी सच कह रहा है, तो यह खाना मेरे लिए घातक होगा। फिर ऐसे व्यक्ति से कहा जाएगा, "आप किसी अनजान अजनबी पर विश्वास करते हैं और इस खबर पर विश्वास करते हुए अपना खाना फेंक देते हैं, भले ही अजनबी के पास कोई तर्क या प्रमाण न हो, तो इस बात की संभावना है कि किसी ने ईर्ष्या में ऐसा कहा हो या आपको चिंतित करने के लिए ऐसा कहा हो। दूसरी ओर, भविष्यवक्ताओं की बातें हैं, जिनकी पुष्टि चमत्कारों से हुई है, संतों, विद्वानों, बुद्धिमान और बुद्धिमान के बीच सहमति है, लेकिन आप न तो पैगम्बरों की बातों को स्वीकार करते हैं और न ही उनके द्वारा बताई गई खबर को स्वीकार करते हैं। जनता के बीच अज्ञानी इस चर्चा का विषय नहीं हैं, क्या बुद्धिमान लोगों में से कोई ऐसा है जो न तो न्याय के दिन में विश्वास करता है और न ही कोई इनाम और दंड के प्रति आश्वस्त है? इसके स्वरूप को लेकर मतभेद हो सकते हैं लेकिन सभी बुद्धिजीवी लोगों के बीच इसके अस्तित्व को लेकर सर्वसम्मति है। यदि उनकी खबर सच है तो आप ऐसी [दिव्य] सजा के करीब पहुंच गए होंगे जो हमेशा के लिए बनी रहेगी, और भले ही वे झूठ बोल रहे हों, आपको कोई महत्वपूर्ण नुकसान नहीं होगा, आपके पास एकमात्र नुकसान यह है कि आप दुनिया के कुछ सुखों को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। यदि संबोधक में थोड़ी सी भी बुद्धि है, तो कोई पश्चाताप करने में थोड़ी सी भी देरी नहीं करेगा क्योंकि सांसारिक जीवन कितना भी लंबा क्यों न हो, वह शाश्वत जीवन के समकक्ष नहीं हो सकता। यदि हम मान लें कि [कि दुनिया अनाज से भर गई है] और एक पक्षी एक मिलियन वर्षों के

बाद एक दाना चुरा लेता है और फिर रुक जाता है और एक मिलियन वर्षों के बाद एक और अनाज चुरा लेता है [और इस तरह से जारी रहता है], उस स्थिति में भी, सभी अनाज समाप्त हो जाएंगे [एक दिन] लेकिन अनन्त जीवन में कोई कमी नहीं होगी। इसलिए, बुद्धि रखने वाला व्यक्ति इस [क्षणिक] जीवन के सुखों के साथ धैर्य रखकर अनन्त सुख और अनन्त जीवन (*सादाह*) की अंतहीन विजय प्राप्त करने में आलस्य कैसे दिखा सकता है, जो कुछ दिनों के लायक है? इसीलिए, अली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने एक ऐसे व्यक्ति से कहा, जिसकी बुद्धि ऐसे मामलों की जांच और अनुभव करने में असमर्थ थी, "यदि आप सच कह रहे हैं [कि कोई परलोक नहीं है और यह जीवन हमारे पास है] तो आप और मैं दोनों बच जाएंगे। लेकिन अगर मैं सच कह रहा हूं [परलोक के अस्तित्व और उसके अनन्त जीवन के बारे में, या तो शाश्वत सुख या अनन्त अभिशाप के बारे में), तो आप नष्ट हो जाएंगे [परलोक में] लेकिन मैं मोक्ष प्राप्त करूंगा। फिर भी, एक बुद्धिमान मनुष्य को सभी परिस्थितियों में शांति और सावधानी के मार्ग पर चलना चाहिए।

अध्याय 12- प्रतिकूलताओं, परीक्षणों और क्लेशों का सामना करने में धैर्य के माध्यम से लचीलापन, और आशीषों और सभी अच्छे लोगों के लिए कृतज्ञता

उतार-चढ़ाव किसी के जीवन का अनिवार्य हिस्सा हैं। व्यक्तिगत और सामूहिक त्रासदी, दुर्घटनाएं, महामारियां, आपदाएं, प्रियजनों की हानि, भौतिक हानि, जीवन में असफलताएं और चुनौतियां, बीमारियां, दुख, कठिनाइयाँ, युद्ध, भूख, गरीबी, बेरोजगारी, अशांति, सामाजिक अव्यवस्था और अशांति, निराशा, आंतरिक और बाहरी शांति की कमी, चिंताएं, खतरे और दूसरों द्वारा की गई ज्यादतियों पर क्रोध आदि, इस सांसारिक अस्तित्व में मानव अनुभव का अनिवार्य हिस्सा हैं। इन सभी अप्रिय और असुविधाजनक स्थितियों को रोकने के लिए किसी के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि कोई अपने सर्वोत्तम व्यवहार में रहने का प्रबंधन करता है, तो अन्य लोग ऐसा करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप क्रोध, संघर्ष और विभिन्न अन्य नकारात्मक भावनाएँ और आंतरिक और बाहरी मानवीय अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं। ऐसी नकारात्मकताओं के आगे झुकना और उनके द्वारा टूटे हुए, निराश और टूट जाना और नकारात्मक भावनाओं, क्रोध, दुख, हताशा और अवसाद में उलझना हमेशा आसान होता है। ऐसी अप्रिय स्थितियों की शुरुआत में प्रभावी ढंग से निपटने का एकमात्र उपकरण धैर्य और धैर्य की दृढ़ता को अपनी अधिकतम क्षमता से अभ्यास करना है। धैर्य के गुण असंख्य हैं, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्तिगत और सामूहिक मानव कल्याण के लिए बहुत अच्छा है।

धैर्य की दर्पण छवि कृतज्ञता है जो किसी के आशीर्वाद की गिनती कर रही है, यहां तक कि उन लोगों को भी जो भोजन, हवा, श्वास, स्वास्थ्य, समृद्धि, शांति, सुरक्षा, खुशी, पहनने के लिए कपड़े और अपने सिर पर छत होने के लिए चरम मौसम की स्थिति, दोस्ती, संबंधों, परिवार से खुद को बचाने के लिए और कुछ नाम रखने के लिए अपने दिमाग और दिल और बुद्धि को बरकरार रखने के लिए दिए गए हैं। कृतज्ञता हर चीज के लिए आभारी और सराहना करना है जो किसी के पास है। धैर्य की तरह, कृतज्ञता और कृतज्ञता मनुष्य की व्यक्तिगत और सामूहिक भलाई के लिए अत्यधिक आध्यात्मिक लाभ प्रदान करती है। ग़ज़ाली ने अपनी

महान कृति "इह्या *अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे खंड या चौथाई में दूसरी पुस्तक से इन विशाल मानवीय गुणों का उत्कृष्ट उपचार यहां संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है [18]:

ईमान की आस्था के दो भाग होते हैं- आधा धैर्य और आधी कृतज्ञता (कृतज्ञता)। ये दिव्य गुणों के दो गुण हैं और दिव्य नामों से दो नाम हैं - *सबूर* (पूर्ण धैर्य के साथ एक) और *शकूर* (पूर्ण कृतज्ञता के साथ)। धैर्य और कृतज्ञता की वास्तविकता से अपरिचित होना विश्वास के दोनों भागों से अपरिचित होना और ईश्वर के दो गुणों [या दिव्य गुणों] से अनभिज्ञ होना है। विश्वास के बिना, ईश्वरीय निकटता प्राप्त नहीं होती है, और विश्वास का मार्ग उस अस्तित्व को जाने बिना नहीं चलता है जिस पर विश्वास करने की आवश्यकता होती है। इससे यह ज्ञात होता है कि आस्था के दोनों भागों - धैर्य और कृतज्ञता पर प्रकाश डालना अनिवार्य है। चूँकि ये दोनों भाग [विश्वास के] एक साथ जुड़े हुए हैं, इसलिए इन दोनों को एक ही पुस्तक में सात अध्यायों में समझाया जाएगा।

धैर्य की व्याख्या

धैर्य की श्रेष्ठता: भगवान ने धैर्यवान लोगों के असंख्य गुणों की व्याख्या की है। कुरान में सत्तर से अधिक स्थानों पर धैर्य का उल्लेख किया गया है। इन पदों में, कई उच्च [आध्यात्मिक] डिग्री और अच्छाई को धैर्य के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। उदाहरण के लिए, भगवान कहते हैं:

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا

"और हमने उनमें से बहुत से अगुआ (अनुसरण करने के लिए उदाहरण) बनाए, जब उन्होंने धैर्य रखा, जिन्होंने हमारी आज्ञा से लोगों को [सही मार्ग पर] मार्गदर्शन किया। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 24)

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ ٱلْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ بِمَا صَبَرُوا۟

"और तुम्हारे रब का सुंदर वचन (प्रतिज्ञा) [हे मुहम्मद!] इस्राएल के बच्चों के पक्ष में उनके धैर्य के कारण पूरा हुआ। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 137)

وَلَنَجْزِيَنَّ ٱلَّذِينَ صَبَرُوٓا۟ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ

"और जो धैर्यपूर्वक दृढ़ रहते हैं, हम निश्चित रूप से उन्हें उनके अच्छे कर्मों का प्रतिफल देंगे। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 96)

أُوْلَٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُواْ

"उन लोगों को उनके धैर्य के कारण दोहरा मुआवजा मिलेगा। (कुरान, अध्याय 28, श्लोक 54)

إِنَّمَا يُوَفَّى ٱلصَّٰبِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ

"धैर्य के लोगों के लिए, असीम [दिव्य] प्रतिफल होगा। (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 10)

इस आयत में, परमेश्वर ने धैर्य के लिए असीम ईश्वरीय प्रतिफल देने का वादा किया है। सभी नेक कर्मों में से, यह (धैर्य) एकमात्र ऐसा है जिसके लिए ईश्वरीय प्रतिफल असीमित होगा। परमेश्वर ने धैर्य रखने वाले लोगों से वादा किया है कि वह उनके साथ है [आत्मिक निकटता की स्थिति में साथ-साथ अन्य अर्थों के साथ]:

وَٱصْبِرُوٓاْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ

"और धैर्य रखें। वास्तव में, परमेश्वर उन लोगों के साथ है जो धैर्य रखते हैं [सभी कठिनाइयों, विपत्तियों और प्रतिकूलताओं का सामना करते हैं और उस अवस्था में तब तक बने रहते हैं जब तक कि परमेश्वर उनके लिए आराम और बाहर निकलने का रास्ता नहीं खोल देता]। (कुरान, अध्याय 8, श्लोक 46)

एक जगह धैर्य रखने वाले लोगों के लिए दया, आशीर्वाद और मार्गदर्शन के गुणों का संयोजन किया गया है। इन तीन गुणों को एक साथ मिलाकर, किसी अन्य उपासक के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया गया है:

أُوْلَٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَٰتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُهْتَدُونَ

"उन पर (धैर्य के लोग) उनके रब और दया की ओर से नमस्कार (आशीष) हैं, और वे वही हैं जो [ईश्वरीय रूप से] [अपने रब के लिए] निर्देशित हैं। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 157)

धैर्य के गुण और उत्कृष्टताओं पर बड़ी संख्या में भविष्यसूचक परंपराएं हैं। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اَلصَّبْرُ نِصْفُ الْإِيْمَان

"धैर्य विश्वास का आधा हिस्सा है"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस अब्दुल्लाह इब्ने मसूद के अधिकार पर अबू* नईम *और* खतीब *को* इकट्ठा करता है [भगवान उससे प्रसन्न हों])

एक परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "जो चीजें आपको कम दी गई हैं, उनमें निश्चितता (*याकीन*) और धैर्य (*सबर*) शामिल हैं। जिसे दोनों से अधिक हिस्सा प्राप्त हुआ, यहां तक कि रात (*तहजुद*) की नमाज़ और अतिवादी (वैकल्पिक) उपवास में एक बड़ा हिस्सा के बिना, चिंता का कोई कारण नहीं है [क्योंकि निश्चितता और धैर्य किसी के पक्ष में भारी होते हैं]। आज आप जिस वर्तमान स्थिति में हैं [गरीबी और आवश्यकता की] में, यदि आप इसमें धैर्य रखते हैं, तो यह मेरे लिए अधिक बेहतर है कि आप इतने अच्छे कर्म करें जो आप सभी एक साथ करते हैं। लेकिन मुझे डर है कि मेरे जाने के बाद, दुनिया आपके लिए खुल जाएगी [शक्ति, धन और सांसारिक समृद्धि के संदर्भ में] और आप एक दूसरे को बुरा मानने लगेंगे। उस समय स्वर्गवासी (आकाशीय प्राणी) तुमको बुरा समझेंगे। जो इस स्थिति में (गरीबी, जरूरत, कठिनाइयों और प्रतिकूलताओं) धैर्य का प्रयोग करता है और [सभी गलतियों के लिए आत्म-परीक्षण और आत्म-जवाबदेही की स्थिति में] खुद को ध्यान में रखता है, उसे [भगवान से] पूरा प्रतिफल मिलेगा। उसके बाद, उन्होंने निम्नलिखित श्लोक का पाठ किया:

مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ ۖ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ ٱلَّذِينَ صَبَرُوٓا۟ أَجْرَهُم

"जो कुछ तुम्हारे पास है वह सब नष्ट हो जाएगा, जबकि जो कुछ परमेश्वर के पास है वह अनन्त और अनन्त है। और वास्तव में, हम उन लोगों को जो धैर्यवान हैं, उनके द्वारा किए गए सर्वश्रेष्ठ के अनुसार एक शक्तिशाली प्रतिफल प्रदान करेंगे। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 96)

परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ता दाऊद (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) को एक रहस्योद्घाटन भेजा, "मेरे चरित्र को अपनाओ और मेरे चरित्र लक्षणों में से एक यह है कि मैं बहुत धैर्यवान हूं"। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि जब पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने *अंसार* (मदीना के मूल निवासी, जिन्होंने उत्पीड़न से बचने के लिए मक्का से भागने वाले मुसलमानों की मेजबानी की थी) से मुलाकात की, तो उन्होंने उनसे पूछा, "क्या आप विश्वासी हैं?" सब चुप रहे। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने उत्तर दिया, "हाँ, हम ईमान वाले हैं। पैगंबर ने पूछा, "आपके विश्वास (ईमान) का संकेत क्या है? अंसार ने जवाब दिया, "जब हमारे पास समृद्धि होती है तो हम [भगवान के प्रति] आभारी होते हैं, जब हम विपरीत परिस्थितियों का सामना कर रहे होते हैं तो हमारे पास धैर्य होता है, और हम [भगवान के] फैसलों (ईश्वरीय आदेश) को स्वीकार कर रहे होते हैं। उसने कहा, "काबा के रब की कसम! आप विश्वासी हैं [क्योंकि ये सच्चे विश्वासियों की विशेषताएं हैं]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *तबरनी*) यीशु (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "जब आप नापसंद चीजों पर धैर्य रखते हैं तो आप अपनी पसंद की चीज हासिल कर लेंगे"। उमर बिन अल-खत्ताब (ईश्वर

उनसे प्रसन्न हो) ने अबू मूसा अल-अशरी (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) को एक विस्तृत पत्र लिखा और उसमें अन्य बातों के अलावा लिखा, "धैर्य अपनाओ और याद रखो कि धैर्य दो प्रकार का होता है, एक दूसरे से श्रेष्ठ होता है, आपदाओं पर धैर्य रखना श्रेष्ठ है और इससे भी अधिक श्रेष्ठ है उन चीजों पर धैर्य रखना (उन चीजों को करने से परहेज करना) जिन्हें ईश्वर ने मना किया है मानवता की भलाई के लिए दिव्य ज्ञान, हालांकि वे वांछनीय और आनंददायक लग सकते हैं]। जान लें कि धैर्य विश्वास का सार है और ऐसा इसलिए है क्योंकि *तकवा* (पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय) सभी नेक कर्मों में सबसे श्रेष्ठ है और यह धैर्य से है (*तकवा* की उत्पत्ति धैर्य से होती है)। अली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "विश्वास की नींव चार स्तंभों पर है: निश्चितता, धैर्य, संघर्ष [ईश्वर के मार्ग में विशेष रूप से आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष के संदर्भ में] और न्याय (सभी के साथ और हर चीज में निष्पक्षता)। बौद्धिक रूप से, धैर्य अभी भी एक अच्छा गुण है, हालांकि, इसे तब तक पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता जब तक कि हम धैर्य की वास्तविकता और उसके अर्थ की व्याख्या नहीं करते।

धैर्य की वास्तविकता और अर्थ

धैर्य - ईश्वर के मार्ग का एक स्टेशन (दीन*),* आध्यात्मिक संघर्ष का एक गंतव्य (सुलुक): यह ज्ञात होना चाहिए कि धैर्य ईश्वर के मार्ग के स्टेशनों के बीच से एक स्टेशन है और आध्यात्मिक यात्रियों के गंतव्यों के बीच से एक गंतव्य है। परमेश्वर के मार्ग के सभी स्टेशन तीन मामलों में पाए जाते हैं: पहला, समझ या ज्ञान (*मारिफ*); दूसरे, [आंतरिक आध्यात्मिक] राज्य; तीसरा, कर्म या [बाहरी शारीरिक] क्रियाएं। उनमें से, समझ मूलभूत मामला है जो [आध्यात्मिक] राज्यों को जन्म देता है जो बदले में [महान] कार्यों को जन्म देता है। इन तीनों में समझ पेड़ से मिलती जुलती है, अवस्था शाखाओं से मिलती जुलती है, और क्रियाएं फलों से मिलती जुलती हैं। आध्यात्मिक यात्रियों के सभी गंतव्य ऐसे ही होते हैं। धैर्य समझ और [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति के संयोजन का नाम है। कर्म वह फल है जो इन दोनों (समझ और आंतरिक आध्यात्मिक अवस्था) के अस्तित्व के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आता है। अब हम तीनों मामलों पर प्रकाश डालेंगे।

सूक्ति या समझ: स्वर्गदूतों, मनुष्यों और जानवरों के बीच मौजूद अनुक्रम (आदेश) की समझ के बिना, धैर्य की समझ प्राप्त नहीं की जा सकती है। धैर्य एक अजीबोगरीब मानवीय विशेषता है [जो चीजों की समग्र योजना में किसी अन्य रचनाओं द्वारा साझा नहीं की जाती है]। जानवरों और स्वर्गदूतों में धैर्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती - जानवरों में उनकी अंतर्निहित गलती के कारण और स्वर्गदूतों में उनकी अंतर्निहित पूर्णता के कारण। इसका विस्तार यह है कि जानवरों पर वासना थोपी गई है और वे इस हद तक इसके अधीन हो गए हैं कि उनकी गति या शांति का कारण सिर्फ वासना है। उनके पास कोई

आंतरिक शक्ति नहीं है जो उनमें इस वासना को रोक सके और उन्हें उनके इस उद्देश्य से रोक सके। वासना का मुकाबला करने में, संयम और विरोध के बल को बनाए रखना धैर्य है। स्वर्गदूतों को केवल राजसी भगवान (भगवान) के लिए तरसने और उनके साथ निकटता और निकटता की डिग्री से प्रसन्न होने के लिए बनाया गया है। उनमें वासना नहीं रखी गई है जो उन्हें ईश्वरीय निकटता और शानदार भगवान के अस्तित्व की डिग्री की लालसा से दूर ले जाएगी। न ही उन्हें ऐसी सेना की आवश्यकता है जो उन्हें उन ताकतों पर हावी कर दे और उन ताकतों को अपने अधीन कर सके जो उन्हें ईश्वरीय उपस्थिति से रोकती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो शक्तियां किसी को ईश्वरीय उपस्थिति से रोकती हैं, वे वासनाएं और वासनाएं हैं जो उनमें पैदा भी नहीं हुई हैं। दूसरी ओर, मनुष्य को वासना और उस शक्ति से संपन्न किया गया है जिसके माध्यम से मनुष्य वासना पर विजय प्राप्त कर सकता है। किसी की सृष्टि की शुरुआत में, मनुष्य को जानवरों की तरह दोषों (कमियों, कमियों और कमजोरियों) के साथ बनाया गया है, जैसे कि किसी को भोजन की लालसा के अलावा कोई अन्य वासना नहीं थी जिसकी उसे आवश्यकता थी। कुछ समय बाद [जैसे-जैसे व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ता गया], एक में खेल (खेल), अलंकरण और सौंदर्यीकरण की वासना पैदा हुई। उसके बाद [जैसे-जैसे व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ता गया और यौवन तक पहुंचा], विवाह की वासना का जन्म हुआ। ये वासनाएं विशिष्ट क्रम में प्रकट होती हैं। पहले तो अपने भीतर धैर्य की शक्ति नहीं होती है। इसीलिए, धैर्य एक सेना का नाम है जो दृढ़ता से खड़ी रहती है और दूसरी सेना के खिलाफ डटी रहती है जब उनके बीच उनके संबंधित उद्देश्यों और उद्देश्यों के बीच संघर्ष के कारण युद्ध चल रहा होता है। एकमात्र सेना जो एक बच्चे में मौजूद होती है, वह इच्छाएं हैं जो जानवरों में भी मौजूद हैं। हालाँकि, परमेश्वर ने ईश्वरीय उदारता और परोपकार से मनुष्य के पद को [अन्य सभी रचनाओं से] श्रेष्ठ बनाया है और जानवरों की तुलना में उच्च पद बनाए रखा है। इसीलिए, जब किसी का अस्तित्व पूरा हो जाता है (मनुष्य यौवन में परिपक्वता और शारीरिक विकास की आयु तक पहुँच जाता है, हालाँकि मानसिक, मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास का पूर्ण पैमाना चालीस वर्ष की आयु के आसपास होता है), परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को दो स्वर्गदूतों को नियुक्त करता है - उनमें से एक एक को सही मार्ग सिखाता है और दूसरा सही मार्ग पर चलने में मदद करता है। यह इन दो स्वर्गदूतों के कारण है [और जो कार्य वे उस व्यक्ति के साथ करते हैं जिसे उन्हें सौंपा गया है], मनुष्य को जानवरों पर भेद है। इसके अलावा, मनुष्य की अन्य विशिष्ट विशेषताएं हैं - पहला ईश्वर की सूक्ति और उनके पैगंबर को समझने और उनके पैगंबर को समझने की विशेषता है और उनके द्वारा लाया गया दिव्य संदेश जो उसी संदेश की परिणति है जो पृथ्वी पर मानव इतिहास में अन्य सभी ईश्वरीय द्वारा नियुक्त पैगंबरों द्वारा लाया गया था), और दूसरा है [दिव्य] ज्ञान और सभी मामलों के प्रकट होने और उनके अंतिम अंत से संबंधित कारणों को समझने की विशेषता। ये दो गुण या विशेषताएं उस देवदूत से भी प्राप्त होती हैं जो मार्गदर्शन और [सही मार्ग पर] ले जाने के लिए जिम्मेदार है। जानवरों के पास न तो ईश्वर और उसके पैगंबर की सूझबूझ है और न ही वे अपने अंतिम अंत को जानते हैं। इसके बजाय, वे केवल उस मार्ग को देखते हैं जो वे एक निश्चित समय पर चाहते हैं और बस उन चीजों की प्रतीक्षा करते हैं जो उन्हें स्वादिष्ट लगती हैं। यह उनकी इस हद तक स्थिति है कि अगर वे बीमार हैं और उन्हें कोई लाभकारी दवा दी जाए तो भी वे न तो इसे स्वीकार करेंगे और न ही इसके लाभों को स्वीकार करेंगे।

मनुष्य मार्गदर्शन के [आंतरिक दिव्य] प्रकाश से जानता है कि वासनाओं का अनुसरण उसके अंतिम निष्कर्ष (अंत) के संदर्भ में हानिकारक है [अवांछनीय स्थिति के संदर्भ में यह एक व्यक्ति को उतारता है]। हालाँकि, केवल यह जानना ही पर्याप्त नहीं है [कि वासना का पालन मनुष्य के लिए हानिकारक है], बल्कि व्यक्ति में हर उस चीज को त्यागने की ताकत होनी चाहिए जो हानिकारक है। मनुष्य उन चीजों से परिचित है जो किसी को नुकसान पहुंचाती हैं लेकिन उन्हें छोड़ने या रोकने की शक्ति नहीं रखते हैं जैसे कि बीमारियां [और सुखद भोजन, पेय और पदार्थ जो किसी के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं]। उस स्थिति में, व्यक्ति को उस क्षमता और शक्ति की आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से वह वासना को दूर कर सकता है और इसके साथ ही, वह इतना आध्यात्मिक संघर्ष कर सकता है कि निचले स्व (नफ्स) के साथ किसी का घर्षण, तर्क और शत्रुता *समाप्त हो जाए* [और परिणामस्वरूप, निम्न आत्मा जो कुछ भी अच्छा है उसके अधीन हो जाता है]। इस उद्देश्य के लिए, परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत नियुक्त किया है जो व्यक्ति को मार्गदर्शन के मार्ग में रखता है और [दिव्य शक्तियों की] सेनाओं के साथ मदद और समर्थन करता है जिसे कोई नहीं देखता है। इन सेनाओं का कर्तव्य है कि वे वासनाओं की सेनाओं के साथ युद्ध में शामिल हों और उन्हें पीछे हटाएं। कभी-कभी ये [स्वर्गदूत] सेनाएँ कमजोर हो जाती हैं और कभी-कभी वे मजबूत हो जाती हैं। उनकी कमजोरी या ताकत इस बात पर निर्भर करती है कि किसी को परमेश्वर से कितनी मदद मिली है। यह [ईश्वर की] रचनाओं के लिए मार्गदर्शन के प्रकाश की ताकत या कमजोरी की तरह है।

दिव्य पथ की शक्ति और वासना की शक्ति: समझने में आसानी के लिए, हम उस गुण को कहेंगे जो वासना को वश में करने के लिए जानवरों पर मनुष्य को श्रेष्ठता देता है, "ईश्वर के मार्ग की शक्ति" और वासना के निहितार्थ की तलाश करने वाली वासना को "वासना की शक्ति" के रूप में कहेंगे। अब हमें यह समझने की जरूरत है कि ईश्वरीय मार्ग की शक्ति और वासना की शक्ति के बीच युद्ध चल रहा है। कभी-कभी पहला [बल] दूसरे पर विजय प्राप्त करता है और कभी-कभी दूसरा पहले को हरा देता है। इस युद्ध का रणक्षेत्र [मनुष्य का] दिल है। ईश्वर के मार्ग की शक्ति को स्वर्गदूतों से मदद मिलती है जो भगवान के पक्ष के सहायक हैं, और वासना की शक्ति को शैतान [और उसकी पार्टी] से मदद मिलती है जो भगवान के विरोधियों के सहायक हैं। धैर्य यह है कि ईश्वर के मार्ग की शक्ति, वासना की शक्ति के विरुद्ध दृढ़ और दृढ़ रहती है। यदि सेवक [ईश्वर का, अर्थात् मनुष्य] विरोधी (वासना की शक्ति) को दृढ़ और पराजित करता है और हमेशा उसका विरोध करने पर तुला रहता है, तो यह ईश्वर की पार्टी की मदद करने के समान है और धैर्यवान लोगों के समूह में शामिल हो जाता है। लेकिन अगर कोई कमजोर और पराजित हो जाता है जब तक कि वासना की शक्ति उस बिंदु तक उसे अपने अधीन नहीं कर लेती जब वह धैर्य रखने में असमर्थ होता है [वासना के बल के खिलाफ और उसके आगे झुक जाता है], तो वह शैतान के पक्ष में शामिल हो जाता है।

आध्यात्मिक अवस्था और उसके फल: इस स्पष्टीकरण का निष्कर्ष यह है कि वासना का त्याग एक ऐसा कार्य है जो धैर्य की स्थिति में अस्तित्व में आता है। दूसरे शब्दों में, धैर्य की स्थिति का फल वासना का त्याग है। इसके अलावा, धैर्य वासना के बल के खिलाफ दृढ़ रहने वाले ईश्वरीय मार्ग की शक्ति है। ईश्वर के मार्ग की शक्ति की निरंतरता और स्थायित्व, एक ऐसी अवस्था है जो वासनाओं को समझने और उनका विरोध करने के कारणों से प्राप्त होती है। जब किसी को यह निश्चितता हो जाती है कि वासना ईश्वर की शत्रु है और [दिव्य] मार्गदर्शन के मार्ग में एक डाकू है, तो ईश्वरीय मार्ग की शक्ति मजबूत हो जाती है। यह निश्चितता वह समझ है जिसे "विश्वास" (ईमान) के रूप में माना जाता है। जब ईश्वरीय मार्ग की शक्ति मजबूत होती है, तो व्यक्ति अपनी दृढ़ता में विचलित (कमजोर) नहीं होता है और वे कार्य स्वचालित रूप से किए जाते हैं जो वासना के प्रभाव का विरोध करते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि वासना के परित्याग की अवस्था को ईश्वरीय मार्ग की शक्ति को समझे बिना पूरा नहीं किया जा सकता है जो कि वासना की शक्ति के विपरीत है।

हमारे उद्देश्य पर लौटें: [संक्षेप में,] धैर्य निचले स्व से वासना के बल के खिलाफ अपने युद्ध में ईश्वरीय पथ की शक्ति की दृढ़ता है। यह लड़ाई [संघर्ष और निरंतर संघर्ष] मनुष्य की विशिष्ट विशेषता है। इसीलिए, '*किरमान कतीबीन* (प्रत्येक मनुष्य के दो कंधों पर दो स्वर्गदूत उस व्यक्ति के सभी कर्मों को दर्ज करते हैं, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, आजीवन मानवीय कर्मों के रजिस्टर में, जो न्याय के दिन ईश्वर के सामने प्रस्तुत किया जाता है, उस व्यक्ति पर या तो शाश्वत आनंद प्राप्त करने वाला या शाश्वत दंड प्राप्त करने वाला होने के लिए) उन लोगों को छोड़कर हर व्यक्ति पर नियुक्त किए जाते हैं जो विक्षिप्त हैं (जो उन्होंने अपनी मानसिक क्षमताओं को खो दिया है और शब्द के चिकित्सा अर्थ में उनमें कुछ भी नहीं बचा है) और बच्चे (जिन्होंने यौवन प्राप्त नहीं किया है क्योंकि यही वह बिंदु है जब कोई विवेक प्राप्त करता है और अपने कार्यों के लिए ईश्वरीय रूप से जवाबदेह हो जाता है) और अपने कार्यों को रिकॉर्ड नहीं करते हैं। हमने यह पहले लिखा है कि यदि स्वर्गदूतों से लाभ उठाने के लिए उन पर ध्यान दिया जाता है [सभी मामलों में अच्छा करने के लिए कर्तव्यनिष्ठ निर्णय लेने और उन निर्णयों के प्रभाव पर कार्य करने के संदर्भ में], तो वे इसे एक अच्छे काम के रूप में दर्ज करते हैं और यदि उन्हें (स्वर्गदूतों) से बचा जाता है [किसी भी मामले में बुराई करने के लिए कर्तव्यनिष्ठ निर्णय लेने और उस निर्णय के प्रभाव पर कार्य करने के संदर्भ में], वे इसे बुराई के रूप में लिखते हैं [आजीवन कर्मों के अपने रजिस्टर में]। विक्षिप्त और बच्चों में उनसे लाभ उठाने की क्षमता नहीं है (देवदूत शक्तियां या ईश्वर के मार्ग की शक्ति) [क्योंकि उनके पास सभी मामलों में सही या गलत के बारे में विवेक नहीं है], इसीलिए, ध्यान देने या उनसे बचने की कल्पना नहीं की जा सकती है [देवदूत बलों या ईश्वरीय पथ की शक्ति] उनसे । वे केवल उन लोगों के कर्मों को दर्ज करते हैं जो उन पर ध्यान देने या उनसे बचने में सक्षम हैं।

हालाँकि, कभी-कभी मार्गदर्शन के प्रकाश की सुबह कम उम्र में शुरू हो जाती है [जब बच्चा शर्म की बातें जानना शुरू कर देता है] और यह प्रकाश विवेक (यौवन) की उम्र के समय तक पूर्ण और सिद्ध हो जाता

है, जैसे सुबह की रोशनी मंद होती है लेकिन जब सूरज उगता है, तो यह पूरा हो जाता है। लेकिन यह मार्गदर्शन पूर्ण नहीं है और यदि कोई इसके निहितार्थों पर कार्य नहीं करता है, तो उसके परलोक को कोई नुकसान नहीं होगा, हालांकि, वह सांसारिक नुकसान से बचने में सक्षम नहीं होगा। जो एक अभिभावक है या एक बच्चे के लिए जिम्मेदार है (माता-पिता की तरह), और [उस बच्चे के लिए] दयालु और स्नेही भी है, और '*कीरामन कतीबीन* की तरह [स्वाभाविक रूप से] अच्छे स्वभाव का है, उसे बच्चे के दिल की किताब पर अंकित करना चाहिए, अच्छे और बुरे की सभी कल्पनाओं (मानदंड या विचार)। बाद में, इस पुस्तक का प्रसार होता है, यदि बच्चा अच्छा करता है, तो वह बच्चे की प्रशंसा करता है और यदि बच्चा कुछ बुरा करता है, तो बच्चे को उसके खिलाफ फटकार और फटकार लगाई जाती है। अभिभावक या जिम्मेदार व्यक्ति जिसके पास किसी की देखभाल और प्रशिक्षण के तहत बच्चे के साथ इस प्रकार का व्यवहार है, वह स्वर्गदूतों की आदतों का उत्तराधिकारी है और उनके [महान] चरित्र लक्षणों का एक भरोसेमंद वाहक है। बच्चे के लाभ के लिए स्वर्गदूतों के चरित्र लक्षणों, गुणों और आदतों को नियोजित करके, ऐसा व्यक्ति स्वर्गदूतों की तरह ईश्वर की निकटता प्राप्त करेगा और भविष्यद्वक्ताओं और ईश्वर के अंतरंग (*सिद्दिकीन* या संत और ज्ञानवादी) के समूहों में शामिल होगा।

धैर्य के लोगों की तीन डिग्री: जब वासना समाप्त हो जाती है और ईश्वर के मार्ग की शक्ति प्रबल हो जाती है, और निरंतर आध्यात्मिक संघर्ष और विस्तारित दृढ़ता के बाद [उस मार्ग में], धैर्य एक व्यक्ति के लिए आसान हो जाता है, सेवक [ईश्वर का] [आध्यात्मिक] स्थान प्राप्त करता है जिसे "*रिदा*" या ईश्वरीय इच्छा की स्वीकृति कहा जाता है। इसे "ईश्वरीय इच्छा की स्वीकृति" (अध्याय 16) की पुस्तक में विस्तार से समझाया जाएगा। कुछ ज्ञानवादियों ने कहा है कि धैर्य के लोगों की तीन डिग्री होती है। एक डिग्री वासना का परित्याग या पश्चाताप के लोगों की डिग्री है। एक और (दूसरी) डिग्री ईश्वरीय इच्छा की स्वीकृति है [जैसे कि एक आपदा आ रही है] और वह है संयम के लोगों की डिग्री [निचले स्व की इच्छाओं से जिसे जाहिदीन के नाम से भी जाना जाता है]। तीसरी डिग्री [जो उच्चतम डिग्री भी है] उस व्यवहार से प्यार करना है जो भगवान किसी के साथ करता है [चाहे वह अच्छा हो या बुरा, वांछनीय, या अवांछनीय, आराम या कठिनाई, समृद्धि या प्रतिकूलता]। यह ईश्वर के मित्रों और अंतरंगों (*सिद्दिकीन*) की डिग्री है। हम [दिव्य] प्रेम की पुस्तक (अध्याय 16) में समझाएंगे कि [आध्यात्मिक] प्रेम का [आध्यात्मिक] स्थान ईश्वरीय इच्छा की स्वीकृति के [आध्यात्मिक] स्टेशन से श्रेष्ठ है, जो बदले में धैर्य के [आध्यात्मिक] स्टेशन से श्रेष्ठ है।

यह ज्ञात होना चाहिए कि धैर्य को ईश्वरीय कानून के आदेशों के संदर्भ में विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे कि अनिवार्य (*फर्द*), अतिविद्रोही (वैकल्पिक या नफिल/*नफिला*), अवांछनीय (मकरूह) और निषिद्ध (*हराम*) / इसलिए, उन चीजों पर धैर्य रखना अनिवार्य है जो [ईश्वरीय कानून में] निषिद्ध हैं, जो अवांछनीय हैं [*मकरूह* लेकिन निषिद्ध नहीं] उन चीजों पर अतिवादी या वैकल्पिक हैं। दर्द देने के लिए [चीजों जैसे] धैर्य रखना मना है जो ईश्वरीय कानून में निषिद्ध है। उदाहरण के लिए, अगर कोई किसी को मारना चाहता है तो उसे इसके साथ धैर्य नहीं रखना चाहिए [और ऐसा होने से रोकने के लिए जो आवश्यक

है वह करना चाहिए]। उस पर धैर्य रखना अवैध होगा [क्योंकि यह ईश्वरीय कानून का उल्लंघन होगा]। इसी तरह, यदि कोई किसी की पत्नी को परेशान करता है या छेड़छाड़ करता है जो उसके क्रोध और सम्मान की भावना को भड़काता है, लेकिन वह धैर्य के कारण इसे व्यक्त नहीं करता है और अपनी पत्नी के साथ क्या हो रहा है, इसका मूक दर्शक बन जाता है, तो यह धैर्य निषिद्ध है [ईश्वरीय कानून में और व्यक्ति इसे हर तरह से होने से रोकने के लिए बाध्य है]।

इस वर्गीकरण का उद्देश्य यह है कि हमें धैर्य के संबंध में ईश्वरीय नियम की कसौटी को समझना चाहिए। पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो)] की भविष्यद्वाणी परंपराओं में, धैर्य को विश्वास का आधा हिस्सा कहा गया है। इसका मतलब यह नहीं है कि सभी प्रकार के धैर्य प्रशंसनीय हैं, इसके बजाय, केवल यह धैर्य अच्छा है जो ईश्वरीय कानून की दृष्टि में अच्छा है, अन्यथा बिना किसी कारण के शरीर पर कठिनाई देने के लिए कोई दिव्य पुरस्कार या प्रतिफल नहीं है।

सभी राज्यों में एक सेवक को धैर्य की आवश्यकता होती है

यह ज्ञात होना चाहिए कि जीवन में जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, वे दो प्रकार की होती हैं - या तो वे किसी की इच्छाओं के अनुसार होती हैं या वे अवांछनीय होती हैं, और कोई उन्हें नापसंद करता है। इन दोनों अवस्थाओं में एक सेवक को धैर्य की आवश्यकता होती है। वांछनीय राज्यों में स्वास्थ्य, धन, प्रसिद्धि, रिश्तेदारों, मित्रों, सहायकों और अनुयायियों की प्रचुरता, धन और संपत्ति की अधिकता, दुनिया के सभी सुख और आशीर्वाद शामिल हैं। इन स्थितियों में, एक सेवक को धैर्य की सख्त जरूरत होती है क्योंकि यदि कोई निम्न स्व (नफ्स) को नियंत्रित नहीं करता है और उसे सभी सांसारिक सुखों और प्रसन्नताओं में मुक्त छोड़ देता है, भले ही ये सुख अनुमेय हैं, तो यह आशंका है कि वह (निम्न स्व) विद्रोही और घमंडी हो जाएगा। कुरान के अनुसार, यह मानव स्वभाव की विशिष्ट विशेषता है कि जब कोई समृद्धि में होता है तो वह विद्रोह पर तुला हो जाता है:

كَلَّآ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لَيَطْغَىٰٓ ﴿٦﴾ أَن رَّءَاهُ ٱسْتَغْنَىٰٓ ﴿٧﴾

"वास्तव में, मनुष्य विद्रोह का सहारा लेता है [शालीनता और नैतिक शुद्धता की सीमाओं का उल्लंघन करके] जब कोई खुद को समृद्ध, आत्मनिर्भर और आत्मनिर्भर के रूप में देखता है। (कुरान, अध्याय 96, आयत 6-7)

इसीलिए, कुछ ज्ञानवादियों का कहना है कि एक आस्तिक कठिनाइयों में धैर्य का प्रयोग करता है लेकिन ईश्वर का अंतरंग (सिद्दीक) भलाई (शांति और समृद्धि) की स्थिति में धैर्य का प्रयोग करता है। सहल बिन अब्दुल्ला अल-तुस्तारी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "भलाई (शांति और समृद्धि) की स्थिति पर धैर्य रखना कठिनाई पर धैर्य रखने की तुलना में कठिन है"। जब पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के भविष्यवक्ताओं के लिए सांसारिक धन और संपत्ति के द्वार खुल गए, तो उन्होंने कहा, "जब हमें अभाव और गरीबी के साथ परखा गया, तो हमने इसे धैर्य के साथ सहन किया और उस परीक्षा और क्लेश में सफल हुए। अब हम धन और समृद्धि के साथ [दिव्य रूप से] परखे जा रहे हैं। हम इसके साथ धैर्य नहीं रख पाएंगे और [अगर ऐसा होता है] तो हम [उस परीक्षण] में विफल हो जाएंगे। [भविष्यवक्ताओं के साथियों ने पैगंबर के निधन के बाद, ईश्वर के भय से समृद्धि में लिप्त होने से खुद को रोकने में विफलता की इस आशंका को व्यक्त किया। वे इसमें भी विजयी हुए, क्योंकि उन्होंने माना कि खुद को ईश्वर के मार्ग पर रखने के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों और समृद्धि दोनों में धैर्य की आवश्यकता होती है।

दूसरे प्रकार में वे परिस्थितियाँ शामिल हैं जो किसी की इच्छाओं के अनुरूप नहीं हैं। ये परिस्थितियाँ तीन प्रकार की हो सकती हैं - वे जो किसी के नियंत्रण में होती हैं जैसे अच्छे और बुरे कर्म [जो वह करने में सक्षम है], दूसरा वे जो किसी के नियंत्रण में नहीं हैं जैसे कठिनाइयाँ और दुर्घटनाएँ (आपदाएँ), और तीसरा, वे जो शुरू में किसी के नियंत्रण में नहीं होते हैं लेकिन बाद में, कोई उनके बारे में कुछ करने में सक्षम होता है।

अपने संघर्षों और कठिनाइयों को छिपाना धैर्य की पूर्णता है: धैर्य की पूर्णता किसी की बीमारी, गरीबी और अन्य सभी प्रतिकूलताओं को [सभी लोगों से] छिपाना है। [विभिन्न प्रकार] धैर्य के इन वर्गीकरणों से, किसी को पता चलता है कि धैर्य सभी अवस्थाओं और कार्यों में अनिवार्य है। एक व्यक्ति जो खुद को वासना से बचाने के लिए एकांत अपनाता है, वह धैर्य से बेखबर नहीं हो सकता है, भले ही वह कितना भी अकेला क्यों न रहे। ऐसा इसलिए है क्योंकि शैतानी संकेत (*वासवा)* हृदय को प्रभावित करते हैं, और इन आक्षेपों के कारण होने वाली परेशानी और संकट, किसी को एकांत में भी [आंतरिक] शांति [या मन की शांति] की अनुमति नहीं देता है। हृदय में दो प्रकार के विचार आते हैं - या तो उन चीजों के बारे में जिन्हें किसी ने खो दिया है और उन्हें पुनः प्राप्त करने या सुधार करने का कोई तरीका नहीं है, या उन चीजों के बारे में जो भविष्य में प्राप्त करना संभव है। विचार, चाहे वे खोई हुई चीजों के बारे में हों या भविष्य में प्राप्त होने वाली चीजों के बारे में, दोनों ही मामलों में कोई समय बर्बाद करता है। हृदय मनुष्य का एक साधन है [जो मानव अस्तित्व का सार होता है] और किसी का जीवनकाल उसकी संपत्ति है। यदि किसी का हृदय एक पल के लिए भी दिव्य स्मरण (*धिक्कार*) और चिंतन (फिक्र*)* के प्रति लापरवाह रहता है, तो यह एक बड़ी क्षति होगी। स्मरण हृदय की उस क्रिया को संदर्भित करता है जो परमेश्वर की लालसा का पोषण करता है [जो हर इंसान के लिए अंतिम गंतव्य है] और उसके साथ अंतरंगता। चिंतन उस क्रिया को

संदर्भित करता है जिसके माध्यम से कोई ईश्वर की ज्ञान-दृष्टि प्राप्त करता है और उस ज्ञान को दिव्य प्रेम प्राप्त करने का एक साधन (*वसीला*) बनाता है। यह तब संभव है जब हृदय के विचार अनुमेय मामलों में हों [जो किसी के सांसारिक जीवन के लिए आवश्यक हैं, जैसे आजीविका के साधन और वह सब कुछ जो इसे प्राप्त करने में मदद करता है]। हालाँकि, ज्यादातर समय ऐसा नहीं होता है, क्योंकि अक्सर, हृदय के विचारों में वासनाएँ और उन्हें प्राप्त करने की रणनीतियाँ शामिल होती हैं [उन विचारों का केंद्र बिंदु हैं]। यह व्यक्ति हमेशा उन लोगों के साथ विवाद की स्थिति में रहता है जिन्होंने एक बार भी किसी की इच्छा के विरुद्ध काम किया है, या किसी को यह अंधविश्वास (संदेह) है कि वे एक के खिलाफ जा सकते हैं। इसके बजाय, जो लोग किसी के प्रति अत्यंत ईमानदार, समर्पित और परोपकारी हैं और अपनी सद्भावना अर्जित करने के लिए अपना सारा जीवन व्यस्त रखते हैं, यह व्यक्ति उन्हें अपना विरोधी भी मानता है और उन्हें अपने अधीन करने और किसी के विरोध के सभी विचारों को उनके दिल से मिटाने की रणनीतियों के बारे में सोचता है। संक्षेप में, यह उनका सतत भोग है [क्योंकि वे लगातार इन नकारात्मक विचारों से भरे हुए हैं] और उनके दिन और रातें इन [नकारात्मक और शत्रुतापूर्ण] चिंतनों में बिताई जाती हैं [जो उनके आध्यात्मिक पथ और भलाई के लिए हानिकारक हैं]।

शैतान की दो सेनाएँ: ये सभी शैतान की साज़िशें हैं। वास्तव में, शैतान के पास दो सेनाएँ हैं - एक सेना जो उड़ती है और दूसरी सेना जो चलती है। जो सेना उड़ती है, वह आक्षेपों को संदर्भित करती है और जो सेना चलती है, वह वासनाओं को संदर्भित करती है। इसका कारण यह है कि शैतान को आग से और मनुष्य को मिट्टी (धूल) से बनाया गया है। इस मिट्टी में आग भी लगी हुई है। इसके स्वभाव में शांति है और अग्नि का स्वभाव गति है। इसलिए, एक उग्र आग के बारे में यह कल्पना नहीं की जा सकती है कि यह हिल नहीं जाएगी। इसके बजाय, यह अपनी अंतर्निहित प्रकृति के अनुरूप निरंतर गति पर है। शैतान, शापित व्यक्ति, जिसे आग से बनाया गया था, उसे शांति पाने की आज्ञा दी गई थी [शांति और शांति की स्थिति में] और मिट्टी से बनाई गई सृष्टि [ईश्वर की] के सामने दण्डवत् करने के लिए (यानी, मनुष्य, जिसका प्रतिनिधित्व मानवता के पिता, आदम [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो]) द्वारा किया गया है)। हालाँकि, शैतान ने उस ईश्वरीय आदेश को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, अहंकार और अवज्ञा का प्रयोग किया, और ईश्वरीय आदेश का पालन करने से इनकार करने का यह कारण व्यक्त किया कि, "मुझे आग के साथ बनाया गया है, जबकि आदम [मानवता के पिता,] को धूल से बनाया गया है [इसलिए, मैं उससे श्रेष्ठ हूं और किसी हीन व्यक्ति के प्रति विनम्रता दिखाना श्रेष्ठ नहीं है]"। इसलिए, जब यह दुष्ट (शापित शैतान) हमारे पिता, आदम (परमेश्वर की शांति और आशीषों पर हो) को दण्डवत नहीं करता था, तो वह अपने वंशजों (मानव जाति) को कैसे दण्डवत करेगा? वंशजों के सामने साष्टांग प्रणाम करने का उद्देश्य उन आक्षेपों (वासवा) से बचना है जो वह उनके दिलों में पैदा करते हैं। यदि शैतान अपने कार्यों से दूर रहता है, तो यह मनुष्य के डर से अपने गलत कार्यों को छोड़कर, मनुष्य के अधीन होने के समान होगा। साष्टांग प्रणाम की आत्मा (सार) आज्ञाकारिता और समर्पण है। माथे को जमीन पर रखना [साष्टांग प्रणाम में] उसका शरीर (बाहरी आभा) है। जमीन पर माथा रखने की क्रिया को साष्टांग प्रणाम कहा जाता

है। यदि इस कृत्य का उपयोग विनम्रता और नीचता के लिए किया गया होता, तो केवल इस अधिनियम द्वारा इसकी कल्पना की गई थी।

[मामले की जड़:] फिर भी, आपको खोल के कारण मोती, शरीर के कारण आत्मा के और छिलके (बाहरी खोल) के कारण पिथ (कोर या सार) के प्रति लापरवाही नहीं करनी चाहिए। इसके प्रति सचेत रहना जरूरी है। ऐसा न होने दें कि आप बाहरी क्षेत्र (चीजों और मामलों के बाहरी रूप) में फंस जाएं और अदृश्य [आध्यात्मिक] क्षेत्र के प्रति लापरवाह हो जाएं [हर चीज और हर मामले के मूल या सार को जानने के लिए]। ऐसा न होने दें कि आप केवल बाहरी (दृश्यमान) क्षेत्र में फंस जाएं और अदृश्य क्षेत्र के प्रति लापरवाह हो जाएं। आप जानते हैं कि शैतान आपका शाश्वत शत्रु है जिसे आपको गुमराह करने की राहत दी गई है। अब यह कल्पना नहीं की जा सकती है कि वह आपकी आज्ञाकारिता को स्वीकार करेगा या आपके हृदय में आक्षेप डालने से परहेज करेगा, सिवाय इसके कि जब आपके सभी विचारों और चिंतनों का एक ही ध्यान हो और [यह है कि] आप पूरी तरह से परमेश्वर के चिंतन में लीन हैं। उस स्थिति में, शापित शैतान निश्चित रूप से तुम तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं खोज पाएगा और तुम परमेश्वर के उन दासों में शामिल हो जाओगे जो ईमानदार हैं और इस शापित के प्रभुत्व से बाहर हैं। यह संभव नहीं है कि आपके हृदय में कोई दिव्य चिंतन न हो और आपके हृदय में कोई शैतानी संकेत भी न हो। यह शैतान एक तरल तत्व है जो रक्त परिसंचरण की तरह मानव नसों में घूमता है। यह एक तरल पदार्थ से भरे कप की तरह है। अगर कोई अब चाहता है कि कप तरल पदार्थ और उसमें हवा भी बनाए रखे तो यह संभव नहीं है, या कप में कोई हवा नहीं है और कोई तरल पदार्थ भी नहीं है। यह भी स्पष्ट रूप से संभव नहीं है, बल्कि, जिस हद तक कप से तरल पदार्थ अनुपस्थित है, उस हद तक हवा कप को भर देगी। यह भी दिल की स्थिति है। यदि यह (हृदय) अच्छे चिंतन से भरा है, तो यह शैतान के हस्तक्षेप से सुरक्षित रहेगा, अन्यथा, जिस हद तक वह [ईश्वरीय चिंतन की] लापरवाह रहेगा, उस हद तक शैतान इसमें हस्तक्षेप करेगा। यह इस हद तक होता है कि यदि कोई एक पल के लिए भी लापरवाही करता है, तो लापरवाही के उस क्षण में, उसके पास शैतान के अलावा कोई साथी नहीं होगा। इसीलिए, परमेश्वर ने कहा है:

وَمَن يَعْشُ عَن ذِكْرِ ٱلرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُۥ شَيْطَٰنًا فَهُوَ لَهُۥ قَرِينٌ

"और जो सबसे दयालु (ईश्वर) की याद से अंधा हो जाता है, हम ऐसे व्यक्ति पर एक शैतान (शैतान) थोपते हैं ताकि वह हर समय एक के साथ रहे [जो किसी को सभी प्रकार की अच्छाई से दूर करने और उसे सभी प्रकार की नकारात्मकताओं में ले जाने के लिए उसका प्रेरक साथी बन जाता है]। (कुरान, अध्याय 43, श्लोक 36)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يُبْغِضُ الشَّابَّ الفَارِغَ

"वास्तव में, भगवान एक बेकार युवा को नापसंद करते हैं (एक युवा पुरुष या महिला जो कुछ भी नहीं कर रहा है या अपना समय बर्बाद कर रहा है) [क्योंकि उनका समय और युवा ऊर्जा गलत, नकारात्मक, अनुत्पादक, निष्क्रिय और समय बर्बाद करने वाले प्रयासों में उपयोग की जा रही है]"।

बेकार जवानी को नापसंद करने का कारण यह है कि जब कोई ऐसा काम नहीं करता है जो उसके दिल को किसी अनुमेय मामले में व्यस्त कर दे [जैसे कि अध्ययन और आजीविका कमाना] या दिव्य मार्ग (दीन) से संबंधित चिंतन में लिप्त हो जाता है, तो जाहिरा तौर पर वह बेकार प्रतीत होता है लेकिन वास्तव में, शैतान ने उसके दिल में अपना निवास बना लिया होगा और अपनी संतानों को बढ़ाने के लक्ष्य या एजेंडे का पीछा कर रहा होगा [प्रजनन भूमि में] निष्क्रिय युवाओं के दिल का]। सभी जानवरों की तुलना में, शैतान सबसे अधिक प्रजनन करता है, क्योंकि उसके अंतर्निहित स्वभाव में आग है और यदि कोई सूखी चीज आग के रास्ते में आती है [उग्र हो या नहीं], तो वह तेजी से फैलता रहता है। एक युवा व्यक्ति के दिल में वासना का अस्तित्व ठीक वैसा ही होता है जैसे आग के सामने सूखी घास आती है। फिर जिस तरह आग (सूखी लकड़ी) के लिए भोजन (ईंधन) का अस्तित्व न होने से वह शांत हो जाता है, उसी तरह यदि वासना का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, तो शैतान कुछ भी करने में सक्षम नहीं होगा और अपने स्वयं के निवास को अपने हाथों से [मानव हृदय में] जलाने के लिए मजबूर हो जाएगा। यदि आप इस पर विचार-विमर्श करते हैं, तो यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाएगा कि आपका सबसे बड़ा दुश्मन आपके दिल का वह गुण है जिसे आप वासना कहते हैं।

धैर्य की दवा और इसके साथ सहायता प्राप्त करने का तरीका

बता दें कि जिसने यह बीमारी दी है, उसने इसकी दवा के बारे में भी हमें सूचित किया है और [इससे उबरने] का वादा भी किया है। यद्यपि धैर्य एक अत्यंत कठिन कार्य है, लेकिन ज्ञान और कर्म के मैग्मा (संयोजन) के माध्यम से इसे प्राप्त करना संभव है। ज्ञान और कर्म [ज्ञान के अनुसार,] दो दवाएं हैं जिनका उपयोग हृदय के सभी रोगों के लिए दवाएं तैयार करने के लिए किया जाता है। बीमारी के प्रकार के आधार पर, उसके अनुसार सही ज्ञान और कार्रवाई की आवश्यकता होगी।

विभिन्न प्रकार के कारण हैं जो धैर्य में बाधा हैं। हर कारण इसके विपरीत से ठीक हो जाता है। बीमारी के कारण को खत्म करने का प्रयास किया जाता है। हम इलाज की विधि निर्धारित करने के कुछ उदाहरण

प्रदान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति व्यभिचार करने की वासना से धैर्य का इच्छुक है। हालाँकि, किसी का निजी लोगों पर कोई नियंत्रण नहीं है, या किसी का निजी लोगों पर नियंत्रण नहीं है, लेकिन आंखों पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है [हर जगह देखने से जो आग्रह को भड़काता है], या आंखों पर नियंत्रण रखता है लेकिन हृदय पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता है, जो हर समय वासनाओं का केंद्र बना रहता है और व्यक्ति को ईश्वरीय स्मरण से रोकता है, अच्छे कर्मों में चिंतन और दृढ़ता। यह एक बीमारी है और इसके इलाज का विवरण जैसा कि हमने पहले बताया है, कि धैर्य ईश्वरीय पथ की शक्ति और वासना की शक्ति के बीच लड़ाई का नाम है। यदि हम उनमें से किसी एक को सफल होते देखना चाहते हैं, तो हमें उस बल को मजबूत करने की आवश्यकता होगी ताकि वह प्रमुख हो जाए और हमें दूसरी शक्ति को कमजोर करने की आवश्यकता है ताकि वह पराधीन हो जाए। इस मामले (उदाहरण) में हम चाहेंगे कि ईश्वरीय मार्ग की शक्ति प्रबल हो जाए और वासना की शक्ति कमजोर हो जाए।

वासना की शक्ति कैसे कमजोर हो जाती है? वासना बल को कमजोर करने के तीन तरीके हैं। एक तो इसकी वास्तविक शक्ति की जांच करना है और देखना है कि उसे अपनी ताकत कहां से मिल रही है। यदि हम इस पर विचार-विमर्श करें, तो हम देखेंगे कि यह शानदार भोजन से अपनी ताकत प्राप्त करता है। इसका इलाज लगातार उपवास करना है और व्रत तोड़ते समय इतनी कम मात्रा में [सादा] भोजन करना चाहिए जिससे वासना न बढ़े। उदाहरण के लिए, मांस से बचना चाहिए। दूसरी विधि उन सभी कारणों को त्याग देना है जो तुरंत वासना को भड़काते हैं। वासना को आंखों से उकसाया जाता है [देखने से, आमतौर पर निषिद्ध चीजें जो जुनून को मजबूत करती हैं], आंखें हृदय में गति का कारण बनती हैं, और हृदय वासना को प्रोत्साहित और उत्तेजित करता है। इसीलिए, पहली बात यह है कि आंखों के विचारों को सीमित करना है और इसे पूरा करने का तरीका एकांत को अपनाना है [न केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि किसी भी ऐसी चीज के उपयोग से बचने के मामले में भी जो गलत चीजों को देखने का कारण बनता है], और उन अवसरों से दूर रहना जहां सुंदर चेहरों को देखने का अवसर होता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اَلنَّظْرَةُ سَهْمٌ مَسْمُوْمٌ مِنْ سِهَامِ إِبْلِيْسَ

"[गलत और निषिद्ध] नज़र जहर में डूबे शैतान के तीरों के बीच से है"।

शैतान इस तीर को इस तरह से चलाता है कि वह अपने लक्ष्य से कभी चूक नहीं पाता। ऐसी कोई ढाल नहीं है जो आँखें बंद करने या लक्ष्य से दूर खड़े होने के अलावा तीरों के इस बौछार को रोक सके। शैतान इन तीरों को सुंदर चेहरों (शारीरिक रूपों, ग्राफिक छवियों और प्रदर्शनों) के माध्यम से फायर करता है। अगर कोई इस तरह के लुक के प्रभाव से बाहर निकल सके तो वह खुद को इन जहरीले तीरों से बचा सकता है। तीसरी विधि है वासनाओं को संतुष्ट करने के लिए अनुमेय साधनों को अपनाना। व्यभिचार से खुद को बचाने का आसान तरीका शादी करना है [और जो लोग पहले से ही शादीशुदा हैं वे अपनी शादी

पर ध्यान केंद्रित करने और वफादार रहने के लिए]। इस तरह, निम्न स्व (*नफ्स*) संतुष्ट हो जाएगा [और गलत तरीकों से खुद को संतुष्ट करने की कोशिश नहीं करेगा], क्योंकि निचला स्व जो चाहता है, वह पहले से ही अनुमेय चीज में मौजूद है (यानी, इस उदाहरण में विवाह) तो निषिद्ध साधनों को अपनाने की क्या आवश्यकता होगी? अधिकांश लोगों के लिए, यह इलाज का सबसे फायदेमंद तरीका है क्योंकि अच्छे भोजन का सेवन समाप्त करने और अन्य आवश्यक खाद्य पदार्थों को कम करने से स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ सकता है और व्यक्ति अन्य काम करने में आलसी हो जाएगा। तो ये इलाज के तीन कारण हैं: पहला इलाज, जो भोजन को कम करना है, एक विद्रोही जानवर के भोजन को समाप्त करने के समान है ताकि वह कमजोर हो जाए और उसकी ताकत कम हो जाए और नष्ट हो जाए; दूसरे इलाज का उदाहरण, कुत्ते के सामने से मांस और एक [खेत] जानवर के सामने से चारा निकालने जैसा है ताकि जब कुत्ता मांस को देखे और जब जानवर चारा देखे, तो उनके आंतरिक प्राणियों में कोई उकसावे न हो; इलाज की तीसरी विधि, कुत्ते को कुछ ऐसा देने की तरह है जो वह इच्छुक है और जो उसे संतुष्ट करेगा, ताकि उसके पास पर्याप्त ताकत बची हो जो उसे अपने अनुशासन और प्रशिक्षण के साथ धैर्य रखने की अनुमति दे।

ईश्वर के मार्ग की शक्ति को मजबूत करना: पिछली चर्चा वासना की शक्ति को कमजोर करने के बारे में थी। अब हम ईश्वरीय मार्ग की शक्ति को मजबूत करने पर चर्चा करेंगे। ईश्वरीय मार्ग की शक्ति को दो तरीकों से मजबूत किया जा सकता है: एक आध्यात्मिक संघर्ष के लाभों और किसी के विश्वास और सांसारिक मामलों के लिए इसके परिणामों (सकारात्मक प्रभाव) के बारे में निचले स्व को प्रोत्साहित करना है। इसे प्रोत्साहित करने का तरीका उन परंपराओं के माध्यम से है जो धैर्य की उत्कृष्टता में सूचीबद्ध हैं और सांसारिक मामलों के अंतिम निष्कर्ष की उत्कृष्टता के साथ-साथ ईश्वर के मार्ग से संबंधित मामलों के बारे में हमने जो लिखा है, उस पर अधिक विचार-विमर्श करने के लिए। एक [भविष्यवाणी] परंपरा के अनुसार, एक विपत्ति के लिए ईश्वरीय प्रतिफल और इनाम [बशर्ते कोई इसे बिना रोए और शिकायत किए धैर्य के साथ सहन करे], खोई हुई चीज़ से अधिक है [उस प्रतिकूलता के परिणामस्वरूप]। इसलिए, अंतर्दृष्टि और आंतरिक आंख (या ज्ञान) के लोग इस तरह की प्रतिकूलताओं के इच्छुक होते हैं क्योंकि पीड़ित व्यक्ति ने जो खोया है, वह कल (भविष्य में) जाना तय था, यदि आज नहीं तो यह रहने के लिए नहीं था, हालांकि, खोई हुई चीज के स्थान पर एक ऐसी चीज प्राप्त हुई, जो हमेशा के लिए एक के साथ रहेगी। इसका उदाहरण ऐसा है जैसे कोई दोषपूर्ण उत्पाद बेच देता है और बदले में कुछ अच्छा प्राप्त करता है। जाहिर है, किसी को खराब उत्पाद के निधन पर पछतावा करने की आवश्यकता नहीं है। यह [मामलों की वास्तविकता पर एक तरह का दृष्टिकोण, जो अन्यथा अफसोस और पश्चाताप का कारण बनता है,] ग्नोसिस (मारिफा) से संबंधित है जो विश्वास (इमान) से है। कभी-कभी यह सूक्ति कमजोर होती है, कभी-कभी मजबूत। यदि मजबूत है, तो ईश्वर के मार्ग की शक्ति भी मजबूत होती है और बहुत सक्रिय हो जाती है। यदि कमजोर है, तो परमेश्वर के मार्ग की शक्ति भी कमजोर है। इस ज्ञानवाद या विश्वास की शक्ति [ईश्वर में] को निश्चितता भी कहा जाता है। यह निश्चितता अटूट धैर्य की प्रेरक है। हालाँकि, [दुनिया के] लोगों में बहुत कम लोग हैं जिन्हें दृढ़ता और दृढ़ता और धैर्य प्रदान किया गया है।

दूसरी विधि यह है कि धीरे-धीरे ईश्वरीय मार्ग की शक्ति पर, वासना के बल पर और निचले स्व से इच्छाओं पर प्रभुत्व स्थापित किया जाए, और धीरे-धीरे इसे इस लड़ाई का आदी बना दिया जाए कि जब उसे जीत का स्वाद मिल जाए, तो वह तुरंत दुस्साहसी हो जाता है और उस पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेता है। इस वर्चस्व को हासिल करना मुश्किल नहीं है [वासना के बल और निचले स्व पर]। ज़ोरदार काम और निरंतर अभ्यास के आदी होने से काम करने वाले अंगों को मजबूत किया जाता है। इसीलिए, भारी वजन उठाने वालों, किसानों और सैनिकों के पास दर्जी, इत्र विक्रेताओं, शैक्षिक धर्मशास्त्रियों (*फुकाहा*) और आध्यात्मिक यात्रियों (*सूफियों*) की तुलना में अधिक ताकत होती है, क्योंकि उनके अंग निरंतर [शारीरिक] कड़ी मेहनत की कमी के कारण कमजोर रहते हैं और ऐसा करने के आदी नहीं होते हैं।

संक्षेप में, जिस व्यक्ति में धैर्य की शक्ति नहीं होती है और वह जरा भी आध्यात्मिक संघर्ष नहीं करता है, वह ईश्वरीय मार्ग की शक्ति इस हद तक कमजोर हो जाती है कि वह वासना पर हावी होने के लिए बहुत कमजोर हो जाता है। जबकि जो निचले स्व को बनाता है, वासना का विरोध करने का आदी है, जब भी वह चाहता है उस पर हावी हो जाता है।

दुनिया और परलोक का प्रभुत्व: तोरा, सुसमाचार, भजन, कुरान और मूसा और इब्राहीम के स्क्रॉल (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन दोनों पर हो) और सभी स्वर्गीय पुस्तकें, [ईश्वरीय रूप से] [उनके मूल रूपों में] प्रकट की गई थीं [ईश्वर की] (मानवता) की रचनाओं को अनन्त प्रभुत्व की ओर आमंत्रित करने के लिए और उन्हें दुनिया में राजाओं के रूप में रहने और परलोक में राजा बनने की सलाह देने के लिए। दुनिया का राजत्व संयम (ज़ुहद) [सांसारिकता और उसके पास मौजूद हर चीज से अलगाव से] और कम भौतिक संपत्ति से संतुष्ट होना है। परलोक का राजत्व ईश्वर की निकटता प्राप्त करने के बाद उस निर्वाह (*बाका*) को प्राप्त करना है, जिसका कोई विलुप्त होना नहीं है (*फना*), उस सम्मान को प्राप्त करना जो अपमान से प्रभावित नहीं है, और आंखों की उस शीतलता को प्राप्त करना है जो इस क्षेत्र (दुनिया) में छिपी हुई है और कोई भी स्वयं इसके बारे में जागरूक नहीं है। शैतान सृष्टि (मानवता) को इस दुनिया के प्रभुत्व में आमंत्रित करता है क्योंकि वह जानता है कि जो लोग इस दुनिया के प्रभुत्व के पीछे भाग रहे हैं, उन्हें परलोक का प्रभुत्व नहीं मिलता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि दुनिया और परलोक दो सह-पत्नियों की तरह हैं - एक दूसरे की उपस्थिति में नहीं रह सकता है। इसके अलावा, शैतान जानता है कि अगर किसी को दुनिया (सांसारिक धन, संपत्ति, ग्लैमर और शक्ति) मिलती है, तो वह रहने वाला नहीं है, इसलिए, वह दुनिया को [मनुष्यों को] प्रोत्साहित करता है, इतना ही नहीं, अगर किसी को दुनिया मिल जाती है, तो वह उसे शांति से नहीं रहने देता है। इसके बजाय, वह एक से ईर्ष्या करता है, किसी को विभिन्न तरीकों से चिंतित करता है, और नए विवाद उठाता है। सभी सांसारिक धन और संपत्ति की ऐसी स्थिति है - सबसे पहले, उन्हें प्राप्त करना कठिन है और यदि प्राप्त किया जाता है, तो उन्हें बनाए रखने, अत्यधिक कठिनाइयों को सहन करने के लिए बहुत सारी रणनीतियों के साथ आने की आवश्यकता होती है और यदि

उन्हें बनाए रखा जाता है तो कितने समय तक? यह एक विलुप्त (अंत) की ओर आ जाएगा क्योंकि किसी के लिए भी मृत्यु से बचने का कोई रास्ता नहीं है, चाहे वह शासक हो या शासित।

संयम डोमिनियन क्यों है?संयम का अर्थ यह है कि व्यक्ति अपनी वासना और क्रोध पर नियंत्रण प्राप्त करता है, और वे दोनों ईश्वरीय मार्ग के बल और विश्वास (इमान) के हावभाव (इमान) के अधीन हो जाते हैं। यही असली प्रभुत्व है। वास्तविक प्रभुत्व का अर्थ पूर्ण स्वतंत्रता है। मनुष्य "स्वतंत्र" कहलाने के योग्य है जब कोई क्रोध और वासना के खिलाफ रक्षा करने में सक्षम है, अन्यथा, यदि कोई वासना का कैदी बन जाता है तो कभी-कभी वह अपने निजी अंगों का गुलाम बन जाता है, और कभी-कभी किसी और के उद्देश्यों का गुलाम बन जाता है। बल्कि एक ऐसा जानवर बन जाएगा जिसके पास अपने अस्तित्व पर कोई अधिकार नहीं है, इसके बजाय, यह दूसरों (मनुष्यों) के हाथों वश में हो जाता है जो कॉलर को उसकी गर्दन में डालते हैं और उसे जैसे चाहें और जहां चाहें ले जाते हैं। उस में कोई कितना बड़ा धोखा है, गुलाम बनने के बाद [निचले स्व से अपनी बुनियादी इच्छाओं का जो प्रकृति में पशुवत और पाशविक हैं], सोचता है कि वह एक मालिक है [और अपने भाग्य और अस्तित्व का स्वामी,] और अपनी इच्छाओं का गुलाम बनने के बाद, सोचता है कि प्रभुत्व के गुण एक में पैदा हुए हैं? ऐसे व्यक्ति को दुनिया में अपमानित किया जाता है और परलोक में अपमानित भी किया जाता है। वास्तविकता यह है कि संयम ही वास्तविक प्रभुत्व है और इस प्रभुत्व के माध्यम से, व्यक्ति परलोक की [अनन्त सफलता और शाश्वत] प्रभुत्व प्राप्त करता है। वे लोग जिन्हें शैतान ने धोखा दिया है, वे दोनों स्थानों पर - दुनिया में और परलोक में नुकसान में रहे, और जिन्हें दृढ़ता के लिए ईश्वरीय रूप से प्रदान की गई क्षमता (*तौफीक*) प्रदान की गई थी, वे इस दुनिया और परलोक दोनों में सफल रहे।

कृतज्ञता की व्याख्या

इस अध्याय [कृतज्ञता पर] में तीन तत्व हैं: पहला कृतज्ञता की उत्कृष्टता, इसकी वास्तविकता, प्रकार और निषेधाज्ञा की व्याख्या; दूसरा है आशीषों और उनके प्रकारों की वास्तविकता, विशेष या सामान्य के संदर्भ में; तीसरा यह व्याख्या है कि धैर्य या कृतज्ञता से क्या श्रेष्ठ है।

पहला तत्व - कृतज्ञता और इसकी उत्कृष्टता: एक ओर, कुरान ने ईश्वरीय स्मरण की प्रशंसा इस प्रकार की:

وَلَذِكْرُ ٱللَّهِ أَكْبَرُ

"और परमेश्वर का स्मरण एक जबरदस्त मामला है। (कुरान, अध्याय 29, आयत 45)

दूसरी ओर, [दिव्य] कृतज्ञता को यह [महान] सम्मान दिया गया था कि इसका उल्लेख [दिव्य] स्मरण के साथ किया गया था। इसलिए, यह कहा गया था:

فَٱذْكُرُونِىٓ أَذْكُرْكُمْ وَٱشْكُرُوا۟ لِى وَلَا تَكْفُرُونِ

"मुझे याद रखो, मैं तुम्हें [तुम्हारे सभी संघर्षों और कष्टों में याद रखूंगा और तुम्हारा सहारा बनूंगा] और मेरे प्रति कृतज्ञता रखूंगा [मेरी अनगिनत आशीषों के लिए जो मैंने आपको बिना मांगे भी दिया है,] और कृतघ्न मत बनो [मुझे अस्वीकार करने या अवहेलना करने की हद तक]। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 152)

ईश्वरीय स्मरण के साथ-साथ कृतज्ञता का उल्लेख करते हुए, इसकी उत्कृष्टता की पूर्णता के लिए तर्क देता है। कुरान कहते हैं:

مَّا يَفْعَلُ ٱللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِن شَكَرْتُمْ وَءَامَنتُمْ ۚ

"यदि तुम उसके प्रति आभारी हो और उस पर विश्वास रखते हो तो परमेश्वर तुम्हें दण्ड देकर क्या करेगा? (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 147)

وَسَنَجْزِى ٱلشَّٰكِرِينَ

"और परमेश्वर कृतज्ञता के लोगों को तेजी से पुरस्कृत करता है। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 145)

एक स्थान पर, भगवान ने स्पष्ट रूप से कहा कि ईश्वरीय आशीर्वाद पर कृतज्ञता, आशीर्वाद में वृद्धि की ओर ले जाती है। इसका कोई अपवाद नहीं है, जबकि अन्य आशीषों में अपवाद हैं जैसे समृद्धि प्रदान करना, प्रार्थना स्वीकार करना, जीविका प्रदान करना, क्षमा प्रदान करना और पश्चाताप स्वीकार करना, सभी अपवादों के उल्लेख के साथ आते हैं। ये सभी उसकी इच्छा के अनुरूप हैं। इन आयतों से यह ज्ञात होता है कि कृतज्ञता एक उत्कृष्ट चीज है, इसीलिए, परमेश्वर ने इसे अपनी इच्छा के अनुरूप नहीं बनाया, बल्कि स्पष्ट रूप से अपनी आशीषों को बढ़ाने का वादा किया [ईमानदारी से कृतज्ञता पर]। कृतज्ञता के एक अच्छा [आंतरिक] गुण होने के बारे में कोई संदेह कैसे हो सकता है क्योंकि यह [ईश्वर के] दिव्य गुणों में से एक गुण है । अब से, परमेश्वर ने स्वयं के लिए इस गुण का उल्लेख किया है:

وَٱللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ

"और परमेश्वर अत्यंत आभारी है (यहां तक कि मामूली चीजों की भी सराहना करता है, भले ही वे कमियों से भरा हो, जिसे हम अच्छाई और धार्मिकता के मार्ग पर करने का प्रबंधन करते हैं) और सहनशीलता के मालिक हैं। (कुरान, अध्याय 64, श्लोक 17)

अता (ईश्वर उन पर दया करे) बताते हैं कि वह पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद की पत्नी पैगंबर मुहम्मद की पत्नी) के निधन के बाद, पैगंबर ज्ञान की तलाश में] से मिलने गए और उनसे पूछा, "कृपया मुझे पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के राज्य में देखी गई सबसे अजीब चीज के बारे में बताएं। यह सुनकर वह रो पड़ी और बोली, "उसकी कौन सी हालत अजीब नहीं थी? एक रात वह मेरे पास आया और मेरे साथ मेरे बिस्तर पर मेरे कंबल के नीचे तब तक लेटा रहा जब तक कि उसका शरीर मेरे शरीर को नहीं छू गया। इसके बाद उसने कहा, 'हे अबू बक्र की बेटी! कृपया मुझे छोड़ दें ताकि मैं अपने रब की पूजा कर सकूं। मैंने कहा, 'हे ईश्वर के दूत! मैं आपकी निकटता चाहता हूं, लेकिन यह आपकी इच्छा है। फिर मैंने उसे अनुमति दे दी। वह पानी के कंटेनर में गया, बहुत अधिक पानी का उपयोग किए बिना स्नान किया। उसके बाद वह [भगवान से] प्रार्थना करने के लिए खड़ा हो गया। प्रार्थना के दौरान, वह तब तक रोने लगा जब तक कि उसके आंसू उसके सीने पर बहने लगे। फिर वह [प्रार्थना में] झुक गया और झुककर रोने लगा। फिर उसने दण्डवत् किया और उसमें रोने लगा। उसने साष्टांग प्रणाम से अपना सिर उठाया और फिर से रोने लगा। वह तब तक रोता रहा जब तक कि भोर नहीं हो गई और बिलाल (भगवान उससे प्रसन्न हों) उसे सुबह (*फज्र) की* नमाज़ के बारे में सूचित करने आया। मैंने उससे पूछा, 'हे ईश्वर के दूत! तुम इतना क्यों रोते हो जब परमेश्वर ने तुम्हारे पिछले और भविष्य के सभी पापों को क्षमा कर दिया है? उसने उत्तर दिया, 'क्या मुझे परमेश्वर का कृतज्ञ सेवक नहीं होना चाहिए क्योंकि मैं परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के कारण ऐसा कर रहा हूँ, क्योंकि मैं परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से दासत्व की स्थिति में ऐसा कर रहा हूँ? और मुझे कैसे नहीं रोना चाहिए जब भगवान ने कुरान में नीचे दी गई आयत को प्रकट किया:

إِنَّ فِي خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱخْتِلَٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ
وَٱلْفُلْكِ ٱلَّتِي تَجْرِي فِي ٱلْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ ٱلنَّاسَ وَمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ
مِنَ ٱلسَّمَآءِ مِن مَّآءٍ فَأَحْيَا بِهِ ٱلْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا
مِن كُلِّ دَآبَّةٍ وَتَصْرِيفِ ٱلرِّيَٰحِ وَٱلسَّحَابِ ٱلْمُسَخَّرِ
بَيْنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾

'वास्तव में, आकाश और पृथ्वी की सृष्टि में, और रात और दिन के बारी-बारी से, मानवता के लाभ के लिए

महासागरों के माध्यम से जहाजों के नौकायन में, उस पानी (वर्षा) में जिसे परमेश्वर आकाश से भेजता है, और वह जीवन जो वह अपने साथ पृथ्वी पर लाता है जो मृत है, सभी प्रकार के जानवरों में जिन्हें उसने पृथ्वी पर तितर-बितर कर दिया है, और हवाओं और बादलों के परिवर्तन में जो आकाश और पृथ्वी के बीच स्वतंत्र रूप से घूमते हैं, वास्तव में बुद्धि, तर्क और समझ वाले लोगों के लिए संकेत हैं। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 164) (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* आयशा के अधिकार पर [भगवान उससे प्रसन्न हों])

इस [भविष्यद्वाणी] परंपरा से यह सीखा गया है कि किसी को भी किसी भी स्थिति में [परमेश्वर के सामने] रोना बंद नहीं करना चाहिए। एक सेवक (मनुष्य का) हृदय चट्टान की तरह कठोर होता है, बल्कि यह अपनी कठोरता में कठोर होता है [क्योंकि यह ज्यादतियों और अत्याचारों का आदेश देता है]। यह कठोरता केवल रोने से ही दूर होती है, चाहे कोई [परमेश्वर के] भय से रोए या [परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता] से।

कृतज्ञता की वास्तविकता: कृतज्ञता आध्यात्मिक यात्रियों (सालिकेन) के स्टेशनों के बीच से एक [आध्यात्मिक] स्टेशन है। यह स्टेशन ज्ञान, क्रिया और [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति के तीन सिद्धांतों से बना है। इन तीनों में ज्ञान ही इस स्टेशन का मूल है। ज्ञान [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति को जन्म देता है और राज्य [महान] कार्यों को जन्म देता है। ज्ञान का अर्थ है अपने दाता से आशीर्वाद को पहचानना, अवस्था वह खुशी है जो उस आशीर्वाद को प्राप्त करने के बाद प्राप्त होती है, और कार्य आशीर्वाद देने वाले की स्वीकृति (ईश्वरीय आदेश) के अनुसार कार्य करना है। यह क्रिया हृदय, [शारीरिक अंगों और] अंगों और जीभ से संबंधित है - ये तीनों हैं।

पहला सिद्धांत - ज्ञान: इस संबंध में, व्यक्ति को तीन मामलों का ज्ञान होना चाहिए: एक आशीर्वाद का है; दूसरा इस अहसास का है कि यह आशीर्वाद किसी के पक्ष में एक आशीर्वाद है; तीसरा दाता के अस्तित्व और [दिव्य] गुणों का है जो प्रतिफल प्रदान करते हैं और इसे [चालाकी और पूर्णता के साथ] पूरा करते हैं। परमेश्वर के संबंध में, व्यक्ति को यह ज्ञान होना चाहिए कि सभी आशीषें केवल परमेश्वर की ओर से हैं, वह वास्तविक दाता है, सभी मध्य साधन [देने वाले और प्राप्तकर्ता के बीच] उसके नियंत्रण और अधीनता में हैं। यह उच्चतम सूक्ति (*मारिफा*) है जो ईश्वरीय महिमा (*तकदीस*) और दिव्य एकता (*तौहीद*) के बाद आता है लेकिन यह रैंक में सर्वोच्च है। विश्वास की ज्ञान-सीमाओं के बीच, पहला ईश्वरीय महिमा है जो यह जानना है कि ईश्वर सभी अपूर्णताओं [सीमाओं, कमजोरियों, दोषों, कमियों और किसी भी प्रकार के दोषों] से ऊपर है और उसके बाद यह ईश्वरीय एकता है जो यह जानना है कि जिस प्राणी को सभी खामियों से मुक्त समझा जाता है, वह एक है, उसका कोई भागीदार और सह-भागीदार नहीं है, उसके बाद, यह जानना है कि अस्तित्व के क्षेत्र में जो कुछ भी मौजूद है, वह सभी इसी अस्तित्व की रचनाएँ हैं जो एक है, और जो कुछ

भी किसी एक को दिया गया है वह उसकी ओर से पुरस्कार के रूप में प्रदान किया जाता है। यह स्पष्ट है कि यह सूक्ति पिछले दो सूक्ति [दिव्य महिमा और दिव्य एकता की] के बाद आती है, इसीलिए, इसकी रैंक पिछले दो की तुलना में अधिक है क्योंकि इसमें ईश्वरीय महिमा और एकता की स्वीकारोक्ति [और आंतरिक स्वीकृति] के अलावा, शक्ति की [दिव्य] पूर्णता और आविष्कार और रचनात्मक चालाकी की पूर्णता की स्वीकारोक्ति है।

मध्य साधन ईश्वरीय आदेश को पूरा करने के लिए बाध्य हैं: फिर भी, यदि कोई अन्य तरीकों से परमेश्वर की आशीषें प्राप्त करता है, तो उसे यह समझना चाहिए कि यह दूसरा व्यक्ति इस आशीष को एक व्यक्ति को देने के लिए मजबूर था क्योंकि परमेश्वर ने इस दूसरे व्यक्ति पर अपना इरादा थोपा था, और उन सभी कारकों का निर्माण किया जो ऐसे व्यक्ति को देने के लिए मजबूर करते थे। और उसने अपने दिल में यह बात रखी कि, "मेरे लिए दुनिया और परलोक की सारी अच्छाई और भलाई किसी को देने पर निर्भर है"। जब यह विचार परमेश्वर की ओर से हृदय में उत्पन्न होता है, तो इस विचार के निहितार्थों पर कार्य करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता है। इसलिए, यह समझा जाना चाहिए कि यदि दूसरा व्यक्ति आपको कुछ दे रहा है, तो यह आपको [इरादे से] अपने लाभ के लिए दिया जा रहा है, न कि आपके लाभ के लिए। यदि दूसरे व्यक्ति को आपको देने में कोई लाभ नहीं होता, तो वह आपको नहीं देता। यदि किसी अन्य व्यक्ति को यह नहीं पता होता कि उसका लाभ आपके लाभ में अंतर्निहित है, तो ऐसे व्यक्ति ने आपको कभी लाभ नहीं पहुंचाया होगा। अब आपको लाभ पहुंचाकर, दूसरा व्यक्ति अपने स्वयं के लाभ के लिए इच्छुक है और वह आपका [वास्तविक] दाता या दाता नहीं है, इसके बजाय उसने आपको अपने लिए एक अपेक्षित आशीर्वाद के लिए एक माध्यम (साधन) बनाया है। असली दाता कोई और है जिसने आपके लिए स्पष्ट देने वाले को अपने अधीन कर लिया और उसके दिल में ऐसे विश्वास और इरादे पैदा किए जो उसे उस आशीर्वाद को आप तक पहुंचाने के लिए मजबूर करते हैं।

यदि आप इन मामलों को इस तरह से समझते हैं तो आप ईश्वर के अस्तित्व और कार्यों की ज्ञान प्राप्त करेंगे और आप एकेश्वरवादी बन जाएंगे, आपके पास [ईश्वरीय] कृतज्ञता पर शक्ति होगी, बल्कि, सिर्फ इस वजह से, आपको "एक अत्यंत आभारी सेवक [ईश्वर का] श्रेष्ठतम" कहा जाएगा। कृतज्ञता के लिए यह आवश्यक है कि ज्ञान यह है कि सभी आशीर्वाद ईश्वर की ओर से हैं, यदि इसमें थोड़ा सा भी संदेह है, तो कोई न तो उस [दिव्य] आशीर्वाद के अधिकारों को पूरा कर पाएगा और न ही उसे देने वाला। मनुष्य को न तो प्रत्यक्ष दाता पर भरोसा करना चाहिए और न ही उस (आशीर्वाद) पर घमंड करना चाहिए या गर्व करना चाहिए, अन्यथा, यह किसी के ज्ञान में कमी होगी और ज्ञान की कमी से सही कार्यों का नुकसान हो सकता है।

दूसरा सिद्धांत - अवस्था: यह [आंतरिक आध्यात्मिक] अवस्था आशीर्वाद की उत्पत्ति के ज्ञान (मारिफा) द्वारा प्राप्त की जाती है। इसका अर्थ है [आशीषों के] देने वाले से नम्रता, नम्रता और घबराए हुए हृदय से

प्रसन्न होना। यह अवस्था भी कृतज्ञता है जैसे ग्नोसिस को कृतज्ञता की स्थिति कहा गया है, लेकिन राज्य को कृतज्ञता के रूप में कहा जाएगा जब यह अपनी सभी शर्तों को शामिल करेगा। उनमें से शामिल, सबसे महत्वपूर्ण शर्त यह है कि [आशीषों के लिए] जो खुशी है वह केवल देने वाले के साथ है, न कि आशीषों या इनाम के साथ। शायद आपको इसे समझने में कठिनाई होगी। इसलिए, हम आपको एक उदाहरण के माध्यम से समझाते हैं। एक राजा है जो यात्रा पर निकलता है। उसने किसी को इनाम के रूप में घोड़ा दिया। यह व्यक्ति घोड़ा पाने के बाद तीन कारणों से खुश हो सकता है। एक कारण यह है कि कोई सिर्फ उस इनाम से खुश होता है जो घोड़ा है क्योंकि यह एक कीमती (महंगा) इनाम है और कोई भी इससे एक अच्छी सवारी प्राप्त कर सकता है जो उसकी इच्छा के अनुसार है। जाहिर है, इस [प्रकार] की खुशी केवल किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा अनुभव की जाती है जो राजा की परवाह नहीं करता है, इसके बजाय किसी का एकमात्र उद्देश्य केवल घोड़ा है। मान लीजिए कि अगर किसी को यह घोड़ा जंगल में मिल गया होता, तो वह भी उतना ही खुश होता। दूसरा कारण यह हो सकता है कि कोई केवल घोड़ा पाकर खुश नहीं है, बल्कि वह खुश भी है क्योंकि यह घोड़ा राजा की उदारता और उसके प्रति दया का प्रमाण है। इससे पता चलता है कि राजा के दिल में एक के लिए जगह है। अगर किसी को यह घोड़ा जंगल में मिल गया होता या राजा के अलावा किसी और को दे दिया होता, तो उसे जरा भी खुशी नहीं होती क्योंकि उसे घोड़े की जरूरत नहीं होती या जो उसकी इच्छा होती है, जैसे कि राजा के दिल में जगह मिलना, घोड़े से कहीं बड़ा है। तीसरा कारण यह हो सकता है कि कोई घोड़ा पाकर खुश है क्योंकि कोई राजा की सेवा करने के लिए उस पर सवारी करना चाहता है या कोई यात्रा की कठिनाइयों को सहन करने के लिए घोड़े की सवारी करना चाहता है, राजा की निकटता अर्जित करना चाहता है। यह संभव है कि कोई मंत्री बनने के लिए अथक परिश्रम के बाद प्रगति कर सकता है [राजा के दरबार में]। इस व्यक्ति को राजा के हृदय में जगह बनाने के लिए संघर्ष नहीं किया जाता है क्योंकि कोई इसे ज्यादा नहीं मानता है, इसके बजाय, वह इतनी निकटता का साधक है कि जो कुछ भी राजा लोगों को प्रदान करता है, वह उसे मध्यस्थ बनाकर करता है [और इस मध्यस्थ के माध्यम से लोगों को प्रदान करता है]। जाहिर है, ऐसा पद केवल उन लोगों को दिया जाता है जो बेहद करीबी और भरोसेमंद हैं, उसके ऊपर, कोई भी मंत्रालय की तलाश नहीं कर रहा है, बल्कि केवल राजा की निकटता, राजा के विश्वास और राजा की निरंतर दृष्टि के सम्मान की इच्छा कर रहा है। यदि [ऐसे] किसी को सेवकाई और निकटता [राजा के साथ] के बीच एक विकल्प दिया जाता है, तो कोई निकटता का चयन करेगा।

ये तीन डिग्री [कृतज्ञता की] हैं। उसमें, पहली डिग्री किसी काम की नहीं है क्योंकि उस पर किसी के सभी ध्यान का ध्यान घोड़ा है। कोई घोड़ा पाकर खुश होता है और देने वाले से बेखबर रहता है, चाहे वह राजा हो या निम्न श्रेणी का व्यक्ति। इसी तरह, जो आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद उसमें खो जाता है और उसे अपने उद्देश्य के अनुकूल पाता है, वह कृतज्ञता से बहुत दूर होता है। दूसरी डिग्री कृतज्ञता के अर्थ में शामिल है कि आशीर्वाद प्राप्त करने वाले को अपने देने से प्रसन्न होना चाहिए, लेकिन यह खुशी देने वाले के होने के साथ नहीं है, बल्कि यह आशीर्वाद के योग्य के रूप में देने वाले की सोच के कारण है जो भविष्य में किसी को अधिक आशीर्वाद देने की उम्मीद कर सकती है। यह उन पवित्र सेवकों की स्थिति है जो

[ईश्वरीय] दंड के डर से अच्छे कर्म करते हैं और [दिव्य] इनाम की आशा करते हैं और [भगवान] के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। पूर्ण कृतज्ञता तीसरी डिग्री में है। दूसरे शब्दों में, आशीष पाने वाला इस विचार से खुश होता है कि कोई व्यक्ति आशीष को परमेश्वर की निकटता प्राप्त करने का एक साधन बना देगा। इसका संकेत यह है कि कोई व्यक्ति दुनिया से खुश नहीं है, बल्कि वह केवल इतनी सारी दुनिया से संतुष्ट है जो सांसारिक जीवन में उसकी मदद कर सकता है, उन सांसारिक आशीर्वादों के लिए पश्चाताप कर सकता है जो उसे पूजा की उपेक्षा करते हैं और उसे सत्य के मार्ग से विचलित करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसमें [निहित] आनंद के कारण आशीर्वाद उद्देश्य नहीं है, जैसे घोड़े का रिसीवर प्रसन्न नहीं था क्योंकि यह मजबूत और तेज दौड़ रहा था, इसके बजाय, कोई इसे राजा की उपस्थिति में पहुंचने का एक साधन माना जाता था ताकि व्यक्ति लगातार राजा की दृष्टि और निकटता का सम्मान प्राप्त कर सके। इसीलिए, शिबली (भगवान उस पर दया करें) ने कहा, "कृतज्ञता आशीर्वाद देने वाले का दर्शन है, यह आशीर्वाद का दर्शन नहीं है"। यह उच्च [आध्यात्मिक] पद उस व्यक्ति द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है जिसे दुनिया के सभी सुख पेट और निजी अंगों तक ही सीमित कर दिए गए हैं, धारणा का चक्र रंग और ध्वनि तक ही सीमित हो गया है, [इसके बजाय,] हृदय सभी [भौतिक] सुखों से रहित होना चाहिए और सभी [शारीरिक] धारणाओं से अपरिचित होना चाहिए। यदि हृदय स्वस्थ है, तो उसे केवल परमेश्वर की स्मरण, ज्ञान और [दिव्य] उपस्थिति में आनंद मिलता है। उस हृदय को इन चीजों (दिव्य स्मरण, ज्ञान और उपस्थिति) से आनंद नहीं मिलता है जो बुरी आदतों से [प्रतिकूल रूप से] प्रभावित हुए हैं।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, भगवान का आभारी होना चाहिए। यदि कोई उस [उच्चतम] डिग्री पर कृतज्ञता नहीं कर सकता है, तो उसे दूसरी डिग्री के साथ संघर्ष किया जाना चाहिए। पहली डिग्री का कोई महत्व नहीं है। दूसरी और तीसरी डिग्री के बीच भी बहुत अंतर है। दूसरी डिग्री में व्यक्ति का उद्देश्य राजा होता है ताकि राजा किसी को घोड़ा दे सके और तीसरी डिग्री में उद्देश्य घोड़ा है ताकि कोई इसे राजा की निकटता प्राप्त करने का साधन बना सके। दोनों के बीच कितना बड़ा अंतर है जिसमें कोई ईश्वर का साधक है ताकि वह एक को आशीर्वाद प्रदान कर सके और दूसरा आशीषों का साधक है ताकि कोई अपने माध्यम से परमेश्वर तक पहुंच सके।

तीसरा सिद्धांत – अपनी प्रसन्नता के अनुसार कर्म : तीसरा सिद्धांत यह है कि दाता के ज्ञानवाद (मारिफा) से प्राप्त सुख के निहितार्थ पर कार्य करना । यह कार्य हृदय, जीभ और शारीरिक अंगों तीनों से संबंधित है। हृदय की क्रिया का अर्थ यह है कि एक सेवक [परमेश्वर का] अच्छा इरादा रखता है और उसने सभी सृष्टिओं के लिए [अपने हृदय में] अच्छाई को छुपाया है। जीभ के माध्यम से कार्रवाई का अर्थ ईश्वरीय स्तुति के माध्यम से है जो कृतज्ञता का प्रतिनिधित्व करता है। [शारीरिक] अंगों के माध्यम से कार्यों का अर्थ है कि परमेश्वर की आज्ञाकारिता में उसकी आशीषों का उपयोग करें और पापों को त्यागने में उनसे मदद लें। इसलिए, आंखों के माध्यम से कृतज्ञता एक आस्तिक के हर दोष को छिपाने के लिए है जिसे कोई देखता है; कानों के माध्यम से कृतज्ञता विश्वासियों के सभी दोषों को ढंकना है जिन्हें कानों से पता चलता है;

जीभ के माध्यम से कृतज्ञता का अर्थ है ऐसे वचन बोलना जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं। यदि अंगों का उपयोग इस तरह किया जाता है तो यह इन [दिव्य] आशीर्वादों [इन अंगों के होने का] आभार बन जाता है जो [दिव्य रूप से] निर्धारित किए गए हैं।

ईश्वरीय एकता (*तौहीद*) या स्वयं के विनाश (*फना*) की विचारधारा: इस पर दो मान्यताएं हैं। एक को ईश्वरीय एकता [या एकता] की विचारधारा कहा जाता है। जो लोग इसमें सिद्ध होते हैं, उनका मानना है कि कृतज्ञ और प्रशंसात्मक प्रेमी और प्रिय एक ही अस्तित्व के दो नाम हैं। उनके विचार में, ईश्वर के अलावा कुछ भी मौजूद नहीं है:

كُلُّ شَىْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُۥ

"उसके अस्तित्व को छोड़कर सब कुछ नष्ट हो रहा है [क्योंकि वह एकमात्र ऐसा प्राणी है जो शाश्वत, शाश्वत और आत्म-निर्वाह कर रहा है जिसकी कोई शुरुआत और अंत नहीं है, वह जो किसी अन्य अस्तित्व के बिना अस्तित्व में है और अन्य सभी प्राणी उसके माध्यम से मौजूद हैं]। (कुरान, अध्याय 28, श्लोक 88)

यह उद्घोषणा उनके दिल की आवाज है। यह विचारधारा वास्तविकता पर आधारित है और इसमें अनादि शाश्वत "शुरुआत" और अंतहीन शाश्वत "अंत" दोनों सत्य हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वर के अलावा कोई भी अस्तित्व नहीं है जो अपने आप में मौजूद है, बल्कि किसी के लिए भी या किसी भी चीज़ के लिए [ईश्वर को छोड़कर] इस तरह का अस्तित्व होना असंभव है। वास्तविक अस्तित्व वह है जो अपने स्वयं के अस्तित्व के माध्यम से मौजूद है। कुछ ऐसा जो अपने स्वयं के अस्तित्व से अस्तित्व में नहीं हो सकता है, उसका अस्तित्व अपने स्वयं के अस्तित्व के माध्यम से नहीं होगा, इसके बजाय यह अन्य [अस्तित्व] के साथ जुड़ा होगा। यह इस हद तक है कि यदि इसके स्वयं के अस्तित्व को किसी अन्य पर निर्भरता के बिना देखा जाता है [अपने अस्तित्व के लिए], तो इसका अपना अस्तित्व अनिश्चित होगा। वर्तमान वह है जो अपने आप अस्तित्व में है और जो अस्तित्व अपने आप में मौजूद है वह ऐसा है कि यदि अन्य सभी का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, तो उसका अपना अस्तित्व प्रभावित नहीं होता है। यदि कोई ऐसा अस्तित्व है जो अपने स्वयं के अस्तित्व से अस्तित्व में है और अन्य सभी भी अपने स्वयं के अस्तित्व से अस्तित्व में हैं, तो इसे "*कय्यूम*" कहा जाता है और "*कय्यूम*" इस एक प्राणी के अलावा कुछ और नहीं हो सकता है [जिसे हम भगवान के रूप में संदर्भित करते हैं] क्योंकि वह "*हय्युल कय्यूम*" (जीवित और स्वयं अस्तित्व) होगा। यह गुण केवल एक अस्तित्व का है। यदि तुम इसे इस दृष्टिकोण से देखोगे, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि हर चीज़ का स्रोत और निर्भरता केवल वही है, जो एक ही है। इसीलिए, केवल वही आभारी है, केवल वही है जो कृतज्ञता का प्राप्तकर्ता है, केवल वही प्रेमी है, और केवल वही प्रिय है। इसलिए, जब हबीब इब्न हबीब (ईश्वर उन पर दया करे) ने यह आयत पढ़ी:

إِنَّا وَجَدْنَٰهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ

"वास्तव में, हमने उसे (पैगंबर अय्यूब या अय्यूब [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) पाया [जब वह ईश्वरीय रूप से नियुक्त आपदा से पीड़ित था जो वह बना रहा] धैर्यवान था, वह एक बहुत अच्छा सेवक था [भगवान का], वह अक्सर भगवान की ओर मुड़ता था [हर चीज के लिए]। (कुरान, अध्याय 38, आयत 44)

उसने कहा, "परमेश्वर की जय हो! यह बात कितनी अद्भुत है [जो इस आयत में बताई गई है]! वह वही है जिसने [पैगंबर अय्यूब को] धैर्य की शक्ति दी है और वह वह है जो उसकी प्रशंसा करता है इसलिए जैसे उसने खुद की प्रशंसा की है, वह वही है जो प्रशंसा कर रहा है। वह प्यार है और वह प्रिय है। यह एक उच्च पद है। तुम इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हो जो आपकी बुद्धि की सीमा के करीब है। वह उदाहरण यह है कि जब कोई लेखक अपने स्वयं के लेखन को पसंद करता है, तो यह कहा जाता है कि उसने स्वयं को पसंद किया है। इसी तरह, जब कोई निर्माता अपनी एक रचना को पसंद करता है, तो ऐसा लगता है जैसे वह स्वयं को पसंद करता है। या एक पिता अपने बच्चे को इस अर्थ में पसंद करता है कि ऐसा व्यक्ति उसका बच्चा है, ऐसा लगता है जैसे वह अपने अस्तित्व को पसंद करता है। ईश्वर को छोड़कर दुनिया में जो भी चीजें हैं, वे सभी उसकी रचना और रचना हैं। यदि वह अपने स्वयं के लेखन या रचनाओं से प्रेम करता है, तो ऐसा लगता है मानो वह अपने स्वयं के अस्तित्व से प्रेम करता है। यह ईश्वरीय एकता की विचारधारा है। *सूफियों* (आध्यात्मिक यात्री या सत्य के साधक) इसे "स्वयं का विनाश (फना)" के रूप में मानते *हैं*। इसका अर्थ यह है कि सेवक अपने स्वयं के अस्तित्व से और ईश्वर के अलावा अन्य सभी चीजों से विलुप्त हो गया है और हर जगह केवल एक सच्चे अस्तित्व को देखता है [क्योंकि वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो अस्तित्व में है]। एक व्यक्ति जो इन [आध्यात्मिक] वास्तविकताओं को नहीं समझता है, उन्हें अस्वीकार करता है और कहता है, "एक मनुष्य विलुप्त कैसे हो सकता है जब उसके पास चार गज लंबी छाया है और वह एक दिन में एक या दो किलोग्राम आटा खाता है?" अपनी अज्ञानता के कारण अज्ञानी, स्वयं के विनाश (फना) के दावे पर हंसते हैं। यह अफ़सोस की बात है कि ज्ञानवादियों की नियति यह है कि अज्ञानी उनकी बात को नहीं समझते हैं, उन पर हंसते हैं, और उपहास के तीरों से उनके दिलों को घायल करते हैं।

उद्देश्य पर लौटें: [सच्चे] भविष्यद्वक्ताओं [परमेश्वर के] आने का उद्देश्य लोगों को ईश्वरीय एकता की पूर्णता में आने का निमंत्रण है। हालाँकि, जो मार्ग व्यक्ति को ईश्वरीय एकता की पूर्णता की ओर ले जाता है, उसमें असंख्य बाधाएँ हैं और यह एक लंबी और कठिन यात्रा के साथ चिह्नित है। ईश्वरीय नियम इस कठिन रास्ते पर चलने और इस कठिन यात्रा को पूरा करने की विधि दिखाता है। जहां तक इस प्रश्न का संबंध है कि किसी के कृतज्ञता से ईश्वर को क्या लाभ होता है, इसका उत्तर यह है कि ईश्वर को इससे कोई लाभ नहीं मिलता है, यह विशुद्ध रूप से [भगवान के] सेवकों के लाभ के लिए है। हम इस बिंदु को एक उदाहरण के

माध्यम से समझाएंगे। मान लीजिए कि कोई राजा अपने किसी ऐसे सेवक के पास यात्रा करने के लिए सवारी, वस्त्र और भरोसा भेजता है जो किसी दूर स्थान पर रहता है ताकि वह यात्रा के बाद राजा के करीब आ जाए। राजा के लिए नौकर को करीब लाने के लिए दो मामले हो सकते हैं। पहला [मामला] यह है कि नौकर को करीब लाने के इच्छुक राजा का उद्देश्य नौकर को राजा की सेवा करना है और एक अभियान में भाग लेने से, वह राज्य के लिए शक्ति का स्रोत बन जाएगा। दूसरा मामला यह है कि इसमें राजा को कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं हो सकता है, और नौकर भी उस सेवा को करने में सक्षम नहीं है जो राजा को सभी चिंताओं से मुक्त कर दे। संक्षेप में, नौकर एक ऐसा अस्तित्व है जिससे राजा के प्रभुत्व पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा, चाहे वह कमी हो या वृद्धि, उस स्थिति में, यदि राजा नौकर को सवारी, कपड़े और यात्रा के लिए प्रावधान प्रदान करता है तो यह राजा की शाही बंदोबस्ती (उदारता और उदारता) है। एकमात्र उद्देश्य जो हो सकता है वह यह है कि नौकर इन संसाधनों का उपयोग राजा के करीब आने और शाही उपस्थिति में होने का सम्मान प्राप्त करने के लिए करे। राजा का अपना लाभ उद्देश्य नहीं है। सेवकों (ईश्वर की, अर्थात् मनुष्यों की) स्थिति समान है। जो कुछ भी वे परमेश्वर से प्राप्त करते हैं वह उनके स्वयं के उच्च पदों की प्राप्ति के लिए है, न कि परमेश्वर के लाभ के लिए।

इस उदाहरण में पहले मामले में, [यात्रा के बाद] राजा के करीब आने वाला नौकर तब तक आभारी नहीं हो सकता जब तक कि नौकर [राजा को] वह सेवा प्रदान नहीं करता जो नौकर से देय है। दूसरे मामले में, एक नौकर या तो आभारी हो सकता है या अस्वीकारकर्ता हो सकता है। इस मामले में कृतज्ञता का तरीका यह होगा कि राजा द्वारा दिए गए एहसानों का उपयोग किया जाए, उन प्रयासों में जो राजा को पसंद हैं और उन्हें अपनी पसंद के अनुसार खर्च नहीं करना चाहिए। अस्वीकृति का तरीका इन आशीषों को उन चीजों पर खर्च करना होगा जो राजा को नापसंद हैं या ऐसी यात्रा पर खर्च करें जो नौकर को राजा से अधिक दूर कर दे। इसलिए, यदि नौकर कपड़े पहनता है, घोड़े पर सवार होता है, और राजा द्वारा [उसके लिए] यात्रा पर भेजे गए [यात्रा के लिए] प्रावधान खर्च करता है, तो यह कहा जाएगा कि सेवक ने राजा के प्रति आभार व्यक्त किया क्योंकि नौकर ने इन सभी चीजों को खर्च किया था [जो सभी राजा द्वारा प्रदान किए गए थे,] राजा के पसंदीदा प्रयासों पर। लेकिन अगर नौकर ने शाही वस्त्र पहने, घोड़े पर सवार होकर राजा के विपरीत दिशा में जाने वाले मार्ग को चुना, कि किसी को राजा के करीब लाने के बजाय, एक और दूर कर दे, तो यह कहा जाएगा कि सेवक ने आशीर्वाद को अस्वीकार कर दिया और उन्हें राजा के खिलाफ इस्तेमाल किया। इसी तरह, वह व्यक्ति (सेवक) भी आशीर्वाद की अस्वीकृति में शामिल है जो शाही दान का लाभ नहीं उठाता है, उन्हें कपड़े न पहनकर (राजा द्वारा भेजा गया) खाली बैठने दें, सवारी न करें, और उस यात्रा में यात्री का प्रावधान न लें। इस व्यक्ति की अस्वीकृति पहले की तुलना में कम है।

ऐसी है रचनाओं की। भगवान ने मनुष्य को बनाया है। शुरुआत में उन्हें वासनाओं का उपयोग करने की आवश्यकता होती है ताकि उनका शरीर पूरी तरह से विकसित हो जाए। वासनाओं का उपयोग उन्हें ईश्वरीय निकटता से दूर कर देता है, जबकि शाश्वत सुख और अनन्त सफलता (सादाह) की उनकी खुशी

(सर्वोच्च उपलब्धि) *केवल* ईश्वरीय निकटता में है। इसीलिए, परमेश्वर ने ऐसी आशीषें बनाई जो उन्हें (मनुष्यों को) ईश्वर के करीब लाती हैं और उन्हें उनका उपयोग करने की क्षमता भी देती हैं। कुरान ने इन शब्दों में ईश्वर के प्रति मानवीय निकटता और दूरदर्शिता को समझाया:

لَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَـٰنَ فِىٓ أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ

"हमने इंसान को सबसे अच्छे सांचों में बनाया है। (कुरान, अध्याय 95, श्लोक 4)

ثُمَّ رَدَدْنَـٰهُ أَسْفَلَ سَـٰفِلِينَ ﴿٥﴾

إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٦﴾

"उसके बाद हम उन लोगों को छोड़कर जो [ईश्वर और शाश्वत सत्यों में विश्वास करते हैं जो ईश्वर में विश्वास का हिस्सा हैं] और अच्छे, पवित्र और धार्मिक कर्म करते हैं, उनके लिए एक शक्तिशाली ईश्वरीय प्रतिफल है जो कभी नहीं रुकेगा। (कुरान, अध्याय 95, आयत 5-6)

इससे यह ज्ञात होता है कि परमेश्वर की आशीषें ऐसे साधन हैं कि उनके माध्यम से, एक सेवक [ईश्वर का] निम्न से निम्न से अनन्त सुख और अनन्त सफलता (सादाह) के पद की ओर बढ़ता है। परमेश्वर ने इन उपकरणों को सेवकों के लिए बनाया है और परवाह नहीं करता है कि कोई उसके करीब आता है या नहीं। हालाँकि, सेवक के पास इन उपकरणों का उपयोग [दिव्य] आज्ञाकारिता या पाप (अवज्ञा) में मदद के लिए करने का विशेषाधिकार है। यदि कोई आज्ञा का पालन करता है, तो उसे आभारी कहा जाएगा क्योंकि उसने अपने प्रभु की स्वीकृति की इच्छा की है। यदि कोई अवज्ञा करता है, तो उसे अस्वीकार करने वाला या कृतघ्न कहा जाएगा क्योंकि उसने ऐसे काम किए हैं जो उसके भगवान को नापसंद हैं। यदि सेवक ने परमेश्वर के उपहारों (आशीषों) को [ईश्वरीय] आज्ञाकारिता या अवज्ञा में उपयोग न करके निलंबित रखा, तो यह परमेश्वर की आशीषों की अस्वीकृति भी है [अवज्ञा की प्रवृत्तियों को दूर करने के लिए उनका उपयोग न करने के लिए]। दुनिया में बनाई गई सभी चीजें अनिवार्य रूप से नौकरों (मनुष्यों) के लिए साधन हैं और उनके माध्यम से, एक सेवक अनन्त सुख और अनन्त सफलता (*सादाह*) की परलोक और ईश्वर की निकटता प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक आज्ञाकारी सेवक किसी की आज्ञाकारिता के अनुरूप परमेश्वर की आशीषों के प्रति आभारी होता है और हर व्यक्ति जिसने इन आशीषों का उपयोग नहीं किया या हर पापी जिसने परमेश्वर से खुद को दूर करने के तरीके में उनका उपयोग किया, वह एक कृतघ्न अस्वीकारकर्ता है और परमेश्वर के अलावा किसी अन्य के प्रेम में सीमाओं से परे है।

कृतज्ञता के योग्य आशीर्वाद

कृतज्ञता का दूसरा घटक वे आशीर्वाद हैं जो कृतज्ञता के योग्य हैं। यहां आशीषों की वास्तविकता, उनके प्रकार और रैंक (ग्रेड) के बारे में बताया जाएगा। इसके अलावा, जो चीजें विशेष आशीषों के रूप में गठित होती हैं और जो चीजें सामान्य आशीषों के रूप में गठित होती हैं, उन्हें समझाया जाएगा। परमेश्वर ने अपने सेवकों को इतनी सारी आशीषें प्रदान की हैं कि उनकी गिनती भी नहीं की जा सकती है, जैसा कि परमेश्वर ने कहा था:

وَإِن تَعُدُّواْ نِعْمَتَ ٱللَّهِ لَا تُحْصُوهَآ

"और यदि तुम परमेश्वर की आशीषों को गिनना शुरू कर दोगे [जो असीम और असंख्य हैं], तो तुम उन्हें किसी भी गिनती में शामिल नहीं कर पाओगे। (कुरान, अध्याय 14, श्लोक 34)

आशीर्वाद की वास्तविकता और उसके प्रकार: यह ज्ञात हो कि हर अच्छाई, हर खुशी, हर खुशी, वह सब कुछ जो मांगा जाता है, और जो कुछ भी प्रभावी और सहायक है, वह एक आशीर्वाद है, लेकिन वास्तविक आशीर्वाद परलोक में शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता (सादाह) है। परलोक में अनन्त सुख और अनन्त सफलता के अलावा, कुछ भी जिसे आशीर्वाद कहा जाता है, या तो ऐसा कहना गलत है या यह एक रूपक उपयोग है ["आशीर्वाद" शब्द का]। उदाहरण के लिए, एक सांसारिक आशीर्वाद जो परलोक में मदद नहीं करता है, उसे आशीर्वाद के रूप में कहा जाना गलत है। इस शब्द को किसी भी ऐसी चीज़ पर लागू करना सही है जो एक या अधिक तरीकों से परलोक में शाश्वत सुख और अनन्त सफलता तक पहुंचने का स्रोत है, क्योंकि वह चीज़ वास्तविक आशीर्वाद प्राप्त करने का कारण है। आशीर्वाद और सुख जो परलोक की शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता प्राप्त करने के साधन हैं या इसमें मदद करते हैं, हम उन्हें समझाने के लिए उन्हें कई प्रकारों में विभाजित करेंगे:

आशीषों का पहला विभाजन: यदि हम सभी मामलों को अपने आप से मानते हैं, तो चार प्रकार के मामले होंगे [जो हमसे संबंधित हैं]: पहला, वे मामले जो दुनिया और परलोक दोनों के लिए फायदेमंद हैं जैसे कि ज्ञान और सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव (*हुस्न उल-खुलक*); दूसरा, ऐसे मामले जो दुनिया और परलोक दोनों में गैर-लाभकारी हैं जैसे कि अज्ञानता और बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव; तीसरा, ऐसे मामले जो दुनिया के लिए फायदेमंद हैं लेकिन परलोक के लिए गैर-फायदेमंद हैं जैसे कि वासनाओं में आनंद पाना; चौथा, ऐसे मामले जो दुनिया के लिए हानिकारक हैं लेकिन परलोक के लिए फायदेमंद हैं जैसे कि वासनाओं को नियंत्रित करना और निचले स्व का विरोध करना। पहला प्रकार जो संसार और परलोक दोनों के लिए लाभदायक है, वह वास्तविक आशीष है, जैसे ज्ञान और सुंदर नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र और आंतरिक स्वभाव। [दूसरा] प्रकार जो दोनों में गैर-लाभकारी है, वह वास्तविक कठिनाई है जो ज्ञान के विपरीत है जो अज्ञानता है, और सुंदर चरित्र लक्षणों के विपरीत है जो बुरे चरित्र लक्षण हैं। [तीसरा] प्रकार जो दुनिया के लिए फायदेमंद है लेकिन परलोक के लिए गैर-लाभकारी है, अंतर्दृष्टि और ज्ञान के लोग इसे शुद्ध कठिनाई कहते हैं और अज्ञानी इसे एक आशीर्वाद

मानते हैं। इसका दृष्टांत ऐसा है जैसे कोई विष से लदा शहद ढूंढ रहा हो। यदि कोई जहर से परिचित है, तो वह शहद को एक आपदा के रूप में मानेगा, लेकिन यदि कोई इससे अपरिचित है, तो वह इसे एक आशीर्वाद मानेगा। [चौथा] प्रकार जो दुनिया के लिए हानिकारक है लेकिन परलोक के लिए फायदेमंद है, बुद्धि [और बुद्धि] के लोग इसे एक आशीर्वाद और अज्ञानता को एक कठिनाई के रूप में मानते हैं। इसका दृष्टांत एक कड़वी दवा की तरह है जिसका स्वाद खराब होता है जो अस्थायी होता है, लेकिन इसके माध्यम से प्राप्त स्वास्थ्य स्वागत योग्य और लंबे समय तक चलने वाला होता है। यदि किसी बच्चे को पीने के लिए कड़वी दवा दी जाती है, तो वह इसे एक कठिनाई मानेगा और इसे लेने पर सहमत नहीं होगा, सिवाय इसके कि जब बच्चे को इसे लेने के लिए मजबूर किया जाता है, जबकि एक अच्छी तरह से जागरूक और सभ्य इंसान खुशी से कड़वी दवा पीता है। इतना ही नहीं, कोई उस व्यक्ति की सराहना करता है जो दवा या उसकी सामग्री प्रदान करता है या इसकी तैयारी में मदद करता है और ऐसे व्यक्ति का आभारी है और एहसान के लिए ऋणी महसूस करता है, ऐसे व्यक्ति के करीब आना चाहता है और उपहारों के साथ स्नान करता है। वास्तविकता यह है कि अज्ञानी मित्र एक बुद्धिमान शत्रु से अधिक हानिकारक है। हर इंसान अपने निचले स्व का दोस्त होता है लेकिन वह एक अज्ञानी मित्र होता है, इसीलिए, यह एक के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे दुश्मन भी उसके साथ व्यवहार नहीं करता है।

आशीर्वाद का दूसरा विभाजन: सांसारिक साधनों में अच्छे और बुरे दोनों शामिल होते हैं। बहुत कम साधन ऐसे होते हैं जिनमें केवल अच्छाई होती है और उनमें किसी भी बुराई की उपस्थिति नहीं होती है। धन, यश, बच्चे, रिश्तेदार और अन्य सभी [सांसारिक] साधन ऐसे हैं जिनमें अच्छाई और बुराई दोनों हैं। इस तरह के साधनों को आगे तीन प्रकारों में विभाजित किया गया है: पहले प्रकार के [साधन] वे कारण हैं जिनका लाभ नुकसान से अधिक होता है जैसे कि किसी की जरूरतों के अनुसार धन और प्रसिद्धि आदि। दूसरे प्रकार के वे कारण हैं जिनका नुकसान अधिकांश लोगों के लिए लाभ से अधिक है जैसे कि बहुत सारा धन, व्यापक प्रसिद्धि आदि। तीसरे प्रकार के वे कारण हैं जिनका लाभ और हानि समान है। ये वे मामले हैं जो अलग-अलग व्यक्तियों के लिए अलग-अलग हैं, उदाहरण के लिए, एक पवित्र व्यक्ति को अच्छे धन से लाभ होता है, भले ही वह बहुत अधिक हो क्योंकि कोई इसे दान और दान द्वारा परमेश्वर के मार्ग में खर्च करता है। यदि किसी के पास यह दिव्य शक्ति है, तो धन की प्रचुरता उसके लिए एक आशीर्वाद होगी। कुछ बदकिस्मत लोगों को थोड़ी सी मात्रा में धन से नुकसान होता है। दूसरे शब्दों में, वे इसे महत्वहीन समझते हैं, हर समय अपने प्रभु से शिकायत करते हैं, और अधिक के लिए लालच रखते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए निश्चित रूप से यह धन अपमान और कठिनाई का कारण है।

आशीषों का तीसरा विभाजन: अच्छे कार्यों और कार्यों से संबंधित सभी मामले तीन प्रकार के होते हैं, एक पहलू में: पहला, वे जो अपने आप में खोजे जाते हैं; दूसरा, वे जो अन्य चीजों के लिए खोजे जाते हैं [और अपने आप में नहीं]; और तीसरा, वे जो अपने आप में और अन्य चीजों के लिए खोजे जाते हैं। पहला प्रकार जो अपने आप में खोजा जाता है और प्रिय होता है, उसमें ईश्वरीय दृष्टि का आनंद और उसके साथ

बैठक शामिल है। यह परलोक की शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता (सादाह) का आनंद है और यह हमेशा के लिए है। शाश्वत सुख और चिरस्थायी सफलता की यह खुशी अपने साधनों से कुछ और हासिल करने की कोशिश नहीं की जाती है, बल्कि यह अपने लिए खोजा जाता है और यह स्वयं उद्देश्य है। दूसरे प्रकार या अन्य चीजों के लिए मांगा जाने वाले मामलों में *दिरहम* और *दीनार* (सोने और चांदी के सिक्के जो पुरानी मुद्राएं थीं, दूसरे शब्दों में, पैसा और धन) शामिल हैं। यदि सांसारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ और नियुक्त किया गया होता तो सोने, चांदी और पत्थरों के बीच कोई अंतर नहीं होता [क्योंकि वे सभी मूल्य और महत्व में समान होते], लेकिन चूंकि वे (धन और धन) [सांसारिक] सुखों को प्राप्त करने के साधन हैं और उनके साधनों से, सांसारिक सुख-सुविधाएं आसानी और समीचीनता के साथ प्राप्त की जाती हैं, इसीलिए, वे अज्ञानियों के लिए अपने आप में प्रिय हो गए। वे अज्ञानी लोगों के प्रिय हो गए हैं, इस हद तक कि वे उन्हें जमा करते हैं, उन्हें जमीन में गाड़ देते हैं (उन्हें दूसरों की पहुंच और ज्ञान से दूर कई स्थानों पर गुप्त रूप से और सुरक्षित रूप से जमा करते हैं), उन्हें दिखावटी रूप से खर्च करते हैं, और सोचते हैं कि पैसा और धन अपने आप में उद्देश्य हैं। ऐसे लोगों का दृष्टांत एक ऐसे व्यक्ति का है जिसे दूसरे से प्यार हो गया और इस वजह से वह उस दूत से भी प्यार करने लगता है जो एक-दूसरे के संदेशों को रिले करता है और उनकी मुलाकात का साधन बन जाता है। बाद में संदेशवाहक का प्रेम इस हद तक बढ़ जाता है कि व्यक्ति सच्चे प्रिय को भूल जाता है और जीवन भर प्रिय का नाम भी नहीं लेता है और इसके बजाय, दूत के प्रेम में और उसकी सेवा में व्यस्त हो जाता है। यह अत्यधिक अज्ञानता और खुला गुमराह है। तीसरे प्रकार में वे मामले शामिल हैं जो अपने आप में और अन्य चीजों के लिए भी मांगे जाते हैं, जैसे कि स्वास्थ्य और सुरक्षा। उनकी तलाश इसलिए भी की जाती है क्योंकि स्वास्थ्य पाने के बाद मनुष्य ईश्वर की याद और चिंतन करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है जो ईश्वर की ओर ले जाता है। इसके अलावा, उनके माध्यम से, मनुष्य सांसारिक सुखों को भी प्राप्त करता है। स्वास्थ्य की मांग अपने आप में भी की जाती है क्योंकि कभी-कभी कोई पैदल चलना नहीं चाहता है [जैसा कि कोई सवारी या वाहन का उपयोग करने का आदी है], इसके बावजूद, कोई चाहता है कि दो पैर ठीक हों, हालांकि दो पैरों की सुरक्षा की तलाश की जानी चाहिए क्योंकि वे चलने के साधन हैं, लेकिन चूंकि सुरक्षा अपने आप में प्रिय है, इसलिए इसकी मांग की जा रही है।

इन तीन प्रकारों में, वास्तविक आशीर्वाद पहला प्रकार है, दूसरे शब्दों में, परलोक की शाश्वत खुशी और चिरस्थायी सफलता की खुशी जो अपने आप में खोजी जाती है। जो चीज अपने आप में मांगी जाती है, और दूसरी चीजों के लिए भी मांगी जाती है, वह भी एक आशीर्वाद है लेकिन पहले आशीर्वाद की तुलना में, यह रैंक में कम है। जो चीज अपने आप में नहीं बल्कि अन्य चीजों जैसे पैसे और धन के लिए मांगी जाती है, उसे आशीर्वाद नहीं कहा जाएगा क्योंकि वे अपने आप में आशीर्वाद हैं, इसके बजाय उन्हें आशीर्वाद कहा जाएगा क्योंकि वे साधन हैं। इसलिए, वे केवल उसके लिए आशीर्वाद हैं जो उनके बिना किसी की जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है। यदि किसी व्यक्ति का उद्देश्य ज्ञान और पूजा है और उसके पास अपनी आवश्यकता के अनुसार धन (वित्तीय संसाधन) है, तो ऐसे व्यक्ति के लिए सोना और पत्थर दोनों समान हैं, क्योंकि किसी को न तो उनके अस्तित्व में रुचि होगी और न ही उनके अस्तित्व में। यदि वे किसी

को [परमेश्वर का] चिंतन और आराधना करने से रोकते हैं, तो वे कठिनाइयों के अग्रदूत होंगे और एक के लिए आशीष नहीं होंगे।

आशीषों का चौथा विभाजन: अच्छे से संबंधित सभी मामलों को [जो कृतज्ञता के योग्य आशीर्वाद हैं,] को एक अन्य प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता है। अच्छे तीन प्रकार के होते हैं: फायदेमंद, आनंददायक और सुंदर। आनंददायक वह चीज है जिसका लाभ तुरंत पता चल जाता है। जो अपने अंतिम अंत के संदर्भ में लाभकारी है, वह फायदेमंद है। सुंदर वह है जो सभी परिस्थितियों में अच्छा है। बुराई भी तीन प्रकार की होती है: हानि पहुंचाने वाला, बदसूरत और हानिकारक। अच्छे में, जिस चीज में तीनों प्रकार के अच्छे एक में जमा हैं, वह है ज्ञान और बुद्धि - यह ज्ञान और बुद्धि के लोगों की दृष्टि में फायदेमंद है और सुखद और सुंदर भी है। बुराई में, इसका उदाहरण अज्ञानता होगा - यह नुकसान पहुंचाने वाला, बदसूरत और हानिकारक है। एक अज्ञानी व्यक्ति यह महसूस करने पर दर्द महसूस करता है कि, "मैं अज्ञानी हूं, लेकिन यह दूसरा व्यक्ति ज्ञानी है", और उस समय अपने दोषों को समझता है और इससे दुखी होता है। इस बिंदु पर, ज्ञान के आनंद की इच्छा अपना सिर उठाती है, लेकिन ईर्ष्या, अहंकार और शारीरिक वासना किसी के मार्ग में बाधा बन जाती है। नतीजतन, दो विरोधी ताकतें एक को दो विपरीत दिशाओं में खींचती हैं और एक की आत्मा संकुचित हो जाती है क्योंकि दोनों स्थितियों में एक दर्द में होता है - ज्ञान प्राप्त करने के मामले में, व्यक्ति को अहंकार छोड़ना पड़ता है और शिक्षा के अपमान को सहना पड़ता है [क्योंकि यह हर कदम पर किसी की अज्ञानता पर प्रहार करता है] और सबसे बढ़कर, व्यक्ति को इसके लिए वासना को त्यागने की जरूरत है। ज्ञान प्राप्त न करने की स्थिति में, [जिसने अपनी अज्ञानता का एहसास किया है] को अपनी कमी का बोध होता रहता है। ऐसा व्यक्ति लगातार [एक प्रकार] सजा सहता है।

आशीर्वाद का पांचवां विभाजन: यह आशीर्वाद हर खुशी पर लागू होता है। सुख तीन प्रकार के होते हैं: बौद्धिक, शारीरिक जो कुछ जानवरों के साथ आम हैं, और शारीरिक जो सभी जानवरों के साथ आम हैं। बौद्धिक सुखों के उदाहरण में ज्ञान और ज्ञान शामिल हैं क्योंकि यह आनंद आंखों, कान, नाक, स्वाद, पेट या निजी अंगों द्वारा नहीं माना जाता है, इसके बजाय, इसका आनंद केवल हृदय द्वारा माना जाता है क्योंकि यह [मानव] गुण (विशिष्टता) के लिए विशिष्ट है जिसे बुद्धि कहा जाता है। सभी सुखों में से यह सबसे कम पाया जाता है, भले ही यह सभी सुखों में सबसे श्रेष्ठ हो। इसकी कमी का कारण यह है कि ज्ञान का आनंद केवल एक विद्वान (ज्ञान के धारक) द्वारा ही महसूस किया जा सकता है और ज्ञान का आनंद केवल बुद्धिमान (आंतरिक रोशनी या ज्ञान के धारक) द्वारा ही महसूस किया जा सकता है। ज्ञान और बुद्धि के कितने लोग मौजूद हैं? हर कोई जानता है [कि बहुत सारे नहीं हैं]। अधिकांश लोग [जो ज्ञानी और बुद्धिमान होने का दावा करते हैं या प्रतिष्ठित हैं] नाम और रूप में विद्वान और बुद्धिमान हैं [केवल लेकिन वास्तव में, सच्चे ज्ञान और आंतरिक रोशनी से रहित हैं]।

ज्ञान की उत्कृष्टता और विशिष्टता का कारण यह है कि इसका आनंद हमेशा एक के साथ रहता है और न तो इस लोक में और न ही परलोक में कभी घटता है। यह एक ऐसा साथी है जो हर समय एक साथ रहता है और ज्ञान के लोग इससे ऊब नहीं पाते। बाकी सब सुख थकावट करते हैं। उदाहरण के लिए, पेट भर खाने से शरीर में आलस्य आता है, मैथुन करने के बाद थकान और भारीपन की भावना होती है, लेकिन ज्ञान के सागर [विशेष रूप से दिव्य ज्ञान] और ज्ञान के सागर में कोई कितना भी तैरकर [गहराई में] गोता लगाए, किसी के स्वभाव पर भार की भावना नहीं होती है और शरीर थकान का शिकार नहीं होता है। जो व्यक्ति इतनी विशिष्ट और श्रेष्ठ वस्तु को प्राप्त करने में सक्षम होने के बावजूद किसी हीन वस्तु पर स्थिर हो जाता है और कुछ दिनों के सुखों के पीछे असहाय होकर भटकता है, ऐसे व्यक्ति के पागलपन और दुर्भाग्य पर कौन संदेह कर सकता है? जहां तक इस सवाल का सवाल है कि आम आदमी ज्ञान के सुख को क्यों नहीं देख सकते हैं, इसका कारण यह है कि उनके पास इसके लिए लगाव (धक) भी नहीं है और जिसके पास कोई लगाव नहीं है, उसे कोई समझ और कोई तीव्र इच्छा नहीं है (*शॉक)* / तीव्र इच्छा शौक के अधीन है। यदि कोई शौक नहीं है, तो इच्छा भी नहीं होगी, या वासनाओं का पालन करने से उनके स्वभाव में उथल-पुथल आ गई है और उनके दिलों में एक बीमारी पैदा हो गई है [यहां तक कि ज्ञान और आंतरिक रोशनी की सराहना करने के लिए]।

दूसरे प्रकार का आनंद जो शारीरिक है और कुछ जानवरों के साथ साझा किया जाता है जैसे वर्चस्व, श्रेष्ठता, सबसे आगे होने का आनंद। इस प्रकार के आनंद में, कुछ जानवर उन्हें शेर, चीता और अन्य शक्तिशाली जानवरों जैसे मनुष्यों के साथ भी साझा करते हैं। तीसरे प्रकार का आनंद जो शारीरिक है और सभी जानवरों के साथ साझा किया जाता है, इसमें पेट (भोजन और खाने) और निजी अंगों का आनंद शामिल है। ये सुख सबसे व्यापक और आम हैं, भले ही वे सभी सुखों में सबसे कम और सस्ते हों। इसलिए, पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणी उन्हें मनुष्यों के साथ इस हद तक साझा करते हैं कि छोटे कीड़े भी उनमें आनंद पाते हैं। एक व्यक्ति जो इस [सबसे निचले रूप] आनंद से ऊपर उठता है, वर्चस्व और शक्ति (दूसरों पर शासन या अधिकार) के आनंद का शिकार हो जाता है। जो इस सुख से ऊपर उठता है, वह तीसरे (इस स्पष्टीकरण में पहला) आनंद में लिप्त हो जाता है जब तक कि ज्ञान और ज्ञान का आनंद एक में हावी न हो जाए, विशेष रूप से *ईश्वर के अस्तित्व (*धात*) और गुण (सिफत*) का ज्ञान (*मारिफा*) एक ऐसा आनंद देता है, कि वह इसे किसी अन्य चीज में नहीं पाता है। यह उन लोगों का पद है जिन्हें ईश्वर के निकट लाया गया है (*सिद्दिकीन* या ज्ञानवादी)।

हृदय के चार प्रकार: इस व्याख्या के प्रकाश में, हृदय चार प्रकार के होते हैं। एक प्रकार का हृदय विशेष रूप से परमेश्वर से प्रेम करता है और तब तक शांति नहीं पाता जब तक कि परमेश्वर की सूक्ति में वृद्धि जारी न रह जाए। दूसरा [प्रकार] हृदय यह भी नहीं जानता कि परमेश्वर के ज्ञान में मौजूद सुखों के प्रकार। यह केवल प्रसिद्धि, नियंत्रण (अधिकार और शक्ति), धन और सभी शारीरिक सुखों और प्रसन्नताओं में आनंद पाता है। तीसरा हृदय अधिकांश स्थितियों में ईश्वरीय स्मरण (धिक्र*),* चिंतन (फिक्र) और ज्ञानवाद

(*मारिफा*) के माध्यम से ईश्वर के साथ अंतरंगता पाता है, लेकिन कभी-कभी मानवीय गुणों का उस पर प्रभाव पड़ता है। चौथे हृदय में अक्सर मानवीय लक्षण हावी होते हैं लेकिन कभी-कभी यह ज्ञान और ज्ञान के फव्वारे से लाभान्वित होता है। उनमें से पहले प्रकार का हृदय संभव नहीं है। अगर हम मानते हैं कि यह संभव है, तो वे संख्या में इतने कम हैं कि गैर-मौजूद के करीब हैं। दुनिया दूसरे प्रकार के हृदय से परिपूर्ण है। तीसरे और चौथे प्रकार के दिल मौजूद हैं लेकिन कम संख्या में, इसके बजाय उन्हें दुर्लभ कहना अधिक उपयुक्त होगा। जिस समय भविष्यद्वक्ताओं के समय के करीब था, उस समय ऐसे दिलों की बहुतायत थी। जैसे-जैसे भविष्यद्वाणी का युग धीरे-धीरे दूर होता गया, इस प्रकार के हृदयों की संख्या भी कम होती गई और यह प्रक्रिया [घटती हुई लेकिन पूर्ण विलुप्त नहीं होने की] न्याय के दिन तक जारी रहेगी।

आशीर्वाद का छठा विभाजन: यह विभाजन सभी [प्रकार और विभाजन] आशीषों पर हावी है। इस विभाजन का सारांश यह है कि आशीर्वाद दो प्रकार के होते हैं - एक वह आशीर्वाद है जो अपने आप में किसी के उद्देश्य का शिखर है और वह है परलोक की शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता (*सादाह*) और इसमें चार मामले शामिल हैं: वह अस्तित्व और निर्वाह जो कभी भी विलुप्त होने का सामना नहीं करता है (*फना*)), वह सुख जिसके साथ कोई दुख नहीं मिलाया गया है, वह ज्ञान जो किसी भी अज्ञान के साथ नहीं है, और वह धन और ऐश्वर्य जिसमें कोई गरीबी नहीं है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

لَا عَيْشَ إِلَّا عَيْشُ الْآخِرَة

"परलोक के जीवन और आराम के अलावा कोई जीवन और आराम नहीं है [शाश्वत आनंद और अनन्त विजय की स्थिति में दिव्य उपस्थिति में]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* अनस के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* का संग्रह करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

उन्होंने खुशी के अवसर पर इसका उल्लेख किया ताकि निम्न स्व (*नफ्स*) सांसारिक सुख से संतुष्ट न हो और इस बात पर विचार करें (महसूस करें) कि इस जीवन के बाद भी एक ऐसा जीवन है जिसका कोई अंत नहीं है, केवल सुख ही होगा जो कभी भी दुख में नहीं बदलेगा।

मार्गदर्शन के चरण: मार्गदर्शन (सत्य और शाश्वत सत्यों की ओर) एक ऐसी वास्तविकता है जिसके बिना कोई भी व्यक्ति शाश्वत सुख और अनन्त सफलता (सादाह) की तलाश नहीं कर सकता है। [मार्गदर्शन सबसे बड़ी आशीर्वादों में से एक है जो कृतज्ञता के योग्य है। एक मनुष्य किसी ऐसी चीज के लिए इच्छुक हो सकता है जिसमें परलोक की खुशी निहित हो, लेकिन अगर कोई यह भी नहीं जानता है कि उसका उद्धार किस मामले में अंतर्निहित है, और [ऐसे मामलों जो उथल-पुथल का कारण बनते हैं] [उसके

आंतरिक अस्तित्व और बाहरी दुनिया दोनों में] को अपने [कार्य के] सुधार के रूप में सोचता है, तो वह केवल [अच्छा करने के लिए] इरादे से लाभान्वित नहीं होगा। यदि मार्गदर्शन अनुपस्थित है, तो इरादा, क्षमता और साधन [अच्छे काम करने के लिए जो एक के पास हैं] का कोई लाभ नहीं है [इसलिए, किसी को आनंद, मोक्ष, और शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के मार्ग की ओर सही दिशा में ले जाने और ले जाने के लिए मार्गदर्शन अनिवार्य है]। मार्गदर्शन के तीन चरण हैं। पहला चरण अच्छाई और बुराई की समझ है। परमेश्वर ने अपने सभी सेवकों को यह आशीर्वाद प्रदान किया है - कुछ को बुद्धि प्रदान करके [जो अच्छे और बुरे को समझने का साधन है, और यह क्षमता दुनिया भर के मनुष्यों को प्रदान की गई है] और कुछ को अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से उन्हें [दिव्य] संदेश भेजकर। स्वर्गीय पुस्तकें [उनके मूल शुद्ध रूपों में], महान भविष्यद्वक्ता [ईश्वर और उनकी शिक्षाओं के], और आंतरिक अंतर्दृष्टि और ज्ञान [जो चारों ओर मनुष्यों को ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया है], मार्गदर्शन के साधन हैं। इन साधनों से किसी को नहीं रोका जा सकता। केवल वे लोग जिनके हृदय अहंकार, ईर्ष्या और संसार के प्रेम से रहित हैं, इन साधनों की प्राप्ति पर कार्य करते हैं। जो लोग अहंकार, ईर्ष्या और दुनिया के प्रति प्रेम से भरे हुए हैं, या ऐसे साधनों में फंसे हुए हैं जो बुद्धि पर पर्दा डालते हैं, भले ही आंखें उज्ज्वल हों (देखने में सक्षम), उनके लिए कुरान ने कहा है:

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى ٱلْأَبْصَـٰرُ وَلَـٰكِن تَعْمَى ٱلْقُلُوبُ ٱلَّتِى فِى ٱلصُّدُورِ

"इस मामले की वास्तविकता यह है कि आंखें अंधी नहीं होती हैं [सच्चाई देखने के लिए], इसके बजाय, जो दिल उनके सीने में हैं वे अंधे हो जाते हैं [और तर्क और धारणा के अपने संकाय को खो देते हैं]। (कुरान, अध्याय 22, श्लोक 46)

बुद्धि और धारणा पर पर्दा डालने वाली चीजों में आदतें, किसी की परंपराओं के प्रति लगाव [और परवरिश], अपने पूर्वजों की [बौद्धिक और वैचारिक] विरासत को सुरक्षित रखने की इच्छा [या पकड़कर] शामिल हैं। कुरान ने इसे इन शब्दों में समझाया है:

إِنَّا وَجَدْنَآ ءَابَآءَنَا عَلَىٰٓ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰٓ ءَاثَـٰرِهِم مُّقْتَدُونَ

"[कुछ लोग कहते हैं कि] हमने अपने पूर्वजों को इस पद्धति (जीवन शैली या विचार प्रक्रिया) पर पाया है और [बस] उनका अनुसरण कर रहे हैं [इसके पीछे कोई तर्क नहीं है]। (कुरान, अध्याय 43, श्लोक 23)

अहंकार, ईर्ष्या, श्रेष्ठता जटिल ऐसे मामले हैं जो दिलों को अंधा कर देते हैं और उन्हें मार्गदर्शन के मार्ग पर चलने से रोकते हैं। मार्गदर्शन का दूसरा चरण पहले चरण के बाद आता है और आध्यात्मिक संघर्ष (मुजाहिद्दा) के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है। भगवान सभी परिस्थितियों में मार्गदर्शन के साथ (पुरस्कार) प्रदान करते हैं। परमेश्वर कहता है [बिना किसी अपवाद के पूरी मानवता के लिए वादे के माध्यम से]:

وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُوا۟ فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

"जो लोग हमारे मार्गों में [जोरदार प्रयास के साथ] प्रयास करते हैं, हम निश्चित रूप से उन्हें हमारे मार्गों (मार्गदर्शन के तरीकों) पर मार्गदर्शन करेंगे। (कुरान, अध्याय 29, श्लोक 69)

मार्गदर्शन का तीसरा चरण दूसरे चरण के बाद होता है। यह मार्गदर्शन एक ऐसा [आध्यात्मिक और आंतरिक] प्रकाश (रोशनी) है जो आध्यात्मिक प्रयास की पूर्णता के बाद, भविष्यद्वाणी के क्षेत्र में और [दिव्य] मार्गदर्शन के दायरे में चमकता है। इस प्रकाश (आंतरिक प्रकाश) के कारण, व्यक्ति को उन चीजों को पता चलता है जिन्हें बुद्धि के माध्यम से नहीं जाना जा सकता है, जिस पर ईश्वरीय नियम, आदेश और निषेध निर्भर हैं, और जिनके माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति संभव है। इस मार्गदर्शन को पूर्ण मार्गदर्शन कहा जाता है। इसके अलावा, अन्य सभी मार्गदर्शन इसकी प्रस्तावना (प्रारंभिक चरण) और घूंघट [वास्तविक मार्गदर्शन से] हैं। यह मार्गदर्शन ऐसा है कि परमेश्वर ने इसे विशेष रूप से स्वयं के लिए जिम्मेदार ठहराया है, क्योंकि सभी मार्गदर्शन का स्रोत परमेश्वर का अस्तित्व है। भगवान कहते हैं:

قُلْ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلْهُدَىٰ ۗ

"कहो (हे मुहम्मद!) ' इसमें कोई संदेह नहीं है कि मार्गदर्शन का मार्ग वह है जो ईश्वर की ओर से है। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 120)

इसे [परमेश्वर से मार्गदर्शन] "जीवन" कहा जाता है:

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَٰهُ وَجَعَلْنَا لَهُۥ نُورًا يَمْشِى بِهِۦ فِى ٱلنَّاسِ

"एक व्यक्ति जो पहले मर चुका था [हृदय और आत्मा की मृत्यु के कारण], फिर हम एक को वापस जीवन में लाए, फिर हमने एक ऐसा प्रकाश (आंतरिक आध्यात्मिक रोशनी) प्रदान किया कि कोई उस प्रकाश के साथ लोगों के बीच घूमता है। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 122)

निम्नलिखित पद उसी बात को संदर्भित करता है:

أَفَمَن شَرَحَ ٱللَّهُ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِۦ ۚ

"जिस व्यक्ति के हृदय को परमेश्वर ने अपनी इच्छा के प्रति समर्पण का मार्ग खोला है, वह अपने प्रभु के प्रकाश (आंतरिक रोशनी) पर है। (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 22)

आत्मा - एक बड़ा आशीर्वाद: विचार करें कि शारीरिक अंगों और अंगों, धारणा और शक्ति का लाभ एक सूक्ष्म वाष्प पर निर्भर करता है जिसका केंद्र (निवास) हृदय है, जिससे यह पूरे शरीर में विस्तारित नसों के माध्यम से घूमता है। जैसे ही यह शरीर के किसी अंग तक पहुंचता है, यह उसमें इंद्रिय, धारणा, गति और शक्ति पैदा करता है, ठीक उसी तरह जैसे एक [प्रकाश देने वाला] दीपक जो एक [अंधेरे] घर में घूमता है और जहां भी यह दीपक पहुंचता है, यह प्रकाश वहां पहुंच जाएगा। इसलिए, घर का कोई भी कोना जहां यह दीपक पहुंचता है, वहां प्रकाश पहुंचने का कारण होगा। यद्यपि यह प्रकाश ईश्वर की रचना और आविष्कार है, लेकिन उसने अपनी बुद्धि से दीपक को इसका कारण बनाया है। इस सूक्ष्म वाष्प को चिकित्सकों की शब्दावली में "आत्मा" कहा जाता है। इसका निवास स्थान हृदय है। हृदय के साथ इसका दृष्टांत ऐसा है कि आत्मा दीपक की लौ के समान है, हृदय पात्र के समान है, हृदय में काला रक्त बाती के समान है, भोजन (भोजन) क्योंकि यह दीपक के लिए तेल के समान है, और जो जीवन इसके कारण पूरे शरीर में है, दीपक के कारण घर के अंदर की रोशनी की तरह है। यदि दीपक में तेल का सेवन किया जाता है, तो दीपक बुझ जाता है, इसी तरह, प्रावधान का सेवन बंद होने पर आत्मा का दीपक बुझ जाता है। इसके अलावा, जब कभी-कभी बाती जलकर राख हो जाती है और तेल को अवशोषित करने की क्षमता बरकरार नहीं रखती है, भले ही दीपक तेल से भरा हो, इसी तरह, हृदय में जो रक्त है वह हृदय की गर्मी के कारण जल सकता है और प्रावधान के बावजूद, आत्मा का दीपक बुझ जाता है क्योंकि प्रावधान को स्वीकार करने की क्षमता अब नहीं है जो आत्मा के निरंतर अस्तित्व को सुनिश्चित करती है। इसके अलावा, जिस तरह तेल का सेवन करने या बाती जलने जैसे आंतरिक कारणों से कई बार दीपक बुझ जाता है, उसी तरह यह हवा जैसे बाहरी कारणों से भी बुझ जाता है। इसी तरह, आत्मा कभी किसी आंतरिक कारण से विलुप्त हो जाती है और कभी-कभी बाहरी जैसे हत्या जो इसे समाप्त कर देती है। चाहे दीपक में तेल के सेवन से बुझ जाए, या बाती के जलने के कारण, या किसी के उस पर फूंकने के कारण, या उसके हवा के रास्ते में आने के कारण, चाहे वह कैसे भी बुझ जाए, ये सभी मामले ईश्वर द्वारा निर्धारित ईश्वरीय आदेश से अस्तित्व में आते हैं। मानव आत्मा का भी यही हाल है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि यह कैसे विलुप्त हो जाता है, या यह कैसे बुझ जाता है, यह परमेश्वर के ज्ञान में और उसके शाश्वत आदेश के अनुसार है। संरक्षित टैबलेट (परमेश्वर की अभिलेखों की पुस्तक जिसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान शामिल है) में प्रत्येक आत्मा के लिए अंतिम नियत समय होता है। जब यह समय समाप्त हो जाएगा, तो शरीर के साथ आत्मा का संबंध समाप्त हो जाएगा और यह समाप्ति केवल तभी होगी जब भाग्य के लेखक (भगवान) ने लिखा (नियुक्त) किया है।

जिस प्रकार दीपक के बुझने से घर में अंधेरा छा जाता है, उसी प्रकार आत्मा के [शरीर से] बाहर निकलने से पूरे शरीर में अंधकार फैल जाता है और रोशनी की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है जो आत्मा से प्राप्त होती थी, दूसरे शब्दों में, अर्थ, धारणा, इरादे, और उन सभी मामलों की रोशनी जो "जीवन" शब्द से घिरे हैं। आत्मा भी एक रहस्य है और दिव्य आशीर्वाद के लिए एक अलग संकेत है और इस विषय वस्तु की सत्यता की एक [दिव्य] घोषणा है:

قُل لَّوْ كَانَ ٱلْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَٰتِ رَبِّى لَنَفِدَ ٱلْبَحْرُ قَبْلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَٰتُ رَبِّى وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِۦ مَدَدًا

"कहो (हे मुहम्मद!), 'अगर मेरे भगवान के शब्दों को लिखने के लिए समुद्र स्याही बन जाए, तो मेरे भगवान के शब्दों के समाप्त होने से पहले ही समुद्र समाप्त हो जाएगा, भले ही हम इसे पूरक के रूप में लाए। (कुरान, अध्याय 18, आयत 109)

एक व्यक्ति इन सभी मामलों को जानने के बावजूद, अभी भी ईश्वरीय आशीर्वाद को स्वीकार करने से इनकार करता है और उनके लिए कृतज्ञता नहीं रखता है, बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है, ईश्वरीय दया से दूर और ईश्वरीय दंड के करीब है।

लोगों में कृतज्ञता क्यों नहीं होती

जब एक बुद्धिमान मनुष्य की नज़र किसी भी चीज़ पर पड़ती है या किसी भी चीज़ का विचार हृदय में आता है, तो वह उसमें परमेश्वर के आशीषों की खोज करता है। यह ज्ञात होना चाहिए कि लोग अज्ञानता और लापरवाही (असावधानी) के कारण भगवान के प्रति कृतज्ञता नहीं रखते हैं, क्योंकि जिन लोगों के दिल और आंखें लापरवाही और अज्ञानता के मोटे पर्दे से ढकी हुई हैं, वे भगवान के किसी भी आशीर्वाद को वरदान नहीं मानते हैं। जब उन्हें आशीर्वाद भी नहीं पता है तो उनके लिए कृतज्ञता कैसे हो सकती है? यदि उन्हें किसी आशीर्वाद की समझ है, तो वे जिस कृतज्ञता के बारे में जानते हैं, वह केवल *अल-हम्दुलिल्लाह* (सभी स्तुति ईश्वर के लिए हो) या *अल-शुक्रल्लाह* (सभी धन्यवाद ईश्वर के लिए हों) को जीभ से कहना है और इसे पर्याप्त मानना है। वे नहीं जानते कि कृतज्ञता का अर्थ उस आशीष से संबंधित ज्ञान (उद्देश्य और इरादा) को पूरा करने में आशीर्वाद का उपयोग करना है और यह ज्ञान परमेश्वर की आज्ञाकारिता है। यदि लोगों के पास ये दो समझ हैं और फिर भी परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता नहीं है, तो इसका कारण शैतान और वासनाओं के प्रभुत्व के अलावा और कुछ नहीं है।

आशीर्वाद के साथ लापरवाही के कारण: आशीर्वाद के साथ लापरवाही के कई कारण होते हैं। उनमें से एक कारण यह है कि लोग अपनी अज्ञानता के कारण, आशीषों को नहीं मानते हैं, जो लोगों को आमतौर पर आशीर्वाद के रूप में मिलता है, इसीलिए, उनके पास उनके लिए कृतज्ञता नहीं है [क्योंकि उन्हें हर किसी के अपरिहार्य जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में लिया जाता है क्योंकि उन्हें आम तौर पर कुछ भी विशेष नहीं माना जाता है]। उनके लिए, आशीर्वाद विशेष होना चाहिए [या विशेष रूप से किसी को दिया जाना चाहिए और सभी या अधिकांश लोगों के लिए सामान्य नहीं होना चाहिए], दूसरे शब्दों में, अगर कुछ ऐसा है जो किसी के पास विशेष रूप से है [केवल] तो इसे एक आशीर्वाद कहा जा सकता है [लोगों की गलत धारणाओं में]। जहां तक भोजन और पेय या शारीरिक प्रणाली की उत्कृष्टता (विभिन्न शारीरिक अंगों

की क्षमताएं और उपयोगिताएं और वे हर व्यक्ति की मदद कैसे करते हैं, जिसके बिना जीवन बेहद कठिन हो सकता है) का संबंध है, हर बड़े, छोटे, अमीर, गरीब, प्रमुख, नीच (सामाजिक रूप से महत्वहीन) [व्यक्तियों] में वे समान हैं। इसीलिए, ये आशीषें [उनके गलत दृष्टिकोण में] कैसे हो सकती हैं? यही कारण है कि वे ताजी हवा को वरदान भी नहीं मानते, भले ही यह एक जबरदस्त वरदान है। यदि किसी का गला एक पल के लिए निचोड़ा जाता है जिससे ताजी हवा [शरीर में] का मार्ग बंद हो जाता है, तो ताजी हवा न मिलने से व्यक्ति मृत्यु को गले लगा सकता है। इसी तरह, अगर किसी को सार्वजनिक स्नान (हम्माम) में कैद किया जाता है या ऐसी जगह जहां केवल गर्म हवा गुजरती है या कोई गहरे कुएं में गिर जाता है जहां नमी के कारण हवा भारी होती है, तो दम घुटने से उसकी मौत हो सकती है। मान लीजिए कि यदि कोई गर्म सार्वजनिक स्नान या गहरे कुएं के जाल में फंसने में सक्षम है और आप ऐसे व्यक्ति से ताजी हवा के मूल्य और अनमोलता के बारे में पूछते हैं, तो वह इसे एक [महान] आशीर्वाद मानेगा और इसके लिए आभार व्यक्त करेगा। यह अत्यधिक अज्ञानता है कि लोग आशीर्वाद को तभी आशीर्वाद मानते हैं जब वह उनसे छीन लिया जाता है। कभी-कभी वह आशीर्वाद फिर से एक को वापस कर दिया जाता है और कभी-कभी ऐसा नहीं होता है, किसी को भी सभी परिस्थितियों में कृतज्ञता होनी चाहिए [चाहे कमी हो या प्रचुरता, होना या न होना क्योंकि आज हमारे पास जो कुछ भी है, उसे कल दिया जा सकता है]।

तुमने ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा होगा जो किसी की आँखों के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है, भले ही यह एक महान आशीष है। लेकिन जब आंखों की रोशनी चली जाती है, अंधा हो जाता है तो इस आशीर्वाद को महत्व देता है। अगर सौभाग्य से किसी को दृष्टि वापस मिल जाती है, तो वह इसके लिए आभार व्यक्त करता है, लेकिन जब तक उसके पास देखने वाली आंखें नहीं हैं, तब तक वह इसे आशीर्वाद नहीं मानता क्योंकि आमतौर पर दुनिया में लोगों के पास आंखें होती हैं। कोई सोचता है कि जो कुछ इतना सामान्य है, वह आशीर्वाद कैसे हो सकता है? इसका दृष्टांत एक ढीठ दास का है जो शिष्टाचार से रहित है और गुस्ताखी के कारण हर समय पीटा जाता है। अगर कुछ समय के लिए पिटाई बंद हो जाती है, तो कोई इसे आशीर्वाद समझेगा और अगर यह पूरी तरह से बंद हो जाता है, तो वह अहंकारी हो जाएगा और कृतज्ञता छोड़ देगा। [यह दृष्टांत सभी पर लागू होता है क्योंकि हर कोई ईश्वर का दास है जिसे अपने स्वामी, परमेश्वर, श्रेष्ठ के प्रति शिष्टाचार और निष्ठा रखने की आवश्यकता होती है। लोगों की स्थिति ऐसी है कि वे केवल उस धन (या ख़ासियत पर) पर कृतज्ञता रखते हैं जो उन्हें अपने आस-पास के अन्य लोगों पर कुछ अंतर देता है, चाहे वह धन कम हो या कम। इसके अलावा, वे अन्य सभी आशीषों की उपेक्षा करते हैं [और उनके लिए कृतज्ञता नहीं रखते हैं]।

एक कंगाल की शिकायत की कहानी: एक गरीब आदमी ने दिल के एक आदमी (भगवान के ज्ञानवादी या अंतरंग) से उसकी गरीबी और एक बड़ा परिवार होने के बारे में शिकायत की [समर्थन करने के लिए और ऐसा करने के लिए पर्याप्त साधन नहीं है] और कहा, "मैं अपनी बुरी स्थिति के कारण बहुत चिंतित और परेशान हूं"। ज्ञानवादी ने उससे पूछा, "क्या आप दस हजार *दिरहम* (एक पुरानी सोने की मुद्रा और

यह राशि बहुत बड़ी है) ले सकते हैं और अंधे हो सकते हैं?" उसने कहा नहीं। ग्नोस्टिक ने फिर पूछा, "क्या आप दस हजार *दिरहम ले सकते हैं* और गूंगा बनने के लिए सहमत हो सकते हैं?" उसने कहा नहीं। नॉस्टिक ने पूछा, "क्या आप दस हजार *दिरहम लेना* और लंगड़ा बनना पसंद करते हैं?" उन्होंने फिर से इसे खारिज कर दिया। नॉस्टिक ने पूछा, "क्या आप दस हजार *दिरहम लेना चाहेंगे* और अपना हाथ खोना चाहेंगे?" उन्होंने इसे भी स्वीकार नहीं किया। नॉस्टिक ने पूछा, "क्या आप दस हजार दिरहम के लिए अपना दिमाग खोना चाहेंगे?" उसने कहा नहीं। तब ज्ञानवादी ने कहा, "आपके भगवान ने आपको पचास हजार *दिरहम* की संपत्ति दी है, इसके साथ भी आप अपनी गरीबी और कठिन परिस्थितियों के बारे में रो रहे हैं!"

इब्न सामक (ईश्वर उस पर दया करे) एक *खलीफा* (राजनीतिक सत्ता) के पास गया, जो उस समय पानी का गिलास पकड़े हुए था। *खलीफा* ने उनसे सलाह मांगी। उसने कहा, "मान लीजिए कि तुम बहुत प्यासे हो और यह गिलास तुम्हारे पास से छीन लिया जाए और तुम्हें बताया जाए कि यह तुम्हें तब तक वापस नहीं दिया जाएगा जब तक तुम अपना सारा धन नहीं छोड़ देते [और तुम्हारे पास पानी पाने का कोई और तरीका नहीं है]। क्या आप एक गिलास पानी के लिए अपनी सारी संपत्ति छोड़ देंगे? उन्होंने उत्तर दिया, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि मैं सारी संपत्ति छोड़ दूंगा"। इब्ने सामक ने पूछा, "और यदि आपके लिए शर्त निर्धारित है कि आप अपना पूरा राज्य छोड़ दें?" *खलीफा* ने कहा, "उस अवस्था में, मैं अपना पूरा प्रभुत्व छोड़ने से नहीं हिचकूंगा"। उन्होंने कहा, "आपके प्रभुत्व की स्थिति ऐसी है कि इसे एक गिलास पानी के लिए छोड़ा जा सकता है, तो आपको इसके बारे में बहुत खुश नहीं होना चाहिए"। इससे स्पष्ट है कि प्यास के समय पानी का एक घूंट इतना बड़ा वरदान है कि उसकी प्राप्ति के लिए पूरे विश्व के प्रभुत्व को भी बलिदान किया जा सकता है।

परमेश् वर की विशेष आशीषें: चूँकि [इंसान] स्वभाव के लोग उन आशीषों को आशीषों के रूप में मानते हैं जो किसी के लिए विशिष्ट और विशिष्ट हैं, इसलिए वे सामान्य आशीषों को आशीषों के रूप में नहीं मानते हैं। इसीलिए, हम इनमें से कुछ आशीर्वादों की ओर इशारा करते हैं जो कुछ मामलों में आपके लिए विशिष्ट हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिसके पास इनमें से कुछ आशीषें न हों, जो एक के लिए विशिष्ट हैं और सभी लोगों में नहीं पाए जाते हैं, केवल एक के पास वे हैं या बहुत कम लोगों का उनमें हिस्सा है। इसलिए, तीन ऐसे मामले हैं जिनमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी विशिष्टता और विशिष्टता के प्रति आश्वस्त होता है और उसके लिए स्वयं की प्रशंसा करता है। वे बुद्धि, आंतरिक गुण (चरित्र लक्षण, व्यवहार, आंतरिक स्वभाव, आदि) और ज्ञान हैं।

जहां तक बुद्धि का सवाल है, हर व्यक्ति ईश्वर से संतुष्ट है कि उसने उसे दुनिया का एक अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति बनाया है और उसके साथ पैदा हुआ है। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो ईश्वर से बुद्धि मांगते हैं

अन्यथा आम तौर पर लोग अपने पास मौजूद बुद्धि से संतुष्ट प्रतीत होते हैं। यह बुद्धि की विशेषता है कि जो इससे रहित है वह उससे संतुष्ट दिखता है और जिसके अंदर यह निहित है वह भी सुखी रहता है। फिर भी, यदि कोई व्यक्ति सोचता है कि वह सभी लोगों में सबसे बुद्धिमान है और यदि यह भी एक वास्तविकता है, तो उसे परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए जिसने उसे यह सबसे बड़ा आशीर्वाद प्रदान किया है, और यदि कोई वास्तव में नहीं है, तो दुनिया का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति है, फिर भी, कृतज्ञता उस व्यक्ति के लिए अनिवार्य है कि यह आशीर्वाद एक में मौजूद है।

चरित्र लक्षणों की स्थिति ऐसी है कि आसपास कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो दूसरों के दोषों पर नजर नहीं रखता है और उन पर अपनी नापसंदगी (घृणा) व्यक्त नहीं करता है, हालांकि एक में वही दोष मौजूद हो सकते हैं। लेकिन एक दूसरे के दोषों की निंदा करता है क्योंकि कोई खुद को उनसे मुक्त मानता है। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में उस दोष से रहित है जिसमें अन्य लोग शामिल हैं, तो उसे उसके लिए परमेश्वर का आभार व्यक्त करना चाहिए [इसमें खुशी मनाने और घमंडी और अहंकारी बनने के बजाय] कि उसने एक को उस बुराई से बचाया है जबकि अन्य लोग इसमें शामिल हैं।

जहां तक ज्ञान का संबंध है, प्रत्येक व्यक्ति अपनी गुप्त अवस्थाओं [जो दूसरों से छिपी हुई है] और हृदय में छिपे विचारों से परिचित है [कि दूसरों से छिपाना बेहतर है]। वे अवस्थाएँ और विचार ऐसे हैं कि यदि वे लोगों के सामने प्रकट हो जाएँगे, तो किसी की सारी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाएगी। इसी तरह, हर व्यक्ति कुछ मामलों के बारे में जानकार होता है जो खुद के अलावा कोई और नहीं जानता। इस स्थिति में, हर किसी को परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने किसी के दोषों को ढक दिया और [इसके बजाय,] किसी के अच्छे गुणों को प्रमुख बनाया [और सार्वजनिक रूप से दृश्यमान]। ये तीन मामले हैं जिनमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी विशिष्टता और विशिष्टता का पता लगाता है और उसे स्वीकार करता है।

विश्वास और निश्चितता ही वास्तविक धन है: जिसे ईश्वर ने गहरी आंतरिक अंतर्दृष्टि (*बसीराह) प्रदान की है, उसे केवल ज्ञानी (*मारिफा*), निश्चितता (*याकीन*) [ईश्वर और शाश्वत सत्यों में], और विश्वास (*ईमान) की *संपत्ति से खुश होना चाहिए*। बल्कि, हम ऐसे विद्वानों को जानते हैं जिन्हें यदि पश्चिम से पूर्व तक शासकों के नियंत्रण में रहने वाले सभी धन, सहायक और अनुयायी दिए जाते हैं, और उन्हें अपने ज्ञान के बदले में उन्हें स्वीकार करने के लिए कहा जाता है, और यदि वे अपना सारा ज्ञान नहीं छोड़ना चाहते हैं तो बस उसका एक छोटा सा अंश छोड़ दें, वे इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे जानते हैं कि ज्ञान की आशीष ही परलोक में परमेश्वर की निकटता और निकटता लाती है। इसके बजाय, यदि उनसे कहा जाता है, "परलोक में आप जिस पूर्णता की अपेक्षा कर रहे हैं, वह फिर भी आपके द्वारा प्राप्त की जाएगी और उसमें कोई कमी की उम्मीद नहीं है, लेकिन हम जो चाहते हैं वह यह है कि ज्ञान में लिप्तता के परिणामस्वरूप आपको जो आनंद मिलता है, वह हमें दे दें और उनके स्थान पर सांसारिक

सुख लें"। वे इस तरह के आदान-प्रदान के लिए सहमत नहीं होंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे जानते हैं कि ज्ञान का सुख शाश्वत है जो कभी समाप्त नहीं होगा, हमेशा के लिए रहेगा, चोरी नहीं किया जा सकता है, छीना नहीं जा सकता है, कम नहीं किया जा सकता है, एक स्वच्छ और शुद्ध आनंद है जिसमें गंदगी नहीं है, जबकि सांसारिक सुखों और सुखों में कमियां हैं। उनके पास मैलापन और चिंताएं हैं, उनका डर उनमें मिलने वाली संतुष्टि से अधिक है, उनका दुख उनके आनंद से अधिक है, उनका दुख उनके आराम से अधिक है। यह [सांसारिक] आनंद वैसा ही बना हुआ है जैसा हमने इसका वर्णन किया है और भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा।

सांसारिक सुखों और सुखों का सृजन केवल इसलिए किया गया है ताकि दोषपूर्ण बुद्धि के मालिक उनके जाल में फंस जाएं और उनके धोखे में लिप्त हो जाएं, और जब वे अपने धोखे में फंस जाते हैं, तो ये आनंद और सुख उनसे दूर हो जाते हैं और उनके करीब होने से इनकार कर देते हैं। ये सभी चिंताएं और कठिनाइयाँ हमला करती हैं, क्योंकि व्यक्ति दृष्टि के धोखे से मूर्ख बन जाता है। यदि किसी ने बुद्धि का उपयोग किया होता, टकटकी को नीचे कर दिया होता [दुनिया की धूमधाम और चमक जैसी अनावश्यक चीजों को न देखने के लिए], और [अनावश्यक चीजों को] नीच के रूप में देखने के आनंद को माना होता, तो वह जीवन भर सुरक्षित रहता। यह कहना भी बिल्कुल भी सही नहीं है कि जो लोग संसार (सांसारिक सुख, आनंद और भोग जो किसी के पूरे आंतरिक अस्तित्व को नष्ट कर देते हैं और भस्म कर देते हैं) से बचते हैं, वे धैर्य के दर्द से घिरे होते हैं [सांसारिक सुखों से दूर रहने के लिए] क्योंकि वास्तव में, जो लोग संसार (सांसारिकता) की ओर झुकाव रखते हैं, वे अत्यधिक पीड़ा (मानसिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पीड़ा)। कभी-कभी वे दुनिया (सांसारिक सुख, आनंद और सुख) चाहते हैं लेकिन यह उनसे बहुत दूर भागता है। कभी-कभी, अत्यधिक संघर्ष और परिश्रम के बाद, वे दुनिया (सांसारिक सुख, आनंद, सुख और भौतिक सफलता) प्राप्त करते हैं लेकिन इसकी रक्षा के बारे में चिंतित रहते हैं। हम स्वीकार करते हैं कि [यह कहना उचित है कि] जो लोग दुनिया से बचते हैं, उन्हें इस कठिनाई के बाद धैर्य की कठिनाई सहनी पड़ती है, लेकिन आप उस आराम को क्यों भूल जाते हैं जो कोई प्राप्त करने जा रहा है? जो लोग सांसारिक सुखों के पीछे भागते हैं, वे यहां [दुनिया में] पीड़ित हैं और परलोक के दुख भी उनका इंतजार कर रहे हैं। उन्हें अपने निचले स्व (नफ्स) पर निम्नलिखित श्लोक का पाठ करना चाहिए:

وَلَا تَهِنُوا۟ فِى ٱبْتِغَآءِ ٱلْقَوْمِ ۖ إِن تَكُونُوا۟ تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۖ

وَتَرْجُونَ مِنَ ٱللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ

उन्होंने कहा, "और विरोधी राष्ट्र (समूह) के पीछे जाने में हिम्मत मत हारो, ताकि आप पर उनके हमलों को रोका जा सके। यदि आप [दर्द से] पीड़ित हैं तो वे भी पीड़ित हैं क्योंकि आप पीड़ित हैं। और तुम परमेश्वर से ऐसी बातों की आशा करते हो जिनकी वे आशा नहीं करते। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 104)

लापरवाह और लापरवाह हृदय का इलाज: इस विवरण से यह स्पष्ट है कि कृतज्ञता का मार्ग लोगों तक सीमित हो गया है क्योंकि वे बाहरी और आंतरिक, और सामान्य और विशेष आशीर्वादों से अपरिचित हैं। यहां सवाल उठता है कि इस लापरवाही और लापरवाही का इलाज क्या है? कोई न कोई इलाज होना चाहिए जिसे निर्धारित किया जा सकता है और इस माध्यम से, लापरवाह दिलों की लापरवाही को दूर किया जा सकता है ताकि लोग परमेश्वर के आशीषों को महसूस करना शुरू कर सकें। यह संभव है कि इस बोध के बाद, उनके पास [दिव्य] कृतज्ञता होना शुरू हो जाए।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि जो हृदय आंतरिक अंतर्दृष्टि (बसीराह) से वंचित नहीं हैं, उनका इलाज यह है कि वे [विभिन्न] प्रकार के सामान्य आशीर्वादों पर विचार करते हैं जिनका हमने पिछले पृष्ठों में उल्लेख किया है। सुस्त हृदयों के मालिक किसी आशीष को तब तक आशीष के रूप में नहीं मानते जब तक कि यह उनके लिए विशिष्ट न हो या इसे उनसे छीन लिया न जाए और बाद में उन्हें वापस बहाल कर दिया जाए।

ऐसे दिलों का इलाज यह है कि वे हमेशा उन लोगों को देखते हैं जो उनसे कम हैं [सांसारिक पदों और भौतिक संपत्ति में] और *सूफियों* (आंतरिक पूर्णता के लिए और अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ईश्वरीय मार्ग में आध्यात्मिक यात्री और पथप्रवासी) के नक्शेकदम पर चलते हैं, जिनकी दैनिक दिनचर्या अस्पतालों का दौरा करना था, कब्रिस्तान और जेलें। वे अस्पतालों में मरीजों को ठीक होते हुए देखने के लिए जाते थे और उनकी बीमारियों के बारे में पता करते थे और यह देखने के लिए कि क्या उनमें भी वही बीमारियां हैं [अपने दिलों को सांत्वना देने और उनके लिए प्रार्थना करने के अलावा]। उन्हें अपने आप में न पाने के मामले में, वे उन्हें सुरक्षा और स्वास्थ्य प्रदान करने के लिए भगवान का आभार व्यक्त करते थे। वे कैदियों की स्थिति और दंडों को देखने के लिए जेलों का दौरा करते थे ताकि उन्हें पापों से बचाने के लिए परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त किया जा सके, अन्यथा वे जेल में कैदियों के स्थान पर हो सकते थे। वे कब्रिस्तानों (कब्रिस्तानों) का दौरा करते थे ताकि वहां की कब्रों को देखकर वे उन कब्रों के निवासियों की कल्पना करें जिनकी सबसे प्यारी इच्छा किसी तरह दुनिया में लौटने की है, भले ही वह एक दिन के लिए ही क्यों न हो। जिन लोगों ने पाप किया [और अब दुनिया में नहीं हैं] वे [दुनिया में] लौटना चाहते हैं ताकि उनके द्वारा [पृथ्वी पर] अपने जीवन के दौरान किए गए पापों का प्रायश्चित किया जा सके। जो लोग आज्ञाकारी थे [परमेश्वर के सेवक जो अब दुनिया में नहीं हैं] [दुनिया में] लौटना चाहते हैं क्योंकि वे अपने धर्मी कर्मों में वृद्धि चाहते हैं क्योंकि न्याय का दिन नुकसान का दिन है - आज्ञाकारी को अपने नुकसान का एहसास होगा जब वे देखेंगे कि वे उस दिन जो कुछ हासिल करने में सक्षम थे और अपने साथ लाए थे, उससे कहीं अधिक करने में सक्षम थे। हाय! उन्होंने अपना कीमती समय बर्बाद किया और हजारों कीमती क्षणों को केवल अनुमेय चीजों में बिताया [अपने प्रभु को प्रसन्न करने के लिए धार्मिकता के कार्यों में उत्कृष्टता प्राप्त करने और उससे अपनी निकटता और ज्ञान में वृद्धि करने के बजाय]। पापी का नुकसान [न्याय के दिन] स्वतः स्पष्ट है।

जब कोई कब्रिस्तान में जाता है और मृतक की कब्रों का दौरा करता है [उन्हें सम्मान देने के लिए, और उनके भगवान से उनकी क्षमा के लिए प्रार्थना करने के लिए, और मृत्यु के बाद उनके जीवन में आसानी के लिए], तो किसी को यह ध्यान में रखना चाहिए कि उन कब्रों में सभी लोग, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, वे सभी अपने गलत कर्मों के लिए प्रायश्चित करने या अपने अच्छे कर्मों को बढ़ाने के लिए दुनिया में लौटने के इच्छुक हैं। किसी को यह सोचना चाहिए, "मैं भाग्यशाली हूँ कि परमेश्वर ने मुझे अपने पिछले गलत कामों का प्रायश्चित करने और उसके प्रति आज्ञाकारिता के अपने कार्यों को बढ़ाने का अवसर देना जारी रखा है। मुझे अपने जीवन के शेष दिन परमेश्वर की आज्ञाकारिता में बिताना चाहिए। मेरी एक-एक सांस भगवान का आशीर्वाद है। मुझे इस आशीर्वाद की सराहना करनी चाहिए [और इस आशीर्वाद का उपयोग उन कार्यों में करके करना चाहिए जो मेरे भगवान को प्रसन्न करते हैं जो मुझे दिव्य ज्ञान के माध्यम से अनन्त खुशी और अनन्त सफलता के रूप में अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद करते हैं और इस सांसारिक जीवन में उनके करीब आते हैं]"। मनुष्य को आशीर्वाद के लिए कृतज्ञता केवल समझने के बाद ही होती है। इसलिए, यदि कोई [वास्तव में] जीवन को एक आशीष के रूप में समझता है, तो निश्चित रूप से वह अपने जीवन के सभी शेष दिनों को उन कार्यों में व्यतीत करेगा जिनके लिए उसे सृजित किया गया है। जीवन, वास्तव में, परलोक के लिए निर्भरता या प्रावधान (ज़ाद) प्राप्त करने के लिए बनाया गया है। यदि मनुष्य इस आशीष की सराहना करता है, तो वह कभी भी इसके उद्देश्य के प्रति लापरवाह नहीं होगा [और उसके पास धार्मिकता के अलावा कुछ भी नहीं होगा]।

सांसारिक कठिनाइयों के पांच पहलू: दुनिया में जो भी कठिनाइयाँ और आपदाएँ हैं जैसे कि गरीबी, बीमारी और भय, उनमें पांच पहलू हैं जिनके लिए एक बुद्धिमान व्यक्ति को खुश होना चाहिए और उनके लिए कृतज्ञता रखनी चाहिए। इन पाँच पहलुओं में से एक यह है कि इस समय किसी पर जो कठिनाई या बीमारी आई है, वह कहीं अधिक गंभीर आपदा या घातक बीमारी [उससे अधिक] संभव है क्योंकि कोई भी ईश्वरीय द्वारा निर्धारित नियति में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। मान लीजिए कि वह किसी आपदा की तीव्रता को दोगुना कर देता है या किसी बीमारी की गंभीरता को बढ़ा देता है, तो इसके बारे में कौन कुछ कर सकता है? कोई भी परमेश्वर को ऐसा करने से नहीं रोक सकता है या उसके मार्ग में बाधाएँ पैदा नहीं कर सकता है। इसलिए, यह सोचकर कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए कि ईश्वरीय कृपा और दया से उन्होंने कोई बड़ी आपदा नहीं भेजी है।

दूसरा पहलू यह है कि, यह कठिनाई या आपदा सांसारिक मामलों में उतरी। यह भी संभव था कि आपके विश्वास में कोई आपदा आ गई हो, जिससे उसमें भारी क्षति हुई हो। इसलिए, जब एक व्यक्ति ने सहल बिन अब्दुल्लाह अल-तुस्तरी (भगवान उस पर दया करे) से कहा कि चोर उसके घर में घुस गए हैं और उसकी संपत्ति लूटकर भाग गए हैं, तो सहल ने कहा, "भगवान का आभार व्यक्त करो! यदि चोर के स्थान पर शैतान प्रवेश कर गया होता, और तुम्हारे घर के बजाय तुम्हारे हृदय में प्रवेश कर गया होता और परमेश्वर और उसकी एकता (तौहीद) में तुम्हारे विश्वास को नष्ट कर दिया होता, तो तुम क्या करते?"

इसीलिए, यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हो) इन शब्दों में ईश्वरीय सुरक्षा की तलाश करते थे, "हे परमेश्वर! मेरे विश्वास से संबंधित विपत्ति से [मुझे] पीड़ित न करो"। उमर बिन खत्ताब (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "मुझ पर कोई कठिनाई नहीं आती है जिसमें चार दिव्य आशीर्वाद न हों: पहला, यह ईश्वर (दीन) के लिए मेरे मार्ग में नहीं हुआ; दूसरा, यह राशि में जो है उससे अधिक नहीं है; तीसरा, मुझे इसे [परमेश्वर के आदेश के रूप में] स्वीकार करने से वंचित नहीं किया जा रहा है; चौथा, मुझे इसके लिए ईश्वर से प्रतिफल की उम्मीद है [इसे धैर्य के साथ सहन करने के लिए]"।

कठिनाइयों पर कृतज्ञता का तीसरा पहलू या कारण यह है कि हर पाप के लिए दंड को परलोक तक विलंबित किया जा सकता है और यह परमेश्वर की कृपा है कि उसने उस पाप की भरपाई के लिए दुनिया में एक कठिनाई भेजी। तब सांसारिक कठिनाइयाँ कभी-कभी छोटी और हल्की रहती हैं, लेकिन परलोक की सजा शाश्वत होती है, लेकिन यदि शाश्वत नहीं है, तो उसमें कोई कमी नहीं है। दुनिया में, अभी भी संतुष्टि के कुछ साधन हैं [जब लोग कठिनाइयों को सहन कर रहे हैं] लेकिन परलोक में, अपने सांसारिक गलत कामों के लिए दंड का सामना करने वाले लोगों के लिए संतुष्टि के सभी साधन अलग हो गए हैं, इसीलिए, वहां [ईश्वरीय प्रतिशोध में] कमी नहीं होगी। भविष्यद्वाणी के कथनों में यह भी सिद्ध होता है कि जो व्यक्ति दुनिया में [अपने पापों के लिए] सजा सहता है, उसे परलोक में दंडित नहीं किया जाएगा। कठिनाइयों पर कृतज्ञता का चौथा पहलू या कारण यह है कि किसी को यह सोचना चाहिए, "मुझ पर जो कठिनाई आई थी, वह संरक्षित पट्टिका (ईश्वरीय आदेश द्वारा नियुक्त) में लिखी गई थी, यह आने के लिए बाध्य थी, इसलिए यह आ गया है। यह संभव था कि यह आपदा जो आई है उससे भी बड़ी होती। इसलिए, जो नहीं हुआ है वह मेरे लिए एक आशीर्वाद है और मुझे इसके लिए भगवान का आभार मानना चाहिए। पांचवां पहलू या कारण [कठिनाई पर कृतज्ञता के लिए] यह है कि कठिनाई के लिए ईश्वरीय प्रतिफल कठिनाई से भी अधिक है।

संसार की आपदाएँ और कठिनाइयाँ [सफलता के साधन या] परलोक के मार्ग हैं: संसार की कठिनाइयाँ दो कारणों से [सफलता के साधन या] परलोक के मार्ग हैं। पहला कारण यह है कि जिस आधार पर मरीज को कड़वी दवा दी जाती है और बच्चों को खेलने से रोका जाता है, वह यह है कि कड़वी दवा रोगी के लिए एक वरदान है क्योंकि इस कठिनाई के बाद व्यक्ति को आराम मिल सकता है। इसी तरह, बच्चों को [हर समय] खेलने से रोकना बच्चे के लिए एक आशीर्वाद है क्योंकि अगर किसी को [दिल की इच्छा के अनुसार] खेलने की पूरी स्वतंत्रता दी जाती है, तो वह ज्ञान और शिष्टाचार प्राप्त करने से वंचित हो जाएगा और जीवन भर नुकसान में रहेगा। धन, संपत्ति, परिवार और रिश्तेदारों, मित्रों, अंगों आदि की स्थिति भी यही है। ये सब चीजें इंसान को प्रिय होती हैं। कभी-कभी इनकी वजह से नष्ट हो जाता है, हालांकि बुद्धि एक अत्यंत कीमती और उत्कृष्ट चीज है लेकिन इसके कारण भी विनाश से गुजरना पड़ता है। न्याय के दिन, वे पागल या बच्चे बनना चाहते थे ताकि वे अपनी बुद्धि से परमेश्वर के मार्ग में मिलावट न करें। यह आवश्यक नहीं है कि इन साधनों में केवल बुराई का पहलू हो। उनमें मनुष्य के लिए बेहतरी हो

सकती है, विशेष रूप से दिव्य मार्ग (दीन) के संबंध में। यदि कोई यह मानता है कि ये मामले [धन, संपत्ति, परिवार और रिश्तेदार, मित्र, अंग, आदि] ईश्वर के लिए मेरे मार्ग में बेहतरी के कारण हैं, तो भी उसे ईश्वर के प्रति कृतज्ञता रखनी चाहिए, क्योंकि ईश्वर की बुद्धि बहुत अधिक है और वह इस बात से अच्छी तरह वाकिफ है कि उनके सेवकों के लिए उनसे बेहतर क्या है। न्याय के दिन, जब [परमेश्वर के] सेवक देखेंगे कि उन्हें दुनिया में सहन की गई कठिनाइयों और विपत्तियों के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है, तो वे तब परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता करेंगे। परमेश्वर द्वारा भेजी गई कठिनाइयाँ और आपदाएँ किसी को उचित शिष्टाचार [जीवन और परमेश्वर के मार्ग] सिखाने के तरीके हैं। अपने सेवकों के प्रति परमेश्वर की उदारता और दयालुता माता-पिता की दयालुता और उनके बच्चों पर दया से कहीं अधिक अधिक है, और कहीं अधिक पूर्ण और अधिक स्थायी है।

दूसरा कारण [क्यों दुनिया की कठिनाइयाँ परलोक के मार्ग हैं] यह है कि [मनुष्यों की] घातक गलतियों में सबसे ऊपर दुनिया का प्रेम (सांसारिकता या सांसारिक लगाव और उलझन) है, और उद्धार के कारणों में सबसे ऊपर हृदय को दुनिया के प्रेम से दूर रखना है। यदि सांसारिक आशीषों को बिना खोजे प्राप्त कर लिया गया होता और उन्हें प्राप्त करने के रास्ते में कोई कठिनाई नहीं आती तो हृदय का झुकाव संसार की ओर होता, और सांसारिक साधनों से इस हद तक जुड़ गया होता कि संसार उनके लिए स्वर्ग की तरह बन गया होता। जब मृत्यु और [दुनिया से] अलगाव के क्षण करीब आ गए होंगे, तो दिल इससे अलग नहीं हुआ होगा। हालांकि, अगर समय-समय पर कठिनाइयां आती रहती हैं और चिंताओं से लगातार निपटा जाता है, तो दिल दुनिया से ऊब जाता है और उससे जुड़ता नहीं है। इसके बजाय, अथक कठिनाइयों के कारण व्यक्ति दुनिया को एक जेल के रूप में मानता है और इस दुनिया को छोड़ना [मृत्यु के समय] जेल से रिहा होने जैसा हो जाता है [और उसमें मुक्ति पाना]। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा है:

اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ

"दुनिया आस्तिक के लिए एक जेल है और अविश्वासियों के लिए स्वर्ग है"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

एक व्यक्ति को अविश्वासी कहा जाता है जब कोई ईश्वर से बचता है और केवल दुनिया की तलाश करता है, इसे प्राप्त करने के लिए संतुष्ट होता है, और इसके सुखों को पाकर खुश होता है। आस्तिक वह है जिसका दिल दुनिया से अलग हो गया है और इस जेल से मुक्ति पाने के प्रयास में व्यस्त है। अविश्वास (*कुफ़्र*) स्पष्ट और गुप्त दोनों है। जिस हद तक दुनिया का प्यार दिल में रहता है, उस हद तक भगवान (*शिर्क*) के साथ सहयोगियों का वर्णन गुप्त (छिपा हुआ) [दिल की गहराई में] रहता है। पूर्ण एकेश्वरवादी वह है जो पूर्ण एक (ईश्वर) को अपना प्रिय बनाता है।

ये ऐसे कारण हैं जिनकी वजह से कष्टों के लिए सुख मिलना चाहिए। कठिनाइयों के लिए पछतावा होना एक स्वाभाविक बात है। इसका दृष्टांत इंजेक्शन की आवश्यकता का है। यदि कोई [जो इसे देने के लिए योग्य है] इसे मुफ्त में करता है या किसी रोगी को कड़वी दवा लेने की आवश्यकता होती है, तो जाहिर है, इंजेक्शन लेने और कड़वी दवा लेने में दर्द होता है। इसके बावजूद, इंजेक्शन लगाने वाले व्यक्ति और चिकित्सक को धन्यवाद दिया जाता है। इसका कारण यह है कि इस कठिनाई के साथ-साथ सुख भी होता है, दूसरे शब्दों में कहें तो व्यक्ति को अपनी बीमारी से छुटकारा मिलता है। इसीलिए, इंजेक्शन और कड़वी दवा लेने के बाद, जहां दर्द होता है, उसे भी खुशी होती है। दुनिया की कठिनाइयों को ऐसा ही माना जाना चाहिए। वे शरीर पर कड़वी दवाओं और सर्जरी से मिलते जुलते हैं। इनके कारण अस्थायी दर्द होता है लेकिन अंतिम अंत में व्यक्ति को राहत और आराम मिलता है।

धैर्य और कृतज्ञता की डिग्री: धैर्य की बहुत सारी डिग्री होती है। उच्चतम डिग्री कठिनाई को बुरा मानना है, और इसके बारे में शिकायत न करें। सभी उच्च और निम्न डिग्री को शामिल करने वाले धैर्य की सभी डिग्री के बाद, ईश्वरीय इच्छा (रिदा) की स्वीकृति की डिग्री है, उसके बाद यह कठिनाइयों पर भगवान के प्रति कृतज्ञता रखने की डिग्री है। इसका कारण यह है कि धैर्य में दर्द की भावना होती है, दैवीय इच्छा (रिदा) को स्वीकार करने में न तो दर्द हो सकता है और न ही कोई सुख हो सकता है, जबकि कृतज्ञता खुशी से रहित नहीं हो सकती है। जिस तरह धैर्य की असंख्य डिग्री होती है, उसी तरह कृतज्ञता की भी असंख्य डिग्री होती है। हमने केवल इसकी उच्चतम डिग्री का उल्लेख किया है। धैर्य के कई स्तर हैं। इसी तरह, कृतज्ञता में भी कई डिग्री होती हैं। हमने [केवल] इसकी उच्चतम डिग्री की व्याख्या की है। इस वास्तविकता का पता लगाने के लिए है कि सभी आशीषें बिना किसी उचित अधिकार के ईश्वर से प्राप्त की जाती हैं, यह जानने के लिए कि ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त करना भी एक आशीर्वाद है, विनम्र बने रहना, ये सभी मामले कृतज्ञता हैं और डिग्री के मामले में वे एक-दूसरे से भिन्न हैं। इसी तरह, कम चीजों पर आपत्ति करना, दाता के साथ सुंदर शिष्टाचार के साथ व्यवहार करना, सभी आशीर्वादों को अच्छी तरह से स्वीकार करना, छोटे आशीर्वाद को बड़ा मानना, आदि सभी कृतज्ञता हैं। संक्षेप में, सभी कार्य (कर्म) और आध्यात्मिक अवस्थाएं धैर्य और कृतज्ञता में शामिल हैं और वे असंख्य हैं और डिग्री में एक दूसरे से भिन्न हैं।

अध्याय 13- सभी गलतियों के खिलाफ एक दृढ़ संयम के रूप में ईश्वर का भय मानना, कोई भी सकारात्मकता और आशावाद के साधन के रूप में ईश्वर में आशा रखने में सक्षम है और आशा रखता है

मानवीय कार्यों पर लगाम लगाने की आवश्यकता है क्योंकि वे आसानी से नियंत्रण से बाहर हो सकते हैं जिससे व्यक्तियों, साथी मनुष्यों और दुनिया को बड़े पैमाने पर पीड़ा हो सकती है। अपने और दूसरों के खिलाफ जो गलतियाँ करने में सक्षम हैं, उनके लिए आंतरिक और बाहरी संयमों की आवश्यकता होती है। परमेश्वर से डरना, किसी के हृदय की गहराई में समाया हुआ, विचारों, वचनों और कर्मों में सभी प्रकार के गलत कामों और नकारात्मकताओं के खिलाफ एक जबरदस्त आंतरिक संयम है। यह जानना कि परमेश्वर हमारे अस्तित्व के हर तंतु के प्रति हमेशा चौकस रहता है, यहाँ तक कि हमारे अंतरतम विचारों और भावनाओं को भी जानता है, और यह कि परमेश्वर हमेशा हमारे गलत कार्यों को बाधित करने और हमसे निकलने वाली किसी भी नकारात्मक चीज़ के लिए हमें काम करने में सक्षम है, एक नैतिक संयम है जो हमें सभी नकारात्मकताओं से रोकता है - विचारों, शब्दों, भावनाओं, कर्मों में, और होने की स्थिति।

ईश्वर के भय की दर्पण छवि ईश्वर में आशा है। यह निराशा और दुःख की स्थितियों में अपार आंतरिक सहायता और शक्ति का स्रोत है। यह जानना कि परमेश्वर सब कुछ ठीक करने में सक्षम है, यहाँ तक कि निराशाजनक प्रतीत होने वाली स्थितियों में भी, अत्यधिक प्रोत्साहन और प्रेरणा का स्रोत है जो व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में सकारात्मक कार्यों की ओर प्रेरित करता है, और गलत सेट होने के बाद चीजों को ठीक करता है। डर और आशा को संतुलित करने की आवश्यकता है ताकि कोई व्यक्ति को नकारात्मकता से दूर रखे जबकि दूसरा व्यक्ति को सकारात्मकता की ओर ले जाए। ग़ज़ाली ने अपनी *महान कृति* "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे खंड या तिमाही में तीसरी पुस्तक में इस प्रमुख विषय का एक उत्कृष्ट उपचार प्रदान किया है जिसे संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है [19]:

यह ज्ञात हो कि भय [ईश्वर का] (*खवफ*) और आशा [ईश्वर में] (*रीजा*) दो ऐसे पंख हैं, जो उनकी मदद से ईश्वर के अंतरंग उड़ते हैं और उच्च [आध्यात्मिक] स्थानों पर चढ़ते हैं। ये दो ऐसी सवारी हैं जिन पर सवार होकर परलोक के खतरनाक रास्तों को पार किया जाता है। ईश्वर की अंतरंगता और स्वर्ग के निवास का गंतव्य बड़ी [आध्यात्मिक] दूरी पर स्थित है और रास्ते [उनकी ओर ले जाने वाले] खतरों से भरे हुए हैं, जिससे [आध्यात्मिक] यात्री जो इन रास्तों पर चलते हैं, उन्हें थक जाता है, [शारीरिक] अंगों और अंगों को कठिनाइयों में डाल देते हैं, इस गंतव्य तक पहुंचने के लिए [भगवान के साथ] आशा की सवारी अनिवार्य है और [अंतिम] स्टेशन [किसी की आध्यात्मिक यात्रा में निरंतर आध्यात्मिक प्रयासों के साथ चिह्नित किया जाता है]। इसी तरह, नरक की भयानक आग और दुखद दंड से बचाव [परलोक में अपने स्वयं के गलत कामों के लिए] [भगवान से] भय के बिना संभव नहीं है। इसलिए, दोनों की वास्तविकता, उनकी उत्कृष्टता, दोनों के बीच [स्पष्ट] विरोधाभास और उन्हें मिलाना समझाने के लिए आवश्यक है। इसलिए, इस पुस्तक को [भय और आशा पर] दो अध्यायों में विभाजित किया जा रहा है। सबसे पहले, हम [परमेश्वर के साथ] आशा की स्थिति की व्याख्या करेंगे और फिर दूसरे अध्याय में, हम [ईश्वर के] भय की स्थिति की व्याख्या करेंगे।

आशा की वास्तविकता, इसकी उत्कृष्टता, आशा के लिए दवा और इसे प्राप्त करने की विधि

आशा की वास्तविकता: यह ज्ञात हो कि आशा आध्यात्मिक यात्रियों और स्ट्राइवर्स (सालिकेन) के स्टेशनों के बीच से एक स्टेशन (मकाम) है, और [भगवान के] साधकों की अवस्थाओं के बीच से एक राज्य है। यदि किसी व्यक्ति का एक [आंतरिक] गुण रहता है और [किसी की आत्मा में] स्थापित हो जाता है तो इसे "स्टेशन" (मकाम) कहा जाता है और यदि गुणवत्ता अस्थायी है और जल्दी से नष्ट हो जाती है तो इसे "अवस्था" (हाल) कहा जाता है। हृदय के आंतरिक गुणों में यह विभाजन होता है [स्टेशनों और अवस्थाओं का जो आध्यात्मिकता की महत्वपूर्ण शब्दावली हैं]। राज्य को राज्य कहा जाता है क्योंकि यह जल्दी से बदलता है, और यह हृदय के सभी गुणों के साथ अनुभव किया जाता है। आशा [आंतरिक आध्यात्मिक] अवस्था, ज्ञान और कार्यों के माध्यम से पूरी होती है - ये तीनों - क्योंकि ज्ञान राज्य का कारण है और राज्य [सही आध्यात्मिक और शारीरिक] कार्यों का कारण है लेकिन कुल मिलाकर, आशा केवल एक राज्य का नाम है। इसका विवरण यह है कि जिस चीज को आप या तो नापसंद (अवांछनीय) या प्रिय (वांछनीय) के

रूप में पाते हैं, वह तीन अवस्थाओं से मुक्त नहीं है - यह या तो वर्तमान में मौजूद होगी, या अतीत में अस्तित्व में थी, या आप भविष्य में इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि आपके दिल में अतीत में हुए अस्तित्व के बारे में कोई विचार आता है, तो इसे स्मरण या उल्लेख कहा जाता है। यदि यह वर्तमान में मौजूद है, तो इसे धारणा कहा जाता है और यदि भविष्य में इसके अस्तित्व की उम्मीद की जाती है और यह आपके दिल पर हावी होती है, तो इसे अपेक्षा और प्रतीक्षा कहा जाता है। यदि जिस चीज की उम्मीद की जा रही है या जिसकी प्रतीक्षा की जा रही है [भविष्य में] अवांछनीय है और यह दिल में दर्द का कारण बनती है, तो इसे भय (खवफ) कहा जाता है और यदि यह वांछनीय है और आपको इसकी प्रतीक्षा में खुशी और खुशी मिलती है, तो इसे आशा (रीजा) कहा जाता *है*। इससे यह पता चला है कि आशा (रीजा) उस चीज का नाम है जो आपको खुश करती है [जबकि भविष्य में होने के लिए] इसकी प्रतीक्षा कर रही है और यह आपको प्रिय है। हालाँकि, यदि आप किसी ऐसी चीज़ का इंतजार कर रहे हैं जो आपको प्रिय है और आप उसे पाने के विचार से खुश महसूस करते हैं, तो निश्चित रूप से आपके पास ऐसे संसाधन होंगे कि उनके माध्यम से आप प्रिय तक पहुंच सकें। यदि ऐसा है, तो यह आशा (रिजा) है और यदि आपके पास [उस तक पहुंचने के लिए] साधन नहीं हैं और आप केवल प्रिय के साथ मिलने की उम्मीद कर रहे हैं [या आप जो चाहते हैं उसे ढूंढ रहे हैं] तो यह आत्म-धोखा और मूर्खता है। यदि साधनों का अस्तित्व या अस्तित्व ज्ञात नहीं है, तो इस तरह के इंतजार को इच्छा या व्यर्थ इच्छा (तमन्ना*) कहा जाता है* क्योंकि इसमें बिना कारण के प्रतीक्षा पाई जाती है।

आशा कहाँ लागू होती है? आशा और भय उन चीजों पर लागू होंगे जिनका अस्तित्व निश्चित नहीं है, इसके बजाय यह संदिग्ध है, और आशा उन चीजों पर लागू नहीं होती है जिनका अस्तित्व निश्चित है। उदाहरण के लिए, सूर्योदय के बारे में यह कहना सही नहीं होगा कि, "मैं सूर्योदय के लिए आशान्वित हूं", क्योंकि सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों का अस्तित्व निश्चित है, हालांकि, यह कहना सही है कि, "मुझे बारिश की उम्मीद है या [भविष्य में] सूखे के बारे में डर है"।

यह वास्तविकता हृदय के लोगों (प्रबुद्ध और प्रबुद्ध व्यक्तियों) के लिए प्रकट होती है [और स्पष्ट रूप से स्पष्ट है] कि दुनिया परलोक का खेत है और हृदय का दृष्टांत भूमि की तरह है, विश्वास बीजों की तरह है, ईश्वरीय आज्ञाकारिता भूमि को जोतने, उसे साफ करने की तरह है [खरपतवार की तरह अवांछित वृद्धि को हटाकर], जल चैनल खोदना और उनके साथ खेतों की सिंचाई करना; हृदय जो संसार में डूबा हुआ है और उसके सुखों में लिप्त है, वह एक बंजर भूमि की तरह है जो बीजों को धारण नहीं करता है [या उन्हें अंकुरित नहीं करता है], न्याय का दिन फसल काटने का दिन है क्योंकि तुम उस दिन वही फसल कालोगे जो सांसारिक जीवन में बोया गया है [या बोया गया है]। परलोक की [अच्छी] फसल [ईश्वर और शाश्वत सत्यों में] विश्वास के बीज के बिना संभव नहीं है, और विश्वास को हृदय की बुराई और बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, चरित्र लक्षणों और आंतरिक स्वभाव की उपस्थिति में बहुत कम लाभ होता है। जिस तरह बंजर भूमि में कोई बीज नहीं रहता (अंकुरित होता है), चाहे वह कितना भी पानी से सिंचित क्यों न हो, इसीलिए,

यदि किसी सेवक [ईश्वर का, यानी मनुष्य] को क्षमा की आशा है, तो उसे किसान की आशा पर अपनी आशा रखनी चाहिए। इसलिए, एक किसान जो खेती के लिए अच्छी (उपजाऊ) भूमि का चयन करता है, उसमें अच्छे बीज डालता है और सभी संभव साधनों का उपयोग करता है ताकि बीज पृथ्वी की सतह के नीचे से [स्वस्थ] पौधों [या फसलों] के रूप में ऊपर उठें, समय पर [खेत] को पोषित या सिंचित (सिंचित) प्राप्त करें, खरपतवारों को हटा दें और उन सभी बाधाओं को दूर करें जो पौधों के विकास को प्रभावित करती हैं या फसल को नुकसान पहुंचाती हैं, उसके बाद किसान को परमेश्वर से यह अपेक्षा होती है कि वह अपनी खेती को स्वर्गीय और सांसारिक आपदाओं से बचाएगा, तो ऐसी प्रतीक्षा और अपेक्षा को आशा कहा जाता है। यदि किसी ने ऐसी ऊंचाई पर स्थित कठोर और पथरीली भूमि में बीज बोए होते जहां उसे सिंचित करने का कोई साधन नहीं था, क्योंकि पानी वहां नहीं पहुंच सकता था, इसके अलावा कोई उसका पालन-पोषण नहीं करता था और इसके बजाय, फसल की कटाई की प्रतीक्षा करना शुरू कर देता था, तो यह [एक उचित] प्रतीक्षा नहीं है, इसके बजाय, यह गर्व और मूर्खता है और यह आशा नहीं है [क्योंकि कोई इसे सही ठहराने के लिए इसे पूरा करने के लिए सभी संभव साधनों का उपयोग करने में विफल रहा है आशा]। इसी तरह, यदि कोई अच्छी [उपजाऊ] भूमि में बीज बोता है, लेकिन बाद के सभी चरणों में [खेती के] लापरवाही बरतता है, उसे पानी नहीं देता है, इसके बजाय बारिश और अपेक्षित बारिश की प्रतीक्षा करता है, ऐसे मौसम की स्थिति या स्थानों पर जहां या तो बारिश नहीं होती है या बारिश होती है, लेकिन यह खेती की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है, फिर इस तरह के इंतजार को व्यर्थ इच्छा (तमन्ना) कहा जाता है और यह आशा (रीजा) नहीं है।

इस विवरण से यह ज्ञात होता है कि [शब्द] आशा केवल उस प्रिय [या वांछनीय चीज] की प्रतीक्षा के लिए लागू होती है जिसके लिए सभी साधन नियोजित होते हैं जो एक नौकर के अधिकार क्षेत्र के दायरे में होते हैं, और केवल वे साधन बचे हैं (छोड़ दिए गए) जो नौकर के अधिकार क्षेत्र से बाहर हैं, और यह [अर्थ] ईश्वर की कृपा है कि यदि इसे [सभी मामलों में] शामिल किया जाता है, सभी बाधाएं और स्पॉइलर [उन मामलों से] दूर रहते हैं। विश्वास करने वाले सेवक की स्थिति ऐसी है - यदि कोई हृदय की भूमि में विश्वास के बीज बोता है, उसे [दिव्य] पूजा के जल से सिंचित करता है, उसे खराब नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चरित्र लक्षणों और स्वभाव (सु उल-खुलक) के कांटों से बचाता है, और ईश्वर की कृपा से यह अपेक्षा रखता है कि उसका विश्वास उसकी मृत्यु तक बना रहेगा, और हृदय की फसल न्याय के दिन कटाई के लिए तैयार हो जाती है। अगर ऐसा है, तो यह प्रतीक्षा सही मायने में आशा (रीजा) है और एक उत्कृष्ट गुण (आंतरिक गुण) है। यह आशा किसी के विश्वास को बनाए रखेगी और [दिव्य] ज्ञान के समय मोक्ष सुनिश्चित करने के लिए पोषण के सभी साधनों पर लगातार कार्य करके इसे ईमानदारी से पोषित करेगी। परन्तु यदि किसी ने हृदय की भूमि में बीज बोए हैं, परन्तु बाद में उसकी परवाह नहीं की, तब तक जब तक कि वह पानी न देने के कारण सूख न जाए या अत्यधिक वर्षा या किसी की बुरी नैतिकता, शिष्टाचार, आंतरिक चारित्रिक लक्षणों और स्वभावों के खरपतवार और कांटों के कारण बर्बाद न हो जाए, फसल से आगे निकल जाए, या सांसारिक सुखों के कीटों ने उस पर हमला न कर दिया, और इन सभी लापरवाही और

कमियों के बावजूद, कोई भी क्षमा की प्रतीक्षा और अपेक्षा करता रहता है, तो यह प्रतीक्षा और अपेक्षा मूर्खता और अहंकार है। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اَلْاَحْمَقُ مَنْ أَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللّٰهِ

"मूर्ख वह है जो स्वयं को बनाता है, अपनी निम्न इच्छाओं के अधीन होता है और फिर ईश्वर से अपेक्षाएं रखता है।

भगवान कहते हैं:

فَخَلَفَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ أَضَاعُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَٱتَّبَعُواْ ٱلشَّهَوَٰتِۖ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا

"उनके बाद (पैगंबर और उनके सच्चे अनुयायियों), ऐसे अयोग्य लोग (आध्यात्मिक ज्ञान और ज्ञान की भविष्यवाणी विरासत के अयोग्य) पैदा हुए जिन्होंने अपनी प्रार्थनाओं को बर्बाद कर दिया और अपने निचले स्व से नीच और निम्न इच्छाओं का पालन किया। ऐसे लोगों को जल्द ही [अपने स्वयं के गलत कामों से निकलने] दोष दिखाई देंगे। (कुरान, अध्याय 19, श्लोक 59)

फिर भी, एक सेवक [ईश्वर का, यानी, एक मनुष्य] जो ईश्वरीय आज्ञाकारिता में प्रयास करता है और पापों से दूर रहता है, वह ईश्वर की उदारता और उदारता से [दिव्य] आशीषों के पूरा होने की आशा का पात्र है, और आशीषों की पूर्णता यह है कि व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश करता है। एक पापी जो पश्चाताप करता है और प्रायश्चित करता है और अपने गलत कामों के लिए प्रायश्चित करता है, उसे अपने पश्चाताप को स्वीकार करने की आशा रखने का अधिकार है। यदि कोई पश्चाताप से पहले अपने पापों को बुरा समझता है, अपने अच्छे कर्मों से प्रसन्न होता है, अपने निचले स्व (*नफ्स*) की निंदा करता है [उसके गलत कामों और उसके भीतर छिपी बुराई के लिए], पश्चाताप की इच्छा रखता है, तो उसे पश्चाताप की क्षमता प्रदान करने की आशा होनी चाहिए, क्योंकि पापों को बुरा मानना और पश्चाताप की इच्छा करना व्यक्ति को पश्चाताप की ओर प्रेरित करने का साधन है। आशा का चरण साधनों की पूर्णता के बाद आता है [आशा की] जैसा कि कुरान कहता है:

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَٱلَّذِينَ هَاجَرُواْ وَجَٰهَدُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ أُوْلَٰٓئِكَ يَرۡجُونَ رَحۡمَتَ ٱللَّهِ

"वास्तव में, जिनके पास विश्वास है और जो पलायन कर गए हैं (प्रवास बाहरी और आंतरिक दोनों है क्योंकि आंतरिक प्रवास बुराई से अच्छे की ओर, निम्न चरित्र से उच्च चरित्र की ओर, भौतिकवादी से अभौतिक या

आध्यात्मिक की ओर है) और ईश्वर के मार्ग में प्रयास करते हैं, वे ही हैं जो ईश्वर की दया के लिए आशा के उम्मीदवार हैं। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 218)

इस पद का अर्थ यह है कि ये वही लोग हैं जिनके पास ईश्वरीय दया की आशा का अधिकार है, इसका अर्थ यह नहीं है कि आशा इन लोगों के लिए विशिष्ट है, क्योंकि उनके अलावा ऐसे लोग हैं जिनके पास आशा है, यद्यपि उनके पास आशा करने का अधिकार नहीं है क्योंकि यह अधिकार केवल उनके पास है। लेकिन जो सिर से पैर तक घृणित चीजों में डूबा रहता है, वह न तो अपने आप को बुरा मानता है और न ही पश्चाताप करने और भगवान के पास लौटने का दृढ़ संकल्प रखता है, यदि ऐसा व्यक्ति [दिव्य] क्षमा की आशा करता है, तो यह एक मूर्ख की तरह है जो बंजर भूमि में बीज बोता है और न तो इसे पानी देने और न ही इसे साफ करने का संकल्प लेता है। याह्या इब्न मुअध (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "मेरे लिए सबसे बुरा आत्म-धोखा (भ्रम) यह है कि एक व्यक्ति बिना शर्म और पश्चाताप के पाप करता रहता है, क्षमा की आशा में, बिना किसी [ईश्वरीय कार्य] आज्ञाकारिता के ईश्वर से निकटता की उम्मीद करता है, आग के बीज बोने के बाद स्वर्ग के फल की प्रतीक्षा करता है, आज्ञाकारी [ईश्वर के सेवकों] के निवास के लिए पूछता है (यानी, स्वर्ग) पापों और गलत कामों के माध्यम से, बिना किसी कार्य के ईश्वरीय प्रतिफल की तलाश करता है [जो किसी को इसके योग्य बनाता है], और उत्पीड़न और अधिकता के बावजूद [अन्य लोगों के अधिकारों का उल्लंघन करने और हड़पने के मामले में] [भ्रामक रूप से] भगवान से अच्छे व्यवहार की इच्छा रखता है।

आशा के पीछे प्रयास: हमने आशा की वास्तविकता पर बहुत अधिक प्रकाश डाला है। यदि इसे संक्षेप में प्रस्तुत किया जाए, तो मामले की जड़ यह है कि यह एक ऐसी स्थिति है जो अधिकांश साधनों [इसके लिए अग्रणी] की घटना के बाद ज्ञान के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। इस राज्य की मांग है कि जो साधन पूरे नहीं हुए हैं, उन्हें बचे हुए सभी साधनों को पूरा करने (उपयोग) में हर संभव तरीके से प्रयास करना चाहिए। खेती के उदाहरण में जो उपजाऊ भूमि में अच्छे बीज बोता है, आवश्यकता के अनुसार सिंचाई करता है, ऐसे व्यक्ति की आशा सच्ची होगी और वह उस भूमि (खेत) की देखभाल करने के लिए राजी करेगा और उसमें उगने वाले किसी भी खरपतवार और कांटों को साफ करके, उसे नियमित रूप से पानी देगा, और कटाई तक कोई लापरवाही न करे। इसका कारण यह है कि आशा के विपरीत निराशा और निराशा है, यदि कोई किसी चीज से निराश है, तो वह उसके लिए संघर्ष करके खुद को कठिनाई में नहीं डालता है। केवल वही व्यक्ति संघर्ष करता है जिसे कुछ पाने की उम्मीद है। इसलिए, जो जानता है कि उसकी भूमि बंजर है, बीज बेकार हैं, और पानी उस भूमि की पहुंच से बाहर है, तो वह निश्चित रूप से उस भूमि की देखभाल से दूर रहेगा। आशा प्रशंसनीय है क्योंकि यह किसी को कार्य के लिए उकसाती है, और निराशा निंदनीय है क्योंकि यह किसी को कुछ भी (उचित कार्य) करने से रोकती है। [ईश्वर का] भय [ईश्वर में] आशा के विपरीत नहीं है, इसके बजाय, यह आध्यात्मिक प्रयास (सुलुक) की यात्रा में इसका भागीदार है, बल्कि यह कार्रवाई का एक एजेंट है। हालाँकि, इसका तरीका अलग है - आशा में [कुछ करने की] इच्छा

होती है और भय में [गलत कामों की] रोकथाम होती है। यदि किसी के पास स्वयं में आशा की स्थिति है, तो वह आंतरिक आध्यात्मिक अवस्थाओं में परिवर्तन के बावजूद अच्छे कर्मों में अधिक प्रयास और ईश्वरीय आज्ञाकारिता के कार्यों में दृढ़ता की मांग करता है। एक विस्तारित समय सीमा में आध्यात्मिक प्रयास और अच्छे कार्यों में दृढ़ता के माध्यम से ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करने से व्यक्ति को ईश्वर से प्रार्थना करने में आनंद मिलेगा और व्यक्ति ईश्वर से अपनी आवश्यकताओं के लिए कोमलता (विनम्रता) और जुड़ाव के साथ पूछेगा। यदि किसी के पास यह अवस्था नहीं है, तो यह समझा जाना चाहिए कि वह [आध्यात्मिक] आशा के स्थान से दूर है और इसके बजाय, अहंकार और [व्यर्थ] इच्छा (तमन्ना) की घाटी में घिरा हुआ है। ये आशा, ज्ञान के बारे में विवरण हैं जिसके परिणामस्वरूप आशा होती है, और ऐसे कार्य जो आशा से पैदा होते हैं।

आशा रखने के लिए आशा और अनुनय की उत्कृष्टता: यह ज्ञात हो कि [ईश्वर में] आशा के साथ किए गए कार्य [ईश्वर के] भय के साथ किए गए कार्यों से बेहतर हैं क्योंकि केवल वही व्यक्ति ईश्वर के करीब है जो उससे अधिक प्रेम करता है और प्रेम आशा के साथ बढ़ता है। इसका दृष्टांत दो राजाओं की तरह है, उनमें से एक को उसकी उदारता की आशा से परोसा जाता है और दूसरा उसके डर से परोसा जाता है। यह स्पष्ट है कि पहले वाले को दूसरे से ज्यादा प्यार किया जाएगा। इसलिए, किसी की मृत्यु के समय ईश्वर (*हुस्न अल-धुन*) के बारे में आशा (रिजा*) और अच्छी राय* रखने के लिए ईश्वरीय कानून में कई अनुनय हैं। भगवान ने कहा है:

لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ

"परमेश्वर की दया से निराश मत हो!" (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 53)

इस आयत में, निराशा को पूरी तरह से मना कर दिया गया है [इस ईश्वरीय आज्ञा के माध्यम से]। पैगंबर याकूब (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की परिस्थितियों में, यह प्रसारित किया गया है कि भगवान ने उनसे पूछा था, "क्या आप जानते हैं कि मैंने आपके और यूसुफ (सभी बेटों में सबसे प्यारे) के बीच अलगाव क्यों किया है? क्योंकि तुमने उसके भाइयों से कहा था [जब उन्होंने तुमसे कहा कि यूसुफ (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर बनी रहें) उनके साथ खेलने के लिए बाहर जाएं, सरासर ईर्ष्या के कारण उसे हमेशा के लिए निर्वासित करने की चाल से]:

وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ ٱلذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَٰفِلُونَ

'मुझे डर है कि कहीं वह भेड़िये द्वारा खा न जाए, जबकि आप [सभी] [खेलने के कारण] उसके प्रति लापरवाही कर रहे हैं। (कुरान, अध्याय 12, श्लोक 13)

तुम भेड़िये से क्यों डरते थे और मुझ पर आशा नहीं रखते थे? तुमने यूसुफ के भाइयों की लापरवाही को देखा, तुमने मेरी सुरक्षा को क्यों नहीं देखा?"

एक हदीस *कुद्सी* (पैगंबर मुहम्मद की परंपरा [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो] जिसमें उन्होंने ईश्वर से प्रेषित किया), ईश्वर ने कहा:

أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي فَلْيَظُنَّ بِي مَا شَاءَ

"मैं अपने दास के साथ हूँ जैसे मेरा सेवक मेरे बारे में सोचता है (एक मनुष्य के साथ मेरा व्यवहार मेरे बारे में उसकी राय के अनुसार होता है, इसलिए, व्यक्ति को परमेश्वर के बारे में अच्छी राय रखनी चाहिए और उससे सर्वश्रेष्ठ की अपेक्षा करनी चाहिए, लेकिन व्यक्ति को उन प्रयासों और प्रयासों के साथ परमेश्वर के बारे में अपनी अच्छी राय का समर्थन करना चाहिए जो उसे प्रसन्न करते हैं)। इसलिए व्यक्ति को मेरे बारे में जो भी राय रखना चाहिए, उसे रखना चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *इब्न हिब्बन* वथिला इब्न अल-अस्का के अधिकार पर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो)]

एक बार पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ऐसे व्यक्ति के पास गए जो मौत के कगार पर था और उनसे पूछा, "आप खुद को किस स्थिति में पाते हैं?" उसने उत्तर दिया, "मैं अपने हृदय में उन पापों के लिए भय पाता हूँ जो मैंने किए हैं, और प्रभु की दया की आशा करता हूँ। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, "एक व्यक्ति जिसके दिल में ये दोनों चीजें (आशा और भय) मिलती हैं, ईश्वर ऐसे व्यक्ति को उसकी आशाओं के अनुसार प्रदान करता है और व्यक्ति को उन चीजों से बचाता है जिनसे वह डरता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस ने अनास के अधिकार पर* तिर्मिधी, नसाई *और* इब्ने माजा *को संग्रह किया* है (ईश्वर उससे प्रसन्न हो)]

एक आदमी पापों की अधिकता के कारण तीव्र निराशा में था। अली (भगवान उससे प्रसन्न हों) ने उससे कहा, "आपका सबसे बड़ा पाप यह है कि आप भगवान की दया से निराश हैं"। एक भविष्यसूचक कथन के अनुसार, भगवान ने पैगंबर डेविड (शांति और ईश्वर की आशीषों को उस पर हो) को एक दिव्य रहस्योद्घाटन भेजा, "मुझसे प्यार करो और उससे प्यार करो जो मुझसे प्यार करता है और मुझे लोगों के बीच प्रिय बनाता है"। उसने पूछा, "मैं तुझे लोगों के बीच प्रिय कैसे बनाऊँ? परमेश्वर ने उत्तर दिया, "लोगों के बीच मेरा अच्छी तरह से उल्लेख करो और मेरे अनुग्रहों और आशीषों का उल्लेख करो और उन्हें उसकी याद दिलाओ ताकि वे केवल मेरे अनुग्रहों से परिचित रहें"। कुछ लोगों ने याह्या इब्न अख्तर (भगवान उन पर दया करे) को उनकी मृत्यु के बाद अपने सपनों में देखा। उनसे पूछा गया, "परमेश्वर ने आपके साथ कैसा व्यवहार किया? उसने उत्तर दिया, "परमेश्वर ने मुझे अपने सामने खड़ा किया और कहा, 'ऐ बुरे बूढ़े! तुमने ऐसे और ऐसे पाप किए हैं!' मेरे कर्मों के रजिस्टर को सुनकर [मैंने अपने

जीवनकाल में किया], मैं ईश्वरीय विस्मय से अभिभूत हो गया। फिर मैंने कहा, 'हे भगवान! क्या यह हदीस (पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद का कथन) में आपके बारे में इस तरह से वर्णित नहीं किया गया था? परमेश्वर ने पूछा, "क्या सुनाया गया है? मैंने उत्तर दिया, 'अब्दुल रज्जाक ने मुझे सुनाया, उन्होंने मोअम्मर से सुनाया, जिन्होंने जेहरी से सुनाया था, जिन्होंने [पैगंबर साथी] अनस (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) से सुनाया था, जिन्होंने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से सुनाया था कि उन्होंने [महादूत] गेब्रियल से सुना है कि आपने कहा है,

أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي فَلْيَظُنَّ بِي مَا شَاءَ

'मैं अपने सेवक के साथ हूं, जैसा कि मेरा सेवक मेरे बारे में सोचता है, इसलिए किसी को भी मेरे बारे में जो भी राय रखना चाहिए, उसे होना चाहिए', और मेरे पास आपके बारे में यह अनुमान (राय या अपेक्षा) थी कि आप मुझे दंडित नहीं करेंगे। भगवान, महामहिम, सम्मानित ने उत्तर दिया, 'गेब्रियल ने सच कहा, मेरे पैगंबर ने सच कहा, अनस, मोअम्मर और जेहरी सभी ने सच कहा, आप भी सच कहते हैं'। फिर मुझे सम्मान का वस्त्र दिया गया और स्वर्गीय सेवक मुझे स्वर्ग में ले गए। उस समय, मैंने [अपने आप से] कहा, 'इसे ही खुशी कहा जाता है!'"

आशा प्राप्त करने का तरीका और तरीका: यह ज्ञात हो कि आशा की आवश्यकता दो व्यक्तियों को होती है। पहला वह है जो उदासी और निराशा से ग्रस्त है और [उसके परिणामस्वरूप,] वह पूजा छोड़ देता है। दूसरा वह है जो [भगवान के] भय से ग्रस्त है और [उसके परिणामस्वरूप,] वह पूजा में इतना दृढ़ रहता है (सहन करता है) कि वह परेशान हो जाता है और अपने परिवार को भी परेशान कर देता है। दोनों व्यक्तियों ने संयम की सीमा पार कर ली है और [दो विपरीत] चरम सीमाओं की ओर झुकाव रखते हैं। दोनों को ऐसे इलाज की जरूरत है जो उन्हें संयम के रास्ते पर ले आए। लेकिन वह आत्म-भ्रमित पापी जो [दिव्य] आज्ञाकारिता को छोड़ने के बावजूद [ईश्वरीय] क्षमा का इच्छुक है, बिना कुछ भी किए जो किसी को क्षमा के योग्य बना देगा, आशा ऐसे व्यक्ति के लिए घातक है। जैसे शहद ठंडे मिजाज के लोगों के लिए एक इलाज है लेकिन गर्म स्वभाव के लोगों के लिए हानिकारक है। ऐसे व्यक्ति के लिए केवल (ईश्वर का) भय ही लाभदायक होता है या ऐसे साधन जो भय पैदा करते हैं। यही कारण है कि एक व्यक्ति जो लोगों को सलाह देता है और सलाह देता है, उसे बीमारी और बीमारी के कारणों पर नजर रखनी चाहिए, और हर बीमारी के विपरीत इलाज करना चाहिए, न कि किसी ऐसी चीज से जो बीमारी को बेहतर बनाने के बजाय बढ़ाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि उद्देश्य संयम है और प्रत्येक [मानव] गुणवत्ता और विशेषता में, संयम की डिग्री पसंद की गई है और यह डिग्री सबसे अच्छी है। यदि कोई [मानव] गुण या विशेषता संयम की डिग्री से विचलित हो रही है, चाहे वह अत्यधिकता या कमी की ओर हो, तो इलाज की आवश्यकता है ताकि यह संयम की डिग्री पर वापस आ जाए। एक इलाज जो इसे संयम की डिग्री से और अधिक विचलित करता है, की आवश्यकता नहीं है।

अली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने कहा, "एक विद्वान वह है जो न तो लोगों को भगवान की दया से निराश करता है और न ही उन्हें भगवान द्वारा उन्हें [गणना के लिए] कार्रवाई करने के लिए निडर बनाता है"। हम आशा के कारणों को बताने के लिए आश्वस्त हैं, लेकिन हर व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि केवल उस व्यक्ति के लिए जो परमेश्वर की दया से निराश है या उसके लिए जो परमेश्वर के भय से ग्रस्त है। कुरान और भविष्यवाणियों के कथन एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं क्योंकि दोनों में भय और आशा पर आधारित शिक्षाएं शामिल हैं जो विभिन्न प्रकार के रोगियों को ठीक करने के लिए सभी साधनों का गठन करती हैं। इन साधनों का ज्ञान और उनका उपयोग करने की विधि [इलाज करने के लिए] विद्वानों को [दिव्य रूप से] बताया गया है जो भविष्यवक्ताओं के उत्तराधिकारी हैं, ताकि [व्यक्तिगत और विशिष्ट] आवश्यकताओं के अनुसार, वे इन साधनों का उपयोग कर सकें, बुद्धिमान और अनुभवी चिकित्सकों की तरह और रोगी के लिए उपयुक्त इलाज का सुझाव दें, न कि एक मूर्ख और अज्ञानी चिकित्सक की तरह जो सभी दवाओं को हर बीमारी के लिए प्रभावी मानता है, कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह बीमारी क्या है।

डर की वास्तविकता

डर की वास्तविकता: यह ज्ञात हो कि डर दिल में वह दर्द और उत्तेजना है जो भविष्य में अपेक्षित कठिनाई के विचार से पैदा होता है। आशा की व्याख्या में भय की वास्तविकता को भी स्पष्ट किया गया है। जिसके पास ईश्वर के साथ लालसा और परिचितता है, सत्य उसके हृदय पर हावी होता है, और हर समय दिव्य सुंदरता को देखने में डूबा रहता है, इसीलिए, व्यक्ति भविष्य के प्रति चौकस नहीं होता है और उसके हृदय में न तो भय होता है और न ही भविष्य के लिए आशा, इसके बजाय, उसकी [आंतरिक] स्थिति भय और आशा दोनों अवस्थाओं से श्रेष्ठ हो जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये दो अवस्थाएँ [भय और आशा की] दो लगाम की तरह हैं जो निचले स्व (नफ्स) के जंगली घोड़े को संयम से विचलित नहीं होने देती हैं, और हृदय में भय और आशा की कमी निम्न स्व की अधीनता की वकालत करती है [ईश्वर के लिए]। वस्ती (भगवान उस पर दया करें) ने कहा, "भय भगवान और उसके सेवक के बीच एक पर्दा है"। उन्होंने यह भी कहा, "अगर दिल में सच्चाई सामने आ जाती है, तो आशा या भय के लिए कोई जगह नहीं बचती है। इसलिए, यदि किसी प्रेमी के हृदय में प्रिय की गवाही के दौरान [प्रिय से] अलग होने का डर है, तो वह प्रिय की सुंदरता की दृष्टि का आनंद नहीं ले पाएगा और किसी की दृष्टि में कमी रहेगी, हालांकि सभी [आध्यात्मिक] स्टेशनों (*मकामत*) का शिखर शाश्वत [दिव्य] दृष्टि होना है, और लाभ (लाभ) और नुकसान का डर इसकी कोई आशा नहीं है।

भय के लिए सामग्री की संरचना: आशा के समान, भय भी तीन चीजों से बना होता है: ज्ञान, [आंतरिक] स्थिति [होने की], और क्रियाएं। ज्ञान उस कारण की धारणा को संदर्भित करता है जो नुकसान पहुंचाता है।

उदाहरण के लिए, किसी ने किसी राजा का अनादर किया या शाही आज्ञा के खिलाफ विद्रोह किया और बाद में गिरफ्तार कर लिया गया और राजा के सामने पेश किया गया। इस स्थिति में किसी को मारे जाने का डर जरूर रहेगा, हालांकि यह भी संभव है कि राजा किसी को माफ कर दे, या किसी तरह रिहा हो जाए लेकिन उसके दिल में मारे जाने का डर जरूर रहेगा। तब वह डर उन कारणों की ताकत के अनुपात में मजबूत होगा जो उस हत्या की गारंटी देंगे, उदाहरण के लिए, अपराध की गंभीरता, या राजा शत्रुता और ईर्ष्या को आश्रय देता है, या राजा का प्रतिशोध लेने का स्वभाव होता है, या ऐसे लोगों से घिरा रहता है जो राजा को बदला लेने के लिए उकसाते हैं, या एक मध्यस्थ से वंचित किया जा रहा है, या उन सभी संसाधनों से वंचित होना जो राजा के क्रोध को समाप्त कर देंगे या दिल में प्रतिशोध की आग को बुझा देंगे। यदि ये सभी कारण एक साथ आ जाते हैं और आरोपी को भी इनके बारे में जानकारी होती है, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि मारे जाने का डर किसी के दिल में बहुत प्रबल होगा। हद तक, ये कारण कमजोर या कम होंगे, उस हद तक डर का दर्द कम होगा।

कभी-कभी, भयभीत व्यक्ति डरता नहीं है क्योंकि किसी ने अपराध किया है, बल्कि जिस व्यक्ति से डर लगता है उसकी कुछ विशेषता एक में भय पैदा कर रही है। उदाहरण के लिए, यदि कोई क्रूर जानवर के पंजे में फंस जाता है, तो निश्चित रूप से उस जानवर से डर जाएगा क्योंकि कोई उसकी पाशविक प्रकृति और विशेषता से अवगत है, और वह जानता है कि पशुता उसकी प्रिय विशेषता है, भले ही यह विशेषता विवेकाधीन (गैर-बाध्यकारी) है क्योंकि कभी-कभी जानवर अपने शिकार को नुकसान नहीं पहुंचाता है और बिना नुकसान पहुंचाए उसके पास से गुजरता है। कभी-कभी, एक ऐसी विशेषता से डर होता है जो गैर-विवेकाधीन (बाध्यकारी) होता है और भयभीत की प्रकृति में निहित होता है जैसे कि कोई तेजी से बहते पानी में गिरता है या आग में फंस जाता है। मनुष्य पानी और आग से डरता है क्योंकि पानी की अंतर्निहित प्रकृति डूबना है, और आग की अंतर्निहित प्रकृति जलना है।

संक्षेप में, बुराई के कारणों की गहरी समझ, हृदय में जलन और उत्तेजना और आंतरिक अस्तित्व में दर्द पैदा करती है। इस उत्तेजना और आंतरिक दर्द को भय कहा जाता है। इसी तरह, कभी-कभी ईश्वर का भय मानना ईश्वर के अस्तित्व की सूक्ति (*मारिफा*) और इस तरह के गुणों के कारण होता है कि यदि वह पूरी दुनिया को नष्ट कर देता है, तो वह न तो परवाह करेगा और न ही कोई उसे ऐसा करने से रोक सकता है या इस विनाश के लिए उसकी निंदा कर सकता है। कभी-कभी, एक सेवक [भगवान का, यानी एक मनुष्य] किसी के पापों के कारण डरता है और कभी-कभी ये दोनों एक साथ मिल जाते हैं [भय की स्थिति पैदा करने के लिए]। तब यह निश्चितता इस हद तक दृढ़ हो जाती है कि जो कुछ भी है, वह ईश्वर के हाथ में है, उसे किसी चीज या किसी की आवश्यकता नहीं है, वह जो कुछ भी करता है, उसके लिए उसे दोषी ठहराने वाला कोई नहीं है, जबकि सेवक (मनुष्य) सभी परिस्थितियों में [दिव्य] जवाबदेही के चरणों से गुजरेंगे, उस हद तक भय बढ़ जाएगा। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जो व्यक्ति स्वयं से अधिक

परिचित है, उसे परमेश्वर का अधिक भय होता है। इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

وَاللَّهِ إِنِّي لَأَخْشَاكُمْ لِلَّهِ وَأَتْقَاكُمْ لَهُ

"भगवान की कसम! मैं आप सभी में भगवान से सबसे ज्यादा डरता हूं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* अनस के अधिकार पर (भगवान उनसे प्रसन्न हों)]

यही कारण है कि कुरान में निम्नलिखित कहा गया है:

إِنَّمَا يَخْشَى ٱللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ ٱلْعُلَمَٰٓؤُا۟

"केवल परमेश्वर के सेवकों में से जो ज्ञान से संपन्न हैं, उनके पास [पवित्र भय, श्रद्धा और] ईश्वर का भय है [जैसा कि सच्चा ज्ञान ईश्वर की ज्ञान की ओर ले जाता है जो ईश्वरीय उपस्थिति को प्रभावित करता है जिससे उसके मालिक के लिए विचारों, भावनाओं, शब्दों, कर्मों और अस्तित्व की स्थिति में लिप्त होना असंभव हो जाता है, जो उस उच्च आध्यात्मिक स्थिति के लिए प्रतिकूल है]। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 28)

भय के प्रभाव (ईश्वर के) : जब यह सूक्ति (मारिफा) [ईश्वर के अस्तित्व और गुणों और किसी के पापों का] पूरा हो जाता है, तो यह किसी के हृदय में भय पैदा करता है और किसी के आंतरिक अस्तित्व में एक उत्तेजना होती है तो इस उत्तेजना का प्रभाव हृदय से शरीर के अन्य अंगों में स्थानांतरित हो जाता है। यह उत्तेजना और भय शारीरिक कमजोरी, पीलापन, रोना आदि के रूप में प्रकट होता है। कभी-कभी इस अवस्था की गर्मी का इतना प्रभाव होता है कि यह निराशा और निराशा की स्थिति में बदल जाता है। शारीरिक अंगों में भय का यह प्रभाव होता है कि उन्हें पापों से रोका जाता है और पिछली गलतियों के लिए प्रायश्चित करने के लिए, और भविष्य के लिए अच्छी तरह से तैयार करने के लिए आज्ञाकारिता के कार्यों के अधीन बनाया जाता है [नैतिक और नैतिक शुद्धता का जीवन जीने के लिए]। इसलिए, यह कहा जाता है कि [ईश्वर] का भय मानने वाला व्यक्ति वह नहीं है जो रोता है और अपने आँसू पोंछता है, बल्कि यह वह है जो उस चीज़ को त्याग देता है जो व्यक्ति को [दिव्य] दंड से डरता है। अबू अल-कासिम हकीम (भगवान उस पर दया करें) ने कहा, "जो किसी चीज से डरता है, वह उससे दूर भागता है, लेकिन जो ईश्वर से डरता है, वह उसके दयालु आलिंगन में शरण लेता है"। धुन नून अल-मिसरी (ईश्वर उन पर दया करे) से पूछा गया, "एक सेवक कब (भगवान से) डरता है?" उन्होंने जवाब दिया, "जब कोई एक ऐसे रोगी की तरह बन जाता है जिसकी बीमारी खतरनाक है और मृत्यु के डर से हानिकारक खाद्य पदार्थों को रोकती है [हानिकारक चीजों के खिलाफ रोकथाम की कमी के कारण किसी की बीमारी को बढ़ाने के कारण]"। किसी के गुणों (विशेषताओं और आंतरिक गुणों) पर [ईश्वर के] भय का प्रभाव यह होता है कि वासनाएं समाप्त हो जाती हैं और सांसारिक सुख [किसी की दृष्टि में] इस हद तक नीच हो जाते हैं कि वे सभी पाप

जो पहले किसी को प्रिय थे, बुरे लगने लगते हैं। जैसे शहद पसंद करने वाले व्यक्ति को मधु पसंद है लेकिन यह प्रवृत्ति यह जानने पर घृणा में बदल जाती है कि उसमें विष मिला हुआ है, उसी प्रकार [ईश्वर] भय की गर्मी वासनाओं को जला देती है, [शारीरिक] अंगों में [सभ्य] शिष्टाचार विकसित हो जाता है, हृदय में नम्रता, विनम्रता, धर्मपरायणता जैसे गुण विकसित होते हैं, अहंकार, शत्रुता, ईर्ष्या जैसे निंदनीय गुण दूर हो जाते हैं। किसी का पूरा ध्यान अपने [ईश्वर] भय की ओर मुड़ जाता है और किसी के पास कहीं और नज़र डालने की कोई समझ नहीं बचती है। व्यक्ति हर समय आध्यात्मिक संघर्ष (*मुजाहिद्दा*), आत्म-परीक्षण, या अपने गलत कामों (मुहासाबा) के लिए खुद को दोषी ठहराने और ईश्वर (*मुराकाबा*) के चिंतन में व्यस्त हो जाता है। हर पल जो उसके पास होता है, हर कदम उठाता है, और हर शब्द जो वह बोलता है, वह इतना कीमती हो जाता है कि वह उसे बर्बाद नहीं करता है। इसके बजाय, कोई भी उनके बारे में बहुत सुरक्षात्मक हो जाता है [उन्हें खोने से बचने के लिए उनकी रक्षा करके]। किसी की अवस्था उस व्यक्ति की अवस्था की तरह हो जाती है जो एक क्रूर जानवर के पंजे में फंस जाता है और यह नहीं जानता कि उसकी ओर से किसी भी क्षणिक लापरवाही का फायदा उठाकर कोई उससे बच सकता है या उसका भोजन बनकर उसके पंजे में मर जाएगा। यदि कोई इस तरह की स्थिति में फंस जाता है तो उसका दिल और मन, और बाहरी और आंतरिक प्राणी केवल स्वतंत्रता पाने के तरीके के प्रति जुनूनी होते हैं, तो उसके मन में [उस अवस्था में] कोई अन्य विचार भी नहीं आता है। ऐसी ही स्थिति उस व्यक्ति की होती है जो [परमेश्वर के] भय से ग्रस्त होता है। कुछ भविष्यद्वाणी के साथियों (*सहाबा*) और उनके अनुयायियों (*तबाईन*) की एक ही सटीक स्थिति थी कि [ईश्वर का] भय उनके हर नस और रोम-रोम पर सर्वोच्च था।

कार्यों में [ईश्वर से] भय की डिग्री: जिस हद तक किसी का भय प्रबल होता है, ईश्वर *के प्रताप के गुण और निम्न स्व के दोषों की समझ की सूक्ति (मारिफा) होती है, उस हद तक आध्यात्मिक संघर्ष (*मुजाहिद्दा), आत्म-परीक्षण या अपने गलत कामों के लिए खुद को काम पर ले जाना (*मुहासाबा),* और परमात्मा का चिंतन (*मुराकाबा*)) मजबूत हैं। किसी के कार्यों में भय के प्रभावों का सबसे निचला स्तर यह है कि व्यक्ति उन चीजों को करने से दूर रहता है जो ईश्वरीय कानून के आदेशों द्वारा निषिद्ध (हराम) हैं। ईश्वरीय कानून के निषेधों से दूर रहना ईमानदारी (वार') कहलाता है। यदि भय दृढ़ है, तो व्यक्ति उन मामलों से भी दूर रहेगा जिनके ईश्वरीय कानून में निषिद्ध होने की [मात्र] संभावना है, दूसरे शब्दों में, व्यक्ति उन मामलों से भी दूर रहता है जो निश्चित रूप से वर्जित नहीं हैं और इस प्रकार संदिग्ध हैं। इस डिग्री [ईश्वर के भय] को "*तकवा*" (पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय) कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति संदिग्ध मामलों को छोड़ देता है और उन मामलों पर कार्य करता है जो निश्चित रूप से अनुमेय हैं। कभी-कभी, कोई उन मामलों को छोड़ देता है जो ठीक लगते हैं लेकिन उन्हें इस डर के कारण छोड़ देते हैं कि वे संदिग्ध हो सकते हैं। इस डिग्री [ईश्वर के भय] को "*सिदक फी अल-तकवा*" (पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर के भय में आंतरिक सच्चाई और ईमानदारी) कहा जाता है। यदि कोई केवल उन चीज़ों का उपयोग करके इस डिग्री को अगले स्तर तक ले जाता है जिनकी वास्तव में आवश्यकता है [और निश्चित रूप से अनुमेय हैं], उदाहरण के लिए, कोई एक अतिरिक्त घर नहीं बनाता है जिसमें वह रहने वाला नहीं है, वह उस भोजन को जमा नहीं करता है जिसका वह उपभोग नहीं करता है, वह सांसारिकता की ओर झुकाव नहीं करता है,

और कोई जानता है कि दुनिया एक ऐसी चीज है जिससे उसे अलग कर दिया जाएगा, और [परिणामस्वरूप,] ईश्वर के अलावा किसी अन्य चीज़ के बारे में सोचने में एक सांस भी बर्बाद नहीं करता है, तो इस डिग्री को "*सिद्दीक*" (सच्चाई या सत्य के प्रति पूर्ण समर्पण) कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति को "सिद्दीक" (सत्य का व्यक्ति या ज्ञानवादी या अंतरंग और ईश्वर का मित्र) कहना पूरी तरह से उपयुक्त है। इस व्यवस्था के अनुसार, सत्यता (*सिडक*) को ईश्वर-भय (*तकवा*) में शामिल किया गया है और ईश्वर का भय ईमानदारी (वारा) में शामिल है और ईमानदारी में शुद्धता और पवित्रता (*इफा*) शामिल है जो वासनाओं के उकसाने वालों से दूर रहने का नाम है।

ईश्वर का भय मानना उद्देश्य है: वास्तव में, ईश्वर का भय ही उद्देश्य है। यदि परमेश्वर का उद्देश्य [अपने सेवकों] को अपने अस्तित्व से भयभीत नहीं करना होता, तो उसने न तो अपने सेवकों को प्रबल होने से पाप करने की अनुमति दी होती, न ही उसने उनके लिए पाप करना आसान बना दिया होता, और उसने उन्हें पाप करने के साधन प्रदान नहीं किए होते। ऐसा इसलिए है क्योंकि पापों के साधन प्रदान करना किसी को ईश्वरीय दया से दूर करने के समान है, फिर [पहले] पाप से पहले सेवक द्वारा कोई पाप नहीं किया गया था जिसके आधार पर किसी को पाप के योग्य घोषित किया गया होगा और पापों के साधन एक के लिए आसान हो गए होंगे। इसी तरह, आज्ञाकारिता के [पहले कार्य] से पहले, सेवक के पास कोई धार्मिक कार्य नहीं था जो किसी को [अधिक] धार्मिक कर्मों के योग्य बना सकता था और एक के लिए धार्मिकता के मार्ग को रोशन कर सकता था। ये सभी ईश्वरीय रूप से निर्धारित भाग्य के रहस्य हैं, चाहे कोई इससे सहमत हो या नहीं। उस प्राणी का अनासक्ति ऐसी है कि बिना किसी पूर्व कारण के, उसने बिना किसी पूर्व कारण के पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को किसी भी इंसान को दिए गए सभी पदों में से सबसे ऊंचा दर्जा प्रदान किया, ताकि सृष्टिओं में से कोई भी उनके साथ प्रतिस्पर्धा करने का दावा न कर सके। दूसरी ओर, उसने अबू जहल को बिना किसी [पूर्व] गलती के निम्न पद के निचले स्तर तक पहुँचाया। जिस प्राणी की बेखबर स्थिति [और किसी के या किसी भी चीज के प्रति अनासक्ति] ऐसी है, उसकी महिमा और भव्यता से डरना अनिवार्य है।

ईश्वर के भय और उसके उपदेशों की उत्कृष्टता: भय की उत्कृष्टता [ईश्वर की] तार्किक कटौती (*कयास*) के साथ-साथ कुरान की आयतों और भविष्यसूचक परंपराओं दोनों से साबित होती है। किसी वस्तु की उत्कृष्टता को देखने के लिए तार्किक कटौती का तरीका, यह देखना है कि यह ईश्वरीय दृष्टि की शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय (सादा) की ओर बढ़ने में कितनी मदद करता है क्योंकि यह एक विश्वासी सेवक [ईश्वर के] का वास्तविक उद्देश्य है। इसीलिए, जिस हद तक कोई चीज किसी को शाश्वत सुख और चिरस्थायी सफलता तक पहुंचने में मदद कर सकती है, उस हद तक उसमें उत्कृष्टता का स्तर होगा।

यह पहले समझाया गया है कि परलोक में ईश्वर के साथ मिलना और शाश्वत सुख और अनन्त सफलता (सादाह) प्राप्त करना उनके लिए प्रेम और लालसा के बिना संभव नहीं है, और दिव्य ज्ञान (*मारिफा*) के बिना प्रेम प्राप्त नहीं किया जाता है, और दिव्य ज्ञान ईश्वरीय स्मरण की शाश्वतता के बिना प्राप्त नहीं होता है, और दिव्य स्मरण (*धिक्र*) और चिंतन (फिक्र) के साथ दृढ़ता रखने के लिए), दुनिया से दिल की पराई होना अनिवार्य है, और दुनिया के प्रति दिल का लगाव तभी टूटता है जब सेवक सांसारिक सुखों और वासनाओं को त्याग देता है, और वासनाओं को मिटाने के लिए, किसी को [भगवान के] भय की आग की आवश्यकता होती है। भय वह आग है जो वासनाओं को जलाकर राख कर देती है, इसीलिए, केवल वही भय श्रेष्ठ होगा जो वासनाओं को जलाता है, किसी को पापों से बचाता है, और व्यक्ति को [दिव्य] आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करता है। तब जिस हद तक वासनाएं जल जाएंगी, पाप कम हो जाएंगे और जिस हद तक [दिव्य] आज्ञाकारिता प्रकट होगी (बढ़ती है), उस हद तक यह (शाश्वत सुख और अनन्त सफलता) श्रेष्ठ होगी। यह ईश्वर-भय की डिग्री में अंतर की वास्तविकता है। परमेश्वर का भय क्यों श्रेष्ठ है? क्योंकि एक सेवक इसके माध्यम से शुद्धता, पवित्रता, ईमानदारी, विनम्रता और आध्यात्मिक प्रयासों जैसे चरित्र लक्षण प्राप्त करता है। इन चरित्र लक्षणों की उत्कृष्टता पर संदेह नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार, भय की उत्कृष्टता तार्किक कटौती के साथ-साथ [दिव्य] छंदों और परंपराओं दोनों से सिद्ध होती है।

भय की उत्कृष्टता में छंद और परंपराएं [ईश्वर की]: भय की उत्कृष्टता में असंख्य [भविष्यवाणी] परंपराएं हैं। [ईश्वर के] भय की उत्कृष्टता के बारे में यह जानना पर्याप्त है कि परमेश्वर ने इन तीन पदों में सभी चार [आध्यात्मिक] स्थानों को इकट्ठा किया, अर्थात् [दिव्य] मार्गदर्शन, [दिव्य] दया, [दिव्य] ज्ञान, और [दिव्य] अनुमोदन:

هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ

"जो लोग अपने रब का भय मानते थे, उनके लिए [उनके रब की ओर से] मार्गदर्शन और दया थी। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 154)

إِنَّمَا يَخْشَى ٱللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ ٱلْعُلَمَٰٓؤُا۟

"केवल वे ही [परमेश्वर के] दास उसका भय मानते हैं जो ज्ञान रखते हैं। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 28)

رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِىَ رَبَّهُۥ

"परमेश्वर उनसे प्रसन्न है और वे परमेश्वर से प्रसन्न हैं। यह उसके लिए है जो अपने रब का भय मानता है। (कुरान, अध्याय 98, श्लोक 8)

पहले पद में मार्गदर्शन और दया है, दूसरे में ज्ञान है, और तीसरे में परमेश्वर की स्वीकृति है - ये सभी उन लोगों के लिए आरक्षित हैं जो परमेश्वर का भय मानते हैं। [दिव्य] ज्ञान [ईश्वर के] भय का परिणाम है। पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "ईश्वर से डरने वाले लोगों को सर्वोच्च साथी (*रफीक अल-आला* यानी भगवान) का साथ मिलेगा और कोई भी उनके इस [उच्च आध्यात्मिक] पद में भाग नहीं लेगा। वे यह साहचर्य प्राप्त करेंगे क्योंकि ईश्वर का भय केवल [दिव्य] ज्ञान के लोगों द्वारा किया जाता है [जैसे कि वे लोग जो इससे वंचित हैं या इससे अनजान हैं, जो प्रतीत होता है कि अपने गलत कामों को दण्ड से मुक्ति के साथ करते हैं,] और ज्ञान के लोग भविष्यद्वक्ताओं के उत्तराधिकारी होने के नाते, इस साहचर्य का अधिकार है, और भविष्यवक्ताओं को सर्वोच्च साथी का साथ मिलेगा। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो), इस बीमारी के दौरान, जिसके कारण उनकी मृत्यु हुई, को [ईश्वर द्वारा] दुनिया में रहने का विकल्प दिया गया था यदि वह चाहते हैं या यदि वह चाहते हैं तो ईश्वर के पास लौटें और उस पर उन्होंने कहा:

اسالك الرفيق الاعلى

"मैं आपसे सर्वोच्च साथी मांगता हूं (मैं आपसे आपका शाश्वत साहचर्य मांगता हूं)"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* आयशा के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* का संग्रह करता है (भगवान उससे प्रसन्न हों)]

फुदैल इब्ने आयध (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "एक व्यक्ति जो ईश्वर का भय मानता है, वह व्यक्ति को सभी प्रकार के सुधारों की ओर ले जाता है। शिबली ने कहा, "जब भी मैं ईश्वर से डरता था, ज्ञान और उद्देश्य निवारक सबक का एक नया द्वार मेरे लिए खुल जाता था जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था। पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "न्याय के दिन भगवान कहेंगे: 'आज कोई भी ऐसा नहीं है जिसकी जवाबदेही मैं नहीं करूंगा, हालांकि, ईमानदारी के लोग (जो अपने सभी विचारों, भावनाओं, शब्दों और कर्मों के लिए खुद को दोषी ठहराते हैं) इससे मुक्त हैं। मुझे उनकी जवाबदेही और हिसाब (*मुहासाबा*) करने में शर्म आती है। वे जवाबदेही से ऊपर उठ गए हैं [जैसा कि उन्होंने पहले ही अपने सांसारिक जीवन के दौरान स्वेच्छा से किया था]"। परमेश्वर का भय ईमानदारी और पवित्र विस्मय, श्रद्धा और परमेश्वर के भय पर आधारित है।

क्या भय या आशा का वर्चस्व या दोनों का मध्यम स्तर श्रेष्ठ है?

आशा [परमेश्वर में] और भय [परमेश्वर से] दो दवाएं हैं जो दिलों को ठीक करती हैं। इन औषधियों में अपने आप में कोई प्रशंसनीय गुण नहीं होते हैं लेकिन ये किसी बीमारी को ठीक करने में जिस हद तक

फायदेमंद होते हैं, उस हद तक इनमें उत्कृष्टता प्राप्त होती है। इसलिए, यदि हृदय में निर्भयता का रोग है और यह खतरा है कि यह व्यक्ति स्वयं को ईश्वर की सजा से सुरक्षित समझते हुए, सांसारिक सुखों और सुखों में लिप्त रहता है, तो इस मामले में, [ईश्वर का] भय श्रेष्ठ है। यदि हृदय निराशा और निराशा से ग्रस्त है, तो आशा [परमेश्वर में] श्रेष्ठ होगी। इसी तरह, यदि एक सेवक [परमेश्वर का] पापों से ग्रस्त है, तो [परमेश्वर का] भय श्रेष्ठ होगा।

यह भी कहा जा सकता है कि डर बिल्कुल बेहतर है जैसे रोटी नींबू पानी से बेहतर है (जिसे "*सिकंजाबीन*" के रूप में जाना जाता है जो कुछ अन्य प्राकृतिक जड़ी बूटियों के साथ नींबू या सिरका और शहद के साथ पारंपरिक चिकित्सा में एक औषधीय पेय है) क्योंकि रोटी भूख की बीमारी को ठीक करती है जबकि *सिकंजबीन* यकृत से पित्त पदार्थ को ठीक करती है। भूख की बीमारी प्रमुख है क्योंकि रोटी की आवश्यकता [नींबू पानी की तुलना में] अधिक होती है, इसलिए, रोटी श्रेष्ठ है। इस संबंध में, हम कह सकते हैं कि [ईश्वर का] भय इसकी प्रमुख आवश्यकता के कारण श्रेष्ठ है क्योंकि लोग पापों और आत्म-भ्रमों से ग्रस्त हैं। यदि हम भय और आशा के फव्वारे पर एक नज़र डालते हैं, तो हम यह कहने के लिए मजबूर होंगे कि आशा श्रेष्ठ है क्योंकि आशा का फव्वारा [दिव्य] दया है और भय का फव्वारा [दिव्य] क्रोध है। जो इन [दिव्य] गुणों पर विचार-विमर्श करता है जो ईश्वर की दया और उदारता के पक्ष में बहस करते हैं, तो वे हृदय में ईश्वर के प्रति अधिक प्रेम को बढ़ावा देते हैं और [दिव्य के स्थान] प्रेम से ऊपर कोई [आध्यात्मिक] स्थान नहीं है। [परमेश्वर से] भय के मामले में, सेवक का ध्यान उन दिव्य गुणों पर होता है जो उसके क्रोध और नाराजगी के बारे में बहस करते हैं। इन (दिव्य) गुणों के परिणामस्वरूप विस्मय बढ़ता है और व्यक्ति को उतना दिव्य प्रेम और लालसा प्राप्त नहीं होती है जितनी कि आशा के माध्यम से प्राप्त होती है (ईश्वर में)।

सुधारात्मक के बजाय सुपीरियर: वास्तव में, भय और आशा न तो अपने आप में आवश्यक है और न ही वे उद्देश्य हैं, बल्कि उन्हें किसी और चीज के लिए आवश्यक है। मेरी राय में, जो चीजें दूसरों के लिए आवश्यक हैं, उनके लिए "श्रेष्ठ" के बजाय "सुधारात्मक" शब्द का उपयोग करना अधिक सही है। यदि इस सिद्धांत को स्वीकार कर लिया जाता है, तो हम कहेंगे कि अधिकांश लोगों के लिए, भय आशा से अधिक सुधारात्मक है क्योंकि अधिकांश लोगों पर पापों का प्रभुत्व है और वे केवल भय के चाबुक से पापों को छोड़ सकते हैं। आशा उन्हें दुस्साहसी बना सकती है [गलत कामों के अधिक कार्य करने में] जबकि ईश्वर-भय के लोग जो बाहरी और आंतरिक प्राणियों में शुद्ध हो गए हैं, भय और आशा के बीच संयम और संतुलन सुधारात्मक है। इसीलिए, यह उद्धरण बहुत प्रसिद्ध है, "यदि एक आस्तिक के डर और आशा को तौला जाता है, तो वे समान रूप से सामने आएंगे"। अली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने अपने एक बेटे से कहा, "भगवान से अत्यधिक भय मानें और सोचें कि यदि आप दुनिया के सभी अच्छे कामों को अपने साथ ले जाते हैं, तो उन्हें [भगवान द्वारा] स्वीकार नहीं किया जाएगा, और बहुत आशा रखते हैं और सोचते हैं कि भले ही आप दुनिया के सभी पापों को इकट्ठा कर लें, वह अब भी आपको माफ कर देगा। उमर (खुदा

उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "अगर यह घोषणा की जाती है कि एक व्यक्ति को छोड़कर सभी लोग नरक में जाएंगे तो मुझे वह एक व्यक्ति होने की आशा होगी, और अगर एक घोषणा की जाती है कि एक व्यक्ति को छोड़कर सभी लोग स्वर्ग जाएंगे तो मुझे वह एक व्यक्ति होने का डर होगा। यह [परमेश्वर का] भय और आशा का उच्चतम स्तर है [परमेश्वर में]। केवल उमर (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) की आशा और भय ही बराबर हो सकता है। यदि कोई पापी व्यक्ति इस घोषणा को सुनता है कि एक को छोड़कर सभी लोग नरक में जाएंगे, तो वह यह मान लेगा कि जिस व्यक्ति को नरक में जाने से छूट दी गई है वह वह है और वह आत्म-भ्रम में पड़ सकता है।

जो लोग मजबूत दिल वाले हैं और उनके ज्ञान (मारिफा या परमात्मा के साथ अंतरंगता) में पूर्णता है, उनका भय और आशा समान है, और वे केवल आशा पर हावी नहीं हैं। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ऐसी [उल्लेखनीय आध्यात्मिक] स्थिति में थे कि वे हर समय अपने दिल की जांच करते थे और अपने दिल की गुप्त बीमारियों का पता लगाने में बहुत सावधानी बरतते थे, इस हद तक कि वह हुदैफा (भगवान उनसे प्रसन्न हो) से पूछते थे, "क्या तुमने मुझमें पाखंड के कोई लक्षण देखे हैं?" उन्होंने उनसे पूछा कि क्योंकि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने उन्हें पाखंड के संकेतों का ज्ञान बताया। आज कौन है जो पाखंड और छिपे हुए बहुदेववाद से अपने दिल को शुद्ध और शुद्ध करता है (*शिर्क* या भगवान के साथ भागीदारों को जिम्मेदार ठहराना या भगवान के अलावा अन्य चीजों को जिम्मेदार ठहराना जो विशेष रूप से भगवान के लिए जिम्मेदार होना चाहिए था)? यदि किसी ने यह निर्णय कर लिया है कि उसके हृदय को [सभी बुराइयों और गलतियों से] शुद्ध कर दिया गया है, तो उस व्यक्ति को परमेश्वर के हिसाब से किस हद तक बचाया जा सकता है? क्या यह संभव है कि परमेश्वर ने किसी के हृदय में [आंतरिक] शुद्धिकरण का विचार रखा है [अपने स्वयं के गलत कामों और घिनौनी आंतरिक स्थिति के लिए ईश्वरीय प्रतिशोध के रूप में,] लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत है? यहां तक कि अगर किसी के पास वास्तव में, हृदय की शुद्धि है, तो किसी ने कैसे निर्धारित किया है कि वह अपने जीवन के अंत तक ऐसे ही रहेगा? जब यह स्थिति है, तो कोई निडर कैसे हो सकता है? इसीलिए, एक आस्तिक के लिए यह आवश्यक है कि उसमें भय और आशा दोनों हों और दोनों के बीच संतुलन और समानता होनी चाहिए। आम लोगों पर आशा का वर्चस्व उनकी समझ और ज्ञान की कमी का प्रमाण है। इसलिए, कुरान ने उन दो गुणों को जोड़ा है जहां [ईश्वर के] सेवकों के [उदात्त] गुणों का उल्लेख किया गया है:

يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ

"वे आशा और भय के साथ अपने प्रभु से विनती करते हैं और जो कुछ हमने [उन्हें] जीविका के रूप में प्रदान किया है, उसमें से [धर्मार्थ प्रयासों में] खर्च करते हैं। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 16)

लेकिन उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) जैसे उच्च संकल्प वाले लोग कहां हैं जो आशा और भय के बीच समभाव रख सकते हैं? यही कारण है कि वर्तमान समय में, लोगों के लिए भय इस शर्त पर अधिक

उपयुक्त है कि यह उन्हें निराशा तक नहीं पहुँचाएगा, [धार्मिक] कार्यों को त्याग देगा, और निराशा में डूब जाएगा। कुछ लोग इस डर से कि वे पापी हैं और उनकी क्षमा की कोई आशा नहीं है, [धार्मिक] कर्मों को त्याग देते हैं, और पापों में डूबे रहते हैं। ऐसा डर फायदेमंद होने के बजाय हानिकारक होता है। लाभकारी भय वह है जो व्यक्ति को [पवित्र और धार्मिक] कर्मों के लिए प्रेरित करता है, वासनाओं के प्रति घृणा पैदा करता है, और किसी को दुनिया (सांसारिकता) की ओर झुकाव की अनुमति नहीं देता है। यह डर नहीं है कि एक विचार हृदय में आया और बुरे कर्मों के खिलाफ घृणा पैदा करने वाले अंगों पर कोई प्रभाव डाले बिना, या किसी को धार्मिक कर्म करने के लिए राजी किए बिना पारित हो गया। [परमेश्वर का] भय भी निराशा का कारण नहीं है। [ऋषियों और भविष्यद्वक्ताओं की] सभी कहावतों का सारांश यह है कि दोनों [आशा और भय के गुणों] का संयोजन वांछनीय है। हालाँकि, जब तक मृत्यु नहीं आ जाती, तब तक भय अधिक लाभदायक और उपयुक्त होता है, और मृत्यु के समय, परमेश्वर की दया की आशा और अच्छी अपेक्षा अधिक उपयुक्त होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, भय एक चाबुक है जो एक सेवक को [सही] कार्यों के लिए प्रेरित करता है, लेकिन वह जो मरने वाला है और न तो उसके पास [पवित्र और धार्मिक] कार्य करने की क्षमता है, या भय के साधनों को सहन करना डर के रूप में [मरने वाले व्यक्ति का] दिल को डुबो देगा और मृत्यु के करीब ला देगा, जबकि आशा हृदय को मजबूत करती है और किसी के अस्तित्व की हर नस और तंतु में ईश्वर के प्रेम को भर देती है। एक सेवक [ईश्वर के, यानी, एक इंसान] के लिए अनन्त खुशी और अनन्त सफलता (सादाह) परमेश्वर के प्रेम के दीपक हृदय को रोशन करने और परमेश्वर के साथ मिलने की इच्छा रखने में है। एक व्यक्ति जो परमेश्वर से मिलने की इच्छा रखता है, परमेश्वर ऐसे व्यक्ति से मिलना चाहता है। प्रेम, लालसा, [प्रिय के साथ] मिलने की इच्छा, दिव्य दृष्टि, ज्ञान और [धार्मिक] कार्यों की कामना करने का उद्देश्य ईश्वर की सूक्ति (मारिफा) है और सूक्ति का फल (परिणाम) प्रेम है। आत्मा (मनुष्य) का प्रत्येक स्वामी मृत्यु के बाद उसके पास वापस जाने के लिए बाध्य है और यही वह जगह है जहां किसी का अंतिम निवास और गंतव्य है। जो अपने प्रिय से मिलता है, वह अपने प्रेम के अनुरूप खुशी की सीमा का अनुभव करता है। जो अपने प्रिय से अलग हो जाता है, वह अपने प्रेम के अनुरूप दर्द की सीमा का अनुभव करता है [प्रिय के लिए]। अगर किसी के दिल में जीवनसाथी, बच्चों, घर, जमीन, संपत्ति, दोस्तों, रिश्तेदारों के प्यार का बोलबाला हो तो यह ऐसा व्यक्ति है जिसकी सभी प्यारी चीजें दुनिया में हैं - दुनिया उसका स्वर्ग है क्योंकि स्वर्ग उस विशिष्ट स्थान का नाम है जो किसी की सभी पसंदीदा और प्रिय चीजों को जोड़ती है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु स्वर्ग से निष्कासन के समान है जैसे मृत्यु एक और उसकी प्रिय चीजों के बीच एक पर्दा बन जाती है, और यह एक ऐसी पीड़ा है जिसे केवल कठिनाई के साथ ही सहन किया जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सांसारिक लोग मृत्यु से डरते हैं और इस जीवन को पीछे छोड़कर जाना पसंद नहीं करते हैं।

जबकि, जिस व्यक्ति का प्रिय ईश्वर है और जिसके पास केवल ईश्वरीय स्मरण, चिंतन और ईश्वर की ज्ञानता के लिए आसक्ति और लालसा है और वह सांसारिक बाधाओं और संबंधों (आसक्ति) को अपने लिए हानिकारक मानता है, ऐसे व्यक्ति के लिए, दुनिया एक जेल है, यहां व्यक्ति को एक पल के लिए भी शांति नहीं मिलती है और हर समय इस जेल से मुक्ति पाने और अपने प्रिय से मिलने का प्रयास करता है। अब

आपको उस भावना पर विचार करना चाहिए जो एक कैदी को जेल से मुक्त होने के समय होती है जब कोई अपने प्रिय से मिलता है। यह वह खुशी है जो एक विश्वासी सेवक को शरीर के कारावास से मुक्त होने के बाद सबसे पहले मिलता है। यह [खुशी] उस ईश्वरीय प्रतिफल से अलग है जिसे परमेश्वर ने अपने सेवकों के लिए अलग रखा है। यह ईश्वरीय प्रतिफल क्या है? यह कुछ ऐसा है जिसे किसी भी आंख ने नहीं देखा है, किसी कान ने नहीं सुना है और इसका कोई विचार भी किसी दिल में नहीं आया है। भगवान ने यह दिव्य प्रतिफल उन लोगों के लिए तैयार किया है जो दुनिया के जीवन से अधिक परलोक के जीवन को पसंद करते हैं, इससे संतुष्ट रहते हैं और इससे संतुष्टि पाते हैं। इसी तरह, संसार से प्रस्थान के समय एक अविश्वासी द्वारा अनुभव किया जाने वाला दर्द उस दण्ड से अलग है जिसे परमेश्वर ने अपने अवज्ञाकारी सेवकों के लिए अलग रखा है। इसमें विभिन्न प्रकार के कष्ट, जंजीरें, फंसाने और अपमान और अवमानना के साधन हैं। हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें मृत्यु प्रदान करे [उसके चयन के समय जो पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपरिहार्य है,] उसकी इच्छा के प्रति समर्पण की स्थिति में और धर्मी लोगों के साथ हमसे जुड़ें। इस प्रार्थना को स्वीकार करने की आशा ईश्वर के प्रेम को प्राप्त किए बिना नहीं होती है और ईश्वर का प्रेम तब तक प्राप्त नहीं होता जब तक कि ईश्वर के अलावा अन्य का प्रेम हृदय से निकल न जाए और हृदय का लगाव उन सभी बाधाओं के प्रति न हो जाए जो दिव्य प्रेम की प्राप्ति में बाधा डाल रहे हैं, जैसे कि धन, प्रसिद्धि, मातृभूमि, आदि। फिर भी, मृत्यु के समय आशा का प्रभुत्व सुधारात्मक है क्योंकि यह [दिव्य] प्रेम को जन्म देता है और वासना की आग बुझ जाती है और दुनिया के प्यार को दिल से हटा देती है।

अशुभ अंत के बारे में ज्ञानवादियों का डर

सभी छंदों और परंपराओं को सुनने के बाद [लोगों के अशुभ अंत के बारे में], केवल एक मूर्ख या अज्ञानी व्यक्ति ही हो सकता है जो निडर होगा। आशा की नरम हवा के साथ ज्ञानवादियों के दिलों को ताजा रखना भगवान का एक बड़ा एहसान है। अगर ऐसा नहीं होता तो उनके दिल डर से जल जाते।

बुरे या अशुभ अंत का अर्थ: बुरे अंत की दो डिग्री होती है जिसमें एक दूसरे की तुलना में कठिन होता है। पहली डिग्री जो कठिन होती है वह यह है कि जब कोई मृत्यु के कगार पर होता है और हृदय उस पर हावी होता है, तो उसे परमेश्वर के बारे में संदेह होने लगता है या वह परमेश्वर को अस्वीकार करना शुरू कर देता है और उस अवस्था में मर जाता है। यह संदेह और अस्वीकृति एक ऐसी गाँठ है जो एक और ईश्वर के बीच हमेशा के लिए एक पर्दा बनाती है, और स्थायी पर्दा [इस तरह] व्यक्ति को ईश्वर से दूर होने और [परलोक के] दंड की ओर ले जाता है। बुरे अंत की दूसरी डिग्री जो पहले की तुलना में कम है, वह यह है कि मृत्यु के समय, किसी के दिल पर सांसारिक मामलों से किसी भी मामले या सांसारिक वासनाओं से

किसी भी वासना पर हावी हो जाता है जो दिल और दिमाग को इस हद तक धूमिल कर देता है कि सभी इंद्रियां इसमें लिप्त हो जाती हैं। उस अवस्था में, वासनाओं के अलावा किसी और चीज के लिए [दिल और दिमाग में] कोई जगह नहीं बचेगी। यदि आत्मा उस अवस्था में छीन ली जाती है (मर जाती है), तो किसी के हृदय के भोग के कारण ईश्वर के अलावा किसी और पर ध्यान केंद्रित किया गया होगा। यह एक और भगवान के बीच पर्दे का एक रूप है। घूंघट [इस तरह जो ईश्वर से दूरदर्शिता का प्रतीक है] [दिव्य] दंड को आमंत्रित करता है क्योंकि जो आग भगवान द्वारा जलाई जाती है वह घूंघट के लोगों के लिए है [दिव्य दूरदर्शिता की]। एक विश्वासी जिसके पास एक स्वस्थ हृदय है [आंतरिक आध्यात्मिक बीमारियों से मुक्त], दुनिया (सांसारिकता) के प्रति बेखबर है [इसमें अपनी जिम्मेदारियों को छोड़कर], और पूरे दिल से भगवान पर ध्यान केंद्रित करता है, यह आग ऐसे व्यक्ति से कहती है, "हे विश्वासी! मेरे ऊपर से (शांति से) गुजरो। आपकी रोशनी ने मेरी लपटों को बुझा दिया है।

बुरे अंत के कारण: वे कारण जो किसी को बुरे अंत तक ले जाते हैं, असंख्य हैं और उन्हें शामिल नहीं किया जा सकता है, लेकिन सामूहिक रूप से निम्नानुसार संकेत दिया जा सकता है:

पहला कारण - संदेह और इनकार: यह निश्चित रूप से जाना जाना चाहिए कि जो व्यक्ति ईश्वर, उसके भविष्यवक्ताओं और उसकी [प्रकट] पुस्तकों में सरल विश्वास से वंचित है और वाद-विवाद और तर्क-वितर्क में लिप्त है, वह उस खतरे का सामना करता है जिसका हमने संकेत दिया है [एक अशुभ अंत होने का]। ऐसे व्यक्ति की उपमा किसी ऐसे व्यक्ति की होती है जिसका जहाज समुद्र के बीच में पलट गया है और अब समुद्र की विद्रोही लहरों से घिरा हुआ है। ये लहरें हर जगह एक के चारों ओर घूमती हैं। ऐसा शायद ही कभी होता है कि कोई [ऐसी स्थिति में] सुरक्षित रूप से किनारे पर पहुंच जाता है क्योंकि उस स्थिति में अधिकांश लोग मर जाते हैं (डूब जाते हैं)। इसीलिए, दिव्य अस्तित्व और गुणों की वास्तविकता की खोज करना शुद्ध अज्ञानता है और यह खतरों के समुद्र में धकेलने के समान है। लेकिन जो लोग बुद्धि की सीमाओं से बाहर निकलते हैं और आध्यात्मिक अनावरण (रोशनी) के प्रकाश तक पहुंच रखते हैं जो भविष्यद्वाणी और ज्ञान के क्षितिज पर चमकता है [सफलतापूर्वक सुरक्षा के तट पर पहुंचते हैं]। हर आम आदमी के लिए इस पूर्णता तक पहुंचना संभव नहीं है क्योंकि बहुत कम लोग इस स्तर को प्राप्त करते हैं। इसलिए, वाद-विवाद और तर्क-वितर्क का मार्ग कई खतरों से भरा है। एक बार जब वे लोग इन खतरों से सुरक्षित हो जाते हैं जो सरल हैं और नरक की आग के डर से बाहर हैं, तो ईश्वरीय आज्ञाकारिता में व्यस्त हो जाते हैं। वे बहस की अनावश्यक बातों पर अपना समय बर्बाद नहीं करते हैं।

संदेह और इनकार के कारण [बुरे] अंत के कारण का दूसरा रूप यह है कि वास्तविकता में विश्वास कमजोर है, और दुनिया का प्यार दिल पर हावी है। विश्वास की कमजोरी की हद तक ईश्वर का प्रेम भी कमजोर रहेगा लेकिन उस हद तक सांसारिकता का प्रेम प्रबल होगा। यह शक्ति इस हद तक होगी कि

परमेश्वर के प्रेम के लिए हृदय में कोई क्षमता नहीं बचेगी, बल्कि, यह प्रेम एक ऐसे विचार की स्थिति को अपनाएगा जो कुछ क्षणों के लिए पैदा होता है और समाप्त हो जाता है। इसका प्रभाव इतना मजबूत नहीं है कि निचले स्व का विरोध कर सके और उसे शैतानी मार्ग से भटका सके। इस स्थिति का स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि मनुष्य सिर से पैर तक वासनाओं में इस हद तक डूब जाता है कि उसका हृदय कठोर और काला हो जाता है। तब यह अंधकार और कठोरता [हृदय का] पापों के अनुपात में इस हद तक बढ़ जाता है कि विश्वास का दीपक, जो एक फीकी रोशनी निकाल रहा था, अचानक बुझ जाता है और किसी को यह महसूस भी नहीं होता है कि उसके हृदय में विश्वास का कोई प्रकाश नहीं बचा है। [नतीजतन,] अंधकार व्यक्ति का स्वभाव, स्वभाव और उद्देश्य बन जाता है। मृत्यु के संकट में, परमेश्वर के प्रेम में यह कमजोरी और भी अधिक बढ़ जाती है क्योंकि व्यक्ति को दुनिया से आसन्न अलगाव का एहसास होता है, यानी उसका प्रिय, अपने हृदय पर हावी होता है। वियोग का यह अहसास व्यक्ति को दर्द का एहसास कराता है और उस समय व्यक्ति के दिल में एक विचार पैदा होता है कि मृत्यु के कारण एक और दुनिया के बीच अलगाव होगा और मृत्यु ईश्वर से है। इसलिए, कोई मृत्यु को बुरा मानता है और यहां एक खतरा है कि वह दुनिया के प्रेम के लिए अपने जुनून में भगवान के साथ दुश्मनी करना शुरू कर सकता है। इसका उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति का है जो अपने बेटे से थोड़ा प्यार करता है लेकिन अपने धन से बहुत प्यार करता है। ऐसे में अगर बेटा अपनी दौलत बर्बाद कर देता है तो उसके पास अपने बेटे के लिए जो थोड़ा सा प्यार था वह नफरत में बदल जाएगा और वह अपने बेटे को अपना दुश्मन मानने लगेगा। यदि किसी की आत्मा को उस समय छीन लिया जाता है जब उसके हृदय में ईश्वर के प्रति घृणा या शत्रुता की भावना बढ़ रही है, तो यह स्पष्ट है कि उसका अशुभ अंत होगा और वह हमेशा के लिए बर्बाद हो जाएगा। इस विवरण से यह सिद्ध होता है कि इस स्थिति में, किसी का बुरा अंत हुआ क्योंकि उसका हृदय संसार के प्रेम से हावी था, और उसका झुकाव सांसारिक साधनों की ओर था, और उसके विश्वास में कमजोरी थी जिसके कारण, परमेश्वर का प्रेम भी कमजोर था। इससे यह सीखा जाता है कि यदि कोई अपने हृदय में संसार के प्रेम को वश में पाता है और परमेश्वर का प्रेम प्रबल होता है, भले ही संसार का प्रेम हृदय में [कुछ हद तक] मौजूद हो, तो वह इस खतरे से बहुत दूर है।

दूसरा कारण - पाप: अब बुरे अंत के दूसरे कारण का उल्लेख किया जाएगा। यह कारण [परमेश् वर के] संदेह और अस्वीकृति की स्थिति में मरने की तुलना में अपेक्षाकृत हल्का है, और यह नरक में अनन्त रूप से रहने की गारंटी नहीं देता है। इस प्रकार के अंत के दो कारण हैं - एक है पापों की प्रचुरता जबकि विश्वास मजबूत है, दूसरा विश्वास की कमजोरी है जबकि पाप कम हैं। पहले [उप] कारण के बारे में विवरण, जो पापों की प्रचुरता है, यह है कि कोई पाप करता है क्योंकि वह वासनाओं से ग्रस्त होता है और लालसा और आदत के कारण, वासनाएं हृदय में मजबूती से बैठ जाती हैं। जिन चीजों का कोई जीवन भर आदी रहा है, वे उसी क्षण याद आती हैं। इसलिए, यदि कोई [ईश्वरीय] आज्ञाकारिता की ओर प्रवृत्त है, तो वह मृत्यु के समय भी [दिव्य] आज्ञाकारिता के प्रति चौकस रहता है, इसे याद करता है और इसका उल्लेख करता है। जिसका मन पापों की ओर होता है, वह मृत्यु के समय भी हृदय पर हावी हो जाता है। ऐसा भी होता है कि आत्मा को ऐसी स्थिति में ले जाया जाता है जब किसी के दिल में किसी सांसारिक वासना या

पाप का प्रभुत्व होता है। इस तरह व्यक्ति ईश्वर से पर्दा बन जाता है और अशुभ अंत के पक्ष में होने का बड़ा खतरा होता है।

यदि किसी के हृदय में परमेश्वर का भय नहीं है, तो इसका कारण यह नहीं है कि उसके पास बहुत सारे गलत काम हैं, बल्कि इसका कारण यह है कि उसका हृदय वासनाओं और लालसाओं से रहित नहीं है। बल्कि, कोई व्यक्ति निम्न स्व (नफ्स) की इच्छाओं के अधीन है, दुर्भाग्य उस पर हावी है [अपनी लापरवाही और गलत कामों के कारण] और यह किसी को हृदय की लापरवाही को देखने की अनुमति नहीं देता है, [अंततः] मृत्यु के प्रति निकटता व्यक्ति को जगाती नहीं है, पापों की प्रचुरता किसी के आंतरिक अस्तित्व में हलचल पैदा नहीं करती है, भयभीत [परमेश्वर के सेवकों] की स्थिति को देखने से हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, और बुरे अंत का भय किसी को पाप करने से नहीं रोकता है। यह अजीब है कि जब हम सांसारिक धन को जमा करना चाहते हैं, तो हम खेती करते हैं, पौधे लगाते हैं, व्यापार करते हैं, समुद्र में जहाजों को चलाते हैं, रेगिस्तान में घोड़ों को सरपट दौड़ाते हैं, और यात्रा की कठिनाइयों और कष्टों को सहन करते हैं [सांसारिक लाभ के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए]। इसी तरह, यदि हम बौद्धिक पद चाहते हैं, तो हम ज्ञान की तलाश करते हैं, [ज्ञान के बिंदुओं] को दोहराने और याद करने के लिए पूरी रात जागते हैं, अपने जीविका की खोज के लिए प्रयास करते हैं और संघर्ष करते हैं, हमें जीविका प्रदान करने के भगवान के वादे पर भरोसा नहीं करते हैं, हम अपने घरों में जीविका की प्रतीक्षा में नहीं बैठते हैं, और केवल प्रार्थना नहीं करते हैं, "हे परमेश्वर! हमें जीविका दें!" हालाँकि, जब हमारे सामने [परलोक के] अनन्त प्रभुत्व के बारे में प्रश्न आता है या स्वर्ग का उल्लेख किया जाता है, तो हम केवल जीभ से यह कहकर संतुष्ट होते हैं, "हे परमेश्वर! हमें क्षमा करें, हम पर दया करें!", भले ही महान प्राणी, जिस पर हमें भरोसा है, खुले तौर पर घोषणा करता है:

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَـٰنِ إِلَّا مَا سَعَىٰ

"और मनुष्य को केवल वही मिलेगा जिसके लिए उसने प्रयास किया है। (कुरान, अध्याय 53, श्लोक 39)

وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِٱللَّهِ ٱلْغَرُورُ

"ऐसा न हो कि धोखेबाज (शैतान) तुम्हें परमेश्वर के बारे में भ्रम में डाल दे। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 5)

[दुर्भाग्य से,] ये सभी आयतें न तो हमें चेतावनी देती हैं और न ही हमें अहंकार और [केवल] इच्छाओं की घाटियों से बाहर निकालती हैं [उनके प्रति हमारी अपनी बेखबर होने के कारण]। वास्तव में, कार्यों के बिना मोक्ष की आशा रखना और यह निश्चित होना कि हमने [आवश्यक] कार्यों को करने के बाद मोक्ष प्राप्त कर लिया है, बहुत नुकसान की बात है।

यदि कोई ध्यान से देखता है और अपने स्वयं के आंतरिक अस्तित्व की जांच करता है, तो उसे पता चलेगा कि यह विभिन्न प्रकार के जंगली जानवरों और जहरीले प्राणियों जैसे क्रोध, वासना, शत्रुता, ईर्ष्या, अहंकार, आत्म-धार्मिकता आदि से भरा हुआ है। ये सभी आंतरिक गुण (चरित्र लक्षण और आंतरिक स्वभाव) ऐसे जानवर हैं जो लापरवाही की स्थिति में हर समय एक पर हमला करते हैं। हालांकि, मनुष्य इन आंतरिक जानवरों और हानिकारक जानवरों की पाशविकता से यातना को महसूस और महसूस नहीं करते हैं। जब [मृत्यु पर] पर्दा हटा दिया जाएगा, तो तुम देखोगे कि इन [आंतरिक] जानवरों ने तुम्हें कितना नुकसान पहुंचाया है। उस समय, आपको पता चल जाएगा कि आपको इन आंतरिक जानवरों से खुद को बचाने की सलाह क्यों दी गई थी। यदि तुम इन [आंतरिक] जानवरों को नियन्त्रित करना चाहते हो या इन हानिकारक जानवरों को मारना चाहते हो, तो तुम्हें मृत्यु से पहले उन्हें नियंत्रित करने की आवश्यकता होगी, और तुम्हें संसार से अपने स्वयं के निधन से पहले उनके उन्मूलन की व्यवस्था करने की आवश्यकता होगी। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो याद रखें, वे अंत में आपको खा जाएंगे।

अध्याय 14- ईश्वर के सामने पूर्ण आवश्यकता की विनम्रता पैदा करना, गरीबी को सहन करना, और सांसारिकता और भौतिकवादी जुनून से परहेज करना

लालच और भौतिकवाद हमारे युग की दो महामारियां हैं, दोनों व्यक्तियों और राष्ट्रों के स्तर पर। आत्मा की ये दो आंतरिक बीमारियां, व्यक्तियों और राष्ट्रों को अंतहीन लालच की ओर ले जाती हैं, जिससे आत्मा खालीपन हो जाता है, और संघर्ष और युद्ध अनुचित रूप से दूसरों के अधिकार को छीनने और जब्त करने के लिए प्रेरित करते हैं, आपसी दुश्मनी को बढ़ावा देते हैं और घृणा और अभावों को बढ़ावा देते हैं जो व्यक्तिगत स्तर पर आंतरिक शांति और शांति और सामूहिक स्तर पर राष्ट्रों और समुदायों के बीच सौहार्द की अनुमति नहीं देते हैं। इस तरह का लालच कुछ में गरीबी और हताशा को बढ़ावा देता है जबकि अन्य विलासिता में आनंद लेते हैं। इन दो दुर्बल करने वाली व्यक्तिगत और सामूहिक बीमारियों का इलाज ईश्वर के सामने हमारी आवश्यकता का बोध करना, अनुग्रह और धैर्य के साथ गरीबी को सहन करना, और सांसारिकता और भौतिकवाद से दूर रहना है।

ईश्वर के सामने पूर्ण आवश्यकता की विनम्रता, धैर्य के साथ गरीबी को सहन करना, अपनी भलाई के लिए दृढ़ता और सांसारिकता और भौतिकवादी जुनून से दूर रहना, महान आंतरिक गुण और आध्यात्मिक गुण हैं जो आत्मा की उदारता की ओर ले जाते हैं, जिसमें व्यक्ति किसी से बदले में कुछ भी नहीं चाहते हुए, शब्द के हर अर्थ में अपार दान का स्रोत बन जाता है। दूसरों के पास जो कुछ भी है, उसके प्रति इस तरह की बेखबरी, ईमानदारी, सच्चाई, उदारता, गरीबी या अभाव से निडरता, ईश्वर पर भरोसा और निर्भरता, धैर्यवान दृढ़ता और ईमानदार प्रयास, विशेष रूप से गरीबी में, लोगों और राष्ट्रों के बीच आंतरिक और बाहरी शांति और कई अन्य सकारात्मक आंतरिक गुणों की ओर ले जाती है। ग़ज़ाली ने अपनी *महान कृति" इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे खंड या चौथाई में चौथी पुस्तक में इस प्रमुख विषय का एक उत्कृष्ट और व्यावहारिक उपचार प्रदान किया है, जिसे यहां संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है [20]:

यह ज्ञात होना चाहिए कि संसार (सांसारिकता) ईश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण है। इसके धोखे में पड़ने के बाद कई लोग गुमराह हो गए हैं और कई लोग इसके धोखे में फंसकर ठोकर खा चुके हैं। इसकी मित्रता पापों और बुराइयों की जड़ है, और इसका विरोध, सभी अच्छे कर्मों और अच्छाइयों का मूल है। यहां हम सांसारिकता से दूर रहने और इससे परहेज अपनाने की उत्कृष्टता के बारे में बताएंगे क्योंकि यह आंतरिक रचनात्मक और लचीलापन प्रदान करने वाले गुणों (*मुंजियात*) का केंद्र है [जो व्यक्तिगत और सामूहिक स्तरों पर सकारात्मक आंतरिक परिवर्तन लाते हैं]। मुक्ति की कोई आशा नहीं है [इस लोक और परलोक की समस्याओं से] जब तक कि हृदय दुनिया (सांसारिक आसक्ति) से पूरी तरह से अलग न हो जाए और इसके दो रूप हैं: या तो दुनिया एक से दूर रहती है जिसे गरीबी कहा जाता है या एक स्वेच्छा से खुद को सांसारिकता से अलग कर लेता है जिसे संयम (ज़ुहद) कहा जाता है। इन दोनों रूपों में [आध्यात्मिकता में] शाश्वत सुख और अनन्त विजय (सादाह), सफलता [सांसारिक जीवन में] और मोक्ष [परलोक में] की प्राप्ति में मदद करने में अलग-अलग डिग्री हैं। सबसे पहले, हम गरीबी [आध्यात्मिक और भौतिक] और संयम [सांसारिकता से], उनके प्रकार, स्थितियों और [दिव्य] आदेशों की वास्तविकता की व्याख्या करेंगे। पहले भाग में हम गरीबी पर चर्चा करेंगे और दूसरे भाग में संयम की चर्चा करेंगे।

गरीबी या पूर्ण आवश्यकता की वास्तविकता, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, ईश्वर और आध्यात्मिक यात्री की आंतरिक अवस्थाओं के सामने

गरीबी उन चीजों की कमी का नाम है जिनकी जरूरत है। जिन चीजों की जरूरत नहीं है, उन्हें गरीबी नहीं कहा जाता है। इसी तरह, यदि आवश्यक चीजें मौजूद हैं और जरूरतमंद व्यक्ति का उन पर नियंत्रण है तो ऐसे व्यक्ति को गरीब नहीं कहा जाएगा। यदि तुम इस बात को समझ गए हो तो तुम इस तथ्य पर संदेह नहीं करोगे कि हर अस्तित्व जो परमेश्वर के अलावा अन्य है, गरीब है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, इसके अस्तित्व की आवश्यकता है और किसी भी चीज़ की उपस्थिति या अस्तित्व पूरी तरह से ईश्वर की कृपा और इच्छा पर निर्भर है। यदि कोई चीज अस्तित्व के दायरे में है और उसे अपने अस्तित्व के लिए किसी अन्य अस्तित्व की आवश्यकता नहीं है, तो वह पूरी तरह से समृद्ध है [या आत्मनिर्भर जो हर किसी और हर चीज से बेखबर है] और केवल एक ही ऐसा अस्तित्व है जो ईश्वर का अस्तित्व है। ईश्वर का अस्तित्व आत्मनिर्भर है, उसका अस्तित्व किसी पर या किसी भी चीज़ पर निर्भर नहीं है, उसके अलावा हर चीज को अपने अस्तित्व के लिए इस एक प्राणी की आवश्यकता है। ईश्वर ने कुरान में इसी वास्तविकता की ओर इशारा किया है:

وَٱللَّهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ

"और ईश्वर अमीर और आत्मनिर्भर है (किसी को या किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, जो बिना किसी आवश्यकता के मौजूद हर चीज का मालिक है) लेकिन आप सभी गरीब गरीब हैं [उसके सामने और हर चीज के लिए उसकी जरूरत है, इस हद तक कि आपका अपना अस्तित्व उस पर निर्भर है]। (कुरान, अध्याय 47, श्लोक 38)

यहां हमारा उद्देश्य ईश्वर के सामने गरीबी या आवश्यकता के पूर्ण अर्थ में तल्लीन करना नहीं है, इसके बजाय, हमारा उद्देश्य विशेष रूप से धन और भौतिक संपत्ति की गरीबी की व्याख्या करना है, अन्यथा, इसके बारे में सोचना है, एक सेवक [भगवान के] की अनगिनत जरूरतें हैं, इनमें से कुछ जरूरतें ऐसी हैं कि वे धन के साथ पूरी हो जाती हैं और विशेष रूप से उन्हें समझाना यहां हमारा उद्देश्य है। इसलिए, हम कहते हैं कि एक व्यक्ति जिसके पास धन या भौतिक संपत्ति नहीं है, वह उस सामग्री के संबंध में गरीब है जो उसके पास नहीं है लेकिन उसे इसकी आवश्यकता है। फिर यदि हम इस पर विचार-विमर्श करते हैं, तो हम पाते हैं कि मनुष्य के पास गरीबी में पांच अवस्थाएँ हैं:

पहला राज्य: यह सबसे अच्छा राज्य है। इसका नतीजा यह है कि अगर किसी को धन मिलता है, तो वह उसके बारे में बुरा महसूस करता है और उसकी उपस्थिति से परेशान होता है, इसे स्वीकार करने में संकोच करता है, इसे बुरा मानता है, और खुद को इसकी बुराई से बचाने की कोशिश करता है। इस अवस्था को [सांसारिकता से] परहेज (ज़ुहद) कहा जाता है और जिस व्यक्ति में यह अवस्था होती है उसे संयमी (जाहिद) कहा जाता *है*।

दूसरी स्थिति: क्या किसी को धन की इतनी इच्छा नहीं है कि वह उसे प्राप्त करने से प्रसन्न हो और उसे प्राप्त करने से उसे इतना घृणा न हो कि उसे प्राप्त करने के लिए उसे पीड़ा हो। इसके बजाय, किसी में इतनी हिम्मत होती है कि अगर उसे मिल जाए तो वह उसे छोड़ सकता है। ऐसी स्थिति के स्वामी को [परमेश्वर की इच्छा के साथ] सहमत होना कहा जाता है।

तीसरी स्थिति: क्या कोई व्यक्ति धन प्राप्त न करने के बजाय उसे प्राप्त करना पसंद करता है क्योंकि हृदय का इसके प्रति कुछ झुकाव होता है, लेकिन क्या यह इतना मजबूत नहीं है कि वह इसके लिए प्रयास करे। इसके बजाय, यदि किसी को कठिनाई और कड़ी मेहनत के बिना यह प्राप्त हो जाता है, तो वह इससे प्रसन्न होता है, लेकिन यदि किसी को इसे प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो वह इसे खोजने में लिप्तता करना बंद कर देता है। ऐसी अवस्था वाले व्यक्ति को संतुष्ट कहा जाता है

क्योंकि वह उसके साथ जो कुछ भी मौजूद है उससे संतुष्ट है और अधिक धन प्राप्त करने की प्रवृत्ति होने के बावजूद, जो मौजूद नहीं था उसे प्राप्त करने के लिए संघर्ष नहीं किया।

चौथा राज्य: क्या कोई व्यक्ति अपनी अक्षमता और कमजोरी के कारण धन की तलाश नहीं करता है, अन्यथा हृदय में इच्छा होती है और व्यक्ति हर उस रणनीति पर कार्य करता है जिससे उसे कुछ धन मिल सकता है, भले ही इससे कठिनाइयाँ हो सकती हैं, या कोई धन की तलाश में लगा हुआ है लेकिन प्रयास करने के बाद भी उसे नहीं मिलता है। इस अवस्था के स्वामी को लालची कहा जाता है।

पांचवीं स्थिति: क्या किसी को धन की आवश्यकता है, [और भौतिक संपत्ति] आवश्यकता से वंचित है। ठीक वैसे ही जैसे कोई भूखा है लेकिन उसके पास रोटी नहीं है या जिसके पास कपड़े नहीं हैं। जिसके पास यह अवस्था होती है उसे आवश्यकता से मजबूर कहा जाता है, चाहे किसी की खोज में इच्छा कमजोर हो या प्रबल। ऐसा शायद ही कभी होता है कि कोई जरूरत के साथ मजबूर होने की स्थिति में हो और उस चीज की ओर झुकाव न हो जिसके लिए वह मजबूर हो।

ये पांच अवस्थाएं हैं [गरीबी के मामले में मनुष्यों की]। इन अवस्थाओं में से सबसे उच्च संयम (जुहद) है और यदि मजबूरी [आवश्यकता से] को संयम के साथ जोड़ा जाता है तो यह एक अत्यंत उच्च स्थिति है [भौतिक संपत्ति में आध्यात्मिकता की]। फिर एक ऐसी अवस्था होती है जो इन सभी पांच अवस्थाओं से ऊँची होती है और वह अवस्था होती है जहाँ एक सेवक धन और भौतिक संपत्ति की उपस्थिति या अभाव को समान मानता है। यदि धन प्राप्त होता है, तो उससे हृदय न तो प्रसन्न होता है और न ही दुखित होता है, इसी प्रकार यदि धन न मिलता है तो उससे न तो हृदय प्रसन्न होता है और न ही दुखित होता है। यदि किसी व्यक्ति की यह अवस्था है जहां दुनिया के सभी खजाने एकत्र किए जाते हैं और एक को सौंप दिए जाते हैं तो किसी को इससे कोई नुकसान नहीं होता है क्योंकि वह समझता है कि सभी खजाने [आकाश और पृथ्वी के] भगवान के हैं, भले ही, वे किसी के कब्जे (कब्जे) में हैं - आज उनके पास है, कल वे किसी और के पास जाएंगे, इसलिए दोनों [कोई भौतिक संपत्ति होने या न होने की अवस्थाओं] के बीच कोई अंतर नहीं है। ऐसे व्यक्ति को बेखबर कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति धन और भौतिक संपत्ति होने या न होने से बेखबर होता है। बेखबर और समृद्ध अलग-अलग अर्थ वाले दो शब्द हैं। [शब्द] अमीर या आत्मनिर्भर परमेश्वर पर और [बहुत कम हद तक] परमेश्वर के सेवकों पर लागू होता है जिनके पास बहुत अधिक धन है। ये लोग धन की प्रचुरता से प्रसन्न होते हैं क्योंकि उन्हें इस धन को अपने पास रखने की आवश्यकता होती है। इस संबंध में, उन्हें गरीब कहा जा सकता है। हालांकि, जो व्यक्ति बेखबर है, वह न तो इस बात की परवाह करता है कि धन उसके कब्जे में आता है और न ही इस धन के किसी और के पास जाने की परवाह करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि न तो किसी को धन होने के कारण दर्द महसूस होता है ताकि उसे इससे छुटकारा पाने की आवश्यकता हो और न ही कोई इससे प्रसन्न हो ताकि उसे रखने के लिए

मजबूर किया जा सके और ऐसा भी नहीं है कि उसके पास धन नहीं है जिससे वह इसे रखने के इच्छुक हो। इस बेखबर [धन के लिए] व्यक्ति को अमीर या आत्मनिर्भर कहना उचित नहीं है क्योंकि किसी की अनभिज्ञता के बावजूद, किसी को बहुत सी चीजों की आवश्यकता होती है [जैसे कि धन के प्रति बेखबर रहने की स्थिति को बनाए रखने के लिए भगवान की सहायता]।

संयम और बेखबर: संयम [सांसारिकता से] एक जबरदस्त [आध्यात्मिक] डिग्री है, बल्कि, इसे धर्मी और पवित्र की उच्चतम डिग्री के रूप में कहा जा सकता है, जबकि, बेखबर [जो धन होने या इसे समान नहीं मानता है] ईश्वर (ज्ञानवादी) के अंतरंग लोगों में से एक है। इस संबंध में, संयम बेखबर लोगों के लिए हानिकारक है क्योंकि [जैसा कि कहा जाता है], "धर्मपरायणों के धार्मिक कार्य परमेश्वर के अंतरंग लोगों के लिए [के बराबर] पाप हैं"। इसका कारण यह है कि संसार के प्रति घृणा (सांसारिकता) परहेज में पाई जाती है और यह इसमें लिप्त होने के बराबर है, जैसे संसार का प्रेमी संसार में लिप्त होता है और ईश्वर के अलावा किसी अन्य चीज़ में लिप्त होना एक और ईश्वर के बीच का पर्दा है। आपके और ईश्वर के बीच कोई दूरदर्शिता नहीं है ताकि इस दूरदर्शिता को "पर्दा" कहा जा सके, इसके बजाय, वह आपकी अपनी गले की नस की तुलना में आपके करीब है। उसे किसी भी स्थान या स्थान पर भी प्रतिबंधित नहीं किया गया है ताकि आकाश और पृथ्वी आपके और परमेश्वर के बीच एक पर्दा बन जाएं। इसके बजाय, आपकी व्यस्तताएँ [और जुनून] जो परमेश्वर के अलावा अन्य से संबंधित हैं, वे पर्दे हैं। अपने निम्न स्व और वासनाओं में भोग करना भी ईश्वर के अलावा अन्य में भोग के समान है, क्योंकि आप हमेशा अपने स्वयं (*नफ्स*) और वासनाओं में लिप्त रहते हैं, इसलिए, आप भगवान से छिपे हुए हैं। संक्षेप में, जो अपने स्वयं के प्रेम (*नफ्स)* में लिप्त है, वह ईश्वर से भटक गया है, उसी तरह, यदि कोई स्वयं से घृणा करने में व्यस्त है तो ऐसा व्यक्ति भी ईश्वर पर केंद्रित नहीं है। इसका दृष्टांत एक सभा का है जिसमें प्रेमी और प्रिय दोनों मौजूद होते हैं जहां प्रतिद्वंद्वी चलता है। यदि प्रेमी का दिल प्रिय के प्रतिद्वंद्वी पर केंद्रित हो जाता है और प्रतिद्वंद्वी के बारे में बुरा सोचने लगता है, तो यह कहा जाएगा कि राज्य में प्रेमी प्रतिद्वंद्वी से नाराज होने में व्यस्त है, व्यक्ति प्रिय को देखने के आनंद से वंचित है। यदि प्रेमी प्रिय के प्रेम में डूबा हुआ होता, तो कोई प्रतिद्वंद्वी की ओर जरा सा भी ध्यान नहीं देता, न ही कोई प्रतिद्वंद्वी की रुकावट पर कोई ध्यान देता या अपनी नापसंदगी को व्यक्त करने में कभी भी बर्बाद नहीं करता। इसलिए, जैसे प्रिय की उपस्थिति में गैर-प्रिय को प्यार से देखना या यहां तक कि गैर-प्रिय पर कोई ध्यान देना, प्यार में भागीदारों (शिर्क) को जिम्मेदार ठहराने के समान है और प्रेमी में एक दोष है। [प्रेम की] पूर्णता इस बात में है कि पसंद या नापसंद में गैर-प्रिय पर कोई ध्यान न दें। जिस तरह दो प्यार दिल में एक साथ नहीं जुड़ सकते, उसी तरह दुश्मनी और प्यार को एक साथ नहीं जोड़ा जा सकता। जो दुनिया के प्रेम में लिप्त है, वह अपनी लापरवाही की स्थिति में [ईश्वर के लिए] दूरदर्शिता के मार्ग पर चल रहा है, और जो इसके प्रति बेखबर है (यानी, सांसारिकता), वह ईश्वर से निकटता के मार्ग पर चल रहा है क्योंकि यह आशा की जाती है कि व्यक्ति ईश्वरीय उपस्थिति की स्थिति प्राप्त करेगा।

इन विवरणों से, आप जानते होंगे कि कुल छह डिग्री [गरीबी के संदर्भ में मनुष्यों की] हैं जिनमें उच्चतम डिग्री उस व्यक्ति की है जो बेखबर है फिर परहेज करता है फिर सहमत होता है फिर संतुष्ट होता है फिर अंत में, लालची। जहां तक बाध्य [व्यक्ति] का संबंध है, संयम, ईश्वरीय इच्छा और संतोष से सहमत होना, इन सभी की कल्पना की जा सकती है और इसलिए, बाध्य व्यक्ति की डिग्री उस पर निर्भर करती है। गरीब शब्द सभी पांच डिग्री के लोगों के लिए लागू होता है। भौतिक अर्थों में बेखबर व्यक्ति को गरीब कहना सही नहीं है, हालांकि, ऐसे व्यक्ति पर इस शब्द को लागू करना सही है क्योंकि बेखबर को यह गहरी समझ है कि सामान्य रूप से सभी मामलों में और विशेष रूप से भौतिकवाद के प्रति बेखबर होने में, व्यक्ति को ईश्वर की आवश्यकता होती है। बेखबर व्यक्ति को गरीब कहना किसी ऐसे व्यक्ति को [परमेश्वर का] सेवक कहने जैसा है, जिसे परमेश्वर के सामने किसी की दासता की यह समझ है, भले ही दास शब्द सामान्य रूप से सभी सृष्टिओं पर लागू होता है। सभी लापरवाह और लापरवाह व्यक्तियों की तुलना में, गरीब शब्द को किसी व्यक्ति पर लागू करना अधिक उचित है, जिन्हें परमेश्वर के सामने किसी की गरीबी और [हर चीज के लिए] पूर्ण आवश्यकता की गहरी समझ है और इसलिए वह इस नाम के अधिक योग्य है। इसलिए, गरीब शब्द दोनों अर्थों में आम है [भौतिक संपत्ति की कमी के साथ-साथ भगवान की पूर्ण आवश्यकता के रूप में]।

गरीबी की उत्कृष्टता या पूर्ण आवश्यकता, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, ईश्वर के सामने

अब्दुल्लाह बिन उमर (रल्लम उन पर प्रसन्न हो) ने बताया कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने साथियों से पूछा कि लोगों में से कौन अच्छा है और उन्होंने जवाब दिया, "वह धनी व्यक्ति जो अपने धन में (दान में) और अपने आप में (ईश्वरीय मार्ग में प्रयास करके) ईश्वर के अधिकार को पूरा करता है। पैगंबर ने कहा, "ऐसा व्यक्ति अच्छा है लेकिन मैं जिसके बारे में पूछ रहा हूं वह यह व्यक्ति नहीं है। साथियों ने पूछा, "हे ईश्वर के पैगंबर! फिर कौन सा व्यक्ति बेहतर है? पैगंबर ने जवाब दिया, "वह गरीब जो अपनी मेहनत से हार मानता है"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अद-दयालामी*)। एक प्रसिद्ध परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

يدخل فقراء امتى الجنة قبل اغنيائهم بخمس مائة عام

"मेरे राष्ट्र के गरीब स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, अमीरों से पांच सौ साल पहले [अमीर के रूप में उनके धन की दिव्य जवाबदेही के लिए पीछे रखा जाएगा और उन्होंने इसे कैसे खर्च किया या नहीं किया]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिज़ी* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इस परंपरा का अर्थ है कि एक गरीब जो संयमी है, धन की इच्छा रखने वाले अमीर से पांच सौ साल पहले स्वर्ग में प्रवेश करेगा। एक परंपरा के अनुसार, महादूत गेब्रियल ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से मुलाकात की और ईश्वर से यह संदेश दिया, "हे मुहम्मद! परमेश्वर तुम्हें अपना अभिवादन भेजता है और पूछता है, 'क्या तुम चाहते हो कि मैं पहाड़ों को सोने में बदल दूं और तुम जहाँ भी रहो वे तुम्हारे साथ चलें'। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपना सिर झुकाया और कहा:

يَاجِبْرَئِيْلُ إِنَّ الدُّنْيَا دَارُ مَنْ لَا دَارَ لَهُ وَمَالُ مَنْ لَا مَالَ لَهُ وَلَهَا يَجْمَعُ مَنْ لَا عَقْلَ لَهُ

فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ ثَبَّتَكَ اللّٰهُ بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ

"हे गेब्रियल! दुनिया उसका घर है जिसके पास घर नहीं है और जिसके पास धन नहीं है और यह उसके द्वारा संचित किया जाता है जिसके पास बुद्धि नहीं है। जिब्राईल ने कहा, "ऐ मुहम्मद! परमेश्वर ने आपको दृढ़ वचन पर दृढ़ बनाया है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *तिर्मिज़ी* अबू उमामा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों]। हदीस संग्रह *मुसनद अहमद में भी इसका वर्णन किया गया है*)

एक परंपरा में, यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) एक ऐसे व्यक्ति के पास से गुजरे जो अपनी यात्रा के दौरान जमीन पर सो रहा था। उसने उसे जगाया और कहा, "ऐ जो सो रहा है! उठो और परमेश्वर को स्मरण करो!" उसने जवाब दिया, "तुम मुझसे क्या चाहते हो? मैंने दुनिया के लोगों के लिए दुनिया छोड़ दी है! यीशु ने उत्तर दिया, "तो हे मित्र! सोते रहो"। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को प्रकट किया:

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ

"और उन चीजों को देखने के लिए अपनी आँखें मत उठाओ जो हमने विभिन्न समूहों [लोगों के] लाभ उठाने के लिए प्रदान की हैं, उनके लिए एक परीक्षा के रूप में, क्योंकि वे सांसारिक जीवन की चमक मात्र हैं। और तेरे रब की ओर से जो भोजन मिलता है, वह कहीं अधिक उत्तम और अनन्त है। (कुरान, अध्याय 20, श्लोक 131)

विशिष्ट प्रकार के गरीबों की उत्कृष्टता – सहमत, विवादित और सत्यवादी: पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

طُوْبٰى لِمَنْ هُدِيَ إِلَى الْإِسْلَامِ وَكَانَ عَيْشُهُ كَفَافًا وَقَنَعَ بِهِ

"खुशी की खबर उस व्यक्ति के लिए है जिसे ईश्वरीय इच्छा के प्रति समर्पण के मार्ग पर निर्देशित किया गया है, जिसकी अर्थव्यवस्था किसी की आवश्यकताओं के अनुसार है, और व्यक्ति उसी से संतुष्ट है"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *फदला इब्ने उबैद के अधिकार पर* हदीस संग्रह तिर्मिज़ी [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

يَامَعْشَرَ الْفُقَرَاءِ اَعْطُوا اللّٰهَ الرِّضٰى مِنْ قُلُوْبِكُمْ تَظْفَرُوْا بِثَوَابِ فَقْرِكُمْ وَاِلَّا فَلَا

"ऐ गरीबों के समूह! अपने दिल में भगवान से सहमत रहें ताकि आपको गरीबी का दिव्य प्रतिफल मिले, अन्यथा आपको यह नहीं मिलेगा। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू मंसूर अद-दयालामी* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

भगवान ने पैगंबर इश्माएल (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को एक दिव्य रहस्योद्घाटन प्रकट किया, "टूटे हुए दिल वाले लोगों द्वारा मुझे खोजें"। उसने पूछा, "वे कौन हैं? परमेश्वर ने उत्तर दिया, "वे गरीब हैं जो सच्चे हैं [परमेश्वर के सामने अपनी अत्यंत आवश्यकता में]"।

यह छिपा नहीं है कि संतोष के विपरीत लालच है। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "लालच [वास्तव में] गरीबी है और लोगों के साथ निराशा होना (उनसे कोई उम्मीद नहीं रखना) अमीरी है। जो लोगों के धन और संपत्ति से कोई अपेक्षा नहीं रखता है और संतोष को अपनाता है, वह उनसे बेखबर रहता है। अबू मसूद (रश्मा उस पर प्रसन्न हो) ने कहा, "हर दिन एक स्वर्गदूत [दिव्य] सिंहासन के नीचे से पुकारता है, 'हे आदम (मनुष्य) के पुत्र! आप जिस थोड़े से संतुष्ट हैं, वह उस बहुत कुछ से बेहतर है जो आपको विद्रोही बनाता है। अबू दर्दा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसकी बुद्धि में दोष न हो। इसलिए जब किसी की दुनिया (सांसारिक संपत्ति और धन) बढ़ती है, तो वह उससे बहुत खुश होता है, भले ही रात और दिन दोनों अपने युग (जीवन) के महल को ध्वस्त करने में व्यस्त रहते हैं और किसी को इसका कोई पश्चाताप नहीं होता है। यह अभागा व्यक्ति यह नहीं जानता है कि यदि किसी का शेष जीवनकाल घटता जाता है [जैसे-जैसे वह उम्र में बढ़ता है], तो भौतिक संपत्ति को बढ़ाने का क्या लाभ है? किसी बुद्धिमान व्यक्ति से पूछा गया, "धन क्या है?" जिस पर उस व्यक्ति ने जवाब दिया, "[यह] आपकी इच्छाओं और इच्छाओं को कम करने का कार्य है, और केवल आवश्यक (नंगी आवश्यकताओं) के साथ संतोष है"।

गरीबी और समृद्धि के बीच श्रेष्ठ क्या है, इसकी वास्तविकता: हमने धैर्य पर चर्चा में इस सिद्धांत का उल्लेख किया है, कि कुछ ऐसा जो अपने आप में उद्देश्य नहीं है, लेकिन किसी और चीज की प्राप्ति का उद्देश्य है, इसकी उत्कृष्टता और पूर्णता का अनुमान उद्देश्य की उत्कृष्टता और पूर्णता से लगाया जा सकता है। जिस तरह से एक उद्देश्य है, उसी तरह उस उद्देश्य को प्राप्त करने के साधन होंगे। इसीलिए, सांसारिक धन और संपत्ति को हतोत्साहित किया जाता है क्योंकि वे एक सेवक [भगवान के, यानी, एक

मनुष्य] को भगवान तक पहुंचने से रोकते हैं। इसी तरह, गरीबी भी अपने आप में उद्देश्य नहीं है, लेकिन इसकी तलाश की जाती है क्योंकि यह उस बाधा को दूर करती है जो किसी को ईश्वर तक पहुंचने से रोकती है। हालांकि, ऐसे कई धनी लोग हैं, जिनकी संपत्ति के कारण वे पैगंबर सुलैमान (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो), [भविष्यवक्ता साथी] उस्मान बिन अफ्फान (ईश्वर उनसे प्रसन्न हों) और अब्दुल रहमान बिन अवफ (ईश्वर उनसे प्रसन्न हों) की तरह ईश्वर से दूर नहीं हुए। दूसरी ओर, ऐसे कई गरीब हैं जिनकी गरीबी ने उन्हें उनके वास्तविक उद्देश्य [ईश्वर की खोज करने] से दूर कर दिया। संसार में मनुष्य का वास्तविक उद्देश्य यह है कि सेवक परमेश्वर से प्रेम करता है और उसके प्रति लगाव रखता है और उसके लिए लालसा रखता है। यह उद्देश्य केवल तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कोई ईश्वर की ज्ञान-विज्ञान (दिव्य निकटता, अंतरंगता और ज्ञान) प्राप्त कर ले, और ज्ञान के क्षेत्र में कदम रखना और इसे पार करना, [सांसारिक] जुड़ाव और उलझनों की उपस्थिति में संभव नहीं है। जिस तरह धन एक बाधा हो सकती है, उसी तरह गरीबी भी एक बाधा हो सकती है [ईश्वर से निकटता के मार्ग को पार करने में]। वास्तव में, ज्ञान और दिव्य अंतरंगता प्राप्त करने में वास्तविक बाधा दुनिया का प्रेम [और सांसारिकता] है जिसे दिव्य प्रेम के साथ जोड़ना असंभव है।

जिसके हृदय में किसी वस्तु का प्रेम होता है, वह उसमें डूबा हुआ है, चाहे वह उसके वियोग में डूबा हो या उसके सानिध्य में। तब कुछ लोग अलगाव में अधिक डूबे होते हैं और कुछ [अपने प्रिय व्यक्ति या चीज़ की] उपस्थिति में होते हैं क्योंकि यह सब उनकी परिस्थितियों और झुकावों के मतभेदों पर निर्भर करता है। दुनिया लापरवाह लोगों की प्यारी है [जो अपने अस्तित्व के वास्तविक उद्देश्य के लिए जीवित नहीं हैं]। जो लोग अपने प्रिय से बिछुड़ जाते हैं, वे प्राप्ति के चिंतन में डूबे रहते हैं और जिन्होंने अपने प्रिय की निकटता प्राप्त कर ली है, वे इसके संरक्षण में और उससे अधिक से अधिक निकटता का आनंद लेने में डूबे हुए हैं।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

إِنَّ رُوحَ الْقُدُسِ نَفَثَ فِي رُوعِي أَحْبِبْ مَنْ أَحْبَبْتَ فَإِنَّكَ مُفَارِقُهُ

"पवित्र आत्मा (महादूत गेब्रियल) ने मेरे दिल में यह डाल दिया है: जिसे भी [या जो भी] आप चाहते हैं, उससे प्यार करो, आप निश्चित रूप से इससे अलग हो जाएंगे।

इस भविष्यसूचक कथन में यह बताया गया है कि प्रिय से अलग होना [हमेशा] एक हृदय दहला देने वाली और अत्यंत तीव्र घटना (अनुभव) है। इसीलिए, तुम्हें उससे प्रेम करना चाहिए जिससे तुम्हें अलग नहीं होना पड़ेगा और वह प्रिय केवल परमेश्वर ही हो सकता है [और कोई और नहीं,] जो कभी भी तुमसे अलग नहीं होगा, और किसी ऐसी चीज़ से प्रेम नहीं करेगा जो सभी परिस्थितियों में तुमसे अलग होने के लिए बाध्य है और वह है दुनिया। यदि आप दुनिया से प्यार करते हैं तो आप भगवान से मिलना पसंद नहीं करेंगे

[परलोक में]। इसी तरह, आपकी मृत्यु उस स्थिति पर होगी जिसे आप इसे बुरा मानते हैं, और मृत्यु के कारण, अपने प्रिय (संसार, सांसारिक चीजें, आसक्ति, संबंध, धन और संपत्ति) के साथ आपका संबंध [स्थायी रूप से] टूट जाएगा। तब प्रिय से अलग होना इस हद तक दर्दनाक होता है कि हृदय में इसके लिए लगाव, लालसा और प्रेम होता है। जिसके पास संसार (सांसारिक साधन और संसाधन) है, वह उससे जुड़ा हुआ है। यह स्पष्ट है कि उस व्यक्ति की तुलना में जिसके पास दुनिया (सांसारिक साधन और संसाधन) भी नहीं है, लेकिन फिर भी इसे खोजने के लिए लालची है, ऐसे व्यक्ति को दुनिया से अलग होने पर अधिक दर्द और पीड़ा का सामना करना पड़ेगा। हमारे इरादे को अब तक इस विस्तृत विवरण से स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए था कि गरीबी श्रेष्ठ है और अपवादों के दो अवसरों को छोड़कर सभी रचनाओं के लिए अधिक उपयुक्त है: पहला, किसी की बेखबर [सांसारिकता के लिए] ऐसी है कि धन की उपस्थिति या अनुपस्थिति दोनों एक के बराबर हैं; दूसरे, जब कोई अपनी गरीबी में होता है, तो वह जीवन को जारी रखने के लिए केवल आवश्यक राशि से मदद मांगता है। यह इस बात पर चर्चा है कि गरीबी और समृद्धि के बीच क्या श्रेष्ठ है।

गरीबी की स्थिति में गरीबों के शिष्टाचार: गरीबों के कुछ आंतरिक और कुछ बाहरी शिष्टाचार होते हैं और वे किसी के कार्यों और लोगों के साथ मिलने से संबंधित होते हैं। हर गरीब के लिए इन शिष्टाचारों का पालन करना आवश्यक है।

आंतरिक शिष्टाचार: आंतरिक अस्तित्व का शिष्टाचार किसी की स्थिति [गरीबी की] का तिरस्कार नहीं करना है जिससे वह पीड़ित है। दूसरे शब्दों में, किसी को परमेश्वर के कार्य को [किसी की गरीबी की स्थिति के संबंध में] बुरा नहीं मानना चाहिए, क्योंकि वह इसे करने वाला है। किसी का निम्न स्व (*नफ्स*) गरीबी को बुरा मान सकता है, लेकिन इसलिए नहीं कि यह ईश्वर का कार्य है। बल्कि, कभी-कभी कोई भी परमेश्वर का आभारी होता है [इसके अच्छे प्रभावों के लिए, जैसा कि पहले वर्णित किया गया है]। यह [गरीबों और गरीबी के शिष्टाचार का] सबसे कम स्तर है और गरीबों के लिए इस पर कार्य करना अनिवार्य है, और इसके विपरीत कार्य करने के लिए [दैवीय रूप से] मना किया जाता है क्योंकि इससे गरीबी के लिए ईश्वरीय प्रतिपूर्ति बर्बाद हो जाती है।

इससे अधिक की डिग्री यह है कि कोई व्यक्ति अपनी गरीबी से सहमत है [क्योंकि यह ईश्वर की इच्छा है]। इससे भी अधिक मात्रा यह है कि कोई व्यक्ति गरीबी का साधक है और इससे खुश है क्योंकि वह धन की आपदाओं और हानियों से परिचित है, उसे ईश्वर पर पूरा भरोसा है, उसे यह निश्चितता है कि वह निश्चित रूप से अपनी [ईश्वरीय रूप से नियुक्त] जीविका प्राप्त करेगा, न तो अपनी आवश्यकताओं से अधिक की तलाश करता है और न ही वह आवश्यकता से अधिक राशि प्राप्त करना पसंद करता है। अली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने कहा, "भगवान गरीबी के माध्यम से दंड और पुरस्कार दोनों देते हैं। यदि ईश्वर का

प्रतिफल (इनाम) देना किसी के लिए है, तो इसका संकेत यह है कि किसी के पास अच्छे चरित्र लक्षण, नैतिकता, शिष्टाचार और आंतरिक स्वभाव हैं, व्यक्ति के पास ईश्वर की आज्ञाकारिता है, वह अपनी स्थिति के बारे में शिकायत नहीं करता है [दूसरों को गरीबी की], इसके बजाय व्यक्ति को गरीब बनाने के लिए ईश्वर का आभार व्यक्त करता है। यदि किसी को गरीबी के माध्यम से दंडित किया जा रहा है, तो इसका संकेत यह है कि वह बुरे स्वभाव और बदमिजाज हो जाता है, अपने प्रभु की आज्ञाकारिता को त्याग देता है [और उसकी अवज्ञा करना शुरू कर देता है], अपनी स्थिति के बारे में शिकायत करता है, अपनी नाराजगी और परमेश्वर के निर्णय को नापसंद करता है। इससे यह साबित होता है कि हर गरीब अच्छा नहीं होता है, बल्कि केवल वही गरीब प्रशंसनीय होता है जो किसी की गरीबी से नाराज नहीं होता है, बल्कि वह उसके लाभों से खुश और संतुष्ट होता है। यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि जब किसी सेवक [परमेश्वर के] को [भौतिक संपत्ति या धन के संदर्भ में] कुछ दिया जाता है, तो किसी को इसे तीन चीजों के साथ स्वीकार करने के लिए कहा जाता है: भोग, चिंताएं और चिंताएं, और विस्तारित जवाबदेही [न्याय के दिन भगवान के लिए]।

बाहरी शिष्टाचार: बाहरी शिष्टाचार जिनका एक गरीब व्यक्ति को पालन करने की आवश्यकता होती है, उनमें शामिल है किसी के सामने अपना जरूरतमंद हाथ न बढ़ाना, अपने बाहरी रूप को उतना ही अच्छा रखना ताकि लोग उसे जरूरतमंद न समझें, न तो किसी को अपनी स्थिति के बारे में किसी से शिकायत करें और न ही अपनी गरीबी को प्रदर्शित करें, बल्कि इसे जितना संभव हो सके गोपनीय रखें और यह भी छिपाएं कि वह अपनी गरीबी को गोपनीय रख रहा है। कार्यों में शिष्टाचार यह है कि एक गरीब को अपने धन के कारण अमीरों के सामने विनम्रता का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए, बल्कि उनके सामने गरिमापूर्ण रहना चाहिए। कम से कम, एक गरीब को अमीरों के साथ नहीं बैठना चाहिए और न ही उन्हें एक के बगल में बैठने की इच्छा करनी चाहिए क्योंकि ये वही चीजें हैं जो लालच और लालच को जन्म देती हैं।

सांसारिकता से परहेज की व्याख्या

संयम की वास्तविकता: यह ज्ञात हो कि संयम (ज़ुहद) [भौतिकवाद और सांसारिकता से] आध्यात्मिक यात्रियों और ईश्वर के साधकों के स्टेशनों के बीच से एक महत्वपूर्ण [आध्यात्मिक] स्टेशन है। इस स्टेशन में, अन्य स्टेशनों की तरह, ज्ञान, [आंतरिक] स्थिति [होने की] और क्रियाएं शामिल हैं। राज्य उस स्थिति को संदर्भित करता है जिसे संयम कहा जाता है और इसका अर्थ यह है कि किसी के पास किसी भी चीज़ [सांसारिक या भौतिकवादी] के लिए झुकाव नहीं बचा है और यह (झुकाव) किसी और चीज के लिए विकसित होता है जो उससे बेहतर है। जिस वस्तु के प्रति व्यक्ति का झुकाव समाप्त हो गया है, उसके

संबंध में संयम कहा जाता है, और जिस चीज की ओर वह अब चाहता है और उसकी ओर झुकाव रखता है, उसके संबंध में उस अवस्था को प्रेम कहा जाता है। इसका मतलब है कि संयम के लिए दो चीजों की जरूरत होती है - एक चीज जिससे भटकने की जरूरत है, और दूसरी चीज जिसे तरफ झुकाव की जरूरत है। यह भी आवश्यक है कि जिस चीज की ओर व्यक्ति झुकता है वह सोने और चांदी की ओर झुकाव रखने में सक्षम हो, न कि पत्थर और ईंट जैसी किसी चीज की। यह भी आवश्यक है कि दूसरी चीज पहले से बेहतर हो ताकि उसके प्रति झुकाव हावी हो सके। जो परलोक के लिए दुनिया को बेचता है वह दुनिया से परहेज करता है, और जो दुनिया के लिए परलोक को बेचता है वह परलोक से परहेज करता है। हालाँकि, परहेज़ शब्द का उपयोग केवल उस व्यक्ति के साथ करने की प्रथा है जो दुनिया से परहेज करता है। जब यह साबित हो जाता है कि परहेज प्रिय वस्तु को छोड़ना है तो यह स्वचालित रूप से साबित हो जाता है कि जो [प्रिय चीज] को छोड़ देता है, वह उससे भी बड़ा कुछ प्राप्त करता है, अन्यथा, कुछ और भी प्रिय प्राप्त किए बिना किसी प्रिय वस्तु को त्यागना कैसे संभव है?

संयम की विभिन्न डिग्रियां: जो ईश्वर के अलावा हर चीज से इस हद तक अलग हो जाता है कि उसे स्वर्ग का लालच भी नहीं है, वह वही है जो केवल ईश्वर से प्रेम करता है। ऐसे व्यक्ति को "पूर्ण संयमी" (जाहिद *मुतलाक*) कहा जाएगा। जो व्यक्ति हर सांसारिक सुख से दूर रहता है लेकिन परलोक के सुखों जैसे स्वर्गीय पति-पत्नी, भूमि, धारा, फल आदि की ओर झुकाव रखता है, ऐसा व्यक्ति भी परहेज करता है लेकिन पहले की तुलना में कम डिग्री रखता है। जो संसार के कुछ सुखों को त्याग कर कुछ अन्य को नहीं छोड़ता है, उदाहरण के लिए, किसी को धन का लालच नहीं है, लेकिन प्रसिद्धि का लालच है, वह बहुत कुछ नहीं खाता है लेकिन अपने आप को अधिक सुशोभित करता है, ऐसा व्यक्ति "पूर्ण परहेज" कहलाने के योग्य नहीं है। संयम रखने वालों में से ऐसे व्यक्ति की डिग्री पश्चाताप करने वालों के बीच एक व्यक्ति की डिग्री की तरह है जो कुछ पापों से पश्चाताप करता है लेकिन दूसरों से नहीं। यह [प्रकार] संयम भी मान्य है जैसे कुछ पापों से पश्चाताप करना मान्य है क्योंकि पश्चाताप का अर्थ है निषिद्ध चीजों को त्यागना [ईश्वरीय कानून के अनुसार] और संयम का अर्थ है अनुमेय चीजों को छोड़ देना जो निचले स्व को आराम और आनंद प्रदान करती हैं। जिस तरह यह समझ से परे नहीं है कि कोई कुछ निषिद्ध चीजों को छोड़ देता है, उसी तरह, यह भी बुद्धि के खिलाफ नहीं है कि कोई कुछ अनुमेय चीजों को छोड़ देता है [और दूसरों को नहीं]। हालाँकि, जो केवल निषिद्ध चीजों को [त्यागने] पर स्थिर हो जाता है, उसे संयमी नहीं कहा जाएगा क्योंकि यह शब्द विशेष रूप से अनुमेय चीजों को [त्यागने] से संबंधित है। [इसलिए,] इससे यह सीखा जाता है कि शब्दावली के अनुसार, संयम का अर्थ है दुनिया से किसी के झुकाव (इच्छा) को हटाना और उसे परलोक की ओर निर्देशित करना या ईश्वर के अलावा किसी अन्य के साथ अपने रिश्ते को तोड़कर ईश्वर के साथ संबंध स्थापित करना [केवल] के साथ संबंध स्थापित करना। यह बहुत ही उच्च डिग्री है।

हमने पहले भी लिखा है कि वांछित चीज संयमी व्यक्ति द्वारा छोड़ी गई चीज से बेहतर होनी चाहिए। इसी तरह यह भी जरूरी है कि जिस चीज को छोड़ दिया जाए, उस पर उसका नियंत्रण (शक्ति, क्षमता या

क्षेत्राधिकार) हो क्योंकि जिस चीज पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है, उसे छोड़ने का कोई मतलब नहीं है और इच्छा का पतन तभी होता है जब वह किसी चीज को छोड़ देता है। इसलिए, जब किसी ने इब्ने अल-मुबारक (ईश्वर उन पर दया करे) को संयमी कहकर संबोधित किया, तो उन्होंने जवाब दिया, "परहेज करने वाला उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (एक धर्मी खलीफा जो एक विशाल साम्राज्य पर अपार राजनीतिक शक्ति और अधिकार होने के बावजूद अपनी धर्मपरायणता और संयम के लिए जाना जाता था) जिसके सामने दुनिया हाथ जोड़कर सामने आई थी। लेकिन उसने अपना मुंह भी उसकी ओर नहीं घुमाया। मैंने क्या संयम किया है?"

ज्ञान का अर्थ: [जैसा कि पहले चर्चा की गई है, संयम में ज्ञान, आंतरिक स्थिति और कार्य शामिल हैं। ज्ञान जो [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति और अवस्था का कारण है जो इसका फल है, वह यह है कि संयमी व्यक्ति इस वास्तविकता से अवगत है कि जिस चीज को छोड़ा जा रहा है वह उस चीज की तुलना में महत्वहीन है जिसे वांछित किया जा रहा है। जो जानता है कि जो परमेश्वर के पास है वह अनन्त है और यह कि परलोक बेहतर और स्थायी है, दूसरे शब्दों में, इसके सुख अपने आप में अच्छे हैं और अनन्त हैं, ठीक वैसे ही जैसे कीमती रत्न बर्फ के सुंदर टुकड़ों की तुलना में अच्छे और अधिक टिकाऊ होते हैं और बर्फ के टुकड़ों के मालिक को उन्हें गहनों के लिए बेचने में कोई कठिनाई नहीं होती है, इसका मतलब है कि अगर बर्फ के मालिक को गहनों के बदले बर्फ के टुकड़े देने की पेशकश की जाती है, तो कोई भी खुशी-खुशी इसके लिए सहमत हो जाएगा। यह है जगत और परलोक का दृष्टांत। दुनिया उस बर्फ की तरह है जिसे सूर्य (सूर्य की रोशनी) में रखा गया है और धीरे-धीरे पिघल रहा है और पूरी तरह से विलुप्त होने के करीब है, और परलोक उस रत्न की तरह है जिसका कोई विलुप्त होना नहीं है। जिस हद तक किसी को दुनिया और परलोक के बीच इस अंतर की यह निश्चितता है, उस हद तक व्यक्ति को स्थायी और अनन्त (परलोक) की इच्छा होती है। संयम के बारे में केवल इतने ही ज्ञान की आवश्यकता है, दूसरे शब्दों में, यह जानना पर्याप्त है कि परलोक बेहतर और शाश्वत है। कभी-कभी, वे लोग भी इस वास्तविकता से अवगत होते हैं जो अपने ज्ञान और निश्चितता की कमजोरी के कारण या वासनाओं के प्रभुत्व के कारण या शैतान के अधीनता के कारण या उसकी झूठी प्रतिज्ञाओं से धोखा खाने के कारण, सांसारिकता को तब तक छोड़ने में सक्षम नहीं होते जब तक कि मृत्यु उन्हें [इस दुनिया से और उसमें के जीवन से] नहीं छीन लेती। तब उनके लिए कोई रास्ता नहीं बचता है, सिवाय इसके कि वे पछतावा करें और जो कुछ उन्होंने खोया है उसका शोक करें [उन अवसरों के संदर्भ में जिनका उन्होंने अपने जीवनकाल के दौरान अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए लाभ नहीं उठाया और परिणामस्वरूप अनन्त खुशी और अनन्त विजय प्राप्त की]।

कर्म का अर्थ: अब उस क्रिया को समझाया जाएगा जो संयम की स्थिति में किया जाता है। इस क्रिया का सार यह है कि एक चीज को पीछे छोड़ दिया जाए और दूसरी चीज को अपनाया जाए जो पीछे छूट गई चीज से बेहतर हो। संयम की मांग है कि जिस चीज़ से वह दूर रहता है उसे पूरी तरह से त्याग दिया जाए,

और जिस चीज़ से उसे परहेज करना चाहिए वह है दुनिया जिसमें उसके सभी साधन और संकेत शामिल हैं। संयमी व्यक्ति को अपने दिल से दुनिया के प्यार (सांसारिकता) को निकालना चाहिए और उसके स्थान पर, उसमें ईश्वरीय आज्ञाकारिता के प्रेम में प्रवेश करना चाहिए। फिर जो चीज हृदय से निकालती है, उसी को आंखों, हाथों और शेष सभी [शारीरिक] अंगों से हटा देना चाहिए और इन अंगों का उपयोग ईश्वरीय आज्ञाकारिता में दृढ़ता और दृढ़ता के लिए करना चाहिए। केवल दुनिया के प्रेम को [हृदय से] दूर करना ही पर्याप्त नहीं है, इसके बजाय, ईश्वरीय आज्ञाकारिता भी आवश्यक है।

संयम की उत्कृष्टता

परमेश्वर ने विभिन्न अवसरों पर संयम की प्रशंसा की है और अपने सेवकों (मनुष्यों) को इसे अपनाने के लिए राजी किया है। उसने कहा:

وَقَالَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ ٱللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ ءَامَنَ

"और जो लोग समझ और समझ से संपन्न हैं, वे कहने लगे, 'धिक्कार तुम पर हो! परमेश्वर की ओर से बदला उस व्यक्ति के लिए [धन और भौतिक संपत्ति के पीछे भागने से] कहीं बेहतर है जो [परमेश्वर में] विश्वास करता है। (कुरान, अध्याय 28, श्लोक 80)

इस श्लोक में, संयम को विद्वानों (सच्ची शिक्षा और गहरी समझ वाले लोगों) के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है और संयम को ज्ञान की गुणवत्ता (विशेषता और आंतरिक विशेषता) के साथ जिम्मेदार ठहराया गया है। यह एक उच्च प्रशंसा है। एक अन्य स्थान पर, उन्होंने कहा:

أُو۟لَٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا۟

"इन लोगों को उनके धैर्य के कारण दोगुना इनाम मिलेगा [और परमेश्वर की ओर से प्रतिफल]। (कुरान, अध्याय 28, श्लोक 54)

कुरान की व्याख्या के विद्वानों ने समझाया है कि यह उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने अपने संयम पर धैर्य का प्रयोग किया [और इसलिए, दोगुने इनाम के योग्य हो गए]। एक स्थान पर उन्होंने कहा:

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى ٱلْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

"हमने पृथ्वी की वस्तुओं को उसके अलंकरण और बिस्तर का कारण बनाया है ताकि [दुनिया के] लोगों को परख सकें कि कौन इसमें अच्छा काम करता है। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 7)

कुरान की व्याख्या के कुछ विद्वानों ने इसकी व्याख्या उस व्यक्ति के संदर्भ के रूप में की है जो दुनिया में अधिक संयम करता है और फिर ऐसे व्यक्ति के संयम को "अच्छा कार्य" कहा जाता है। एक अन्य अवसर पर, उन्होंने कहा:

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ

"और उन चीजों को देखने के लिए अपनी आँखें मत उठाओ जो हमने विभिन्न समूहों [लोगों के] लाभ उठाने के लिए प्रदान की हैं, उनके लिए एक परीक्षा के रूप में, क्योंकि वे सांसारिक जीवन की चमक मात्र हैं। और तुम्हारे रब की ओर से जो भोजन मिलता है, वह कहीं अधिक उत्तम और स्थायी (अनन्त) है। (कुरान, अध्याय 20, श्लोक 131)

ٱلَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا عَلَى ٱلْءَاخِرَةِ

"वे वे हैं जो परलोक की तुलना में दुनिया के जीवन को पसंद करते हैं। (कुरान, अध्याय 14, श्लोक 3)

इस श्लोक में, अविश्वासियों के चरित्र गुण का उल्लेख किया गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि आस्तिक वह है जिसका चरित्र गुण (गुण) उसके विपरीत है, क्रम में शब्दों में, दुनिया की तुलना में, व्यक्ति परलोक से प्रेम करता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

وَمَنْ أَصْبَحَ وَهَمُّهُ الدُّنْيَا شَتَّتَ اللَّهُ عَلَيْهِ أَمْرَهُ وَفَرَّقَ عَلَيْهِ ضَيْعَتَهُ وَجَعَلَ فَقْرَهُ
بَيْنَ عَيْنَيْهِ وَلَمْ يَأْتِهِ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا مَا كُتِبَ لَهُ وَمَنْ أَصْبَحَ وَهَمُّهُ الْآخِرَةُ جَمَعَ اللَّهُ
لَهُ هَمَّهُ وَحَفِظَ عَلَيْهِ ضَيْعَتَهُ وَجَعَلَ غِنَاهُ فِي قَلْبِهِ وَأَتَتْهُ الدُّنْيَا وَهِيَ رَاغِمَةٌ

"जो सुबह उठता है और दुनिया की चिंताओं [और जुनून] में डूब जाता है, भगवान ऐसे व्यक्ति के [सांसारिक] मामलों को बिखेर देता है [ताकि कोई अब सब कुछ एक साथ रखने में सक्षम न हो, और उनके बारे में चिंताओं और चिंताओं में डूब जाए], और किसी के आर्थिक मामले कठिन हो जाते हैं और [वे]

एक के सामने उसकी आवश्यकता और गरीबी को बाहर लाते हैं, और किसी को केवल उस दुनिया से उतना ही मिलता है जो [दिव्य रूप से] एक के लिए नियत किया गया है। और जो परलोक के चिंतन में डूबने की स्थिति में जागता है, भगवान उस व्यक्ति के साहस को इकट्ठा करता है (साहस और दृढ़ संकल्प के साथ प्रेरित करता है) और किसी की अर्थव्यवस्था (आर्थिक मामलों) की रक्षा करता है और उसके दिल में समृद्धि (आत्मविश्वास और पर्याप्तता) डालता है, और दुनिया ऐसे ही अपमानित व्यक्ति के पास आती है। (द्वारा सुनाई गई *ज़ैद बिन थाबित के अधिकार पर* हदीस *संग्रह* इब्ने माजाह [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

إِذَا رَأَيْتُمُ الْعَبْدَ وَقَدْ أُعْطِيَ صَمْتًا وَزُهْدًا فِي الدُّنْيَا فَاقْتَرِبُوا مِنْهُ فَإِنَّهُ يُلَقَّى الْحِكْمَةَ

"जब आप एक ऐसे सेवक को देखते हैं जिसे मौन के साथ प्रदान किया गया है (जो चुप रहता है और ज्यादा बकबक नहीं करता है या ज्यादा बात नहीं करता है) और दुनिया में संयम के साथ संपन्न है, तो ऐसे व्यक्ति के करीब आओ क्योंकि ऐसे व्यक्ति को ज्ञान के साथ [दिव्य रूप से] सिखाया जा रहा है [और निर्देशित] किया जा रहा है"। (द्वारा सुनाई गई *इब्ने खल्लाद के अधिकार पर* हदीस *संग्रह* इब्ने माजाह [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

भगवान, महान ने कहा है:

وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِىَ خَيْرًا كَثِيرًا

"जो [दिव्य] बुद्धि से संपन्न है, ऐसे व्यक्ति ने बहुत भलाई प्राप्त की है। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 269)

इसलिए, एक प्रसिद्ध कहावत है कि एक व्यक्ति जो चालीस वर्षों तक दुनिया में संयम का अभ्यास करता है, भगवान उसके हृदय से ज्ञान के स्रोत निकलते हैं और ज्ञान के वही शब्द उसकी जीभ से प्रकट होते हैं। कुछ भविष्यवक्ता साथी बताते हैं कि उन्होंने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से पूछा: "हे ईश्वर के दूत! कौन सा व्यक्ति बेहतर है?" उसने उत्तर दिया:

كُلُّ مُؤْمِنٍ مَخْمُومُ الْقَلْبِ صَدُوقُ اللِّسَانِ

"हर एक विश्वासी जो हृदय से शुद्ध और शुद्ध है (एक शुद्ध हृदय वाला जो किसी के खिलाफ घृणा, शत्रुता, ईर्ष्या और द्वेष नहीं रखता है) और जीभ के प्रति सच्चा (केवल सच बोलता है)"।

हमने पूछा: "हे परमेश्वर के दूत! 'हृदय के शुद्ध' द्वारा किसे संदर्भित किया जा रहा है?" उन्होंने उत्तर दिया: "वह पवित्र, स्वच्छ हृदय वाला मनुष्य जिसमें कोई बेईमानी, विश्वासघात, धोखा, झूठ, कृत्रिमता, विद्रोह और ईर्ष्या नहीं है"। हमने पूछा: "इससे भी बेहतर इंसान कौन है?" उसने उत्तर दिया:

الَّذِي يَشْنَأُ الدُّنْيَا وَيُحِبُّ الآخِرَةَ

"जो सांसारिकता को नापसंद करता है और परलोक से प्यार करता है [जैसा कि ऐसा व्यक्ति वास्तव में संयमी है]। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्ने माजाह* सहल इब्ने साद के अधिकार पर [ईश्वर उससे प्रसन्न हो])

एक अन्य परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

إِنْ أَرَدْتَ أَنْ يُحِبَّكَ اللهُ فَازْهَدْ فِي الدُّنْيَا

"यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपसे प्रेम करे, तो आपको दुनिया में [रहते हुए दुनिया से] परहेज करना चाहिए। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्ने माजाह* सहल इब्ने साद के अधिकार पर [ईश्वर उससे प्रसन्न हो])

इस भविष्यसूचक कथन में, संयम को परमेश्वर के प्रेम [प्राप्त] करने का कारण घोषित किया गया है और वास्तविकता यह है कि परमेश्वर के प्रेमियों के लिए [और उन लोगों के लिए जिन्हें परमेश्वर प्रेम करता है], उच्च [आध्यात्मिक] रैंक हैं क्योंकि संयम उच्चतम [आध्यात्मिक] स्टेशनों में से एक स्टेशन है [ईश्वर के मार्ग में]। एक अन्य परंपरा में, उन्होंने कहा:

مَنْ آثَرَ الدُّنْيَا عَلَى الآخِرَةِ ابْتَلَاهُ اللهُ بِثَلَاثٍ هَمًّا لَا يُفَارِقُ قَلْبَهُ أَبَدًا وَفَقْرًا
لَا يَسْتَغْنِي أَبَدًا وَحِرْصًا لَا يَشْبَعُ أَبَدًا

"जो परलोक की तुलना में दुनिया को पसंद करता है, भगवान उस व्यक्ति को तीन चीजों से प्रभावित करते हैं: ऐसा दुख जो कभी दिल से अलग नहीं होता, ऐसी गरीबी जो कभी समृद्धि में नहीं बदलती, और ऐसी लालच जो कभी तृप्त नहीं होती है। (द्वारा सुनाई गई *अब्दुल्लाह इब्ने मसूद के अधिकार पर* हदीस *संग्रह* तबरनी [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

एक अन्य परंपरा में, उन्होंने कहा, "एक सेवक का विश्वास तब तक पूरा नहीं होता जब तक कि गुमनामी प्रसिद्धि से अधिक प्रिय न हो जाए, और चीजों की कमी चीजों की प्रचुरता से अधिक प्रिय न हो जाए"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *मुसनद अल-फिरदौस* अली इब्न तल्हा के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो]) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "भगवान ने मुझे यह विकल्प

दिया कि अगर मैं चाहूं, तो मक्का में बेट-हा की [संपूर्ण] घाटी सोने में बदल जाएगी। मैंने परमेश्वर से विनती की, 'हे परमेश्वर! मैं एक दिन भूखा रहना चाहता हूं और दूसरे दिन भरपेट खाना चाहता हूं। जिस दिन मैं भूखा रहूँगा, मैं तेरे सामने रोऊँगा और विनती करूँगा, और जिस दिन मैं भरपेट खाऊँगा, उस दिन तेरा धन्यवाद और स्तुति करूँगा। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने सुनाया, एक दिन पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) कहीं जा रहे थे और महादूत गेब्रियल उनके साथ थे। जब वह सफा पर्वत (मक्का में *काबा* के पास) पर पहुंचा, तो उसने कहा, "ऐ जिब्राएल! मैं उस प्राणी की कसम खाता हूं जिसने आपको सच्चाई के साथ भेजा है, मुहम्मद के परिवार ने अपनी शाम की शुरुआत इस तरह से की है कि उनके पास एक मुट्ठी जौ या गेहूं का आटा भी नहीं है [रोटी बनाने के लिए]। उसने मुश्किल से कहा कि जब आसमान के पार से एक तेज गड़गड़ाहट सुनाई दी जिसने उसे डर दिया। उसने गेब्रियल से पूछा, "यह आवाज क्या है? क्या परमेश्वर ने न्याय के दिन के आगमन की आज्ञा दी है?" जिब्राएल ने उत्तर दिया, "नहीं, यह *इसराफिल* (वह स्वर्गदूत जो न्याय के दिन का संकेत देने के लिए तुरही बजाएगा) है जो आपकी बातें सुनकर नीचे आ गया है। *इसराफिल* भविष्यद्वक्ता के पास आया और कहा, "तुमने जो कहा, वह परमेश्वर ने सुन लिया है और उसने मुझे पृथ्वी की चाबियाँ लेकर तुम्हारे पास भेजा है [पृथ्वी के सभी खजाने तुम्हें देने के लिए] और मुझे आज्ञा दी है कि यदि तुम चाहो, तो मैं *तिहामा* के पहाड़ों (अरब प्रायद्वीप के लाल सागर के तटीय मैदान को संदर्भित करता है) को पन्ना में बदल दूंगा, बेरिल, सोना और चांदी जो आप जहां भी जाएंगे, जाएंगे। और यदि आप चाहें, तो आप एक पैगंबर राजा बन सकते हैं (जैसे भविष्यद्वक्ता दाऊद और सुलैमान [उन पर शांति और आशीर्वाद हो]) या यदि आप चाहें, तो आप भविष्यवक्ता दास के रूप में [ईश्वर के] बने रह सकते हैं। जिब्राएल ने भविष्यद्वक्ता को परमेश्वर के लिए विनम्रता रखने का इशारा किया। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तीन बार यह बात कही, "मैं पैगंबर और ईश्वर के दास के रूप में बने रहना चाहता हूं (ईश्वर के सामने सबसे बड़ी स्थिति और सम्मान ईश्वर के दास का है जो ईश्वर के साथ उच्चतम स्तर की निकटता और अंतरंगता की स्थिति है)।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आगे कहा है:

إذا أراد الله بعبد خيرا زهده في الدنيا ورغبه في الآخرة وبصره بعيوب نفسه

"जब ईश्वर किसी के लिए अच्छा इरादा रखता है, तो वह व्यक्ति को दुनिया में संयमित बनाता है और परलोक की ओर झुकता है, और व्यक्ति को अपने निचले स्व के दोषों (दोषों, कमियों, गलतियों और आंतरिक अस्तित्व की बुराइयों) के बारे में सूचित करता है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *मुसनद अल-फिरदौस*)

ازهد في الدنيا يحبك الله وازهد فيما أيدي الناس يحبك الناس

"दुनिया में संयम रखो, भगवान आपसे प्यार करेंगे और लोगों के पास जो कुछ भी है उससे परहेज करेंगे, लोग आपसे प्यार करेंगे (यानी, दुनिया से दिल की अलगाव से ईश्वरीय प्रेम की प्राप्ति होती है, और लोगों के पास जो कुछ भी है उससे दिल की टुकड़ी और उनसे कोई उम्मीद नहीं है, उन्हें आपसे प्यार करने का कारण बनता है)।

जीवन की आवश्यकताओं में संयम का विवरण: यह ज्ञात होना चाहिए कि लोग जिन चीजों में लिप्त होते हैं वे दो प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ बेकार हैं और कुछ अंधविश्वासी हैं [अन्य आवश्यक या महत्वपूर्ण होने के अलावा]। महत्वपूर्ण चीजों में खान-पान शामिल हैं। जहां तक बेकार का सवाल है, हम उनका विवरण प्रदान नहीं कर सकते क्योंकि वे असंख्य हैं, हालांकि, आवश्यक चीजों को आसानी से गिना जा सकता है। आवश्यक चीजों की मात्रा, प्रकार और समय में, बेकार को शामिल करना संभव है। इसलिए यहां परहेज की विधि बताई जा रही है। जीवन में जिन चीजों की आवश्यकता होती है वे हैं छह हैं: भोजन, कपड़े, आवास, पारिवारिक जीवन के साधन, परिवार और धन।

पहली आवश्यकता - भोजन: पहली आवश्यकता भोजन है। व्यक्ति को केवल उतना ही भोजन चाहिए जो किसी की शारीरिक शक्ति और ऊर्जा को बनाए रख सके। संयम के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति इसकी लंबाई और चौड़ाई कम करे। लंबाई किसी की उम्र के संबंध में होती है। आमतौर पर यह देखा गया है कि एक व्यक्ति जिसके पास एक दिन के लिए भोजन होता है, वह इससे संतुष्ट नहीं होता है, इसके बजाय, वह अधिक के लिए लालची होता है। चौड़ाई भोजन की मात्रा, प्रकार और समय से संबंधित है। लंबे जीवन की आशा को कम करके भोजन की लंबाई [जमाखोरी की अवधि] को कम किया जा सकता है। भोजन में संयम की कम से कम डिग्री भूख को कम करने के लिए आवश्यक मात्रा से संतुष्ट होना है जब यह महसूस किया जाता है और बीमार होने का खतरा होता है। जो इस अवस्था में है, वह दिन में खाए गए भोजन से रात के लिए कुछ भी नहीं रखेगा। यह बहुत ही उच्च स्तर का [भोजन में संयम] है। दूसरी डिग्री यह है कि व्यक्ति एक महीने या चालीस दिनों के लिए भोजन जमा करता है। तीसरी डिग्री एक वर्ष तक भोजन जमा करना है और यह सबसे कमजोर प्रकार के संयमी लोगों की स्थिति है। जो एक वर्ष से भी अधिक समय तक स्टोर करता है, उसे किसी भी हद तक संयमी नहीं माना जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कोई व्यक्ति एक वर्ष से अधिक समय तक जीने की उम्मीद करता है, जो एक लंबे जीवन की आशा रखता है [जो आध्यात्मिक बीमारियों में से एक है जो लोगों को जमा करने, चोरी करने, गबन करने और इकट्ठा करने के लिए प्रेरित करती है, अक्सर दूसरों की कीमत पर] और लंबी आशाओं का मालिक संयमी नहीं हो सकता है। हालांकि, अगर किसी के पास आय का नियमित स्रोत नहीं है और वह लोगों से धन स्वीकार करने के लिए इच्छुक नहीं है तो एक वर्ष से अधिक समय तक धन जमा करने में कोई बुराई नहीं है। हालाँकि, वे लोग इसे सही नहीं मानते हैं, जो परमेश्वर पर भरोसा करने की शर्त रखते हैं, [पालन करने] परहेज़ में।

दूसरी आवश्यकता - वस्त्र: दूसरी मनुष्य की आवश्यकता कपड़े हैं और कपड़ों में सबसे कम स्तर एक ऐसी पोशाक होना है जो व्यक्ति को ठंड और गर्मी से बचाए और शरीर को ढक सके। कुछ ऋषियों ने कहा है, "वस्त्र ऐसा होना चाहिए कि वह आम लोगों (साधारण कपड़े) द्वारा पहना जाए और ऐसे कपड़े न पहनें जो आपको प्रसिद्ध कर दें या लोग आपको देखें"। अबू सुलेमान अल-दरानी (भगवान उन पर दया करें) ने कहा, "कपड़े तीन प्रकार के होते हैं: एक जो पूरी तरह से भगवान के लिए है - यह वह पोशाक है जो शरीर को कानूनी रूप से ढकती है [जैसा कि ईश्वरीय कानून द्वारा निर्धारित है]; दूसरा वह पोशाक है जो अपनी कोमलता के लिए पहनी जाती है; और तीसरा वह पोशाक है जिसका उद्देश्य बाहरी सुंदरता और अलंकरण है। एक ज्ञानवादी ने कहा, "जिसके कपड़े पतले हैं, उसका भगवान तक पहुंचने का मार्ग भी पतला है (व्यक्ति केवल कपड़े पहनने के कारण धार्मिकता और आध्यात्मिकता से रहित है)"।

तीसरी आवश्यकता - आवास: यह एक सारांश के रूप में कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति किसी आवश्यकता के लिए [आवास] चाहता है, उसे आवश्यकता की सीमा को पार नहीं करना चाहिए। दुनिया में सभी चीजें जो आवश्यकता की सीमा के भीतर हैं, ईश्वर (दीन) के मार्ग के उपकरण हैं और इसके साधन हैं, और जो चीजें जरूरतों से परे हैं वे ईश्वर के मार्ग के विरोध में हैं। इस सिद्धांत को सामने रखते हुए, आवास का उद्देश्य यह है कि व्यक्ति गर्मी, ठंड और बारिश से सुरक्षित रहे, लोगों की नज़रों से दूर रहे [गोपनीयता कारणों से], और उनके नुकसान से सुरक्षित रहे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जिस हद तक एक घर की आवश्यकता है, उस हद तक पता चल जाता है, इससे अधिक क्या है वह बेकार है, और सभी बेकार चीजें सांसारिकता के आदेश में हैं, और जो बेकार चीजों का साधक है या उनके लिए प्रयास करता है, वह संयम से बहुत दूर है।

चौथी आवश्यकता – घरेलू सामान: इसमें कई हद तक संयम होता है। उच्चतम डिग्री यीशु की स्थिति है (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) कि उसके पास केवल एक कंघी और एक कटोरा था [उसकी कुल संपत्ति के रूप में]। एक बार एक आदमी को अपनी उंगलियों से अपनी दाढ़ी कंघी करते हुए देखकर, उसने अपनी कंघी फेंक दी। दूसरी बार जब उसने उसे देखा, तो वह अपने नंगे हाथों से एक धारा से पानी पी रहा था [उनमें से एक प्याला बना रहा था]। यीशु ने कटोरा फेंक दिया क्योंकि उसे लगा कि अब इसकी जरूरत नहीं है। घरेलू जरूरतों से जुड़ी सभी वस्तुओं की ऐसी स्थिति है। जिस उद्देश्य की तलाश की जा रही है, उसके लिए हर चीज की जरूरत होती है। यदि किसी वस्तु से जुड़ा कोई उद्देश्य नहीं है और उसके बिना किसी की ज़रूरतें पूरी की जा सकती हैं, तो यह दुनिया और परलोक दोनों में किसी के लिए कठिनाई का स्रोत है। जिस चीज की नितांत आवश्यकता है, उसे इसकी निम्न मात्रा से संतुष्ट होना चाहिए जो यह देखना है कि यह उद्देश्य के लिए पर्याप्त है या नहीं। इसमें एक उच्च डिग्री हर काम के लिए एक अलग उपकरण होना है, लेकिन उपकरण सामान्य गुणवत्ता का है। यदि एक ही चीज़ के लिए कई उपकरण हैं या वे उच्च गुणवत्ता के हैं, तो किसी को सभी श्रेणियों के संयम से बाहर कर दिया जाएगा और बेकार की चीजों में शामिल माना जाएगा।

पांचवीं आवश्यकता - परिवार और विवाह: सच्चाई यह है कि कुछ परिस्थितियों में, शादी न करना बेहतर है जैसा कि "विवाह की पुस्तक" में समझाया गया है [ग़ज़ाली की *महान रचना" इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" में सामाजिक व्यवहार के बारे में दूसरा खंड जिसे वर्तमान कार्य के लिए छोड़ दिया गया है]। ऐसे में शादी न करना परहेज है। लेकिन जब इच्छा हावी हो जाती है, और शादी के बिना इसे कम नहीं किया जा सकता है, तो शादी अनिवार्य है। ऐसे में शादी न करना परहेज नहीं है। हालांकि, अगर शादी न करने में कुछ भी गलत नहीं है, और शादी के कारण किसी पर कोई आपदा नहीं आती है, लेकिन शादी नहीं करता है क्योंकि दिल जीवनसाथी के प्रति झुकाव रखता है, पति या पत्नी के प्रति आसक्ति होगी और दिल भगवान की याद में लापरवाही करेगा, इस स्थिति में, शादी न करना परहेज है। यदि किसी को यह निश्चितता है कि पति या पत्नी ईश्वर की याद में लापरवाही नहीं करेगा, लेकिन फिर भी साहचर्य और मैथुन से बचने के लिए शादी नहीं करता है, तो यह निश्चित रूप से संयम नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि संतान न केवल मानव जाति की निरंतरता और भविष्यद्वाणी के अनुयायियों में वृद्धि के लिए उद्देश्य हैं, यह पूजा का एक कार्य है और मैथुन में जो आनंद मिलता है वह हानिकारक नहीं है, बशर्ते कि आनंद एकमात्र उद्देश्य न हो [क्योंकि इसके अन्य उद्देश्यों में पापों से दूर रहना, किसी की पवित्रता की रक्षा करना शामिल है, विनम्रता और आध्यात्मिकता, ईश्वरीय पूजा के लिए शक्ति खोजना, पापपूर्ण चीजों को देखने से टकटकी कम करना, और परिवार की सेवा करके ईश्वर के मार्ग पर चलना]। यह उस व्यक्ति की तरह है जो खाने-पीने में आनंद के रूप में खाना-पीना बंद कर देता है। यह स्पष्ट है कि यह संयम नहीं है क्योंकि यह मानव शरीर को बर्बाद (नुकसान) करता है, ठीक उसी तरह जैसे शादी न करने से मानव जाति बर्बाद हो जाती है [क्योंकि अगर लोग शादी करना बंद कर देते हैं तो मानव जाति समाप्त हो जाएगी]। इसलिए, मैथुन के आनंद से बचने के लिए शादी न करने की अनुमति नहीं है। जुनैद (भगवान उन पर दया करें) ने कहा, "मुझे पसंद है, एक नौसिखिया आध्यात्मिक यात्री के मामले में, अपने दिल को तीन चीजों में नहीं लगाना अन्यथा किसी की स्थिति बदल जाएगी: एक व्यवसाय में; भविष्यसूचक कथनों की तलाश में दूसरा [जैसा कि यह ज्ञान ऐतिहासिक रूप से प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि का स्रोत रहा है]; शादी में तीसरा"।

छठी आवश्यकता – धन और यश: ये दोनों चीजें पहले बताई गई सभी पांच जरूरतों को पूरा करने का एक साधन हैं। प्रसिद्धि का अर्थ है लोगों के दिलों पर कब्जा करना, दूसरे शब्दों में, लोगों के दिलों में अपने लिए जगह बनाना ताकि वे किसी के कार्यों और उद्देश्यों में सहायता कर सकें। प्रसिद्धि या लोगों के दिलों में जगह बनाने की आवश्यकता या तो लाभ प्राप्त करने के लिए या नुकसान को दूर करने के लिए या किसी के उत्पीड़न से छुटकारा पाने के लिए है। जहां तक लाभ प्राप्त करने का संबंध है, यदि किसी के पास धन है, तो उसे उस उद्देश्य के लिए प्रसिद्धि की आवश्यकता नहीं है क्योंकि कोई अपनी सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए लोगों की सेवाएं प्राप्त करने के लिए भुगतान कर सकता है, चाहे उनके पास एक के लिए सम्मान हो या नहीं, वे पैसे कमाने के लिए सेवा प्रदान करेंगे। नुकसान को दूर करने के मुद्दे के संबंध में, दूसरे शब्दों में, अपेक्षित नुकसान से खुद को बचाने के लिए जरूरतमंद होना, एक ऐसे

देश में आवश्यक है जहां न्याय का पालन नहीं है, या कोई पड़ोसियों से घिरा हुआ है जो एक के लिए दमनकारी हैं। प्रसिद्धि की तलाश करने वाला विनाश के मार्ग पर चलने वाला यात्री है। लोगों के दिलों में जगह बनाने के लिए प्रयास न करना संयमी का तरीका है। ईश्वर (दीन) के मार्ग पर चलने और आराधना में निरंतर लिप्त रहना स्वयं लोगों का ध्यान आकर्षित करेगा और उनके दिलों में सम्मान और प्रतिष्ठा पैदा करेगा, और व्यक्ति को लोगों के नुकसान और उत्पीड़न से बचाया जाएगा, और सभी धर्मों के लोगों में एक के लिए प्रेम और सम्मान की भावना होगी।

इसका नतीजा यह है कि धन और प्रसिद्धि की मात्रा की आवश्यकता निषिद्ध नहीं है, बल्कि इसके बजाय, धन और प्रसिद्धि की आवश्यकता से अधिक घातक जहर हैं। इन दो चीजों का लाभ तभी होता है जब वे आवश्यकता की सीमाओं को पार न करें। जो ईश्वर (दीन) के लिए अपने मार्ग को शुद्ध रखता है और संदिग्ध चीजों से बचता है, स्वयं के मनोविज्ञान पर कार्य करता है और इसे जरूरतों की सीमा के भीतर सीमित रखता है, वह सावधानी और विवेक के मार्ग में है और निश्चित रूप से मोक्ष के लिए नियत समूह में शामिल है।

अध्याय 15- मनुष्य के सामने आने वाले हर मामले पर ईश्वर की एकता, सर्वशक्तिमत्ता और पूर्ण शक्ति का एहसास करना और ईश्वर में विश्वास विकसित करना

यह जानते हुए कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान, सर्व-वर्तमान, सर्वज्ञ, सर्व-दर्शक, सर्व-श्रवण, सर्व-प्रेमपूर्ण, सर्व-दयालु, सर्व-दयालु, सर्व-देखभाल करने वाला, सर्व-समावेशी है और साथ ही साथ उत्पीड़ित, कमजोर, विनम्र और अन्यायी की ओर से उचित प्रतिशोध और न्याय मांगने में पूरी तरह से सक्षम है। यह हमें अपार आत्मविश्वास और आत्म-विश्वास देता है कि हम अंततः अच्छे हाथों में हैं, ईश्वरीय सुरक्षा और समावेशन में, भले ही हम किसी भी स्पष्ट स्थिति में हों, भले ही यह हताश, निराशाजनक और हतोत्साहित करने वाला लग सकता है, और अंत में, सब कुछ ठीक हो जाएगा और ईश्वरीय दया के कारण चीजें सबसे अच्छे के लिए काम करेंगी, प्रोविडेंस और उदारता। इस आत्म-विश्वास और आत्मविश्वास को इस अहसास से और भी मजबूत किया जाता है कि गलत काम करने वालों और उत्पीड़कों की स्पष्ट शक्ति केवल एक पट्टा है जिसे भगवान ने यह जांचने के लिए बढ़ाया है कि वे कैसे व्यवहार करते हैं और अंत में, उन्हें अपने कार्यों के लिए कार्रवाई के लिए लिया जाएगा। जो लोग अपने हाथों से कष्ट उठाते हैं, उन्हें परमेश्वर द्वारा सम्मानित और सशक्त बनाया जाएगा, यदि इस जीवन में नहीं, तो इस जीवन के तुरंत बाद शुरू होने वाले जीवन में जहाँ परमेश्वर का नियंत्रण और शक्ति, जो पहले अपने आध्यात्मिक अंधेपन के कारण सांसारिक जीवन में कई लोगों के लिए स्पष्ट नहीं थी, उन सभी के द्वारा स्पष्ट रूप से देखी जाती है जो पहले परमेश्वर की रचनाओं पर गलत और ज्यादतियों को करने के लिए प्रोत्साहित किए गए थे, इस आंतरिक अंधेपन के कारण स्पष्ट दण्ड से मुक्ति के साथ।

इस ईश्वरीय एकता और शक्ति में विश्वास और निश्चितता विनम्रता लाती है, जो कि लोगों और राष्ट्रों के बीच संबंधों को खराब करने वाले अहंकार को मिटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के अलावा साथी मनुष्यों के साथ व्यवहार करने में एक मधुर गुण है। बदले में, यह आपसी सम्मान, आपसी अधिकारों और जिम्मेदारियों की मान्यता और आम भलाई के लिए शांति और सद्भाव में काम करने के लिए एक प्रेरणा को बढ़ावा देता है। व्यक्तिगत स्तर पर, यह

निराशा, अवसाद, दुख, कम मनोबल से बाहर निकालता है, और बाधाओं और चुनौतियों के बावजूद अपनी सर्वोत्तम क्षमताओं को आगे बढ़ाने के लिए जीवन और धैर्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से भर देता है। यह किसी की अपनी सीमाओं को भी दर्शाता है और उन सभी मामलों के अंतिम परिणाम के लिए ईश्वर पर अपनी निर्भरता और भरोसा रखता है जिन्हें कोई व्यक्ति अपने जीवन में और बड़े पैमाने पर समाज में प्राप्त करने का प्रयास करता है। ईश्वर पर भरोसा प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में, धैर्य के साथ संकल्प को मजबूत करता है और दुखों और कुंठाओं को रोकता है जब चीजें उस तरह से नहीं होती हैं जैसा हम चाहते हैं, क्योंकि सभी मामलों का अंतिम अंत केवल ईश्वर के साथ अंतिम अधिकार और सभी मामलों के निपटान के रूप में होता है। ग़ज़ाली ने अपनी *महान कृति* "इह्या *अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे खंड या तिमाही में पांचवीं पुस्तक में इस प्रमुख विषय के बारे में उत्कृष्ट और व्यावहारिक उपचार को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है [21]:

बता दें कि ईश्वर (*तवाकुल*) पर भरोसा ईश्वर (दीन) के मार्ग में गंतव्यों के बीच से एक गंतव्य (*मंज़िल*) है और [ईश्वर में] निश्चित लोगों के स्टेशनों के बीच से एक [आध्यात्मिक] स्टेशन (*मकाम*) है। बल्कि, यह दिव्य ज्ञान (मारिफा या अंतरंगता और ईश्वर के साथ निकटता) के लोगों की उच्च डिग्री से एक उच्च डिग्री है। ईश्वर पर भरोसा ज्ञान के मामले में गहरा और व्यापक है और कार्य के मामले में अत्यंत कठिन है। इसकी समझ के संदर्भ में, भौतिक साधनों पर जोर देना और उन पर विश्वास करना, *ईश्वरीय एकता और एकता (तौहीद) में* ईश्वर (*शिर्क*) के साथ भागीदारों को जिम्मेदार ठहराने के समान है। इसके प्रति पूरी तरह से लापरवाह होना भविष्यद्वाणी के तरीके और ईश्वरीय व्यवस्था की आलोचना करने के समान है। यह समझ से बाहर है कि किसी को साधनों पर भरोसा है और साथ ही उनकी अवहेलना भी है (ईश्वर में भरोसा सभी संभावित भौतिक साधनों को नियोजित करने और इसके लिए योजना बनाने के साथ-साथ चलता है, लेकिन उनके फल के लिए भगवान में विश्वास और भरोसा रखता है)।

ईश्वर में विश्वास के अर्थ को समझना ताकि यह ईश्वरीय एकता की आवश्यकताओं के अनुसार हो और बुद्धि और ईश्वरीय नियम के खिलाफ न हो, बहुत कठिन और सूक्ष्म है। इसकी सूक्ष्मता और गुप्तता के कारण ही इसकी वास्तविकता के बारे में केवल उन्हीं लोगों को सूचित किया जा सकता है जो ज्ञान से संपन्न हैं और जिनकी आँखों में सत्य का प्रकाश है। दूसरों के पास इन मामलों की वास्तविकताओं को समझने की क्षमता नहीं है। वास्तविकताएं सच्चे विद्वानों [जिनके पास रहस्यवादी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि है] के लिए प्रकट की जाती हैं और वे उन्हें परमेश्वर के अन्य सेवकों को समझाते हैं। इस अध्याय में, हम सबसे पहले

एक परिचय के रूप में ईश्वर में विश्वास की उत्कृष्टता की व्याख्या करेंगे, और फिर हम ईश्वरीय एकता [और ईश्वर में विश्वास पैदा करने के लिए इसके निहितार्थ] की व्याख्या करेंगे।

परमेश्वर में विश्वास की उत्कृष्टता

भगवान कहते हैं:

وَعَلَى ٱللَّهِ فَتَوَكَّلُوٓاْ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ

"और यदि तुम विश्वासी हो तो परमेश्वर पर भरोसा रखो। (कुरान, अध्याय 5, श्लोक 23)

وَمَن يَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسۡبُهُۥٓۚ

"जो परमेश्वर पर भरोसा रखेगा, परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को [अपने सभी मामलों में] पर्याप्त करेगा। (कुरान, अध्याय 65, श्लोक 3)

إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُتَوَكِّلِينَ

"वास्तव में, परमेश्वर उन लोगों से प्रेम करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। (कुरान, अध्याय 3, आयत 159)

[आध्यात्मिक] पद की महानता के बारे में क्या कहा जा सकता है कि जो कोई भी प्राप्त करता है, वह ईश्वर के प्रेम को प्राप्त करता है और ईश्वर व्यक्ति का देखभाल करने वाला बन जाता है! क्योंकि जिसे परमेश्वर पर्याप्त है, जिसे परमेश्वर प्रेम करता है और जिसकी रक्षा करता है, वह एक अत्यधिक सफल व्यक्ति है क्योंकि ऐसे प्रिय [परमेश्वर के] दण्ड को प्राप्त नहीं करेगा या परमेश्वर से दूर और पर्दा नहीं डाला जाएगा। जो ईश्वर के अलावा किसी अन्य से पर्याप्तता चाहता है, वह वह है जिसने ईश्वर में भरोसा छोड़ दिया है। एक अन्य स्थान पर, भगवान कहते हैं:

وَمَن يَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

"और जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है, उसमें कोई संदेह नहीं है कि परमेश्वर प्रबल और बुद्धिमान है। (कुरान, अध्याय 8, श्लोक 49)

दूसरे शब्दों में, वह इतना प्रबल है कि जो उसकी सुरक्षा में आता है, वह ऐसे व्यक्ति को अपमानित होने की अनुमति नहीं देता है, जो अपने दरबार में याचना करता है, वह किसी की विनती को अस्वीकार नहीं करता है, और जिसे उसकी रणनीति पर भरोसा है, वह इससे निराश नहीं होता है। ईश्वर के अलावा, सब कुछ [ईश्वरीय इच्छा के अधीन] है। सभी सेवक उस पर निर्भर हैं और आपके जैसे आप हैं, उसके सामने जरूरतमंद हैं। इसीलिए, उन पर कैसे भरोसा किया जा सकता है? एक श्लोक में यह कहा गया है:

إِنَّ ٱلَّذِينَ تَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ لَا يَمۡلِكُونَ لَكُمۡ رِزۡقٗا فَٱبۡتَغُواْ عِندَ ٱللَّهِ ٱلرِّزۡقَ وَٱعۡبُدُوهُ

उन्होंने कहा, 'भगवान के अलावा जिनकी आप पूजा करते रहे हैं, उनके पास आपको कोई भरण-पोषण प्रदान करने की शक्ति नहीं है। इसलिए, उससे अपना भरण-पोषण मांगें और केवल उसकी पूजा करें। (कुरान, अध्याय 29, श्लोक 17)

وَلِلَّهِ خَزَآئِنُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَلَٰكِنَّ ٱلۡمُنَٰفِقِينَ لَا يَفۡقَهُونَ

"और आकाश और पृथ्वी के सब खजाने परमेश्वर के पास हैं, परन्तु कपटी नहीं जानते। (कुरान, अध्याय 63, श्लोक 7)

ईश्वरीय एकता के बारे में कुरान में व्याख्या में, यह चेतावनी दी गई है कि ईश्वर के अलावा अन्य पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए और केवल एक और अप्रतिरोध्य (जो हर चीज को वश में करता है) (ईश्वर) पर भरोसा किया जाना चाहिए और उस पर भरोसा किया जाना चाहिए। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

"जो परमेश्वर का है, परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को सभी कष्टों और कठिनाइयों से बचाता है, और उसे एक ऐसे स्थान से जीविका प्रदान करता है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था; और जो दुनिया से संबंधित हो जाता है, भगवान ऐसे व्यक्ति को दुनिया को सौंप देता है [जो व्यक्ति को तब तक परेशान, चिंतित, चिंतित, परेशान, उदास और बेचैन रखता है जब तक कि कोई मर न जाए]"। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *इमरान इब्न अल-हुसैन के अधिकार पर* हदीस संग्रह तबरानी सगीर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

"जो सबसे अमीर बनना चाहता है, उसे अपने सामने जो कुछ है उससे ज्यादा भगवान पर भरोसा करना चाहिए। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अब्दुल्ला इब्ने अब्बास के अधिकार पर *हकीम* और *अल-बेहाकी को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

परमेश्वर ने पैगंबर दाऊद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) को एक रहस्योद्घाटन भेजा, "जो दास [मेरा] सृष्टिओं के बजाय मेरी रस्सी पकड़ता है, मैं ऐसे एक व्यक्ति को स्वर्ग और पृथ्वी के धोखे से मुक्ति देता हूं"। इब्राहिम बिन अधम (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "मैंने एक [ईसाई] भिक्षु से पूछा, 'आप कहां से खाते हैं? उसने उत्तर दिया, "यह मेरा सिरदर्द नहीं है, मेरे रब से पूछो कि वह मुझे कहाँ से खिलाता है!'" एक ज्ञानवादी ने कहा, "जब मैंने भगवान को अपना केयरटेकर (वकील) बनाया, तो मुझे हर अच्छे का रास्ता मिल गया"।

ईश्वर में विश्वास की उत्पत्ति की वास्तविकता जो ईश्वरीय एकता है: यह ज्ञात होना चाहिए कि ईश्वर में भरोसा विश्वास के द्वारों में से एक है जो ज्ञान, [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति और कार्य से बना है। इसी तरह, ईश्वर में भरोसा इन्हीं तीन चीजों से प्राप्त होता है: ज्ञान जो मूल है, क्रिया जो फल (परिणाम) है, और वह अवस्था जो ईश्वर में विश्वास का उद्देश्य है।

ज्ञान: ज्ञान मूल चीज है और इसे शब्दावली में विश्वास (ईमान) कहा जाता है क्योंकि विश्वास का अर्थ है निर्धारण और हृदय के हर निर्धारण को ज्ञान कहा जाता है, और यदि यह ज्ञान मजबूत हो जाता है, तो इसे निश्चितता (याकीन) कहा जाता है। कई प्रकार के निश्चितता हैं लेकिन यहां, हम केवल उस प्रकार पर चर्चा करेंगे जिस पर ईश्वर पर भरोसा निर्भर है और उस प्रकार को दिव्य एकता और एकता (तौहीद) कहा जाता है, जिसका अर्थ है कथन:

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ

"ईश्वर नहीं बल्कि ईश्वर है, वह एक है, उसका कोई भागीदार नहीं है।

इस कथन में, ईश्वर की एकता की स्वीकारोक्ति है और इस प्रकार के [निश्चितता] में, [हर चीज पर] भगवान की शक्ति का पता लगाया जाता है। इस गवाही के साथ, वह विश्वास जो परमेश्वर में भरोसे का आधार है, पूर्ण हो जाता है। विश्वास के पूरा होने का अर्थ यह है कि यह कथन किसी के हृदय का एक आवश्यक गुण है जो तब प्रमुख गुण बन जाएगा [जीवन के सभी मामलों में परमेश्वर में इस भरोसे को स्थापित करके - किसी के विचारों, भावनाओं, शब्दों और कर्मों में जो उनसे निकलते हैं]। जहां तक ईश्वरीय एकता और एकता का संबंध है, यह वास्तविक [अंतर्निहित] सिद्धांत है।

ईश्वरीय एकता की चार डिग्री: ईश्वरीय एकता और एकता (तौहीद) के चार रैंक हैं: पहली रैंक कर्नेल (कोर) की है, दूसरी रैंक कर्नेल की कर्नेल है, तीसरी आंतरिक त्वचा की है, और चौथी बाहरी आवरण की है। हम इसे अखरोट के उदाहरण से समझाएंगे। इसकी दो खाल होती है फिर गिरी होती है और कर्नेल के भीतर तेल होता है जिसे कर्नेल का कर्नेल कहा जा सकता है। ईश्वरीय एकता की पहली श्रेणी यह है कि सेवक अपनी لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ जीभ से कहता है (ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है) लेकिन किसी का हृदय इसके प्रति लापरवाह है, जैसे कि पाखंडियों की दिव्य एकता की गवाही।

दूसरा पद यह है कि कोई भी इस कथन का अर्थ [ईश्वरीय एकता और एकता की पुष्टि] का पता लगाता है जैसा कि आम मुसलमानों द्वारा किया जाता है। यह आम लोगों की दिव्य एकता और उनका विश्वास है। तीसरी श्रेणी यह है कि सत्य के प्रकाश के साथ, इसका अर्थ एक [निश्चितता की आंतरिक रहस्यवादी

आध्यात्मिक आंख के साथ] द्वारा गवाह होने के लिए प्रकट हो जाता है। यह उन लोगों का [आध्यात्मिक] स्थान है जिन्होंने ईश्वर से निकटता प्राप्त की है (*मुकर्रबीन* या ज्ञानवादी या ईश्वर के मित्र और अंतरंग)। इस अनावरण का अर्थ यह है कि व्यक्ति बहुत सी चीजों को देखता है और अपना ज्ञान प्राप्त करता है लेकिन हर चीज के स्रोत और उत्पत्ति को एक, अप्रतिरोध्य, सर्वशक्तिमान (ईश्वर) का अस्तित्व मानता है। चौथा पद यह है कि कोई केवल उस एक प्राणी (ईश्वर) के अस्तित्व का गवाह है [आत्मा की आंतरिक आंख के साथ], सभी चीजों में केवल उसके अस्तित्व को देखता है। यह उन लोगों की दिव्य एकता है जिन्होंने ईश्वर (ज्ञानवादी) के साथ निकटता प्राप्त की है। *सूफियों* (ईश्वर के मार्ग पर आध्यात्मिक यात्री) इसे "*फना फी अल-तौहीद*" (ईश्वरीय एकता और एकता में निचले स्व का विनाश) कहते हैं, दूसरे शब्दों में, ये लोग अपने स्वयं के निचले स्व (*नफ्स*) और अन्य सभी रचनाओं को ईश्वर के अस्तित्व से पहले विलुप्त और नष्ट होने के रूप में मानते हैं। पहला व्यक्ति केवल जीभ से ईश्वरीय एकता और एकता में विश्वास करता है। दूसरा व्यक्ति ईश्वरीय एकता और एकता में विश्वास करता है जो किसी के हृदय के संदर्भ में प्रतिज्ञान के इस कथन के अर्थ का पता लगाता है, हालांकि, किसी के हृदय में जो विश्वास हैं जो इसके विपरीत हैं, कोई उनका खंडन नहीं करता है। ईश्वरीय एकता में इस प्रकार का विश्वास हृदय पर एक गाँठ है जो हृदय की रोशनी और विस्तार की अनुमति नहीं देता है। तीसरा पद ईश्वरीय एकता और एकता में विश्वास करने वाले व्यक्ति का है जो केवल एक कर्ता को देखता है [किसी के जीवन में, एक के आसपास और दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है], दूसरे शब्दों में, सत्य का यह मामला व्यक्ति के लिए स्पष्ट हो जाता है और व्यक्ति केवल एक कर्ता को देखना शुरू कर देता है और व्यक्ति सभी मामलों की वास्तविकता को देखना शुरू कर देता है [जैसे ही ज्ञान के द्वार और रोशनी के नए रास्ते खुलते हैं]। चौथा पद उस व्यक्ति का है जो केवल एक ही अस्तित्व को देखता है, कोई ईश्वर के अलावा किसी भी अस्तित्व को नहीं देखता है, कोई दुनिया की चीजों को प्रचुरता और बहुलता के माध्यम से नहीं देखता है, बल्कि उन्हें एकता के माध्यम से देखता है [ईश्वर के कार्य के रूप में]। यह ईश्वरीय एकता और एकता (तौहीद) का सर्वोच्च पद है।

ये ईश्वरीय एकता और एकता में विश्वासियों के चार रैंक और [आध्यात्मिक] स्टेशन हैं। जहां तक चौथे (उच्चतम) रैंक का सवाल है, यह बाहरी मामलों (बाहरी ज्ञान या *"इल्म मुआमला")* के ज्ञान के क्षेत्र से बाहर है [और बल्कि गूढ़ ज्ञान ("*इल्म अल-मुकाशफा"* या आध्यात्मिक अनावरण का ज्ञान)] के क्षेत्र में प्रवेश करता है, इसलिए इसे यहां चर्चा का विषय बनाना बेकार है [क्योंकि यह इस पुस्तक का उद्देश्य नहीं है] और ईश्वर पर भरोसा करें (*तवाक्कल*) इस पर आधारित नहीं है, इसके बजाय ईश्वर में विश्वास की स्थिति तीसरे प्रकार की ईश्वरीय एकता और एकता से प्राप्त होती है। पहला प्रकार पाखंड है, दूसरा प्रकार केवल पता लगाना है, अब केवल तीसरा प्रकार बचा है, क्योंकि ईश्वर पर भरोसा उसी पर आधारित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वर पर भरोसा करने के लिए केवल हृदय का पता लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक अनावरण (कश्फ) और गवाही (*मुशहद)* भी आवश्यक है।

ईश्वरीय एकता और एकता का तीसरा दर्जा यह है कि यह मामला आपके सामने उजागर हो जाता है कि ईश्वर के अलावा कोई और कर्ता नहीं है और सृष्टि, पोषण, दान, रोके रखने जैसे मामले [भौतिक और सारहीन दोनों तरह की आशीषें], जीवन, मृत्यु, समृद्धि, गरीबी, आदि, जिन्हें कोई भी नाम दिया जा सकता है, उनका निर्माता और प्रवर्तक केवल ईश्वर है और कोई और नहीं बल्कि ईश्वर है। जब यह मामला तुम्हारे सामने प्रकट हो जाएगा, तो तुम परमेश्वर के अलावा किसी और को या किसी अन्य चीज़ को नहीं देखोगे, तुम केवल परमेश्वर का भय मानते हो, तुम्हें केवल परमेश्वर से आशा होगी, तुम्हें केवल परमेश्वर पर भरोसा

होगा, तुम्हें केवल परमेश्वर पर भरोसा होगा [और परमेश्वर के अलावा कोई नहीं] क्योंकि वह कर्ता है, वह प्रवर्तक है, और वह आविष्कारक है। उसके अलावा अन्य सभी अस्तित्वों पर विजय प्राप्त की जाती है और [उसकी आज्ञा और इच्छा के अधीन] कर दिए जाते हैं, और उनके पास अपने सृष्टिकर्ता की इच्छा के विरुद्ध स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभुत्व के बीच से एक तुच्छ कण को भी स्थानांतरित करने की शक्ति नहीं होती है। जब किसी के लिए आध्यात्मिक अनावरण के दरवाजे खुलते हैं, तो वे [आध्यात्मिक] गवाही के साथ एक और भी अधिक स्पष्ट हो जाते हैं।

दिल के मालिक के साथ कलम की बातचीत

अब हम परमेश्वर में विश्वास (तवाक्कुल) को *समझाने के लिए एक कलम का एक उदाहरण प्रदान करेंगे*। एक आध्यात्मिक यात्री (*सालिक*) जिसका हृदय ईश्वर के प्रकाश से प्रकाशित था, ने एक कागज देखा जो पहले सफेद था लेकिन बाद में काला हो गया [उस पर लेखन के कारण]। उसने अखबार से पूछा, "तुम्हारा चेहरा काला क्यों हो गया?" उसने जवाब दिया, "आपका यह सवाल निष्पक्षता पर आधारित नहीं है। मैंने अपने आप से अपना चेहरा काला नहीं किया है। स्याही से पूछो। यह स्याही के बर्तन में रह रहा था जो उसका निवास स्थान था। तब स्याही ने अपना देश छोड़ दिया और मेरे चेहरे को अपनी मंजिल बना लिया और उत्पीड़न और बल के साथ मुझ पर वास करने के लिए आ गया। आध्यात्मिक यात्री ने कहा, "आप सच कह रहे हैं"। फिर उसने स्याही से पूछा, "तुमने कागज को काला क्यों बनाया?" इसमें कहा गया है, 'आपने मेरे साथ न्याय नहीं किया है। मैं शांति के साथ स्याही के बर्तन में बैठा था और इससे बाहर आने का मेरा कोई इरादा नहीं था। कलम ने अपने बुरे लालच के कारण मुझ पर अत्याचार किया और मुझे अपना देश (घर या निवास) छोड़ने के लिए मजबूर किया, मुझे बेघर कर दिया, मेरी एकता को तितर-बितर कर दिया, और मुझे इस सफेद मैदान (कागज) में तितर-बितर कर दिया और मुझे नष्ट कर दिया। इसलिए आपको मेरे बजाय कलम मांगनी चाहिए। आध्यात्मिक यात्री ने कहा, "आप सच कह रहे हैं", फिर कलम से उसके उत्पीड़न के बारे में सवाल किया और पूछा, "आपने स्याही को उसके देश से बाहर क्यों निकाला और उसे अपने प्रियजनों से अलग क्यों किया?" उसने उत्तर दिया, "आपको हाथ और उंगलियों से पूछना चाहिए। मैं बस एक हरे ईख (डंठल) के रूप में धाराओं के पास खड़ा था। एक आदमी चाकू लेकर मेरे पास आया, मेरी खाल उतार दी, मुझे अपने कपड़ों से फाड़ दिया, मुझे जड़ से बाहर निकाला और मुझे टुकड़ों में काट दिया। फिर उसने एक टुकड़ा लिया, उसे उकेरा, उसका सिर काट दिया [इसे संकीर्ण बनाने के लिए], फिर मुझे कड़वी और काली स्याही में डुबो दिया। वह मुझसे सेवाएं लेता है और मुझे अपने सिर पर चलने के लिए मजबूर करता है। मेरा पूरा शरीर पहले से ही उसके हाथ से घायल है। अब आप मेरी चोटों पर अपने प्रश्नों का नमक छिड़क रहे हैं ताकि और भी अधिक सूजन हो सके। इसलिए मुझसे दूर रहो और यह सवाल उस आदमी से पूछो जिसने मुझे बिना पैर और हाथ के बनाया है। आध्यात्मिक यात्री ने भी कलम की सत्यता का पता लगाया और फिर हाथ से पूछा, "आप कलम को अपनी इच्छाओं के लिए उपयोग करने की इच्छा की अवहेलना करके उस पर इतना अत्याचार क्यों करते हैं?" हाथ ने उत्तर दिया, "मैं केवल मांस, हड्डियों और रक्त का एक संयोजन हूं। क्या तुम लोगों ने मांस का एक

टुकड़ा देखा है जो उत्पीड़न करने में सक्षम है, या एक ऐसा शरीर जो अपने आप चलता है? मैं केवल एक सवारी माउंट हूं जिस पर एक सवार सवार होता है। उस सवार को योग्यता (कुद्दा) कहा जाता है। वह सवार मुझे इधर-उधर घुमाता है और मुझे पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों में घूमने के लिए मजबूर करता है। क्या तुम देखते हो कि पेड़ और चट्टानें अपने आप तब तक नहीं हिलती जब तक कि कोई उन्हें हिला न दे? मेरे हाथ और मृत लोगों के हाथ उनके आकार और रूप में एक जैसे दिखते हैं। फिर क्या बात है कि मरे हुए लोगों के हाथ कलम नहीं उठाते, बल्कि मेरा हाथ उठाता है। इससे पता चलता है कि मेरा कलम से कोई संबंध नहीं है। आपको यह प्रश्न क्षमता से पूछना चाहिए। मैं केवल एक घुड़सवारी का पर्वत हूं जिसे एक सवार अपने चाबुक की शक्ति से चलने के लिए मजबूर करता है।

आध्यात्मिक यात्री हाथ से उत्तर पर विश्वास करता है और क्षमता पूछता है, "आपको हाथ का उपयोग करने का क्या अधिकार है? आप इसे अपने उद्देश्यों के लिए क्यों उपयोग करते हैं और आप इसे स्थानांतरित करने के लिए क्यों मजबूर करते हैं? एबिलिटी ने उत्तर दिया, "मुझे दोष मत दो। कई बार, दोष देने वाला व्यक्ति स्वयं को दोषी ठहराए जाने का हकदार होता है और जिसे दोषी ठहराया जाता है वह निर्दोष साबित होता है। मेरी स्थिति तुम्हें प्रकट नहीं की गई है। आप कैसे कह सकते हैं कि मैंने हाथ चलाकर कुछ गलत किया है? मैं इसके हिलने से पहले ही उस पर (हाथ) सवारी कर रहा था लेकिन मैं चुपचाप सो रहा था। मेरी चुप्पी और नींद की स्थिति ऐसी थी कि लोग मुझे मरा हुआ या विलुप्त मान लेते थे। दूसरे शब्दों में, मैं न तो अपने दम पर सक्रिय था और न ही मैंने कुछ और हिलाया जब तक कि एक दूत (भड़कानेवाला) नहीं आया और मुझे प्रेरित किया और मुझे वह काम करने के लिए मजबूर नहीं किया जिसके लिए आप मुझे तिरस्कार का लक्ष्य बना रहे हैं। मेरे भीतर इतनी ताकत नहीं थी कि मैं उसकी आज्ञा का अवहेलना कर सकूं। मैं उसकी इच्छा के अनुसार काम करने के लिए मजबूर था। उस रसूल का नाम इरादा (*इरादा) है*। मैं इसे केवल इसके नाम से और इसकी क्रिया से जानता हूं कि एक दिन इसने मुझ पर हमला किया और मुझे मेरी गहरी नींद से जगाया और मुझे हाथ हिलाने के लिए मजबूर किया। मुझे उसके आदेश के अनुसार कार्य करने के अलावा कोई रास्ता नहीं मिला।

आध्यात्मिक यात्री ने कहा, "आप सच कह रहे हैं"। फिर उसने इरादा पूछा, "आपके साथ ऐसा क्या हो गया था कि आपने शांत और संतुष्ट क्षमता को भंग कर दिया [जो निष्क्रिय पड़ी थी] और उसे स्थानांतरित करने के लिए मजबूर किया ताकि आपके आदेश का पालन करने के अलावा उसके पास कोई रास्ता न हो?" इरादा ने उत्तर दिया, "मुझे दोष देने में इतनी जल्दी मत करो। यह संभव है कि मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया हो और आप बिना किसी कारण के मुझे दोष दे रहे हों। मैं अपने आप नहीं उठा, लेकिन मुझे उठने के लिए बनाया गया था। मैं अपने आप नहीं उठा, इसके बजाय, मुझे एक विशाल और अप्रतिरोध्य शक्ति द्वारा जगाया गया है, अन्यथा, मैं बहुत शांत था और अपनी जगह पर रह रहा था। बुद्धि की जीभ से ज्ञान का एक दूत हृदय के दरबार से मेरे पास आया और मुझे क्षमता को जगाने का आदेश दिया। इसलिए, मजबूरी में, मैंने क्षमता को जगाया। मैं ज्ञान और बुद्धि से जीत गया हूं और उसके अधीन हो गया हूं और मुझे नहीं पता कि मेरे किस अपराध के लिए, मुझे ज्ञान और बुद्धि के अधीन बना दिया गया है और उनके अधीन और आज्ञाकारी घोषित किया गया है। जब तक यह शक्तिशाली दूत मेरे पास नहीं आया, तब तक मैं शांत और शांतिपूर्ण नहीं था। अब यह मेरा शासक है, चाहे वह न्यायसंगत हो या दमनकारी, मैं इसकी आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर हूं। जब यह मुझे किसी भी चीज के साथ आदेश देता है, तो मेरे पास इसका विरोध करने की कोई ताकत नहीं है। मैं अपने जीवन की कसम

खाकर कहता हूं कि जब वह किसी भी मामले में चिंतित और झिझकती है, तो मैं चुप रहता हूं, लेकिन मेरा ध्यान उस ओर होता है। जब यह अंतिम निर्णय लेता है, तो मैं अपने स्वभाव की मांग से इसका पालन करने और क्षमता को जगाने के लिए मजबूर हो जाता हूं। अब आपको ज्ञान मांगना चाहिए और अपनी आलोचना को मुझसे दूर रखना चाहिए।

आध्यात्मिक यात्री ने कहा, "आप सच कह रहे हैं", फिर ज्ञान, बुद्धि और हृदय की ओर मुड़ गया और क्षमता को उकसाने के लिए इरादे को वश में करने के लिए उन्हें फटकार लगाई। बुद्धि ने उत्तर दिया, "मैं एक [प्रकाश देने वाला] दीपक हूं जिसे स्वयं द्वारा जलाया नहीं गया है (प्रकाशित) किया गया है, लेकिन किसी और ने मुझे प्रकाशित किया है"। हार्ट ने जवाब दिया, "मैं एक टैबलेट हूं जो खुद से नहीं फैला है, लेकिन किसी और ने मुझे फैलाया है"। ज्ञान ने कहा, "मैं एक शिलालेख हूं जो बुद्धि के दीपक के जलने के बाद हृदय की पट्टिका की सफेदी पर अंकित हो जाता है। मैं खुद से अंकित नहीं होता बल्कि कोई और मुझ पर अंकित हो जाता है। इसीलिए, आपको उस कलम से पूछना चाहिए जो मुझ पर अंकित है। इस संघर्ष के बाद, आध्यात्मिक यात्री को ऐसा कोई उत्तर नहीं मिलता है जो किसी को संतुष्ट कर सके ताकि वह इससे संतुष्ट हो सके। इसलिए, आध्यात्मिक यात्री हैरान और परेशान हो जाता है और कहता है, "मैं लंबे समय से इस रास्ते पर चल रहा हूं और कई गंतव्यों को पार करके यहां आया हूं। रास्ते में मैं जो भी मिला, मैंने वही सवाल पूछा है। सभी ने मुझे किसी और को सौंप दिया। हालांकि, मैं इस संघर्ष से खुश था क्योंकि हर जवाब उचित था और दिल को आश्वस्त करता था, लेकिन यह अंतिम जवाब मेरी समझ से परे है। ज्ञान कहता है, 'मैं एक शिलालेख हूं जो कलम के नीचे से अस्तित्व में आया है', हालांकि कलम ईख से बनी होती है, गोली लोहे या लकड़ी से बनी होती है और शिलालेख काली या लाल स्याही का होता है और दीपक आग से जलाया जाता है। यहां मैं टैबलेट, लैंप और शिलालेख की बात सुन रहा हूं, हालांकि मुझे उनमें से कोई भी नहीं दिख रहा है। ज्ञान इसके जवाब में कहता है, "आपकी पूंजी (धन) कम है और आपका प्रावधान [यात्रा के लिए] सीमित है, आपकी सवारी कमजोर है, और जिस रास्ते पर आप यात्रा करते हैं उसमें असंख्य खतरे हैं। इसलिए आपके लिए बेहतर होगा कि आप इस रास्ते को छोड़ दें और एक अलग रास्ता अपनाएं क्योंकि आप इसके लिए योग्य नहीं हैं। जो किसी चीज के लिए पात्र है, उसे उस तक पहुंचने के साधन प्रदान किए जाते हैं। यदि आप वास्तव में इस पथ पर यात्रा पूरी करना चाहते हैं, तो इसे बहुत ध्यान से सुनें:

तीन लोक: याद रखें, आपकी इस यात्रा के लिए तीन क्षेत्र हैं। एक आलम *अल-मुल्क वा अस-शहादा* का क्षेत्र है जिसे दिव्य सर्वशक्तिमानता और शक्ति के प्रकटन के दायरे के रूप में भी जाना जाता है। कागज, स्याही, कलम, हाथ आदि एक ही क्षेत्र से संबंधित हैं। तुम धीरे-धीरे इन चीजों से आगे बढ़े। दूसरा स्वर्गदूत क्षेत्र (*'आलम अल-मलकूट)* है जो मेरे बाद आता है (यानी, ज्ञान)। जब तुम मुझसे आगे निकल जाओगे, तो तुम इस क्षेत्र की मंज़िलों तक पहुँच जाओगे। मुझे नहीं पता, आप उनमें कैसे सुरक्षित रहेंगे। तीसरा पूर्ण दिव्य विशालता या संप्रभुता (*'आलम अल-जबरत)* का क्षेत्र है। आपने इसके पहले तीन गंतव्यों को पार कर लिया है, दूसरे शब्दों में, क्षमता, इरादा और ज्ञान। यह क्षेत्र पहले दो लोकों के बीच एक साधन के रूप में कार्य करता है। जो पृथ्वी पर चलता है वह *'आलम अल-मुल्क वा अस-शहादा* [या दिव्य सर्वशक्तिमानता और शक्ति के प्रकटन का क्षेत्र] पर चलता है।

देवदूत क्षेत्र की शुरुआत (*'आलम अल-मलकूट):* देवदूत क्षेत्र की शुरुआत यह है कि आप उस कलम को देखते हैं जो दिल की पट्टिका पर लिखती है और उस निश्चितता को प्राप्त करती है जिसके साथ पानी

पर चलना पूरा होता है। आपने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की कहावत सुनी होगी जब उन्हें यह बताया गया कि यीशु (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) पानी पर चलते थे, तो उन्होंने कहा:

لَوِ ازْدَادَ يَقِيْنًا لَمَشٰى عَلَى الْهَوَاءِ

'अगर उसके पास अधिक निश्चितता होती, तो वह हवा में चला जाता"।

ज्ञान के इस भाषण को सुनकर आध्यात्मिक यात्री ने कहा, "मैं अपनी स्थिति के बारे में उलझन में हूं। मेरा दिल उस मार्ग के खतरों से कांप रहा है जो आपने बताया है। मुझे यकीन नहीं है कि मैं उस विशाल खतरनाक इलाके को पार कर सकता हूं जिसे आपने बताया है। क्या आप मुझे कलम के किसी संकेत के बारे में सूचित कर सकते हैं?" ज्ञान ने कहा, "इसका एक संकेत (संकेत) है और वह यह है कि आप अपनी आंखें खोलते हैं, मुझे देखने के लिए उनके प्रकाश को इकट्ठा करते हैं। यदि आप उस कलम को देखते हैं जिसका उपयोग हृदय की पट्टिका पर एक बयान लिखने के लिए किया जाता है तो आपको देवदूत क्षेत्र ('*आलम अल-मलकूट)* के लिए योग्य कहा जाएगा क्योंकि जो व्यक्ति पूर्ण दिव्य विशालता या दिव्य संप्रभुता ('*आलम अल-जबरत*) के दायरे से देवदूत लोक में आगे बढ़ता है, वह उस कलम को देखना शुरू कर देता है! इसीलिए, जब पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को उनकी पैगंबर की शुरुआत में निम्नलिखित पवित्र आयत प्रकट की गई, तो उन्होंने कलम देखी:

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ﴿٣﴾
الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾
عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾

'पढ़ो और आपका भगवान राजसी और माननीय है जिसने कलम से सिखाया, मनुष्य को वह सिखाया जो कोई नहीं जानता था। (कुरान, अध्याय 96, आयत 3-5)

आध्यात्मिक यात्री ने कहा, "मैंने अपनी आँखें खुली रखी हैं और बहुत ध्यान से देखने की कोशिश की है, लेकिन [अभी भी] न तो उस कलम को देखा है और न ही टैबलेट को। अगर मैंने कोई पेन देखा है, तो वे बाहरी पेन हैं जिनका उपयोग लिखने के लिए किया जाता है। ज्ञान ने कहा, "तुम जो कह रहे हो वह अजीब है! क्या आपने नहीं सुना है कि घर का मालिक जिस तरह से घर का मालिक है, उसी तरह से घर में सामान है? क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर का अस्तित्व, किसी अन्य प्राणी के समान नहीं है? उसका हाथ किसी अन्य हाथ की तरह नहीं है, उसकी कलम अन्य कलम के समान नहीं है, और उसकी वाणी का किसी अन्य भाषण से कोई समानता नहीं है। ये दिव्य मामले हैं और ये देवदूत क्षेत्र से संबंधित हैं। ईश्वर न तो शरीर है और न ही वह किसी स्थान के अंदर है, जबकि अन्य सभी चीजें शरीर हैं और साथ ही अपने स्थानों पर भी। उसका हाथ न तो मांस है और न ही खून और हड्डियाँ, अन्य हाथों के विपरीत जो मांस, रक्त और हड्डियों का संयोजन हैं। उसकी कलम न तो ईख से बनी है और न ही उसकी पटिया लकड़ी से

बनी है। उसका भाषण न तो अक्षरों और ध्वनियों से बना है और न ही उसका निशान छापों से बना है और उसकी स्याही रंगों से बनी नहीं है। यदि आप मामलों को वैसे नहीं देखते जैसे वे वास्तव में हैं, तो आपमें कमी है। वास्तव में, पूर्ण मनुष्य वे हैं जो ईश्वर को ऊपर मानते हैं और किसी भी शरीर के होने से शुद्ध होते हैं, और कमी वे लोग हैं जो उनके शरीर के समान होते हैं। आप दो [समूहों] के बीच में हैं, न तो यहां के हैं और न ही उधर के। मुझे बताओ कि तुमने परमेश्वर को देहों और [मनुष्य] गुणों से कैसे मुक्त किया है? तुमने उसके भाषण को किसी भी अक्षर और ध्वनि से रहित कैसे माना है? तुम उसके हाथ, कलम और टैबलेट के बारे में झिझक रहे हो। जो व्यक्ति ईश्वर को दृश्य पिंडों के समान मानता है, वह केवल एक समानता कर रहा है और जो इसे एक आंतरिक अर्थ के रूप में मानता है जिसे केवल अंतर्दृष्टि की आंख से देखा जाता है, तो यह एक संकेत है कि कोई व्यक्ति ईश्वर को इन [मानवीय] समानताओं से ऊपर मानता है और ईश्वरीय महिमा और स्तुति के मार्ग पर एक यात्री है। अब व्यक्ति को मार्ग पर चलना चाहिए और अंतरतम हृदय से ईश्वरीय आज्ञाओं को सुनना चाहिए, शायद किसी को दिव्य प्रकाश के प्रकाश का मार्ग मिल सकता है।

जब आध्यात्मिक यात्री ने इस व्यावहारिक बात को सुना, तो व्यक्ति को अपनी गलतियों के बारे में सूचित किया गया और महसूस किया कि वह [ईश्वर से शरीर] और ईश्वरीय महिमा के बीच निलंबित है। इस बोध के साथ, स्वयं पर क्रोध की आग उसके हृदय में प्रज्वलित हो उठी और चूंकि किसी के हृदय के [प्रकाशमान] दीपक में ऐसा शुद्ध और लंगड़ा तेल था जो आग के बिना भी जलने के लिए तैयार था, इसीलिए, जब ज्ञान की आग उस तक पहुंची, तो वह प्रकाश पर प्रकाश बन गई। यह देखने के बाद ज्ञान ने आध्यात्मिक यात्री से कहा, "इस अवसर का उपयोग करो और अपनी आँखें खोलो, शायद तुम्हें मार्गदर्शन मिलेगा"। इसलिए, किसी ने अपनी आँखें खोल दीं और परमेश्वर की कलम ने अपनी सभी विशेषताओं के साथ खुद को प्रकट कर दिया जो ईश्वरीय महिमा के लिए अपरिहार्य है। यह न तो ईख से बना है, न ही लकड़ी या इसके नुकीले किनारे से। यह मनुष्य के हृदय पर विभिन्न प्रकार के ज्ञान लिखने में व्यस्त है। इसकी नोक हर दिल की सतह पर होती है, हालांकि जाहिरा तौर पर, इसमें कोई टिप नहीं होती है। आध्यात्मिक यात्री यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ, और कहा, "वास्तव में, ज्ञान वास्तव में सबसे अच्छा साथी है [क्योंकि इसके बिना, हम सभी अज्ञानी हैं]। भगवान इसे सबसे अच्छा प्रतिफल दें। कलम की सभी विशेषताएं जिनके बारे में उसने मुझे बताया, वे सभी दिखाई देने लगीं। अब वह पेन मेरे लिए अन्य पेन की तरह नहीं रह गया है। उसके बाद आध्यात्मिक यात्री ने ज्ञान को अलविदा कह दिया और उसे धन्यवाद दिया और उससे कहा, "मैं लंबे समय तक तुम्हारे साथ रहा, अब मेरे पास कलम के पास जाकर उसकी स्थिति के बारे में पूछने का दृढ़ संकल्प है"।

आध्यात्मिक यात्री और कलम के बीच बातचीत: इसलिए, आध्यात्मिक यात्री कलम के पास आया और उससे पूछा, "हे कलम! तुम हर समय लोगों के दिलों में ज्ञान क्यों लिखते रहते हो, जब तक कि ये ज्ञान इरादों को भड़काते हैं, और योग्यता नहीं बढ़ जाती, और स्वैच्छिक कार्य नहीं किए जाते?" पेन ने भरोसा किया, "क्या आप उस चीज़ के बारे में भूल गए हैं जो आपने ईश्वरीय सर्वशक्तिमानता और शक्ति ('आलम *अल-मुल्क वा अस-शहादा*) के दायरे में देखा था? क्या आपने कलम से सुनी गई प्रतिक्रिया को नजरअंदाज कर दिया है? जहां तक मुझे याद है, इसने [दिलों पर] लिखने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं की, बल्कि इसे भगवान पर सौंप दिया। आध्यात्मिक यात्री ने कहा, "मैं न तो इसे भूला हूं, न ही मैंने कलम से प्रतिक्रिया को नजरअंदाज किया है"। पेन ने उत्तर दिया, "क्या तुमने नहीं सुना कि परमेश्वर ने आदम

(मानवता के पिता) को अपनी छवि पर बनाया है? आपको राजा के दाहिने हाथ से मेरी स्थिति के बारे में पूछना चाहिए। मैं उसके नियंत्रण में हूं, वह वह है जो मुझे प्रेरित करता है, मैं उसके नियंत्रण में हूं। अर्थात्, ईश्वर की कलम और मनुष्य की कलम दोनों के वश में होने के संदर्भ में कोई अंतर नहीं है। यदि कोई अंतर है, तो यह केवल बाहरी उपस्थिति के बीच का अंतर है"। आध्यात्मिक यात्री ने पूछा, "राजा के दाहिने हाथ से क्या मतलब है?" पेन ने उत्तर दिया, "इसका अर्थ वही है जो नीचे दी गई कविता में उल्लिखित है:

وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطۡوِيَّٰتُۢ بِيَمِينِهِۦۚ

"और आकाश उसके दाहिने हाथ पर लपेटा जाएगा। (कुरान, अध्याय 39, आयत 67)

इसी तरह, कलम भी उसके दाहिने हाथ में है, वह इसे अपनी इच्छानुसार इधर-उधर घुमाता है।

आध्यात्मिक यात्री की दाहिने हाथ की ओर यात्रा: इस बातचीत के बाद, आध्यात्मिक यात्री ने दाहिने हाथ की ओर यात्रा करना शुरू कर दिया [दिव्य प्रोविडेंस का हाथ]। वहाँ एक अद्भुत आश्चर्यजनक चमत्कार देखा. कलम में तुलना में उनका एक अंश भी नहीं था। ये चमत्कार ऐसे थे कि इन्हें शब्दों में समझाया नहीं जा सकता, बल्कि अगर इन्हें हजारों किताबों में समझाया जाए, तो इनके सौवें हिस्से को भी समझाया नहीं जा सकता था। संक्षेप में, यह दाहिना हाथ है लेकिन अन्य दाहिने हाथ की तरह नहीं। इसकी एक भुजा है लेकिन अन्य भुजाओं की तरह नहीं। इसकी उंगलियां होती हैं लेकिन उनमें अन्य उंगलियों से थोड़ी सी भी समानता नहीं होती है। आध्यात्मिक यात्री ने कलम को दाहिने हाथ से हिलाते हुए देखा और फिर समझ गया कि कलम ने जो कुछ भी व्यक्त किया है वह सही है। वास्तव में, यह सब दाहिने हाथ का खेल है। इसलिए, आध्यात्मिक यात्री ने दाहिने हाथ से पूछा कि यह कलम के चारों ओर क्यों घूमता है और उसने जवाब दिया, "मेरी प्रतिक्रिया वही है जो दिव्य सर्वशक्तिमानता और शक्ति (*'आलम अल-मुल्क वा अस-शहादा*) [या यह दृश्यमान, भौतिक दुनिया] के प्रकट होने के दायरे से हाथ द्वारा प्रदान की गई थी, दूसरे शब्दों में, इसने इस आंदोलन को क्षमता (कुद्दा मा.). मैं भी यही कहता हूं - यह क्षमता का खेल है। यह सुनकर, आध्यात्मिक यात्री क्षमता के पास गया, जहां उसने ऐसे चमत्कार देखे, उसने उनमें से एक अंश भी पहले नहीं देखा था। भयभीत एक ने पूछा, "आप दाहिना हाथ क्यों हिलाते हैं?" क्षमता ने उत्तर दिया, "मैं सिर्फ एक विशेषता हूं, आपको इस विशेषता के धारक (मालिक) से पूछना चाहिए - जिसे इस विशेषता की विशेषता है - सर्वशक्तिमान एक। केवल इस विशेषता का धारक ही आपको कारण के बारे में सूचित कर सकता है। यह विशेषता केवल इसके धारक के अधीन है। इस प्रतिक्रिया को सुनकर, आध्यात्मिक यात्री परम शक्तिशाली (ईश्वर) से पूछने की हिम्मत करने के लिए अपने पैरों को घुमाने के करीब था, [लेकिन] किसी को अपने पैरों की दृढ़ता [सत्य के मार्ग पर] दी गई और पूर्ण शक्तिशाली के दरबार से पुकार सुनी:

لَا يُسۡـَٔلُ عَمَّا يَفۡعَلُ وَهُمۡ يُسۡـَٔلُونَ

"वह जो कुछ भी करता है, कोई भी उससे सवाल नहीं कर सकता है, जबकि बाकी सभी से सवाल किया जा सकता है [वे क्या करते हैं]। (कुरान, अध्याय 21, श्लोक 23)

यह सुनकर आध्यात्मिक यात्री कांपने और विस्मय से दूर हो गया और बेहोश हो गया। एक को लंबे समय तक इससे पीड़ित किया गया था। जब किसी को होश आया तो एक ने कहा, "हे भगवान! आप सभी खामियों, कमियों, दोषों और कमजोरियों से ऊपर हैं। आपकी महिमा शानदार है! मैं तुझ से पश्चाताप करता हूँ और केवल तुझ पर ही भरोसा करता हूँ और इस वास्तविकता में विश्वास स्वीकार करता हूँ कि तू एक शक्तिशाली राजसी शासक है, एकमात्र, अप्रतिरोध्य, प्रभावशाली और प्रबल है। न तो मैं तेरे सिवा किसी से डरता हूँ, और न ही तेरे सिवा किसी के साथ आशा रखती हूँ। मैं तेरी दया में तेरे हिसाब से और तेरी स्वीकृति में तेरे क्रोध से शरण चाहता हूँ। मेरे सामने कोई रास्ता नहीं है, सिवाय इसके कि मैं पूरी विनम्रता के साथ आपसे प्रार्थना करता हूं कि, 'हे भगवान! मेरा हृदय खोल दो ताकि मैं तुझे जान सकूँ। मेरी जीभ की गाँठ खोल दो ताकि मैं तेरी स्तुति और महिमा कर सकूँ!'" इस प्रार्थना (प्रार्थना) के जवाब में, ईश्वरीय उपस्थिति से घोषणा आई, "सावधान! आगे मत बढ़ो! महिमा और स्तुति में लालची मत बनो! ईश्वर के दूत (मुहम्मद) (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) की सेवा में जाएं और जो वह आपको देता है उसे ले लो और जो वह आपको रोकता है उससे दूर रहें! और वही कहो जो वह तुमसे कहने के लिए कहता है। देखें कि उसने [(परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो)] ने दिव्य न्यायालय में यह [प्रार्थना] विनती की:

سُبْحَانَكَ لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ

'आपकी जय हो! आप सभी खामियों, कमियों, दोषों और कमजोरियों से ऊपर हैं। मैं आपकी पूरी तरह से प्रशंसा भी नहीं कर सकता। तुम वैसे ही हो जैसे तुमने अपनी प्रशंसा की है!'"

आध्यात्मिक यात्री ने विनती की, "हे सभी ब्रह्मांडों के स्वामी! यदि जीभ को इस सीमा से अधिक करने की अनुमति नहीं है, तो क्या हृदय को आपके ज्ञान का लालच हो सकता है? उत्तर आया, "क्या आप ज्ञानवादियों को भी पार करना चाहते हैं! सबसे बड़े ज्ञानवादी (*सिद्दीक अल-अकबर)* [अबू बक्र (भगवान उनसे प्रसन्न हों), जिनके पास सभी भविष्यवक्ताओं के बाद ईश्वरीय निकटता और ज्ञान में सर्वोच्च पद है] के पास जाएं और उसका अनुसरण करें। क्या तुमने नहीं सुना कि उसने क्या कहा?

اَلْعِجْزُ عَنْ دَرْكِ الْإِدْرَاكِ إِدْرَاكٌ

'धारणा को समझने में असमर्थता धारणा है'।

मेरी उपस्थिति से तुम्हारा हिस्सा यह है कि तुम मेरी उपस्थिति से वंचित हो। आपके पास [दिव्य] गंभीरता (जलाल) और [दिव्य] सुंदरता (*जमाल*) को देखने की ताकत नहीं है।

यह सुनने के बाद, आध्यात्मिक यात्री उस मार्ग पर वापस चला गया जिस पर वह चला गया था। कलम से जो भी प्रश्न पूछे, ज्ञान, इरादा और क्षमता आदि, एक ने उनसे माफी मांगी और अपनी अज्ञानता को स्वीकार किया और कहा, "मुझे क्षमा करें, मैं इस रास्ते के लिए एक अजनबी (नया) था। जो अजनबी है वह [नए क्षेत्रों से] भयभीत हो जाता है। मैंने तुम्हें अस्वीकार कर दिया, यह पूरी तरह से मेरी गलती और अज्ञानता है। अब मुझे आपके बहानों के बारे में सूचित किया गया है और अब मैं इस वास्तविकता से परिचित हूं कि सभी क्षेत्र [दिव्य सर्वशक्तिमानता और शक्ति ('आलम *अल-मुल्क वा अस-शहादा),* देवदूत

क्षेत्र ('*आलम अल-मलकूट),* और पूर्ण विशालता या दिव्य संप्रभुता का क्षेत्र ('आलम *अल-जबरुत)*)], केवल अप्रतिरोध्य की आज्ञा को लागू किया जाता है। तुम सभी उसके चलने के कार्य से आगे बढ़ते हो और उसकी सर्वव्यापी शक्ति से जीत लिए जाते हो और उसके अधीन हो जाते हो। वह पहला (*अल-अव्वल)* है, वह अंतिम (*अल-अखीर)* है, वह प्रकट (*अल-जहीर) है,* वह छिपा हुआ (अल-बातिन) है।

पहले और अंतिम, प्रकट और छिपे हुए के बीच संघर्ष: जब आध्यात्मिक यात्री ने दिव्य सर्वशक्तिमानता और शक्ति ('*आलम अल-मुल्क वा अस-शहादा*) या दृश्य दुनिया के प्रकट होने के दायरे के निवासियों को इन विवरणों के बारे में बताया, तो वे आश्चर्यचकित हो गए और पूछने लगे, "यह कैसे हो सकता है कि वह पहला और अंतिम, छिपा हुआ और प्रकट है क्योंकि ये गुण एक दूसरे के विपरीत हैं? जो पहले है, वह अंतिम नहीं होगा और जो छिपा हुआ है, वह प्रकट नहीं होगा। इसका उत्तर यह है कि, "वह सभी अस्तित्वों से बहुत ऊपर है क्योंकि सभी अस्तित्व उसके अस्तित्व के एक आदेश से अस्तित्व में आए हैं। वह अंतिम है क्योंकि जो लोग [आध्यात्मिक] मार्ग पर चलते हैं, उनके लिए वह उनका अंतिम गंतव्य है। यदि वे मार्ग में एक मंजिल से दूसरे गंतव्य तक आगे बढ़ रहे हैं, तो उनके मार्ग और उनकी यात्रा की परिणति उसके अस्तित्व में है। इस तरह, वह गवाही देने में अंतिम है लेकिन अस्तित्व में पहले है। छिपे हुए और प्रकट होने में उसकी अवस्था ऐसी है। जो लोग अपनी पांच इंद्रियों का उपयोग करके दृश्य जगत (प्रथम लोक) में रहते हुए उसे देखना चाहते हैं, वह उनके लिए छिपा हुआ है। जो लोग अपने हृदय की रोशनी के साथ उसे खोजते हैं, वह उनके लिए प्रकट है। यह कार्रवाई में ईश्वरीय एकता और एकता (तौहीद) की वास्तविकता का व्यावहारिक निहितार्थ है। दूसरे शब्दों में, जिन लोगों पर वास्तविकता प्रकट की गई है कि वास्तविक कर्ता केवल एक ही है, उनके लिए, यह दिव्य एकता और एकता [प्राप्त] करने का उनका तरीका है।

परमेश्वर पर भरोसा करने की अवस्थाएँ और कार्य

परमेश्वर में विश्वास का [आध्यात्मिक] स्थान ज्ञान, अवस्था और कार्य से बना है। ज्ञान का उल्लेख पहले भी किया जा चुका है। अब इस अवस्था के बारे में सुनें कि वास्तव में ईश्वर पर भरोसा है। ज्ञान इसका मूल है और कर्म इसका फल (परिणाम) है। यह ज्ञात होना चाहिए कि परमेश्वर पर भरोसा ट्रस्टीशिप से आता है, दूसरे शब्दों में, किसी ने अपना काम किसी और को सौंपा है, और किसी पर भरोसा रखता है। जिसको अपना काम सौंपा गया है वह ट्रस्टी है, जो काम सौंपता है उसे सौंपने वाला कहा जाता है लेकिन शर्त यह है कि सौंपने वाले को सौंपे गए पर पूरा भरोसा होता है और वह उसे अक्षम नहीं समझता है। इसलिए, सौंपे गए व्यक्ति में, एक ट्रस्ट में दिल में विश्वास होना चाहिए। सांसारिक विवादों में नियुक्त वकीलों की भी यही स्थिति होती है। इसलिए, यदि कोई आप पर झूठे आरोप लगाता है या अनुचित रूप से आपके स्वामित्व वाली चीज छीन लेता है तो आप इस उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए एक वकील नियुक्त करते हैं, जो

न्यायाधीश की अदालत में आपकी आवाज बन जाता है, और आपको आरोप लगाने वाले (वादी) के अन्याय और धोखे से बचाने की कोशिश करता है।

जब तक आप चार मामलों में विश्वास नहीं करते तब तक आपको अपने वकील (ट्रस्टी) पर भरोसा करने और ट्रस्टीशिप से संतुष्ट नहीं माना जाएगा: पहला यह है कि ट्रस्टी के पास उच्च स्तर का मार्गदर्शन है [आपके लिए सही काम करने के लिए], दूसरा है [ट्रस्टी की आपके लिए आवश्यक काम करने की], तीसरा उच्च स्तर की वाक्पटुता है [आपके मामले की वकालत करने में], और चौथा है [ट्रस्टी का] पूर्ण स्नेह और परोपकार [आपके लिए]। मार्गदर्शन आवश्यक है ताकि ट्रस्टी धोखे के स्थानों के बारे में इस हद तक जागरूक हो कि कोई उन सूक्ष्मताओं को देखता है जो स्पष्ट नहीं हैं [और आपके लिए खतरा पैदा करती हैं]। क्षमता और शक्ति आवश्यक है ताकि ट्रस्टी पूरे साहस के साथ सत्य का प्रचार कर सके, और कुछ भी करने में संकोच न करे [ट्रस्टी को सौंपे गए मामले से संबंधित], किसी से न डरें, किसी से न कतराएं, और कायरता न रखें। कई बार, ट्रस्टी दूसरे पक्ष के धोखे का कारण पता लगा लेता है लेकिन भय, कायरता, शर्म या किसी अन्य कारण के कारण, इसे व्यक्त करने में सक्षम नहीं होता है और सत्य की घोषणा करने में कमजोर हो जाता है। वाक्पटुता आवश्यक है ताकि एक ट्रस्टी [स्वयं] को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सके जो एक प्रकार की क्षमता भी है, हालांकि यह जीभ से संबंधित है। वाक्पटुता के माध्यम से मनुष्य हृदय के मामलों को इस प्रकार व्यक्त करने में सक्षम होता है कि श्रोता प्रभावित हो जाए, अन्यथा यह आवश्यक नहीं है कि कोई भी व्यक्ति विरोधी पक्ष के धोखे को खोज करने के बाद उसका पर्दाफाश कर सके, और सत्य को इस तरह से मौखिक रूप से व्यक्त कर सके जिससे श्रोता आश्वस्त हो सके। स्नेह आवश्यक है ताकि ट्रस्टी (वकील) सौंपने वाले व्यक्ति के लिए अधिकतम प्रयास कर सके और किसी के लिए आवश्यक कुछ भी करने से परहेज न कर सके। ऐसा इसलिए है क्योंकि केवल भ्रामक तर्कों से अवगत होना, सत्य को व्यक्त करने की क्षमता होना, और वाक्पटुता के मोती फैलाना, मामले की सफलता (सौंपे गए कार्य) के लिए पर्याप्त नहीं है, जब तक कि ट्रस्टी को सौंपने वाले व्यक्ति के अस्तित्व और परिस्थितियों में रुचि न हो और वह अपने मामलों को अपना मानता है। यदि पैसा कमाना ही एकमात्र उद्देश्य है, तो ट्रस्टी को इस बात की परवाह नहीं होगी कि सौंपने वाला व्यक्ति विजयी है या पराजित है या कोई अपने अधिकारों को प्राप्त करता है या उन्हें खो देता है।

यदि सौंपने वाले व्यक्ति को इन चार मामलों में से एक में भी संदेह है और वह ट्रस्टी को उस मामले में कमजोर मानता है या अपने स्वयं के ट्रस्टी की तुलना में विरोधी पक्ष के ट्रस्टी को चारों मामलों में मजबूत पाता है, तो कोई भी अपने ट्रस्टी (वकील) पर पूर्ण संतुष्टि और विश्वास नहीं कर सकता है। व्यक्ति अपने दिल में हर समय संदिग्ध और झिझक बना रहेगा और अपने ही ट्रस्टी से उस दोष को दूर करने का प्रयास करेगा ताकि विरोधी पक्ष का लाभ समाप्त किया जा सके। जिस हद तक सौंपने वाले व्यक्ति को सभी चार मामलों में अपने ट्रस्टी पर विश्वास होता है, उस हद तक व्यक्ति के दिल में विश्वास और संतुष्टि होगी [कि वह वांछित लक्ष्य प्राप्त करेगा]। जहां तक लोगों की मान्यताओं और अनुमानों का सवाल है, वे अपनी ताकत और कमजोरियों में समान नहीं हैं, इसके बजाय अकथनीय अंतर हैं। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है अगर [एक ट्रस्टी] को सौंपने वाले लोगों के पास अपने विश्वासों [या विश्वास के स्तर] और परिणामी आत्मविश्वास और संतुष्टि [ट्रस्टी में] में भारी विसंगतियां हैं। यह संभव है कि किसी को ट्रस्टी पर भरोसा न हो और दूसरे का विश्वास उस स्तर तक पहुंच जाए जहां उसमें कोई कमजोरी न रह जाए।

अब आप इस स्पष्टीकरण से विश्वास की वास्तविकता को जान गए होंगे और इससे ईश्वर (*तवाक्कुल*) में विश्वास का अनुमान लगा सकते हैं। यदि विश्वास (*इतिक़द*) और आध्यात्मिक अनावरण (*कशफ*) के माध्यम से, यह आपके हृदय में दृढ़ता से बैठ जाता है कि ईश्वर के अलावा कोई अन्य कर्ता नहीं है। यह भी विश्वास रखें कि परमेश्वर अपने सेवकों की स्थिति और परिस्थितियों से अच्छी तरह वाकिफ है और उनके लिए पर्याप्त होने में पूरी तरह से सक्षम है, उसकी उदारता स्वर्ग और पृथ्वी की सभी सृष्टिओं और हर कण को समाहित करती है, और उनमें से सभी को शामिल करती है [बिना किसी बहिष्कार के]। यह विश्वास भी रखें कि उनकी क्षमता और शक्ति पर कोई सीमा नहीं है, उनके ज्ञान पर कोई सीमा नहीं है, उनकी परोपकार और उदारता पर कोई सीमा नहीं है, जिसके आगे कोई परोपकार और उदारता नहीं है। यदि परमेश्वर के बारे में ये सभी विश्वास और विचार तुम लोगों में दृढ़ता से समाए हुए हैं, तो तुम निश्चित रूप से उस पर भरोसा रखोगे और हर स्थिति और अवस्था में तुम उस पर अपना ध्यान रखोगे, उसके अलावा किसी और पर ध्यान नहीं दोगे, न तो अपने अस्तित्व पर और न ही अपनी स्वयं की शक्ति और सामर्थ्य पर क्योंकि कोई सामर्थ्य नहीं है, परमेश्वर के अलावा आगे बढ़ने वाला और पराक्रम करने वाला।

ईश्वर पर भरोसा न करने के कारण : यदि किसी के हृदय में ईश्वर पर भरोसा नहीं है तो उसके दो कारण हो सकते हैं - या तो चार मामलों में से एक में निश्चितता कमजोर होगी या इसका कारण हृदय की कमजोरी, कायरता और चिंतित विचार हो सकते हैं। कभी-कभी, निश्चितता कमजोर नहीं होती है, लेकिन अंधविश्वास हृदय पर हावी हो जाते हैं और आंतरिक स्वभाव में घृणा और कमी पैदा करते हैं [ईश्वर पर भरोसा रखने के लिए]। उदाहरण के लिए, यदि किसी बुद्धिमान व्यक्ति को कब्र में या मृत व्यक्ति के कमरे या बिस्तर पर शव के साथ लेटने के लिए कहा जाता है, तो कोई भी इस बात से कभी सहमत नहीं होगा, भले ही, कोई अच्छी तरह से जानता है कि मृत शरीर पत्थर की तरह निर्जीव और गतिहीन होता है और उसमें नुकसान पहुंचाने की कोई शक्ति नहीं होती है, न ही यह परमेश्वर का तरीका है कि वह मृत्यु के बाद किसी को वापस जीवन में लाए, हालाँकि परमेश्वर के पास जीवन में वापस लाने की शक्ति है। यह ठीक इस तथ्य की तरह है कि परमेश्वर एक लेखक के हाथ में कलम को सांप में नहीं बदलता है, या एक बिल्ली को शेर में नहीं बदलता है, हालांकि, वह एक कलम को सांप में और एक बिल्ली को शेर में बदलने में सक्षम है। इससे पता चलता है कि बुद्धि वाले व्यक्ति को यह निश्चितता होती है कि एक मृत व्यक्ति कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता है, लेकिन फिर भी व्यक्ति अपने बिस्तर पर एक मृत शरीर के साथ सोने या उसके साथ कब्र में अकेले रात बिताने के लिए सहमत नहीं है, भले ही उसे किसी अन्य निर्जीव भौतिक वस्तुओं का कोई डर न हो। वास्तव में, यह कायरता और भय है और एक प्रकार की कमजोरी है। बहुत कम लोग ऐसी कमजोरियों से रहित होते हैं। कुछ लोग इस हद तक कायर होते जा रहे हैं कि उनकी कायरता एक बीमारी का रूप ले लेती है और वे अकेले रहने की कल्पना से भयभीत हो जाते हैं, एक मृत के साथ अकेले रहने के बारे में भूल जाते हैं।

संतुष्टि और निश्चितता: इस चर्चा का परिणाम यह है कि ईश्वर में विश्वास की पूर्णता [प्राप्त] करने के लिए, हृदय और निश्चितता दोनों की शक्ति की आवश्यकता होती है, तभी हृदय को संतुष्टि और शांति मिलती है। तब न तो केवल निश्चितता की ताकत ही पर्याप्त है और न ही यह अकेले संतुष्टि का स्रोत है जब तक कि हृदय में शक्ति न हो। वास्तव में, दिल की संतुष्टि एक बात है और निश्चितता दूसरी (अलग) चीज है। कभी-कभी, किसी के पास निश्चितता होती है लेकिन संतुष्टि नहीं होती है। इसका मतलब है कि किसी के पास निश्चितता है, लेकिन जो संतुष्टि और शांति उसे अपनी आंखों से देखने से मिलती है, वह नहीं है। प्रारंभ में,

निश्चितता संतुष्टि पैदा नहीं करती है, लेकिन यह धीरे-धीरे आत्मा को शांति से बनाती है (*नफ्स अल-मुतमाइन्ना*) [यानी, निचला स्व अपनी मूल इच्छाओं और नकारात्मक गुणों के साथ, एक ऐसे स्वयं में बदल जाता है जो ईश्वर के साथ शांति में है और हर उस चीज के साथ जो पहले अकल्पनीय था]। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके पास निश्चितता नहीं होती है लेकिन संतुष्टि होती है, जैसे कि ऐसे लोग जो गलत और हानिकारक मान्यताओं का पालन करते हैं जिनके बारे में उनके पास कोई निश्चितता नहीं है, लेकिन फिर भी वे अपनी गलत और हानिकारक मान्यताओं के विपरीत हर चीज के लिए जिद और उपेक्षा से संतुष्ट हैं। इससे पता चलता है कि कायरता और दुस्साहस मानवीय स्वभाव का हिस्सा है और उनकी उपस्थिति में निश्चितता उपयोगी नहीं है। यह भी ईश्वर में विश्वास का विरोध करने के कारणों में से एक है, ठीक उसी तरह जैसे एक कारण यह है कि विश्वास के लिए आवश्यक उपरोक्त चार मामलों में से एक [या अधिक] में निश्चितता कमजोर है। जब निश्चितता और संतुष्टि के सभी कारणों को एक साथ जोड़ दिया जाता है [विश्वास के लिए आवश्यक चार मामलों सहित] तो व्यक्ति ईश्वर में पूर्ण निश्चितता विकसित करता है [और इसलिए उस पर पूरा भरोसा रखता है]।

परमेश्वर पर विश्वास की तीन डिग्री: पिछले पन्नों में, परमेश्वर में विश्वास की वास्तविकता और परमेश्वर में विश्वास की स्थिति को समझाया गया है। अब हम इस अवस्था की डिग्री के बारे में बताएंगे। परमेश्वर पर भरोसा करने की कुल तीन डिग्री हैं जो परमेश्वर में भरोसे की स्थिति की ताकत या कमजोरी पर आधारित हैं। पहली डिग्री वह है जिसे अभी समझाया गया है, यानी, एक नौकर (मनुष्य का) विश्वास भगवान की तरह है जो एक भरोसेमंद व्यक्ति के ट्रस्टी पर होता है (या एक ग्राहक के वकील पर)। दूसरी डिग्री जो पहले की तुलना में अधिक है, वह यह है कि भगवान के साथ भरोसा करने वाले व्यक्ति की स्थिति मां के साथ एक बच्चे की तरह है - एक बच्चा न तो अपनी मां के अलावा किसी और को जानता है और पहचानता है, न ही कोई मां के अलावा किसी और से विनती करता है या किसी और पर भरोसा करता है। जब कोई बच्चा अपनी मां को देखता है तो वह उससे चिपक जाता है, भले ही वह टकरा जाए फिर भी बच्चा उसमें शरण लेता है, अगर उसकी उपस्थिति या अनुपस्थिति में कुछ होता है, तो बच्चे के होठों पर केवल मां का नाम आता है (यानी, बच्चा केवल मां के लिए रोता है), केवल मां का विचार बच्चे के दिल में आता है, और मां का आलिंगन बच्चे का एकमात्र आश्रय होता है। एक बच्चे को माँ की देखभाल, पर्याप्तता और स्नेह में पूर्ण आत्मविश्वास और निश्चितता होती है जो धारणा से रहित नहीं होती है। जिस हद तक एक बच्चे में विवेक था, बच्चा इसे महसूस करता है। ऐसा लगता है कि मां में आत्मविश्वास और निश्चितता बच्चे का स्वभाव बन गई है। हालांकि, अगर बच्चे से इस आदत या प्रकृति के बारे में पूछा जाता है तो वह न तो इसे समझा सकता है और न ही किसी के दिमाग में इसका विवरण ला सकता है।

जिसका हृदय परमेश्वर पर केंद्रित है, ऐसे व्यक्ति की दृष्टि केवल उसकी दयालुता पर होगी और उसे उसके देने और उदारता पर भरोसा होगा। किसी के मन में उसके लिए इतना गहरा प्रेम (इश्क) होगा जो एक बच्चे के मन में अपनी माँ के लिए होता है। वास्तव में, यह वही है जिसे परमेश्वर पर भरोसा है। एक बच्चे को भी अपनी मां पर भरोसा होता है। इस (दूसरी) डिग्री [ईश्वर में भरोसे] और पिछली (पहली) डिग्री के बीच का अंतर यह है कि जो इस डिग्री में है वह ईश्वर में भरोसे का ऐसा अभ्यासी है कि वह इस विश्वास में नष्ट (विलुप्त) हो जाता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर में भरोसे की वास्तविकता की ओर झुकाव नहीं रखता है, बल्कि, व्यक्ति केवल इस ओर झुका होता है [और चौकस रहता है] कि जिस प्राणी पर भरोसा किया गया है, ऐसे व्यक्ति के दिल में उसके अलावा किसी और के लिए कोई जगह नहीं बची है, जबकि भगवान पर

भरोसा करने वाला व्यक्ति भगवान पर भरोसा रखने का प्रयास करता है। यह प्रयास और संघर्ष से ईश्वर पर भरोसा करने वाला व्यक्ति है, जबकि दूसरी डिग्री में एक, अपने सहज स्वभाव से भरोसेमंद व्यक्ति है। पहली डिग्री में एक व्यक्ति ईश्वर में विश्वास में नष्ट नहीं होता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति ईश्वर में अपने भरोसे की ओर झुका होता है और सचेत रूप से इसके बारे में जागरूक होता है, और यह उस व्यक्ति को देखने की दिशा में एक बाधा है जिस पर भरोसा किया जा रहा है (भगवान)।

ईश्वर पर विश्वास की तीसरी डिग्री जो उच्चतम डिग्री भी है, वह यह है कि भरोसेमंद व्यक्ति, किसी की हरकतों में और ईश्वर के सामने शांति, स्नान करने वाले के हाथों में एक मृत व्यक्ति की तरह है [जो दफनाने से पहले मृत शरीर को धोता है], दूसरे शब्दों में, अपने निचले स्व को मृत के रूप में सोचता है जो शाश्वत क्षमता (भगवान) द्वारा इधर-उधर घूमता है, जैसे एक मृत शरीर को अपनी इच्छा से स्थानांतरित किया जाता है। स्नान करने वाला। इस तरह के भरोसेमंद व्यक्ति के पास यह दृढ़ निश्चितता है कि गति, क्षमता, इरादे, ज्ञान और सभी गुणों का स्रोत सिर्फ एक प्राणी है और यह कि सब कुछ उसकी इच्छा के बिना पैदा होता है [अपने निर्माता की इच्छा से]। यह व्यक्ति कुछ अप्रत्याशित होने का इंतजार कर रहा है और उस बच्चे से अलग है जो अपनी मां के पीछे दौड़ता है, उसका कपड़ा खींचता है, उससे विनती करता है, जबकि यह व्यक्ति उस बच्चे की तरह है जिसे यह उम्मीद होती है कि किसी की माँ अपने आप एक की तलाश में निकल जाएगी, अगर कोई उसका कपड़ा नहीं पकड़ता है, वह अभी भी बच्चे को अपनी गोद में उठाएगी, अगर बच्चा भोजन नहीं मांगता है, तो भी वह पहल करेगी और उसे प्रदान करेगी। परमेश्वर पर भरोसा करने की इस डिग्री के लिए आवश्यक है कि परमेश्वर के प्रावधान और ध्यान में भरोसा रखने वाला व्यक्ति अपने लिए कुछ भी नहीं मांगता है और यह निश्चितता है कि वह बिना पूछे भी प्रदान करेगा, बल्कि, जो चीज़ माँगी जा रही है, वह स्वयं उससे बेहतर प्रदान करता है। इसलिए, उसने पहले से ही असंख्य आशीषें दी हैं, बिना किसी को उनकी तलाश किए या उनके हकदार होने का कोई अधिकार नहीं है। यह अंतिम और उच्चतम डिग्री [ईश्वर में भरोसे] की आवश्यकता है, जबकि दूसरी डिग्री के लिए ईश्वर के अलावा किसी और से पूछने से बचना आवश्यक है।

परमेश्वर पर भरोसा करने वाले लोगों की तीन डिग्री: परमेश्वर पर भरोसा रखने वालों की तीन डिग्री हैं। पहली डिग्री आध्यात्मिक अभिजात वर्ग और ज्ञानवादियों से संबंधित है, जो बिना कोई प्रावधान किए, ऊबड़-खाबड़, सुनसान जगहों और जंगलों में घूमते हैं और भगवान पर भरोसा करते हैं। इस बीच, अगर उन्हें जंगलों में कुछ भी मिलता है जो उनका पेट भर देगा, तो वे उसे ले लेते हैं, अन्यथा, वे दृढ़ रहेंगे और ईश्वरीय इच्छा से सहमत होंगे। कभी-कभी वे लोग भी भूखे रहते हैं जो अपने साथ ऐसे प्रावधान ले जाते हैं जो या तो खो जाते हैं या समाप्त हो जाते हैं, या वे गलत रास्ते पर चले जाते हैं और उनके प्रावधान समाप्त हो जाते हैं। मृत्यु एक निर्विवाद वास्तविकता है; यह उन लोगों के लिए आता है जिनके पास प्रावधान हैं और जिनके पास प्रावधान नहीं हैं, इसलिए, परमेश्वर के प्रावधानों पर भरोसा करने के बाद मर जाना बेहतर है।

दूसरी डिग्री किसी के घर या किसी ऐसे स्थान तक सीमित रहना है जो या तो किसी शहर या गांव में है जहां मानव आबादी है और वहां रहते हुए, व्यक्ति दिव्य स्मरण और चिंतन में लगा रहता है। यह डिग्री पहली डिग्री से कम है, लेकिन यह परमेश्वर पर भरोसा भी है क्योंकि कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रावधान में विश्वास रखने के लिए मितव्ययिता और जीविका के बाहरी साधनों को अलग रखता है और यह निश्चितता रखता है कि परमेश्वर छिपे हुए साधनों के साथ किसी की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। इस व्यक्ति की नज़र

शहर या गाँव के लोगों पर नहीं बल्कि उस प्राणी पर है, जो शहर के लोगों को जीविका प्रदान करता है। यह भी परमेश्वर का अनुग्रह है कि वह लोगों से ऐसे व्यक्ति पर ध्यान देने और उनसे उसकी देखभाल करवाने के लिए कहता है।

तीसरी डिग्री यह है कि घर तक ही सीमित न रहें, इसके बजाय, किसी को बाहर जाना चाहिए और अर्निंग लाइवलीहुड की पुस्तक (ग़ज़ाली की *महान रचना "इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार") में उल्लिखित सभी शर्तों के साथ आजीविका कमाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर पर निर्भरता और भरोसे की सीमाओं से बाहर नहीं होगा, इस शर्त पर कि वह अपनी पर्याप्तता, सामर्थ्य, हैसियत, या कौशल पर निर्भर न हो क्योंकि इन चीज़ों को एक ही पल में दूर किया जा सकता है, इसके बजाय, किसी की नज़र उस वास्तविक प्रदाता पर होती है जिसने इन चीज़ों की रक्षा की और उसके लिए आजीविका के साधन को आसान बना दिया। ईश्वर की तुलना में, राजा के हाथ में कलम की तरह कमाई के लिए अपनी पर्याप्तता, क्षमता और शक्ति पर विचार करना चाहिए। राजा के साथियों की नजर उसकी कलम पर नहीं बल्कि उसके दिल पर है कि उसके पास क्या विचार होगा और वह किस पर ध्यान देगा और किसके बारे में फैसला करेगा।

जो अपने बच्चों के लिए या गरीबों और जरूरतमंदों पर खर्च करने के लिए कमाता है, वह वह है जो अपने शरीर से कमाता है, लेकिन अपने दिल से [किसी भी प्रकार की सांसारिकता या सांसारिक आसक्ति से] अलग रहता है। ऐसे व्यक्ति की स्थिति उस व्यक्ति की तुलना में बेहतर और प्रशंसनीय होती है जो सिर्फ घर पर बैठता है [कुछ भी नहीं करता है]। इसके लिए तर्क यह है कि आजीविका कमाना ईश्वर पर भरोसा करने के खिलाफ नहीं है यदि शर्तें पूरी होती हैं [सांसारिक आसक्ति और लालच में फंसे बिना आजीविका कमाने के लिए] और व्यक्ति ईश्वर के ज्ञान और निकटता का ध्यान रखता है।

उमर (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) की घटना एक महामारी में ईश्वर पर भरोसा करने के बारे में

हम यहां उमर बिन अल-खत्ताब (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) की एक ऐतिहासिक घटना प्रस्तुत करेंगे ताकि ईश्वर में विश्वास को और स्पष्ट किया जा सके। एक बार उन्होंने अन्य भविष्यसूचक साथियों के साथ सीरिया की यात्रा की। जब वह दमिश्क के करीब याज्या पहुंचे, तो उन्हें पता चला कि सीरिया महामारी (ब्यूबोनिक प्लेग - एक संक्रामक या संक्रामक महामारी जो विषैली और विनाशकारी है) की महामारी के प्रसार से गंभीर रूप से प्रभावित था [जिसके परिणामस्वरूप उस क्षेत्र में कई मौतें हो रही थीं]। अब सवाल उठा कि उन्हें सीरिया में प्रवेश करना चाहिए या नहीं। इस प्रश्न के परिणामस्वरूप भविष्यद्वाणी के साथी दो समूहों में विभाजित हो गए [इसके बारे में क्या करना है]। एक समूह ने कहा, "हम ब्यूबोनिक प्लेग के कारण वहां नहीं जाएंगे क्योंकि वहां जाना [इन परिस्थितियों में] एक उग्र आग में कूदने के समान है"। दूसरे समूह ने

कहा, "हम जाएंगे और परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे और जो कुछ भी हमारे लिए नियत है, हम उससे बचेंगे नहीं, न ही हम मृत्यु से डरेंगे और उन लोगों के समूह में शामिल नहीं होंगे जिनके बारे में परमेश्वर ने कहा:

أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ خَرَجُوا۟ مِن دِيَـٰرِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ ٱلْمَوْتِ

'क्या आप उन लोगों की कहानी नहीं जानते जिन्होंने मृत्यु से बचने के लिए अपने घरों को छोड़ दिया और उनकी संख्या हजारों थी। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 243)

दोनों समूह उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हों) के पास आए और इस मामले पर उनकी राय मांगी। सीरिया में प्रवेश करने पर जोर देने वाले समूह ने कहा, "हमें भगवान के भाग्य से भागना नहीं चाहिए"। उमर (खुदा उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "हाँ, हम ईश्वर की नियति से बच निकलेंगे। उसके बाद, उन्होंने एक उदाहरण सुनाते हुए कहा, "मान लीजिए कि आप में से किसी के पास बकरियां और दो घाटियाँ हैं जो उन्हें चराने के लिए ले जाएं। उन घाटियों में से एक हरी-भरी है और दूसरी सूखी और बंजर है। यदि यह व्यक्ति हरी-भरी घाटी को अपना लेता है, तो वह परमेश्वर की नियति और आदेश के अनुसार बकरियों को चरने देगा, और यदि वह सूखी और बंजर घाटी में जाता है, तो वह फिर से परमेश्वर की नियति और आदेश के अनुसार ऐसा करने वाला होगा। भविष्यद्वाणी के साथियों ने उस कथन की सच्चाई का पता लगाया। उसके बाद उसने अब्दुर रहमान इब्ने औफ (ईश्वर उससे प्रसन्न हो) को एक दूत द्वारा उसके पास लाने के लिए कहा। वह एक दिन बाद पहुंचे और उनके सामने मतभेद का यह बिंदु [उनकी अपनी राय के लिए] प्रस्तुत किया गया। अब्दुर रहमान इब्ने औफ (रज़ियल्लाहु अन्हु उनसे प्रसन्न हो) ने फरमाया कि इस मामले में मेरी राय वैसी ही है जो मैंने ईश्वर के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जुबान से सुनी है। उमर (रश्मा उस पर प्रसन्न हो) ने कहा, "ईश्वर की जय हो! अगर इस मामले को लेकर पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का निर्देश मौजूद है तो इस मुद्दे पर किसी भी तरह की असहमति के लिए कोई जगह नहीं बची है। कृपया हमें बताएं कि उन्होंने क्या कहा। अब्दुर रहमान इब्ने औफ (रज़ियल्लाहु अन्हु उनसे प्रसन्न हो) ने फरमाया है, "मैंने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जुबान से यह सुना है कि उन्होंने कहा:

إِذَا سَمِعْتُمْ بِالْوَبَاءِ فِي أَرْضٍ فَلَا تَقْدَمُوا عَلَيْهِ وَإِذَا وَقَعَ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلَا تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهَا

'यदि आप सुनते हैं कि कहीं महामारी चल रही है तो वहां न जाएं [क्योंकि आप इसके साथ पीड़ित होने के लिए उत्तरदायी होंगे, जिसके परिणामस्वरूप यह दूसरों में फैल रहा है] और यदि यह (महामारी) ऐसी जगह पर होती है (शुरू होती है) जहां आप पहले से ही मौजूद हैं तो इससे बचें नहीं [क्योंकि इसके परिणामस्वरूप यह दूर-दूर तक फैल जाएगा जिससे इसे रोकना मुश्किल या असंभव हो जाएगा]"।

उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) इस भविष्यद्वाणी के कथन को सुनकर बेहद प्रसन्न हुए और इस मुद्दे पर भविष्यसूचक मार्गदर्शन के अनुरूप होने के लिए ईश्वर का आभार व्यक्त किया और वह सभी भविष्यद्वाणी साथियों को अपने साथ याब्याह से वापस ले आए [महामारी क्षेत्र में प्रवेश किए बिना]। (इस परंपरा और पूरी घटना का वर्णन किया गया है। *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी*)

यहां यह ध्यान देने योग्य है कि सभी भविष्यवक्ता साथी *तवाक्कुल* (भगवान पर भरोसा) नहीं करने पर सहमत हुए [एक उग्र महामारी से संबंधित मामले में। इसकी व्याख्या यह है कि उन्होंने केवल यह नहीं कहा कि "मुझे भगवान पर भरोसा है" फिर महामारी क्षेत्र में प्रवेश किया, इसके बजाय, उन्होंने सबसे अच्छी विधि का इस्तेमाल किया, जिसे भविष्यसूचक मार्गदर्शन के माध्यम से जाना जाता है, प्रसार को रोकने के लिए महामारी क्षेत्र में प्रवेश नहीं करने के लिए, फिर इसकी सफलता के लिए भगवान पर भरोसा किया। इसलिए, उन्होंने इस तरह से भगवान पर भरोसा दिखाया]। इससे यह पता चला है कि इस तरह के मामलों में, *तवक्कुल* (यानी, "मुझे भगवान पर भरोसा है" कहना और फिर आवश्यक काम नहीं करना) एक आवश्यकता नहीं है [इस तरह की जीवन के लिए खतरा पैदा करने वाली स्थितियों में, इसके बजाय, किसी को जीवन और मानव कल्याण को बनाए रखने के लिए सभी संभव साधनों का उपयोग करना चाहिए और फिर इसकी सफलता के लिए भगवान पर भरोसा करना चाहिए]।

महामारी क्षेत्रों से न बचने का निषेधाज्ञा: यहां सवाल उठता है कि यदि हानिकारक चीजों से खुद को सुरक्षित रखना भगवान पर भरोसा रखने में शामिल नहीं है (यानी, सिर्फ यह कहना कि "मुझे भगवान पर भरोसा है" बिना जरूरी काम किए) तो उस भूमि से भागने से क्यों मना किया जाता है जहां आप रह रहे हैं, और वहां एक महामारी फैल जाती है? चिकित्सा विज्ञान में महामारी का कारण वायु घोषित किया गया है। यह स्पष्ट है कि [इस तरह की स्थिति में] हवा हानिकारक है और हानिकारक चीजों से बचना सबसे अच्छा इलाज है, तो फिर महामारी क्षेत्र से भागने की अनुमति क्यों नहीं दी गई है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हानिकारक चीजों से बचाव करना [विद्वानों] आम सहमति से है, न कि परमेश्वर पर भरोसा रखने के खिलाफ। उदाहरण के लिए, हानिकारक चीजों से सुरक्षा के लिए सर्जरी की जाती है। हालांकि, ऐसा लगता है कि महामारी क्षेत्र से भागना एक अलग मामला है। यह सच है कि महामारी का कारण हवा है लेकिन केवल बाहरी शरीर से टकराने वाली हवा इसका कारण नहीं हो सकती है, बल्कि जब सांस लेने के माध्यम से सड़ी हुई और खराब हवा शरीर में प्रवेश करती है, तो यह आंतरिक शरीर में हृदय, फेफड़े और झिल्लियों पर अपना हानिकारक प्रभाव छोड़ती है। इससे पता चला है कि महामारी बाहरी शरीर को प्रभावित नहीं करती है बल्कि शरीर की आंतरिक प्रणाली को प्रभावित करती है। इसीलिए, अगर कोई शहर में रहता है और वहां महामारी फैल जाती है तो इस बात की अधिक संभावना है कि कोई इसके प्रभाव से सुरक्षित नहीं रह सकता है। यह भी संभव है कि महामारी का किसी पर ज्यादा असर न पड़े। उस स्थिति में, महामारी से बचना इसके खिलाफ सुरक्षा का एक अंधविश्वासी कारण होगा। हालांकि, अगर महामारी क्षेत्र से भागने का यही एकमात्र कारण होता तो यह अभी भी ठीक होता, लेकिन इसके निषेध के कई अन्य कारण भी हैं। इनमें यह कारण भी शामिल है कि अगर स्वस्थ लोगों को महामारी क्षेत्र छोड़ने की अनुमति दी जाती है, तो शहर में बीमारों और रोगियों के अलावा कोई नहीं बचेगा और शहर में कोई भी नहीं बचेगा जो उन्हें भोजन, पानी और दवा दे सके और अपनी बीमारियों के कारण, वे अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर पाएंगे। उस स्थिति में, शहर से स्वस्थ लोगों को भागना बीमारों और बीमारों को मारने के समान है क्योंकि इस शर्त पर उनके ठीक होने की संभावना है कि स्वस्थ लोग वहां रहेंगे और उन्हें उपयुक्त

आवश्यक देखभाल प्रदान करेंगे। मुसलमानों को [एक भविष्यद्वाणी परंपरा में] एक ऐसी इमारत के रूप में वर्णित किया गया है जहां एक हिस्सा [इमारत का] दूसरे हिस्से का समर्थन करता है [और परिणामस्वरूप पूरी इमारत खड़ी है] या उनकी तुलना एक शरीर से की गई है, यदि इसका एक हिस्सा दर्द में है, तो शरीर के अन्य सभी अंग उस दर्द को महसूस करते हैं। हमारे आकलन में, भागने पर रोक लगाने का कारण यही आपसी सहयोग, करुणा, स्नेह और भाईचारा है। इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं जिन्हें परमेश्वर सबसे अच्छी तरह जानता है। हालांकि, जिन लोगों ने शहर में प्रवेश नहीं किया है [या प्लेग या महामारी से पीड़ित क्षेत्र], उन्हें [उस क्षेत्र से] बाहर रहने का आदेश दिया गया है क्योंकि न तो सड़ी हुई और जहरीली हवा ने उन पर हमला किया है और न ही शहर में बीमारों को उनकी इस हद तक आवश्यकता है कि यदि वे (बाहरी लोग) प्रवेश नहीं करते हैं, वे (बीमार और मरीज) मर जाएंगे क्योंकि उनकी देखभाल करने वाले लोग पहले से ही मौजूद हैं। हालांकि, अगर शहर में कोई नहीं बचा है जो मरीजों की देखभाल कर सके और उनके भोजन, पानी और दवाओं की देखभाल कर सके, तो उस स्थिति में, कुछ लोग उनकी मदद करने के लिए शहर [या महामारी क्षेत्र] में प्रवेश कर सकते हैं और यह आश्चर्य की बात नहीं होगी कि उनके इस कृत्य को एक प्रशंसनीय कार्य कहा जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि नुकसान की आशंका एक अंधविश्वासी मामला है [जैसा कि यह हो भी सकता है या नहीं भी हो सकता है] और लोगों को खतरे से बचाना [और इसलिए जीवन बचाना] एक निश्चित मामला है [जैसा कि यह निश्चित रूप से आवश्यक है]। यही कारण है कि ब्यूबोनिक प्लेग और महामारी से बचने को युद्ध के मैदान से भागने के रूप में घोषित किया गया है (आयशा के अधिकार पर *हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद* में वर्णित है) क्योंकि महामारी से पीड़ित शहर [या क्षेत्र] से भागना जीवन को नष्ट करने के बराबर है।

ये सूक्ष्म और जटिल मामले हैं। जो उन्हें अनदेखा करता है और केवल भविष्यसूचक कथनों के बाहरी शब्दों और अर्थ को देखता है, वह अक्सर इन मामलों के बारे में गलतियों और गलतफहमियों में पड़ जाता है। उपासक और [सांसारिकता से] दूर रहने वाले [जो आवश्यक रूप से जानकार नहीं हैं] अक्सर इन त्रुटियों का सामना करते हैं क्योंकि वे ज्ञान की कमी और अदूरदर्शिता के कारण गलतियाँ करते हैं। यह ज्ञान का सम्मान है कि ऐसे मामलों में, ज्ञानी व्यक्ति दृष्टि के धोखे में नहीं फंसता है, इसके बजाय, वह [सभी स्थितियों में मार्गदर्शन का] सही मार्ग खोजने के लिए अलग-अलग प्रतीत होने वाली चीजों को जोड़ता है।

अध्याय 16- **ईश्वर के साथ प्रेम**, **लालसा और अंतरंगता**, **और ईश्वरीय इच्छा और आदेश को स्वीकार करना आंतरिक शांति**, **शांति और खुशी को बढ़ावा देने के लिए अनिवार्य है**

सभी महान आंतरिक मानवीय गुणों में से, प्रेम सबसे श्रेष्ठ है। यह एक ऐसा गुण है जो सभी पर विजय प्राप्त करता है और नकारात्मक, नीच और विनाशकारी हर चीज को जड़ से मिटा देता है और मिटा देता है। यह गहरे आध्यात्मिक निहितार्थों के साथ सर्व-विजयी और सर्व-मुक्तिदायक आंतरिक गुणवत्ता है। लेकिन यहां जिस प्रेम का उल्लेख किया जा रहा है, जो प्रेम का उच्चतम रूप है, वह ईश्वर के लिए दिव्य प्रेम या प्रेम है। यह दिव्य प्रेम साथी मनुष्यों और साथी रचनाओं के प्रेम में बदल जाता है क्योंकि वे सभी बिना किसी बहिष्कार के भगवान के परिवार का हिस्सा हैं। प्रेम जो विशेष रूप से शारीरिक भूख के लिए एक प्रेम है, ऐसी स्थिति तक बढ़ने में असमर्थ है। जब लोगों और राष्ट्रों के बीच आपसी प्रेम होता है तो न्याय और संघर्ष समाधान की कोई आवश्यकता नहीं होती है। यह एक दिव्य विशेषता है जिसे मनुष्य को हर नकारात्मक और नीच चीज को वश में करने और उन सभी बेड़ियों को तोड़ने के लिए दिया गया है जो आत्मा को आध्यात्मिक स्वर्गारोहण में सबसे बड़ी ऊंचाइयों तक चढ़ने से रोकते हैं। एक ऐसी अवस्था जब मनुष्य स्वयं के साथ और अपने आंतरिक स्व के साथ शांति में होता है, तो साथी मनुष्यों के लिए प्रेम पैदा करता है। यह प्रेम ही है जो घृणा पर विजय प्राप्त करता है, आत्मा को उन चंगुलों से मुक्त करता है जो उसे दबाए रखते हैं और उसे दिव्य उपस्थिति में चढ़ने देते हैं। दिव्य प्रेम साथी मनुष्यों के लिए प्रेम में बदल जाता है, आंतरिक और बाहरी शांति और शांति की ओर ले जाता है जिसके लिए व्यक्ति अपनी आत्मा के सबसे गहरे अवकाश में तरसता है। प्रेम उन सभी के लिए मार्ग को रोशन करता है जो अच्छा है। ईश्वर की लालसा और ईश्वर के साथ अंतरंगता (शॉक और *अनस*) आध्यात्मिक पथ में महान प्रेरक हैं जो शाश्वत आनंद और कभी न खत्म होने वाली विजय की ओर ले जाते हैं। ईश्वर के निर्णयों (रिदा) से सहमत होना, भले ही यह किसी की पसंद के अनुसार न हो और भले ही इसे स्वीकार करना कठिन हो, अपने आप को पूरे दिल से ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित करना, व्यक्ति को सभी चिंताओं, चिंताओं, दुखों और निराशा से मुक्त करता है। यह चीजों को बेहतर बनाने के नए तरीके खोजने और चीजों को करने के नए तरीके खोजने और मानवता के सामने आने वाले व्यक्तिगत और सामूहिक मुद्दों को हल करने के लिए लीक से

हटकर सोच को नियोजित करने के लिए प्रेरित करता है। ग़ज़ाली ने ईश्वर के साथ प्रेम, लालसा और अंतरंगता पर एक गहरी, अंतर्दृष्टिपूर्ण और उत्कृष्ट व्याख्या प्रदान की और छठे अध्याय या उनकी महान *कृति " इह्या अल-उलूम अद-दीन "* या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के छठे अध्याय या पुस्तक में ईश्वरीय आदेश के साथ शांति से रहने के बारे में बताया। इसे यहां संक्षिप्त रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है [22]:

[आध्यात्मिक] स्टेशनों में प्रेम एक बहुत ही उच्च पद रखता है क्योंकि प्रेम के बाद के सभी स्टेशन इसके अधीन होते हैं जैसे कि लालसा (*शॉक*), अंतरंगता (अन*)* और ईश्वर की स्वीकृति (*रिदा*) और उनसे पहले के सभी स्टेशन जैसे पश्चाताप, धैर्य, संयम [सांसारिकता से], वे सभी कारक हैं जो [दिव्य] प्रेम की ओर ले जाते हैं। ईश्वरीय प्रेम में विश्वास करना बहुत कठिन है क्योंकि कुछ विद्वानों ने इसकी संभावना को नकार दिया है [कि कोई वास्तव में दिव्य प्रेम प्राप्त कर सकता है] और व्यक्त किया है कि दिव्य प्रेम का अर्थ [उनकी गलत राय में] [केवल] ईश्वरीय आज्ञाकारिता और पूजा में दृढ़ रहना है और जहां तक वास्तविक [दिव्य] प्रेम का संबंध है, यह ईश्वर के साथ असंभव है क्योंकि ऐसा प्रेम केवल अपनी तरह के किसी व्यक्ति के साथ प्राप्त किया जा सकता है (जैसे कि किसी अन्य मनुष्य की)। इन विद्वतावादी धर्मशास्त्रियों ने न केवल प्रेम को नकार दिया है, बल्कि उन्होंने प्रेम के अन्य प्रमुख कारकों जैसे अंतरंगता, लालसा, परमात्मा (मनाजत) से विनती करने की खुशी को भी नकार दिया है। इसीलिए, यह जरूरी हो गया है कि हम [रिकॉर्ड को सीधे सेट करें और] मामले की वास्तविकता (सच्चाई) को स्पष्ट करें [सभी के लिए इसे स्पष्ट करने के लिए तर्कसंगत तरीके से इस विषय पर सभी गलतफहमियों और ज्ञान की कमी को दूर करने के लिए]।

इस पुस्तक में, हम पहले पवित्र (दिव्य) कानून से [दिव्य] प्रेम का प्रमाण प्रदान करेंगे, फिर हम इसकी वास्तविकता और कारणों पर प्रकाश डालेंगे, फिर हम समझाएंगे कि प्रेम का अधिकार केवल ईश्वर का है और सभी का सबसे बड़ा आनंद दिव्य दृष्टि (ईश्वर की गवाही) का आनंद है और यह आनंद उन लोगों के लिए कई गुना बढ़ जाएगा जिनके पास दिव्य ज्ञान है (मारिफा - दुनिया में (उनके सांसारिक जीवन के दौरान) ईश्वर के साथ ज्ञान, निकटता और अंतरंगता। उसके बाद, हम ईश्वर के प्रेम को मजबूत करने और प्रेरित करने (शक्ति) करने के कारणों के बारे में बताएंगे, जिस कारण से लोग इस संबंध में अलग लगते हैं, तो यह समझाया जाएगा कि लोग दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने में असमर्थ क्यों हैं। प्रेम पर विस्तृत चर्चा के बाद, हम लालसा का अर्थ [परमात्मा के लिए] (शौक) और एक सेवक (मनुष्य) के ईश्वर के प्रति प्रेम के संकेतों के बारे में बताएंगे, फिर ईश्वर के लिए लालसा का अर्थ समझाया जाएगा। उसके बाद, ईश्वरीय इच्छा (रिदा) को स्वीकार करने के अर्थ और उत्कृष्टता *का* उल्लेख किया जाएगा। अंत में, ईश्वर के प्रेमियों और उनकी बातों के बारे में परंपराओं का उल्लेख किया जाएगा।

पवित्र कानून से ईश्वरीय प्रेम के तर्क और प्रमाण: मुसलमानों के बीच एक पूर्ण सहमति है कि एक सेवक [ईश्वर के] के लिए ईश्वर और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) से प्यार करना अनिवार्य है। प्रश्न यह है कि यदि प्रेम अनिवार्य है, तो कोई इसके अस्तित्व को कैसे अस्वीकार कर सकता है? और जिन्हें आपने [दिव्य] प्रेम को ईश्वरीय आज्ञाकारिता में दृढ़ता के रूप में समझा (व्याख्या) किया, यह कैसे सही हो सकता है क्योंकि आज्ञाकारिता प्रेम का फल (परिणाम) है और इसके अधीन है, क्योंकि पहले प्रेम है और फिर प्रिय की आज्ञाकारिता है? सबसे पहले, हम तर्क [निम्नानुसार प्रदान करेंगे]। भगवान कहते हैं:

يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ

"वह उनसे प्यार करता है, और वे उससे प्यार करते हैं। (कुरान, अध्याय 5, श्लोक 54)

وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ

"और जो लोग विश्वासी हैं, वे परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम में तीव्र हैं। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 165)

ये दोनों आयतें न केवल प्रेम के अस्तित्व को साबित करती हैं, बल्कि इसमें तीव्रता और कमी का प्रमाण भी प्रदान करती हैं। कई भविष्यद्वाणी परंपराओं में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने ईश्वर के प्रेम को विश्वास की शर्त (ईमान) के रूप में घोषित किया। एक परंपरा में, अबू ज़रीन अकीली (भगवान उनसे प्रसन्न हों) ने पूछा, "हे ईश्वर के दूत! विश्वास क्या है?" उसने उत्तर दिया:

أَنْ يَكُونَ اللهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا

"यह है कि भगवान और उनके दूत उनके अलावा सभी की तुलना में सेवक के लिए अधिक प्रिय हो जाते हैं। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *मुसनद अहमद*)

एक प्रसिद्ध भविष्यद्वाणी परंपरा के अनुसार, पैगंबर अब्राहम (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने मृत्यु के दूत से पूछा जब वह अपनी आत्मा को लेने आए थे [उनकी मृत्यु के समय], "क्या आपने किसी मित्र को देखा है जो अपने दोस्त को मारता है?" परमेश्वर ने उसके पास एक दिव्य रहस्योद्घाटन भेजा, "ऐ अब्राहम! क्या आपने कोई ऐसा प्रेमी देखा है जो अपने प्रिय से मिलना नहीं चाहता? पैगंबर इब्राहीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) ने मृत्यु के दूत से कहा, "अब मेरी आत्मा को ले जाओ। हालाँकि, यह मामला केवल परमेश्वर के उन सेवकों के दिलों में उजागर होता है जो परमेश्वर से अपने दिल से प्रेम करते हैं और उसके लिए तरसते हैं। जब उन्हें पता चलता है कि मृत्यु प्रिय से मिलने का एक कारण है, तो उनका दिल उसकी ओर खींच लिया जाता है। उनका कोई अन्य प्रिय नहीं है जिसका खिंचाव और

आकर्षण वे महसूस करेंगे। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपनी प्रार्थना में कहा:

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ اَحَبَّكَ وَحُبَّ مَايُقَرِّبُنِيْ اِلٰى حُبِّكَ وَاجْعَلْ
حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَيَّ مِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ

"हे परमेश्वर! मुझे अपना प्यार और उन लोगों का प्यार प्रदान करें जो आपसे प्यार करते हैं और उन चीजों का प्यार जो मुझे आपके प्यार के करीब लाते हैं, और आपके प्यार को ठंडे पानी के [प्यार] की तुलना में मेरे लिए अधिक प्रिय बनाते हैं [जब मेरी प्यास बुझाने के लिए इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है]।

एक रेगिस्तानी निवासी (जो आमतौर पर खानाबदोश या दूरदराज के रेगिस्तानी गांवों से आते हैं और साधारण लोग होते हैं जो अपने जीवन और आजीविका में कठिनाइयों को सहन करने के आदी होते हैं और आम तौर पर उन व्यवहारों से अवगत नहीं होते हैं जिनके शहर के लोग आदी हैं) पैगंबर मुहम्मद (शांति और ईश्वर का आशीर्वाद उन पर हो) के पास आए और पूछा, "हे ईश्वर के दूत! न्याय का दिन कब आएगा?" पैगंबर ने उससे पूछा, "तुमने न्याय के दिन के लिए क्या तैयारी की है?" उसने उत्तर दिया, "मैंने न तो बहुत प्रार्थना की है, न ही मैंने बहुत अधिक उपवास किया है, लेकिन मैं परमेश्वर और उसके रसूल से प्रेम करता हूँ!" पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ

"आप उन लोगों के साथ रहेंगे जिन्हें आप प्यार करते हैं।

अनस (भगवान उनसे प्रसन्न हों) [जिन्होंने यह सुनाया] ने कहा कि उन्होंने यह सुनकर उस दिन से पहले भविष्यद्वाणी के साथियों को इतना खुश नहीं देखा था [क्योंकि उन्हें ईश्वर और उसके रसूल के लिए बहुत प्रेम था और यह जानते हुए कि वे अनन्त जीवन में हमेशा उनके साथ रहेंगे, भगवान द्वारा उन्हें स्वीकार करने के अधीन, उनके लिए अपार खुशी का स्रोत था]। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* अनस के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* का संग्रह करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

अबू बक्र (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "ईश्वर के प्रेमियों को जो आनंद मिलता है, वह उन्हें दुनिया (सांसारिकता) की तलाश करने से रोकता है और उन्हें सभी मनुष्यों से अनासक्त बनाता है"। अबू सुलेमान अल-दरानी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "ईश्वर की रचनाओं में कुछ लोग हैं जिन्हें स्वर्ग और उसके आशीर्वाद द्वारा ईश्वर से नहीं रोका गया है, तो उन्हें दुनिया द्वारा उससे कैसे रोका जा सकता है?" यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीषें उस पर हो) तीन लोगों के पास से गुजरीं जिनके शरीर कमजोर थे और

पीले पड़ रहे थे। उसने उनसे पूछा, "तुम्हारी यह स्थिति किस कारण से हुई है?" उन्होंने उत्तर दिया, "नरक की सजा के डर के कारण!" उसने उत्तर दिया, "परमेश्वर निश्चय उन लोगों की रक्षा करेगा जो इससे डरते हैं!" फिर वह रास्ते में आगे बढ़ा और तीन और लोगों को देखा जो पहले तीन की तुलना में कमजोर और पीले थे और उनसे पूछा, "तुम्हारी यह स्थिति क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया, "स्वर्ग की इच्छा और लालसा ने ऐसा किया है!" उसने कहा, "परमेश्वर निश्चित रूप से वह चीज़ प्रदान करेगा जिसके आप बहुत इच्छुक हैं!" फिर वह रास्ते में आगे बढ़ा और तीन और लोगों को देखा जो पिछले सभी लोगों की तुलना में और भी अधिक कमजोर और पीले थे। उसने उनसे पूछा, "तुम्हारी यह स्थिति किस कारण से हुई है?" उन्होंने उत्तर दिया, "हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं! [और उस प्रेम में, हम बाकी सब चीजों से बेखबर हो गए हैं। उसने कहा, "तुम ही परमेश्वर के अंतरंग हो! तुम ही परमेश्वर के अंतरंग लोग हो!"

हरम इब्ने हयान (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "जब कोई आस्तिक अपने प्रभु को पहचानता है, उससे प्रेम करता है और जब कोई उससे प्रेम करता है, तो वह उस पर ध्यान केंद्रित करता है और उसके प्रति चौकस हो जाता है, और जब कोई उस ध्यान और ध्यान की मिठास पाता है, तो वह दुनिया को इच्छा से नहीं देखता है और न ही परलोक की ओर देखता है। ऐसा व्यक्ति इस दुनिया में शरीर के साथ रहता है, और अपनी आत्मा के साथ परलोक में [दिव्य उपस्थिति में] रहता है। याह्या बिन मुआद (ईश्वर उन पर दया करें) ने कहा, "ईश्वर की क्षमा ('*उफ़ू*) सभी पापों को समाहित करती है, उनकी स्वीकृति की स्थिति क्या होगी? उसकी स्वीकृति (रिदा) में सारी आशाएँ समाहित हैं, उसके प्रेम की स्थिति क्या होगी? उनका प्रेम (हब*)* बुद्धि और चेतना से बेखबर कर देता है, उनके प्रेमपूर्ण स्नेह की स्थिति क्या होगी? उनका स्नेहपूर्ण स्नेह (*मुवादद),* व्यक्ति को ईश्वर के अलावा अन्य सब कुछ भूल जाता है, उनकी करुणामय सौम्यता (*लुत्फ*) की स्थिति क्या होगी? याह्या बिन मुआध (ईश्वर उन पर दया करें) ने कहा, "मेरी राय में, ईश्वर के प्रेम का एक कण सत्तर वर्षों की पूजा से बेहतर है जो [दिव्य] प्रेम से रहित है"। अब हम प्यार की वास्तविकता की व्याख्या करेंगे क्योंकि इसके अर्थ में कुछ जटिलता है।

प्रेम की वास्तविकता, इसके कारण और अपने सेवक के लिए परमेश्वर के प्रेम का अर्थ

यह विषय तब तक स्पष्ट और समझने योग्य नहीं होगा जब तक कि यह नहीं समझाया जाता कि प्रेम की वास्तविकता क्या है, इसके कारण और परिस्थितियाँ क्या हैं, और परमेश्वर के सेवक के लिए प्रेम का क्या अर्थ है। सबसे पहले, हम कुछ बुनियादी मामलों की व्याख्या करेंगे।

प्रेम की वास्तविकता: पहली बात यह है कि जब तक गहरी समझ और धारणा न हो तब तक प्रेम की कल्पना भी नहीं की जा सकती है, क्योंकि मनुष्य केवल किसी ऐसी चीज से प्रेम कर सकता है जिसे वह अनुभव करने में सक्षम हो, इसीलिए, यह गुण निर्जीव वस्तुओं में नहीं पाया जाता है क्योंकि उनके पास न तो धारणा है और न ही समझ, बल्कि यह एक जीवित बोधगम्य प्राणी का एक गुण (अंतर्निहित विशेषता) है। उसके बाद, धारणाएं या तो बोधगम्य प्राणी (व्यक्ति या व्यक्ति) के स्वभाव के अनुकूल और उपयुक्त होती हैं और एक आनंद देती हैं या वे इसके (स्वभाव) के विरोध में होती हैं और इसे नुकसान पहुंचाती हैं क्योंकि वे न तो ज्ञानेन्द्रिय को आनंद के संदर्भ में प्रभावित करती हैं और न ही नुकसान के संदर्भ में। इस तरह, धारणाएँ तीन प्रकार की होती हैं: वे जो बोधगम्य प्राणी के स्वभाव के अनुसार होती हैं और जो उनसे प्रेम करती है उसके लिए आनंददायक होती है; जो बोधगम्य प्राणी द्वारा नापसंद किए जाते हैं जो उनसे पीड़ित हैं या उनसे घृणा करते हैं; और वे धारणाएं जो न तो सुख और न ही दुख देती हैं, वे न तो प्रिय हैं और न ही घृणा करती हैं। संक्षेप में, जो चीजें एक के लिए सुखद हैं, वे किसी को प्रिय हैं। किसी चीज़ के प्रिय होने का अर्थ यह है कि [मानव] स्वभाव उसकी ओर झुकता है, और किसी चीज़ से घृणा करने का अर्थ यह है कि [मानव] स्वभाव उससे घृणा करता है या नापसंद करता है। दूसरे शब्दों में, प्रेम उस चीज़ के प्रति [मानव] स्वभाव का झुकाव है जिससे कोई आनंद या प्रसन्नता प्राप्त करता है। यदि यह झुकाव दृढ़ और तीव्र हो जाता है तो इसे तीव्र प्रेम (इश्क) कहा जाता है। इसी तरह, घृणा [या नापसंद या प्रतिकर्षण] यह है कि स्वभाव उस चीज से घृणा करता है जो एक दर्द का कारण बनता है। जब यह नफरत तेज हो जाती है, तो यह प्रतिकर्षण बन जाती है।

इंद्रियों और प्रेम की धारणाएं: दूसरी बात यह है कि जब प्रेम धारणा और समझ के अधीन हो जाता है तो उसका विभाजन उसी तरह किया जाएगा जैसे यह धारणा और इंद्रियों के लिए किया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हर इंद्रिय के लिए, उन चीजों के बीच से एक विशिष्ट चीज़ की धारणा होती है जो माना जाता है (उदाहरण के लिए, दृष्टि की भावना जो आंखों में रहती है, वस्तुओं के आकार और रूपों को समझती है)। हर इंद्रिय को कुछ धारणाओं से आनंद और आनंद मिलता है [जो इसके लिए विशिष्ट हैं और इसके अनुकूल हैं], और यह आनंद स्वभाव को अपनी ओर झुकाने का कारण बनता है, और एक स्वस्थ स्वभाव के लिए, वे धारणाएं प्रिय होती हैं। उदाहरण के लिए, आंख की खुशी और आनंद उन धारणाओं में है जो आंखों से महसूस की जाती हैं जैसे कि सुंदर चीजें और सुंदर चेहरे। कान की खुशी और आनंद उन धारणाओं में है जो कान द्वारा महसूस की जाती हैं जैसे कि मधुर गीत और ताज़ा ध्वनियाँ।

नाक की खुशी और आनंद उन धारणाओं में है जो नाक के माध्यम से महसूस की जाती हैं जैसे कि सुखद गंध। इसी तरह, स्वाद का आनंद [जीभ द्वारा महसूस किया जाता है] खाद्य पदार्थों में होता है और स्पर्श का आनंद नरम और चिकनी चीजों में होता है क्योंकि ये चीजें जो महसूस की जाती हैं, इंद्रियों को आनंद प्रदान करती हैं और इसीलिए, उन्हें प्रिय माना जाता है, और एक स्वस्थ स्वभाव का झुकाव उनकी ओर होता है। जहां तक पंचज्ञानियों के सुखों और सुखों की बात है, तो मनुष्य के साथ-साथ जानवर भी उनमें भाग लेते

हैं। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति प्रेम को पांच इंद्रियों की धारणाओं तक सीमित रखता है और कहता है कि ईश्वर को पांच इंद्रियों के साथ नहीं देखा जाता है और इसीलिए, ईश्वर से प्रेम करना असंभव है। इस मामले में, मनुष्य की जो विशिष्टता (विशेषता) हम मान रहे हैं (मान रहे हैं), गलत हो जाएगी और छठी इंद्रिय [जो मनुष्य के पास पांच बाहरी इंद्रियों के अलावा है] बेकार हो जाएगी, जिसके आधार पर, मनुष्य को जानवरों पर भेद और श्रेष्ठता प्राप्त है, और यह कि [छठी इंद्रिय] को बुद्धि के रूप में (जैसा या तुलना) किया जा सकता है, [आंतरिक] प्रकाश, हृदय, या ऐसा कोई अन्य शब्द। हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि [परमेश्वर से प्रेम करना असंभव है क्योंकि परमेश्वर को पाँच इंद्रियों से नहीं माना जाता है] क्योंकि आंतरिक अंतर्दृष्टि [और रोशनी] बाहरी समझ की तुलना में अधिक शक्तिशाली और शक्तिशाली है। आंख की तुलना में, हृदय अधिक अनुभव करता है और बुद्धि के माध्यम से किए गए अर्थों की सुंदरता की धारणा, बाहरी रूपों की सुंदरता की तुलना में कहीं अधिक है जो आंख द्वारा महसूस की जाती है। इसलिए, पवित्र दिव्य मामलों के बारे में हृदय की धारणा पूर्ण आनंद और आनंद प्रदान करेगी जो पांच इंद्रियों की धारणा के चक्र (सीमाओं या सीमाओं) से बाहर है, और स्वस्थ स्वभाव और सही बुद्धि उनकी ओर अधिक दृढ़ता से झुक जाएगी, और प्रेम का अर्थ यह है कि हृदय उस चीज की ओर झुका हुआ है जिसकी धारणा सुखद और आनंददायक है। हम जल्द ही इसका विवरण प्रदान करेंगे। इसका परिणाम यह है कि केवल वही व्यक्ति ईश्वर के प्रेम को नकार सकता है जो जानवरों के स्तर पर है और [पांच बाहरी] इंद्रियों की धारणा से ऊपर उठने में असमर्थ है।

प्रेम के कारण: तीसरी बात यह है कि एक मनुष्य अपने निचले स्व (*नफ्स*) से प्यार करता है और कभी-कभी अपने निचले स्व के लिए दूसरे [व्यक्ति या चीज] से प्यार करता है। अब सवाल उठता है कि क्या यह संभव है कि कोई दूसरे के अस्तित्व (धत) के लिए दूसरे से प्रेम करे, बिना अपने निचले स्व के लिए ऐसा किए? जहां तक [आध्यात्मिक रूप से] कमजोर लोगों का संबंध है, वे इस प्रश्न का नकारात्मक उत्तर देते हैं। उनके लिए, यह संभव नहीं है कि एक इंसान दूसरे के अस्तित्व के लिए दूसरे से प्यार कर सकता है और इस प्यार का अपने अस्तित्व से कोई लेना-देना नहीं है (यानी, बदले में कुछ भी वापस लिए बिना दूसरे से प्यार करना)। इस मामले की सच्चाई यह है कि ऐसा प्यार संभव और वर्तमान दोनों है। इसीलिए, हम यहां प्यार के कारणों (कारणों) और उनके प्रकारों के बारे में बताएंगे।

यह ज्ञात होना चाहिए कि प्रत्येक जीवित [व्यक्ति] के लिए, किसी का पहला प्रिय स्वयं और स्वयं का अस्तित्व है। स्वयं के प्रेम का अर्थ है कि किसी का स्वभाव अपने स्वयं के अस्तित्व की शाश्वतता और किसी के अस्तित्व और मृत्यु के घृणा की ओर झुका हुआ है। स्वभाव से, केवल वही चीज प्रिय है जो प्रेमी के लिए उपयुक्त है, और स्वयं के लिए उसके शाश्वत अस्तित्व से अधिक अनुकूल क्या हो सकता है, और किसी के स्वयं के अस्तित्व और मृत्यु से अधिक प्रतिकूल क्या हो सकता है? इसीलिए, मनुष्य जीवन से प्रेम करता है और मृत्यु से घृणा करता है। इस नफरत का मुख्य कारण यह है कि कोई भी अपने निधन से सहमत नहीं होता है और मृत्यु को बुरा मानता है। हालाँकि, यदि कोई जीवन में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना

करता है और कष्टों को सहता है, तो वह मृत्यु के साथ कष्टों के अंत के साथ ठीक हो सकता है, लेकिन ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि उसे मृत्यु प्रिय लगती है, बल्कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वह अपने कष्टों और कठिनाइयों का अंत चाहता है। संक्षेप में, मनुष्य जन्मजात स्वभाव से, मृत्यु और गैर-अस्तित्व से नफरत करता है, और अस्तित्व के स्थायित्व से प्यार करता है। जिस तरह शाश्वत अस्तित्व प्रिय है, उसी तरह अस्तित्व की पूर्णता भी प्रिय है क्योंकि [जो अपूर्ण है] उसके पास पूर्णता नहीं है, और यहां तक कि पूर्णता की तुलना में हानि भी अस्तित्व के समान है। अस्तित्व, चाहे वह [आंतरिक] गुणों या अस्तित्व का हो, किसी की नफरत के योग्य है। जिस तरह अस्तित्व की शाश्वतता प्रिय है, उसी तरह पूर्णता के गुण का अस्तित्व भी प्रिय है। यह उस प्रकृति में निहित है जिसे परमेश्वर ने आंतरिक मानवीय स्वभाव में प्रदान किया है। परमेश्वर का मार्ग नहीं बदलता।

इसका परिणाम यह होता है कि मनुष्य का पहला प्रिय स्वयं का अस्तित्व होता है, फिर उसके शारीरिक अंगों, धन, संतानों, परिवार और रिश्तेदारों की सुरक्षा प्रिय होती है। अंगों की सुरक्षा प्रिय है क्योंकि अस्तित्व की पूर्णता और स्थायित्व उन पर निर्भर है, धन प्रिय है क्योंकि यह अस्तित्व के स्थायित्व का एक साधन है। अन्य सभी चीजों को इस तरह से निकाला जा सकता है। कोई अपने बच्चे से प्यार करता है, हालांकि उसे इससे कोई लाभ नहीं मिलता है और उसे उसमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि बच्चा मृत्यु के बाद उसका स्थान ले लेगा, और उसके जाने के बाद भी उसकी आने वाली पीढ़ियां जारी रहेंगी, और यह उसके अपने अस्तित्व की निरंतरता के समान है, और वह उसमें अपना शाश्वत अस्तित्व पाता है। किसी के विस्तारित परिवार और रिश्तेदारों के मामले में भी ऐसा ही है क्योंकि कोई व्यक्ति अपने स्वयं की पूर्णता के कारण उनसे प्यार करता है, क्योंकि कोई व्यक्ति उनकी वजह से अपने आप को मजबूत मानता है, और उनकी पूर्णता उसके लिए गर्व का स्रोत है। धन, संबंध, बाहरी कारक मानव भुजाओं की तरह हैं जो मनुष्य को पूरा करते हैं। इसलिए, अस्तित्व का अस्तित्व, पूर्णता और स्थायित्व एक के लिए प्रिय है और इसके विपरीत सब कुछ घृणित के रूप में नापसंद किया जाता है। यह **प्रेम का पहला कारण** है [जो किसी के अपने अस्तित्व की पूर्णता और शाश्वतता है]।

प्रेम का दूसरा कारण एहसान है। मनुष्य किसी पर एहसान करता है या उसके लिए अच्छा करता है और यह [दिव्य रूप से] किसी के सहज स्वभाव में प्रवेश किया गया है कि वह उन लोगों से प्रेम करे जो एक पर एहसान करते हैं। जो किसी को दिए गए एहसानों के कारण किसी से प्यार करता है, वह परोपकारी के अस्तित्व से प्यार नहीं करता है, बल्कि वह एहसान से प्यार करता है। एहसान परोपकारी का एक कार्य है, अगर यह नहीं रहता है तो प्यार भी नहीं रहेगा, हालांकि परोपकारी का होना रहता है, जैसे कि प्रेम की प्रचुरता या कमी प्रचुरता या एहसान की कमी पर निर्भर है।

प्रेम का तीसरा कारण किसी वस्तु के अस्तित्व के कारण प्रेम करना है, न कि किसी लाभ या लाभ के कारण जो उसके अस्तित्व से आने वाला है, बल्कि, उसका अस्तित्व ही लाभ है। यह वास्तविक और शाश्वत प्रेम है और यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि यह प्रेम हमेशा के लिए रहने वाला है, न कि किसी लाभ या लाभ के कारण जो इसके अस्तित्व से आने वाला है, बल्कि इसका अस्तित्व ही लाभ है। यह वास्तविक और शाश्वत प्रेम है और यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह प्यार हमेशा के लिए रहने वाला है। सभी स्वस्थ स्वभाव सुंदर फूलों, चित्रों, सुंदर ध्वनियों के साथ चमकीले रंग के पक्षियों आदि से आनंद प्राप्त करते हैं। बहुत से लोग इन चीजों को देखकर अच्छा महसूस करते हैं। फिर भी, ये सभी चीजें रमणीय और आनंददायक हैं, और ऐसी हर चीज प्रिय है। हर सुंदरता की धारणा सुखद होती है। यदि यह साबित हो जाता है कि ईश्वर सुंदर है, तो वह हर उस व्यक्ति का प्रिय होगा जिसके लिए उसकी महिमा और सुंदरता प्रकट हुई है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

إِنَّ اللَّهَ جَمِيلٌ يُحِبُّ الْجَمَالَ

"भगवान सुंदर है और सुंदरता से प्यार करता है। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अब्दुल्ला इब्ने मसूद के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

प्यार का चौथा कारण सुंदरता है। सुंदरता भी प्यार का एक महत्वपूर्ण कारण है। लेकिन सुंदरता क्या है? इसे समझाना जरूरी है। जो लोग बाहरी [रूप] पर नजर रखते हैं और भावनाओं और धारणाओं के कैदी हैं, वे सोचते हैं कि सुंदरता यह है कि एक इंसान के पास संतुलित अंग, अच्छे चेहरे की विशेषताएं, लाल और हल्का रंग, और अच्छी ऊंचाई है। आमतौर पर ऐसे लोगों को सुंदर कहा जाता है क्योंकि ये वो विशेषताएं हैं जिन्हें वे अपनी आंखों से देखते हैं। इसीलिए, उनके पास यह अनुमान है कि कुछ ऐसा जिसे आंख से नहीं देखा जा सकता है, विचार से घिरा नहीं जा सकता है, और अच्छे रंगत और विशेषताओं से रहित है, सुंदर नहीं है और समानता या वांछनीयता के स्तर तक भी नहीं पहुंचता है, भले ही यह एक गलत विचार है। सुंदरता उन चीजों पर निर्भर नहीं है जिन्हें आंख से या शारीरिक संरचना के संतुलन या हल्के लाल रंग पर देखा जा सकता है। हम कहते हैं कि यह लेखन सुंदर है, यह ध्वनि सुंदर है, यह घोड़ा अच्छा है, बल्कि हम यह कहने की हद तक जाते हैं कि यह कपड़ा सुंदर है और यह बर्तन सुंदर है। आवाज, लेखन और अन्य सभी चीजों की सुंदरता का क्या अर्थ है? यदि सुंदरता केवल चेहरे में मौजूद है, हालांकि हम अच्छी तरह से जानते हैं कि आंख को एक सुंदर लेखन में आनंद मिलता है [जैसे सुलेख], कान को सुंदर गीतों में आनंद मिलता है, दुनिया में सभी धारणाएं या तो अच्छी हैं या बुरी, तो सुंदरता का क्या अर्थ है जो सभी चीजों में समान है? हम इस पर कुछ प्रकाश डालेंगे।

हर चीज की खूबसूरती इस बात में है कि जो पूर्णता उसके लिए उपयुक्त या संभव है, उसमें जमा हो जाती है। यदि इसकी सभी संभावित पूर्णताएं किसी वस्तु में जमा हो जाती हैं, तो वह सुंदर कहलाने के योग्य है, और यदि कुछ पूर्णताएं हैं और कुछ नहीं हैं तो वह चीज उस हद तक सुंदर होगी जो उसके पास हैं [जो

इसके लिए विशिष्ट हैं]। एक उदाहरण के रूप में, हर घोड़े को सुंदर नहीं कहा जा सकता है, इसके बजाय केवल उस घोड़े को सुंदर कहा जाएगा जिसमें वे सभी विशेषताएं हैं जो एक अच्छे घोड़े के लिए आवश्यक हैं - उपस्थिति, रचना, रंग, गति, लगाम के प्रति उसकी प्रतिक्रिया की सुंदरता, आदि। सुंदर लेखन वह है जिसमें लेखन से संबंधित सभी पूर्णताएं संचित होती हैं जैसे अक्षरों और शब्दों का संतुलन, प्रवाह, व्यवस्था, संगठन की सुंदरता आदि। हर चीज में एक पूर्णता होती है जो उसके लिए विशिष्ट होती है और किसी और चीज के लिए विशिष्ट नहीं होती है, बल्कि किसी अन्य चीज में उस पूर्णता की अनुपस्थिति को दूसरी चीज के लिए सुंदरता कहा जाता है। इससे यह सीखा जाता है कि हर चीज की सुंदरता उस पूर्णता में होती है जो उसके लिए विशिष्ट होती है। इसीलिए, जिन सिद्धियों के आधार पर घोड़े को अच्छा कहा जाता है, वे वही नहीं होंगी जिनके आधार पर मनुष्य को अच्छा कहा जाता है, और जिन विशेषताओं के आधार पर एक लेखन को अच्छा कहा जाता है, वे घोड़े को अच्छा कहने के लिए समान नहीं होंगे। इस सिद्धांत के आधार पर सभी मामलों का अनुमान लगाया जा सकता है।

यहां आप कह सकते हैं कि जिन चीजों का अभी उल्लेख किया गया है, वे न केवल आंखों से बल्कि कुछ अन्य इंद्रियों जैसे आवाज (कानों के माध्यम से समझी जाती हैं) और स्वाद द्वारा भी महसूस की जाती हैं जो अन्य इंद्रियों से संबंधित हैं, यह साबित करते हुए कि सुंदरता इंद्रियों और भावनाओं से संबंधित है, हालांकि, उन चीजों की धारणा जिन्हें [पांच] इंद्रियों में से किसी के द्वारा नहीं देखा जा सकता है, इसका कोई मतलब नहीं है। इसका उत्तर यह है कि सुंदरता केवल इंद्रियों और भावनाओं की धारणा पर निर्भर नहीं है, बल्कि जिन चीजों को इंद्रियों द्वारा महसूस या महसूस नहीं किया जा सकता है, उनमें सुंदरता होती है। उदाहरण के तौर पर कहा जाता है कि यह चरित्र विशेषता अच्छी है, यह ज्ञान अच्छा है, यह गुण अच्छा है, ये तौर-तरीके अच्छे हैं। सुंदर चरित्र लक्षण ज्ञान, विनम्रता, बहादुरी, ईश्वर का भय, दया, विचारशीलता, विचारशीलता, और अन्य अच्छे चरित्र लक्षणों, आंतरिक स्वभाव और स्वभाव को संदर्भित करते हैं। इनमें से कोई भी पांच इंद्रियों द्वारा नहीं माना जाता है, इसके बजाय उन्हें आंतरिक अंतर्दृष्टि (बसीराह) के प्रकाश या रोशनी से माना जाता है। ये सभी खूबसूरत चरित्र लक्षण प्रिय हैं और जिनके पास ये हैं वह किसी ऐसे व्यक्ति का प्रिय भी है जो इन चरित्र लक्षणों से परिचित है। इसका प्रमाण यह है कि यह मानवीय स्वभाव में रखा गया है कि वे अपने भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वाणी के साथियों [और उच्च चरित्र लक्षणों वाले अन्य धर्मी लोगों] से प्रेम करेंगे, भले ही उन्होंने उन्हें कभी देखा भी नहीं है [या यह भी जानते हैं कि वे कैसे दिखते थे]।

कुछ लोग अपने धार्मिक अगुआओं [पिछले इतिहास से] से बहुत प्यार करते हैं, और अपनी सारी संपत्ति उनकी रक्षा करने में खर्च करते हैं, और उनकी आलोचना करने वाले लोगों का खंडन करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, भले ही उन्होंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा हो और अगर वे उन्हें देखते हैं, तो हो सकता है कि वे उनका रूप भी पसंद न करें। इससे यह पता चलता है कि किसी ने उनके बाहरी रूप और रूप के कारण उनसे प्यार नहीं किया है, बल्कि उनके आंतरिक रूप (यानी, उनके ज्ञान, समझ, उच्च

चरित्र लक्षण, ईश्वर के साथ निकटता, आदि) को देखकर उन्हें तीव्रता से प्यार किया है। उनके बाहरी रूप [उनकी कब्रों में] धूल के साथ घुलने के बाद धूल बन गए हैं, कोई भी अभी भी उनसे प्यार करता है और उनके आंतरिक चरित्र लक्षणों और गुणों जैसे कि उनके विश्वास, ईश्वर का भय, ज्ञान की विशालता, धर्म की सूक्ष्मताओं से परिचितता, ईश्वरीय मार्ग के ज्ञान को फैलाने के लिए संघर्ष के कारण उनके प्रति समर्पित है। ये सभी मामले सुंदर हैं, और ये सभी गुण उत्कृष्ट हैं। उनकी सुंदरता की धारणा केवल आंतरिक अंतर्दृष्टि के प्रकाश से होती है क्योंकि इंद्रियां उन्हें समझने में असमर्थ होती हैं। अबू बक्र अल-सिद्दीक (भगवान उनसे प्रसन्न हो) से प्यार करने वाले लोगों की ऐसी स्थिति है। जो उससे प्यार करता है, वह अपनी हड्डियों, मांस, त्वचा, अंगों, रूप-रंग और रूप से प्रेम नहीं करता क्योंकि ये चीजें विलुप्त हो गई हैं या किसी और चीज में बदल गई हैं, लेकिन वे [अभौतिक और सारहीन] चीजें बनी हुई हैं जिनके कारण अबू बक्र अल-सिद्दीक (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ईश्वर की निकटता, निकटता, अंतरंगता और ज्ञान के पद तक पहुंच गए हैं (*मारिफा* या *सिद्दीकियाह*), दूसरे शब्दों में, उनके महान चरित्र लक्षण और सुंदर आंतरिक गुण। उसके लिए प्यार इन्हीं गुणों के कारण है, हालांकि बाहरी रूप विलुप्त हो गया है।

इन सभी सुंदर आंतरिक चरित्र लक्षणों की उत्पत्ति और कारण ज्ञान और क्षमता (*कुद्रह)* है, दूसरे शब्दों में, इन महान लोगों ने मामलों की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त किया और निचले स्व से वासनाओं और इच्छाओं को नियंत्रित करने के बाद अपने आप को सुंदर आंतरिक गुणों, स्वभाव और स्वभावों से सजाने में सक्षम हो गए। अन्य सभी आंतरिक गुण इसी ज्ञान और क्षमता से उत्पन्न होते हैं, और इन दोनों को किसी भी बाहरी अर्थ से नहीं माना जाता है और उनके पास कोई बाहरी आकार, रूप और रंग नहीं होता है जिसे आंखों के सामने प्रकट किया जा सकता है और जिसके परिणामस्वरूप प्रिय माना जाता है। इसका नतीजा यह है कि सुंदरता आंतरिक चरित्र और आदतों में मौजूद है। यदि ज्ञान और योग्यता सुंदर आंतरिक चरित्र का स्रोत नहीं होती, तो यह मामला प्रेम का कारण नहीं होता। इससे यह सिद्ध होता है कि असली प्रिय सुंदर आंतरिक चरित्र की अभिव्यक्ति है जिसे प्रशंसनीय चरित्र लक्षण और सुंदर गुण कहा जाता है, और उनका स्रोत ज्ञान और क्षमता है। यह अभिव्यक्ति मानव स्वभाव को प्रिय है, हालांकि यह [बाहरी] इंद्रियों द्वारा नहीं माना जाता है। इसीलिए, जब लोग हातिम अल-ताई की उदारता और खालिद बिन वलीद (भगवान उनसे प्रसन्न हों) की बहादुरी की कहानियां सुनते हैं, तो वे अनियंत्रित और अगोचर रूप से उनसे प्यार करने लगते हैं, हालांकि हातिम की उदारता को आंख से नहीं देखा जाता है और न ही खालिद की बहादुरी का गुण आंख से देखा जाता है, और यह प्यार न तो उनके बाहरी रूप को देखकर पैदा होता है और न ही यह किसी अपेक्षित लाभ के कारण होता है वे जो उन लोगों तक पहुंच सकते हैं जो उन्हें प्यार करते हैं। इससे यह साबित होता है कि प्यार के लिए यह जरूरी नहीं है, कि प्रिय प्रेमी पर कोई एहसान करता है, बल्कि प्रिय के होने के कारण प्रिय को प्यार किया जाता है (प्रिय जिस तरह से है और किसी और चीज के लिए नहीं), भले ही प्रिय का कोई एहसान प्रेमी तक नहीं पहुंचता है। प्रिय का होना प्रिय है क्योंकि हर सुंदरता प्यारी होती है। रूप दो प्रकार के होते हैं - बाहरी और आंतरिक। बाहरी रूप या रूप आंख से देखा जाता है और आंतरिक रूप को आंतरिक अंतर्दृष्टि (बसीराह) द्वारा माना जाता है। जो आंतरिक अंतर्दृष्टि से रहित है, वह न तो इसे (आंतरिक सौंदर्य) देखता है और न ही कोई इससे कोई आनंद या आनंद

प्राप्त करता है, या इसे प्यार करता है या इसकी ओर झुकाव रखता है। जिसकी आंतरिक अंतर्दृष्टि बाहरी इंद्रियों से अधिक मजबूत होती है, वह बाहरी अर्थों पर आंतरिक अर्थों को प्राथमिकता देता है और उन्हें प्रिय मानता है। दो व्यक्तियों के बीच एक जबरदस्त अंतर है जहां उनमें से एक अपनी बाहरी सुंदरता के कारण दीवार पर एक चित्र से प्यार करता है और दूसरा अपनी आंतरिक सुंदरता के कारण एक भविष्यवक्ता से प्यार करता है।

प्यार का पांचवां कारण एक गुप्त उपयुक्तता (अनुकूलता) है जो एक प्रेमी और एक प्रिय के बीच मौजूद है। कभी-कभी ऐसा होता है कि दो मनुष्यों के बीच एक मजबूत संबंध या संबंध विकसित होता है, सुंदरता या किसी अन्य लाभ के कारण नहीं, बल्कि उनकी आत्माओं की अनुकूलता के कारण। हमने स्नेह और भाईचारे की पुस्तक (अल-उल्फा *वा अल-अखुव्वा) पर इस पर प्रकाश डाला है* [ग़ज़ाली की महान रचना के दूसरे खंड या चौथाई की पांचवीं पुस्तक "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" जो इस ग्रंथ में शामिल नहीं है]।

इसका सारांश [प्रेम के कारणों की पूरी व्याख्या] यह है कि प्रेम के पाँच कारण हैं। पहला यह है कि एक इंसान अपने स्वयं के अस्तित्व और स्थायित्व और पूर्णता से प्यार करता है। दूसरा है उन लोगों से प्यार करना जो एक पर एहसान करते हैं और किसी के अस्तित्व और शाश्वतता में उसकी मदद करते हैं और एक में अज्ञानता का विरोध करते हैं। तीसरा किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करना है जिसने कोई एहसान नहीं किया है, लेकिन दूसरों को इससे फायदा हुआ है। चौथा किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करना है, जो अपने स्वयं के अस्तित्व में सुंदर है, चाहे वह बाहरी रूप में हो या आंतरिक रूप में या रूप या अर्थ में। पांचवां किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करना है जिसके साथ उसकी गुप्त अनुकूलता है। यदि प्रेम के ये सभी पांच कारण एक व्यक्ति में जमा हो जाते हैं, तो उस व्यक्ति का प्रेम पूर्ण होगा और बहुत उच्च स्तर पर होगा। यदि किसी का बच्चा सुंदर, शिष्ट, ज्ञानी, बुद्धिमान है, लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है, उसकी अच्छी सेवा करता है और आज्ञाकारी है तो माता-पिता को उस बच्चे के लिए अपार प्रेम है, तो यह प्रेम उस हद तक मजबूत और व्यापक होगा जिस हद तक इन चरित्र लक्षणों को एक में सिद्ध किया जाता है। अब हम समझाएँगे कि इन सभी [पांच] कारणों [प्रेम] की पूर्णता और संचय केवल परमेश्वर के अस्तित्व में ही संभव है और वास्तव में, वह प्रेम के योग्य है।

परमेश्वर ही प्रेम के योग्य है

यदि किसी का झुकाव ईश्वर के प्रति नहीं है, लेकिन ईश्वर के अलावा किसी अन्य की ओर झुकाव है, तो यह किसी की समझ की कमी और ईश्वरीय ज्ञान से दूर होने का प्रमाण है। वास्तव में, गहरी आंतरिक अंतर्दृष्टि वाले लोगों के लिए, परमेश्वर के अलावा कोई भी प्रेम के योग्य नहीं है और कोई भी प्रिय कहलाने के योग्य नहीं है। यह दावा बिना सबूत के नहीं है और हम आने वाले पन्नों में इसे साबित करेंगे कि प्रेम के सभी पांच कारणों का संयोजन केवल ईश्वर के अस्तित्व में ही संभव है। यह किसी में भी संभव नहीं है, जैसा कि ईश्वर के अलावा किसी और के पास अधिक से अधिक, एक या दो कारण [प्रेम के] हैं और वह भी रूपक अर्थ में, बल्कि किसी के [मात्र] अनुमान और विचार के अर्थ में। दूसरी ओर, परमेश्वर में इन सभी [पांच] कारणों का संचय और संयोजन, वास्तविक है। जब हम इस मामले को पूरी तरह से विस्तार से समझाएंगे, तो अंतर्दृष्टि रखने वाले लोगों के लिए यह स्पष्ट हो जाएगा कि मूर्ख और मूर्ख लोगों का यह विचार कि परमेश्वर के प्रति प्रेम असंभव है, सही नहीं है। इसके बजाय, मामला इसके विपरीत है, कि परमेश्वर के अलावा किसी और से प्रेम नहीं किया जाना चाहिए। अब हम इन (प्रेम के पाँच कारणों) में से प्रत्येक की अलग-अलग जाँच करेंगे [यह साबित करने के लिए कि किसी से प्रेम करने के ये सभी पाँच कारण केवल परमेश्वर पर ही लागू होते हैं और इसके अलावा कोई नहीं]।

पहला कारण: पहला कारण जो समझाया गया है वह यह है कि मनुष्य स्वयं को प्रिय मानता है और इसके स्थायित्व, शाश्वत अस्तित्व और पूर्णता की इच्छा रखता है। व्यक्ति विनाश, अस्तित्वहीनता, दोष और पूर्णता की बाधाओं से घृणा करता है। ये चीजें एक जीवित मनुष्य के अंतर्निहित स्वभाव में पाई जाती हैं। जो अपने आप को जानता *है* और अपने भगवान को पहचानता है, वह यह अच्छी तरह से जानता है कि उसका अस्तित्व अपने आप नहीं है, बल्कि उसके अस्तित्व, स्थायित्व, पूर्णता और सब कुछ का अस्तित्व ईश्वर पर निर्भर करता है और उसके कारण है। वह किसी के अस्तित्व का निर्माता है, वह वह है जो किसी के अस्तित्व को बनाए रखता है, वह वह है जो पूर्णता के गुणों का निर्माण करता है और उन्हें पूरा करता है, वह वह है जो ऐसे साधनों का निर्माण करता है जो किसी को पूर्णता तक ले जाता है, वह वह है जो मार्गदर्शन बनाता है जो इन साधनों का उपयोग करने के लिए मार्गदर्शन करता है, अन्यथा एक सेवक (मनुष्य का) अस्तित्व कुछ भी नहीं है - यह केवल अस्तित्व नहीं है। यदि परमेश्वर अपने कार्य से एक को नहीं बनाता है, और सृजन के बाद, यदि वह अपना अनुग्रह नहीं देता है, तो व्यक्ति नष्ट हो जाएगा, और यदि वह इसे (अपनी कृपा) पूरा नहीं करता है, तो वह हीन रहेगा। इसका नतीजा यह है कि दुनिया में ऐसा कोई अस्तित्व नहीं है जो अपने स्वयं के अस्तित्व से मौजूद हो। प्रत्येक अस्तित्व इस जीवित, आत्म-निर्वाह (ईश्वर) के अस्तित्व से अस्तित्व में है, जिसका अपना अस्तित्व उसके स्वयं के अस्तित्व से है। यदि ईश्वर के ज्ञाता ('*आरिफ* या ज्ञानवादी) को अपने अस्तित्व के लिए प्रेम होगा, तो व्यक्ति को उस प्राणी के लिए भी प्रेम होगा, जिस पर उसका अपना अस्तित्व निर्भर है और उससे लाभ उठा रहा है और अस्तित्व प्राप्त कर रहा है, बशर्ते कि वह उसे सृष्टि और अस्तित्व का निर्माता, वर्तमान, विकासकर्ता, रक्षक [सभी सृष्टिओं और अस्तित्वों का] और अपने स्वयं के अस्तित्व से अस्तित्व में मानता है। यदि किसी को ऐसे अस्तित्व के लिए प्रेम नहीं है, तो यह कहा जाएगा कि वह न तो अपने स्वयं को जानता है और न ही अपने प्रभु को। प्रेम [ईश्वर] या दिव्य ज्ञान (मारिफा) को जानने का फल (परिणाम) है। जब कोई प्रेम नहीं होगा, तो कोई ज्ञान

नहीं होगा, और जिस हद तक यह ज्ञान कमजोर है, उस हद तक प्रेम कमजोर होगा, और जिस हद तक ज्ञान मजबूत होगा, उस हद तक प्रेम मजबूत होगा। यह कैसे संभव है कि एक व्यक्ति को स्वयं के लिए प्रेम है लेकिन अपने प्रभु के लिए नहीं? जो सूरज की कठिनाई को सहता है, वह छाया से भी प्यार करता है, और जो छाया से प्यार करता है, वह उन पेड़ों से भी प्यार करता है जिनके कारण छाया स्थापित होती है और अस्तित्व होता है। परमेश्वर की क्षमता के साथ प्रत्येक वर्तमान (मौजूदा) चीज़ का संबंध पेड़ों के साथ छाया के समान है। छाया का अस्तित्व पेड़ों के माध्यम से होता है, और प्रकाश का अस्तित्व सूर्य के माध्यम से होता है। दूसरे शब्दों में, छाया अपने अस्तित्व के लिए पेड़ों के अधीन है, और प्रकाश का अस्तित्व सूर्य के अधीन है। इसी तरह, जो कुछ भी मौजूद है, उसका अस्तित्व उस एक अस्तित्व के अधीन है। सभी चीजें उसकी क्षमता और रचनात्मकता के उदाहरण हैं।

यदि मनुष्य के लिए स्वयं से प्रेम करना आवश्यक है, तो उस जीव से प्रेम करना भी आवश्यक है जिसके द्वारा उसे अस्तित्व प्राप्त हुआ है, तो उसकी वास्तविकता, आंतरिक गुणों, आंतरिक और बाहरी प्राणियों, और आंतरिक अर्थों और भौतिक संरचना में, उसे स्थायित्व प्राप्त हुआ [इस जीवन के बाद शुरू होने वाले अनन्त जीवन के रूप में]। परन्तु यह प्रेम केवल वही अनुभव कर सकता है जो ऊपर बताई गई वास्तविकताओं को जानता है जैसा कि समझाया गया है। जिसका हृदय निम्न स्व की वासनाओं में लिप्त है, वह अपने सृष्टिकर्ता और प्रभु से बेखबर है, और उसके हृदय में परमेश्वर का प्रेम नहीं है, और वह केवल वासनाओं और बाहरी दिखावों पर नज़र रखता है, दूसरे शब्दों में, वह दृश्य संसार (भौतिक क्षेत्र) के क्षेत्र में एक कैदी बना रहता है जिसमें किसी को कोई भेद नहीं है। बल्कि जानवर भी इसमें हिस्सा लेते हैं। केवल वही व्यक्ति स्वर्गदूत क्षेत्र (*'आलम अल-मलकूट)* में हो सकता है जिसका स्वर्गदूतों के साथ समानता है। जो जानवरों के दायरे में है और इस क्षेत्र में नीचे उतरता है, वह उस हद तक स्वर्गदूतों के दायरे से दूर हो जाएगा।

दूसरा कारण: प्यार का दूसरा कारण किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करना है जो किसी पर एहसान करता है, पैसे के साथ उसकी मदद करता है, हर समय मदद करने के लिए तैयार रहता है, दुश्मनों से बचाता है, ईर्ष्यालु लोगों की बुराइयों से बचाता है, स्वयं, संतान, परिवार और रिश्तेदारों से संबंधित सभी उद्देश्यों में मदद करता है। ऐसा आमतौर पर एक प्रिय होता है। यह कारण [प्रेम का] यह भी मांग करता है कि परमेश्वर के अलावा किसी और से प्रेम नहीं किया जाना चाहिए। यदि परमेश्वर के अधिकार की समझ सही ढंग से विकसित की जाती है, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि जो उपकार करता है वह केवल वही है। जहाँ तक परमेश्वर के सेवकों पर कृपाओं का संबंध है, उन्हें लिखित रूप में शामिल नहीं किया जा सकता है। ये अनुग्रह असंख्य हैं जैसा कि स्वयं परमेश्वर ने कहा है:

وَإِن تَعُدُّوا۟ نِعْمَتَ ٱللَّهِ لَا تُحْصُوهَآ ۗ

"यदि आप परमेश्वर की आशीषों को गिनना शुरू करते हैं, तो उन्हें गिनती में भी नहीं लाया जा सकता है [क्योंकि वे असंख्य और अनगिनत हैं]। (कुरान, अध्याय 14, श्लोक 34)

हर मामले में, परमेश्वर के अनुग्रह ऐसे होते हैं कि उन्हें गिना भी नहीं जा सकता। सेवकों [ईश्वर के, यानी, मनुष्यों] को केवल रूपक अर्थों में [वे दूसरों पर करते हैं] एहसान के संदर्भ में संदर्भित किया जा सकता है। वास्तविक हितैषी केवल ईश्वर ही है। मान लीजिए कि किसी ने तुम्हें अपना सारा खजाना दे दिया है और तुम्हें खर्च करने का पूरा विशेषाधिकार दे दिया है। अगर आपको लगने लगे कि किसी ने आपको खजाने सौंपकर और आपको खर्च करने का विशेषाधिकार देकर आप पर बहुत बड़ा एहसान किया है, तो यह गलत सोच होगी। सबसे पहले आपको चार बातों पर विचार-विमर्श करना चाहिए, फिर एहसान की वास्तविकता आपके सामने स्पष्ट हो जाएगी।

पहला है उस व्यक्ति का अस्तित्व जो आपको खजाना दे रहा है। दूसरे, एक के साथ धन की उपस्थिति। तीसरा, इस पर पूरा नियंत्रण रखना। चौथा, धन को आपको सौंपने का विचार दिल में है। अब हम आपसे पूछते हैं, "उस व्यक्ति को किसने बनाया? किसने किसी को धन दिया और फिर उस पर नियंत्रण और क्षमता प्रदान की? किसने अपने दिल में यह इरादा रखा कि आप धन सौंपने के लिए चुनें? किसने आपके प्यार को किसी के दिल में रखा? किसी को यह विचार कैसे आया कि इस दुनिया में अपनी बेहतरी और कल्याण और अगला आप पर एक एहसान करने में है? कोई व्यक्ति आपको धन या संपत्ति देने के लिए अपने दिल के आग्रह का पालन करने के लिए बाध्य है और इसका विरोध नहीं कर सकता है, इसका क्या कारण है? यदि तुम इस पर विचार-विमर्श करते हो, तो तुम्हें इन सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाएगा, और यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट हो जाएगा कि वास्तविक हितैषी केवल परमेश्वर ही है जिसने किसी को तुम पर उपकार करने के लिए मजबूर किया, और तुम्हारे लिए [किसी के हृदय] को वश में किया और उन कारकों को थोप दिया जो किसी को तुम पर अनुग्रह करने के लिए प्रेरित करते हैं। उपकार करने वाले व्यक्ति का हाथ केवल एक साधन है जिसके द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह उसके सेवकों को दिए जाते हैं। उस मामले में, कोई भी जल चैनल की तरह मजबूर होता है जो पानी को बहने देने के लिए मजबूर होता है। यदि आप मध्यस्थ को अपना दाता मानते हैं और उसके लिए कृतज्ञता रखना शुरू करते हैं तो यह एक संकेत है कि आप वास्तविकता से अपरिचित हैं।

जब भी कोई इंसान दूसरों पर कोई एहसान करता है, तो वह इसे अपने आप पर करता है, इसे किसी भी सृष्टि पर [भगवान की] करना संभव नहीं है। यद्यपि कोई अनुग्रह के रूप को अपनाता है, फिर भी वह पहले से ही उसके मुआवजे की खोज करता है, चाहे वह दुनिया में हो, जैसे कि दुनिया एक के लिए जीत

ली जाती है या उसके अधीन हो जाती है और उसकी बहुत प्रशंसा करती है, उसकी उदारता की कहानियाँ दूर-दूर तक फैल जाती हैं, और लोग उस पर अपनी आज्ञाकारिता और प्रेम के फूलों की बौछार करना शुरू कर देते हैं, या परलोक में ईश्वर से अधिकतम संभव पुरस्कार (ईश्वरीय प्रतिफल) प्राप्त करता है। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति बिना किसी कारण के अपना धन नदी में नहीं डालता, उसी प्रकार व्यक्ति बिना किसी उद्देश्य के अपना धन दूसरे हाथ में नहीं रखता है। यह मकसद किसी का उद्देश्य है। यदि किसी ने आपको धन दिया है तो आप किसी के उद्देश्य नहीं हैं, बल्कि आप केवल अपने उद्देश्य की प्राप्ति का एक साधन हैं, चाहे यह उद्देश्य किसी का उल्लेख, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि, सम्मान, इस दुनिया में महानता हो, या परलोक में सम्मान, महानता और ईश्वरीय प्रतिफल हो। इस व्यक्ति ने (जिसने आप पर उपकार किया है) ने आपको अपना धन सौंपकर अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है। इसीलिए, कोई आपका हितैषी नहीं है, इसके बजाय, वह स्वयं का हितैषी है। कोई धन के बदले में कुछ प्राप्त करना चाहता है, जिसे वह उससे बेहतर समझता है। अगर यह बेहतर नहीं होता, तो कोई भी आप पर अपना धन खर्च नहीं करता। इसके बारे में सोचें, कोई आपकी कृतज्ञता या प्यार के योग्य नहीं है और इसके दो कारण हैं। एक कारण यह है कि परमेश्वर की ओर से ऐसे कारकों को थोपने के बाद जो किसी व्यक्ति को अनुग्रह करने के लिए प्रेरित करते थे, वह आपको वह धन [या संपत्ति या भौतिक संपत्ति] देने के लिए मजबूर था और इसका विरोध करने में असमर्थ था। इसका दृष्टांत एक राजा के कोषाध्यक्ष का है जिसे राजा शाही इनाम के साथ एक देने का आदेश देता है। जो उस इनाम को प्राप्त करता है, वह कोषाध्यक्ष को अपना हितैषी नहीं मान सकता क्योंकि उस शाही आज्ञा को प्राप्त करने के बाद, कोषाध्यक्ष को इसका पालन करने के लिए मजबूर किया गया था और वह इसका विरोध करने में असमर्थ था। यदि राजा कोषाध्यक्ष की इच्छा पर इनाम के मामले को टाल देता, तो कोषाध्यक्ष ने इसे नहीं दिया होता। इसी तरह, यदि परमेश्वर उपकारी को अपनी इच्छा पर छोड़ देता है, तो कोई भी नकली सिक्का भी खर्च करने के लिए सहमत नहीं होगा, लेकिन उसने पहले अपने दिल में अपनी संपत्ति देने के कारणों और प्रोत्साहनों को पैदा किया, फिर अपने दिल में यह विचार पैदा किया कि धन देने के लिए उसे यह सांसारिक और अन्य-सांसारिक लाभ है, इस देने पर निर्भर करें और इसीलिए कोई इसे देता है। दूसरा कारण यह है कि कोई व्यक्ति धन देता है और बदले में वह लेता है जो किसी की राय में, धन से बेहतर है। इस मामले में किसी का उदाहरण एक व्यापारी या व्यवसायी का है और एक व्यापारी परोपकारी नहीं हो सकता क्योंकि वह धन देने के लिए मुआवजा ले रहा है। यह एक अलग मामला है जिसे किसी व्यक्ति को मुआवजे के रूप में स्वीकार किया जाता है या तो प्रशंसा या ईश्वरीय प्रतिफल [मौद्रिक या भौतिक प्रतिफल लेने के बजाय]। मुआवजे के लिए यह आवश्यक नहीं है कि इसे महसूस किया जाए [या देखा जाए], बल्कि सुख और लाभ धन की जगह ले सकते हैं [मुआवजे के रूप में] और कभी-कभी धन के लिए सबसे अच्छा प्रतिफल बन सकते हैं।

वास्तव में, एहसान एक ऐसी चीज है जिसके लिए कोई प्रतिफल नहीं लेता है, दूसरे शब्दों में, देने वाला इस तरह से देता है कि देने वाले को इसमें कोई आनंद न मिले और न ही उससे कोई लाभ प्राप्त हो, और मनुष्य में इस प्रकार के उपकार का अस्तित्व में आना असंभव है। केवल परमेश्वर ही इस प्रकार के अनुग्रह का स्रोत और दाता है और परमेश्वर ने अपनी रचनाओं पर जो [असंख्य] अनुग्रह किए हैं, उनमें

परमेश्वर के लिए कोई गुप्त लाभ नहीं हैं, सभी लाभ सृष्टिओं द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। इस विवरण से यह स्पष्ट है कि ईश्वर के अलावा किसी अन्य के लिए अनुग्रह शब्द का उपयोग करना या तो झूठ है या सिर्फ एक रूपक संदर्भ है। ईश्वर के अलावा अन्य में अनुग्रह का अस्तित्व असंभव है, जैसे अंधकार और चमक को जोड़ना असंभव है। ईश्वर अपने अन्य सभी गुणों की तरह, अपने इस दिव्य गुण (गुण) में अद्वितीय और अकेला है। इससे यह पता चलता है कि ईश्वर के ज्ञाता ('*आरिफ* या ज्ञानवादी) को एक स्पष्ट उपकारी के बजाय भगवान से प्रेम करना चाहिए जो कोई वास्तविक उपकार करने में भी सक्षम नहीं है। वास्तविक हितैषी केवल ईश्वर ही है और वह एकमात्र व्यक्ति है जो इस प्रेम का हकदार है [जो किसी के अनुग्रह पर आधारित है]। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के अलावा किसी अन्य को परोपकारी मानता है, तो वह ऐसे व्यक्ति के अनुग्रह से प्रेम करता है, तो यह किसी व्यक्ति की अज्ञानता है और अनुग्रह के अर्थ और उद्देश्य से उसकी अपरिचितता का प्रमाण है।

तीसरा कारण: क्या मनुष्य एक परोपकारी से प्यार करता है, भले ही वह एहसान किसी पर नहीं बल्कि किसी और पर हो। ये चीजें मानव स्वभाव में पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, यदि आपको एक ऐसे नेता के बारे में बताया जाता है जो न्याय करता है, अच्छी तरह से जानता है [उन लोगों की समस्याओं के बारे में जिनके लिए वह जिम्मेदार है], लोगों के साथ दयालुता और उदारता के साथ व्यवहार करता है, उनके साथ विनम्रता के साथ व्यवहार करता है, भले ही वह नेता आपसे हजारों मील दूर है [दुनिया के एक अलग हिस्से में दूसरे देश में] लेकिन आप इस नेता को अपने दिल में प्यार करना शुरू कर देते हैं। दूसरी ओर, आप एक ऐसे नेता के बारे में सुनते हैं जो उत्पीड़न के लिए जाना जाता है, जो अहंकारी, दुष्ट, उपद्रवी है, और आपसे सबसे दूर के देश का नेता है, तो आप इस नेता से नफरत करते हैं, भले ही आप अपने से दूरी और दूरदर्शिता के बावजूद इस नेता से नफरत करते हैं। इन दोनों अगुआओं के लिए तुम्हारे दिल में अलग-अलग भावनाएँ हैं और यह अंतर काफी प्रमुख है; आपका एक के प्रति अत्यधिक झुकाव है और दूसरे के लिए अत्यधिक घृणा है। प्यार और नफरत की यह स्थिति तब होती है जब आप एक नेता की उदारता से वंचित होते हैं और दूसरे के उत्पीड़न से सुरक्षित होते हैं और जाहिर तौर पर आपके लिए वहां जाने की कोई संभावना नहीं होती है जहां वह सिर्फ नेता या अन्यायी नेता शासन करता है। लेकिन न्यायी नेता के लिए आपका प्यार केवल इस कारण से है कि यह नेता एक हितैषी है, इसलिए नहीं कि आपको किसी एहसान से फायदा हुआ है। इस कारण से यह भी आवश्यक है कि तुम परमेश्वर से प्रेम करो, बल्कि उसके अलावा किसी और से प्रेम न करो, सिवाय इसके कि जब तुम्हारे पास परमेश्वर के अलावा किसी और के साथ संबंध रखने का कोई कारण हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी रचनाओं पर एहसान करने वाला और अनुग्रह और उदारता से ईश्वरीय उदारता का दाता केवल वही है और इसके अलावा कोई नहीं है। सबसे पहले, उसने उन्हें अस्तित्व का धन प्रदान किया, फिर उन्हें अंग प्रदान किए और उन्हें वे साधन प्रदान करके अपने एहसान पूरे किए जो उनके लिए आवश्यक हैं। इसके अलावा, उसने उन्हें आराम और सहजता के साधन प्रदान किए जो जरूरतों के घेरे (क्षेत्र) में नहीं आते हैं, लेकिन उनमें आवश्यकता का एक निशान है, फिर उन्होंने और अधिक एहसान दिए जिन्हें जरूरतों के रूप में नहीं गिना जाता है। मानव शरीर में आवश्यक चीजों का उदाहरण हृदय, यकृत और सिर हैं, आवश्यक अंग आंखें, पैर और हाथ हैं,

और सौंदर्यीकरण के लिए अतिरिक्त चीजों में धनुषाकार भौहें, होंठ, गाल, बादाम के आकार की आंखें आदि शामिल हैं। ये ऐसी चीजें हैं जो यदि मौजूद नहीं हैं, तो मानवीय जरूरतों या आवश्यकताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि ये चीजें केवल सौंदर्यीकरण (मानव उपस्थिति के) से संबंधित हैं। गैर-शारीरिक चीजों में, आवश्यक चीजों का उदाहरण पानी और भोजन है, आवश्यक चीजों में दवाएं, मांस और फल शामिल हैं, और अतिरिक्त चीजों में पेड़ों की हरियाली और सुंदरता, फूलों और फूलों की कलियों की सुंदरता, खाद्य पदार्थों और फलों का स्वाद शामिल हैं। ये [अतिरिक्त] चीजें हैं, यदि मौजूद नहीं हैं तो वे किसी भी आवश्यकता या आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती हैं। ये तीन प्रकार की [दिव्य] आशीषें जो आवश्यक और आवश्यक हैं, और अतिरिक्त [सुंदर] चीजें हर जीवित प्राणी में मौजूद हैं। बल्कि, वे पृथ्वी पर कण से लेकर दिव्य सिंहासन की ऊंचाई तक सभी रचनाओं में मौजूद हैं। इसीलिए, केवल परमेश्वर ही हितैषी है और उसके अलावा कोई भी हितैषी नहीं हो सकता। यदि कोई मनुष्य एक हितैषी है, तो वह अनुग्रह परमेश्वर की रचनाओं की अच्छी चीजों में से एक अच्छी बात है। वह वह है जो सौंदर्य का निर्माता है, वह वह है जो उपकारकर्ता का निर्माता है, और वह उपकारों के साधनों का निर्माता है। इस संबंध में, परमेश्वर के अलावा किसी अन्य से प्रेम करना मात्र अज्ञानता और मूर्खता है। जो यह जानता है वह परमेश्वर के अलावा किसी और से प्रेम नहीं करता।

चौथा कारण: क्या कोई किसी चीज से सिर्फ इसलिए प्यार करता है क्योंकि वह सुंदर है और [उसकी अंतर्निहित] सुंदरता के अलावा कोई अन्य उद्देश्य [प्यार का] नहीं है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, यह सहज मानव स्वभाव में निहित है। सुंदरता को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है: पहला वह सुंदरता है जिसे आंख से माना जाता है, और दूसरा वह सुंदरता है जिसके लिए आवश्यक रूप से आंतरिक अंतर्दृष्टि की रोशनी की आवश्यकता होती है। पहले प्रकार की सुंदरता एक बच्चे द्वारा भी देखी जाती है, बल्कि, यह एक जानवर या पक्षी द्वारा भी माना जाता है, लेकिन दूसरे प्रकार की सुंदरता केवल उन लोगों द्वारा देखी जाती है जो "दिल के लोग" कहलाने के लिए उपयुक्त हैं। वे अन्य लोग इस उपाधि को अपने साथ साझा नहीं करते हैं जो केवल सांसारिक जीवन के बाहरी पहलुओं को देखते हैं और दृश्य के अलावा कुछ भी नहीं देखते हैं। सुंदरता हर उस व्यक्ति को प्रिय है जो इसे देखता है। जो लोग सुंदरता को अपने दिल से देखते हैं, वे सुंदरता को अपने दिल से प्रिय मानते हैं। इसका उदाहरण भविष्यवक्ताओं और सच्चे विद्वानों (संतों और ज्ञानवादी) का उनके उच्च (उदात्त) चरित्र लक्षणों और सुंदर गुणों के लिए प्रेम है। उनका प्यार दिलों में है, हालांकि उनके चेहरे और बाहरी रूप आंखों से छिपे हुए हैं। आंतरिक रूप की सुंदरता का यही अर्थ है जो इंद्रियों द्वारा नहीं माना जाता है, हालांकि, कोई उन संकेतों को देखता है जो उनके उच्च चरित्र की ओर इशारा करते हैं। जब दिल इस बात पर आश्वस्त हो जाते हैं, तो दिल उनकी ओर झुक जाते हैं और उनसे प्यार करते हैं। इसलिए, जब कोई किसी लेखक के लेखन, या किसी कवि की कविता, या किसी कलाकार की तस्वीर, या एक बिल्डर के निर्माण को देखता है, तो उस लेखक, कवि, कलाकार और बिल्डर के आंतरिक गुण उनके सामने प्रकट हो जाते हैं जिनके कारण ये कार्य अस्तित्व में आए। उनके कार्यों का सार उनका ज्ञान और क्षमता है। फिर उनके बारे में जो कुछ भी जाना जाता है, उसकी महानता, सुंदरता और श्रेष्ठता की सीमा तक, उस हद तक उनका ज्ञान श्रेष्ठ और पूर्ण होगा। ऐसी

ही क्षमता वाले व्यक्ति की स्थिति होती है। क्षमता के साथ होने वाले के उच्च सम्मान और स्थिति की सीमा तक, उस हद तक क्षमता श्रेष्ठ और पूर्ण होगी। क्योंकि ज्ञातों में से सबसे ऊंचा और सबसे बड़ा ज्ञात ईश्वर का है। इसीलिए, सर्वोच्च सत्ता (ईश्वर) से जुड़ा ज्ञान सभी ज्ञानों में सर्वोच्च और सबसे बड़ा होगा जो ईश्वर की ज्ञानरेखा (*मारिफा*) का ज्ञान है। फिर रैंक दर रैंक, उन चीजों में सम्मान और श्रेष्ठता होती है जो परमेश्वर की सूक्ति के लिए विशिष्ट हैं या इसके करीब हैं। जिस हद तक कोई चीज़ परमेश्वर के ज्ञान से निकटता से जुड़ी हुई है, उस हद तक उसमें महानता, सम्मान और विशिष्टता होगी।

ज्ञानवादियों के सुंदर चरित्र लक्षण, आंतरिक गुण, स्वभाव और स्वभाव तीन चीजों से बने हैं। सबसे पहले, इन लोगों के पास परमेश्वर, स्वर्गदूतों, प्रकट [दिव्य] पुस्तकों और ईश्वरीय नियमों का ज्ञान है। दूसरे, उनके पास स्वयं को और परमेश्वर के अन्य सेवकों को सुधारने और शुद्ध करने और उन्हें आध्यात्मिक रूप से सुधारने और मार्गदर्शन करने की क्षमता है। तीसरा, उन्हें बुराइयों, आंतरिक दोषों और वासनाओं से शुद्ध किया गया है जो मनुष्यों को भलाई और धार्मिकता के मार्गों से रोकते हैं और [इसके बजाय] उन्हें बुराई के मार्गों पर चलने के लिए मजबूर करते हैं। इन [तीन] मामलों के कारण, लोग भविष्यद्वक्ताओं, उनके उत्तराधिकारियों, विद्वानों [ईश्वरीय मार्ग के] और न्यायी और उदार नेताओं से प्यार करते हैं।

ज्ञान, योग्यता और पवित्रता: आइए अब इन तीन मामलों को ईश्वरीय गुणों (गुणों) के संबंध में देखें। ज्ञान की अवस्था ऐसी है कि उन सभी लोगों के सभी ज्ञान [सामूहिक रूप से मानवता के द्वारा जाना जाता है] जो पहले आए थे और अभी यहां हैं और भविष्य में आएंगे, उनकी परमेश्वर के ज्ञान के साथ कोई तुलना नहीं है। उसका ज्ञान हर उस चीज़ को समाहित करता है जो अस्तित्व में है, और उसके सर्वव्यापी ज्ञान से बाहर कुछ भी नहीं है। भगवान कहते हैं:

لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلْأَرْضِ

"आकाश और पृथ्वी से उसका एक कण भी गायब नहीं है। (कुरान, अध्याय 34, श्लोक 3)

एक श्लोक में, पूरी सृष्टि को संबोधित किया गया है:

وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا

"और आपको ज्ञान दिया गया है, लेकिन यह बहुत कम है। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 85)

इसके बजाय, भले ही आकाश और पृथ्वी के सभी निवासी उसके ज्ञान को समाहित करने के लिए एकजुट हो जाएं कि कैसे एक चींटी या मच्छर बनाया गया था, वे उसके ज्ञान के एक छोटे से अंश तक भी नहीं

पहुँच पाएँगे और केवल उतना ही ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे जिसे वह चाहता है कि वे प्राप्त करें। रचना में जो भी थोड़ा-बहुत ज्ञान है, वह उनकी शिक्षा के कारण है। कुरान कहते हैं:

خَلَقَ ٱلْإِنسَـٰنَ ﴿٣﴾

عَلَّمَهُ ٱلْبَيَانَ ﴿٤﴾

"उन्होंने मनुष्य को बनाया और बोलना (वाक्पटुता, स्वयं को समझाने की क्षमता, जटिल और सूक्ष्म मामलों की अभिव्यक्ति, और दूसरों की वाणी और अभिव्यक्ति से सीखना) सिखाया। (कुरान, अध्याय 55, श्लोक 3-4)

इसका परिणाम यह है कि यदि ज्ञान की सुंदरता और विशिष्टता प्रिय है या यह उस व्यक्ति के लिए एक अलंकरण और पूर्णता है जो अपने आप में इससे सजाया गया है, तो उस संबंध में, मनुष्य को केवल ईश्वर से प्रेम करना चाहिए। उनके ज्ञान की तुलना में विद्वानों का ज्ञान केवल अज्ञान है। ईश्वर के ज्ञान में सभी सृष्टिओं के संयुक्त ज्ञान पर अकल्पनीय श्रेष्ठता है क्योंकि उसके ज्ञान की कोई सीमा नहीं है जबकि सृष्टिओं का ज्ञान सीमित है और इसका एक अंतिम बिंदु है।

योग्यता (*क़ुद्दा* या शक्ति, शक्ति, साधन, किसी चीज को पूरा करने या उसे अस्तित्व में लाने की जानकारी) भी पूर्णता का एक गुण है और इसकी तुलना में, असमर्थता एक कमी या दोष है। हर पूर्णता, महानता, विशिष्टता और श्रेष्ठता प्रिय है और व्यक्ति को इसकी धारणा में आनंद मिलता है। इसीलिए, जब कोई अपने समकालीनों पर अली (भगवान उनसे प्रसन्न हो) और खालिद (भगवान उनसे प्रसन्न हों) की बहादुरी और विशिष्टता के बारे में सुनता है, तो खुशी की भावना किसी के दिल को झकझोर देती है। कोई भी उनके साहसिक कारनामों के बारे में सुनकर ही इतना खुश हो जाता है तो अगर कोई उनकी आंखों से उनके कारनामों को प्रत्यक्ष रूप से देख लेता तो उनकी खुशी क्या होती? अब परमेश्वर के सेवकों की क्षमताओं और बहादुरी की तुलना परमेश्वर की क्षमता से कीजिए। सृष्टिओं में से उस व्यक्ति को लें जो सबसे शक्तिशाली है, जिसके पास सबसे व्यापक प्रभुत्व और शक्ति है, जिसके पास निचले स्व से सभी बुराइयों को मिटाने की सभी लोगों की सबसे बड़ी क्षमता है, जो स्वयं से और दूसरों के स्वयं (आत्मा से संबंधित छिपे हुए मामलों) से संबंधित मामलों में सबसे गहरी अंतर्दृष्टि रखता है, और उन्हें नियंत्रित करने की पूर्ण क्षमता रखता है। इस व्यक्ति को ले लो और फिर देखो कि ऐसा व्यक्ति, जिसके पास जबरदस्त शक्ति, शक्ति, व्यापक नियंत्रण और क्षमताएं हैं, उसके पास अपनी स्वयं की मृत्यु, जीवन, मृत्यु के बाद पुनरुत्थान, लाभ, या हानि पर इस हद तक कोई नियंत्रण नहीं है कि ऐसा व्यक्ति किसी की दृष्टि के नुकसान को रोकने, कानों की सुनने को रोकने में भी सक्षम नहीं है, जीभ की बोली, और शरीर की बीमारियां। ऐसे असंख्य मामले हैं जिनमें मनुष्य अपनी क्षमताओं से संबंधित मामलों में अपने लिए और दूसरों के लिए कुछ भी करने में असमर्थ है। और जो मामले किसी की क्षमताओं से संबंधित नहीं हैं, कोई

मक्खी के पंख के आकार के बराबर काम करने में असमर्थ है। तब जो योग्यता किसी के पास स्वयं पर और दूसरों पर है, वह न तो स्वयं की करनी है और न ही स्वयं के द्वारा अस्तित्व में है, इसके बजाय, जैसे परमेश्वर ने एक व्यक्ति को बनाया है, उसी प्रकार, परमेश्वर ने उसकी क्षमता और उसके साधनों को बनाया है और उसे अपनी क्षमताओं से संबंधित कार्यों को करने में सक्षम बनाया है। यह असंभव है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर के सेवकों में से किसी से प्रेम करेगा क्योंकि वह सामर्थ्य, राजनीति, प्रभुत्व, शासन और शक्ति की पूर्णता के कारण है, परन्तु परमेश्वर से प्रेम नहीं करेगा, यद्यपि सामर्थ्य और सामर्थ्य केवल परमेश्वर के लिए उपयुक्त है जो सबसे प्रभावशाली और सबसे महान है। वह प्रबल है, सर्व-प्रबल, सभी ज्ञान का सर्वव्यापी है, और सभी क्षमताओं का स्वामी है। स्वर्ग उसके दाहिने हाथ में लिपटा हुआ है, जो कुछ भी पृथ्वी पर या उसके नीचे है वह उसके नियंत्रण में है, और सभी सृष्टिओं की बागडोर उसके हाथ में है। यदि वह पृथ्वी पर मौजूद सभी सृष्टिओं को नष्ट कर देता है, तो उसके प्रभुत्व से रत्ती भर भी कम नहीं होगा। उसके सेवकों के बीच, जिसके पास क्षमता या शक्ति है, वह सब उसकी सर्वोच्च क्षमता और शक्ति के संकेतों से है। उसके लिए सुंदरता, महिमा, महानता, प्रभुत्व, सर्वोच्चता और श्रेष्ठता है। इसीलिए, यदि किसी की क्षमताओं के कारण किसी को प्रिय मानना संभव है, तो इस प्रेम का एकमात्र योग्य व्यक्ति ही सभी क्षमताओं का स्वामी है, परमेश्वर, श्रेष्ठ है।

सभी दोषों, कमियों और बुराइयों से निचले स्व (नफ्स) का शोधन और शुद्धि एक गुण (गुण) है जो किसी को [इसके मालिक] से प्यार करने के लिए मजबूर करता है। यह भी सुंदरता है और आंतरिक रूप से संबंधित है। यद्यपि सभी भविष्यवक्ता और ज्ञानवादी दोषों, पापों और बुराइयों से ऊपर थे, शुद्धिकरण की पवित्रता और पूर्णता केवल उसी प्राणी के लिए संभव है जो शुद्ध है और महिमा, भव्यता और सम्मान का स्वामी है। अन्य सभी रचनाओं में कुछ दोष हैं, बल्कि अधिकांश रचनाएँ दोषों और कमियों का अवतार प्रतीत होती हैं, बल्कि यह तथ्य कि वे रचनाएँ हैं, [बहुत सी चीज़ों में] अक्षम हैं, [ईश्वरीय शक्ति से] अधीन हैं, और जरूरतमंद हैं, अपने आप में दोष और कमियां हैं। इसलिए, पूर्णता केवल परमेश्वर के लिए आरक्षित है। यदि परमेश्वर के अलावा किसी और के पास कोई पूर्णता है, तो यह भी उसकी एक निधि है। पूर्णता के शिखर तक पहुंचना मनुष्य के अधिकार क्षेत्र में नहीं है क्योंकि पूर्णता के शिखर पर पहुंचने की सबसे निम्नतम डिग्री यह है कि एक सेवक [ईश्वर का] अब [ईश्वरीय शक्ति द्वारा] अधीन नहीं है और अब अपने अस्तित्व के लिए [ईश्वर पर] निर्भर नहीं है और ईश्वर के अलावा किसी के पास यह गुण नहीं है, बल्कि, ईश्वर के अलावा [किसी और] द्वारा इस विशेषता की प्राप्ति असंभव है। वह पूर्णता के साथ इस भेद का एकमात्र वाहक है, वह वह है जो सभी दोषों से रहित है, वह वह है जो सभी बुराइयों से शुद्ध है। यदि सभी दोषों से पवित्रता और शुद्धिकरण को भी सौंदर्य और पूर्णता माना जाता है और यह गुण प्रेम का कारण है, तो वास्तव में यह गुण केवल ईश्वर के लिए अनन्य है। यदि ईश्वर के अलावा किसी और को इस गुण में हिस्सा मिला है, तो इसे अन्य [रचनाओं] की तुलना में केवल पूर्णता कहा जाता है।

पांचवां कारण: प्रेम का पांचवां कारण अनुकूलता और समानता है क्योंकि कुछ [या कोई] जो दूसरे जैसा दिखता है, उसकी ओर झुका हुआ है। इसलिए आप देखते हैं कि एक बच्चे का झुकाव एक बच्चे की ओर होता है, एक बड़ा एक बड़ा होता है, और हर जानवर अपनी तरह की ओर होता है और वह दूसरे प्रकार से दूर भागता है। ज्ञान का प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान में समान पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति की ओर झुकता है, और एक किसान के विपरीत एक अन्य बढ़ई की ओर बढ़ई का झुकाव होता है। यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसके लिए प्रमाण की स्थापना की आवश्यकता नहीं है, लेकिन अनुभव और अवलोकन इसका स्पष्ट प्रमाण है। यह दर्शाता है कि अनुकूलता प्यार का एक महत्वपूर्ण कारण है। हालांकि, अनुकूलता कभी-कभी बाहरी और कभी-कभी एक छिपे हुए मामले में होती है, जिसके बारे में जरूरी नहीं कि कोई जागरूक हो, जैसे कि दो लोग संयोग से एक मामले पर एकजुट हो रहे हैं, हालांकि उन्होंने न तो एक-दूसरे को देखा है और न ही उन्हें एक-दूसरे के धन का लालच है जैसा कि पैगंबर मुहम्मद (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

اَلْاَرْوَاحُ جُنُوْدٌ مُجَنَّدَةٌ فَمَا تَعَارَفَ مِنْهَا اِئْتَلَفَ وَمَا تَنَاكَرَ مِنْهَا اِخْتَلَفَ

"आत्माएं एक संयुक्त सेना (समूह) हैं। उनमें से जो लोग एक-दूसरे को जानते हैं [इस दुनिया में आने से पहले आत्माओं के दायरे में], वे एक साथ मिलते हैं [और इस दुनिया में भी अच्छी तरह से मिलते हैं]। जो लोग अजनबी थे [पहले आत्माओं के दायरे में], वे एक-दूसरे से अलग रहते हैं [और इस दुनिया में भौतिक क्षेत्र में गठबंधन नहीं करते हैं, मिलते हैं या एक साथ नहीं मिलते हैं क्योंकि आध्यात्मिक क्षेत्र में उनकी अनुकूलता नहीं है]"।

इस परंपरा में, "परिचित" "संगतता" को संदर्भित करता है और "अजनबी" "असंगतता" को संदर्भित करता है। फिर भी, अनुकूलता भी एक सेवक [ईश्वर, यानी, एक मनुष्य] और परमेश्वर के बीच प्रेम का एक महत्वपूर्ण कारण है। यह अनुकूलता बाहरी नहीं है इसलिए उन दोनों का चेहरा और रूप एक ही है, इसके बजाय, दोनों के बीच एक आंतरिक अनुकूलता है। यह अनुकूलता कभी-कभी उन मामलों में होती है जिन्हें किताबों में लिखा जा सकता है और कभी-कभी उन मामलों में जिन्हें लिखना और किताबों में दर्ज करना असंभव है ताकि वे दिव्य ईर्ष्या (घैराह) के पर्दे के पीछे छिपे रहें [उन लोगों से दिव्य रहस्यों की रक्षा करने के लिए जो अपनी कम आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं के कारण उनके योग्य नहीं हैं, आध्यात्मिक पथ में गलत कदम, और ईश्वरीय उपस्थिति में उच्च आध्यात्मिक पथ में आगे बढ़ने के लिए सही इरादा और उच्च संकल्प न होना] और उनका छिपाना सही है ताकि जब ग्नोसिस के मार्ग पर यात्री अपने गंतव्य तक पहुँचें, तो इन रहस्यों को उनके सामने स्वयं [ईश्वरीय कृपा से] उजागर किया जाता है। वे मामले जिनमें ईश्वर और मनुष्य के बीच अनुकूलता है और जिन्हें किताबों में लिखा जा सकता है, उन आंतरिक चरित्र लक्षणों और विशेषताओं को संदर्भित करते हैं जिनमें एक सेवक ईश्वर के करीब होता है जिसका पालन करने की आज्ञा दी गई है, जैसा कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक भविष्यसूचक परंपरा में कहा गया है, जिन्होंने कहा:

تَخَلَّقُوا بِأَخْلَاقِ اللّٰهِ

"अपने आप को ईश्वर के चरित्र से सजाओ (अर्थात, वास्तव में ईश्वरीय बनो)"।

दूसरे शब्दों में, ऐसे सुंदर चरित्र लक्षणों, आंतरिक स्वभावों और स्वभावों को अपनाया जाना चाहिए जो ईश्वरीय गुणों में से हैं जैसे कि धार्मिकता, ज्ञान, दूसरों के लिए अच्छा होना और उनके लिए करुणा रखना, उदारता, दयालुता, अच्छी सलाह, दूसरों को मार्गदर्शन का मार्ग दिखाना, उन्हें बुराई से रोकना, ये सभी ईश्वरीय नियम के आदेश हैं। व्यक्ति उन्हें प्राप्त करके ईश्वर के निकट आता है। यह निकटता स्थान और शरीर की निकटता नहीं है, बल्कि यह निकटता आंतरिक गुणों और गुणों की है जिनसे परमेश्वर सुशोभित है। जिन मामलों को पुस्तकों में लिखने की अनुमति नहीं है, उन्हें परमेश्वर ने निम्नलिखित पद में इंगित किया है:

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى

"वे आपसे आत्मा के बारे में पूछते हैं। उन्हें बता दो कि आत्मा मेरे रब की आज्ञा से आई है। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 85)

इस श्लोक में कहा गया है कि आत्मा एक दिव्य पदार्थ है और मानव बुद्धि से परे है। (इस पद और अन्य संबंधित मामलों की उत्कृष्ट व्याख्या के लिए, कृपया इस पुस्तक के अध्याय 1 को देखें "आत्मा के रहस्यों की व्याख्या")। यह आत्मा के कारण है, स्वर्गदूतों को आदम (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) को झुकने की आज्ञा दी गई थी, जैसा कि कुरान में कहा गया है:

إِنَّا جَعَلْنَٰكَ خَلِيفَةً فِى ٱلْأَرْضِ

"हमने तुम्हें (मनुष्यों) पृथ्वी पर [परमेश्वर के] शासक बनाया है। (कुरान, अध्याय 38, श्लोक 26)

इसलिए, इस अनुकूलता के कारण मनुष्य ईश्वर के उपकार के योग्य हो गया। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपने कथन में इस मामले की ओर इशारा किया:

إِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ آدَمَ عَلٰى صُورَتِهِ

"भगवान ने आदम को बनाया [और सभी मनुष्यों को विस्तार से, जैसे आदम (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) पूरी मानवता का पिता है] अपनी छवि में।

इस परंपरा के आधार पर, कम बुद्धि वाले कुछ लोगों ने सोचा है कि रूप (या छवि) केवल बाहरी रूप को संदर्भित करता है जिसे इंद्रियों द्वारा माना जाता है। उनके इस अनुमान के कारण, उन्होंने [गलत तरीके से] भगवान के लिए शरीर और अंगों की कल्पना की है और उनकी तुलना अन्य चीजों से की है [इंद्रियों द्वारा समझी]। ईश्वर हमें बुद्धि की इस कमी से अपने आश्रय में बचाएं और उनका मार्गदर्शन करें। इस अनुकूलता (मनुष्य और ईश्वर के बीच) पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की इस परंपरा में इंगित की गई है। ईश्वर ने पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से कहा, "मैं बीमार था, लेकिन आप मुझसे मिलने नहीं आए! मूसा ने उत्तर दिया, "मैं तेरे पास कैसे जा सकता था और तू बीमार कैसे हो सकता था?" परमेश्वर ने कहा, "मेरा फलाना दास बीमार था, और तुम उससे मिलने नहीं गए। यदि आप उनसे मिलने गए होते, तो आप मुझे उनके पास पाते। हालाँकि, यह अनुकूलता तब प्रकट होती है जब एक मनुष्य [पहले] [ईश्वरीय] पूजा के अनिवार्य कार्य करता है और उनके बाद, पूजा के अतिरंजित (वैकल्पिक) कार्य करता है [धार्मिकता के कार्यों और मार्ग में उत्कृष्टता प्राप्त करके जो किसी को ईश्वर के करीब लाते हैं]। एक *हदीस कुद्सी* (एक भविष्यद्वाणी कथन जिसे इसके स्रोत के लिए ईश्वर को जिम्मेदार ठहराया गया है) में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा [कि भगवान ने कहा]:

لَا يَزَالُ الْعَبْدُ يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ حَتَّى أُحِبَّهُ فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي
يَسْمَعُ بِهِ وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ وَلِسَانَهُ الَّذِي يَنْطِقُ بِهِ

"मेरा सेवक अतिरंजित (वैकल्पिक, अतिरिक्त, ईश्वरीय दायित्वों के संदर्भ में आवश्यक से ऊपर और परे) कार्यों [पूजा, भक्ति और सेवा] द्वारा मेरे करीब आता है जब तक कि मैं एक से प्रेम नहीं करता। जब मैं किसी से प्रेम करना शुरू करता हूं, तो मैं उसकी श्रवण शक्ति बन जाता हूं जिसके साथ वह सुनता है, मैं उसकी आंख बन जाता हूं जिसके साथ वह देखता है, मैं उसकी जीभ बन जाता हूं जिसके साथ वह बोलता है (यानी, ईश्वरीय सहायता, सहायता और निकटता किसी के जीवन के सभी पहलुओं में शामिल हो जाती है क्योंकि वह अत्यंत ईमानदारी और एकचित्तता के साथ ईश्वरीय मार्ग में प्रयास करती है)। (इस परंपरा का वर्णन किया गया है *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इस स्पष्टीकरण का सारांश यह है कि अनुकूलता अपने कारणों में से प्यार का सबसे महत्वपूर्ण कारण है। हालाँकि, यह एक अच्छा और मजबूत कारण है, लेकिन इसका अस्तित्व दुर्लभ है। यदि हम जानबूझकर करते हैं, तो हम देखते हैं कि ये सभी पांच कारण [किसी से प्रेम करने या प्रेम करने के] वास्तव में केवल ईश्वर में ही संयुक्त हैं, न कि रूपक और रूपक अर्थ में या संकेत के माध्यम से। इन सभी कारणों को परमेश्वर में बहुत उच्च स्तर पर जोड़ा जाता है क्योंकि आंतरिक अंतर्दृष्टि वाले लोगों की दृष्टि में, केवल उचित और स्वीकार्य प्रेम ही केवल परमेश्वर का होता है, जबकि अदूरदर्शी लोगों की दृष्टि में, वास्तविक प्रेम परमेश्वर के अलावा अन्य का प्रेम है।

यह भी विचार करने योग्य है कि रचनाओं के प्यार में साझा किया जा सकता है क्योंकि आप किसी विशिष्ट कारण से किसी से प्यार कर सकते हैं और एक अन्य व्यक्ति उसी कारण से उस प्यार में सह-भागीदार है और इसलिए, आप किसी अन्य व्यक्ति से भी प्यार करते हैं। प्यार में सह-साझाकरण एक प्रकार का दोष है और यह प्रियतम के [स्तर] पूर्णता से विषयांतर का प्रमाण है। यह भी संभव है कि आपका प्रिय किसी गुणवत्ता में अद्वितीय हो और जाहिर तौर पर कोई और प्रिय में मौजूद उस गुणवत्ता को साझा न करे। यदि ऐसा कोई व्यक्ति है, तो यह अभी भी संभव है कि एक सह-हिस्सेदार [उस गुणवत्ता में] मौजूद है और आपको इसके बारे में पता भी नहीं है या भविष्य में इस तरह के गुण का किसी अन्य में अस्तित्व होना असंभव है। हालाँकि, ईश्वर के सभी गुण और गुण उच्चतम स्तर और पद पर हैं और कोई भी दिव्य महिमा और सौंदर्य के इन गुणों में सह-भागीदार नहीं है - ऐसा कोई व्यक्ति अभी मौजूद नहीं है और न ही भविष्य में ऐसा कोई अस्तित्व में होने की कोई संभावना है। इससे यह सीखा जाता है कि उसके प्रेम में कोई भागीदार नहीं हो सकता है और इसीलिए, वह किसी भी दोष से रहित है, ठीक वैसे ही जैसे उसके उदात्त गुणों में कोई सह-साझेदारी नहीं हो सकती है। इसलिए, ईश्वर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो वास्तविक प्रेम और प्रेम की पूर्णता का योग्य है और यह [दिव्य] अधिकार ऐसा है कि कोई भी इसमें सह-भागीदार नहीं है।

दिव्य ज्ञान और दिव्य दृष्टि का आनंद

इस शीर्षक के तहत, हम समझाएंगे कि आनंद का उच्चतम स्तर दिव्य ज्ञान और दिव्य चेहरे की दृष्टि है, और इस आनंद को किसी अन्य पर पसंद करना संभव नहीं है। यह वरीयता [दिव्य ज्ञान और दिव्य दृष्टि के आनंद के बजाय सांसारिक सुखों को प्राथमिकता देना,] केवल कोई ऐसा व्यक्ति दे सकता है जो इस [सर्वोच्च] आनंद से वंचित है।

मानव स्वभाव और उनके सुख: यह ज्ञात होना चाहिए कि सभी सुख धारणाओं और कई शक्तियों और स्वभावों के अधीन हैं जो मनुष्य में जमा होते हैं। हर बल और स्वभाव के लिए एक अलग आनंद होता है। इस आनंद का अर्थ यह है कि प्रत्येक स्वभाव या स्वभाव अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है जिसके लिए इसे बनाया गया है। मानव स्वभाव बिना किसी कारण के नहीं बनाए गए हैं, इसके बजाय, हर स्वभाव एक ऐसे मामले के लिए बनाया गया है जो उसका उद्देश्य है। उदाहरण के लिए, क्रोध का स्वभाव संतुष्ट होने और बदला लेने के लिए बनाया गया है; इसमें कोई संदेह नहीं है, इसकी खुशी वर्चस्व खोजने या बदला लेने में है। यह बदला और संतुष्टि इसका उद्देश्य है। खाने की इच्छा का स्वभाव भोजन प्राप्त करने के लिए

बनाया गया है और इसके साथ, [भौतिक] अस्तित्व की निरंतरता खोजना; इसमें कोई संदेह नहीं है, इसका आनंद उस भोजन में है जो इसका उद्देश्य है। सुनने, देखने और सूंघने के स्वभाव की भी यही स्थिति है। हर स्वभाव को अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में आनंद मिलता है। एक भी स्वभाव ऐसा नहीं है जो अपने उद्देश्य को प्राप्त करने से आनंद नहीं लेता है। इसी तरह, हृदय में एक स्वभाव होता है जिसे दिव्य प्रकाश कहा जाता है। इस स्वभाव को आंतरिक अंतर्दृष्टि, विश्वास का प्रकाश और निश्चितता भी कहा जाता है। हालाँकि, शब्दावली भिन्न हो सकती है, लेकिन अर्थ महत्वपूर्ण हैं। फिर भी, हृदय, अपने एक गुण के कारण, जिसके माध्यम से वह अर्थों (मामलों की वास्तविकता) को समझता है, अन्य सभी शारीरिक अंगों से एक अलग स्थिति रखता है। ये अर्थ न तो कल्पनाशील हैं और न ही इन्हें महसूस किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड का निर्माण और एक ऐसे निर्माता के प्रति इसकी आवश्यकता जो शाश्वत और बुद्धिमान है, जो ईश्वरीय गुणों से सुशोभित है। इस स्वभाव को बुद्धि इस शर्त पर भी कहा जाता है कि किसी को भी बुद्धि के बारे में बहस और तर्क-वितर्क से संबंधित विधियों में उपयोग किए जाने वाले बल या क्षमता के संदर्भ में नहीं सोचना चाहिए क्योंकि आमतौर पर लोग इन अर्थों में बुद्धि का उपयोग करते हैं। वास्तव में, बुद्धि वह गुण है जो मनुष्य को जानवरों से अलग करता है और इसके माध्यम से, व्यक्ति दिव्य ज्ञान को मानता है। यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि यह एक उत्कृष्ट गुणवत्ता है।

हृदय का स्वभाव: यह स्वभाव इसलिए बनाया गया है ताकि सभी मामलों की वास्तविकताओं को इसके साधनों से समझा जा सके। इस स्वभाव का उद्देश्य [जिसे वह खोजता है और संतुष्ट होता है] ज्ञान (*'इल्म*) और दिव्य ज्ञान (*मारिफा*) है और इसका आनंद इसमें निहित है, जैसे अन्य स्वभावों के सुख उन चीजों में हैं जो उनके उद्देश्य हैं। जहां तक ज्ञान के सुख और दिव्य ज्ञान की बात है, कोई भी इसका खंडन नहीं कर सकता। ऐसा होता है कि यदि कोई किसी तुच्छ वस्तु की समझ या ज्ञान प्राप्त कर लेता है, तो वह उससे प्रसन्न होता है, और जो किसी मामले से अपरिचित रहता है, भले ही वह महत्वहीन हो, दुखी रहता है। लोग महत्वहीन चीजों की समझ [प्राप्त] करने पर गर्व व्यक्त करते हैं और उनकी जीभ वह सब कुछ व्यक्त करती है जो वे जानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे उस ज्ञान में बहुत आनंद प्राप्त करते हैं और इसे अपने अस्तित्व की पूर्णता के रूप में मानते हैं। ज्ञान ईश्वरीय प्रभुत्व (रुबुबियाह) के गुणों में से सबसे बड़ा गुण है और पूर्णता का शिखर है। इसलिए, जब किसी व्यक्ति की ज्ञान के कारण प्रशंसा की जाती है, तो वह उससे बहुत प्रसन्न होता है क्योंकि इस तरह, व्यक्ति को अपने अस्तित्व की पूर्णता और अपने ज्ञान की पूर्णता के बारे में सुनने को मिलता है, वह उस पर गर्व करता है और उसमें आनंद पाता है।

शासन कला (किसी देश का प्रशासन) और राजनीतिक रणनीतियों के ज्ञान में जितना आनंद मिलता है, उसे कृषि और रोपण के ज्ञान में उस स्तर का आनंद नहीं मिलता है। इसी तरह, ईश्वर के अस्तित्व और गुणों, स्वर्गदूतों और स्वर्ग और पृथ्वी के रहस्यों के ज्ञान से जितना आनंद मिलता है, उतना ही आनंद व्याकरण और कविता के ज्ञान से प्राप्त नहीं होता है। इस संबंध में मामले का तथ्य यह है कि ज्ञान का आनंद इसके सम्मान और उत्कृष्टता के अनुरूप है [यह किस संदर्भ में संबंधित है]। ज्ञान के सम्मान को

उसकी विषय-वस्तु के सम्मान से मान्यता प्राप्त होती है। ज्ञान और समझ में, सबसे श्रेष्ठ समझ या ज्ञान वह है जो सबसे अधिक आनंद देता है और उनका सम्मान विषय वस्तु [उस ज्ञान और समझ के] के सम्मान पर निर्भर करता है। हम दुनिया में किसी भी चीज़ या किसी के बारे में नहीं जानते हैं जो परमेश्वर से अधिक सम्माननीय, श्रेष्ठ, ऊँचा और प्रतिष्ठित है जो हर चीज़ का निर्माता है, वह वही है जिसने उन्हें [अंतिम रूप में] पूरा किया, उन्हें सुंदरता प्रदान की, उन्हें (मनुष्यों) एक बार अस्तित्व में लाया और फिर उनके विलुप्त होने का कारण बनता है तो उन्हें पुनर्जीवित कर देगा, वह हर चीज का योजनाकार और रचयिता है। क्या यह संभव है कि ईश्वरीय न्यायालय के अलावा कोई अन्य अदालत हो सकती है जो प्रभुत्व, सुंदरता, पूर्णता और महिमा की सभी ऊंचाइयों को समाहित करती है? न तो ईश्वरीय महिमा के कारणों की कल्पना करना संभव है और न ही राज्यों के चमत्कारों को शामिल करना संभव है। प्रशंसा करने वालों की जीभ चुप रहती है और कलम थकी हुई लगती है (दिव्य चमत्कारों के बारे में लिखने में असमर्थ)। यदि आपको इस सत्य के बारे में संदेह है तो आपको इस मामले में संदेह नहीं होना चाहिए कि ईश्वरीय प्रभुत्व के रहस्यों और दिव्य मामलों के संगठन का ज्ञान जो सभी अस्तित्वों को शामिल करता है, सभी समझ में सबसे श्रेष्ठ, सबसे सुखद और सबसे शुद्ध है। यदि कोई इस ज्ञान को प्राप्त करता है, तो उसे अपने अस्तित्व को उत्कृष्टता और पूर्णता से संपन्न मानने और इससे प्रसन्न होने और इस पर गर्व करने का उचित अधिकार है। इस प्रकार इससे यह ज्ञात होता है कि ज्ञान आनंददायक है और सभी ज्ञानों में सबसे सुखद ईश्वर के अस्तित्व, गुणों, कार्यों और पृथ्वी और दिव्य सिंहासन के बीच फैले विशाल अथाह प्रभुत्व के ज्ञान और प्रशासन का ज्ञान है। ग्नोसिस का आनंद [जिसका उस ज्ञान में एक छोटा सा हिस्सा है] सभी सुखों में सबसे बड़ा है - यह वासनाओं, क्रोध और अन्य इंद्रियों के अन्य सभी सुखों की तुलना में सबसे प्रभावी, दृढ़ और टिकाऊ आनंद है।

वास्तविकता यह है कि जो सांसारिक अस्तित्व में ईश्वर को नहीं पहचानता है, वह उसे परलोक में नहीं देख पाएगा। जो सांसारिक जीवन में ईश्वर के ज्ञान में आनंद प्राप्त नहीं करता है, वह परलोक में दिव्य दृष्टि का आनंद नहीं ले पाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि कोई सांसारिक जीवन से [आध्यात्मिक प्रयासों, प्रयासों और परिणामस्वरूप ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति के संदर्भ में] अपने साथ कुछ नहीं ले सकता है, तो वहां [परलोक में] कुछ भी नया नहीं होगा। जब तक कोई बोया नहीं जाता, तब तक वह [फसल] कैसे काटेगा? प्रत्येक व्यक्ति उसी [आध्यात्मिक] अवस्था में [या इसकी कमी] पर पुनर्जीवित होगा जिस पर कोई मर गया था और वह उस अवस्था में मर जाएगा जिस पर उसने अपना जीवन जिया है। इसलिए, जिस हद तक किसी के पास ईश्वरीय ज्ञान की निर्भरता (प्रावधान) है, उस हद तक उसे आनंद मिलेगा, और वही ज्ञान-विज्ञान दिव्य दृष्टि में परिणत होगा जो आनंद को कई गुना बढ़ा देगा। यह एक प्रेमी के आनंद की तरह है जो प्रिय को देखकर कई गुना बढ़ जाता है। सबसे पहले, कोई एक विचार में डूबा हुआ था और उसमें आनंद पा रहा था, फिर अचानक प्रिय का चेहरा एक के सामने आ जाता है, अब जो आनंद मिलेगा वह कई गुना बढ़ जाएगा, बल्कि यह कहना गलत नहीं होगा कि यह दृष्टि आनंद की परिणति है। स्वर्ग की स्थिति ऐसी है कि जो कोई भी इसमें प्रवेश करता है, उसे वह सभी आशीर्वाद प्राप्त होंगे जो वह चाहता है, लेकिन जो केवल भगवान से मिलने की इच्छा रखता है, उसे किसी और चीज में आनंद नहीं मिलेगा।

संक्षेप में, व्यक्ति स्वर्ग के आशीर्वाद को उस हद तक प्राप्त करेगा जिस हद तक उसका हृदय ईश्वर के प्रेम से प्रकाशित होता है और प्रेम दिव्य ज्ञान के अनुरूप होता है। इसका अर्थ है कि शाश्वत सुख और अनन्त सफलता (सादाह) का वास्तविक [कारण] परमेश्वर का ज्ञान है। ईश्वरीय कानून ने इसे विश्वास (इमान) के रूप में माना है [लेकिन विश्वास वास्तव में ग्नोसिस को संदर्भित करता है]।

परमेश्वर के प्रेम को पूर्ण करने के साधन: परलोक में सबसे खुश और सबसे समृद्ध व्यक्ति वह होगा जो परमेश्वर के प्रेम में सबसे दृढ़ है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परलोक का अर्थ परमेश्वर के पास आना और उससे मिलने का सम्मान प्राप्त करना है। एक प्रेमी के लिए इससे बड़ा आशीर्वाद क्या हो सकता है कि वह मिलन की लंबी इच्छा के बाद प्रिय के पास आए और हमेशा के लिए दृष्टि की प्रसन्नता प्राप्त करे [प्रिय की] ऐसी अवस्था में कि कोई बाधा न हो, आनंद को बर्बाद करने के लिए कुछ भी न हो, कोई शत्रु न हो, कोई ईर्ष्या नहीं है, कोई विरोधी नहीं है, और इस दृष्टि को तोड़ने का कोई डर नहीं है। लेकिन यह आशीर्वाद प्रेम की शक्ति (तीव्रता) के समानुपाती होगा। प्रेम की सीमा तक आनंद की सीमा होगी। सांसारिक जीवन में ईश्वर के प्रेम से एक सेवक को लाभ होता है क्योंकि ईश्वर की समझ का कुछ स्तर प्रत्येक आस्तिक के हृदय में होता है क्योंकि कोई भी विश्वास वाला व्यक्ति किसी प्रेम से रहित नहीं होता है। हालांकि, जिसे "गहन प्रेम" (इश्क) कहा जाता है, वह हर व्यक्ति में मौजूद नहीं है, बल्कि यह [भारी] अधिकांश लोगों में मौजूद नहीं है। [दिव्य] प्रेम का यह शिखर दो तरीकों से प्राप्त किया जाता है:

पहला साधन - सांसारिक आसक्ति और उलझनों को तोड़ना: पहला साधन यह है कि एक सेवक अपने रिश्ते को सांसारिक आसक्ति और उलझनों से तोड़ता है और अपने दिल से भगवान के अलावा अन्य के प्यार को अपने दिल से निकाल लेता है। दिल एक कंटेनर की तरह है - इसमें सिरका डालने की कोई क्षमता नहीं है जब तक कि इसे भरने वाला पानी नहीं निकाला जाता है। यह उम्मीद नहीं की जानी चाहिए कि परमेश्वर का प्रेम [हृदय में] सांसारिक आसक्तियों के साथ सह-अस्तित्व में रह सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, परमेश्वर ने मनुष्य के सीने में दो हृदय नहीं बनाए हैं। प्रेम की पूर्णता यह है कि कोई व्यक्ति अपने हृदय की गहराइयों से परमेश्वर से प्रेम करता है। जब तक कोई ईश्वर के अलावा किसी अन्य की ओर प्रवृत्त नहीं रहेगा, तब तक हृदय का एक हिस्सा ईश्वर के अलावा किसी अन्य के साथ लिप्त रहेगा। जिस हद तक कोई ईश्वर के अलावा किसी अन्य के साथ लिप्त होता है, उस हद तक प्रेम की कमी होगी। हृदय को सभी बुराइयों से शुद्ध करना और उसे सभी प्रकार के प्रेमों से खाली करना ईश्वरीय आदेश दिया गया है।

प्रमाणन [ईश्वरीय एकता और एकता का] لا إله إلا الله (ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है) का अर्थ एक ही बात है कि ईश्वर के अलावा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है, और न ही ईश्वर के अलावा कोई प्रिय है क्योंकि जो प्रिय है वह देवता (या स्वामी) है क्योंकि सेवक (या दास) का अर्थ यह है कि उसे कैद किया जा रहा है

और प्रभु वह है जिसके कारावास में प्रेमी है। हर प्रेमी अपने प्रिय का कैदी होता है। इसलिए परमेश्वर ने कहा:

أَرَءَيْتَ مَنِ ٱتَّخَذَ إِلَٰهَهُۥ هَوَىٰهُ

"क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा है जिसने अपनी इच्छाओं से देवता बनाया है [निम्न स्व से और उनके पीछे भाग रहा है]?" (कुरान, अध्याय 25, श्लोक 43)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

أَبْغَضُ إِلَهٍ عُبِدَ فِي الْأَرْضِ الْهَوَى

"पृथ्वी पर पूजा जाने वाला सबसे बुरा भगवान निचले स्व से इच्छाएं हैं [क्योंकि यह पृथ्वी पर सभी बुराइयों का मूल कारण है, परेशानियों, कष्टों, संघर्ष और उथल-पुथल]"।

एक अन्य परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

مَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصًا دَخَلَ الْجَنَّةَ

"जो ईमानदारी से कहता है, 'ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है لا إله إلا الله', वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

ईमानदारी का अर्थ यह है कि एक सेवक केवल परमेश्वर के लिए अपना हृदय समर्पित करता है और परमेश्वर के अलावा किसी और के लिए हृदय में कोई स्थान नहीं बचता है, परमेश्वर [अकेला] आराधना के योग्य देवता बन जाता है, वह किसी के हृदय का प्रिय बन जाता है, और वह किसी के हृदय का उद्देश्य बन जाता है। जो उस अवस्था में है, उसके लिए संसार (सांसारिकता, सांसारिक आसक्ति और उलझन) किसी जेल से कम नहीं है क्योंकि यह एक और प्रिय की दृष्टि के बीच एक बाधा है। एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना कीजिए जिसके पास सिर्फ एक प्रिय है, और एक लंबे समय से अपने प्रिय से मिलने की तीव्र इच्छा रखता है, और उत्सुकता से प्रिय के दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा है, हालांकि, जेल की दीवारें और लोहे की ग्रिलें किसी के रास्ते में बाधाएं रही हैं। अचानक जेल से मुक्ति मिल जाती है। तब किसी की खुशी की तीव्रता क्या होगी? अपने प्रिय के साथ हमेशा और हमेशा के लिए रहने का विचार [स्वतंत्रता और मुक्ति की उस स्थिति में] इतना सुखदायक और ताज़ा होगा!

फिर भी, संसार के प्रेम की शक्ति (सांसारिकता और सांसारिक आसक्ति) परमेश्वर के प्रेम की कमजोरी का एक महत्वपूर्ण कारण है। दुनिया के प्यार में जीवनसाथी, बच्चों, रिश्तेदारों, जमीन, जानवरों, बगीचों, मनोरंजन आदि का प्यार शामिल है। ऐसा व्यक्ति दुनिया के प्यार में कैद हो जाता है और उसके आशीर्वाद की ओर झुका होता है और इसके कारण, व्यक्ति को ईश्वर के प्रेम में नुकसान होता है। दुनिया के लिए जितनी लालसा है, परमेश्वर की लालसा कम होगी। जिस हद तक किसी को दुनिया में हिस्सा मिलता है, उस हद तक परलोक में उसका हिस्सा कम हो जाता है, जैसे कोई पूर्व से उतना ही दूर हो जाता है जितना वह पश्चिम के करीब आता है। दुनिया और परलोक पूर्व और पश्चिम की तरह हैं। दिल के लोगों (आध्यात्मिकता) ने अपनी आंखों से यह देखा है कि दिल से सांसारिकता के प्रेम को खत्म करने के लिए, संयम (जुहद) [सांसारिकता से] का मार्ग अपनाना, धैर्य में दृढ़ता (*इस्तिकामा*) रखना और भय और आशा के साथ ईश्वरीय आज्ञाकारिता रखना अनिवार्य है। पिछले अध्यायों में, हमने पश्चाताप, धैर्य, संयम, भय [परमेश्वर से], और आशा [परमेश्वर में] के [आध्यात्मिक] स्थानों की व्याख्या की है। इन स्थानों को प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करना ईश्वरीय प्रेम प्राप्त करने के दो साधनों में से एक है और इसका अर्थ है ईश्वर के अलावा किसी भी चीज़ या किसी अन्य व्यक्ति के हृदय को खाली करना। यह (यानी, आंतरिक परिवर्तन) ईश्वर, न्याय के दिन, और स्वर्ग और नरक में विश्वास रखने के साथ शुरू होता है जो भय और आशा को जन्म देता है। उसके बाद, पश्चाताप [गलत कामों पर] और धैर्य [धार्मिकता के मार्ग पर चलने में आने वाली प्रतिकूलताओं और आध्यात्मिक प्रयासों पर] का जन्म होता है। धीरे-धीरे हृदय की स्थिति में परिवर्तन होता है ताकि धन, भौतिक संपत्ति और सांसारिक सुखों की ओर थोड़ी सी भी रुझान न रहे, बल्कि वह सभी बुराइयों और मैलापन से शुद्ध हो जाता है, दिव्य प्रेम के शुद्ध दीपक हृदय में प्रकाशित हो जाते हैं और उसमें दिव्य ज्ञान (*मारिफा*) और दिव्य प्रेम (*महब्बा*) की क्षमता पैदा करते हैं). पश्चाताप और धैर्य जैसे आध्यात्मिक स्टेशन हृदय की शुद्धि के प्रारंभिक सुविधा कारक हैं । यह शुद्धि दिव्य प्रेम के दो साधनों में से एक है।

दूसरा साधन - ईश्वरीय ज्ञान को मजबूत करना: दिव्य ज्ञान (मारिफा) को मजबूत करना [या मजबूत करना] और इसे हृदय में अच्छी तरह से फैलाना हृदय में ईश्वर के प्रेम को मजबूत करने का दूसरा साधन है। यह तब संभव हो जाता है जब हृदय सभी सांसारिक आसक्तियों और व्यस्तताओं से मुक्त हो जाता है। इसका दृष्टांत किसी भूमि में बीज बोने से पहले खरपतवार निकालना है। यह [दिव्य] प्रेम का दूसरा तत्व है। जब यह बीज [सभी अशुद्धियों और बुराइयों के हृदय को शुद्ध करने के बाद ईश्वर के मार्ग में आध्यात्मिक प्रयासों के रूप में दिव्य ज्ञान का] बोया जाता है और इसका ध्यान रखा जाता है [निरंतर पानी देने, उगने वाले खरपतवारों को हटाने और इसे मौसम के नुकसान से बचाने के संदर्भ में], तो प्रेम और दिव्य ज्ञान का पौधा धीरे-धीरे उसमें से निकलता है, और यह लगातार एक बड़े मजबूत [और मजबूती से जड़ें जमाए] पेड़ के रूप में बढ़ता है, और इसे पवित्रता का महान कथन (कलिमा *तैयबा*) [दिल में मजबूती से प्रवेश करना] कहा जाता है। कुरान ने इसे एक दृष्टांत के रूप में कहा है:

ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِى ٱلسَّمَآءِ

"भगवान पवित्रता के महान कथन का दृष्टांत बताते हैं कि यह एक महान पेड़ की तरह है जिसकी जड़ें दृढ़ और गहरी हैं और इसकी शाखाएं आकाश में ऊपर जा रही हैं। (कुरान, अध्याय 14, श्लोक 24)

इस महान कथन का कुरान में आगे उल्लेख किया गया है:

إِلَيْهِ يَصْعَدُ ٱلْكَلِمُ ٱلطَّيِّبُ وَٱلْعَمَلُ ٱلصَّٰلِحُ يَرْفَعُهُۥ

"अच्छे कथन उस तक पहुँचते हैं, और अच्छे धार्मिक कर्म उन्हें उसके पास [ईश्वरीय उपस्थिति में] ऊपर उठते हैं। (यहां हम धार्मिक कार्यों में प्रयास करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने का रहस्य और ज्ञान सीखते हैं क्योंकि वे ईश्वरीय उपस्थिति में चढ़ते हैं, अपने कर्ता के आध्यात्मिक रैंक और डिग्री को ऊपर उठाते हैं, दिव्य ज्ञान और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति और अनन्त खुशी और अनन्त सफलता में परिणत होते हैं)। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 10)

"पवित्रता का महान कथन" सूक्ति (*मारिफा*) का संदर्भ है और अच्छे धार्मिक कार्य इसके नाली और सेवकों की तरह हैं। अच्छे धर्मकर्मों के माध्यम से हृदय शुद्ध होते हैं और इस आंतरिक शुद्धता और शिथिलता के परिणामस्वरूप अनन्त जीवन की प्राप्ति होती है। अगर अच्छे धर्म के काम रुक जाएं तो हृदय की पवित्रता भी समाप्त हो जाएगी। अच्छे धर्मों का उद्देश्य [जिसमें ईश्वरीय मार्ग में आध्यात्मिक प्रयास शामिल हैं] यह ज्ञान है, और ज्ञान इन कर्मों की प्रकृति को जानना है। इसका अर्थ है कि ज्ञान सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण है [दिव्य ज्ञान की प्राप्ति में]। पहला ज्ञान बाहरी मामलों (बाहरी ज्ञान या "*इल्म मुआमला*") का ज्ञान है और इसका उद्देश्य कार्य और कर्म हैं। इस ज्ञान के माध्यम से, हृदय को सभी बुराइयों और अशुद्धियों से शुद्ध किया जाता है ताकि वह सत्य की रोशनी प्राप्त करने में सक्षम हो जाए और फिर दिव्य ज्ञान के ज्ञान से विकृत हो जाए। दिव्य ज्ञान के ज्ञान का एक और नाम "आध्यात्मिक रूप से अनावरण ज्ञान" ('*इल्म अल-मुकाशाफा*) है और यह दूसरा ज्ञान है [आध्यात्मिक रोशनी के लिए आवश्यक है जो किसी को दिव्य उपस्थिति में ले जाता है]।

जब कोई ईश्वरीय ज्ञान का ज्ञान प्राप्त करता है, तो उसे आवश्यक रूप से [दिव्य] प्रेम प्राप्त होता है [जिसमें ईश्वर एक से प्रेम करता है और वह ईश्वर से प्रेम करता है] । यह ठीक उसी तरह है जैसे मध्यम स्वभाव का व्यक्ति जो किसी सुंदर चीज को देखकर उसकी ओर झुकाव रखता है और उस भोग में आनंद पाता है। आनंद स्वाभाविक रूप से प्रेम के अधीन है और प्रेम ज्ञान के अधीन है। एक सेवक [ईश्वर का] इस ज्ञान तक केवल तभी पहुंच सकता है जब कोई सांसारिक व्यस्तताओं (उलझनों और आसक्ति) के साथ अपने संबंध को तोड़ देता है और रिश्ते का यह विच्छेद विचार की शिथिलता, ईश्वरीय स्मरण की शाश्वतता, और ईश्वर के अस्तित्व, गुणों, प्रभुत्व और उसकी सभी रचनाओं में निरंतर चिंतन के बिना संभव नहीं है [जो

ईश्वरीय कार्यों की अभिव्यक्तियाँ हैं]। जो लोग [आध्यात्मिक प्राप्ति और पूर्णता की] इस हद तक पहुँचते हैं, वे दो प्रकार के होते हैं: वे जो शक्तिशाली होते हैं जो पहले परमेश्वर की ज्ञान-दृष्टि को प्राप्त करते हैं और परमेश्वर के माध्यम से, वे बाकी सब कुछ पहचानते और जानते हैं; और जो कमजोर हैं जिनकी ज्ञानविकृति [अच्छे धार्मिक] कर्मों और कार्यों से शुरू होती है और उससे आगे बढ़ती है, वे हर चीज के कर्ता तक पहुंचते हैं।

अधिकांश लोगों के लिए [जो दूसरे प्रकार के हैं], यह विधि आसान है। कुरान ने अपनी कई आयतों में, लोगों को चिंतन, विचार-विमर्श, परीक्षा और व्युत्पत्ति के लिए आमंत्रित किया है [हर जगह फैले ईश्वर के संकेतों से सबक का] और [मानवता] को इस पद्धति [सत्य को प्राप्त करने की] के लिए निर्देशित किया है। यदि अब तुम कहते हो कि ये दोनों विधियाँ तुम्हें कठिन लगती हैं और तुम चाहते हो कि तुम्हें एक आसान विधि समझाई जाए, तो हम कहेंगे कि पहली विधि जिसमें परमेश्वर के माध्यम से सृष्टिओं की समझ प्राप्त होती है, वह वास्तव में सामान्य लोगों (आम आदमी) के लिए कठिन, सूक्ष्म और समझ से बाहर है। यह हमें केवल दूसरे तरीके के साथ छोड़ता है जो अधिकांश लोगों की बुद्धि से समझा जाता है। यदि लोग [यहां तक कि] इस [आसान] तरीके को कठिन मानते हैं, तो ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि यह वास्तव में कठिन है [थाह पाना], इसके बजाय, वास्तविक कारण यह है कि वे विचार और विचार-विमर्श भी नहीं करते हैं, और निचले स्व से सांसारिक वासनाओं और दैहिक सुखों में लिप्त रहते हैं। हम इस पद्धति पर विस्तृत चर्चा नहीं कर सकते क्योंकि यह एक व्यापक और अथाह विषय है और इसके कई प्रकार (उप-शाखाएं) हैं जिन्हें गिना नहीं जा सकता है क्योंकि स्वर्ग की ऊंचाई से लेकर पृथ्वी की गहराई तक, ऐसा कोई कण नहीं है जो ईश्वर की क्षमता की पूर्णता, बुद्धि की पूर्णता, महिमा के शिखर के बारे में बहस नहीं करता है, और महानता का शिखर; ये बेशुमार कण हैं और हर कण में उसके लिए अनगिनत प्रमाण हैं:

قُل لَّوْ كَانَ ٱلْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَٰتِ رَبِّى لَنَفِدَ ٱلْبَحْرُ قَبْلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَٰتُ رَبِّى وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِۦ مَدَدًا

"कहो [हे मुहम्मद! मानवता को सिखाने के माध्यम से], 'यदि मेरे प्रभु के वचनों को [लिखने] के लिए समुद्र स्याही बन जाए, तो मेरे प्रभु के वचन समाप्त होने से पहले ही समुद्र समाप्त हो जाएगा, भले ही हम इसे पूरक के रूप में लाएं। (भगवान गूढ़ आध्यात्मिक ज्ञान और अनुभव के अथाह महासागर की विशालता की ओर इशारा करते हुए। (कुरान, अध्याय 18, आयत 109)

इस [गूढ़ आध्यात्मिक] ज्ञान में लिप्त होना "*इल्म अल-मुकाशफा*" के सागर में गोता लगाने या आध्यात्मिक अनावरण के ज्ञान के समान है और इसे विदेशी ज्ञान (*'इल्म अल-मुआमला) के वर्गीकरण के तहत* महत्वहीन तरीके से लिखना भी उचित नहीं होगा। हालाँकि, इसे कुछ दृष्टांतों के साथ संक्षेप में समझाया जा सकता है।

ईश्वरीय कार्यों की समझ के माध्यम से सृष्टिकर्ता की ज्ञान: वास्तव में, उपर्युक्त विधियों में से, ईश्वरीय कार्यों की समझ के माध्यम से ईश्वर की ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करना आसान तरीका है। हमें ईश्वरीय कार्यों पर एक नज़र डालनी चाहिए, जिनमें वे भी शामिल हैं जो कई अन्य ईश्वरीय कार्यों की तुलना में छोटे हैं, लेकिन इसके बावजूद, वे ईश्वर की क्षमता (कुद्रह) के चमत्कारों से भरे हुए हैं। पृथ्वी और उस पर रहने वाली रचनाएँ स्वर्गदूतों और स्वर्गीय प्रभुत्वों की तुलना में बहुत छोटी और महत्वहीन हैं। बस पृथ्वी के द्रव्यमान और आकार को लें, जो स्पष्ट रूप से विशाल है, लेकिन सूर्य जो हमें छोटा लगता है, पृथ्वी से हजारों गुना बड़ा है। एक ओर सूर्य की विशालता को देखें और दूसरी ओर ब्रह्मांड की विशालता को देखें जिसका वह एक हिस्सा है। सूर्य की विशालता और ब्रह्मांड की विशालता के बीच कोई तुलना नहीं है। हम जो देख सकते हैं वह पहले स्वर्ग की सीमा है, और यह स्वर्ग इसके ऊपर के स्वर्ग की तुलना में काफी छोटा है। फिर ये सात स्वर्ग दिव्य आसन [प्रताप, शक्ति, प्रभुत्व, प्रभुत्व और संप्रभुता के] (कुर्सी) की तुलना *में* एक विशाल रेगिस्तान में रखे लोहे के टुकड़े की तरह हैं, और दिव्य सिंहासन (अर्श) की तुलना में दिव्य आसन दिव्य आसन की तुलना में सात स्वर्गों की तरह हैं। सूर्य, ब्रह्मांड, दिव्य आसन और दिव्य सिंहासन की विशालता को देखें और पृथ्वी के साथ उनकी तुलना करें कि यह पृथ्वी कितनी छोटी, महत्वहीन और नीच है! बल्कि पृथ्वी (पृथ्वी पर भूमि) पृथ्वी के महासागरों की तुलना में बहुत छोटी है।

यदि मनुष्य ईश्वरीय चमत्कारों पर विचार करता है, तो वे सूक्ति प्राप्त करेंगे जो उपरोक्त विधियों की तुलना में प्राप्त करना आसान है। जब ज्ञानवाद बढ़ता है, तो [दिव्य] प्रेम भी बढ़ता है। यदि आप ईश्वर से मिलना चाहते हैं और इसके लिए तरसना चाहते हैं और दिव्य दृष्टि की शाश्वत प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हैं तो सांसारिकता (सांसारिक आडंबर, चमक, आसक्ति और उलझन) की तलाश करने से बचें, अपने आप पर दिव्य स्मरण और चिंतन को अनिवार्य करें, यह संभव है कि निरंतर आध्यात्मिक प्रयासों के माध्यम से, आपको दिव्य ज्ञान और प्रेम में हिस्सा मिलेगा। याद रखें कि सांसारिक सुखों को छोड़ने से आपको वह प्रभुत्व मिलेगा जो आपकी कल्पना से कहीं अधिक विस्तृत और शाश्वत होगा।

ईश्वरीय प्रेम में लोगों के बीच मतभेद के कारण: सभी विश्वासी मूल प्रेम में सह-भागीदार हैं [जो उसकी सभी रचनाओं के लिए ईश्वर के अस्तित्व से निकलता है]। हालाँकि, प्यार की अलग-अलग डिग्री हैं और ये अंतर इसलिए हैं क्योंकि लोग अपनी समझ और ज्ञान और दुनिया के प्यार में अलग हैं। चीजों के बीच अंतर उन चीजों के पीछे [मूल] कारणों के कारण होता है। दिव्य प्रेम का कारण ज्ञान है। यदि ज्ञान कम या ज्यादा है, तो निश्चित रूप से प्रेम में वृद्धि या कमी होगी। अधिकांश लोग परमेश्वर के बारे में उससे अधिक नहीं जानते हैं जो उन्होंने परमेश्वर के नामों के संदर्भ में सुना और याद किया है (प्रत्येक नाम एक ईश्वरीय गुण का प्रतिनिधित्व करता है) और विशेषताएँ, और समझ की कमी के कारण, वे उनके ऐसे [गलत] अर्थों की कल्पना करते हैं कि परमेश्वर उनसे बहुत ऊपर है। कुछ लोगों को इन दिव्य नामों और विशेषताओं की वास्तविकताओं के बारे में अच्छी तरह से जानकारी नहीं होती है, लेकिन वे उनके गलत अर्थों की कल्पना भी नहीं करते हैं, इसके बजाय, वे सुनते हैं और विश्वास के मामले के रूप में स्वीकार करते हैं और

वाद-विवाद और तर्कों में शामिल हुए बिना कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं। ये लोग "दाहिने हाथ" के लोग हैं [जिन्होंने सुरक्षा और अंतिम उद्धार प्राप्त किया है]। जो लोग गलत अर्थों की कल्पना करते हैं वे गुमराह होने के रास्ते पर हैं, और जो लोग [ईश्वरीय नामों और गुणों की] वास्तविकताओं को जानते हैं, वे ईश्वर के अंतरंग हैं [और ईश्वरीय निकटता और ज्ञान में संपूर्ण मानवता में सबसे आगे हैं]।

चूंकि लोग उदाहरणों से मामलों को समझते हैं, इसलिए हम पहले यह समझाने के लिए एक उदाहरण देंगे कि लोग एक ही चीज़ के प्यार में कैसे भिन्न हैं। यदि कोई लेखक की पुस्तक के कारण एक लेखक के बारे में बहुत सोचता है और लेखन में लेखक की उत्कृष्टता और पूर्णता में विश्वास करता है, और उसी लेखक की एक और पुस्तक आती है जो पहली पुस्तक से भी बेहतर है, तो निश्चित रूप से, लेखक के लिए किसी का प्यार और भी अधिक बढ़ जाएगा और वह लेखक की उत्कृष्टता और पूर्णता के बारे में और भी अधिक आश्वस्त हो जाएगा। सभी ज्ञान और कौशल उसी अवस्था में हैं। जिसके पास ज्ञान होता है और उसमें वृद्धि होती है, उसका प्रेम आनुपातिक रूप से बढ़ता है। दूसरी ओर, एक दुष्ट व्यक्ति है (जो अच्छी चीजों की परवाह नहीं करता है और बुरी चीजों की ओर झुकाव रखता है) जो अगर इसे सुनता है, तो केवल वही सुनता है कि अमुक व्यक्ति एक लेखक है जिसने अच्छी किताबें लिखी हैं। ऐसा व्यक्ति नहीं जानता कि उन पुस्तकों में कौन सा ज्ञान छिपा हुआ है और किसी की समझ [लेखक की पुस्तकों के बारे में] केवल सतही है और किसी का प्रेम भी न्यूनतम है। आंतरिक अंतर्दृष्टि वाला व्यक्ति केवल सुनने से संतुष्ट नहीं होता है, इसके बजाय, वह लेखक की पुस्तकों के पन्नों को पढ़ता है, ज्ञान के चमकदार मोतियों की खोज करता है, अपने प्रयासों के माध्यम से, इन पुस्तकों में बिखरे हुए चमत्कारों से परिचित होना चाहता है, और जब कोई इन प्रयासों में सफल होता है तो उसका प्रेम कई गुना बढ़ जाता है क्योंकि एक रचना या लेखन निर्माता की उत्कृष्टता और पूर्णता के लिए तर्क देता है और रचयिता। अब एक और उदाहरण के प्रकाश में इस पर विचार करें। यह संसार परमेश्वर की सृष्टि और लेखक पुस्तक है। एक साधारण मनुष्य के पास यह ज्ञान और विश्वास होता है, लेकिन यह केवल सतही और सरसरी है, जबकि आंतरिक अंतर्दृष्टि वाला व्यक्ति इसके विवरण जानना चाहता है, उन पर इस हद तक विचार-विमर्श करता है कि वह बुद्धि को चकित करने वाली महत्वहीन चीजों में चमत्कारों की खोज करता है। यह विस्तृत अध्ययन [दिव्य] गुणों की दिव्य महिमा, भव्यता और पूर्णता को बढ़ाता है और इस संबंध में, हृदय में उसका प्रेम बढ़ता है। फिर जैसे-जैसे किसी का ज्ञान [परमेश्वर के बारे] बढ़ता है, उस हद तक उसकी ज्ञान-विज्ञान और प्रेम भी बढ़ता है।

दिव्य चमत्कारों का सागर तटों के बिना एक अथाह महासागर है। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस ज्ञान-विज्ञान के वाहक अपने प्रेम में भिन्न हैं [उसके प्रति]। [का स्तर] प्यार भी अलग-अलग लोगों में अलग-अलग होता है क्योंकि पांच कारण जो हमने पहले बताए हैं। दूसरे शब्दों में, कुछ लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं क्योंकि वह ही उन्हें पुरस्कृत करता है और उन पर अनुग्रह करता है। जाहिर है, यह प्रेम ईश्वर के अस्तित्व के साथ नहीं है और इसलिए यह कमजोर है, और कमजोरी का संकेत यह है कि एहसान में बदलाव के कारण [वे भगवान से प्राप्त करते हैं], उनके प्रेम का स्तर भी बदल जाता है। इसलिए, उनके

प्यार की स्थिति विपत्ति के समय आराम और आराम के समय से अलग होगी। जो ईश्वर के अस्तित्व से प्रेम करता है या उससे प्रेम करता है क्योंकि वह उसकी पूर्णता, सुंदरता, ईर्ष्या (घैराह) के कारण इसके योग्य है [उन लोगों से दिव्य रहस्यों की रक्षा करने के लिए जो अपनी कम आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं, आध्यात्मिक पथ में गलत कदमों के कारण उनके योग्य नहीं हैं, और ईश्वरीय उपस्थिति में उच्च आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ने के लिए सही इरादा और उच्च संकल्प नहीं है], और महिमा और ईश्वरीय एहसानों में भिन्नता के कारण इस प्रेम में कोई अंतर (भिन्नता) नहीं है। ये [अलग-अलग लोगों में] प्रेम [के स्तर] में अंतर के कारण हैं, और यह उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि [दिव्य] प्रेम के विभिन्न स्तरों के कारण परलोक की शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता भी अलग-अलग होगी।

परमात्मा के लिए लालसा

ईश्वर की लालसा का अर्थ: किसी को ईश्वर की लालसा से इनकार नहीं करना चाहिए क्योंकि लालसा आवश्यक है [विशेषता] जब प्रिय उद्देश्य है। इस विषय के अंतर्गत, हम यह समझाना चाहेंगे कि एक ज्ञानवादी के पास निश्चित रूप से परमेश्वर के लिए लालसा है, बल्कि, व्यक्ति परमेश्वर [प्रिय] के लिए लालसा रखने के लिए बाध्य है। हम इस दावे को दो तरीकों से साबित करेंगे: पहला, अनुभव और अवलोकन के आधार पर और दूसरा, परंपराओं के माध्यम से।

अनुभव और अवलोकन के माध्यम से पहली विधि: हमें इस बारे में ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है, बल्कि हमने प्यार के बारे में जो लिखा है वह इस संबंध में पर्याप्त होना चाहिए। अगर प्रिय आंखों से गायब हो गया है, तो प्रिय के दर्शन के लिए तरसना एक स्वाभाविक बात है। यदि प्रिय किसी के सामने मौजूद है या किसी ने प्रिय की उपस्थिति प्राप्त कर ली है, तो लालसा नहीं है क्योंकि लालसा [प्रिय] को खोजने का नाम है और जो चीज प्राप्त हो गई है वह नहीं मांगी जाती है। जिस चीज को नहीं देखा जा सकता है, उसके लिए तरसना नहीं जा सकता। इसलिए, यदि किसी व्यक्ति ने किसी व्यक्ति को नहीं देखा है या उसके बारे में नहीं सुना है तो यह कल्पना नहीं की जा सकती है कि वह ऐसे व्यक्ति के लिए तरसता रहेगा। धारणा की पूर्णता दृष्टि में है। यदि किसी का प्रिय निरंतर दृष्टि में है तो उसे प्रिय के लिए लालसा नहीं होगी। हम इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझाएंगे।

यदि किसी का प्रिय उस व्यक्ति से गायब हो जाता है जो लगातार इसके बारे में सोचता है, तो वह प्रिय के दर्शन के माध्यम से अपने विचार को पूरा करने के लिए तरसता है। लेकिन अगर अपने दिल से प्रिय का

विचार गायब हो जाए और कोई उसके बारे में भूल जाए तो लालसा भी नहीं होती। यह भी प्रशंसनीय नहीं है कि [प्रिय] को फिर से देखने के बाद कोई फिर से प्रिय के लिए तरसना शुरू कर देगा क्योंकि लालसा का अर्थ यह है कि वह दर्शन के माध्यम से अपने दिल में विचार को पूरा करने की कोशिश कर रहा है। कभी-कभी अपने प्रिय को अंधेरे में देखता है और उस समय यह तड़प जाता है कि वह प्रकाश में प्रिय को देखकर अपनी दृष्टि को पूरा कर ले। यह भी संभव है कि कोई प्रिय का चेहरा देखे लेकिन बाल या अन्य विशेषताओं को नहीं। उस स्थिति में भी, कोई अभी भी प्रिय की अधिक सुंदर विशेषताओं को देखने के लिए तरस सकता है जो पहले नहीं देखी गई थी।

परमेश्वर के मामले में, दोनों मामलों की कल्पना की जा सकती है, बल्कि, एक ज्ञानवादी आवश्यक रूप से दो कारणों से परमेश्वर के लिए तरसता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ज्ञान-विज्ञान के लोगों के सामने प्रकट होने वाले दिव्य मामले स्पष्ट और उज्ज्वल प्रतीत होते हैं लेकिन वास्तव में, वे बहुत सूक्ष्म और जटिल होते हैं और उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि उन्हें एक पतले घूंघट के पीछे से देखा गया था, जिससे कुछ मामलों को छुपा दिया गया था और दृष्टि की पूर्णता प्राप्त नहीं हुई थी। बल्कि दृष्टि को कल्पनाओं के साथ मिश्रित किया गया है, जिससे ज्ञानवादियों के दिल में मैलापन और मैलापन पैदा हो गया है। इसके अलावा, यदि सांसारिक जीवन [अपनी सभी समस्याओं और उलझनों के साथ] उस पर अपनी छाया डालता है, तो इस ज्ञानवाद का सारा आनंद गायब हो जाता है। स्पष्ट दृष्टि की पूर्णता दृष्टि (*मुशहाद)* और आध्यात्मिक रोशनी (*तजल्ली)* के बिजली के बोल्ट के संयोजन से होगी और यह परलोक से पहले संभव नहीं है। ज्ञानवादी का उद्देश्य दिव्य दृष्टि और आध्यात्मिक रोशनी की बिजली की चमक को प्राप्त करना है, इसलिए यह आवश्यक है कि हृदय में इसके लिए लालसा हो। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति को उस चीज़ (ज्ञान) के पूरा होने की लालसा होनी चाहिए जिसकी प्रमुख कारकों की समझ सांसारिक जीवन में किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त की गई थी।

यह [परमात्मा के लिए] लालसा के लिए पहली आवश्यक आवश्यकता थी। अब दूसरी आवश्यक आवश्यकता बनी हुई है जो कुछ अन्य चीजों को देखने के बाद कुछ चीजों के लिए लालसा रखना है जो भगवान के मामले में भी संभव है। दिव्य बातें असंख्य हैं, उनकी कोई सीमा नहीं है। सभी [दिव्य] मामले एक सेवक [ईश्वर, यानी, मनुष्य] के लिए प्रकट नहीं होते हैं, बल्कि कुछ मामलों को उजागर किया जाता है और कुछ (कई) उनकी जटिलता और सूक्ष्मता के कारण छिपे हुए [या छुपाने] के रूप में छोड़ दिए जाते हैं। एक ज्ञानवादी ऐसे मामलों के अस्तित्व के बारे में जानता है और स्वीकार करता है कि जो कुछ भी जानता है, उसकी तुलना में, ऐसे बहुत अधिक मामले हैं जिनके बारे में कोई नहीं जानता है। इसलिए, एक (ज्ञानवादी) को शेष मामलों को अपने ज्ञान के क्षेत्र में लाने की लालसा होती है। जहां तक पहली लालसा का सवाल है कि कोई व्यक्ति पूरी स्पष्टता और रोशनी के साथ ईश्वर की ज्ञान-शिक्षा प्राप्त करता है, परलोक में पूर्णता (पूर्ण पूर्ति) के साथ प्राप्त किया जाएगा। पहली लालसा के अर्थ में जिसे "दर्शन",

"मिलना" या "देखना" [ईश्वर] कहा जाता है, इस दुनिया (सांसारिक जीवन) में इस लालसा को पूरा करना संभव नहीं है।

लालसा के लिए दूसरी आवश्यक आवश्यकता यह है कि कोई व्यक्ति सभी ज्ञान प्राप्त कर ले [अपनी लालसा की वस्तु के बारे में], न तो इस जन्म में और न ही अगले जीवन में संभव है, क्योंकि इस लालसा की पूर्णता (पूर्ण पूर्ति) इस तरह से होनी चाहिए कि सेवक के पास दिव्य सुंदरता से संबंधित सभी मामलों का अनावरण हो, भव्यता, गुण, बुद्धि और कार्य जिनके बारे में परमेश्वर जानता है, लेकिन यह असंभव है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का ज्ञान अनंत है। एक सेवक को हमेशा पता होगा कि परमेश्वर की सुंदरता और महिमा से जुड़े कई ऐसे मामले हैं जो किसी के सामने नहीं आए हैं। इसलिए किसी की लालसा पूरी नहीं होगी, विशेष रूप से वह जो अपने वर्तमान [आध्यात्मिक] सुविधाजनक बिंदु से उच्च [आध्यात्मिक] डिग्री देखता है और अधिक [आध्यात्मिक] डिग्री के इच्छुक होगा।

परंपरा के माध्यम से दूसरी विधि: ईश्वर के लिए लालसा की पुष्टि की दूसरी विधि परंपरा के माध्यम से है। इसे लेकर कई परंपराएं मिलती हैं। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) अपनी प्रार्थनाओं में ईश्वर से प्रार्थना करते थे:

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَاءِ وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَلَذَّةَ النَّظَرِ إِلٰى
وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَالشَّوْقَ إِلٰى لِقَائِكَ

"हे परमेश्वर! मैं आपसे अपने निर्णय से संतोष मांगता हूं [आप मेरे रास्ते को जो भेजते हैं, चाहे वह आराम हो या कठिनाई], मृत्यु के बाद आराम का जीवन [आपके प्रेमपूर्ण आलिंगन में], आपके धन्य चेहरे को देखने का आनंद, और आपसे मिलने की लालसा"।

अबू दर्दा (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने काब अहबर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) (वे दोनों पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रतिष्ठित साथी थे) और काब अहबर टोरा के यहूदी विद्वान और भविष्यद्वाणी के साथी बनने से पहले एक रब्बी हुआ करते थे) से टोरा की एक आयत सुनाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि भगवान ने कहा है, "पवित्र लोगों को मुझसे मिलने की बहुत लालसा है और मुझे उनसे मिलने की बहुत लालसा है"। काब अहबर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने इसी विषय पर टोरा की एक और आयत सुनाई, "जो मेरा साधक है, वह मुझे ढूंढेगा और जो मेरे अलावा किसी और का साधक है, वह मेरे अलावा और को पाएगा"। अबू दर्दा (रश्मा उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "मैं गवाही देता हूं कि मैंने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की जुबान से उन्हीं विषयों को सुना है"। पैगंबर डेविड (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाऊद) की परंपराओं में बताया गया है कि ईश्वर ने उनसे कहा, "ऐ दाऊद! पृथ्वी के लोगों को मेरा संदेश दें कि मैं उस व्यक्ति का प्रिय हूं जो मुझसे प्रेम करता है, मैं उस व्यक्ति का

साथी हूं जो मेरा साथी है, मैं उस व्यक्ति का अंतरंग हूं जो मेरी याद के अंतरंग है, मैं उस व्यक्ति का मित्र हूं जो मेरा मित्र बन जाता है, मुझे वह व्यक्ति पसंद है जो मुझे पसंद करता है, और मैं उस व्यक्ति के अधीन हूँ जो मेरी आज्ञा का पालन करता है। मैं उस व्यक्ति के हृदय की स्थिति को अच्छी तरह से जानता हूँ जो मुझसे प्रेम करता है और मैं ऐसे व्यक्ति को अपने लिए स्वीकार करता हूँ और मैं ऐसे व्यक्ति से इतने प्रेम से प्रेम करता हूँ कि मेरी रचनाओं में से किसी को भी ऐसे व्यक्ति से अधिक पसंद नहीं किया जाता है। हे पृथ्वी के लोगों! सांसारिक अहंकार के पर्दे को फाड़ दो और मेरे चमत्कारों, साहचर्य, मेरे साथ रहना, और मेरे साथ घनिष्ठता की ओर अपना कदम बढ़ाओ, मैं तुम्हारे साथ घनिष्ठता रखूंगा और तुमसे प्यार करने में सबसे आगे रहूंगा। मैंने अपने मित्र इब्राहीम के स्वभाव और स्वभाव से अपने मित्रों के आंतरिक स्वभाव और स्वभाव को बनाया है, मूसा के बारे में, जिससे मैंने बात की थी, और मुहम्मद के रूप में जिसे मैंने शुद्ध किया था। मैंने उन लोगों के हृदयों को बनाया है जो मेरे प्रकाश से मेरे लिए तरसते हैं और उन्हें अपनी महिमा के साथ ऊपर उठाया है।

एक ज्ञानवादी ने कहा कि परमेश्वर ने अपने एक मित्र को प्रकट किया, "मेरे कुछ सेवक ऐसे हैं जो मुझसे प्रेम करते हैं और मैं उनसे प्रेम करता हूँ, वे मेरे लिए लालसा रखते हैं और मैं उनके लिए लालसा रखता हूँ, वे मुझे याद करते हैं और मैं उन्हें याद करता हूँ, और वे मुझे देखते हैं और मैं उन्हें देखता हूँ। यदि आप उनके रास्ते पर चलते हैं तो मैं आपसे प्यार करूंगा और यदि आप उनके रास्ते से भटक जाते हैं, तो मैं आपसे नाराज हो जाऊंगा। उसने पूछा, "हे भगवान! उनके संकेत क्या हैं?" परमेश्वर ने कहा, "वे दिन की छाया को एक दयालु चरवाहे की तरह देखते हैं जो अपनी बकरियों की देखभाल करता है (वे परमेश्वर के करीब आने के लिए दिन के सभी क्षणों की रक्षा करते हैं और उन्हें बेकार की प्रलाप या बेकार प्रयासों में बर्बाद नहीं होने देते हैं)। वे शाम को अपने घोंसले के लिए तरसते हुए पक्षी की तरह सूर्यास्त की लालसा करते हैं [ताकि वे पवित्र भक्ति के साथ अपनी रातें भगवान को समर्पित कर सकें]। जब रात अपनी बाहों को फैलाती है और अंधेरा छा जाता है, बिस्तर खुल जाते हैं, रहस्य प्रकट हो जाते हैं, और प्रेमी प्रिय की बाहों में पहुंच जाता है, तो वे मेरे लिए अपने कदम आगे बढ़ाते हैं, मेरे सामने अपने सिर झुकाते हैं, मेरी बातचीत (कलाम या दिव्य रूप से प्रकट की गई पुस्तक) के साथ मुझसे फुसफुसाते हैं, और मेरे पुरस्कारों [भौतिक और सारहीन दोनों] के माध्यम से उनसे मुझसे विनती करते हैं। उनमें से कुछ चीख-पुकार के साथ रोते हैं, कुछ चुपचाप रोते हैं, कुछ लोग [मुझसे अलग होने के दुःख में] जोर से हंगामा करते हैं, कुछ मेरे सामने खड़े होते हैं [मेरे लिए अपने दूरदर्शिता के कारण], कुछ बैठे हैं, कुछ खड़े हैं, कुछ झुकते हैं, और कुछ झुकते हैं। उनकी सभी शिकायतों, अनुरोधों और प्रयासों का मेरी आँखों में बहुत सम्मान है। मैं, सबसे पहले, उन्हें तीन चीजें दूँगा: सबसे पहले, मैं अपनी रोशनी उनके दिलों में डालूँगा ताकि वे मेरी खबर [दूसरों को] दें जब मैं उनका समाचार [दिव्य प्राणियों को] देता हूँ; दूसरा, यदि उनके और आकाश और पृथ्वी के बीच में कोई भी चीज़ उनके विरुद्ध [युद्ध में] आती है, तो मैं उन्हें उनके लिये नीच समझूंगा [और किसी भी चीज़ को किसी भी तरह, आकार या रूप में उन्हें हानि न पहुँचाने दूँगा]; तीसरा, मैं अपने पवित्र चेहरे को उनकी ओर मोडूंगा और आप जानते हैं कि मैं उन्हें क्या देना चाहता हूं जिनकी ओर मैं अपना चेहरा मोड़ता हूं!"

अपने सेवक के लिए परमेश्वर का प्रेम: संक्षेप में, अपने सेवक (यानी, एक मनुष्य) के लिए परमेश्वर का प्रेम यह है कि वह किसी को सांसारिक जाल और पापों से दूर करता है, सांसारिक अशुद्धियों (बुराइयों, गलतियों, कमियों और दोषों) से अपने आंतरिक अस्तित्व को शुद्ध करता है, और किसी के हृदय से पर्दा उठाता है ताकि वह उसके करीब न आ सके जब तक कि सेवक को यह महसूस न हो कि वह अपने हृदय से परमेश्वर को देख रहा है। और ईश्वर के लिए सेवक का प्रेम यह है कि व्यक्ति उस [आंतरिक आध्यात्मिक] पूर्णता को प्राप्त करने की ओर प्रवृत्त होता है जिससे वह वंचित है। जाहिर है कि जिस चीज से वंचित रहता है, उसकी प्राप्ति की लालसा होती है और उसे प्राप्त करने के बाद उसे सुख मिलता है। अब अगर आप कहते हैं कि एक सेवक के लिए भगवान का प्यार एक संदिग्ध मामला है और एक नौकर कैसे जानता है कि वह भगवान का प्रिय है तो इसका जवाब यह है कि प्यार के कुछ संकेत हैं जो इसके पक्ष में बहस करते हैं। इसलिए पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

إذا أحب الله عبدا ابتلاه فإذا أحبه الحب البالغ اقتناه

"जब परमेश्वर एक सेवक से प्रेम करता है, तो वह उसे (कठिनाइयाँ) देता है और जब वह किसी से बहुत प्रेम करता है, तो वह उसे अपने लिए विशेष बनाता है।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आगे कहा:

إذا أحب الله عبدا جعل له واعظا من نفسه وزاجرا من قلبه يأمره وينهاه

"जब परमेश्वर एक सेवक से प्रेम करता है, तो वह स्वयं में एक उपदेशक (सलाहकार) नियुक्त करता है और किसी के हृदय में एक अवरोधक बनाता है [जो किसी को गलत कामों से रोकता है]। वे एक को आज्ञा देते हैं और एक को [सभी गलतियों और बुराइयों से] रोकते हैं। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *मुसनद अल-फिरदौस* अनस बिन मलिक के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

إذا أراد الله بعبد خيرا بصره بعيوب نفسه

"जब भगवान एक नौकर के लिए अच्छी [चीजें] का इरादा करते हैं, तो वह अपने स्वयं के निचले स्व में दोषों में से एक को सूचित करता है [उन्हें दूर करने में व्यस्त रखने के लिए ताकि कोई आंतरिक शोधन और आत्मा की शुद्धि के साथ आध्यात्मिकता के उच्च स्तर तक चढ़ सके]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *मुसनद अल-फिरदौस* अनस बिन मलिक के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

सभी संकेतों में से सबसे महत्वपूर्ण और विशेष संकेत यह है कि सेवक परमेश्वर से प्रेम करता है, और इसी चिन्ह से यह समझा जा सकता है कि परमेश्वर के पास अपने सेवक के लिए किस स्तर का प्रेम है। और जो कार्य यह साबित करता है कि एक सेवक का प्रिय ईश्वर है, वह यह है कि केवल ईश्वर ही सेवक के सभी बाहरी और आंतरिक, छिपे हुए और खुले मामलों की देखभाल करने वाला है, वह वह है जो [सेवक] को सलाह देता है, वह वह है जो [सेवक के मन में किसी के जीवन को सर्वोत्तम संभव तरीके से संचालित करने का मार्ग प्रशस्त करता है], वह वह है जो व्यक्ति को सुंदर चरित्र और स्वभाव के आभूषणों से सजाता है, वह वह है जो किसी के अंगों को पवित्र कार्यों में व्यस्त करता है, वह वह है जो अपने आंतरिक और बाहरी प्राणियों को सही मार्ग पर रखता है, वह वह है जो किसी के सभी विचारों को एक केंद्रीय बिंदु पर केंद्रित करता है, वह वह है जो किसी को सांसारिकता से विमुख करता है, वह वह है जो किसी को उसके अलावा किसी और को अस्वीकार करता है, वह वह है जो किसी को अपना अभ्यस्त बनाने के लिए एकांत में उससे विनती करने का आनंद देता है, और वह वह है जो एक और उसके ज्ञान के बीच के पर्दे को उठाता है। ये और इसी तरह के अन्य संकेत, परमेश्वर के लिए एक सेवक के प्रेम के लिए तर्क देते हैं।

परमेश्वर के निर्णयों, इसकी वास्तविकता और उत्कृष्टता से सहमत होना: परमेश्वर के निर्णयों (रिदा) से सहमत होना [दिव्य] प्रेम के फल का एक फल (परिणाम) है, लेकिन अधिकांश लोग इसकी वास्तविकता को उनके सामने प्रकट नहीं करते हैं। इसके अर्थ में जो संदेह और अस्पष्टता मौजूद है, केवल वे लोग ही इसके बारे में जानते हैं जिन्हें ईश्वर द्वारा व्याख्या (तवील) और ईश्वर (दीन) के मार्ग की समझ *का ज्ञान दिया गया है*। कुछ लोग भगवान (रिदा) से सहमत होने से इनकार करते हैं क्योंकि वे यह नहीं समझते हैं कि कोई ऐसे मामले पर कैसे सहमत हो सकता है जो किसी की इच्छा के विरुद्ध है। वे यह भी कहते हैं कि यदि हर आज्ञा, हर निर्णय और सब कुछ से सहमत होना आवश्यक है क्योंकि यह परमेश्वर का कार्य है तो एक सेवक [परमेश्वर के] के लिए पापों और अविश्वास (परमेश्वर की अस्वीकृति) से सहमत होना भी आवश्यक है। कुछ सरल दिमाग वाले लोग परमेश्वर के निर्णयों से सहमत होने को अस्वीकार करने वालों की इस कहावत से धोखा खा गए और सोचने लगे कि पापों और बुराइयों से सहमत होना, और अविश्वास और पाप को अस्वीकार करना और आपत्ति न करना, ईश्वरीय आदेश को स्वीकार करने और परमेश्वर के निर्णयों से सहमत होने का [आध्यात्मिक] स्टेशन है। ये [मामले] दिव्य रहस्य हैं। यदि ईश्वर के मार्ग के रहस्य केवल [दिव्य] आज्ञाओं के अध्ययन से प्रकट हो जाते हैं जो बाहरी मानवीय कार्यों से संबंधित हैं या [कुरान] का पाठ करके स्पष्ट हो जाते हैं, तो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अब्दुल्ला बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) के लिए निम्नलिखित प्रार्थना नहीं की होगी:

اَللّٰهُمَّ فَقِّهْهُ فِى الدِّيْنِ وَعَلِّمْهُ التَّاوِيْلَ

"हे परमेश्वर! उसे अपने मार्ग की समझ और व्याख्या (तवील) का ज्ञान प्रदान *करें*!" (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम* और *मुसनद अहमद*)

जो लोग कहते हैं कि केवल उन मामलों पर धैर्य संभव है जो इच्छाओं के विरुद्ध हैं या कठिनाइयाँ हैं, और परमेश्वर के निर्णय से सहमत होना [अप्रिय मामलों और कठिनाइयों में] संभव नहीं है, वे वास्तव में [ईश्वरीय] प्रेम को नकार रहे हैं। जब परमेश्वर का प्रेम [पूर्वोक्त में] सिद्ध हो चुका है और यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि एक मनुष्य अपने पूरे साहस के साथ परमेश्वर के प्रेम में डूबा जा सकता है, तो यह भी छिपा नहीं रहता है कि एक प्रेमी को [आंतरिक मजबूरी या प्रेरक शक्ति से] प्रिय के हर कार्य और वचन से सहमत होने के लिए मजबूर किया जाता है। यह सहमति दो तरह से होती है: पहला यह कि किसी को इस हद तक कोई दुख या दर्द महसूस नहीं होता है कि अगर किसी को चोट या पीड़ा होती है, तो भी उसे थोड़ा सा भी दर्द महसूस नहीं होता है। इसका दृष्टांत एक ऐसे व्यक्ति का है जिसका हृदय किसी मामले में पूरी तरह से लिप्त है और उसके परिणामस्वरूप, कुछ और नहीं देखता है। एक प्रेमी की भी यही स्थिति होती है जो पूरी तरह से प्रिय के प्यार या दर्शन में लिप्त होता है, जो इस प्यार में डूबने के कारण यातनापूर्ण घटनाओं को सहन करता है। तब प्रेमी को किसी भी दर्द का एहसास नहीं होता है जब उसका कर्ता प्रिय के अलावा कोई और या कुछ भी हो। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि अगर प्रिय प्रेमी के अस्तित्व को कोई पीड़ा देता है, तो कोई इसे कैसे महसूस कर सकता है? प्रेम में हृदय का भोग एक महत्वपूर्ण भोग है। जब सामान्य प्रेम में किसी को थोड़ा सा दर्द महसूस नहीं होता है, तो प्रेम की बड़ी मात्रा में कोई बड़ा दर्द कैसे महसूस कर सकता है? जिस तरह दर्द की तीव्रता होना संभव है, उसी तरह प्रेम की तीव्रता भी संभव है, और जिस तरह पांच इंद्रियों द्वारा महसूस की जाने वाली सुंदरता मजबूत होती है, उसी तरह प्रेम भी मजबूत होता है जो आंतरिक अंतर्दृष्टि के माध्यम से आंतरिक सुंदरता को देखने से होता है। दिव्य सौंदर्य और महिमा के बीच किसी अन्य सुंदरता और महिमा के साथ कोई तुलना नहीं है। जिस पर दिव्य सौंदर्य और महिमा का एक छोटा सा हिस्सा प्रकट होता है, वह इंद्रियों और चेतना को खो देता है, और इससे इतना नशे में हो जाता है कि वह अपनी सभी स्थितियों [दर्द और कष्टों सहित] से बेखबर हो जाता है।

प्रिय के कार्यों से सहमत होने का दूसरा तरीका यह है कि कोई दर्द और कठिनाइयों को समझता है, लेकिन वह उनसे सहमत होता है [उनके बारे में शिकायत न करने के संदर्भ में], बल्कि उनके लिए इच्छा और इरादा होता है। यह उस व्यक्ति की स्थिति के समान है जो [व्यवसाय] लाभ प्राप्त करने के लिए यात्रा की कठिनाइयों को सहन करता है और कठिनाइयों की परवाह नहीं करता है, क्योंकि अपेक्षित लाभ बहुत प्यारा होता है। ईश्वर के सेवकों की स्थिति ऐसी होती है कि जब वे ईश्वर की किसी भी आपदा से पीड़ित होते हैं, तो उन्हें यह निश्चितता होती है कि उन्हें जो ईश्वर का प्रतिफल मिलेगा, वह उनके लिए संग्रहीत किया गया है, इसलिए वे इस निश्चितता के कारण [ईश्वर द्वारा नियुक्त] आपदा से सहमत होते हैं और इसके प्रति झुकाव रखते हैं, बल्कि वे इसे प्यार करते हैं और इसके लिए भगवान के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। यह तब होता है जब कोई आपदा के बदले में ईश्वरीय प्रतिफल को ध्यान में रखता है। यदि कोई ईश्वरीय प्रतिफल को ध्यान में नहीं रखता है, बल्कि प्रेम इस हद तक प्रभावी है कि प्रिय की स्वीकृति प्राप्त करना ही उसका एकमात्र उद्देश्य है, केवल वह ही वांछित और प्रिय बना रहता है, और उसे [दिव्य] प्रतिफल की कोई इच्छा नहीं होती है, बल्कि वह इसके बारे में सोचता भी नहीं है, तो प्रिय की स्वीकृति प्राप्त करना उसका एकमात्र उद्देश्य और उद्देश्य बन जाता है।

हरेम इब्ने हिब्बन (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "जब कोई आस्तिक अपने प्रभु को जानता है और पहचानता है, तो वह उससे प्रेम करता है और जब कोई उससे प्रेम करता है, तो वह उसकी ओर केंद्रित होता है, और जब कोई उसके प्रति ध्यान केंद्रित करने में प्रसन्न होता है, तो वह न तो दुनिया को वासना की दृष्टि से देखता है और न ही परलोक को आलस्य की दृष्टि से देखता है। ऐसा व्यक्ति अपने शरीर के साथ दुनिया में रहता है और उसकी आत्मा परलोक में होती है [दिव्य और आध्यात्मिक क्षेत्र में]। अली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने बताया कि उन्होंने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से उनके जीवन के तरीके के बारे में पूछा और उन्होंने जवाब दिया:

اَلْمَعْرِفَةُ رَأْسُ مَالِيْ، وَالْعَقْلُ اَصْلُ دِيْنِيْ وَالْحُبُّ اَسَاسِيْ، وَالشَّوْقُ مَرْكَبِيْ، وَذِكْرُ
اللّٰهِ اَنِيْسِيْ، وَالثِّقَةُ كَنْزِيْ، وَالْحُزْنُ رَفِيْقِيْ، وَالْعِلْمُ سَلَاحِيْ، وَالصَّبْرُ
رِدَائِيْ، وَالرِّضَا غَنِيْمَتِيْ، وَالْعِجْزُ فَخْرِيْ، وَالزُّهْدُ حِرْفَتِيْ، وَالْيَقِيْنُ
قُوَّتِيْ، وَالصِّدْقُ شَفِيْعِيْ، وَالطَّاعَةُ حُبِّيْ، وَالْجِهَادُ خُلُقِيْ، وَقُرَّةُ عَيْنِيْ فِى
الصَّلَاةِ

"[दिव्य] ज्ञान मेरी पूंजी (संपत्ति) है, बुद्धि मेरे विश्वास का आधार है, [दिव्य] प्रेम मेरी नींव है, लालसा [भगवान के लिए] मेरी सवारी का पर्वत है (वाहन जो मुझे मेरी आध्यात्मिक खोज में ले जाता है), भगवान की याद मेरा अंतरंग मित्र है, दृढ़ पैर [दिव्य मार्ग में] मेरा खजाना है, दुख मेरा साथी है, ज्ञान मेरा हथियार है [अज्ञान और बुराई के अंधकार के खिलाफ], धैर्य मेरी शाल है, विनम्रता मेरा अभिमान है, संयम [सांसारिकता से] मेरा व्यवसाय है, निश्चितता [ईश्वर में और शाश्वत दिव्य सत्यों में] मेरी शक्ति है, सच्चाई मेरी मध्यस्थ है, [ईश्वरीय] आज्ञाकारिता मेरा प्रेम है, ईश्वरीय मार्ग में प्रयास करना मेरा आंतरिक चरित्र और स्वभाव है, और मेरी आंखों की शीतलता [ईश्वर से] प्रार्थना में है।

धुन नून अल-मिसरी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "जिस प्राणी ने आत्माओं की सेनाओं का निर्माण किया, ज्ञानवादियों की आत्माओं को राजसी और दिव्य बनाया, इसलिए, उनके पास ईश्वर के लिए लालसा है, विश्वासियों की आत्माओं को आध्यात्मिक बनाया है, इसलिए, वे स्वर्ग की ओर झुके हुए हैं, और लापरवाह (जीवन के वास्तविक उद्देश्य और शाश्वत सुख और अनन्त विजय की खोज से बेपरवाह होकर) की आत्माओं को शारीरिक बना दिया, इसलिए उनका झुकाव उस संसार (सांसारिकता) की ओर है [जो उन्हें उसमें डुबो देता है और डुबो देता है जो उन्हें पूरी तरह से भस्म कर देता है]"। यह भी कहा जाता है कि [ईश्वर के लिए] लालसा ईश्वर की एक [पवित्र] आग है जिसे वह अपने अंतरंग मित्रों (ज्ञानवादी, ईश्वर के सच्चे ईमानदार साधक) के दिलों में जलता है जो दिलों में मौजूद [उसके अलावा अन्य] के इरादों, विचारों, फंसने और जरूरतों को जला देता है, और उनके दिलों में उनका कोई अस्तित्व (निशान) नहीं बचा है। यह ईश्वर के प्रेम, लगाव, लालसा और स्वीकृति पर पर्याप्त विवरण है और हम इस पर समझौता करेंगे। और केवल परमेश्वर ही सभी भलाई और धार्मिकता का प्रवर्तक है।

अध्याय 17- **किसी भी स्वार्थ के उद्देश्य से रहित शुद्ध इरादों, सभी मामलों में ईमानदारी और सत्य के प्रति समर्पण पैदा करना**

गुप्त उद्देश्यों से रहित शुद्ध इरादे, केवल परमेश्वर की प्रसन्नता की तलाश करना, परमेश्वर की स्वीकृति सुनिश्चित करने और चीजों को सही ढंग से करने में मदद करने में एक शक्तिशाली कारक है और सभी के लिए अत्यधिक लाभ और आशीर्वाद का स्रोत है। सांसारिक लाभ के गुप्त स्वार्थ के साथ की गई चीज़ें, शायद ही कभी फल और लाभ देती हैं। यह एक दिव्य रहस्य है जिसे ग़ज़ाली द्वारा आगामी प्रदर्शनी में सबसे अच्छी तरह से समझाया जाएगा। इसी तरह, ईमानदारी या केवल ईश्वर की प्रसन्नता की तलाश में काम करना, जिसमें किसी भी सांसारिक लाभ का कोई गुप्त उद्देश्य नहीं है - चाहे वह भौतिक हो या असारहीन - व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग में ऊपर चढ़ने के लिए प्रेरित करता है। शुद्ध इरादे और ईमानदारी कर्मों की ईश्वरीय स्वीकृति, आशीर्वाद और परिणाम में प्रचुर वृद्धि लाती है, ताकि छोटी-छोटी उपलब्धियां भी निरंतर दीर्घकालिक आधार पर अत्यधिक लाभ और अच्छे का स्रोत बन सकें। दोनों (शुद्ध इरादे और ईमानदारी) जबरदस्त आध्यात्मिक गुण हैं जो आध्यात्मिक मार्ग के स्टेशन हैं जो दिव्य ज्ञान (*मारिफा*) और परिणामस्वरूप अनन्त खुशी और अंतहीन सफलता की ओर ले जाते हैं। आध्यात्मिक पथ पर उनके गहन प्रभाव के अलावा, वे गुण किसी के जीवन में जबरदस्त सकारात्मक ऊर्जा पैदा करते हैं और उन्हें उजागर करते हैं।

सभी मामलों में सत्य के प्रति समर्पण (सिडक), चाहे वह लौकिक हो या शाश्वत, इसकी खोज करना और उसके द्वारा जीना, आध्यात्मिक यात्रियों का एक अनिवार्य गुण है, जिसका सांसारिक अस्तित्व और साथी मनुष्यों के साथ व्यवहार पर बहुत प्रभाव पड़ता है। ग़ज़ाली का इन उदात्त आंतरिक लक्षणों का गहन विश्लेषण, उनकी *महान कृति "इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" [23] के चौथे खंड के सातवें अध्याय या पुस्तक से संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है:

बता दें कि क़ुरआन की आस्था और रोशनी की आंतरिक अंतर्दृष्टि के माध्यम से, दिल के लोगों के सामने यह प्रकट हो गया है कि ज्ञान और कार्यों के बिना, [ज्ञान के अनुसार], शाश्वत सुख और अनन्त सफलता (सादा) की प्राप्ति असंभव है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ज्ञान के लोगों को छोड़कर सभी लोग अपूरणीय क्षति के कगार पर हैं, और सभी ज्ञानी लोग [ज्ञान के अनुसार] कार्यों के लोगों को छोड़कर अपूरणीय क्षति के कगार पर हैं, और ईमानदारी के लोगों को छोड़कर सभी कर्म करने वाले लोग अपूरणीय क्षति के कगार पर हैं [जो बिना किसी स्वार्थ के कार्य करते हैं, स्वार्थी और नापाक गुप्त उद्देश्य, विशुद्ध रूप से दिव्य चेहरे की तलाश में], और ईमानदारी के सभी लोग बड़े खतरे में हैं [निम्न स्व और शैतान के उदात्त आध्यात्मिक पथ में फंसने के कारण]। इरादे के बिना कार्रवाई [केवल] कठिनाई है, और ईमानदारी के बिना इरादा दिखावा, पाखंड और पाप है, और [सत्य की] सत्यापन और जांच के बिना ईमानदारी दृष्टि का धोखा है। इसलिए, ईश्वर ने कुरान में ईश्वर के अलावा किसी अन्य के इरादे से जुड़े कार्य के लिए निम्नलिखित कहा है:

وَقَدِمْنَآ إِلَىٰ مَا عَمِلُواْ مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَـٰهُ هَبَآءً مَّنثُورًا

"हम उन कामों की ओर मुड़ेंगे जो उन्होंने [सांसारिक जीवन में] किए हैं, और उन्हें ऐसे बेकार कर देंगे जैसे कि वे बिखरी हुई धूल हों। (कुरान, अध्याय 25, श्लोक 23)

हम नहीं जानते कि कोई उस इरादे को कैसे ठीक कर सकता है जो इरादे की वास्तविकता से परिचित नहीं है, और कोई ईमानदार कैसे हो सकता है जिसने इरादे को सही किया है लेकिन ईमानदारी की कोई समझ नहीं है, और कोई अपने निचले स्व से सच्चाई की मांग कैसे कर सकता है जो सच्चाई का अर्थ नहीं जानता है। प्रत्येक सेवक [ईश्वर का, अर्थात्, मनुष्य] जो ईश्वर की आज्ञा का पालन और आराधना करना चाहता है, उसकी यह पहली जिम्मेदारी है कि वह [सही] इरादे का ज्ञान प्राप्त करे, फिर सच्चाई और ईमानदारी की गहरी समझ प्राप्त करे जो उद्धार और सुरक्षा का कारण है, और बाद में [ईमानदार] कार्य के माध्यम से इरादे को सही करे। हम इन तीन मामलों पर तीन अलग-अलग खंडों में चर्चा करेंगे।

इरादे की उत्कृष्टता और वास्तविकता

इरादे की उत्कृष्टता: भगवान कहते हैं:

وَلَا تَطْرُدِ ٱلَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِٱلْغَدَوٰةِ وَٱلْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُۥ

"उन लोगों को [अपनी कंपनी से] दूर मत करो जो सुबह और शाम अपने प्रभु को उनके चेहरे (ईश्वरीय निकटता, अंतरंगता और स्वीकृति) की तलाश और इच्छा करते हैं। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 52)

इस आयत में, खोज करना और इच्छा करना उनके [महान और दृढ़] इरादे को संदर्भित करता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَلِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ

उन्होंने कहा, 'कार्रवाई इरादों पर निर्भर करती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने [सच्चे आंतरिक] इरादे के अनुसार ईश्वरीय प्रतिफल मिलेगा [कार्रवाई के दृश्य रूप और इसकी कथित अच्छाई और बड़प्पन के बावजूद]। जो ईश्वर और उसके पैगंबर (मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो)] के लिए प्रवास करता है, तो उसका प्रवास ईश्वर और उसके पैगंबर के लिए होता है, और जो दुनिया (सांसारिक लाभ, लाभ, अनुचित उद्देश्यों) या किसी महिला से शादी करने के लिए प्रवास करता है, तो उसका प्रवास [वास्तव में] उस चीज के लिए होता है जिसकी ओर वह प्रवास करता है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस उमर के अधिकार पर* सहीह बुखारी *और* सहीह मुस्लिम *को इकट्ठा करता* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

क़ुरआन में ईश्वर ने कहा है:

إِن يُرِيدَآ إِصۡلَٰحٗا يُوَفِّقِ ٱللَّهُ بَيۡنَهُمَآۗ

"यदि दो लोग [एक पति की ओर से और एक पत्नी की ओर से, जो अपने विवादों और मतभेदों के बाद एक पति और पत्नी को सुलह करने की कोशिश कर रहे हैं, जो संभावित रूप से उनकी शादी को तोड़ने का कारण बन सकते हैं] सुधार की इच्छा रखते हैं [विवाहित जोड़े की स्थिति और उनके बीच शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण सुलह] अत्यंत ईमानदारी के साथ], तब भगवान [उन दो लोगों के नेक और पवित्र इरादों के आशीर्वाद से जो सुलह करने की कोशिश कर रहे हैं] उन्हें (पति और पत्नी) [उनकी शादी को बचाकर और उन्हें शांति, सद्भाव, आपसी प्रेम और सम्मान में फिर से एक साथ लाकर]"। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 35)

इस श्लोक में, [पवित्रता और बड़प्पन] इरादे को सफलता का कारण कहा गया है [ईश्वरीय कृपा द्वारा मेल-मिलाप प्राप्त करने में]। एक परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

إِنَّ اللَّهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صُوَرِكُمْ وَأَمْوَالِكُمْ وَإِنَّمَا يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ

"भगवान आपके चेहरे और धन को नहीं देखता है, बल्कि वह आपके दिलों और आपके कार्यों को देखता है [दिलों की स्थिति से शासित]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

परमेश्वर हृदय को देखता है क्योंकि यह इरादे का स्थान है। अब्दुल्लाह बिन उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) द्वारा वर्णित एक परंपरा में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "जिसका इरादा केवल दुनिया की तलाश करना है, ईश्वर अपनी दो आंखों के बीच गरीबी रखता है और ऐसा व्यक्ति दुनिया की ओर अधिक झुकाव होने के बाद दुनिया से अलग हो जाता है। जिसका उद्देश्य परलोक है, ईश्वर व्यक्ति के हृदय में समृद्धि पैदा करता है और उसके लिए उसका धन एकत्र करता है और ऐसा व्यक्ति संसार को छोड़ देता है। (द्वारा सुनाई गई *ज़ैद बिन असलम के अधिकार पर* हदीस संग्रह इब्ने माजाह [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

इरादे की वास्तविकता: यह ज्ञात होना चाहिए कि इरादा हृदय की ऐसी स्थिति है जो दो मामलों से घिरी होती है - ज्ञान और क्रिया। ज्ञान पहले आता है क्योंकि यह इस स्थिति का आधार है और कर्म उसके बाद आता है क्योंकि यह ज्ञान का फल (परिणाम) है। इसका कारण हर क्रिया है - स्वैच्छिक गति या शांति - तीन मामलों से पूरा होता है: ज्ञान, इरादा और क्षमता। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य न तो किसी ऐसी चीज के लिए इरादा कर सकता है जिसके बारे में वह जानता भी नहीं है, और न ही कोई ऐसा कार्य कर सकता है जिसके लिए उसका कोई इरादा नहीं है। इस प्रकार, इससे यह ज्ञात होता है कि इरादा आवश्यक है। इरादे का अर्थ है किसी ऐसे मामले के लिए हृदय में एक आंदोलन करना जो किसी की स्थिति या भौतिक संपत्ति के लिए उपयुक्त है। मनुष्य को इस तरह से बनाया गया है कि कुछ मामले उपयुक्त हैं, और कुछ [मानव स्वभाव और कल्याण के लिए] अनुपयुक्त हैं। इसलिए, उन मामलों की प्राप्ति की ओर झुकाव होना आवश्यक है जो उपयुक्त हैं और उन मामलों से छुटकारा पाने के लिए जो [मानव कल्याण के लिए] विरोध में हैं या अनुपयुक्त हैं। उपयुक्त और अनुपयुक्त के बीच अंतर करने के लिए, चीजों [और मामलों] की समझ होने की आवश्यकता है। इसलिए, कोई भी उस भोजन का सेवन नहीं कर सकता जिसे वह नहीं देखता है। इसीलिए, भगवान ने उन्हें प्राप्त करने के लिए समझ और मार्गदर्शन और साधन बनाए हैं जिन्हें बाहरी और आंतरिक इंद्रियां कहा जाता है।

हालांकि यह पर्याप्त नहीं है कि कोई केवल भोजन के बारे में जानता है और इसकी उपयुक्तता के बारे में जानता है या इसे आंखों से देखता है, बल्कि, भोजन के प्रति इच्छा, निचले स्व का झुकाव और उसके लिए वासना भी होना चाहिए। इसलिए, एक बीमार व्यक्ति भोजन को देखता है और जानता है कि यह एक के लिए उपयुक्त है, लेकिन इसके बावजूद, इसे नहीं खाता है क्योंकि [भीतर से] प्रेरक शक्ति की शक्ति नहीं है और हृदय में इच्छा की कमी है [बीमारी के कारण]। तब यह इच्छा और प्रेरक शक्ति [या वासना] भी

पर्याप्त नहीं है, इसके बजाय, कभी-कभी, कोई भोजन देखता है और इसे खाना चाहता है लेकिन कुछ विकलांगता [या अक्षमता या अक्षमता] के कारण ऐसा नहीं कर पाता है। इसलिए, भोजन की खपत की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए क्षमता और सक्रिय अंगों को [दिव्य रूप से] बनाया गया है। क्षमता के कारण अंग हिलना शुरू कर देते हैं, और क्षमता आंतरिक प्रेरक शक्ति की प्रतीक्षा करती है जो ज्ञान और समझ या राय और विश्वास के अधीन है। दूसरे शब्दों में, जब यह ज्ञात हो जाता है कि एक निश्चित मामला एक के लिए उपयुक्त है और इसे करना आवश्यक है और इसके खिलाफ कोई विरोधी शक्ति मौजूद नहीं है, तो इरादा पैदा होता है, और झुकाव प्रकट होता है। जब इरादा होता है, तो क्षमता अंगों को ऐसे हिलाती है जैसे कि क्षमता इरादे की सेवक है और इरादा विश्वास और समझ के आदेश के अधीन है। तब इस विवरण से यह सिद्ध होता है कि इरादा एक मध्य विशेषता का नाम है और इसका सार उन मामलों के प्रति स्वयं का झुकाव होना है जो किसी के उद्देश्य के अनुरूप हैं और हृदय में झुकाव के जन्म की ओर हैं, चाहे ये मामले वर्तमान में उपयुक्त हों या अंत में (भविष्य में या बाद के जीवन में)। यहां पहली प्रेरक शक्ति वह उद्देश्य है जिसकी मांग की जा रही है और इसे "कारण" या "चालक" कहा जाता है और यही उद्देश्य इच्छित उद्देश्य है और उठने के कार्य को "उद्देश्य" और "इरादा" कहा जाता है। जब क्षमता अंगों को इरादे की पूर्ति के लिए प्रेरित करती है, तो इसे "क्रिया" कहा जाता है। हालांकि, कार्रवाई करने की क्षमता कभी-कभी एक कारण या चालक द्वारा उत्तेजित होती है, कभी-कभी दो कारणों से एक साथ, कभी-कभी दो कारणों से लेकिन दो कारणों में से एक क्षमता को हलचल करने के लिए पर्याप्त होता है, कभी-कभी एक कारण पर्याप्त होता है [क्रिया में क्षमता को हलचल करने के लिए] लेकिन दूसरा कारण इसका सहायक बन जाता है। इस प्रकार, चार प्रकार के इरादे हैं जिनका वर्णन इस प्रकार किया गया है:

पहला प्रकार - शुद्ध इरादा: पहला प्रकार [इरादा] यह है कि [कार्यों के लिए] केवल एक ही कारण या चालक है। उदाहरण के लिए, एक जंगली जानवर एक व्यक्ति पर हमला करता है। इसलिए, जब कोई इसे देखता है, तो अचानक उठ खड़ा होता है। यहां जानवर से भागने के अलावा कोई प्रेरक शक्ति नहीं है क्योंकि किसी ने जानवर को देखा है और इसे अपने लिए हानिकारक माना है। इसलिए जानवर को देखकर ही दिल में भागने की प्रेरणा पैदा होती है और इच्छा (झुकाव) का उदय होता है। इस वजह से, ड्राइवर और इच्छा ने क्षमता के अनुसार कार्य किया है। इस मामले में, यह कहा जाएगा कि इस व्यक्ति का इरादा केवल जानवर से बचने का है और उठने का कोई अन्य इरादा नहीं है। इस तरह के इरादे को "शुद्ध [इरादा]" कहा जाता है और इस इरादे के अनुसार कार्य करने को "ईमानदारी" कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसा कार्य है जिसमें किसी और चीज का समावेश, भागीदारी और संयोजन नहीं है [एक ही इरादे के अलावा]।

दूसरा प्रकार - दो प्रेरक बलों या कारणों का संयोजन: दूसरा प्रकार [इरादा] यह है कि दो प्रेरक बल या कारण जुड़े हुए हैं, और दोनों अपने स्वयं के अधिकारों में सक्रिय [कारण] हैं और एक कारण दूसरे पर निर्भर नहीं है। दृश्यमान क्षेत्र से इसका एक उदाहरण यह है कि किसी का जरूरतमंद रिश्तेदार मदद

मांगता है जो अपनी गरीबी और रिश्तेदारी के करीबी बंधन के कारण रिश्तेदार की जरूरत को पूरा करता है, जबकि यह जानते हुए कि यदि अनुरोधकर्ता गरीब नहीं होता, तो भी रिश्तेदारी के कारण आवश्यकता को पूरा करता, या यदि अनुरोधकर्ता करीब नहीं होता [रिश्तेदारी के संबंधों के संदर्भ में], कोई अभी भी [अनुरोधकर्ता की] गरीबी के कारण आवश्यकता को पूरा कर सकता था। वहीं दिल में ये निश्चिंतता भी होती है कि अगर किसी अमीर रिश्तेदार ने पूछा होता तो भी मदद जरूर कर लेता, और अगर कोई गरीब अनजान पूछ लेता तो मदद करने से मना नहीं करता। इस मामले में, दो ड्राइवरों या कारणों को संयोग से जोड़ा गया है जो एक को कार्रवाई के लिए प्रेरित करता है। यहाँ एक कारण दूसरे का सहायक है, इसलिए, हम इसे "दो प्रेरक बलों का संयोजन" कहते हैं।

तीसरा प्रकार - साझेदारी: तीसरा प्रकार [इरादा] यह है कि दो कारणों में से कोई भी या ड्राइवर अकेले किसी कार्रवाई को उकसा नहीं सकता है। इसके बजाय, दोनों का संयोजन, क्षमता को [कार्रवाई में] उत्तेजित करता है। दृश्य क्षेत्र में इसका उदाहरण यह है कि दो कमजोर व्यक्ति एक-दूसरे को एक भारी चीज उठाने में मदद करते हैं जिसे वे सर्वोत्तम प्रयास के साथ व्यक्तिगत रूप से नहीं उठा सकते थे। एक और उदाहरण यह है कि किसी का अमीर रिश्तेदार आता है और कुछ पैसे मांगता है जो देने से इनकार कर देता है। तभी एक गरीब अजनबी आता है और उतना ही पैसा मांगता है जो एक फिर से देने से इनकार कर देता है। बाद में, एक गरीब रिश्तेदार आता है और उतनी ही राशि मांगता है जिसे कोई मना नहीं करता है जैसे कि दो कारणों या प्रेरक शक्तियों के संयोजन के बाद कार्रवाई में उकसाया जाता है - रिश्तेदारी और गरीबी के संबंध। इस प्रकार के इरादे को साझेदारी कहा जाता है [दो या दो से अधिक प्रेरक बलों की या किसी को कार्रवाई में उत्तेजित करने का कारण]।

चौथा प्रकार - सहयोग: चौथा प्रकार [इरादा] यह है कि यदि दो कारणों या चालकों में से केवल एक ही मज़बूती से है तो यह अभी भी कार्रवाई का प्रेरक बन जाता है जबकि दूसरा कारण भरोसेमंद नहीं है। हालाँकि, यदि दूसरा कारण पहले कारण के साथ जुड़ा हुआ है, तो यह निश्चित रूप से मदद कर सकता है और इसे आसान बनाने में प्रभावी है। दृश्य क्षेत्र में इसका उदाहरण यह है कि एक कमजोर व्यक्ति एक शक्तिशाली व्यक्ति को भारी वजन उठाने में मदद करता है। यदि शक्तिशाली व्यक्ति अकेला होता, तो कोई भी इसे उठा सकता था, जबकि कमजोर व्यक्ति इसे अपने दम पर उठाने में सक्षम नहीं होता है, भले ही ऐसा व्यक्ति शक्तिशाली व्यक्ति की मदद करने में सक्षम हो [इसे उठाना आसान बनाने के लिए]। इसका एक और उदाहरण यह है कि किसी की प्रार्थना करने और दान करने की दिनचर्या होती है और उस विशिष्ट समय पर कुछ लोग दर्शन करने आते हैं, लेकिन व्यक्ति दिनचर्या के अनुसार भक्ति करना जारी रखता है। यदि आगंतुक नहीं आए होते, तो भी, कोई भी स्वभाव पर कुछ भारीपन के साथ अपनी दिनचर्या को पूरा करता, लेकिन आगंतुकों के आगमन और उन्हें देखने से कुछ सहजता और कमी पैदा होती [भारी भावना], परिणामस्वरूप, वह दिनचर्या अपनी कठोरता के बावजूद हल्की हो गई। भले ही, किसी को यह निश्चितता है कि यदि आगंतुक नहीं आए होते, तो भी वह समय पर अपनी दिनचर्या को पूरा

कर लेता, और यदि किसी के पास यह दिनचर्या नहीं होती, तो वह [आगंतुकों के सामने] प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए [अपनी धर्मपरायणता के लिए] कुछ भी नहीं करता। हम इस प्रकार के [इरादे] को "सहयोग" कह सकते हैं। अंतिम तीन प्रकारों (दूसरे से चौथे प्रकार) के इस विभाजन का परिणाम यह है कि दूसरा चालक या कारण एक साथी या साथी या सहायक होगा।

हम यहां इरादों के प्रकारों की गणना कर रहे हैं क्योंकि कार्य इरादों के अधीन होते हैं और [कार्य] उनसे अपने आदेश लेते हैं जैसा कि भविष्यवाणी परंपरा में वर्णित है, "कार्य इरादों पर निर्भर हैं", जैसे कि कार्य इरादों के अधीन हैं, और अधीनता (कार्रवाई) का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि स्थिति कमांडर (इरादा) की है [सभी कार्यों के पीछे मुख्य प्रेरक शक्ति के रूप में, चाहे अच्छा हो या बुरा]।

[परमेश्वर के प्रति] आज्ञाकारिता के कार्य हृदयों के लिए भोजन और पोषण हैं। इन पोषणों का उद्देश्य दिलों को ठीक करने के अलावा और कुछ नहीं है और यह कि वे निर्वाह (बाका या शाश्वत अस्तित्व) और परलोक की सुरक्षा पाते हैं, और ईश्वर से मिलने की आशीर्वाद और शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता से संपन्न होते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर से मिलने का वास्तविक उद्देश्य अनन्त सुख और अनन्त सफलता (सादाह) का आनंद प्राप्त करना है। केवल वही जो परमेश्वर के प्रेम और ज्ञान पर मरता है, उसे परमेश्वर से मिलने का सम्मान प्राप्त होता है। और केवल वही जो ज्ञान-विज्ञान रखता है वह ही परमेश्वर से प्रेम करने में सक्षम है और केवल वही जो परमेश्वर को प्रचुर मात्रा में याद करता है, वह ही परमेश्वर के प्रति लगाव प्राप्त कर सकता *है*। ईश्वर के प्रति आसक्ति ईश्वर स्मरण की शाश्वतता के माध्यम से प्राप्त होती है और ज्ञान को चिंतन और प्रेम की शाश्वतता के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। हृदय तब तक ईश्वरीय स्मरण और चिंतन में संलग्न होने के लिए स्वतंत्र नहीं है जब तक कि वह सांसारिक व्यस्तताओं (उलझन) से मुक्त न हो जाए, और यह सांसारिक व्यस्तताओं से मुक्त नहीं हो सकता जब तक कि निम्न स्व की वासनाएं इससे अलग नहीं हो जातीं, इस हद तक कि वह अच्छाई और धार्मिकता की ओर प्रवृत्त हो जाता है और इसके लिए इरादा रखना शुरू कर देता है और बुराई के प्रति घृणित हो जाता है।

सभी अच्छे कर्मों और आज्ञाकारिता के कार्यों से जो मांगा जाता है वह परलोक है, और सभी बुराइयों से जो मांगा जाता है वह दुनिया है, न कि परलोक। सभी अच्छाइयों की ओर स्वयं का झुकाव और सभी बुराइयों से मुक्ति, हृदय को ईश्वरीय स्मरण और चिंतन के लिए मुक्त करता है। हालाँकि, यह स्थायित्व तब प्राप्त करता है जब [ईश्वर के प्रति] अच्छे कर्म और आज्ञाकारिता के कार्यों में दृढ़ता होती है, और [शारीरिक] अंग पापों से बचते हैं क्योंकि अंगों और हृदय के बीच एक संबंध होता है। यह इस रिश्ते के कारण है जो एक दूसरे को प्रभावित करता है। अंगों और हृदय के बीच का अंतर यह है कि हृदय शासक और सेनापति की भूमिका ग्रहण करता है, और अंग प्रजा या सेवकों की तरह होते हैं और उनकी सेवा और आज्ञाकारिता के साथ, हृदय के गुण दृढ़ता से समाए और दृढ़ हो जाते हैं। संक्षेप में, हृदय उद्देश्य है [जैसा कि इरादा हृदय

में पैदा होता है जो मुख्य प्रेरक शक्ति है] और अंग उपकरण हैं और [दोनों] अपने साधनों के साथ, कोई [इरादा] उद्देश्य तक पहुंचता है।

उत्कृष्टता, वास्तविकता और ईमानदारी की डिग्री

ईमानदारी की उत्कृष्टता: भगवान कहते हैं:

وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ

"उन्हें इस तरह से परमेश्वर की आराधना करने की आज्ञा दी गई थी कि वे केवल उसके लिए परमेश्वर के मार्ग में ईमानदारी बनाए रखें। (कुरान, अध्याय 98, श्लोक 5)

أَلَا لِلَّهِ ٱلدِّينُ ٱلۡخَالِصُ

"याद रखें, ईश्वर की पूजा और मार्ग विशुद्ध रूप से और ईमानदारी से केवल ईश्वर के लिए है [और इसके अलावा कुछ भी नहीं]। (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 3)

فَمَن كَانَ يَرۡجُواْ لِقَآءَ رَبِّهِۦ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلٗا صَٰلِحٗا وَلَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهِۦٓ أَحَدَۢا

"जो अपने रब से मिलने की आशा करता है, उसे [केवल परमेश्वर के लिए ईमानदारी से] धर्म के काम करना जारी रखना चाहिए और अपनी पूजा में किसी भी भागीदार को परमेश्वर का श्रेय नहीं देना चाहिए। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 110)

यह पद उन लोगों के लिए प्रकट किया गया था जो परमेश्वर के लिए [अच्छे धर्मी कर्म] करते हैं, लेकिन [साथ ही] वे लोगों से प्रशंसा [प्रशंसा, मान्यता और उनके आगामी सांसारिक लाभ] चाहते हैं [जो ईमानदारी का उल्लंघन करता है जो उनके स्वयं के लाभ के लिए ईश्वरीय रूप से आज्ञा दी गई है]। हसन (ईश्वर उन पर दया करे) ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद के लिए ईश्वर को जिम्मेदार ठहराया गया है) से इस *हदीस कुदसी* (एक भविष्यसूचक कथन जिसे इसके स्रोत के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है) का उल्लेख किया है, जिन्होंने कहा था कि (भगवान ने कहा), "ईमानदारी (बिना किसी गुप्त भौतिक या सांसारिक उद्देश्यों के बिना पूरी तरह से भगवान के लिए कुछ करना) मेरे रहस्यों में से एक रहस्य है। मैं इसे अपने सेवकों में से उस व्यक्ति के हृदय में प्रदान करता हूँ जिनसे मैं प्रेम करता हूँ। (इमाम अबुल

कासिम अल-कुशायरी ने अपनी पुस्तक में इसे भी उद्धृत किया है। *अल-रिसाला कुशायरिया*" अली इब्न अबी तालिब से [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

مَا مِنْ عَبْدٍ يُخْلِصُ لِلّٰهِ الْعَمَلَ أَرْبَعِينَ يَوْمًا إِلَّا ظَهَرَتْ يَنَابِيعُ الْحِكْمَةِ مِنْ قَلْبِهِ عَلَى لِسَانِهِ

"एक सेवक [भगवान का] जो चालीस दिनों तक शुद्ध रूप से भगवान के लिए अपने कर्म को शुद्ध करता है, ज्ञान के फव्वारे किसी के दिल से जीभ तक निकलते हैं [इस ईमानदारी के परिणामस्वरूप]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्ने अदी* अबू मूसा के अधिकार पर [ईश्वर उससे प्रसन्न हो])

इजराइल के बच्चों की परंपराओं में लिखा गया है कि एक उपासक लंबे समय से भगवान की पूजा में व्यस्त रहता था। एक बार कुछ लोग उनके पास आए और कहा, "यहाँ एक राष्ट्र है जो भगवान के बजाय एक पेड़ की पूजा करता है"। यह सुनकर उपासक क्रोधित हो गया और एक कुल्हाड़ी लेकर पेड़ की जड़ से काटने के लिए उसकी ओर चलने लगा। रास्ते में, वह एक बूढ़े व्यक्ति से मिला जो वास्तव में भेष में शैतान था जिसने उससे पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?" उन्होंने कहा, "मैं इस पेड़ को काटना चाहता हूं"। शैतान ने उत्तर दिया, "तुम्हें इससे क्या लेना-देना है? आपने अपनी पूजा छोड़ दी और बिना किसी कारण के अपनी [पवित्र] सगाई समाप्त कर दी"। उपासक ने कहा, "यह भी पूजा है"। शैतान ने कहा, "मैं तुम्हें किसी भी परिस्थिति में इस पेड़ को काटने की अनुमति नहीं दे सकता। यह कहकर वह उस उपासक से कुश्ती करने लगा जिसने उसे जमीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर बैठ गया। शैतान ने कहा, "कृपया मुझे जाने दो, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ [यदि तुम मुझे जाने दोगे तो तुम्हें लाभ होगा"। उपासक उठ खड़ा हुआ। शैतान ने उससे कहा, "परमेश्वर ने न तो इस पेड़ को काटने का काम तुझ पर बनाया है और न ही इस पेड़ की पूजा करने वाली इस जाति का मार्गदर्शन करने की ज़िम्मेदारी तुम पर है! दुनिया में भगवान के कई पैगंबर हैं, अगर वह चाहे तो अपने किसी भी पैगंबर को इस पेड़ को काटने के लिए भेज सकते हैं। उपासक ने कहा, "मैं निश्चित रूप से इस पेड़ को काटूंगा"। जब शैतान ने देखा कि बातचीत मददगार नहीं है, तो उसने युद्ध (लड़ाई) की घोषणा की। इसलिए दोनों के बीच फिर से लड़ाई शुरू हो गई और उपासक ने उसे फिर से हरा दिया, उसे जमीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर बैठ गया। जब शैतान ने देखा कि कोई रास्ता नहीं है, तो उसने कहा, "मैं तुम्हें कुछ ऐसा बताना चाहता हूँ जो तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है"। उपासक ने उससे कहा कि वह उसे बताए कि वह क्या कहना चाहता है। शैतान ने उपासक को पहले अपने सीने से उतरने के लिए कहा और उसने उसका पालन किया। शैतान ने कहा, "तुम एक जरूरतमंद और गरीब इंसान हो। आपके पास कुछ भी नहीं है! आप उन लोगों पर बोझ हैं जो आपकी जरूरतों को पूरा करते हैं। आपका दिल चाहता है कि आपके पास अपने भाइयों की मदद करने के लिए पर्याप्त संपत्ति हो, अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करें, और अपने पेट भर खाएं ताकि

आपको लोगों की आवश्यकता न हो और वे उनके समर्थन के लिए आत्मनिर्भर बन सकें। उपासक ने कहा, "यह निश्चित रूप से मेरे दिल की इच्छा है!" शैतान ने कहा, "अगर यह मामला है तो घर जाओ। मैं हर रात तुम्हारे बिस्तर के पास दो दीनार (सोने के सिक्के) रखूँगा। आप उस पैसे को अपने और अपने परिवार पर खर्च कर सकते हैं। यह आपके लिए और अन्य मुसलमानों के लिए एक बेहतर सुझाव है जो मैंने आपके सामने प्रस्तुत किया है, बजाय इसके कि इस पेड़ को काट दिया जाए जो अपनी जगह पर रहेगा। इस पेड़ को काटने से इसके उपासकों को कोई नुकसान नहीं होगा [क्योंकि उन्हें पूजा करने के लिए एक और पेड़ मिलेगा] और इसे बनाए रखने से मुसलमानों को कोई फायदा नहीं होगा। उपासक ने शैतान के इस सुझाव पर विचार-विमर्श किया और अपने दिल में सोचा, "यह बूढ़ा आदमी सही कह रहा है! मैं [परमेश्वर का] भविष्यद्वक्ता नहीं हूँ, इसलिए, मेरे लिए न तो इस पेड़ को काटना आवश्यक है और न ही परमेश्वर ने मुझे इसे काटने की आज्ञा दी है ताकि यदि मैं इसे नहीं काटता तो मैं पाप करता रहूँ। बूढ़े आदमी द्वारा दिया गया सुझाव अधिक लाभदायक है!" इसलिए, उसने बूढ़े आदमी [जो भेष में शैतान था] के साथ एक सौदा किया और पेड़ को न काटने की शपथ ली। इसके बाद वह रात बिताने के लिए अपने पूजा स्थल पर लौट आए। सुबह उसने वादे के अनुसार अपने बिस्तर के पास दो दीनार देखे। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। तीसरे दिन, उसे कुछ भी नहीं मिला। वह बहुत क्रोधित हो गया और उस अवस्था में एक कुल्हाड़ी लेकर अपने कंधे पर रख लिया और चलने लगा। रास्ते में, वह उसी बूढ़े व्यक्ति के भेष में शैतान से मिला, जिसने पूछा, "तुम कहाँ जाने का इरादा रखते हो?" उपासक ने कहा, "मैं उस पेड़ को काटने जा रहा हूँ!" शैतान ने कहा, "परमेश्वर की क़सम! तुम झूठे हो! आप न तो वहां पहुंच सकते हैं और न ही आप उस पेड़ को काट सकते हैं! यह सुनकर उपासक ने बूढ़े को पकड़कर जमीन पर फेंकने की कोशिश की। शैतान ने कहा, "यह मत सोचो कि तुम यह कर सकते हो। उसके बाद, शैतान ने उपासक को पकड़ लिया, उसे जमीन पर फेंक दिया और उसकी छाती पर बैठ गया और उपासक उसके दोनों पैरों के बीच में फंसे हुए पक्षी की तरह फड़फड़ाने लगा। उपासक ने अपने स्तर पर पूरी कोशिश की लेकिन मुक्त नहीं हो सके। उसने हार मान ली और कहा, "मुझे जाने दो और मुझे बताने दो कि मैंने पहले तुमपर कैसे विजय प्राप्त की और इस बार तुमने मुझ पर कैसे विजय प्राप्त की?" शैतान ने कहा, "पहली बार, तुम परमेश्वर के लिए क्रोध के साथ आगे बढ़े और तुम्हारा इरादा परलोक था [और कोई सांसारिक लाभ या लाभ नहीं], इसीलिए, परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे अधीन कर दिया। इस बार, आप अपने निम्न स्व और दुनिया (सांसारिक लाभ) के लिए क्रोधित हो गए, इसीलिए, मैंने आपको दूर कर लिया है!" यह घटना परमेश्वर की निम्नलिखित कहावत का पता लगाती है:

وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

"[शैतान ने कहा:] मैं उन सभी को एक साथ गुमराह करूंगा, सिवाय उन लोगों के जो [आपके मार्ग में] ईमानदार हैं। (कुरान, अध्याय 15, श्लोक 39-40)

मनुष्य केवल [परमेश्वर के प्रति] ईमानदारी के माध्यम से शैतान [और उसके जाल, आक्षेप, षड्यंत्रों और मानव जीवन के विनाश] से छुटकारा पाते हैं।

ईमानदारी की वास्तविकता: हर चीज में अन्य चीजों का मिश्रण होने की कल्पना की जा सकती है। जब किसी चीज को अन्य चीजों से रहित और शुद्ध किया जाता है तो उसे "शुद्ध" कहा जाता है और जिस क्रिया के परिणामस्वरूप उसकी शुद्धि होती है उसे "ईमानदारी" (इखलास) कहा जाता है। हमने इरादे की वास्तविकता को समझाया है और उस चर्चा का सार यह है कि इरादा एक कारण (या उकसाने वाले) की गति है जो किसी के उद्देश्य के लिए उपयुक्त है; यदि कारण एक है और कार्य केवल इसी एक कारण से किया गया है तो इसे ईमानदारी कहा जाता है, बशर्ते कि वह कारण किसी के उद्देश्य के अनुरूप हो। "ईमानदारी" शब्द का उपयोग विशेष रूप से उस कार्य के लिए किया जाता है जो केवल परमेश्वर की निकटता की खोज करने के लिए किया गया है और यह पूरी तरह से परमेश्वर के अलावा अन्य सभी चीजों की अशुद्धियों से रहित और शुद्ध है। जिस व्यक्ति की कार्रवाई का कारण दिखावा है, वह [आध्यात्मिक] विनाश के खतरे में है। यहां हम चर्चा करना चाहते हैं कि वह कारण [या उकसाने वाला] जो ईश्वर से निकटता की तलाश करने के इरादे (नियाह) के कारण चलता है [या उकसाता है], [लेकिन] फिर इसमें एक और कारण मिश्रित हो जाता है (पहला कारण), चाहे यह दूसरा कारण दिखावा (रिया) से हो या न दिखावा हो।

इसका उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति का है जो ईश्वर की निकटता की तलाश करने के इरादे से उपवास करता है, लेकिन किसी का उद्देश्य [स्वास्थ्य संबंधित] रोकथाम का पालन करना भी है, या तीर्थयात्रा (हज*)* करता है [ईश्वर की निकटता की तलाश करने के इरादे से, लेकिन साथ ही] तीर्थयात्रा में शामिल [शारीरिक] आंदोलन के कारण एक मध्यम स्वभाव विकसित करना [स्वास्थ्य संबंधी कारणों से], या अपने देश में अपने आप को खतरे से बचाने के लिए या दूर रहने के लिए [तीर्थयात्रा करता है] किसी शत्रु से या अपने जीवनसाथी और बच्चों से तंग आ गया है और तीर्थयात्रा के कारण उनसे दूर रहने की इच्छा रखता है, या किसी [लंबे काम से संबंधित] व्यस्तता से थक जाने के बाद कुछ राहत की इच्छा करता है, या कोई अपने घर की रक्षा के लिए जागते रहने के उद्देश्य से देर रात या सुबह (पूर्व-सुबह) प्रार्थना (*तहज्जुद)* करता है, या कोई ज्ञान प्राप्त करता है [फिर से भगवान की निकटता की तलाश करने के इरादे से लेकिन साथ ही] अपने धन और संपत्ति की रक्षा करने के लिए और लालची लोगों की बुराइयों से बचाने के लिए, या शिक्षा और उपदेश की एक सभा का आयोजन करता है [फिर से भगवान की निकटता की तलाश करने के इरादे से लेकिन भी] बोरियत के कारण और बोलने का आनंद प्राप्त करना चाहता है, या आध्यात्मिक यात्रियों (*सूफियों*) और विद्वानों का समर्थन करते हैं ताकि वे एक को अपने दिलों में उच्च सम्मान रखें और आम लोग भी किसी को सम्मान के साथ देखते हैं और एक के साथ उदारता से व्यवहार करते हैं क्योंकि कोई ईश्वरीय लोगों का समर्थन करता है, या कुरान लिखता है क्योंकि लिखने से लगातार किसी की लिखावट में

सुधार होता है, या स्नान करता है (*वुज़ू*) [ईश्वर की निकटता की तलाश करने के इरादे से, लेकिन साथ ही] स्नान करके शरीर को सुखदायक आराम प्रदान करने के लिए, या स्नान करना [फिर से शारीरिक शुद्धता के साथ भगवान की निकटता की तलाश करने के इरादे से, लेकिन साथ ही] शारीरिक गंध को दूर करने के लिए, या भविष्यसूचक परंपराओं का वर्णन करता है [भगवान की निकटता की तलाश करने के इरादे से लेकिन साथ ही] लोगों को उच्च स्थानों पर किसी के नाम का उल्लेख करने के लिए, या एक मस्जिद (*इतिकाफ*) में रहता है [भगवान की निकटता की तलाश करने के इरादे से, लेकिन साथ ही] घर का किराया बचाने के लिए, या उपवास करता है [भगवान की निकटता की तलाश करने के इरादे से, लेकिन साथ ही] खुद को खाना पकाने के प्रयास से बचाने के लिए या कोई सोचता है कि खाने से कोई कुछ हासिल नहीं कर पाएगा, या एक भिखारी की आवश्यकता को पूरा करता है [भगवान की निकटता की तलाश करने के इरादे से लेकिन यह भी] क्योंकि कोई तंग आ चुका है भिखारी किसी बीमार से पूछता है, या उसके पास जाता है ताकि बीमार होने पर व्यक्ति या रिश्तेदार उसके पास आए, या इनमें से कोई भी काम ऐसा करे कि लोग इन कर्मों के लिए एक का उल्लेख करें और उसकी प्रशंसा करें और उनकी वजह से प्रसिद्धि मिले। इन सभी मामलों में, यदि इरादा इन [अन्य] उद्देश्यों में से किसी के साथ परमेश्वर की निकटता की तलाश करना भी है, तो किसी का कार्य ईमानदारी की परिभाषा से बाहर निकल जाएगा (अर्थात, कार्रवाई अब ईमानदार नहीं रहेगी) और यह नहीं कहा जाएगा कि कार्य विशुद्ध रूप से परमेश्वर के लिए किया गया था, बल्कि यह बहुदेववाद या ईश्वर के अलावा अन्य के साथ मिश्रित हो जाएगा।

संक्षेप में, यदि सांसारिक सुखों से कोई सुख ऐसा है कि निम्न आत्मा उसके प्रति झुका हुआ है, उसकी इच्छा करता है, और किसी कार्य में स्थान पाता है, तो इस आनंद के कारण, ईमानदारी पर [प्रतिकूल] प्रभाव पड़ेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य हर समय, निम्न स्व और इच्छाओं के सुखों में डूबा रहता है और ऐसा शायद ही कभी होता है कि कोई भी कार्य या पूजा इन सुखों और इच्छाओं से रहित हो। इसलिए इन कार्यों और पूजाओं को ईमानदार घोषित नहीं किया जा सकता है [क्योंकि वे केवल ईश्वर के लिए ईमानदारी से नहीं किए गए थे]। इसलिए, यह कहा गया है कि यदि कोई केवल एक ऐसे क्षण को प्राप्त करता है जो विशुद्ध रूप से परमेश्वर के लिए है तो वह क्षण उस व्यक्ति के उद्धार और सुरक्षा के लिए पर्याप्त होगा [इस लोक और अगले के कष्टों में]। यह ईमानदारी के अस्तित्व की दुर्लभता के कारण है, क्योंकि हृदय को अशुद्धियों और सुखों से [निचले स्व से] शुद्ध और शुद्ध करना बेहद मुश्किल है, बल्कि, शुद्ध और ईमानदार कार्य ऐसा है कि इसका कारण और चालक ईश्वर की निकटता की तलाश के अलावा और कुछ नहीं है। यदि ये सुख और इच्छाएँ ही इन कर्मों के एकमात्र चालक और कारण हैं तो उन कर्मों के कर्ता को उन कर्मों के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा और यह स्पष्ट है, लेकिन यदि इन कार्यों का इरादा ईश्वर की निकटता को प्राप्त करना है और इन सुखों की इच्छा भी इसके साथ मिल जाती है तो कर्म अब ईश्वर के लिए शुद्ध नहीं रहता है। कार्यों में [सांसारिक सुखों की इच्छाओं] को जोड़ना [जो विशुद्ध रूप से भगवान के लिए किया जाना चाहिए था] तीन रूप ले सकते हैं: जोड़ या साझेदारी या सहयोग के रूप में होगा, और इन रूपों को पहले समझाया जा चुका है।

ईमानदारी का अर्थ यह है कि कार्य किसी भी अशुद्धियों [स्वार्थी, बुरे और गलत इरादों और उद्देश्यों से] रहित हैं, चाहे वे कम हों या बहुत कुछ, और उन्हें करने का एकमात्र उद्देश्य ईश्वर की निकटता है और कोई अन्य कारण नहीं है। इस तरह के [शुद्ध और ईमानदार] कार्यों की कल्पना केवल उन लोगों से की जा सकती है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और परलोक के लिए [अपने प्रयासों] में डूबे हुए हैं और उनके दिलों में दुनिया के प्रेम (सांसारिकता) के लिए कोई जगह नहीं बची है, इस हद तक कि वे खाना-पीना भी पसंद नहीं करते हैं। खाने-पीने के लिए उनका झुकाव प्रकृति की पुकार को पूरा करने जैसा है जो मानव शरीर की मानवीय आवश्यकता और मांग है। इसी तरह, खाना-पीना भी इंसान होने की एक मानवीय आवश्यकता और मांग है। वे भोजन के प्रति झुकाव नहीं रखते क्योंकि यह भोजन है या यह आनंददायक है, बल्कि वे इसके प्रति झुकाव रखते हैं क्योंकि भोजन शरीर को ऊर्जा और शक्ति देता है और जो भगवान की पूजा और आज्ञा की आज्ञा मानने की क्षमता प्रदान करता है। वे भूख की बुराई से छुटकारा पाने की इच्छा रखते हैं, इसलिए उन्हें खाने की भी आवश्यकता नहीं होती है। उनके दिलों में अनावश्यक जरूरतों की ओर झुकाव नहीं होता है, इसके बजाय वे आवश्यक राशि से संतुष्ट होते हैं और वे इसे परमेश्वर तक पहुंचने के अपने मार्ग की आवश्यकता मानते हैं। जिसके सभी विचारों और कार्यों में ध्यान का एकमात्र बिंदु ईश्वर है, यहां तक कि जब कोई खाने या प्रकृति की पुकार का जवाब देने जैसा कुछ करता है, तो उसके कार्य शुद्ध होते हैं और उसकी सभी गतिविधियों और शांति में, उसका इरादा सही होता है। इसलिए यह व्यक्ति पूजा के लिए शक्ति प्राप्त करने और भविष्य में आज्ञाकारिता के कार्यों के लिए शरीर को आराम देने के लिए सोता है। उस स्थिति में, किसी की नींद भी पूजा का कार्य बन जाती है और उसे ईमानदार (मुखलासीन) का दर्जा दिया जाता है, और जिसके पास यह अवस्था नहीं होती है, उसके लिए कार्यों में ईमानदारी के दरवाजे बंद हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति से ईमानदारी शायद ही कभी स्पष्ट होती है, अन्यथा आम तौर पर कहें तो, किसी की सारी पूजा सांसारिक उद्देश्य के लिए होती है। जिसके पास ईश्वर और परलोक का प्रेम प्रमुख है [अपने आंतरिक अस्तित्व में], उस प्रभाव के प्रभुत्व के कारण उसकी सभी हरकतें और शांति ईमानदारी से बन जाती है और उसका हर कार्य ईमानदारी से प्रकट होता है। दूसरी ओर, एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास दुनिया का प्रेम है, सांसारिक शक्ति और शासन [किसी के आंतरिक अस्तित्व में] हावी है, ऐसे व्यक्ति का समग्र झुकाव ईश्वर के अलावा अन्य की ओर है और यह [आंतरिक] गुण [ईश्वर के अलावा किसी और की इच्छा करना] किसी की सभी गतिविधियों और शांति पर हावी है और किसी की पूजा प्रार्थना की तरह नहीं है, उपवास और दान, इससे सुरक्षित रहता है।

ईमानदारी की कमी का इलाज: इस विवरण से यह पता चला है कि ईमानदारी की कमी एक बीमारी है और इसका इलाज निम्न स्व (नफ्स) के सुखों को मिटाना, दुनिया के साथ लालच को तोड़ना, और परलोक से इस तरह से जुड़ना है कि यह दिल पर हावी होने लगे। इस तरह ईमानदारी के लिए आसान हो जाएगा। ऐसे कितने कार्य हैं जिनमें मनुष्य थकान और कठिनाइयों को सहता है और सोचता है कि वह विशुद्ध रूप से परमेश्वर के लिए कुछ कर रहा है, भले ही उसके बारे में उसका विचार गलत हो? इस आत्म-भ्रम का कारण यह है कि व्यक्ति इस तोड़फोड़ के कारण को नहीं जानता है और व्यक्ति को अपने कार्यों को सभी विकृतियों से शुद्ध मानने की गलतफहमी है। एक ज्ञानवादी ने अपनी तीस साल की प्रार्थना को केवल

इसलिए दोहराया क्योंकि एक दिन जब वह मस्जिद में पहुंचा, तो सामूहिक प्रार्थना शुरू हो चुकी थी और उसे पहली पंक्ति में जगह नहीं मिली और उसे दूसरी पंक्ति में प्रार्थना करने के लिए मजबूर होना पड़ा और वह इसके बारे में शर्मिंदा महसूस कर रहा था। इस घटना के बाद, उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने पहली पंक्ति में प्रार्थना की क्योंकि लोग उन्हें [प्रार्थनाओं में सबसे आगे रहने के लिए] देखते थे जिससे उन्हें खुशी मिलती थी और इसीलिए, उन्हें दूसरी पंक्ति में खड़े होने में शर्म महसूस होती थी [एक बार देर हो जाने के कारण]। इस विचार के साथ, उन्हें एहसास हुआ कि उनकी तीस साल की नमाज़ [मस्जिद में] बर्बाद हो गई थी और उन्हें उन्हें दोहराने की ज़रूरत थी [इस बार उन्हें पूरी तरह से केवल ईश्वर के लिए और किसी और के लिए नहीं करके ईमानदारी के साथ करना]। यह एक सूक्ष्म आपदा है और हर कोई इसे समझने में सक्षम नहीं है। ऐसा शायद ही कभी होता है कि लोग [पवित्र] कार्यों में विकृतियों से सुरक्षित रहते हैं, और केवल वे लोग ही उनके बारे में जागरूक होते हैं और अपनी रक्षा करने के बारे में सोचते हैं, जिन्हें ईश्वर द्वारा अच्छा करने की क्षमता प्रदान की गई है। लापरवाह लोग देखेंगे कि उनके अच्छे कर्म परलोक में बर्बाद हो गए हैं। कुरान की निम्नलिखित आयत उसी को संदर्भित करती है:

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم بِٱلْأَخْسَرِينَ أَعْمَٰلًا ﴿١٠٣﴾

ٱلَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

"उनसे (हे पैगंबर मुहम्मद!) कहो, 'क्या हमें आपको उन लोगों के बारे में बताना चाहिए जो अपने कार्यों के मामले में पूरी तरह से नुकसान में हैं? ये वे लोग हैं जिनकी दुनिया में कड़ी मेहनत बेकार चली गई है और उनके पास यह [गलत और आत्म-भ्रमपूर्ण] विचार (धारणा और अनुमान) है कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं। (कुरान, अध्याय 18, आयत 103-104)

इस तबाही का सबसे बड़ा लक्ष्य [धार्मिक] विद्वान या विद्वान (*उलेमा*) हैं, क्योंकि अधिकांश विद्वान विश्वास का प्रचार करने की दिशा में काम करते हैं, और उन्हें दूसरों पर प्रभुत्व रखने में खुशी मिलती है [क्योंकि वे कुछ ऐसा कर रहे हैं जो अधिकांश अन्य लोग नहीं कर रहे हैं], [अन्य लोगों के दिलों पर] शक्ति होने और अनुसरण करने में खुशी है, और प्रशंसा और प्रशंसा के कारण दिल खुशी से उछल पड़ता है। शैतान इस मामले को [उपदेश देने के] उनके लिए संदिग्ध बनाता है और कहता है [दिल में संकेत के माध्यम से उन्हें समाज में अपने स्थान के बारे में गर्व और अहंकारी बनाता है], "आपका उद्देश्य ईश्वर के मार्ग का प्रचार करना और उस ईश्वरीय कानून की रक्षा करना है जो पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को प्रकट किया गया था"। आस-पास ऐसे कई प्रचारक हैं जो आम जनता और सरकारी अगुवों के सुधार की दिशा में काम करना अपना पक्ष मानते हैं, और जब लोग उनकी बात सुनते हैं और उनकी सलाह पर कार्य करते हैं तो उनकी खुशी की कोई सीमा नहीं होती है। यह उनका दावा है कि वे खुश हैं क्योंकि भगवान ने उन्हें अपने मार्ग और सृष्टि के सुधार में मदद करने के लिए चुना है, हालांकि, उनकी स्थिति ऐसी है कि यदि सरल दिमाग वाले लोग लाभ उठाने के लिए उनके जैसे किसी अन्य विद्वान के पास

जाते हैं, तो दुख और ईर्ष्या उन्हें मार डालेगा [लौकिक रूप से बोलते हुए]। यदि उनका उद्देश्य लोगों को चेतावनी देना और सलाह देना होता, तो वे इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते क्योंकि उसने इसे दूसरों पर डालकर उन्हें एक बड़ी जिम्मेदारी से बचाया था, और उन्हें एक नाजुक और खतरनाक दायित्व से बचाया था। शैतान इस बिंदु पर भी उन्हें अकेला नहीं छोड़ता है और उनसे कहता है, "आपके पश्चाताप का असली कारण यह है कि आप ईश्वरीय मार्ग के प्रचार, ज्ञान की सुरक्षा और सृष्टि के सुधार के ईश्वरीय प्रतिफल से वंचित हो गए हैं"। यह गरीब व्यक्ति नहीं जानता है कि परमेश्वर के निर्णय के सामने अपना सिर झुकाने से सृष्टि का मार्गदर्शन करने से प्राप्त होने वाले प्रतिफल की तुलना में कहीं अधिक ईश्वरीय प्रतिफल होता है। केवल वे लोग ही इस परीक्षा में दृढ़ रहते हैं जो शैतान और निम्न स्व के धोखे से अवगत हैं, और अपने निचले स्व की परीक्षा लेते रहते हैं [उपस्थिति या ईमानदारी की कमी के लिए]। फिर भी, ईमानदारी (इखलास) की वास्तविकता को जानना और उस पर कार्य करना एक गहरा समुद्र है। बहुत से लोग इसमें डूब जाते हैं और शायद ही कभी इससे बच पाते हैं। ये वे लोग हैं जिनका उल्लेख निम्नलिखित श्लोक में अपवाद के रूप में किया गया है:

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ ٱلْمُخْلَصِينَ

"[शैतान ने परमेश्वर से अपनी बातचीत में कहा कि वह आदम (परमेश्वर की शांति और आशीषों को उस पर हो) की सृष्टि के बाद सभी को गुमराह करेगा, स्वर्गदूतों और शैतान को उसके सामने झुकने की परमेश्वर की आज्ञा, शैतान का पालन करने से स्पष्ट इनकार, और शैतान को उसकी दया से हमेशा के लिए दूर करने की परमेश्वर की आज्ञा,] उन लोगों को छोड़कर जो ईमानदार हैं (जो पूरी तरह से परमेश्वर के लिए काम करते हैं और किसी के लिए नहीं आपके सेवकों के बीच से गुप्त मकसद या इच्छा (जो केवल वही हैं जिन्हें मैं (शैतान) प्रभावित नहीं कर पाऊंगा]"। (कुरान, अध्याय 15, श्लोक 40)

एक सेवक को [परमेश्वर के] इन सूक्ष्म मामलों पर गहरी नज़र रखनी चाहिए, ऐसा न हो कि कोई लापरवाही की स्थिति में शैतान का अनुयायी बन जाए।

किसी ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से ईमानदारी के बारे में पूछा, जिस पर उन्होंने जवाब दिया:

أَنْ تَقُولَ رَبِّيَ اللّٰهُ ثُمَّ تَسْتَقِيمُ كَمَا أُمِرْتَ

"यह है कि आप कहते हैं, 'भगवान मेरा रब है!', फिर उस में दृढ़ रहें [इस दृढ़ विश्वास के साथ] जैसा कि आपको [ईश्वरीय रूप से] आज्ञा दी गई है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *तिर्मिडी*)

दूसरे शब्दों में, आप न तो अपनी इच्छाओं की पूजा करते हैं (*नफ्स*) और न ही अपने निचले स्व की पूजा करते हैं, बल्कि, बस अपने भगवान की पूजा करते हैं [अकेले] और उस दृढ़ता के साथ दृढ़ रहें जैसा कि आपको [दिव्य रूप से] दृढ़ रहने की आज्ञा दी गई है। यह भविष्यसूचक परंपरा ईश्वर के अलावा अन्य सभी आशाओं को तोड़ने की ओर इशारा करती है और वास्तव में, यह ईमानदारी (*इखलास*) है।

खतरे और बाधाएं जो ईमानदारी में मैला होने का कारण बनती हैं: ऐसे कई खतरे (स्पॉइलर) हैं जो ईमानदारी में मैला होने का कारण बनते हैं। इनमें से कुछ प्रकट हैं, कुछ छिपे हुए हैं, कुछ कमजोरी के साथ प्रकट होते हैं, और कुछ ताकत के साथ छिपे हुए हैं। हालाँकि, उदाहरणों के बिना उनकी डिग्री में अंतर को समझना असंभव है, इसलिए हम पहले आडंबर से एक उदाहरण का उल्लेख करते हैं। आडंबर या दिखावा करने से ईमानदारी अधिक खतरे में पड़ जाती है। उदाहरण के लिए, एक उपासक प्रार्थनाओं में व्यस्त है और पूरी ईमानदारी से ऐसा कर रहा है। इस दौरान कुछ लोग या कोई वहां आया जहां कोई नमाज पढ़ रहा था। शैतान ने इसे एक अच्छा अवसर माना जो वहां पहुंचा और एक से कहना शुरू कर दिया, "बहुत अच्छी तरह से प्रार्थना करो ताकि जो लोग तुम्हें देख रहे हैं वे एक अच्छा प्रभाव डालें और आपको धर्मी समझकर आपका सम्मान करें, और न तो आपको तिरस्कार की दृष्टि से देखें, न ही आपके खिलाफ जवाबी कार्रवाई करें"। यह सुनने पर [शैतान से हृदय में संकेत के माध्यम से], व्यक्ति अंगों में [बाहरी] विनम्रता को अपनाता है और अधिक शांति के साथ प्रार्थना करना जारी रखता है और किसी की प्रार्थनाओं में अधिक बाहरी सुंदरता पैदा करता है। यह बाहरी आडंबर है जो शुरुआती आध्यात्मिक यात्रियों के लिए भी स्पष्ट है। यह आडंबर की पहली डिग्री है।

दूसरी डिग्री यह है कि आध्यात्मिक यात्री (उपासक) इस खतरे को समझता है और खुद को इससे बचाने के लिए एक रणनीति अपनाता है। यह आध्यात्मिक यात्री [इस मामले में] शैतान की आज्ञा का पालन नहीं करता है और उस पर ध्यान नहीं देता है, इसके बजाय, व्यक्ति अपनी प्रार्थना में उसी तरह लिप्त रहता है जैसे वह लोगों के आगमन से पहले था। शैतान [फिर से] अच्छाई और धार्मिकता की आड़ में एक के पास आता है और एक से कहता है, "लोग तुम्हारा अनुसरण करते हैं, तुम्हारे पदचिन्हों पर चलते हैं, तुम्हारे हर आंदोलन पर नज़र रखते हैं, तुम जो कुछ भी करते हो उसका प्रभाव उनके [स्वयं] कार्यों पर पड़ता है, और वे तुम्हारे प्रत्येक कार्य की एक आदर्श के रूप में कल्पना करते हैं, यदि तुम अच्छा कार्य करते हो तो तुम्हें उनके [अच्छे] कर्मों के लिए भी ईश्वरीय प्रतिफल मिलेगा, और यदि आपको अपने कार्यों में ढीलापन आता है तो आपको उनके कार्यों में ढीलेपन के लिए भी जिम्मेदार ठहराया जाएगा। इसलिए, आपको अन्य लोगों के सामने अच्छा व्यवहार करना चाहिए। वे विनम्रता से और अपने [धार्मिक] कार्यों को सुशोभित करने में आपका अनुसरण कर सकते हैं। यह डिग्री पहले की तुलना में अधिक सूक्ष्म और जटिल है। कभी-कभी, जो लोग शैतान की पहली योजना से धोखा नहीं खाते हैं, वे दूसरे द्वारा धोखा खा जाते हैं। यह भी आडंबर का एक रूप है जो ईमानदारी को शून्य कर देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर किसी की नजर में विनम्रता और पूजा के सौंदर्यीकरण में कोई अच्छाई है और वह नहीं चाहता कि लोग उनसे वंचित रहें, तो

कोई एकांत में यह [पूजा का कार्य] क्यों नहीं करता है? इसके अलावा, यह स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि अन्य लोगों के स्वयं स्वयं की तुलना में एक के लिए अधिक प्रिय हैं और किसी और की भलाई चाहते हैं। यह केवल एक शैतानी उपदेश है जो किसी को धोखा दे रहा है और उसे आडंबर में डाल रहा है। जो अनुसरण करने में सक्षम है, जो अपने आप में दृढ़ है [गलतियों के आगे न झुकने में], जिसका हृदय प्रकाशित है, और उसकी रोशनी की किरणें दूसरों तक पहुंचती हैं और उन्हें भी [भीतर से] प्रकाशित करती हैं। उस स्थिति में, किसी को निश्चित रूप से पालन किए जाने के लिए ईश्वरीय प्रतिफल मिलेगा, लेकिन शैतानी अनुनय [अभी उल्लेख किया गया] केवल एक भ्रामक उपदेश है, हालांकि, अनुयायी को निश्चित रूप से अनुसरण करने के लिए ईश्वरीय प्रतिफल मिलेगा, जबकि अनुसरण किए जा रहे व्यक्ति को [गलत तरीके से] इस उपदेश में देने के लिए जवाबदेह होगा और यहां तक कि [भ्रामक रूप से] एक विशेषता प्रदर्शित करने के लिए [दिव्य रूप से] दंडित किया जा सकता है जो किसी के पास भी नहीं है।

तीसरी डिग्री दूसरी की तुलना में और भी अधिक सूक्ष्म और जटिल है, जो अपने स्वयं के निचले स्व का परीक्षण करना और शैतान के धोखे से अवगत होना और यह जानना है कि निजी और सार्वजनिक (आंतरिक और बाहरी) [आध्यात्मिक] राज्य के बीच का अंतर केवल दिखावा है और निजी तौर पर ये प्रार्थनाएं वैसी ही होनी चाहिए जैसी वे दूसरों के सामने हैं और जब कोई कोशिश करता है तो व्यक्ति को अपने आप और भगवान के सामने शर्मिंदा महसूस करना चाहिए केवल अन्य लोगों के लिए अस्वाभाविक रूप से विनम्रता को अपनाना। इसके बजाय, व्यक्ति को एकांत में अपने आप पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और अपनी प्रार्थनाओं में वही अच्छाई और सुंदरता पैदा करने का प्रयास करना चाहिए जो वह दूसरों के सामने प्रार्थनाओं में पैदा करता है। यह भी छिपे हुए (गुप्त) आडंबर का एक रूप है, हालांकि यह स्पष्ट रूप से महसूस नहीं किया जाता है क्योंकि कोई एकांत में अच्छी तरह से प्रार्थना करता है ताकि कोई दूसरों के सामने अच्छी तरह से प्रार्थना कर सके, इस प्रकार, किसी की नज़र निजी और सार्वजनिक दोनों तरह के लोगों पर होती है। ईमानदारी तब होती है जब मनुष्य और पशु किसी की दृष्टि में समान हो जाते हैं ताकि जैसे पशुओं के सामने अपनी पूजा को सुंदर न बनाया जा सके, वैसे ही दूसरों के सामने भी न करें। आडंबर से दूर रहने का एक ही तरीका है कि रचनाओं के प्रति व्यक्ति का झुकाव पत्थरों के प्रति होना चाहिए, चाहे वह सार्वजनिक रूप से हो या निजी, अन्यथा व्यक्ति को दोनों अवस्थाओं (स्थितियों) में रचनाओं में लिप्त माना जाएगा। यह शैतान का एक अत्यंत सूक्ष्म धोखा है और इसके बारे में शायद ही कभी किसी को सूचित किया जाता है।

चौथी डिग्री, जो सभी डिग्रियों में सबसे सूक्ष्म है, वह यह है कि जब कोई सार्वजनिक सभा में प्रार्थना कर रहा होता है, तो शैतान किसी को विनम्रता अपनाने के लिए राजी नहीं करेगा क्योंकि वह जानता है कि वह उस धोखे में नहीं फंसेगा। अनिच्छा से, शैतान एक से कहता है, "ईश्वरीय भव्यता और महिमा और उसके अस्तित्व की पवित्रता पर विचार करो जिसके सामने तुम आराधना में खड़े हो, और डरो कि वह तुम्हारे दिल को देखता है जबकि तुम उसकी परवाह नहीं करते हो"। यह सुनकर (हृदय में) व्यक्ति तुरंत हृदय में

चौकस हो जाता है और अपने अंगों पर विनम्रता और नम्रता अपनाता है और सोचता है कि यह कार्य शुद्ध ईमानदारी है, भले ही यह एक शुद्ध धोखा हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी ने एकांत में विनम्रता और हृदय की उपस्थिति को अपनाया होगा और तब ईश्वरीय महिमा पर विचार किया होगा, न कि विशेष रूप से किसी सार्वजनिक सभा में। इस धोखे से बचने का एक तरीका यह है कि किसी का हृदय एकांत में ईश्वरीय स्मरण में व्यस्त रहता है जैसा कि एक सार्वजनिक सभा में होता है। ऐसा नहीं होना चाहिए कि जब लोग एकांत में आते हैं तो उसके दिल की स्थिति अलग हो जाती है और तब तक किसी को ईमानदार नहीं माना जाएगा। जब तक किसी का दिल अलग हो जाता है जब लोग जानवरों की तुलना में देख रहे होते हैं, तब तक वह ईमानदारी की लंपटता से दूर रहता है और व्यक्ति का आंतरिक अस्तित्व आडंबर के छिपे हुए बहुदेववाद से गंदा हो जाता है, जो एक अंधेरी काली रात में एक गहरी काली चट्टान पर रेंगने वाली एक गहरी काली चींटी के रेंगने से भी अधिक छिपा होता है, जैसा कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक परंपरा में उल्लेख किया गया है। केवल वही व्यक्ति जिसकी अंतर्दृष्टि गहरी है और जिसे ईश्वरीय रूप से सुरक्षा, सफलता और मार्गदर्शन प्रदान किया गया है, शैतान से सुरक्षित रह सकता है। अन्यथा, शैतान उन लोगों को नष्ट करने पर तुला हुआ है जो ईश्वरीय आराधना करने का संकल्प लेते हैं, और एक पल के लिए भी उनके प्रति लापरवाही नहीं करता, जब तक कि वह उन्हें दिखावा करने के लिए मजबूर नहीं करता, और वह न केवल बड़ी चीजों में ऐसा करता है, बल्कि वह परमेश्वर के सेवकों के हर कार्य पर इस हद तक कड़ी निगरानी रखता है कि वह सांसारिक मामलों को भी नहीं बख्शता है [उन्हें दिखावा करने के लिए]।

सत्यता की उत्कृष्टता और वास्तविकता

सत्यता की उत्कृष्टता: भगवान कहते हैं:

رِجَالٌ صَدَقُوا۟ مَا عَـٰهَدُوا۟ ٱللَّهَ عَلَيْهِ ۖ

"कुछ लोग [उच्च संकल्प के] हैं जो ऐसे हैं कि जब उन्होंने परमेश्वर के साथ वाचा बाँधी, तो वे इसमें सच्चे थे [इसे अक्षरश: और आत्मा में पूरा करके]। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 23)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

إِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ وَالْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَصْدُقُ حَتَّى يُكْتَبَ
عِنْدَ اللَّهِ صِدِّيقًا وَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِي إِلَى الْفُجُورِ وَالْفُجُورَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ وَإِنَّ
الرَّجُلَ لَيَكْذِبُ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ كَذَّابًا

उन्होंने कहा, 'सच्चाई *व्यक्ति* को धार्मिकता की ओर ले जाती है और धार्मिकता उसे स्वर्ग की ओर ले जाती है। और एक व्यक्ति [उच्च संकल्प वाला] तब तक सच्चा होता है जब तक कि उसे ईश्वर के सामने सच्चा (सिद्दीक) नहीं लिखा जाता। और झूठ मनुष्य को बुराई की ओर ले जाता है और बुराई उसे नरक में ले जाती है। और एक व्यक्ति तब तक झूठ बोलता है जब तक कि उसे परमेश्वर के सामने झूठा नहीं लिखा जाता। (द्वारा सुनाई गई *हदीस अब्दुल्ला इब्ने मसूद के अधिकार पर* सहीह बुखारी *और* सहीह मुस्लिम *का* संग्रह करता है [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "चार गुण हैं, यदि एक में हो, तो वह मोक्ष प्राप्त करने का कारण बनता है - सत्यता, लज्जा (विनम्रता), सुंदर आंतरिक चरित्र लक्षण और गुण, और कृतज्ञता"। मुहम्मद इब्न अली कनाफी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "हमने ईश्वर का मार्ग तीन तत्वों पर आधारित पाया है - पहला, सत्य, दूसरा सत्य, और तीसरा न्याय और निष्पक्षता। न्याय हृदय से संबंधित है; सत्य अंगों से संबंधित है और सच्चाई बुद्धि से संबंधित है। ईश्वर ने पैगंबर डेविड (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) को प्रकट किया, "जो मुझे अपने आंतरिक अस्तित्व (बाटिन) में पहचानता है, मैं उस व्यक्ति को सभी सृष्टिओं के सामने सार्वजनिक रूप से सुनिश्चित करता हूं"। एक आदमी जो शिबली की [आध्यात्मिक] सभा में था (भगवान उस पर दया करें) चिल्लाते हुए उठा [*वाजद* या आध्यात्मिक परमानंद की स्थिति में] और कुछ ही क्षणों में दौड़कर टाइग्रिस नदी में कूद गया। शिबली (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "यदि यह व्यक्ति सच्चा है, तो ईश्वर उसे मोक्ष प्रदान करेगा जैसा कि उसने पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) को मुक्ति प्रदान की थी, और यदि वह झूठा है [किसी सांसारिक उद्देश्य के लिए लोगों की नज़र में अच्छा दिखने के लिए आध्यात्मिक परमानंद की स्थिति का दिखावा करने के लिए], भगवान उसे डुबो देंगे जैसे उसने फिरौन को डुबो दिया था। वहूब इब्ने मुनब्बे (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "मैंने टोरा के फुटनोट में लिखे बाईस वाक्य देखे हैं जिन्हें इज़राइल के बच्चों के धर्मी लोग सामूहिक रूप से पढ़ते थे। वे वाक्य हैं: कोई भी खजाना ज्ञान से अधिक लाभदायक नहीं है, कोई भी संपत्ति ज्ञान से अधिक लाभदायक नहीं है, कोई भी वंश क्रोध से अधिक अपमानजनक नहीं है, कोई भी साथी [धर्मी] कर्मों से अधिक सुंदर नहीं है, कोई भी मित्र अज्ञान से अधिक दोष नहीं है, ईश्वर के भय से बड़ा कोई सम्मान नहीं है, कोई भी दया सनक को त्यागने से बड़ी नहीं है, कोई भी कार्य चिंतन से श्रेष्ठ नहीं है, कोई भी पवित्र कार्य धैर्य से श्रेष्ठ नहीं है, कोई भी बुराई अहंकार से अधिक अपमानजनक नहीं है, कोई भी दवा कोमलता (उदारता) से अधिक नरम नहीं है, कोई भी बीमारी मूर्खता से अधिक दर्दनाक नहीं है, कोई भी पैगंबर सत्य से अधिक न्याय-उन्मुख नहीं है, कोई भी तर्क सच्चाई से अधिक शिक्षाप्रद नहीं है, कोई भी गरीबी लालच से अधिक अपमानजनक नहीं है, कोई भी समृद्धि जमाखोरी से अधिक अपमानजनक नहीं है, कोई भी जीवन स्वास्थ्य से बेहतर नहीं है, कोई भी अर्थव्यवस्था पवित्रता से अधिक सुखद नहीं है, कोई

भी पूजा विनम्रता से बेहतर नहीं है, कोई भी संयम संतोष से बेहतर नहीं है, कोई भी रक्षक मौन से अधिक रक्षा कर सकता है, और कोई भी अनुपस्थिति मृत्यु से अधिक निकट नहीं है।

सत्यता की वास्तविकता, इसका अर्थ और डिग्री: सत्य (*सिडक*) शब्द छह अर्थों पर लागू होता है: शब्दों में सत्यता, इरादे में सच्चाई, संकल्प में सच्चाई, दृढ़ संकल्प में सच्चाई, दृढ़ संकल्प को पूरा करने में सच्चाई, कार्यों में सत्यता, और दिव्य मार्ग (दीन) के सभी आध्यात्मिक स्टेशनों (मक़मत) की जांच करने में सच्चाई). जिसे इन छह अर्थों में सत्यता का श्रेय दिया जाता है, वह सच्चा है (सिद्दीक या ज्ञानवादी या ईश्वर का अंतरंग) [यह व्याख्या दर्शाती है कि इन छह मामलों में इसका पालन करने से अपनी समग्रता में सत्यता व्यक्ति को मानवीय उपलब्धि के शिखर पर ले जाती है और मनुष्य द्वारा प्राप्त उच्चतम आध्यात्मिक पदों तक ले जाती है। इसके विपरीत, झूठ और धोखे, बेईमानी, अन्याय, नफरत, आदि जैसी उसकी सभी अभिव्यक्तियों का पालन करने से व्यक्ति नीचे की ओर नीचे की ओर ले जाता है, जो निम्नतम की गहराई तक, पूर्ण अंधकार और घोर विफलता की ओर ले जाता है]। फिर सच्चे की कई डिग्री होती हैं। जो किसी मामले में सच्चा है, उसे उस मामले के संबंध में सच्चा कहा जाए जिसकी सच्चाई एक में पाई जाती है। अब हम इन सभी प्रकारों के बारे में बताएंगे।

सत्यता की पहली डिग्री शब्दों में है: यह सच्चाई समाचार को व्यक्त करने और उन शब्दों में है जो समाचार (या घटनाओं) को संप्रेषित करने के बारे में हैं। समाचार अतीत के साथ-साथ वर्तमान और भविष्य दोनों से संबंधित होता है। इसमें वादों को पूरा करना भी शामिल है। यह प्रत्येक सेवक [ईश्वर के, यानी, मनुष्य] पर निर्भर है कि वह अपने शब्दों की रक्षा करे और जब कोई जीभ से कोई शब्द बोलता है, तो उसे सच्चाई के साथ ऐसा करना चाहिए। यह सच्चाई का सबसे उज्ज्वल और स्पष्ट प्रकार है। जो अपनी जीभ को झूठ से बचाता है और मामलों की वास्तविकता के विरुद्ध बातें नहीं कहेगा, वह "सत्यवादी" कहलाएगा। हालाँकि, इस सच्चाई के दो पहलू हैं: एक संकेतों से दूर रहना है क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि संकेत के माध्यम से व्यक्त किया गया झूठ झूठ नहीं है। संकेतों से दूर रहना इस प्रकार की सच्चाई की पूर्णता है क्योंकि इसका उपयोग झूठ के विकल्प के रूप में किया जाता है। झूठ बोलने पर रोक लगा दी गई है क्योंकि [झूठ में] किसी चीज को इस तरह से समझाया जाता है जो तथ्यों के विपरीत होता है। फिर भी, जीभ (शब्दों) के माध्यम से सच्चाई की पूर्णता एकमुश्त झूठ के साथ-साथ संकेतों से दूर रहना है (ऐसे शब्द जो जानबूझकर दोहरे अर्थ और सूक्ष्म झूठ को व्यक्त करते हैं जो लोगों को गलत निष्कर्ष पर ले जाते हैं), और दूसरी पूर्णता यह है कि कोई जो कुछ भी कहता है, उसे अर्थों के लिए भी सम्मान होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई निम्नलिखित श्लोक पढ़ता है:

وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ

"मैंने अपना मुख (पूर्ण अस्तित्व को पूरे ध्यान के साथ) उस की ओर मोड़ दिया है जिसने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की है। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 79)

हालाँकि, [उपरोक्त श्लोक को ईश्वर से प्रार्थना के माध्यम से कहते समय] यदि किसी का हृदय ईश्वर से भटक जाता है और सांसारिक इच्छाओं और आशाओं में लिप्त होता है, तो यह व्यक्ति झूठा है। इसी तरह, यदि कोई कहता है, "केवल आप ही हम पूजा करते हैं" (कुरान, अध्याय 1, श्लोक 5), या कहता है, "मैं आपका सेवक हूं", लेकिन एक में ईश्वर की दासता के संदर्भ में कुछ भी नहीं है और इसके बजाय, वह अपने निम्न स्व या दुनिया या सांसारिक वासनाओं को अपना भगवान मानता है [उन्हें प्रणाम करने के संदर्भ में], तब ऐसे व्यक्ति को अपने शब्दों में सच्चा नहीं माना जाएगा। जिसके पास किसी चीज की दासता है, वह उसका सेवक बन जाता है [और परिणामस्वरूप अपनी सच्ची स्वतंत्रता खो देता है]। यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) अपने राष्ट्र के विद्रोहियों को संबोधित करते थे, "हे संसार के सेवकों!" पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

تَعِسَ عَبْدُ الدِّينَارِ، تَعِسَ عَبْدُ الدِّرْهَمِ وَعَبْدُ الْحُلَّةِ وَعَبْدُ الْخَمِيصَةِ

"विनाश *दीनार* (सोने की मुद्रा) के सेवक के लिए है, विनाश *दिरहम* (चांदी की मुद्रा) के सेवक के लिए है, और कपड़े के सेवक के लिए है, और भोजन के सेवक के लिए है"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

इस भविष्यसूचक कथन में, लोगों को उस चीज़ से संबंधित बताया गया है जिसके वे अधीन हैं। ईश्वर का सच्चा सेवक वही है जो पहले ईश्वर के अलावा किसी और से मुक्ति प्राप्त करता है। इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के बाद, हृदय [ईश्वर के अलावा अन्य] से खाली हो जाएगा और ईश्वर की दासता में विश्वास इसमें दृढ़ता से समा जाएगा। यह विश्वास व्यक्ति को ईश्वरीय प्रेम में डुबो देगा और ईश्वर के अलावा किसी अन्य के हर कारावास और जाल से मुक्त होने के बाद, वह ईश्वरीय आज्ञाकारिता में व्यस्त हो जाएगा, और किसी का उद्देश्य ईश्वर के अलावा कुछ भी नहीं रहेगा। इस आध्यात्मिक स्टेशन पर पहुंचने के बाद, व्यक्ति उच्च आध्यात्मिक स्थानों पर चढ़ता है जिसे "मुक्ति" कहा जाता है, दूसरे शब्दों में, व्यक्ति अपने दम पर ईश्वर के लिए किसी भी इरादा से मुक्त हो जाता है, बल्कि, ईश्वर किसी के लिए जो भी चाहता है, चाहे वह निकटता के लिए हो या दूरदर्शिता के लिए, वह उससे संतुष्ट हो जाता है और उसका इरादा नष्ट हो जाता है (*फना*) परमेश्वर के इरादे में। ऐसा व्यक्ति दो बार मुक्त होता है: पहली बार, वह ईश्वर के अलावा किसी अन्य से मुक्त हो जाता है, और दूसरी बार, वह अपने निम्न स्व (नफ्स) से मुक्त हो जाता है। उस समय, कोई अपने *निचले स्व के संबंध में* विलुप्त (फना) हो जाता है, और अपने भगवान के संबंध में जीवित रहता है (*बाका* या अस्तित्व) होता है, अर्थात, जब वह एक को हिलाता है तो वह चलता है और जब वह एक स्थिर बनाता है तो स्थिर रहता है। यदि वह किसी व्यक्ति को विपत्ति देता है, तो वह उससे संतुष्ट रहता है क्योंकि किसी भी चीज की खोजने, इच्छा करने, अनुरोध करने, विनती करने या आपत्ति करने की कोई क्षमता नहीं बचती है, बल्कि, वह भगवान के सामने हो जाता है, जैसे स्नान करने वाले के हाथ पर एक मृत शरीर (दफनाने से पहले शवों को धोने की रस्म करने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति)। यह ईश्वर की दासता में सत्यता की तीव्रता

है (*सिद्क फी अल-उबूदियाह*)। सत्य का व्यक्ति वह है जिसका अस्तित्व प्रभु के लिए है, न कि किसी के निम्न स्व के लिए। यह ईश्वर के ज्ञानवादियों या मित्रों और अंतरंग (सिद्दीकीन) की डिग्री है और ईश्वर के अलावा अन्य से मुक्ति ईश्वर के मित्रों और अंतरंगों की श्रेणी में है, बाद में, ईश्वर की दासता प्राप्त होती है। इस डिग्री से पहले, किसी को भी *सादिक* (सत्य के प्रति समर्पित या समर्पित) नहीं कहा जा सकता है।

सच्चाई की दूसरी डिग्री इरादे और इरादे में है: इरादे और इरादे की सच्चाई का सार ईमानदारी है। दूसरे शब्दों में, [परमेश्वर के] सेवक के पास केवल प्रत्येक कार्य में और एक की हर गति या शांति में परमेश्वर के लिए इरादा होता है। यदि निचले स्व (*नफ्स*) के सुख इसके साथ घुलमिल जाते हैं, तो इरादे की सच्चाई शून्य हो जाएगी और ऐसे व्यक्ति को झूठा कहा जा सकता है, जैसा कि ईमानदारी के बारे में एक भविष्यद्वाणी कथन [पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो)] में उल्लेख किया गया है, जिसमें यह कहा गया है कि एक विद्वान से न्याय के दिन पूछा जाएगा कि क्या कोई अपने ज्ञान के अनुसार कार्य करता है जिसके लिए विद्वान कई उद्धृत करेगा एक ने जो काम पूरा किया था। भगवान उससे कहेंगे, "आप झूठ बोल रहे हैं, बल्कि, आप चाहते थे कि लोग आपको 'विद्वान' कहें। यहां विद्वान के कार्यों का खंडन या खंडन नहीं किया गया है, इसके बजाय, किसी के इरादे का खंडन किया गया है [क्योंकि यह विशुद्ध रूप से भगवान के लिए नहीं था]। एक ज्ञानवादी ने कहा कि इरादे में ईश्वरीय एकता का स्वास्थ्य (पूर्ण उपस्थिति) [यह विशुद्ध रूप से ईश्वर के लिए है और किसी सांसारिक या गुप्त स्वार्थी उद्देश्यों के लिए नहीं] सच्चाई है। सच्चाई के एक अर्थ का परिणाम यह है कि इरादा शुद्ध होना चाहिए और वह है बहुत ईमानदारी। एक सच्चे व्यक्ति का ईमानदार होना जरूरी है।

सत्यता की तीसरी डिग्री संकल्प में है: कभी-कभी किसी के पास किसी चीज के लिए संकल्प होता है और [उदाहरण के लिए,] अपने दिल में कहता है, "यदि भगवान मुझे धन प्रदान करते हैं, तो मैं वह सब दान में दे दूंगा या इसका आधा हिस्सा परमेश्वर के मार्ग में खर्च कर दूंगा; यदि ईश्वर मुझे [सरकारी] अधिकार देता है तो मैं निष्पक्षता और न्याय के साथ अपनी आधिकारिक जिम्मेदारियों को पूरा करूंगा और उत्पीड़न करके या सृष्टिओं (लोगों) के प्रति अनुचित और आंशिक रवैया रखकर ईश्वर की अवज्ञा नहीं करूंगा। संकल्प में सत्यता (*सिद्क़ फी अल-अधेमा*) संकल्प में मजबूत होती है [जो कोई हासिल करना चाहता है] और इरादे में दृढ़ होती है। जब हम इन अर्थों में "सत्य" कहते हैं, तो यह उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसका संकल्प अच्छे से संबंधित मामलों में पूर्ण और मजबूत है [और बुराई से संबंधित नहीं है,] और उसमें कोई विचलन (भटकना), कमजोरी या झिझक नहीं है।

सत्यता की चौथी डिग्री दृढ़ संकल्प को पूरा करने में है: कभी-कभी कोई दृढ़ संकल्प करता है क्योंकि ऐसा करने के लिए बहुत अधिक [प्रयास] की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन जब उस दृढ़ संकल्प के अनुसार कार्य करने का समय आता है, और किसी के पास इसे पूरा करने की क्षमता भी होती है, तो निचले

स्व (नफ्स) से वासनाएं [और इच्छाएं] शक्ति प्राप्त करती हैं, जिससे सभी दृढ़ संकल्पों को अलग कर दिया जाता है। यह स्थिति दृढ़ संकल्प को पूरा करने में सत्यता के विपरीत है। भगवान कहते हैं:

رِجَالٌ صَدَقُوا۟ مَا عَـٰهَدُوا۟ ٱللَّهَ عَلَيْهِ ۖ فَمِنْهُم مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُۥ وَمِنْهُم مَّن يَنتَظِرُ ۖ

उन्होंने कहा, 'कुछ लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर के साथ वाचा बाँधी और उसे पूरा किया और वे इसमें सच्चे थे। फिर उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिज्ञाएं पूरी कर ली हैं और कुछ जो उन्हें पूरा करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं [जब उन्हें पूरा करने का समय है]। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 23)

कुछ अन्य लोग भी हैं, जिन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी वाचाओं का उल्लंघन किया और उनके बारे में निम्नलिखित श्लोक प्रकट किया गया:

وَمِنْهُم مَّنْ عَـٰهَدَ ٱللَّهَ لَئِنْ ءَاتَىٰنَا مِن فَضْلِهِۦ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلصَّـٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾
فَلَمَّآ ءَاتَىٰهُم مِّن فَضْلِهِۦ بَخِلُوا۟ بِهِۦ وَتَوَلَّوا۟ وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾
فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِى قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُۥ بِمَآ أَخْلَفُوا۟ ٱللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا۟ يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾

"उनमें से कुछ ऐसे हैं जो परमेश्वर के सामने शपथ लेते हैं कि यदि परमेश्वर उन्हें अपने अनुग्रह से बहुत सारा धन प्रदान करता है, तो वे दान में उदारता से खर्च करेंगे और [उस धन से] बहुत सारे धर्म के काम करेंगे। इसलिए, जब परमेश्वर ने उन्हें अपनी कृपा प्रदान की, तो वे इसके साथ कंजूस हो गए और वे [अपनी प्रतिज्ञाओं का उल्लंघन करने में] इस तरह के विचलन के आदी हो गए। इसलिए, एक दंड के रूप में, परमेश्वर ने उनके दिलों में पाखंड स्थापित किया जो [उसमें] तब तक रहेगा जब तक कि वे [अपनी मृत्यु के बाद परमेश्वर के पास] वापस नहीं चले जाते क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा का उल्लंघन किया था और क्योंकि वे झूठ बोलते थे। (कुरान, अध्याय 9, श्लोक 75-77)

यहाँ दृढ़ संकल्प को वाचा के रूप में, वाचा के उल्लंघन को झूठ बोलने के रूप में और वाचा को पूरा करने को सच्चाई के रूप में माना गया है। यह सत्यता सत्यता की तीसरी [डिग्री] से अधिक मजबूत है क्योंकि कभी-कभी निम्न स्व (*नफ्स*) दृढ़ संकल्प करता है, लेकिन जब कार्य करने का समय होता है, तो वासनाओं की हलचल और उनके साधनों की उपलब्धता, व्यक्ति को दृढ़ संकल्प (संकल्प) को पूरा करने और पूरा करने से रोकती है। अबू सईद अल-हज़ाज़ (उस पर दया करें) ने अपने सपने में देखा कि दो स्वर्गदूत स्वर्ग से उतरे हैं और उनसे पूछा, "सच्चाई क्या है (सिद्दीक)?" उन्होंने जवाब दिया, "किसी की वाचा को पूरा करना सच्चाई है"। स्वर्गदूतों ने इसका पता लगाया और वापस स्वर्ग में चढ़ गए।

सत्यता की पांचवीं डिग्री कार्यों और कार्यों में है: कार्यों (या कार्यों) में सत्यता यह है कि कोई ऐसी स्थिति से बचने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है जहां किसी के बाहरी कार्य [झूठे] किसी ऐसी चीज के पक्ष में बहस नहीं करते हैं जो किसी के आंतरिक अस्तित्व में भी है। कार्यों में सत्यता का अर्थ यह नहीं है कि कार्यों (या कार्यों) को छोड़ दिया जाना चाहिए [किसी की वास्तविक आंतरिक वास्तविकता की तुलना में बाहर की ओर जो प्रकट होता है उसमें पाखंड के डर के कारण], बल्कि किसी का आंतरिक अस्तित्व (बाटिन) ऐसा होना चाहिए जो बाहरी अस्तित्व (जहीर) का पता लगाता है। एक दिखावटी व्यक्ति वह है जो चाहता है कि लोग अपने [बाहरी] कार्यों के आधार पर प्रशंसनीय आंतरिक गुणों से संपन्न व्यक्ति पर विचार करें। बहुत से लोग जो प्रार्थना करते हैं, वे अपनी प्रार्थनाओं में विनम्रता के प्रकटन को अपनाते हैं, यद्यपि उनका उद्देश्य यह नहीं है कि लोग उन्हें देखें, फिर भी, उनकी प्रार्थनाओं के दौरान उनके हृदय [परमेश्वर के] बेपरवाह होते हैं। उन्हें देखने वाला व्यक्ति सोचता है कि वह ईश्वर के सामने खड़ा है [प्रार्थनाओं में ईश्वरीय महिमा के सामने विनम्रता और अधीनता की स्थिति में, हालांकि कोई अपने आंतरिक अस्तित्व में बाजार में खड़ा है और डूबा हुआ है कुछ वासना है। कार्य और कार्य, उनके होने की अवस्था से, उनके आंतरिक अस्तित्व की [कथित] स्थिति को दर्शाते हैं, लेकिन वास्तव में, यह उनके आंतरिक अस्तित्व की [सच्ची] स्थिति नहीं है। इसलिए, वे झूठ में डूबे हुए हैं, और उनसे कार्यों में सच्चाई की मांग की जाती है। कुछ लोग बड़ी शिष्टता, शांति और गरिमा के साथ चलते हैं, हालांकि उनके आंतरिक अस्तित्व में न तो शिष्टता होती है और न ही शांति। ये लोग अपने कार्यों में भी सच्चे नहीं होते हैं, भले ही इनका न तो रचनाओं की ओर झुकाव होता है और न ही दिखावटी प्रदर्शन ही उनका उद्देश्य होता है। केवल वही व्यक्ति उन कार्यों के झूठ से सुरक्षित रह सकता है जिनके आंतरिक और बाहरी प्राणी समान हैं या जिसका आंतरिक अस्तित्व बाहरी अस्तित्व से बेहतर है। इस डर [पाखंड और दिखावटी प्रदर्शन के] कारण, कुछ लोग अपने बाहरी स्वरूप को खराब और कपड़ों को धूल से भरा रखते हैं ताकि कोई भी अपने बाहरी स्वरूप का उपयोग अपने आंतरिक प्राणियों की भलाई के लिए बहस करने के लिए न कर सके। यदि आंतरिक अस्तित्व उनके बाहरी स्वरूप के अनुसार अच्छा नहीं है और लोग उनके बारे में अच्छा सोचते हैं, तो यह झूठ होगा। यदि बाहरी अस्तित्व जानबूझकर आंतरिक अस्तित्व के विपरीत है [ताकि कोई व्यक्ति अपनी चापलूसी रहित आंतरिक वास्तविकता के उल्लंघन में बाहर से अच्छा दिखाई दे] तो इसे आडंबर कहा जाएगा जो ईमानदारी को मिटा देगा, और यदि यह अनजाने में ऐसा करने का मामला है, तो सच्चाई खो जाती है। सच्चाई यह है कि बाहरी और आंतरिक प्राणी एक दूसरे के साथ सामंजस्य और सामंजस्य में हैं। इस विवरण से यह पता चला है कि बाहरी और आंतरिक अस्तित्व के बीच यह सामंजस्य भी एक प्रकार की सच्चाई है।

सत्यता की छठी डिग्री आध्यात्मिक स्टेशनों में है: यह सच्चाई की एक अत्यंत उच्च और दुर्लभ डिग्री है। यह *दिव्य मार्ग (दीन) के आध्यात्मिक* स्टेशनों (*मकामत*) से संबंधित है जैसे कि [ईश्वर का] भय और आशा [ईश्वर में], ईश्वर की पवित्रता [किसी की नजर में], संयम [सांसारिकता से], ईश्वरीय इच्छा को स्वीकार करना, ईश्वर में विश्वास, ईश्वर का प्रेम, आदि। जब लोगों में सच्चाई के कुछ तत्व होते हैं और जब ये तत्व [इन आध्यात्मिक स्टेशनों की वास्तविकताओं की प्राप्ति के रूप में] प्रकट होते हैं, तो यह शब्द

(आध्यात्मिक स्टेशनों में सत्यता) उन पर लागू होता है। इन तत्वों के अलावा, कुछ निहितार्थ और वास्तविकताएं हैं [इन आध्यात्मिक स्टेशनों में सच्चाई की]। जो इन मामलों की वास्तविकताओं तक पहुँचता है वह एक पूर्ण सच्चा व्यक्ति होता है। जब किसी में कोई चीज हावी हो जाती है और उसकी वास्तविकता एक में सिद्ध हो जाती है, तो जो उससे संपन्न होता है उसे सच्चा कहा जाता है। उदाहरण के लिए, यह कहा जाता है कि अमुक आध्यात्मिक प्रयासों में सच्चा होता है, अर्थात आध्यात्मिक प्रयास में प्रमुख होता है। या ऐसा कहा जाता है कि फलाना ईश्वर के भय में सच्चा होता है, दूसरे शब्दों में, ईश्वर-भय की वास्तविकता एक में सिद्ध होती है। भगवान कहते हैं:

لَّيْسَ ٱلْبِرَّ أَن تُوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ قِبَلَ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلْكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّۦنَ وَءَاتَى
ٱلْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ ذَوِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينَ وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ وَٱلسَّآئِلِينَ وَفِى ٱلرِّقَابِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَى ٱلزَّكَوٰةَ وَٱلْمُوفُونَ
بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَٰهَدُوا۟ ۖ وَٱلصَّٰبِرِينَ فِى ٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ وَحِينَ ٱلْبَأْسِ ۗ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ صَدَقُوا۟ ۖ

"धार्मिकता आपके चेहरे को पूर्व या पश्चिम [अनुष्ठान प्रार्थनाओं या भक्ति में] मोड़ने में नहीं है। इसके बजाय, धार्मिकता यह है कि किसी को ईश्वर में और न्याय के दिन और स्वर्गदूतों पर और [दिव्य रूप से प्रकाशित] पुस्तकों और [ईश्वर के] भविष्यद्वक्ताओं पर निश्चितता है, और कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रेम के लिए, रिश्तेदारों, अनाथों, जरूरतमंदों, यात्रियों को [जो अपने स्वयं के धन और संपत्तियों से दूर हैं और इस प्रकार यात्रा के परिणामस्वरूप जरूरतमंद हो जाते हैं] को धन देता है, अनुरोधकर्ता (जिन्हें आप जरूरतों के कारण मदद मांगते हैं), कैद किए गए लोगों को मुक्त करना [उन लोगों को मुआवजा देकर उन्हें जमानत देने के लिए जिनके साथ उन्होंने इस शर्त पर अन्याय किया था कि वे बुराई को छोड़ देंगे और उस बिंदु से एक धर्मी जीवन जीएं], और [ऐसा] एक नियमित रूप से प्रार्थना में भी है, अनिवार्य रूप से गरीब-देय (जकात) का भुगतान करता है और किसी के अनुबंधों को पूरा करता है (वादे, शपथ, प्रतिबद्धताएं) जब अनुबंध किए जाते हैं। और ये वे लोग हैं जो धैर्यपूर्वक गरीबी (कठिनाइयों), बीमारी और युद्ध में बने रहते हैं [जब हमलावरों द्वारा उन पर थोपा जाता है]। ये वही हैं जो सच्चे हैं। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 177)

सत्यवादी की डिग्री: इस संपूर्ण स्पष्टीकरण का परिणाम यह है कि इन [विभिन्न] आध्यात्मिक स्टेशनों में सत्यता की बेशुमार डिग्री है। कभी-कभी, एक सेवक [परमेश्वर का] कुछ मामलों में सच्चाई रखता है लेकिन अन्य मामलों में नहीं। यदि कोई सभी मामलों में सच्चा है, तो ऐसा व्यक्ति वास्तव में सच्चा (सिद्दीक*) है*। परंपराओं में यह वर्णित किया गया है कि ईश्वर ने पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को प्रकट किया था, "जब मैं अपने प्रिय के एक सेवक को बनाता हूं तो मैं एक पर ऐसी कठिनाइयाँ और क्लेश भेजता हूं कि अगर उन्हें पहाड़ों पर भेज दिया जाता है, तो वे उन्हें सहन नहीं कर पाएंगे। फिर मैं देखता हूँ, कि कैसे कोई मेरे क्लेशों पर सच्चाई को अपनाता है। यदि कोई धैर्य रखता है, तो मैं उसे

अपना मित्र और प्रिय बना लेता हूं और यदि कोई जोर से हंगामा करता है और मेरे बारे में रचनाओं से शिकायत करता है तो मैं उसका अपमान करता हूं और ऐसी किसी की परवाह नहीं करता हूं। सत्यता का संकेत यह है कि [परमेश्वर के प्रति] आज्ञाकारिता के क्लेश और कार्य दोनों को [लोगों की आंखों और ज्ञान से] छिपाया जाता है और कोई इसे बुरा मानता है कि सृष्टियां उनके बारे में जागरूक हो जाएं।

अध्याय 18 – सभी कमियों, नकारात्मकताओं और दोषों के लिए खुद को काम करने के लिए आत्म-परीक्षण और आत्म-मूल्यांकन

ईमानदारी से और निष्पक्ष रूप से आत्म-मूल्यांकन करके और स्वयं को और दूसरों के खिलाफ की गई किसी भी ज्यादतियों के लिए खुद को काम करने के लिए अपने कार्यों पर करीब से नज़र डालना, ईश्वरीय मार्गदर्शन, न्याय, निष्पक्षता, आत्म-सुधार और आत्मा की शुद्धि की तलाश करने का एक जबरदस्त तरीका है, जो मनुष्य के मूल की पूर्णता के लिए आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति के लिए अनिवार्य हैं। एक अपरीक्षित जीवन खुद को एक ही गलतियों और बुरे कार्यों को बार-बार दोहराते हुए देखता है। दूसरी ओर, अपने स्वयं के दोषों, कमियों, गलतियों और बुरे कार्यों को खोजने के लिए महत्वपूर्ण आत्म-मूल्यांकन पहले अपने लिए और फिर साथी मनुष्यों के लिए बेहतर के लिए चीजों को बदलने का मार्ग है। यह आपसी संबंधों में सुधार और मजबूती लाता है, और लोगों और राष्ट्रों के बीच सद्भाव और शांति को बढ़ावा देता है। मनुष्य जिस शांति की तलाश करता है वह भीतर से शुरू होता है और आत्म-मूल्यांकन स्वयं के भीतर शुरू होता है। आत्म-मूल्यांकन और स्वयं को कार्य पर ले जाना सत्य के मार्ग पर चलने वाले आध्यात्मिक यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण गुण हैं और व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर सुधार के लिए अपरिहार्य उपकरण हैं। ग़ज़ाली ने चौथे खंड में आठ अध्याय या पुस्तक में अपनी *महान कृति* "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" में इस विषय की एक व्यावहारिक व्याख्या प्रदान की है। इसे यहां संक्षिप्त रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है [24]:

स्व-परीक्षा (*मुराकाबा*) और आत्म-मूल्यांकन (*मुहासाबा*) की व्याख्या

भगवान, उच्च कहते हैं:

وَنَضَعُ ٱلْمَوَٰزِينَ ٱلْقِسْطَ لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۖ وَإِن كَانَ
مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ

"कयामत के दिन, संतुलन का एक पैमाना स्थापित किया जाएगा, ताकि किसी के साथ अन्याय न हो। और यदि किसी का [अच्छा, पवित्र, धार्मिक] काम सरसों के दाने के बराबर होगा, तो हम इसे वहां प्रस्तुत करेंगे [यह देखने के लिए कि सांसारिक जीवन में किसी की अच्छी उपलब्धियां इकट्ठे हुए बुरे लोगों से अधिक हैं या इसके विपरीत], और हम सभी को जवाबदेह ठहराने के लिए पर्याप्त हैं [उनके सांसारिक प्रवास में उनके कर्मों या कुकर्मों के लिए पूर्ण न्याय और निष्पक्षता के साथ उन्हें तदनुसार प्रतिफल देने के लिए]। (कुरान, अध्याय 21, श्लोक 47)

وَوُضِعَ ٱلْكِتَٰبُ فَتَرَى ٱلْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَٰوَيْلَتَنَا
مَالِ هَٰذَا ٱلْكِتَٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّآ أَحْصَىٰهَا ۚ
وَوَجَدُوا۟ مَا عَمِلُوا۟ حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا

"जब कर्मों का रजिस्टर [जो विवेक की उम्र तक पहुंचने के बाद हर किसी के लिए लगातार इकट्ठा किया जाता है] सामने रखा जाता है, तो तुम अपराधियों को उस में लिखी बातों से डरते हुए देखोगे और वे कहेंगे, 'हाय हम पर! कर्मों का यह रजिस्टर इतना अजीब है कि इसने कुछ भी दर्ज होने से नहीं छोड़ा, चाहे वह छोटा हो या बड़ा पाप, और उन्होंने [अपने सांसारिक जीवन में] जो कुछ भी किया, वे उसे उसमें मौजूद पाएंगे, और आपका रब किसी के साथ अन्याय नहीं करेगा या किसी पर अत्याचार नहीं करेगा। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 49)

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوٓا۟ ۚ أَحْصَىٰهُ ٱللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ

"जिस दिन परमेश्वर सब को पुनर्जीवित करेगा [सांसारिक जीवन में उनकी मृत्यु के बाद उन सभी को जीवित करके] तो वह उन सभी को बताएगा जो उन्होंने किया था। परमेश्वर ने उन सभी को संरक्षित किया है, जिन्हें ये लोग भूल गए हैं [अपने सांसारिक प्रवास के दौरान अपने कर्मों और कुकर्मों के संदर्भ में]। और परमेश्वर हर एक चीज का गवाह है [चाहे अच्छा हो या बुरा, या तो गुप्त रूप से या खुले तौर पर दुनिया में किया जाता है]। (कुरान, अध्याय 58, श्लोक 6)

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ ٱلنَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا۟ أَعْمَٰلَهُمْ ﴿٦﴾
فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُۥ ﴿٧﴾

وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ ﴿٨﴾

"उस दिन [न्याय के], लोग समूहों में लौटेंगे ताकि वे सभी उनके कर्मों को देख सकें [उन्होंने अपने सांसारिक जीवन में किए]। इसलिए, जिसने अच्छे कर्म का एक कण [वजन का मूल्य] किया है, वह इसे देखेगा और जिसने बुराई का एक कण [वजन का मूल्य] किया है, वह भी इसे देखेगा [इसलिए, किसी को भी इस दुनिया में किए गए अच्छे या बुरे को हल्के में नहीं लेना चाहिए और इसे कोई परिणाम नहीं मानना चाहिए, क्योंकि जो कुछ भी करता है उसके अलग-अलग डिग्री के परिणाम होते हैं जो तुरंत स्पष्ट नहीं हो सकते हैं]। (कुरान, अध्याय 99, आयत 6-8)

ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

"तब हर किसी को उनके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा बदला मिलेगा, और उन्हें इसमें किसी भी तरह के अन्याय या अन्याय का सामना नहीं करना पड़ेगा। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 281)

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِن سُوٓءٍ تَوَدُّ لَوْ

أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُۥٓ أَمَدًۢا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ ٱللَّهُ نَفْسَهُۥ ۗ

"उस दिन [न्याय के], हर एक व्यक्ति को उन अच्छे कामों को मिलेगा जो उसने सामने किए थे और बुरे काम भी करते थे, और वह अपने और उस दिन के बीच एक बहुत अधिक दूरी बनाए रखना चाहेगा। और परमेश्वर आपको उसके [शक्तिशाली, प्रबल, सर्वव्यापी] होने से डरता है [ताकि आप अपने और दूसरों के लिए सभी गलतियों और सभी नुकसानों से बच सकें]। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 30)

وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِىٓ أَنفُسِكُمْ فَٱحْذَرُوهُ

"और जान लो [और निश्चित रूप से] कि परमेश्वर तुम्हारे दिलों में दबे रहस्यों को जानता है, इसलिए उससे डरो [और तुम्हारे दिलों में दबे रहस्यों के बारे में उसके ज्ञान से, और तुम्हें रोकने और तुम्हें उनके लिए काम करने की उसकी क्षमता से]। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 235)

इन महान छंदों के प्रकाश में, आंतरिक अंतर्दृष्टि के लोगों (*बसीराह*) ने सीखा है कि ईश्वर अपने सेवकों (मनुष्यों) पर हमेशा सतर्क रहता है, और उन्हें उनके कर्मों के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा, और हर छोटी चीज के बारे में पूछताछ की जाएगी [उन्होंने अपने सांसारिक जीवन में किया]। वे यह भी जानते हैं कि इन खतरों से मुक्ति का एकमात्र तरीका निम्न स्व (*नफ्स*) [अपने सभी विचारों, भावनाओं, इरादों, शब्दों, कर्मों और अस्तित्व की स्थिति में] की लगातार जवाबदेही रखना है और सच्चाई से उसके कार्यों पर नजर रखना और निचले स्व को पकड़ना, हर सांस और हर आंदोलन के लिए जवाबदेह ठहराना। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि कोई [दिव्य] जवाबदेही [न्याय के दिन] से पहले निचले स्व की जवाबदेही को पकड़ सकता है, तो न्याय के दिन की जवाबदेही में कमी आएगी, और हर प्रश्न का उत्तर [उस दिन पूछा गया] पहले से ही उसके दिमाग में मौजूद होगा, और किसी का अंतिम अंत [ईश्वरीय न्याय के आधार पर] सबसे अच्छा होगा। जो निचले स्व (*नफ्स*) को जवाबदेह नहीं ठहराता है [विचारों, भावनाओं, इरादों, शब्दों और कर्मों के संदर्भ

में उसके पास जो कुछ भी है], वह हमेशा पछतावे में फंसा रहेगा, और न्याय के दिन किसी की जवाबदेही की अवधि लंबी होगी, और वह अपने पापों (बुराइयों और गलतों) के अपमान में डूबा रहेगा और ईश्वरीय अप्रसन्नता प्राप्त करेगा। आंतरिक अंतर्दृष्टि वाले लोग जानते हैं कि न्याय के दिन के अपमान को रोकने का एकमात्र तरीका हर उस मामले में ईश्वरीय आज्ञाकारिता है जिसका पालन करने की उसने आज्ञा दी है, और परमेश्वर ने धैर्य [विपत्तिओं और वासनाओं के खिलाफ] और सतर्कता [सभी बुराइयों, नकारात्मकताओं और गलतियों के खिलाफ] की आज्ञा दी है।

उन्होंने (आंतरिक अंतर्दृष्टि के लोगों) को शर्तों के अधीन करके अपने निचले स्व पर नजर रखी है, फिर इसकी अवस्थाओं पर [सख्त] निगरानी रखी है, फिर उन्होंने इसे जवाबदेह ठहराया, फिर इसे [इसके गलत कामों के लिए] दंडित किया, फिर आध्यात्मिक रूप से प्रयास किया [इसके सुधार, शोधन, शुद्धिकरण और ईश्वरीय उपस्थिति में स्वर्गारोहण के लिए], फिर इससे सख्ती से निपटा [इसके अपराधों के लिए]। इसलिए, वे सतर्कता (आत्म-परीक्षा और आत्म-मूल्यांकन) के छह स्टेशनों से गुजरे। आइए इन छह स्टेशनों को स्पष्ट करें और इस सतर्कता की वास्तविकता और उत्कृष्टता और इसके होने के लिए आवश्यक कार्यों की व्याख्या करें। इन सभी स्टेशनों की उत्पत्ति आत्म-जवाबदेही है जो निचले स्व (*नफ्स*) को अपनी स्थितियों की स्थितियों और सतर्कता के अधीन करने के बाद प्राप्त की जाती है, और यदि जवाबदेही से नुकसान (निचले स्व द्वारा की गई ज्यादतियों या गलतियों और परिणामस्वरूप किसी के आध्यात्मिक जीवन, दिव्य पथ और ईश्वर के सामने खड़े होने वाले नुकसान को पता चलता है), तो इसे नाराजगी और दंड के अधीन किया जाता है [इसे ईमानदारी के मार्ग पर वापस लाने के लिए, मार्गदर्शन, शोधन और आंतरिक रोशनी]।

निचले स्व की जांच का पहला स्टेशन - उस पर शर्तें निर्धारित करना: जो लोग व्यापार और व्यापार में लगे हुए हैं और व्यावसायिक वस्तुओं में भागीदार हैं, उनका उद्देश्य लाभ के अलावा और कुछ नहीं है। जिस तरह एक व्यवसायी व्यवसाय करने के लिए पहले व्यापार माल [साझेदार को] सौंपकर अपने [व्यवसाय] भागीदार से मदद लेता है, फिर वह लेखांकन करता है, इसी तरह, बुद्धि परलोक के लिए व्यवसायी है और इसका उद्देश्य जिसे लाभ कहा जा सकता है, आत्मा की शुद्धि है क्योंकि किसी का उद्धार और सफलता इस पर निर्भर करती है। भगवान कहते हैं:

قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّىٰهَا ﴿٩﴾

وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّىٰهَا ﴿١٠﴾

"वास्तव में, एक व्यक्ति ने सफलता [सभी हानि और हानियों से मुक्ति और मुक्ति] प्राप्त की जिसने इसे शुद्ध किया (यानी, स्वयं, और विस्तार से हृदय और आत्मा) और निराश हारने वाला वह है जिसने इसे नष्ट कर दिया [पापों, बुराइयों, बुराइयों, दोषों, गलतियों, और सभी प्रकार की नकारात्मकताओं के साथ]। (कुरान, अध्याय 91, श्लोक 9-10)

स्वयं सफल हो जाता है और नेक कर्मों के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करता है और बुद्धि इस व्यवसाय में स्वयं से सहायता लेती है, इसका उपयोग करती है, और इसे उन कार्यों के लिए अधीन करती है जिन पर इसकी शुद्धि निर्भर करती है, ठीक उसी तरह जैसे एक व्यवसायी अपने व्यावसायिक भागीदार से मदद लेता है जो व्यावसायिक लेनदेन के लिए जिम्मेदार होता है, और एक व्यावसायिक भागीदार की तरह, लाभ की इच्छा

से पहले कुछ शर्तें लगाना चाहता है, फिर उस पर नजर रखता है, फिर उसका लेखा-जोखा करता है, फिर लेखांकन में कोई विसंगति या बेईमानी पाता है तो नतीजे लादता है। इसी तरह, बुद्धि इन्हीं चार मामलों को स्वयं से खोजती है। पहली बात यह है कि, उसे (बुद्धि) उस पर (स्वयं) कुछ शर्तें और दायित्व निर्धारित करने चाहिए, उसे सफलता का मार्ग दिखाना चाहिए, और उसे निर्देश देना चाहिए कि वह इस मार्ग से विचलित न हो [जो इसके लिए निर्धारित किया गया है] और दृढ़ता के साथ इसे आगे बढ़ाते रहें। दूसरे, किसी को कभी भी किसी भी समय इस (स्वयं) पर नजर रखने में लापरवाही नहीं करनी चाहिए क्योंकि अगर इसके साथ थोड़ी सी भी लापरवाही की जाती है, तो यह बेईमानी करेगा [इसके लिए निर्धारित कार्यों से विचलित होकर], और यह वास्तविक [व्यावसायिक निवेश] पूंजी को भी बर्बाद कर देगा। स्वयं एक बेईमान कर्मचारी की तरह है जिसे व्यावसायिक सामान सौंपा गया है जो सामान के साथ अकेले होने पर खुद को बेईमानी से नहीं रोकता है। तीसरा, स्वयं को यह देखने के लिए जवाबदेही के अधीन किया जाना चाहिए कि क्या उसने उस पर निर्धारित सभी शर्तों को पूरा किया है। यह एक ऐसा व्यापार है जिसका लाभ स्वर्ग के रूप में किसी को दिया जाएगा और *सिद्रातुल मुंताहा* (ईश्वर के सामने आध्यात्मिक स्वर्गारोहण का उच्चतम बिंदु जिस तक एक इंसान कभी भी पहुंच सकता है) में पैगंबरों का साहचर्य प्रदान किया जाएगा। इस व्यापार का लेखा-जोखा (जवाबदेही) सभी बारीकियों को देखने के साथ ईमानदारी से किया जाना चाहिए, और किसी को सांसारिक लाभ के लिए जो कुछ भी करता है उससे अधिक इसके लाभ पर नजर रखनी चाहिए क्योंकि सांसारिक लाभ इसकी तुलना में बहुत महत्वहीन है। इसके अलावा, सांसारिक लाभ, चाहे वह कितने भी असंख्य क्यों न हो, नहीं रहता। अच्छाई में क्या अच्छा है जो स्थायी नहीं है?

इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि जो ईश्वर और अंतिम दिन (न्याय का दिन) में विश्वास रखता है, वह स्वयं की जवाबदेही निभाए और इसके हर आंदोलन, झुकाव, विचारों और सुखों में सख्ती बरते क्योंकि मानव जीवन की हर सांस एक ऐसा अनमोल रत्न है जिसका कोई समानांतर या विकल्प नहीं है और इसके साथ, कोई भी ऐसा अमूल्य खजाना खरीद सकता है जो अनंत काल तक कभी खत्म नहीं होगा। इन कीमती सांसों (क्षणों) को बर्बाद करना या विनाशकारी कार्यों में उनका उपयोग करना एक ऐसा महत्वपूर्ण नुकसान है जिसे कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति सहन नहीं कर सकता है। किसी को एकांत अपनाना चाहिए ताकि सुबह के दायित्वों को पूरा करने के बाद हर सुबह एक पल बिताया जा सके, अपने आप पर शर्तें निर्धारित की जा सकें, ठीक उसी तरह जैसे एक व्यवसायी अपने व्यापारिक भागीदार से मिलता है और व्यापार माल सौंपने से पहले शर्तें निर्धारित करता है। इस सभा में बुद्धि को स्वयं से कहना चाहिए कि, "मेरे पास अपने जीवन काल के अलावा कोई पूंजी नहीं है, अगर यह बर्बाद हो जाती है तो मैं सब कुछ खो देता और मैं निराश्रित और वंचित रहूंगा, और व्यापार करने और कोई लाभ कमाने की कोई आशा नहीं रहेगी। आज एक नया दिन है, भगवान ने मुझे फिर से एक अवसर दिया है और मेरे जीवन में और अधिक समय जोड़ा है और इसलिए, मुझे एक बड़ा इनाम दिया है। अगर मैं मर गया होता तो मैं चाहता था कि मैं एक और दिन के लिए दुनिया में लौट आऊं, ताकि जब मैं [दुनिया में] लौटूं तो मैं अच्छे काम कर सकूं [और अपने गलत कामों का सुधार कर सकूं]। इसलिए, आपको [हे स्वयं!] अपने आप को मृत समझना चाहिए और [इस पर विचार करें] को दुनिया में वापस भेज दिया गया है [जीवन में वापस आने के बाद]। चौकस रहना! इस दिन को बर्बाद न होने दें [गलत या व्यर्थ प्रयासों में या कुछ भी न करने में]। हर सांस [जो मैं लेता हूं] एक ऐसा सुंदर गहना है जो अमूल्य है! हे स्वयं! आपको पता होना चाहिए कि दिन और रात में (एक दिन के दौरान) चौबीस क्षण होते हैं और यह एक भविष्यद्वाणी के कथन में वर्णित किया गया है कि चौबीस खजाने एक दिन और रात में [एक के सामने] फैले हुए हैं। इनमें से एक खजाने के सामने खोला

जाता है और कोई इस खजाने को अपने धर्मी कर्मों की देदीप्यमान रोशनी से भरा हुआ देखता है जो उस क्षण में किया गया था। इन रोशनी की गवाही, जो संप्रभु राजसी शासक (ईश्वर) की निकटता प्राप्त करने का साधन हैं, व्यक्ति को जबरदस्त खुशी से भर देती है। फिर एक के लिए एक अंधेरा खजाना खोला जाता है जिसमें दुर्गंध और तीव्र अंधेरा होता है। यह उस पल का खजाना है जिसमें किसी ने पाप किया और उस खजाने को देखकर डर जाता है। फिर एक और खजाना खोला जाता है जिसमें कोई सोया हुआ है या लापरवाही से या सांसारिक कार्यों में व्यस्त है। उस खजाने को खाली देखकर पछतावा और अभाव महसूस होता है और इतना पछतावा होता है जैसे कि किसी बड़े व्यवसाय में भारी नुकसान हुआ हो, भले ही कोई चाहता तो नुकसान से बचा जा सकता था। किसी के जीवन के क्षणों के ये खजाने उसके पूरे जीवनकाल के दौरान खुल जाते हैं, इसलिए व्यक्ति को अपने आप से कहना चाहिए, "आज के खजाने को भरने का प्रयास करें और उन्हें अच्छे धर्मों के अनमोल रत्नों से वंचित न छोड़ें जो आपके प्रभुत्व [दिव्य सर्वशक्तिमानता के क्षेत्र में] प्रभुत्व [दिव्य सर्वशक्तिमानता के क्षेत्र में जो किसी को शाश्वत सुख और अनन्त विजय की ओर ले जाते हैं]। आलस्य, सुस्ती और आराम की तलाश को पीछे छोड़ दें और अपने प्रभुत्व को किसी और को सौंपने के लिए अपने प्रभुत्व को छीनने न दें और आपको सिर्फ पछतावा हो। यहां तक कि अगर आप स्वर्ग प्राप्त कर लेते हैं, तो आलस्य के कारण आपको जो नुकसान हुआ होगा, वह आपको शांति प्राप्त नहीं करने देगा, भले ही यह बेचैनी नरक की बेचैनी से कम होगी। एक ज्ञानवादी ने कहा, "हम स्वीकार करते हैं कि पापों को क्षमा किया जा सकता है लेकिन कोई [अभी भी] धर्मी लोगों की [उच्च आध्यात्मिक रैंक और] डिग्री प्राप्त नहीं करेगा [पापों को क्षमा करने के बाद भी]"।

यह समय का उपयोग करने के बारे में स्वयं को सलाह थी [उपयोगी प्रयासों में बुद्धिमानी से]। उसके बाद, इसे सभी सात [शारीरिक] अंगों के बारे में सलाह देनी चाहिए जो आंखें, कान, जीभ, पेट, निजी अंग, हाथ और पैर हैं। व्यक्ति को इन अंगों का नियंत्रण स्वयं को सौंप देना चाहिए और उससे कहना चाहिए, "ये अंग आपकी प्रजा हैं [जिन पर आप शासन कर रहे हैं] और वे इस व्यापार में आपके सेवक हैं और इस व्यापार की परिणति उनके सहयोग से होगी"। नरक के सात दरवाजे हैं और हर अंग एक दरवाजे से बंधा हुआ है। ये द्वार उस व्यक्ति के लिए नियुक्त किए गए हैं जो इन अंगों के माध्यम से परमेश्वर की अवज्ञा करता है। एक व्यक्ति उस द्वार से नरक में प्रवेश करेगा जिसके संबंधित अंग का उपयोग परमेश्वर की अवज्ञा करने के लिए किया गया था [विभिन्न अपराधों, बुराइयों और गलतियों को करके]। इन अंगों को पापों और गलत कामों से बचाने के लिए स्वयं को सलाह देनी चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी को आंख को यह नहीं देखना चाहिए कि उसके लिए क्या अनुमेय या गलत है, किसी के निजी हिस्से को न देखें, न ही किसी आस्तिक को तिरस्कार की दृष्टि से देखें, बल्कि किसी ऐसी चीज को देखने से बचना चाहिए जिसकी आवश्यकता नहीं है [किसी के सांसारिक या अगले सांसारिक लाभ के लिए, भले ही इसे देखना जायज़ हो], क्योंकि परमेश्वर अपने सेवकों को बेकार की नज़रों के लिए भी जवाबदेह ठहराएगा, ठीक वैसे ही जैसे वह बेकार की बातों के बारे में सवाल करेगा। तब इन मामलों से केवल आंखों को रोकना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें उन मामलों में व्यस्त करना भी आवश्यक है जो इस व्यापार के लिए उपयोगी हैं।

ये मामले ऐसे हैं कि उनके लिए आंखें [दिव्य रूप से] बनाई गई हैं, जैसे कि परमेश्वर की रचनाओं को सबक प्राप्त करने की दृष्टि से देखना [उनकी रचना के लिए ईश्वरीय ज्ञान के बारे में और वे अपने सृष्टिकर्ता, महामहिम, महिमा, बुद्धि और शक्ति की ओर कैसे इशारा करते हैं], या उनका अनुसरण करने के संबंध में अच्छे धर्मी प्रयासों को देखना, परमेश्वर की पुस्तक और भविष्यद्वाणी के तरीके को देखना और उनसे लाभ

उठाने के उद्देश्य से ज्ञान की पुस्तकों का अध्ययन करना। अन्य अंगों को भी इसी तरह से उनके दायित्वों के बारे में सूचित किया जाना चाहिए और उन मामलों से रोका जाना चाहिए जो दिव्य मार्ग (दीन) से संबंधित व्यापार को नुकसान पहुंचाते हैं। विशेष रूप से, व्यक्ति को जीभ और पेट से सावधान रहना चाहिए क्योंकि जीभ स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ती है [बात करने और जो कुछ भी कहने की इच्छा है उसे कहने के साथ और अक्सर परिणामों पर विचार किए बिना ऐसा करती है] और उस आंदोलन में इसके लिए कोई कठिनाई नहीं होती है। चुगली करना, पीठ पीछे शिकायत करना, आंतरिक पवित्रता का दावा करना, साथी रचनाओं की निंदा करना, आलोचना करना, लोगों को बुरा मानना है, दूसरों के प्रति नुकसान के लिए प्रार्थना करना, अभद्रता और अश्लीलता बोलना, इन सभी मामलों में जीभ के पाप बहुत गंभीर हैं। इन सभी मामलों को "जीभ के नुकसान की पुस्तक" (अध्याय 4) नामक अध्याय में समझाया गया है। जीभ आमतौर पर इन मामलों के पीछे चल रही है, हालांकि इसके निर्माण का [दिव्य] उद्देश्य दिव्य स्मरण है, सृष्टि को ईश्वरीय स्मरण में संलग्न होने की सलाह देना, शैक्षिक चर्चाओं में भाग लेना, भगवान के सेवकों को ईश्वर (दीन) के मार्ग के बारे में शिक्षित *करना* और उन्हें मार्गदर्शन का मार्ग दिखाना (हिदाय*)*, दो मुसलमानों [या किसी को भी] जो किसी मामले पर आपसी दुश्मनी रखते हैं [आपसी शांति और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए], और इसी तरह के धार्मिक मामलों का संचालन करें [जीभ के माध्यम से, बुरे, हानिकारक और हानिकारक मामलों का संचालन करने के बजाय]। स्वयं के लिए भी यही शर्त होनी चाहिए कि वह पूरे दिन ईश्वरीय स्मरण के अलावा किसी अन्य चीज़ पर जीभ नहीं हिलाएगा क्योंकि एक आस्तिक की वाणी दिव्य स्मरण है और किसी की दृष्टि सबक सीखना है [पूरी पृथ्वी पर बिखरे हुए ईश्वर के संकेतों से, हमारे आपसी व्यवहार में, और हमारी आत्माओं के भीतर], और [विश्वासी की] चुप्पी [दिव्य] पूजा होनी चाहिए। भगवान कहते हैं:

مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ

"कोई एक शब्द भी नहीं बोलता है जब एक तेज दर्शक पास में (*किरमान कटिबीन* या परमेश्वर के दो स्वर्गदूत जो यौवन प्राप्त करने के बाद प्रत्येक मनुष्य के साथ जाते हैं, और किसी के सभी शब्दों और कर्मों को उसके कर्मों के रजिस्टर में दर्ज करने के लिए जिम्मेदार होते हैं, जो उस व्यक्ति को पृथ्वी पर जीवन की परीक्षा में सफल या असफल के रूप में न्याय करने के लिए न्याय के दिन परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किए जाएंगे, और अनन्त जीवन में तदनुसार एक को प्रतिपूर्ति करने के लिए) इसे दर्ज करने के लिए तैयार है। (कुरान, अध्याय 50, श्लोक 18)

पेट को लालच को त्यागने की सलाह दी जानी चाहिए और अनुमेय (हलाल) भोजन से कम खाने के लिए अनुशासित किया जाना चाहिए, संदिग्ध भोजन से संयमित होना चाहिए, वासनाओं से रोकना चाहिए, और केवल आवश्यक मात्रा में संतुष्ट होना चाहिए [भूख से खाने के बजाय]। इस संबंध में, स्वयं को धमकी दी जा सकती है कि यदि यह पेट के बारे में आदेशों का उल्लंघन करता है, तो इसे पेट की सभी वासनाओं से रोक दिया जाएगा [जानबूझकर भूख के माध्यम से], यह इस तरह से प्राप्त किसी भी वासना को खो देगा और उससे कहीं अधिक। सभी अंगों को समान परिस्थितियों के साथ सेट किया जाना चाहिए [जो उनके लिए उपयुक्त हैं]। विभिन्न अंगों के पाप छिपे नहीं हैं, न ही उनकी [ईश्वरीय कार्यों] आज्ञाकारिता है। इसलिए, शर्तों को आसानी से निर्धारित किया जा सकता है, और हर अंग को अनुशासित किया जा सकता है और पापों का त्याग और धार्मिक कर्मों में नियमितता के अधीन किया जा सकता है। बाद में, स्वयं को

दिन में कई बार [दिव्य] आज्ञाकारिता के इन कार्यों की याद दिलाई जा सकती है, फिर व्यक्ति को स्वयं को पूजा के अतिरंजित (वैकल्पिक) कार्यों (नवाफिल) के बारे में चेतावनी देनी चाहिए जो वह बहुतायत में करने में सक्षम है। पूजा के अतिरंजित कार्यों की प्रकृति और साधनों के बारे में विवरण स्पष्ट रूप से स्वयं के लिए लिखा जाना चाहिए। इन स्थितियों की हर दिन आवश्यकता होती है [किसी को शुद्धता के मार्ग पर रखने के लिए], हालांकि, जब मनुष्य उनका आदी हो जाता है और स्वयं भी इन शर्तों को पूरा करने में सहयोग करता है, तो इन शर्तों को निर्धारित करने के साथ जारी रखने की कोई आवश्यकता नहीं बचती है। स्वयं को लापरवाही और आलस्य से डराना चाहिए और इसे एक विद्रोही व्यक्ति की तरह चेतावनी दी जानी चाहिए क्योंकि स्वयं स्वाभाविक रूप से विद्रोही, ईश्वरीय आज्ञाकारिता के प्रति तिरस्कारपूर्ण और [दिव्य] दासता से विचलित है। हालाँकि, इस पर चेतावनी देना और अनुशासन देना प्रभावी है। इस तरह की शर्तों को थोपना स्वयं के पोषण और पालन-पोषण का प्रारंभिक चरण है। यह कार्रवाई करने से पहले जवाबदेही के लिए स्वयं को कार्य करना है और कभी-कभी यह जवाबदेही कार्रवाई के बाद की जाती है। लाभ या हानि का निर्धारण करने के लिए किया जाने वाला मूल्यांकन और उनकी राशि को जवाबदेही (*मुहासाबा*) कहा जाता है। इसी तरह, यदि परमेश्वर का कोई सेवक यह निर्धारित करने के लिए किसी के कार्यों पर नज़र रखता है कि क्या कोई कम हो गया है या ज्यादतियों (गलतियों) को किया है, तो यह आत्म-जवाबदेही में शामिल है। उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "इससे पहले कि आप [ईश्वर के सामने] जवाबदेह ठहराए जाएं, अपने आप की जवाबदेही रखें, और [अपने कर्मों] को तौलने से पहले तौलें, और महान [अदालत] की उपस्थिति के लिए तैयार रहें [न्याय के दिन ईश्वरीय न्यायालय में अपने बारे में महान न्याय के लिए या तो अनन्त उद्धार या अनन्त शाप की प्राप्ति के बारे में]"। व्यक्ति को सभी मामलों को तौलना चाहिए और उन पर अच्छी तरह से विचार-विमर्श करना चाहिए [उनके अंतिम परिणाम को देखते हुए], फिर उन पर कार्य करना चाहिए।

निचले स्व की जांच का दूसरा स्टेशन - चिंतन: जब मनुष्य स्वयं को चेतावनी देने के साथ समाप्त हो जाता है और ऊपर बताई गई शर्तों को निर्धारित कर देता है, तो व्यक्ति को चिंतन पर ध्यान देना चाहिए, दूसरे शब्दों में, अपने कार्यों में अच्छी तरह से विचार-विमर्श करना चाहिए और उन पर एक गहरी नज़र डालनी चाहिए, और इसे [सभी गलतियों से] बचाने के दृष्टिकोण से स्वयं पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए, क्योंकि यदि स्वयं को [अपनी सनक के लिए] अकेला छोड़ दिया जाता है, तो वह विद्रोही हो जाएगा और हानिकारक, हानिकारक और दुर्बल करने वाले तरीके से कार्य करेगा। चिंतन पर आगे की चर्चा से पहले, आइए इसकी उत्कृष्टता के बारे में बताएं।

चिंतन की उत्कृष्टता: पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने महादूत गेब्रियल से एहसान (उत्कृष्टता, सुंदरता और पूर्णता) के बारे में पूछा, जिस पर उन्होंने जवाब दिया:

أَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ

"परमेश्वर की आराधना ऐसे करो जैसे कि तुम उसे देखते हो [और जब तुम उसे अभी तक सच में नहीं देखते हो, तो वह तुम्हें देखता है"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस उमर के अधिकार पर* सहीह *बुखारी और* सहीह *मुस्लिम को इकट्ठा करता* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

["ईसान" या आध्यात्मिकता पैगंबर के शब्दों से प्रतीक है: "भगवान की पूजा करें जैसे कि आप उसे देखते हैं, और जब तक आप उसे अभी तक नहीं देखते हैं [एक जीवित शाश्वत चेतना है] कि वास्तव में वह आपको देखता है"। इसका अर्थ यह है कि एक सिद्ध मनुष्य या तो अपनी आत्मा की आँख से परमेश्वर की गवाही देने की स्थिति में है या यदि कोई ऐसी ऊँची आध्यात्मिक अवस्था तक पहुँचने में सक्षम नहीं है, तो वह सतत चिंतन की स्थिति में है कि वह हमेशा परमेश्वर की दृष्टि में है। यह आध्यात्मिकता किसी की आत्मा को सभी बुरे आंतरिक गुणों, स्वभावों और प्रवृत्तियों जैसे क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, ईर्ष्या, अहंकार, लालच, अन्याय, अधीरता, अहंकार, जातिवाद, कट्टरता, अतिवाद, आत्म-धार्मिकता, प्रतिशोध, कठोरहृदयता, अज्ञानता, कायरता, मनोरंजक बुरे विचारों, प्रसिद्धि/नियंत्रण/शक्ति की लालसा, और सभी नकारात्मक लक्षणों और प्रवृत्तियों से छुटकारा दिलाकर अपनी आत्मा को सुशोभित करने के ठोस प्रयासों के माध्यम से प्राप्त की जाती है; और प्रेम, धैर्य, कृतज्ञता, क्षमा, दया, करुणा, उदारता, विनम्रता, बड़प्पन, ईश्वर और सभी मनुष्यों के प्रति ईमानदारी, ईश्वर में विश्वास, ईश्वरीय स्मरण, आंतरिक शुद्धता, सभी सकारात्मक लक्षण और प्रवृत्तियों जैसे सभी अच्छे [आंतरिक] गुणों को विकसित करके अपनी आत्मा को सुशोभित करना, परिणामस्वरूप ईश्वर के साथ एक अंतरंग संबंध विकसित करना और इस प्रकार जीवन के सभी मामलों में ईश्वरीय सुरक्षा और मार्गदर्शन प्राप्त करना। यह मानव प्राप्ति का उच्चतम स्तर है जिस तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है, ताकि किसी की आत्मा के भीतर अंधेरे को पूरी तरह से समाप्त करके पूर्ण मानव क्षमता का एहसास हो सके और परिणामस्वरूप ज्ञान का दिव्य प्रकाश प्राप्त हो सके जिसमें व्यक्ति जीवन के सभी सवालों के जवाब पाता है जैसे कि मैं कौन हूं, मैं कहां से आया हूं, मैं कहां जा रहा हूं, जीवन का उद्देश्य क्या है, परमेश्वर ने सब कुछ क्यों बनाया, और वास्तव में सच्ची खुशी और सफलता क्या है। यहीं पर ईश्वर के सच्चे साधक ईश्वर-प्राप्ति या ज्ञान की स्थिति प्राप्त करते हैं, जो आध्यात्मिक उपलब्धि का शिखर है, जिसके परिणामस्वरूप पूर्ण आंतरिक शांति, अंतहीन खुशी और चिरस्थायी सफलता मिलती है। भगवान कहते हैं:

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ ٱللَّهَ يَرَىٰ

"क्या यह व्यक्ति नहीं जानता कि परमेश्वर उसे [हर समय उसके बाहरी और आंतरिक प्राणियों में] देख रहा है। (कुरान, अध्याय 96, श्लोक 14)

إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا

"वास्तव में, परमेश्वर को आपके बारे में पूरा अंतरंग ज्ञान है और वह हमेशा आपके बारे में सतर्क रहता है। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 1)

अबू उस्मान अल-मग़रिबी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "आध्यात्मिक मार्ग में, सबसे महत्वपूर्ण चीजें हैं चिंतन, आत्म-जवाबदेही, और ज्ञान के माध्यम से कार्यों का चिंतन, आत्म-जवाबदेही और राजनीति (यानी, सही ज्ञान के अनुसार अपने कार्यों का प्रबंधन करना)"। उन्होंने आगे कहा, "जब आप लोगों के बीच बैठते हैं, तो स्वयं और हृदय को चेतावनी देते हुए बैठें [ताकि वे गलत विचारों, भावनाओं, शब्दों और कर्मों से विचलित न हों], और आपकी सभाओं में लोगों के आने से धोखा न खाएं [जैसा कि वे आपको एक आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में सोचते हैं] क्योंकि वे आपके बाहरी रूप से देखते हैं, जबकि भगवान आपके आंतरिक (आंतरिक अस्तित्व) को देखते हैं"। मुहम्मद इब्न अली तिर्मिज़ी (ईश्वर उस पर दया करे)

ने कहा, "उस प्राणी के लिए अपना चिंतन करो जिससे तुम गायब नहीं हो गए हो, अपनी कृतज्ञता उस व्यक्ति के लिए आरक्षित रखें जिसका आशीर्वाद आपसे कम नहीं होता है, उसके साथ आज्ञाकारिता का संबंध रखें जिससे आप बेखबर नहीं हैं, और उसके प्रति अपनी विनम्रता रखें जिसके प्रभुत्व और शक्ति से आप बच नहीं सकते"। एक ज्ञानवादी ने कहा, "ईश्वर उन लोगों को स्वीकार करेगा जो लगातार अपने दिलों की रक्षा करते हैं, जो उन्हें जवाबदेह ठहराकर अपने आप को जवाबदेह ठहराते हैं [उनसे निकलने वाली हर चीज के लिए], और जो परलोक की यात्रा के लिए निर्भरता तैयार करते हैं"। धुन नून अल-मिश्री (ईश्वर उन पर दया करे) से पूछा गया था, "एक सेवक [ईश्वर का] स्वर्ग कैसे प्राप्त करेगा?" उन्होंने उत्तर दिया, "पांच चीजों के माध्यम से: दृढ़ता [आध्यात्मिक प्रयासों में] जिसमें कोई विचलन नहीं है, प्रयास जिसमें कोई लापरवाही न हो, सार्वजनिक और निजी रूप से ईश्वर का चिंतन (यानी, किसी के हृदय पर ईश्वर की निरंतर दृष्टि को महसूस करना), इसकी तैयारी के साथ किसी की [अपरिहार्य] मृत्यु की प्रतीक्षा करना [ईश्वरीय मार्ग में ईमानदारी से प्रयास करके], और इससे पहले कि इसे [दिव्य रूप से] जवाबदेह ठहराया जाए, स्वयं की जवाबदेही से"।

चिंतन की वास्तविकता और इसकी डिग्री

चिंतन की वास्तविकता यह है कि व्यक्ति पहरेदार (ईश्वर) का ख्याल रखता है और अपना पूरा ध्यान उसकी ओर केंद्रित करता है। *सूफियों* (आध्यात्मिक यात्री और ईश्वरीय मार्ग में चलने वाले) के अनुसार, चिंतन (*मुराकाबा*) हृदय की वह अवस्था है जो एक प्रकार के ज्ञान (दिव्य ज्ञान और निकटता) के माध्यम से प्राप्त होती है। इस अवस्था के कारण अंगों से कुछ क्रियाएं निकलती हैं और कुछ हृदय में जन्म लेती हैं। स्थिति यह है कि हृदय लगातार पहरेदार (ईश्वर) को देखता है, उसके साथ लिप्त होता है, उसकी ओर झुकाव रखता है, और उसके प्रति चौकस रहता है। वह समझ जो इस [आंतरिक आध्यात्मिक] अवस्था को उत्पन्न करती है, वह ज्ञान [और जागरूकता] है कि परमेश्वर हृदय के रहस्यों और उसके छिपे हुए मामलों को जानता है, अपने सेवकों के कार्यों के प्रति हमेशा चौकस रहता है, और अपने आप से निकलने वाले सभी कार्यों से अवगत रहता है। हृदय के रहस्य उस पर स्पष्ट हैं जैसे किसी का बाहरी रूप मनुष्यों के लिए स्पष्ट है, बल्कि, यह परमेश्वर के लिए उससे भी अधिक स्पष्ट है। जब यह समझ सभी संदेहों से रहित निश्चितता बन जाती है, तो यह हृदय पर हावी हो जाती है और उसे ढक लेती है। यह प्रभुत्व [निश्चितता] महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसे कई मामले हैं जिनके लिए मनुष्य को निश्चितता है, लेकिन वे हृदय पर हावी नहीं होते हैं, जैसे मृत्यु की निश्चितता का ज्ञान होता है लेकिन यह हृदय पर हावी नहीं होता है। इसलिए, जब गहरी समझ (ज्ञान) हृदय पर हावी हो जाती है, तो यह व्यक्ति को पहरेदार (ईश्वर) के संबंध में प्रवृत्त करती है और अपने पूरे अस्तित्व की दिशा को चौकीदार की ओर मोड़ देती है। जिन लोगों ने इस ज्ञानवाद में निश्चितता प्राप्त कर ली है, वे ईश्वर के मित्र और अंतरंग हैं।

ईश्वर के अंतरंग (ज्ञानवादी) की डिग्री: ईश्वर के अंतरंग दो प्रकार के होते हैं: *सिद्दीक* (ज्ञानवादी) और *अशब अल-यामीन* (दाहिने हाथ या धार्मिकता के लोग)। इसीलिए, उनका चिंतन भी दो डिग्री का होता है।

एक डिग्री ईश्वर के अंतरंग लोगों से संबंधित है जो ज्ञानवादी (सिद्दीकीन) हैं। यह दिव्य महानता और महिमा का चिंतन है। इस चिंतन का परिणाम यह है कि हृदय ईश्वरीय महिमा की गवाही में डूबा हुआ है और उसके विस्मय से टूट जाता है और उसमें उसके अलावा किसी अन्य की ओर झुकाव करने की थोड़ी सी भी क्षमता नहीं बचती है। इस चिंतन की क्रियाएं हृदय में अंतर्निहित रहती हैं और जहां तक [शारीरिक] अंगों का संबंध है, उनका अनुमेय चीजों [आनंद और आराम] की ओर भी कोई झुकाव नहीं है, वे निषिद्ध और अवैध (अनैतिक और गलत) चीजों की ओर कैसे झुक सकते हैं? जब अंग ईश्वरीय आज्ञाकारिता के कार्यों में सक्रिय हो जाते हैं, तो ऐसा लगता है कि उन्हें अनुशासित और तैयार किया गया है [आध्यात्मिक पथ में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए]। इसलिए, उन्हें सही रास्ते पर रखने के लिए किसी रणनीति [या प्रयास] की आवश्यकता नहीं है, बल्कि, जो विषयों का मालिक है, वह उन्हें अपने दम पर सुधारता है। हृदय [मानव अस्तित्व का] स्वामी है, जब वह प्रभु में डूबा होता है, तो अंग बिना किसी प्रयास के उसके मार्ग पर चलते हैं। हालाँकि, यह हर व्यक्ति की स्थिति नहीं है और यह स्थिति उस व्यक्ति की है जिसे केवल एक ही चिंता है और जिसने व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा अन्य सभी चिंताओं से बचाया है। जो इस डिग्री को प्राप्त करता है वह रचनाओं से इतना बेखबर हो जाता है कि वह अपने आस-पास के लोगों को भी नहीं देख सकता है, भले ही वह बहरा न हो, भले ही वह आंख खुली हो और उनकी बात सुन न सके। आप इन राज्यों को उन लोगों में पाएंगे जो दुनिया के राजाओं (राजनीतिक अधिकारियों) के सम्मान से भरे हुए हैं। कुछ शाही सेवक अपने राजाओं का सम्मान करने और उनकी सेवा करने में इतने तल्लीन रहते हैं कि उनके साथ चाहे कुछ भी हो जाए, उन्हें कुछ भी एहसास या अनुभव नहीं होता है। और यह [अवस्था] विशेष रूप से इन लोगों के लिए आरक्षित नहीं है, बल्कि, वे लोग उसी अवस्था में हैं जो पूरी तरह से सांसारिक कार्य में तल्लीन हैं, या इस हद तक एक विचार में डूबे हुए हैं कि कुछ लोग सोचते समय अपना रास्ता खो देते हैं, या अपनी मंज़िल से बहुत दूर भटक जाते हैं और उन्हें याद नहीं रहता है कि वे कहाँ जा रहे थे और किस उद्देश्य से वे बाहर गए थे। एक ज्ञानवादी ने कहा, "मैं कुछ लोगों के पास से गुजरा जो तीर चला रहे थे [एक खेल के रूप में धनुष के साथ]। एक आदमी उनसे कुछ दूरी पर [अकेला] बैठा था। मैं उससे बात करने के इरादे से उसकी ओर बढ़ा। उसने (मेरे इरादों को भांपते हुए) कहा, 'मुझे परमेश्वर की याद के लिए अधिक प्राथमिकता है [तुमसे बात करने की]'। मैंने उससे कहा, 'तुम अकेले बैठे हो! उन्होंने कहा, 'मेरे साथ मेरे प्रभु और दो [अभिभावक] स्वर्गदूत हैं [जो मेरे कार्यों को दर्ज करने के लिए जिम्मेदार हैं]'। मैंने उनसे पूछा, 'जो लोग तीर चला रहे हैं, उनमें से कौन जीत सकता है?' उसने कहा, 'जिसे परमेश्वर क्षमा करता है'। मैंने उससे पूछा, 'रास्ता कहाँ है [शहर की ओर]?' उसने आकाश की ओर इशारा किया, फिर उठा और दूर चलने लगा, '[हे प्रभु!] आपकी अधिकांश रचनाएँ आपकी परवाह नहीं करती हैं!'"। यह उस व्यक्ति का भाषण है जो परमेश्वर की गवाही देने में डूबा हुआ है, केवल उससे बात करता है, और केवल उसके बारे में सुनता है। ऐसे व्यक्ति को जीभ और अंगों के चिंतन की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि अंग हृदय के आदेश पर चलते हैं।

दूसरी डिग्री [चिंतन] दाहिने हाथ (धार्मिकता) के लोगों में से ईमानदारी के लोगों से संबंधित है। ये वे लोग हैं जिनके ऊपर यह निश्चितता है कि ईश्वर उनकी सभी बाहरी और आंतरिक अवस्थाओं से अवगत है, लेकिन दिव्य वैभव और महिमा को देखकर, उन्हें नशा नहीं करता है (उन्हें उनकी इंद्रियों की धारणाओं से बाहर ले जाता है), बल्कि, उनके हृदय संयम के स्तर पर रहते हैं (इंद्रियों की धारणाओं के साथ संयम) और वे कार्यों और अवस्थाओं के प्रति प्रवृत्त रहते हैं, बल्कि, वे अपने कार्यों में दृढ़ रहते हैं और चिंतन से रहित नहीं होते हैं। हालाँकि, उनमें परमेश्वर के साथ शर्म हावी रहती है और [परिणामस्वरूप,] वे न तो बिना रुके

और सोचे कुछ भी करने की हिम्मत करते हैं, न ही वे कुछ भी करने में संकोच करते हैं [जिसे एक धार्मिक और पवित्र कार्य के रूप में किया जाना चाहिए]। इसके अलावा, वे हर उस कार्य से बचते हैं जो उन्हें न्याय के दिन अपमान के अधीन करेगा। वे न्याय के दिन की प्रतीक्षा नहीं करते हैं, बल्कि, वे दुनिया को अंतिम दिन का क्षेत्र मानते हैं और परमेश्वर को अपनी अवस्थाओं के बारे में जागरूक मानते हैं।

ये परमेश्वर के संबंध में सेवकों (मनुष्यों) के बीच चिंतन की विभिन्न डिग्री हैं। जिसके पास यह डिग्री है, उसे अपने सभी आंदोलनों, शांति, विचारों, क्षणों और क्षमताओं पर नजर रखने की आवश्यकता है। यह घड़ी दो बार होनी चाहिए: पहली कार्रवाई से पहले, और दूसरी कार्रवाई के बाद। कार्य करने से पहले, व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि क्या वह जो कार्य कर रहा है वह विशेष रूप से परमेश्वर के लिए किया जाता है या निम्न आत्मा की इच्छा का पालन करने के लिए या शैतान का अनुसरण करने के लिए किया जाता है। इस बिंदु पर, व्यक्ति को तब तक विचार-विमर्श करना चाहिए जब तक कि सत्य के प्रकाश से सही बात सामने न आ जाए। यदि किसी की गति (कार्य) निम्न स्व की इच्छाओं के लिए है, तो उसे ईश्वर से शर्मिंदा होना चाहिए और उससे दूर रहना चाहिए, फिर उसकी ओर झुकाव के लिए स्वयं की निंदा करनी चाहिए, उस कार्य के बारे में बुरा सोचना चाहिए, और ईश्वर के सामने खुद को अपमानित करने के प्रयास की निंदा करनी चाहिए।

निचले स्व की जांच का तीसरा स्टेशन - कार्रवाई के बाद स्वयं की जवाबदेही: मैमुन इब्न अबी मुहरान (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "एक सेवक [ईश्वर का] तब तक ईश्वर का भय मानने वालों में शामिल नहीं होता जब तक कि कोई स्वयं की जवाबदेही नहीं करता, ठीक उसी तरह जैसे एक व्यवसायी अपने व्यापारिक भागीदार के साथ करता है। दूसरे शब्दों में, दोनों साझेदार अपने व्यवसाय का संचालन करने के बाद लेखांकन करते हैं और लाभ और हानि का निर्धारण करते हैं। हसन अल-बसरी (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "एक आस्तिक स्वयं की रक्षा करता है और ईश्वर के लिए अपनी जवाबदेही करता है। जवाबदेही का बोझ [न्याय के दिन] उन लोगों पर प्रकाश पड़ेगा जो दुनिया में अपने स्वयं की जवाबदेही को पूरा करते हैं और यह उन लोगों के लिए तीव्र होगा जो ऐसा नहीं करते हैं। उसके बाद, उन्होंने आत्म-जवाबदेही को समझाया, "एक आस्तिक को कुछ पसंद है और कहता है, 'मैं आपको पसंद करता हूं और आपको फायदेमंद पाता हूं, हालांकि, आपके और मेरे बीच एक बाधा (विचार-विमर्श और जवाबदेही) खड़ी है'। यह जवाबदेही कार्रवाई से पहले की जाती है। कभी-कभी, आस्तिक गलती करता है, फिर वह अपने आप में लौटता है और पूछता है, '[आपके] इस कार्य (या कार्य) के साथ आपका क्या इरादा था? भगवान की कसम! आपकी ओर से कोई बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा और अगर भगवान ने चाहा तो मैं इस गलती को फिर कभी नहीं दोहराऊंगा। उन्होंने नीचे दी गई कविता की व्याख्या करते हुए आगे कहा:

وَلَآ أُقۡسِمُ بِٱلنَّفۡسِ ٱللَّوَّامَةِ

"'स्वयं के द्वारा जो स्वयं को धिक्कारता है!' (कुरान, अध्याय 75, श्लोक 2)

एक विश्वासी अपने आप को फटकारता है [और निंदा करता है] यह पूछता है, 'इन शब्दों के साथ आपका इरादा क्या था? जब आपने इसे खाया तो आपका क्या इरादा था? इस पेय के साथ आपका उद्देश्य क्या

था? दूसरी ओर, एक गलत काम करने वाला व्यक्ति आगे बढ़ता है [जो कुछ भी उसे पसंद करता है] और किसी भी मामले में स्वयं को फटकारता नहीं है [और वह जो चाहता है वह करता है चाहे वह सही हो या गलत, फायदेमंद हो या हानिकारक, कानूनी या अवैध]"। मलिक बिन दीनार ने कहा, "भगवान अपने सेवक (मनुष्य) पर दया करें जो अपने आप से यह कहता है, 'क्या तुमने अमुक गलती नहीं की है? क्या तुमने फलां अपराध नहीं किया है?', फिर उसे उभारता है और उस पर पट्टा लगाता है और उसे ईश्वरीय पुस्तक के अधीन करता है और इसे अपना मार्गदर्शक बनाता है। यह भी स्वयं की निंदा करने का एक तरीका है।

निचले स्व की जांच का चौथा स्टेशन - गलत करने के बाद स्वयं को दंडित करना: जब एक सेवक [भगवान का] अपने आप को जवाबदेह ठहराता है, और देखता है कि वह पाप (गलतियों) करने से बच नहीं पाया है और भगवान के अधिकारों को पूरी तरह से पूरा नहीं किया है, और यह कि किसी को इसे उस स्थिति में अकेला नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि अगर कोई इसे उस स्थिति में छोड़ देता है, पाप करना (गलतियां) करना उसके लिए आसान हो जाएगा और स्वयं पापों का इस हद तक आदी हो जाएगा कि उनसे दूर रहना बहुत मुश्किल हो जाएगा। यह पूर्ण विनाश के समान है जो स्वयं पापों की आदत विकसित करता है। इसलिए, इसे [इसके अपराध के लिए] दंडित करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यदि कोई वासना के साथ एक संदिग्ध निवाला [भोजन का जिसकी अनुमति संदिग्ध है या पूरी तरह से वर्जित है] खाता है, तो इसका (स्वयं का) दंड भूखा रहना है। यदि कोई किसी ऐसे व्यक्ति या किसी ऐसी वस्तु को देखता है जिसे देखने की अनुमति नहीं है तो उसे कुछ भी न देखकर आंख को दंडित करना चाहिए। इसी तरह सभी शारीरिक अंगों को उनके अपराधों के लिए दंडित करके, उन्हें उनकी वासनाओं से रोकना चाहिए। यह आध्यात्मिक यात्रियों की परलोक की ओर यात्रा करने की पद्धति थी। हसन इब्ने अबी सिनान (ईश्वर उस पर दया करे) एक नई इमारत के पास से गुजरे और [किसी को] से पूछते हुए, "यह कब बनाया गया था?" उसके बाद, उसने अपना ध्यान अपनी ओर लगाया और उससे कहा, "आपने एक बेकार सवाल पूछा है। मैं तुम्हें एक साल के उपवास की सजा दूंगा!" इसलिए, उन्होंने पूरे एक वर्ष के लिए [सुबह से शाम तक] उपवास किया। मलिक इब्न धैघम (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "रबाह अल-कैसी (ईश्वर उन पर दया करे) *अस्र* (सूर्यास्त से पहले देर दोपहर) की नमाज़ के बाद हमारे पास आए और हमारे पिता के बारे में पूछताछ की। हमने उसे बताया कि वह सो रहा है। यह सुनकर उसने कहा, 'क्या यह सोने का समय है? वह इस समय क्यों सो रहा है? " उसने यह कहा और चला गया। हम उसके पीछे एक आदमी को यह कहने के लिए दौड़े कि अगर वह चाहें तो हम अपने पिता को जगा देंगे। वह आदमी वापस आया और कहा, 'वह (रबाह अल-कैसी) कुछ विचारों में इतना तल्लीन था कि उसने मेरी बात भी नहीं सुनी (लेकिन फिर भी मैं संदेश देने के लिए उसका अनुसरण करता था)। मैंने देखा कि वह एक कब्रिस्तान (कब्रिस्तान) में गया और अपने आप को परेशान करने लगा और कहा, 'तुमने क्यों कहा कि वह इस समय सो रहा है? क्या यह कहना आपके लिए बाध्यकारी था? जब चाहे सो सकते हैं। आप इस पर सवाल उठाने वाले कौन होते हैं? आप क्या जानते हैं कि यह सोने का समय है या नहीं? आपने एक ऐसे मामले के बारे में अपना मुंह खोला जिससे आप अच्छी तरह से परिचित नहीं हैं। आपने एक भयानक गलती की है और मैं निश्चित रूप से आपको इसके लिए दंडित करूंगा और वह सजा यह है कि मैं सोने के लिए अपनी पीठ को फर्श पर नहीं छूऊंगा जब तक कि बीमारी मुझ पर न हो या मैं अपना दिमाग खो दूं। धिक्कार है

तुम पर! क्या आपको शर्म नहीं आती? कब तक लोगों को डांटेंगे और अपने ही गुमराह होने से लापरवाह रहेंगे?' यह कहकर वह रोने लगा। उन्होंने मुझे देखा भी नहीं था। मैंने उसे उस अवस्था में छोड़ दिया और वापस लौट आया हूं।

वहाब इब्ने मुनब्बे (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा कि एक व्यक्ति था जो लंबे समय से भगवान की पूजा कर रहा था, उसे ईश्वर की आवश्यकता थी। उन्होंने सत्तर सप्ताह तक आध्यात्मिक संघर्ष इस तरह किया कि उन्होंने एक सप्ताह में केवल सात सूखे खजूर खाए और दिन-रात भगवान की पूजा की। सत्तर सप्ताह के बाद, उसने अपनी आवश्यकता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की, लेकिन यह [दिव्य रूप से] पूरा नहीं हुआ। तब उसने [मामले की वास्तविकता को महसूस किया और] अपने आप से कहा, "अगर आप में कुछ अच्छा था तो आपकी प्रार्थना निश्चित रूप से स्वीकार की गई होती"। उसी समय, एक स्वर्गदूत उसके पास आया और उससे कहा, "ऐ आदम के पुत्र! यह क्षण [बोध का और अपने दोषों के लिए स्वयं को ऊपर उठाने] आपकी पिछली सभी पूजा से बेहतर है। भगवान ने [अब] आपकी आवश्यकता को पूरा किया है [इस अहसास के परिणामस्वरूप और जिम्मेदारी डाल दी है जहां यह था]"। अबू तल्हा (भगवान उनसे प्रसन्न हों) [मदीना में अपने बगीचे में] प्रार्थना करते समय एक पक्षी के बारे में सोचना शुरू कर दिया [उसकी सुंदर चहचहाहट सुनने के बाद]। अपनी प्रार्थना पूरी करने के बाद, उसने अपनी गलती के प्रायश्चित के रूप में दान में अपना बाग दे दिया [अपनी मर्जी से]। समझदार और दूरदर्शी लोग अपने आप को इस तरह दंडित करते थे [इसके अपराधों, बुराइयों और गलत कामों के लिए]। यह आश्चर्य की बात है कि लोग दूसरों को उनके दोषों और गलत कामों के लिए दंडित करते हैं और सोचते हैं कि यदि वे उन्हें क्षमा करते हैं, तो वे विद्रोही और नियंत्रण से बाहर हो जाएंगे, लेकिन दूसरी ओर, आपने स्वयं को [आपमें] उसकी सनक पर छोड़ दिया है, हालांकि यह आपका सबसे बड़ा दुश्मन है और इसका विद्रोहीपन बहुत अधिक है, और इसके विद्रोह से किया गया नुकसान कहीं अधिक है। अन्य लोग अधिक से अधिक, आपके सांसारिक जीवन में मुसीबतें पैदा कर सकते हैं, जबकि आपका स्वयं आपके [परलोक के] अनन्त जीवन का विनाशक है। यदि आप बुद्धि के धन से संपन्न हैं तो आप यह अच्छी तरह से जानते हैं कि परलोक के [शाश्वत] जीवन के अलावा कोई [वास्तविक] जीवन नहीं है, इसमें शाश्वत और शाश्वत आशीर्वाद हैं, और [आपका अपना] स्वयं इस जीवन का विनाशक है, इसीलिए, यह दंड के अधिक योग्य है।

निचले स्व की जांच का पांचवां स्टेशन - आध्यात्मिक संघर्ष: आध्यात्मिक संघर्ष (*मुजाहादा*) यह है कि जब आप अपने स्वयं की जवाबदेही करते हैं और देखते हैं कि स्वयं ने कोई पाप (गलत काम) किया है, तो उसे उन दंडों को सौंप दें जिनका उल्लेख पहले किया गया है। यदि आप देखते हैं कि आत्म आध्यात्मिक दिनचर्या करने में आलसी हो रहा है (*अवराद* और *वज़ाइफ* - दिव्य स्मरण, आह्वान, अतिवादी प्रार्थनाएं, दिव्य पुस्तक का पाठ, ईश्वर के अंतरंग ज्ञान और शिक्षाओं का अध्ययन, पूजा और भक्ति के अन्य कार्य) तो इसे और अधिक आध्यात्मिक कार्यों के साथ बोझ डालें और इसे अन्य लिटनीज़ और आह्वानों (अवराद के लिए प्रतिबद्ध करें)) पिछली चूक और नुकसान की भरपाई करने के लिए। जो लोग परमेश्वर के लिए प्रयास करते थे, वे ऐसा करते थे। जहां तक सवाल यह है कि आपका स्व आपकी बात नहीं मानता है या नियमित रूप से मुकदमेबाजी, आमंत्रण और आध्यात्मिक प्रयास करने से सहमत नहीं है, तो इसे ठीक करने का तरीका क्या है? इसका उत्तर यह है कि आप इसे उन परंपराओं को सिखाते हैं जो आध्यात्मिक रूप से

प्रयास करने वालों की उत्कृष्टता का वर्णन करती हैं, और सबसे फायदेमंद इलाज यह है कि आप अपने सेवकों में से परमेश्वर के सेवक की संगति को अपनाएं जो पूजा में कड़ी मेहनत करते हैं, ऐसे व्यक्ति की बात ध्यान से सुनें और उन पर कार्य करें, ऐसे व्यक्ति के कार्यों का निरीक्षण करें और उनका अनुसरण करें।

निचले स्व की जांच का छठा स्टेशन - स्वयं की निंदा करना: आपका सबसे बड़ा दुश्मन आपके भीतर है और वह स्वयं है। यह [दिव्य रूप से] अपनी सृष्टि में और अपने अंतर्निहित स्वभाव में लिखा गया है कि यह बुराई की आज्ञा देता है, बुराई की ओर झुकता है, और अच्छाई से बचता है। इसे [ईश्वरीय रूप से] आदेश दिया गया है कि इसे [सुधारें और] शुद्ध करें, इसकी कुटिलता को दूर करें, और इसे उत्पीड़न और घृणित चीजों से रोकें। यदि आप इसका पट्टा ढीला करते हैं, तो यह विद्रोही हो जाएगा और नियंत्रण से बाहर हो जाएगा, तो आप इसे प्राप्त नहीं कर पाएंगे। यदि आप इसे डांटते रहते हैं और इसे ईश्वर के प्रतिशोध से डरते हैं, तो वही स्वयं एक ऐसा आत्म बन जाता है जो खुद को धिक्कारता है (*नफ्स अल-लवामा*) [जब वह गलतियों, ज्यादतियों और बुराइयों को करता है] जिसकी भगवान ने शपथ खाई है। यह आशा की जा सकती है कि [सुधार और परिवर्तन की क्रमिक प्रक्रिया के माध्यम से], यह स्वयं [जो स्वयं को धिक्कारता है] आगे विकसित होगा और] वह स्वयं बन जाएगा जो शांति में है (*नफ्स अल-मुतमैन्ना*) जिसे ईश्वर के ईमानदार सेवकों की श्रेणी में शामिल करने की आज्ञा दी गई है, इस तरह से कि भगवान इससे प्रसन्न हों और वह ईश्वर से प्रसन्न हो। [ये सभी एक विद्रोही इकाई से स्वयं के विकास और परिवर्तन के चरण हैं, जिससे ईश्वर प्रसन्न है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, आध्यात्मिक प्रयासों के साथ इसके परिवर्तन के बाद। इसलिए, किसी भी क्षण स्वयं के प्रति लापरवाही न करें, इसके बजाय, इसके साथ तर्क करें, इसकी सलाह दें और इसे बढ़ाएं। आपको तब तक दूसरों को चेतावनी और उपदेश नहीं देना चाहिए जब तक कि आप अपने आप को चेतावनी और उपदेश न दें। परमेश्वर ने यीशु को एक दिव्य रहस्योद्घाटन भेजा (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो), "ऐ मरियम के पुत्र! पहले अपने आप को सलाह दें और जब आप इसे पूरा कर लें, तभी लोगों को सलाह दें, अन्यथा मेरे साथ शर्मिंदा महसूस करें।

इसका तरीका यह है कि, आपको अपने स्वयं पर ध्यान देना चाहिए और उससे कहना चाहिए, "आप कितने मूर्ख और मूर्ख हैं कि आप या अपने आप को बुद्धिमान, विवेकपूर्ण और बुद्धिमान समझते हैं लेकिन आने वाले [अनन्त] जीवन के बारे में कुछ भी योजना नहीं बनाते हैं। स्वर्ग और नरक आपके सामने हैं (आपके सामने) और जल्द ही, आप उनमें से एक के पास जाएंगे। इसके बावजूद, आप खुश हो जाते हैं, जोर से हंसते हैं, व्यर्थ प्रयासों में लिप्त होते हैं, हालांकि, आप जल्द ही एक खतरनाक चरण (सांसारिक अस्तित्व का अंत) का सामना करेंगे। मृत्यु आपका इंतजार कर रही है; यह संभव है कि यह आपको आज या कल अपने चंगुल में फंसा ले। तुम सोचते हो कि मृत्यु तुमसे बहुत दूर है, लेकिन यह संभव है कि यह परमेश्वर के ज्ञान में बहुत निकट हो। क्या तुम नहीं जानते कि मृत्यु आपको अचानक पकड़ लेगी? न तो कोई संदेशवाहक आएगा और न ही कोई [अग्रिम] जानकारी होगी। न तो किसी विशिष्ट तिथि और समय पर अपॉइंटमेंट होगा और न ही मृत्यु के आगमन के लिए कोई विशिष्ट मौसम होगा। यह न तो रात या दिन तक ही सीमित है, न ही यह युवावस्था या बुढ़ापे के लिए विशिष्ट है। बल्कि इंसान की हर सांस आखिरी हो सकती है और हर पल मौत का अग्रदूत हो सकता है। यदि मृत्यु अचानक नहीं आती है तो अचानक एक

बीमारी होती है जो व्यक्ति को मृत्यु की ओर ले जाती है। फिर आपके साथ क्या बात है कि आप [अपरिहार्य] मृत्यु के लिए तैयारी नहीं करते हैं, हालांकि यह आपकी गले की नस से आपके करीब है? क्या तुम परमेश्वर के इन वचनों पर विचार नहीं करते?

ٱقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِى غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ﴿١﴾
مَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِم مُّحْدَثٍ إِلَّا ٱسْتَمَعُوهُ وَهُمْ
يَلْعَبُونَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ۗ

उन्होंने कहा, 'लोगों की जवाबदेही का समय आ गया है, लेकिन वे अभी भी लापरवाही में लिप्त हैं और इससे बेखबर हैं। उनके रब की ओर से जो ताजा सलाह उन्हें मिलती है, वे उसे इस तरह से सुनते हैं कि वे उसका उपहास करते हैं और उनके दिल की ओर झुकाव भी नहीं होता है। (कुरान, अध्याय 21, आयत 1-3)

यदि आप (हे स्वयं!) अपने विश्वास के कारण परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने का साहस करते हैं कि परमेश्वर आपके कार्यों पर नज़र नहीं रख रहा है, तो यह तुम्हारा अविश्वास (कुफ्र*) है*, और यदि तुम उसे अपने कार्यों पर पहरा देने वाला मानने के बाद भी पाप करते हो तो यह तुम्हारे लिए बहुत शर्म और अपमान की बात है! हे स्वयं! यदि आपका कोई नौकर या छोटा भाई-बहन आपकी अवज्ञा करता है तो आप कितने क्रोधित होते हैं और आप इसे कितना बुरा मानते हैं? तो फिर तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम परमेश्वर की नाराजगी और दंड का सामना करने के लिए तैयार हो? क्या आपको लगता है कि आप ईश्वरीय दंड से निपट सकते हैं? बिलकुल नहीं! यह तुम्हारी गलतफहमी है। यदि आप हमारी (ग़ज़ाली) बातों पर विश्वास नहीं करते हैं तो इसे स्वयं अनुभव करें, और थोड़ी देर के लिए चिलचिलाती धूप में खड़े हो जाएं या कुछ समय के लिए गर्म सार्वजनिक स्नान में खुद को बंद कर लें या अपनी उंगली को आग की लौ पर रखें और देखें कि क्या आपके पास इस दर्द को सहने की शक्ति है। क्या आप ईश्वरीय अनुग्रह के हकदार होने के अपने विश्वास से धोखा खाते हैं [भले ही आप बुराइयों के संदर्भ में कुछ भी करें] या आपके विश्वास से कि भगवान को आपकी पूजा की आवश्यकता नहीं है? यदि हम जो सोच रहे हैं वह सही है तो हम आपसे पूछते हैं कि आप सांसारिक मामलों में ईश्वरीय कृपा पर भरोसा क्यों नहीं करते हैं और आप व्यक्तिगत रणनीतियों [और अपने सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए योजनाओं और प्रयासों] के साथ क्यों आते हैं? जब आपके पास एक सांसारिक आवश्यकता होती है जो पैसे के बिना संभव नहीं है, तो आप अपनी जरूरत का पैसा पाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। हम आपसे पूछते हैं कि आप उस समय ईश्वरीय अनुग्रह पर भरोसा क्यों नहीं करते हैं कि वह आपको किसी [छिपे हुए] खजाने की जानकारी देता है या आपकी मदद के लिए अपने सेवकों में से एक को अपने अधीन कर देता है जो आपकी ओर से बिना किसी प्रयास के आपको आवश्यक चीज प्रदान करेगा? क्या तुम लोग सोचते हो कि परमेश्वर केवल परलोक में ही दयालु और उदार है, लेकिन इस संसार में नहीं? तुम लोग यह अच्छी तरह से जानते हो कि परमेश्वर के मार्ग में [इस संसार और परलोक के बीच उसके आचरण में भिन्नताओं के संदर्भ में] कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और संसार का स्वामी और परलोक एक है। यह भी जानते हो मनुष्य को बिना मेहनत किए कुछ

नहीं मिलता। हे अभियुक्त स्वयं! आपका पाखंड चौंकाने वाला है, और आपके झूठे दावे आश्चर्यजनक हैं! आप अपनी जीभ से विश्वास का दावा करते हैं, लेकिन पाखंड का प्रभाव आप पर स्पष्ट है! अब तुम एक कुत्ते की तरह दुनिया की खोज में तल्लीन हो जो हड्डी चबाने में व्यस्त हो, अपने आस-पास के वातावरण से पूरी तरह से बेखबर हो, एक धोखेबाज गर्व के साथ परलोक की पूरी तरह से उपेक्षा कर रहे हो, और [अपरिहार्य] मृत्यु के बाद की [शक्तिशाली] घटनाओं को महत्वहीन मानकर अनदेखा कर रहे हो। यह विश्वास का संकेत (संकेत) नहीं है। ऐसा लगता है कि आपको न्याय के दिन में विश्वास नहीं है, और आप सोचते हैं कि आप मृत्यु के बाद सभी कारावासों और कठिनाइयों से मुक्त हो जाएंगे। आपका यह अनुमान गलत है। भगवान ने कहा:

أَيَحْسَبُ ٱلْإِنسَٰنُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾
أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ﴿٣٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ
ٱلزَّوْجَيْنِ ٱلذَّكَرَ وَٱلْأُنثَىٰٓ ﴿٣٩﴾ أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَٰدِرٍ عَلَىٰٓ أَن يُحْـِۧىَ ٱلْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾

"क्या मनुष्य सोचता है कि कोई अकेला रह जाएगा [दुनिया में किसी के कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराए बिना]? क्या यह व्यक्ति केवल शुक्राणु की एक बूंद [गर्भ में] नहीं था जो बाद में [गर्भ में] जमे हुए रक्त का एक टुकड़ा बन गया। तब परमेश्वर ने इसे [एक मनुष्य में] बनाया, फिर अंगों का निर्माण किया, फिर इसे दो प्रकारों में बनाया: पुरुष और महिला। क्या परमेश्वर [न्याय के दिन] मरे हुओं को ज़िंदा करने में सक्षम नहीं है?' (कुरान, अध्याय 75, श्लोक 36-40)

अगर आपको लगता है कि आप अकेले रह जाएंगे तो यह आपकी अज्ञानता और अविश्वास है। अपने बारे में सोचें कि क्या आप हमेशा वैसे ही थे जैसे आप वर्तमान में हैं? आपकी वास्तविकता क्या थी? आप सिर्फ एक शुक्राणु ड्रॉप थे! आपको अपना अस्तित्व उस [शुक्राणु ड्रॉप] से मिला। तो क्या परमेश्वर के लिए यह असंभव है कि वह तुम्हें मृत्यु के बाद जीवन दे [न्याय के दिन पर] फिर से? यदि आप मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास करते हैं, तो आप इसके लिए तैयारी क्यों नहीं करते? हमें आश्चर्य होता है जब हम देखते हैं कि अगर कोई बच्चा आपसे कहता है कि आपके कपड़ों में बिच्छू है तो आप उसी समय अपने कपड़े निकाल कर फेंक देते हैं और आप कोई सबूत नहीं मांगते हैं या कोई तर्क नहीं मांगते हैं। क्या भविष्यद्वक्ताओं, विद्वानों, बुद्धिमानों और ज्ञानवादियों की बातों का इतना महत्व भी नहीं है कि बच्चे की बात [आपके कपड़ों में बिच्छू के बारे में] आपकी आंखों में है, जिसे दुनिया के सभी लोग अनुभवहीन और पूरी बुद्धि से वंचित कहते हैं? क्या यह बुद्धि है और क्या इसे एक समझदार इंसान का व्यवहार कहा जा सकता है? हम यह इस हद तक कहते हैं कि यदि आपकी स्थिति जानवरों के सामने प्रकट हो जाती है तो वे आपका उपहास करेंगे और आपकी बुद्धि और धारणा पर शोक मनाएंगे!

हे अभागल स्व! यदि तुम इन सभी बातों में विश्वास करते हो और उन्हें सच मानते हो, तो तुम उन पर कार्य करने में संकोच क्यों करते हो, यद्यपि मृत्यु घात लगाकर पड़ी हुई है? यह संभव है कि यह आपको पश्चाताप का अवसर दिए बिना आपको छीन ले। यदि आपको मृत्यु के बारे में निश्चितता है और आप जानते हैं कि यह अचानक आ सकती है तो आप हाथ पर हाथ रखकर खाली क्यों बैठे हैं (कुछ नहीं कर रहे हैं)? यदि हम स्वीकार करते हैं कि भगवान ने आपको जीवन के सौ साल के रूप में राहत दी है, तो क्या यह सौ

साल की लंबी अवधि बिना संघर्ष के पूरी हो सकती है और क्या वास्तव में इसे किए बिना कुछ भी अपने आप हो जाएगा? यदि मान लें कि हम यह स्वीकार करते हैं कि जीवन के अंतिम भाग में आध्यात्मिक प्रयास और प्रयास लाभकारी हैं जो व्यक्ति को उच्च आध्यात्मिक डिग्री तक ले जाते हैं, तो हम कैसे जानते हैं कि इसे पूरा करने के लिए आपके पास जीवन शेष होगा? हमें लगता है कि आप वासनाओं से बचना नहीं चाहते हैं, और आपको खुद को वासना से रोकने में कठिनाइयां मिलती हैं। अगर आप ऐसे दिन का इंतजार कर रहे हैं जब वासना का विरोध करना दर्दनाक नहीं होगा तो ऐसा दिन नहीं आएगा। परमेश्वर ने न तो ऐसा दिन बनाया है और न ही वह एक दिन बनाएगा। स्वर्ग अप्रिय और नापसंद चीजों, कठिनाइयों और कष्टों से घिरा हुआ है और ये चीजें खुद के लिए आसान नहीं हैं।

हे स्वयं! आप [अपने पवित्र] कर्मों को कल तक के लिए स्थगित कर रहे हैं। कितने कल पहले ही आ चुके हैं और आज में परिवर्तित हो गए हैं, लेकिन आप [अनन्त जीवन की तैयारी के बारे में कुछ करने की ओर] थोड़ा भी आगे नहीं बढ़े और अभी भी कल के वादे में व्यस्त हैं? हमें नहीं लगता कि आप किसी भी कल में कार्य कर सकते हैं, बल्कि आप कोई भी [धार्मिक] कर्म करने में असमर्थ हैं क्योंकि वासना एक पेड़ की तरह है जिसकी जड़ें हर दिन मजबूत होती जाती हैं। जब इसे उखाड़ दिया जाता है और फेंक दिया जाता है, जबकि यह सिर्फ एक [छोटा] पौधा या एक कमजोर पेड़ होता है, तो इसमें कोई कठिनाई नहीं होती है। लेकिन जब यह एक विशाल वृक्ष बन जाता है और इसकी जड़ें मिट्टी में फैल जाती हैं और इसकी शाखाएं चौड़ी-चौड़ी और ऊँची आसमान की ओर जाती हैं तो उसे उखाड़ना आसान नहीं रह जाता है। यह ठीक वैसा ही है जैसे एक युवा व्यक्ति किसी पेड़ को उखाड़ने का इरादा रखता है और फिर उसे हर दिन तब तक टालता रहता है जब तक कि कोई बूढ़ा न हो जाए और जब कोई बुढ़ापे में पेड़ को उखाड़ने की कोशिश करता है, तो वह ऐसा करने में असमर्थ होता है। एक तो बूढ़ा हो गया है, दूसरा क्योंकि झाड़ धरती में जड़ जम गया है। इससे पता चलता है कि जिस पेड़ को आप अपनी युवावस्था में उखाड़ नहीं सके थे, उस पेड़ को आप बुढ़ापे में उखाड़ नहीं पाएंगे। वास्तविकता यह है कि, बुढ़ापे का आध्यात्मिक संघर्ष एक जबरदस्त कठिनाई है। हे स्वयं! यदि तुम इन स्पष्ट मामलों को नहीं समझ सकते हो और पूर्वव्यापी (स्थगन) को अपनी आदत नहीं बना सकते हो, तो तुम अपने आप को बुद्धिमान क्यों मानते हो? इससे बड़ी मूर्खता क्या हो सकती है कि जो बातें स्पष्ट हैं उन्हें न समझें? शायद आप कहेंगे, 'मैं नेक कर्मों के साथ नहीं रह सकता क्योंकि मुझे वासनाओं के सुखों का लालच है और कठिनाइयों और कष्टों के साथ धैर्य रखना मेरे लिए बहुत कठिन है'। तुम्हारी यह कहावत बेहद मूर्खतापूर्ण है। यदि तुम वासनाओं और सुखों का लालच रखते हो, तो तुम उन वासनाओं और सुखों की खोज क्यों नहीं करते जो हमेशा और हमेशा बनी रहेंगी, और [इसके अलावा] वे सभी अशुद्धियों और मैलापन से रहित हैं? लेकिन ये वासनाएं स्वर्ग में पाई जाती हैं, दुनिया में नहीं और इन्हें प्राप्त करने का तरीका दुनिया की वासनाओं को नजरअंदाज करना है, अन्यथा, कभी-कभी, एक [संदिग्ध] निवाले के कारण कई निवाले से वंचित होने की आवश्यकता होती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी को कितना लंबा जीवन मिलता है, इस दुनिया का जीवन परलोक के असीमित अनन्त जीवन की तुलना में सीमित है।

यदि आपके लिए कोई शरण है, तो वह ईश्वर की शरण है। यदि उद्धार का कोई मार्ग है, तो वह वह है जो परमेश्वर की ओर जाता है। वह आपका एकमात्र शरणस्थान और उद्धारकर्ता है। वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो आपके उद्देश्य को पूरा कर सकता है, और वह वही है जो आपकी विनती का जवाब दे सकता है। उसके सामने अपना सिर झुकाओ, उसके सामने विनम्रता और नम्रता रखो। जिस हद तक तुम्हारे पास

अज्ञानता है और जिस हद तक तुम्हारे पास पाप [और गलत काम] हैं, उस हद तक उसके सामने रोओ क्योंकि वह व्यक्ति जो उसके सामने रोता है और उसके सामने नम्र होता है, वही है जिस पर वह अपनी दया करता है। वह उसकी मदद करता है जो [उससे मदद मांगता है], वह मजबूर और जरूरतमंदों की प्रार्थना स्वीकार करता है। आज आप उसके प्रति मजबूर हैं [अपनी कठिन परिस्थितियों और जीवन की चुनौतियों से] और उसकी दया के जरूरतमंद बन गए हैं। अन्य सभी रास्ते अवरुद्ध हो गए हैं और अन्य सभी रास्ते संकुचित हो गए हैं। अपने आप को बदनाम करना भी प्रभावी नहीं है। आप जिससे पूछते हैं वह दयालु और दयालु है। उसकी दया में असीम विस्तार है। उसकी उदारता कभी न खत्म होने वाली है, और उसकी क्षमा सर्वव्यापी है। अब अपने दोनों हाथ फैलाओ और कहो, 'हे दयालुओं में से अति दयालु! हे दयालु! हे सहिष्णु! हे महाराज! हे दयालु! मैं पापी हूँ, बुरे कर्म करने वाला हूँ, गलतियाँ करने वाला हूँ। मेरी विद्रोहशीलता सभी सीमाओं को पार कर गई है और मैं बेशर्मी की हद तक पापों में साहस कर रहा हूं। हे परमेश्वर! हर जगह से निराश होने के बाद, मैं तुम्हारे दरबार में तुम्हारे सामने विनम्रता, दीनता, आवश्यकता और गरीबी के साथ रोते हुए उपस्थित हूँ। कृपया मेरी ओर अपनी सहायता करें, मेरी कठिनाई को दूर करें, मुझे अपनी दया के संकेत दिखाएं, मुझे अपनी क्षमा प्रदान करें, और मुझे अपनी सुरक्षा की शक्ति प्रदान करें! हे स्वयं! अपने पिता आदम (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) का अनुसरण करें और रोते हुए और अपनी शर्म और खेद व्यक्त करते हैं [भगवान को]।

यह स्वयं को कार्य करने का वह तरीका है जिसका पालन पवित्र पूर्ववर्तियों ने किया था। ईश्वर से उनकी विनती का उद्देश्य ईश्वरीय स्वीकृति प्राप्त करना था और स्वयं को कार्य करने का उद्देश्य स्वयं को चेतावनी देना था। जो ईश्वर से विनती करने और स्वयं को कार्य करने में लापरवाही करता है, वह स्वयं का सहायक नहीं है, और इस पर ईश्वरीय नाराजगी भी जल्द ही स्पष्ट हो जाएगी [आमतौर पर कठिन परिस्थितियों के रूप में और जीवन में असहनीय चुनौतियों को थोपने के रूप में]।

अध्याय 19- आंतरिक शांति और आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए गहन आंतरिक चिंतन और विचार-विमर्श अनिवार्य हैं

प्रतिबिंब एक और आवश्यक आध्यात्मिक गुण है जो आत्म-जागरूकता और आंतरिक शांति की ओर ले जाता है। ज्ञात में चिंतन और चिंतन, अज्ञात के बारे में जागरूकता के नए रास्ते खोलता है, इस प्रकार मामलों में नई अंतर्दृष्टि विकसित करता है। सत्य के उदय के साथ चिंतन की स्थिति में आध्यात्मिक मामले स्पष्ट हो जाते हैं। चिंतन गहरी आंतरिक जागरूकता, ज्ञान, समझ और ज्ञान को बढ़ावा देता है। मानवीय संबंधों में इसके सकारात्मक प्रभावों को कम करके नहीं आंका जा सकता है क्योंकि चिंतन करने वाला व्यक्ति एक कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है, जो हर कदम से पहले विचार-विमर्श करता है और किसी को नुकसान न पहुंचाने के प्रति सचेत रहता है। इस विषय पर ग़ज़ाली की अद्भुत व्याख्या यहां उनकी *महान कृति" इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे खंड में नौवीं पुस्तक से संक्षिप्त रूप में प्रदान की गई है [25]:

गहरा आंतरिक प्रतिबिंब (*तफक्कुर)* और विचार-विमर्श (*तदब्बूर*)

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की परंपरा में वर्णित है कि एक पल के लिए गहरा आंतरिक चिंतन और विचार-विमर्श पूरे एक वर्ष की पूजा से बेहतर है। ईश्वर ने *फिक्र* (गहरे आंतरिक चिंतन या किसी विषय पर गहराई से, व्यवस्थित रूप से और बहुत विस्तार से विचार करने के लिए क्योंकि यह हृदय का प्रकाश है, आत्मा के लिए पोषण है, और आध्यात्मिक परिवर्तन और उत्थान के मार्ग को रोशन करने वाले ज्ञान का सार है), *तदब्बुर* (सत्य तक पहुंचने के लिए मामलों पर विचार-विमर्श करना या गहराई से देखना), गवाही देना, और निश्चितता। यह स्पष्ट हो दें कि प्रतिबिंब [आध्यात्मिक] रोशनी की कुंजी है, आंतरिक अंतर्दृष्टि का प्रारंभिक बिंदु (*बसीराह),* ज्ञान को पकड़ने के लिए एक जाल, और आध्यात्मिक रत्नों (*मारिफ*) और गहरे आंतरिक अर्थों (*मानी) का शिकार करने का एक साधन है*। लोग आम तौर पर यह नहीं जानते कि कैसे प्रतिबिंबित करना है, किस मायने में प्रतिबिंबित करना है, वे क्यों प्रतिबिंबित करते हैं, प्रतिबिंब से क्या मांगा जाता है, क्या यह अपने आप में खोजा जाता है या यह किसी परिणाम के लिए एक उद्देश्य है? यदि किसी परिणाम के लिए इसकी आवश्यकता है, तो वह

परिणाम क्या है - चाहे वे ज्ञान हों या आंतरिक [आध्यात्मिक] अवस्थाएं या दोनों। इन सभी तथ्यों को स्पष्ट करना एक अभियान है। हम पहले विचार-विमर्श की वास्तविकता की व्याख्या करेंगे, फिर हम इसके परिणाम के बारे में बात करेंगे, फिर हम उन मामलों पर प्रकाश डालेंगे जो प्रतिबिंब के अधीन हैं।

चिंतन की उत्कृष्टता: परमेश्वर ने अपनी पुस्तक में कई स्थानों पर विचार-विमर्श और चिंतन का आदेश दिया है और चिंतन के लोगों की प्रशंसा की है। उसने कहा:

ٱلَّذِينَ يَذۡكُرُونَ ٱللَّهَ قِيَـٰمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمۡ وَيَتَفَكَّرُونَ فِى خَلۡقِ
ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ رَبَّنَا مَا خَلَقۡتَ هَـٰذَا بَـٰطِلًا

"वे वे हैं जो खड़े होकर, बैठे, लेटे हुए परमेश्वर को याद करते हैं, और वे आकाश और पृथ्वी की सृष्टि में विचार-विमर्श करते हैं [और जब वे इस प्रतिबिंब के फल प्राप्त करते हैं, तो वे दृढ़ विश्वास और निश्चितता के साथ कहते हैं], 'हे हमारे प्रभु! आपने इसमें से किसी को भी व्यर्थ में नहीं बनाया है [इसके बजाय, इसके निर्माण के बाद मौजूद हर चीज के पीछे एक शक्तिशाली उद्देश्य और दिव्य ज्ञान है]। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 191)

अब्दुल्ला बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा कि कुछ लोग ईश्वर के अस्तित्व के बारे में विचार कर रहे थे। उन्होंने उनसे कहा, "ईश्वर की रचनाओं पर चिंतन करें क्योंकि आप ईश्वर के बारे में सही आकलन करने में सक्षम नहीं हैं। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू नईम फी अल-हिल्या)*

ओबैद इब्ने उमैर (ईश्वर उन पर दया करे) ने आयशा (पैगंबर की पत्नी) से पूछा, "कृपया मुझे पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के बारे में सबसे अजीब बात के बारे में बताएं। यह सुनकर आयशा (भगवान उससे प्रसन्न हों) रोने लगी और बोली, "उसके बारे में सब कुछ अजीब था! एक रात वह मेरे पास आया जब तक कि मेरे शरीर ने उसके शरीर को नहीं छुआ, फिर उसने कहा, 'हे आयशा! मुझे छोड़ दो ताकि मैं अपने रब की पूजा कर सकूं। उसके बाद उन्होंने चमड़े की थैली में निहित पानी से स्नान किया, फिर प्रार्थना में खड़े हुए और इतना रोया कि उनकी दाढ़ी गीली हो गई [आंसुओं से]। उसके बाद वह साष्टांग प्रणाम करता रहा जब तक कि जमीन [जहाँ वह प्रार्थना के दौरान प्रणाम करता था] गीली नहीं हो गई। फिर [प्रार्थना पूरी करने के बाद] वह अपनी तरफ से झूठ बोला [कुछ आराम करने के लिए] जब तक कि बिलाल (भगवान उससे प्रसन्न हों) उसे सुबह (भोर के बाद लेकिन सूर्योदय से पहले) प्रार्थना के बारे में सूचित करने के लिए [उसके दरवाजे पर] नहीं आया। उसने पूछा, 'हे ईश्वर के दूत! तुम क्यों रो रहे हो? भगवान ने आपके सभी अतीत और भविष्य के पापों को क्षमा कर दिया है। उसने उत्तर दिया, 'हे बिलाल! मैं क्यों नहीं रोऊं? आज रात, परमेश्वर ने मुझे यह पद [ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के माध्यम से] प्रकट किया है:

إِنَّ فِي خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱخْتِلَٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ لَءَايَٰتٍ لِّأُو۟لِى ٱلْأَلْبَٰبِ

वास्तव में, आकाश और पृथ्वी की सृष्टि में, और रात और दिन के बारी-बारी से, बुद्धि के लोगों के लिए संकेत (प्रमाण) हैं। (कुरान, अध्याय 3, श्लोक 190)

फिर उन्होंने कहा, 'जो व्यक्ति इस श्लोक को पढ़ता है लेकिन इस पर विचार नहीं करता है, उसके लिए बहुत नुकसान है। (द्वारा सुनाई गई *रबा के अधिकार पर सहीह इब्ने हब्बन* [ईश्वर उससे प्रसन्न हो])

फ़ुदैल इब्ने आयद (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा, "प्रतिबिंब एक दर्पण है जिसमें आप अपने पवित्र और बुरे कर्मों को देखते हैं"। इब्राहिम (ईश्वर उस पर दया करे) से पूछा गया था, "आप बहुत कुछ सोचते हैं और चिंतन करते हैं"। उन्होंने जवाब दिया, "चिंतन बुद्धि का मूल है"। सुफियान इब्ने आयनिया कहा करते थे, "अगर इंसान में प्रतिबिंब है, तो वह हर चीज से सबक ले सकता है"। तौउस (भगवान उस पर दया करें) ने कहा, "यीशु के शिष्यों (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) ने उससे पूछा, 'हे परमेश्वर की आत्मा! क्या आज पृथ्वी पर आपके जैसा कोई है? उन्होंने जवाब दिया, 'हां। वह व्यक्ति मेरे जैसा है जिसकी वाणी दिव्य स्मरण है, जिसका मौन प्रतिबिंब है, और जिसकी दृष्टि से सबक प्राप्त हो रहा है ('*इब्राहीम*) [जो कोई देखता है]'। बशर (ईश्वर उस पर दया करे) ने कहा, "यदि लोग ईश्वर के वैभव पर विचार करते हैं, तो वे कभी भी ईश्वर की अवज्ञा नहीं करेंगे। हसन अल-बसरी (भगवान उन पर दया करें) ने कहा, "बुद्धि वाले लोग ईश्वरीय स्मरण के माध्यम से चिंतन करने के आदी हो जाते हैं, और प्रतिबिंब के माध्यम से ईश्वरीय स्मरण के लिए जब तक कि उनके दिलों से ज्ञान न निकल जाए"। जुनैद (भगवान उन पर दया करें) ने कहा, "सबसे उत्कृष्ट और श्रेष्ठ सभा वह है जिसमें प्रतिबिंब के घोड़े, दिव्य एकता (तौहीद) के क्षेत्र में सरपट दौड़ते हैं, दिव्य ज्ञान की हवाओं का आनंद लिया जाता है, प्रेम की शराब दिव्य प्रेम के सागर से पी जाती है, और अच्छी राय की एक झलक (*हुस्न अल-धुन*) भगवान पर डाला जाता है"। इमाम शफ़ाई ने कहा, "मामलों को सही ढंग से देखने से व्यक्ति को गलती से बचाया जाता है, राय में दृढ़ता [तथ्यों के आधार पर] व्यक्ति को पछतावे से बचाती है, चिंतन और विचार-विमर्श ज्ञान और सावधानी को दर्शाता है [जो उन्हें नियोजित करता है], बुद्धिमान लोगों के साथ परामर्श दृढ़ता और दृढ़ अंतर्दृष्टि को बढ़ावा देता है, इसलिए, [कुछ करने के लिए] संकल्प करने से पहले प्रतिबिंबित करें, करने से पहले विचार-विमर्श करें, और पूरा करने से पहले परामर्श करें"।

प्रतिबिंब की वास्तविकता और उसके फल: प्रतिबिंब का अर्थ यह है कि हृदय में दो समझ मौजूद होती हैं ताकि वे तीसरी समझ पैदा करें। इसका उदाहरण यह है कि जो सांसारिक जीवन को पसंद करता है, वह यह समझना चाहता है कि परलोक को अपनाने से बेहतर है कि संसार को अपनाने (सांसारिक जीवन में पूरी तरह से डूब जाना), तो उस समझ को प्राप्त करने के चार तरीके हैं। सबसे पहले, यह किसी और से सुनना है कि दुनिया को प्राथमिकता देने, ऐसे व्यक्ति का अनुसरण करने, और इसकी वास्तविकता को समझे बिना और अपने कार्यों के माध्यम से, केवल ऐसा कहने वाले व्यक्ति पर भरोसा रखें और [परिणामस्वरूप,] परलोक की ओर झुकाव रखें। इसे "अनुसरण" (तकलीद) कहा जाता है, न कि "समझ" (*मारीफा*)। दूसरी विधि यह है कि किसी को यह पता होना चाहिए कि उस चीज को प्राथमिकता देना बेहतर है जो बनी रहेगी (स्थायी), और फिर यह जान लें कि परलोक [हमेशा के लिए] रहेगा। इन दो समझों के साथ, तीसरी समझ जो प्राप्त होगी वह यह है कि परलोक को प्राथमिकता देना बेहतर है। यह [तीसरी] समझ पहले दो के बिना संभव नहीं है और इन दो [समझ] को हृदय में प्रस्तुत करने के लिए एक

तीसरी समझ को "प्रतिबिंब", विश्वास, विराम [विचार करना] और विचार-विमर्श के रूप में जाना जाता है। जहां तक विचार-विमर्श, विराम और चिंतन का सवाल है, ये अलग-अलग शब्द हैं जो एक ही अर्थ का अर्थ रखते हैं। प्रतिबिंब का लाभ यह है कि यह ज्ञान को बढ़ाता है और वह समझ प्रदान करता है जो पहले मौजूद नहीं थी। जब ज्ञान और बुद्धि के बिंदु दिल में इकट्ठा होते हैं और एक निश्चित क्रम में एक साथ आते हैं तो यह एक नई समझ पैदा करता है। दूसरे शब्दों में, एक समझ दूसरी समझ का फल या परिणाम है, और जब नई समझ एक अलग [पिछली] समझ के साथ जुड़ जाती है तो इससे एक और नई समझ पैदा होती है। ये परिणाम और फल, ज्ञान, समझ और प्रतिबिंब, इस तरह से तब तक बढ़ते हैं जब तक कि मृत्यु इसे समाप्त नहीं कर देती या कुछ बाधाएँ आती हैं जो इस मार्ग को अवरुद्ध करती हैं। यह विधि किसी ऐसे व्यक्ति के लिए फायदेमंद है जो ज्ञान से लाभ प्राप्त करता है और प्रतिबिंब के तरीके से परिचित है। अधिकांश लोग ज्ञान की प्रचुरता से वंचित हैं क्योंकि उनके पास पूंजी नहीं है, दूसरे शब्दों में, उनके पास वे समझ नहीं हैं जो अन्य [नई] समझ को जन्म देती हैं। इसका दृष्टांत एक ऐसे व्यक्ति का है जिसके पास व्यावसायिक सामान नहीं है और [परिणामस्वरूप,] लाभ प्राप्त करने से वंचित रहता है। कुछ लोगों के पास समझ की पूंजी होती है, लेकिन वे न तो उनके सही उपयोग से परिचित होते हैं और न ही वे जानते हैं कि अन्य समझ को बढ़ावा देने के लिए उन्हें सही क्रम में कैसे रखा जाए। इसलिए, वे अपनी पूंजी बढ़ाने में सक्षम नहीं हैं [इस प्रकार यह स्थिर हो जाता है]। इस पूंजी का उपयोग करने और एक समझ को दूसरे से निकालने के लिए इसका उपयोग करने की विधि स्वाभाविक रूप से दिव्य रोशनी के माध्यम से हृदय में प्रकट होती है क्योंकि यह भविष्यवक्ताओं के सामने प्रकट हुई थी, लेकिन आजकल यह दुर्लभ हो गया है। [समझ की पूंजी का उपयोग करने का सही तरीका] कभी-कभी अभ्यास और सीखने से आता है और, यह अब सबसे आम तरीका है। कभी-कभी ऐसा होता है कि चिंतन करने वाले व्यक्ति के पास समझ होती है और उन समझों के परिणाम और फल भी होते हैं, लेकिन वह इसे प्राप्त करने की भावना को नहीं जानता है और न ही कोई इसे दूसरों के सामने व्यक्त करने का तरीका जानता है क्योंकि वह व्यक्त करने की क्षमता से वंचित है।

प्रतिबिंब के फल और परिणाम: इस चर्चा का सारांश यह है कि प्रतिबिंब का अर्थ तीसरे को प्राप्त करने के लिए हृदय में दो समझ लाना है। चिंतन के फल (परिणाम) ज्ञान, आंतरिक अवस्थाएं, या [अच्छे, महान और धार्मिक] कार्य, या तीनों हो सकते हैं। हालाँकि, इसका विशेष परिणाम केवल ज्ञान है। निश्चित रूप से, जब हृदय द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है, तो हृदय की स्थिति बदल जाती है, और जब हृदय की स्थिति बदलती है, तो [शारीरिक] अंगों से निकलने वाली क्रियाएं भी बदल जाती हैं, जैसे कि क्रिया [आंतरिक] अवस्था के अधीन है, और राज्य ज्ञान के अधीन है, और ज्ञान प्रतिबिंब के अधीन है, और प्रतिबिंब उन सभी की उत्पत्ति है जो अच्छा है और उनकी कुंजी [जो उन्हें खोलती है]। यह प्रतिबिंब की उत्कृष्टता को सिद्ध करता है और इससे यह भी ज्ञात होता है कि प्रतिबिंब दिव्य स्मरण से श्रेष्ठ है क्योंकि प्रतिबिंब में कुछ अतिरिक्त के साथ दिव्य स्मरण भी होता है। हालाँकि, हृदय का दिव्य स्मरण [केवल जीभ के विपरीत] अंगों के कार्यों से बेहतर है। फिर भी, प्रतिबिंब सभी कार्यों से श्रेष्ठ है, इसलिए, यह कहा गया है कि चिंतन का एक क्षण पूजा के पूरे वर्ष से बेहतर है। कुछ बुद्धिमान लोग कहते हैं कि चिंतन का व्यक्ति वह है जो हृदय को निंदनीय चीजों (गुणों और चरित्र लक्षणों) से प्रशंसनीय चीजों (गुणों और चरित्र लक्षणों) में स्थानांतरित (हिलाता है), और इसे लालच से संयम [सांसारिकता से] और संतोष में बदल देता है। कुछ लोग कहते हैं कि चिंतन का तात्पर्य [दिल की आंख से ईश्वर] (*मुशहादा)* और पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर (तकवा) के भय *को देखना है*।

यदि आप प्रतिबिंब के माध्यम से राज्य के परिवर्तन की स्थिति को जानना चाहते हैं, तो इसका उदाहरण वही है जो पहले उल्लेख किया गया है, परलोक के संबंध में। उस उदाहरण पर विचार करने से यह पता चला है कि परलोक को प्राथमिकता देना बेहतर है। जब यह समझ हमारे दिलों में निश्चितता के साथ मजबूती से बैठ जाती है, तो वे स्वयं परलोक के प्रेम की ओर और दुनिया में [सांसारिकता से] संयम की ओर झुक जाते हैं। हमने इस झुकाव को [आंतरिक आध्यात्मिक] स्थिति के साथ माना है। इस समझ से पहले, हृदय की स्थिति ऐसी थी कि वह क्षणिक और अल्पकालिक (दुनिया) को पसंद करता था और इसके प्रति झुकाव रखता था और परलोक से मोहभंग हो गया था और इसके प्रति उसकी बहुत कम प्रवृत्ति थी। हालाँकि, जब यह समझ प्राप्त हुई, तो हृदय की स्थिति पूरी तरह से बदल गई, उसके इरादे और उसके झुकाव में एक परिवर्तन हुआ। फिर इरादे में परिवर्तन ने अंगों को दुनिया को एक तरफ रखने और परलोक के कार्यों की ओर झुकाव करने के लिए मजबूर किया।

प्रतिबिंब की पांच डिग्री

प्रतिबिंब के पांच स्तर हैं - पहला एक साथ लाना, दूसरे शब्दों में, दो समझ को एक साथ लाना है [पहले से] दिल में; दूसरा प्रतिबिंब है जो एक नई समझ प्राप्त करना है जो कि उद्देश्य है, पहली दो समझ से; तीसरी डिग्री समझ के बाद की मांग को प्राप्त करना और उससे हृदय को रोशन करना है; चौथी डिग्री यह है कि समझ की रोशनी प्राप्त करने के बाद हृदय अपनी पिछली स्थिति से बदलता और बदल जाता है; और पांचवीं डिग्री यह है कि [शारीरिक] अंग हृदय की उसकी परिवर्तित अवस्था के अनुसार सेवा करते हैं। जिस तरह लोहे के खिलाफ एक पत्थर को मारने से आग पैदा होती है जो एक अंधेरी जगह को अपने प्रकाश से रोशन करती है और आंख उसे देखने लगती है जबकि वह पहले इसे नहीं देखती थी और अंग कार्रवाई के लिए जागते हैं, उसी तरह समझ की रोशनी के अग्नि पत्थरों की भी यही स्थिति है। इस अग्नि पत्थर का नाम प्रतिबिंब है जो दो समझ को जोड़ता है, जैसे आग और पत्थर के संयोजन और दोनों के बीच एक विशिष्ट संयोजन का उपयोग किया जाता है, और जैसे लोहे को एक विशिष्ट तरीके से पत्थर से मारा जाता है, जिससे समझ का प्रकाश बनता है। जैसे आग लोहे से उत्पन्न होती है और हृदय अपनी रोशनी से रूपांतरित हो जाता है और उस दिशा की ओर झुक जाता है जिसकी ओर वह पहले झुका हुआ नहीं था, और इस आग के प्रकाश में, आंख उन चीजों को देखने में सक्षम होती है जिन्हें वह पहले देखने में सक्षम नहीं थी।

फिर भी, प्रतिबिंबों का फल ज्ञान और अवस्था दोनों हैं। ज्ञान की न तो कोई सीमा है और न ही हृदयों पर उतरने वाली [आंतरिक आध्यात्मिक] अवस्थाओं की कोई सीमा है। इसीलिए, यदि कोई आध्यात्मिक यात्री उन मामलों को समेटना चाहता है जहां चिंतन की गुंजाइश है तो ऐसा करना संभव नहीं होगा क्योंकि चिंतन के असंख्य अवसर हैं और इसके फलों की कोई सीमा नहीं है। हालाँकि, यह उन सभी अवसरों को लिखित रूप में संक्षेप में कैद करने का हमारा प्रयास होगा जो दिव्य मार्ग (दीन) में प्रयासों से संबंधित हैं ताकि हम चिंतन के अवसरों के बारे में सूचित हो सकें।

चिंतन के अवसर या मार्ग: यह ज्ञात हो कि चिंतन कभी-कभी किसी ऐसे मामले में होता है जो दिव्य मार्ग (दीन) से संबंधित होता है और कभी-कभी ऐसे मामले में होता है जो ईश्वरीय मार्ग से जुड़ा नहीं होता है। यहां हमारी चिंता ईश्वरीय मार्ग से संबंधित मामलों की है, इसलिए हम यहां अन्य मामलों की अवहेलना करते हैं। दिव्य मार्ग उस मामले को संदर्भित करता है जो सेवक और भगवान के बीच है। एक सेवक [ईश्वर के] सभी प्रतिबिंब या तो किसी के स्वयं के आंतरिक गुणों या आंतरिक अवस्थाओं से संबंधित हैं या वे ईश्वर या उसके दिव्य गुणों और कार्यों के बारे में हैं। जो लोग परमेश्वर के मार्ग पर चल रहे हैं और उनसे मिलने के इच्छुक हैं, उनकी स्थिति प्रेमियों की स्थिति से अधिक मिलती-जुलती है। मान लीजिए कि एक सच्चा प्रेमी है और कहें कि एक व्यक्ति जो पूरी तरह से प्यार में डूबा हुआ है, ऐसे व्यक्ति का प्रतिबिंब या तो प्रिय से संबंधित होता है या स्वयं से। यदि कोई प्रिय पर विचार करता है, तो वह या तो प्रिय की सुंदरता पर विचार करता है, या प्रिय के अस्तित्व में ताकि कोई उस प्रतिबिंब से आनंद प्राप्त कर सके, या उन गुणों पर प्रतिबिंबित कर सके जिन्हें प्रिय की अच्छाई और पूर्णता माना जाता है ताकि प्रतिबिंब का आनंद और भी बढ़ जाए। यदि कोई अपने स्वयं पर विचार करता है तो यह दो अवस्थाओं से रहित नहीं है: एक या तो उन [व्यक्तिगत] गुणों को दर्शाता है जो प्रिय के पास अच्छे नहीं हैं और जो प्रिय की नजर में उसे अपमानित और नीचा दिखाते हैं, या कोई उन गुणों को दर्शाता है जो प्रिय को पसंद आते हैं जो किसी को प्रिय के करीब लाते हैं। इनके अलावा किसी अन्य मामले पर चिंतन करना, प्रेम से बाहर है और नुकसान का कारण है क्योंकि एक सच्चा प्रेमी वह है जो पूरी तरह से प्रिय के प्यार में डूबा रहता है, इस हद तक कि किसी के दिल में किसी अन्य विचार या प्रतिबिंब के लिए कोई जगह नहीं बची है। ईश्वर का प्रेमी भी ऐसा ही होना चाहिए और किसी की दृष्टि और चिंतन प्रिय से अधिक नहीं होना चाहिए।

प्रथम प्रकार का प्रतिबिंब - स्वयं से संबंधित: जब तक सेवक [ईश्वर का, यानी, मनुष्य] का प्रतिबिंब ऊपर वर्णित चार प्रकारों पर केंद्रित रहता है (सभी मानव प्रतिबिंब या तो अपने स्वयं के आंतरिक गुणों या अवस्थाओं से संबंधित हैं या वे ईश्वर या उसके दिव्य गुणों और कार्यों के बारे में हैं), तब तक कोई भी प्रेम के उद्देश्य से अलग नहीं होता है। अब हम चारों प्रकारों की अलग-अलग जांच करेंगे। आइए अपने स्वयं के स्वयं के राज्यों और गुणों (आंतरिक चरित्र लक्षणों) को प्रतिबिंबित करने से संबंधित पहले प्रकार को देखें ताकि आप अच्छे और बुरे के बीच अंतर कर सकें। तब सभी मामले जो परमेश्वर द्वारा पसंद या नापसंद किए जाते हैं, दो प्रकार के होते हैं: बाहरी कार्य जैसे [दिव्य] आज्ञाकारिता और पापों के कार्य, और आंतरिक कार्य जैसे कि उद्धारक आंतरिक गुण या विनाशकारी आंतरिक गुण (हृदय के चरित्र लक्षण)। इन सभी आंतरिक गुणों का केंद्र हृदय है। आज्ञाकारिता और पापों के कार्यों में, कुछ ऐसे हैं जो सात अंगों से संबंधित हैं और कुछ पूरे शरीर से संबंधित हैं जैसे माता-पिता की अवज्ञा करना या एक अस्वीकार्य स्थान पर रहना। जिन चीज़ों को परमेश्वर नापसंद करता है उन्हें तीन तरीकों से प्रतिबिंबित किया जाना चाहिए: पहला, क्या परमेश्वर इन चीज़ों को पसंद करता है या नहीं? कभी-कभी किसी [बुरी] की घृणा तुरंत स्पष्ट नहीं होती है और किसी को चीजों को बारीकी से (गहराई से) देखने की जरूरत होती है। दूसरे, व्यक्ति को इस बात पर विचार करना चाहिए कि यदि ये मामले परमेश्वर को नापसंद हैं, तो इनसे बचने का क्या तरीका है? और तीसरा, किसी को यह प्रतिबिंबित करना चाहिए कि अब उसके पास जो नापसंद गुण है, उसे कैसे छोड़ना चाहिए, या यदि कोई भविष्य में इसे प्राप्त करने जा रहा है, या किसी के पास यह अतीत में था और इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि इसके लिए क्षतिपूर्ति (प्रायश्चित) कैसे की जाए। इसी तरह से इन तीन तरीकों से प्रिय चीजों पर चिंतन करना चाहिए। [संक्षेप में,] हमने इस [पहला] प्रकार [स्वयं से संबंधित प्रतिबिंब] को चार प्रकारों में समाहित किया है: आज्ञाकारिता के कार्य, पाप, विनाशकारी

गुण और उद्धारक गुण। हम एक उदाहरण के साथ हर प्रकार की व्याख्या करेंगे ताकि आध्यात्मिक यात्री इससे अन्य सभी प्रकारों का अनुमान लगा सकें ताकि एक विस्तृत विस्तृत क्षेत्र में प्रतिबिंबों का द्वार खुल जाए।

पहला प्रकार - पाप: हर सुबह, मनुष्य को सात अंगों और सामान्य रूप से शरीर के बाकी हिस्सों की जवाबदेही रखनी चाहिए। यदि वे पाप में शामिल हैं, तो उसे त्याग देना चाहिए; यदि कल पाप में शामिल है, तो उसे इसकी भरपाई करनी चाहिए [प्रायश्चित के माध्यम से]; और अगर कोई कल इसमें शामिल होने जा रहा है, तो उसे इसे रोकने के लिए तैयार रहना चाहिए और इससे दूर रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी को जीभ की [क्रियाओं] की जांच करनी चाहिए और कल्पना करनी चाहिए कि यह लगातार चुगली करने, झूठ बोलने, आत्म-प्रशंसा (आत्म-महत्व, आत्म-प्रचार, और आत्म-प्रक्षेपण जो अभिमान, अहंकार, अहंकार और आत्म-धार्मिकता के सभी तत्व हैं), दूसरों का उपहास करना, लोगों की बातचीत को काटना, दूसरों को बुरा कहना और बेकार के मामलों में हस्तक्षेप करना। सबसे पहले, किसी को अपने दिल को दृढ़ता से स्थापित करना चाहिए कि ईश्वर इन चीजों को बहुत पसंद नहीं करता है, फिर कुरान की आयतों और भविष्यवाणियों पर विचार करें जो ईश्वरीय प्रतिशोध के बारे में चेतावनी देते हैं [इन बुराइयों और गलतियों के खिलाफ], फिर देखें कि कोई अपने स्वयं के पापों के कारण ईश्वरीय प्रतिशोध के योग्य बनने वाला है [और इसलिए, स्वयं के अलावा कोई दोषी नहीं है]। बाद में, व्यक्ति को इस बात पर विचार करना चाहिए कि इन पापों से खुद को कैसे बचाया जाए और यह जानना चाहिए कि इन पापों से बचाव का कोई तरीका नहीं है, सिवाय एकांत अपनाने और ऐसे पवित्र और ईश्वर-भीरु व्यक्ति की संगति को अपनाने के अलावा जो हर उस भाषण के लिए उसे दोषी ठहराता है जिसे परमेश्वर नापसंद करता है।

इसी तरह, किसी को कानों के बारे में विचार करना चाहिए कि इसके माध्यम से, चुगली करना, झूठ, बेकार की बात, अश्लील भाषण, और नवाचार (*बीद* या प्रामाणिक परंपरा से विचलन) दिव्य मार्ग (दीन*)* में सुना जाता है। ये वार्ताएं बहुत आम हैं और इन्हें किसी से भी सुना जा सकता है, इसलिए, व्यक्ति को या तो एकांत से या सही को चेतावनी देकर और गलत के खिलाफ उपदेश देकर इनसे खुद को बचाना चाहिए [ज्ञान, नम्रता और सुंदरता के साथ क्योंकि ये कठोरता के विपरीत सही बिंदु प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं जो मामले को बदतर बना देती है]। पेट पर विचार करें कि इसका पाप खाने-पीने में है। कभी-कभी यह अधिक खाने के कारण होता है, भले ही यह अनुमेय भोजन है क्योंकि परमेश्वर को लोलुपता पसंद नहीं है, यह वासना को बढ़ाता है, जो परमेश्वर के शत्रु शैतान का हथियार है, और कभी-कभी वह निषिद्ध और संदिग्ध चीजों को खाकर पाप करता है। खाने से पहले, किसी को यह देखना चाहिए कि भोजन कहां से आ रहा है [चाहे वह शुद्ध और कानूनी साधनों से आ रहा हो या अशुद्ध और अवैध तरीकों से]। फिर यह केवल भोजन के लिए विशिष्ट नहीं है, बल्कि किसी को यह देखने के लिए पोशाक और निवास पर विचार करना चाहिए कि क्या ये कानूनी तरीकों से या निषिद्ध या संदिग्ध साधनों के माध्यम से किसी के लिए उपलब्ध हो गए हैं। किसी को यह देखने के लिए आय के स्रोतों पर भी विचार करना चाहिए कि वे कानूनी हैं या नहीं। यदि वे अवैध हैं [या धोखाधड़ी, चोरी, छल और डकैती जैसे अनैतिक] तो किसी को आय अर्जित करने के कानूनी साधनों पर विचार करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि कैसे कोई निषिद्ध (हराम) मामलों से दूर रह सकता है और अपने आप को विश्वास दिलाना चाहिए कि सभी [दिव्य] पूजाएं निषिद्ध चीजों को खाने से [या किसी के लाभ के लिए अवैध आय का उपयोग करने से] बर्बाद हो जाती हैं क्योंकि पूजा की नींव अनुमेय भोजन खाना है [या अनुमेय और कानूनी साधनों से आजीविका अर्जित

करना]। सभी अंगों पर एक समान तरीके से चिंतन करना चाहिए। यहां जो समझाया गया है वह पर्याप्त है। यह आशा की जाती है कि जो व्यक्ति चिंतन के माध्यम से इन अवस्थाओं की सही और वास्तविक समझ प्राप्त करता है, वह पूरे दिन इन अंगों पर नजर रखेगा और यह निगरानी अंगों को पापों से बचाएगी।

दूसरा प्रकार - आज्ञाकारिता के कार्य: ईश्वर के साधक या आध्यात्मिक यात्री (सालिक*) को उन* कार्यों पर चिंतन करना चाहिए जो किसी के लिए अनिवार्य कर दिए गए हैं, दूसरे शब्दों में, व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उन्हें कैसे करना है, उन्हें दोषों और कमियों से कैसे बचाया जाए, और यदि उनमें कोई दोष होता है, तो कोई पूजा के अतिरंजित कार्यों के माध्यम से उसकी भरपाई कैसे कर सकता है (नवाफिल), और सभी अंगों के बारे में सोचें और परमेश्वर को उनसे कौन से कार्य पसंद हैं। उदाहरण के लिए, किसी को यह सोचना चाहिए कि आंख जो देखती है उससे सबक सीखने, आकाश और पृथ्वी के दिव्य वैभव को देखने के लिए, और ईश्वर की पुस्तक और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का अध्ययन करने के लिए बनाई गई है। सभी अंगों, अपने भौतिक अस्तित्व, संपत्ति, धन, दास, बच्चे आदि को इसी तरह से जांचना चाहिए क्योंकि ये सभी चीजें ऐसे साधन हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति ईश्वर की आज्ञा का पालन कर सकता है। अपने गहन चिंतन के माध्यम से, व्यक्ति को ईश्वरीय आज्ञाकारिता [दासता और भक्ति] के मार्ग खोजने चाहिए, फिर उन मामलों की खोज करनी चाहिए और फिर खुद को ईश्वरीय पूजा की ओर झुकाना चाहिए। फिर व्यक्ति को इरादे की ईमानदारी पर विचार करना चाहिए ताकि [धार्मिक] कार्य हर तरह से शुद्ध और स्वच्छ हो।

तीसरा प्रकार - विनाशकारी गुण: तीसरे प्रकार में वे खतरनाक गुण (आंतरिक चरित्र लक्षण, स्वभाव और स्वभाव) शामिल हैं जो हृदय में केंद्रित होते हैं। इनमें कामवासना और लोभ का वर्चस्व, क्रोध, कंजूसी, अहंकार, आत्म-धार्मिकता, आडंबर, ईर्ष्या, दूसरों के बारे में दुर्विचार रखना, लापरवाही, अभिमान आदि शामिल हैं। व्यक्ति को यह देखने के लिए अपने हृदय की जाँच करनी चाहिए कि ये [निंदनीय और नकारात्मक लक्षण] हृदय में पाए जाते हैं या नहीं। यदि कोई सोचता है कि हृदय इन गुणों से शुद्ध हो गया है, तो उसे हृदय की जाँच करने की विधि के बारे में सोचना चाहिए और उन संकेतों की खोज करनी चाहिए जो उस आकलन का पता लगाते हैं। यदि कोई स्वयं विनम्रता और अहंकार से छूट का दावेदार है, तो उसे बाजार में जाना चाहिए और उसकी विनम्रता का परीक्षण करने के लिए अपने सिर पर जलाऊ लकड़ी का एक पैकेट (पुराने समय में विनम्रता और विनम्रता का संकेत) रखना चाहिए। पहले के समय में, लोग [आध्यात्मिक मार्ग में प्रयास करते हुए] इस तरह से अपने आप को परखते थे । इस प्रतिबिंब का उद्देश्य यह देखना है कि हृदय इन अवांछनीय गुणों से जुड़ा है या नहीं। यदि संकेत इन [निंदनीय आंतरिक] गुणों की उपस्थिति को प्रकट करते हैं तो किसी को उन मामलों पर विचार करना चाहिए जो इन गुणों को स्वयं को बुरा बना देंगे और यह स्पष्ट हो जाता है कि इन गुणों का स्रोत अज्ञानता, असावधानी और आंतरिक बुराई है। यदि किसी को अपने आप में अहंकार का बोध है, तो उसे स्वयं को उसकी मूर्खता के बारे में सूचित करना चाहिए और उसे समझाना चाहिए कि, "आप अपने आप को (*नफ्स*) को [गरिमा और सम्मान में] बड़ा मानते हैं, बल्कि, वह बड़ा है जो भगवान की दृष्टि में बड़ा है और यह मृत्यु के बाद ही पता चलेगा कि कौन सा व्यक्ति भगवान की दृष्टि में बड़ा है"। जब यह ज्ञात हो जाए कि अहंकार घातक है और इसकी उत्पत्ति मूर्खता है, तो व्यक्ति को इसके इलाज पर चिंतन करना चाहिए और इसके इलाज के लिए यह रणनीति अपनानी चाहिए कि वह विनम्र लोगों के मार्ग अपनाए। इसी तरह, यदि किसी के भीतर भोजन के लिए लालच और लालसा है, तो उसे सोचना चाहिए कि यह जानवरों का गुण (विशेषता) है। यदि भोजन

की लालसा या मैथुन की लालसा में कोई पूर्णता [अच्छाई और उत्कृष्टता] होती, तो यह ज्ञान और योग्यता जैसे ईश्वर और स्वर्गदूतों का गुण होता, और जानवरों को इस गुण से संपन्न नहीं किया गया होता। जिस हद तक यह वासना किसी पर हावी है, उस हद तक वह जानवरों जैसा दिखेगा और उन स्वर्गदूतों से दूर हो जाएगा जो परमेश्वर के करीब हैं।

चौथा प्रकार - उद्धारक गुण: उद्धारक गुण (उदात्त आंतरिक चरित्र लक्षण, स्वभाव और हृदय में केंद्रित स्वभाव) हैं पश्चाताप, पापों पर पछतावा और शर्म, प्रतिकूलताओं में धैर्य, आशीर्वाद पर कृतज्ञता, ईश्वर का भय, आशा, दुनिया में संयम, ईमानदारी, ईश्वरीय आज्ञाकारिता में सत्यता, ईश्वर का प्रेम और उसका सम्मान, ईश्वरीय कार्यों की स्वीकृति, ईश्वर की लालसा, विनम्रता, विनम्रता, आदि। एक सेवक [परमेश्वर का, अर्थात्, मनुष्य] को हर दिन अपने दिल को देखना चाहिए और देखना चाहिए कि उन गुणों में से कौन सा गुण चाहिए, जो किसी को परमेश्वर के करीब लाते हैं। यदि यह सीखा जाता है कि किसी को एक विशिष्ट गुण की आवश्यकता होती है तो उसे यह सोचना चाहिए कि ये गुण [आंतरिक] अवस्थाएँ हैं और अवस्थाएँ ज्ञान के फल (परिणाम) हैं, और ज्ञान [और समझ] प्रतिबिंब के फल हैं। इसलिए, यदि कोई अपने स्वयं के लिए पश्चाताप और पछतावे की अवस्थाएँ रखने का इरादा रखता है, तो उसे पहले अपने सभी पापों की जाँच करनी चाहिए, उन पर चिंतन करना होगा, उन सभी को एक साथ अपने स्वयं पर जोड़ना होगा, और उन्हें अपने हृदय में बड़ा मानना होगा। फिर किसी को पापों के बारे में ईश्वरीय कानून में आई निंदा पर एक नज़र डालनी चाहिए, और हृदय में यह निश्चितता होनी चाहिए कि वह परमेश्वर की नाराजगी अर्जित करने वाला है [उनमें उनकी निरंतर उपस्थिति और दृढ़ता के कारण]। इस प्रतिबिंब के साथ तब तक जारी रहता है जब तक कि दिल में शर्म और पछतावे की स्थिति उभर न आए। इसी तरह, यदि कोई [हृदय में] कृतज्ञता की स्थिति प्राप्त करना चाहता है, तो उसे पहले परमेश्वर की आशीषों और उपहारों का अध्ययन करना चाहिए (गहराई से देखना चाहिए) और सोचना चाहिए कि उसने अपने पापों पर अपना सुंदर आवरण डाल दिया है [ताकि किसी की घिनौनी स्थिति को जनता के देखने के लिए प्रदर्शित न किया जा सके, और यह अहसास व्यक्ति को ईश्वरीय कृतज्ञता से भर देता है]। जब कोई ईश्वर के प्रति ईश्वरीय प्रेम और लालसा की स्थिति विकसित करना चाहता है तो उसे दिव्य सौंदर्य और महिमा और ईश्वर की महानता और उच्चता पर विचार करना चाहिए। ऐसा करने का तरीका यह है कि पहले ईश्वर के अद्भुत ज्ञान को देखें [जो हमारे चारों ओर हमारे राज्यों, जीवनों, रचनाओं, प्रकृति और हमारे आस-पास और हमारे आंतरिक प्राणियों में हर चीज में स्पष्ट है] और उनके सुंदर दिव्य गुणों (गुणों) को देखें, फिर उनकी महिमा और सुंदरता पर विचार-विमर्श करें। यदि ईश्वर-भय की स्थिति की इच्छा है, तो व्यक्ति को पहले अपने आंतरिक और बाहरी पापों को देखना चाहिए, फिर अपनी मृत्यु पर विचार करना चाहिए, और मृत्यु के बाद जो घटनाएं और दृष्टिकोण सामने आएंगे [जिन्हें भविष्यद्वाणी की परंपराओं में स्पष्ट रूप से बहुत विस्तार से वर्णित किया गया है], उदाहरण के लिए, मृत्यु से पहले, व्यक्ति को मृत्यु के दर्द से निपटना पड़ता है, किसी को स्वर्गदूतों (*मुनकीर नकीर*) से पूछताछ से निपटना पड़ता है जो मृत्यु के बाद एक जाते हैं, कब्र की सजा, किसी को उसके सांप, बिच्छू और कीड़ों का सामना करने पर विचार करना चाहिए, फिर तुरही बजाई जाएगी, अंतिम दिन का मैदान फैल जाएगा, किसी को उस दिन की भयावहता और जवाबदेही की तीव्रता पर विचार करना चाहिए जब किसी को हर कण के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा (छोटी सी चीज जिसे किसी की सांसारिक स्थिति के दौरान महत्वहीन माना जाता है प्रवास)। किसी को याद रखना चाहिए कि कुरान ने नरक के बारे में क्या बताया है। यदि आशा की स्थिति वांछित है तो किसी

को स्वर्ग, उसके बगीचों, पेड़ों, झरनों और उसके निवासियों के आशीर्वाद और आराम पर विचार करना चाहिए और यह प्रतिबिंबित करना चाहिए कि ये सभी आशीर्वाद और आराम चिरस्थायी हैं।

यह बाहरी या प्रकट ज्ञान (*उलून अल-मुआमला*) और अच्छे और बुरे आंतरिक गुणों में प्रतिबिंब की विधि है। एक नौसिखिया आध्यात्मिक यात्री को इन प्रतिबिंबों में अपना समय तब तक व्यस्त रखना चाहिए जब तक कि उसका हृदय महान और उदात्त आंतरिक गुणों, विशेषताओं, स्वभावों और स्वभावों से सुसज्जित न हो जाए, महान आध्यात्मिक स्टेशनों से प्रकाशित न हो जाए, और किसी का आंतरिक और बाहरी अस्तित्व सभी अवांछनीय लक्षणों से शुद्ध न हो जाए। इस बिंदु पर यहां यह याद रखना चाहिए कि यद्यपि इन मामलों में प्रतिबिंबित करना एक उत्कृष्ट पूजा है, लेकिन ये वास्तविक उद्देश्य नहीं हैं। ईश्वर के ज्ञानवादियों और अंतरंग लोगों का वास्तविक उद्देश्य दिव्य महिमा और सुंदरता पर चिंतन करना है, और इस प्रतिबिंब में इस तरह से डूबना है कि वे अपने स्वयं से भी नष्ट हो जाएं (फना) [ताकि स्वयं का कोई निशान न रह जाए और कोई दिव्य उपस्थिति प्राप्त कर सके], दूसरे शब्दों में, वे अपने स्वयं की अवहेलना करते हैं, उनकी अपनी अवस्थाएँ, उनके अपने आध्यात्मिक स्टेशन, उनके अपने आंतरिक गुण, और सब कुछ। प्रिय के प्रतिबिंब में उनकी स्थिति प्रिय को देखकर एक सच्चे प्रेमी की स्थिति की तरह होती है। उस समय व्यक्ति में अपनी स्थिति पर एक नज़र डालने और अपने गुणों पर ध्यान देने की चेतना भी नहीं होती है, बल्कि वह स्तब्ध रह जाता है और अपने बारे में सब कुछ भूल जाता है। यह प्रेमियों के लिए आनंद का उच्चतम स्तर है [सच्चे प्रिय के]।

यहां जिस प्रतिबिंब की चर्चा की जा रही है, वह उन मामलों से संबंधित है जो हृदयों को उदात्त आंतरिक गुणों, विशेषताओं, स्वभावों और स्वभावों से सजाते हैं ताकि वह [दिव्य] अंतरंगता और प्रिय के साथ मिलन का आनंद प्राप्त कर सके। यदि कोई पूरा जीवन हृदय के सुधार में बिताता है, तो वह अंतरंगता और [प्रिय के साथ] मिलन का आनंद कब प्राप्त करेगा? ईश्वर में विनाश (*फना*) ईश्वर के साधकों का वास्तविक उद्देश्य है, और ईश्वर के ज्ञानवादियों और अंतरंग लोगों के लिए आनंद का शिखर है। एक आध्यात्मिक यात्री को चिंतन करना चाहिए, जैसा कि ऊपर बताया गया है, एक दिनचर्या और उस पर दिन-रात कार्य करना चाहिए, और हर समय, किसी को स्वयं के प्रति लापरवाह नहीं होना चाहिए, [निंदनीय आंतरिक] गुण जो किसी को ईश्वर से दूर करते हैं, और वे [आंतरिक आध्यात्मिक] अवस्थाएं जो व्यक्ति को ईश्वर के करीब लाती हैं। बल्कि, प्रत्येक आध्यात्मिक यात्री को अपने सभी अच्छे और बुरे गुणों, पापों और [दिव्य] आज्ञाकारिता के कार्यों को नोट करने के लिए एक नोटबुक रखनी चाहिए, और स्वयं की परीक्षा लेने के लिए हर दिन उन्हें देखना चाहिए [यह देखने के लिए कि क्या कोई बेहतर हो रहा है या नहीं सभी बुरे गुणों को वश में करने और मिटाने और सभी अच्छे गुणों के साथ अपने दिल और आत्मा को सजाने में]।

विनाशकारी और उद्धारक आंतरिक गुण: यद्यपि असंख्य विनाशकारी गुण हैं, लेकिन उद्धार गुण भी हैं। हालाँकि, यदि दस विनाशकारी और दस उद्धारक गुणों पर कड़ी नजर रखी जाए तो यह पर्याप्त होगा। ये दस विनाशकारी गुण हैं: कंजूसपन, अहंकार, आत्म-दंभ, आडंबर, ईर्ष्या, क्रोध, लोलुपता, अत्यधिक वासना, धन का प्रेम, और प्रसिद्धि और शक्ति का प्यार। यह आशा की जाती है कि जो व्यक्ति इनसे स्वयं को बचाता है, वह अपने आप को [सभी] निंदनीय गुणों से बचाने में सक्षम होगा [क्योंकि ये दस सभी बुराइयों, बुराइयों और नकारात्मकताओं के स्रोत हैं]। फिर उद्धारक गुण [जो व्यक्ति को सकारात्मकता, बड़प्पन, उदात्तता, शांति, अच्छाई और सफलता से भर देते हैं] पापों [और गलत कामों] पर शर्म और पछतावा, विपत्तिओं में धैर्य, ईश्वरीय इच्छा की स्वीकृति चाहे वह अच्छी हो या बुरी, सभी आशीर्वादों पर

कृतज्ञता, ईश्वर में भय और आशा के बीच संतुलन, दुनिया में सांसारिकता की सभी अभिव्यक्तियों से, कार्यों में ईमानदारी, परमेश्वर की सभी रचनाओं का अच्छा व्यवहार, ईश्वरीय प्रेम और परमेश्वर के लिए विनम्रता। यदि इन बीस गुणों को आध्यात्मिक यात्री की नोटबुक में सूचीबद्ध किया जाए, तो इलाज मुश्किल नहीं रहता है। इलाज की विधि यह है कि व्यक्ति इन बीस मामलों में से किसी एक पर चिंतन के साथ शुरू होता है। जब एक बुरे गुण को मिटा दिया जाता है, तो कोई उसे नोटबुक में पार कर सकता है, इसके बारे में चिंता करना बंद कर सकता है, परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त कर सकता है कि उसने उस बुराई से मुक्ति प्रदान की और उसके हृदय को शुद्ध किया, और जान सकता है कि किसी ने उस बुराई के हृदय को पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा दी गई क्षमता और सहायता से शुद्ध कर दिया है। यदि परमेश्वर ने इस मामले को स्वयं पर छोड़ दिया होता, तो कोई व्यक्ति अपने हृदय से रत्ती भर भी बुराई को मिटाने में सक्षम नहीं होता। बाद में, व्यक्ति को शेष मामलों पर ध्यान देना चाहिए और उनमें से प्रत्येक पर चिंतन करना चाहिए और उन्हें हटा देना चाहिए। जब ऐसा होता है, तो किसी को इसे नोटबुक में तब तक काटना चाहिए जब तक कि वह सभी विनाशकारी गुणों से मुक्त न हो जाए। फिर किसी को उद्धारक आंतरिक गुणों के लिए भी ऐसा ही करना चाहिए और इन उदात्त गुणों को एक-एक करके अपनाना चाहिए और जब ऐसा होता है तो उन्हें नोटबुक में पार करना चाहिए, जब तक कि सभी उदात्त आंतरिक गुण प्राप्त न हो जाएं। यह एक सक्रिय आध्यात्मिक यात्री (मुरीद) की दिनचर्या होनी चाहिए।

यह विदेशी ज्ञान (उलूम अल-मुआमला) *में प्रतिबिंब का तरीका था* जिसे धर्मनिष्ठों और विद्वानों द्वारा अपनाया गया था। जब वे इस पद्धति के साथ हो गए, तो उनके पास अपने स्वयं के प्रति कोई झुकाव नहीं बचा था, इसके बजाय, वे दिव्य वैभव और महिमा पर प्रतिबिंबित करने के लिए इन प्रतिबिंबों से प्रगति करते थे, और दिल की आंख से, वे दिव्य सौंदर्य को देखने की खुशी पर विचार करते थे। हालाँकि, यह प्रतिबिंब केवल तभी प्राप्त होता है जब मनुष्य सभी विनाशकारी गुणों से अलग हो जाता है और सभी उद्धारक उदात्त गुणों से सुसज्जित होता है। यहां तक कि अगर यह (गवाही) उससे पहले प्रकट होता है, तो यह दोषपूर्ण और क्षणभंगुर होगा जैसे बिजली की चमक जो चमकती है और फिर गायब हो जाती है [तुरंत बाद]। जो विनाशकारी लक्षणों से छुटकारा पाए बिना और आंतरिक जीव को मोक्ष [गुणों] के साथ पूजा करता है, वह उस प्रेमी के समान है जो अपने प्रिय के साथ एकांत पाता है [जबरदस्त प्रयास के बाद] लेकिन सांप और बिच्छू उस समय किसी के कपड़ों में रेंग रहे हैं और एक को काट रहे हैं। जाहिर है, इन हानिकारक प्राणियों के काटने से होने वाला दर्द इस एकांत के सभी सुखों को [जबरदस्त प्रयास और पीड़ा के बाद प्रिय के साथ] खो देगा और सभी आनंद बर्बाद हो जाएंगे। विनाशकारी गुण भी सांप-बिच्छू की तरह हानिकारक होते हैं और वे दिव्य सौंदर्य को देखने के आनंद का विनाशक होते हैं। इन विनाशकारी गुणों के कारण [आत्मा की गहराई में] कब्र में [इस दुनिया से अपरिहार्य मृत्यु के बाद] जो दर्द होगा, वह सांप और बिच्छू के काटने से [शारीरिक] दर्द से कहीं अधिक होगा। यह विवरण दिखाता है कि कैसे एक सेवक [भगवान के] को अपने स्वयं के वांछनीय और अवांछनीय गुणों पर विचार करना चाहिए।

दूसरे प्रकार का प्रतिबिंब - ईश्वर की महिमा, महानता और भव्यता में: दूसरे प्रकार का प्रतिबिंब यह है कि सेवक ईश्वर की महिमा, महानता और भव्यता पर विचार करता है। इस प्रतिबिंब के दो स्टेशन हैं: पहला स्टेशन जो श्रेष्ठ है वह है दिव्य अस्तित्व और गुणों पर चिंतन करना और दिव्य नामों के अर्थों पर विचार करना [जहां प्रत्येक दिव्य नाम एक विशिष्ट दिव्य गुण का प्रतिनिधित्व करता है या अस्तित्व के हर क्षेत्र में उसके हर पहलू और अभिव्यक्ति में व्याप्त विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है]। [हालांकि,] यह वह

स्टेशन है जिसे [आम लोगों के लिए] निषिद्ध किया गया है जैसा कि [एक भविष्यसूचक कथन में] कहा गया है, "भगवान की रचनाओं में प्रतिबिंबित करें, [और] उनके अस्तित्व में प्रतिबिंबित न करें"। यह निषिद्ध किया गया है क्योंकि बुद्धि आश्चर्यचकित हैं [भगवान के अस्तित्व के प्रतिबिंब में]। केवल ईश्वर के ज्ञानवादी और अंतरंग ही अपनी दृष्टि को उसकी ओर उठाने का साहस करते हैं। हालाँकि, उनमें भी इस दृश्य के स्थायित्व की हिम्मत नहीं है। सृष्टि की आंखों की तुलना में दिव्य महिमा की स्थिति, सूर्य के प्रकाश की तुलना में चमगादड़ की आंखों की स्थिति के समान है। चमगादड़ सूरज के प्रकाश को सहन नहीं कर सकता; इसलिए यह दिन में छिपे रहता है, और रात में, सूर्य के शेष प्रकाश में, यह चारों ओर उड़ता है। और ईश्वर के ज्ञानवादियों और अंतरंग लोगों की स्थिति (*सिद्दिकीन* जो कुरान के आदेश के अनुसार भविष्यवक्ताओं के बाद सर्वोच्च [आध्यात्मिक] रैंक रखते हैं) सूर्य में एक साधारण इंसान की तरह है जो सूर्य को देख सकता है, हालांकि, किसी में इस दृष्टि के स्थायित्व के लिए सहिष्णुता नहीं है, बल्कि, खतरा यह है कि सूर्य को लगातार देखने से कोई भी दृष्टि खो सकता है। [सूर्य की ओर] इरादे से देखना, भले ही यह थोड़े समय के लिए हो, आंखों को नुकसान पहुंचाने का कारण है। इसी तरह, ईश्वर के अस्तित्व को देखने से आश्चर्य और आश्चर्य होता है, और बुद्धि व्याकुल हो जाती है। इसीलिए, दिव्य अस्तित्व और गुणों को अपने प्रतिबिंब का केंद्र न बनाना बेहतर है क्योंकि कई बुद्धि इस प्रतिबिंब को सहन नहीं कर सकती हैं। हालाँकि, [ईश्वर के अस्तित्व के बारे में] चिंतन की थोड़ी मात्रा जिसे विद्वानों ने स्पष्टता के साथ अनुमति दी है, वह यह है कि ईश्वर स्थान, परिवेश और दिशाओं से मुक्त है, वह न तो ब्रह्मांड में है, न ही इसके बाहर, वह न तो इससे जुड़ा हुआ है, न ही वह इससे अलग है। कुछ लोगों की बुद्धि इस संबंध में इतनी चकित और परेशान हो गई कि उन्होंने स्वीकार करने से इनकार कर दिया क्योंकि उनमें इन बातों को सुनने या समझने की ताकत नहीं थी। कुछ लोग इससे निम्न स्तर की व्याख्या भी बर्दाश्त नहीं कर सके। इसलिए, जब उनसे यह कहा गया कि परमेश्वर इससे ऊपर एक सिर, पैर, हाथ, आंखें, या कुछ अन्य [मानव जैसे] अंग, या एक ऐसा शरीर है जो कुछ मात्रा या आकार में फिट हो सकता है, तो इन लोगों ने इसे भी स्वीकार करने से इनकार कर दिया और कहना शुरू कर दिया कि यह ईश्वरीय महानता और महिमा में एक कमी है। इन मूर्ख लोगों का मानना था कि महानता और भव्यता [मानव के जैसे] अंगों में है। इस [गलत विश्वास] का कारण यह है कि मनुष्य अपने शरीर को जानता है और उसे महान मानता है, और जो चीजें अपने गुणों में स्वयं के बराबर नहीं हैं, कोई उन्हें महान नहीं मानता है। अधिकांश लोगों की बुद्धि ऐसी ही होती है। वास्तव में, मनुष्य दमनकारी, अज्ञानी और कृतघ्न है, इसीलिए, परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं में से एक से कहा, "मेरे सेवकों को मेरे गुणों के बारे में मत बताओ क्योंकि वे इसे स्वीकार करने से इनकार कर देंगे, बल्कि उन्हें उन चीजों को बताएंगे जिन्हें वे समझ और समझ सकते हैं"। [ईश्वर के लिए], ईश्वरीय कानून, और [ईश्वर की] रचनाओं (मानवता) के सुधार की मांग है कि हम ईश्वर के अस्तित्व के पीछे न जाएं [क्योंकि हम इसे अपनी सीमित बुद्धि से समझने में सक्षम नहीं हैं]।

दूसरा स्टेशन [परमेश्वर की महिमा, महानता और भव्यता पर चिंतन] यह है कि हम परमेश्वर के कार्यों, उसकी क्षमता, शक्ति और रचनात्मकता के चमत्कारों और उसकी रचनाओं के साथ उसके अद्भुत व्यवहार से संबंधित मामलों पर विचार करते हैं। ये मामले महामहिम, महानता, भव्यता और श्रेष्ठता की पुष्टि करते हैं। वे उसके ज्ञान की पूर्णता, बुद्धि की पूर्णता, उसकी क्षमताओं की पूर्णता और उसकी इच्छा के कार्यान्वयन के बारे में भी बहस करते हैं। हमें उसके गुणों के बजाय उसके गुणों के प्रभावों और अभिव्यक्तियों को देखना चाहिए क्योंकि हमारे पास उसके गुणों को देखने की ताकत नहीं है जैसे हम [लगातार] सूर्य को नहीं देख सकते हैं। पृथ्वी की रोशनी सूर्य के प्रकाश के प्रभाव के कारण होती है और

एक प्रभाव उस व्यक्ति की ओर इशारा करता है जो प्रभावित कर रहा है, भले ही जो प्रभावित कर रहा है उसे देखा नहीं जाता है। पृथ्वी पर जो कुछ भी मौजूद है वह परमेश्वर की क्षमताओं का प्रभाव या संकेत है और उसके अस्तित्व की रोशनी से एक रोशनी है। अस्तित्व या शून्यता से बड़ा कोई अंधकार नहीं है और कोई भी रोशनी अस्तित्व से अधिक स्पष्ट नहीं है। सभी चीजों का अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व का प्रकाश है क्योंकि सभी चीजें [आकस्मिक प्राणी होने के नाते] उसके अस्तित्व के माध्यम से मौजूद हैं, जबकि उसका अस्तित्व अपने आप में मौजूद है। ठीक वैसे ही जैसे मौजूद चीज़ों का प्रकाश सूर्य के कारण होता है [जैसा कि वे सूर्य के प्रकाश से दिखाई देते हैं, अन्यथा, वे पूरी तरह से अंधकार में डूबे हुए होते], और सूर्य अपने आप प्रकाशित हो जाता है। जब सूर्य अधिक प्रकाशित हो जाता है [जैसे-जैसे यह उगता है], तो इसकी छवि को एक कंटेनर में रखे गए पानी में देखा जा सकता है क्योंकि आंखें इसकी छवि पर रह सकती हैं जैसे कि, पानी के माध्यम से सूर्य की चमक कुछ हद तक कम हो जाती है। इसी तरह, दिव्य कर्म भी उन कर्मों के कर्ता (ईश्वर) को देखने का साधन हैं। हम उसके गुणों को देखते हैं और उसके अस्तित्व की रोशनी से आश्चर्यचकित नहीं होते हैं। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा है:

تَفَكَّرُوا فِي خَلْقِ اللهِ وَلَا تَتَفَكَّرُوا فِي ذَاتِ اللهِ

"ईश्वर की रचनाओं पर चिंतन करें, उनके अस्तित्व पर चिंतन न करें"।

वासनाओं और आत्म-महत्व के धोखे में फंसने के कारण, आप आकाश और पृथ्वी के प्रभुत्व को देखने में लापरवाह हो गए हैं और अब आपकी दृष्टि में, प्रभुत्व के स्वामी और स्वामी (भगवान) की सुंदरता के लिए भी कोई महत्व नहीं बचा है। आपका दृष्टांत एक चींटी की तरह है जिसने एक शानदार महल में एक घर (चींटी का छेद) बना दिया है। वह महल ऊंचा, सुंदर और मजबूत है। इसके खूबसूरत हिस्सों में नौकर खड़े हैं और कीमती सामानों से भरे हुए हैं। अगर वह चींटी अपने बिल से बाहर आती है और अपनी बहन से मिलती है और यहां तक कि बात करने की क्षमता भी प्राप्त कर लेती है तो वह अपने अंधेरे और संकरे निवास, थोड़े से भोजन की व्यवस्था और अपनी आर्थिक स्थिति के अलावा किसी अन्य विषय पर बात भी नहीं कर सकती है, हालांकि उसका निवास स्थान एक सुंदर महल में है। उसे क्या करना चाहिए था कि वह अपनी बहन को बताना चाहता था कि वह एक शानदार महल में रहता है, जिसकी दीवारें सोने से बनी हैं और फर्श चांदी से बना है, यह सुंदर लोगों से भरा हुआ है जो अच्छी और कीमती चीजों से सजे हुए हैं। हालाँकि, यह बेचारी चींटी महल के बारे में कुछ भी नहीं जानती है, न ही इसकी दृष्टि उसके निवास और भोजन से परे है क्योंकि यह अपनी अदूरदर्शिता के कारण उन मामलों से परे नहीं हो सकती है। लेकिन आपकी मजबूरी क्या है? अपने संकीर्ण और दीन-हीन घर में रहते हुए, तुम परमेश्वर के विस्तृत महल, उसकी ऊँची छतों, और उसके सुंदर सामानों और साज-समान के प्रति लापरवाही क्यों कर रहे हो? आप उसके स्वर्गदूतों से परिचित नहीं हैं जो उसके स्वर्ग में रहते हैं। आप स्वर्ग के बारे में उतना ही जानते हैं जितना चींटी अपने निवास स्थान की छत के बारे में जानती है। स्वर्गदूतों के साथ आपका परिचय केवल आपके साथ या घर के अन्य निवासियों के साथ चींटी की परिचितता की सीमा तक है। हालांकि, चींटी में इससे अधिक समझ रखने की क्षमता नहीं होती है और न ही अपनी छोटी बुद्धि में, महलों के चमत्कारों को समझा जा सकता है। इसके विपरीत, आपके पास स्वर्गीय प्रभुत्व में प्रतिबिंब के घोड़ों को चलाने और इसके चमत्कारों की समझ प्राप्त करने की क्षमता है। आप इस क्षमता का लाभ क्यों नहीं उठाते?

अब हम अपनी कलम को प्रतिबिंब का और उल्लेख करने से रोकते हैं। यह एक ऐसा विषय है जिसकी कोई सीमा नहीं है। भले ही हम अपने लंबे जीवनकाल को इसके उल्लेख (व्याख्या) में बिताएं, हम उस ज्ञानवाद (मारिफा) को स्पष्ट *नहीं कर पाएंगे* जो परमेश्वर ने हमें दिया है, भले ही हम जो जानते हैं वह विद्वानों और ईश्वर के अंतरंग ज्ञान की तुलना में बहुत छोटा है, और जो विद्वान और ईश्वर के अंतरंग लोग जानते हैं, वह ईश्वर के सम्मानित भविष्यद्वक्ताओं के ज्ञान की तुलना में बहुत महत्वहीन है, और जो सम्मानित भविष्यवक्ताओं के पास है, वह परमेश्वर की निकटता में स्वर्गदूतों के ज्ञान के सामने कुछ भी नहीं है। फिर यदि सभी स्वर्गदूतों, जिन्नों और मनुष्यों के सभी ज्ञान को ईश्वर के ज्ञान के सामने रखा जाए तो इसे ज्ञान कहना भी सही नहीं होगा, बल्कि इसे किंकर्तव्यविमूढ़ता, आश्चर्य, दोष, कमी और सार की कमी के अलावा कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। सभी खामियों से ऊपर वह प्राणी है जिसने अपने [चयनित] सेवकों को सूक्ति (मारिफा - ज्ञान, अंतरंगता और ईश्वर की निकटता) प्रदान की और उन्हें सूचित किया कि:

وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا

"आपको [मनुष्यों को] ज्ञान दिया गया है, लेकिन बहुत कम!" (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 85)

यह उन तरीकों पर एक सरसरी चर्चा थी जिन पर लोगों को विचार करना चाहिए। यहाँ परमेश्वर के अस्तित्व पर चिंतन करने की विधि का उल्लेख नहीं किया गया है, बल्कि, केवल [परमेश्वर की] रचनाओं के प्रतिबिंब का उल्लेख किया गया है ताकि कोई भी सृष्टिकर्ता (ईश्वर) की ज्ञानरेखा को प्राप्त कर सके ताकि [बदले में] उसकी महानता, विस्मय और क्षमताओं की समझ [हृदय में] पैदा हो सके। जिस हद तक ईश्वर की सृष्टि और शिल्प के चमत्कारों की ज्ञानता बढ़ती है, उस हद तक महामहिम, भव्यता और महानता की ज्ञानता बढ़ती जाएगी। यह ऐसा है जैसे आप किसी के ज्ञान के आधार पर एक विद्वान से प्यार करते हैं और आपको उस ज्ञान की समझ है। यदि आपको उस विद्वान का कोई और ज्ञान या कविता के कुछ अनूठे श्लोक या कोई अन्य सुंदर पुस्तक या किसी से कोई नया शोध मिल जाए तो उस विद्वान के प्रति आपका प्रेम और भी बढ़ जाता है और व्यक्ति का सम्मान और सम्मान और भी बढ़ जाता है। हर वाक्य, कविता की कविता, और ऐसे एक का शोध, आपके दिल में किसी के सम्मान और प्रशंसा को बढ़ाता है और किसी की रैंक को और भी ऊंचा करता है। इसी तरह, व्यक्ति को ईश्वर की रचनाओं पर चिंतन करना चाहिए। यह स्वर्ग (ब्रह्मांड और उससे परे) और पृथ्वी और बीच में मौजूद सब कुछ, उनकी पुस्तक और लेखन है और यह लेखकत्व का एक विशाल कार्य है। तुम जीवन भर इसका अध्ययन कर सकते हो, लेकिन यह कभी खत्म नहीं होगा, और हर दिन, तुम्हारे लिए नए रहस्योद्घाटन और नई समझ के दरवाजे और रास्ते खुलेंगे। हालाँकि, सच्चाई यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास चिंतन और गवाही में केवल उतना ही हिस्सा है [दिव्य सौंदर्य के वैभव] जिसे भगवान ने एक के लिए विभाजित किया है [अपने सर्वोच्च ज्ञान से किसी के प्रयासों, आध्यात्मिक प्रयासों, ईमानदारी, दृढ़ता और सबसे बढ़कर ईश्वरीय इच्छा के अनुसार]।

हम इस चर्चा को यहीं समाप्त करेंगे। "कृतज्ञता की पुस्तक" (अध्याय 12) में, हमारा विषय परमेश्वर की रचनाएँ थीं। हालाँकि, यह इस तथ्य के संबंध में था कि जो कुछ भी परमेश्वर ने हमें प्रदान किया है, वह उसका अनुग्रह, प्रतिफल और अनुग्रह है, और यहाँ यह इस तथ्य के संबंध में मौजूद है कि यह उसका कार्य है और हमें इस पर विचार करना चाहिए। यहां जिन चीजों पर हमने विचार किया है, वे एक दार्शनिक द्वारा भी प्रतिबिंबित होती हैं, हालांकि, एक ऐसे व्यक्ति का प्रतिबिंब जिसे ईश्वर द्वारा प्रदत्त क्षमता

और सफलता (*तौफीक)* प्रदान की गई है, मार्गदर्शन (*हिदाया*) और शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता (*सादा)* का माध्यम बन जाता है। आकाश और पृथ्वी में एक भी कण ऐसा नहीं है जिसका उपयोग परमेश्वर कुछ लोगों का मार्गदर्शन करने और कुछ अन्य को गुमराह करने के लिए नहीं करेगा। फिर भी, जो इन मामलों में परमेश्वर के कार्यों और विशेषताओं के परिप्रेक्ष्य से विचार-विमर्श करता है, ऐसा व्यक्ति परमेश्वर की महिमा और भव्यता की ज्ञानरेखा प्राप्त करता है और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करता है। और जिसकी दृष्टि एक चीज के कारण होने पर है और दूसरी चीज एक प्रभाव है [कारण और प्रभाव की एक श्रृंखला में] जिसका सभी कारणों, प्रभावों और साधनों (*मुसब्बीब अल-असबाब) के प्रवर्तक से कोई संबंध नहीं है*, वह गुमराह हो जाता है। हम गुमराह होने से परमेश्वर की शरण लेते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें बचाए, विशुद्ध रूप से उसकी दया और अनुग्रह से, उन सभी अवसरों से जहां अज्ञानी के पैर भटक जाते हैं [जिससे वे रसातल में लड़खड़ा जाते हैं]।

अध्याय 20- अपनी स्वयं की नश्वरता और सांसारिक जीवन के अंत पर विचार करना और कभी न भूलना और अनन्त जीवन की तैयारी करना

यह महसूस करना कि यह सांसारिक जीवन केवल अनन्त जीवन में एक मार्ग है और अपनी स्वयं की नश्वरता, पतनशीलता और किसी के अंतिम और अपरिहार्य अंत को महसूस करना, किसी के जीवन के वास्तविक उद्देश्य के प्रति लापरवाही, लापरवाही और बेखबर होने के खिलाफ और धन इकट्ठा करने, भौतिकवादी जुनून, अन्याय, दूसरों के साथ की गई बुराई, और किसी के क्षणिक और क्षणभंगुर सांसारिक अस्तित्व के दौरान साथी मनुष्यों के साथ संघर्ष के खिलाफ एक शक्तिशाली मारक है। कभी-कभी साथी मनुष्यों पर स्वार्थ और उत्पीड़न के कार्य परोपकार में आड़ कर दिए जाते हैं कि यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए किया जा रहा है। यह भी एक भ्रम है क्योंकि वही अंत आने वाली पीढ़ियों का इंतजार करेगा क्योंकि यह हमारा इंतजार कर रहा है। महान उद्देश्यों को केवल महान साधनों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है और महान उद्देश्यों को अपमानजनक तरीकों से प्राप्त नहीं किया जा सकता है क्योंकि लक्ष्य साधनों को उचित नहीं ठहराते हैं। यह महसूस करना कि अंतिम घर वापसी अनंत काल के निवास में केवल ईश्वर के लिए है, और वहां की स्थिति सांसारिक जीवन के इस लौकिक अस्तित्व में किसी के कर्मों या कुकर्मों के अनुरूप होगी, बुराई के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों के खिलाफ एक शक्तिशाली संयम है। अपने स्वयं के अंत को ध्यान में रखते हुए, लंबे जीवन की आशा को कम करके चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में रखता है, जिससे इस जीवन के समाप्त होने के तुरंत बाद शुरू होने वाले अनन्त जीवन की हानि होती है। यह हमें अपने वर्तमान क्षणों और अवसरों का अधिकतम लाभ उठाने में मदद करता है और हमें ईमानदारी और आत्म-सुधार के मार्ग पर रखता है। इस विषय पर ग़ज़ाली की व्याख्या यहां उनकी *महान कृति* "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे खंड में दसवीं और अंतिम पुस्तक से संक्षिप्त रूप में प्रदान की गई है [26]:

वह जो मृत्यु से पराजित होगा [किसी के जीवन के अंतिम अध्याय में], जिसका अंतिम विश्राम निवास गंभीर होगा, जिसके साथी सांप, बिच्छू और कीड़े-मकोड़े होंगे, जिनके प्रतिज्ञा का स्थान न्याय का दिन है, जिसका [अंतिम] गंतव्य या तो स्वर्ग या नरक होगा, (यानी, बिना किसी अपवाद के पृथ्वी के चेहरे पर प्रत्येक मनुष्य के लिए), ऐसे व्यक्ति के लिए मृत्यु के बारे में सोचना उपयुक्त है [जो अनंत काल तक जाने के लिए दुनिया के माध्यम से किसी की यात्रा का अंत है], अपने आप में इसका उल्लेख करें [चीजों को सही दृष्टिकोण में रखने के लिए एक अनुस्मारक के रूप में], इसके लिए तैयारी करें, इस पर विचार-विमर्श करें, इसके लिए तरसते हैं [क्योंकि यह अनिवार्यता है कि यहां मौजूद हर कोई सामना करेगा, और हर कोई जो यहां नहीं है, पहले ही सामना कर चुका है और अब इसके परिणाम से निपट रहा है], इसके लिए प्रतीक्षा करें [क्योंकि यह अनंत काल में किसी का मार्ग है, और प्रिय से मिलना यदि कोई इसके लिए तरसता है, काम करता है और संघर्ष करता है। ऐसे व्यक्ति के लिए, अपने जीवन के दौरान स्वयं को मृत मानना उचित है], क्योंकि जो चीज आने वाली है वह निकट है, और दूर वह चीज है जो नहीं आएगी। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:

الْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ

"बुद्धिमान वह है जो किसी के स्वयं को दबाता है [अपनी इच्छाओं और वासनाओं के पीछे भागने से], और मृत्यु के बाद आने वाले जीवन के लिए काम करता है"।

यह एक तथ्य है कि यदि किसी चीज को बार-बार याद नहीं किया जाता है या उसका उल्लेख नहीं किया जाता है तो कोई उसके लिए सही तैयारी नहीं कर सकता है। बार-बार उल्लेख तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि उन मामलों पर ध्यान न दिया जाए जो हमें मृत्यु के बारे में याद दिलाते हैं। इसलिए, हम मृत्यु, इसके लिए तैयारी, इससे जुड़े मामलों, परलोक और नरक और स्वर्ग की स्थितियों के बारे में उल्लेख करेंगे, ताकि [परमेश्वर] का एक सेवक इसके लिए तैयारी कर सके क्योंकि इस यात्रा का समय आ गया है, जीवन छोटा होता जा रहा है [दिन-ब-दिन क्योंकि दुनिया में ईश्वरीय आदेश द्वारा हम में से प्रत्येक को आवंटित समय हर गुजरते दिन के साथ कम होता जा रहा है], अब एक छोटा सा जीवन बचा है लेकिन लोग इससे बेपरवाह हैं। भगवान कहते हैं:

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ

लोगों की जवाबदेही का समय निकट आ गया है, लेकिन वे लापरवाही और लापरवाही में डूबे हुए हैं। (कुरान, अध्याय 21, श्लोक 1)

सबसे पहले, हम मृत्यु से संबंधित मामलों की व्याख्या करेंगे, जो उसके पहले के जीवनकाल से शुरू होकर तुरही बजाने तक है। यह आठ विषयों से बना है।

दुनिया के माध्यम से यात्रा के समापन की तैयारी

अपनी नश्वरता का उल्लेख करना और उसे प्रचुर मात्रा में याद करना: यह ज्ञात होना चाहिए कि जो व्यक्ति संसार में लिप्त है, उसके धोखे में डूबा हुआ है, और अपनी वासनाओं के प्रेम में डूबा हुआ है, ऐसे व्यक्ति का हृदय निश्चित रूप से मृत्यु के प्रति लापरवाह होता है, मृत्यु का उल्लेख कभी किसी की जीभ पर नहीं आता है, न ही हृदय में इसका विचार आता है। यदि कोई किसी के सामने इसका उल्लेख भी करता है, तो वह घृणा और घृणा के साथ चेहरा घुमा लेता है, और उस उल्लेख को तीव्रता से नापसंद करता है। तब व्यक्ति तीन प्रकार के होते हैं: कुछ पूरी तरह से दुनिया में डूबे हुए हैं, कुछ पश्चाताप करते हैं, और कुछ में गहन ज्ञान और समझ होती है। पहले प्रकार के लोग मृत्यु का उल्लेख नहीं करते हैं और यदि वे इसका उल्लेख करते हैं, तो वे इसे दुनिया से अलग होने के अफसोस से जोड़ते हैं और इसकी सेवा करना शुरू कर देते हैं [अपने जीवनकाल का लाभ उठाकर इसमें अधिक से अधिक डूब जाते हैं ताकि इससे अधिकतम आनंद प्राप्त हो सके]। इस तरह से मृत्यु का उल्लेख करना, उन्हें और अधिक दूरस्थ और परमेश्वर से दूर बनाता है। जो लोग [दूसरे प्रकार में] पश्चाताप करते हैं, वे अपनी मृत्यु दर को बहुतायत से याद करते हैं ताकि उनके दिलों से भय और भय दूर हो जाए ताकि वे अपना पश्चाताप पूरा करें [अपनी गलतियों का प्रायश्चित करके, अपने पापों का प्रायश्चित करके, ईश्वरीय पूजा में उत्कृष्टता प्राप्त करें, और अपने जीवन के अंत से पहले ईश्वरीय मार्ग पर चलें]। कभी-कभी वे मृत्यु को नापसंद करते हैं, लेकिन केवल इसलिए कि मृत्यु उनके पश्चाताप के पूरा होने से पहले और इससे पहले कि वे प्रावधान [अपने सृष्टिकर्ता के पास वापस जाने के लिए परमेश्वर के मार्ग में अच्छे धर्मी कर्मों का] प्रावधान को इकट्ठा करने में सक्षम हों। ऐसे व्यक्ति को इसे नापसंद करने में क्षमा कर दिया जाता है क्योंकि कोई इसे स्पष्ट रूप से नापसंद नहीं करता है, इसके बजाय, व्यक्ति को अपने स्वयं के पापों [और गलत कामों] के कारण परमेश्वर से मिलने से वंचित होने का डर होता है। यह ठीक वैसा ही है जैसे उस व्यक्ति को प्रिय से मिलने से वंचित होने का डर है, इसलिए वह उस मिलन की तैयारी कर रहा है और प्रिय की इच्छा के अनुसार खुद को सजा रहा है। ऐसे व्यक्ति के बारे में यह नहीं कहा जाएगा कि कोई अपने प्रिय से मिलना पसंद नहीं करता है, और इसका संकेत यह है कि व्यक्ति प्रिय के साथ मिलन की तैयारी में व्यस्त है, और इसके अलावा, किसी की कोई अन्य व्यस्तता नहीं है, अन्यथा एक को पहले प्रकार में गिना जाएगा। ईश्वर का ज्ञानवादी या अंतरंग वह है जो हमेशा मृत्यु को याद करता है और ऐसा करता है [पूरी तरह से] यह जानते हुए कि मृत्यु के बाद प्रिय से मुलाकात होगी। प्रेमी प्रिय से मिलने के समय को कभी नहीं भूलता। ऐसा व्यक्ति अक्सर मृत्यु के आगमन को जल्दी चाहता है और उसके आगमन पर प्रसन्न होता है ताकि कोई पापों के निवास से छुटकारा पा सके और सभी ब्रह्मांडों और अस्तित्वों के भगवान (*रब्ब अल-आलमीन*) की निकटता में स्थानांतरित हो सके। पश्चाताप करने वाले व्यक्ति को मृत्यु को धोखा देने के लिए क्षमा किया जाता है और इस व्यक्ति को मृत्यु पसंद करने के लिए भी क्षमा किया जाता है। इन दो व्यक्तियों में, [आध्यात्मिक] रैंकों में सबसे श्रेष्ठ, वह है जो अपने मामले को परमेश्वर को सौंपता है। दूसरे शब्दों में, कोई व्यक्ति अपने लिए मृत्यु या जीवन को पसंद नहीं करता है, बल्कि इसके बजाय, केवल वही जो किसी के प्रभु को प्रिय है, वह उसे प्रिय है। ईश्वरीय प्रेम की तीव्रता के कारण, ऐसा व्यक्ति ईश्वरीय इच्छा की स्वीकृति के उच्च [आध्यात्मिक] स्थान तक पहुँच जाता है । यह वांछित उद्देश्य और उपलब्धि का शिखर है। फिर भी, अपनी मृत्यु दर को याद करने में बहुत उत्कृष्टता और ईश्वरीय प्रतिफल है। यहां तक कि दुनिया में डूबा

हुआ व्यक्ति भी मृत्यु के स्मरण से यह लाभ प्राप्त कर सकता है जो व्यक्ति को इससे (दुनिया) दूर करना शुरू कर देता है, और यह स्मरण सुखों के साथ मोहभंग पैदा करता है, और सुखों और वासनाओं को नष्ट करना मोक्ष और मुक्ति के साधनों में से एक है।

अपनी मृत्यु दर को याद करने की उत्कृष्टता: पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

أَكْثِرُوا مِنْ ذِكْرِ هَادِمِ اللَّذَّاتِ

"सुखों के मिटाने वाले (यानी, मृत्यु) को अधिक याद रखें"।

इसका मतलब है कि सुखों को मृत्यु की याद से तब तक गंदा करना चाहिए जब तक कि आपका दिल उनसे बचने और भगवान पर केंद्रित न हो जाए। संसार एक विश्वासी के लिए एक जेल है, जब तक कोई संसार की जेल में कैद रहता है, तब तक व्यक्ति स्वयं को अनुशासित करने, शैतान के प्रतिरोध में, और अभिलाषाओं से खुद को दूर करने में [जीवन के संघर्षों और चुनौतियों से निपटने के अलावा] विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों को सहन करता है। मृत्यु व्यक्ति को इन कठिनाइयों से मुक्त करती है।

अपनी नश्वरता के स्मरण को दृढ़ता से स्थापित करने की विधि: लोग इसके प्रति लापरवाह और लापरवाह होते हैं क्योंकि वे इसके प्रतिबिंब और स्मरण में संलग्न नहीं होते हैं, और यदि कोई इसका उल्लेख भी करता है, तो वह मुक्त हृदय से ऐसा नहीं करता है, बल्कि वह सांसारिक वासनाओं में लिप्त हृदय के साथ ऐसा करता है। इसलिए इसका उल्लेख करने से हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अपनी स्वयं की नश्वरता की याद को दृढ़ता से स्थापित करने का तरीका यह है कि इस स्मरण के अलावा हर चीज से दिल को खाली कर दिया जाए और हर समय यह विचार किया जाए जैसे कि मृत्यु एक के सामने है, ठीक उसी तरह जैसे एक खतरनाक घाटी से गुजरने वाला यात्री या समुद्र में नौकायन करता है, पूरी तरह से यात्रा पर केंद्रित है। इसलिए यदि अपने स्वयं के अंत की याद हृदय में ऐसे ही बनी रहे, तो आशा की जाती है कि इसका प्रभाव हृदय पर पड़ेगा। मृत्यु को याद करने का एक लाभकारी तरीका उन लोगों के बारे में सोचना है जो एक ही उम्र के समकालीन थे और एक की तरह थे और जीवन की गतिविधियों में व्यस्त लग रहे थे, लेकिन वे अब गंदगी (कब्र) के बिस्तर में हैं। उनके पास कितने महान पद थे, वे कितने समृद्ध थे, लेकिन गंदगी ने उनके सभी पदों और उपाधियों को मिटा दिया है, उनके जीवनसाथी विधवा और विधुर हो गए हैं, उनके बच्चों ने माता-पिता को खो दिया है, उनकी संपत्ति [और उनके द्वारा छोड़ी गई संपत्ति] सभी चली गई हैं, और [सामाजिक] सभाएं उनसे इस हद तक रहित हैं कि कोई भी अब उनका उल्लेख भी नहीं करता है जैसे कि वे पहले पैदा भी नहीं हुए थे या अस्तित्व में भी नहीं थे। यदि प्रत्येक व्यक्ति की [जिसके बारे में कोई जानता है कि किसका निधन हो गया है] की इसी तरह जाँच की जाती है और उनकी अवस्थाओं, उनकी मृत्यु की परिस्थितियों, उनके रूप और रूप-रंग, उनकी गतिविधियों, उनकी अन्य व्यस्तताओं [जीवन में] को हृदय में लाया जाता है और इस बात पर विचार किया जाता है कि वे जीवन में कैसे डूबे हुए थे, मृत्यु के बारे में भूल गए थे, और उन्होंने [गलती से] सोचा था कि उनके पास [जीवन में सफल और समृद्ध होने के लिए आवश्यक सभी साधन हैं] और उनकी ताकत और यौवन होगा कभी खत्म नहीं होता। इसलिए, वे खेल, खेल और मनोरंजन में व्यस्त थे और मौत के प्रति लापरवाही बरते रहे जो तेजी से उनके पास आई [उस सब और उन भ्रांतियों के बावजूद जिन पर वे विश्वास

करते थे, उन्होंने अभी भी अंततः अपने अंत का सामना किया और अब यहां नहीं हैं]। ऐसे ही एक व्यक्ति को देखते हुए, जो सुखों और भोगों में लिप्त देखा गया था लेकिन अब पैर टूट गए हैं [कब्र में], और शरीर विघटित और बिखर गया है। कोई जीवन में बहुत बातें करता था और हंसी फैलाता था लेकिन अब कीड़ों ने जीभ खा ली है, और गंदगी ने दांतों को खा लिया है। कोई व्यक्ति अपने लिए अच्छी [भविष्य] योजना बनाता था, उत्तरोत्तर बेहतर व्यवस्थाएँ करता था जिसकी अगले दस वर्षों के लिए आवश्यकता भी नहीं थी, भले ही स्वयं और मृत्यु के बीच केवल एक महीने की दूरी थी और किसी को इसके लिए कोई बोध भी नहीं था, जब तक कि मृत्यु ने एक ऐसे समय में एक को पकड़ नहीं लिया जिसकी किसी ने कभी उम्मीद नहीं की थी। अचानक, मृत्यु का दूत एक के सामने प्रकट हुआ और किसी के कानों में स्वर्ग या नरक की घोषणा की [आत्मा को दूर ले जाने से पहले]।

इस बिंदु पर, किसी को अपने आप को देखना चाहिए और देखना चाहिए कि वह उनके जैसा ही है [जो मर चुके हैं और जो उसके समकालीन थे], किसी की लापरवाही और लापरवाही की स्थिति बिल्कुल उनके जैसी ही है, और किसी का भी उनके जैसा ही अंत होने का खतरा है। अब्दुल्लाह इब्ने मसूद (रश्मा उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "खुशी और सफलता का व्यक्ति वह है जो दूसरों [और उनके जीवन] से सबक लेता है"। इन विचारों और चिंतनों के साथ-साथ, यदि कोई कब्रिस्तानों में जाने और बीमारों से मिलने की दिनचर्या बना लेता है, तो [किसी की अपरिहार्य] मृत्यु का विचार हृदय में ताजा रहेगा, बल्कि, यह उस पर हावी होगा [किसी के कार्यों और सही दिशा में होने की पूरी स्थिति तक, और चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में रखना]। इस स्थिति में यह आशा की जाती है कि कोई मृत्यु के लिए तैयार होगा और व्यक्ति धोखे की विशेषता वाली दुनिया को अलग कर देगा। केवल मृत्यु का उल्लेख करना और उसे सतही रूप से याद करना बहुत फायदेमंद नहीं है। जब भी दिल में किसी अच्छी चीज का विचार पैदा होता है, तो आपको सोचना चाहिए कि एक दिन आपको उससे अलगाव का सामना करना पड़ेगा।

लंबे जीवन की आशाएं, आशाओं को कम करना, लंबी उम्मीदों के कारण और इलाज की विधि:
अली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने बताया कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

إِنَّ أَشَدَّ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمْ خَصْلَتَانِ اتِّبَاعُ الْهَوَى وَطُولُ الْأَمَلِ فَأَمَّا اتِّبَاعُ الْهَوَى
فَإِنَّهُ يَصُدُّ عَنِ الْحَقِّ وَأَمَّا طُولُ الْأَمَلِ فَإِنَّهُ الْحُبُّ لِلدُّنْيَا ثُمَّ قَالَ أَلَا إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى
يُعْطِي الدُّنْيَا مَنْ يُحِبُّ وَيُبْغِضُ وَإِذَا أَحَبَّ عَبْدًا أَعْطَاهُ الْإِيمَانَ أَلَا إِنَّ لِلدِّينِ أَبْنَاءً وَ
لِلدُّنْيَا أَبْنَاءً فَكُونُوا مِنْ أَبْنَاءِ الدِّينِ وَلَا تَكُونُوا مِنْ أَبْنَاءِ الدُّنْيَا أَلَا إِنَّ الدُّنْيَا قَدِ
ارْتَحَلَتْ مُوَلِّيَةً أَلَا إِنَّ الْآخِرَةَ قَدِ ارْتَحَلَتْ مُقْبِلَةً أَلَا وَإِنَّكُمْ فِي يَوْمِ عَمَلٍ لَيْسَ فِيهِ
حِسَابٌ أَلَا وَإِنَّكُمْ تُوشِكُونَ فِي يَوْمِ حِسَابٍ لَيْسَ فِيهِ عَمَلٌ

"मुझे आपसे दो चीजों से सबसे ज्यादा डर लगता है: एक है अपनी खुद की सनक (निचले स्व से इच्छाओं) का पालन करना और दूसरा लंबी उम्मीदें [या लंबे जीवन की उम्मीद] है। अपनी सनक का अनुसरण

करना, व्यक्ति को सत्य के मार्ग से रोकता है और लंबी आशाएं रखता है, जिसका अर्थ है दुनिया का प्रेम। [फिर उन्होंने कहा] सावधान रहें, परमेश्वर हर व्यक्ति को संसार प्रदान करता है, चाहे वह किसी से प्रेम करता हो या किसी को नापसंद करता हो [अपने स्वयं के बुरे कार्यों के कारण], हालाँकि, वह [उस पर और शाश्वत सत्यों में जो आवश्यक रूप से उससे जुड़े हुए हैं] को [केवल] जिसे वह प्यार करता है, उसे विश्वास प्रदान करता है। ध्यान रखें, कुछ लोग दिव्य मार्ग (दीन) के पुत्र हैं और कुछ दुनिया के पुत्र हैं। दिव्य मार्ग के पुत्र बनें न कि संसार के पुत्र। सावधान रहें, परलोक आपके पास आ रहा है। आज, आप उस दिन में हैं जब आप कार्य कर सकते हैं [आने वाले अनंत जीवन के लिए अच्छी तरह से तैयारी करने के लिए] और इसमें कोई जवाबदेही नहीं है। जल्द ही आप जवाबदेही के दिन (न्याय के दिन) में होंगे और इसमें कोई कार्रवाई नहीं होगी [क्योंकि किसी की सांसारिक यात्रा के अंत में कार्य करने का समय समाप्त हो गया था]"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अल-दुन्या*)

लंबी आशाओं (या लंबे जीवन के लिए आशाएं और अपेक्षाएं) के दो कारण हैं: एक अज्ञानता है, और दूसरा दुनिया का प्रेम (सांसारिकता) है। दुनिया के प्यार का अर्थ यह है कि जब कोई व्यक्ति अपनी वासनाओं, सुखों और व्यस्तताओं का आदी हो जाता है, तो दुनिया से अलग होना व्यक्ति के लिए बहुत भारी हो जाता है और यह व्यक्ति को मृत्यु पर विचार करने से रोकता है क्योंकि मृत्यु इस अलगाव का कारण है [स्वयं और दुनिया के बीच]। मनुष्य स्वाभाविक रूप से किसी ऐसी चीज से दूर हो जाता है जिसे वह नापसंद करता है। यह मानव स्वभाव है कि व्यक्ति हमेशा झूठी आशाओं और इच्छाओं से पीड़ित रहता है, कुछ ऐसा जो उसकी इच्छा के अनुसार होता है। इसलिए, दुनिया में रहना बिल्कुल उसकी इच्छा के अनुसार है। इसीलिए, कोई हमेशा इसके बारे में सोचता है और अपने लिए वह सब कुछ मानता है जो निर्वाह के लिए आवश्यक है जैसे कि जीवनसाथी, बच्चे, घर, दोस्त, रिश्तेदार, सवारी और दुनिया के सभी साधन। व्यक्ति का हृदय इस चिंता में इतना मग्न हो जाता है कि वह मृत्यु के प्रति लापरवाह हो जाता है, उसकी निकटता पसंद नहीं करता है, यदि कभी हृदय में मृत्यु का विचार आया कि वह मर जाएगा और उसके लिए तैयारी करने की आवश्यकता है, तो व्यक्ति स्वयं से वादा करता है कि अभी भी बहुत समय है, मैं बड़ा होकर पश्चाताप करूंगा। जब कोई बड़ा होता है, तो वह इसे बुढ़ापे तक स्थगित कर देता है। जब कोई बूढ़ा हो जाता है, तो कोई कहता है, "जब मैं घर बनाने का काम पूरा कर लेता हूं या यात्रा से लौटता हूं, या किसी बच्चे के भविष्य के लिए कुछ करता हूं या किसी विरोधी से निपटता हूं तो मुझे पछताता आएगा"। व्यक्ति इस तरह स्वयं के साथ विचलन करता है और पश्चाताप को कभी न खत्म होने वाली श्रृंखला में देरी (स्थगित) करता रहता है, क्योंकि जिस चीज में वह शामिल होता है, वह दस अन्य नई चीजों को जन्म देती है जब तक कि देरी लंबी और लंबी नहीं हो जाती, नए जुड़ाव पैदा होते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए प्रोत्साहन बलपूर्वक बढ़ जाते हैं, जब तक कि वादा किया गया समय [किसी के अंतिम अंत का] नहीं आता है और मृत्यु एक ऐसे समय में [सांसारिक जीवन से] छीन लेती है जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। उस समय व्यक्ति का पछतावा और दुख देखने लायक होता है। सोचता है कि जो व्यक्ति दुनिया में व्यस्त है, उसे कभी न कभी कुछ खाली समय जरूर मिलेगा। यह केवल एक गलतफहमी है क्योंकि कोई खाली समय तभी प्राप्त कर सकता है जब कोई खुद को पूरी तरह से दुनिया से [दिल में] अलग कर लेता है।

अज्ञानता यह है कि किसी को अपनी युवावस्था में बहुत भरोसा होता है और वह सोचता है कि उसकी युवावस्था में मृत्यु नहीं आएगी, हालांकि, यह शुद्ध मूर्खता और अज्ञानता है। यदि कोई अपने आस-पास देखता है, तो वह पाएगा कि बूढ़े लोगों की संख्या बहुत अधिक नहीं है। इसका कारण यह है कि बुढ़ापे से

पहले होने वाली कई मौतें होती हैं। जब तक एक बूढ़ा व्यक्ति मौत का दरवाजा खटखटाता है, तब तक हजारों युवा और बच्चे मौत को गले लगा चुके होते हैं। कभी-कभी, कोई व्यक्ति मृत्यु को अपने स्वास्थ्य के परिप्रेक्ष्य से दूर मानता है (अच्छा स्वास्थ्य व्यक्ति को यह विश्वास करने में धोखा देता है कि वह बुढ़ापे से पहले नहीं मरेगा) और अचानक मृत्यु की संभावना को महत्व नहीं देता है। कोई नहीं जानता कि अचानक मृत्यु असंभव नहीं है; अगर अचानक मौत को असंभव माना जाए तो अचानक बीमारी को असंभव नहीं माना जा सकता, बल्कि बीमारी अचानक प्रकट हो जाती है और जब कोई बीमार होता है तो कौन कह सकता है कि मृत्यु दूर नहीं है? यदि यह लापरवाह और लापरवाह व्यक्ति यह सोचता और समझता है कि मृत्यु के लिए कोई विशिष्ट समय आरक्षित नहीं है, लेकिन यह बचपन, युवावस्था, बुढ़ापा, सर्दी, गर्मी, वसंत, पतझड़, दिन या रात में कभी भी आ सकता है, तो यह आशा की जाती है कि मृत्यु किसी की दृष्टि में महत्व ग्रहण करेगी और व्यक्ति इसकी तैयारी पूरी करने में सक्षम होगा। हालाँकि, इन मामलों से अपरिचितता और दुनिया का प्यार एक के सामने है और कोई यह नहीं सोचता कि यह किसी के साथ हो सकता है। कोई अंतिम संस्कार में जाता है लेकिन यह नहीं समझता कि [एक दिन] लोग अपने स्वयं के अंतिम संस्कार में ऐसे ही चलेंगे। हकीकत में जनाजे में जाना आदतन हो गया है और लोगों को मरते हुए देखना इतनी बार हो चुका है कि कोई भी इसकी आदी हो गया है। अब अंतिम संस्कार देखने से न तो अपनी मृत्यु का बोध होता है, न ही कोई इसके बारे में सोचता है। लेकिन मौत सिर्फ एक बार आएगी, वह पहली और आखिरी बार होगी। फिर भी, पूर्वाग्रह को नियोजित करना केवल अज्ञानता और मूर्खता है।

जब यह स्पष्ट हो गया है कि अपनी मृत्यु दर को दूर मानने का कारण, अज्ञान और दुनिया के प्रति प्रेम (सांसारिकता) है, तो इसके इलाज को जानना भी अनिवार्य है। किसी बीमारी के कारण को दूर करके उसे ठीक किया जा सकता है। अज्ञानता का इलाज विचारों की स्पष्टता और शुद्ध हृदयों से ज्ञान के शब्दों को सुनकर किया जा सकता है। हालाँकि, दुनिया के प्यार का इलाज मुश्किल है। यह एक ऐसी बीमारी है जिसके इलाज ने पहले और आखिरी (पहले और बाद की पीढ़ियों के ऋषियों) को थका दिया है। इसका इलाज और कुछ नहीं बल्कि [परमेश्वर के] सेवक के पास अंतिम दिन (न्याय के दिन) पर विश्वास करना है और जो कुछ भी प्रतिफल और दंड के संदर्भ में उसमें है। जब अंतिम दिन निश्चितता सिद्ध हो जाती है तो दुनिया का प्यार दिल से निकल जाएगा क्योंकि किसी श्रेष्ठ चीज का प्यार दिल से हीन चीज के प्यार को खत्म कर देता है। यहाँ एक ओर अपनी सभी समस्याओं के साथ दुनिया है और दूसरी ओर अपनी सभी चालाकी, सुंदरता और महिमा के साथ परलोक है। जब मनुष्य हृदय की स्पष्टता, शिथिलता और स्पष्टता के साथ दोनों पर विचार करता है, तो किसी को दुनिया (सांसारिकता) के प्रति थोड़ा सा भी झुकाव नहीं बचेगा, भले ही उसे पूर्व से पश्चिम तक सरकार प्रदान की गई हो। ऐसा इसलिए, क्योंकि जब कोई व्यक्ति इस विस्तृत दुनिया का एक छोटा सा हिस्सा प्राप्त करता है, तो वह भी मैला से मुक्त नहीं होता है। जिसके हृदय में परलोक में विश्वास है, वह अपने हृदय में संसार के प्रेम को कैसे मजबूत कर सकता है? व्यक्ति को हर समय अपने अंगों पर नज़र डालनी चाहिए और प्रतिबिंबित करना चाहिए कि वे कितने सुंदर, जीवंत और मजबूत हैं, लेकिन जल्द ही कब्र में कीड़े उन्हें अपना भोजन बना लेंगे। शरीर का एक भी हिस्सा ऐसा नहीं होगा जिसे कीड़े नहीं खाएंगे। यदि किसी के पास कुछ भी रह जाएगा, तो वह सही ज्ञान और धार्मिक कर्म होंगे [मैंने अपने सांसारिक जीवन में किया]। इन मामलों में चिंतन के साथ-साथ, किसी को अन्य प्रासंगिक मामलों पर विचार करना चाहिए जैसे कि कब्र की सजा, स्वर्गदूतों से पूछताछ (*मुनकीर नकीर*), न्याय का दिन, पुनरुत्थान, अंतिम दिन की घटनाएं, और उस शक्तिशाली दिन पर अदालत में उपस्थिति

और जवाबदेही [भगवान के सामने]। ये मामले ऐसे हैं कि अगर कोई इन पर विचार करता है, तो मृत्यु की याद ताजा रहती है [दिल में] और इसके लिए तैयारी करने की इच्छा होती है।

लंबी और छोटी आशाओं के संदर्भ में लोगों की डिग्री: लोग इस संबंध में भिन्न हैं (लंबे या छोटे जीवन के लिए उनकी आशाओं और अपेक्षाओं के संदर्भ में)। कुछ लोग निर्वाह की इच्छा रखते हैं और हमेशा के लिए दुनिया में रहना चाहते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों के बारे में निम्नलिखित कहता है:

يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ

"उनमें से कुछ एक हजार साल का जीवन चाहते हैं। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 96)

कुछ लोग बुढ़ापे तक जीना चाहते हैं। यह है अति आयु जो देखी जाती है। ये लोग दुनिया के प्रति गहन प्रेम में फंस जाते हैं। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा है:

اَلشَّيْخُ شَابٌ فِى حُبِّ طَلَبِ الدُّنْيَا وَإِنِ الْتَفَّتْ تَرْقُوْتَاهُ مِنَ الْكِبَرِ إِلَّا الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَقَلِيْلٌ مَّاهُمْ

"एक बूढ़ा व्यक्ति दुनिया को खोजने (या उसके पीछे भागने) के प्यार में युवा होता है, भले ही बुढ़ापे के कारण उसके अंग टेढ़े-मेढ़े हो गए हों, लेकिन ऐसे लोग ईश्वर से डरने वाले नहीं होते हैं, और वे (यानी, पवित्र विस्मय, श्रद्धा और ईश्वर के भय वाले लोग) संख्या में बहुत कम होते हैं। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* अबू हुरैरा के अधिकार पर *सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम को* इकट्ठा करता है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

कुछ लोगों को एक वर्ष से अधिक समय तक उम्मीद नहीं होती है; इसलिए वे एक वर्ष के लिए अपनी आवश्यकताओं की व्यवस्था करते हैं, सर्दियों में वे गर्मियों के लिए जमा होते हैं और गर्मियों में वे सर्दियों के लिए जमा होते हैं। इसलिए, जब वे एक वर्ष के लिए चीजों को इकट्ठा करने का प्रबंधन करते हैं, तो वे दिव्य पूजा में लगे जाते हैं। कुछ लोग एक वर्ष से भी कम समय तक जीवित रहने की उम्मीद करते हैं। वे मौजूदा सीजन में अगले सीजन की तैयारी नहीं करते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें एक दिन से अधिक समय तक जीने की उम्मीद नहीं होती है। वे केवल आज के लिए तैयारी करते हैं और कल की तैयारी में शामिल नहीं होते हैं। यीशु (परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) ने कहा, "कल के भरण-पोषण की चिंता मत करो, अगर तुम्हारे जीवन में कल आता है, तो कल का भरण-पोषण भी इसके साथ आएगा, और यदि तुम्हारे जीवन में कल का कोई अस्तित्व नहीं है, तो तुम्हें अन्य लोगों के जीवन के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए [उन चीजों को पीछे छोड़ने के संदर्भ में जिन्हें आप आज जमा कर रहे हैं ताकि अन्य लोग कल से लाभ उठा सकें और लाभ उठा सकें चला जाएगा]"। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनकी अपेक्षा (जीवन और जीने की) एक पल से भी अधिक नहीं होती है! जैसा कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, "हे अब्दुल्लाह बिन उमर! जब आप सुबह पहुंच जाएं तो शाम की चिंता न करें और जब आप शाम तक पहुंच जाएं तो सुबह की चिंता न करें। कुछ लोगों ने एक पल पर भी भरोसा नहीं किया, इसलिए पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने प्रकृति की पुकार को पूरा करने के बाद, तुरंत धूल से स्नान किया (*तयम्मुम*- पानी की अनुपस्थिति या दूरदर्शिता में धूल के साथ बाहरी शुद्धता

के लिए किया गया स्नान, जैसा कि पैगंबर ने हमेशा बाहरी और आंतरिक शुद्धता की स्थिति को बनाए रखा था) ठीक उसी समय भले ही पानी बहुत दूर नहीं था और उपयोग किया गया था यह कहने के लिए, "शायद मैं पानी तक नहीं पहुंच पाऊंगा [और मेरी आत्मा उससे पहले भी ले ली जाएगी]", मानो मृत्यु उसके सामने थी और उसके पास आने वाली थी। ऐसा व्यक्ति [भगवान से] प्रार्थना करता है जैसे कि यह किसी की आखिरी प्रार्थना है [जो ईश्वर के सामने अत्यंत ईमानदारी और हृदय की उपस्थिति के साथ की जाती है]। मुअद इब्ने जबल (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) उसी स्थिति में थे, इसलिए जब पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने उनसे विश्वास की वास्तविकता के बारे में पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया, "मैंने कोई कदम नहीं रखा है जब मैंने अनुमान लगाया कि मैं एक और कदम उठाने में सक्षम हो जाऊंगा"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *अबू नईम फी अल-हिल्या*) यह [एक महान अफ्रीकी संत] असवाद हब्शी (भगवान उन पर दया करें) के बारे में वर्णित है कि जब वह रात में प्रार्थना करते थे, तो वह इधर-उधर देखते थे। किसी ने उनसे पूछा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया, जिस पर उन्होंने जवाब दिया, "मैं [चारों ओर देखता हूं] देखता हूं कि मृत्यु का दूत कहां से आ रहा है"।

यह लोगों के विभिन्न रैंकों और डिग्रियों की व्याख्या है [लंबे जीवन के लिए उनकी आशाओं और अपेक्षाओं के संदर्भ में]। उन्हें अपनी डिग्री के अनुसार परमेश्वर से प्रतिफल मिलता है। जिसकी आशा और अपेक्षा [जीवन या जीवन के लिए] एक महीने के लिए है, वह उस व्यक्ति से अलग है जिसकी अपेक्षा एक महीने से अधिक है, भले ही वह एक दिन से अधिक हो, दोनों के पास समान डिग्री नहीं है। परमेश्वर के साथ न्याय और निष्पक्षता है, और वह उनकी बराबरी करके अन्याय नहीं करता है [क्योंकि वे इस मामले में समान नहीं हैं]। वह कहता है:

فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُۥ

"जो एक परमाणु के वजन के लायक अच्छा करता है, वह इसे [भगवान के सामने] देखेगा। (कुरान, अध्याय 99, श्लोक 7)

[लंबे जीवन के लिए] आशाओं और अपेक्षाओं को कम करने का प्रभाव [एक व्यक्ति] [अच्छे धर्मी कर्म करने] की ओर [अपनी पूरी ईमानदारी से] प्रगति से स्पष्ट होता है। क्षमता और सफलता का संकेत (ईश्वर से) (*तौफीक*) यह है कि मृत्यु किसी की आंखों के सामने होनी चाहिए, व्यक्ति एक पल के लिए भी इसके प्रति लापरवाही नहीं करता है, और अपने अंतिम अंत के लिए हमेशा तैयार रहता है। यदि कोई शाम तक जीवित रहता है तो वह इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता है क्योंकि उसने उसे उसकी आज्ञाकारिता का अवसर दिया और प्रसन्न हो कि उसका दिन व्यर्थ नहीं गया, बल्कि, उसे उसमें से अपना हिस्सा [परमेश्वर के मार्ग में ईश्वरीय आज्ञाकारिता और धार्मिक कर्मों का] मिला, और उसे उसमें से हिस्सा मिला, परलोक के लिए एक के लिए संग्रहीत (सुरक्षित जमा) किया गया है। फिर सुबह की शुरुआत उसी कृतज्ञता के साथ होती है, [मार्गदर्शन और सही सलाह को] और ईश्वरीय आज्ञाकारिता को सुनना। केवल वही व्यक्ति इसे आसानी से कर सकता है जिसका दिल कल [चिंताओं, चिंताओं, योजना और रणनीति बनाने] से मुक्त है और कल क्या होगा इसके बारे में चिंतित नहीं है। ऐसे व्यक्ति को मृत्यु के बाद शाश्वत सुख और अंतहीन विजय (सादाह) प्राप्त होगी, और अपने जीवनकाल के दौरान, व्यक्ति परलोक के लिए अपनी तैयारी और ईश्वर (मनजात) से प्रार्थना का आनंद प्राप्त करने के कारण खुश रहेगा। ऐसे व्यक्ति के लिए, मृत्यु अनन्त सुख और अनन्त सफलता (सादाह) प्राप्त करने का एक साधन है, और जीवन शाश्वत

सुख और अनन्त सफलता को बढ़ाने का एक साधन है। हे मनुष्य! अपने अंत का विचार हर समय अपने दिल में रखें। जीवन आपको [दुनिया से] दूर ले जा रहा है और आपका स्वयं [इसकी] लापरवाही में लिप्त है। शायद, यह हो सकता है कि आपकी यात्रा [इस दुनिया के माध्यम से जीवन की] समाप्त होने वाली है और आपकी [अंतिम] मंजिल निकट है। केवल कार्यों की ओर आगे बढ़कर ही आप गंतव्य के आराम प्राप्त कर सकते हैं।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, "आप में से कोई भी ऐसी समृद्धि (समृद्धि या समृद्धि) की प्रतीक्षा नहीं करता है जो किसी को विद्रोही बना देगा, या ऐसी गरीबी के लिए जो व्यक्ति को ईश्वरीय आज्ञाकारिता की उपेक्षा कर देगी, या ऐसी बीमारी के लिए जो किसी को [शारीरिक रूप से] अक्षम कर देगी, या बुढ़ापे के लिए जो बुद्धि को शून्य कर देगी, या ऐसी मृत्यु के लिए जो जल्द ही आने वाली है, या *दज्जाल* (मसीह-विरोधी) और *दज्जाल* के लिए गायब होने के लिए सबसे बुरा व्यक्ति है जिसका इंतजार किया जा रहा है, या न्याय के दिन और न्याय के दिन के लिए बेहद कठिन और कड़वा है। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *तिर्मिज़ी* अबू हुरैरा के अधिकार पर [भगवान उनसे प्रसन्न हों])।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति उन पर हो) ने कहा:

اِغْتَنِمْ خَمْسًا قَبْلَ خَمْسٍ شَبَابَكَ قَبْلَ هَرَمِكَ وَصِحَّتَكَ قَبْلَ سُقْمِكَ وَ
غِنَاكَ قَبْلَ فَقْرِكَ وَفَرَاغَكَ قَبْلَ شُغْلِكَ وَحَيَاتَكَ قَبْلَ مَوْتِكَ

"पांच चीजों से पहले पांच चीजों को महत्व दें [और सही प्रयासों में उनका बुद्धिमानी से उपयोग करें]: बुढ़ापे से पहले आपकी युवावस्था, आपकी बीमारी से पहले आपका स्वास्थ्य, आपकी गरीबी से पहले आपकी समृद्धि, आपकी व्यस्तताओं (व्यस्त समय) से पहले आपका खाली समय, और आपकी मृत्यु से पहले आपका जीवन। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *इब्न अबी अल-दुन्या*)

एक अन्य कथन में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा:

نِعْمَتَانِ مَغْبُونٌ فِيهِمَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ اَلصِّحَّةُ وَالْفَرَاغُ

"दो आशीर्वाद ऐसे हैं कि अधिकांश लोगों को उनमें नुकसान होता है [उनका पूरा फायदा नहीं उठाकर]: स्वास्थ्य और खाली समय (आराम या विश्राम)"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास के अधिकार पर [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

इस भविष्यसूचक कथन का अर्थ यह है कि एक मनुष्य को इन दोनों आशीषों से सम्मानित किया गया है, लेकिन कोई भी इन दोनों का लाभ उठाने में सक्षम नहीं है, लेकिन जब वे चले जाते हैं, तो व्यक्ति को उनके मूल्य और महत्व का एहसास होता है। भगवान कहते हैं:

ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلْمَوْتَ وَٱلْحَيَوٰةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

"[भगवान] वह है जिसने आपको [उनकी पगडंडियों और चुनौतियों के साथ] परखने के लिए मृत्यु और जीवन बनाया ताकि [यह निर्धारित करने और आपको अपने लिए देखने का अवसर देने के लिए] कि आप में से कौन अधिक अच्छे [महान और धार्मिक] कर्म (प्रयास, प्रयास और उपलब्धियां) करता है। (कुरान, अध्याय 67, श्लोक 2)

मौत की धड़कन में दर्द: यह ज्ञात हो कि मौत के दर्द का सटीक अनुमान केवल वही लगा सकता है जो इस चरण से गुजर चुका है। जिसने इस दर्द का अनुभव नहीं किया है, वह समय-समय पर एक तक पहुंचने वाले दर्द और प्रतिकूलताओं को कम कर सकता है या लोगों को उनके अंतिम क्षणों की तीव्रता पर देखकर कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। तार्किक निष्कर्ष से यह तर्क दिया जा सकता है कि जिस अंग या अंग में आत्मा नहीं है, उसे कोई दर्द नहीं होता है, और यदि आत्मा मौजूद है तो दर्द की भावना भी होती है। इससे पता चलता है कि दर्द आत्मा को महसूस होता है। इसलिए, जब कोई घायल होता है तो इसका प्रभाव आत्मा तक पहुंचता है और जिस हद तक यह आत्मा तक पहुंचता है, उस हद तक उसे दर्द महसूस होता है, क्योंकि दर्द मांस, रक्त और शरीर के अन्य भागों में फैल जाता है। इसीलिए, आत्मा को कम दर्द का अनुभव होता है, हालांकि, अगर ऐसा है कि दर्द और परेशानी का केंद्र विशेष रूप से आत्मा है और आत्मा के अलावा कुछ भी नहीं है, तो दर्द की गंभीरता की कल्पना की जा सकती है। मृत्यु की धड़कन [जीवन के अंतिम क्षणों में] इसी दर्द को संदर्भित करती है जो आत्मा की इकाई पर उतरती है और इसके सभी घटकों के माध्यम से फैलती है जब तक कि आत्मा का कोई भी हिस्सा, पूरे शरीर में फैल नहीं जाता, जहां यह दर्द प्रवेश नहीं करता है और नहीं पहुंचा है। मृत्यु का दर्द आत्मा की इकाई पर हमला करता है और उसके सभी भागों में फैल जाता है क्योंकि यह (आत्मा) प्रत्येक नस, प्रत्येक जोड़, प्रत्येक भाग [शरीर के] से हटा दिया जा रहा है, संक्षेप में, सिर से पैर के अंगूठे तक हर हिस्से से, आत्मा को बाहर निकालकर हटा दिया जाता है [प्रत्येक व्यक्ति के अपरिहार्य अंत के लिए नियत समय पर ईश्वरीय आदेश द्वारा]। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आत्मा को कितना दर्द और पीड़ा सहनी पड़ती है।

जहां तक सवाल है, "इंसान बहुत चिल्लाता है जब कोई घायल हो जाता है या चोट लग जाती है लेकिन मौत के समय चिल्लाता नहीं है, हालांकि आप कहते हैं कि मौत के दर्द में अनुभव किया जाता है और दर्द अधिक होता है। [इसका कारण क्या है?]" इसका उत्तर यह है कि अत्यधिक सदमे के कारण, मरने वाले व्यक्ति की जीभ सील हो जाती है (बोलने में सक्षम नहीं होती है) और चिल्लाने में सक्षम नहीं होती है। दर्द इतना तीव्र होता है कि इस हमले से हृदय, मस्तिष्क और शरीर सभी अक्षम हो जाते हैं। सारी शक्ति चली जाती है, सभी अंग कमजोर हो जाते हैं, याचना करने की शक्ति नहीं बचती है, बुद्धि अलग हो जाती है, वाणी जीभ से छीन ली जाती है, अंग गतिहीन हो जाते हैं, कोई दिल की दबी हुई भावनाओं को बाहर निकालने के लिए जोर से चिल्लाना चाहता है और दर्द और दुख से कुछ सुखदायक राहत पाता है, लेकिन कोई चिल्ला नहीं सकता। यदि बाईं ओर कुछ ताकत [मरने वाले व्यक्ति में], तो आत्मा के प्रस्थान के समय, गला और छाती एक दबी हुई [गड़गड़ाहट या खड़खड़ाहट की] ध्वनि उत्पन्न करती है, तो धूल के रंग में रंग बदल जाता है जैसे कि वह धूल दिखाई देती है जो मनुष्य की उत्पत्ति है, सभी नसें खींचने लगती हैं क्योंकि अंदर बाहर हर जगह दर्द होता है, आंखें ऊपर की ओर बढ़ती हैं, होंठ सिकुड़ते हैं, जीभ अंदर

खींची जाती है, उंगलियां हरी हो जाती हैं। शरीर की उस स्थिति के बारे में क्या पूछते हैं जिसकी रग खींची जा रही है? यदि शरीर की एक नस खींची जाती है, तो दर्द की तीव्रता के कारण व्यक्ति चीखने के लिए मजबूर हो जाता है। यहां सभी नसें खिंच रही हैं, फिर धीरे-धीरे सभी अंग मरने लगते हैं। दोनों पैर मर जाते हैं, पहले दोनों पैर ठंडे हो जाते हैं, फिर पिंडली, फिर जांघें, फिर हर अंग के लिए दर्द के बाद दर्द होता है, फिर तीव्रता के बाद तीव्रता का सामना तब तक होता है जब तक कि आत्मा अपने खिंचाव के दौरान गले तक नहीं पहुंच जाती। उस समय, किसी की आँखें दुनिया और दुनिया के लोगों से दूर हो जाती हैं, पश्चाताप का द्वार बंद हो जाता है, और दुःख और शर्म पर बादल छा जाते हैं। संक्षेप में, मृत्यु की पीड़ा की कठोरता, दर्द और कड़वाहट का वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने ईश्वर से प्रार्थना की [पूरी मानवता को सिखाने के माध्यम से भी]:

اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَكَرَاتِ الْمَوْتِ

"हे परमेश्वर! मुहम्मद के लिए मौत की कठोरता को आसान बनाएं!"

सामान्य लोग (आम आदमी) इन कष्टों को कोई महत्व नहीं देते हैं, न ही वे उनसे [ईश्वर की] शरण मांगते हैं क्योंकि वास्तव में घटित होने से पहले चीजों की धारणा, भविष्यद्वाणी (*नबुवा) के प्रकाश से और ईश्वर (*विलाया) के *साथ अंतरंगता के प्रकाश से* होती है। इसलिए, ईश्वर के भविष्यवक्ताओं और अंतरंग लोगों (ज्ञानवादी) को मृत्यु का अधिक भय होता है [क्योंकि वे पहले से जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है, जबकि बाकी मानवता नहीं जानती है और इससे तब तक बेखबर रहती है जब तक कि वे स्वयं इसका अनुभव नहीं करते]।

मृत्यु के समय कौन से कार्य बेहतर हैं? मृत्यु के समय एक अच्छी बात यह हो सकती है कि मरने वाला व्यक्ति शांतिपूर्ण होता है और गवाही के कथन का पाठ ("ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है لا إله إلا الله ") किसी की जीभ पर रहता है, और हृदय में ईश्वर (हुस्न अल-धुन) के लिए अच्छी राय और भावनाएं होती हैं। गवाही के इस कथन का कथन एक अच्छा संकेत है। अबू सईद अल-खुदरी (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति उन पर हो) ने कहा:

لَقِّنُوْا مَوْتَاكُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

"अपने मरने वाले लोगों को यह सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें कि 'ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है (لا إله إلا الله)'".

उमर (रइश्वर उनसे प्रसन्न हों) ने कहा, "अपने मरने वाले लोगों से मिलें और उन्हें सलाह दें क्योंकि वे [उस समय] ऐसे मामलों को देखते हैं जिन्हें आप [गवाही] नहीं देते हैं, और उन्हें यह पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि 'ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है'। उपदेश देने वाले व्यक्ति को किसी के उपदेश पर जोर नहीं देना चाहिए और उसमें नम्रता का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि कभी-कभी, मरने वाले व्यक्ति की जीभ नहीं हिलती है।

इस व्याख्या का परिणाम यह है कि जब मनुष्य मृत्यु को गले लगाता है, तो किसी के हृदय में परमेश्वर के अलावा कुछ भी नहीं होना चाहिए। यदि हृदय में, कोई ईश्वर के अलावा कुछ नहीं चाहता है, तो उसकी मृत्यु प्रिय के पास जाने का साधन होगी [दिव्य प्रेम की स्थिति में, उसमें लिपटे रहना, अनंत काल में मार्ग को एक अद्‌भुत अनुभव बनाना], और किसी के पास अपने प्रिय के पास जाने से बड़ा आशीर्वाद नहीं हो सकता है। यदि किसी का हृदय संसार में लगा हुआ है और उसके सुखों से अलग होने के कारण दुखी है, और 'ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है لا إله إلا الله ' केवल उसकी जीभ पर है, जबकि हृदय इसका पता नहीं लगाता है, तो किसी का मामला खतरे से रहित नहीं है, सिवाय इसके कि ईश्वर अपना आशीर्वाद देता है और एक से मात्र कहावत को स्वीकार करता है। हालांकि, उस समय भगवान के बारे में अच्छी राय रखना बेहतर है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने एक युवक से मुलाकात की जो मरने वाला था। उसने उससे पूछा, "आप इस समय खुद को इस स्थिति में कैसे पाते हैं?" उसने उत्तर दिया, "मुझे परमेश्वर पर आशा है और मैं अपने पापों से डरता हूँ। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, "ये दो चीजें, जब वे [एक साथ] एक सेवक [ईश्वर के] में इकट्ठा होते हैं, तो ईश्वर किसी को वह प्रदान करता है जो कोई उससे अपेक्षा करता है, और किसी को उस चीज़ से मुक्ति प्रदान करता है जिससे वह डरता है"। किसी की मृत्यु के समय सेवक (मरने वाले व्यक्ति) के अच्छे कर्मों का उल्लेख करना बेहतर है ताकि किसी की मृत्यु के समय परमेश्वर के बारे में अच्छी राय हो [अपनी जीवन यात्रा के अंत में उसमें आशा रखने के संदर्भ में]।

हमने मृत्यु के कगार में मरने वाले व्यक्ति की स्थिति, दफनाने से पहले और दफनाने के बाद मृतकों की स्थिति के बारे में बताया है (ग़ज़ाली के इस स्पष्टीकरण में से कुछ को संक्षिप्तता के हित में यहां छोड़ दिया गया है)। हमने पहले समझाया है कि यदि मृतक उन लोगों में से है जिनके पास ईश्वरीय क्रोध होगा [अपने स्वयं के गलत कामों और उनकी गंभीरता के कारण], तो व्यक्ति को कब्र के अंधेरे और कीड़ों का सामना करना पड़ेगा, कब्र में स्वर्गदूतों से पूछताछ करनी होगी, फिर कब्र की सजा। ईश्वरीय प्रतिशोध के और भी कठिन चरण वे हैं जिनका सामना कब्र के बाद किया जाएगा जैसे कि तुरही बजाना [जो अंतिम दिन के आगमन का संकेत देता है], न्याय के दिन पुनरुत्थान, परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किया जाना [ईश्वरीय न्याय और निष्पक्षता के साथ जवाबदेही के लिए], चीजों के बारे में [ईश्वरीय अदालत में] कमोबेश [सांसारिक जीवन के दौरान किसी के गलत कामों के संदर्भ में चीजों को उचित और निष्पक्ष रूप से नहीं करने के लिए], संतुलन के पैमाने में कार्यों का वजन [अच्छे या बुरे के संदर्भ में उनका मूल्य निर्धारित करने के लिए, पदार्थ या खाली दिखावे के संदर्भ में], फिर सीरत के पुल को पार करना जो उस्तरा-पतला होगा, फिर शाश्वत सुख और अनन्त सफलता (सादाह) या शाश्वत अभिशाप और विफलता (*शकवाह)* की प्राप्ति के बारे में [अंतिम] निर्णय की प्रतीक्षा करना). आपके लिए यह अनिवार्य है कि आप इन खतरों और खतरों की समझ प्राप्त करें [अपने आप को] और उन पर विश्वास करें और [दिल में] दृढ़ होकर उन पर विश्वास करें, फिर उनमें लंबे समय तक चिंतन और विचार-विमर्श करें, ताकि इन [आसन्न] खतरों से बचने के लिए अपनी तैयारी को पूरा करने के लिए प्रोत्साहन और जोर आपके दिल में पैदा हो।

दिव्य दृष्टि और ईश्वर के चेहरे को देखना [स्वर्ग में]: क़ुरआन में ईश्वर कहते हैं:

لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا۟ ٱلْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ

"जिन्होंने अच्छा किया है [भगवान द्वारा स्वीकार किए गए धर्मी कर्मों के संदर्भ में], अतिरिक्त अच्छाई के साथ-साथ अच्छाई (स्वर्ग और अनंत काल के लिए इसकी अटूट प्रचुरता) है। (कुरान, अध्याय 10, श्लोक 26)

यह अतिरिक्त अच्छाई परमेश्वर का दर्शन और उसके धन्य चेहरे की गवाही है। यह एक ऐसा असाधारण परम आनंद है कि इसे प्राप्त करने पर, स्वर्ग के निवासी अन्य सभी सुखों और आशीर्वादों को भूल जाएंगे। "दिव्य प्रेम की पुस्तक" (अध्याय 16) में, इस दिव्य दृष्टि की वास्तविकता को समझाया गया है और दिव्य पुस्तक और भविष्यसूचक मार्ग के साक्ष्यों के साथ, प्रस्तुत किया गया है जो [पारंपरिक पद्धति के] अस्वीकृत और इनकार करने वालों की मान्यताओं को अस्वीकार करते हैं (अहल *अल-बिद)* / जरीर इब्ने अब्दुल्लाह अल-बजाली (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "हम पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के साथ बैठे थे। उसने चौदहवीं रात (पूर्णिमा) के चंद्रमा को देखा और कहा, 'आप अपने भगवान को वैसे ही देखेंगे जैसे आप इस चंद्रमा को देखते हैं। आप चंद्रमा को देखने के लिए एक-दूसरे पर नहीं गिरते (धक्का देते) [प्रतियोगिता में]। यदि संभव हो तो सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त से पहले प्रार्थना करने से पहले न थकें और उन्हें अच्छी तरह से करें (सतर्कता और पूर्ण भक्ति के साथ)। फिर उन्होंने निम्नलिखित श्लोक का पाठ किया:

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ ٱلشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا

'और सूर्य के उदय से पहले और अस्त होने से पहले अपने प्रभु की स्तुति करो। (कुरान, अध्याय 20, श्लोक 130) (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* रबा के अधिकार पर [परमेश्वर उस से प्रसन्न हो])

हदीस *संग्रह* सहीह मुस्लिम *द्वारा इमाम* मुस्लिम द्वारा वर्णित किया गया है , जो सुहैब अल-रूमी (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) से वर्णन करता है कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने [ऊपर] आयत का पाठ किया, "जिन्होंने अच्छा किया है [ईश्वर द्वारा स्वीकार किए गए धर्मों के संदर्भ में], वहाँ अतिरिक्त अच्छाई (ईश्वर की दृष्टि) के साथ अच्छाई (स्वर्ग और अनंत काल के लिए इसकी अटूट प्रचुरता) है" और कहा, "जब स्वर्ग के लोग स्वर्ग में प्रवेश कर चुके हैं और नरक के लोग नरक में प्रवेश कर चुके हैं, तो एक चिल्लाने वाला घोषणा करेगा, 'हे स्वर्ग के निवासियों! आपके लिए परमेश्वर की एक प्रतिज्ञा है जिसे वह अब आपसे पूरा करना चाहता है! स्वर्ग के लोग कहेंगे, 'वह वादा क्या है? क्या उसने हमारे वजन [अच्छे कर्मों के] भारी नहीं बनाया है [संतुलन के पैमाने पर]? क्या उसने हमारे चेहरों को रोशन नहीं किया है? क्या उसने हम में स्वर्ग में प्रवेश नहीं किया है? और क्या उसने हमें नरक से नहीं बचाया? उसके बाद, पर्दा हटा दिया जाएगा और वे परम परमेश्वर के धन्य चेहरे को देखेंगे। फिर उन्होंने कहा, 'उनके लिए इससे अधिक प्रिय कुछ भी नहीं होगा (दिव्य दृष्टि)।

परमेश्वर को गवाही देने के बारे में भविष्यवाणी की परंपरा को कई भविष्यद्वाणी साथियों द्वारा वर्णित किया गया है। दिव्य दृष्टि का सम्मान सभी अच्छाई, सभी उत्कृष्टताओं और सभी आशीर्वादों का शिखर और परिणति है। पिछले पृष्ठों में जहां स्वर्ग की आशीषों का उल्लेख किया गया है (इस कार्य में छोड़ दिया गया

है), इस सर्वोच्च आशीर्वाद की तुलना में महत्वहीन हो जाएगा। ईश्वर से मिलने की खुशी और दिव्य दृष्टि की शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय (सादाह), जिसे वे प्राप्त करेंगे, असीम [स्थायी और चिरस्थायी] होगा, बल्कि, इस आनंद के साथ स्वर्ग के सुखों की कोई तुलना नहीं है। हम इस विषय पर यहां अधिक चर्चा नहीं करना चाहते हैं क्योंकि "दिव्य प्रेम की पुस्तक, इच्छा और ईश्वरीय इच्छा की स्वीकृति" (अध्याय 16) में इस पर विस्तार से चर्चा की गई है। यहां हम सिर्फ इतना कहेंगे कि स्वर्ग के साथ [भगवान के] सेवक का उद्देश्य, वहां अपने वास्तविक मालिक और प्रिय (भगवान) से मिलने के सम्मान के अलावा और कुछ नहीं होना चाहिए। स्वर्ग के बाकी आशीर्वादों में, यहां तक कि चरागाहों में चरने वाले जानवर भी आपके भागीदार और सह-भागीदार हैं।

पुस्तक के समापन पर खुशी की खबर के रूप में परमेश्वर की दया की व्यापकता का उल्लेख करना

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर हो) को खुशखबरी देना पसंद था। हमें आशा करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें इस लोक और परलोक में एक अच्छा अंत प्रदान करेगा। हम इस पुस्तक ("परमेश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार") को ईश्वरीय दया की व्यापकता की सुखद खबर के साथ समाप्त करना चाहते हैं। भगवान कहते हैं:

قُلْ يَٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ

إِنَّ ٱللَّهَ يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ

"उनसे कहो (हे मुहम्मद!) [भगवान आपको बताते हैं:] हे मेरे दासों, जिन्होंने अपनी आत्माओं के साथ अन्याय किया है! परमेश्वर की दया से निराश मत हो। वास्तव में, परमेश्वर सभी पापों को क्षमा करता है! वास्तव में, वह क्षमा करने वाला है और उस पर बहुत दया है। (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 53)

وَمَن يَعْمَلْ سُوٓءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُۥ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ ٱللَّهَ يَجِدِ ٱللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا

"जो कुछ गलत करता है या अपनी आत्मा पर अत्याचार करता है, वह भगवान से क्षमा मांगता है, वह भगवान को बहुत क्षमाशील और बहुत दयालु पाएगा। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 110)

हम इस पुस्तक में और किसी भी अन्य में अपनी कलम से की गई हर गलती के लिए परमेश्वर से क्षमा चाहते हैं। हम अपने उन वचनों के लिए भी परमेश्वर से क्षमा माँगते हैं जो हमारे कार्यों से मेल नहीं खाते हैं। हम समझ और ज्ञान के अपने दावे से भी परमेश्वर की क्षमा चाहते हैं, हर उस ज्ञान और कार्य से जिसके साथ हमने परमेश्वर की स्वीकृति का इरादा किया था, लेकिन उस इरादे में उसके अलावा अन्य मिश्रण हो गए, उस प्रतिज्ञा के लिए जो हमने अपने स्वयं से किया था [इसे सुधारने और शुद्ध करने के लिए] लेकिन

हम इसे पूरा करने में कम पड़ गए, हर उस आशीर्वाद के लिए जो हमें दिया गया था लेकिन हमने इसे पाप में इस्तेमाल किया, उस दोष के लिए जिसमें हम स्वयं शामिल थे, लेकिन हमने इसे स्पष्ट रूप से या रूपक रूप से दूसरों के लिए जिम्मेदार ठहराया, और उस विचार के लिए जो किसी भी पुस्तक या भाषण या शिक्षण को लिखने के लिए प्रोत्साहन बन गया, लेकिन यह केवल लोगों को दिखाने के लिए या कृत्रिमता के लिए या किसी भी अवास्तविक कारण के लिए था। इन सभी मामलों के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगने के बाद, हम आशा करते हैं कि परमेश्वर उन लोगों को क्षमा और आशीषें प्रदान करेगा जो इस पुस्तक को पढ़ते हैं, लिखते हैं या सुनते हैं, और हमारे सभी बाहरी और आंतरिक पापों के प्रति दया रखेंगे क्योंकि उनकी दयालुता सामान्य (व्यापक) है, उनकी दया विस्तृत है, और सभी रचनाएँ उसके दान में शामिल हैं। हम भी ईश्वर की रचना हैं। हमारे पास उसकी उदारता और उदारता के अलावा [परीक्षाओं, क्लेशों और जीवन और मृत्यु की शक्तिशाली चुनौतियों से छुटकारा] कोई अन्य साधन नहीं है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, "ईश्वर के पास दया और आशीर्वाद के सौ भाग हैं (ईश्वर ने अपनी दया को सौ भागों में विभाजित किया है)। उनमें से, परमेश्वर ने *जिन्नों* और मनुष्यों, जानवरों, पक्षियों, कीड़ों और रेंगने वालों पर [सौ में से] एक दया की है। इस एक [ईश्वरीय का हिस्सा] दया [जो पृथ्वी पर मौजूद है] के कारण, वे एक दूसरे के साथ प्रेम और दान के साथ व्यवहार करते हैं। और दया के निन्यानबे [हिस्सों] को अपने पास सुरक्षित रखा है और न्याय के दिन उन पर दया करने के लिए अपने सेवकों पर उनका उपयोग करेगा"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह मुस्लिम* अबू हुरैरा और सलमान अल-फ़ारसी के अधिकार पर [भगवान उन दोनों से प्रसन्न हों]) एक भविष्यद्वाणी परंपरा में यह वर्णित किया गया है कि वह दिव्य सिंहासन के नीचे से एक लेख निकालेगा, उसमें लिखा होगा, 'मेरी दया मेरे क्रोध को हटा देती है और मैं सभी दयालु लोगों में सबसे दयालु हूं'। उसके बाद, स्वर्ग में जितने लोग हैं, उससे दोगुने लोगों को नरक से बाहर निकाला जाएगा। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम)* क़यामत के दिन परमेश्वर विश्वासियों से पूछेंगे, "क्या मुझसे मिलना तुम्हें प्रिय था?" वे उत्तर देंगे, "हाँ, हे हमारे प्रभु! परमेश्वर पूछेगा, "क्यों? वे जवाब देंगे, "हमें आपकी दया और क्षमा की आशा थी"। परमेश्वर कहेगा, "मैंने अपनी क्षमा को अपने ऊपर अनिवार्य बना लिया है"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* कलेक्शन *मुसनद अहमद* और *तबरानी*)

एक भविष्यद्वाणी की परंपरा में यह वर्णित किया गया है कि परमेश्वर न्याय के दिन आज्ञा देगा), "हर उस व्यक्ति को नरक से बाहर ले जाओ जिसने मेरी याद की या किसी स्थान पर मुझसे डरते थे"। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *तिरमिज़ी* अनस बिन मलिक के अधिकार पर पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "ईश्वर को अपने सेवकों (मनुष्यों) के लिए अपने बच्चे के लिए एक माँ के स्नेह से भी अधिक स्नेह है"। (द्वारा सुनाई गई हदीस ने उमर के अधिकार पर *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम* को *इकट्ठा किया* है) जाबिर बिन अब्दुल्ला (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) बताते हैं, "कयामत के दिन, जिसका अच्छा काम उसके पापों से अधिक है, वह बिना किसी जवाबदेही के स्वर्ग में प्रवेश करेगा, और जिसके अच्छे कर्म और पाप समान हैं, उसे कुछ जवाबदेही का सामना करना पड़ेगा तो उसे स्वर्ग में प्रवेश किया जाएगा। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की मध्यस्थता उस व्यक्ति के लिए होगी जिसने खुद को नष्ट कर लिया था और जिसकी पीठ किसी के पापों के बोझ से झुकी हुई (बोझ से भरी हुई) होगी।

एक लंबी भविष्यद्वाणी परंपरा के अंत में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने न्याय के दिन और *सीरत* के पुल का उल्लेख किया , फिर कहा, "भगवान स्वर्गदूतों को आदेश देंगे कि वे किसी को भी नरक से बाहर निकालें, जिसके *दिल में दीनार* (सोने का सिक्का) के आकार की कोई भी अच्छाई हो। देवदूत ऐसे लोगों को बाहर निकालेंगे और इस तरह बेशुमार लोग बाहर आएंगे। स्वर्गदूत कहेंगे, 'हे परमेश्वर! जिन लोगों के बारे में तूने हमें आज्ञा दी, हमने उनमें से किसी को नहीं छोड़ा। तब परमेश्वर कहेगा, 'वापस जाओ और किसी ऐसे व्यक्ति को नरक से निकाल लो जिसके हृदय में कण के आकार की कोई भी अच्छाई हो'। तो नरक से अनगिनत रचनाएँ निकलेंगे। स्वर्गदूत कहेंगे, 'हे परमेश्वर! जिन लोगों के बारे में तूने आज्ञा दी थी, उनमें से कोई भी नरक में नहीं रहा। अबू सईद अल-खुदरी (भगवान उनसे प्रसन्न हों) इस परंपरा का वर्णन करने के बाद कहा करते थे, "यदि आप इस परंपरा के बारे में मुझे नहीं जानते हैं तो इस आयत को पढ़ें:

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَظۡلِمُ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖۖ وَإِن تَكُ حَسَنَةٗ يُضَٰعِفۡهَا وَيُؤۡتِ مِن لَّدُنۡهُ أَجۡرًا عَظِيمٗا

'वास्तव में, परमेश्वर एक कण के आकार का उत्पीड़न नहीं करेगा, और यदि किसी ने नेक कर्म किए हैं, तो परमेश्वर उसे कई गुना बढ़ा देगा [विशुद्ध रूप से ईश्वरीय उदारता, उदारता और उदारता से] और स्वयं से और भी अधिक शक्तिशाली प्रतिफल देगा। (कुरान, अध्याय 4, श्लोक 40)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने बताया कि एक दिन पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) आए और उन्होंने कहा, "मेरे सामने राष्ट्रों को प्रदर्शित किया गया था और मैंने एक पैगंबर को अपने अनुयायियों के एक बड़े समूह के साथ गुजरते देखा, और दूसरे पैगंबर को केवल लोगों के एक छोटे समूह के साथ वहां से गुजर रहा था। और एक और भविष्यद्वक्ता केवल दस (व्यक्तियों) के साथ वहां से गुजर रहा था, और एक अन्य भविष्यद्वक्ता केवल पांच (व्यक्तियों) के साथ वहां से गुजर रहा था, और एक अन्य भविष्यद्वक्ता अकेले [एक भी अनुयायी के साथ] वहां से गुजर रहा था। और फिर मैंने देखा और लोगों की एक बड़ी भीड़ को देखा और उम्मीद की कि शायद वे मेरे राष्ट्र (*उम्माह)* से हैं, लेकिन मुझे बताया गया कि यह पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का राष्ट्र है। फिर मुझे देखने के लिए कहा गया। मैंने एक बड़ी भीड़ देखी जिसने क्षितिज को कवर किया। मुझे ऐसे ही दिखना जारी रखने के लिए कहा गया। इसलिए, मैंने एक विशाल रचना देखी। मुझे बताया गया, 'ये आपके अनुयायी हैं, और वे सत्तर हजार (व्यक्ति) हैं जिनके सामने न तो उनके खातों का कोई हिसाब होगा और न ही कोई दंड मिलेगा। इसके बाद लोग चले गए और पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह नहीं बताया कि ये सत्तर हजार लोग कौन होंगे। इस पर साथी एक-दूसरे से कहने लगे, "हम बहुदेववाद में पैदा हुए थे लेकिन बाद में हमें परमेश्वर और उसके रसूल पर विश्वास था। ये लोग हमारे बच्चे होने चाहिए [जो अविश्वास में पैदा नहीं हुए थे]"। पैगंबर ने इस बातचीत के बारे में समाचार सुना [और इन अनुमानों को संबोधित करने का फैसला किया कि ये लोग कौन हैं जो बिना किसी गणना और जवाबदेही के स्वर्ग में प्रवेश करेंगे]। उन्होंने कहा, "क्योंकि वे अपने आप को ब्रांडिंग (दाग) के साथ व्यवहार नहीं करते थे और न ही नेक्रोमैटिक (जादू) मंत्र सुनाते थे [लोगों को नुकसान पहुंचाने के लिए उन पर बुरा जादू करने के लिए], और चीजों में बुरा शकुन नहीं देखते थे, और वे अपना भरोसा [केवल] अपने भगवान पर रखते थे"। यह सुनकर, 'उकाशा बिन मिहसन ने उठकर (पैगंबर से) कहा, 'कृपया भगवान से मुझे उनमें से एक बनाने के लिए पुकारें'। उसने कहा, "हे परमेश्वर! उसे उनमें से एक बनाओ"। फिर एक और आदमी उठा और (पैगंबर से) कहा, "कृपया भगवान से प्रार्थना करें कि वह

मुझे भी उनमें से एक बना दें"। उन्होंने कहा, "उकाशा आपसे पहले है"। (द्वारा सुनाई गई *अब्दुल्ला इब्ने अब्बास के अधिकार पर* हदीस संग्रह सहीह बुखारी [ईश्वर उनसे प्रसन्न हो])

अबू धर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने सुनाया कि पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति उन पर हो) ने कहा, "[महादूत] गेब्रियल हर्रा (उत्तर-पश्चिम अरब में एक सुप्त ज्वालामुखी रेगिस्तानी क्षेत्र) की ओर से मेरे पास आए और कहा, 'अपने राष्ट्र को खुशखबरी सुनाओ कि जो इस तरह की स्थिति में मर जाता है कि किसी ने ईश्वर के साथ किसी भी भागीदार को जिम्मेदार नहीं ठहराया है, ऐसा व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश करेगा। मैंने उससे पूछा, 'भले ही किसी ने चोरी और व्यभिचार किया हो?' जिब्राएल ने कहा, 'हाँ, भले ही किसी ने चोरी और व्यभिचार किया हो। यह प्रश्न और उत्तर तीन बार दोहराया गया। (द्वारा सुनाई गई *हदीस* संग्रह *सहीह बुखारी* और *सहीह मुस्लिम)* अबू धर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) के कथन में, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने इस आयत का पाठ किया:

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ جَنَّتَانِ

"जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता है, उसके लिए दो स्वर्ग हैं। (कुरान, अध्याय 55, श्लोक 46)

एक अन्य भविष्यवाणी परंपरा के अनुसार, एक अभियान के दौरान, शिविर लगाए गए थे जहां बाद में एक छोटा लड़का पाया गया था। उस दिन बहुत गर्मी थी। अचानक एक महिला तंबू से बाहर आई और उस बच्चे की ओर दौड़ती हुई जहां वह खड़ा था। उसका परिवार उसके ठीक पीछे था। महिला ने अपने बच्चे को उठाया और उसे कसकर गले लगा लिया। फिर वह चट्टानी सतह पर लेट गई और अपने बच्चे को गर्मी से बचाने के लिए फिर से गले लगा ली और कहने लगी, 'मेरे बेटे! मेरा बेटा!" यह देखकर लोग रोने लगे [अपने बच्चे के लिए गहरा मातृ प्रेम और स्नेह]। इसके बाद लोग वहां से चले गए। इसी बीच पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आए और लोगों ने उन्हें इस बारे में जानकारी दी। वह उनकी करुणा और दया से प्रसन्न हुआ। फिर उसने उन्हें खुशखबरी दी और कहा, "क्या आप इस महिला की ओर से अपने बच्चे पर करुणा और दया के प्रवाह पर आश्चर्यचकित हैं?" लोगों ने कहा, "हां, वास्तव में यही मामला है"। उन्होंने कहा, "भगवान आप सभी के लिए अधिक दयालु और दयालु हैं, जितना कि यह महिला अपने बच्चे के लिए है। फिर लोग जबरदस्त खुशी और शानदार खुशखबरी के साथ अपने रास्ते पर चले गए [सभी के लिए ईश्वरीय प्रेम, दया और करुणा के बारे में]। (द्वारा सुनाई गई *हदीस उमर के अधिकार पर* सहीह बुखारी *और* सहीह मुस्लिम *को इकट्ठा करता* है [भगवान उनसे प्रसन्न हों])

ये परंपराएं और जो हमने "आशा की पुस्तक" (अध्याय 13) में समझाया है, वह हमें ईश्वरीय दया की विशालता और व्यापकता की सुखद खबर प्रदान करती है। हम आशा करते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ वह व्यवहार नहीं करेगा जिसके हम हकदार हैं [हमारे स्वयं के दोषों, कमजोरियों, गलत कामों, अपराधों, ज्यादतियों और उत्पीड़न के कारण], बल्कि वह हमारे साथ इस तरह से व्यवहार करेगा जो उसकी महिमा और महिमा के योग्य हो, जो उसकी कृपा, अनुग्रह, दया और उदारता से परिपूर्ण हो।

अध्याय 21 – समय, स्थान और स्थिति की परवाह किए बिना आंतरिक शांति, शांति और खुशी पाने के लिए खुद को मुक्त करने के लिए बुद्धि

ग़ज़ाली की महान रचना "इह्या अल-उलूम अद-दीन" *या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" के चौथे और अंतिम खंड की अंतिम पुस्तक के समापन पर,* लचीलापन, सकारात्मकता, आंतरिक शांति, शांति, शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय प्राप्त करने के लिए आंतरिक परिवर्तन के लिए आध्यात्मिक संघर्ष के प्रमुख बिंदुओं पर गौर करना उचित है। इस उद्देश्य के लिए, ग़ज़ाली के कालातीत ज्ञान का लाभ यहां फिर से एक महत्वपूर्ण कथन के रूप में उठाया जाएगा जो जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने का तरीका बताता है। ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "*अयुहाल वलाद*" या "माई डियर बिलीव सन" में इस कथन का उल्लेख किया है जो ग़ज़ाली की लघु पुस्तकों के तीन-खंड संग्रह "*मजमुआ रसा-इल इमाम ग़ज़ाली*" या "इमाम ग़ज़ाली द्वारा लघु पुस्तकों का संग्रह" में इस प्रकार मौजूद है [27]:

ऐसा कहा जाता है कि छात्रों और *मुरीदों* (शिष्यों के बीच जो एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के मार्गदर्शन में सभी बुरी इच्छाओं और प्रवृत्तियों से अपनी आत्मा की शुद्धि की प्राप्ति के माध्यम से आध्यात्मिक पूर्णता और ज्ञान की तलाश करते हैं, जिन्होंने बदले में प्रशिक्षण, मार्गदर्शन के माध्यम से आत्मा की इस शुद्धि और भगवान के सामने उच्च पद को पूरी तरह से प्राप्त किया है, और एक अन्य आध्यात्मिक मार्गदर्शक की निकटता) शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर दया करें) के एक छात्र और शिष्य थे जिनका नाम हातिम अल-अस्म था (भगवान उस पर दया करें, जो बाद में शेख शाकीक के आध्यात्मिक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के माध्यम से एक महान आध्यात्मिक गुरु बन गए)। एक दिन शेख शेख शेख बल्खी (भगवान उन पर दया करें) ने उनसे कहा:

"ऐ हातिम! कितने समय से मेरी संगति (आध्यात्मिक निकटता) में हूं और जो मैं (सिखा रहा हूं) उसे सुन रहा हूं?

हातिम अल-अस्म (ईश्वर उस पर दया करे) ने उत्तर दिया: "तैंतीस साल!"

शेख शाकीक बल्खी ने पूछा:

"उस [लंबे] समय में, आपने मुझसे क्या लाभ प्राप्त किया है?"

हातिम अल-अस्म (ईश्वर उस पर दया करे) ने जवाब दिया:

"[मैंने] [तुमसे] आठ लाभ प्राप्त किए हैं।

शेख शाक़ीक बल्खी (भगवान उन पर दया करें) ने जवाब दिया:

"*इन्ना लिल्लाही वा इन्ना इलाये रजीऊन*।
"हम ईश्वर के हैं और हम उसी के लिए लौटेंगे (यह कुरान की ओर से एक प्रार्थना है जो हानि और दुःख के समय की जाती है)।

शेख बल्खी (भगवान उन पर दया करें) ने फिर कहा:

"ऐ हातिम! मैंने अपना जीवन शिक्षण और प्रशिक्षण में बिताया है, और आपने मुझसे अभी-अभी आठ लाभ प्राप्त किए हैं?"

हातिम अल-अस्म (ईश्वर उस पर दया करे) ने उत्तर दिया:

"हे मेरे गुरु! यदि आपने [मुझे] सच्चाई के लिए पूछा, तो वास्तविकता वही है जो मैंने आपको बताई थी। मुझे और अधिक [लाभ] की आवश्यकता नहीं है और ज्ञान से ये लाभ काफी पर्याप्त हैं क्योंकि मुझे यकीन है कि मैं इन आठ लाभों के माध्यम से इस जीवन में और परलोक के जीवन में मोक्ष [और सफलता] प्राप्त करूंगा।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर दया करें) ने उनसे पूछा:

"ठीक है! मुझे बताओ, वे आठ लाभ क्या हैं?"

हातिम अल-एएसएम द्वारा वर्णित लाभ

"हे मेरे गुरु! **पहला फायदा** यह है कि मैंने इस दुनिया के लोगों को देखा और देखा कि हर किसी का एक प्रिय है। लेकिन [दुनिया के] लोगों के ये प्रिय ऐसे हैं कि उनमें से कुछ (यानी, प्रियजन) उनकी बीमारी तक उनके साथ रहते हैं जो मृत्यु लाती है, उनमें से कुछ मृत्यु तक उनके साथ रहते हैं, उनमें से कुछ तब तक उनके साथ रहते हैं जब तक कि वे अपनी कब्रों तक नहीं पहुंच जाते, और दफनाने के बाद सभी प्रिय वहां से लौट आते हैं। उनका कोई भी प्रिय उनके साथ उनकी कब्रों में उनके साथ नहीं जाता है और उनके साथ [अंधेरे, एकांत, संकीर्णता और कब्र के आतंक में] उनकी कंपनी प्रदान करने के लिए। मैंने इस पर विचार किया और अपने आप से कहा कि केवल वही एक अच्छा प्रिय है जो कब्र में उनके साथ जाता है और अपने प्रेमी के साथ रहता है, जो कंपनी प्रदान करेगा, जो कब्र को रोशन करेगा, जो कयामत के दिन और उसके गंतव्यों पर भागीदार होगा (स्टेशन जो दफन के बाद न्याय के दिन तक जाते हैं)। मैंने देखा कि एकमात्र प्रिय जिसके पास ये [अच्छे] गुण हैं, वह मेरे अच्छे (पवित्र और धार्मिक) कर्म हैं। इसके बाद [दृढ़ संकल्प और जागरूकता], मैंने अपने अच्छे कर्म को अपना प्रिय बना लिया ताकि वह मेरी कब्र में मेरे साथ चले [जब मैं मर जाऊं], मुझे अपनी कंपनी प्रदान करे, मेरी कब्र में एक प्रबुद्ध मोमबत्ती बन जाए, परलोक जीवन के सभी चरणों में मेरा साथी बनेगा, और कभी भी मुझसे अलग नहीं होगा।

शेख शेख शेख बल्खी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा:

"शाबाश हे हातिम! आपने बहुत अच्छी बात कही है। अब दूसरा लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **दूसरा लाभ** यह है कि मैंने दुनिया के लोगों पर नज़र डाली और देखा कि हर कोई *नफ्स* (निचला स्व जो किसी को बुराई करने का निर्देश देता है) के सुखों और इच्छाओं का अनुसरण कर रहा था और [हर कोई] निचले स्व की इच्छाओं के अधीन है। यह देखने के बाद, मैंने निम्नलिखित पवित्र आयत (कुरान से) पर विचार-विमर्श किया:

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ وَنَهَى ٱلنَّفْسَ عَنِ ٱلْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾
فَإِنَّ ٱلْجَنَّةَ هِىَ ٱلْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

'लेकिन जो किसी के पालनकर्ता की उपस्थिति के डर में खड़ा हो गया है और अपने आंतरिक स्व को आधार (निम्न और बुरी) इच्छाओं से रोक दिया है, स्वर्ग [इस व्यक्ति के लिए] आराम का स्थान होगा। (कुरान, अध्याय 79, आयत 40-41)

मैंने यह निश्चितता विकसित की कि बुद्धिमान कुरान सही है, और ईश्वर की पुस्तक सत्य है। फिर मैंने अपने *नफ्स* (निचले स्व) के खिलाफ एक मोर्चा स्थापित किया और इसका विरोध करने के लिए दृढ़ हो गया। मैंने इसे (यानी, मेरे निचले स्व) को इस तरह से ढाला कि मैंने इसकी किसी भी इच्छा को तब तक पूरा नहीं किया जब तक कि इसे भगवान, महान की पूजा में शांति [और संतुष्टि] नहीं मिलनी शुरू हो गई।

शेख शक़ीक बल्खी (भगवान उन पर दया करें) ने जवाब दिया:

"भगवान, परम प्रभु, आपके अच्छे कामों में अपना आशीर्वाद प्रदान करें। अब तीसरा लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **तीसरा लाभ** यह है कि जब मैंने लोगों की ओर देखा तो मैंने देखा कि हर व्यक्ति बड़े कष्ट और परिश्रम के साथ इस नश्वर दुनिया की संपत्ति (धन, धन, सामान) को जमा करने में व्यस्त है और बहुत खुश है कि उसके पास बहुत सारी वस्तुएं और भौतिक संपत्ति है। लेकिन जब मैंने भरपूर कुरान की निम्नलिखित पवित्र आयत पर विचार किया:

مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ ۖ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ بَاقٍ ۗ

"जो कुछ तुम्हारे पास है वह सब समाप्त हो जाएगा, जबकि जो कुछ परमेश्वर के पास है, वह सब अनन्त है। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 96)

फिर मैंने दुनिया में जो कुछ भी [भौतिक संपत्ति] जमा की, मैंने उसे पवित्र गरीबों और भिखारियों के बीच वितरित करके परमेश्वर के मार्ग में खर्च किया ताकि यह (भौतिक संपत्ति जिसे मैंने परमेश्वर के मार्ग में वितरित किया था) मेरे विश्वास के रूप में ईश्वर, उच्च के पास जमा हो जाए और अपार भलाई और छुड़ौती का स्रोत बन जाएगा (यानी, उद्धार) परलोक के जीवन में।

शेख शेख शेख बल्खी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा:

"ऐ हातिम! भगवान आपको अपना मुआवजा (अपने तरीके से खर्च करने के लिए इनाम) प्रदान करें! आपने बहुत अच्छी बात कही और बहुत अच्छा काम किया है। अब चौथा लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **चौथा लाभ** यह है कि मैंने दुनिया के लोगों को देखा और देखा कि उनमें से कुछ सोचते हैं कि भव्यता और सम्मान उस राष्ट्र या जनजाति (समूह) का है जो बड़ा और शक्तिशाली है, इसीलिए, वे अपने कबीले (राष्ट्र या समूह) पर गर्व व्यक्त कर रहे हैं। उनमें से कुछ ऐसे हैं जो सोचते हैं कि वैभव धन, [भौतिक] संपत्ति, परिवार और रिश्तेदारों की प्रचुरता के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, इसीलिए, [कुछ] लोग अपने धन और बच्चों पर गर्व व्यक्त कर रहे हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो सोचते हैं कि उनकी भव्यता और सम्मान क्रोध दिखाने, मारने, हत्या, लूटपाट करने में है और वे इस पर गर्व व्यक्त करते हैं। कुछ [लोग] ऐसे होते हैं जो सोचते हैं कि उनकी भव्यता फिजूलखर्ची में है, इसीलिए, वे अपने फिजूलखर्ची को सम्मान का स्रोत मानते हैं और उस पर अपना गर्व व्यक्त करते हैं। लेकिन मैंने इस श्लोक पर विचार-विमर्श किया जिसमें भगवान, महामहिम, कहते हैं:

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ

"वास्तव में, परमेश्वर की दृष्टि में तुम में से सबसे महान वह है जो उसके प्रति सबसे अधिक सचेत [और डरता] है। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 13)

इसलिए, यह सही है और सत्य है, और रचनाओं के विचार झूठे और गलत अनुमान हैं। इसीलिए, मैंने *तक़वा* (पवित्र श्रद्धा, चेतना, विस्मय और ईश्वर का भय) को अपनाया ताकि मुझे ईश्वर की दृष्टि में सर्वोच्च पद वाले व्यक्ति के रूप में गिना जा सके।

शेख शेख शेख बल्खी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा:

"ऐ हातिम! भगवान आपसे प्रसन्न हों। आपने बहुत अच्छी बात कही है। अब पांचवां लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **पांचवां फायदा** यह है कि मैंने उन लोगों को देखा जो एक-दूसरे के बारे में शिकायत कर रहे थे। यह पाया गया कि वे यह सब ईर्ष्या, ईर्ष्या और शत्रुता के कारण कर रहे थे और इसका मुख्य कारण महानता, भव्यता, [भौतिक] संपत्ति, धन और ज्ञान के लिए [इच्छा और प्रतिस्पर्धा] है। मैंने पवित्र कुरान की निम्नलिखित आयत पर विचार किया जिसमें यह कहा गया है:

نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُم مَّعِيشَتَهُمْ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۚ

"यह हम ही हैं जो इस दुनिया के जीवन में उनके बीच आजीविका के साधन (जीविका) वितरित करते हैं।' (कुरान, अध्याय 43, आयत 32)

तब मैंने सोचा कि भगवान, धन्य और उच्च, ने [सृष्टि की] पहली शुरुआत से ही संपत्ति और रैंक नियुक्त किए हैं और इस मामले में किसी का कोई नियंत्रण नहीं है। इसलिए, मैंने किसी के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं की या ईर्ष्या नहीं की और परमेश्वर के वितरण [दुनिया के सभी लोगों के बीच सांसारिक उपहार] और [उसके नियुक्त] भाग्य के लिए सहमत रहा और पूरी दुनिया के साथ [अच्छी तरह से] मिल गया [भगवान की सभी रचनाओं के खिलाफ सभी ईर्ष्या और दुश्मनी को त्यागकर]।

शेख शेख शेख बल्खी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा:

"ऐ हातिम! आप सच कह रहे हैं और आप सही काम कर रहे हैं। अब छठा लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **छठा लाभ ये** है कि जब मैंने लोगों की तरफ नजर दौड़ाई तो मैंने देखा कि हर व्यक्ति किसी न किसी कारण से किसी न किसी से दुश्मनी कर रहा है। फिर मैंने निम्नलिखित श्लोक पर विचार-विमर्श किया:

إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَٱتَّخِذُوهُ عَدُوًّا

"वास्तव में, *शैतान* (शैतान) आपका दुश्मन है, इसलिए उसे अपने दुश्मन के रूप में मानें। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 6)

उसके बाद, मुझे यह विश्वास हो गया कि परमेश्वर का कथन सत्य है, मुझे शैतान (शैतान) के अलावा किसी और से कोई दुश्मनी नहीं रखनी चाहिए । तब से, मैंने शैतान को अपना दुश्मन माना और उसके किसी भी आदेश का पालन नहीं किया। इसके बजाय, मैंने [परमेश्वर की] आज्ञाकारिता विकसित की और परमेश्वर, उच्च परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया और केवल उसकी आराधना और दासता को अपनाया। सही तरीका है *सीरत अल-मुस्तकीम* (ईश्वरीय मार्गदर्शन का सीधा मार्ग जिसमें कोई कुटिलता नहीं है) जैसा कि भगवान, महानुभाव, ने स्वयं कहा है:

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا۟ ٱلشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ

'क्या मैंने तुमसे यह प्रतिज्ञा नहीं ली कि ऐ आदम की सन्तानों! कभी भी शैतान (शैतान) की आज्ञा का पालन *न करें* । इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह आपका घोषित (खुला) शत्रु है और केवल मेरी ही पूजा करता है [क्योंकि] यह सीधा मार्ग है। (कुरान, अध्याय 36, श्लोक 60)

शेख शाक़ीक बल्खी (भगवान उन पर दया करें) ने कहा: "हे हातिम! आपने बहुत अच्छा काम किया और बहुत अच्छी बात कही। अब सातवां लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **<u>सातवां लाभ</u>** यह है कि मैंने लोगों को देखा और देखा कि हर व्यक्ति अपनी आजीविका और जीविका की तलाश में व्यस्त है और एक गहन संघर्ष में शामिल है। इस संबंध में, कोई हलाल (अनुमेय) और *हरम* (निषिद्ध) के बीच अंतर भी नहीं कर रहा है , बल्कि इसके बजाय, संदिग्ध और *हरम* (निषिद्ध) कमाई के साथ अपमानित हो रहा है। फिर मैंने निम्नलिखित श्लोक पर विचार-विमर्श किया:

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزْقُهَا

"और पृथ्वी पर ऐसा कोई जीवित प्राणी नहीं है जिसका भरण-पोषण परमेश्वर की जिम्मेदारी नहीं है। (कुरान, अध्याय 11, श्लोक 6)

तब मैंने यह निश्चितता विकसित की कि बुद्धिमान कुरान सत्य है और सही है और मैं भी उन जीवित प्राणियों में से हूं जो पृथ्वी पर मौजूद हैं। इसलिए मैं ईश्वर की आराधना में लग गया और मुझे यह विश्वास हो गया कि वह मेरे लिए (मेरा) भरण-पोषण लाएगा क्योंकि उसने मुझे जीविका प्रदान करने का वादा किया है।

शेख शेख शेख बल्खी (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा:

"आपने बहुत अच्छा काम किया और बहुत अच्छी बात बताई। अब आठवां लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **<u>आठवां लाभ</u>** यह है कि जब मैंने लोगों को देखा, तो मैंने पाया कि हर व्यक्ति की निर्भरता [या विश्वास] किसी न किसी पर या किसी चीज पर होती है। कुछ को अपनी [भौतिक] संपत्ति पर भरोसा है [या भरोसे], कुछ अन्य लोगों पर भरोसा करते हैं [या भरोसे]। इसलिए, मैंने इस पवित्र श्लोक पर विचार किया जिसमें भगवान, धन्य और उच्च कहते हैं:

وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ ۚ

"और जो कोई परमेश्वर पर भरोसा रखता है, उसके लिए वह [अकेला] [एक के लिए] पर्याप्त है। (कुरान, अध्याय 65, श्लोक 3)

'*मैं हुस्बी और मैं नहीं हूं*।

"और वह मेरे लिए पर्याप्त है और वह सबसे अच्छा सहायक है।

[इसलिए, मैंने हर मामले में भगवान पर पूरी भरोसा और भरोसा अपनाया।

जब शेख शाक़ीक बल्खी (ईश्वर उन पर दया करे) ने इन [आठ] लाभों को सुना, तो उन्होंने कहा:

"ऐ हातिम! भगवान आपको अपना *तौफीक* प्रदान करें (यानी, आपको नेक कर्म करने और उनके मार्ग पर चलने में सक्षम बनाएं)। आपने बहुत अच्छी बातें बताई हैं। मैंने *तौरात* (तोरा), *इंजील* (यीशु का सुसमाचार [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो]), *ज़बुर* (भजन), और सही और गलत (यानी, पवित्र कुरान) के बीच प्रशंसनीय अंतर में देखा है, कि इन सभी पुस्तकों [ईश्वर की] इन आठ लाभों का उल्लेख करती हैं, अर्थात, उनकी शिक्षाओं में सभी चार पुस्तकों ने [हमें] इन आठ लाभों को बताया है। जो कोई इन आठ सिद्धांतों पर कार्य करता है, वह ऐसा है मानो किसी ने सभी चार [पवित्र] पुस्तकों पर कार्य किया हो।

भाग 4: आंतरिक अस्तित्व की पूर्णता और जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक मार्ग रूमी की तीन राजकुमारों की कहानी के माध्यम से

मौलाना जलालुद्दीन रूमी (1207-1273 ईस्वी), जिन्हें रूमी के नाम से जाना जाता है, ने फ़ारसी में अपने छह-खंडों के काव्य संग्रह में आध्यात्मिकता, आंतरिक आध्यात्मिक मार्ग, ज्ञान और दिव्य प्रेम की एक उत्कृष्ट कृति लिखी, जिसे "*मथनवी-ए-मनावी*" या "गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे" के रूप में जाना जाता है, जिसे लोकप्रिय रूप से "*मथनवी*" या "*मसनवी के* रूप में जाना जाता है"" जो इस विषय पर, संपूर्ण मानव सभ्यता की सबसे महाकाव्य कविता है। इस उत्कृष्ट कृति के अंत में, उन्होंने तीन राजकुमारों के बारे में एक कल्पित कहानी के रूप में पूरे आध्यात्मिक पथ को संक्षेप में प्रस्तुत किया, जो अपनी बेटी से शादी करने के लिए चीन के सम्राट से मिलने के लिए यात्रा पर निकले थे, जो अपनी अद्वितीय सुंदरता के लिए जानी जाती थी। रूमी ने पहले दो राजकुमारों की कहानी सुनाई और तीसरे राजकुमार की कहानी को अधूरा छोड़ दिया और इसलिए "*मथनावी*" को अधूरा छोड़ दिया:

जब सूरज दिल के क्षितिज से अस्त हो गया हो [1]

मथनवी समाप्त हो गई है *[अधूरी]* और भगवान सबसे अच्छा जानता है।

रूमी ने आगे भविष्यवाणी की:

---

[1] यह इस बात का संकेत है कि इस उत्कृष्ट कृति "*मथनवी*" की विषय-वस्तु रूमी के हृदय से प्रेरित थी। चूंकि छह खंड लिखने के बाद यह बंद हो गया है, इसलिए यह उनके लिए एक दिव्य संकेत है कि पुस्तक को अधूरा छोड़ने का समय आ गया है। इसे उनके बेटे मौलाना बहा-उल-मिल्लत (उनका असली नाम बहा अल-दीन वलाद था, लेकिन लोकप्रिय रूप से सुल्तान वलाद के नाम से जाना जाता है) ने पुस्तक के अंत में कविता के अपने स्वयं के अंतिम छंदों को जोड़ते हुए कहा कि उनके पिता ने भविष्यवाणी की है: "शेष [तीन राजकुमारों की कहानी] एक व्यक्ति के दिल में आ जाएगा, बिना बात किए बिना, जिसके पास एक जीवित (प्रबुद्ध) आत्मा है"। रूमी की भविष्यवाणी के अनुसार, "मथनवी" के समापन से कई प्रबुद्ध आत्माएं प्रेरित हुईं। इसमें से, भारत के एक संत मौलाना इलाही बख्श कंदेहलवी के एक निष्कर्ष को इस महान कृति के अनुरूप सबसे करीब माना जाता है क्योंकि यह इसे उसी तरह समाप्त करता है जैसे रूमी ने छह खंडों में जारी रखा, और एक और कहानी के साथ तीन राजकुमारों की कहानी को खूबसूरती से समाप्त किया जो रूमी ने तीन भाइयों के बारे में अधूरा छोड़ दिया था, जिनके पिता ने एक कादी की देखभाल में एक विरासत छोड़ दी थी (न्यायाधीश) उसे अपनी विरासत उस बेटे को देने के लिए कह रहा है जो सबसे आलसी है। इस वर्तमान पुस्तक का यह अंतिम खंड रूमी की तीन राजकुमारों की अधूरी कहानी, उनके बेटे मौलाना बहा-उल-मिल्लत के निष्कर्ष पर प्रकाश डालेगा कि उनके पिता ने "*मथनवी*" को अधूरा क्यों छोड़ दिया, और *मौलाना इलाही बख्श कंदेहलवी द्वारा "मथनवी" का अंतिम समापन जब उन्होंने कहानी और पुस्तक का समापन किया जब वह ऐसा करने के लिए ईश्वरीय रूप से प्रेरित हुए थे, जैसा कि रूमी ने भविष्यवाणी की थी।*

शेष *[*तीन राजकुमारों की कहानी*]* एक व्यक्ति के दिल में आ जाएगा, बिना बात किए हुए,

जिसके पास एक जीवित *(*प्रबुद्ध*)* आत्मा है।

"मथनवी" *के अंतिम भाग से तीन राजकुमारों की कहानी* के साथ-साथ इस कहानी के पूरा होने के साथ, जैसा कि रूमी द्वारा भविष्यवाणी की गई है, यहां प्रस्तुत किया गया है कि आंतरिक पूर्णता, आध्यात्मिक परिवर्तन, जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति और परिणामस्वरूप शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय के लिए किसी को किस मार्ग पर चलना चाहिए:

एक सम्राट की परंपरा और अपने तीन बेटों को डोमिनियन के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करने और उन्हें प्रशासन और सेटअप पर विशिष्ट निर्देश देने की सलाह दी और उन्हें किसी विशेष महल में न जाने और उसके चारों ओर न जाने का निर्देश दिया

एक सम्राट था जिसके तीन पुत्र थे

तीनों समझदार और बुद्धिमान थे।

उनमें से हर एक प्रशंसनीय था

उदारता, युद्ध और भव्यता में।

वे सभी सम्राट के सामने खड़े थे

वे सम्राट की आंखों की शीतलता थीं।

बेटे की नजर से एक गुप्त रास्ता है

पिता का खजूर का पेड़ उस गुप्त मार्ग से पानी खींचता है *[*उसे सिंचित करने के लिए*]*।

इस हद तक कि बेटे की धारा से पानी

पिता और माता के बगीचों में बहती है।

माता-पिता के बगीचे ताजा और सिंचित रहते हैं

संतानों की आंखों से गुप्त धाराएं बहती हैं।

जब यह धारा *[*संतान से माता-पिता की ओर बहती है*]* *[*संतान की*]* बीमारी के कारण कमजोर हो जाती है

खजूर की शाखाएं और पत्तियां सूख जाती हैं।

खजूर का सूखापन साफ कहता है

पेड़ संतानों से *[*जीवन और कल्याण का*]* पानी निकालता है।

इसी तरह, कई गुप्त धाराएँ

हे लापरवाह*!* आपकी आत्मा से जुड़े हुए हैं *[*अपने अस्तित्व के वृक्ष को सिंचित करने के लिए*]*।

हे तुम जो यहाँ संबोधित किए गए हो*!* स्वर्ग और पृथ्वी से सामग्री खींची गई है

इस हद तक कि आपका शरीर उनमें से बना है।[2]

तुमने दुनिया के घटकों से शरीर चुरा लिया है

आपने इधर-उधर से टुकड़े-टुकड़े करके काटे हैं।

पृथ्वी, सूर्य और स्वर्ग से

तुमने उन टुकड़ों को *[*दुनिया से*]* शरीर और आत्मा पर चिपका दिया है।

सावधान रहें*!* क्या आपको लगता है कि आप *[*ऐसा करने के लिए*]* मुफ्त में दूर हो जाएंगे*?*

यह और वह तुमसे वापस नहीं लिया जाएगा*?*

चोरी का सामान लंबे समय तक नहीं रहता है

वे चोरों को उस स्थान पर ले जा सकते हैं जहां उन्हें फांसी दी जाती है।

यह *[*शरीर*]* उधार ली गई सामग्री से बना है, किसी को अपने पैरों को जमीन पर नहीं रखना चाहिए *[*जैसे कि शरीर स्थायी है*]*[3]

क्योंकि तुमने जो उधार लिया है, उसे वापस किया जाना चाहिए।

सिवाय इसके कि "मैंने मनुष्य में अपनी आत्मा फूँक दी" *(*[4]आत्मा*)* जैसा कि यह परमेश्वर से आया है

*[*आप बेहतर*]* आत्मा के बनें क्योंकि बाकी सब बेकार है।

---

[2] मानव शरीर की संरचना दुनिया की कई सामग्रियों से बनी है।

[3] शरीर को एक दिन पृथ्वी पर वापस लौटाने की आवश्यकता होगी जब जीवन समाप्त हो जाएगा क्योंकि यह पृथ्वी से उधार ली गई सामग्री से बना है और उधार ली गई सामग्री को आवश्यक रूप से वापस वहीं वापस कर दिया जाना चाहिए जहां से वे आए थे, सिवाय उस आत्मा के जो उधार ली गई सामग्री से बनी नहीं है और स्वर्गीय दिव्य मूल है।

[4] कुरान की आयत (15:29) जो आत्मा की स्वर्गीय उत्पत्ति और ईश्वर के साथ इसके घनिष्ठ संबंध की ओर इशारा करती है।

मैं उन्हें आत्मा के संबंध में बेकार कह रहा हूं

अन्यथा, यह *(*मनुष्य का शरीर या भौतिक अस्तित्व*)* भी एक मजबूत सृष्टिकर्ता द्वारा बनाया गया है।[5]

तीन राजकुमार अपने पिता के प्रभुत्व में विभिन्न देशों की ओर जा रहे थे, जिन्होंने उन्हें विदाई दी और मन उड़ाने वाले महल में न जाने की अपनी सलाह दोहराई

तीनों बेटों ने दृढ़ इरादे से यात्रा शुरू करने के लिए मार्ग पर चलने का फैसला किया

अपने पिता सम्राट के देशों की ओर।

अपने शहरों और महलों के दौरे में

प्रशासन की देखरेख करना और आय बढ़ाने के लिए रणनीति बनाना।

*[*कठिन*]* रास्ते पर चलने के अपने इरादे के समय, उन्होंने सम्राट की अनुमति मांगी

चूंकि उसने उनमें दृढ़ संकल्प देखा, इसलिए उसने उन्हें अनुमति दी।

उन्होंने सम्राट के हाथ को चूमा जिसने उन्हें विदाई दी

तब राजा ने उनसे कहा।

जहां भी आपके दिल की इच्छा है, वहां जाने का इरादा करें

परमेश्वर की सुरक्षा में, आगे बढ़ें।

एक महल को छोड़कर जिसे 'मन-उड़ाने' कहा जाता है

क्योंकि यह ताज के उम्मीदवारों के लिए जीवन को सीमित कर देता है।

भगवान के लिए, चित्रों से लदे इस महल से

दूर रहें और खतरे से डरें।

इसके आगे, पीछे, मेहराब, छत और फर्श पर

सभी चित्रों, उत्कीर्णन और रूपों से भरे हुए हैं।

जुलैखा के घर की तरह जो उसकी तस्वीरों से भरा हुआ था

---

[5] इसलिए, शरीर बेकार नहीं है और इसे एक दिव्य रूप से निर्धारित उद्देश्य के लिए बनाया गया है, जैसे कि, इस सांसारिक अस्तित्व में आत्मा का साथी बनना और आत्मा को शाश्वत खुशी और अनन्त सफलता के जीवन में ईश्वर की निकटता, प्रेम और अंतरंगता में अपने स्वर्गीय मूल में वापस जाने में मदद करना।

ताकि *[*पैगंबर*]* यूसुफ उसे देखने के लिए मजबूर हो जाए।[6]

चूंकि यूसुफ ने उसकी ओर नहीं देखा

उसने चालाकी से पूरे घर को हर जगह अपनी तस्वीरों से भर दिया।

इसलिए, जहां भी वह खूबसूरत चेहरा *(*जोसेफ*)* दिखेगा

अनजाने में उसका चेहरा देख लेगा।

प्रबुद्ध आंखों के धारकों के लिए, एक और एकमात्र ईश्वर

छह दिशाओं को उनके प्रमाण *[*अस्तित्व, विशालता, भव्यता और भव्यता*]* की अभिव्यक्ति बनाई।

ताकि जो भी जानवर और चीज उगती हो उसे वे देखें

उन्हें दिव्य सौंदर्य के बगीचों से पोषण मिलेगा।[7]

इसीलिए, उन्होंने इस समूह को *[*प्रबुद्ध आंखों और आत्माओं के*]* बताया

तुम जहाँ भी मुड़ोगे, तुम उसका चेहरा देखोगे।

अगर वे प्यास के कारण एक कप से पानी पीते हैं

वे पानी में भगवान को देखते हैं।

कोई प्रेमी नहीं है, जो पानी में देखता है

हे बुद्धि रखने वाले*!* अपना चेहरा।

जब प्रेमी का चेहरा उसमें नष्ट हो गया

मुझे बताओ, ऐसा कौन पानी में देखता है*?*

स्वर्गीय साथी के चेहरे पर, वे भगवान की सुंदरता देखते हैं

पानी में चंद्रमा के प्रतिबिंब की तरह, क्योंकि यह उस व्यक्ति की उत्कृष्ट कृति है जो प्यार में किसी भी सह-भागीदार को पसंद नहीं करता है[8]।

---

[6] जुलैखा ने पैगंबर जोसेफ को लुभाने के लिए अपने पूरे घर में अपनी तस्वीरें लगा दीं, जो उसे देखने के लिए मजबूर भी नहीं करता था।

[7] जब संत, ज्ञानवादी और ईश्वर के अंतरंग ब्रह्मांड में दिव्य पूर्णता और उत्कृष्टता के गवाह बनते हैं, तो उनका ज्ञान और दिव्य ज्ञान बढ़ता है क्योंकि यह संदेह और अविश्वास की सभी छायाओं से परे उनकी निश्चितता को गहरा करने का कार्य करता है, ठीक उसी तरह जैसे उगता सूरज जो अंधेरे को नष्ट करता है।

[8] ईश्वर के सच्चे प्रेमी कभी भी सुंदर स्वर्गीय साथियों का इरादा नहीं रखते हैं, बल्कि उस सुंदरता में भी, वे दिव्य सुंदरता को देखते हैं। उनका इरादा केवल उसके लिए है, केवल उसके लिए अपने प्रेम में किसी भी सह-भागीदार के साथ मिलावट नहीं करता है। चूंकि ईश्वर का एक ज्ञानवादी और अंतरंग ईश्वर का प्रिय है, इसलिए ईश्वर के प्रेम में किसी भी सह-भागीदार को पसंद नहीं करने के लिए आवश्यक है कि प्रिय ईश्वर के अलावा किसी और को न देखे।

परमेश्वर को अपने प्रेम में सह-भागीदार होने की नापसंद, केवल प्रेमी और सच्चे लोगों के लिए है

यह नापसंदगी शैतान और मवेशियों के लिए नहीं है।

भले ही शैतान *[परमेश्वर का]* प्रेमी बन जाए, वह शर्त जीत जाएगा

वह *[प्रधान स्वर्गदूत]* जिब्राएल बन जाएगा और शैतान मर जाएगा।

"शैतान मुसलमान बन गया" उस स्थान पर प्रकट हुआ

जहां यजीद अपनी दयालुता और उदारता से बयाज़ीद बन गया[9]।

इस मामले का कोई अंत नहीं है *[जो एक अनन्त खजाने के बराबर है]*, हे समूह *[प्रबुद्ध आंखों और आत्मा के साथ]!*

चौकस रहना*!* अपने चेहरों को उस *[मन-उड़ाने वाले]* महल से बचाएं।

चौकस रहना*!* लालच को आपको गुमराह न करने दें

ताकि तुम अनन्त दण्ड में गिर जाओ।

यह हर किसी की जिम्मेदारी है कि वह खुद को खतरे से बचाए

मेरी यह सच्ची सलाह सुनो।

सहजता की तलाश में सिर में बुद्धि का तेज होना बेहतर है

रोकथाम क्लेश के संकीर्ण और अंधेरे ठिकाने से बेहतर है।

अगर उस पिता ने ऐसा नहीं कहा होता

और क्या उसने उन्हें उस महल से खुद को बचाने के लिए नहीं कहा था।

वे खुद उस महल की ओर आगे नहीं बढ़े होंगे

उनका अपना झुकाव इसकी ओर नहीं होता।

क्योंकि यह अज्ञात और सुनसान था

यह अन्य महलों और रास्तों से दूर था।

चूँकि उसने उन्हें इससे मना किया था, इसलिए उनके दिल उस बात से खुश हो गए

---

[9] पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने शैतान के बारे में कहा: "[... हर किसी की तरह, मेरे साथ एक शैतान भी है, लेकिन भगवान ने मेरी मदद की और इसलिए वह एक मुसलमान बन गया (जो ईश्वर की इच्छा के अधीन है)। रूमी कहते हैं: "इस भविष्यद्वाणी परंपरा का वास्तव में अर्थ है कि भले ही शैतान पश्चाताप करे, वह एक ज्ञानवादी बन जाएगा जैसे यज़ीद जैसा क्रूर अत्याचारी बयाज़िद [अल-बुस्तामी - एक महान संत, ज्ञानवादी और ईश्वर का अंतरंग] की तरह एक ज्ञानवादी बन सकता है, पश्चाताप पर, संशोधन कर सकता है और ईश्वरीय उदारता द्वारा दिव्य मार्ग को पार कर सकता है।

लालच में और विचारों की गली में गिर गया।

इस निषेध ने उनके दिलों में इच्छा जगाई

उस रहस्य की वास्तविकता की जांच करने के लिए।

वह कौन है, जो उस चीज़ से दूर रहता है जिससे रोकी गई है?

इसके बजाय, मनुष्य निषिद्ध चीजों के लिए लालची है।

पवित्र भय, श्रद्धा और परमेश्वर का भय मानने वाले, उन चीजों से विमुख हो जाते हैं जिनसे निषिद्ध

निचले स्व की इच्छाओं वाले लोगों के लिए, निषेध एक प्रोत्साहन बन जाता है।

इसीलिए, यह कहा गया है: "कई लोग इसके माध्यम से भटक जाते हैं"

यह वहां है क्योंकि जागृत लोग इसके द्वारा निर्देशित होते हैं[10]।

राजकुमारों ने कहा कि वे सेवाएं प्रदान करेंगे

हम "हमने सुना और हमने आज्ञा मानी" पर कार्य करेंगे।

हम आपके आदेश से विचलित नहीं होंगे

अपने एहसानों से बेपरवाह होना अविश्वास के समान है।

लेकिन उन्होंने "इंशाअल्लाह" (अगर ईश्वर की इच्छा है) नहीं कहा और उसकी महिमा नहीं की

क्योंकि वे खुद पर निर्भर थे, इसलिए ईश्वरीय अनुग्रह उनसे अलग थे।

सभी रास्तों का उद्देश्य सिर्फ एक धाम है

ये हजारों अनाज एक दाने से आए हैं[11]।

खाद्य पदार्थों के विभिन्न प्रकार के प्रकार

यदि आप इसमें गहराई से देखते हैं तो यह सब एक चीज है।

जब आप एक खाद्य पदार्थ से तृप्त हो जाते हैं

पचास अन्य खाद्य पदार्थ आपके लिए बेकार हो जाते हैं।

अपनी भूख में, आप एक चीज में बहुलता देखना शुरू कर चुके हैं

---

[10] कुरान में यह गुण है कि अंधेरे दिल वाले कई लोग इससे गुमराह होते हैं और जागृत और सूचित हृदय वाले लोग इसके द्वारा निर्देशित होते हैं जैसा कि कुरान द्वारा ही प्रमाणित किया गया है।

[11] चूंकि दुनिया भर के लोग प्रार्थना के लिए काबा की ओर रुख करते हैं, इसलिए उनमें एकता है क्योंकि उनका अंतिम लक्ष्य एक ही है। एक ही दाने से हजारों दाने पैदा होते हैं, इसलिए एक ही मूल होने के कारण उनमें एकता होती है।

जिसे आप हजारों मानते हैं[12]।

सम्राट के बेटे महल की ओर जाते हैं क्योंकि निषिद्ध चीजों के लिए लालची होना मानव स्वभाव है। उन्होंने पिता की सलाह को पूरी तरह से अवहेलना की और क्लेशों की खाई में गिर गए और उनकी निंदा करने वाले स्वयं कह रहे थे, "क्या एक पूर्वचेतावनी देने वाला आपके पास नहीं आया था?", और उन्होंने रोते हुए और शर्मिंदा होकर कहा, "अगर हम सुन रहे होते और समझ रहे होते, तो हम नरक के निवासियों में से नहीं होते"

इस विषय की कोई सीमा नहीं है; वह समूह *[पुत्रों का]*

[निषिद्ध] महल का रास्ता अपनाया।

वे वर्जित पेड़ के पास पहुंचे

और सच्चे लोगों के घेरे से बाहर आ गया।

आदरणीय सम्राट के आदेश का उल्लंघन

वे उस महल की ओर आगे बढ़े जिसने धैर्य को नष्ट कर दिया और इंद्रियों को उड़ा दिया।

वे सलाह देने वाले बुद्धि की सलाह के खिलाफ पहुंचे

वे दिन से अंधेरी रात की ओर मुड़ गए।

सुंदर चित्रों से भरे महल की ओर

पांच दरवाजे समुद्र की ओर और पांच भूमि की ओर थे।

पांच रंग और गंध की बाहरी इंद्रियों की तरह थे

पांच सत्य की खोज करने के लिए आंतरिक इंद्रियों की तरह थे[13]।

उन हजारों चित्रों और कलाकृतियों के कारण

वे खुशी और उतावलेपन से घूम रहे थे *[एक के बाद एक कलात्मक कृति देखने के लिए]*।

तस्वीरों के वाइन ग्लास के नशे में मत बनो[14]

---

[12] हमारे चारों ओर बिखरी हुई दिव्य रचनाओं में प्रकट होने वाले विभिन्न रूप, बहुलता के रूप में दिखाई देते हैं, भले ही वे एक और एकमात्र निर्माता की ओर इशारा करते हैं, किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जिसके पास वास्तविकता को देखने के लिए आंतरिक आंख नहीं है।

[13] पांच बाहरी दरवाजे पांच बाहरी मानव इंद्रियों की तरह हैं, पांच आंतरिक दरवाजे पांच आंतरिक इंद्रियों के समान हैं। इन इंद्रियों के प्रभाव में मनुष्य कभी-कभी अपनी बुद्धि खो देता है। इसी तरह, जो लोग इन दरवाजों से महल में प्रवेश करते थे, उन्होंने अपना दिमाग और बुद्धि खो दी। मन उड़ाने वाले महल की ओर जाने वाले इन दरवाजों की विशेषता ऐसी थी।

[14] बाहरी आकार और रूप जो बाहरी आंखों को उनकी वास्तविकता को जाने बिना दिखाई देते हैं।

ताकि आप मूर्ति बनाने वाले या उपासक न बनें *[*केवल बाहरी रूप से संबंधित*]*।

चित्रों और रूपों के शराब के गिलास से आगे बढ़ें, उन पर न रुकें

शराब शराब के गिलास में है लेकिन उससे नहीं[15]।

अपने कान उस व्यक्ति की ओर खोलें जिसने यह दाखमधु प्रदान की है

तो आप वहां से आवाज और आवाज़ सुन सकते हैं।

जो निराकार है, वह तुम्हारे अंदर विस्मय पैदा करता है

बिना उपकरण के एक, असंख्य उपकरण बनाता है।

बिना हाथों वाला, हाथ बनाता है

आत्मा की आत्मा मनुष्य को कलाकार बनाती है[16]।

क्या प्रभावशाली व्यक्ति *(*भगवान*)* का प्रभाव से कोई समानता है*?*

क्या आवाज़ और रोने का दुःख से कोई समानता है*?*

रोना एक रूप है और दुख *[*जो रोने को जन्म देता है*]* बिना आकार का है

मनुष्य दुःख से अपने हाथ काटता है जिसका कोई हाथ नहीं है।

हे साक्ष्य के कथाकार*!* ये उदाहरण उपयुक्त नहीं हैं

यह सभी को समझाने का एक कमजोर प्रयास है[17]।

बिना आकार वाले की रचनात्मक क्षमताएं रूप बनाती हैं

इंद्रियों और उपकरणों के साथ शरीर का निर्माण करता है।

ताकि जो भी रूप स्वीकार्य हो

---

[15] इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन बाहरी रूपों की सुंदरता नशे जैसी शराब पैदा करती है। हालांकि, यह सुंदरता उनकी अपनी नहीं है, बल्कि इसे उधार लिया गया है। आपको वास्तविक सुंदरता की ओर मुड़ना चाहिए - वह जो इन रूपों को सुंदरता प्रदान करता है। उनके बाहरी रूपों के शराब के गिलास में, दिव्य सौंदर्य की शराब है। उस पर ध्यान दें तो आप अपने हृदय पर आध्यात्मिक रोशनी का अनुभव करेंगे। जब आपको दिव्य प्रेम की शराब मिल जाएगी, तो आप बाहरी रूपों तक ही सीमित नहीं रहेंगे क्योंकि इस ब्रह्मांड का प्रत्येक परमाणु ईश्वर की अभिव्यक्ति बन जाएगा।

[16] [दिव्य] उपकरण और रूपों के बिना होने के कारण, असंख्य रूप और उपकरण [हमारे चारों ओर रचनाओं के रूप में] बनाता है। जो भौतिक हाथों से ऊपर है, उसने असंख्य हाथों की रचना की। ईश्वर का अस्तित्व जो सभी आत्माओं की आत्मा है, ने मनुष्य में कलाकार का निर्माण किया है, इसलिए वह वास्तविक है, रूप के साथ हर चीज का मूल और प्रवर्तक है।

[17] ईश्वर जो प्रभावशाली व्यक्ति है और ब्रह्मांड जो उसका प्रभाव है, ये उसके कुछ उदाहरण हैं। जो निराकार है, वह रूप के साथ अनेक रचनाओं का निर्माण करता है।

शरीर को अच्छे या बुरे *[*होने की स्थिति*]* में लाएगा[18]।

यदि यह आशीर्वाद का रूप है, तो व्यक्ति आभारी हो जाता है

यदि आशीर्वाद प्राप्त करने में देरी होती है, तो व्यक्ति धैर्यवान हो जाता है।

यदि यह दया और दया का रूप है, तो व्यक्ति प्रसन्न हो जाता है

यदि यह दु:ख का रूप है तो दु:खी हो जाता है।

यदि यह एक शहर का रूप है, तो कोई इसकी ओर यात्रा करता है

यदि यह एक तीर का एक रूप है, तो कोई ढाल उठाता है।

यदि यह सुंदर लोगों का रूप है, तो कोई इसका आनंद लेता है

यदि यह अदृश्य क्षेत्र का रूप है, तो व्यक्ति एकांत को अपनाता है।

यदि यह एक आवश्यकता का रूप है, तो कोई कमाने की ओर जाता है *[*एक जीविका या व्यापार*]*

यदि यह किसी की शारीरिक शक्ति का रूप है, तो यह छीनने और हड़पने का कारण बनता है।

यह किसी भी सीमा और अनुमान की सीमा से बाहर है

लोगों को विभिन्न विचारों और विचारों के माध्यम से काम करवाना[19]।

असंख्य धर्म और पेशे

सभी विचारों और विचारों के रूप की छाया हैं।

एक समूह *[*एक इमारत के*]* ऊपरी स्तर पर खड़ा है

जमीन पर उनमें से हर एक की छाया देखें[20]।

विचार का रूप ऊंचे ऊपरी स्तर पर है

और परिणामी क्रिया अंगों पर प्रकट होने वाली उनकी छाया की तरह होती है।

क्रियाएं अंगों पर होती हैं, हालांकि, अंगों को चलाने वाले विचार छिपे हुए हैं

लेकिन ये दोनों एक साथ प्रभाव को सामने लाने में जुड़े हुए हैं।

---

[18] भगवान ने रूपों और चेहरों को बनाया है ताकि वे अपनी आंतरिक अवस्थाओं के अनुरूप शरीर के लिए अच्छा या बुरा करें।

[19] यह किसी भी अनुमान की सीमा से बाहर असंख्य प्रकार के विचार और विचार हैं जो विभिन्न मानवीय कार्यों, प्रयासों और उपक्रमों के प्रेरक और चालक बन जाते हैं जो अच्छे और बुरे दोनों हैं।

[20] यह महसूस करने के लिए कि विचार कैसे कारण हैं और कार्य इन कारणों के प्रभाव हैं, किसी को उस स्तर के नीचे जमीन पर छाया डालने वाली इमारत के ऊपरी स्तर पर खड़े लोगों के उदाहरण पर विचार करना चाहिए। इसी तरह, विचारों का रूप ऊपरी स्तर पर होता है और क्रियाएं मानव अंगों पर डाली गई छाया की तरह होती हैं।

विभिन्न खाद्य पदार्थों के रूपों के परिणाम

वह शक्ति और शक्ति है जो बिना किसी रूप के है।

जब ये रूप बिना आकार के एक के अधीन होते हैं

कुछ लोग उसे अस्वीकार करने में क्यों लगे हुए हैं?

इन रूपों का अस्तित्व बिना आकार के एक के लिए है

फिर एक रूप के साथ, ऐसे व्यक्ति को क्यों अस्वीकार करता है जिसने एक को पहले स्थान पर अस्तित्व में लाया?

हर घर की छत और दीवारों का रूप

वास्तुकार के चिंतन की छाया है।

भले ही वह स्थान जहां विचार और चिंतन होता है

[इमारत के] पत्थर, लकड़ी और ईंट में स्पष्ट नहीं है।

हर चीज का पूर्ण कर्ता निश्चित रूप से निराकार है

रूप उसके हाथ में एक उपकरण के समान है।

बिना आकार, कभी घूंघट के पीछे से

स्वयं को दिव्य उदारता से रूप वाले लोगों के सामने प्रकट करता है[21]।

ताकि हर रूप उसकी मदद मांगे

अपनी पूर्णता, सुंदरता और सर्वशक्तिमान शक्ति के माध्यम से।

जब निराकार ने स्वयं को छुपाया *[सभी रूपों से]*

वे लोग एक दान के रूप में रंग और गंध के स्तर तक उतरे[22]।

नम्र विनती और उसके लिए रोने के माध्यम से और उसके अस्तित्व में विनाश के माध्यम से बिना रूप के एक को खोजें

चूंकि सोच के माध्यम से रूपों के अलावा आपके पास कुछ भी नहीं आएगा।

---

[21] दिव्य रोशनी कुछ ग्रहणशील दिलों पर बिजली के वज्र की तरह चमकती है।

[22] जब दिव्य रोशनी बंद हो जाती है, तो लोग मानव होने की आवश्यकताओं पर लौट आते हैं। पूर्णता निराकार से ही प्राप्त की जानी है। एक रूप दूसरे रूप से [आध्यात्मिक] पूर्णता प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है, भगवान और ज्ञानवादियों के अंतरंग को छोड़कर गुमराह है, जिन्हें भगवान ने मानवता के मार्गदर्शन के लिए चुना है। अन्यथा, रूप स्वयं जरूरतमंद है; किसी अन्य रूप की आवश्यकता को प्रस्तुत करने का कोई मतलब नहीं है।

यदि आपके पास रूप के बिना आंतरिक सुख नहीं है

फिर आपके द्वारा जो भी रूप देखा जाता है वह आपके लिए बेहतर है[23]।

जिस शहर की ओर आप आगे बढ़ रहे हैं

हे यात्री*!* आप एक ऐसी इच्छा के माध्यम से इसकी ओर खींचे जाते हैं जो निराकार है।

आंतरिक रूप से, वास्तव में आप उस इच्छा की ओर जा रहे हैं जो समय, स्थान और रूप के बिना है

क्योंकि खुशी *[*इच्छा की पूर्ति में*]* समय और स्थान के बिना है, भले ही आप इस उद्देश्य से अनजान हों।

वास्तव में, परमेश्वर सभी का प्रभु है

क्योंकि मार्ग पर चलना इच्छा के कारण होता है[24]।

हालांकि, कुछ पूंछ की ओर मुड़ गए हैं

भले ही सिर असली चीज है, जिस पर सब कुछ निर्भर करता है लेकिन उन्होंने सिर खो दिया है।

हालांकि, गुमराह लोगों के लिए सिर खो जाता है

परन्तु वह पूंछ के माध्यम से वह देता है जो सिर के माध्यम से दिया जाना चाहिए था।

एक सिर के माध्यम से दिया जाता है, दूसरा पूंछ के माध्यम से प्रदान किया जाता है

दूसरों ने पैर और सिर दोनों खो दिए हैं।

चूंकि सब कुछ खो गया था, इसलिए उन्हें सब कुछ मिल गया

इस नुकसान के कारण, वे हर चीज की ओर भाग गए[25]।

---

[23] यहां तक कि अगर आध्यात्मिक प्रयास के बाद, आप उसे बिना किसी रूप के आकर्षित नहीं कर सकते हैं, तो अपनी कल्पना के बिना किसी भी रूप का उपयोग करें [जो उसका प्रतिनिधित्व करता है] एक विकल्प के रूप में जब तक आप उसे बिना आकार के आकर्षित करने में सक्षम न हों।

[24] चूंकि ऊपर में यह सिद्ध हो चुका है कि इच्छा सभी मानवीय प्रयासों का उद्देश्य है और सभी मार्गों पर चलना इच्छा के कारण है और इच्छा को पूरा करना ईश्वर का कार्य है, इसलिए ईश्वर सभी का स्वामी है।

[25]परमेश्वर के विभिन्न उपासकों और साधकों का उसके साथ अलग-अलग व्यवहार है। कुछ लोगों ने अपना ध्यान ईश्वर के कार्यों की ओर मोड़ दिया है, भले ही वास्तविक उद्देश्य उसका अस्तित्व (*धात*) है, क्योंकि यही वास्तविक अस्तित्व है और हर उस चीज का मूल है जो एक आकस्मिक प्राणी है। उन्हें उनके अस्तित्व से लाभ भी मिलता है और उनका ध्यान भी ईश्वरीय रूप से स्वीकार किया जाता है। उपासकों के एक अन्य समूह का ध्यान और सत्य और धार्मिकता के कार्यों के माध्यम से सत्य की खोज होती है। यह सामान्य उपासकों का स्तर है। यहाँ ""पूंछ"" परमेश्वर के कार्यों को संदर्भित करता है। ""सिर"" परमेश्वर के गुणों को संदर्भित करता है। उपासकों का एक अन्य समूह (आध्यात्मिकता के उच्च स्तर पर) दिव्य गुणों के माध्यम से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करता है, जिन्हें यहाँ "सिर" कहा गया है । यह स्तर [आध्यात्मिक] अभिजात वर्ग का है। आध्यात्मिकता का अगला उच्च स्तर अभिजात वर्ग के अभिजात वर्ग या सबसे महत्वपूर्ण लोगों से संबंधित है ("*अस-सबीकून अस-सबीकून*" जैसा कि कुरान द्वारा "*अल-वक़ाह" नामक अध्याय में संदर्भित किया गया है* (56:10)) क्योंकि वे केवल ईश्वर के अस्तित्व पर ध्यान देते हैं और बिना किसी साधन के सीधे उससे लाभ प्राप्त करते हैं। चूंकि उन्होंने ईश्वरीय कार्यों या गुणों को अपना उद्देश्य नहीं बनाया, इसके बजाय उन्होंने ईश्वर को अपना उद्देश्य बना लिया और इसलिए, वे दिव्य अस्तित्व को प्राप्त कर रहे थे।

उस तस्वीर से लदे महल में, राजकुमारों ने चीनी सम्राट की बेटी की तस्वीर देखी, और वे सभी बेहोश हो गए और परीक्षणों और क्लेशों से पीड़ित हो गए और जांच करना शुरू कर दिया कि यह किसकी तस्वीर है

इस मामले का कोई अंत नहीं है, यह समूह *[*तीन राजकुमारों का*]*

एक सुंदर और शानदार तस्वीर देखी।

उन्होंने और भी खूबसूरत लोगों को देखा था

लेकिन *[*उस तस्वीर के साथ*]* वे *[*प्रेम के*]* एक अथाह सागर में उतर गए।

क्योंकि उन्हें इस प्याले के माध्यम से अफीम मिली थी

कप देखा गया लेकिन अफीम छुपा दी गई[26]।

मन उड़ाने वाले महल ने अपना काम किया

इसने उन्हें क्लेश के गहरे कुएं में डाल दिया।

सुंदरता और शैली का तीर उनके दिलों में घुस गया

हे शांति के दाता*!* हमें इस असीम दुख से शरण दें।

बेजान तस्वीर ने उन्हें भीतर से जला दिया

इसने उनके विश्वास और दिलों में आग लगा दी।

अगर तस्वीर में आत्मा होती तो क्या होता*?*

इसका क्लेश हर सेकंड एक अलग तरह का होता।

राजकुमारों के दिलों में तस्वीर के प्यार के बाद से

खंजर की तरह दर्द हो रहा था।

उनमें से हर एक बादल की तरह आंसू बहा रहा था

उनमें से हर एक ने अपना हाथ काटा और कहा, "हाय*!*"[27]

---

[26] सुंदरता यहां अफीम से मिलती जुलती रही है। यहां कप बाहरी रूप या शारीरिक रूप को संदर्भित करता है। रूप दिखाई दे रहे हैं लेकिन उनकी अफीम (मंत्रमुग्ध कर देने वाला प्रभाव) छिपी हुई है। मन उड़ाने वाले महल ने तीन राजकुमारों को क्लेश में डालकर अपना काम किया।

[27] वे यह महसूस करने पर पछतावे से भरे हुए थे कि वे क्या देख रहे थे और अनुभव कर रहे थे, जो पहले से ही सम्राट द्वारा देखा गया था जिसने मुखर और आग्रहपूर्वक उन्हें इस महल में न जाने की सलाह दी थी।

अब हम जो देख रहे हैं, वह सम्राट पहले ही देख चुका था

उस अद्वितीय ने हमें बहुत सारी चेतावनियाँ दीं।

यही कारण है कि भविष्यवक्ताओं का बहुत अधिकार है *[हम पर]*

जैसा कि उन्होंने हमें *[हमारे कार्यों के]* सभी परिणामों के बारे में स्पष्ट रूप से सूचित किया है।

कि जो तुम अभी बो रहे हो, उसमें से कांटों के सिवा कुछ नहीं निकलेगा

अब आप जहां की ओर उड़ रहे हैं, वहां आपको उड़ान भरने के लिए जगह नहीं मिलेगी[28]।

मुझसे बीज ले लो ताकि वह तुम्हें प्रचुर उपज दे

मेरे पंखों से उड़ो ताकि क्लेश का तीर तुम पर प्रहार करने से पहले गिर जाए[29]।

आपको उनका अनुसरण करने की आवश्यकता महसूस नहीं होती है

अंत में, आप यह भी कहेंगे कि ऐसा करना आवश्यक था।

जब उन्होंने "आप" कहा, तो यह आप हैं लेकिन "आप" नहीं जो शरीर है

इसके बजाय, यह "आप" है जो भौतिक क्षेत्र से ऊपर है और वास्तविक "आप" है[30]।

बाहरी "आप" जिसे आप "आप" के रूप में सोचते हैं

[छह] दिशाओं से है लेकिन वास्तविक "आप" सभी दिशाओं से ऊपर है।

हे मोती*!* आप खोल पर क्यों कांपते हैं*?*

"आप" को अपने रूप में न मानें, बल्कि विचार करें कि इसमें जो कुछ है वह वास्तविक "आप" है[31]।

यह "आप" है जो आपको खुद से बेखबर बनाता है

अपने "आप" को प्राप्त करें और *[अपने आप में]* द्वंद्व को पार करें[32]।

आपका असली "आप" आपके बाहरी "आप" पर

---

[28] परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने हमें पहले ही सूचित कर दिया है कि निचले स्व (नफ्स) से इच्छाओं, जुनून और वासनाओं का पालन करने से केवल कांटे (दुर्भाग्य, दर्द और पीड़ा) बढ़ेंगी। आपकी दिशा और गति सांसारिकता की ओर है, इसमें कोई मोक्ष, वास्तविक सफलता और सच्ची खुशी नहीं है।

[29] भविष्यवक्ताओं ने हमें सूचित किया है कि हमें उनके मार्ग का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने में असंख्य [भौतिक और सारहीन दोनों] लाभ हैं और परीक्षणों और क्लेश का तीर आप पर प्रहार करने से काफी कम हो जाएगा।

[30] "आप" के दो भाग हैं- एक आपका शरीर और दूसरा आपकी आत्मा है। भविष्यवक्ताओं का अनुसरण करना जो फायदेमंद है, वह शरीर का कार्य नहीं है, बल्कि यह आत्मा का एक कार्य है जो समय और स्थान की सीमाओं से ऊपर है।

[31] आप शरीर के अंत (मृत्यु) पर कांपते हैं, भले ही यह सिर्फ बाहरी आवरण हो। असली "आप" वह आत्मा है जो खोल में मोती है।

[32] अपने वास्तविक "आप" तक पहुंचें जो आपकी आत्मा है और अपने शरीर को अपनी वास्तविकता मानने के इस द्वंद्व को रोकें।

इसे चेतावनी देने और ईश्वरीय निकटता प्राप्त करने के लिए आया है।

आपका असली "आप" आपके दूसरे "आप" में दफन है

मैं उस व्यक्ति का गुलाम हूं जो अपने वास्तविक "आप" को देखता है।

हम अपने पिता के आदेश को दरकिनार कर देते हैं

हम उनकी असीम उदारता के प्रति विद्रोही हो गए।

हम सम्राट की सलाह को महत्वहीन मानते थे

साथ ही उनकी अद्वितीय उदारता के साथ।

हम सब अब खाई में गिर गए हैं

हम बिना युद्ध के निराश और घायल हो गए हैं।

हम अपनी बुद्धि और बुद्धि पर निर्भर थे

जब तक हम इस क्लेश से पीड़ित नहीं हो गए।

एक *[आध्यात्मिक]* मार्गदर्शक की छाया ईश्वरीय स्मरण से बेहतर है

एक संतोष हजारों भोजन और व्यंजनों से बेहतर है[33]।

देखने वाली आंख तीन सौ साठ छड़ियों से बेहतर है

ऐसी आंख मोती और कंकड़ के बीच अंतर करती है।

दुख के कारण, हम एक *[कभी न खत्म होने वाले]* संघर्ष में शामिल हो गए

इस दुनिया में यह किसकी शानदार तस्वीर है*?*

वे अपनी यात्रा में *[इस आंतरिक अवस्था के साथ]* और बहुत संघर्ष के बाद *[रहस्य को सुलझाने में]* आगे बढ़े

गहरी अंतर्दृष्टि के साथ एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक ने उन्हें यह रहस्य बताया।

गाइड को अफवाहों से वास्तविकता का पता नहीं था, इसके बजाय ज्ञान एक आंतरिक दिव्य रोशनी के माध्यम से था

क्योंकि यह रहस्य ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे कुछ पर्दे हटाकर उजागर किया जा सके।

---

[33] आध्यात्मिक मार्गदर्शक के साथ संगति रखते हुए, ईमानदारी [और उद्देश्य की सच्चाई] और आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने की क्षमता को जन्म देता है, बिना किसी नुकसान में पड़े। यह ईश्वरीय स्मरण को प्रभावी बनाने और आध्यात्मिक यात्री में संतोष और धैर्य पैदा करने की भी एक शर्त है और दिव्य स्मरण के हजारों भोजन से बेहतर है।

उन्होंने कहा कि यह तस्वीर सबसे खूबसूरत तस्वीर के लिए भी ईर्ष्यापूर्ण थी।

यह चीन की राजकुमारी की तस्वीर है।

चीन के राजा की एक बेटी है जो अद्वितीय है

व्यक्तिगत लक्षणों, उत्कृष्टता और बाहरी सुंदरता में।

वह एक परी और आत्मा की तरह छिपी हुई है

वह महल के छिपे हुए घूंघट में है।

किसी पुरुष या महिला के पास उसकी ओर जाने का कोई रास्ता नहीं है

राजा ने उसे सभी कठिनाइयों और क्लेशों से बचाने के लिए छुपाया है।

यहां तक कि किसी के होठों से उसका नाम सुनकर भी राजा को काम लग जाता है

यहां तक कि एक पक्षी भी एक पंख नहीं उछाल सकता था जहां राजकुमारी रहती थी।

वह झुंड बर्बाद हो गया है जो इस तरह के प्यार से पीड़ित है

भगवान इस तरह के प्यार को किसी पर हावी न होने दें।

यह उस व्यक्ति के लिए सजा है जिसने मूर्खता का बीज बोया

और ध्वनि सलाह को नकली और महत्वहीन माना।

ऐसा व्यक्ति अपनी रणनीति पर निर्भर करता था

यह सोचकर कि कोई अपनी बुद्धि से *[सभी परिस्थितियों]* से गुजरेगा।

आधा कण भी ध्यान देना बेहतर है

जिसके माध्यम से बुद्धि की योजना को तीन सौ बार सुरक्षित किया जाता है।

हे नेता*!* अपनी खुद की योजना छोड़ें

फोकस के साथ आगे बढ़ें और अपनी आत्मा को खुशी से छोड़ दें[34]।

यह आपकी बुद्धि के साथ आए कुछ विचारों के बराबर नहीं है

जब तक आप *[आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अस्तित्व में]* नष्ट नहीं हो जाते, तब तक इन विचार-विमर्शों का कोई फायदा नहीं है।

---

[34] अपनी खुद की योजना को त्याग दें और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के ध्यान में आगे बढ़ें। सच्चे आध्यात्मिक मार्गदर्शक के मार्गदर्शन में अपनी स्वयं की योजना को नष्ट करें जिसका ध्यान आपकी सीमित योजना से कहीं अधिक फायदेमंद है।

आप *[*आध्यात्मिक मार्गदर्शक का*]* लाभ तब तक नहीं उठाएंगे जब तक कि आप *[*आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अस्तित्व में*]* नष्ट नहीं हो जाते।

जाओ इस विनाश को प्राप्त करो और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के होने का लाभ उठाओ।

घटना की आगे की जांच कर रहे तीन राजकुमार और सबसे बड़े भाई की बातचीत

तीनों ने इस क्लेश से पीड़ित होकर एक-दूसरे की ओर रुख किया

तीनों में एक जैसा दर्द, उदासी और दुख था।

तीनों एक ही चिंतन और विचार के साथी थे

तीनों एक ही बीमारी और दुख से बीमार थे।

खामोशी में तीनों का एक ही विचार था

बातचीत में तीनों का एक ही तर्क था।

कभी-कभी तीनों ही आंसू बहाते थे

क्लेश की मेज पर, वे ही खून छिड़क रहे थे।

कभी-कभी तीनों, दिल की धधकती आग के कारण

चिमनी के जलने की तरह सांस ली।

सबसे बड़े ने कहा*:* ऐ भाइयों*!*

क्या हम एक-दूसरे को फटकार लगाने में पुरुष नहीं थे*?*

हमारे राज्य के लोगों में से, जिसने भी हमसे शिकायत की

कठिनाई, भय, गरीबी और भूकंप के बारे में।

हम ऐसे व्यक्ति से कहते थे कि इस तरह के संकुचन से निराश न हों

धैर्य रखें क्योंकि धैर्य विस्तार की कुंजी है।

धैर्य की यह कुंजी कहाँ चली गई*?*

काश आश्चर्य होता है*!* क्या कानून निरस्त हो गया है*?* क्या हुआ*?*

क्या हम संघर्ष की स्थिति में ऐसा नहीं कहते थे*?*

आग के अंदर भी खूब हंसें।
हमने युद्ध में हर सैनिक को सलाह दी
चौकस रहना*!* आपके चेहरे का रंग नहीं बदलना चाहिए।
हमने अपने सैनिकों को कमान संभाली
हावी होने के लिए भाले की तरह आगे बढ़ना।
हमने पूरी दुनिया को धैर्य का पता बताया
क्योंकि धैर्य हमेशा के लिए एक प्रबुद्ध दीपक और एक मार्गदर्शक प्रकाश रहा है।
जब हमारी अपनी बारी आई *[*धैर्य रखने की*]*, तो हम इतने चकित कैसे हो गए*?*
बदसूरत व्यक्तियों की तरह, हम छिपने वाली चादरें बन गए।
हे दिल*!* सबको ड्यूटी में एक्टिव बनाया
अभी खुद को सक्रिय करें और इस तरह का अभिनय करने में शर्म आएं।
हे जीभ*!* आप ही थे जिन्होंने सभी को सलाह दी थी *[*धैर्यपूर्वक दृढ़ रहने के लिए*]*
जब आपकी बारी थी तो आप चुप क्यों हो गए*?*
हे बुद्धि*!* आपकी मीठी सलाह का क्या हुआ*?*
अब आपकी बारी है, आपके साथ *[*और आपकी योजना के लिए*]* क्या हुआ*?*
हे बुद्धि*!* आप दिल से असीम संकटों को दूर करते थे
आपकी बारी आ गई है, उस संकट को दूर करें *[*हम अब हैं*]*।
जब आप दूसरों के दर्द का इलाज थे
जब मेहमान के रूप में दर्द आपके पास आया, तो आप चुप हो गए।
यह सेना को चुनौती देने का आपका तरीका था
अब आपकी चुनौती और आवाज को किसने पकड़ लिया है*?*
आपने पचास साल तक बुद्धि के साथ जो बुना
उस बुनाई से सिर्फ एक कपड़े पहनें।
तुम हमेशा सिर थे, अब अपने आप को पूंछ मत बनाओ
अपने पैर, हाथ, मूंछें और दाढ़ी न खोएं।

शतरंज की बिसात पर चलना आपका विशेषाधिकार है

अपने आप को अब अच्छे स्वभाव और उत्साह में लाएं *[*अपना अगला कदम जीतने के लिए*]*।

तर्क-वितर्क पूरा करने और अपने दिल की स्थिति बताने के बाद, तीनों राजकुमारों ने अपने प्रिय और उद्देश्य, चीन के प्रभुत्व के लिए एक महाकाव्य यात्रा शुरू की ताकि जितना संभव हो सके अपने उद्देश्य के करीब पहुंच सकें, भले ही प्रिय से मिलने का रास्ता बंद हो गया था क्योंकि जितना संभव हो सके उद्देश्य के करीब पहुंचना अभी भी अच्छा है

जब तीनों राजकुमारों को प्रेम से अक्षम होने की स्थिति का सामना करना पड़ा

प्यार ने उन्हें बहुतायत से अपमानित किया।

उन्होंने यह कहा और तुरंत आगे बढ़े

हे मेरे दोस्त*!* जो होना था, वह पहले ही हो चुका था।

उन्होंने धैर्य अपनाया और सच्चे लोगों में, परमेश्वर के अंतरंग लोगों में शामिल हो गए

फिर चीन के शहरों की ओर बढ़े।

उन्होंने अपने माता-पिता और अपने देश को छोड़ दिया

छिपे हुए प्रिय की ओर जाने वाले मार्ग को अपनाया।

इब्राहिम अधम की तरह, सिंहासन से *[*वे विरासत में मिलने जा रहे थे*]*

प्यार ने उन्हें असहाय और गरीब बना दिया[35]।

या इब्राहीम की तरह, महान भविष्यवक्ता

उसने खुद को आग में झोंक दिया।

या पवित्र और धैर्यवान इश्माएल की तरह

उसने गहन प्रेम और उसके तेज चाकू के सामने अपना सिर जमीन पर रख दिया।

[35] इब्राहिम बिन अधम एक महान संत, ज्ञानवादी और ईश्वर के अंतरंग थे जो मध्य एशिया में एक मध्ययुगीन राजा हुआ करते थे। उन्होंने शाश्वत सत्य, जीवन के अर्थ और उद्देश्य, और ईश्वर के साथ अंतरंगता और निकटता की खोज के लिए अपना राज्य छोड़ दिया। उनके आत्म-बलिदान को ईश्वरीय रूप से स्वीकार किया गया था, उन्होंने अपने उद्देश्य को प्राप्त किया जिसके लिए उन्होंने निर्धारित किया और ईश्वर के सबसे महान ज्ञानवादियों और अंतरंग में से एक बन गए।

चीन के शहरों के शहर, उसकी राजधानी में रहने और छिपने और धैर्य से बाहर निकलने के बाद, सबसे बड़ा भाई अधीर हो गया और खुद को चीन के राजा के सामने आत्मसमर्पण करना चाहता था और अपने दो भाइयों द्वारा उसे ऐसा न करने की सलाह से कोई लाभ नहीं मिल रहा था

या तो मेरा कदम मुझे मेरा उद्देश्य प्रदान करेगा

या मैं अपने दिल की तरह अपना सिर वहां रखूंगा *[*अप्राप्य प्रेम के लिए बलिदान के रूप में अपना जीवन देने के लिए*]*।

या तो मेरे पैर मुझे मेरे उद्देश्य की ओर ले जाएंगे

या दिल की तरह, मैं अपने हाथ से अपना सिर नीचे रखूंगा।

हे प्रेमियों के समूह की निंदा करने वाले*!* इस समूह को अकेला छोड़ दें

जिसे परमेश्वर द्वारा गुमराह किया गया है, तुम उसका मार्गदर्शन कैसे करोगे*?*

सबसे बड़े ने कहा*:* ऐ मेरे भाइयों*!*

इंतजार के कारण मेरी आत्मा मेरे होठों पर आ गई है।

मुझे अब कोई परवाह नहीं है, मुझमें कोई धैर्य नहीं बचा है

इस धैर्य ने मुझे आग में बैठा दिया है।

धैर्य रखना अब मेरी शक्ति से परे है

मेरी कहानी प्रेमियों द्वारा सीखने के लिए एक सबक बन गई है।

मैं बिछुड़ने के कारण जीवन से तंग आ गया हूं *[*प्रिय से*]*

अलगाव की स्थिति में जीवित रहना पाखंड है।

जुदाई का यह दर्द मुझे कितना मार डालेगा*?*

मेरा सिर हटाओ ताकि प्यार मुझे एक नया सिर प्रदान करे[36]।

मेरे प्यार की वजह से मेरा विश्वास जीवित है

इस जीवन और सिर के साथ जीना मेरे लिए अपमान है[37]।

---

[36] ईश्वर (*फना) में विनाश के बाद, ईश्वर (*बाका) *में निर्वाह की स्थिति आती* है, दूसरे शब्दों में, जब प्रिय (ईश्वर) के प्रेम और इच्छा में निचले स्व की इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं, तो एक नया जीवन आता है जो कभी न खत्म होने वाला, शाश्वत जीवन है। इस कहानी के माध्यम से, रूमी आध्यात्मिक पथ, उसके नुकसान और उसमें सफलता के रहस्यों को स्पष्ट कर रहे हैं।

[37] मैं [गहरे आध्यात्मिक] अर्थ का जीवन प्राप्त करना चाहता हूं, बाहरी जीवन [भौतिक क्षेत्र में] मेरे लिए इससे निपटना मुश्किल है।

जब शरीर की धूल हट जाती है, तो मेरा चाँद चमक उठता है

मेरी आत्मा के चंद्रमा ने शुद्ध जल पिया।[38]

मेरी आत्मा ने ड्रेक होने का दावा किया है

यह तूफानों और तूफानों के खिलाफ कब विनती करता है*?*

एक बतख जहाज के टूटने और डूबने से क्यों डरेगा*?*

पानी पर उसका जहाज उसके पैर हैं *[*सुरक्षा के लिए तैरने के लिए*]*।

इस दावे ने मेरी आत्मा और शरीर को जीवित रखा है

मैं इस दावे के बारे में कैसे चुप रह सकता हूं*?*

अन्य दो भाइयों ने सबसे बड़े भाई को सलाह देने की कोशिश की

ऐसा करने के खतरों से खुद को अनजान न रखना।

उनकी चोटों पर नमक न डालना *[*क्योंकि वे भी प्यार से पीड़ित थे और फिर वे सबसे बड़े भाई से अलगाव सहने जा रहे थे*]*

जल्दबाजी और संदेह के कारण इस जहर को न खाना।

एक जागरूक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के ज्ञान के बिना

जब तुम्हारे पास देखने वाला हृदय नहीं है, तो तुम मार्ग पर क्यों चलते हो*?*

बुद्धि व्यक्तियों के लिए पंखों की तरह है *[*जो उन्हें आध्यात्मिक ऊंचाइयों तक पहुंचने में मदद करती है*]*

बुद्धि नहीं है तो रूहानी मार्गदर्शक की बुद्धि का प्रयोग करो।

*[*दो छोटे भाइयों ने सबसे बड़े भाई को फटकार लगाई*]* चौकस रहना*!* इसे घबराहट के साथ देखें

ऐसा दावा नहीं करना है और न ही ऐसा करना है।

आप हमारे जीवन को हमारे लिए दयनीय बना देंगे

हे भाई*!* आपको ऐसा करने के लिए कौन मना रहा है*?*

जो मार्ग से परिचित नहीं है, वह सौ वर्षों तक लगातार यात्रा कर सकता है

यह कुछ भी नहीं गिना जाएगा*!*

बिना हथियारों के युद्ध के मैदान में न जाएं

---

[38] आत्मा के शारीरिक बन्धनों से मुक्त होने के बाद, आत्मा प्रकाशित और प्रबुद्ध हो जाती है।

अपने आप को उन लोगों की तरह विनाश में न डालें जो परवाह नहीं करते हैं।

उन्होंने यह सब कहा लेकिन उस अधीर सबसे बड़े भाई ने कहा:

मुझे इन चीजों के प्रति घृणा महसूस होती है *[*जो आपने अभी कहा*]*।

मेरी छाती चिमनी की तरह आग से भर गई है

फसल तैयार है, फसल काटने का समय आ गया है।

मेरे सीने में धैर्य था लेकिन वह अब नहीं है

गहन प्रेम ने धैर्य को आग से बदल दिया है।

जिस रात इस गहन प्रेम का जन्म हुआ, मेरा धैर्य मर गया

यह मर गया लेकिन आपको जीवन का आशीर्वाद मिले।

हे तुम जो खतरों के बारे में बात कर रहे हो

मैं उससे ऊपर उठ गया हूं, ठंडे लोहे को हथौड़ा मत मारो *[*क्योंकि इससे कोई फायदा नहीं होगा*]*।

मैं उल्टा हो गया हूं, खबरदार, मेरे पैरों को जाने दो

मेरे शरीर के कुछ हिस्सों में समझ कहां रह गई है?

मैं अपना झंडा जमीन में रखूंगा

या तो मैं अपना सिर खो दूंगा या प्रिय का चेहरा पा लूंगा।

वह आंख जो प्रिय के साथ मिलने से तरोताजा नहीं होती है

ऐसी आंख अंधी होने से बेहतर है।

भाइयों ने सबसे बड़े भाई को फिर से सलाह दी और उसे सहन न कर पाने के लिए और एक पागल प्रेमी और पागल के रूप में राजा के दरबार में जाना और प्यार की तीव्रता के कारण अनुमति मांगना और किसी दुर्व्यवहार के कारण नहीं

दोनों भाइयों ने उससे कहा: हमारे दिल में

उत्तर *[*आपके कष्टों के*]* ठीक उसी तरह हैं जैसे आकाश में तार।

अगर हमने ऐसा नहीं कहा होता तो यह आपके साथ अन्याय होता

अगर हम ऐसा कहें तो आपका दिल दुखता है।

वह खड़ा हुआ और कहा: हे मेरे अपने! विदाई

यह दुनिया और इसमें जो कुछ भी है वह अस्थायी है।

वह धनुष से तीर की तरह निकला

क्योंकि बात करने के लिए कुछ नहीं बचा था।

वह अनियंत्रित रूप से चीनी राजा के सामने आ गया

उसने राजा के सामने जमीन को चूमा।

उसके अस्तित्व की हर अवस्था राजा के लिए स्पष्ट रूप से स्पष्ट थी

दुख की शुरुआत और अंत और उसकी झिझक।

भेड़ें अपनी चरागाह में व्यस्त हैं

लेकिन चरवाहे को इसकी स्थिति के बारे में पता है।

"तुम में से हर एक चरवाहा है" के कारण वह जानता था कि झुंड में कौन है

घास चराने वाला है और जो *[झुंड में अन्य जानवरों के साथ]* लड़ाई में है[39]।

वह *(*राजा*)* इस समूह के दर्द और कष्टों से अवगत था

लेकिन विवेक के कारण, वह चुप रहा और वह रहस्य नहीं बताया जो वह जानता था।

वह सम्मानित व्यक्ति उनकी आत्माओं के बीच में था

लेकिन जानबूझकर खुद को गूंगा बना लिया।

आग का रूप बर्तन के नीचे होता है

आग की आंतरिक वास्तविकता बर्तन में है।

इसका रूप बाहर है, लेकिन इसकी आंतरिक वास्तविकता अंदर है

प्रेमी की आंतरिक वास्तविकता - आत्मा, रक्त की तरह नसों में है[40]।

राजकुमार आदरपूर्वक राजा के सामने बैठ गया

परिचयकर्ता राजकुमार को राजा से मिलवाने वाला था।

---

[39] सबसे बड़े भाई और राजा की स्थिति एक भेड़ और उसके चरवाहे के समान थी जो अपने काम में व्यस्त है लेकिन चरवाहा इस पर कड़ी नजर रखता है और इसकी जरा भी उपेक्षा नहीं करता है। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा: "आप में से हर एक चरवाहा है और न्याय के दिन उनसे उनके झुंड (प्रजा और उनकी भलाई और देखभाल के लिए जिम्मेदार हैं) के बारे में पूछताछ की जाएगी और जवाबदेह ठहराया जाएगा। एक चरवाहे को पता होता है कि झुंड में कौन चर रहा है और कौन लड़ रहा है।

[40] आत्मा प्रिय के समान है। यह शरीर से अलग है लेकिन इसका प्रभाव नसों में रक्त परिसंचरण की तरह होता है।

जबकि राजा को पहले से ही सब कुछ पता था

लेकिन परिचयकर्ता को अभी भी परिचय देने की अनुमति दी।

आंतरिक अस्तित्व में ज्ञान की रोशनी का एक कण

हे आदरणीय! सौ परिचयकर्ताओं से बेहतर है[41]।

परिचयकर्ता को कान देने के लिए

घूंघट और अनुमान लगाने की स्थिति में होने का संकेत है।

जिसके पास दिल की आंख है

ऐसी आंख बारीकी से निरीक्षण करेगी[42]।

ऐसे व्यक्ति को संप्रेषित समाचार के साथ संघर्ष नहीं किया जाएगा

इसके बजाय, किसी के पास जो निश्चितता है वह दिल की आंख से आती है।

तब परिचयकर्ता ने राजा से उल्लेख किया

राजकुमार की स्थिति।

उसने कहा: महाराज! उसे आपके एहसान की जरूरत है

कृपया उसे अपने सम्मान के अनुरूप एक शाही उपचार प्रदान करें क्योंकि उसने आप में अपनी सारी आशाएं लगाई हैं।

उन्होंने खुद को आपके साथ जोड़ा है

कृपया उसके संकट की स्थिति में उसके सिर पर दया का हाथ रखो।

राजा ने कहा: कोई भी पद और भूमि

उन्होंने अनुरोध किया है, वह इसे मुझसे प्राप्त करेंगे।

जिस देश को वह पीछे छोड़ गया है, मैं उसे उसका बीस गुना प्रदान करूंगा

मैं उसे वह प्रदान करूंगा और उसके प्रति मेरी दयालुता उसके ऊपर है।

परिचयकर्ता ने कहा: जब से आपकी भव्यता ने उसमें गहन प्रेम का बीज बोया है

---

[41] यदि ज्ञान का एक कण भी हृदय में है, तो इससे होने वाला आध्यात्मिक अनावरण (कश्फ) किसी परिचयकर्ता या मुखबिर द्वारा प्रदान की गई जानकारी से कहीं बेहतर है।

[42] जिसके दिल की आंख खुल जाती है, वह वास्तविकता को समझने लगता है और मामलों की तह तक जाता है।

आपकी इच्छा के अलावा, उसमें और क्या इच्छा बची है?[43]

आपकी गुलामी उसके लिए बहुत उपयुक्त रही है

कि प्रभुत्व की इच्छा उसके दिल से मिटा दी गई है।

उन्होंने राजघराने और राजसी जीवन को खो दिया

आपके लिए, उसने यात्रा के साथ शांति बनाई है।

सूफी जिसने आध्यात्मिक परमानंद में चीर फेंक दिया है

वह दूसरे चीर पर कहाँ से ध्यान देता है?[44]

एक प्रेमी से यह सोचना भी बहुत दूर है

अगर कोई ऐसा सोचता है तो उस सिर पर धूल डाल देनी चाहिए।

शरीर के उपासकों के लिए पृथ्वी का प्रभुत्व अनुमेय है

हम प्रेम के असीम प्रभुत्व के गुलाम हैं।[45]

वह प्रेम का पद धारक है, कृपया उसे पदच्युत न करें

उसे अपने प्यार के अलावा किसी भी चीज में व्यस्त न करें।

राजकुमार अपनी आंतरिक अवस्था की जीभ से कह रहा है*:* वह स्थिति जो मुझे आपकी दृष्टि से रोकती है

व्यावहारिक रूप से एक बयान है और केवल नाम में एक पद है।

आपके पास आने में उसकी देरी का कारण

*[*आध्यात्मिक*]* क्षमता की कमी और शरीर की कमजोरी थी।

यदि आप बिना तैयारी के खदान में जाते हैं

एक कण भी नहीं पकड़ पाएंगे।

---

[43] राजकुमार ने ऐश्वर्य, सत्ता, प्रभुत्व और बाकी सब कुछ पीछे छोड़कर गरीबी को अपनाया है, उसके दिल में आपके लिए उसकी इच्छा के अलावा और कुछ नहीं बचा है। यह परमेश्वर के लिए एक दास के प्रेम का एक दृष्टांत है जो ईमानदारी से किसी भी भौतिक लाभ या हानि की परवाह किए बिना अकेले उसके साथ अपने भाग्य को जोड़ता है।

[44] राजकुमार अपने राज्य को पीछे छोड़ गया जिसकी तुलना यहां "सूफी" चीर से की गई है। एक बार जब इसे फेंक दिया जाता है, तो वह इसे कभी वापस स्वीकार नहीं करेगा। एक चीर को फेंकने और बाद में इसे करने पर पछताने के लिए और किसी और से दूसरे को स्वीकार करने और इसके लिए उत्सुक होने के लिए, आध्यात्मिक परमानंद के लिए चीर खोने को नुकसान के रूप में मानने के समान होगा। यह आध्यात्मिक परमानंद (वाजद) अमूल्य है और इसके लायक कुछ भी नहीं है।

[45] प्रेमी दिव्य प्रेम का असीम प्रभुत्व चाहते हैं।

ऐसा व्यक्ति बिना तेल और बाती के दीपक के समान होगा

इसकी रोशनी न तो छोटी होगी और न ही बड़ी।

यह समुद्र में मौजूद भूमि के एक पक्षी की तरह है

नुकसान और विनाश के अलावा इसे क्या मिलेगा?[46]

यह उस व्यक्ति की तरह है जो पीसने के लिए बिना गेहूं के चक्की में आ गया है

उसे दाढ़ी और बालों को धूल और भूरे होने के अलावा कोई इनाम नहीं मिलेगा।

जिनके पास गेहूँ नहीं है, वे स्वर्ग की चक्की हैं

उन्हें बालों का सफेदा होना और पीठ की कमजोरी प्रदान करें।

लेकिन जिनके पास गेहूं है, उनके लिए यह चक्की चक्की

प्रभुत्व, *[दिव्य]* कार्य और रॉयल्टी का उपदेशक बन जाता है[47]।

इसका कोई अंत नहीं है, इसे मत खोजो

जाओ और *[आगे बढ़ने के लिए]* क्षमता प्राप्त करो।

वह आपके पास आने से पहले क्षमता प्राप्त करने का इंतजार करता था

उनकी इच्छा की तीव्रता *[आपकी दृष्टि के लिए]* सभी सीमाओं को पार कर गई लेकिन क्षमता प्राप्त नहीं हुई।

उन्होंने कहा कि राजा के माध्यम से भी क्षमता प्राप्त होती है

आत्मा के बिना शरीर कब सक्षम होता है?[48]

---

[46] परिचयकर्ता राजा को राजकुमार के बारे में बता रहा है कि आपकी उपस्थिति में आने में उसकी देरी प्रेम की तीव्रता की कमी के कारण नहीं थी। बल्कि वह अपनी आध्यात्मिक क्षमता को बढ़ाने में व्यस्त था और इसके अलावा वह कमजोर था। उस अवस्था में, वह न तो आध्यात्मिक लाभ (फयद) प्राप्त करने में सक्षम था और न ही वह उन सेवाओं को करने में सक्षम था जिनके लिए शारीरिक कठोरता और शक्ति की आवश्यकता होती है। जब तक किसी के उद्देश्य को प्राप्त करने की आध्यात्मिक क्षमता नहीं है, तब तक प्रयास बेकार हैं। इसलिए एक आध्यात्मिक यात्री को आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने और अंततः ईश्वरीय उपस्थिति में रहने के लिए आध्यात्मिक क्षमता और शक्ति की आवश्यकता होती है। यह फिर से एक दृष्टांत है कि ईश्वर की उपस्थिति में ज्ञानवाद या ईश्वर के साथ अंतरंगता की स्थिति में क्या होना चाहिए।

[47] यदि आध्यात्मिक क्षमता के बिना आध्यात्मिक पथ पर एक आध्यात्मिक यात्री या नौसिखिया आध्यात्मिक मार्गदर्शक के पास जाता है, तो ऐसा व्यक्ति उस व्यक्ति के समान होता है जो पीसने के लिए बिना किसी गेहूं के चलने वाली चक्की में जाता है। ऐसा एक धूल के साथ सभी बालों को सफेद दिखने के साथ वापस आएगा। आध्यात्मिक क्षमता के बिना लोगों को, समय बीतने के साथ, बूढ़े, धूसर और कमजोर होने के अलावा और कुछ नहीं मिलता है। स्वर्ग की चक्की केवल उन लोगों को लाभ पहुंचाती है जिनके पास सही विश्वास और धार्मिक कार्यों का गेहूं है।

[48] परिचयकर्ता ने कहा: वह अब तक आपसे दूर रहा है क्योंकि वह अपनी क्षमता बढ़ाने की कोशिश कर रहा था। भले ही यह अभी तक बॉट प्राप्त नहीं हुआ है, लेकिन वह आपके लिए प्यार की तीव्रता के कारण मजबूर और असहाय हो गया है। अब उन्होंने सोचा है कि राजा के माध्यम से क्षमता की प्राप्ति भी होगी। आत्मा के शरीर में आने के बाद पूरी क्षमता की प्राप्ति होती है

राजा की दयालुता ने उसके दुखों को समेट दिया

वह राजा का शिकार करने आया था लेकिन उसने खुद का शिकार करवा लिया।

वह आपके जाल में फंस गया और शिकार हो गया

शिकार को न पकड़कर वह खुद शिकार हो गया।

धन का इच्छुक व्यक्ति, निश्चित रूप से

पहले इसके द्वारा कैद हो जाओ[49]।

दुनिया के चेहरे पर निशान के बारे में सोचें कि यह जो दिखता है उसके विपरीत है

दुनिया के हर गुलाम का नाम विश्व का मालिक कहा जाता है।

हे कम समझ और विपरीत तरीकों वाले शरीर*!*

आपने लाखों स्वतंत्र आत्माओं को कैद कर लिया है[50]।

थोड़े समय के लिए *[*धन और प्रसिद्धि अर्जित करने के लिए*]* सभी बहाने छोड़ दें

मृत्यु से पहले, कुछ घंटों के लिए एक स्वतंत्र जीवन जिएं।

हे व्यस्त शरीर*!* मुझे अकेला छोड़ दो

तुमने मेरी जिंदगी बर्बाद कर दी है, जाओ और किसी और को ढूंढो[51]।

चीनी राजा विदेशी राजकुमार को सम्मान प्रदान करते हुए

नतीजा यह है कि राजा उसे इनाम देता था

उस सूर्य के माध्यम से वह चंद्रमा की तरह पिघलता था।

प्रेमियों का पिघलना ही बढ़ता है

ताजगी में ठीक वैसे ही जैसे चंद्रमा के चरणों में कमी आती है।

सभी बीमार दवाओं की उम्मीद करते हैं

जो आप (यानी राजा) प्रदान करेंगे। जाहिर है, जो आपका शिकार करना चाहता है, वह खुद शिकार हो जाएगा।

[49] यह प्रिय वस्तु का नियम है कि मनुष्य इसे प्राप्त करने के बजाय, पहले खुद को प्रिय वस्तु को सौंप दें। सांसारिक चीजों को उनके विपरीत समझें जो वे दिखती हैं। जो विश्व का कैदी है वह विश्व का धनी कहा जाता है।

[50] शरीर ने लाखों स्वतंत्र आत्माओं को कैद कर लिया है।

[51] रूमी यह कह रहा है और सटीक रूप से भविष्यवाणी कर रहा है और अपने निधन की भविष्यवाणी कर रहा है। मेरी आजादी (इस दुनिया से निधन) का समय आ गया है। मुझे मुक्त करो और किसी और को कैद करने के लिए ढूंढो।

यह बीमार *[*दिव्य प्रेम के साथ*]* इस बीमारी में वृद्धि के लिए प्रार्थना करता है।

सभी मरीज़ ठीक होने के लिए दवाओं की तलाश करते हैं और यह एक

अधिक दुख, दर्द और रोना चाहता है *[*ईश्वर के लिए गहन प्रेम से*]*।

मैंने इस पेय से बेहतर जहर नहीं देखा है

इस बीमारी से बेहतर कोई स्वास्थ्य नहीं होगा।

वह ऐसे ही राजा के सामने रहा

दिल जल गया था, और आत्मा थाली में थी *[*राजा को पेश करने के लिए*]*।

उन्होंने कहा कि राजा ने अपनी बेटी के लिए इच्छा व्यक्त करने वाले किसी भी व्यक्ति का सिर काट दिया है

लेकिन मैं राजा की वजह से हर पल बलिदान हो रहा हूं।

प्यार के मैदान में दो पैरों से अकेले नहीं दौड़ सकते

प्यार की बिसात पर सिर्फ एक सिर से चाल नहीं चल सकती।

हर किसी के दो पैर और एक सिर होता है

हजारों पैरों और सिर वाला शरीर जला दिया जाता है।

चूंकि इस प्रेम का उद्देश्य असीम है

इस प्रेम की गर्मी की तीव्रता के सामने नरक की गर्मी नगण्य है[52]।

नरक के कथन का वर्णन, जिस पर पतला और नुकीला पुल है, जिस पर हर कोई शाश्वत निवास में अपने अंतिम गंतव्य तक पहुंचने के लिए चलेगा, आस्तिक को जल्दी करने और इसे जल्दी से पार करने के लिए ताकि आस्तिक की रोशनी की विशालता इसे बुझा न सके और इसका कथन, "हे आस्तिक! मेरे ऊपर से गुजरो! वास्तव में, आपके प्रकाश ने मेरी आग को बुझा दिया है"

---

[52] राजकुमार ने कहा: मैंने इस प्रेम को प्राप्त करने के लिए पहले ही अपना धन और सिर बलिदान कर दिया है। निचले स्व (फना) से अपने अहंकार और इच्छाओं के विनाश और विलुप्त *होने के बाद*, व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व (बाका) के माध्यम से निर्वाह प्राप्त करता है। आम लोग इस प्रेम से वंचित हैं क्योंकि उनके पास केवल दो पैर और एक सिर है क्योंकि वे दिव्य प्रेम प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। एक इंसान का प्यार (यानी, एक महिला के लिए एक पुरुष का प्यार और इसके विपरीत) एक हंगामा पैदा करता है जो तब समाप्त होता है जब दो पैर और एक सिर चले जाते हैं (यानी, जब किसी का जीवन समाप्त हो जाता है)। हालाँकि, वास्तविक प्रेम (यानी, दिव्य प्रेम) का कोलाहल दिन-ब-दिन तीव्रता में बढ़ता जाता है। चूँकि इस प्रेम का अंतिम निष्कर्ष और मंज़िल असीमित, समय और स्थान से असीमित है, और अनन्त है, इसलिए इस सच्चे प्रेम की गर्मी अथाह तीव्रता की है, यहाँ तक कि नरक की गर्मी को भी बौना कर देती है जो अपनी असहनीय तीव्रता के लिए जाना जाता है।

हे आदरणीय! इसलिए आस्तिक की रोशनी

नरक को कमजोर और बुझने का कारण बनता है।

कहते हैं हे माननीय! जल्दी से मेरे ऊपर से गुजरो

अन्यथा, आपकी आग [दिव्य प्रेम की] मेरी आग को बुझा देगी।

अविश्वास [सांसारिक जीवन में घिनौने कार्यों में प्रकट] केवल नरक का बारूद है

देखें कि यह कैसे आस्तिक के आंतरिक प्रकाश से बुझ जाता है [सांसारिक प्रवास में महान कार्यों में प्रकट]।

जल्दी से अपना गन पाउडर [एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक या सिद्ध व्यक्ति को] सौंप दें

तो, नरक आपको और न ही इसकी किसी चिंगारी को ठोकर मारेगा[53]।

ऐसे व्यक्ति से स्वर्ग ने पूछा है: हवा की तरह मेरे ऊपर से गुजरो

अन्यथा, मेरे पास जो है वह नकली हो जाएगा।

क्योंकि तुम खेत के मालिक हो, जबकि मैं केवल उसके अनाज का बीनने वाला हूं

मैं केवल एक मूर्ति हूं जबकि आप चीन के प्रभुत्व हैं[54]।

हे विश्वासियों, तुम्हारे साथ! नरक घबराहट में है और स्वर्ग भी घबरा रहा है

आपके साथ कोई भी शांति में नहीं है, न यह और न वह।

तीन राजकुमारों में से सबसे बड़े की मृत्यु हो गई और दूसरे भाई ने राजा का साथ अपनाया

उनका जीवन समाप्त हो गया क्योंकि उन्हें ठीक होने का समय नहीं मिला

धैर्य बहुत दुर्बल करने वाला था, और उसकी आत्मा इसे सहन करने में सक्षम नहीं थी[55]।

---

[53] अपने भीतर के होने के भीतर से इस गन पाउडर को हटा दें (नकारात्मक, बुराई, नीच प्रवृत्तियां और झुकाव जो घिनौने कर्मों में तब्दील हो जाते हैं) जो नरक के रोष को आकर्षित करता है जब आप न्याय के दिन इसे पार करते हैं। इस बंदूक शक्ति सामग्री को अपने स्वयं के भीतर गहरे से एक सिद्ध इंसान, एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक, ज्ञानवादी या दिव्य प्रेम के मालिक को सौंपें ताकि आपकी आत्मा के भीतर कुछ भी न बचा हो जो नरक की आग और रोष को आकर्षित करता है। मनुष्य अपने भीतर अपने स्वयं के दंड और उद्धार के बीज रखता है। शाश्वत दुःख और पीड़ा के रूप में अभिशाप, और शाश्वत सुख और अंतहीन विजय के रूप में मोक्ष।

[54] एक आस्तिक और एक सच्चे दिव्य प्रेमी की ऊंचाई और स्थिति स्वर्ग से भी ऊंची है, और ऐसे व्यक्ति का हृदय ईश्वरीय अस्तित्व की अभिव्यक्ति का स्थान है। स्वर्ग में यह गुण नहीं है, इसीलिए, जो हैसियत में कम है, वह उच्च स्थिति वाले के साथ शर्मीला महसूस करता है। संक्षेप में, एक आस्तिक अपनी आध्यात्मिक स्थिति में स्वर्ग और नरक से अधिक ऊंचा होता है।

[55] सबसे बड़े भाई और राजकुमार को अपने प्रिय से मिलने का कोई रास्ता नहीं मिला, और उसका जीवन उसी अवस्था में समाप्त हो गया और वह अलगाव को सहन नहीं कर सका और न ही उसने अपने उद्देश्य के लिए लगातार प्रयास करने का धैर्य बनाए

बहुत देर तक उसने इसे डर के साथ सहन किया

जीवन अपने उद्देश्य और उद्देश्य को प्राप्त किए बिना समाप्त हो गया[56]।

प्रिय का चेहरा उससे गायब हो गया

वह मर गया और प्रिय की आंतरिक वास्तविकता का साथी बन गया[57]।

उसने कहा: भले ही प्रिय की पोशाक रेशम से बनी हो

बिना किसी घूंघट और अलगाव के दिव्य सौंदर्य को अपनाना बेहतर है।

मैं शरीर से वंचित हो गया हूं और शरीर *[सांसारिक]* प्रिय के विचार से रहित हो गया है

मैं अब *[असली]* प्रिय के साथ वास्तविक मिलन के रास्ते में लगातार और सुचारू रूप से चल रहा हूं।

इन बहसों को इस बिंदु तक ही कहा जाना है

इसके बाद जो आता है उसे गुप्त रखा जाना चाहिए[58]।

घोड़े और लगाम की दौड़ नदी तक होती है

उसके बाद, आपकी सवारी लकड़ी से बनी सवारी है।

लकड़ी की सवारी *(*नाव*)* जमीन में बेकार है

लेकिन यह विशेष रूप से नदी के लोगों के लिए एक मार्गदर्शक है।

यह सन्नाटा लकड़ी की सवारी है

सागर के लोगों के लिए *[*दिव्य प्रेम के*]*, मौन पर जोर दिया गया है[59]।

वह चुप्पी जो आपको परेशान कर देती है

*[*दिव्य*]* प्रेम के नारे उठाता है।

रखा।

[56] लंबे समय तक वह अपने प्यार का इजहार करने से डरता रहा और अंत में प्रिय से मिले बिना ही इस दुनिया से चली गया।

[57] प्रिय जो दिव्य प्रेम की अभिव्यक्ति थी, उसकी मृत्यु पर उसकी दृष्टि से गायब हो गई, और वह दिव्य सुंदरता के साथ एकीकृत हो गया जो उस अभिव्यक्ति में स्पष्ट थी। इस प्रकार, उन्हें अब एक सृष्टि में दिव्य सुंदरता और दिव्य वास्तविकता को देखने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उन्होंने बिना किसी पर्दे या अलगाव के वास्तविकता को अपनाया था।

[58] चर्चा में केवल इतना ही शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है और इस बिंदु से परे कुछ भी वास्तविक प्रिय (परमेश्वर, उच्च परमेश्वर) के साथ मिलन है, और यह केवल अनुभवात्मक है और इसे शब्दों के माध्यम से वर्णित नहीं किया जा सकता है।

[59] भाषण के लोगों (आम आदमी) को आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति की व्याख्या नहीं की जा सकती है जिसे केवल आंतरिक आध्यात्मिक अवस्था के लोगों द्वारा ही समझा जा सकता है जैसे कि एक नाव जो जमीन पर बेकार है। मौन आंतरिक आध्यात्मिक अवस्था के लोगों के लिए बात है और यह उनके लिए [दिव्य] प्रेम का नारा है क्योंकि उनके पास इस आंतरिक अवस्था की बात सुनने के लिए कान हैं।

मैं उस नारे के शोर के कारण बहरा हो गया हूं *[*मौन की स्थिति में*]* जबकि अन्य लोग इससे बेखबर हैं

*[*सांसारिक मामलों के लिए*]* तेज सुनने वाले लोग इस कहानी के प्रति बहरे हैं।

एक व्यक्ति सपने में जोर से नारे लगा रहा है

हजारों वार्ता और बहस कर रहे हैं।

दूसरा पहले वाले के ठीक बगल में बैठा है, इससे पूरी तरह बेखबर है

ऐसा व्यक्ति सो रहा है और सबसे पहले सुनाई देने वाली आवाज़ों और चीखों से बहरा है[60]।

जिसकी लकड़ी की सवारी *(*नाव*)* पलट गई है *[*समुद्र के बीच में*]*

पानी में डूब गया है और खुद मछली बन गया है[61]।

नतीजा यह है कि *[*सबसे पुराने*]* राजकुमार ने दुनिया छोड़ दी

जब वह चले गए तो उनकी आत्मा दुखी, दुखी और गर्म थी[62]।

सबसे छोटे भाई के रूप में सबसे बड़े भाई के अंतिम संस्कार में आने वाला दूसरा भाई बीमारी के कारण बिस्तर पर पड़ा हुआ था और राजा ने दूसरे भाई को उदारतापूर्वक प्रदान किया था और वह राजा की दृष्टि से सैकड़ों हजारों आंतरिक और बाहरी धन प्राप्त करता था

सबसे छोटा बीमार था और मंझला

बस सबसे बड़े भाई के अंतिम संस्कार में आया था।

राजा ने उसे देखा और जानबूझकर पूछा*:* वह कौन है*?*

क्योंकि वह उसी समुद्र का था और वह भी एक मछली है।

परिचयकर्ता ने कहा*:* वह एक ही पिता का पुत्र है

यह भाई मरने वाले से छोटा है।

राजा ने उदारतापूर्वक उसे *[*अपनी उदारता*]* प्रदान की और कहा*:* आप अद्वितीय हैं

---

[60] सांसारिकता में लिप्त लोग आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति वाले व्यक्ति द्वारा अनुभव किए गए दिव्य प्रेम की ध्वनियों से बेखबर और बहरे होते हैं। इसका दृष्टांत एक ऐसे व्यक्ति की तरह है जो सपने में बहुत कुछ सुनता है लेकिन बगल में बैठा व्यक्ति इससे पूरी तरह अनजान है।

[61] अब तक चर्चा सच्चे आंतरिक आध्यात्मिक अनुभव वाले व्यक्ति (धौक या *ज़ौक)* के बारे में होती रही है। जो दिव्य अस्तित्व (*फना*) में नष्ट हो गया है और उसमें गहराई से डूबा हुआ है, वह आंतरिक अनुभव को भी विनाश पाता है। ऐसी मछली उस मछली की तरह होती है जो इस अथाह समुद्र की गहराई और चौड़ाई में तैरती है और उसे नाव की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

[62] सबसे बड़े भाई की स्थिति का सारांश यह है कि वह [अप्राप्त] प्रेम के दर्द और दुख के साथ इस दुनिया से चला गया।

उसने अपनी उदारता से उसका शिकार किया।

उस अनोखे राजा की बंदोबस्ती के कारण

उसने उसमें दूसरे जीवन के अलावा एक जीवन देखा।

उसने अपने दिल में शानदार ध्वनि और उत्साह देखा

जो एक सूफी को सौ आध्यात्मिक प्रयासों में भी नहीं मिलेगा[63]।

उन्होंने अपने दिल में एक शानदार दुनिया *[*ग्नोसिस और ईश्वरीय अंतरंगता की*]* पाई

यह सौ एकांत के बाद भी हासिल नहीं किया जा सकता है *[*आध्यात्मिक प्रयासों के लिए*]*।

खेत, दीवारें, पहाड़ और चट्टानें चमक से चमक रही थीं

उसके सामने, वे पके अनार की तरह खुले हुए थे।

उसके सामने हर कण सूरज की तरह था

हर पल सौ तरह से आध्यात्मिक अवसर प्रदान करता था।

दरवाजा कभी एक उद्‌घाटन की तरह तो कभी किरण की तरह हो गया

धूल कभी गेहूं बन गई, कभी पोषण का एक बड़ा उपाय।

उसकी आँखों के सामने स्वर्ग *(*आकाश*)* पुराने सूखे मांस की तरह था

उनकी आंखों के सामने हर समय एक नई रचना थी[64]।

जब सुंदर आत्मा शरीर की जेल से मुक्त हो जाती है

वास्तव में परमेश्वर की नियति के साथ, यह एक आंख से संपन्न है।

अदृश्य क्षेत्र से सैकड़ों हजारों चीजें, उसके सामने प्रकट हुईं

रहस्यों के बारे में जानने वालों की आंख जो कुछ भी देख सकती है, उसने देखा।

---

[63] दूसरे भाई के दिल पर राजा के आध्यात्मिक ध्यान के कारण, उसकी आंतरिक स्थिति नाटकीय रूप से बदल गई और उसने अपने दिल में एक नया जीवन महसूस किया। उन्होंने अपने हृदय में दिव्य प्रेम के लिए ऐसी उत्तेजना और जोश देखा जो एक सूफी (आध्यात्मिक मार्ग में एक गतिहीन) को सौ आध्यात्मिक कठोरता और प्रयासों में भी नहीं मिलेगा (मुख्य रूप से लंबे समय तक एकांत में गहन दिव्य स्मरण और चिंतन करना)

[64] दिव्य रोशनी की प्रचुरता के कारण, पूरी दुनिया प्रकाशित हो गई और आध्यात्मिक अर्थ खुद को प्रकट करने लगे और सब कुछ दिव्य गुणों और पूर्णताओं की अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट होने लगा। अब दुनिया का हर कण आध्यात्मिक रहस्योद्‌घाटन (कश्फ) का स्रोत बन गया, और उसके लिए दरवाजे या ज्ञान और आंतरिक आध्यात्मिक अर्थ खुलने लगे। ज्ञान का वह द्वार कभी ज्ञान का स्रोत बन जाता है तो कभी स्वयं ज्ञान। अब भौतिक भौतिक क्षेत्र ('*आलम अल-नसूत*) उसे उतना ही मूल्यहीन लग रहा था जितना कि उसके सामने स्वर्गदूतों ('*आलम अल-मलकूट) का क्षेत्र था*।

जो कुछ भी वह किताबों में पढ़ता था

उसने उनकी आंतरिक वास्तविकता पर अपनी आँखें खोलीं।

उस महान राजा के जुलूस की धूल से

उन्हें एक दृष्टि-स्पष्ट और दृष्टि-बढ़ाने वाला काजल मिला।

वह ऐसे बगीचे में अपने कपड़े घसीटते रहते थे

जहां उसके रोम-रोम का रोना शुरू हो जाता था, "क्या और भी है?"

फूलों से उगा हुआ बगीचा समाप्त हो जाता है

एक बगीचा जो दिल से उगता है वह हमेशा के लिए रहता है[65]।

हम पर एक या दो गुलदस्ते का इतना दबदबा है

क्योंकि हमने अपने ऊपर बगीचे का दरवाजा बंद कर दिया है[66]।

ऐसी चाबियाँ, हर समय, रोटी के बदले में

हाय रे मेरी आत्मा! उंगलियों से गिर रहे हैं।

अगर आप कुछ समय के लिए ब्रेड को लेकर बेफिक्र हो जाते हैं

आप कपड़ों, शारीरिक प्रेम और महिलाओं के प्रति आसक्त हो जाते हैं।

जब आपके भीतर वासना उठती है

आप चाहते हैं कि पूरा देश और शहर महिलाओं और रोटी से भरा हो[67]।

आप सांप हुआ करते थे, शायद अब आप ड्रैगन बन गए हैं

आप एक सिर वाले सांप थे, अब आप सात सिर वाले हैं।

---

[65] दूसरे राजकुमार के आध्यात्मिक रहस्योद्घाटन के बारे में आश्चर्यचकित या आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। जब [आंतरिक रूप से] सुंदर आत्मा शरीर की कैद से मुक्त हो जाती है, चाहे वह आध्यात्मिक संघर्षों (मुजाहिद) को सहन करने के कारण निम्न स्व (*नफ्स*) को वश में करके या एक सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक (शैख *अल-कामिल) की संगति को बनाए रखने के कारण मुक्त हो,* तो वह सभी प्रकार के आध्यात्मिक रहस्योद्घाटन प्राप्त करती है। राजकुमार ने राजा की कंपनी के माध्यम से इस उच्च आंतरिक स्थिति को प्राप्त किया, जो एक सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक के लिए एक दृष्टांत है, जो किसी के अस्तित्व के मूल में एक बड़े पैमाने पर आंतरिक आध्यात्मिक परिवर्तन लाने में पूरी तरह से सक्षम है। राजकुमार हर आंतरिक ज्ञान के बगीचों में टहल रहा था और आध्यात्मिक पथ में अन्य उपलब्धि हासिल करने वालों की तरह और अधिक मांग रहा था। भौतिक ज्ञान सूक्ति (मारिफा) के बगीचे से कुछ ही गुलदस्ते हैं।

[66] वास्तविकताओं और आध्यात्मिक क्षेत्र के ज्ञान से बेखबर होने के कारण हम भौतिक ज्ञान के प्रति आसक्त हो गए हैं।

[67] पेट भर जाता है तो गुप्तांग की वासना में आसक्त हो जाते हैं। तब मानव लालच और अधिक बढ़ जाता है और व्यक्ति धन से भरे पूरे देशों और शहरों के पीछे दौड़ता है और अपनी बढ़ती वासना और लालच को पूरा करने के लिए साधन है जिसकी कोई सीमा नहीं है।

सात सिर वाला अजगर नरक है

आपका लालच अनाज की तरह है और नरक आपके लिए जाल के रूप में जाल की तरह है।

जाल फाड़ो और अनाज जला दो

इस घर के नए दरवाजे खोलो[68]।

हे निर्लज्ज कंगाल! चूंकि आप प्रेमी नहीं हैं

आपके पास पहाड़ की तरह एक अज्ञात ध्वनि है[69]।

यदि आप अपने आप को सुधारते हैं

ईश्वरीय प्रतिशोध आपके सामने छिपा हुआ है

आप दोनों लोकों (यह और अगला) में मालिक और न्यायाधीश बन जाते हैं।

एक शाश्वत राज्य आपके सामने प्रकट होगा

यह दो दिन लंबा, उधार लिया गया और जीवन की बीमारियों से भरा नहीं है।

आप बेगारी से मुक्त हो जाएंगे और अपना काम खुद करेंगे

तुम अपने स्वयं के राजा बन जाओगे और अपनी ही तुरही बजाओगे[70]।

जब गला जीवन को हम पर सीमित कर रहा हो

हाय! गले और मुंह धूल खाते हैं।

यह मुंह धूल खाने वाला है

लेकिन वह धूल जो रंगीन हो गई है।

यह कबाब, शराब और चीनी

---

[68] अपने आप को उस लालच और वासना से दूर ले जाएं जो फंसाने के लिए अनाज और जाल की तरह हैं, तभी आपके लिए गहरे आंतरिक आध्यात्मिक अर्थ और दिव्य ज्ञान के द्वार खुलेंगे।

[69] यदि आपके पास दिव्य प्रेम नहीं है जो इस तरह के दिव्य ज्ञान के साथ आता है तो आप एक पहाड़ की तरह हैं जो ध्वनि को विक्षेपित करता है और इससे अनजान है। दूसरे शब्दों में, इस अवस्था में आपका भौतिक ज्ञान पहाड़ से विक्षेपित ध्वनियों की तरह है।

[70] जब ईश्वरीय दंड अपने पूरे क्रोध के साथ आपके सामने आता है, तो पश्चाताप करने और सुधार करने में बहुत देर हो चुकी होती है। यदि कोई अपने आप को सुधारता है और सुधारता है जब ईश्वरीय प्रतिशोध छिप रहा था और किसी ने इसे नहीं देखा है, तो वह एक राजा के समान है और कोई भी ऐसे व्यक्ति को परेशान नहीं कर सकता है। जब अदृश्य पर विश्वास इस तरह से मौजूद होता है तो व्यक्ति को एक स्थायी राज्य प्राप्त होता है और आप गुलामी का जीवन नहीं जीतेगे, इसके बजाय आप स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे। मुंह और गले के ये स्वाद और आनंद हमारे लिए घातक हैं। ईश्वरीय प्रतिशोध के समय, कोई भी उन्हें पछताएगा और इसके बजाय धूल खाने की इच्छा करेगा। इस दुनिया में जो कुछ भी खा रहा है, जिसमें स्वादिष्ट चीजें भी शामिल हैं, वह धूल के अलावा और कुछ नहीं है जो रंगों से ढकी हुई है और दुनिया के सभी व्यंजन रंगीन और सजी हुई धूल हैं।

हे बच्चे*!* रंगीन और सजी हुई धूल के अलावा और कुछ नहीं है।

जब आपने खाना समाप्त कर लिया और यह आपका मांस और रक्त बन गया

इसे मांस का रंग मिला और वह भी गली की धूल है।

पृथ्वी पर रंग धूल से किया जाता है

फिर सब कुछ *[*फिर से*]* धूल बन जाता है[71]।

भारतीय, किबचाकी तुर्क, रोमन और इथियोपियाई

उनकी कब्रों के अंदर एक ही रंग बनें।

ताकि आप समझ सकें कि सभी रंग और निशान हैं

घूंघट, धोखे और उधार की चीजें।

क्योंकि एकमात्र रंग जो रहता है वह भगवान का रंग है और कुछ नहीं

बाकी सब कुछ एक घंटी की तरह बंधा हुआ है के रूप में सोचें *[*मवेशियों में एक जानवर के लिए*]*।[72]

सत्य का रंग, ईश्वर का भय और ईश्वर की निश्चितता

परमेश्वर के सेवकों और उपासकों पर हमेशा रहेगा।

संदेह, अविश्वास और पाखंड का रंग

अवज्ञाकारी आत्मा पर हमेशा रहेगा।

चालाक फिरौन और उसके काले बुरे कर्मों की तरह

उनका रंग तो बना हुआ है, लेकिन शरीर चला गया है।

सच्चे लोगों के सुंदर चेहरों पर भव्यता और चमक

न्याय के दिन तक बने रहेंगे, भले ही उनके शरीर चले गए हों।

---

[71] पहले इस धूल में भोजन और फलों का रंग था, फिर इसे भस्म किया गया और मांस और रक्त के रूप में शरीर का हिस्सा बन गया, फिर अंत में वह मांस और रक्त पृथ्वी की धूल बन जाएगा। शरीर जो स्वयं धूल है, धूल से पोषित होता है और अंत में कब्र तक पहुंचने पर फिर से धूल बन जाता है।

[72] मनुष्य चाहे वह कहीं से भी हो, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि उनके अल्पकालिक सांसारिक जीवन के दौरान उनकी त्वचा का रंग क्या है, मरने के बाद वे एक ही रंग की धूल बन जाते हैं। सभी के लिए एक ही अंत का उद्देश्य यह संदेश देना है कि रंगों, नस्लों, संस्कृतियों और देशों के अंतर सभी अस्थायी हैं। वास्तव में मनुष्य की उत्पत्ति और अंतिम अंत एक ही है। केवल एक चीज जो हमेशा के लिए रहती है वह है भगवान का रंग जिसे कोई इस अल्पकालिक सांसारिक अस्तित्व में धार्मिक कर्मों के माध्यम से प्राप्त करता है। "किपचाक" एक यूरेशियन रेगिस्तान है जिसमें कुछ खानाबदोश तुर्की लोग रहते हैं। एक पालतू जानवर या मवेशियों से बंधी घंटी उसके स्वामित्व में नहीं है, बल्कि यह एक उधार की चीज है।

भगवान धूल का रंग, कौशल और हास्य देता है और

उनकी वजह से जो बचकाना स्वभाव रखते हैं, वे युद्ध में शामिल होते हैं।

आटे से बने ऊंट और शेर *[आकार की रोटी]* पकाए जाते हैं

बच्चे उन्हें लालच से चाटते हैं।

शेर और ऊंट मुंह में रोटी बन जाते हैं

इसका बच्चों पर कोई असर नहीं पड़ता है।

बच्चों की तरह हमने भी खुद को धूल से भर लिया है

वास्तविक साधनों और साधनों को अपनाने का प्रयास *[हमारे जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए]* हमारे दिमाग से निकल गया है।

एक बच्चा मूर्खता, अनुमान और संदेह में तल्लीन होता है

भगवान का शुक्र है, एक बच्चे में बहुत कम शारीरिक शक्ति होती है[73]।

अफसोस उन बच्चों के लिए है जो बुढ़ापे और वरिष्ठ वर्षों को सहन कर रहे हैं

वे लंगड़ाती चींटियाँ हैं जो *[दुनिया]* पर शासन कर रही हैं।

एक बच्चे के सौ झगड़े और झगड़े होते हैं

भगवान का शुक्र है, एक बच्चा रणनीतियों के बिना और हथियारों के बिना है *[और इसलिए किसी को कोई वास्तविक नुकसान पहुंचाने में असमर्थ है]*।

पछतावा उन असभ्य, बुरे व्यवहार वाले बच्चों के लिए है जो बड़े हो चुके हैं और

वे हर किसी के लिए दुख का स्रोत बन गए हैं, उनके पास मौजूद शक्ति और नियंत्रण के कारण उन पर नजर रखते हैं *[वास्तविक नुकसान पहुंचाने और दुनिया को कमजोर करने वाले संघर्षों को बोने के लिए[74]]*।

जब अज्ञानता और हथियार मिल जाते हैं

यह अत्याचार और उत्पीड़न के कारण दुनिया को नष्ट करने वाला फिरौन बन जाता है।

---

[73] छोटे बच्चों को समझाने की कोशिश करें कि आटे से बने ऊंट और शेर असली ऊंट और शेर नहीं हैं, तो वे इसे स्वीकार नहीं करेंगे। हमने भी बच्चों की तरह खुद को धूल से भर लिया है और अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के संदर्भ में हमें क्या करना चाहिए, इस बात से बेखबर हो गए हैं।

[74] एक बच्चे की अज्ञानता और मूर्खता हानिकारक नहीं है क्योंकि एक बच्चे के पास ज्यादा ताकत और शक्ति नहीं होती है और अगर इससे लड़ाई होती है तो यह एक छोटी सी लड़ाई है जहां कोई वास्तविक नुकसान नहीं होता है। अफसोस की बात है कि बड़े लोग हैं जो बच्चों की तरह काम करते हैं। वास्तव में, वे लंगड़ाती चींटियाँ हैं जिनके पास [सामाजिक-राजनीतिक] शक्ति और धन है, और उनकी अज्ञानता हमारे चारों ओर और दुनिया में बड़े पैमाने पर नुकसान और विनाश का कारण बनती है।

हे गरीब आदमी*!* इस कमी के लिए परमेश्वर का शुक्रगुजार हो *[धन की कमी]*

कि इसने आपको उत्पीड़न और अविश्वास से बचाया।

आभारी रहें कि आप उत्पीड़ित हैं और उत्पीड़क नहीं हैं

आप अत्याचार और बुराई के हर स्रोत से सुरक्षित हैं।

खाली पेट ने ईश्वरत्व का दावा नहीं किया है

क्योंकि अपने भीतर की यह आग ईंधन से सहायता प्राप्त नहीं होती है *[*इस प्रकार इसकी तीव्रता बढ़ जाती है*]*।

खाली पेट शैतान के लिए एक जेल है

क्योंकि इसके लिए रोटी पाने की चिंता उसे चालाकी और धोखे से रोकती है।

यदि कोई फल पुराना है, जब तक कि वह कच्चा न हो जाए

इसे कच्चा कहा जाता है *[*चाहे वह पेड़ पर कितनी भी देर तक क्यों न रहे*]*।

भले ही वह कच्चा *[*व्यक्ति*]* सौ साल का हो जाए

हर समझदार व्यक्ति के लिए यह एक बच्चा और कच्चा होता है।

भले ही बाल और दाढ़ी सफ़ेद हो जाएं

एक अभी भी उसी बचपन, भय और आशा में है[75]।

इस भौतिक क्षेत्र के ऊपर के क्षेत्र में सब कुछ आध्यात्मिक है

यह सारांश का सारांश है और ईश्वरीय है।

---

[75] सांसारिक भौतिकवादी लोगों का बुढ़ापा उन्हें उनके बचपन (अपरिपक्कता और अज्ञानता) से बाहर नहीं निकालता है। यदि कोई वृद्धावस्था में भी बुद्धिमान नहीं बनता है [परिपक्कता, विवेक, बुद्धि और जीवन के वास्तविक उद्देश्य के लिए प्रयास करने के संदर्भ में] तो वह अभी भी बचकाने व्यवहार के कारण बच्चा है, भले ही बुढ़ापे के कारण बाल सफेद हो गए हों। भय और आशा दो प्रकार के लोगों के होते हैं: पहला, यह आध्यात्मिक रूप से सिद्ध लोग हैं जो ईश्वरीय व्यवस्था का उद्देश्य है। इसकी वास्तविकता यह है कि व्यक्ति ईश्वरीय कानून का पालन करता है और लगन से इसकी आज्ञाओं और निषेधों का पालन करता है, फिर अपने अच्छे कर्मों को ईश्वरीय स्वीकृति के योग्य होने के लिए काफी छोटा समझता है, और इससे डरता है। साथ ही, व्यक्ति ईश्वरीय दया पर नजर रखता है और ईश्वरीय स्वीकृति का उम्मीदवार बना रहता है। इसका दृष्टांत एक किसान की तरह है जो भूमि पर खेती करता है, बीज डालता है और ईश्वरीय दया से बारिश की प्रतीक्षा करता है। आशा और भय का दूसरा व्यक्ति बचकाना होता है, जिसमें कोई व्यक्ति कोई काम (धर्मकर्म) नहीं करता है और फिर कटाई के लिए खेती के रूप में ईश्वरीय दया की आशा करता है। यह वास्तव में अहंकार और धोखा है। दूसरे प्रकार के बचकाने भय और आशा का एक और दृष्टांत यह है कि परमेश्वर की महिमा के भय के कारण, वह अपने कर्मों को बहुत छोटा समझता है और कार्य करना बंद कर देता है और कहता है कि परमेश्वर दयालु है और जो काम नहीं करता है उस पर भी अनुग्रह करता है। यह डर नहीं है, बल्कि यह कायरता है। यह वह भय और आशा है जिसे उन लोगों द्वारा अपनाया जाता है जो अच्छे परिणामों के लिए काम नहीं करते हैं, और यह केवल एक बचकाना व्यवहार है।

*[*बाहरी*]* रूप एक छाया है और आंतरिक अर्थ है *[*प्रकाश देने वाले सूर्य की तरह*]*

बिना छाया वाला प्रकाश केवल सुनसान जगह में ही पाया जाता है।

क्योंकि वहां ईंट पर ईंट नहीं है

चंद्रमा के लिए, कोई बुरी छाया नहीं बची थी।

ईंट भले ही सोने से बनी हो, फिर भी इसे हटाने की जरूरत है

जब ईंट के स्थान पर, *[*आध्यात्मिक*]* रहस्योद्घाटन और रोशनी होती है[76]।

छाया को हटाने के लिए माउंट *[*सिनाई*]* टुकड़ों में विभाजित हो गया

इस दिव्य प्रकाश के लिए टुकड़ों में विभाजित करना एक छोटी सी बात है।

जब परमेश्वर का प्रकाश पर्वत के बाहरी भाग पर गिरा *[*सीनै*]*

यह अलग हो गया ताकि भगवान का प्रकाश भी इसके अंदर पहुंच सके।

जब कोई भूख से पीड़ित होता है, तो रोटी पकड़ लेता है

लालच के कारण मुंह और आंखें चौड़ी कर देती हैं[77]।

यह इसके *(*माउंट सिनाई पर्वत*)* के लिए सैकड़ों-हजारों टुकड़ों में विभाजित होने के लिए उपयुक्त है

हे पृथ्वी*!* स्वर्ग के बीच से दूर चले जाओ।

ताकि स्वर्गीय रोशनी छाया को जला दे

हे दिन के दुश्मन*!* रात आपकी छाया के कारण है।

यह धरती बच्चों की परवरिश के लिए है

इसमें वयस्कों के लिए एक संकुचित जगह है।

---

[76] सभी कार्यों का सारांश आध्यात्मिक पथ (तारिका) में संघर्ष है। जब ईश्वर किसी को अपनी ओर खींचता है (*जदब* या *जज्ब),* तो वह ईश्वर (फना) में विनाश प्राप्त करता *है* और उसके बाद वह ईश्वर (बाका) में निर्वाह प्राप्त करता *है*। शरीर का बाहरी रूप या क्रियाएं छाया की तरह होती हैं और उन कार्यों के आध्यात्मिक अर्थ सूर्य की तरह रोशन होते हैं। व्यक्ति को छाया के बिना रोशनी तब प्राप्त होती है जब वह ईश्वर (फना) में विनाश प्राप्त करता *है,* अर्थात निम्न आधार स्व (नफ्स) की इच्छाओं और गुणों से छुटकारा पाता है। जब मानवीय प्रवृत्तियों, कमजोरियों और निचले स्व की ईंटों की छाया को हटा दिया जाता है, तो आध्यात्मिक रोशनी अब छाया से अवरुद्ध नहीं होती है। जब ईंटों को हटाने से बेरोकटोक रोशनी होती है, तो इन ईंटों को हटाने के लायक है।

[77] जब भूख से पीड़ित व्यक्ति को एक रोटी मिलती है, तो वह मुंह बड़ा खोलता है और बड़े निवाले में जल्दी-जल्दी खाता है। मिस्र में सिनाई पर्वत के साथ भी ऐसा ही हुआ जब पैगंबर मूसा (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ईश्वर के साथ बातचीत करने के लिए वहां गए और भगवान से एक दिव्य झलक दिखाने के लिए कहा, भगवान ने जवाब दिया "आप मुझे नहीं देख पाएंगे"। तब परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर अपनी दिव्य रोशनी से सिर्फ एक प्रकाश दिखाया, वह टुकड़ों में विभाजित हो गया और मूसा बेहोश हो गया।

परमेश्वर ने आदेश दिया है कि पृथ्वी बच्चों को जन्म देगी

इसमें उन्होंने बच्चों के लिए दूध उड़ाया है[78]।

पालने की अधिक संख्या के कारण, घर संकुचित हो गया है

हे परमेश्वर*!* कृपया इन बच्चों को जल्दी से बड़ा करें।

हे पालने से सावधान रहें*!* जगह को संकरा और संकुचित न करें

ताकि बड़े वयस्क स्वतंत्र रूप से घूम सकें।

बच्चों की परवरिश के लिए घर को संकुचित न करें

ताकि वयस्कों को विस्तार मिल सके।

दूसरे राजकुमार में आत्म-निर्भर होने की भावना और आध्यात्मिक अनावरण के कारण वह राजा के कारण अपने दिल में प्राप्त कर रहा था, इस संकेत के परिणामस्वरूप, वह राजा के खिलाफ विद्रोह करने की योजना बना रहा था और उसके प्रति कृतघ्न होने के कारण, राजा को दिल के रहस्योद्घाटन के माध्यम से इसके बारे में पता चला और इसने उसके दिल को पीड़ा दी और उसकी आत्मा को इस तरह से घायल कर दिया कि राजकुमार इसके बारे में पता भी नहीं

जब बिना खरीद-बिक्री के, स्थायी हो गया

राजा के आंतरिक अस्तित्व से राजकुमार की आत्मा के लिए मजदूरी।

वह राजा की आत्मा से रोशनी से आध्यात्मिक पोषण प्राप्त करता था

उसकी आत्मा का चंद्रमा, जैसे चंद्रमा सूर्य से अपना प्रकाश प्राप्त कर रहा है।

अनुकरणीय राजा से, आध्यात्मिक मजदूरी

हर समय उसकी आत्मा तक पहुंचता था।

वह नहीं जो आम लोग खाते हैं

बल्कि वह पोषण जो स्वर्गदूत खाते हैं।

राजकुमार ने *[*गलती से*]* अपने भीतर स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता *[*राजा से*]* देखी

---

[78] मानव शरीर पृथ्वी ग्रह की तरह है जो छाया का कारण है और सूर्य के प्रकाश के लिए एक बाधा बन जाता है और इसलिए रात हो जाती है। शरीर और भौतिक क्षेत्र सांसारिकता (भौतिकवाद) के लोगों के लिए एक पालना है जो बच्चों की तरह हैं और पालना बड़े वयस्कों के लिए बहुत छोटा है। इसलिए, आध्यात्मिक रूप से सिद्ध व्यक्ति अपने सांसारिक जीवन में संकुचन और संकीर्णता पाते हैं। इन बच्चों के लिए (जो आध्यात्मिक रूप से विकसित नहीं हुए हैं और भौतिक और शारीरिक अस्तित्व के प्रति आसक्त हैं), पृथ्वी भौतिक लाभ प्रदान करती है जिसे यहां "दूध" कहा गया है।

इस स्वतंत्रता ने *[*राजा से*]* विद्रोह को जन्म दिया।

वह*:* क्या मैं राजा और राजकुमार नहीं हूँ*?*

मैंने इस राजा को अपनी जान की बागडोर क्यों दी*?*[79]

जब मेरा चमकीला चाँद क्षितिज पर दिखाई दिया है

तो फिर मैं धूल के अधीन क्यों हो जाऊँ*?*

मेरी धारा में पानी है और यह गर्व करने का समय है *[*मैं कौन हूं*]*

मैं अब स्वतंत्र हूं, मैं किसी और के अभिमान को क्यों बर्दाश्त करूं*?*

जब सिरदर्द नहीं बना है तो मुझे अपने सिर के चारों ओर एक बैंड क्यों लगाना चाहिए*?*

गीली आंखों और पीले चेहरे का समय नहीं बचा है।

जब अब मेरे पास चाँद की तरह मीठे होंठ और गाल हैं

मुझे *[*अपनी खुद की*]* एक और दुकान खोलनी चाहिए[80]।

जब उसका निचला स्व, अहंकार से फूलने लगा

उसने बहुत सारे बेकार के उच्चारण करना शुरू कर दिया[81]।

राजा का महासागर, जो सभी जल *(*नदियों और नालों*)* का मिलन स्थल है

यह क्यों नहीं पता चलेगा कि प्रवाह में और धारा में क्या है*?*

उसके विचार से राजा के मन में ठेस पहुंची

---

[79] दूसरे राजकुमार को राजा (सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक) से आध्यात्मिक लाभ और आशीर्वाद प्राप्त होता था, जैसे चंद्रमा सूर्य से अपना प्रकाश प्राप्त करता है। उनकी आत्मा को हर दिन राजा से एक मापी हुई मात्रा में आध्यात्मिक पोषण मिलता था। यह वह पोषण नहीं था जो आम लोगों को मिलता है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक पोषण था जो स्वर्गदूतों को मिलता है। राजा से प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक लाभों और आशीर्वादों के कारण, राजकुमार ने विश्वास करना और सोचना शुरू कर दिया कि उसने आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त कर ली है और अब उसे राजा की सेवा करने और उसकी आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं है। इस गलत विचार और आक्षेप का परिणाम [शैतान और निचले स्व से] यह हुआ कि राजा के माध्यम से प्राप्त होने वाले उसके सभी आध्यात्मिक लाभ उससे छीन लिए गए थे। उसमें जो विद्रोह भड़काया गया था, वह इस संकेत के कारण था कि वह राजा और राजकुमार है, अर्थात, उसने आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त कर ली है और अब उसे राजा की आवश्यकता नहीं है और उसे अपनी बागडोर राजा को नहीं सौंपनी चाहिए।

[80] जब मैं पूर्ण हो गया हूँ, तो मैं किसी और की बात क्यों सुनूँ। जब मुझे आत्मा के आंतरिक रोग नहीं हैं, तो मुझे आध्यात्मिक मार्गदर्शक की संगति क्यों रखनी चाहिए? अब मुझे खुद आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनना चाहिए।

[81] जब उसकी आध्यात्मिक अवस्था के इस चरण में उसमें आत्म-धार्मिकता और अहंकार का जन्म हुआ, तो उसने बहुत सी गलत बातें बोलना शुरू कर दिया जो उसकी आध्यात्मिक स्थिति के लिए हानिकारक थीं, इस हद तक कि प्रतिगमन और गिरावट का कारण बन गई। आंतरिक आध्यात्मिक परिवर्तन और सुधार प्राप्त करने के बाद, ऐसे अहंकारी विचारों के कारण प्रतिगमन का खतरा अभी भी बना रहता है।

अपने आध्यात्मिक वरदान और बंदोबस्ती के लिए कृतघ्नता के कारण।

राजा ने अपने आप से कहा: हे नीच और बदतमीजी!

हैरानी की बात यह है कि यह मेरी उदारता की सजा है!

इस अच्छे खजाने से मैंने तुम्हारे लिए क्या किया?

और अपनी बुरी आदतों के कारण तुमने मेरे साथ बदले में क्या किया?

मैं तुम्हारी स्वर्ग की सीढ़ी बन गया

तुम मेरे साथ लड़ने के लिए धनुष-तीर बन गए!

राजा में धूप का दर्द प्रकट हुआ

राजा के दर्द का प्रतिबिंब उसके आंतरिक अस्तित्व में आ गया।

धन का पक्षी उसके क्रोध के कारण ऐंठ गया

इसने साइडलाइनिंग की योजना बनाने वाले के पर्दे को चकनाचूर कर दिया[82]।

जब उस युवक ने अपने भीतर के अस्तित्व को देखा

उसने अपने काले कर्मों का प्रभाव देखा।

दयालुता और आशीर्वाद का वह वेतन खो गया

उनका सुख धाम दुःख से भर गया।

जिसने भी प्रिय के मार्ग में अपनी ओर देखा

कर्नेल को छोड़ दिया और केवल बाहरी आवरण देखा।

भगवान मेरे दुश्मन को अपने भीतर झांकने से भी न लाए

क्योंकि ऐसे से उथल-पुथल और विनाश के अलावा कुछ भी उम्मीद नहीं की जाती है[83]।

दुनिया में शराब की मनाही है

क्योंकि आप तुरंत ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जो अपने भीतर देखता है।

आपकी कल्पना में, आपके अलावा कोई भी आपके पास बेहतर नहीं आता है

---

[82] राजा को चोट लगी क्योंकि राजा द्वारा उस पर अपनी उदारता प्रदान करने के बाद भी राजकुमार विद्रोही हो रहा था। "धन का पक्षी", यानी, राजा को दरकिनार करने की उसकी योजना के कारण राजकुमार के दिल की आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति बिखर गई थी।

[83] रूमी का कहना है कि जो आध्यात्मिक पूर्णता और ज्ञान के मार्ग में अहंकारी है, वह आध्यात्मिक पथ की वास्तविकता से रहित हो जाता है। यह एक ऐसा नुकसान और विनाश है जो मैं अपने दुश्मन को भी नहीं चाहता।

यह सब आपके भीतर निम्न स्व के कारण पैदा होता है[84]।

हे तुम*!* अपने आप को अपने निचले स्व से अलग करें *(*नफ्स*)*

जब तक आप इसके द्वारा कैद रहेंगे।

हे प्रिय*!* अपनी आत्मा को प्रिय को सौंप दो

ताकि आप उस मित्र को देख सकें जो आपके दिल को परेशान रखता है।

अपनी आत्मा को प्रिय को सौंप दो और मुक्त हो जाओ

इसके लिए सही काम करें और खुशी प्राप्त करें[85]।

निचले स्व को अपने ऊपर हावी न होने दें

इसे इसके दूध से छुड़ाएं।

हर चीज का नशीला प्रभाव होता है

चाहे वह दूध हो, शराब हो या शहद।

हे मनुष्य*!* जानिए गेहूं का नशा

इसने आदम को अनजान बना दिया *[*जब उसे दिव्य रूप से जागरूक किया गया*]*।[86]

राजकुमार आदम की तरह स्वर्ग से अलग हो गया

जो बैल के साथ खेती के लिए खेतों की जुताई करता था।

वह *[*अपनी आंतरिक स्थिति को हुए नुकसान पर*]* आँसू बहाता था और कहता था*:* हे शक्तिशाली डाकू*!*

तुमने शेर को बैल की पूंछ के कैदी में बदल दिया है।

हे दुष्ट और ठंडे स्व*!* तुमने किया

---

[84] शराब पर रोक लगा दी गई है क्योंकि कुरान में कहा गया है: "शैतान शराब और जुए से तुम्हारे बीच अराजकता और कलह पैदा करना चाहता है", दुश्मनी का कारण आमतौर पर अहंकार, आत्म-धार्मिकता और अपने भीतर देखना और खुद को किसी और से बेहतर समझना होता है। शराब उस हानिकारक आंतरिक अवस्था में योगदान करती है। राजकुमार के साथ भी ऐसा ही हुआ।

[85] अपना सब कुछ प्रिय (ईश्वर) को सौंप दो, तब तुम्हें दर्शन होगा [आत्मा की आंख से]। निचले स्व के वश में न आएं और उसे उसकी वासनाओं से वंचित न करें।

[86] प्रशंसा में खुद को देखने का नशा, किसी को नुकसान पहुंचाता है। जो भी चीज इसका कारण बनती है, चाहे वह अनुमेय हो या निषिद्ध, उससे बचना चाहिए। हर चीज का एक मादक प्रभाव हो सकता है जिसका आकलन किसी की आध्यात्मिक यात्रा के प्रकाश में किया जाना चाहिए । देखें कि कैसे गेहूं खाना [जो कि आदम के स्वर्ग में होने पर परमेश्वर द्वारा मना किया गया था], आदम को जागरूक किए जाने के बाद अनजान बना दिया और इसके द्वारा इस हद तक धोखा दिया गया कि उसने स्वर्ग में अपना निवास खो दिया जहां उसके पास सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं थीं और उसे पृथ्वी पर धकेल दिया गया जहां वह जबरदस्त कठिनाइयों और संघर्षों से गुजरा।

दयालु राजा के साथ बुरा व्यवहार।

गेहूँ के लोभ में, तुमने जाल को चुना है *[*जो जाल को फँसाता है*]*

तुम्हारे लिए गेहूँ का हर दाना बिच्छू बन गया है।

आपके सिर में अहंकार की हवा भर गई

अब अपने पैरों में पचास टन की चेन देखें।

राजकुमार इस तरह खुद पर रो रहा था

मैं राजा का विरोधी क्यों बन गया*?*

उसे *[*अज्ञानता और अहंकार से*]* होश आया और पश्चाताप किया

प्रिय से अलग होने का दर्द

दया करो*!* लाइलाज है।

हे परमेश्वर*!* मनुष्य की स्थिति में सुधार न हो

जब धैर्य की स्थिति समाप्त हो जाती है, तो अहंकार और प्रमुखता का पता चलता है।

मनुष्य में नुकसान पहुंचाने की शक्ति न हो*!*

क्योंकि उस समय, कोई विश्वास *[*खुद को संयमित करने के लिए*]* या आत्म-सुधार के मार्ग की परवाह नहीं करेगा *[*जिस पर कोई चल रहा हो*]*।

मुसीबतों से घिरा इंसान बेहतर है

क्योंकि निचला स्व *[*दिव्य*]* आशीषों को अस्वीकार करने वाला है और गुमराह है *[*जीवन में सही मार्ग से क्योंकि यह नुकसान और बुराई की ओर झुका हुआ है*]*।

परीक्षण और क्लेश में एक इंसान बेहतर है

क्योंकि ऐसा व्यक्ति अपमानित, विनम्र और असहाय होता है *[*इस प्रकार उत्पीड़ित होने पर, व्यक्ति स्वयं उत्पीड़क नहीं बन जाता है*]*।

उस राजकुमार की कहानी पर लौटते हुए, जिसने अपने विद्रोह के कारण खुद को बहुत नुकसान पहुंचाया और वह राजा के दिल से घायल हो गया और आध्यात्मिक पथ को पूरा किए बिना दुनिया छोड़ दिया

कहानी को छोटा करने के लिए, अंधे निचले स्व की राय

एक साल बाद राजकुमार को उसकी कब्र पर ले गया।

जब राजा आध्यात्मिक अवशोषण *(सुक्र) से* स्वस्थ होने के लिए लौटा *(*साहू*)*

उसके मंगल जैसे क्रोध ने पहले ही खून बहा दिया था[87]।

जब इस अद्वितीय ने अपने तीरों के संग्रह को देखा

उसने पाया कि एक तीर गायब है।

उसने पूछा कि वह तीर कहां है और भगवान से पूछा

कहा गया था जो मारता है वह तुम्हारा तीर है।

उदार और उदार राजा ने उसे पहले ही माफ कर दिया था

लेकिन तीर पहले ही लग चुका था और खून बहा चुका था।

वह मर गया और राजा ने उसके निधन पर शोक व्यक्त किया

वह सब कुछ है; वह जीवन लेता है, वह *[*रक्षक*]* मित्र भी है[88]।

यदि दोनों मौजूद नहीं हैं, तो वह सब कुछ नहीं है

वह अपनी रचनाओं का पेरिशर है और वह उनके लिए शोक मनाने वाला भी है[89]।

वह पीला चेहरा वाला शहीद *(*राजकुमार*)* भगवान का शुक्रिया अदा करता था

कि उसने *(*राजा*)* शरीर पर प्रहार किया, आत्मा पर नहीं[90]।

अंत में बाहरी शरीर *[*अपने नियत समय पर*]* दूर जाना तय है

आत्मा जीवित रहेगी और कभी न खत्म होने वाली अनंत काल में हमेशा के लिए खुश रहेगी।

---

[87] जब राजा ज्ञान के सागर में आध्यात्मिक अवशोषण की आंतरिक अवस्था से लौटा, तो उसे एहसास हुआ कि राजकुमार उसके क्रोध के कारण मर गया है। मंगल अपनी लाली के कारण क्रोध के लिए एक दृष्टांत के रूप में भी उपयोग किया जाता है। एक भविष्यवक्ता और ज्ञानवादी का क्रोध उनकी ओर से ईश्वरीय प्रतिशोध का कारण बन जाता है। जब राजा अपनी आंतरिक अवस्था से उबर गया, तो उसका क्रोध शांत हो गया। वह परमेश्वर के पास लौट आया और उससे विनती की कि वह अपने क्रोध को कम करने का कारण बताये। उन्हें दिव्य रूप से सूचित किया गया था कि इसका कारण यह है कि प्रतिशोध उनके क्रोध के कारण हुआ है।

[88] राजकुमार की मृत्यु हो गई और राजा रोने लगा क्योंकि भले ही वह उसकी मृत्यु का कारण बन गया, फिर भी वह उसका दोस्त, उसका सलाहकार, उसका संरक्षक था और उसने राजकुमार में आंतरिक परिवर्तन लाने में मदद करने के लिए अपनी आंतरिक आध्यात्मिकता का उपयोग किया।

[89] परमेश् वर की पूर्णता तब तक मौजूद नहीं हो सकती है जब उसके पास जीवन लेने के और एक रक्षक मित्र और सहायक होने के दोनों गुण न हों।

[90] अपने बाद के जीवन में, राजकुमार ने भगवान को धन्यवाद दिया कि उनकी गलती की सजा केवल उनके शरीर को दी गई थी, उनकी आत्मा और विश्वास किसी भी प्रतिशोध से सुरक्षित रहे। शरीर केवल अस्थायी है जो एक दिन नष्ट होना तय है, अगर आत्मा मर गई होती या नुकसान पहुंचाती थी, तो यह पूरी तरह से विनाश होता। शरीर पर क्रोध आ गया था, फिर उसकी आत्मा आत्माओं की आत्मा में लौट आई।

यदि उस क्रोध पर कार्रवाई की गई थी, तो उस पर केवल त्वचा पर कार्रवाई की गई थी

मित्र, बिना किसी पीड़ा और पीड़ा के, मित्र के पास लौट आया।

भले ही राजकुमार ने राजा को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए अपना साधन बना लिया

बुरी नजर ने उसका रास्ता बंद कर दिया *[*ईश्वर के लिए आध्यात्मिक स्वर्गारोहण के लिए*]*।

और तीसरा राजकुमार अपने दो बड़े भाइयों की तुलना में धीमा था

उन्होंने *[*सफलतापूर्वक*]* बाहरी रूप और आंतरिक अर्थ *[*आध्यात्मिक पथ के*]* दोनों को प्राप्त किया।

राजकुमारी, प्रभुत्व, शासन, उसने उन सभी को ले लिया

यह उपयुक्त है कि आप इससे आश्चर्यचकित और हैरान रहें[91]।

मैं कहानी के लंबे होने से परेशान हूं

मैं गहरे आध्यात्मिक अर्थों के सागर में डूबा हुआ हूं, लेकिन आप जल्दबाजी में हैं[92]।

और उस समय *[*निचले स्व के*]*, विनम्रता और ईमानदार पालन के माध्यम से *[*सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक के लिए*]*,

तीसरे राजकुमार ने अपना उद्देश्य उस दयालु व्यक्ति से पाया जो हमारे कार्यों को पूरा करता है और हमें अपने उद्देश्यों तक पहुंचाता[93] है।

रूमी का *मथनवी* का अंत - गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे[94]

[91] तीन राजकुमारों में से सबसे छोटे ने [आध्यात्मिक पथ में उस मार्ग के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश नहीं की, जो है] सबसे बड़े भाई की तरह, प्रिय से मिलना, न ही उसने मंझले भाई की तरह पूर्णता का दावा किया।

[92] रूमी कह रहा है: मैं इस कहानी के लंबे होने से परेशान हूं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस कहानी का हर हिस्सा मुझे उस हिस्से के गहरे आंतरिक अर्थों और आध्यात्मिक रहस्यों की ओर ले जाता है, और मैं खुद को उसमें डूबा हुआ पाता हूं।

[93] धैर्यपूर्वक दृढ़ता, आध्यात्मिक प्रयासों, अपमान को सहन करने में सहनशीलता, पूर्ण विनम्रता, सच्ची ईमानदारी, उद्देश्य की एकल-दिमाग, अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने से कोई फर्क नहीं पड़ता कि स्थिति क्या है, और अन्य महान गुणों जो आध्यात्मिक पथ के छात्रों और यात्रियों के लिए आवश्यक हैं, ने उन्हें अपने अंतिम उद्देश्य को प्राप्त करने का कारण बना, जहां उनके अन्य दो भाई अपने आध्यात्मिक संघर्षों में अपनी कमियों और गलतियों के कारण विफल रहे। अंत में, उन्हें उनके द्वारा किए गए प्रयासों के लिए दैवीय रूप से स्वीकार किया गया, हालांकि कमियां थीं क्योंकि उन्होंने लड़खड़ाने से पहले अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया था। सबसे छोटे राजकुमार ने ईश्वरीय निकटता, अंतरंगता और स्वीकृति का धन प्राप्त किया। यह सम्मान केवल ईश्वरीय उदारता और उदारता से ही संभव है।

[94] रूमी ने तीसरे राजकुमार की कहानी के बारे में विस्तार से बताए बिना इन अंतिम छंदों के साथ अपनी महान कृति को अचानक समाप्त कर दिया और उन्होंने आध्यात्मिक पथ के फल को कैसे महसूस किया। उन्होंने भविष्यवाणी की कि उनके पीछे एक जीवित आत्मा आएगी जो इस कहानी को तीन आलसी भाइयों के बारे में एक और कहानी के साथ पूरा करेगी, जिनके पिता ने एक न्यायाधीश की देखभाल में एक विरासत छोड़ दी थी ताकि यह तय किया जा सके कि सबसे आलसी कौन है और उसे विरासत

मैं आध्यात्मिक डिग्री के लिए स्वर्गारोहण के लिए धैर्य को अपनी सीढ़ी बनाता हूं
ताकि मैं अपने प्रयास में सफलता की ऊंचाई तक पहुंच सकूं।
हर धैर्य का अंतिम परिणाम सफलता है
हर कड़वाहट के बाद मिठास मिलती है।
जब उसकी उपस्थिति के दौरान मेरे दिल में कुछ उठता है
कोई भी छंद *[कविता का]* या कुछ भी जो सांसारिक मामलों से संबंधित नहीं है।
मैं उन्हें अपनी ओर भेजे गए लोगों को मानता हूं
उनके दिल से जो एक चमकदार तारे की तरह है जो यमन में देखा जाता है।
मैं उनकी भव्यता और पवित्रता के सामने अपना सिर *[विनम्रता में]* झुकता हूं
मैं अपने दिल से *[अंतरतम के अंतरंग से]* उसका आभारी हो जाता हूं।
मेरे दिल में यह बात *[केवल]* उसी की ओर से है
क्योंकि एक दिल से दूसरे दिल में एक छेद *(रास्ता)* होता है।
अब जब मेरे दिल की खिड़की से आध्यात्मिक प्रेरणा का सूरज अस्त हो गया है
यह *(मथनवी)* समाप्त हो गया है और भगवान सबसे अच्छा जानता है[95]।

रूमी के बेटे द ग्रोस्टिक, सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक मौलाना बहा उल-मिल्लत के मथनवी का निष्कर्ष - गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे, अपने पिता के साथ चर्चा करने और उन्होंने जो कहा उसकी रिपोर्ट करने के बाद[96]

सौंप दें।

[95] मैं परमात्मा पर ध्यान केंद्रित करते हुए आध्यात्मिक चिंतन की स्थिति में बैठूंगा। मेरे मन में जो भी विचार आते हैं, यदि वे सांसारिक विचार नहीं हैं, तो मैं मानूंगा कि वे मेरे हृदय में दिव्य रूप से भेजे गए हैं। जब उनके चेतन का प्रतिबिंब मेरे हृदय पर पड़ता है, तो मैं उनकी भव्यता और पवित्रता के प्रति आश्वस्त हो जाता हूं और उनके प्रति आभारी हो जाता हूं और विचार करता हूं कि हृदय में ये विचार उनसे आए हैं क्योंकि एक हृदय से दूसरे हृदय तक जाने का मार्ग है [यदि वे सच्चे प्रेम की स्थिति में जुड़े हुए हैं]। इस बिंदु पर, इस "*मथनवी*" (गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे) के लिए विषयों की प्रेरणा का सूर्य जो मेरे दिल में अपनी खिड़की से दिव्य वास्तविकता की ओर आ रहा था, अब अस्त हो गया है और इन विषयों का आना बंद हो गया है। इसके परिणामस्वरूप, मैं इस पुस्तक को यहीं समाप्त करता हूं और परमेश्वर हर चीज के पीछे अपनी बुद्धि जानता है। रूमी ने इस उत्कृष्ट कृति के स्रोत के रूप में ईश्वरीय प्रेरणा को उजागर किया है जो आध्यात्मिक पथ पर चलने और इसके परिणामस्वरूप समय के अंत तक संपूर्ण मानव सभ्यता के ईश्वरीय प्रेम की प्राप्ति के विषय पर सबसे अच्छी पुस्तक है। इसे आने वाले सभी समय के लिए पूरी मानवता के लिए कुरान के अर्थ और संदेश के सार का सबसे अच्छा स्पष्टीकरण भी माना जाता है।

[96] रूमी के बेटे, मौलाना बहा उल-मिल्लत (असली नाम बहा अल-दीन वलाद है) ने "*मथनवी" के इस निष्कर्ष को* इस बात पर

जब मेरे पिता *(*रूमी*)*, इस मथनवी के साथ लंबे समय तक

चुप रहकर मैंने उससे कहा*:* हे जीवित आत्मा*!*

आप किस कारण से बात नहीं कर रहे हैं*?*

तुमने परमेश्वर से आने वाले ज्ञान का द्वार किसी के हृदय में क्यों बंद कर दिया है*?*

राजकुमारों की कहानी खत्म नहीं हुई है

तीसरे राजकुमार का मोती धागे से बंधे बिना रह गया।

रूमी ने कहा*:* उसके बाद, मेरी बोलने की क्षमता ऊंट की तरह सो गई है

कयामत के दिन तक, किसी के साथ कोई बातचीत नहीं होगी *[*"*मथनवी*" और तीन राजकुमारों की कहानी पर*]*।

इसकी व्याख्या बनी हुई है, लेकिन *[*मेरे अंदर*]*

यह बंद हो गया है और यह बाहर नहीं आता है।

उस जगह पर मेरी बोलने वाली फैकल्टी ऊंट की तरह सो गई है

वह संकाय कहता है*:* मैंने बोलने से अपना मुंह बंद कर लिया है।

मेरा समय आ गया है कि मैं इस दुनिया से प्रस्थान कर जाऊं और *[*अनन्त जीवन की*]* धारा में कूद जाऊं

उसके अस्तित्व को छोड़कर, सब कुछ नष्ट हो रहा है और समाप्त हो रहा है।

इस *[*कहानी*]* का शेष भाग आएगा, बिना जीभ से बोले

एक ऐसे व्यक्ति के दिल में जिसके पास एक जीवित आत्मा है[97]।

मामला खत्म हो गया है और मेरा जीवन भी खत्म हो गया है

शरीर से मुक्त होने की खुशखबरी *(*मेरे प्रिय से*)* आई है।

मैं आत्माओं के क्षेत्र की विशालता तक पहुंचूंगा

विस्तार से बताने के लिए लिखा था कि क्यों उनके पिता ने तीसरे राजकुमार की कहानी को अधूरा छोड़ते हुए इस महान पुस्तक को अचानक समाप्त कर दिया। रूमी ने उससे कहा कि उसके पीछे एक जीवित आत्मा आएगी जो कहानी और किताब को पूरा करेगी।

[97] यह वह जगह है जहां रूमी अपने बेटे को भविष्यवाणी कर रहा है कि कोई उसके पीछे आएगा जो कहानी को पूरा करेगा और इस तरह किताब को पूरा करेगा। यह किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाएगा जिसके पास एक जीवित आत्मा है, अर्थात, दिव्य उपस्थिति और ज्ञान के साथ जीवित आत्मा। इससे पहले, रूमी ने भी उल्लेखनीय रूप से भविष्यवाणी की थी कि वह इस अल्पकालिक सांसारिक प्रवास से प्रस्थान करने वाला था और एक शाश्वत अस्तित्व में अपने प्रिय से मिलने की उत्सुकता व्यक्त की।

मैं नमी की इस बूंद को पार करके अथाह सागर तक पहुंचूंगा[98]।

क्योंकि इस नमी के कारण यह दुनिया जीवंत और सुखद दिखती है

यह नमी समुद्र से आई है, इसीलिए, यह अच्छा और खुशहाल है।

जब आत्मा मिट्टी और गीलेपन के बीच जीवित होती है

सोचो, समुद्र की दुनिया में कैसा होगा?[99]

महासागर एक शहर की तरह है और नमी एक दरवाजे की तरह है *[उस शहर के लिए]*

नमी को एक बूंद के रूप में मानें और समुद्र अथाह और असीमित है[100]।

इस नमी के माध्यम से जो जीवन की तरह है, अंदर आओ

प्रिय के सागर में, ताकि आप निर्वाह प्राप्त कर सकें *[बिना किसी अंत के]*।[101]

चूंकि *[सांसारिक अस्तित्व के]* इस तरफ, जीवन के सागर से नमी है

आप अपनी आत्मा के माध्यम से उस महानता की तलाश करते हैं।

धूल के कण का हर हिस्सा किसी को कब्र तक ले जाता है

आत्माओं के सागर से जो लहर है, वह माशूक के पास ले जाती है[102]।

प्रिय के साथ अपने दिल और आत्मा से मुलाकात की तलाश करें

जीभ और होंठों के बिना परमेश्वर के नाम को स्मरण करो *[अपने हृदय के माध्यम से]*।

तो, आप इस कारावास *(*शरीर के*)* और इस क्षणभंगुर दुनिया से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं

तो सदा आत्माओं के लोक में रह सकते हो।

तुम्हारे जीवन के बीज, बंजर भूमि में बोए गए

आपके द्वारा ताकि अंत में यह आपके अंत के बारे में लाए[103]।

---

[98] अब मैं आत्माओं के दायरे (आलम *अल-अरवाह) तक पहुंचूंगा*। इस महासागर की तुलना में, हम जिस भौतिक क्षेत्र ('*आलम नासूट*) में हैं, वह नमी की एक बूंद है और इसमें आत्माओं के दायरे का बहुत कम प्रभाव है।

[99] यह आत्मा मिट्टी और धूल और भौतिक क्षेत्र की थोड़ी मात्रा में नमी के बीच जीवित है। कोई अनुमान लगा सकता है कि आत्माओं के दायरे में इसका जीवन कितना विशाल होगा।

[100] भौतिक क्षेत्र (यह दुनिया जिसमें हम हैं) एक दरवाजे की तरह है जो आत्माओं के दायरे और स्वर्गदूत क्षेत्र ('*आलम अल-मलकूट)* के शहरों की ओर जाता है, पहला एक बूंद की तरह है और बाद के दो महासागरों की तरह हैं।

[101] आत्मा का अस्तित्व और निर्वाह, इस बात पर निर्भर करता है कि वह उस प्रिय के सागर में विलीन हो जाती है जहां से वह आई है।

[102] धूल से बना मानव शरीर कब्र में समाप्त हो जाता है। आत्मा को प्रिय के पास ले जाती है।

[103] केवल शरीर की देखभाल करने में अपना जीवन बर्बाद न करें, अन्यथा यह आपके विनाश को लेकर आएगा।

यह अनमोल, सुंदर जीवन

आप इसे *[अच्छे]* मुआवजे के बिना क्यों बर्बाद करते हैं?[104]

हे मेहनती व्यक्ति! क्या तुम नुकसान नहीं सहेंगे?

जब आप एक बगीचा छोड़ देते हैं और एक कांटेदार भूमि लेते हैं?

जब आप अपना सीमित जीवन देते हैं

परमेश्वर के लिए प्रयास करने के मार्ग में, यह असीमित हो जाएगा।

असंख्य, अपरिमित, बेशुमार बन जाएगा

दस दिन का लंबा जीवन जो दिव्य दासता में व्यतीत होता है।

चौकस रहना! इस बाजार में अपना व्यापार करें

एक कांटे के बदले में सैकड़ों हजारों फूल ले लो।

तुम जो एक बीज बोओगे, उसके लिए तुम्हें मिलेगा

सैकड़ों-हजारों अनाज, उदार के आशीर्वाद से।

गिनती तभी होती है जहां अंत होता है

जिस तरफ भगवान है, वह अनगिनत है।

हे अलग हिस्सा! अपने पूरे की ओर जाओ *[जहां से तुम आए थे]*

अहंकार को पार करके भगवान की शरण में दौड़ें।

इंसान के कार्यों और शब्दों से

यह स्पष्ट हो जाता है कि आत्मा कैसी है।

आत्मा किस आध्यात्मिक स्तर पर है, वह क्या है?

एक विश्वासी, एक अविश्वासी, या एक ज्ञानवादी?

समुद्र की मदद के बिना पानी के बर्तन में पानी न रखें

ताकि मीठा पानी अरुचिकर न हो जाए[105]।

---

104 जीवन का वह हिस्सा जो किसी की शाश्वत जरूरतों की देखभाल किए बिना सिर्फ सांसारिक कामों में बिताया जाता है, वह बर्बाद हो गया है। यदि संसार का सीमित जीवन परमेश्वर की खोज में व्यतीत होता है, तो यह व्यक्ति को अनन्त अनन्त जीवन की ओर ले जाता है।

105 आत्मा के जल को आत्माओं की आत्मा के समुद्र से जोड़ना होगा, नहीं तो स्थिर जल अप्रिय हो जाता है।

एक शांत पानी, बिना किसी मदद के, खराब हो जाता है

इसका अच्छा रंग, गंध और स्वाद दूर हो जाता है।

पैगम्बर मुहम्मद *(*सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम*)* ने कहा है*:* एक व्यक्ति जिसके दो दिन समान होते हैं

नुकसान में है और संदेह में है।

अपनी मूर्खता में, मैं बिना किसी विश्वास के जी रहा हूं

हवा से भरे एक खाली बैग की तरह[106]।

इसका दुख हर पल बढ़ता जा रहा है

हर पल, यह बदतर और कमजोर होता जा रहा है।

जिसने ईश्वरीय उपस्थिति से एक को अस्वीकार कर दिया, नरक की ओर बढ़ता है

समुद्र के मीठे पानी के बिना, यह आग और दंड की ओर बढ़ता है।

इससे पहले कि आपका मामला उस बिंदु तक पहुंच जाए *[*वापस नहीं लौटने का*]*

और लापरवाही की हर सांस आपको पीछे की ओर चलने पर मजबूर कर देती है।

पैगंबर इब्राहीम की तरह, अपने मूल में लौटें

सितारों और नीले आकाश के ऊपर से गुजरें।

साहस का कदम सूर्य और चंद्रमा पर रखें

अपना सिर उस दरबार पर रखो, *[*ईश्वरीय इच्छा के प्रति समर्पण की स्थिति में*]*।

अपना अहंकार भगवान की सेवा पर खर्च करें

ताकि तुम शैतान की तरह *[*ईश्वरीय दया से*]* अलग न हो।

आत्माओं के सागर में आत्मा का जल खाली करो

ताकि आप बिना किनारे के एक असीम महासागर बन जाएं।

आइए कहानी को संक्षिप्त करें क्योंकि मैं पर्दे के पीछे चला गया हूं *[*अपने जीवन के अंत में*]*

हाँ, चुप रहो और परमेश्वर सबसे अच्छा जानता है।

भगवान का शुक्र है*!* यह पुस्तक अपने विषय वस्तु के अंत तक पहुंच गई है

---

[106] जिसके पास शाश्वत सत्यों में निश्चितता नहीं है, वह निरंतर आध्यात्मिक मार्ग में पीछे हट जाता है और समुद्र (दिव्य सौंदर्य) से कोई संबंध नहीं होने के कारण, उसकी आत्मा का जल गंदा हो जाता है।

नकदी नहीं खोई थी, और यह भाइयों तक पहुंच गई।

यह संग्रह *[*मथनवी में ज्ञान और दिव्य ज्ञान की कविता*]* स्वर्ग की ओर एक सीढ़ी है

जो भी ऊपर जाने के लिए उस पर चढ़ेगा, वह छत पर पहुंच जाएगा।

स्वर्ग की छत हरी नहीं है

इसके बजाय, यह छत है जो स्वर्ग से ऊंची है[107]।

स्वर्ग की यह छत दिव्य उपस्थिति से अपना पोषण पाती है

इसका सतत घूर्णन अपने असीम प्रेम को पाने की इच्छा के कारण है[108]।

रूमी की मथनवी के अंत की शुरुआत - गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे, जैसा कि रूमी ने भविष्यवाणी की थी कि यह एक जीवित आत्मा द्वारा पूरा किया जाएगा और यह मौलाना इलाही बख्श कंदेहलवी द्वारा किया गया था[109]

मौलाना हुसामुद्दीन की आध्यात्मिकता और इच्छा की तीव्रता का आकर्षण[110]

क्या मुझे *[*लेखन*]* की ओर खींच रहा है *[मथनवी का]* निष्कर्ष।

"गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे" को निष्कर्ष की ओर ले जाने के लिए

आत्मा को सीधे रास्ते की ओर खींच रहा है।

*[*कविता के*]* छंद अगोचर रूप से होठों से टपक रहे हैं *[*मेरे किसी भी सचेत प्रयास के बिना*]*

हे हुसामुद्दीन*!* आप जो चाहें करें।

चूंकि मेरी बुद्धि की बागडोर आपके हाथ में है

---

107 दिव्य उपस्थिति।

108 रूमी के बेटे द्वारा "*मथनवी*" (गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे) का समापन यहीं समाप्त होता है। जैसा कि रूमी ने भविष्यवाणी की है, इस महान पुस्तक का निष्कर्ष इस प्रकार है, जिसे एक भारतीय ज्ञानवादी मौलाना इलाही बख्श कंदेहलवी ने पूरा किया था।

109 इस बिंदु से, *मथनवी* का निष्कर्ष मौलाना इलाही बख्श कंदेहलवी द्वारा प्रदान किया जाता है, जिन्होंने मथनवी की दो अधूरी कहानियों को भी समाप्त कर दिया , जिन्हें रूमी ने अधूरा छोड़ दिया था, जिसमें तीन राजकुमारों की कहानी का निष्कर्ष भी शामिल था।

110 मौलाना जिया-उल-हक हुसामुद्दीन रूमी के शिष्य थे जो रूमी के जीवनकाल में एक सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी बन गए। वह वही थे जिन्होंने रूमी को *सबसे पहले मथनवी* लिखने के लिए राजी किया था और वह रूमी को लिखना जारी रखने के लिए कागज, कलम और स्याही प्रदान करते थे और वह ही थे जिन्होंने इस महान कृति को संकलित किया और इसे जितना हो सके उतना दूर तक फैलाया। रूमी ने *मौलाना हुसामुद्दीन की आध्यात्मिकता की प्रशंसा करते हुए और मथनवी लिखने की प्रेरणा का श्रेय* उन्हें देते हुए *मथनवी* के छह खंडों में से प्रत्येक की शुरुआत की है । मौलाना इलाही बख्श कंदेहलवी भी मौलाना हुसामुद्दीन की आत्मा के खिंचाव को मथानवी के निष्कर्ष के अपने लेखन के पीछे प्रेरक शक्ति के रूप में उद्धृत कर रहे हैं।

इसे जहां चाहो खींचो, मेरी आत्मा तुमसे मदहोश है।

जब सूर्य का प्रतिबिंब किसी पानी पर पड़ा

पानी ने इस जबरदस्त उपहार के लिए सूरज को धन्यवाद दिया।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी की आत्मा

जो ज्ञान का सागर और ज्ञान का चंद्रमा है।

जब उसने मेरे दिल के सीनै पर्वत पर अपना प्रतिबिंब डाला

धूल और पानी से बना मेरा शरीर प्रकाशित हो गया।

हर पल ऊंचे स्वर्ग का वह चाँद

मेरे दिल के दरवाजे को संकेत देता है कि अब।

मथनवी का अंत शुरू करें

मेरा सीलबंद लिफाफा खोलो।

वह कहानी जो बिना कहे *[अधूरी]* रह गई है उसे कहें

उस मोती को स्ट्रिंग करें जो धागे से बंधे बिना रह गया।

इसे जल्दी से धागे में स्ट्रिंग करें

हमारा आध्यात्मिक संबंध निश्चित रूप से आप तक पहुंचेगा।

चूँकि मैंने अपनी आध्यात्मिक डिग्री नहीं देखी थी, इसलिए मैं चुप रही

मैंने अपना सिर उसके दरवाजे पर रख दिया।

चूंकि राजा की आज्ञा को तोड़ना मोती तोड़ने से ज्यादा कठिन है

मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उनके आदेश को पूरा करना शुरू कर दिया।

…

तीसरे राजकुमार की स्थिति का वर्णन जिसने अपने दूसरे भाई की मृत्यु के बाद, राजा की निकटता, निकटता और ज्ञान प्राप्त किया

चलो दूसरी बात को पीछे छोड़ दें क्योंकि तीसरा राजकुमार

जब उनके दूसरे भाई की मौत के बारे में सुना।

राजा के राजदरबार में आया

प्रिय के लिए दर्द की स्थिति में, तीव्र इच्छा वाले साधक के रूप में।

एक प्रोटोकॉल के रूप में, परिचयकर्ता ने *[राजा से]* कहा:

यह तीसरा भाई आपकी दया का अधिक योग्य है।

तुम्हारे प्यार में उसकी दोनों भुजाएँ कमजोर हो गई हैं

उसकी हार पर पट्टी की जरूरत होती है।

राजा ने उस पर दया की और उसे आगे आने के लिए कहा

शाही दया के साथ उसे सिंहासन पर अपने बगल में बैठने के लिए कहा।

यद्यपि वह आध्यात्मिक प्रेरणा के माध्यम से राजकुमार की *[आंतरिक]* स्थिति को जानता था

अजीब अंदाज में उससे उसकी हालत पूछती रही।

उसकी दयालुता से उसे इतना सांत्वना दी

कि उन्होंने अपनी आत्मा से उस दर्द और दुख को दूर कर दिया।

उसने अपने मृत भाई को दफना दिया

उसकी आत्मा को जीवित व्यक्ति के साथ जोड़ा।

कुछ दिनों के बाद, शाही कंपनी पूरे जोरों पर थी

राजा का हृदय उस पर नरम हो गया।

उसने छोटे-बड़े सारे खजाने उसे सौंप दिए

उसके लिए शाही आतिथ्य खोल दिया।

आत्मा प्रदान करने वाले राजा की उदारता के समुद्र की उदारता से

उसके दिल की कली खिलने लगी।

उसके दिल में बहुत सारे *[आध्यात्मिक]* रहस्य जमा हो गए थे

वह अपने दूसरे भाई की तरह रोशनी का अवतार बन गया।

ईश्वरीय निकटता और ज्ञानवाद के चरणों में

उनकी डिग्री उनके दूसरे भाई की तुलना में अधिक बढ़ गई।

वह आध्यात्मिक रूप से प्रयास करते थे और आध्यात्मिक मार्ग पर चलते थे

वह *[ईमानदार]* प्रयास करते थे और उनकी आंतरिक रोशनी लगातार बढ़ती जा रही थी।

लेकिन उन्होंने खुद एक सबक सीखा

उन्होंने अपने दोनों बड़े भाइयों की सलाह स्वीकार कर ली।

वह आध्यात्मिक पथ की घाटियों से अच्छी तरह परिचित हो गया था

वह बहुत सावधानी और सावधानी बरतते थे और बहुत सुखद थे।

उसने देखा कि पहले भाई ने *[*आध्यात्मिक मार्ग में*]* जल्दबाजी के कारण अपना जीवन त्याग दिया

और दूसरे को आत्म-दंभ, आत्म-केंद्रितता और अहंकार के कारण उसकी कब्र में भेज दिया गया था।

एक इंसान को चाहिए, प्रिय के मार्ग में

धीरे-धीरे, धैर्यवान और सहनशील तरीके से प्रयास करें।

पैगंबर मुहम्मद *(*सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम*)* ने कहा है*:*

हे युवाओं*!* नरम, धीमा, क्रमिक और धैर्यवान दृष्टिकोण *(Rifq)* ज्ञान की जड़ है।

इब्ने मसूद ने पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है*:*

हे धर्मपरायण पुरुष*!* धैर्य आधा विश्वास है।

अन्यथा, प्रिय की सुंदरता पूर्ण रोशनी है

उसकी सुंदरता में दिल की आंख चकनाचूर हो जाती है।

आप अचानक दिव्य दृष्टि को सहन करने में सक्षम नहीं हैं

दर्पण को *[*अपने दिल के*]* धीरे-धीरे पॉलिश करें *[*अज्ञानता, लापरवाही और बुराई की सारी धूल को हटाने के लिए और इसे अपने आंतरिक चरित्र और अस्तित्व की सुंदरता से चमकाने के लिए*]*।

यह क्रमिक दृष्टिकोण किसी की आध्यात्मिक क्षमता को बढ़ाने के लिए है

उसकी अनावरण की गई सुंदरता ने अपना द्वार कब बंद कर दिया है*?*

प्रिय स्वर्ग के बीच में सूर्य की तरह है

लेकिन हे चमगादड़*!* आपकी आंख कहाँ है *[*सूरज को देखने के लिए*]?*

जाओ, पहले अपनी आंख को जन्म दो

फिर इसे प्रिय की ओर खोलें।

अन्यथा, आप इसकी शानदार रोशनी और चमक को बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे

इसका सूरज आपके सितारे को अस्त कर देगा।

आप या तो मर जाएंगे या पागल हो जाएंगे, पूरी तरह से अपना दिमाग खो देंगे

यही कारण है कि कई लोग *मजहब* बन गए हैं *(*जिन्होंने दिव्य सौंदर्य को देखकर अपना दिमाग खो दिया है, पहले इसे सहन करने की अपनी आध्यात्मिक क्षमता विकसित किए बिना*)*।

एक तिनका पहाड़ का भार सहन नहीं कर सकता

इस दुख और दुख के लिए, आपको किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जिसने आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त कर ली हो।

उसका पहला भाई जल्दबाजी में

उन्होंने घबराहट और ऐंठन की स्थिति में प्रिय के साथ अनावरण बैठक प्राप्त की।

चूंकि प्रिय के साथ शुद्ध मुलाकात उसके लिए उपयुक्त नहीं थी

वह ऐंठन करने लगा, टूट गया और मर गया।

जब तक शरीर का यह पर्दा नहीं हटाया जाता

प्रिय के साथ अनावरण बैठक कब मिल सकती है*?*

लेकिन जब तीव्र प्रेम का शेर अचानक भाग जाता है

प्रेमी कच्चे मांस की तरह उसका शिकार बन जाता है।

तीव्र प्रेम की गड़बड़ी व्यक्ति को जल्दबाजी का कारण बनती है

समुद्र के तल पर एक खोल की तरह, कोई *[*बारिश*]* की बूंद के लिए मुंह खोलता है।

लेकिन बारिश से पहले मुंह खोलना

दर्द और कठिनाइयों के अलावा कुछ भी हासिल नहीं करता है।

एक महिला जो मासिक धर्म नहीं कर रही है और यौवन प्राप्त नहीं कर पाई है

शुक्राणु को *[*प्रजनन के लिए*]* घेरने में असमर्थ है।

तीसरे राजकुमार की स्थिति का वर्णन और उसके बाहरी और आंतरिक पूर्णता को प्राप्त करना और वह अपनी आवश्यकता को व्यक्त करने और अपने उद्देश्य तक पहुंचने में धैर्य का प्रयोग करता है

और वह तीसरी कीमत सौ सावधानियों और धैर्य के माध्यम से

ग्नोसिस के समुद्र से बारिश के बादलों की तरह प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है।

हर रात राजा की आध्यात्मिक संगति के माध्यम से

हर सुबह उसके दिल में भगवान की एकता की रोशनी चलती थी।
आध्यात्मिक क्षमता की प्राप्ति और ज्ञान का उत्साह
राजा की संगति के कारण हर पल उसके लिए प्रकट होता था।
उसके दिल में हर समय राजा की तरह चंद्रमा की दिशा से
सुबह-शाम उसके दिल पर नई रोशनी उतर गई।
उसने अपने उद्देश्य के अलावा किसी और चीज के लिए सांस भी नहीं ली
उसने परोपकारी राजा के हृदय में एक चिंगारी बरकरार रखी।
ऐसा राजा जो दयालुता और उदारता से परिपूर्ण हो
मैं अपनी जरूरत का शब्द भी उसके सामने क्यों लाऊं?
उनका उपकार, बिना मांगे भी, असंख्य आशीर्वाद देता है
मेरा दिल पूछने के लिए छलांग लगाने की हिम्मत कैसे करेगा?
हमारा राजा एक स्पष्ट पॉलिश दर्पण हृदय की तरह है
राजा के दिल में मेरे लिए खतरे की जगह भी है।
अगर मैं वास्तव में उस कीमती मोती के लायक हूं
अपने स्वयं के लाभ के माध्यम से, राजा मुझे यह प्रदान करेगा।
उनका उपकार आध्यात्मिक क्षमता वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रदान करता है
वास्तव में किसी की आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति के अनुसार।
कोई भी जिसके पास क्षमता और पात्रता है
राजा से बिना पूछे ही शाही उपहार आता है।
जिस राजा से सुई का सिर भी छिपा नहीं है
मुझे अपने उद्देश्य की खोज के लिए अलग-अलग रास्तों पर क्यों दौड़ना चाहिए?
मैं अपनी बेकार की बात उसके सामने क्यों पेश करूं?
मैं उसे अपनी आवश्यकता क्यों बताऊं?
हमारा राजा उज्ज्वल, चेतन और जागरूक है
अंत में, वह हृदय की इच्छाओं को पूरा करता है।

हे दिल*!* धैर्य रखें क्योंकि यह खुशी की कुंजी है
इसमें बहुत सुख-सुख है।
एक दिन राजा ने कहा*:* हे दयालु आत्मा*!*
आप धैर्य और सहनशीलता के समुद्र और परोपकार की खान हैं।
मैं अपने प्रभुत्व और साम्राज्य की जिम्मेदारियों से परेशान हूं
मेरा हृदय वास्तव में ईश्वरीय एकता *(*एकता*)* के ऊंचे सिंहासन से जुड़ा हुआ है।
मेरे उत्तराधिकारी बनो और साम्राज्य का काम करो
ताकि मैं उस चीज़ से छुटकारा पा सकूं जो मेरे दिल को परेशान कर रही है।
मैं एकांत में जाना चाहुंगा
मैं बातचीत से चुप रहना चाहता हूं।
मेरा हृदय चिंता से रहित हो जाएगा
यह दिव्य रोशनी की अभिव्यक्ति बन जाएगी।
चिंतन का एक पल एक साल की पूजा के लायक है
यह चिंतन दिव्य सौंदर्य में आश्चर्य है।
जब राजकुमार ने यह बात सुनी
राजा के प्रति सम्मान के शिष्टाचार के कारण, उसके पैरों पर सिर रखा।
भगवान न करे*!* ऐसा समय नहीं आएगा जब आप शासन छोड़ दें
या एकांत कमरे में एकांत अपनाएं।
मेरे सिर पर आपकी छाया हो सकती है
न्याय के दिन तक ढके रहो।
हे परमेश्वर*!* मेरा जीवन इतना न हो
कि मैं राजा के शासनकाल का अंत देखता हूं।
इस क्रम में काफी चर्चाएं हुईं
लेकिन राजा राजकुमार की परीक्षा लेकर सत्य की खोज कर रहा था।
यह देखने के लिए कि क्या उसके दिल में प्रसिद्धि और शक्ति की कोई इच्छा है

या राजा की तरह साम्राज्य और प्रभुत्व की भव्यता।

क्या दिल में कोई अहंकार और अभिमान है?

या उसका आंतरिक अस्तित्व परमात्मा के लिए तड़प की शराब के नशे में है?

राजा ने देखा कि राजकुमार ने उसके दिमाग में कोई विचार नहीं पकाया

उसके अस्तित्व के वृक्ष में, आज्ञाकारिता और ईमानदारी के फल के अलावा कुछ भी नहीं पका।

चाहे वह रुतबे और प्रभुत्व के लिए प्यार हो, लालच और इच्छा हो

उसके दिमाग में, प्रिय के लिए तड़प के अलावा कुछ भी रास्ता नहीं मिला है।

परमेश्वर और उसके विशेष दासों के लिए प्रेम के अलावा

उसके दिल में किसी और चीज के लिए कोई रास्ता नहीं है।

राजा ने आध्यात्मिक पथ की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी आंतरिक अवस्थाओं को पाया

उसने अपने हर कदम को ईश्वरीय कानून के राजमार्ग पर पाया।

उसके हृदय में प्रभुत्व की ओर कोई झुकाव नहीं है

वह समुद्र *[*दिव्य ज्ञान*]* का साधक है और जहाज *[*सांसारिक साधनों और सिरों के*]* के प्रति नहीं है।

उन्होंने परीक्षा के विभिन्न पैमानों पर उनका बहुत परीक्षण किया

शुद्ध सोने के अलावा कुछ भी नहीं था।

राजा ने अपने साथियों और सहायकों से कहा कि यह युवक

लड़की जैसी आत्मा के अलावा किसी और चीज के लायक नहीं है।

सूर्य के साथ चंद्रमा का युग्म बेहतर है

आत्मा के साथ शरीर का जुड़ाव बेहतर है।

वह और वह दोनों एक-दूसरे के योग्य और संगत हैं

उनमें से प्रत्येक अपने साथियों से *[*आंतरिक उत्कृष्टता में*]* श्रेष्ठ है।

ऐसी महिला ऐसे पुरुष के लिए उपयुक्त होती है

ऐसा गहना उस अंगूठी के लिए उपयुक्त है।

सभी लोगों ने *[*राजा के*]* ऐसे मत की प्रशंसा की

उन सभी ने कहा: कृपया जल्दी करें, यह एक सही अवसर है।

राजा ने आज्ञा दी और उन्होंने एक सुंदर सभा की व्यवस्था की

एक उत्कृष्ट शादी सभा की व्यवस्था की गई थी।

दोनों का एक दिल और आत्मा हमेशा एक दूसरे के लिए इच्छुक है

अपने संबंधों को स्वीकार्य बनाने की स्वीकृति की प्रतिज्ञा हुई।

उनका धन्य मिलन हुआ

आत्मा से आत्मा और दिल से दिल जुड़ गया।

धीरे-धीरे लगन से दोनों लोकों के मामले ठीक-ठाक रहते हैं

क्योंकि जल्दबाजी शैतान से पैदा होती है।

परमेश्वर ने धैर्य को सभी मामलों के लिए दृढ़ संकल्प का स्रोत घोषित किया है

इसमें कोई संदेह नहीं है कि धैर्यवान व्यक्ति अपनी इच्छाओं को प्राप्त करता है।

जिसने कष्ट सहा है, उसे खजाना भी मिल गया

जो आलसी हो गया, वह भी दुख में मर गया।

लेकिन आलसी के बारे में, दुनिया के लिए आलसी बेहतर है

सांसारिक बातों में जल्दबाजी बुरी है।

धैर्य रखो, दुनिया को उसके हवाले कर दो

वह आपसे बेहतर जानता है कि आपके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है।

दुनिया के लिए आलसी दिव्य मार्ग में सक्रिय है

राजकुमार की तरह जो तीसरा है।

तीन राजकुमारों की कहानी की व्याख्या और अर्थ का विवरण और इसका अर्थ लगाना और इसे ज्ञानवाद की डिग्री (*इरफान/ मारिफा*) से जोड़ना - ईश्वर की निकटता, अंतरंगता और ज्ञान की स्थिति जो जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति की ओर ले जाती है और परिणामस्वरूप शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय प्राप्त होती है

इस कहानी से पूरा सबक प्राप्त करें

ताकि आप इस कहानी से पूरी जानकारी प्राप्त कर सकें।

मनुष्य को वह कार्य करना चाहिए जो उसे करना चाहिए

उन्हें कहानियों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

आपने अपना पूरा जीवन कहानियों में बर्बाद कर दिया है

सुबह निकट है, अपनी नींद से जागो।

बुढ़ापे की सुबह आ गई है, और जाने का समय हो गया है

कहानियों में शामिल न हों *[*जो आपको कहीं भी या कुछ भी नहीं लाती हैं*]*।

वह कार्य करें जो मार्ग के लिए एक प्रावधान के रूप में काम करेगा *[*अनंत काल की ओर आपकी यात्रा पर*]*

वह करो जो आपकी कब्र के अंधेरे और अकेलेपन में तुम्हारे लिए चाँद के समान चमकीला हो।

शाम हो चुकी है और सूरज डूब गया है

अब देर हो चुकी है, जल्दी से अपने घर वापस जाओ।

लंबे समय से आपने ब्रेड और मिठाई खाई है

क्या तुमने उससे अपने भीतर का खजाना देखा है*?*

आपने अपने निचले स्व को ऊपर उठाया और वह एक बैल बन गया

आपने अपने अंतिम गंतव्य की ओर कब कदम उठाए हैं*?*

तो अब अपने अपरिहार्य प्रस्थान के लिए तैयार रहें

भौतिक क्षेत्र से, आंतरिक वास्तविकता की ओर जाएं।

ऐसा खाएं जो आपके दिल में रोशनी बढ़ाए

यह दूसरी दुनिया की ओर आपकी खिड़की खोल देगा।

आपका अनमोल जीवन आलस्य में समाप्त हो गया है

कुछ दिन बचे हैं, लेकिन आप *[*अभी भी*]* लापरवाह हैं।

जो कुछ भी हुआ है, आप अभी भी दोस्त के पास आ सकते हैं

मित्र की गली में अपने कदम तेजी से उठाएं।

जो कुछ बचा है, उसे व्यर्थ न जाने दें

भले ही आपको अपने सिर के बल चलना पड़े, अपना सिर प्रिय के पैरों पर रखें।

हे तुम*!* भले ही तुम सौ साल तक उसकी अवज्ञा करते हो

अगर आप उस पर दस्तक देते हैं तो दरवाजा अभी भी खुला है।

आत्मा क्या है? यह पवित्र महान गुणों वाला पक्षी है

यह ज्ञान (परमात्मा के साथ निकटता) प्राप्त करने के लिए [शरीर के] एक पिंजरे में बंद है।

आत्मा क्या है? यह पवित्र [दिव्य] वंश का पक्षी है

यह कमाई के लिए जेल के अंदर है।

सिखाए जाने के लिए तोता पिंजरे में है

तो, यह मीठी आवाज में सीटी बजाना सीख सकता है।

आत्मा व्यापार के लिए शून्यता से आई है

इसकी दिशा हर समय अनंत काल की ओर होती है।

प्रशिक्षण के मामले में आपका निम्न स्व, [तीन राजकुमारों में] पिता के समान है

यह आपको उस मनमोहक महल में जाने से रोकता है।

निचला स्व जो बुराई की ओर झुका हुआ है, आपको पापों की ओर ले जाता है

यह आपको बुराई, अविश्वास [दिव्य वास्तविकता की ओर ईश्वरीय मार्ग में] और विद्रोह की ओर बुलाता है।

यह आपको चित्रों से भरे महल में प्रवेश करने से रोकता है

क्योंकि यह सांसारिक बुद्धि को मिटा देता है।

पैगंबर मुहम्मद के मार्ग की पवित्रता से भरा महल

यह जीवन में सीखे गए सबक के कारण भौतिकवादी मानसिकता के लिए दिमाग उड़ाने वाला है।

इस महल में राजा और उसकी बेटी की तस्वीरें हैं

वहाँ स्वर्गीय साथी, स्वर्ग और सुंदर प्रेम का उल्लेख है।

चूंकि "हमने शादी में बड़ी आंखों वाले स्वर्गीय साथी दिए हैं" को ईश्वरीय रूप से घोषित किया गया है

दिल के मोती को लालच की डोर से बांध दिया गया है।

चूंकि मनुष्य को अनंत काल में बनाया गया है

[वे इच्छुक हैं] लाभ कमाने और सभी नुकसानों को दूर करने की दिशा में [उनके स्वभाव से]।

इसीलिए, ईश्वरीय कानून के महल में

इंसानों को इच्छा और भय दोनों बनाने के लिए चित्र बनाए गए हैं।

कभी-कभी लोगों को लालच के माध्यम से *[*दिव्य*]* मार्ग पर चलने के लिए मजबूर किया जाता है *[*विभिन्न पुरस्कारों जैसे स्वर्ग, स्वर्गीय आशीर्वाद और साथी, प्रभुत्व, आदि*]*

कभी-कभी उन्हें नरक के रसातल से डराने के लिए मजबूर किया जाता है।

विद्रोही निचले स्व, भय के माध्यम से

जबरन राजा के पास ले जाया जाता है।

ताकि यह निम्न स्व *(नफ्स)* जो बुराई करने के लिए प्रवृत्त हो, या तो खुशी से या जबरन

राजा और उसकी बेटी का आदी हो जाता है।

लेकिन तीन राजकुमारों की तरह, दूसरे शब्दों में, मनुष्य

हे देखने के लिए आंख वाला*!* आध्यात्मिक मार्ग के संदर्भ में तीन प्रकार के होते हैं *[*वे लेते हैं*]*।

एक वह है जो अपनी आत्मा पर अत्याचार करता है, दूसरा बीच में है *[*स्पेक्ट्रम के दो सिरों में*]*

तीसरा वह है जिसे धार्मिकता और अच्छे कर्मों में अग्रणी होने का प्रयास करने के लिए बनाया गया है।

पहले राजकुमार ने अपनी जान ही बर्बाद कर दी

वह उस समूह से था जो अपनी आत्माओं पर अत्याचार करता है।

उनके जीवन का मोती *[*गहन प्रेम की*]* गर्मी के कारण हाथ से निकल गया

उन्होंने आध्यात्मिक प्रयास और ज्ञान के सही तरीके को कोई महत्व नहीं दिया।

लेकिन राजा की परोपकार ने उसकी मदद की और

*[*अंत में*]* वह *[*अपने जीवन के समाप्त होने के बाद*]* ईश्वर द्वारा स्वीकृत लोगों में से एक बन गया और यह आश्चर्य की बात है।

जो उसके लिए जीवन देता है, वह उससे ऐसा एक जीवन देता है

जो एक पन्ना देता है, उसे पूरी खदान *[*पन्ने से भरी*]* दी जाती है।

वह आग की लपटों की तरह जल गया

वह किसी विक्षिप्त की तरह कुएं में गिर गया था।

प्यार की लड़ाई में बहादुर लोगों की जरूरत होती है

ताकि व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार प्रेम से पूर्ण हो।

अगर मरने से दोस्त मिल सकता है

भगवान का रास्ता बहुत सहज होता।

दिव्य प्रेम में, हर पल अलग-अलग प्रकार की मृत्यु होती है

जिसकी कड़वाहट से मौत सौ खतरे महसूस करती है।

दूसरे राजकुमार ने आध्यात्मिक प्रयास और प्रयास किया

लेकिन अहंकार और आंतरिक उथल-पुथल में शामिल हो गए।

उन्होंने खुद को सूर्य का सह-भागीदार *(सिद्ध आध्यात्मिक मार्गदर्शक)* बनाया

दावा करने लगा, "मैं सत्य हूँ"।

इसके बाद वह सड़क जाम कर दिया

मौत की मंजिल उसके सामने आ गई।

वह इस मार्ग की पूर्णता के कारण मार्ग पर रुक गया *[*जो किसी को आंतरिक दोषों के साथ आगे बढ़ने की अनुमति नहीं देता है*]*

वह अभी भी रास्ते की सुंदरता से एक ड्राफ्ट पी रहा था।

राजा की परोपकार ने उनकी आत्मा को ईश्वरीय रूप से स्वीकार कर लिया *[*क्योंकि वह अभी भी गलतियाँ करने तक मार्ग पर प्रयास कर रहे थे*]*

वह अभी भी प्रिय से मिले *[*उनके सांसारिक जीवन के समाप्त होने के बाद*]*।

यह उनकी क्षमता या किसी अधिकार के कारण नहीं था

यह सब राजा की दया और उपकार था जो सभी का निर्माता है।

और तीसरी कीमत सबसे महत्वपूर्ण थी *[*उनके आध्यात्मिक प्रयास में*]*

वह अपने दो बड़े भाइयों से आगे निकल गया।

वह ग्नोसिस के मार्ग से अवगत हो गया

वह राजा की वास्तविकता का साथी बन गया।

उन्होंने आध्यात्मिक प्रयास और प्रयास किए, दिव्य ज्ञान उनके पास आया

हर पल ईश्वरीय निकटता बढ़ती जा रही थी।

चूंकि आस्था के लोग, प्रोत्साहन दिए जाने पर रास्ते पर चलें

वे अपनी बेटी के प्रति प्रेम के कारण राजा की ओर दौड़ते हैं।

लेकिन जब उनकी दृष्टि स्वयं राजा पर पड़ी, तो उन्हें अपनी मूर्खता का एहसास हुआ

फिर उन्होंने छिपी हुई बेटी के लिए, राजा के लिए अपने प्यार के अधीन कर दिया।

चूंकि राजा ने उनमें पूर्ण *[आध्यात्मिक]* क्षमता देखी *[मार्ग की सिद्धता तक पहुंचने के संदर्भ में]*

उस ज्ञान के साथ बेटी का विवाह कर दिया।

भले ही अन्य दो राजकुमारों को ईश्वरीय उदारता द्वारा स्वीकार कर लिया गया

लेकिन उसके सामने वह *[आध्यात्मिक]* डिग्री और सबसे छोटे राजकुमार को प्राप्त होने वाली दिव्य निकटता का स्तर कहाँ था*?*

अपूर्ण लोगों को भी राजा द्वारा सम्मानित किया गया था जब उसने उन्हें अपने सिंहासन पर अपने अलावा बैठाया था

उसने उन्हें अपना कहा और उन पर धन की बौछार की।

बड़े राजकुमार खुद अपनी कमियों पर शर्मिंदा हैं

वह सिंहासन पर बैठकर दुखी और शर्मिंदा होता है।

अपनी ही फिसलन और गलतियों के कारण उसके दिल में कांटे हैं

वह अपनी कमियों के कारण दर्द को सहन कर रहा है।

इसीलिए, सभी रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ *(*पैगंबर मुहम्मद*)* ने कहा*:*

स्वर्ग में कोई दुःख नहीं है, सिवाय लापरवाही के *[*दिव्य स्मरण से और ईश्वरीय मार्ग पर चलने में*]*।

यदि पापियों को स्वर्ग में जाने का मार्ग प्रदान किया जाता है

यदि उन्हें शाही महल और वस्त्र प्रदान किए जाते हैं।

वे अपने बदसूरत पैरों को देखते हैं और मोर की तरह

*[*पश्चाताप में*]* सिर नीचे करके शर्मिंदा हैं।

एक बदसूरत व्यक्ति के लिए कांच के महल का क्या लाभ है*?*

ऐसे व्यक्ति के लिए, हर जगह एक ईर्ष्यालु दर्पण होता है *[*किसी की कुरूपता की वास्तविकता दिखाने के लिए*]*।

हे चाचा*!* इस मामले का कोई अंत नहीं है

हमें उस राजा की कहानी बताओ जो *[*तीन राजकुमारों*]* में शामिल हो गया।

उस राजा की परंपरा जिसने अपनी यात्रा शुरू करने वाले तीन राजकुमारों में शामिल होने के लिए अपना राज्य छोड़ दिया

जिया उल हक हुसामुद्दीन हसन*!*

मुझे *[*कहानी में चौथे व्यक्ति*]* राजा की स्थिति सुनाओ।

जब वह कोई बन गया, जिसने अपना राज्य त्याग दिया

वह गरीबी की स्थिति में राजकुमारों के साथ रहा।

उसने अपना राज्य पीछे छोड़ दिया और *[*उनके महत्वपूर्ण संघर्षों में*]* उनका साथी बन गया

वह उनके साथ उनकी कंपनी में रास्ते पर चल रहा था।

वह एकजुट होकर उनकी सेवा करने में सक्रिय था

सभी पाखंड से शुद्ध शुद्ध हृदय के साथ।

उनके *[*दिव्य*]* प्रेम का प्रतिबिंब *[*उसकी आत्मा पर*]* उसे मोहित कर लिया था

अपनी यात्रा में, उन्होंने तीनों *[*राजकुमारों*]* के साथ एकता दिखाई।

गहन प्रेम के इस तरह के बहुत सारे प्रभाव होते हैं

वे एक ऐसे दिल की जंजीरें हैं जिसमें स्वतंत्रता है।

प्रेमी की संगति, आपको प्रेमी बनाती है

एक पापी की संगति आपको पापी बनाती है।

प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से नैतिकता और चरित्र प्राप्त करता है

एक खरबूजा दूसरे खरबूजे से अपनी *[*मीठा*]* सुगंध प्राप्त करता है।

*[*किसी अन्य व्यक्ति की*]* कंपनी के प्रभाव से इनकार करने वाला मूर्ख है

जो एक *[*अच्छी*]* कंपनी से दूर भागता है वह लापरवाह है।

एक खरबूजा दूसरे खरबूजे से अपना रंग पकड़ता है

दूसरे इंसान की संगति प्रभाव क्यों नहीं पैदा करेगी*?*

वह कुत्ता गुफा के लोगों का साथी बन गया

जब तक कुत्ते की विशेषताएं पूरी तरह से इसे छोड़ नहीं देतीं।

धर्मी लोगों के पैरों की धूल बन जाओ

ताकि आप उनके चंद्रमा से रोशनी प्राप्त करें *[*प्रबुद्ध आंतरिक गुणों की तरह*]*।

इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद *(*सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम*)* ने कहा है*:*

एक आस्तिक *(*चरित्र और भक्ति का व्यक्ति*)* के अलावा किसी और की संगति न अपनाएं।

खुशबू कंटेनर को सुगंधित बनाती है

खाद भूमि को बदबू प्रदान करती है।

जब तेल फूलों पर खर्च होता है

यह फूल की सुगंध का एक कंटेनर बन गया।

वह राजा राजकुमारों के साथ था

जब तीन भाइयों में से दो ने अपनी जान दे दी।

वह तीसरे का साथी बन गया

वह एक सच्चे भक्त की तरह हर समय उनके सामने मौजूद रहते थे।

जब तीसरा चीन के राजा का दामाद बना

वह अपने विशेष अभिजात वर्ग में से एक थे।

जब चीन के राजा ने देखा उनका जबरदस्त प्रेम और भक्ति

और अपने प्रिय के साथ उसका विशेष जुड़ाव।

उन्होंने उन दोनों को एक आत्मा और दो शरीर पाए

*[*चीन के*]* राजा दोस्ती में उसकी ओर झुक गए।

उसने दयालुता से राजकुमार से कहा*:*

आपका यह साथी हर सेवक का गौरव है।

उसकी सेवा करने के अलावा और कोई इच्छा और हृदय की इच्छा नहीं है

वह आपके विचारों में इतना मगन है कि वह दुनिया की हर चीज से रहित हो गया है।

ऐसे व्यक्ति को पुरस्कृत करना जरूरी है

जो अपने स्वयं के निचले स्व की इच्छाओं को समाप्त करता है।

जिसने आपकी इच्छा में अपनी इच्छा खो दी है

ऐसे व्यक्ति को भरपूर इनाम मिलना चाहिए।

राजकुमार ने उसके पैर चूमे और कहा:

जो हमसे छिपा है वह आपको स्पष्ट रूप से स्पष्ट है।

जब आपकी कंपनी खोजने की उम्मीद में हो

मैंने अपनी यात्रा शुरू करने के लिए अपनी मातृभूमि छोड़ दी।

यह आदमी जो अपने देश का एक बहुत ही सफल राजा था

हमारी कंपनी को अपनाने में सक्रियता दिखाई।

उसने हमारे लिए अपना देश और धन छोड़ दिया

हमारे लिए एक स्वर और बेहिचक समर्थन में, उन्होंने अपने दिल में झंडा फहराया।

हमारी वजह से उन्होंने कई उतार-चढ़ाव झेले

उसने अपना देश छोड़ दिया और हमारा दोस्त बन गया।

महामहिम की परोपकार की मांग है

यह उदारता और दया का स्थान है।

राजा ने कहा कि वह उसे दूसरा देश देगा

उसे इस तरह से प्रदान किया जाएगा जो उसकी हैसियत के लिए उपयुक्त हो।

राजा ने उसे पहले के अनुमान से अधिक महल और देश दिए

तीसरे राजकुमार की खातिर, उसके लिए बाहर लाया गया था।

जो उसकी आँखों ने भी नहीं देखा वह उसे दिया गया था

जो उसके कान भी नहीं सुनते थे, वह उसके सामने रखा गया था।

वह चौथा *(*व्यक्ति*)* भी अपने उद्देश्य तक पहुंच गया

वकील के साथ एक ग्राहक की तरह, मेजबान के साथ एक अतिथि की तरह

उस महान धनी *[*आध्यात्मिक धन के साथ, यानी पैगंबर मुहम्मद *(*सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम*)* ने कहा: यह एक ऐसा राष्ट्र है कि उनका साथी भी वंचित नहीं रहता है[111]।

दिल रखना और दूसरों की सेवा करना

---

[111] पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के एक भविष्यसूचक कथन में कहा गया है: ईश्वर या ज्ञानवादियों के मित्र और अंतरंग ऐसे लोग हैं कि जो कोई भी उनकी कंपनी को अपनाता है वह [आध्यात्मिक मार्ग के लाभों से] वंचित नहीं रहता है।

आपको एक ऐसा व्यक्ति बनाता है जो सेवा करता है और आपको सफलता प्रदान करता है।
विशेष रूप से परमेश्वर के लोगों की सेवा करना *[*जो वास्तव में स्वयं को उसके प्रति समर्पित करते हैं*]*
आपको उत्कृष्ट दिव्य स्वीकृति प्रदान करता है *[*और आपको लाता है*]* भगवान के निकट लाता है।
एक व्यक्ति जो उन लोगों की निकटता अर्जित करता है जिन्होंने परमेश्वर की निकटता प्राप्त की है
ऐसे व्यक्ति पर, परमेश्वर की दयालुता परमेश्वर के अंतरंग लोगों के हाथों के माध्यम से खर्च की जाती है।
एक व्यक्ति जो उन लोगों की निकटता अर्जित करता है जिन्होंने परमेश्वर की निकटता प्राप्त की है
परमेश्वर की उदारता और उदारता के योग्य हो जाता है।
एक व्यक्ति जिसने दोस्तों और ईश्वर के अंतरंग लोगों पर दया दिखाई
उनकी सेवा में मेहनती हो गए।
ईश्वरीय उपकार के योग्य बन गए
ऐसा व्यक्ति ईश्वरीय समर्थन और सहायता का प्राप्तकर्ता बन गया।
इब्ने मसूद *(*रश्मा उन पर प्रसन्न हो*)* पैगंबर मुहम्मद *(*सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम*)* से रिवायत है*:*
हे धर्मपरायण व्यक्ति*!* एक उन लोगों के साथ होगा जिन्हें कोई प्यार करता है।
जो किसी राष्ट्र से प्रेम करता है, वह उस राष्ट्र से *[*गिना जाता है*]*
मित्रों और ईश्वर के अंतरंग लोगों का प्रेम आत्मा का प्रकाश बन जाता है।
केवल परमेश्वर के लिए प्रेम और नापसंद करना अपने अस्तित्व का हिस्सा बनाओ
ताकि माशूक के द्वार पर स्वीकृति मिले।
जब उनके साथी राजा, आध्यात्मिक संघर्ष नहीं किया
शुद्धों का प्रेम उसके मार्ग पर दीपक लगाता है।
जिसके पास आध्यात्मिक प्रयास, क्षमता और प्रयास नहीं थे
आध्यात्मिक पथ के लोगों के साथ संगति रखना उनकी मदद के लिए आया और बस इतना ही।
प्रयास करो कि तुम स्वयं परमात्मा की स्वीकृति प्राप्त कर लो
या उन लोगों के साथ जुड़ें जिन्हें परमेश्वर ने स्वीकार किया है।
या तो *[*आध्यात्मिक*]* पथ पर एक सीढ़ी बनें या पथ की सीढ़ियों के चारों ओर घूमें
छोटे-बड़े खजाने उस अनोखे इंसान से आपके पास आएंगे।

हे आत्मा! यदि आप उन दोनों में से एक नहीं हैं

तुम न्याय के दिन अपमानित होकर उठोगे।

इसीलिए, ईश्वर ने कुरान में कहा है:

मार्गदर्शन के मामले में, *[आपको स्वयं]* इसके लिए एक साधन की तलाश करनी चाहिए।

ट्रेनर के बिना फल संरक्षित किसने खाया है *[जिसने इसे पहली जगह में बनाना सिखाया]?*

मुझे बताओ, पंखों के बिना पक्षी कैसे उड़ेगा?

जंगल *[मानव जीवन का]* खून, जाल और *[क्रूर]* जंगली जानवरों से भरा है

सभी दिशाओं में, त्रुटि *[और गुमराह]* का रास्ता खुला है।

जंगल सांपों से भरा हुआ है और हर जगह हरियाली है

सुरक्षा के जादुई शब्दों का पाठ करने वाले की मदद के बिना उस पर कदम न रखें, अन्यथा आप परेशान हो जाएंगे और *[इसमें कदम रखने में]* असफल हो जाएंगे।

यह दुनिया हरी-भरी भूमि है और निचला आधार स्व *(नफ्स)* सांप है

भगवान के मार्ग को ऐसे समझें जैसे जंगल खतरों से घिरा हुआ है।

यदि सांप आपको काटता है, तो आप टूट जाएंगे और पछताए रहेंगे

आप जादुई शब्दों के पाठ के बिना संतुष्ट हैं, आप मूर्ख हैं।

यदि आपके दिल के पैर कांटे से टकराए और घुस गए हैं

सुई की नोक के बिना आप इसे कैसे बाहर निकालेंगे?

सुई की नोक के बारे में चिंता करें, जादुई शब्दों को याद रखें

एक *[सिद्ध आध्यात्मिक]* मार्गदर्शक खोजें ताकि आप कठिन रास्ते पर चल सकें *[बिना किसी कठिनाई के और किसी भी त्रुटि में पड़ने]*।

जंगल कांटों से भरा हुआ है और सभी दिशाओं में रास्ते हैं

देखो, कदम-कदम पर खाई है।

जंगल भयानक है और लुटेरे उसमें छिपे हुए हैं

एक *[सिद्ध आध्यात्मिक]* मार्गदर्शक खोजें और ऐसे मार्गदर्शक का अनुसरण करें।

[आध्यात्मिक] मार्ग बहुत कठिन है और हर जगह वह तेज-तर्रार असाधारण प्राणी *(*शैतान*)* है

जो रास्ते में सैकड़ों वीणा और डफ बजा रहा है *[*आपको दिव्य पथ से विचलित करने और विचलित करने के लिए*]*।

रास्ता कठिन है और आपके सामने एक अंधेरी रात है

अगर तुम किसी का हाथ नहीं पकड़ोगे तो तुम चले जाओगे।

हे प्रिय*!* इस मामले की विशालता का कोई अंत नहीं है

"*मथनवी*" को अब समाप्त किया जाना चाहिए।

हे बच्चे*!* परमेश्वर के कार्यों का कोई अंत नहीं है

"*मथनवी*" को समाप्त किया जाना चाहिए।

"गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे" का पूरा होना

अब मौलवी *(*रूमी*)* से प्राप्त आध्यात्मिक दान द्वारा हुआ है और इसका श्रेय उन्हें दिया जाता है - ज्ञानवादी उत्कृष्टता।

समापन छंद

जो सत्य की खोज करता है, वह सत्य में डूब जाता है और उसका मूर्त रूप बन जाता है

ऐसा एक दिव्य परोपकार है और दिव्य हवा है।

बुरे शैतानी कर्म मत करो, शैतान मत बनो *[*स्वयं*]*

किसी की आत्मा की धूल पर *[*ज्ञान और दिव्य ज्ञान का*]* पानी डालें *[*इसे शुद्ध और शुद्ध करने के लिए*]*।

अपना *[*अमूल्य*]* समय सत्य के अलावा किसी और चीज़ में बर्बाद न करें *[*और उस आध्यात्मिक मार्ग की ओर जो आपको इसकी ओर ले जाता है*]*

अपना पेट मत भरो और अपनी आत्मा को भूखा मत रहने दो।

उसके अलावा अन्य की छवि *[*आपके दिल में*]* सत्य से आपका पर्दा है

सब कुछ में, उसके अलावा कोई और नहीं है *[*वास्तविक अस्तित्व के साथ*]*।

वह बनें जो ईश्वर के अस्तित्व में नष्ट हो गया है *[*अपने आप को निचले स्व के गुणों से मुक्त करके*]*, आप तब ईश्वर से निर्वाह प्राप्त करेंगे - एक ऐसा जीवन जो शाश्वत है और अंत के अधीन नहीं है

सुबह का प्रभु आपकी आत्मा के भीतर प्रकट होगा।

छह खंडों में, "*मथनवी*" की एक आवाज है

इसका सार ईश्वर *(*फना*) के अस्तित्व में विनाश के सागर में गोता लगाना है*।

यदि आप परमेश्वर के मार्ग की तलाश कर रहे हैं *[*स्वयं परमेश्वर की ओर ले जाने वाले*]*, तो सतर्क हो जाइए

अपने भीतर से लापरवाही और लापरवाही को दूर करें, जागते रहें।

सबसे पहले, ईश्वरीय कानून में दृढ़ रहें *[*अपने बाहरी जीवन को ईश्वरीय आदेशों के साथ संयोजन के साथ पूजा के कार्यों और साथी मनुष्यों के साथ अच्छे व्यवहार के साथ संचालित करने के लिए*]*

फिर आत्मा को सुधारने और शुद्ध करने के प्रयासों और प्रयासों के माध्यम से आध्यात्मिक पथ पर चलें।

पहले चरण में, अपने पैरों को ईश्वरीय कानून पर दृढ़ रखें

उसके बाद, आध्यात्मिक संघर्षों के मार्ग पर चलें।

"तारिका *" (सुंदर आंतरिक गुणों को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक प्रयासों का मार्ग, आत्मा को उसके सभी निम्न और नीच गुणों, खामियों, दोषों, नकारात्मक और बुरी प्रवृत्तियों से शुद्ध करना)* के माध्यम से आत्मा को सजाने के साथ अनिवार्य है

ताकि आप दिव्य ज्ञान, निकटता, अंतरंगता और ज्ञान *(*मारिफा*)* के सागर को सफलतापूर्वक पार कर सकें।

इस मामले का कभी अंत नहीं होगा *[*इसकी विशालता, महत्व और सभी मानवता के लिए प्रासंगिकता के कारण उन्हें वास्तविक शांति, शाश्वत आनंद और अनन्त सफलता देने में*]*

इसलिए, मुझे भाषण को संक्षिप्त करना चाहिए *[*और *मथनवी को* यहां समाप्त करना चाहिए*]*। ईश्वर द्वारा प्रदान की गई शांति आप पर हो*!*[112]

[112] इस बिंदु पर, रूमी की महान कृति "*मथनवी*" या "गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे" मौलाना इलाही बख्श कंदेहलवी द्वारा निष्कर्ष के जोड़े जाने के बाद समाप्त हो गई है।

समाप्ति

मानव अस्तित्व का मूल हमारे जीवन में सभी नकारात्मकता और सकारात्मकता, खुशी और दुख, दुख और आसानी, सफलता और असफलता, संकुचन और विस्तार, और अंधेरे और रोशनी का स्थान और उत्पत्ति है। इस कोर को मनुष्य के "हृदय" या "आत्मा" के रूप में संदर्भित किया जाता है जिसे एक गहन आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष के माध्यम से परिवर्तन की आवश्यकता होती है ताकि यह लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय का उत्सर्जन करे। संपूर्ण मानव सभ्यता के बेहतरीन प्रतिपादकों में से एक के कालातीत ज्ञान पर आधारित यह ग्रंथ, मानव अस्तित्व के मूल के भीतर सभी बाधाओं को व्यवस्थित रूप से ध्वस्त करता है, लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति और खुशी की प्राप्ति की दिशा में और चिंता के इस युग में शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय के रूप में मानव उपलब्धि के शिखर तक पहुंचने की ओर प्रेरित करता है, अशांति, और उथल-पुथल।

आसपास की दुनिया में सामने आने वाली घटनाएं परेशान करने वाली लगती हैं। हालांकि, हम विभिन्न स्थितियों के लिए अपनी प्रतिक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं जिनमें हम खुद को पाते हैं, चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामूहिक। हम में से प्रत्येक सकारात्मक रूप से उनके साथ व्यवहार करने के लिए चुन सकते हैं, अंतरतम खांचे और अस्तित्व के मूल के भीतर गहरे अपने स्वयं के आंतरिक आध्यात्मिक संसाधनों के जलाशयों में गहराई से ड्राइंग, और उन्हें और अपने स्वयं के अनूठे स्थितियों और चुनौतियों का उपयोग करके, सकारात्मक रूप से खुद को बदलने के लिए। यह आध्यात्मिक परिवर्तन सभी नकारात्मकताओं को पूरी तरह से दूर करना और सभी सकारात्मकताओं को उनके विभिन्न रूपों में प्रभावित करना सुनिश्चित करेगा, जिससे व्यक्तियों में से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त होगा, जो तब अपने जीवन की चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम होते हैं। यह आंतरिक परिवर्तन हमारी वास्तविक क्षमता को उजागर करता है जो बदले में, हमारे चारों ओर एक सकारात्मक परिवर्तन लाता है। इस तरह से पहले खुद की मदद करने से अंत में दूसरों की मदद मिलती है और जब व्यक्तियों की आंतरिक रोशनी और रोशनी तेज हो जाती है, तो यह आसपास की अशांत दुनिया में अच्छाई के लिए एक अजेय शक्ति बन जाती है। हालाँकि, एक हजार मील की यात्रा कहीं से शुरू होने की जरूरत है और यही वह कदम है जिसे आपको अपने स्वयं के आत्म-साक्षात्कार, अपने जीवन

के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति और परिणामस्वरूप अनन्त खुशी और अनन्त विजय प्राप्त करने के लिए उठाने की आवश्यकता है। यह पुस्तक सत्य के प्रत्येक साधक को आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर मार्गदर्शन करेगी। आपसे जो एक कदम आवश्यक है वह है सकारात्मक परिवर्तन की आपकी इच्छा और उस उद्देश्य के लिए, आपको पहले से अज्ञात जल का पता लगाने के लिए खुले दिल और दिमाग को लाने की आवश्यकता होगी। ऐसा करने का विकल्प चुनने वाला कोई भी व्यक्ति परिणाम से प्रसन्न होगा।

आप शाश्वत सत्यों के इस अथाह महासागर के तूफानी पानी में नेविगेट करने में, सच्चे आत्म-साक्षात्कार, जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति, और परिणामस्वरूप शाश्वत सुख और अनन्त जीवन की शाश्वत सफलता की ओर अपनी यात्रा में, मनुष्य को अमर बनाने की दिशा में दिव्य रूप से संरक्षित और निर्देशित रहें।

आगे के अध्ययन के लिए अनुशंसित पुस्तकें

इस ग्रंथ में जीवन के वास्तविक उद्देश्य और इसे प्राप्त करने के मार्ग के बारे में संक्षेप में बताया गया है, जो बदले में लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता की ओर ले जाता है, भले ही हमारी चिंता, अशांति या उथल-पुथल की स्थिति कुछ भी हो। विषय वस्तु की विशालता और तीव्रता ऐसी है कि पिछली शताब्दियों में शाश्वत सत्यों या ज्ञानवादियों के महान ज्ञाताओं द्वारा इस पर व्याख्या करने और मानवता के लिए मार्ग को रोशन करने के लिए खंड लिखे गए हैं। इस ग्रंथ ने मानवता द्वारा निर्मित इस ज्ञान के सबसे महान प्रतिपादकों में से एक - मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (ईश्वर उन्हें अपना अपार आशीर्वाद प्रदान करें) के आध्यात्मिकता और प्रबुद्ध लेखन के प्रकाश में इसकी विशालता की एक झलक प्रदान करने का प्रयास किया है। इस विषय पर गहन प्रासंगिकता और सभी के लिए लाभ के कुछ महानतम कार्यों को सूचीबद्ध करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे सत्य के सभी साधक लाभान्वित हो सकते हैं। इस बिंदु पर, यह पूछना उचित है, "जीवन के उद्देश्य और शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता प्राप्त करने के तरीकों का प्रासंगिक ज्ञान कहां से प्राप्त किया जा सकता है ताकि जो व्यक्ति इसे चलना चाहता है उसके लिए मार्ग स्पष्ट, प्रकाशित और चौड़ा हो जाए और इस ज्ञान पर कार्य करने पर, कोई वास्तव में अपने जीवन के उद्देश्य तक पहुंच सकता है और इस प्रकार शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता की स्थिति में डूब सकता है?" सौभाग्य से, यह महान ज्ञान, हालांकि आजकल शायद ही कभी जाना जाता है, किसी के लिए भी उपलब्ध है जो इससे लाभ उठाना चाहता है। यह निम्नलिखित अनुशंसित अद्भुत कार्यों से प्राप्त किया जा सकता है जो सत्य के सभी ईमानदार साधकों के लिए मार्ग को रोशन करते हैं:

एक. कुरान के गहन अध्ययन के माध्यम से, एक अच्छी व्याख्या की सहायता से, कुरान के दस उद्देश्यों के प्रकाश में, जैसा कि ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "*जवाहिर अल-कुरान*" या "कुरान के गहने" में प्रतिपादित किया है। इन दस उद्देश्यों का अध्ययन करना, उन्हें समझना और आत्मसात करना, और इन दस उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कुरान का अध्ययन करना, समझ और आंतरिक आध्यात्मिक रोशनी के नए रास्ते खोलेगा।

दो. ग़ज़ाली की पुस्तक "*मिन्हाज अल-अबिदीन इला जन्नतु रब अल-अलमीन*" या "भगवान के उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग: उन्हें सभी ब्रह्मांडों और अस्तित्वों के भगवान के स्वर्ग की ओर ले जाना" या लघु शीर्षक "उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग"। यह पुस्तक संक्षेप में जीवन के उद्देश्य और शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता प्राप्त करने के मार्ग के बारे में बताती है।

तीन. ग़ज़ाली की पुस्तक "*किमिया-ए-सादत*" (या "*किमिया अस-सादा*") का उल्लेखनीय परिचय, जिसे उन्होंने फ़ारसी या "अनन्त खुशी और अंतहीन सफलता की कीमिया" में लिखा था, जो शाश्वत खुशी, अमरता और मनुष्य की सच्ची सफलता की व्याख्या करता है। इस पुस्तक के शेष भाग को संक्षेप में चालीस चरणों को जानने के लिए भी पढ़ा जा सकता है, जो इस पथ पर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हैं। इस पुस्तक का उल्लेखनीय परिचय इस ग्रंथ के पहले भाग में प्रमुखता से दिखाया गया है।

चार. ग़ज़ाली द्वारा ज्ञान के चार खंडों के संग्रह का नाम "*इहया अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" है, जिसे "धार्मिक विज्ञान का पुनरुद्धार" भी कहा जाता है। चालीस छोटी पुस्तकों में विभाजित यह विशाल पुस्तक - प्रत्येक दिव्य ज्ञान या "मारिफा" के आध्यात्मिक मार्ग में एक कदम का प्रतिनिधित्व करती है, मानव जीवन के उद्देश्य और शाश्वत आनंद प्राप्त करने के मार्ग की एक विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करती है। इस अद्भुत पुस्तक के तीसरे और चौथे खंड का इस ग्रंथ के दूसरे और तीसरे भाग में काफी उपयोग किया गया है।

पाँच. अंतिम लेकिन कम से कम, पूर्व और पश्चिम दोनों के सबसे अधिक बिकने वाले कवि, मौलाना जलालुद्दीन रूमी, जिन्हें "रूमी" के नाम से जाना जाता है, ने दिव्य ज्ञान और दिव्य प्रेम पर पूरे मानव इतिहास की सबसे बड़ी कविता लिखी, जिसे "*मथनवी-ए-मनावी*" या "गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे" कहा जाता है। अधिकतम लाभ के लिए एक अच्छे अनुवाद और विद्वानों की व्याख्या के साथ इसका अध्ययन करने की सिफारिश की जाती है। यह शानदार पुस्तक कुरान के गहरे आंतरिक ज्ञान को सामने लाती है। इसकी मदद से, व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है और इसके परिणामस्वरूप शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता प्राप्त कर सकता है। इस अद्भुत पुस्तक के अंत ने इस ग्रंथ के अंतिम भाग को सुशोभित किया है।

अनुशंसित पुस्तकों की सूची बहुत बड़ी हो सकती है, क्योंकि ज्ञान के कालातीत खजाने, शाश्वत सुख के स्वामी - ज्ञानवादी या शाश्वत सत्य और ईश्वरीय ज्ञान के ज्ञाता - बहुत बड़ा है। हालाँकि, एक हजार मील की यात्रा कहीं न कहीं शुरू होने की जरूरत है और यह छोटी सूची, शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की खोज के लिए इस महान यात्रा का शुरुआती बिंदु और परिणति दोनों होगी। निम्नलिखित पुस्तकें शाश्वत सत्यों के इस अथाह विशाल

महासागर के तूफानी पानी के माध्यम से नेविगेट करने में मदद करेंगी, आंतरिक रोशनी, आत्म-साक्षात्कार और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति और परिणामस्वरूप शाश्वत खुशी और अनन्त विजय की ओर यात्रा करेंगी:

तफ़सीर अल-तुस्तारी (पवित्र कुरान की महान टिप्पणियाँ) साहल इब्न अब्द अल्लाह अल-तुस्तारी (लेखक), यूसुफ मेरी (संपादक), एनाबेल कीलर (अनुवादक), अली कीलर (अनुवादक) द्वारा

प्रकाशक: फोंस विटे (13 अप्रैल, 2011)

आईएसबीएन-10: 1891785192; आईएसबीएन-13: 978-1891785191

चुनिंदा छंदों की कुरान की यह व्याख्या ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के गहरे अर्थों में जाती है और भीतर गहराई में निहित रत्नों को सामने लाती है।

कुरान का संदेश: मुहम्मद असद (संपादक, अनुवादक) द्वारा समानांतर लिप्यंतरण के साथ प्रकट अरबी पाठ का पूरा विवरण

प्रकाशक: द बुक फाउंडेशन; संशोधित संस्करण (1 दिसंबर, 2008)

आईएसबीएन-10: 1904510353; आईएसबीएन-13: 978-1904510352

यह कुरान की पूरी व्याख्या या व्याख्या है।

इमाम ग़ज़ाली द्वारा सभी दुनियाओं के भगवान (मिन्हाज अल-अबिदीन) के बगीचे के लिए पूजनीय सेवकों का मार्ग

प्रकाशक: अल-बाज़ पब्लिशिंग यूएसए (2011)

आईएसबीएन-10: 1882216261; आईएसबीएन-13: 978-1882216260

इमाम ग़ज़ाली की आखिरी किताब आध्यात्मिक पूर्णता और रोशनी के लिए सात-चरणीय मार्ग की रूपरेखा तैयार करती है।

अल-ग़ज़ाली अल्केमी ऑफ़ हैप्पीनेस 2 वॉल्यूम इमाम मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (लेखक), जे आर. क्रुक (अनुवादक), लैलेह बख्तियार (परिचय) द्वारा सेट किया गया है

प्रकाशक: काजी प्रकाशन, इंक (1 जनवरी, 2007)

आईएसबीएन-10: 1567446744; आईएसबीएन-13: 978-1567446746

इमाम ग़ज़ाली की उत्कृष्ट कृति "*किमिया-ए-सआदत*" शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के परिवर्तनकारी एजेंट को रेखांकित करती है।

धर्म के विज्ञान का पुनरुद्धार (इह्या अल-उलूम अद-दीन) 4 खंड इमाम मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (लेखक), मुहम्मद महदी अल-शरीफ (अनुवादक) द्वारा निर्धारित

प्रकाशक: दार अल-कोतोब अल-इल्मियाह, बेरूत, लेबनान (2011)

एसकेयू 1010021; आईएसबीएन: 9782745159458

http://jamalon.com/en/1010021.html

इमाम ग़ज़ाली के ज्ञान के 4-खंड संग्रह आध्यात्मिक मार्ग के हर पहलू का विश्लेषण करते हैं जो किसी के जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने और परिणामस्वरूप अनन्त खुशी और अंतहीन सफलता की ओर ले जाते हैं।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी द्वारा मसनवी (6 खंड) / आर.ए. निकोलसन (अनुवादक)

http://www.dar-al-masnavi.org/about_nicholson.html

अमेरिका *में सबसे ज्यादा बिकने वाले कवि "मथनवी-ए-मनावी*" या "गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे" जिन्हें रूमी के नाम से जाना जाता है, एक शानदार छह-खंड की पुस्तक है जो कुरान के गहरे आंतरिक ज्ञान, किसी के जीवन के गहरे अर्थ और उद्देश्य, और परिणामस्वरूप

शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता को सामने लाती है। यह आध्यात्मिक गुरु द्वारा ज्ञानवाद और दिव्य प्रेम पर लिखी गई अब तक की सबसे अच्छी आध्यात्मिक कविता है, जो आने वाले सभी समय के लिए पूरी मानवता के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश है, दिव्य प्रेम के अथाह सागर में डूबा हुआ, डूबा हुआ और डूब गया।

ग्रंथ सूची

[1] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: नक्शबंदी, मुहम्मद सईद। *किमिया-ए-सआदत* (शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के लिए परिवर्तन की कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट)। लाहौर, पाकिस्तान: प्रोग्रेसिव बुक्स, 1999। पीपी 33-37। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[2] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 1-47। *संकलक द्वारा संघनित और समझाया गया।*

[3] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 48-68। *संकलक द्वारा संघनित और समझाया गया।*

[4] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 77-90। *संकलक द्वारा संघनित और समझाया गया।*

[5] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 91-140। *संकलक द्वारा संघनित और समझाया गया।*

[6] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 141-142। *संकलक द्वारा संघनित और समझाया गया।*

[7] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 1, पृष्ठ 16-34, 38-43, 51-87। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[8] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 2, पृष्ठ 87-133। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[9] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 3, पृष्ठ 133-135, 137, 139-147, 157, 158, 160-164, 172। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन*।

[10] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 4, पीपी 174-258 से चयन। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन*।

[11] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 5, पीपी 258-260, 262-264, 266, 268-269, 271-274, 277-279, 284-287, 291-292, 294-299, 302-314। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन*।

[12] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 6, पृष्ठ 361-364, 319-320, 323-324, 326-327, 333, 340, 342, 344-348, 352-356, 358-361। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन*।

[13] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 7, पृष्ठ 361-364, 367-371, 373, 375, 377-382, 383, 392-397, 399-401, 403, 405-410, 418, 423। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन*।

[14] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 8, पृष्ठ 425-426, 430-435, 438, 442-449, 451-452। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन*।

[15] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 9, पृष्ठ 452-456, 457-460, 475-480, 502-507, 512। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन*।

[16] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 3 पुस्तक 10, पृष्ठ 513-520, 522-534, 536-541, 544-559, 561-577, 627-629। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन*।

[17] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 1, पृष्ठ 17-18, 21, 27, 29, 33, 37-38, 41, 56, 60-64, 75, 85, 88, 90, 99, 101-103। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[18] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 2, पीपी 104-108, 113, 118, 126-129, 130, 133, 136-139, 141, 142, 144-145, 148, 165-167, 169-170, 177-179, 188-189, 201, 202, 204-205, 209, 211-212, 227। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[19] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 3, पीपी 228-234, 245-247, 251, 253, 258-262, 270-271, 274-277, 288-290। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[20] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 4, पीपी 290-297, 302-303, 306-307, 311-312, 328-331, 333-335, 339-340, 349, 351, 355, 357, 359, 360। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[21] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 5, पृष्ठ 366-380, 391-395, 404-405, 437-438। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[22] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 6, पीपी 441-462, 470, 472-476, 482-486, 492-493, 516, 521-522, 541-542। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[23] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 7, पीपी 542-550, 563-565, 567-570, 572-573, 577-586। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

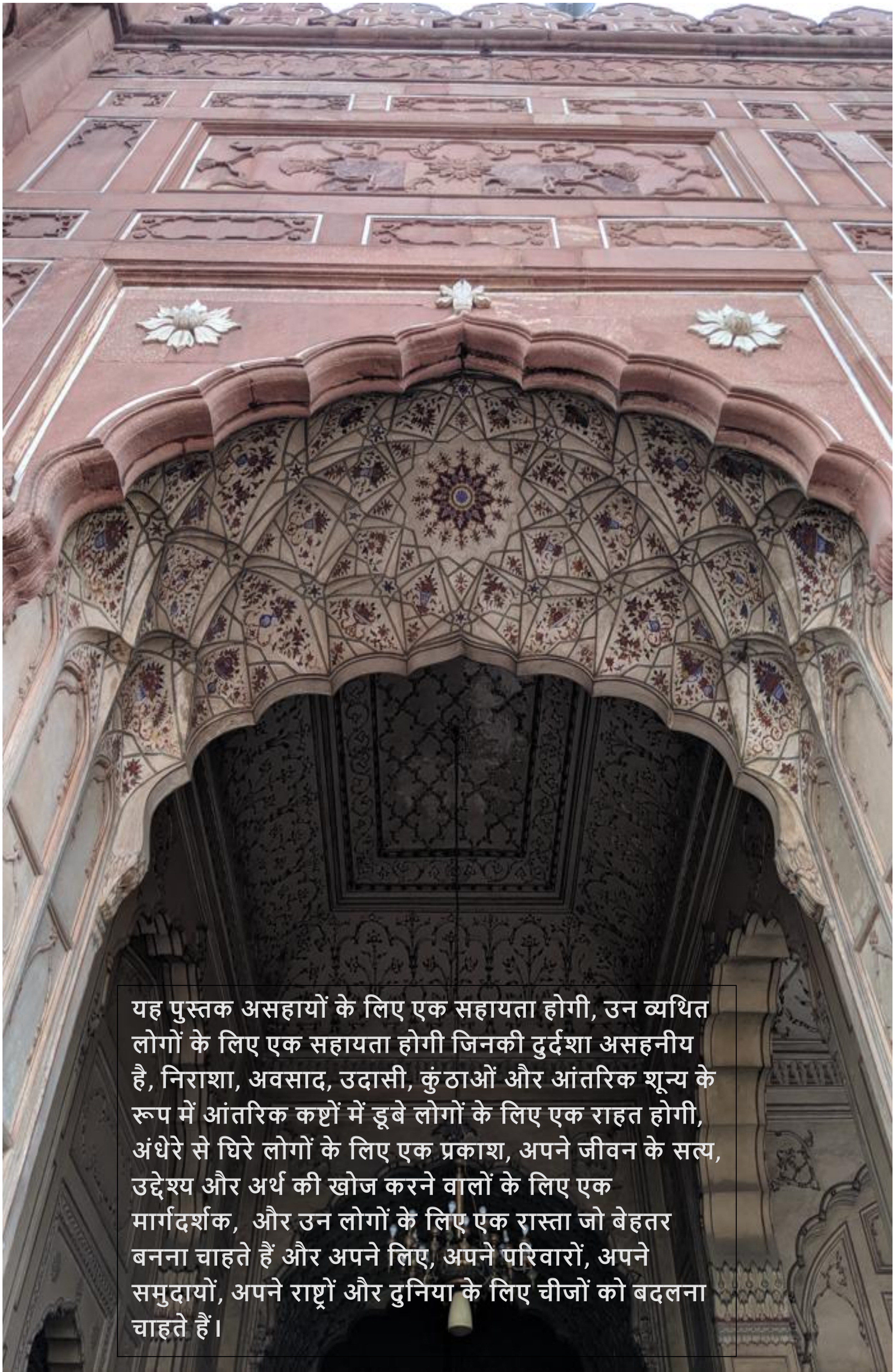
[24] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 8, पीपी 587-596, 603-605, 606-610, 622-626, 631-632। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[25] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 9, पृष्ठ 632-642, 645-646, 665-666। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[26] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: अल-वजीदी, नदीम। *इह्या अल-उलूम अद-दीन* (ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशत, 1999। खंड 4 पुस्तक 10, पीपी 666-668, 670-671, 676-681, 683-684, 688-690, 749-750, 789-794। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*

[27] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद (उर्दू अनुवाद से): हसन, इरफान। *अयुहाल वलाद* (मेरा प्यारा बेटा या बेटी)। *मज्मूआ रस-इल इमाम ग़ज़ाली* (इमाम ग़ज़ाली की लघु पुस्तकों का संग्रह): कराची, पाकिस्तान: दारुल इशात, 2004। खंड 1, पृष्ठ 13-17। अंग्रेजी अनुवाद से लिया गया: http://www.ghazali.org/books/My%20Dear%20Beloved%20Son.doc

[28] रूमी, मौलाना जलालुद्दीन मुहम्मद। उर्दू अनुवाद: हुसैन, काजी सज्जाद। *मथनवी-ए-मौलवी-ए-मनावी* (गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे) 6 खंड। लाहौर, पाकिस्तान: अल-फैसल बुक पब्लिशर्स; प्रकाशन तिथि अज्ञात; उर्दू अनुवाद 1974 में पूरा हुआ। खंड 6, पीपी 342-344, 347-363, 373-374, 381-382, 389-391, 421-426, 441-442, 443-460, 466-467, 472-478, 505-506, 508-511, 520-526, 530। *संकलक द्वारा उर्दू से अंग्रेजी अनुवाद और चयन।*



यह पुस्तक असहायों के लिए एक सहायता होगी, उन व्यथित लोगों के लिए एक सहायता होगी जिनकी दुर्दशा असहनीय है, निराशा, अवसाद, उदासी, कुंठाओं और आंतरिक शून्य के रूप में आंतरिक कष्टों में डूबे लोगों के लिए एक राहत होगी, अंधेरे से घिरे लोगों के लिए एक प्रकाश, अपने जीवन के सत्य, उद्देश्य और अर्थ की खोज करने वालों के लिए एक मार्गदर्शक, और उन लोगों के लिए एक रास्ता जो बेहतर बनना चाहते हैं और अपने लिए, अपने परिवारों, अपने समुदायों, अपने राष्ट्रों और दुनिया के लिए चीजों को बदलना चाहते हैं।